१. वंशी श्री दिमान्या केन यह तेत्र श्री महारीपती पहाली नेत्रम, मनाई मानसिंह होते हैं, न्यापूर (संज्ञाना)

२. विनेता हिमस्य केन एक केर श्री महार्त्य हो र्ग समार्गाली (मालवार)

监

प्रथम संस्कर्ण ४०० प्रति म्हानीय ज्ञानीता विक नेक स्वर्धिः स्वरंग श्रेष्ट

魸

ग्रेगलाल न्यायनीर्थ भी श्रीर प्रेम, जपपुर ।

* विषय-सूची *****

		_
१ प्रकाशकीय	****	पत्र संख्या १–२
२ भूमिका	****	₹-8
३ प्रस्तावना	****	४–२३
४ प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों का परिचय	****	२४–४८
५ ,, ,, विवरण	••••	४६–४६
६ त्रिषय		पत्र संख्या
(भे सिद्धान्त एवं चर्चा	****	१—४७
२ धर्म एवं त्र्याचार शास्त्र	••••	४८—६८
३ ऋध्यात्म एवं योगशास्त्र	****	251-33
४ न्याय एवं दशेन	****	१२६-१४१
४ पुरा ग् साहित्य		१४२-१४६
६ काव्य एवं चरित्र	****	१६०–२१२

२१३-२४६

२४७-२७०

२७१-२७८

235-305

२६६–३०७

३१६-३१८

ँ३१६–३२३

३२४-३४६

३४७-३४२

३४३

348

३०५-३१४ /

७ कथा साहित्य

६ कोश

११ ऋायुर्वेद

८ व्याकरण साहित्य

१२ चन्द्र एवं ऋलंकार

१३ संगीत एवं नाटक

१४ लोक विज्ञान

१६ मंत्र शास्त्र

१७ काम शास्त्र

१८ शिल्प शास्त्र

१० ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान

१५ सुभाषित एवं नीति शास्त्र

			पत्र संख्या
38	. लत्त्रग् एवं समीना	****	३ሂሂ–३ሂદ
२०	फागु रासा एवं वेलि साहित्य	••	३६०-३६७
२१	गणित शास्त्र	****	३६५–३६६
२२	इतिहास	****	३७०–३५८
२३	ुस्तोत्र साहित्य	****	રે બદ–પ્ટપૂર
२४	पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य	**	ሃ ሂ३–ሂሂ६
२४	्गुटका संप्रह	200	xx0-088
२६	श्रवशिष्ट साहित्य	****	७ ६६–५००
७ ग्र	'थानुक्रमिंगका	****	50 १ —558
द ग्र	ंथ एवं ग्रंथकार	100	554-675
६ श	।।सकों की नामात्रलि	••	६२६-६३०
१० ग्र	ाम एवं नगरों की नामाविल	4000	353-553
११ श	द्धाशुद्धि पत्र	****	६ ४०–६४३

🛨 प्रकाशकीय 🔻

प्रंथ सूची के चतुर्थ भाग को पाठकों के हाथों में देते हुये मुमे प्रसन्नता होती है। प्रंथ सूची का यह भाग अब तक प्रकाशित प्रंथ सूचियों में सबसे वड़ा है और इसमें १० हजार से अधिक प्रंथों का विवरण दिया हुआ है। इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भंडारों के प्रंथों की सूची दी गई है। इस प्रकार सूची के चतुर्थ भाग सिहत अब तक जयपुर के १७ तथा श्री महावीरजी का एक, इस तरह १८ भंडारों के अनुमानतः २० हजार प्रंथों का विवरण प्रकाशित किया जा चुका है।

प्रथों के संकलन को देखने से पता चलता है कि जयपुर प्रारम्भ से ही जैन साहित्य एवं संस्कृति का केन्द्र रहा है और दिगम्बर शास्त्र भंडारों की दृष्टि से सारे राजस्थान में इसका प्रथम स्थान है। जयपुर बड़े बड़े विद्वानों का जन्म स्थान भी रहा है तथा इस नगर में होने वाले टोडरमल जी, जयचग्द जी, सदासुखजी जैसे महान विद्वानों ने सारे भारत के जैन समाज का साहित्यिक एवं धार्मिक दृष्टि से पथ-प्रदर्शन किया है। जयपुर के इन भंडारों में विभिन्न विद्वानों के हाथों से लिखी हुई पाण्डुलिपियां प्राप्त हुई हैं जो राष्ट्र एवं समाज की अमूल्य निधियों मे से हैं। जयपुर के पाटोदी के मन्दिर के शास्त्र भंडार में पंठ टोडरमल जी द्वारा लिखे हुये गोम्मट्सार जीवकांड की मूल पाण्डुलिपियां प्राप्त हुई है जिसका एक चित्र हमने इस भाग में दिया है। इसी तरह ब्रह्म रायमल्ल, जोधराज गोदीका, खुशालचंद आदि अन्य विद्वानों के द्वारा लिखी हुई प्रतियां है।

इस प्रंथ सूची के प्रकाशन से भारतीय साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य को कितना लाभ पहुँचेगा इसना सहो अनुमान ती विद्वान ही कर सकेगे किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इस भाग के प्रकाशन से संस्कृत, अपभंश एवं हिन्दी की सैकडों प्राचीन एवं अज्ञात रचनायें प्रकाश में आयी हैं। हिन्दी की अभी १३ वीं शताब्दी की एक रचना जिनदत्त चौषई जयपुर के पाटोदी के मन्दिर में उपलब्ध हुई है जिसको संभवतः हिन्दी भाषा की सर्वाधिक प्राचीन रचनाओं में स्थान मिल सकेगा तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास में वह उल्लेखनीय रचना कहलायी जा सकेगी। इसके प्रकाशन की व्यवस्था शीघ ही की जा रही है। इससे पूर्व प्रस् मूच चित की रचना प्राप्त हुई थी जिसको सभी विद्वानों ने हिन्दी की अपूर्व रचना स्वीकार किया है।

उक्त सूची प्रकाशन के श्रितिरिक्त चेत्र के साहित्य शोध संरथान की श्रोर से श्रव तक प्रंथ सूची के तीन भाग, प्रशस्ति संग्रह, सर्वार्थसिद्धिसार, तामिल भाण का जैन साहित्य, Jamism a key to true happiness. तथा प्रद्युन्नचरित श्राठ प्रंथों का प्रकाशन हो चुका है। सूची प्रकाशन के श्रितिरिक्त राजस्थान के विभिन्न नगर, करने एवं गांनों में स्थित ७० से भी श्रिधिक भंडारों की प्रंथ सूचियां वनायी जा

चुकी हैं जो हमारे संस्थान में हैं, तथा जिनसे विद्वान एवं साहित्य शोध में लगे हुये विद्यार्थी लाभ उठाते रहते हैं। प्रंथ सूचियों के साथ २ करीब ४०० से भी श्रिधिक महत्वपूर्ण एवं प्रचीन प्रंथों की प्रशस्तियां एवं परिचय लिये जा चुके हैं जिन्हें भी पुम्तक के रूप में प्रकाशित करने की योजना है। जैन विद्वानीं द्वारा लिखे हुये हिन्दी पद भी इन मंडारों मे प्रवुर संख्या मे निलते हैं। ऐसे करीब २००० पदों का हमने संग्रह कर लिया है जिन्हें भी प्रकाशित करने की योजना है तथा संभव है इम वर्ष हम इमका प्रथम भाग प्रकाशित कर सके। इस तरह खोज पूर्ण साहित्य प्रकाशन के जिस उद्देश्य से चेत्र ने माहित्य शोध मंस्थान की स्थापना की थी हमारा वह उद्देश्य धीरे धीरे पूरा हो रहा है।

भारत के विभिन्न विद्यालयों के भारतीय भाषाओं मुख्यतः प्राष्ट्रत, संस्कृत, श्रपश्रंश हिन्दी एवं राजस्थानी भाषाओं पर खोज करने वाले सभी विद्वानों से निवेदन हैं कि वे प्राचीन साहित्य एवं विशेपतः जैन राहित्य पर खोज वरने वा प्रयास करें। हम भी उन्हें साहित्य उपलब्ध करने में दथाशिक सहयोग देंगे।

प्रंथ सूची के इस माग में जयपुर के जिन जिन शास्त्र मंडारों की सूची दी गई है मैं उन भंडारों के सभी ज्यवस्थापकों का तथा विशेषतः श्री नाथृलालजी वज, श्रनूपचंदजी दीवान, पं॰ मंबरलालजी न्यायतीर्थ, श्रीराजमलजी गोधा, समीरमलजी आवड़ा, कपूरचंदजी रांवका, एवं प्रो. सुल्तानसिंहजी जैन का श्रामारी हूं जिन्होंने हमारे शोध संस्थान के विद्वानों को शास्त्र भंडारों की स्मृचियां बनाने तथा समय समय पर वहां के प्रंथों को देखने में पूरा सहयोग दिया है। श्राशा है भविष्य में भी उनका साहित्य सेवा के पुनीत कार्य में सहयोग मिलता रहेगा।

हम श्री डा॰ वासुदेव शरणजी श्रप्रवाल, हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के हृदय से श्राभारी है जिन्होंने श्रस्वस्थ होते हुये भी हमारी प्रार्थना स्वीकार करके प्रंथ सूची श्री भूमिका लिखने की कृपा की है। भविष्य में उनका प्राचीन साहित्य के शोध कार्य में निर्देशन मिलता रहेना ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

इस प्रंथ के विद्वान् सम्पादक श्री डा० कस्तूर्चंदजी कासलीवाल एवं उनके सहयोगी श्री पं० अनुपचंदजी न्यायतीर्थ तथा श्री सुगनचंदजी जैन का भी में आभारी हूं जिन्होंने विभिन्न शास्त्र भंडारों को देखकर लगन एवं परिश्रम से इस प्रंथ को तैयार किया है। मैं जयपुर के सुयोग्य विद्वान् श्री पं० चैन-सुखदासजी न्यायतीर्थ का भी हृदय से आभारी हूं कि जिनका हमको साहित्य शोध संस्थान के कार्यो मे पथ-प्रदर्शन व सहयोग मिलता रहता है।

भूमिका

श्री दिगम्बर जैन श्रातशय चेत्र श्री महावीर जी, जयपुर के कार्यकर्ताश्रों ने कुछ ही वर्षों के भीतर श्रपनी संस्था को भारत के साहित्यक मानिवत्र पर उमरे हुए रूप में टांक दिया है। इस संस्था द्वारा संचालित जैन साहित्य शोध सस्थान का महत्वपूर्ण कार्य सभी विद्वानों काध्यान हठात श्रपनी श्रीर खींच लेने के लिए पर्याप्त है। इस संस्था को श्री करतूरचंद जी कासलीवाल के रूप में एक मीन साहित्य साधक प्राप्त हो गए। उन्होंने श्रपने संकल्प वल और श्रद्भुत कार्यशिक द्वारा जयपुर एवं राजस्थान के श्रन्य नगरों में जो शास्त्र मंहार पुराने समय से चले श्राते हैं उनकी छान वीन का महत्वपूर्ण कार्य श्रपने उपर उठा लिया। शास्त्र मंहारों की जांच पड़ताल कर के उनमें संस्कृत, प्राकृत श्रपभंश, राजस्थानी और हिन्दी के जो श्रनेकानेक प्रथ सुरित्त हैं उनकी कमवद्ध वर्गीकृत और परिचयात्मक सूची बनाने का कार्य बिना रुके हुए कितने ही वर्षो तक कासलीवाल जी ने किया है। सौमाग्य से उन्हें श्रतिशय चेत्र के संचालक श्रीर प्रबंधकों के रूप में ऐसे सहयोगी मिले जिन्होंने इस कार्य के राष्ट्रीय महत्व को पहचान लिया श्रीर सूची पत्रों के विधिवत प्रकाशन के लिए श्राधिक प्रवंध भी कर दिया। इस प्रकार का मणिकांचन संयोग बहुत ही फलप्रद हुआ। परिचयात्मक सूची प्रंथों के तीन माग पहले मुद्रित हो चुके हैं। जिनमें लगमग दस सहस्त्र प्रंथों का नाम और परिचय श्रा चुका है। हिन्दी जगत् में इन प्रंथों का व्यापक स्वागत हुआ श्रीर विश्वविद्यालयों में शोध करने वाले विद्वानों को इन प्रंथों के द्वारा बहुत सी श्रज्ञात नई सामग्री का परिचय प्राप्त हुआ।

उससे प्रोत्साहित होकर इस शोध संस्थान ने अपने कार्य को और अधिक वेगयुक्त करने का निश्चय किया। उसका प्रत्यच्न फल प्रंथ सूची के इस चतुर्थ भाग के रूप में हमारे सामने हैं। इसमें एक साथ ही लगभग १० सहस्त्र नए हस्तिलिखित प्रंथों का परिचय दिया गया है। परिचय यद्यपि संचित्र हैं किन्तु उस के लिखने में विवेक से काम लिया गया है जिससे महत्वपूर्ण या नई सामग्री की ओर शोध कर्ता विद्वानों का ध्यान अवश्य आकृष्ट हो सकेगा। प्रंथ का नाम, प्रंथकर्ता का नाम, प्रंथ की भाषा, लेखन की तिथि, प्रंथ पूर्ण है था अपूर्ण इत्यादि तथ्यों का यथा संभव परिचय देते हुए महत्वपूर्ण सामग्री के उद्धरण या अवतरण भी दिये गये हैं। प्रम्तुत सूची पत्र मे तीन सौ से अपर गुटकों का परिचय भी सिमिलित है। इन गुटकों में विविध प्रकार की साहित्यिक और जीवनोपयोगी सामग्री का संग्रह किया जाता था। शोध कर्त्ता विद्वान यथावकाश जब इन गुटकों की ज्योरेवार परीच्चा करे गे तो उनमें से साहित्य की बहुत सी नई सामग्री प्राप्त होने की आशा है। प्रंथ संख्या ४४०६ गुटका संख्या १२४ में भारतवर्ण के भौगोलिक विस्तार का परिचय देते हुए १२४ देशों के नामों की सूची अत्यन्त उपयोगी है। प्रथ्वीचंद चरित्र आदि वर्णक प्रंथों में इस प्रकार की और भी भौगोलिक सूचिया मिलती हैं। उनके साथ इस सूची

का तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी होगा। किसी समय इस सूची में ६८ देशों की संख्या रूढ हो गई थी। ज्ञात होता है कालान्तर में यह संख्या १२४ तक पहुँच गई। गुटका संख्या २२ (प्रंथ संख्या ४४०२) में नगरों की वसापत का संवत्वार व्यौरा भी उल्लेखनीय है। जैसे संवत् १६१२ अकवर पातसाह आगरो वसायो: संवत् १७१४ औरंगसाह पातसाह औरंगावाद वसायो: संवत् १२४४ विमल मंत्री स्वर् हुवो विमल वसाई।

विकास की उन पिछली शितयों में हिन्दी साहित्य के कितने विविध साहित्य रूप थे यह भी अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण विषय है। इस सूची को देखते हुये उनमें से अनेक नाम सामने आते हैं। जैसे स्तोत्र, पाठ, संग्रह, कथा, रासो, रास, पूजा, मंगल, जयमाल, प्रश्नोत्तरी, मंत्र, अष्टक, सार, समुच्चय, वर्णन, सुभाषित, चौपई, शुभमालिका, निशाणी, जकडी, व्याहलो, वधावा, विनती, पत्री, आरती, बोल, चरचा, विचार, वात, गीत, लीला, चरित्र, छंद, छ्रप्य, भावना, विनोद, कल्प, नाटक, प्रशस्ति, धमाल, चौढालिया, चौमासिया, वारामासा, वटोई, वेलि, हिंडोलाणा, चूनडी, सज्माय, वाराखड़ी, भिक्त, वन्दना, पच्चीसी, वत्तीसी, पचासा, वावनी, सर्तसई, सामायिक, सहस्रनाम, नामावली, गुरुवावली, स्तवन, संबोधन, मोडलो आदि। इन विविध साहित्य रूपों में से किसका कय आरम्भ हुआ और किस प्रकार विकास और विस्तार हुआ; यह शोध के लिये रोचक विषय है। उसकी बहुमू य सामग्री इन मंडारों में सुरिक्त है।

राजस्थान में कुल शास्त्र मंडार लगभग दो सी हैं श्रीर उनमें संचित यं थों भी संख्या लगभग दो लाख के श्रांकी जाती है। हर्प की वात है कि शोध संस्थान के कार्य कर्ता इस भारी दायित्व के प्रति-जागरूक हैं। पर स्वभावतः यह कार्य दीर्घकालीन साहित्यिक साधना श्रीर वह व्यय की श्रपेला रखता है। जिस प्रकार श्रपने देश में पूना का मंडारकर इन्स्टीट्यूट, तंजोर की सरस्वती महल लाइनेरी, महास विश्वविद्यालय की श्रोरियन्टल मेनिस्क्र ट्स लाइ नेरी या कलकरों की वंगाल एशियाटिक सोसाइटी का ग्रंथ मंडार हस्तिलिखत ग्रंथों को प्रकाश में लाने का कार्य कर रहें हैं श्रीर उनके कार्य के महत्व की मुक्त कंठ से सभी स्वीकार करते हैं, श्राशा है कि उसी प्रकार महावीर श्रतिशय चेत्र के जैन साहित्य शोध संस्थान के कार्य की श्रोर भी जनता श्रीर शासन दोनों का ध्यान शीघ शाकृष्ट होगा श्रीर 'यह संस्था जिस सहायता की पात्र है, वह उसे मुलम की जायगी। संस्था ने श्रव तक श्रपने साधनों से बड़ा कार्य किया है, किन्तु जो कार्य शेष हैं वह कहीं श्रिधक वड़ा है श्रीर इसमें संदेह नहीं कि श्रवश्य करने योग्य है। ११ वी शती से १६ वी शती के मध्य तक जो साहित्य रचना होती रही उसकी सचित निधि का कुवेर जैसा समुद्ध कोष ही हमारे सामने श्रा गया है। श्राज से केवल १५ वर्ष पूर्व तक इन मंडारों के श्रसित्व का पता बहुत कम लोगों को था श्रीर उनके संवंध में छान वीन का कार्य तो कुछ हुशा ही नहीं था। इस सबको देखते हुये इस संस्था के महत्वपूर्ण कार्य का व्यापक स्वागत किया जाना चाहिये।

काशी विद्यालय ३-१०-१६६१

प्रसांबना

राजरथान शताब्दियों से साहित्यिक चेत्र रहा है। राजरथान की रियासर्ते यद्यपि विभिन्न राजाओं के अधीन थी जो आपस में भी लड़ा करती थीं फिर भी इन राज्यों पर देहली का सीधा सम्पर्क नहीं रहने के कारण यहां अधिक राजनीतिक उथल पृथंल नहीं हुई और सामान्यतः यहां शान्ति एवं व्यवस्था वनी रही। यहां राजा महाराजा भी अपनी प्रजा के सभी धर्मी का समादर करते रहे इसलिये उनकें शासन में सभी धर्मी को स्वतन्त्रता प्राप्त थी।

जैन धर्मानुयायी सदैव शान्तिप्रिय रहे हैं। इनका राजस्थान के सभी राज्यों में तथा विशेषतः जयपुर, जोधपुर, वीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, बूंदी, कोटा, अलवर, भरतपुर आदि राज्यों में पूर्ण प्रमुख रहा। शताब्दियों तक वहां के शासन पर उनका अधिकार रहा और वे अपनी स्वामिभक्ति, शासनदत्तता एवं सेवा के कारण सदैव ही शासन के सर्वोच्च स्थानों पर कार्य करते रहे।

(प्राचीन साहित्य की सुरत्ता एवं नवीन साहित्य के निर्माण के लिये भी राजस्थान का वाता-वरण जैनों के लिये बहुत ही उपयुक्त सिद्ध हुआ। यहां के शासकों ने एवं समाज के सभी वर्गों ने उस और बहुत ही रुचि दिखलायी इसलिये सैकड़ों की संख्या में नये नये प्रंथ तैयार किये गये तथा हजारों प्राचीन प्रंथों की प्रतिलिपियां तैयार करवा कर उन्हें नष्ट होने से बचाया गया। आज भी हस्तिलिखित प्रंथों का जितना सुन्दर संप्रह नानौर, बीकानेर, जैसलमेर, अजमेर, आमेर, जयपुर, उदयपुर, ऋषभदेव के प्रंथ मंडारों में मिलता है उतना महत्वपूर्ण संप्रह भारत के बहुत कम भंडारों में मिलेगा। ताड़पत्र एवं कागज दोनो पर लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रतियां इन्हों भंडारों में उपलब्ध होती हैं। यही नहीं अपभ्रंश, हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा का अधिकांश साहित्य इन्हों भन्डारों में संप्रहीत किया हुआ है) अपभ्रंश साहित्य के संप्रह की दृष्टि मे नागौर एवं जयपुर के भन्डार उल्लेखनीय हैं।

श्रजमेर, नागौर, श्रामेर, उदयपुर, ह्रंगरपुर एवं ऋषभदेव के भंडार (भट्टारकों की साहित्यिक गितिविधियों के केन्द्र रहे हैं। ये भट्टारक केवल धार्मिक नेता ही नहीं थे किन्तु इनकी साहित्य रचना एवं उनकीं सुरत्ता में भी पूरा हाथ था। ये स्थान स्थान पर भ्रमण करते थे और वहां से प्रन्थों को वटोर कर इनको अपने मुख्य मुख्य स्थानों पर संग्रह किया करते थे।

शांस्त्र मंडार सभी त्राकार के हैं कोई छोटा है तो कोई बड़ा । किसी में केवल स्वाध्याय में काम त्रांने वाले प्रंथ ही संग्रहीत किये हुये होते हैं तो किसी किसी में सब तरह का साहित्य मिलता है। साधारणतः हम इन प्रंथ भंडारों की ४ श्रेणियों में वांट सकते हैं।

- १. पांच हजार प्रथीं के संप्रह वाले शास्त्र भंडारे
- २. पांच हजार से कम एवं एक हजार से श्रिधक प्रंथ वाले शास्त्र भंडीर

- ३. एक हजार से कम एवं पांचसों से ऋधिक प्रंथ वाले शास्त्र भंडार
- ४. पांचसी प्रंथों से कम वाले शास्त्र भंडार

इन शास्त्र भंडारों में केवल धार्मिक सहित्य ही उपलब्ध नहीं होता किन्तु काव्य, पुराण, क्योतिप, आयुर्वेद, गणित आदि विषयों पर भी प्रंथ मिलते हैं। प्रत्येक मानव की रुचि के विषय, कथा कहानी एवं नाटक भी इनमें अच्छी संख्या में उपलब्ध होते हैं। यही नहीं, सामाजिक राजनीतिक एवं अर्थशास्त्र पर भी प्रंथों का संप्रह मिलता है। कुछ भंडारों में जैनेतर विद्वानों द्वारा लिखे हुये अलभ्य प्रंथ भी संप्रहीत किये हुये मिलते हैं। वे शास्त्र भंडार खोज करने वाले विद्यार्थियों के लिये शोध संस्थान हैं लेकिन भंडारों में साहित्य की इतनी अमूल्य सम्पत्ति होते हुये भी कुछ वर्षों पूर्व तक ये विद्वानों के पहुँच के वाहर रहे। अब कुछ समय वदला है और मंडारों के व्यवस्थापक प्रंथों के दिखलाने में उतनी आना-कानी नहीं करते हैं। यह परिवर्तन वास्तव में खोज में लीन विद्वानों के लिये शुभ है। आज के २० वर्ष पूर्व तक राजस्थान के ६० प्रतिशत मंडारों को न तो किसी जैन विद्वान ने देखा और न किसी जैनेतर विद्वान ने इन मंडारों के महत्व को जानने का प्रयास ही किया। अब गत १०, १५ वर्षों से इधर कुछ विद्वानों का ध्यान आकृष्ट हुआ है और सर्व प्रथम हमने राजस्थान के ७५ के करीब मंडारों को देखा है। और श्रेप भंवारों को देखा है।

ये प्रंथ मंडार प्राचीन युग में पुस्तकालयों का काम भी देते थे। इनमें बैठ कर स्वाध्याय प्रेमी शास्त्रों का अध्ययन किया करते थे। उस समय इन प्रंथों की सूचियां भी उपलब्ध हुआ करती थी तथा ये प्रंथ लकड़ी के पुट्टों के बीच में रखकर सूत अथवा सिल्क के फीतों से बांधे जाते थे। फिर उन्हें कपड़े के बेष्टनों में बांध दिया जाता था। इस प्रकार प्रंथों के बैज्ञानिक रीति से रखे जाने के कारण इन मंडारों में ११ वीं शताब्दी तक के लिखे हुये प्रंथ पाये जाते हैं।

जैसा कि पहिले कहा जा चुका है कि वे ग्रंथ भंडार नगर करवे एवं गांवों तक में पाये जाते हैं इसिलिये राजस्थान में उनकी वास्तविक संख्या कितनी है इसका पता लगाना काठन है। फिर भी यहां श्रमुमानतः छोटे वहे २०० भंडार होंगे जिनमें १॥, २ लाख से श्राधक हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है।

जयपुर प्रारम्भ से ही जैन संस्कृति एवं साहित्य का केन्द्र रहा है। यहां १४० से भी अधिक जिन मंदिर एवं चैत्यालय हैं। इस नगर की स्थापना संवत् १७८४ में महाराजा सवाई जयसिंहजी द्वारा की गई थी तथा जसी समय आमेर के वजाय जयपुर को राजधानी बनाया गया था। महाराजा ने इसे साहित्य एवं कला का भी केन्द्र बनाया तथा एक राज्यकीय पोथीखाने की स्थापना की जिसमें भारत के विभिन्न स्थानों से लाये गये सैकड़ों महत्वपूर्ण हस्तिलिखित प्रंथ संग्रहीत किये हुये हैं। यहां के महाराजा प्रतापसिंहजी भी विद्वान् थे। इन्होंने कितने ही प्रंथ लिखे थे। इनका लिखा हुआ एक प्रंथ संगीतसार जयपुर के वड़े मन्दिर के शास्त्र मंडार में संग्रहीत है।

१८ वीं एवं १६ वीं शताब्दी में जयपुर में अनेक उच्च कोटि के विद्वान् हुये जिन्होंने साहित्य की अपार सेवा की। इनमें दौलतराम कासजीवाल (१८ वीं शताब्दी) टोडरमल (१८ वीं शताब्दी) गुमानीराम (१८, १६ वीं शताब्दी) टेकचन्द (१८ वीं शताब्दी) दीपचन्द कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) जयचन्द्र छावड़ा (१६ वीं शताब्दी) केशरीसिंह (१६ वीं शताब्दी) नेमिचन्द पाटनी (१६ वीं शताब्दी नन्दलाल छावड़ा (१६ वीं शताब्दी) स्वरूपचन्द विलाला (१६ वीं शताब्दी) सदासुल कासलीवाल (१६ वीं शताब्दी) मन्नालाल खिन्दूका (१६ वीं शताब्दी) पारसदास निगोत्या (१६ वीं शताब्दी) जैतराम (१६ वीं शताब्दी) पन्नालाल चौधरी (१६ वीं शताब्दी) दुलीचन्द (१६ वीं शताब्दी) आदि विद्वानों के नाम उल्लेखनीय हैं। इनमें अधिकांश हिन्दी के विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी के प्रचार के लिये सैकड़ों प्राफ्ठत एवं संस्कृत प्रथों पर भाषा टीका लिखी थी। इन विद्वानों ने जयपुर मे प्रथ भन्डारों की स्थापना की तथा उनमें प्राचीन प्रथों की लिपियां करके विराजमान की। इन विद्वानों के अतिरिक्त यहां सैकड़ों लिपिकार हुये जिन्होंने आवकों के अनुरोध पर सैकड़ों प्रन्थों की लिपियां की तथा नगर के विभिन्न भन्डारों में रखी गई।

प्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भंडारों के प्रथों का विवरण दिया गया है ये सभी शास्त्र भंडार यहां के प्रमुख शास्त्र भंडार है और इनमें दस हजार से भी अधिक प्रथों का संप्रह है। महत्वपूर्ण प्रथों के संप्रह की दृष्टि से अ, ज तथा जा भन्डार प्रमुख हैं। प्रथ सूची में आये हुये इन भंडारों का संज्ञित विवरण निम्न प्रकार है।

१. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर पाटोदी (अ भंडार)

यह मंडार दि॰ जैन पाटोदी के मंदिर में स्थित है जो जयपुर की चौकड़ी मोदीखाना में है। यह मिन्दर जयपुर का प्रसिद्ध जैन पंचायती मिन्दर है। इसका प्रारम्भ में र्ञ्जादिनाथ चैत्यालय भी नाम था। लेकिन वाद में यह पाटोदी का मिन्दर के नाम से ही कहलाया जाने लगा। इस मिन्दर का निर्माण जोधराज पाटोदी द्वारा कराया गया था। लेकिन मिन्दर के निर्माण की निश्चित तिथि का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। फिर भी यह अवश्य कहा जा सकता है कि इसका निर्माण जयपुर नगर की स्थापना के साथ साथ हुआ था। मिन्दर निर्माण के पश्चात् यहां शास्त्र मंडार की स्थापना हुई। इसिलये यह शास्त्र मंडार २०० वर्ष से भी अधिक पुराना है।

मन्दिर प्रारम्भ से ही भट्टारकों का केन्द्र बना रहा तथा आमेर के भट्टारक भी यहीं आकर रहने लगे। भट्टारक च्रेमेन्द्रकीर्त्त सुरेन्द्रकीर्त्त, सुखेन्द्रकीर्त्त एवं नरेन्द्रकीर्त्त का क्रमशः संवत् १८१४,

१. देखिये ग्र'थ सूची पृष्ठ संख्या १६६, व ४६०

१८२२, १८६२, तथा १८७६ में यहीं पट्टार्भिपेक हुआ था। इस प्रकार ईनका इस मन्दिर से करीव १०० वर्ष तक सीघा सम्पर्क रहा।

प्रारम्भ में यहां का शास्त्र भंडार मद्दारकों की देख रेख में रहा इसिलये शास्त्रों के संग्रह में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती रही। यहां शास्त्रों की लिखने लिखवाने की भी श्राच्छी व्यवस्था थी इसिलये श्रावकों के श्रानुरोध पर यहीं प्रंथों की प्रतिलिपियां भी होती रहती थी। मद्दारकों का जब प्रभाव त्रीण होने लगा तथा जब वे साहित्य की श्रोर उपेत्ता दिखलाने लगे तो यहां के भंडार की व्यवस्था श्रावकों ने संभाल ली। लेकिन शास्त्र भंडार में संप्रहीत प्रंथों को देखने के पश्चात यह पता चलता है कि श्रावकों ने शास्त्र भंडार के प्रंथों की संख्या वृद्धि में विशेष श्राभक्ति नहीं दिखलाई श्रोर उन्होंने भंडार को उसी श्रावक्रया में सुरित्तत रखा।

हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या

भंडार में शास्त्रों की कुल संख्या २२५० तथा गुटकों की संख्या ३०८ है। लेकिन एक एक गुटके में बहुत से शंथों का संग्रह होता है इस्रिलिये गुटकों में १८०० से भी श्राधिक गंथों का संग्रह है। इस प्रकार इस भंडार मे चार हजार शंथों का संग्रह है। भक्तामर, स्तोत्र एवं तत्वार्थसूत्र की एक एक ताडपत्रीय प्रति को छोड़ कर शेष सभी गंथ कागज पर लिखे हुये हैं। इसी भंडार में कपडे पर लिखे हुये कुछ जम्बूद्वीप एवं श्रदाईद्वीप के चित्र एवं यन्त्र, मंत्र श्रादि का उल्लेखनीय संग्रह हैं।

भंडार में महाकवि पुष्पद्नत कृत जसहर चरिड (यशोधर चरित) की प्रति सबसे प्राचीन हैं जो संवत १४०७ में चन्द्रपुर हुने में लिखी गई थी। इसके अतिरिक्त यहां १५ वीं, १६ वी, १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी में लिखे हुये प्रंथों की संख्या अधिक हैं। प्राचीन प्रतियों में गोम्मटसार जीवकांड, तत्त्वाय सूत्र (सं० १४४८) द्रव्यसंग्रह वृत्ति (ब्रह्मदेव-सं० १६३४), उपासकाचार दोहा (सं० १४४४), धर्म-संग्रह श्रावकाचार (संवत् १४४२) श्रावकाचार (गुणभूपणाचार्य संवत् १४६२,) समयसार (१४६४), विद्यानित्द कृत अष्ट्रसहस्त्री (१७६१) उत्तरपुराण टिप्पण प्रभाचन्द (सं० १४७४) शान्तिनाथ पुराण (अश्राकृति सं. १४४२) गें सिगाह चरिए (लंदमण देव सं. १६३६) नागकुमार चरित्र (मिल्लपेण किंव सं. १४६४) वरांग चरित्र (वर्द्ध मान देव सं १४६४) नवकार श्रावकाचार (सं० १६१२) आदि सैकड़ों प्रंथों की उल्लेखनीय प्रतियां हैं। ये प्रतियां सम्पादन कार्य में वहुत लाभप्रद सिद्ध हो सकती हैं।

विभिन्न विषयों से सम्बन्धित. ग्रंथ

शास्त्र भंडार में प्रायः सभी विषयों के प्रंथों का संग्रह है। फिर भी पुराण, चरित्र, काव्य, कथा, व्याकरण, आयुर्वेद के प्रंथों का अच्छा संग्रह है। पूजा एवं स्तोत्र के प्रंथों की संख्या भी पर्याप्त

१. भट्टारक पट्टावली: ग्रामेर शास्त्र भंडारं जयपूर वेष्ट्रन सं० १७२४

जयपुर के प्रसिद्ध साहित्य सेवी







वीर पदारायातः तः स्थानासाः तानेषहर संवहन्त्रवा िनेषरण हवा श्रीजनधानं प्रवास्त्रसम्बद्धस्त्रस्त्रः देशनं देणवरधान्त्रसम्बद्धानं त्रीलाम्बद्धस्त्रास्त्रातः देशनं वापन् हिन्नस्त्रसम्बद्धानं त्रीनसारण्डातस्त्रातः वैश्वस्त्राम्बद्धसम्बद्धानं त्रीनसारण्डातस्त्रातः

पं० दौलतरामजी कासलीवाल कृत जीवन्धर चरित्र की मूल पाण्डुलिपि के दो पत्र





है। गुटकों में स्तोत्रों एवं कथा त्रों का अच्छा संग्रह है। आयुर्वेद के सैकड़ों नुसले इन्हों गुटकों में लिखे हुये हैं जिनका आयुर्वेदिक विद्वानों द्वारा अध्ययन किया जाना आवश्यक है। इसी तरह विभिन्न जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी पदों का भी इन गुटकों में एवं स्वतन्त्र रूप से बहुत अच्छा संग्रह मिलता है। हिन्दी के प्राय सभी जैन कियों ने हिन्दी में पद लिखे हैं जिनका अभी तक हमें कोई परिचय नहीं मिलता है। इसिलये इस दृष्टि से भी गुटकों का संग्रह महत्वपूर्ण है। जैन विद्वानों के पद आध्यात्मिक एवं स्तुति परक दोनों ही हैं और उनकी नुलना हिन्दी के अच्छे से अच्छे किय के पदों से की जा सकती है। जैन विद्वानों के अतिरिक्त कवीर, सूरदास, मल्कराम, आदि कवियों के पदों का संग्रह भी इस भंडार में मिलता है।

श्रज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथ

शास्त्र मंडार में संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा में लिखे हुये सैकड़ों श्रज्ञात प्रंथ प्राप्त हुये हैं जिनमें से कुछ प्रंथों का संज्ञित परिचय आगे दिया गया है। संस्कृत भाषा के प्रंथों में व्रतकथा कोप (सकलकीर्त्ति एवं देवेन्द्रकीर्ति) त्राशाधर कृत भूपाल चतुर्विशति स्तोत्र की संस्कृत टीका एवं रत्नत्रय विधि भट्टारक सकलकीर्त्त का परमात्मराज स्तोत्र, भट्टारक प्रभाचंद का सुनिसुत्रत छंद, त्र्याशा-धर के शिष्य विनयचंद की भूपालचंतुर्निशति स्तोत्र की टीका के नाम उल्लेखनीय हैं। अपभ्रंश थापा के शंथों में लद्दनण देव कृत ऐमिएाह चरिड, नरसेन की जिनरात्रिविधान कथा, सुनिगुएभद्र का रोहिसी विधान एवं दशलक्त्य कथा, विमल सेन की सुगंधदशमीयथा श्रज्ञात रचनायें हैं। हिन्दी भाषा की रचनात्रों में रल्ह कविकृत जिनदत्त चौपई (सं. १३५४) मुनिसकलकीर्त्त की कर्मचूरिवेलि (१७ वीं शताब्दी) ब्रह्म गुलाल का समीशरणवर्णन, (१७ वीं शताब्दी) विश्वभूपण कृत पार्श्वनाथ चरित्र, कृपाराम का ज्योतिप सार, पृथ्वीराज कृत कृष्ण्रुक्मिग्णीवेलि की हिन्दी गद्य टीका, यूचराज का . मुवनकीर्त्ति गीत, (१७ वीं शताब्दी) विहारी सतसई पर हरिचरणदास की हिन्दी गद्य टीका, तथा उनका ही कविवल्लभ प्रंथ, पद्मभगत का कृष्णरुक्षिमणीसंगल, हीरकवि का सागरदत्त चरित (१७ वी शताब्दी) कल्याणकीर्ति का चारुद्त्त चरित, हरिवंश पुराण की हिन्द्री गद्य टीका अपदि ऐसी रचनाएं हैं जिनके सम्बन्ध में हम पहिले अन्धकार में थे। जिनदत्त चौपई १२ वीं शताब्दी की हिन्दी पद्य रचना है श्रीर श्रव तक उपलब्ध सभी रचनाश्रों से प्राचीन है। इसी प्रकार श्रन्य सभी रचनायें महत्वपूर्ण हैं। मंथ भंडार की दशा संतोषप्रद है। अधिकांश मंथ वेप्टनों में रखे हुये हैं।

२. बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार (क भंडार)

वावा दुलीचन्द का शास्त्र मंडार दि॰ जैन बड़ा तेरहपंथी मन्दिर में स्थित है। इस मन्दिर में दो शास्त्र मंडार है जिनमें एक शास्त्र भंडार की त्रंथ सूची एवं उसका परिचय प्रथसूची द्वितीय भाग में दे दिया गया है। दूसरा शास्त्र भंडार इसी मन्दिर में वावा दुलीचन्द द्वारा स्थापित किया गया था इस लिये इस भंडार को उन्हीं के नाम से पुकारा जाता है। दुलीचन्दजी जयपुर के मूल निवासी नहीं थे किन्तु वे महाराष्ट्र के पूना जिले के फल्टन नामक स्थान के रहने वाले थे। वे जयपुर हस्तिलिखित शास्त्रों के साथ यात्रा करते हुये त्राये त्रीर उन्होंने शास्त्रों की सुरक्ता की दृष्टि से जयपुर को उचित स्थान जानकर यहीं पर शास्त्र संप्रहालय स्थापित करने का निश्चय कर लिया।

इस शास्त्र भंडार मे ५४० हरतिलिखत ग्रंथ हैं जो सभी दुलीचन्द्जी द्वारा स्थान स्थान की यात्रा करने के पश्चात् संग्रहीत किये गये थे। इनमें से कुछ ग्रंथ स्वयं वावाजी द्वारा लिखे हुये हैं तथा कुछ श्रावकों द्वारा उन्हें प्रदान किये हुये हैं। वे एक जैन साधु के समान जीवन यापन करते थे। ग्रंथों की सुरत्ता, लेखन त्रादि ही उनके जीवन का एक मात्र उद्देश्य था। उन्होंने सारे भारत की तीन वार यात्रा की थी जिसका विस्तृत वर्णन जैन यात्रा दर्णण में लिखा है। वे संस्कृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा उन्होंने १४ से भी अधिक ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद किया था जो सभी इस भन्डार में संग्रहीत हैं।

यह शास्त्र मंडार पूर्णतः व्यवस्थित है तथा सभी मंथ अलग अलग वेष्टनों मे रखे हुये हैं। एक एक मंथ तीन तीन एवं कोई कोई तो चार चार वेप्टनों मे बंधा हुआ है। शास्त्रों की ऐसी सुरहा जयपुर के किसी भंडार मे नहीं मिलेगी। शास्त्र मंडार में मुख्यतः संस्कृत एवं हिन्दी के मंथ हैं। हिन्दी के मंथ अधिकांशतः संस्कृत मंथों की भाषा टीकायें हैं। वैसे तो प्रायः सभी विषयों पर यहां मंथों की प्रतियां मिलती हैं लेकिन मुख्यतः पुराण, कथा, चिरत, धर्म एवं सिद्धान्त विषय से संबंधित मंथों ही का यहां अधिक संम्रह है।

भंडार में आष्तमीमांसालं कृति (आ॰ विद्यानिन्द) की सुन्दर प्रित है। क्रियाकलाप टीका की संवत् १५३४ की लिखी हुई प्रित इस भंडार की सबसे प्राचीन प्रित है जो मांडवगढ में सुल्तान गया- सुदीन के राज्य में लिखी गई थी। तत्त्वार्थसूत्र की स्वर्णमयी प्रित दर्शनीय है। इसी तरह यहां गोम्मटसार, त्रिलोकसार आदि कितने ही प्रंथों की सुन्दर सुन्दर प्रितयां हैं। ऐसी अच्छी प्रितयां कदाचित् ही दूसरे भंडारों में देखने को मिलती है। त्रिलोकसार की सचित्र प्रित है तथा इतनी वारीक एवं सुन्दर लिखी हुई है कि वह देखते ही वनती है। पत्रालाल चौधरी के द्वारा लिखी हुई डाल्ट्राम कृत द्वादशांग पूजा की प्रित भी (सं० १८७६) दर्शनीय प्रंथों मे से है।

१६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान् पं॰ पन्नालालजी संघी का अधिकांश साहित्य यहां संप्रहीत है। इसी तरह मंडार के संस्थापक दुलीचन्द की भी यहां सभी रचनायें मिलती हैं। उल्लेख-नीय एवं महत्वपूर्ण प्रंथों में अल्हू किव का प्राकृतछन्दकोष, विनयचन्द की दिसंधान काव्य टीका, वादिचन्द्र सूरि का पवनदूत काव्य, ज्ञानार्णव पर नयविलास की संस्कृत टीका, गोम्मट-सार पर सकलभूपण एवं धर्मचन्द की संस्कृत टीकाये हैं। हिन्दी रचनाओं में देवीसिंह छावडा कृत

1 . . .

खपदेशरत्नमाला भाषा (सं० १७६६) हरिकिशन का भद्रवाहु चिरत (सं० १७८७) छत्तपित जैसवाल की मन-मोदन पंचिवशित भाषा (सं० १६१६) के नाम उल्लेखनीय हैं। इस भंडार में हिन्दी पदोंका भी अच्छा संग्रह है। इन कवियों में माणकचन्द, हीराचंद, दौलतराम, भागचन्द, मंगलचन्द, एवं जयचन्द छावडा के हिन्दी पद उल्लेखनीय हैं।

३. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोवनेर (ख भंडार)

यह शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोवनेर में स्थापित है जो खेजडे का रास्ता, चांदपोल वाजार में स्थित है। यह मन्दिर कव बना था तथा किसने वनवाया था इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है लेकिन एक ग्रंथ प्रशस्ति के अनुसार मन्दिर की मूल नायक प्रतिमा पं० पन्नालाल जी के समय में स्थापित हुई थी। पंडितजी जोवनेर के रहने वाले थे तथा इनके लिखे हुये जलहोमविधान, धर्मचक्र पूजा आदि ग्रंथ भी इस भंडार में मिलते हैं। इनके द्वारा लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रति संवत् १६२२ की है।

शास्त्र मंडार में ग्रंथ संग्रह करने में पहिले पं० पन्नालालजी का तथा फिर उन्हीं के शिष्य पं० वख्तावरलाल जी का विशेष सहयोग रहा था। दोनों ही विद्वान ज्योतिष, अयुर्वेद, मंत्रशास्त्र, पूजा साहित्य के संग्रह में विशेष श्रमिरुचि रखते थे इसलिये यहां इन विषयों के ग्रंथों का अच्छा संकलन है। मंडार में २४० ग्रंथ हैं जिनमें २३ गुटके भी हैं। हिन्दी भाषा के ग्रंथों से भी भंडार में संस्कृत के ग्रंथों की संख्या अधिक है जिससे पता चलता है कि ग्रंथ संग्रह करने वाले विद्वानों का संस्कृत से अधिक प्रेम था।

भंडार में १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी के ग्रंथों की श्राधिक प्रतियां हैं। सबसे प्राचीन प्रति पद्मनिन्द्रपंचिंशित की है जिसकी संव १ १५०८ में प्रतिलिपि की गई थी। मंडार के उल्लेखनीय ग्रंथों में पं॰ श्राशाधर की श्राराधनासार टीका एवं नागौर के भट्टारक च्रेमेन्द्रकीर्ति कृत गजपंथामंडलपूजन उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। श्राशाधर ने श्राराधनासार की यह वृत्ति श्रपने शिष्य मुनि विनयचंद के लिये की थी। प्रेमी जी ने इस टीका को जैन साहित्य एवं इतिहास में श्रप्राप्य लिखा है। रघुवंश काव्य की भंडार में सं॰ १६८० की श्रच्छी प्रति है।

हिन्दी प्रंथों में शांतिकुशल का ऋंजनारास एवं पृथ्वीराज का रूकिमणी विवाहली उल्लेखनीय प्रंथ हैं। यहां विहारी सतसई की एक ऐसी प्रति है जिसके सभी पग्न वर्ण क्रमानुसार लिखे हुये हैं। मानसिंह का मानविनोद भी ऋायुर्वेद विपय का ऋच्छा प्रंथ है।

थ. शास्त्र भंडार दि. जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर (ग भंडार)

यह मन्दिर बोंली के कुत्रा के पास चौकड़ी मोदीखाना में स्थित है पहिले यह 'नेमिनाथ के मंदिर' के नाम से भी प्रसिद्ध था लेकिन वर्तमान में यह चौधरियों के चैत्यालय के नाम से प्रसिद्ध है। यहां छोटा दे दियां गया है। दूसरा शास्त्र भंडार इसी मन्दिर में वाबा दुलीचन्द द्वारा स्थापित किया गया था इस लिये इस भंडार को उन्हीं के नाम से पुकारा जाता है। दुलीचन्दजी जयपुर के मूल निवासी नहीं थे किन्तु वे महाराष्ट्र के पूना जिले के फल्टन नामक स्थान के रहने वाले थे। वे जयपुर हस्तिलिखित शास्त्रों के साथ यात्रा करते हुये त्राये त्रीर उन्होंने शास्त्रों की सुरक्ता की दृष्टि से जयपुर को उचित स्थान जानकर यहीं पर शास्त्र संग्रहालय स्थापित करने का निश्चय का लिया।

इस शास्त्र मंहार में नं १० हस्तिलिखत प्रंथ हैं जो सभी दुलीचन्द्जी द्वारा स्थान स्थान की यात्रा करने के पश्चात संप्रहीत किये गये थे। इनमें से कुछ प्रंथ स्वयं वावाजी द्वारा लिखे हुये हैं तथा कुछ श्रावकों द्वारा उन्हें प्रदान किये हुये हैं। वे एक जैन साधु के समान जीवन यापन करते थे। प्रंथों की सुरत्ता, लेखन छादि ही उनके जीवन का एक मात्र उहें श्य था। उन्होंने सारे भारत की तीन वार यात्रा की थी जिसका विस्तृत वर्णन जैन यात्रा दर्पण में लिखा है। वे संस्कृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा उन्होंने १५ से भी अधिक प्रंथों का हिन्दी अनुवाद किया था जो सभी इस भन्डार में संप्रहीत हैं।

यह शास्त्र भंडार पूर्णतः व्यवस्थित है तथा सभी प्रंथ अलग अलग वेण्टनों में रखे हुये हैं। एक एक प्रंथ तीन तीन एवं कोई कोई तो चार चार वेण्टनों में बंधा हुआ है। शास्त्रों की ऐसी सुरत्ता जयपुर के किसी भंडार में नहीं मिलेगी। शास्त्र भंडार में मुख्यतः संस्कृत एवं हिन्दी के प्रंथ हैं। हिन्दी के प्रंथ अधिकांशतः संस्कृत प्रंथों की भाषा टीकायें हैं। वैसे तो प्रायः सभी विषयों पर यहां प्रंथों की प्रतियां मिलती हैं लेकिन मुख्यतः पुराग्, कथा, चरित, धर्म एवं सिद्धान्त विषय से संवंधित प्रंथों ही का यहां अधिक संग्रह है।

मंडार में आप्तमीमांसालंकृति (श्रा० विद्यानित) की सुन्दर प्रति है । क्रियाकलाप टीका की संवत् १४३४ की लिखी हुई प्रति इस मंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो मांडवगढ में सुल्तान गया-सुदीन के राज्य में लिखी गई थी। तत्त्वार्थसूत्र की स्वर्णमयी प्रति दर्शनीय है। इसी तरह यहां गोम्मटसार, त्रिलोकसार श्रादि कितने ही प्रंथों की सुन्दर सुन्दर प्रतियां हैं। एसी श्रच्छी प्रतियां कदाचित् ही दूसरे मंडारों में देखने को मिलती हैं। त्रिलोकसार की सचित्र प्रति है तथा इतनी वारीक एवं सुन्दर लिखी हुई है कि वह देखते ही वनती है। पन्नालाल चौधरी के द्वारा लिखी हुई डाल्र्राम कृत द्वादशांग पूजा की प्रति भी (सं० १८७६) दर्शनीय प्रंथों में से है।

१६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान् पंच्यातालजी संघी का अधिकांश साहित्य यहां संप्रहीत है। इसी तरह भंडार के संस्थापक दुलीचन्द की भी यहां सभी रचनायें मिलती हैं। उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण प्रंथों में अल्हू किव का प्राकृतइन्द्रकोप, विनयचन्द की द्विसंधान काव्य टीका, वादिचन्द्र सूरि का पवनदूत काव्य, ज्ञानाण्य पर नयविलास की संस्कृत टीका, गोम्मट-सार पर सकलभूषण एवं धर्मचन्द की संस्कृत टीकायें हैं। हिन्दी रचनाओं में देवीसिंह छावडा कृत

खपदेशरत्नमाला भाषा (सं॰ १७६६) हरिकिशन का भद्रवाहु चिरत (सं० १७८७) छत्तपित जैसवाल की मन-भोदन पंचिवशित भाषा (सं० १६१६) के नाम उल्लेखनीय हैं। इस भंडार में हिन्दी पदोंका भी अच्छा संब्रह है। इन किवयों में माणकचन्द, हीराचंद, दौलतराम, भागचन्द, मंगलचन्द, एवं जयचन्द छावडा के हिन्दी पद उल्लेखनीय हैं।

३. शास्त्र भंडार दि॰ जैन मन्दिर जीवनेर (ख भंडार)

यह शास्त्र भंडार दि॰ जैन मिन्द्र जोवनेर में स्थापित है जो खेजडे का रास्ता, चांदपोल वाजार में स्थित है। यह मिन्द्र कव वना था तथा किसने वनवाया था इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है लेकिन एक ग्रंथ प्रशस्ति के अनुसार मिन्द्र की मूल नायक प्रतिमा पं॰ पन्नालाल जी के समय मे स्थापित हुई थी। पंडितजी जोवनेर के रहने वाले थे तथा इनके लिखे हुये जलहोमविधान, धर्मचक्र पूजा आदि ग्रंथ भी इस भंडार में मिलते हैं। इनके द्वारा लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रति संवत् १६२२ की है।

शास्त्र मंडार में प्रंथ संप्रह करने में पहिले पं० पन्नालालजी का तथा फिर उन्हीं के शिष्य पं० वख्तावरलाल जी का विशेष सहयोग रहा था। दोनों ही विद्वान ज्योतिष, अयुर्वेद, मंत्रशास्त्र, पूजा साहित्य के संप्रह में विशेष अभिरुचि रखते थे इसलिये यहां इन विषयों के प्रंथों का अच्छा संकलन है। भंडार में ३४० ग्रंथ हैं जिनमे २३ गुटके भी हैं। हिन्दी भाषा के ग्रंथों से भी अंडार में संस्कृत के ग्रंथों की संख्या अधिक है जिससे पता चलता है कि ग्रंथ संग्रह करने वाले विद्वानों का संस्कृत से अधिक प्रेम था।

भंडार में १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी के प्रंथों की अधिक प्रतियां हैं। सबसे प्राचीन प्रति पद्मनिव्दंचिंशति की है जिसकी संव १ १५०८ में प्रतिलिपि की गई थी। भंडार के उल्लेखनीय प्रंथों में पं॰ आशाधर की आराधनासार टीका एवं नागौर के भट्टारक चेमेन्द्रकीर्ति कृत गजपंथामंडलपूजन उल्लेखनीय प्रंथ हैं। आशाधर ने आराधनासार की यह वृत्ति अपने शिष्य मुनि विनयचंद के लिये की थी। प्रेमी जी ने इस टीका को जैन साहित्य एवं इतिहास में अप्राप्य लिखा है। रघुवंश काव्य की भंडार में सं० १६८० की अच्छी प्रति है।

हिन्दी प्रंथों में शांतिकुशल का अंजनारास एवं पृथ्वीराज का रूकिमणी विवाहलो उल्लेखनीय प्रंथ हैं। यहां विहारी सतसई की एक ऐसी प्रति है जिसके सभी पण वर्ण क्रमानुसार लिखे हुये हैं। मानसिंह का मानविनोद भी आयुर्वेद विषय का अच्छा प्रंथ है।

थ. शास्त्र भंडार दि. जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर (ग भंडार)

यह मन्दिर बोंली के कुआ के पास चौकड़ी मोदीखाना में स्थित है पहिले यह 'नेमिनाथ के मंदिर' के नाम से भी असिद्ध था लेकिन वर्तमान में यह चौधरियों के चैत्यालय के नाम से असिद्ध है। यहां छोटा सा शास्त्र भंडार है जिसमें केवल १०८ हस्तिलिखित प्रंथ हैं। इनमें ७४ हिन्दी के तथा शेप संस्कृत, भाषा के प्रंथ हैं। संग्रह [सामान्य है तथा प्रतिदिन स्वाध्याय के उपयोग में त्र्याने वाले प्रंथ हैं। शास्त्र भंडार करीव १४० वर्ष पुराना है। काल्र्रामजी साह यहां उत्साही सज्जन हो गये हैं जिन्होंने कितने ही ग्रंथ लिखवाकर शास्त्र, भंडार में विराजमान किये थे। इनके द्वारा लिखवाये हुये प्रंथों में पं. जयचन्द्र छावड़ा छत ज्ञानार्णव मापा (सं. १८२२) खुशालचन्द छत त्रिलोकसार भापा (सं० १८८४) दौलतरामजी कासलीवाल छत त्र्यादि पुराण भाषा सं १८८३ एवं छीतर ठोलिया छत होलिका चरित (सं. १८८३) के नाम उल्लेखनीय हैं। भंडार व्यवस्थित है।

५. शास्त्र भंडार दि. जैन नया मन्दिर वैराठियों का जयपुर (व भंडार)

'घ' भंडार बौहरी वाजार मोतीसिह भोमियों के रास्ते में स्थित नये मन्दिर में संग्रहीत हैं। यह मन्दिर बैराठियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। शास्त्र भंडार में १४० हस्तिलिखित ग्रंथ है जिनमें बीरनिन्द इत चन्द्रप्रभ चरित के प्रति सबसे प्राचीन है। इसे संवत् १४२४ भादवा बुदी ७ के दिन लिखा गया था। शास्त्र संग्रह की दृष्टि से भंडार छोटा ही है किन्तु इसमें कितने ही ग्रंथ उल्लेखनीय हैं। प्राचीन हस्तिलिखित प्रतियों में गुणभद्राचार्य इत उत्तर पुराण (५० १६०६,) ब्रह्मजिनदास ऋत हित्वंश पुराण (सं० १६४१,) दीपचन्द्र इत झानदर्पण एवं लोकसेन इत दशलक्षणकथा की प्रतियां उल्लेखनीय हैं। श्री राजहंसीपाध्याय की पण्ड्यधिक शतक की टीका संवत् १४७६ के ही अगहन मास की लिखी हुई है। प्रह्मजिनदास कत अठावीस मूलगुणरास एवं दान वथा (हिन्दी) तथा ब्रह्म आजित का हंसतिलकरास उल्लेखिय प्रतियों में हैं। भंडार में ऋपिमंडल स्तोत्र, ऋपिमंडल पूजा, निर्वाणकान्ड, अप्रान्हिका जयमाल की स्वर्णाक्तरी प्रतियों हैं। इन प्रतियों के वार्डर सुन्गर वेल बूटों से युक्त हैं तथा कला पूर्ण हैं। जो वेल एक वार एक पत्र पर आगई वह किर आगे किसी पत्र पर नहीं आई है। शास्त्र भंडार सामान्यतः व्यवस्थित है।

६. शास्त्र मंडार दि. जैन मन्दिर संघीजी जयपुर (ङ मंडार)

संघीजी का जैन मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध एवं विशाल मन्दिर है। यह चौकड़ी मोदीखाना में महावीर पार्क के पास स्थित है। मन्दिर का निर्माण दीवान भू थारामजी संघी द्वारा कराया गया था। ये महाराज जयसिंहजी के शासन काल में जयपुर के प्रधान मंत्री थे। मन्दिर की मुख्य चंवरी में सोने एवं काच का कार्य हो रहा है। वह वहुत ही सुन्दर एवं कला पृश्वें हैं। काच का ऐसा अच्छा कार्य वहुत ही कम मन्दिरों में मिलता है।

मन्दिर के शास्त्र भंडार में ६७६ हस्तिज़िख़ित ग्रंथों का संग्रह है। सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। अधिकांश ग्रंथ १८ वीं एवं १६ वीं शताब्दी के लिखे हुये हैं। सबसे नवीन ग्रंथ णमोकारकाव्य है जो संवत् १६६४ में लिखा गया था। इससे पता चलता है कि समाज में अव भी ग्रंथों की प्रति- लिपियां करवा कर भंडारों में विराजमान करने की परम्परा है। इसी तरह त्र्याचार्य कुन्दकुन्द कृत पंचा-स्तिकाय की सबसे प्राचीन प्रति है जो संवत् १४८७ की लिखी हुई है।

त्रंथ मंडार में प्राचीन प्रतियों से स हर्पकीर्ति का अनेकार्थशत संवत् १६६७, धर्मकीर्ति की कौ मुदीकथा संवत् १६६३, पद्मानिन्द आवकाचार संवत् १६१३, स. शुभचंद्र छत पाण्डवपुराण सं. १६१३, वनारसी विलास सं० १७१४, मुनि श्रीचन्द छत पुराणसार सं० १४४३, के नाम उल्लेखनीय हैं। संडार में संवत् १४३० की किरातार्ज नीय की भी एक सुन्दर प्रति है। दशरथ निगोत्या ने धर्म परीचा की भापा संवत् १७१ में पूर्ण की थी। इसके एक वर्ष वाद सं० १७१६ की ही लिखी हुई मंडार में एक प्रति संग्रहीत है। इसी भंडार में सहेश किव छत हम्मीररासो की भी एक प्रति है जो हिन्दी की एक सुन्दर रचना है। किशनलाल छत छुण्णवालिवलास की प्रति भी उल्लेखनीय है।

शास्त्र भंडार में ६६ गुटके हैं। जिनमें भी हिन्दी एवं संस्कृत पाठों का अच्छा संग्रह है। इनमें हर्पकिव कृत चंद्रहंसकथा सं० १७०८, हरिदास की ज्ञानोपदेश वत्तीसी (हिन्दी) मुनिसद्र कृत शांतिनाथ स्तोत्र (संस्कृत) आदि महत्वपूर्ण रचनाये हैं।

७. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर (च भंडार)

(श्रीचन्द्रप्रम दि॰ जैन सरस्वती भवन)

यह सरस्वती भवन छोटे दीवानजी के मन्दिर में स्थित है जो अमरचंदजी दीवान के निन्दर के नाम से भी प्रसिद्ध है। ये जयपुर के एक लंबे समय तक दीवान रहे थे। इनके पिता शिवजीलांलजी भी महाराजा जगतिसहजी के समय में दीवान थे। इन्होंने भी जयपुर में ही एक मन्दिर का निर्माण कराया था। इसिलये जो मन्दिर इन्होंने वनाया था वह वड़े दीवानजी का मन्दिर कहलाता है और दीवान अमरचंदजी द्वारा बनाया हुआ है वह छोटे दीवानजी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। दोनों ही विशाल एवं कला पूर्ण मन्दिर हैं तथा दोनों ही गुमान पंथ आझाप के मन्दिर हैं।

भंडार में ८३० हस्तिलिखित शंथ हैं। सभी श्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। यहां संस्कृत शंथों का विशेपत. पूजा एवं सिद्धान्त शंथों का अधिक संग्रह है। शंथों को भाषा के अनुसार निम्न प्रकार विभाजित किया जा सकता है।

संस्कृत ४१८, प्राकृत ६८, अपभ्रंश ४, हिन्दी ३४० इसी तरह विषयानुसार जो प्रंथ हैं वे निन्त प्रकार हैं।

धर्म एवं सिद्धान्त १४७, ऋध्यात्म ६२, पुराण ३०, कथा ३८, पूजा साहित्य १४२, स्तोत्र ८१ श्रन्य विषय ३२०।

इन प्रंथों के संप्रह करने में स्वयं श्रमरचंद्जी दीवान ने बहुत रूचि ली थी क्योंकि उनके

समयकालीन विद्वानों में से नवलराम, गुमानीराम, जयचन्द छावड़ा, ढाल्राम। मन्नालाल खिन्दूका, स्वरूपचन्द विलाला के नाम उल्लेखनीय हैं श्रीर संभवतः इन्हीं विद्वानों के सहयोग से वे ग्रंथों का इतना संग्रह कर सके होंगे। प्रतिमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन सं. १८०७, गोम्मटसार सं १८८६, पंचतन्त्र सं. १८८७, ज्ञामिण सं० १८६१ श्रादि ग्रंथों की प्रतिलिपियां करवा कर इन्होंने भंडार में विराजमान की थी।

भंडार में श्रिधिकांश संग्रह १६ वीं २० वीं शताब्दी का है किन्तु कुछ ग्रंथ १६ वीं एवं १७ वीं शताब्दी के भी हैं। इनमें निम्न ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय है।

पूर्णचन्द्राचार्य	उपसर्गह रस्तोत्र	हे. का सं० १४५३	संस्कृत
पं० अभ्रदेव	लव्धिविधानकथा	सं० १६०७	5)
श्रमरकी र्ति	पट्कर्मोपदेशरत्नमाला	सं० १६२२	श्रपभ्रंश
पूज्यपाद	सर्वार्थसिद्धि	सं० १६२४	संस्कृत
पुष्पद्न्त	यशोधर चरित्र	सं० १६३०	ऋपभ्रंश
ब्रह्मनेमिद् त्त	नेमिनाथ पुराण	सं० १६४६	संस्कृत
जोधराज	प्रवचनसार भाषा	सं० १७३०	हिन्दी

श्रज्ञात कृतियों में तेजपाल कविकृत संभविजणणाह चिरए (श्रपश्रंश) तथा हरचंद गंगवाल कृत सुकुमाल चरित्र भापा (र० का० १६१८) के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं।

द. दि० जैन मन्दिर गोधों का जयपुर (छ भंडार वि

गोधों का मन्दिर घी वालों का रास्ता, नागोरियों का चौक जौहरी वाजार में स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण १८ वीं शताब्दी के अन्त में हुआ था और मन्दिर निर्माण के परचात ही यहां शास्त्रों का संग्रह किया जाना प्रारम्भ हो गया था। वहुत से ग्रंथ यहां सांगानेर के मन्दिरों में से भी लाये गये थे। वर्तमान में यहां एक सुव्यवस्थित शास्त्र मंडार है जिसमें ६१६ हस्तिलिखित ग्रंथ एवं १०२ गुटके हैं। मंडार में पुराण, चिरत, कथा एवं स्तोत्र साहित्य का अच्छा संग्रह है। अधिकांश ग्रंथ १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी तक के लिखे हुये हैं। शास्त्र मंडार में व्रतकथाकोश की संवत् १४८६ में लिखी हुई प्रति सबसे प्राचीन है। यहां हिन्दी रचनाओं का भी अच्छा संग्रह है। हिन्दी की निम्त रचनायें महत्वपूर्ण हैं जो अन्य भंडारों में सहज ही में नहीं मिलती हैं।

चिन्तामणिजययाल	ठक्कुर कवि	हिन्दी	१६ वीं शताब्दी
सीमन्धर् स्तवन	"	"	7 9 93
गीत एवं श्रादिनाथ स्तवन	पल्ह कवि	13	3 3

नेमीश्वर चौपासा	मुनि सिहनन्दि	हिन्दी	१७ वी इ	राताव्दी
चेतनगीत	19	77	"	"
नेमीश्वर रास	ुनि रतनकीर्ति	59	77	"
नेमीरवर हिंडोल ना	13	5 7	77	99
द्रव्यसंत्रह भाषा	हेयराज	~3	र० का०	१७१६
चतुर्दशीकथा	डाल् राम))	१७६४	

उक्त रचनात्रों के श्रितिरिक्त जैन हिन्दी किवयों के पदों का भी श्रच्छा संग्रह है। इनमें वूच-राज, बीहल, कनककीर्ति, प्रभाचन्द, गुनि शुभचन्द्र, मनराम एवं श्रजयराम के पद विशेषतः उल्लेखनीय है। संवत् १६२६ मे रिचत ब्रंगरकिव की होलिका चौपई भी ऐसी रचना है जिसका परिचय प्रथम बार मिला है। संवत् १८३० मे रिचत हरचंद गंगवाल कृत पंचकल्याएक पाठ भी ऐसी ही सुन्दर रचना है।

संरद्धत शंथों मे डमारगिय विरिचत पंचपरमेष्ठी रतोत्र महत्वपूर्ण है। सूची सें उसका पाठ डक्कृत किया गया है। भंडार मे संश्रहीत प्राचीन प्रतियों में विस्तानाथ पुराण सं० १६६६, गुणभद्राचार्य कृत धन्यकुमार चरित सं० १६४२, विद्रधमुखयंडन सं० १६=३, सारस्वत दीपिका सं० १६४७, नामसाला (धनंजय) सं १६४३, धर्म परीचा (अमितगित) सं. १६४३, समयसार नाटक (वनारसीदास) सं० १७०४ आदि के नाम डल्लेखनीय हैं।

६ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर यशोदानन्दनी जयपुर (ज भंडार)

यह मन्दिर जैन यित यशोदानन्द्जी द्वारा सं० १८४८ में वनवाया गया था और निर्माण के कुछ समय परचात ही यहां शास्त्र भंडार की स्थापना कर दी गई। यशोदानन्दजी स्वयं साहित्यक व्यक्ति थे इसिलये उन्होंने थोड़े समय मे ही अपने यहां शास्त्रों का अच्छा संकलन कर लिया। वर्तमान मे शास्त्र भंडार में ३५३ प्रंथ एवं १३ गुटके हैं। अधिकांश प्रंथ १८ वीं शताव्दी एवं उसके वाद की शताव्दियों के लिखे हुये हैं। संग्रह सामान्य है। उल्लेखनीय प्रंथों में चम्द्रप्रमकाव्य पंजिका सं० १५६४, पं० देवी-चन्द कृत हितोपदेश की हिन्दी गद्य टीका, हैं। प्राचीन प्रतियों में आ० कुन्दकुन्द कृत समयसार सं० १६१४, आशाधर कृत सागारधर्मामृत सं० १६२८, केशविमश्रकृत तर्कभाषा सं० १६६६ के नाम उल्लेखनीय हैं। यह मन्दिर चौडा रास्ते में स्थित है।

१० शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर विजयराम पांड्या जयपुर (क्र भंडार)

विजयराम पांड्या ने यह मन्दिर कव वनवाया इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन मन्दिर की दशा को देखते हुये यह जयपुर वसने के समय का ही वना हुआ जान पड़ता है। यह मन्दिर पानों का दरीबा चो० रामवन्द्रजी ने स्थित है। यहां का शास्त्र मंडार भी कोई अव्दी द्राा में नहीं है। यहुत से प्रंथ जीर्ण हो चुके हैं तथा बहुत सों के पूरे पत्र भी नहीं हैं। वर्तमान में यहां २७४ प्रंथ एवं ७६ गुटके हैं। शास्त्र भंडार को देखते हुये यहां गुटकों का अच्छा संप्रह है। इनमें विश्वभूषण की नेमीश्वर की लहरी, पुरुषरत्न की नेमिनाथ पूजा, श्याम कि की तीन चौवीसी चौपाई (र का. १७४६) स्योजीशा सोगाणी की लग्नचन्द्रिका भाषा के नाम उल्लेखनीय हैं। इन छोटी छोटी रचनाओं के अतिरिक्त रूपचन्द्र, दिगह, मनराम, हर्षकीर्ति, कुमुदचन्द्र आदि किवयों के पद भी संप्रहीत हैं साह लोहट छत टलेखनीय एवं जमुराम का राजनीतिशास्त्र भाषा भी हिन्दी की उल्लेखनीय रचनायें है।

११ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ जयपुर (अ भंडार)

दि० जैन मन्दिर पार्चनाथ जयपुर का प्रसिद्ध जैन मन्दिर है। यह खवासजी का रारता दो० रामचन्द्रजी में स्थित है। मन्दिर का निर्माण संवत् १८०% में सोनी गोत्र वाले किमी श्रावक ने वराया था इसलिये यह सोनियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। यहां एक शाम्त्र भंडार है जिसमें ४४० ग्रंथ एवं १८ गुटके हें। इनमें सबमें खिंधक संख्या संस्कृत भाषा के ग्रंथों की है। माणिक्य सूरि कृत नलोद्य काव्य भंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो सं० १४४४ की लिखी हुई है। यद्यपि भंडार में प्रयों की संख्या खांच्या काव्य नहीं है किन्तु अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों तथा प्राचीन प्रतियों का यहां अच्छा संग्रह है।

इन अज्ञान श्रंथों में अपभ्रंश भाषा का विजर्गासङ कत श्राजितनाथ पुराण, किन दामोदर कृत ऐमिणाह चिए, गुणनिद कृत वीरनिद के चन्द्रप्रभकाव्यकी पंजिका, (संस्कृत) महापंडित जगन्नाथ कृत नेमिनरेन्द्र स्तोत्र (संस्कृत) मुनि पद्मनिद कृत वद्ध मान काव्य, शुभचन्द्र कृत तत्ववर्णन (संस्कृत) चन्द्रमुनि कृत पुराणसार (संरकृत) इन्द्रजीत कृत मुनिसुब्रत पुराण (हि०) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

यहां शंथों भी प्राचीन प्रतियां भी पर्याप्त संख्या में संप्रहीत है। इनमे से कुछ प्रतियों के नाम निम्न प्रकार हैं।

सूबी भी कर सं	प्रंथ नाम	य्रंथकार नाम	ले काल	् भाषा
१५३२	पट्पाहुड़	ञ्चा० कुन्दकुन्द	१४१६	সা০
२३४०	वद्ध मानकाव्य	पद्मनिद	१४१=	संस्कृत
१८,३६	स्याद्वाद्मं जरी ;	मल्लिपेण सूरि	१४२१	33
१५३६	अ जितनाथपुराण	विजयसिंह	१४८०	श्रपभ्रंश
२०६न	गोमिणाहचरिए	दामोदर	१४८२	5 7
२३२३	यशोधरचरित्र टिप्पण	प्रभाचन्द्र	የሂሩሂ	संस्कृत
११७६	सागारधर्मामृत	त्राशाधर	१४६४	"

सूची की क्र. सं.	प्र ंथ नाम	यंथ कार नाम	ले. काल	भाषा
२४४१	कथाकोश	हरिषेणाचार्य	१४६७	संस्कृत
३८७६	जिनशतकटीका	नरसिंह भट्ट	१४६४	77
२२४	तत्त्चार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द	१६३३	"
२०२६	च् त्रचूडामणि	वादीभसिंह	१६०४	3 3
र११३	धग्यकुमारचरित्र	श्रा० गुण्मद्र	१६०३	"
२११४	नागकुमार चरित्र	धर्मधर	१६१६	39

इस भंडार में कपड़े पर संवत् १४१६ का लिखा हुआ प्रतिष्ठा पाठ है। जयपुर के भंडारों में उपलब्ध कपड़े पर लिखे हुये प्रंथों में यह प्रंथ सबसे प्राचीन है। यहां यशोधर चिरत की एक सुन्दर एवं कला पूर्ण सचित्र प्रति है। इसके दो चित्र प्रंथ सूची में देखे जा सकते हैं। चित्र कला पर मुग़ल कालीन प्रभाव है। यह प्रति करीव २०० वर्ष पुरानी है।

१२ त्रामेर शास्त्र भंडार जयपुर (ट भंडार)

श्रामेर शास्त्र भंडार राजस्थान के प्राचीन प्रंथ भंडारों में से है। इस भंडार की एक प्रंथ सूची सन् १६४८ में चेत्र के शोध संस्थान की श्रोर से प्रकाशित की जा चुकी है। उस प्रंथ सूची में १४०० प्रंथों का विवरण दिया गया था। गत १३ वर्षों में भंडार में जिन प्रंथों का श्रीर संप्रह हुआ है उनकी सूची इस भाग में दी रई है। इन प्रंथों में मुख्यतः जयपुर के छावड़ों के मन्दिर के तथा बाबू ज्ञानचंदजी खिन्दूका द्वारा भेट किये हुये प्रंथ हैं। इसके श्रतिरिक्त मंडार के कुळ प्रंथ जो पहिले वाली ग्रंथ सूची में श्राने से रह गये थे उनका विवरण इस भाग में दे दिया गया है।

इन प्रंथों में पुष्पदंत कृत उत्तरपुराण भी है जो संवत् १३६६ का लिखा हुआ है। यह प्रति इस सूची में आये हुये प्रंथों में सबसे प्राचीन प्रति है। इसके अतिरिक्त १६ वीं १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी में लिखे हुये प्रंथों का अच्छा संप्रह है। मंडार के इन प्रंथों में मट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति विरचित छांदसीय फवित्त (हिन्दी), प्र० जिनदास कृत चौरासी न्यातिमाला (हिन्दी), लाभवद्ध न कृत पान्डव-चरित (संस्कृत), लाखो कविकृत पार्श्वनाथ चौपाई (हिन्दी) आदि प्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं। गुटकों में मनोहर मिश्र कृत मनोहरमंजरी, उदयमानु कृत भोजरासो, अग्रदास के कवित्ता, तिपरदास कृत रुक्तिमणी कृष्णजी का रासो, जनमोहन कृत रनेहलीला, श्यामिश्र कृत रागमाला, विनयकीर्ति कृत अष्टाहिका रासो तथा बंसीदास कृत रोहिणीविधिकथा उल्लेखनीय रचनायें हैं। इस प्रकार आमेर शास्त्र मंभार में प्राचीन ग्रंथों का अच्छा संकलन है।

प्रथों का विषयानुमार वर्गीकरण

प्रंथ सूची को अधिक उपयोगी वनाने के लिये प्रंथों का विपयानुसार वर्गीकरण करके उन्हें रूप विपयों में विभाजित किया गया है। विविध विपयों के प्रंथों के अध्ययन से पना चलना है कि जैन आचार्यों ने प्रायः सभी विपयों पर प्रंथ लिखे है। साहित्य का संभवत एक भी ऐसा विपय नहीं होगा जिस पर इन विद्वानों ने अपनी कलम नहीं चलाई हो। एक और जहां उन्होंने धामिक एवं आगम साहित्य लिख कर मंडारों को भरा है वहां दूसरी और काव्य, चित्र, पुराण, कथा कोश आदि लिख कर अपनी विद्वाना की आप लगाई है। शावकों एवं सामान्य जन के हित के लिये उन आगार्यों एवं विद्वानों ने सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सूक्त्म से सूक्त्म विपय का विश्लेपण किया है। मिद्धान्त की उतनी गहन एवं सूक्त्म चर्चा शायद ही अन्य धर्मों में मिल सके। पूजा साहित्य लिखने में भी ये किसी से पीछे नहीं रहे। इन्होंने प्रत्येक विपय की पूजा लिखकर शावकों को उनको जीवन मे उतारने की प्रेरणा भी दी है। पूजाओं की जयमालाओं में कभी कभी इन विद्वानों ने जैन धर्म के मिद्धान्तों का बड़ी उत्तमता से वर्णन किया है। ग्रंथ सूची के इसही भाग में १४०० से अधिक पूजा ग्रंथों का उल्लेख हुआ है।

धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त लौकिक साहित्य पर भी इन आचार्यों ने खूद लिखा है। तीर्थ-करों एवं शलाकात्रों के महापुरुपों के पावन जीवन पर इनके द्वारा लिखे हुये वड़े वड़े पुराण एवं काव्य प्रथ मिलते हैं। प्रथ सूची में प्रायः सभी महत्वपूर्ण पुराण साहित्य के प्रथ आगये हैं। जैन सिद्वान्त एवं श्राचार शास्त्र के सिद्धान्तों को कथाश्रों के रूप में वर्णन करने में जैनाचार्यों ने श्रपने पारिडत्य का अच्छा प्रदरोन किया है। इन भंडारों मे इन विद्वानों द्वारा लिखा हुआ कथा साहित्य प्रचुर मात्रा में मिलता है। ये कथाये रोचक होने के साथ साथ शिक्ताप्रद भी हैं। इसी प्रकार व्याकरण, ज्योतिप एवं आयुर्वेद पर भी इन भंडारों में श्रच्छा साहित्य संग्रहीत है। गुटकों में श्रायुर्वेद के नुसखों का श्रच्छा संग्रह है। सैंकड़ों ही प्रकार के नुसखे दिये हुये हैं जिन पर खोज होने की अत्यधिक आवश्यकता है।। इस वार हमने फ़ागु, रासो एवं वेलि साहित्य के प्रंथों का ऋतिरिक्त वर्णन दिया है। जैन छाचार्यों ने हिन्दी मे छोटे छोटे सैकुड़ों रासो प्रंथ लिखे हैं जो इन भंडारों संप्रहीत हैं। श्रायेले ब्रह्म जिनदास के ४० से भी श्राधिक रासो प्रंथ मिलते हैं। जैन भंडारों मे १४ वीं शताब्दी के पूर्व से रासो यंथ मिलने लगते हैं। इसके अतिरिक्त अध्य-यत करने की दृष्टि से संप्रहीत किये हुये इन भंडारों मे जैनेतर विद्वानों के वाद्य, नाटक, कथा, ज्योतिए, श्रायुर्वेद, कोप, नीतिशास्त्र, व्याकरण आदि विषयों के ग्रंथों का भी अच्छा संकलन मिलता है। जैन विद्वानों ने कालिदास, माघ, भारवि त्रादि प्रसिद्ध कवियों के काव्यों का संकलन ही नहीं किया किन्तु इन पर विस्तृत टीकाये भी लिखी हैं। मंथ सूची के इसी भाग मे ऐसे कितने ही काव्यों का उल्लेख श्राया है। भंडारों में ऐतिहासिक रचनायें भी पर्याप्त संख्या में मिलती हैं। इनमें भट्टारक पट्टावितयां, भट्टारकों के छ्न्द, गीत, चौमासा वर्णन, वंशोत्पत्ति वर्णन, देहली के वादशाही एवं अन्य राज्यों के राजाओं के वर्णन एवं नगरों की वसापत का वर्णन मिलता है।

विविध भाषात्रों में रचित साहित्य

राजस्थान के शास्त्र मंडारों में उत्तरी भारत की प्रायः सभी भाषाओं के प्रंथ मिलते हैं। इनमें संस्कृत, प्राकृत, अपश्रंश, हिन्दी, राजस्थानी एवं गुजराती भाषा के प्रंथ मिलते हैं। संस्कृत भाषा में जैन विद्वानों ने बृहद् साहित्य लिखा है। आ० समन्तमद्र, अकलंक, विद्यानित्द, जिनसेन, गुण्मद्र, वद्ध मान भट्टारक, सोमदेव, वीरतन्दि, हेमचन्द्र, आशाधर, सकलकीर्ति आदि सैकड़ों आचार्य एवं विद्वान् हुये हैं जिन्होंने संस्कृत भाषा में विविध विषयों पर सैकड़ों प्रंथ लिखे हैं जो इन मंडारों में मिलते हैं। यही नहीं इन्होंने अजैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये काव्य एवं नाटकों की टीकायें भी लिखी हैं। संस्कृत भाषा में लिखे हुये यशरितलक चम्पू, वीरतन्दि का चन्द्रप्रभकाव्य, वद्ध मानदेव का वरांगचरित्र आदि ऐसे काव्य है जिन्हों किसी भी महाकाव्य के समकत्त विठाया जा सकता है। इसी तरह संस्कृत भाषा में लिखा हुआ जैनाचार्यों का दर्शन एवं न्याय साहित्य भी उच्च कीटि का है।

प्राकृत एवं अप्रभंश भाषा के चेत्र में तो केवल जैनाचार्यों का ही अधिकांशतः योगदान है। इन भाषाओं के अधिकांश प्रथ जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये ही मिलते हैं। प्रंथ सूची में अपभ्रंश में एवं प्राकृत भाषा में लिखे हुये पर्याप्त ग्रंथ आये हैं। महाकवि स्वयंभू, पुष्पदंत, अमरकीर्ति, नयनिद जैसे महाकवियों का अपभ्रंश भाषा में उच्च कोटि का साहित्य मिलता है। अब तक इस भाषा के १०० से भी अधिक ग्रंथ मिल चुके हैं और वे सभी जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हैं।

इसी तरह हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के प्रंथों के संबंध में भी हमारा यही मत है कि इन माणा क्रों की जैन विद्वानों ने खूब सेवा की है। हिन्दी के प्रारंभिक युग में जब कि इस भाषा में साहित्य निर्माण करना विद्वानों ने खूब सेवा की है। हिन्दी के प्रारंभिक युग में जब कि इस भाषा में साहित्य निर्माण करना विद्वानों था। जयपुर के इन अंडारों में हमें १३ वीं शताब्दी तक की रचनाएं मिल चुकी हैं। इनमें जिनदत्त चौपई सब प्रमुख है जो संवत् १३४४ (१२६७ ई) में रची गयी थी। इसी प्रकार भ० सकलकीर्ति, ब्रह्म जिनदास, भट्टारक मुवनकीर्ति, ज्ञानभूपण, शुभचन्द्र, ब्रीहल, ब्रूचराज, ठक्छरसी, पल्ह ब्रादि विद्वानों का वहुतसा प्राचीन साहित्य इन भंडारों में प्राप्त हुब्या है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी एवं राजस्थानी साहित्य के व्यतिरिक्त जैनेतर विद्वानों द्वारा लिखे हुये प्रंथों का भी यहां व्यच्छा संकलन है। प्रथ्वीराज कृत कृष्णकृतिमणी वेलि, विद्वारी सत्सई, कृशवदास की रिसकप्रिया, सूर एवं कवीर व्यादि किवियों के हिन्दीपद, जयपुर के इन भंडारों में प्राप्त हुये हैं। जैन विद्वान कभी कभी एक ही रचना में एक से व्यविक्त भाषाओं का प्रयोग भी करते थे। धर्मचन्द्र प्रवन्ध इस दृष्टि से ब्रच्छा उदाहरण कहा जा सकता है।

१. देखिये कासलीवालजी द्वारा लिखे हुये Jam Granth Bhandars in Rajsthan का चतुर्थ परिशिष्ट।

स्वयं ग्रंथकारों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों की मूल प्रतियां

जैन विद्वान् ग्रंथ रचना के अतिरिक्त स्वयं ग्रंथों की प्रतिलिपियां भी किया करते थे। इन विद्वानों द्वारा लिखे गये ग्रंथों की पाण्डुलिपियां राष्ट्र की घरोहर एवं अमूल्य सम्पित्ता है। ऐसी पाण्डु-लिपियों का प्राप्त होना सहज वात नहीं है लेकिन जयपुर के इन भंडारों में हमें स्वयं विद्वानों द्वारा लिखी हुई निम्न पाण्डुलिपियां प्राप्त हो चुकी हैं।

सूची की क्र. सं.	प्र ंथकार	प्रंथ नाम	लिपि संवत
585	कनककीर्ति के शिष्य सदाराम	पुरुपार्थ सिद्धयुपाय	७००४
१०४२	रत्नकरन्डश्रावकाचार भाषा	सदासुख कासलीवाल	१६२०
શ્હ	गोम्मटसार जीवकांड भाषा	पं. टोडरमल	१८ वीं शताब्दी
२६ २४	नाममाला	पं० भारामल्ल	१६४३
३६४२	पंचमंगलपाठ	खुशालचन्द काला	१८८८
४४३३	शीलरासा	जोधराज गोदीका	१७५०
¥३≒२	मिथ्यात्व खंडन	वस्तराम साह	१८३४
४७२⊏	गुटका	टेकचंद	
४६४७	परमात्म प्रकाश एवं तत्वसार	डाल्राम	-
६०४४	छीयालीस ठाणा	न्नहारायमल्ल	१६१३

गुटकों का महत्व

शास्त्र भंडारों में हस्तिलिखत पंथों के श्रातिरिक्त गुटके भी संग्रह में होते हैं। साहित्यिक रचनाश्रों के संकलन की दृष्टि से ये गुटके वहुत ही महत्वपूर्ण है। इनमें विविध विपयों पर संकलन किये हुए कभी कभी ऐसे पाठ मिलते हैं जो श्रम्थत्र नहीं मिलते। प्रंथ सूची में श्राये हुये बारह मंडारों में ५५० गुटके हैं। इनमें सबसे श्राधिक गुटके श्र मंडार में हैं। श्रिधकांश गुटकों में पूजा स्तोत्र एवं कथाये ही मिलती हैं लेकिन प्रत्येक मंडार में छुछ गुटके ऐसे भी मिल जाते हैं जिनमें प्राचीन एवं श्रक्ष पाठों का संग्रह होता है। ऐसे गुटकों का श्र, ज, ज एवं ट मंडार में श्रच्छा संकलन है। १२ वीं शताब्दी की हिन्दी रचना जिनदत्त चौपई श्र भंडार के एक गुटके में ही प्राप्त हुई है। इसी तरह श्रपश्रंश की कितनी ही कथायें, ब्रह्मजिनदास, श्रमचन्द, छीहल, ठक्छरसी, पल्ह, मनराम श्रादि प्राचीन कियायों की रचनायें भी इन्हीं गुटकों में मिली हैं। हिन्दी पदों के संकलन के तो ये एकमात्र स्रोत है। श्रिधकांश हिन्दी विद्वानों का पद साहित्य इनमें संकलित किया हुशा होता है। एक एक गुटके में कभी कभी तो २००, ४०० पद संग्रह किये हुये मिलते हैं। इन गुटकों में ही ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध होती है। पहाविलयां, छन्द, गीत, वंशाविल, वादशाहों के विवरण, नगरों की वसापत श्रादि सभी इनमें

ही मिलते हैं। प्रत्येक शास्त्र भंडार के व्यवस्थापकों का कर्ताव्य है कि वे अपने यहां के गुटकों की बहुत ही सम्हाल कर रखें जिससे वे नष्ट नहीं होने पावें क्योंकि हमने देखा है कि बहुत से भंडारों के गुटके विना वैष्टनों में बंधे हुये ही रखे रहते हैं और इस तरह धीरे धीरे उन्हें नष्ट होने की मानों आज्ञा देदी जाती है।

शास्त्र भंडारों की सुरत्ता के संबंध में :

राजस्थान के शास्त्र मंडार अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं इसिलये उनकी सुरत्ता के प्रश्न पर सबसे पहिलो विचार किया जाना चाहिये। छोटे छोटे गांवों में जहां जैनों के एक-एक दो-दो घर रह गये हैं वहां उनकी सुरत्ता होना अत्यधिक कठिन है। इसके अतिरिक्त करवां की भी यही दशा है। वहां भी जैन समाज का शास्त्र मंडारों की ओर कोई ध्यान नहीं है। एक तो आजकल छपे हुये प्रंथ मिलने के कारण हस्तिलखित प्रंथों की कोई स्वाध्याय नहीं करते हैं, दूसरे वे लोग इनके महत्व को भी नहीं सममते हैं। इसिलये समाज को हस्तिलिवत प्रंथों की सुरत्ता के लिये ऐसा कोई उपाय हूं दना चाहिये जिससे उनका उपयोग भी होता रहे तथा वे सुरत्तित भी रह सकें। यह तो निश्चित ही है कि छपे हुए प्रंथ मिलने पर इन्हें कोई पढ़ना नहीं चाहता। इसके अतिरिक्त इस ओर रुचि न होने के कारण आगे आने वाली सन्तित तो इन्हें पढ़ना ही भूल जावेगी। इसिलये यह निश्चित सा है कि भविष्य में ये प्रंथ केवल विद्यानों के लिये ही उपयोगी रहेंगे और वे ही इन्हें पढ़ना तथा देखना अधिक पसन्द करेंगे।

ग्रंथ भंडारों की सुरत्ता के लिये हमारा यह सुमाव है कि राजस्थान के अभी सभी जिलों के कार्यालयों पर इनका एक एक संग्रहालय स्थापित हो तथा उप प्रान्त के सभी शास्त्र भंडारों के ग्रंथ उन संग्रहालय में संग्रहात कर लिये जावें, किन्तु यदि किसी किसी उपजिलों एवं कस्वों में भी जैनों की अच्छी बस्ती है. तो उन्हीं स्थानों पर भंडारों को रहने दिया जावे। जिलेवार यदि संग्रहालय स्थापित हो जावें तो वहां रिसर्च स्कालर्स आसानी से पहुंच कर उनका उपयोग कर सकते हैं तथा उनकी सुरत्ता का भी पूर्णतः प्रवन्य हो सकता है। इसके अतिरिक्त राजस्थान में जयपुर, अलवर, भरतपुर, नागौर, कोटा, वृंदी, जोधपुर, वीकानेर, जैसलमेर, इंगरपुर, प्रतापगढ़, वांसवाडा आदि स्थानों पर इनके बढ़े वढ़ें संग्रहालय खोल दिये जावें तथा अनुसन्धान प्रेमियों को उन्हें देखने एवं पढ़ने की पूरी सुविधाएं दी जावे तो ये हस्तिलिखत के ग्रंथ फिर भी सुरिचित रह सकते हैं अन्यथा उनका सुरिचत रहना वढ़ा कठिन होगा।

जयपुर के भी कुछ शास्त्र भंडारों को छोड़कर अन्य भंडार कोई विशेष अच्छी स्थिति में नहीं हैं। जयपुर के अब तक हमने १६ भंडारों की सूची तैयार की है लेकिन किसी भंडार में वेष्टन नहीं हैं को कहीं विना पुढ़ों के ही शास्त्र रखें हुये हैं। हमारी इस असावधानी के कारण ही सैकड़ों प्रथ अपूर्ण हो गये हैं। यदि जयपुर के शास्त्र भंडारों के प्रथों का संग्रह एक केन्द्रीय संग्रहालय में कर लिया जावे तो उस

समय हमारा वह संप्राहालय जयपुर के दर्शनीय स्थानों में से गिना जावेगा। प्रति वर्ष सैंकड़ों की संख्या में शोध विद्यार्थी छावेंगे और जैन साहित्य के विविध विषयों पर खोज कर सकेंगे। इस संप्रहालय में शास्त्रों की पूर्ण सुरत्ना का ध्यान रखा जावे और इसका पूर्ण प्रवन्ध एक संस्था के छाधीन हो। आशा है जयपुर का जैन समाज हमारे इस निवेदन पर ध्यान देगा और शास्त्रों की सुरत्ना एवं उनके उपयोग के लिये कोई निश्चित योजना बना सकेगा।

ग्रंथ सूची के सम्बन्ध में

मंथ सूची के इस भाग को हमने सर्वांग सुन्दर बनाने का पूर्ण प्रयास किया है। प्राचीन एवं श्रज्ञात ग्रंथों की ग्रंथ प्रशस्ति एवं लेखक प्रशस्तियां दी गई हैं जिनसे विद्वानों को उनके कर्त्ता एवं लेखन-काल के सम्बन्ध मे पूर्ण जानकारी मिल सके। गुटकों में महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध होती है इसलिये वहुत से गुटकों के पूरे पाठ एवं शेष गुटकों के उल्लेखनीय पाठ दिये हैं। प्रंथ सूची के अन्त में प्रंथानु-क्रमणिका, प्रंथ एवं प्रंथकार, प्राम नगर एवं उनके शासकों का उल्लेख ये चार परिशिष्ट दिये हैं। प्रंथानुक्रमणिका को देखकर सूची में आये हुये किसी भी प्रंथ का परिचय शीघ्र माल्म किया जा सकता है क्योंकि बहुत से ग्रंथों के नाम से उनके विषय के सम्बन्ध में स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती। ग्रंथानुक्रम-णिका में ४२०० प्रंथों का उल्लेख आया है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रंथ सूची में निर्दिष्ट पं सभी मंथ मृल मंथ हैं तथा शेष उन्हीं की प्रतियां हैं। इसी प्रकार मंथ एवं मंथकार परिशिष्ट से एक ही प्रथकार के इस सूची में कितने प्रथ आये हैं इसकी पूर्ण जानकारी मिल सकती है। प्राम एवं नगरीं के परिशिष्ट में इन भंडारों में किस किस प्राम एवं नगरों में रचे हुये एवं लिखे हुये प्रंथ संप्रहीत हैं यह जाना जा सकता है। इसके अतिरिक्त ये नगर कितने प्राचीन थे एवं उनमें साहित्यिक गतिविधियां किस भकार चलती थी इसका भी हमे त्राभास मिल सकता है। शासकों के परिशिष्ट में राजस्थान एवं भारत के विभिन्न राजा, महाराजा एवं बादशाहों के समय एवं उनके राज्य के सम्वन्ध में कुछ २ परिचय प्राप्त हो जाता है। ऐतिहासिक तथ्यों के संकलन में इस प्रकार के उल्लेख वहुत प्रामाणिक एवं महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। प्रस्तावना में ग्रंथ भंडारों के संज्ञिप्त परिचय के अतिरिक्त अन्त में ४६ अज्ञात ग्रंथों का परिचय भी दिया गया है जो इन प्रंथों की जानकारी प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगा। प्रस्तावना के साथ में ही एक श्रज्ञात एवं महत्वपूर्ण प्रंथों की सूची भी दी गई है इस प्रकार प्रंथ सूची के इस भाग में श्रन्य सूचियों से। सभी तरह की श्रिधिक जानकारी देने का पूर्ण प्रयास किया है जिससे पाठक श्रिधिक से श्रधिक लाभ उठा सकें। प्रंथों के नाम, प्रथकर्त्ता का नाम, उनके रचनाकाल, भाषा श्रादि के साथ-साथ उनके श्रादि श्रन्त भाग पूर्णतः ठीक २ देने का प्रयास किया गया है फिर भी कमिया रहना स्वाभाविक है। इसिलये विद्वानों से हमारा उदार दृष्टि अपनाने का अनुरोध है तथा यदि कहीं कोई कमी हो तो हमें स्चित करने का कष्ट करें जिससे भविष्य में इन कमियों को दूर किया जा सके।

धन्यवाद समर्पण

हम सर्व प्रथम चेत्र की प्रबन्ध कारिणी कमेटी एवं विशेषतः उसके मंत्री महोदय श्री केशरतालजी वख्शी को! धन्यवाद देते हैं जिन्होंने प्रथ सूची के चतुर्थ भाग को प्रकाशित करवा कर समाज एवं जैन साहित्य की खोज करने वाले विद्यार्थियों का महान् उपकार किया है। चेत्र कमेटी द्वारा जो साहित्य शोध संस्थान संचालित हो रहा है वह सम्पूर्ण जैन समाज के निये अनुकरणीय है एवं उसे नई दिशा की ओर ले जाने वाला है। भविष्य में शोध संस्थान के कार्य का और भी विस्तार किया जावेगा ऐसी हमें आशा है। प्रथ सूची में उल्लिखित सभी शास्त्र मंडार के व्यवस्थापक महोदयों को एवं विशेषतः श्री नथमलजी वज, समीरमलजी झावड़ा, पूनमचंदजी सोगाणी, इन्दरलालजी पापड़ीवाल एवं सोहनलालजी सोगाणी, अनूपचंदजी दीवाण, मंवरलालजी न्यायतीर्थ, राजमलजी गोधा, प्रो० सुल्तानसिंहजी, कपूरचंदजी रांवका, आदि सज्जनों के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने हमें प्रथ मंडार की सूचियां वनाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया एवं अब भी समय समय पर मंडार के प्रथ दिखलाने में सहयोग देते रहते हैं। श्रद्धेय पं० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ के प्रति हम कृतझांजलियां अपित करते हैं जिनकी सतत प्रेरणा एवं मार्ग-दर्शन से साहित्योद्धार का यह कार्य दिया जा रहा है। हमारे सहयोगी भा० सुगनचंदजी को भी हम धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकते जिनका प्रथ सूची को तैयार करने में हमें पूर्ण सहयोग मिला है। जैन साहित्य सदन देहली के व्यवस्थापक पं परमानन्दजी शास्त्री के भी हम हदय से आभारी हैं। जिन्होंने सूची के एक भाग को देखकर आवश्यक सुमाव देने का कष्ट किया है।

अन्त में आदरणीय डा. वासुदेवशरणजी सा. अप्रवाल, अध्यत्त हिन्दी विभाग काशी विश्व-विद्यालय, वाराणसी के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने प्रंथ सूची की भूमिका लिखने की छुपा की है। डाक्टर सा. का हमें सदेव मार्ग-दर्शन मिलता रहता है जिसके लिये उनके हम पूर्ण कृतज्ञ हैं।

महावीर भवन, जयपुर दिनाक १०-११-६१

कस्तूरचंद कासतीवात श्रनूपचंद न्यायतीर्थ

प्राचीन एवं अज्ञात रचनाओं का परिचय

१ अमृतधर्मरस काव्य

श्रावक धर्म पर यह एक सुन्दर एवं सरस संस्कृत काव्य है। काव्य में २४ प्रकरण हैं भट्टारक गुरापचन्द्र इसके रचयिता हैं जिन्होंने इसे लोहट के पुत्र सांवलदास के पेठनार्थ लिखा था। स्वयं प्रथकार ने अपनी प्रशस्ति निम्न प्रकार लिखी हैं—

पृष्टे श्रीकु दक्क दाचार्य तत्पट्टे श्रीसहस्रकीर्तिः तत्पट्टे श्रीत्रमुवनकीर्तिदेव तत्पट्टे श्री गुरु-रत्नकीर्ति तत्पट्टे श्री ४गुणचन्द्रदेवभट्टविरचितमहाप्र थ कमैच्यार्थ लोहट सुत पंडित श्री सावलदास पठनार्थ।। काव्य की एक प्रति व भंडार में हैं। प्रति श्रग्रुद्ध है तथा उसमे प्रथम २ प्रष्टं नहीं हैं।

२ ब्राघ्यात्मिक गाथा

इस रचना का दूसरा नाम पट पद छप्पय है। यह भट्टारक लदमीचन्द्र की रचना है जो संभवतः भट्टारक सकुलकी ति की परम्परा में हुये थे। रचना अपभ्रंश भाषा में निवद्ध है तथा उच्चकोटि की है। इसमें संसार की नश्वरता का वड़ा ही सुन्दर वर्णन किया गया है। इसमें २८ पद हैं। एक पद नीचे देखिये—

विरत्ना जार्गात पुणी विरत्ना सेवंति अप्पणी सामि, विरत्ना ससहावर्णा परदव्व परम्मुहा विरत्ना। ते विरत्ना जार्ग अस्थि जिंकिव परदव्व ग इक्हिं, ते विरत्ना ससहाय करहिं रुद्द गिर्मिगींग पिछहिं।। विरत्ना सेविहें सामि गित्तु णिय देह वसंतर्थ, विरत्ना जार्णीहें अपंपु शुद्ध चैयण गुणवंतंथ। मगु पत्तगु दुल्लह तहिंवि सर्वय कुलु उत्तमु जियंख, जिगु एम पर्यपह णिसुंगि वुह गाह भिष्ण छप्पच कियर।।

इसकी एक प्रति अ भंडार में सुरिच्चत है। यह प्रति आचार्य नेमिचन्द्र के पढ़ने के लिये ज़िसी ग़ई थी।

रे श्रोरिधिनासीर प्रवन्ध

श्राराधनासार प्रबन्ध में मुनि प्रभाचंद्र विरचित संस्कृत कथाश्रों का संग्रह है। मुनि प्रभाचन्द्र देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे। किन्तु प्रभाचन्द्र के शिष्य थे मुनि पद्मनंन्द्र जिनके द्वारा विरचित 'वर्द्ध'- मान पुराण' का परिचय श्रागे दिया गया है। प्रभाचन्द्र ने प्रत्येक कथा के श्रन्त मे श्रपना परिचय दिया है। एक परिचय देखिये—

श्रीमूलसंघे वरभारतीये गच्छे वलात्कारगणेति रम्ये। श्रीकुं दकुन्दाख्यमुनीन्द्रवंशे जातं प्रभाचन्द्रमहायतीन्द्रः॥ देवेन्द्रचन्द्रार्कसम्मचितेन तेन प्रभाचन्द्रमुनीश्वरेण । श्रानुप्रहार्थ रिचतः सुवाक्यैः श्राराधनासारकथाप्रवन्धः ॥ तेनक्रमेणैव मयास्वशक्त्या श्लोकैःप्रसिद्धै श्चिनगद्यते च । मार्गेण कि भानुकरप्रकाशे स्वलीलया गच्छित सर्वलोके ॥

श्राराधनासार बहुत सुन्दर कथा प्रंथ है। यह श्रमीतक श्रप्रकाशित है।

४ कवि वल्लभ

क भंडार में हरिचरणदास कृत दो रचनायें उपलब्ध हुई हैं। एक विहारी सतसई पर हिन्दी गद्य टीका है तथा,दूसरी रचना किन वल्लभ है। हरिचरणदास ने कृष्णोपासक प्राणनाथ के पास विहारी सतसई का अध्ययन किया था। ये श्रीनन्द पुरोहित की जाति के थे तथा 'मोहन' उनके आश्रयदाता थे जो बहुत ही उदार प्रकृति के थे। विहारी सतसई पर टीका इन्होंने संवत् १८३४ में समाप्त की थी। इसके एक वर्ष पश्चात् इन्होंने किनवल्लभ की रचना की। इसमें काव्य के लच्नणों का वर्णन किया गया है। पूरे काव्य में २८४ पद्य हैं। संवत् १८४२ में लिखी हुई एक प्रति क भंडार में सुरचित है।

५ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा

देवीसिंह छावडा १८ वीं शताब्दी के हिन्दी भाषा के विद्वान थे। ये जिनदास के पुत्र थे। संवत् १७६६ में इन्होंने आवक माधोदास गोलालारे के आग्रह वश उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला की छन्दो- वद्ध रचना की थी। मूल प्रंथ प्राकृत भाषा का है और वह नेमिचन्द्र भंडारी द्वारा रचित है। कवि नरवर निवासी थे जहां कूर्म वंश के राजा छन्नसिंह का राज्य था।

उपदेशः सिद्धान्तरत्नमाला भाषा हिन्दी का एक सुन्दर प्रंथ है जो पूर्णतः प्रकाशन योग्य है। पूरे प्रंथ में १६८ पद्य हैं जो दोहा, चौपई, चौबोला, गीताछंद, नाराच, सोरठा आदि छन्दों में निवद्ध है। कवि ने प्रंथ समाप्ति पर जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है—

वातसल गोती सूचरो, संचई सकल बखान।
गोलालारे सुभमती, माधोदास सुजान॥१६०॥

चौपई

महाकठिन प्राकृत की वांनी, जगत मांहि प्रगटे सुखदानी। या विधि चिंता मनि सुभाषी, भाषा छंद मांहि ष्रभिलाषी।। श्री जिनदास तनुज लघु भाषा, खंडेलवाल सावरा साखा। देवीस्यंघ नाम सब भाषे, कवित मांहि चिंता मनि राखे।।

। गीतां छंद

श्री सिद्धान्त इपदेशमाला रत्तनगुत संद्रित करी। सब सुकृषि कंठा फरहु, भूषित सुमनसोसित विधिकरी।। जिम सूर्ध के श्रुकास सेती तम वितान विलात है। इसि पढें परमागम सुवांनी विदत रुचि श्रवदात है।।

दोहा

सुंखियांन नरंवरपती, छत्रस्यंघ श्रवतंस । कीरति वंत प्रवीन मित, राजत क्रूंग वंश ॥१६४॥ जांके रांज सुंचेन सीं, विनां ईति श्रक भीति । रच्यो प्रथ सिद्धान्त सुम, यह उपगार सुनीति ॥१६४॥ संबद्ध श्रक छ्एंनवे, संवत् विकमराज । भादव दुंदि एकांदसी, शनिंदिन सुविधि समाज ॥१६६॥ प्रथ कियो पूरन सुविधि नरवर नगर मंमार । जै सममी याको श्रारथ ते पावे भवपार ॥१६०॥

मीबोला

सार्वन वदि की तीज आदि सौ आरंभ्यो यह प्रथ । भादव वदि एकांदरिंग तर्क लौ परमंपुन्य की पंथ ।। एक मंहिता आठ दिना मैं कियौ समापत आंति । पदि गुनै प्रकट निर्तामंनि चोध सदा सुंख हांनि ।।१६८॥

ें इति **उपदेशसिद्धांतरत्नमाला** भाषा ॥

६ गोम्मटसार टीका

गोम्मटसार की यह संस्कृत टीका आर् स्कृत्भूपण द्वारा विरचित है। टीका के प्रारम्भ में लिपिकार ने टीकाकार के विषय में लिखा है वह निर्मेंन प्रकार है:—

"अथ गोर्म्मदंसार प्र'थ गांधी वैध टीका करणाटक भाषा में है उसके अनुसार सकलभूषण नैं संस्कृत टीका बनाई सो लिखिये है।

टीका का नास मन्द्रभवोधिका है जिसका दीकाकार ने संग्लाचरण में ही उल्लेख किया है:—

मुनि सिद्धं प्रण्म्याहं नेमिचन्द्रजिनेरव्दं। टीकां गुन्मटसारस्य छुर्वे मृद्र्यवीधिकां ॥१॥

लेकिन अभयचन्द्राचार्य ने जो गोम्मटसार पर संस्कृत दीकी लिखी थी उसका नाम भी मन्द-प्रवोधिका ही है। 'मुख्तार साह्व ने उसको गाथा नं ० ३५६ तक ही पाया जाना लिखा है, लेकिन जयपुर के 'क' भएडार में संप्रहीत इस प्रति में आ० सकत भूषण दिया है। ईसकी विद्वानों द्वारा विस्तृत खोज होनी चाहिये। टीका के अन्त में जो- टीकाकाल लिखा है वह संवत् १४७६ का है।

> विक्रमादित्यभूपस्य विख्यातो च मनोहुरै । दशपंचशते वर्षे घड़ीभः संयुत्तस्वति (१५०६)

टीका का आदि भाग निम्न प्रकार है:-

श्रीमद्प्रतिहतप्रभावस्याद्वादशासन-गुहात्रंतरिनवासि प्रवादिमद्वांधिसंधुरिसहायमानसिंहनंदि

मुनींद्राभिनंदित गंगवंशललामगज सर्व्रह्माद्यनेकंगुणनामचेय-श्रीमद्रामल्लादेव महावल्लभ—महामात्य
पद्विराजमान रण्रंगमल्लसहाय पराक्रमगुण्रेत्नभूषणं सम्यंक्रत्यरनिर्व्लयादिविविधगुणनाम समासादितकीर्तिकंतश्रीमच्चामुं छ्रायं भव्यपुं छरीक् द्रव्यांचुयोगप्रश्नांचुरूपरूपं महाकर्मप्राभृतसिद्धान्त
जीवस्थानाख्यप्रथमखंडार्थसंप्रहं निर्मान्यसारनामघ्रेयं पंचसंप्रहंशास्त्रं प्रारम समस्तसेद्धान्तिकचूडामणि
श्रीमन्नेमिचंद्रसेद्धान्तचक्रवृति तद् ग्रीमटसारप्रथमावयवभूतं जीवकांडं विरच्चयस्तत्रादीमलगालनपुण्यावादित
शिष्टाचारपरिपालननास्तिकतापरिहारादिक्षलर्जननसंसर्थ निशिषदेष्टदेवतानमस्काररूपधर मंगलपूर्वक
प्रकृतशास्त्रकथनप्रतिज्ञासूच्वकं गाथा सूचकं कथ्रयति ।

अन्तिम भाग

नत्वा श्रीवर्ड मानांतान् ष्ट्रप्रभादि जिनेश्वरात् ।

धर्ममार्गोपदेशत्वात् संन्विकल्याणदायिकान् ॥ १॥
श्रीचन्द्राद्रिप्रभातं च नत्वा स्याद्धाददेशकं।

श्रीमद्र्युम्मटसारस्य छुट्वे शस्तां प्रशस्तिकां ॥ १॥
श्रीमतः शकराजस्य शाके वर्त्तात सुन्दरे।

चतुर्दशशते चिल्यति च मनोहरे।

दश्यंचशते वर्षे षड्भि संयुत्तस्यती॥ १॥

दश्यंचशते वर्षे षड्भि संयुत्तस्यती॥ १॥

१. देखिये पुरातन जैन विक्यि सूची प्रस्ताविंग पत्र ६६ ! 🕡

कार्तिके चाशिते पन्ते त्रयोदश्यां शुभ दिने। शक च हस्तनज्ञे योगो च प्रीति नामनि ।। ४ ।। श्रीमच्छ्रीमूलसंघे च नंद्याम्राये लसद्गर्गे। वलात्कारे जगन्नमे गच्छे सारस्वताभिषे॥६॥ श्रीमत्कु'दक्क'दाख्य सूरेरन्वयके भवत्। पद्मादिनंदि दित्याख्यो भट्टारकविचत्तरणः ॥ ७॥ तत्पट्टांभोजमात्तर्डः चंद्रांतश्च शुभादिक। तत्पद्स्योभवच्छीमान् जिनचंद्राभिधोगणी ॥ ५॥ तत्पट्टे सद्गुर्णेयु को भट्टारकपदेश्वरः। पंचाचाररतो नित्यं प्रभाचन्द्रो जितेन्द्रियः ॥ ६॥ तत्रिाष्यो धर्मचन्द्रश्चं तत्क्रमां बुधि चंद्रमा । तदाम्नाये भवत भव्यास्ते वर्ण्यते यथाक्रमं ॥१०॥ पुरे नागपुरे रम्ये राजी महाद्खानके। पाटणीगोत्रके धुर्ये खंग्डेलवालान्वयभूपणे ॥११॥ दानादिभिगु रायु कः ल्णानामविचन्राः। तस्य भार्या भवत् शस्ता लूगाश्री चाभिधानिका ॥१२॥ तयोः पुत्रः समाख्यातः पर्वताख्यो विचारकः। राज्यमान्यो जनैः सेव्यः संघंभारघुरंघर ॥१३॥ तस्य भार्यास्ति सत्साध्वी पर्वतश्रीति नामिका। शीलादिगुणसंपन्ना पुत्रत्रयसमन्विताः ॥१४॥ प्रथमो 'जिनदासाख्यो गृहभारधुरेंधरः। तस्य भार्या भवत्साध्वी जौणादेयविचन्नणा ॥१४॥ दानादिगुणसंयुक्ता द्वितीया च सुहागिणी। प्रथमायास्तु पुत्रः, स्यात् तेजपालो गुणान्वितो ॥१६॥ द्वितीयी देवदत्ताख्यो गुरुभक्तः प्रसन्नधीः। पतिव्रता गुर्गेयु का भार्यादेवासिरीति च ॥१७॥ पितुर्भको गुग्यैयु को होलानामातृतीयकः। होलादेया च तद्भार्या होलश्री द्वितीयिका ॥१८॥ लिखायि दत्तं निखिले सुभक्तिः। सिद्धान्तशास्त्रमिदं हि ग्रम्मटं॥

धर्मादिचंद्राय स्वकर्महानये। हितोक्तये श्री सुखिने नियुक्तये।।१६।।

७ चन्दनमलयागिर कथा

चन्दनमलयागिरि की कथा हिन्दी की प्रेम कथाओं में प्रसिद्ध कथा है। यह रचना मुनि भद्र-सेन की है जिसका वर्णन उन्होंने निम्न प्रकार किया है—

मम उपकारी परमगुरु, गुण अत्तर दातार, बंदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार ॥३॥ रचना की भाषा पर राजस्थानी का पूर्ण प्रभाव है। कुछ पद्य पाठकों के अवलोकनार्थ नीचे दिये जा रहे हैं:—

रचना में कहीं कही गाथायें भी उद्धृत की हुई हैं। पद्य संख्या १८८ है। रचनाकाल एवं लेखन काल दोनों ही नहीं दिये हुये हैं लेकिन प्रति की प्राचीनता की दृष्टि से रचना १० वीं शताब्दी की होनी चाहिये। भाषा एवं शैली की दृष्टि से रचना सुन्दर है। श्री मोतीलाल मेनारिया ने इसका रचना काल सं. १६७५ माना है। इसका दूसरा नाम कलिकापंचमी कथा भी मिलता है। अभीतक भद्रसेन की एक ही रचना उपलब्ध हुई है। इस रचना की एक सचित्र प्रति अभी हाल में ही हमें भट्टारकीय शास्त्र भंडार हूं गरपुर में प्राप्त हुई है।

८ चारुदत्त चरित्र

यह कल्याणकीर्ति की रचना है। ये मट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में होने वाले मुनि देव-कीर्ति के शिष्य थे। कल्याणकीर्ति ने चारुद्त्त चरित्र को संवत् १६६२ में समाप्त किया था। रचना में

१. राजस्थानी भाषा ग्रीर साहित्य पृष्ठ सं० १९१

२ राजस्थान के जैन शास्त्र भंडारो की ग्रंथ सूची भाग २ पृ० सं० २३६

सेठ चारुद्त्त के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। रचना चौपई एवं दूहा छन्द में है लेकिन राग भिन्न भिन्न है। इसका दूसरा नाम चारुद्त्तरास भी है।

कल्याग्यकीर्ति १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। अब तक इनकी पार्श्वनाथ शासोः (सं० १६६७) बावनी , जीराविल पार्श्वनाथ स्तवनः (सं०) नवग्रह स्तवन (सं०) तीर्थकर विनती (सं० १७२३) आदी- श्वर बधावा आदि रचनार्थे मिल चुकी है।

६ चौरासी जातिजयमाल

ब्रह्म जिनदास १४ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध निद्वान् थे। ये संस्कृत एवं हिन्दी दोनों के ही प्रगाढ निद्वान थे तथा इन दोनों ही भाषाओं में इनकी ६० से भी अधिक रचनायें उपलब्ध होती हैं। जयपुर के इन भंडारों में भी इनकी अभी कितनी ही रचनायें मिली हैं जिनमें से चौरासी जातिजयमाल का वर्णन यहां दिया जा रहा है।

चौरासी जातिजयमाल में माला की बोली के उत्सव में सम्मिलित होने वालीं प्रथ जैन जातियों का नामोल्लेख किया है। माला की बोली वढाने में एक जाति से दूसरी जाति वाले व्यक्तियों में वडी उत्सुकता रहती थी। इस जयमाल में सबसे पहिले गोलालार अन्त में चतुर्थ जैन श्रावक जाति का उल्लेख किया गया है। रचना ऐतिहासिक है एवं इसकी भाषा हिन्दी (राजस्थानी) है। इसमें इल ४३ पद्य हैं। ब्रह्म जिनदास ने जयमाल के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है।

ते समिकत वंतह वहु गुण जुत्तहं, माल सुणो तहमे एकमि । ब्रह्म जिनदास भारं विवुध प्रकासे, पढई गुणे जे धम्म धीन ॥४३॥

इसी चौरासी जाति जयमाला समाप्त।

इति जयमाल के आगे चौरासी जाति की दूसरी जयमाल है जिसमें २६ पद्य हैं और वह संभवतः किसी अन्य कवि की है।

१० जिनदत्तचौपई

जिनदत्त चौपई हिन्दी का श्रादिकालिक काव्य है जिसको रल्ह कवि ने संवत् १३४४ (सन् १२६७) भादवा सुदी पंचमी के दिन समाप्त किया था।

₹.	राजस्थान	जैन शास्त्र भंडारो की ग्रंथ सूची	भाग	२	वृष्ठ	७४	
₹.		77	"		98	१०६	
₹.	37	77	भाग	₹	वृष्ठ	१४१	
٧.	"	59			পুছ	१५२	

हणस्त्राष्ट्रणोकस्तृणुक्तरम्बनुहज्ञण्य कर्ष्यारहिक्डा तास्याज्ञ इञ्जवणस्या ध्यरपरमाप्रतामाला समार मुकलापुर तात्राहि सवश्त्रमिनसीयलेक नवका सिताल रागतिक्रवणम् इतिषद् अपियमारिए जागणात्मका कहाण बाहितिकावरप्य पड्डा वा गराय सामियन शिप्रहात कराईक के इस्ए अप्रहा ति ए दत्य वंग्रहेव प्राच्या इंग्रहें वालक विश्व त्रमंत्राति । वार इस्रवनगतिष्य अन्तिया ग्रीतकः रिक्तवर्राक्त विकारमार्गाम् वस्त्राम् वस्त्राम् वस्त्राम् वस्त्राम् वस्त्राम् वस्त्राम् वस्त्राम् वस्त्राम् वस्त्राम् वस्त्र विशिष्ट रिक्न किया है जिसे के बहु इका वृज्ञा स्थानिक विकास स्थानिक विकास स्थानिक विकास स्थानिक विकास स्थानिक विकास स्थानिक स्थान

रल्ह किंव द्वारा संवत् १३४४ में रिचत हिन्दी की अति प्राचीन कृति जिनदत्त चौपई का एक चित्रः— पान्डुलिपि जयपुर के दि० जैन मन्दिर पाटोदी के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है। (इसका विस्तृत परिचय प्रतावना की प्रष्ट-संख्या ३० पर देखिये)

4. E.



म्सरपरं राजमणने इरिजीवे हे जीवेगा श्रीयां के मी वीप गर्दे मिन के बहुति के बहुति ल्याकेन विदेकति हत्य भारतामा गाँग लेकिनके किमके दिन है किसे के ति केन ति केन हैं है द्रहर्षकरुँ विद्वेद्दीकामिन भाषान क्योपिन रणोकिति।विभीन रनके वर्षकेसायन स्व विक्रोग में भिन्तिन एका चन श्रमण विकास विकास विकास में अपने में विकास के किया है। णक प्रवाहर् तरित मोनेहरो नेवनी वेकस्त्रेन ने नेव मोने मोने हो है। है कि के कि प्रवाहर के ले सम्बद्धः गरिनाकियकेषण्यः । त्रत्वणग्रद्धः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थान राजी स्थानः स्थानाकित्वक्रसम्बद्धः स्थानः स्थान न दाल इतिहासी सहस्र के में रश्चातम् जन्यभ्यस्यके र जन ज्यानी क्रारी का क्रारा के बेचन वारिका क्रिकेट के बेचन क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट भावता है के सम्बद्धां करें के स्वर्ध क्षीबीएडी।कोशिक्रक्रिक्करेड एवं एवं प्रतिक्रकारी

१८ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध साहित्य सेवी महा पंडित टोडरमलजी द्वारा राचित एवं लिखित गोम्मटसार की मूल पाग्डुलिंपि का एक चित्र । यह प्रन्थ जयपुर के दि० जैन मंदिरपाटोदी के शास्त्र भग्डार में संप्रहीत है। (सूची क्र सं. ६७ वे सं. ४०३)



संवत् तेरहसे चउवरणे, भादव सुदिपंचमगुरु दिरणे। स्वाति नखत्त चंदु तुलहती, कवइ रल्हु पणवइ सुरसती।।२८।।

कृति जैन धर्मावलम्बी थे तथा जाति से जैसवाल थे। उनकी माता का नाम सिरीया तथा पिता का नाम आते था।

> जइसवाल कुलि उत्तम जाति, वाईसइ पाडल उतपाति। पंचऊलीया त्रातेकउपूतु, कवइ रल्हु जिणदृत्तु चरित्तु॥

जिनदत्त चौपई कथा प्रधान काव्य है इसमें कविने अपनी काव्यत्व शक्ति का अधिक प्रदर्शन न करते हुये कथा का ही ख़ुन्दर रीति से प्रतिपादन किया है। प्रंथ का आधार पं. लाखू द्वारा विरचित जिल्लायत्तचरिड (सं १२७४) है जिसका उल्लेख स्वयं ग्रंथकार ने किया है।

मइ जोयर जिनदत्तपुराणु, लाखू विरयर श्रइसू पमाण ॥

ग्रंथ निर्माण के समय भारत पर अलाउद्दीन खिलजी का राज्य था। रचना प्रधानतः चौपई छन्द में निवद्ध है किन्तु वस्तुवंध, दोहा, नाराच, अर्धनाराच आदि छन्दों का भी कहीं २ प्रयोग हुआ है। इसमें कुल पद्य ४४४ हैं। रचना की भाषा हिन्दी है जिस पर अपभ्रंश का अधिक प्रभाव है। वैसे भाषा सरल एवं सरस है। अधिकांश शब्दों को उकारान्त बनाकर प्रयोग किया गया है जो उस समय की परम्परा सी मालूम होती है। काव्य कथा प्रधान होने पर भी उसमें रोमांचकता है तथा काव्य में पाठकों की उत्सुकता बनी रहती है।

काव्य में जिनदत्त मगध देशान्तर्गत वसन्तपुर नगर सेठ के पुत्र जीवदेव का पुत्र था। जिनेन्द्र भगवान की पूजा श्रर्चना करने से प्राप्त होने के कारण उसका नाम जिनदत्त रखा गया था। जिनदत्त व्यापार के लिये सिंघल श्रादि द्वीपों में गया था। उसे व्यापार में श्रतुल लाम के श्रातिरिक्त वहां से उसे श्रनेक श्रालौकिक विद्यार्थे एवं राजकुमारियां भी प्राप्त हुई थीं। इस प्रकार पूरी कथा जिनदत्त के जीवन की सुन्दर कहानियों से पूर्ण है।

११ ज्योतिषसार

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है ज्योतिषसार ज्योतिप शास्त्र का ग्रंथ है। इसके रचिता हैं श्री कृपाराम जिन्होंने ज्योतिष के विभिन्न ग्रंथों के आधार से संवत् १७४२ में इसकी रचना की थी। कि के पिता का नाम तुलाराम था और वे शाहजहांपुर के रहने वाले थे। पाठकों की जानकारी के लिये ग्रंथ में से दो उद्धरण दिये जा रहे हैं:—

केदरियों चौथो भवन, सपतमदसमौं जान। पंचम श्ररु नोमौ भवन, येह त्रिकोण वखान ॥६॥ तीजो षसटम ग्यारमों, घर दसमों कर लेखि। इनकौ उपत्रै कहत है, सर्वग्रंथ में देखि॥७॥ वरष लग्यो जा श्रंस में, सोह दिन चित धारि। या दिन उतनी घंडी, जु पल वीते लग्नविचारि ॥४०॥ लगन लिखे ते गिरह जो, जा घर वैठो श्राय। ता घर के मूल सुफल को कीजे मित बनाय ॥४१॥ १२ ज्ञानाण्य दीका

श्राचार्य शुभचन्द्र विरचित ज्ञानाण्य संस्कृत भापा का प्रसिद्ध प्रन्थ है। स्वाध्याय करने वालों का प्रिय होने के कारण इसकी प्रायः प्रत्येक शास्त्र भंडार में हस्तिलिखित प्रतियां उपलब्ध होती है। इसकी एक टीका विद्यानिद के शिष्य श्रुतसागर द्वारा लिखी गई थी। ज्ञानार्णव की एक श्रन्य मंस्कृत टीका जयपुर के श्र भंडार में उपलब्ध हुई है। टीकाकार है पं. नयविलास। उन्होंने इस टीका को मुगल सम्राट श्रक्वर जलालुद्दीन के राजस्य मंत्री टोडरमल के मुत रिपिदास के श्रवणार्थ एवं पठनार्थ लिखी थी। इसका उल्लोख टीकाकार ने प्रन्थ के प्रत्येक श्रध्याय के श्रंत में निम्न प्रकार किया है:—

इति शुभचन्द्राचार्यविरचिते ज्ञानार्णवमूलसूत्रे योगप्रदीपाधिकारे पं नयविलासेन साह पासा तत्पुत्र साह टोडर तत्पुत्र साह रिपिदासेन स्वश्रवणार्थं पंडित जिनदासोद्यमेन कारापितेन द्वादशभावना प्रकरण द्वितीयः।

टीका के प्रारम्भ में भी टीकाकार ने निम्न प्रशस्ति लिखी है-

शास्वत् साहि जलालदीनपुरतः प्राप्त प्रतिष्ठोदयः । श्रीमान् सुगलवंशशारद्-शशि-विश्वोपकारोद्यतः । नाम्ना कृष्ण इति प्रसिद्धिरभवत् सन्नात्रधर्मोत्रतेः । तन्मंत्रीश्वर टोडरो गुण्युतः सर्वाधिकाराधितः ॥६॥ श्रीमत् टोडरसाह पुत्र निपुणः सहानचितामणिः । श्रीमत् श्रीरिपिदास धर्मनिपुणः प्राप्तोन्नतिस्वश्रिया । तेनाहं समवादि निपुणो न्यायाद्यलीलाह्वयः । श्रोतुं वृत्तिमता परं सुविषया ज्ञानार्णवस्य स्फूटं ॥७॥

उक्त प्रशस्ति से यह जाना जा सकता है कि सम्राट अकत्रर के राजस्य मंत्री टोडरमल संभवतः जैन थे। इनके पिता का नाम साह पाशा था। स्ययं मंत्री टोडरमल भी कवि थे और इनका एक भजन "अब तेरो मुख देखूं जिनंदा" जैन भंडारों में कितने ही गुटको मे मिलता है।

नयविलास की संस्कृत टीका का उल्लेख पीटर्सन ने भी किया है लेकिन उन्होंने नामोल्लेख के अतिरिक्त और कोई परिचय नहीं दिया है। पं. नयविलास का विशेष परिचय अभी खोज का विषय है। १३ गोमिणाह चरिए—महाकवि दामोदर

महाकिव दामोद्र कृत ऐमिए।ह चरिए श्रपश्रंश भाषा का एक सुन्द्र काव्य है। इस काव्य में पांच संधियां हैं जिनमे भगवान नेमिनाथ के जीवन का वर्णन है। महाकिव ने इसे संवत् १२८७ में समाप्त किया था जैसा निन्न दुवई छन्द (एक प्रकार का दोहा) में दिया हुआ है:— वारहसयाई सत्तिसयाई, विक्कमरायहो कालहं। पमारहं पट्ट समुद्धरणु, ग्ररवर देवापालहं ॥१४४॥

दामोदर मुनि सूरसेन के प्रशिष्य एवं महामुनि कमलभद्र के शिष्य थे। इन्होंने इस प्रंथ की पंडित रामचन्द्र के आदेश से रचना की थी। प्रंथ की भाषा मुन्दर एवं लितत है। इसमें घत्ता, दुवई, वस्तु इंद का प्रयोग किया गया है। कुल पद्यों की संख्या १४४ है। इस काव्य से अपभ्रंश भाषा का शनै: हिन्दी भाषा में किस प्रकार परिवर्तन हुआ यह जाना जा सकता है।

इसकी एक प्रति न भंडार में उपलब्ध हुई है। प्रति श्रपूर्ण है तथा प्रथम ७ पत्र नहीं हैं। प्रति सं० १४८२ की लिखी हुई है।

१४ तत्त्रवर्णन

यह मुिन शुभचन्द्र की संस्कृत रचना है जिसमें संज्ञिप्त रूप से जीवादि द्रव्यों का लज्ञ्य विश्वत है। रचना छोटी है और उसमें केवल ४१ पद्य हैं। प्रारम्भ में प्रंथकर्त्ता ने निम्न प्रकार विषय वर्णन करने का उल्लेख किया है:—

तत्त्वातत्वस्वरूपज्ञं सार्व्यं सर्व्यगुणाकरं । वीरं नत्वा प्रवच्येऽहं जीवद्रव्यादिलच्चगां ॥१॥ जीवाजीवमिदं द्रव्यं युग्ममाहु जिनेश्वरा । जीवद्रव्यं द्विधातत्र शुद्धाशुद्धविकल्पतः ॥२॥

रचना की भाषा सरल है। ग्रंथकार ने रचना के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है:—

श्री कंजकीर्त्तिसह वैः शुभेंदुमुनितेरिते । जिनागमानुसारेण सम्यक्तवव्यक्ति-हेतवे ॥४०॥

मुनि शुभचन्द्र भट्टारक शुभचन्द्र से भिन्न विद्वान हैं। ये १० वीं शताब्दी के विद्वान थे। इनके द्वारा लिखी हुई अभी हिन्दी भाषा की भी रचनायें मिली हैं। यह रचना न भंडार में संब्रहीत है। यह आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी।

१५ तन्वार्थस्त्र भाषा

प्रसिद्ध जैनाचार्य उमास्वामि के तत्त्वार्थसूत्र का हिन्दी पद्यमें अनुवाद वहुत कम विद्वानों ने किया है। अभी क भंडार में इस प्रंथ का हिन्दीपद्यानुवाद मिला है जिसके कत्ती हैं श्री छोटेलाल, जो अलीगढ प्रान्त के में हूगांव के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम मोतीलाल था। ये जैसवाल जैन थे तथा काशी नगर में आकर रहने लगे थे। इन्होंने इस प्रंथ का पद्यानुवाद संवत् १६३२ में समाप्त किया था।

. छोटेलाल हिन्दी के अच्छे विद्वान थे। इनकी अब तक तत्त्वार्थसूत्र भाषा के अतिरिक्त और रचनायें भी उपलब्ध हुई हैं। ये रचनायें चौवीस तीर्थंकर पूजा, पंचपरमेश्री पूजा एवं नित्यनियमपूजा हैं। तत्त्वार्थ सूत्र का आदि भाग निम्न प्रकार है।

मो्स की राह बनावत जे। अरु कर्म पहाड करें चकच्रा, विश्वसुतत्त्व के ज्ञायक है ताही, लिब्ध के हेत नमी परिपूरा। सम्यग्दर्शन चरित ज्ञान कहे, याहि मारग मोस्न के सूरा, तत्व की अर्थ करी सरधान सी सम्यग्दर्शन मजहूरा।।१।।

कवि ने जिन पद्यों में श्रपना परिचय दिया है वे निम्न प्रकार हैं:-

जिलो अलीगढ जानियो मेड्रगाम सुधाम। मोतीलाल सुपुत्र है छोटेलाल सुनाम।।१।। जैसवाल कुल जाति है श्रेणी वीसा जान। वंश इप्याक महान में लयो जन्म भू आन।।।। काशी नगर सुआय के सैनी संगति पाय। उदयराज भाई लखो सिखरचन्द गुण काय।।३।। छंद भेद जानों नहीं और गणागण सोय। केवल भिक्त सुधर्म की वसी सुद्रदय मोय।।।।। ता प्रभाव या सूत्र की छंद प्रतिज्ञा सिद्धि। भाई सुभिव जन सोधियो होय जगत प्रसिद्ध।।।।। मंगल श्री अर्हत है सिद्ध साध चपसार। तिन नुति मनवच काय यह मेटो विघन विकार।।।।। छंद बंध श्री सूत्र के किये सु बुधि अनुसार। मूलगंथ कूं देखिके श्री जिन हिरदे धारि।।।।। कारमास की अप्टमी पहलो पन्न निहार। अठसटि ऊन सहस्र दो संवत रीति विचार।।।।।।

इति छंदबद्धसूत्र संपूर्ण। संवत् १६४३ चैत्र कृष्णा १३ वृघे।

१६ दर्शनसार भाषा

नथमल नाम के कई विद्वान हो गये हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध १८ वीं शताब्दी के नथमल विलाला थे जो मूलतः श्रागरे के निवासी थे किन्द वाद में हीरापुर (हिएडौन) श्राकर रहने लगे थे। उक्त विद्वान के श्रातिरिक्त १६ वीं शताब्दी में दूसरे नथमल हुये जिन्होंने कितने ही ग्रंथों की भाषा टीका लिखी। दर्शनसार भाषा भी इन्हीं का लिखा हुश्रा है जिसे उन्होंने संवत् १६२० में समाप्त किया था। इसका उल्लेख स्वयं कवि ने निम्न प्रकार किया है।

बीस त्र्यधिक उगणीस सै शात, श्रावण प्रथम चोथि शनिवार । कृप्णपत्त में दर्शनसार, भाषा नथमल लिखी सुधार ॥५६॥

दर्शन्सार मूलतः देवसेन का प्रंथ है जिसे उन्होंने संवत् ६६० में समाप्त किया था। नथमल ने इसी का पद्यानुवाद किया है।

नथमल द्वारा लिखे हुये श्रन्य ग्रंथों में महीपालचरितभाषा (संवत् १६१८), योगसार भाषा (संवत् १६१८), परमात्मप्रकाश भाषा (संवत् १६१६), रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा (संवत् १६२०), षोडश-

कारणभावना भाषा (संवत् १६२१) ऋष्टाहिकाकथा (संवत् १६२२), रत्नत्रय जयमाल (संवत् १६२४) उल्लेखनीय हैं।

१७ दर्शनसार भाषा

१८ वीं एवं १६ वीं शताब्दी में जयपुर में हिन्दी के वहुत विद्वान् होगये हैं। इन विद्वानों ने हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए सैंकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत के प्रंथों का हिन्दी गद्य एवं पद्य में अनुवाद किया था। इन्हीं विद्वानों में से पं० शिवजीलालजी का नाम भी उल्लेखनीय है। ये १८ वीं शताब्दी के विद्वान थे और इन्होंने दर्शनसार की हिन्दी गद्य टीका संवत् १८२३ में समाप्त की थी। गद्य में राजस्थानी शैली का उपयोग किया गया है। इसका एक उदाहरण देखिये:—

सांच कहतां जीव के उपिरलोक दूखों वा तूपों। सांच कहने वाला तो कहै ही कहा जग का भय किर राजदंड छोडि देता है वा जूंवा का भय किर राजमनुष्य कपडा पटिक देय है ? तैसे निंदने वाले निंदा, स्तुति करने वाले स्तुति करों, सांच वोला तो सांच कहै।

१८ धर्मचन्द्र प्रवन्ध

धर्मचन्द्र प्रवन्ध में मुिन धर्मचन्द्र का संचित्त परिचय दिया गया है। मुिन, भट्टारकों एवं विद्वानों के सम्बन्ध में ऐसे प्रवन्ध बहुत कम उपलब्ध होते हैं इस दृष्टि से यह प्रवन्ध एक महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक रचना है। रचना प्राकृत भाषा में है विभिन्न छन्दों की २० गाथायें हैं।

प्रवन्ध से पता चलता है कि मुनि धर्मचन्द्र भ० प्रभाचन्द्र के शिष्य थे। ये सकल कला में प्रवीण एवं त्रागम शास्त्र के पारगामी विद्वान थे। भारत के सभी प्रान्तों के श्रावकों में उनका पूर्ण प्रमुत्व था और समय २ पर वे त्राकर उनकी पूजा किया करते थे।

प्रवन्ध की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के प्रष्ट ३६६ पर दी हुई है।

१६ धर्मविलास

धर्मविलास ब्रह्म जिनदास की रचना है। किव ने अपने आपको सिद्धान्तचक्रवर्ति आ० नेसि-चन्द्र का शिष्य लिखा है। इसलिये ये भट्टारक सकलकीर्ति के अनुज एवं उनके शिष्य प्रसिद्ध विद्वान व्र० जिनदास से भिन्न विद्वान हैं। इन्होंने प्रथम संगलाचरण में भी आ० नेमिचन्द्र की नमस्कार किया है।

भव्वकमलमायंडं सिद्धजिण तिहुपनिंद सद्पुञ्जं । नेसिशसिं गुरुवीरं पण्मीय तियशुद्धभोवमह्यां ॥१॥

प्रथ का नाम धर्मपंचिंवशितका भी है। यह प्राक्तत भाषा में निवद्ध है तथा इसमें केवल २६ गाथायें हैं। प्रथ की अन्तिम पुष्पिका निस्न प्रकार है। इति त्रिविधसैद्धान्तिकचक्रवर्त्याचार्यश्रीनिमिचन्द्रस्य प्रियशिष्यव्यव्याजनदासिवरिचतं धर्मपंच-विंशतिका नाम शास्त्रसमाप्तम् ।

२० निजामिं

यहाँ प्रसिद्ध विद्वान् ब्रह्म जिनतास की कृति है जो जयपुर के 'क' भएडार में उपलब्ध हुई है। रचना छोटी है और उसमें केवल ४४ पद्य हैं। इसमें चौबीस तीर्णंकरों की म्नुति एवं घ्यन्य शलाका महापुरुपों का नामोल्लेख किया गया है। रचना स्तुनि परक होते हुये भी घ्राध्यात्मिक है। रचना का घ्रादि घ्यन्त भाग निम्न प्रकार है:—

श्री सकल जिनेश्वर देव, हूं तहा पाय करू मेय।
हवे निजामिण कहु सार, जिम ज्ञपक तरे मंमार॥१॥
हो ज्ञपक सुणे जिनवाणि, मंसार प्रिथर तृ जािण।
इहां रह्या निंहं कोई थीर, हवे मन दृढ करो निज धीर॥२॥
ग्या त्रादिश्वर जगीसार, ते जुगला धर्म निवार।
ग्या त्राजित जिनेश्वर चंग, जिने कियो कर्म नं। भंग॥३॥
ग्या संभव भव हर स्वामी, ते जिनवर मुक्ति हि गामी।
ग्या सुमति सुमति दातार, जिने रण मुमी जित्यो मार।
ग्या पद्मप्रभ जगिवास, ते मुक्ति तणा निवास॥४॥
ग्या सुपार्श्व जिन जगीसार, जसु पास न रिह्यो भार।
ग्या चंद्रप्रभ जगीचंद्र, जिन त्रिमुवन कियो त्रानन्द॥६॥
ग्या चंद्रप्रभ जगीचंद्र, जिन त्रिमुवन कियो त्रानन्द॥६॥

× × × ×

ए निजामिण किह सार, ते सयल सुख भंडार। जे चपक सुणे ए चंग, ते सौख्य पाये प्रभंग॥ ४३॥ श्री सकलकीर्त्ति गुरु ध्याउ, मुनि मुवनकीर्त्त गुग्गगाउ। ब्रह्म जिनदास भणेसार, ए निजामिण भवतार॥ ४४॥

२१ नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

यह स्तोत्र वादिराज जगन्नाथ कृत है। ये भट्टारक नरेन्द्रकीर्त्त के शिष्य थे तथा टोडारायसिंह (जयपुर) के रहने वाले थे। श्रव तक इनकी श्वेताम्त्रर पराजय (केविल मुक्ति निराकरण्), सुख निधान, चतुर्विशति संधान स्वोपज्ञ टीका एवं शिव साधन नाम के चार ग्रंथ उपलब्ध हुये थे। नेमिनरेन्द्र स्तोत्र उनकी पांचवी कृति है जिसमें टोडारायसिंह के प्रसिद्ध नेमिनाथ मन्दिर की मूलनायक प्रांतमा नेमिनाथ का स्तवन किया गया है। ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। रचना में ४१ छन्द हैं तथा अन्सिम पद्य निस्न प्रकार है:—

> श्रीमन्नेमिनरेन्द्रकीर्त्तिरतुलं चित्तोत्सवं च कृतात्। पूर्व्वानेकभवार्जितं च कलुपं भक्तस्य वे जहतात्।। उद्धृत्या पद एव शर्मद्पदे, स्तोतृनहो """। शाश्वत् छीजगदीशनिमलहृदि प्रायः सदा वर्ततात्।।४१॥

चक स्तोत्र की एक प्रति अ भएडार में संप्रहीत है जो संवत् १७०४ की लिखी हुई है।

२२ परमात्मराज स्तोत्र

भट्टारक सकलकीर्ति द्वारा विरचित यह दूसरी रचना है जो जयपुर के शास्त्र भंडारों में उप-लब्ध हुई है। यह सुन्दर एवं भावपूर्ण स्तोत्र है। किन ने इसे महास्तवन लिखा है। स्तोत्र की भाषा सरल एवं सुन्दर है। इसकी एक प्रति जयपुर के क भंडार में संप्रहीत है। इसमें १६ पद्य हैं। स्तोत्र की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ४०३ पर दे दी गयी है।

२३ पासचरिए

पासचिरए अपभ्रंश भाषा की रचना है जिसे किन तेजपाल ने सिनदास के पुत्र घूघिल के लिये निनद्ध की थी। इसकी एक अपूर्ण प्रति म भएडार में संप्रहीत है। इस प्रति में म से ७७ तक पत्र हैं जिन में आठ संधियों का निनरण है। आठवीं संधि की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इयसिरि पास चरित्तं रइयं कइ तेजपाल साणंदं अग्रुसंणियसुहद्दं घृघिल सिवदास पुत्तेग्र सग्गग्गवाल बीजा सुपसाएण लव्भए ग्रुणं अर्रविद दिक्खा अहमसंधी परिसमत्तो ।।

तेजपाल ने शंथ में दुवई, घत्ता एवं कडवक इन तीन छन्दों का उपयोग किया है। पहिले घत्ता फिर दुवई तथा सबके अन्त में कडवक इस क्रम से इन छन्दों का प्रयोग हुआ है। रचना अभी अप्रकाशित है।

तेजपाल १४ वीं शताब्दी के विद्वान थे। इनकी दो रचनाएं संभवनाथ चरित एवं वरांग चरित पहिले प्राप्त हो चुकी हैं।

२४ पार्श्वनाथ चौपई

पार्श्वनाथ चौपई किन लाखों की रचना है जिसे उन्होंने संवत् १७३४ में समाप्त किया था।

कवि राजस्थानी विद्यान थे तथा वराहटका प्राप्त के रहने वाले थे। उस समय मुगल वादशाह श्रीरंगजेव का शासन था। पार्श्वनाथ चौपई में २६८ पद्य हैं जो सभी चौपई में हैं। रचना सरम भाषा में निवद है।

२५ पिंगल छन्द शास्त्र

छन्द शास्त्र पर माखन किव द्वारा लिग्बी हुई यह वहुत सुन्दर रचना है। रचना का दूसरा नाम माखन छंद विलास भी है। माखन किव के पिता जिनका नाम गोपाल था स्त्रयं भी किव थे। रचना में दोहा चौबोला, छप्पय, सोरठा, मदनमोहन, हरिमालिका संग्वधारी, मालती, डिल्ल, करहंचा समानिका, मुजंगत्रयात, मंजुभाषिणी, सारंगिका, तरंगिका, भ्रमराविल, मालिनी भ्रादि कितने ही छन्दों के लचण दिये हुये हैं।

माखन कवि ने इसे संवत् १८६३ में समान्त किया था। इसकी एक अपूर्ण प्रति 'श्र' भएडार के संग्रह में है। इसका आदि भाग सूची के ३१० पृष्ठ पर दिया हुआ है।

२६ पुरायास्त्रवकथा कोश

टेकचन्द १८ वीं शताब्दी के प्रमुख हिन्दी किव हो गये हैं। अवतक इनकी २० से भी अधिक रचनायें प्राप्त हो चुकी हैं। जिन में से कुछ के नाम निम्न प्रकार है.—

पंचपरमेष्ठी पूजा, कर्मदहन पूजा, तीनलोक पूजा (सं० १८२८) सुदृष्टि तरंगिणी (सं० १८२८) सोलहकारण पूजा, व्यसनराज वर्णन (सं० १८२७) पञ्चकल्याण पूजा, पञ्चमेरु, पूजा, दशाध्याय सूत्र गद्य टीका, श्रक्ष्यात्म वारह्खडी, श्रादि। इनके पद भी मिलते हें जो श्रध्यात्म रस से श्रोतशीत हैं।

टेकचंद्र के पितामह का नाम दीपंचंद एवं पिता का नाम रामकृष्ण था। दीपचंद्र स्वयं भी श्रच्छे विद्वान् थे। कवि ख़रडेलवाल जैन थे। हे मृलतः जयपुर निवासी थे लेकिन फिर साहिपुरामें जाकर रहने लगे थे। पुर्यास्रवकथाकोश इनकी एक श्रीर रचना है जो श्रभी जयपुर के कि भरडार में प्राप्त हुई है। कवि ने इस रचना में जो श्रपनापरिचय दिया हैं वह निन्न प्रकार है:—

दीपचन्द साधर्मी भए, ते जिनधर्म विपै रत थए। तिन से पुरस तणुं संगपाय, कर्म जोग्य नहीं धर्म सुहाय।। ३२॥ दीपचन्द तन तें तन भयो, ताको नाम हली हरि दीयो। रामकृष्ण तें जो तन थाय, हठीचंद ता नाम धराय।। ३३॥ सो फिरि कर्म उदे तें आय, साहिपुरे थिति कीनी जाय। तहां भी वहुत काल विन ज्ञान, खोयो मोह उदे ते आनि।। साहिपुरा सुभथान में, मलो सहारो पाय।
धर्म लियो जिन देव को, नरभव सफल कराय।।
नृप उमेद ता पुर विषे, करें राज बलवान।
तिन श्रपने मुजबलथकी, श्रारे शिर कीहनी ध्रानि।।
ताके राज़ सुराज में ईतिमीति नहीं जान।
श्रवल पुर में सुखथकी तिष्ठे हरप जु श्रानि।।
करी कथा इस प्रंथ की, छंद बंध पुर मांहि।
प्रंथ करन कछू वीचि में, श्राफुल उपजी नांहि।। ४३।।
साहि नगर साह्य भयो, पायो सुम श्रवकास।
पूरण ग्रंथ सुल तै कीयो, पुण्याश्रव पुण्यवास।। ४४।।

चौपई एवं दोहा छन्दों में लिखा हुआ एक सुन्दर प्रंथ है। इसमें ७६ कथाओं की संप्रह है। किव ने इसे संवत् १८२२ में समाप्त किया था जिसका रचना के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख हैं:—

संवत् ऋष्टादश सत जांनि, उपिर नीस दोय फिरि ऋांनि । फागुण सुदि ग्यारिस निसमांहि, कियो समापत उर हुल साहि ॥ ४४ ॥

प्रारम्भ में किन ने लिखा है कि पुर्णास्त्रन कथा कोश पहिले प्राक्षत भाषा में निनद्ध था लेकिन जन उसे जन साधारण नहीं सममने लगा तो सकल की जिला है। विद्वानों ने संस्कृत में उसकी रचना की। जन संस्कृत सममना भी प्रत्येक के लिए क्लिष्ट होगणा तो फिर आगरे में धनराम ने उसकी नचिनका की। देकचंद्र ने संभवतः इसी नचिनका के आधार पर इसकी छन्दोन्द्र रचना की होगी। किन्ने इसका निन्न प्रभार उल्लेख किया है:—

साधर्मी धनराम जु भए, संसक्तत परवीन जु थए।
तों यह श्रंथ त्रागरे थान, कीयो वचिनका सरल बखान।।
जिन धुनि तो बिन त्रज्ञर होय, गणधर सममें त्रीर न कोय।
तो प्राकृत में करें वखांन, तव सब ही सुंनि है गुणखानि।। ३।।
तव फिरि बुधि हीनता लई, संस्कृत वानी श्रुति ठई।
फेरि त्रज्ञप बुध ज्ञान की होय, सकल कीर्त्त त्रादिक जोय।।
तिन यह महा सुगम करि लीए, संस्कृत त्र्यति सरल जु कीए।।

२७ बारहभावना

पं० रइयू अपभ्रंश भाषा के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं। इनक्री प्रायः सभी रचनाये अपभ्रंश

भाषा में ही मिलती हैं जिनकी संख्या २० से भी अविक है। किव १५ वीं शताब्दी के विद्वान थे और मध्यप्रदेश-ग्वालियर के रहने वाले थे। वारह भावना किव की एक मात्र रचना है जो हिन्दी में लिखी हुई मिली है लेकिन इसकी भाषा पर भी अपभ्रंश का प्रभाव है। रचना में ३६ पद्य हैं। रचना के अन्त में किवी ने ज्ञान की अगाधता के वारे में बहुत सुन्दर शब्दों में कहा है:—

कथन कहाणी ज्ञान की, कहन सुनन की नांहि। आपन्ही मैं पाइए, जब देखें घट मांहि॥

रचना के कुछ सुन्दर पद्य निम्न प्रकार है:—

संसार रूप कोई वस्तु नांही, भेद्भाव श्रज्ञान। ज्ञान दृष्टि धरि देखिए, सब ही सिद्ध समान।।

× × × × × ×

थर्म कराबो धरम करि, किरिया धरम न होय। धरम जुं जानत वस्तु है, जो पहचाने कोय॥

× × × × ×

रस्त करावन ग्यान नहिं, पढि श्रर्थ वखानत श्रोर। ग्यान दिष्टि विन अपजै, मोहा तणी हु कोर॥।

रचना मे रङ्यू का नाम कही नहीं दिया है केवल ग्रंथ समान्ति पर "इति श्री रङ्यू कृत वारह भावना संपृ्रां" लिखा हुआ है जिससे इसको रङ्यू कृत लिखा गया है।

२= भुवनकीत्तिं गीत

मुवनकीर्ति भट्टारक सकलकीर्ति के शिष्य थे और उनकी मृत्यु के पश्चात् ये ही भट्टारक की गही पर वेंदे। राजस्थान के शास्त्र भंडारों में भट्टारकों के सम्बन्ध में कितने ही गीत मिले हैं इनमें वृचराज एवं भ० शुभचन्द द्वारा लिखे हुये गीत प्रमुख हैं। इस गीत मे वृचराज ने भट्टारक मुवनकीर्ति की तपस्या एवं उनकी वहुश्रु तता के सम्बन्ध में गुणानुवाद किया गया है। गीत ऐतिहासिक है तथा उससे मुवन कीर्ति के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में जानकारी मिलती है। वृचराज १६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान थे इनके द्वारा रची हुई श्रवतक पांच और रचनाएं मिल चुकी हैं। पूरा गीत श्रविकल रूप से सूची के प्रप्ट ६६६–६६७ पर दिया हुआ है।

२६ भृपालचतुर्विशतिस्तोत्रटीका

महा पंथ श्राहाधर १२ वीं शताब्दी के संस्कृत भाषा के प्रकारण्ड विद्वान् थे। इनके द्वारा लिखें गये फिनने ही प्रंथ मिलते हैं जो जैन समाज में वड़े ही श्रादर की दृष्टि से पढ़े जाते हैं। श्रापकी भूपाल पनुर्विशातिन्नोत्र की मंस्कृत टीका कुछ समय पूर्व तक श्रप्राप्य थी लेकिन श्रव इसकी २ प्रतियां जयपुर के श्र भंडार में उपनव्य हो चुकी हैं। श्राशाधर ने इसकी टीका श्रपने प्रिय शिष्य विनयचन्द्र के लिये

१ विन्तृत परिचय में लिए देनिये टा॰ कामलीवाल द्वारा लिखित बूचराज एव उनका साहित्य-जैन सन्देश शीघाक-११

की थी। टीका बहुत सुन्दर है। टीकाकार ने विनयचन्द्र का टीका के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख दिया है:—

उपशम इव मूर्तिः पूतकीर्तिः स तस्माद् । श्रजनि विनयचन्द्रः सच्चकोरे कचन्द्रः ॥ जगदमृतसगर्भाः शास्त्रसन्दर्भगर्भाः । श्रुचिचरित सिह्णोर्थस्य धिन्वन्ति वाचः ॥

विनयचन्द्र ने कुछ समय पश्चात् आशाधर द्वारा लिखित टीका पर भी टीका लिखी थी जिसकी एक प्रति 'अ' भएडार में उपलब्ध हुई है। टीका के अन्त में ''इति विनयचन्द्रनरेन्द्रविरचितभूपाल-स्तोत्रसंमाप्तम्" लिखा है। इस टीका की भाषा एवं शैली आशाधर के समान है।

३० मनमोदनपंचशती

किव छत्त अथवा छत्रपति हिन्दी के प्रसिद्ध किव होगये हैं। इनकी मुख्य रचनाओं में 'कृपण-जगावन चिरत्र' पहिले ही प्रकाश में आचुका है जिसमें तुलसीदास के समकालीन किव ब्रह्म गुलाल के जीवन चिरत्र का अति सुन्दरता से वर्णन किया गया है। इनके द्वारा विरचित १०० से भी अधिक पद हमारे संब्रह में हैं। ये अवांगढ के निवासी थे। पं० वनवारीलालजी के शब्दों में छत्रपति एक आदर्शवादी लेखक थे जिनका धन संचय की ओर कुछ भी ध्यान न था। ये पांच आने से अधिक अपने पास नहीं रखते थे तथा एक घन्टे से अधिक के लिये वह अपनी दूकान नहीं खोलते थे।

छत्रपति जैसवाल थे। अभी इनकी 'मनमोदनपंचशित' एक और रचना उपलब्ध हुई है। इस पंचशित को कवि ने संवत १६१६ में समाप्त किया था। कवि ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

वीर भये श्रसरीर गई षट सत पन वरसिंह । प्रघटो विक्रम दैत तनौ संवत सर सरसिंह ।। उनिसहसत षोडशिंह पोष प्रतिपदा उजारी । पूर्वाषांड नछत्र श्रके दिन सब सुखकारी ।। वर वृद्धि जोग मिंछत इहप्रंथ समापित करिलियो । श्रनुपम श्रसेष श्रानंद घन भोगत निवसत थिर थयो ।।

इसमें ४१३ पद्य हैं जिसमें सबैया, दोहा आदि छन्दों का अयोग किया गया है। किव के शब्दों में पंचशती में सभी स्फुट किवत्त है जिनमें भिन्न २ रसों का वर्णन है—

सकलसिद्धियम सिद्धि कर पंच परमगुर जेह। तिन पद पंकज को सदा प्रनमीं धिर मन नेह।। निह श्रिधकार प्रबंध निह फुटकर कवित्त समस्त। जुदा जुदा रस वरनऊं स्वादो चतुर प्रशस्त।।

मित्र की प्रशंसा में जो पद्य लिखे हैं उनमें से दो पद्य देखिये।

मित्र होय जो न करें चारि बात कौं। उछेद तन धन धर्म मंत्र त्रानेक प्रकार के।। दोष देखि दावें पीठ पीछे होय जस गावें। कारज करत रहें सदा उपकार के।।

साधारन रीति नहीं स्वारणं की प्रीति जाके। जब तब बचन प्रकासत पयार के ।।
दिल को उदार निरवाहै जो पै दे करार। मित को सुठार गुनवीसरे न यार के ।।२१३॥
छातरंग वाहिज मधुर जैसी किसमिस। धनखरचन को कुवेरवांनि धर है ॥
गुन के वधाय कूं जैसे चन्द सायर कूं। दुख तम चूरिवे कूं दिन दुपहर है ॥
कारज के सारिवे कूं हऊ बहू विधना है। मंत्र के सिखायवे कूं मानों सुरगुर है ॥
ऐसे सार मित्र सौ न कीजिये जुदाई २भी। धन मन तन सब वारि देना वर है ॥२१४॥

इस तरह मनमोदन पंचशती हिन्दी की बहुत ही सुन्दर रचना है जो शीव ही प्रकाशन वोग्य है।

३१ मित्रविलास

मित्रविलास एक संग्रह पंथ है जिसमें किव घासी द्वारा विगचित विभिन्न रचनाओं का संकलन है। घासी के पिता का नाम वहालिसह था। किव ने अपने पिता एवं अपने मित्र भारामल के आग्रह से मित्र विलास की रचना की थी। ये भारामल संभवतः वे ही विद्वान हैं जिन्होंने दर्शनकथा, शीलकथा, दानकथा आदि कथायें लिखी हैं। किव मे इसे संवत् १७८६ में समाप्त किया था जिसका उल्लेख प्रंथ के अन्त भें निस्स प्रकार हुआ है:—

कर्म रिपु सो तो चारों गांत में घसीट फिरयो, ताही के प्रसाद सेती घासी नाम पायों है। भारामल मित्र वो वहालसिंह पिता मेरो, तिनकीसहाय सेती प्रथ ये बनायों है। या मैं भूल चूक जो हो सुधि सो सुधार ली जो, मो पै छपा दृष्ठि की ज्यो भाव ये जनायों है। दिगनिध सतजान हरि को चतुर्थ ठान, फागुण सुदि चौथ मान निजगुण गायों है।

क्वि ने प्रथ के प्रारम्भ में वर्णनीय विषय का निस्त प्रकार उल्लेख किया है:-

मित्र विलास महासुखदैन, वरनु वस्तु स्वाभाविक ऐन।
प्रगट देखिये लोक मकार, संग प्रसाद अनेक प्रकार।।
शुभ अशुभ मन की प्रापित होय, संग कुसंग तशो फल सोय।
पुद्गल वस्तु की निरण्य ठीक, हम कूं करनी है तहकीक।।

मित्र विलास की भाषा एवं शैली दोनों ही सुन्दर है तथा पाठकों के मन को लुभावने वाली है। प्रथ प्रकाशन योग्य है।

घासी कवि के पद भी मिलते हैं।

३२ रागमाला--श्याममिश्र

राग रागनियों पर निवद्ध रागमाला श्याम मिश्र की एक सुन्दर कृति है। इसका दूसरा नाम

कासम रिसक विलास भी है। श्यामिश त्रागरे के रहने वाले थे लेकिन उन्होंने कासिमखां के संरत्त-एता में जाकर लाहौर में इसकी रचना की थी। कासिमखां उस समय वहां का उदार एवं रिसक शासक था। कवि ने निम्न शब्दों में उसकी प्रशंसा की है।

कासमखांन सुजान कृपा किव पर करी। रागनि की माला करिवे को चित धरी।

दोहा

सेख खांन के वंश में उपज्यों कासमखांन। निस दीपग ज्यों चन्द्रमा, दिन दीपक ज्यों मान।। किन वरने छिन खान की, सो नरनी नहीं जाय। कासमखांन सुजान की छांग रही छिन छाय।।

रागमाला मे भैरोंराग, मालकोशराग, हिंडोलनाराग, दीपकराग, गुणकरीराग, रामकली, लिलतरागिनी विलावलरागिनी, कामोद, नट, केदारो, आसावरी, मल्हार आदि रागरागनियों का वर्णन किया गया है।

श्यामिश्र के पिता का नाम चतुर्मु ज मिश्र था । कवि ने रचना के अन्त में निम्न प्रकार वर्णन किया है—

> संवत् सौरहसे वरष, उपर वीते दोइ। फागुन बुदी सनोदसी, सुनौ गुनी जन कोइ॥

सोरठा

पोथी रची लाहौर, स्याम आगरे नगर के। राजघाट है ठौर, पुत्र चतुर्मुज मिश्र के॥

इति रागमाला ग्रंथ स्यामिश्र कृत संपूरण ।

३३ रुक्मिणकृष्णजी को रासी

यह तिपरदास की रचना है। रासो के प्रारम्भ में महाराजा भीमक की पुत्री रुक्मिणी के सौन्दय का वर्णन है। इसके परचात् रुक्मिणि के विवाह का प्रस्ताव, भीमक के पुत्र रुक्मि द्वारा शिशु-पाल के साथ विवाह करने का प्रस्ताव, शिशुपाल को निमंत्रण तथा उनके सदलवल विवाह के लिये प्रस्ताव, रुक्मिणी का कृष्ण को पत्र लिख सन्देश भिजवाना, कृष्णजी द्वारा प्रस्ताव स्वीकृत करना तथा

Ü

सद्लवल के साथ भीमनगरी की स्रोर प्रस्थान, पूजा के वहाने रुक्मिणी का मन्दिर की स्रोर जाना, रुक्मिणी का सौन्दर्य वर्णन, श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणी को रथ में वैठाना, कृष्ण शिशुपाल युद्ध वर्णन, रूक्मिणी द्वारा कृष्ण की पूजा एवं उनका द्वारिका नगरी को प्रस्थान स्रादि का वर्णन किया गया है।

रासो में दूहा, कलश, त्रोटक, नाराच जाति छंद श्रादि का प्रयोग किया गया है। रासो की भाषा राजस्थानी है।

नाराच जातिछंद

श्राणंद भरीए सोहती, त्रिभवणरूप मोहती। रुणं मर्णंत नेवरी, सुचल चरण घुघरी।। मज मज्जै मनक माल, श्रवण हंस सोमती। रतन हीर जडत जाम, खीर ली श्रनोपती।। मलमले ज चंद सूर, सीस फूल सोहए। बासिग वेणि रुलै जेम, सिरह मणिज मोहए।। सोवन मैं रलहार, जडित कंठ मैं रुलै। श्रवंध मोति जडित जोति, नाकिड जलादुलै।।

३४ लग्नचन्द्रिका

यह ज्योतिप का ग्रंथ है जिसकी भाषा स्योजीराम सौगाणी ने की थी। किव त्रामेर के निवासी थे। इनके पिता का नाम कंवरपाल तथा गुरु का नाम पं० जंचन्द्जी था। अपने गुरु एवं उनके शिप्यों के आग्रह से ही किव ने इसकी भाषा संवत् १८७४ में समाप्त की थी। लग्नचिन्द्रका ज्योतिष का संस्कृत में अच्छा ग्रंथ है। भाषा टीका में ४२३ पद्य हैं। इसकी एक प्रति भी भंडार में सुरिच्चित है।

इनके लिखे हुये हिन्दी पद एवं कवित्त भी मिलते है:-

३५ लाव्ध विधान चौपई

लिध्य विधान चौपई एक कथात्मक कृति है इसमे लिध्धविधान त्रत से सम्वन्धित कथा दी हुई है। यह त्रत चैत्र एवं भादव मास के शुक्ल पत्त की प्रतिपदा, द्वितीया एवं तृतीया के दिन किया जाता है। इस त्रत के करने से पापों की शान्ति होती है।

चौपई के रचियता हैं किव भीषम जिनका नाम प्रथमवार सुना जा रहा है। किव सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। ये खण्डेलवाल जैन थे तथा गोधा इनका गोत्र था। सांगानेर में उस समय स्वाध्याय एवं पूजा का खुद्य प्रचार था। इन्होंने इसे संवत् १६१७ (सन् १४६०) में समाप्त किया था।

दोहा श्रीर चौपई मिला कर पद्यों की संख्या २०१ है। किव ने जो श्रपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है:—

संवत् सोलहसे सतरो, फागुण मास जबे ऊतरो।

उजल पाखि तेरिस तिथि जांण, ता दिन कथा गढी परवाणि ।।६६।।

वरते निवाली मांहि विख्यात, जैनधर्म तसु गोधा जाति।

यह कथा भीपम कांव कही, जिनपुरांण मांहि जैसी लही।।६७।।

सांगानेरी वसे सुभ गांव, मांन नृपति तस चहु खंड नाम।

जिनधमें की महिमां वणी, संतिक पूजा होई तिह्धणी।

श्रावक लोक वसे सुजांण, सांम संवारा सुणे पुराण।।६६।।

श्राठ विधि पूजा जिणेश्वर करें, रागदोष नहीं मन में धरें।

दान चारि सुपात्रा देय, मनिष जन्म को लाहो लेय।।२००।।

कडा बंध चौपई जांणि, पूरा हूवा दोइसे प्रमाण।

जिनवाणी का अन्त न जास, मिंव जीव जे लहें सुखवास।।२०१॥

इति श्री लिंध विधान की चौपई संपूर्ण।

३६ वद्धंमानपुराग

इसका दूसरा नाम जिनरात्रित्रत महात्म्य भी है। मुनि पद्मनिन्द इस पुराण के रचिवता हैं। यह प्रंथ दो परिच्छेदों में निभक्त है। प्रथम सर्ग में ३४६ तथा दूसरे परिच्छेद में २०४ पद्य हैं। मुनि पद्मनिन्द प्रभाचन्द्र मुनि के पट्ट के थे। रचना संवत् इसमें नहीं दिया गया है लेकिन लेखन काल के प्राधार से यह रचना १४ वीं शताब्दी से पूर्व होनी चाहिए। इसके ष्रातिरिक्त थे प्रभाचन्द्र मुनि संभवतः वेही हैं जिन्होंने श्राराधनासार प्रवन्ध की रचना की थी श्रीर जो भ० देवेन्द्रकीर्ति के प्रमुख शिष्य थे।

३७ विषहरन विधि

यह एक आयुर्वेदिक रचना है जिसमें विभिन्न प्रकार के विष एवं उनके मुक्ति का उपाय वतलाया गया है। विषहरन विधि संतोष वैद्य की कृति है। ये मुनिहरष के शिष्य थे। इन्होंने इसे कुछ प्राचीन प्रंथों के आधार पर तथा अपने गुरु (जो स्वयं भी वैद्य थे) के बताये हुए ज्ञान के आधार पर हिन्दी पद्य में लिखकर इसे संवत् १०४१ में पूर्ण किया था। ये चन्द्रपुरी के रहने वाले थे। प्रंथ में १२० दोहा चौपई छन्द हैं। रचना का प्रारन्भ निम्न प्रकार से हुआ है:—

अथ विषहरन लिख्यते-

दोहरा - श्री गनेस सरस्वती, सुमिर गुर च्रनतु चितलाय। पेत्रपाल दुखहरन कौ, सुमित सुबुधि वताय॥

चौपई

श्री जिनचंद सुवाच वलांति, रच्यौ सोभाग्य ते यह हरप मुनिजान । इन सील दीनी जीव दया श्रांनि, संतोप वैद्य लइ तिरहमनि ॥२॥

३८ व्रतकथाकोश

इसमें व्रत कथाओं का संग्रह है जिनकी संख्या ३० से भी अधिक हैं। कथाकार पं० दामो-दर एवं देवेन्द्रकीर्ति हैं। दोनों ही धर्मचन्द्र सूरि के शिष्य थे। ऐसा मालूम पड़ता है कि देवेन्द्रकीर्ति का पूर्व नाम दामोदर था इसिलये जो कथायें उन्होंने अपनी गृहस्थावस्था में लिखी थीं उनमें दामोदर कत जिख दिया है तथा साधु बनने के पश्चात् जो कथायें लिखी उनमें देवेन्द्रकीर्ति लिख दिया गया। दामोदर का उल्लेख प्रथम, पष्ट, एकादश, द्वादश, चतुर्दश, एवं एकविंशति कथाओं की समान्ति पर आया है।

कथा कोश संस्कृत गद्य में है तथा भाषा, भाव एवं शैली की दृष्टि से सभी कथायें उच्चस्तर की हैं। इसकी एक अपूर्ण प्रति अ भंडार में सुरक्तित है। इसकी दूसरी अपूर्ण प्रति ग्रंथ संख्या २४४३ पर देखें। इसमें ४४ कथाओं तक पाठ हैं।

३६ व्रतकथाकोश

भट्टारक सकलकीर्ति १४ वीं शताब्दी के प्रकांड विद्वान थे। इन्होंने संस्कृत भाषा में वहुत ग्रंथ लिखे हैं जिनमे आदिपुराण, धन्यकुमार चित्र, पुराणसार संग्रह, यशोधर चित्र, वद्ध मान पुराण आदि के नाम उल्लेखनीय है। अपने जबरद्स्त प्रमाव के कारण उन्होंने एक नई भट्टारक परम्परा को जन्म दिया जिसमे व्र० जिनदास, मुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, शुभचन्द जैसे उच्चकोटि के विद्वान हुये।

त्रतकथा कोश त्रभी उनकी रचनात्रों में से एक रचना है। इसमें त्रधिकांश कथायें उन्हीं के द्वारा विरचित है। कुछ कथायें त्रश्र पंडित तथा रत्नकीर्ति त्रादि विद्वानों की भी हैं। कथाये संस्कृत पद्य में है। भ० सकत्तकीर्ति ने सुगन्धदशमी कथा के त्रन्त में त्रपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है:—

श्रममगुण समुद्रान, स्वर्ग मोन्नाय हेतून। प्रकटित शिवमार्गीन, सद्गुरुन् पंचपृज्यान्।।

त्रिमुवनपतिभव्वैस्तीर्थनाथादिमुख्यान् । जगति सकलकीत्या संस्तुवे तद् गुणाप्त्ये ॥

प्रति में ३ पत्र (१४३ से १४४) वाद में लिखे गये हैं। प्रति प्राचीन तथा संभवतः १७ वीं शताब्दी की लिखी हुई है। कथा कोश में छल कथाओं की संख्या ४० है। ४० समोसरण

१७ वीं शताब्दी में ब्रह्म गुलाल हिन्दी के एक प्रसिद्ध किव हो गये हैं। इनके जीवन पर किव छत्रपति ने एक सुन्दर काव्य लिखा है। इनके पिता का नाम हल्ल था जो चन्द्वार के राजा कीर्त्ति के आश्रित थे। ब्रह्म गुलाल स्वांग भरना जानते थे और इस कला में पूर्ण प्रवीण थे। एक वार इन्होंने मुनि का स्वांग भरा और ये मुनि भी वन गये। इनके द्वारा विरचित अब तक परचनाएं उपलब्ध हो चुंकी हैं। जिसमें त्रेपन किया (संवत् १६६४) गुलाल पच्चीसी, जलगालन किया, विवेक चौपई, कृपण जगावन चरित्र (१६७१), रसविधान चौपई एवं धर्मस्वरूप के नाम उल्लेखनीय हैं।

'समोसरण' एक स्तोत्र के रूप में रचना है जिसे इन्होंने संवत् १६६८ में समाप्त किया था। इसमें भगवान महावीर के समवसरण का वर्णन किया गया है जो ६७ पद्यों में पूर्ण होता है। इन्होंने इसमें अपना परिचय देते हुये लिखा है कि वे जयनिन्द के शिष्य थे।

> सोरहसे श्रवसिठसमे, माघ दसे सित पन्। गुलाल ब्रह्म भनि,गीत गृति, जयोनिन्द पद सिन्न ॥६६॥

४१ सोनागिर पच्चीसी

यह एक ऐतिहासिक रचना है जिसमें सोनागिर सिद्ध चेत्र का संज्ञित वर्णन दिया हुआ है। दिगम्बर विद्वानों ने इस तरह के चेत्रों के वर्णन वहुत कम लिखे हैं इसिलये भी इस रचना का पर्याप्त महत्व है। सोनागिर पहिले दितया स्टेट में था अब वह मध्यप्रदेश में है। किव भागीरथ ने इसे संवत् १८६१ ज्येष्ठ सुदी १४ की पूर्ण किया था। रचना में चेत्र के मुख्य मन्दिर, परिक्रमा एवं अन्य मन्दिरों का भी संज्ञित्त वर्णन दिया हुआ है। रचना का अन्तिम पाठ निन्न प्रकार है:...

मेला है जहा को कातिक सुद पृतों को,
हाट हू वजार नाना भांति जुरि आए हैं।
भावधर वंदन को पूजत जिनेद्र काज,
पाप मूल निकंदन को दूर हू सै धाए है।।
गोठै जैंड नारे पुनि दान देह नाना विधि,
सुर्ग पंथ जाहवे को पूरन पद पाए है।

कीजिये सहाइ पाइ श्राए हैं भागीरथ, गुरुन के प्रताप सौन गिरी के गुण गाए हैं॥

दोहा

जेठ सुदी चौदस भली, जा दिन रची वनाइ। संवत् अष्टादस इकिसठ, संवत् लेड गिनाइ॥ पढे सुनै जो भाव धर, श्रोरे देइ सुनाइ। मनवंद्यित फल कौ लिये, सो पूरन पद को पाइ॥

४२ हम्मीररासो

हम्मीररासो एक ऐतिहासिक काव्य है जिसमें महेश किन ने महिमासाह का वादशाह श्रला-उद्दीन के साथ मत्गडा, महिमासाह का भागकर रणथम्भौर के महाराजा हम्मीर की शरण में श्राना, बादशाह श्रलाउद्दीन का हम्मीर को महिमासाह को छोड़ने के लिये बार २ सममाना एवं श्रन्त में श्रला-उद्दीन एवं हम्मीर का भयंकर युद्ध का वर्णन किया गया है। किन की वर्णन शैली सुन्दर एवं सरल है।

रासो कब श्रीर कहां लिखा गया था इसका किव ने कोई परिचय नहीं दिया है। उसने केवल श्रपना नामोल्लेख किया है वह निम्न प्रकार है।

मिले रावपित साही पीर ज्यो नीर समाही। ज्यों पारिस को परिस वजर कंचन होय जाई॥ श्रजादीन हमीर से हुआ न हौस्यो होयसे। किन महेस यम ज्यरे वै सभांसहै तसु पुरवसें॥

स्रज्ञात एवं महत्वपूर्श यंथों की सूची

हमांक इ	i, सू. क.	प्रंथ का नाम	ग्रंथका र	भाषा ग्रंश	यभंडार	रचना का	ल
	•	अनंत व्रतोद्यापनपूजा	श्रा० गुणचंद्र	स०	भ्र	१६३०	
		अनंतचतुर्दशीपूजा	शातिदास	सं०	ख	×	
ą		श्रभिधान रत्नाकर	घर्मचद्रग िंग	सं०	भ्र	×	
٧.		श्रभिषेक विधि	लक्ष्मीसेन	सं०	জ	×	
ų		त्र्रमृतधमेरसकाव्य	गुराचंद्र	सं०	স	१६ वी इ	ाताव्दी
Ę	४४०१	ऋष्टाहिकापूजाकथा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	सं ०	भ्र	१५५१	
७.	२५३५	त्राराधनासारप्रबन्ध	प्रभाचद्र	स∘	ट	×	
5.	६१६	श्राराधनासारवृत्ति	पं० ग्राशाधर	सं०	ख	१३ वी इ	ाताब्दी
.3	४४३५	_	ज्ञानभूषरा	सं०	ख	×	
१ 0.	४४५०	कंजिकात्रतोद्यापनपूजा	ललितकीर्त्ति	स •	श्र	×	
११.	२५४३	,	देवेन्द्रकीर्त्ति	सं०	म्र	×	
१२.	५४५६	कथासंत्रह	ललितकीर्त्ति	सं०	म	×	
१₹.	४४४६	कर्मचूरव्रतोद्यापन	लक्ष्मीसेन	सं०	छ	×	
१४.	३८२८	कल्याग्रमंदिरस्तोत्रटीका	देवतिलक	सं०	म	×	
१५.	३८२७	कल्याग्रमंदिरस्तोत्रटीका	प० ग्राशाधर	सं०	ग्र	१३ वी	77
१६.	४४६७	क्तिकुरुडपारवेनाथपूजा	प्रभाचंद्र	सं०	श्र	१५ वो	"
१७.	२७४८	कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचूरि	चारित्रसिंह	सं ०	श्र	१६ वी	22
१५,	, ४४७३	कुर्यडलगिरिपूजा	भ० विश्वभूषगा	सं०	श्र	×	
38	. २०२३	कुमारसंभवटीका	कनकसागर	सं०	ग्र	×	
२०	. ४४५४		भ० क्षेमेन्द्रकीत्ति	₹∘	ख	×	
२१	. २०२		विनयचन्द्रसूरि	ਰ੦	ङ	×	
२२			श्रभिनव चारुकीत्ति	सं०	भ	×	
२३		• गोम्मटसारकम् का एडटीका	कनकनन्दि	सं०	क	×	
38		न गोम्मटसारकर्मकार्य्डटीका	ज्ञानभूषरा	सं०	क	×	
२			सकलभूषरा	सं०	क	×	
78		६ चंदनषष्ठीव्रतकथा	छत्रसेन	सं•	भ	×	
31	9. २० ४	प्रममकाव्यपंजिका	ग्रुगानंदि	सं०	ञ	×	

क्रमांक इ	नं. सू. क्र ः	ग्रंथ का नाम	प्रंथकार	भाषां ग्रंथ	ामंडोर ं	रचना काल	
	४५१२		सुमतिब्रह्म	सं०	च	×	
₹€.	४६१४	ज्ञानपंचर्विशतिकात्रतो द्यापन	भ० सुरेन्द्रकीत्ति	सं०	ৰ	×	
३०.	४६२१	ग्मोकारपैतीसीव्रतविधान	कनककी ति	सं०	इ	×	
₹१.	२१३	तत्ववर्गान	शुभचद्र	सं०	ञ	×	
₹₹.	५४४६	त्रेपनिकयोद्यापन	देवेन्द्रकी ति	सं०	ग्र	×	
₹₹.	४७०५	दशलच्यात्रतपूजा	जिनचन्द्रसूरि	स •	ड	×	
₹४.	४७०६	दशलत्त्रणत्रतपूजा	मल्लिभूपरा	सं०	छ	×	
३५.	४७०२	दशलत्त्रणव्रतपूजा	सुमतिसागर	सं०	ङ	×	
₹€.	४७२१	द्वादशत्रतोद्यापनपूजा	देवेन्द्र शीत्त	सं०	श्र	१७७२	
₹७.	४७२४	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	पद्मन ^र द	सं०	श्र	×	
३८.	४७२५	7) 7) 2)	जगत्कात्ति	सं०	च	×	
₹٤.	७७२	धर्मप्रश्नोत्तर	विमलकोत्ति	9 形	স	×	
٧٠.	२१५२	नागकुमारचरित्रटीका	प्रभाचन्द्र	स•	3	×	
४१.	४५१	निजस्मृति	×	स०	ट	×	
83.	४५१६	नेमिनाथपूजा	सुरेन्द्रकीत्ति	Нo	श्र	×	
४३.	४५२३	पंचकल्याग्यकपूजा	53	स०	क	×	
٧٧.	१७३६	परमात्मराजस्तोत्र	सकलकीति	स ०	श्र	×	
४ ೩.	५४२८	प्रशस्ति	दामोदर	स०	भ्र	×	
४६.	१६१५	पुराग्रसार	श्रीचदमुनि	सं०	भ	१०७७	
٧ ७.	ሂሄሄ०	भावनाचौतीसी	भ० पद्मनिद	सं०	श्र	×	
४५.	४०५३	भूपालचतुर्विशातिटीका	म्राशाधर	स०	श्र	१३ वी शताब्दी	t
88.		भूपालचतुर्विशतिटीका	विनयचंद	सं०	श्र	१३ वी 🥠	
χ۰.	४०४७	मांगीतु ंगीगिरिमंडलपूजा	विश्वभूपग्	सं०	ख	१७५६	
४१.	५३८१	मुनिसुव्रत ञ् द	प्रभाचंद्र	सं० हि	০ শ্ব	×	
४२.	<i>૭</i> ૭૭	मूलाचारटीका	वसुनदि	प्रा॰ सं	० ग्र	×	
५३.	२३२३	यशोधरचरित्रटिप्पग्	प्रभाचंद्र	सं०	ञ	×	
४४		रत्नत्रयविधि	भाशाधर	सं०	भ्र	×	
		रूपमञ्जरीनाममाला	रूपचंद	, सं०	श्र	१६४४	
५६.	. २३५०	वद्ध मानकाव्य	मुनिपद्मनंदि	सं०	ন	१३ वी भ	

de 10 cm and	मंथकार	भाषा ग्रंथ	मं डार	रचना काल
कर्माक ग्रे. सू. क ग्रंथ का नाम	वादिराज	सं०	ग्र	१७२६
५७. ३२६५ वाग्मट्टालंकारटीका	भ० पद्मनदि	सं०	भ्र	×
५८. ५४४७ वीतरागस्तोत्र	सिंहनदि	सं०	य	×
५६. ५२२५ शरदुत्सवदीपिका	गुग्।भद्रस्वामी	सं०	छ,	×
६०. ५८२६ शांतिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	सँ०	श्र	×
६१. ४१०७ शांतिनाथस्तोत्र	अपराप्त विश्वसेन	सं०	भ	×
६२. ५१९६ पणवतिचेत्रपालपूजा	राजहसोपाघ्याय	सं०	घ	×
६३. ५४६ षष्ट्रचिषकशतकटीका	मुनिनेत्रसिंह	सं०	भ	×
६४. १८२३ सन्तनयाववोध	म्रानाभर स्राज्ञाधर	सं०	श्र	१३ वी "
६५. ५४६७ सरस्वतीस्तुर्ति	क्रासायर प्रभा च द्	सं०	डं	×
६६. ४९४९ सिद्धचक्रपूजा	प्रमायप् क्षेमकरमुनि	सं•	ख	×
६७. २७३१ सिहासनद्वात्रिंशिका	समकरमु <i>ा</i> समन्तभद्र	प्रा०	ह	× ,
६८. ३८१८ कल्याणक	समन्तमप्र धर्मचन्द्र	সা৹	ग्र	×
६६. ३६३१ धर्मचन्द्रप्रवन्ध		प्रार्व	भ	×
७०. १००५ यत्याचार	म्रा० वसुनदि 	श्रप ०	ः अ	६५०५
७१. १८३६ ऋजितनाथपुराण	विजयसिंह	भूप० भूप०	्. श्र	×
७२, ६४५४ कल्याणकविधि	विनयचद		्र श्र	×
' ७३.	99 25-		्र श्र	×
७४. २६८८ जिनपूजापुरंदरविधानकथा	ग्रमरकीति '	भ्रप०	પ	?७ वी
७५. ५४३६ जिनरात्रिविधानकथा	नरसेन	भप०	भ	×
७६. २०६७ गोमिणाहचरिच	लक्ष्मग्रदेत	भ्रप०		
७७ं. २०६५ गोमिणाहचरिय	दामोदर	ग्रप०	¾	१२८७
७६ ५६०२ त्रिशतजिनचे ख्वीसी	मह्रग्सिह	भ्र प ०	भ	×
७६ं. ४४३े६ दशलच्चाकथा	गुग्भद्र	म्रंप०	म	×
५०. र्इ न्द दुघारसविधानकैथा	विनयचंद	श्रप [े]	म	×
र्दरे. ४९६६ नन्दीश्वरजयेमाल	कनककोति	ग्रप०	अ	×
दर. र्रेंद्रेंद्र निर्मरपंचमीविधानकथा	विनयचद	श्चेपॅ०	籾	×
द३. २१७६ पासचरिय	तेजपाल	भ्रप०	₹,	×
न्थं. ५४३६ रोहिणीविधान	गुराभद्र	श्चप०	श्रं	×
' दर्भ. २६६३ रोहिणीचरित	देवनदि	भप०	म	१५ वी

;

क्रमांक ग्र	ां. सूक्र.	प्रंथ का नाम	प्रंथकार	भाषा श्रंथ	मं डार	रचना काल
5 ξ.	२४३७	सम्भवजिग्गणाहचरिड	तेजपाल	श्चर	च	×
5 9.	ሂሄሂሄ	सम्यक्त्वकौमुदी	सहरापाल	श्चर	श्र	×
55.	२६८८	सुखसंपत्तिविधानकथा	विमलकोत्ति	श्रप॰	ग्र	×
5 8.	१४३६	सुगन्धद् शमीकथा)	श्चर	श्र	×
٤٥.	५३६१	श्रं जनारास	धर्मभूपगा	हि॰ प॰	ग्र	×
٤٤.	४३४७	श्रज्ञयनिधिपूजा	ज्ञानभूपग्	हि० प०	ङ	×
٤٦.	२५०५	अठारहनातेकीकथा	ऋिपलालचद	हि० प०	श्र	×
દર.	६००३	त्र्यनन्तकेञ्ज्पय	धर्मचन्द्र	हि॰ प॰	भ	×
٤٧,	४३५१	श्चनन्तव्रतरास	व्र० जिनदास	हि० प०	ग्र	१५ वीं
દપ્ર.	४२१५	ऋह् नकचौढालियागीत	विमलकी त्ति	हि॰ प॰	श्र	१६८१
દ ૬.	५७६७	श्रादित्यवारकथा	रायमल्ल	हि० प०	ङ	×
<i>હ</i> ७.	५४२५	त्र्यादित्यवारकथा	वादिचन्द्र	हि० प०	श्र	×
٤٦.	प्र३९२	श्रादीश्वरकासमवसरन	×	हि० प०	भ	१६६७
.33	५७३०	ऋादित्यवारकथा	सुरेन्द्रकीर्ति	हि० प०	घ	१७४१
१००.	५६१५	त्र्यादिनाथस्तवन	पल्ह	हि० ५०	छ	१६ वी
१०१.	५४५७	त्र्याराधनाप्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीति	हि० प०	श्र	×
१०२.	३८६४	ञ्चारतीसं ग्रह	व्र० जिनदास	हि० प०	भ	१५ वी शताब्दी
१०३.	३४००	उपदेशञ् त्तीसी	जिनहर्ष	हि॰ प॰	श्र	×
१०४.	४४२६	ऋषिमंडलपूजा	म्रा० गुरानदि	हि० प०	भ	×
१०५.	२४४०	कठियारकानडरीचौपई	×	हि॰ प०	भ	१७४७
१०६.	६०५२	कवित्त	ग्रगरदास	हि० प०	3	१८ वी शताब्दी
१०७.	६०६५	कवित्त	बनारसीदास	हि० प॰	3	१७ वी शताब्दी
१०५.	७३६४	कर्मचूरव्रतवेलि	मुनिसकलचद	हि० प०	श्र	१७ वी शतान्दी
१०६.	४ू६०८	कविवल्लभ	हरिचरणदास	हि० प०	श्र	×
११०.	३८६४		चन्द्रकोत्ति	हि० प०	ग्र	१६ वी शताब्दी
१११.	५४५७	- 1	पृथ्वीराज	हि० प०	भ्र ,	१६ ३७
११२.	२४४७		पदमभगत	हि० प०	भ	१८६०
११३.		_	पल्ह	हि० प०	窝	१६ वी शताब्दी
११४	, ३८६४	गुरुषंद	शुभचंद	हि॰ प•	श्र	१६ वी शताब्दी

क्रमांक ग्र	गं. सू. क .	प्रंथ का नाम	प्रंथका र	भाषा श्रंथभंड	गर	रचना काल
११५.	५६३२	चतुर्दशीकथा	डालूराम	हि० प०	ন্ত	१७६५
११६.	५४१७	चतुर्विशतिञ्जपय	गुणकीत्ति	हि० प०	श्र	७७७ १
११७.	४५२६	चतुविशतितीर्थंकरपूजा	नेमिचदपाटनी	हि० प०	क	१८८०
११५.	४५३५	चतुर्विशतितीर्थंकरपूजा	सुगनचंद	हि० प०	च	१६२६
188.	२५६२	चन्द्रकुमारकीवार्त्ता	प्रतापसिंह	हि० प०	জ	१५४१
१२०.	२५६४	चन्द्नमलयागिरीकथा	चत्तर	हि० प०	ग्र	१७०१
१२१.	२५६३	चन्दनमलयागिरीकथा	भद्रसेन	हि० प०	ग्र	×
१२२.	१५७६	चन्द्रप्रभपुराग्	होरालाल	हि॰ प॰	ন	१६१३
१२३.	१५७	चर्चासागर	चम्पालाल	हि० ग०	¾	×
१२४.	१५४	चर्चासार	प ० शिवजीलाल	हि० ग०	क	×
१ २४	२०५६	चारुदत्तचरित्र	कल्याग्यकीत्ति	हि॰ प॰	श्र	8462
१२६.	५६१५	चिं तामणिजयमाल	ठक्कुरसी	हि० प०	छ	१६ वी शताब्दी
१२७.	प्रहेर	चेतनगीत	मुनिसिहनंदि	हि० प०	छ	१७ वी शताब्दी
१२८.	५४०१	जिनचौवीसी भवान्तररास	विमलेन्द्रकीत्ति	हि॰ प॰	श्र	×
१२६.	५५०२	जिनदत्तचौपई	रल्हकवि	हि॰ प॰	भ	१३५४
१३०.	५४१४	ज्योतिषसार	कुपाराम	हि० प०	अ	१७६२
१३१.	६०६१	ज्ञानवावनी	मतिशेखर	हि॰ प॰	3	१५७४
१३२.	५५२६	ट ंडाणागीत	बूचराज	हि० प०	ন্ত	१६ वी शताब्नी
१३३.	३३६	~	कनकर्वात्ति	हि० ग०	ड	१८ वी "
१३४.	३६८	~	पाडेजयवन्त	हि० ग०	স্ত	१८ वी "
१३५.	४७४	तत्त्वार्थसूत्रटीका	राजमल्ल	हि० ग०	ग्र	१७ वी "
१ ३६.		तत्त्वार्थसूत्रभापा	शिखर चं द	हि० प०	ক	१६ वी "
१३७.		तीनचौबीसीपूजा	नेमीचंदपाटग्री	हि० प०	क	१५६४
१३८,		तीसचौवीसीचौपई	श्याम	हि० प०	भ	3808
3 = \$. ५५५१	तेईसवोलविवरग्ग	×	हि० प०	ঘ্র	१६ वी शताब्दी
१४०	-	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	नथमल	हि० प०	क	१६२०
१४१		-	शिवजीलाल	हि० ग०	क	१६२३
१ ४२		• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	लूराकरराकासलीवाल	ा हि० प०	श्र	×
१४३	. ४ ६०	द्रव्यसंग्रह्भाषा	बावा दुलीचंद	हि० ग०	क	१६६६

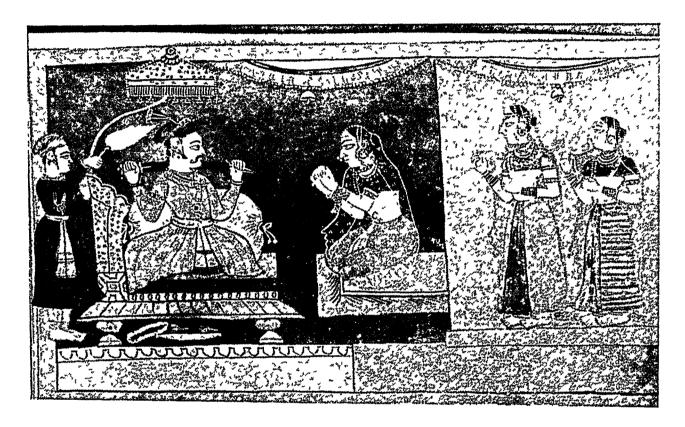
कर्माक :	पं. सू. क्र.	श्रंथ का नाम	प्रंथकार	भाषा	प्रंथभं डार	रचना काल
१४४.	<u>५</u>	द्रव्यसंग्रहभाषा	हेमराज	हि॰ ग०	羁	१७३१
१४५.	५४०२	नगरों की वसापतका विवरण	×	हि॰ ग०	म्र	×
१४६.	२६०७	नागमंता	×	हि० प०	श्र	१८६३
१४७.	४२४६	नागश्रीसब्भाय	विनयचद	हि० प०	भ्र	×
१ ४५.	५१ १	निजामणि	न्न० जिनदास	हि० प०	क	१५ वी शताब्दी
3 88.	५४४६	नेमिजिनंद्व्याहलो	खेतसी	हि० प०	भ्र	१७ वी "
१५०.	२१५५	नेमीजीकाचरित्र	श्राग्ति	हि० प०	श्र	१८०४
१५१.	५३६२	नेमिजीकोमंगल	विश्वभूषग्।	हि॰ प॰	भ	१६६८
१५२.	३८६४	नेमिनाथछंद	शुभचद	हि० प०	भ	१६ वी "
१५३.	४२५४	नेमिराजमतिगीत	हीरानद	हि० प०	भ्र	×
१५४.	२६१४	नेमिराजुलव्याहलो	गोपीकृष्ण	हि॰ प॰	ग्र	१८६३
१४५.	४४२६	नेमिराजुलविवाद	व्र० ज्ञानसागर	हि० प०	श्र	१७ वी "
१५६	५६१५	नेमीखरकाचौमासा	मुनिसिहनंदि	हि० प०	छ	१७ वी 🤫
१५७.	४८२६	नेमिश्वरकाहिंडोलना	मुनिरत्नकीर्त्ति	हि० प०	छ	×
१४८.	४८२६	नेमीश्वररास	मुनिरत्नकीर्त्ति	हि० प०	छ,	×
१५६.	0×3F	पंचकल्याग्यकपाठ	हरचंद	हि० प०	छ	१८२३
१६०.	२१७३	पांडवचरित्र	लामवर्द्ध न	हि० प०	ट	१७६८
१६१.	४२५७	पद्	ऋषिशिवलाल	हि० प०	श्र	×
१६२	१४३६	परमात्मप्रकाशटीका	खानचंद	हि०	क	१८३६
१६३.	५५३०	प्रघुम्ररास	कृष्णराय	हि० प०	छ	×
१६४.	५३६४	पार्ख नाथचरित्र	विश्वभूपगा	हि०	籾	१७ वी "
१६५.	४२६०	पार्खनाथचौपई	पं० लाखो	हि० प०	3	१७३४
१६६.	३८६४	पारवेछन्द	व्र० लेखराज	हि० प०	ग्र	१६ वी "
१६७	३२७७	पिंगल छ्ंदशास्त्र	माखनकवि	हि० प•	श्र	१६६३
१६८	२६२३		टेकचंद	हि० प०	क	१६२८
१६६	४२५	•	श्रीलाल	हि० प०	ट	१८८१
१७०			कृष्साराय	हि० प०	छ	×
१७१.		•	हरचरगादास	हि० प०	भ्र	१ ८३४
१७२		मुवनकोर्त्तिगीत	बूचराज	हि॰ प०	म	१६ वी "

क्रमीक	प्रं. सूक	. ग्रंथ का नाम	ग्रं थकार	भाषा	प्रंथभंडार	रचना क	ाल
१७३.	२२५४	मंगलकलशमहामुनिचतुष्पदी	रंगविनयगिए	हि० प०	刄	१७१४	
१७४.	३४५६	मनमोदनपंचशती	छत्रपति	हि० प०	ক	१६१६	
१७५.	६०४६	मनोहरमन्जरी	मनोहरमिश्र	हि० प०	ਣ	×	
१७६.	३८६४	महावीरछंद	गुभचंद	हि० प०	म्र	१६ वी	77
१७७.	२६३८	मानतु गमानवतिचौपई	मोहनविजय	हि० प०	8	×	
१७५.	३१८५	मानविनाद	मानसिंह	हि॰ प॰	ख	×	
१७ ६.	१३४६	मित्रवितास	घासी	हि० प०	环	३७५६	
१ 50.	१६४५	मुनिसुत्रतपुराण	इन्द्रजीत	हि० प०	ञ	१५५५	
१८१.	२३१३	यशोधरचरित्र	गारवदास	हि० प०	-	१५५१	
१८२.	२३१५	यशोधरचरित्र	पन्नालाल	हि० ग०	5 6	१६३२	
१८३.	५११३	रत्नावलित्रतिवधान	त्र० कृष्णदास	हि॰ प॰	ग्र	१६ वी।	
१५४.	५५०१	रवित्रतकथा	जयकीति	हि० प०	भ	१७ वी	77
१८४.	६०३८	रागमाला	रयाममिश्र	हि० प०	ट	१६०२	
१८६.	४३४६	राजनीतिशास्त्र	जसुराम	हि० प०	भ	×	
१८७.	४३६८	राजसभारंजन	गंगादास	हि० प०	श्र	×	
१८८.	६०५५	रुक्मणिकृष्णजीकोरास	तिपरदास	हि० प०	ट	×	
१ 58.	२६८६	रैदव्रतकथा	व्र० जिनदास	हि॰ प॰	क	१५ वी	77
१६०	६०६७	रोहिसीविधिकथा	बंसीदास	हि० प०	ट	१६६४	
१८१	५१६६	लग्नचन्द्रिकाभाषा <u></u>	स्योजीरामसोगाणी	हि० प०	ज	×	
१६२.	६०८६	लव्धिविधानचौपई	भीषमकवि	हि० प०	ट	१६१७	
१६३.	४६५१	लहुरीनेमीश्वरक <u>ी</u>	विश्वभूषग्	हि० १०	z	×	
१६४.		~	भ्रजयराज	हि॰ प०	ट	१८ वी	77
१६५		वाजिदजी के ऋडिल्ल	वाजिद	हि० प०	श्र	×	
१ ६६.		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	ग्रभयसोम	हि० प०	ञ	१७२४	
१६७.		विजयकीर्त्तिछंद	शुभर्चंद	हि० प०	籾	१६ वी.	77
१ ६ =	३२१३		सतोषकवि	हि० प०	ন্ত	१७४१	
१ ६६.				हि॰ प॰	भ	×	
₹ ००.	•		साहलोहट	हि० प०	#	१७३०	
404 •	५४०२	शहरमारोठ की पत्री		हि० ग०	म '	×	

क्रमीक	प्रं. सू _. त्र	त. ग्रंथ का नाम	श्रंथकार	भाषा	प्रंथभंडार	रचना काल
२०२	५४१७	शीलरास	गुराकीत्ति	हि० ५०	श्र	१७१३
• •	प्र६४१	शीलरास	व्र० रायमलादेवसू	रिहि० प०	भ	१६ वी
२०४	३६९६	शीलरास	विजयदेवसूरि	हि० प०	श्र	१६ वी
२०५	२७०१	श्रेग्गिकचौपई	हू गावैद	हि॰ प॰	श्र	१५२६
२०६	२४३२	श्रेणिकचरित्र	विजयकीत्ति	हि० प०	ग्र	१६२०
२०७	५३६२	समोसरण	व्र॰ गुलाल	हि० प०	য়	१६६८
२०५	५५२ =	स्यामवत्तीसी	नंददास	हि० प०	ग्र	×
२०६	२४३८	सागरदत्तचरित्र	हीरकवि	हि० प०	श्र	१७२४
२१०	१२१६	सामायिकपाठभाषा	तिलोकचंद	हि० प०	च	×
२१ १	3008	हम्मीररासो	महेशकवि	हि० प०	ड	×
२१ २	१६६४	हरिवंशपुराण	×	हि० ग०	अ	१६७१
२१३	२७४२	होतिका चौपई	ड्र*गरकवि	हि॰ प॰	, छ ,	3575



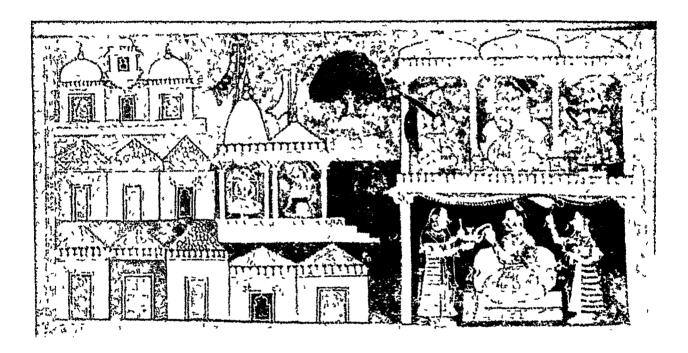
भट्टारक सकलकीर्ति कृत यशोधर चरित्र की सचित्र प्रति के दो सुन्दर चित्र



यह सिचत्र प्रति जयपुर के दि॰ जैन मंदिर पार्श्वनाथ के शास्त्र भग्डार में संप्रहीत है। राजा यशोधर दुः स्वप्न की शांति के लिये अन्य जीवों की विल न चढा कर स्वयं की विल देने को तैयार होता है। रानी हाहाकार करती है।

[दूसरा चित्र ग्रगले पृष्ठ पर देखिये]

चित्र नं० २



जिन चैत्यालय एवं राजमहल का एक दृश्य (ग्रंथ सूची क्र. सं. २२६५ वेष्टन संख्या ११४)

राजस्थान के जैन शास्त्र भराडारीं

की

ग्रन्थसूची

विषय-सिद्धान्त एवं चर्चा

१. त्र्यदीपिका—जिनभद्रगिषा। पत्र स० ५७ से ६८ तक। ग्राकार १०×४ है इख। भाषा-प्राकृत। विवय-जैन सिद्धान्त। रचना काल ×। नेप्वन काल ×। ग्रपूर्ण। वेप्टन सख्या २। प्राप्ति स्थान घ भण्डार।

विशेष - गुजराती मिश्रित हिन्दी टब्वा टीका सहित है।

् २. ऋथप्रकाशिका—सदामुख कासलीवाल । पत्र सं० ३०३। म्रा० ११ई×८ इ'च। भा० राजस्थानी (इंढारी गद्य) विषय–सिदान्त । र० काल सं• १९१४। ले० काल ×। पूर्ण । वै० सं० ३। प्राप्ति स्थान क मण्डार ।

विशेष--उमास्वामी कृत तत्वार्थ सूत्र की यह विशद व्याख्या है।

- ३ प्रति सं०२। पत्र मं० ११०। ले० काल 🗙 । वे० सं० ४८। प्राप्ति स्थान मा भण्डार।
- ४. प्रति स० ३। पत्र स० ४२७। ले० काल सं० ६६३५ आमोज बुदी ६। वे० सं० १८१। प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

विशेष-प्रति मुन्दर एवं ग्राकर्षक है।

४. ऋष्ट्रकर्म प्रकृतिवर्णन "" । पत्र सं० ४६ । ग्रा० ६×६ इ'च । भा० हिन्दी (गद्य) । विषय— भाठ कर्मो का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।

विशेष--- ज्ञानावरणादि ग्राठ कर्मों का विस्तृत वर्णन है। माथ ही गुग्म्यानी का भी श्रच्छा विवेर्चन किया गया है। श्रन्त में व्रतो एव प्रतिमाश्रो का भी वर्णन दिया हुआ है।

- ६. ऋष्टकमेप्रकृतिवर्णन '। पत्र सं०७। ग्रा० म्४ इंच। भा० हिन्दी। विषय-ग्राठ कर्मों का वर्णन। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं० २५६। प्राप्ति स्थान ख भण्डार।
- , ७. ऋहत्प्रवचन """ ""। पत्र सं०२। म्रा०१२×५६ इंच। भा० संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र॰ काल ×। ते० काल ×। पूर्ण। वे० मं०१८८२। प्राप्ति स्थान म्रा भण्डार।

विजेष -- मूत्र मात्र है। मूत्र सख्या ८५ है। पाच ग्रध्याय हैं।

=. ऋह्ंस्प्रवचनव्याख्या " " " । पत्र सं०११ । ग्रा०१०×४२ डंच । भा०मम्कृत । र०काल × । क्षे काल × । पूर्ण । वे० स०१७६१ । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

विशेष--ग्रन्थ का दूसरा नाम चतुर्दश सूत्र भी है।

६. ऋाचारांगसूत्रः ' ः ×। पत्र स० ५३ । ग्रा० १०६ ×५ इ च । मा० प्राकृत । विषय-ग्रागम ।
र० काल × । ले० काल सं० १८२० । ग्रपूर्ण । वे० सं० ६०६ । प्राप्ति म्थान ऋ भण्डार ।

विशेष-छठा पत्र नही है। हिन्दी मे टब्बा टीका दी हुई है।

- १०. स्रातुरप्रत्याख्यानप्रकीर्शाक " ' । पत्र स०२। स्रा० १०४४ दे इत्र । भा० प्राकृत । विषय-स्रागम । र० काल × । ले० काल × । वे० स०२ द । प्राप्ति स्थान च भण्डार ।
- ११ ऋाश्रवित्रभंगी—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र स० ३१। ऋा० ११२ ४५ इंत्र। भा० प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल म० १८६२ वैशाख सुदी ८। पूर्ग। वे० स० १८२। प्राप्ति स्थान, ज गण्डार।
 - १२ प्रति सं०२। पत्र सं०१३। ले० काल ४। वे० स०१८४३ प्राप्ति स्थान ट भण्डार।
 - १३. प्रति सब् ३ । पत्र स० २१ । ले० काल 🔀 । वे० स० २६५ । प्राप्ति स्थान व्य भण्डार ।
- १४. आश्रवित्रभंगी : । पत्र स० ६ । ग्रा० १२×५३ ड च । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ते० काल × । वे० स० २०१५ । प्राप्ति स्थान ऋ भण्डार ।
- १४. ऋाश्रववर्णान ' " " । पत्र स० १४ । ग्रा० ११६४६६ इ च । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल 🗙 । पूर्ण । वै० स० १६० । प्राप्ति स्थान भा भण्डार ।

विशेष-प्रति जीर्ग शीर्ग है।

- १६. प्रति स० २ | पत्र म० १२ | ले॰ काल × । वे॰ स० १६६ । प्राप्ति स्थान भू भण्डार ।
- १७. इक्कीसठाणाचर्चा सिद्धसेन सूरि । पत्र स० ४ । ग्रा० ११×४ । इन । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६५ । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

विशेष -- ग्रन्थ का दूसरा नाम एकविशतिस्थान-प्रकरण भी है।

- ा १८० उत्तराध्ययन ' "" । पत्र स० २५ । ग्रा० ६५ ४५ इ'त्र । भा० प्राकृत । विषय-ग्रागम । रू० काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० स० ६८० । प्राप्तिस्थान श्र भण्डार ।
 - े विशेष—हिन्दी टन्त्रा टीका सहित है।

- १६. उत्तराध्ययनभाषाटीका """ '"। प० स० ३। ग्रा० १०×४ इ'च। भा० हिन्दी। विषय-ग्रागम। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० सं० २२४४। प्राप्ति स्थान त्र्य भण्डार।

विशेष---ग्रन्थ का प्रारम्भ निम्न प्रकार है।

परम दयाल दया करू, श्रासा पूरण कार्ज।
चर्जवीसे जिरावर नमुं, चर्जवीसे गराधार।। १।।
धरम ग्यान दाता सुगुरु, श्रहनिस घ्यान घरेस।
वाणी वर देसी सरस, विघन हार विघनेस।। २॥
उत्तराध्ययन चर्डदमड, मित्र छए श्रधिकार।
श्रलप श्रकल गुण छड़ घरणा, कहू बात मित श्रनुसार।। ३॥
चतुर चाह कर माभलो, ऐ श्रधिकार श्रनुप।
निश विकथा परिहरी, सुग ज्यो श्रालस मुढ़।। ४॥

प्रागे साकेत नगरी का वर्रान है। कई ढाले दी हुई है।

२०. उद्यसत्तावंधप्रकृति वर्णन : "" पत्र सं० ५ । ग्रा० ११×५६ इंच । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १८४० । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

२१ कर्मग्रन्थसत्तरी। पत्र स०२८। ग्रा०६×४ इंच। भा० प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र०काल ×। ले०काल सं०१७८६ माह बुदी १०। पूर्ण। वे०स०१२२। प्राप्तिस्थान व्याभण्डार।

विशेष-कर्म सिद्धान्त पर विवेचन किया गया है।

२२. कर्मप्रकृति—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र स० १२। ग्रा० १०३×४२ इ.च.। भा• प्राकृत। विषय— सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल स० १६८१ मंगसिर सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० २६७। प्राप्तिस्थान ऋ भण्डार।

विशेष--पाढे डालू के पठनार्थ नागपुर मे प्रतिलिपि की गई थी। संस्कृत मे संक्षिप्त टीका दी हुई है।

ं प्रशस्ति—मवत् १६८१ वरपे मिति मागसिर विद १० शुभ दिने श्रीमन्नागपुरे पूर्णीकृता पाढे डालू पठनार्थ लिखितं सुरजन मुनि सा० धर्मदासेन प्रदत्ता।

> २३ प्रति सं०२। पत्र सं०१७। ले० काल ×। ते० सं० ८५। प्राप्ति स्थान ऋ भण्डार। विशेष—संस्कृत मे सामान्य टीका दी हुई है।

२४ प्रति सं २ ३ । पत्र स० १७ । ले० काल 🗴 । वे० सं० १४० । प्राप्ति स्थान ऋ भण्डार । विशेष---सस्कृत मे सामान्य टीका दी हुई है ।

ſ

२४. प्रति स० ४। पत्र स० १२। ले० काल सं० १७६८। प्रपूर्ण। वे० स० १६६३। प्र भण्डार। विशेष--- मट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य वृन्दावन ने प्रतिलिपि करवाई थी।

२६. प्रति स्१४ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १८०२ फाल्युन बुदी ७ । वे० स० १०५ । क

विशेष—इमकी प्रतिलिपि यिद्यानित के शिष्य ग्रखैराम मलूकच्त्द न रूडमल के लिये की थी। प्रति के दोनों ग्रोर तथा ऊपर नीचे मस्कृत में सक्षिप्त टीका है।

२७. प्रति सं० ६ । पत्र म० ७७ । ने० काल सं० १६७१ ग्रापाढ सुदी २ । वे० सं० २६ । स्व मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृतं टीका सहित है। मालपुरा मे श्री पार्स्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई तथा स॰ १६८७ में मुनि नन्दकीर्ति ने प्रति का संबोधन किया।

२८. प्रति सं०७। पत्र स० १६। ले० काल स० १८२३ ज्येष्ठ बुदी १८। वे० रा० १०५ छ। गण्डार।

२६. प्रतिस०⊏ । पत्र स०१३ । ले० काल स० १⊏१६ ज्येष्ठ सुदी६ । वे० स० ६१ । च भण्डार ।

३०. प्रति सं ६। पत्र सं ० ११। ले० काल x । वे० स० ६१। छ भण्डार ।

विशेष-सम्कृत में सकेत दिये हुये है।

३१. प्रति सं० १०। पत्र म० ११। ले० काल ४। वे० म० २६६। छ भण्डार।

विजेष--१५६ गाथायें है।

३२. प्रति सं० ११। पत्र सं० २१। ले॰ काल स॰ १७६३ वैशास्त बुदी ११। वे॰ स॰ १६२। ज भण्डार।

विशेष—अम्बावती में पं॰ रूडा महात्मा ने पं॰ जीवाराम के शिष्य मोहनलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

देरे. प्रति सं०१२ । पत्र म०१७ । ने० काल × । वे० सं०१२३ । व्य भण्डार ।

३४. प्रति स०१३। पत्र मं०१७। ले० का० सं०१६४४ कार्तिक बुदी १०। वे० स०१२६। व्य भण्डार।

३४. प्रति सं० १४। पत्र मं० १४। ले० काल सं० १६२२। वे० सं० २१५। व्य मण्डार। विशेष-वृत्त्वावन मे राव सूर्यमेन के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी।

३६. प्रति संट १४ । पत्र मं० १६ । ले० काल 🗙 । वे० म० ४०५ । व्य भण्यार ।

३७. प्रति सं०१६। पत्र स०३ मे १८। ले० काल 🗴। ग्रपूर्ण। वे० सं०२८०। व्य भण्डार।

३८. प्रति सं ८ १७ । पत्र स० १७ । ले० कॉल × । वै० स० ४०५ । व्य भण्डार ।

३६. प्रति स०१६। पत्र सं०१४। ले० काल ×। ते० सं०१३०। व्य भण्डार।

४०. प्रति सं०१६। पत्र सं० ५ मे १७। ले० काल म० १७६०। ग्रपूर्श । वे० मं० २०००। ट भंडार ।

विशेष वृत्दावती नगरी मे पार्श्वनाथ चैत्याल्य में श्रीमान् बुर्धासह के विजय राज्य मे श्राचार्य उदयभूषण के प्रधिष्य प व तुलसीदास के शिष्य त्रिलोकभूषण् ने संशोधन करके प्रतिलिपि की । प्रारम्भ के तथा बीच के कुछ पत्र नहीं है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

> प्रश् प्रति सं २०। पत्र स० १३ मे ४३। ने० काल ×। श्रपूर्ण । वे० स० १६८६। ट भण्डार । विभेष—प्रति प्राचीन है। गुजराती टीका सहित है।

४२. कर्मप्रकृतिदीका—टीकाकार सुमितिकीित्त । पत्र सं० २ से २२ । आ० १२×५३ इच । भा० सम्कृत । विषय–सिद्धान्त । र∙ काल × । ने० काल सं० १८२२ । वै० सं० १२५२ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

विशोष-टीकाकार ने यह टीका भ० ज्ञानभूषणा के सहाय्य से लिखी थी।

४३. कर्मप्रकृति """" "। पत्र सं० १०। आ० ५% ४४% इंच। भा० हिन्दी। र० काल ४। पूर्गा। वे० स० ३६४। स्त्र भण्डार।

४४. कमें प्रकृतिविधान—बनारसीदास । पत्र मं० १६ । आ० ८१ दे इ च । भा० हिन्दी पछ । विषय–सिद्धान्त । र• काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे सं० ३७ । ड भण्डार ।

४४. कर्मविपाकटीका—टीकाकार सकतकीिक । पत्र म • १४ । आ० १२×५ इ च । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । के० काल सं० १७६८ आषाढ बुदी ५ । पूर्या । वे॰ मं० १५६ । आ भण्डार ।

विशेष-कर्मविपाक के मूलकर्ता ग्रा० नेमिचन्द्र है।

४६. प्रति सं०२। पत्र स०१७। ले० काल ४। वे सं०१२। घ भण्डार।

विशेष--अति प्राचीन है।

' '४७. कम्मस्तवसूत्र-देवेन्द्रसूरि। पत्र सं०१२। ग्रा०११×६ इंच। भा॰ प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र०, नाल ×। ने० काल ×। वे० स०१०५। छ भण्डार।

विशेष-गाथाओं पर हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है।

४= कल्पिनिद्धान्तसम्रहः """"। पत्र स० ५२। म्रा० १०×४ इ च । भा० प्राकृत । विषय-भागम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० म० ६६६ । स्र भण्यार ।

ग्रर्थ—तिएाड कालइ गर्भावहार कालड तिगाड समयड गर्भावहार यकी पहिली श्रमण भगवत श्री महावीर त्रिहु ज्ञानेकरी सहित ड जिहुता ते भणी इमजि जाएगड नेहरिएो गाम परिययतायड । इट्रा थकी लेट त्रिसलांनी कू खद सक्रमात्रिस्यंड । अनड जिगि वलासड मेकमात्रद ने बेला न जाएगड । अवहरएगकाल अतर्मृहर्त्त मजावियट अनइ उपयोगं काल विश्वि अतर्मु हूर्त प्रमाएगा । पर छद्मस्थनाउपयोग धिकउ । महरएं। काल मूट्टम जािग्विउ वर्ला श्री आचाराग माहि कहिउछ । महरण काल पिए। नाएगड । पर ए पाठ सगलट नही । ते भणी ब्रावीर्णन ही । तिसलांनी कू बि आया पछी जागइ । जिर्णी रात्रिइ श्रमण भगवत श्री महावीर देवाएांदा ब्राह्मणी सुखशय्या मूर्ती । कार्ड सूती, कार्ड जागती । यह वाउदार स्फाट जिस्या पूर्वंड वर्णाव्या तिस्या चउदह महास्वप्न त्रिशाला क्षत्रियाएं। पट माहराहभा खासी लीधा । इसउ स्वप्न देखि जागी । जे भणी कल्याण कारिया निरूपहइन । धन धान्य ना करणहार । मंगलीक । स श्री किजर्यंड घरि बीजंड वीपड घर पहुंता । हिंबई त्रिशाला क्षत्रियाणी जिराइ पुकारड सुपिना देखिस्यट ते प्रमातट वाचेस्या । य श्री कल्प सिद्धांन्तनी वीचेना तरणुइ अधिकारड । एव भाग्यवत दान चड । शोल पालड । तप ते उट । भावना भावर्ड एवविश्व धर्म कर्त्तव्य करड ते श्री देवगुरु तरणुउ प्रसाद देवनड अधिकारइ विधि चैत्यालय पूज्यमान श्री पार्व्वनाथ तरणुड प्रसादि गुरुनी परपरायद्द सुविहित चक्रचूडामणि श्री उचोतनसूरि श्री वर्द्ध मान सूरि श्री । श्री जिनेश्वर मूरि । श्री अभयदेव सूरि युगप्रधान श्री फिनदर्तसूरि श्रीमजिजन कुशलसूरि श्री डकव्यर पातिसाहि प्रतिवोधक युगप्रधान श्री मजिजनसूरि श्रीनमूरि तराट्ट प्रभाकर श्री मजिजनसिंह सूरि तराट्ट प्रभाकर भट्टारक श्री जिनसागर सूरिनी ग्राजा प्रवर्त्तड । श्रीरस्तु ।

सम्कृत मे श्लोक तथा प्राकृत मे कई जगह गाथाएँ दी है। -

४८ कल्पसूत्र (भिक्खू अडमंग्रगां) ' '। पत्र स० ४१। ग्रा० १० ४४ ई इंच। भा० प्राकृत। । विषय-ग्रागम। र० काल ×। ले० काल ×। वे० स० ६०६। पूर्ण। स्त्र भण्डार।

विशेषं-हिन्दी टन्दा टीका सहित है।

४६ कल्पसूत्र—भद्रवाहु। पत्र स०११६। ग्री०१०×४ इ च । भी० प्राकृत । विषय-प्रागम । र० काल × । ले० काल स०१८६४ । ग्रपूर्ण । वे० स० ३६ । छ भण्डार ।

विशेष—२ रा तथा ३ रा पत्र नहीं है। गाथाग्रों के नीचे हिन्दी में ग्रर्थ दिया हुआ है।

गाउन प्रति सं २ । पत्र,सं ५ ४ ६ १ । लें काले 💢 । अपूर्ण । वे० सं० १६ ५७ । ट भण्डार ।

विशेष-प्रति संस्कृत तथा ग्रुगराती छाया सहित है। कही २ टब्बा टीका भी दी हुई है। बीच के कई

- , १ कल्पसूत्र—भद्रबाहु। पत्र स०६। ग्रा०११×४८ इ.च.। भा० प्राकृत । विषय—ग्रागम। र०का ×। ल०का म०१५६० ग्रामोज सुद्री ⊏। पूर्ण। वे०स०१८,४६। ट.भण्डार।
 - ४२. प्रति सं०२। पत्र म० द मे २७४ ो ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १८६४। ट भण्डार । विशेष—सम्कृत टीका सहित है । गायाग्रो के ऊपर अर्थ दिया हुआ है ।
- ५३. कल्पसूत्र टीका —समयमुन्दरोपध्याय। पत्र सं० रें। म्रा० ६४४ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-प्रागम। र० काल ४। ले०, काल स० १७२५ वर्गितक। पूर्गा,। वे० सं० २८। ख भण्डार।

विशेष--- लूराकर्शमर ग्राम मे ग्रथ की रचना हुई थी। टीका का नाम कल्यलता है। सारक ग्राम मे प॰ भाग्य विशाल ने प्रतिलिशि की थी।

४४. कल्पसूत्रवृत्ति : : । पत्र स० १२६। आ० ११४४ई इच । भा० प्राकृत । विषय-ग्रामम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८१८ । ट भण्डार ।

प्रथ कल्पसूत्र " "" । पत्र सं० १० से ४४ । आ० १० है ४४ है इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० २००२ । ऋ भण्डार ।

विशेष—सम्कृत मे टिप्परा भी दिया हुम्रा है।

४. च्रपंशासीरवृत्ति—सोधवचन्द्र त्रैविद्यदेव। पत्र सं॰ ६७। ग्रा॰ १२४७६ इंच। भा॰ सस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र॰ काल शक स॰ ११२५ वि० स० १२६०। ले॰ काल स॰ १८६ वैशाख बुदी ११। पूर्ण। वे॰ स ११७। कं भण्डार।

विशेष---प्र'थंके मूलकर्ता नेमिचन्द्राचार्य है।

४७. प्रति सं०२। पत्र स० १४४। ले० काल स० १६५५। वे० सं० १२०। क भण्डार।
४८ प्रति सं०३। पत्र स० १०२। ले० काल सं० १८४७ ग्रापाढ बुदी २। ट भण्डार।
विशेष—भट्टारक मुरेन्द्रकोत्ति के पठनार्थ जयपुर मे प्रतिलिपि की गयी थी।

- ४६. त्तपणासार—टीका"" ""। पत्र स० ६१। म्रा० १२०४५ इ.च.। भा० संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । म्रपूर्ण। वे० स० ११८। के भण्डार।
- ६०. चपणासारभाषा—पं० टोडरमता। पत्र सं० २७३। म्रा० १३४६ ईच। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल स०१८१८ माघ सुदी ४। ले० काल १९४९। पूर्ण। वे० सं०११९। क भण्डार।

विशेष—क्षपणासार के मूलकर्ता ग्राचार्य नेमिचन्द्र है। जैन सिद्धान्त का यह ग्रपूर्व ग्रन्थ है। महा प • टोडरमलजी की गोमट्टसार (जीव-काण्ड ग्रीर कर्मकाण्ड) लिब्बसार ग्रीर क्षपणासार की, टीका का नाम सम्यक्तान चित्रका है। इन तीनो की भाषा टीका एक ग्रन्थ में भी मिलता है। प्रति उत्तम्है।

६१: गुगाम्थानचर्ची " """ पत्र मं० ४५। ग्रा० १२×५ डंच । भा० प्राकृत । निषय— सिद्धान्त । र० काल × । ते० काल × । पूर्गा । वे० म० ५०३। व्य भण्डारं। '

६२ प्रति स्टर्। ले॰ काल 🗙 । वै० स० ५०४ । व्य भण्डार ।

६१. गुराम्थानक्रमारोहसूत्र—रत्नशोलर । पत्र सं० १ । श्रा० १०×८ होन । भा० मन्द्रन । विक्य-सिद्धान्त । र० काल × । ने० काल × । पूर्ण । ने० म० १३५ । छ भण्डार ।

६४. प्रति सं० २। पत्र स० २१। ले० काल स० १७३५ ग्रामाज बुदी १८। वे० म० ०७६। छ भणार। विशेष संस्कृत टोका सहित ।

६४. गुग्रस्थानचर्चा'''''' '''। पत्र मं०३। ग्रा०६४८ टच। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त रं र० काल ४ । तेर्व काल ४ । वेर्व मं० १३६०। ग्रपूर्ण । श्र भण्डार ।

६६. प्रति सं०२। पत्र म०२ मे २४। वे० म० १३७। इ भण्डार।

६७. प्रति सं० ३ । पत्र स० २२ से ५१ । प्रशूर्ण । ते० तात 🔀 । वे० स० १३६ इ मण्डार ।

६८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० का॰ में। १६६३। वे० म० ४६६। च भण्डार।

६६. प्रति सं० ४ । पत्र स• १५ । ले० का ४ । वै० म० २३६ छ भण्डार ।

७०. प्रति सं० ६ | पत्र स॰ २६ । ले॰ काल 🔍 । वे॰ स॰ ३४६ । भू भण्डार ।

७१. गुग्रस्थानचर्चा—चन्द्रकीति । पत्र स० ३६। ग्रा० ७×७ इ च । भा० हिन्दी । विषय-मिद्रान्त । र• काल × । ले० काल × । वे० स० ११६।

७२. गुरास्थानचर्चा एवं चौबीस ठागा चर्चा '' ""। पत्र मं० ६ । ग्रा० १०८५ इस । भाव मन्द्रत । विषय-भिद्वान्त । र० का० × । ले० का० × । प्रपूर्ण । वे० म० २०३१ | ट भण्डार ।

७२. गुरास्थानप्रकरगाः """। पत्र सं • ६। स्रा० ११×४ छ च । भा० सम्कृत । विषय—सिदान्त र०का × । ले०का० × । पूर्ण । वे सं १३६ । 'ड' भण्डार ।

७४. गुर्सम्थानभेद " """। पत्र म०३। ग्रा०११४५ इच। भा० मस्कृत। विषय—निहान्त। र• काल ४। ले० क्वाल ४। प्रपूर्स। वै० मं०१६३। व्य भण्डार।

७४. गुरास्थानमार्गसा """। पत्र स० ४। म्रा० ५×६ दे इ'च। भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त र• काल ४। ले० काल ४। पूर्स । वे० मं० ५३७। च भण्डार ।

७६. सुगास्थानमार्गगारचना' " । पत्र सं० १८ । आ० ११ ४८ ह च । आ० रम्मृत । विषय-मिद्धान्त रंग काल × । लेग काल × । प्रपृर्ता । वे० सं० ७७ । च भण्डार ।

सिद्धान्त एवं चर्चा]

७७ गुग्रास्थानवर्शन " "" पत्र सं० २० ग्रा० १० ४ इच । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । प्रपूर्श । वे० स० ७८ । च भण्डार ।

विशेष-१४ गुणस्थानो का वर्शन है।

७८ गुण्मश्रानवर्णन : " । पत्र सं० १५ मे ३१ । आ० १२×५ है इंच । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३६ । ङ भण्डार ।

७६ प्रति स०२। पत्र मं० द। ले० काल म० १७६३। वे० स० ४६६। ञा भण्डार।

प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । वे० काल सं० ११५७ श्रापाद सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ११८ । श्रू भण्डार ।

प्रशस्ति—सवत् १५५७ वर्षे ग्रापाद शुक्ल नवम्या श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये वलात्कारगरो सरस्वतीगच्छे श्री कुदकु दाचार्यान्वये मट्टारक श्री पद्मनिन्द देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुभचद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचद्रदेवास्तत्शिष्य मुनि श्री मडलाचार्य रत्नकीर्त्त देवास्तत्भिष्य मुनि हेमचंद्र नामा तदाम्नाये सहलवालवसे सा० देल्हा भार्या देल्ही तत्पुत्र मा० भोजा तद्भार्या श्ररणभास्तत्पुत्रा सा० भावधो द्वितीय श्रमरद्यो तृतीय जाल्हा एते सास्त्रमिद लेखियत्वा तस्मै ज्ञानपात्राय मुनि श्री हेमचंद्राय भक्त्या प्रदत्तं ।

प प्रति स०२। पत्र स०७। ले० काल X। वे० स०११६४। ऋ भण्डारे।

न्य. प्रति स० ३। पत्र म० १४६। ले० काल स० १७२६। वे० स० १११। ऋ भण्डार।

म् २२ प्रति सं०४ । पत्र स०४ में ४८ । ले० काल स० १६२४ । चैत्र सुदी २ । अपूर्ण । चे• स०१२८ । क भण्डार ।

विशेष—हरिश्रन्द्र के पुत्र मुनपथी ने प्रतिलिपि की थी।

प्तरु. प्रति स॰ ४ । पत्र स० १२ । ले० काल 🗙 । प्रपूर्शा । वे० स० १३६ । क भण्डार ।

मा. प्रति सं०६। पत्र सं०१८। ले० काल ×। वे० स०१३६। स्व भण्डार।

म्ह. प्रति स०७। पत्र स०३७४। ले॰ काल मं०१७३८ श्रावण सुदी ४। वे॰ मं॰ १४। प

विकेप-प्रति टीका सहित है। श्री वीरदास ने श्रकवराबाद में प्रतिलिपि की शी।

म. प्रति सं० म । पत्र म० ७४ । ल० काल सं० १८६१ श्रापाढ सुदी ७ । वे० सं० १३म । क् मण्डार । द्रद्र. प्रति सं ६ । पत्र सं ० ७७ । ले० काल सं ० १८६६ चैत्र बुर्दा ३ । वे० सं ० ७६ । च भण्डार । द्रह. प्रति सं ० १० । पत्र म० १७२–२४१ । ले० काल ⋉ । प्रपूर्गी । वे० सं ० ८० । च भण्डार ।

६०. प्रति सं० ११। पत्र सं० २०। ले० काल ४। अपूर्ण। वै० मं० =४। च भण्डार।

६१. गोस्मटसारटीका —सकलभूपर्गा। पत्र सं०१४३८। स्रा०१२१४७ उचा भा० सस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल सं०१४७६ कार्तिक मृदी १३। ले० वाल यं०१६४४। पूर्णा। वे० यं०१४०। का भण्डार।

विशेष—बाबा दुलीचन्द नै पन्मालाल चौधरी से प्रनिलिपि सराई। प्रति २ वैष्टमो मे बंधी है।

६२ प्रति सं०२।पत्र स०१३१। ले० काल 🗴 । वै० सं०१३७। क भण्डार।

ह 3 गोम्मटसारटीका—धर्मचन्द्रः पत्र स० ३३ । ग्रा० १०×५ देह च । भा० सम्इत । विषय— सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६ । क भण्डार ।

विशेष—पत्र १३१ पर श्राचार्य धर्मचन्द्र कृत टीका की प्रशस्ति का भाग है। मागपुर मगर (नागीर) में महमदला के शामनकाल में गालहा श्रावि चादवाड गोत्र त्राले श्रावकों ने भट्टारक धर्मचन्द्र की यह प्रति लिखकर प्रवानकी थी।

६४. गोम्सटसारवृत्ति—वेशववर्णी। पत्र म० ४३२। ग्रा० १०५४४६ डच। भा० मन्द्रत। र० काल ४। ते० काल ४। पूर्ण। वे० सं० ३०१। त्र्यू भण्डार।

विशेष—मूल गाथा सहित जीवकाण्ड एवं कर्मकाण्ड की टीका है। प्रति श्रभयचन्द्र द्वारा मंशीधित है। 'प॰ गिरधर की पोथी है' ऐसा लिखा है।

ध्यः गोग्मटमारवृत्ति" " । पत्र सं० ३ से ६१२ । आ० १०३४४ दे उंच । भा• संस्कृत । विषय-मिद्रान्त । र० काल ४ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वै० मं० १२३≈ । आ भण्डार ।

६६. प्रति मं०२। पत्र स० २१४। ले० काल ४। ते० स० ≂६। छ भण्डार।

१५. गोम्मटसार (जीवकारुड) भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० २२१ मे ३६४ । आक्र १५४६ इ.स. भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल 🗴 । मे० काल 🗴 । अपूर्ण । वै० २० ४०३ । आक्र भण्डार ।

> विभेष — पंडित टोटरमलजी के स्वय के हाथ का लिखा हुआ ग्र थ है। जगह २ कटा हुआ है। टोका का नाम सम्यक्जानचन्द्रिका है। प्रदर्शन—योग्य।

६८. प्रति स० २ । पत्र स० ६७ । ते व काल 🗙 । प्रपूर्ण । ते व स व ३७५ । ऋ भण्डार ।

हर. प्रति मर्व २ । पत्र मर ६४६ । तेरु कार्व मर १६४८ भादवा मुदी १४ । तेरु संर १४९ । क

१८६. प्रति सं २ १८पत्र म० ११। ले० काल 🔀 । प्रपूर्ण । वे० म० १२६५ । स्त्र भण्डार । १०१ प्रति सं ८४। पत्र म० ५७६। वे० काल स० १८८५ माघ सुदी १५। वे० स० १८। ते भण्डार ।

विशेष—कालूराम माह् तथा मन्तालाल कामलीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी

१०२. प्रति सं० ४। पत्र स० ३२८। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० स० १४६। ड भण्डार।
विशेष—२७४ मे ग्रागे १४ पत्रो पर ग्रुणस्थान ग्रादि पर यंत्र रचना है।

१८३ प्रति स०६। पत्र मं० ५३। ले० काल ×। वे० सं० १५०। ड भण्डार।
विशेष—केवल यत्र रचना ही है।

१०४. गोम्मटसार-भाषा—पं टोडरमल । पत्र म० २१३ । ग्रा० १५×१० इंच । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल म० १८१८ माघ सुदी ५ । ले० काल स० १९४२ भादवा मुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १५१ । क भण्डार ।

विशेष---लिक्सिर तथा क्षपंगासार की टीका है। गगोशलाल मु दरलाल पाड्या ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवायी।

१०४ प्रति संट २ । पत्र मं॰ १११० । ले० काल सं० १८५७ मावरा मुदी १ । वे० सं० १३८ । ख भण्डार ।

१०६. प्रति सं ८ ३ । पत्र मं ० ६७१ में ७६५ । चे० काल 🔀 । प्रपूर्ण । वे० सं० १२६ । ज भण्डार । १०७. प्रति सं८ ४ । पत्र मं० ६१८ । ले० जाल मं० १८८७ वैगाल मुदी ३ । प्रपूर्ण । वे० स० २९१८ । ट भण्डार ।

विशेष-प्रति बढे श्राकार एवं मुन्दर निग्वार्ड की है तथा दर्शनीय है। कुछ पत्री पर बीच मे कलापूर्स गोलाकार दिये है। बीच के कुछ पत्र मही है।

१०८. गोम्मटमारपीठिका-भाषा—प॰ टोडरमल । पत्र सं० ६२ । त्रा० १५४७ इ'च । भा० हिन्दी । विषय-सिदान्त । र० काल × । ने० काल × । अपूर्ण । वै० मं० २३२ । भा भण्डार । ् १०६. गोम्मटसारटीका (जीवकागड) " " । पत्र म० २६५ । आ० १३४६ इच । मा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । ज भण्डार .

विशेष--टीका का नाम तत्वप्रदीपिका है।

११८. प्रति स० २। पत्र स० १२। ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० म० १३१। ज मण्डार।

१११. गोम्मटसारसंदृष्टि—प० टोड्रमल । पत्र म० ६२ । ग्रा०१५×७ इ च । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २० । ग भण्डार ।

११२, प्रति सं०२। पत्र म० ४६ में २०४। लें काल 🗴 । अपूर्ण । ते व स० ५३६। च भडार।

११३. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) — नेमिचन्द्राचार्य। पत्र स० ११६ । ग्रा० ११×५ डच । भा० प्राकृत । विषय-मिद्धान्त । र० काल 🗴 । ले० काल म० १८६५ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ६१ । च भण्डा ।

११४ प्रति सं०२। पत्र स०१८३। ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० स० ५२। च भण्टार ।

११४. प्रति सं० ३। पत्र स० १६। ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० स० ५३। च भण्डार ।

११७. प्रति सं ४ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १८४४ चैत्र बुदी १४ । अपूर्ण । वे० स० १८२० । ट मण्डार ।

विशेष—भट्ट।रक सुरेन्द्रकीत्ति के विद्वान छात्र सर्वमुख के ग्रम्थयनार्थ ग्रस्टोशा नगर मे प्रतिनिधि की गई।

११७. गोम्मटसार (कर्मकायस) टीका—कनकनितृ। पत्र म०१०। ग्रा०११५×५८ टच। भा० सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । (तृतीय श्रिधकार तक) । वे॰ स० १६५। क्र

११८ गोस्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका—अष्टारक ज्ञानभूपण्। पत्र मं०५४। आ०११ ५८६ टच। भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल 🗙 । नं० कान म०१६४७ माघ सुदी १। पूर्ण । वे० स० १२८। क मण्डार ।

विशेष-सुमितकोत्ति की सहाय्य मे टीका लिखी गयी थी।

११६. प्रति स०२ । पत्र सं० ६३ । ले० काल म० १६७३ फागुगा सुदी ५ । वं० मं० १३६ । इस मण्डार ।

१२० प्रतिस०३ । पत्र सं०२१ । ले॰ काल 🔀 । अपूर्ण । वे॰ स॰ ८४७ । इप भण्डार ।

१२१ प्रति सं०३। पत्र सं०५१। ले० काल 🗴 । वे० सं०२५। ख भण्डार।

१२२. प्रति स० ४। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १७५ ... । वे० सं० ४६०। व्य भण्डार।

१२३. गोम्मटसार (कर्मकायड) भाषा—पं० टोडरमल। पत्र स० ६६४। आ० १३×६ इच। भा० हिन्दो गद्य (ढूंढारी) । विषय-सिद्धान्त। र० काल १६ वी शताब्दी। ले• काल मं० १६४६ ज्येष्ठ मुदी ६। पूर्गा। वे० सं० १३०। क भण्डार।

विशेप--प्रति उत्तम है।

१२४. प्रति संट २ । पत्र स० २४० । ले॰ काल 🗙 । वे॰ स० १४६ । ड भण्डार ।

विशेष--सदृष्टि सहित है।

१२५. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा—हेमराज। पत्र स० ५२। ग्रा० ६×५ इच। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल सं० २०१७। ले० काल सं० १७८८ पौष सुदी १०। पूर्ग। वे० मं. १०५। स्त्र भण्डार।

विशेष---प्रश्न साह भ्रानन्दरामजी खण्डेलवाल ने पूछ्या तिम ऊपर हेमराज ने गोम्मटसार को देख के क्षयोपगम माफिक पत्री में जवाव लिखने रूप चर्चा की वासना लिखी है।

१२६. प्रति स० २ । पत्र स० ५५ । । ले० काल स० १७१७ स्रासीज बूदी ११ । वे स. १२६ ।

विशेष—स्वपठनार्थे रामपुर मे कल्यागा पहाडिया ने प्रतिलिपि करवायी थी। प्रति जीर्गा है। हेमराज १८ वी शताब्दी के प्रथम गाद के हिन्दी गद्य के ग्रच्छे विद्वान हुये है। इन्होने १० मे ग्रधिक प्राकृत व सम्कृत रचनाग्रो का हिन्दी गद्य मे स्पातर किया है।

१२७. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका " । पत्र सं०१६। ग्रा०११५ ४ इंच। भा० सम्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण। वे० सं० ८३। च भण्डार।

विशेप---प्रति प्राचीन है।

१८८. प्रति सं०२। पत्र स०६८। ले० काल स० ४। वे० म०६६। इ भण्डार।

१२६. प्रति स० ३। पत्र सं० ४८। ले० काल 🗴 । वे० मं० ६१। छ भण्डार।

विशेष-ग्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है --

इति प्रायः श्रीगुमट्टसारमूलान्टीकाच्च नि.वाश्यक्रमेग्गएवीवृत्य लिखिता । श्री नेमिचन्द्रसैद्धान्ती विरचितकर्मप्रकृतिप्र थस्य टीका समाप्ताः ।

73०. गौतमकुत्तक—गौतम स्वामी । पत्र स० २। ग्रा० १०×४ दे इ च । भा० प्राकृत । विषय– मिद्रान्त । र० वाल ८ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १७६६ । ट भण्डार ।

विशेष-प्रति गुजराती टीवा सहित है २० पद्य है।

१३१. गोतमकुलकः " '। पत्र सं०१। ग्रा० १०×४ इच। भा० प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। द० काल-×। ले० काल-×। पूर्ण। वे० म०१२४२। स्त्र भण्डार।

विशेष--- नस्कृत टीका सहित है।

१३२. चतुर्दशसूत्र " " । पत्र स०१। ग्रा०१०×४ इंच। भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० कान × । ने० नान × । पूर्ण । ने० स० २६१ । स्त्र भण्डार ।

१३3. चतुर्दशसूत्र--विनयचन्द्र मुनि। पत्र स० २६। म्रा० १०३×४ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-प्रागम। र० कात ×। ले० काल स० १६=२ पौप बुदी १३। पूर्ण। वै० सं० १८२। ड भण्डार।

१६४. चतुर्दशांगवाद्यविवरण : । पत्र स० ३। म्रा० ११४६ इंच। भा० सस्कृत। विषय-मागम। र० नाल ×। ते० काल ×। म्रपूर्ण। वे० स० ५१४। ख भण्डार।

विशेष---प्रत्येक ग्रग का पद प्रमास दिया हुआ है।

१३४. चर्चाशतक—ग्रानतराय। पत्र स० १०३। ग्रा० १९६४८ इ च । भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-गिदान्त । र० पाल १८ वी शतान्दी। ले० काल स० १६२६ ग्रापाढ बुदी ३। पूर्ण। वे० स० १४६। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी गत्र टोका भी दी है।

१३६. प्रति संट २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६३७ फाग्रुसा सुदी १२ । वे० स० १५० । के भण्डार ।

१३७. प्रति संट २ । पत्र स० ३० । ले० काल 🔀 । वे० स० ४६ । म्रपूर्श । स्त्र मण्डार ।

विशेष-टच्या टीशा सहित ।

१३८. प्रति सं २ ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १६३१ मगसिर सुदी २ । वे० स० १७१ । उपारा ।

८ इस् प्रति सं०४। पत्र स०१६। ते० नाल-०४। ते० स०१७२। इ भण्डार।

१४: प्रति मं २ ६ । पण म० ६४ । ले० नात मः १६३४ कार्तिक मुदी मा वे० स० १७३ । ए भारता

विशेष—नीले कागजो पर लिखी हुई है। हिन्दी गद्य में टीका भी दी हुई हैं।
१४१. प्रति सं २०। पत्र स० २२। ले० काल सं० १६६८। वे० सं० २८३। स्त भण्डार।
विशेष—निम्न रचनाये और है।

- १ ग्रक्षर बाबनी द्यानतराय हिन्दी
- २. गुरु विनती भूधरदास "
- ३. वारह भावना नवल 🕒 🦡
- ४ समाधि मरण -

१४२ प्रति सं २ ८ । पत्र मं ० ४६ । ले० काल 🔀 । अपूर्या । वे० सं ० १५६३ । ट भण्डार । विशेष—गुटकाकार है ।

१४३. चर्चिवर्णन—। पत्र सं० ८१ से ११४। ग्रा० १०ई×६ इख्र । भाषा हिन्दी। विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० १७० । ड भण्डार ।

१४४. चर्चासंग्रह ""। पत्र सं० ३९ । ग्रा० १० $\frac{1}{6}$ \times ६ इख्र । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल \times । ले० काल \times । ग्रपूर्ण । वे० सं० १७६ । छ भण्डार ।

१४४ चर्चासंग्रह " " । पत्र सं० ३ । ग्रा० १२×५ इख्र । भाषा संस्कृत-हिन्दी । विषय सिद्धात । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०५१ । ग्रा भण्डार ।

१४६. प्रति सं ८२। पत्र सं०१३। ले० काल ×। वे० सं० ८६। ज भण्डार। विशेष—विभिन्न ग्राचार्यो की संकलित चर्चाग्रो का वर्णन है।

१४७. चर्चासमाधान-भूधरदास । पत्र सं० १३०। ग्रा० १०४५ इख्र । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धात । र० काल स० १८०६ मात्र सुदी ५ । ले० काल सं० १८६७ । पूर्ण । वे० स० ३८६ । ग्रा भण्डार ।

१४८. प्रति सं०२ । पत्र सं० ११०। ले० काल सं० १६०८ म्राषाढ बुदी ६। वे० सं० ४४३। स्र भण्डार।

> १४६. प्रति सं २ ३ । पत्र सं ० ११७ । ले० काल सं ० १८२२ । वे० सं ० २६ । इप्र भण्डार । १४०. प्रति सं ० ४ । पत्र सं ० ६६ । ले० काल सं ० १६४१ वैज्ञाल सुदी ४ । वे० सं ० ५० । ख भंडार । १४१. प्रति सं ० ४ । पत्र सं ० ६० । ले० काल सं ० १६६४ चैत सुदी १४ । वे० सं ० १७४ । इन् भडार । १४२. प्रति सं ० ६ । पत्र सं ० ३४ मे १६६ । ले० काल 🔀 । प्रपूर्ण । वे० सं ० ५३ । इन् भण्डार ।

१४२. प्रति सं०७। पत्र स ७४। ले० काल सं० १८८३ पीप सुदी १३। वे० सं० १६७। छ भण्डार। विशेष--जयनगर निवासी महात्मा चदालाल ने मवाई जयपुर मे प्रतिलिपी की थी।

१४४. चर्चासार—पं० शिवजीलाल। पत्र सं० १३३। ग्रा० १०३४५ डख्न । भाषा हिन्दी । विषय— सिद्धान्त । र० काल-× । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४८ । क भण्डार ।

१४५. चर्चासार '। पत्र मं० १६२। ग्रा० ५४४ हुँ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० सं० १४०। छ भण्डार ।

१४६ चर्चासागर : । पत्र स०३६। ग्रा० १३×४६ इख्र । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ग्रपूर्श । वे० सं० ७८६ । स्र भण्डार ।

१४७. चर्चासागर—चंपालाल । पत्र स० २०४ । ग्रा० १३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १६१० । ले० काल स० १६३१ । पूर्ण । वै० स० ४३६ । श्र भण्डार ।

विशेष--प्रारम्भ मे १४ पत्र विषय सूची के श्रलग दे रखे हैं।

१४८. प्रति संट २ । पत्र स• ४१० । लेट काट स० १६३८ । वेट सट १४७ । क भण्डार ।

१४६. चौदहगुण्स्थानचर्चा-ऋखयराज । पत्र स० ४१ । ग्रा० ११×५६ इख्र । भा० हिन्दी गद्य । (राजस्थानी) विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६२ । ऋभण्डार ।

१६०. प्रति सं०२। पत्र स०१-४१। ले० का० х। वे० स० ५६०। स्त्र भण्डार।

१६१. चौद्हमार्गगाः ""। प० स० १०। ग्रा० १२×५ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स • २०३६ । श्र भण्डार ।

१६२. प्रति सं०२ । पत्र सं०१६ । ले० काल × । वे० सं० १८५५ । ट भण्डार ।

१६३. चौबीसठाणाचर्चा-नेमिचन्द्राचार्थ। पत्र सं०६। आ०१०३४४ इझ। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल 🗴। ले० काल। सं०१८२० वैशाख सुदी १०। पूर्ण। वे० सं०१५७। क भण्डार।

१६४. प्रति सं०२ । पत्र सं०६ । ले० काल 🗙 । म्रपूर्ण । वे० सं०१५६ । क भण्डार ।

१६४. प्रति सं०३। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८१७ पौष बुदी १२। वे० स० १६०। क भण्डार।

विशेष-पं० ईश्वरदास के जिष्य रूपचन्द के पठनार्थ नरायगा ग्राम मे ग्रन्थ की प्रतिलीपि की ।

१६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १६४६ कार्तिक बुदि ५ । वे॰ स० ५१ । ख भडार ।

विशेष-प्रति संस्कृत टोका सहित है। श्री मदनचन्द्र की शिष्या आर्या वार्ड शीलश्री ने प्रतिलिपि कराई। १६७. प्रति सं ४। पत्र स० २२। ले० काल स० १७४० ज्येष्ठ बुदी १३। वे० स० ५२। स्त्र मण्डार। विशेष-श्रेष्ठी मानसिंहणी ने ज्ञानावरणीय कर्म क्षयार्थ प० प्रेम मे प्रतिलिपि करवायी। १६८. प्रति सं० ६। पत्र स० १ मे ४३। ले० काल ४। अपूर्ण। वे० स० ५३। य्व भण्डार। विशेष-मंस्कृत टब्बा टीका महित है। १४३वी गाथा से ग्रन्थ प्रारम्भ है। ३७५ गाथा तक है। १६६. प्रति सं० ७। पत्र सं० ५६। ले० काल ४। वे० म० ५४। स्व भण्डार।

विशेष-प्रति सस्कृत टब्वा टीका सहित है। टीका का नाम 'श्रर्थमार टिप्पग्' है। ग्रानन्दराम के पठनार्थ टिप्पग् लिखा गया।

१७०. प्रति सं० = । पत्र स० २४ । ले० का० स० १६४६ चैत मुदी २ । वे० स० १=६ । ड भडार ।
१७१. प्रति स० ६ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० १३४ । छ भण्डार ।
१७२. प्रति सं० ० । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वे० स० १३४ । छ भण्डार ।
१७३. प्रति स० ११ । पत्र स० ४३ । ले० काल × । वे० सं० १४४ । छ भण्डार ।
विशेष-२ प्रतियो का मिश्रगा है ।

१७४. प्रति सं० १८। पत्र सं० ७। ले० काल 🗴। वे० स० २६१। ज भण्डार।

१७४. प्रति स० १३। पत्र स० २ मे २४। ले० काल सं० १६६५। कार्तिक बुदी ४। अपूर्ण। वे० स० १८१४। ट भण्डार।

विशेप—संस्कृत टीका सहित है। ग्रन्तिम प्रशस्तिः—सवत् १६९५ वर्षे कार्तिक बुदि ५ बुद्धवासरे श्रीचन्द्रापुरी महास्थाने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये चौबीम ठागो ग्रन्थ संपूर्ण भवति ।

१७६. प्रति सं० १४ । पत्र म० ३३ । ले० काल सं० १८१४ चैत बुदि १ । वे० सं० १८१६ । ट भण्डार । प्रशस्त-सवत्सरे वेद समुद्र सिद्धि चद्रमिते १८४४ चैत्र कृष्ण नवम्या सोमवासरे हडुवती देशे श्रराह्वयपुरे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकोर्ति नेद विद्वद् छात्र सर्व सुखह्वयाध्यापनर्थ लिपिकृतं स्वशयेना चन्द्र तारक स्थीयतामिद पुस्तकं ।

१८७. प्रति स०१४। पत्र स०६६। ले० का॰ स० १८४० माघ मुदी १४। वे० सं० १८१७। ट भण्डार १

विशेष-नैरावा नगर मे भट्टारक सुरेन्द्रकीति तथा छात्र विद्वान् तेजवाल ने प्रतिलिधि की । १७८. प्रति सं० १६। पत्र सं० १२। के० काल 🗴 । वे० सं० १८८६ । ट भण्डार । विद्योप-प्रपत्र तक चर्चाये है उसमे आगे दिक्षा की बातें तथा फुटकर ब्लोक है। चौबीम तीर्थ दुरो के चिह्न आदि का वर्णन है।

१७६. चतुर्विशति स्थानक-नेमिचन्द्राचार्य। पत्र म०४६। ग्रा०११×५ इस्र। भा० प्राफृत। विषय-मिद्रात। र० काल 🗴। ले० काल 🗴। पूर्ण। वै० स०१६५। इ भण्डार।

विशेष-सस्कृत टीका भी है।

१८० चतुर्पिशति गुर्गम्थान पीठिका । पत्र स०१८ । आ०१२४५ डख्र । भाषा नम्कृत । विषय-सिद्धान्त । र॰ काल 🗴 । ले॰ काल 🗴 । अपूर्ग । वे० स०१६२५ । ट भण्टार ।

१८१. चौबीस ठाणा चर्चा । पत्र स० २ मे २४। ग्रा० १२४५ देखा भाग गस्कृत । विषय-निद्धान्त । र० काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० सं० १६६४ । त्रा भण्डार ।

१८२ प्रति स० २। पत्र स० ३२ मे ५१ । ग्रा० ११२ ४५ डिश्च । भाषा संस्कृत । ले० काल म० १८६१ पौप मुदी १०। वे० स० १६६६ । ग्रपूर्ण । त्र्य भण्डार ।

विजेप-पं० रामबनसेन धासानगरमध्ये लिखितं।

१८३ प्रति संट ३ । पत्र सट ६३ । ले० काल 🔀 । वे० न० १६८ । ऋ भण्टार ।

१८८. चौबीस ठाणा चर्चा वृत्तिः । पत्र म० १२३ । ग्रा० ८१२८ इख्र । भाषा सम्वृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० म० ३२८ । स्त्र भण्डार ।

१८४. प्रति स०२। पत्र स०१४। लेव काल सं० १८४१ जेठ सुदी ३। म्रपूर्ण। वेव स० ७७७। स्त्र भण्डार।

१८६. प्रति सं०३ । पत्र स०३१ । ले० काल 🗴 । वे० स०१५५ । क भण्डार ।

१८७ प्रति स० ४। पत्र स० ३७। ले० काल मं० १८१० कार्त्तिक बुदि १०। जीर्गा-र्शार्ग। वे० स० १४६। क भण्डार।

विभेप-प० ईश्वरदाम के शिष्य तथा शोभागम के गुरुभाई रूपचद्र के पठनार्थ मिश्र गिरधारी के द्वारा विलिधि करवायी गई। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१८८ चौबीम ठाणा चर्चा । पत्र स० ११। ग्रा० हः ४८ इक्ष । भाषा हिन्दी । विषय-मिद्धात । र० काल ४ । न० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ४३० । ग्रा भण्डार ।

विशेष-समाप्ति मे ग्रन्थ का नाम 'उक्वीस ठारगा' प्रकरण भी लिखा है।

१८६. प्रति सं २ । पत्र स० ६ । लें० काल स० १८२६ । वै० स० १०४७ । ऋ भण्डार ।

१६०. प्रति सं ३ । पत्र स० १ । ले० काल × । त्रपूर्ण । वे० स० २०३६ । त्र भण्डार । १६१. प्रति सं ४ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० ३६२ । त्र भण्डार । १६१. प्रति सं ४ । पत्र स० ४० । ले० काल × । वे० स० १५६ । क भण्डार । विशेष-हिन्दी मे टीका दी हुई है । १६३. प्रति सं० ६ । पत्र स० ४६ । ले० काल × । वे० स० १६१ । क भण्डार । १६५. प्रति सं० ७ । पत्र स० १६ । ले० काल × । त्रपूर्ण । वे० स० १६२ । क भण्डार । १६५. प्रति सं० ७ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । त्रपूर्ण । वे० स० १६२ । क भण्डार । १६५. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १६७६ । वे० स० २३ । स्व भण्डार ।

४६६ हियात्तीसठाणाचर्चा : । पत्र स०१०। ग्रा० ६१ ४४ इच । भाषा सस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल-×। ले० काल स०१ ५२२ ग्रापाड बुदी १। पूर्ण। वे० म०२६ । स्व भण्डार।

विशेष-वेनीरामं की पुस्तक मे प्रतिलीपि की गई।

१६७. जम्बूद्धीपफलः ''। पत्र स० ३२। ग्रा० १२६४६ डच। भाषा सस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल 🗙 । ले० काल स० १८२८ चैत सुदी ४। पूर्ण। वे० म० ११५। स्त्र भण्डार।

१६८ जीवस्वरूप वर्णन """। पत्र स०१४। ग्रा०६×४ इच। भाषा प्राकृत। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० स०१२१। व्याभण्डार।

विशेष--- अन्तिम ६ पत्रो में तत्व वर्गान भी है। गोम्मटसार में में लिया गया है।

१६६. जीवाचारविचार " " | पत्र स० ५ । ग्रा० ६×४ दे इ च । भाषा प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० मं० =३ । आ भण्डार ।

२००. प्रति सं०२। पत्र स० द। ले० काल म० १८१८ मगसिर बुदी १०। वे० स० २०५। क भण्डार।

२०१ जीवसमासिटिप्पण "। पत्र स०१६। ग्रा०११×५ इ.च.। भाषा प्राकृत । विषय--सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३५ । व्य भण्डार ।

२०२. जीवसमासभाषा ''' '। पत्र म०२। ग्रा०११×५ इ.च.। भाषा प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स०१ = १६ , वे० स०१६७१ । ट भण्डार ।

२०३. जीवाजीविचार" । पत्र सं०६२। ग्रा० १२×५ इंच। भाषा सम्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० नान ×। ने० कान ×। वे० स० २००४। ट भण्डार। ,,, २०४ जैन सदाचार मार्नाएड नामक पत्र का प्रत्युत्तर—बाबा दुलीचन्द्र । पण म०२५। आ० १२×७३ इंच। भाषा हिन्दी। विषय-चर्चा समाधान। र० काल म० १६४६। ले० काल ×। पूर्मा। वै० स०२०६। क भण्डार।

२०४. प्रति स० २। पत्र स० २९। ने० काल 🔀 वे० मं० २१७। क भण्डार।

२०६. ठाणागसूत्र """। पत्र स० ४। ग्रा० १० $\frac{3}{6}$ \times ४ $\frac{1}{6}$ इन्द । भाषा सम्कृत । विषय—ग्रागम । र० काल \times । ले० काल । श्रपूर्ण । वे० स० १६२ । श्र भण्डार ।

२०७ तत्त्वकौरतुभ-प० पत्रालाल सघी । पत्र स० ७२७ । आ० १२×७ है इख्र । भाषा हिन्दी । विथय-मिद्धान्त । र० का० × । ले० काल सं० १६४४ । पूर्ण । वे० स० २७१ । क मण्डार ।

विशेष-यह ग्रन्थ तत्वार्थराजवात्तिक की हिन्दी गद्य टीका है। यह १० प्रध्यायों में विभक्त है। इन प्रति में ८ ग्रध्याय तक है।

२० प्रति स० २ । पत्र म० ५४६ । ले० काल स० १६४५ । वे० मं० २७२ । क भण्डार ।

विशेप-५वे ग्रध्याय से १०वें ग्रध्याय तक की हिन्दी टीका है। नवा ग्रध्याय अपूर्ण है।

२०६ प्रति सं०३।पत्र स० ४२८।र० काल स० १६३४। ले० काल 🔀 । वे० स० २४०। इ. भटार विशेष-राजवात्तिक के प्रथमाध्याय की हिन्दी टीका है।

२१०. प्रति सं०४। पत्र स० ४२० मे ७७६। ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० २४१ । ह भण्डार । विशेष-तीसरा तथा चौथा अध्याय है। तीसरे अध्याय के २० पत्र अलग और है। ४७ अलग पत्रों में सूचीपत्र है।

> २११ प्रति स० ४ । पत्र मं० १०७ मे ८०७ । ले० काल × । ते० सं० २४२ । इ. भण्डार । विशेष—५, ६, ७, ८, ६, १०वें ग्रध्याय की भाषा टीका है ।

२१२. तत्त्वदीपिका—। पत्र स० ३१ । आ० ११ $\frac{5}{6}$ \times ६ $\frac{3}{6}$ भाषा हिन्दी गद्य। विषय–मिद्धान्त । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । ते० सं० २०१४ । त्रा भण्डार ।

२१३ तत्त्ववर्णन— शुभचन्द्र । पत्र म०४। ग्रा० १०५४४५ इक्ष । भाषा सस्कृत । विषय-सिद्धान र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ७६ । व्य भण्डार ।

विशेष-भ्राचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी।

२१४. तत्त्वसार— देवसेन । पत्र म०६। आ० ११×५३ इऋ। भाषा प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १७१६ पौप बुदी ४। पूर्ण । वे० सं० २२५।

विशेष-पं० विहारीदास ने प्रतिलिपि करवायी थी।

२१५ प्रति संट २ | पत्र संव १३ । लेव काल × । अपूर्ण । वेव संव २६६ । क भण्डार । विकोप-हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है । अन्तिम पत्र नहीं है ।

२१६. प्रति स० ३। पत्र स० ४। ले० काल 🗙 । वे० सं० १८१२ । ट भण्डार ।

न्थ. तत्त्वसारभाषा-पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० ४४। ग्रा० १२३४५ इक्छ। भाषा हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल सं० १६३१ वैशाख बुदी ७। ल० काल ४। पूर्गा वे० सं० ≺६७। क भण्डार।

विशेप-देवमेन कृत तस्वसार की हिन्दी टीका है।

२१८. प्रति स०२। पत्र म०३६। ले० काल ४। वे० स०२६८। क भण्डार।

२१६. तत्त्वार्थद्पेसा . .। पत्र सं० ३६ । ग्रा० १३ $\frac{2}{5} \times \frac{1}{5}$ इक्क । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान । १० काल \times । प्रपूर्स । वे० स० १२६ । च भण्डार ।

विशेष-केचल प्रथम ग्रध्याय तक ही है।

२२०. तत्त्वार्थबाध-- पत्र सं० १६ । आ० १२५ ४५ इख । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । २० काल ४ । वि० सं० १४७ । ज अण्डार ।

विशेष-पत्र ६ मे भी देवमेन कृत स्रालारपद्वति दी हुई है।

२२१. तत्त्वार्थवोध-- वुधजन । पत्र स० १४५ । ग्रा० ११×५ इख्र । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-भिद्वात । र० काल सं० १८७६ । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० ३६७ । श्र भण्डार ।

२२२. तत्त्वार्थबोध '। पत्र सं०३६। ग्रा०१०१ ×५ इख्रः । भाषा हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ५६१ । च भण्डार ।

२२३. तत्त्वार्धदर्पेगाः । पत्र स० १०। म्रा० १३×४ दे डखा भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र• काल × । ले॰ काल × । म्रपूर्ण । वे॰ स॰ ३५ । ग भण्डार ।

विशेष-प्रथम ग्रध्याय तक पूर्ण, टीका सहित । सन्थ गोमतीलालजी भीमा का भेट किया हुआ है ।

२२४ तत्त्वार्थ**घोघिनीटीका—।** पत्र स० ४२। मा०१३×५ दुद्ध । भाषा सम्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १६५२ प्रथम वैशाख सुदि ३। पूर्ण । वे० स० ३६। ग भण्डार ।

विशेष--यह ग्रन्थ गोमतीलालजी भौमा का है। क्लोक म० २२५।

२२४. तत्त्वार्थरत्तप्रभाकर—प्रभाजन्द्र । पत्र मं० १२६ । ग्रा० १०६×४% इक्ष । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १६७३ ग्रासीज वृदी ५ । वे० स० ७२ । व्य भण्डार ।

विशेष-प्रभाचन्द्र भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे। ब्र० हरदेव के लिए ब्रंथ बनाया था। मंगही क्वर ने जोशी गगाराम से प्रतिलिपि करवायी थी।

२२६. प्रति सार २ । पत्र म॰ ११७ । लेरु काल संर १६३३ आषाढ बुदी १० । वेर संर १३७ । व्या मण्डार । २२ प्रति सं० ४। पत्र स० २ मे ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६३६ । ट भण्डार । विशेष-ग्रन्तिम पुष्पिका— इति तत्त्वार्थ रत्तप्रभाकरग्रन्थे मुनि श्री धर्मचन्द्र शिष्य श्री प्रभाचन्द्रदेव विर- विते ब्रह्मजैत साधु हावादेव देव भावना निमित्ते मोक्ष पदार्थ कथनं दगम सूत्र विचार प्रकरण समाप्ता ॥

२२६. तत्त्वार्थराजवातिक-भट्टाकलंकदेव । पत्र मं० ३६०। ग्रा० १६×७ इख्र । भाषा- मम्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० म० १०७। स्त्र भण्डार ।

विशेष--इस प्रति की प्रतिलिपि स० १५७० वाली प्रति से जयपुर नगर मे की गई थी।

२३० प्रति सं०२। पत्र सं०१२२८। ले० काल म०१६४१ भादवा सुदी ६। वे० स०२३७। क भण्डार।

विशेष-यह ग्रन्थ २ वेष्टनो मे है। प्रथम वेष्टन मे १ मे ६०० तथा द्मरे मे ६०१ मे १२२ न तक पत्र है। प्रति उत्तम है। मूल के नीचे हिन्दी ग्रर्थ भी दिया है।

> २३१. प्रति सं०३। पत्र सं०६२। ले० काल ×। वे० न०६४। स्न भण्डार। विशेप∼मूलमात्र ही है।

२३२. प्रति स०४ । पत्र मं० ५००। ले० काल मं० १६७४ पीप मुदी १२। ते० मं० २४४। इ. मण्डार।

विजेप-जयपुर में म्होरीलाल भावसा ने प्रतिलिपि की।

२३३ प्रतिस⊂ ४ । पत्र स० १० । ले० काल ⋉ । ग्रपूर्ण । वे० स० ६५६ । इ. भण्डार ।

२३४ प्रति सं ०६। पत्र सं०१७४ मे २१०। ने० काल 🗴। ग्रपूर्ण। वै० स०१२७। च भण्डार।

२३४ तत्त्वार्थराजवातिकभाषा " । पत्र स० ५६२। ग्रा० १२४६ दञ्ज । भाषा-हिन्दी गद्य।

२३५. तत्त्वार्थयुत्ति—पं० योगदेव । पत्र स० ६७ । त्रा० ११२×७६ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय— गिज्ञान्त । रचनाकाल × । ले० काल स० १६५८ चैत बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० २५२ । क भण्डार ।

विशेष-वृत्ति का नाम मुखबोध वृत्ति है। तत्त्वार्थ सूत्र पर यह उत्तम टीका है। प० योगदेव कुम्भनगर के नितामी थे। यह नगर कनारा जिले मे है।

२३७ प्रति सः २ । पत्र म० १४७ । ले० काल 🗶 । ने० स० २५२ । इस भण्डार ।

२३८ तत्त्वार्थसार—ग्रामृतचन्द्राचार्य। पत्र स० ४०। ग्रा० १२×५ इख्र । भाग संस्कृत । विषय-भिज्ञान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० मं० २३८ । क भण्डार ।

विशेष-इस ग्रन्थ में ६१= ब्लॉक हैं जो ६ अध्यायों में विभक्त है। इनमें ७ तत्वों का वर्गन क्रिया गमा है। २३६. प्रति सं० २ | पत्र स० ४४ | ले० काल × | वे० स० २३६ | क भण्डार । २४० प्रति सं० ३ | पत्र स० ३६ | ले० काल × | वे० स० २४२ | क भण्डार । २४१. प्रति सं० ४ | पत्र सं० २७ | ले० काल × | वे० स० ६५ | ख भण्डार । २४०. प्रति सं० ४ | पत्र स० ४२ | ले० काल × | वे० स० ६६ | छ भण्डार । विशेष-पुस्तक दीवान जानचन्द की है ।

् रुप्तरे. प्रति संट ६। पत्र स० ४८। ले० काल ४।- वे० स० १३२। व्या,भण्डार।

२४४. तत्त्वार्थसार दीपक-भः सकलकीत्ति । पत्र सं० ६१ । ग्रा० ११×५ इख । भाषा-सम्मृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० मं० २८४ । स्र भण्डार ।

विशेष—भ० सकलकीर्त्ति ने 'तत्त्वार्थसारदीपक' मे जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तो का वर्शन किया है। रचना १२ ग्रध्यायो मे विभक्त है। यह तत्त्वार्थम् व की टीका नहीं है जैमा कि इसके नाम से प्रकट होता है।

२४५. प्रति स०२। पत्र स० ७४। ले० काल स०१८२८। वे० स०२४०। क भण्डार।

२५८ प्रति सट ३। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १६६४ ग्रासोज सुदी २। वे० सं० २४१। क

विशेष--महात्मा हीरानन्द ने प्रतिलिपि की ।

२४७ तत्त्वार्थसारदीपकभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० २८६। ग्रा० १२३४५ इख्र। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। र० काल स० १६३७ ज्येष्ठ बुदी ७। ले० काल ४। पूर्ण। वै० म० २६६। विशेष—जिन २ ग्रन्थो की पन्नालाल ने भाषा लिखी है सब की सूचा दी हुई है।

२४८. प्रति सं २ । पत्र स० २८७ । ले० काल 🗴 । वे० सं० २४३ । क भण्डार ।

२४६. तत्त्वार्थ सूत्र—उमास्त्रानि । पत्र म० २६ । ग्रा० ७×३ई इब्रें । माषा—सस्कृते । विषय— सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १४५८ श्रावरा मुदी ६ । पूर्रा । वे० स० २१६६ (क) व्राप्त भण्डार ।

विशेष—लाल पन्न है जिन पर ज्वेत (रजत) ग्रक्षर है। प्रति प्रदर्शनी मे रखने योग्य है। तत्त्वार्थ सूत्र समाप्ति पर भक्तामर स्तोत्र प्रारम्भ होता है लेकिन यह ग्रपूर्ण है।

प्रशस्ति—स० १४५८ श्रावरा मुदी ६ 🔭 ।

२.४०. प्रति स०२। पत्र स०१६। ले० काल स०१६६६। वे० सं०२२०० ऋ भण्डार। विशेष—प्रति स्वर्गाक्षरों में हैं। पत्रों के किनारों पर मुन्दर वेलें है। प्रति दर्शनीय एव प्रनर्शनी में रखने योग्य है। नर्वान प्रति है। स०१६६६ में जीहरीलालजी नदलालजी घी वालों ने ब्रतोद्यापन में प्रति लिखा कर चढाई।

> २५१. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३७ । ले० काल × । वे० सं० २२०२ । ऋ भण्डार । विभेप-प्रति ताडपत्रीय एव प्रदर्शनी योग्य है ।

२४२ प्रतिसंद ४। पत्र संव ११। लेव काल 🗴 । वेव संव १८४५ । 🛪 मण्डार । २५३. प्रति सं ८ १ । गत्र स० १० । ले० काल म० १८८८ । वे० मं० २४६ । स्त्र भण्डार । २५४. प्रति सं ६ । पत्र स० ३६ । ले० काल सं० १६६६ । ते० मं० ३३० । श्र भण्डार । २५५ प्रति २२०७ । पत्र सं० ६ । ले० काल 🗙 । ऋपूर्गा। वै० स० ३४८ । ऋ भण्डार । २५६ प्रति स् ० = । पत्र स० १३ । ले० काल स० १६३७ । वे० स० ३६२ । ऋ भण्डार । विशेष- हिन्दी मे श्रर्थ दिया हुआ है। २४७. प्रति सं ० ६ । पत्र सं ० ११ । ले० काल 🗙 । वे० सं ० १०७७ । श्र भण्डार । २४८. प्रति सं० १०। पत्र सं० ५५। लेव काल 🗙 । वेव संव १०३०। स्र भण्डार। विशेष--हिन्दी टब्वा टीका सहित है। प० ग्रमीचद ने ग्रलवर मे प्रतिलिपि की। २४६. प्रति सं : ११ । पत्र स० १४ । ले० काल 🗴 । वे० स० ६५ । ऋ भण्डार । २६०. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २६ । ले० काल 🗙 । ऋपूर्गा । वे० म० ७७५ ऋ भण्डार । विशेष-पत्र १७ से २० तक नहीं है। २६१. प्रति सं ८ १३ । पत्र स० ६ से ३३ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० १००६ । 🛪 भण्डार । २६२. प्रति सं०१४ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १८६२ । वे० म० ४७ । ऋ भण्डार । विशेष—संस्कृत टीका सहित । २६३ प्रति सं ८ १४ । पत्र स० २० । ले० काल 🔀 । वै० य० ४८ । ऋ भण्डार । २६४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २५ । ले० काल मं० १६२० चैत वृदी ३ । वे० स० ६१६ । विशेष---सक्षिप्त हिन्दी श्रर्थ दिया हुग्रा है। २६४. प्रति सं० १७ । पत्र स० २४ । ले॰ काल 🗙 । ते॰ मं॰ २००६ । अ भण्डार । २६६. प्रति सं०१८ । पत्र सं०११ मे २२ । ले॰ काल 🗸 । श्रपूर्ण । वै॰ स॰ १२३४ । झ भण्टा । २६७. प्रति सं० १६। पत्र स० १६ ले० काल स० १८६८। वे स० १२४४। स्र मण्डार। २६८. प्रति स०२०। पत्र म०२४। ले० काल 🗴 । वे० म०१२७५ । ऋ भण्डार । २६६. प्रति सं० २१ । पत्र सं० म । ले० काल × । वे० स० १३३१ । ऋ भण्डार । २७०. प्रति सं० २२ । पत्र सं० ५ । ले० काल 🗴 । वे० स० २१४३ । ऋ भण्डार । २७१. प्रति स० २३ । पत्र स० १२ । ले० काल 🗴 । वे० मंग २६५१ । 🛪 भण्डार । •७२. प्रति स० २४। पत्र स० ३८। ले॰ काल स० १९४६ कार्त्तिक मुद्दी ५। वे॰ सं० २००६। श्र भण्डार ।

विशेष-सस्कृत टिप्परा सहित है। फूलचद विदायनया ने प्रतिलिपि की।

सिद्धान्त एवं चर्चा]

` #

२७३. प्रति सं० २४ | पत्र स० १० । ले० काल सं० १६ """। वे. सं० २००७ । आ भण्डार । २७४ प्रति सं० २६ । पत्र सं० ६ । ले० काल 🗙 । अपूर्ण । वे० सं० २०४१ । आ भण्डार । विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२७४. प्रति सं० २७ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८०४ ज्येष्ठ सुदी २ । बे० सं० २४६ । क भण्डार । विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों मे है । शाहजहानाबाद वाले श्री बूलचन्द बाकलीवाल के पुत्र श्री ऋषभदास दौलतराम ने जैसिहपुरा मे इसकी प्रतिलिपि कराई थी । प्रति प्रदर्शनी मे रखने योग्य है ।

क्ष्य प्रति सं २८ । पत्र स० २१। ले० काल सं० १६३६ भादवा सुदी ४। वे० म० २५८। क्ष्मण्डार।

२७७. प्रति सं० २६ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० २५६ । क भण्डार । २७६ प्रति सं० ३० । पत्र स० ४५ । ले० काल सं० १६४५ वैशाख सुदी ७ । वे० सं० २५० । क भण्डार । २७६. प्रति सं० ३१ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० सं० २५७ । क भण्डार ।

२८०. प्रति स० ३२। पत्र स० १०। ले० काल 🔀 । वे० सं० ३७। ग भण्डार। विशेष—महुवा निवासी पं० नानगरामने प्रतिलिपि की थी।

२८१. प्रति सं ० ३३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ३८ । ग भण्डार । विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी । पुम्तक चिम्मनलाल बाकलीवाल की है । २८२. प्रति सं० ३४ पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३६ । ग भण्डार ।

२=३. प्रति सं० ३४ । पत्र स० १० । ले० काल सं० १८६१ माघ बुदी ४ । वे० सं० ४० ।

रा भण्डार ।

٠,

: 1

२५४ प्रति स० ३६। पत्र सं० ११। ले॰ काल ×। वे॰ सं० ३३। घ भण्डार। २५४ प्रति सं० ३७। पत्र सं० ४२। ले॰ काल ×। वे॰ सं॰ ३४ घ भण्डार। विशेष—हिन्दी टब्वा टीका सहित है।

२८६. प्रति सं० ३८ । पत्र सं० ७ । ले० काल 🗴 । त्रे० स० ३५ । घ भण्डार । २८७. प्रति सं० ३६ । पत्र सं० ५८ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० २४६ । द्धः भण्डार । विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२८०. प्रति सं०४०। पत्र सं•१३। ते॰ काल ×। वे सं०२४७। इः भण्डार। २८६. प्रति सं०४१। पत्र सं०६ मे २२। ते॰ काल ×। स्रपूर्ण। वे॰ सं०२४८। इः भण्डार। २६०. प्रति सं०४२। पत्र सं०११। ते॰ काल ×। वे॰ सं०२४६। इः भण्डार।

२६१. प्रति सं० ४३। पत्र स० २६। ते० काल ×। वे० सं० २५०। ड भण्डार। विशेष--भक्तामर स्तोत्र भी है।

,**६**।

```
घ धर. प्रति सं० ४४ । पत्रस० १५ । ले० काल सं० १८८६ । ते० सं० २५१ । इ. अण्डार ।
          ८६३. प्रति स० ४४ । पत्र स० ६६ । ले० काल ४ । वे० स० २४२ । इत भण्डार ।
         विशेष—सूत्रो के ऊपर हिन्दी मे ग्रर्थ दिया हुमा है।
         ६६४. प्रतिसं०४६। पत्र सं०५०। ले० काल 🗴 । वे० स०२५३। ङ भण्डार।
         २६४. प्रति सं०४७। पत्र सं०३६। ले० काल 🗴 । वे० सं०२५४। ड भण्डार।
         २६६. प्रति सं० ४८। पत्र सं० १२। ले० काल स० १६२१ कार्तिक बुदी ४। वे० स० २५५। ड भडार
         २६७ प्रति सं०४६। पत्र सं०३७। ले० काल ×। वे० स० २५६। ड भण्डार।
         इह⊏. प्रति सं० ४० । पत्र सं० २८ । ले० काल ४ । वे० सं० २५७ । ड भण्डार ।
         २६६. प्रति सं ० ४१। पत्र सं ० ७। ले० काल x। प्रपूर्ण। वे० स २५८। ड भण्डार।
         ३००. प्रति सं० ४२ । पत्र सं० ६ से १६ । ले० काल 🔀 । ग्रपूर्ण । वे० स० २५६ । इ भण्डार ।
         ३०१. प्रति स० ४३। पत्र स० ६। ले० काल 🗙 । अपूर्ण। वे० ं० २६०। ड भण्डार।
         ३०२. प्रति सं० ४४। पत्र स० ३२। ले० काल 🗙 । वे० सं० २६१। इ भण्डार ।
         विशेष---प्रति हिन्दी श्रर्थ सहित है।
          ३०३. प्रति सं २ ४४ । पत्र स० १६ । ले० काल 🗙 । अपूर्ण । वे० स० २६२ । उट भण्डार ।
          ३०४ प्रति सं० ४६। पत्र स० १७। ले० काल 🗴 । ऋपूर्ण। वे० स० २६३। ड भण्डार।
          विशेष-केवल प्रथम श्रध्याय ही है। हिन्दी श्रर्थ सहित है।
          ३८६. प्रति सं ० ४८। पत्र स० ७। ले० काल 🗙 । वे० सं० १२८। च भण्डार ।
          विशेष-- प्रक्षिप्त हिन्दी श्रर्थ भी दिया हुश्रा है।
          ३०७. प्रति सं ८ ४६ । पत्र सं० ६ । ले० काल 🗙 । ग्रपूर्ण । वे० स० १२६ । च भण्डार ।
          ३८८. प्रति संर्० ६०। पत्र स० १७। ले० काल स० १८६२ फाग्रुन सुदी १३। जीर्गा। वे० सं० १३०।
ख भण्डार।
          विशेप- मुरलीधर ग्रग्रवाल जोवनेर वाले ने प्रतिलिपि की।
          उटह. प्रति संट ६१। पत्र संट ११। लेट काल संट १६५२ ज्येष्ठ सुदी १। वेट संट १३१। च भण्डार।
          े १०. प्रति सं० ६२। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १५७१ जेठ सुदी १२। वे० सं० १३२। च भडार।
           २११. प्रति सं०६३ । पत्र स०१६ । ले० काल स०१६३६ । वे० स०१३४ । च भण्डार ।
          ।विशेष--छाजूलाल सेठी ने प्रतिलिपि करवायी।
          ३१२. प्रति सं०६४। पत्र स०१६। ले० काल ४। वे० स० १३३। च भण्डार।
           २१२ प्रति सं ०६४ । पत्र स०२१ मे २८ । ले० का० × । स्रपूर्ता । वे० स०१३५ । च भण्डार ।
           २१४. प्रति सं०६६। पत्र सं०१४। ले० काल ×। वे० स०१३६। च भण्ड़ार।
           ३१४. प्रति सं० ६७। पत्र स० ४२। ले० काल 🗙 । त्रपूर्ण । वे० सं० १३७ च भण्डार ।
```

<

```
विशेष--टब्वा टीका सहित । १ ला पत्र नही है ।
```

३१६. प्रति सं०६८। पत्र स०६४। ले० काल स०१६६३। वे० स०१३८। च भण्डार। विशेष—हिन्दी टब्वा टीका सहित है।

३१७. प्रति सं० ६६। पत्र स० ६४। ले० काल स० १६६३। वे० स० ५७०। च भण्डार। विशेष—हिन्दी टब्वा टीका सहित है।

३१८. प्रति सं० ७०। पत्र स० १०। ले० काल ×। वे० स० १३६। छ भण्डार।
विशेष—प्रथम ४ पत्रो मे तत्त्वार्थ सूत्र के प्रथम, पंचम तथा दशम ग्रधिकार हैं। इससे आगे भक्तामर
स्तोत्र है।

३१६. प्रति सं० ७१। पत्र स० १७। ले० काल 🗴। वे० स० १३६। छ भण्डार।

३२०. प्रति सं ० ७२ । पत्र स० १४। ले० काल 🗴 । वे० सं ३८ । ज भण्डार ।

३२९ प्रति सं ७ ७३ । पत्र स० ६ । ले० काल सं० १६२२ फाग्रुन सुदी १५ । वे० स० ८८ । ज भण्डार।

३२२ प्रति स० ७४। पत्र म० ६। ले० काल 🗴 । वे० सं० १४२। मा भण्डार।

३२३. प्रति सं० ७४। पत्र स० ३१। ले० काल 🗴 । वे० सं० ३०५। भूत भण्डार।

३२४. प्रति संट ७६ । पत्र संव २६ । लेव काल 🗙 । वेव संव २७१ । व्य भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल के पठनार्थ लिखा गया था।

३३४. प्रति सं० ७७। पत्र सं० २०। ले० काल सं० १६२६ चैत सुदी १४। वे० स० २७३। ज्य भडार विशेष—मण्डलाचार्य श्री चन्द्रकीर्ति के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी।

३३६. प्रति सं० ७८। पत्र स० ११। ले० काल ×। वे० सं० ४४८। व्य भण्डार। ३३७. प्रति सं० ७६। पत्र स० ३४। ले० काल ×। वे० स० ३४। विशेप—प्रति टब्वा टीका सहित है।

३३८. प्रति सं०८०। पत्र सं०२७। ले० काल 🗴। वे० सं०१६१५ ट भण्डार।

३३६. प्रति सं० पर । पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० १६१६। ट भण्डार।

३४०. प्रति सं ८ ५२ । पत्र सं० २० । ले० काल 🗴 । वे० स० १६३१ । ट भण्डार ।

्विशेष—हीरालाल विदायक्या ने गोरूलाल पाड्या से प्रतिलिपि करवायी। पुस्तक लिखमीचन्द छावडा खजाची की है।

३४१ प्रति संट इन्। पत्र संट ५३। लेट काल सट १६३१। वेट सट १६४२। ट भण्ड.र।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है। ईसरदा वाले ठाकुर प्रतापिसहजी ने जयपुर ग्रागमन ने समय सवाई रामिसह जी के शासनकाल मे जीवरणलाल काला ने जयपुर मे हजारीलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि नी।

३४२. प्रति स० ८४। पत्र स० ३ मे १८। ले० काल ४। ग्रपूर्ण । ते० स० २०६६।

विशेष—चतुर्थं ग्रध्याय से है। उसके ग्रागे कलिकुण्डपूजा, पार्व्वनाथपूजा, क्षेत्रपालपूजा, क्षेत्रपालस्तोत्र तथा चिन्तामणिपूजा है।

३४३. तत्त्वार्थ सूत्र टीका श्रुतसागर । पत्र सं० ३५६ । ग्रा० १२४५ इख्र । भाषामंस्कृत । विषय-मिद्धान्त । र० कांत × । ले० काल सं० १७३३ प्र० श्रावरा सुदी ७ : वे० मं० १६० । पूर्ण । श्रु भण्डार ।

विशेष—श्री श्रुतसागर सूरि १६ वी शताब्दी के संस्कृत के श्रन्छे विद्वान थे। इन्होने ३८ से भी श्राधक ग्रंथों की रचना की जिसमें टीकाएँ तथा छोटी २ कथाएँ भी है। श्री श्रुतसागर के ग्रुरु का नाम विद्यानंदि था जो भट्टारक पद्मनदि के प्रशिष्य एवं देवेन्द्रकीर्त्त के शिष्य थे।

३४४. प्रति सं०२। पत्र सं०३१४। ले० काल म०१७४८ फागन मुदी १४। श्रपूर्गा। वे० स०२५४। क भण्डार।

विशेष-- ३१५ से ग्रागे के पत्र नहीं हैं।

३४४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५३। ले० काल-×। वे० स० २६६। इ भण्डार।

३४६ प्रति सं०४। पत्र स० ३५३। ले० काल-×। वे० स० ३३०। व्य भण्डार।

३४७. तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति—सिद्धसेन गिषा । पत्र सं० २४८ । ग्रा० १०३४४३ डंच । भाषा-सम्बृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल । ले० काल-४ । ग्रपूर्ण । वै० सं० २५३ । क भण्डार ।

विशेष--तीन मध्याय तक ही है। ग्रागे पत्र नहीं हैं। तत्वार्थ सूत्र की विस्तृत टीका है।

३४८. तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति । पत्र स० ६३ । ग्रा० ११४५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धांन्त । र० काल-४ । ले० काल-सं० १६३३ फाग्रुगा बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ५८ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-मालपुरा मे श्री कनकर्कोत्ति ने ग्राने पठनार्थ मु॰ जेसा से प्रतिलिपि करवायी।

प्रशस्ति—सनत् १६३३ वर्षे फागुण् माने कृष्ण् पक्षे पचमी तिथौ रिववारे श्री मालपुरा नगरे । भ० श्री १ श्री श्री चंद्रकीर्ति विजय राज्ये ग्र० कमलकीर्ति लिखापितं ग्रात्मार्थे पठनीया तू मु० जेसा केन लिखितं ।

देश है. प्रति सं०२ । पत्र सं०३२०। ले॰ काल सं०१६५६ फागुरा सुदी १५। तीन श्रध्याय तक पूर्ण। वे० सं०२५४। क भण्डार।

विशेष-वाला बल्श शर्मा ने प्रतिलिपि की थी। टीका विस्तृत है।

३४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ से ५६३ । ले० काल-× । प्रपूर्ण । वे० स० २५६ । क भण्डार । विशेष---टीका विस्तृत है ।

३४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं• ६३ । ले० काल स॰ १७८६ । वे० स० १०४५ । आ भण्डार । ३४२. प्रति सं० ४ । पत्र स० २ से २२ । ले० काल-४ । अपूर्ण । वे० सं० ३२६ । 'क' भण्डार । ३४३. प्रति सं० ६ । पत्र स० १६ । ले० काल-४ । अपूर्ण । वे० सं० १७६३ । 'ट' भण्डार ।

३४४. तत्त्वार्थसूत्र भाषा-पं० सदासुख कासलीवाल । पत्र स० ३३३ । आ० १२३४५ इझ । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धान्त । र॰ काल सं॰ १६१० फाग्रुए। बुदि १० । ले० काल-४ । पूर्ण । वे॰ सं० २४४ । क भण्डार ।

विशेष---यह तत्त्वार्थसूत्र पर हिन्दी गद्य मे सुन्दर टीका है।

३४४. प्रति सं २२। पत्र स०१५१। ले० काल सं०१६४३ श्रावण सुदी१५। वे० सं० २४६। क भण्डार।

३४६. प्रति सं० ३। पत्र स० १०२। ले० काल सं० १६४० मगसिर बुदी १३। ने० स० २४७। क भण्डार।

३५७. प्रति सं०४। पत्र स० ६६। ले० काल सं०१६१५ श्रावरा मुदी ६। वे० म० ६६। अपूर्ण। म्ब भण्डार।

> ३४८ प्रति स० ४। पत्र सं० १००। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४२। विशेष—पृष्ठ ६० तक प्रथम अध्याय की टीका है।

३४६. प्रति सं०६। पत्र सं०२८३। ले॰ काल म०१६३५ माह सुदी ८। वे॰ सं॰ ३३। ङ भण्डार ३६०. प्रति सं०७। पत्र सं०६३। ले॰ काल स०१६६६ । वे॰ स०२७०। ङ भण्डार।

३६१. प्रति सं ० ८। पत्र सं० १०२। ले० काल x । वे० सं० २७१। इन भण्डार !

३६२. प्रति सं ८ । पत्र म० १२८ । ले० काल सं० १९४० चैत्र बुदी ८ । वे० स० २७२ । इ भण्डार । विशेष—म्होरीलालजी खिन्द्रका ने प्रतिलिपि करवाई ।

३६३. प्रति सं० १०। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १९३६। ते० सं० ५७३। च भण्डार। विशेष—मागीलाल श्रीमाल ने यह ग्रन्थ लिखवाया।

३६४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १६५५ । वे० सं० १८५ । छ भण्डार । विशेष—ग्रानन्दचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई ।

३६४. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७१ । ले॰ काल १६१५ श्राषाढ सुदी ६ वे॰ सं॰ ६१ । भ्र भण्डार । विशेष—मोतीलाल गंगवाल ने पुस्तक चढाई ।

३६६. तत्त्वार्थं सूत्र टीका-पं जयचन्द् छाबड़ा। पत्र सं०११८। ग्रा०१३४७ इक्ष । भाषा हिन्दी (गद्य)। र० काल सं०१८९। ले० काल ४। पूर्ण। वै० सं०२५१। क भण्डार।

३६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६७ । ले० काल सं० १८४६ । वे सं० ५७२ । च भण्डार ।

३६८. तत्त्वार्थं सूत्र टीका—पांडे जयवत । पत्र स० ६६ । आ • १३×६ इख्र । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १८४६ । वे० स० २४१ । छ भण्डार ।

केइक जीव अघोर तप करि सिद्ध छै केइक जीव उर्द्ध सिद्ध छै इत्यादि।

इति श्री उमास्वामी विरित्रित सूत्र की बालाबोधि टीका पाढे जयवत कृत संपूर्ण समाप्ता । श्री सवाई के कहने से वैष्ण्व रामप्रसाद ने प्रतिलिपि की ।

३६६. तत्त्वार्थसूत्र टीका--आ० कनककीर्ति ।पत्र सं० १४४ । आ० १२६४५ इझ । भाषा हिन्दी (गद्य) । विषय-सिद्धान्त । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० स० २६६ । उ भण्डार ।

विशेप—तत्त्वार्धसूत्र की श्रुतसागरी टीका के श्राधार पर हिन्दी टीका लिखी गयी है। १४५ मे श्रागे पत्र मही है।

३७०. प्रति सं०२। पत्र सं०१०२। ले० काल 🗴 । वे० सं०१३८। मा भण्डार।

३७१. प्रति स० ३। पत्र स० १६१। ले॰ काल सं० १७८३। चैत्र सुदी ६। वे॰ सं० २७२। त्रा भण्यार।

विशेष--लालसोट निवासी ईश्वरलाल ग्रजमेरा ने प्रतिलिपि की थी।

३७२. प्रति सं ४। पत्र स० १६२। ले॰ काल 🗴। वे॰ स॰ ४४६। वा भण्डार।

३७३ प्रति सं० ४। पत्र सं० १३८। ले० काल स० १६११। वे० सं० १६३८। ट भण्डार।

विशेष-वैद्य श्रमीचन्द काला ने ईसरदा में शिवनारायण जोशी से प्रतिलिपि करवायी।

३७४. तत्त्वार्थसूत्र टीका—पं० राजमल्ल । पत्र सं० ५ मे ४८ । ग्रा० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० २०६१ । ग्रा भण्डार ।

- ३७४. तत्त्वार्थसूत्र भाषा — छोटीलाल जैसवाल । पत्र सं० २१ । ग्रा० १३×५ इस । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १६३२ ग्रासोज बुदी ५ । ले० काल सं० १६५२ ग्रासोज मुदी ३ । पूर्ण । वै० स० २४४ । क भण्डार ।

विशेष---मथुराप्रसाद ने प्रतिलिपि की । छोटीलाल के पिता का नामें मोतीलाल था यह अलीगढ जिला ने मेहू ग्राम के रहने वाले थे। टीका हिन्दी पद्य में है जो अत्यन्त सरल है।

३७६ प्रति सं०२। पत्र स०२०। ले० काल 🗴। वे० स० २६७। इ. भण्डार।

३७७ प्रति सं०३। पत्र सं०१७। । ले० काल 🗴 । वे० सं०२६८ । हा भण्डार ।

३७८. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—शिखर्चन्द । पत्र स० २७ । म्रा० १०३×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १८६८ । ले० काल स० १९५३ । पूर्ण । वे० स० २४८ । क भण्डार ।

३७६ तत्त्वार्थसूत्र भाषा ः । पत्र सं० ९४ । ग्रा० १२×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धात । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३६ ।

३८०. प्रति सं २२। पत्र स०२ से ४६। ले० काल स०१८५० वैशाख बुदी १३। प्रपूर्ण। वे० स०६७। ख भण्डार।

३८९. प्रति सं० ३। पत्र स∙ १६। ले० काल ×। वे० सं० ६८। ख भण्डार।

विशेष--द्वितीय ग्रध्याय तक है।

३-२ प्रति सं० ४। पत्र स० ३२। ले० काल स० १६४१ फाग्रुए। वृदी १४। वे० स० ६६। व भण्डार

३५३ प्रति सं०४। पत्र स०६१। ले० काल ४।वे० सं०४१। ग भण्डार।

३८४ प्रति सं २६। पत्र स० ४६८ मे ८१३। ले० काल सं० 🗙 । अपूर्ण। वे० स० २६४। ड भण्डार।

३८४. प्रति सं०७। पत्र स०८७। र० काल-X। ले० काल सं०१६१७। वे० सं०५७१। च भण्डार।

विशेष--हिन्दी टिप्पण सहित ।

३८६ प्रति सं० ८। पत्र सं० ५३। ले० काल Х। वे० सं० ५७४। च भण्डार।

विजेष-प० सदासुखजी की वचिनका के म्रनुसार भाषा की गई है।

३८७. प्रति सं• ६ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० ५७५ । च भण्डार ।

३८८. प्रति स० १०। पत्र स० २३। ले० काल 🗴। वे० सं० १८४ । छ भण्डार।

३८६.तत्त्वार्थसूत्र भाषा """। । पत्र स० ३३ । ग्रा० १०४६६ इख । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-तिद्वान्त । र० काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० सं० ८८६ ।

विशेप---१५वा तथा ३३ से ग्रागे पत्र नहीं है।

३६०. तत्त्वार्थसूत्र भाषा"" "" । पत्र सं० ६० से १०८ । ग्रा० ११४४ दृ इख्र । भाषा-४ । हिन्दी । र० काल ४। ले० काल सं० १७१६ । ग्रपूर्ण । वे० सं० २०८१ (भ्र्य भण्डार ।

प्रशस्ति—सवत् १७१६ मिति श्रावरण सुदी १३ पातिसाह ग्रीरंगसाहि राज्य प्रवर्त्तमाने इदं तत्त्वार्थ शास्त्र सुज्ञानात्मेक ग्रन्य जन बोधाय विदुषा जयवता कृतं साह जगन " " पठनार्थं वालाबोध वचनिका कृता । किमर्थं सूत्राणा । मूलसूत्र ग्रतीव गभीरतर प्रवर्त्तत तस्य ग्रथें केनापि न ग्रवबुध्यते । इदं वचनिका दीपमालिका कृता कश्चित भव्य इमा पठित ज्ञानो=द्योत भविष्यति । लिखापितं साह विहारीदास खाजानची सावडावासी ग्रामेर का कर्मक्षय निमित्त लिखाई साह भोला, गोधा की सहाय से लिखी है राजश्री जैसिहपुरामध्ये लिखी जिहानावाद ।

३६१. प्रति सं २ १ पत्र सं० २६ । ले० काल स० १८६० । वे० स० ७० । ख भण्डार । विशेष-हिन्दी में टिप्परा रूप में प्रर्थ दिया है ।

े ३६२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४२। र० काल ×। ले० काल सं० १६०२ ग्रासोज बुदी १०। वे० सं० १६८। मा भण्डार।

विशेष—टव्वा टीका सहित है। हीरालाल कासलीवाल फागी वाले ने विजयरामजी पाड्या के मन्दिर के वास्ते प्रतिलिपि की थी।

३६३. त्रिभगीसार—नेमिचन्द्राचार्थ। पत्र स० ६६। ग्रा० ६ $\frac{5}{5}$ \times $\frac{1}{8}$ इक्ष्र। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धात। र० काल \times । ले० काल सं० १८५० सावन सुदी ११। पूर्ण। वे० स० ७४। ख भण्डार।

विशेष--लालचन्द टोग्या ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की ।

३६४. प्रति सं०२। पत्र स० ५८। ले० काल स० १६१६। म्रपूर्या। वे० सं० १४६। च भण्डार। विशेष---जौहरीलालजी गोधा ने प्रतिलिपि की।

३६४. प्रति सं २३। पत्र स० ६६। ले॰ काल सं० १८७६ कार्तिक सुदी ४। वे॰ सं॰ २४। व्य भण्डारः। विभेप---भ॰ क्षेमकीर्ति के शिष्य गोवर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी। ३६६. त्रिभंगीसार टीका-विवेकनिट। पत्र मं० ४८। ग्रा० १२४५, दञ्च। भाषा-मम्मृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ४। ले० काल म० १८२४। पूर्ण। वे० म० २८०। क भण्डार।

विशेष--- प० महाचन्द्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३६७. प्रति सं०२। पत्र स० १११। ले० काल ×। वै० स० २८१। क भण्डार।

३६८ प्रति सं २ ३ । पत्र स० १६ मे ६५ । ले० काल 🔀 । श्रपूर्ण । त्रे० म० २६३ । छ अण्टार ।

३८६. दश्वेकालिकसूत्र । पत्र म० १८ । आ० १०८४४६ दञ्ज । भाषा-प्रापृत । विषय-ग्रागम र० काल ४ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० स० २२५१ । स्त्र भण्डार ।

४००. दशवैकालिकसूत्र टीका "" । पत्र स० १ मे ४२।ग्रा० १०६×४५ इझ । भाषा मन्त्रत । विषय-ग्रागम । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० मं० १०६ । छ भण्डार ।

४०१ द्रव्यसंग्रह—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र म०६। ग्रा०११×४८ उञ्च। भाषा-प्राहृत । र० नात 🗸 । ते० काल स०१६३५ माघ सुदो १०। पूर्ण। वे० सं०१८५। स्त्र भण्डार।

प्रशस्ति--संवत् १६३५ वर्षके मात्र मामे शुक्लपक्षे १० तिथी।

४०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वै० स० ६२६ । ऋ भण्डार ।

४०३ प्रति सं०३। पत्र स०४। ले० काल मं० १८४१ ग्रामोज बुदी १३।वे० न० १३१०। स्त्र भणार

४०४. प्रति सं०४ । पत्र स० ६ मे ६ । ले० काल 🗙 । ग्रपूर्ण । वे० म० १०२५ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--टव्वा टीका सहित ।

४०४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल 🗴 । वै० सं० २६२ । स्त्र भण्डार ।

४०६. प्रति सं०६। पत्र सं०११। ले० काल म०१८२०। वे० सं०३१२। क भण्डार।

विशेष---हिन्दी मर्थ सहित 1

४०७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० । ले० काल स० १८१६ भादवा मुदी ३ । वे० स० ३१३ । क भण्डार

प्रव्म प्रति संवम् । पत्र सव १ । तेव काल सव १८१५ पीप सुदी १०। वेव संव ३१४। क भण्डार ।

४०६. प्रति सं० ६ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८४४ श्रावरा बुदि १ । वे० स० ३१५ । क भण्डार ।

विशेष-सक्षिप्त मस्कृत टीका सहित 1

४१०. प्रति सं० १०। पत्र सं० १३। ले० काल मं० १८१७ ज्येष्ठ बुदी १२। वे० सं० ३१५। क भण्डार।

४११. प्रति सं० ११। पत्र सं० ६। ले० काल 🗙 । वे• स० ३१६ । क भण्डार।

प्रश्र. प्रति सं ०१२। पत्र स०७। ले० काल ×। वे० स०३११। क मण्डार।

विशेष--गाम्नाम्रों के नीचे संस्कृत में छाया दी हुई है ।

४१३. प्रति सं० १३। पत्र सं० ११। ले० काल स० १७६६ ज्येष्ठ बुदी म । वे० मं० मध्य स्व भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं। टोक मे पार्श्वनाथ चैरयालय मे पं० हूं गरसी के दिएग पैमराज के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई।

i

४१४ प्रति सं०१४ । पत्र स०१२ । ले० काल सं०१८१ । वे० सं०२६५ । ख भण्डार । ४१४ प्रति सं०१४। पत्र सं०११। ले० काल ४। वे० सं०४०। घभण्डार। विशेष— संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये है। ४१६. प्रति सं० १६। पत्र सं० २ से ५। ले० काल 🗙 । अपूर्ण । वे० सं० ४२ । घ भण्डार । ४१७. प्रति सं०्१७ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४३ । घ भण्डार । विशेष--हिन्दी टन्दा टीका सहित है। ४१८ प्रति स०१८। पत्र सं०५। ले० काल ४। वे० सं०३१२। ङ भण्डार। विशेष-संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये है। ४१६. प्रति सं० १६। पत्र स० ७। ले० काल ×। वे० सं० ३१३। ड भण्डार। ४२०. प्रति सं० २० । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० य० ३१४ । उह भण्डार । ४२१. प्रति स० २१। पत्र सं० ३५। ले० काल ४। वे० स० ३१६। ड भण्डार। विशेष--मंस्कृत ग्रीर हिन्दी ग्रर्थ सहित है। ४२२. प्रति सं० २२ | पत्र सं० ७ । ले० काल 🗙 । ते० सं० १६७ । च भण्डार । विशेष-सम्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये है। ४२३. प्रति सं० २३ । पत्र सं० ४। ले० काल × । वे० सं० १६९ । च भण्डार । ४२४. प्रति स० २४ । पत्र सं० १५ । ले० काल स० १८६६ हि० ग्रापाढ सुदी २ । वे० सं० १२२ ।

छ् भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे बालावबोध टीका सहित हैं। प० चतुर्भु ज ने नागपुर ग्राम मे प्रतिलिपि की थी।

४२४. प्रति सं० २४। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १७६२ भादता बुदी १। वे० सं० ११२। छ्न भण्डार।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है। ऋषभसेन खतरगच्छ ने प्रतिलिपि की थी।

४२६. प्रति सं० २६। पत्र सं० १३। ले० काल ×। वे० सं० १०६। ज भण्डार।

विशेष—टब्बा टीका सहित है।

४२७. प्रति सं० २७। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० १२७। ज भण्डार।

विशेष—हिन्दी ग्रर्थ भी दिया हुमा है।

४२६. प्रति सं० २६। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० २०६। ज भण्डार।

४३२. प्रति सं० २६। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० २६४। ज भण्डार।

४३१. प्रति सं० ३१। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ३७६। ज भण्डार।

विशेष—हिन्दी ग्रर्थ सहित है।

४३२. प्रति सं० ३१। पत्र सं० १०। ले० काल स० १७६५ पीप सुदी ३। वे० स० ४६४। ज भण्डार।

विशेप—प्रति टन्वा टीका सहित है। सीलोर नगर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे मूलसंघ के ग्रंबावती पट्ट के भट्टारक जगतकीर्ति तथा उनके पट्ट मे भ० देवेन्द्रकीर्ति के श्राम्नाय के शिप्य मनोहर ने प्रतिलिपि की थी।

४३३. प्रति सं० ३३। पत्र सं० १४। ले० काल 🗙 । वे० सं० ४९५। व्य भण्डार ।

विजेप—३ पत्र तक द्रव्य सग्रह है जिसके प्रथम २ पत्रों में टीका भी है। इसके वाव 'सज्जनचित्तवल्लभ' मिल्लिपेगाचार्य कृत दिया हुन्ना है।

४३४. प्रति सं ० ३४। पत्र स० ५। ले० काल सं० १६२२। वै० सं० १६४६। ट भण्डार। विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये है।

४३४. प्रति सं० ३४ । पत्र स० २ से ६ । ले० काल सं० १७८४ । ग्रपूर्ण । वे० सं० १८४५ । ट भण्डार ।

विशेष---प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४३६. द्रव्यसंग्रहवृत्ति—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ११ । ग्रा० ११ दे ४५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल ४ । ले० काल स० १८२२ मंगसिर बुदो ६ । पूर्ण । वे० स० १०५३ । श्र्म भण्डार ।

विशेष--महाचन्द्र ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

४२७ प्रति स०२। पत्र स०२४। ले०काल सं०१९४९ पीप सुदी ३। वे० सं०३१७। क भण्डार। ४२८ प्रति सं०३। पत्र सं०२ से ३२। ले० काल स०१७३ "। प्रपूर्ण। वे० स०३१७। अभ् भण्डार विशेप---ग्राचार्य कनककीर्ति ने फागपुर मे प्रतिलिपि की थी।

४३६ प्रति सं०४। पत्र स०२४। ले० काल स०१७१४ द्वि० श्रावणा बुदी ११। वे० सं०१६८। च भण्डार।

विशेष-यह प्रति जोधराज गोदीका के पठनार्थ रूपसी भावसा जीवनेर वाली ने सांगानर में लिखी।

४४०. द्रव्यसंप्रहयुत्ति — ब्रह्मदेव । पत्र सं० १०८ । ग्रा० ११२४ इक्ष । भाषा- संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १६३५ ग्रासोज बुदी १० । पूर्गा वि० स० ६० ।

विशेश—इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि राजाधिराज भगदतदास विजयराज मानसिंह के शासनकाल मे भालपुरा में श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में हुई थी।

प्रशस्ति—शुक्लादिपक्षे नवमदिने पुत्यनक्षश्चे सोमवासरे संवत् १६३५ वर्षे ग्रासीज वर्दि १० शुभ दिने राजाधिराज भगवंतदास विजयराज मानसिंघ राज्य प्रवर्तमाने माल्हपुर वास्तव्ये श्री चंद्रप्रभनाथ चैत्यालये श्री मूलक्ष्ये नद्यान्नये वलात् तारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकु दाचार्यान्वये भ० श्रीपद्यनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे म० श्री प्रभाचन्द्र देवास्तित्वय म० श्री धर्मचन्द्रदेवास्तित्वय म० श्री क्लितकीत्तिदेवास्तित्वय म० श्री चन्द्रकीत्ति देवास्तदाम्माए खडेलवालान्वये गगवालगीत्रे सा नानिग द्वि पदारया। सा. नानिग भार्या नायकदे तत्पुत्र सा. खामा तद्भार्या द्वे। प्र. खमिसिरि। द्व० हरमदे तत्पुत्र कमा तद्भार्या करणादे। द्वि० सा पदार्थ तद् भार्या पिदिमदे तत्पुत्र सा गोइंद तद्भार्या मारादे तत्पुत्रापच प्र. वीका, द्वि नराइण, तृ. उदा, चतुर्थ चिरम पं० दसरथ। प्र. विका भार्या विक्रम दे एतेपा सा. कमा इद सास्त्र लिख्याच्य ग्राचार्य श्री सिंघनंदए घटापितं।

सिद्धान्त एवं चर्चा]

भण्डार ।

ξÌ

४४१. प्रति सं०२। पत्र सं०४०। ले० काल ×। वे० सं०१२४। स्त्र भण्डार।
४४२. प्रति सं०३। पत्र सं०७६। ले० काल सं०१६१० कार्तिक बुदी १३। वे० सं ३२३। क

४४३. प्रति सं०४। पत्र स० ६६। ले० काल सं० १८००। वे० स० ४४। छ भण्डार। ४४४. प्रति सं०४। पत्र स० १४६। ले० काल सं० १७८४ ग्रवाढ बुदी ११। वे० स० १११। छ

भण्डार । ४४४ द्रव्यसंग्रहटीका पत्र सं० ५८ । ग्रा० १०×८ दे इख्र । भाषा-संस्कृत । र० काल ×। लै० काल सं० १७३१ माघ बुदी १३ । वे० सं० ५१० । व्य भण्डार ।

विशेष—टीका के प्रारम्भ में लिखा है कि ग्रा० नेमिचन्द्र ने मालवदेश की धारा नगरी में भोजदेव के शासनकाल ने श्रीपाल महलेश्वर के ग्राश्रम नाम नगर में मोमा नामक श्रावक के लिए द्रव्य-संग्रह की रचना की थी।

४४६. प्रति सं०२। पत्र सं०२५। ले० काल ×। अपूर्ण ।वे० सं० ५५६। अप्र भण्डार। विशेष—टीका का नाम बृहद् द्रव्य संग्रह टीका है।

४४७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल स० १७७८ पौप सुदी ११ । वे० सं० २६५ । व्य भण्डार । ४४८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६७० भादवा सुदी ५ । वे० सं० ८५ । ख भंडार ।

विशेष—नागपुर निवासी खडेलवाल जातीय सेठी गौत्र वाले सा ऊदा की भार्या ऊदलदे ने पत्य व्रतोद्या-पन मे प्रतिलिपि कराकर चढाया।

४४६. प्रति स० ६६ । ले० का० सं० १६०० चैत्र बुदी १३ । वे० सं० ४५ । घ भण्डार ।
४४०. द्रव्यसग्रह भाषा " ' ' । पत्र सं० ११ । ग्रा० १०ई×४ई इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषयसिद्धान्त । र० काल ४ । ले० काल स० १७७१ सावरा बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । त्र्य भण्डार ।

विशेष--हिन्दी मे निम्न प्रकार ग्रर्थ दिया हुग्रा है।

गाथा—दन्व-संगहिमरा मुिण्णाहा दोस-संचयचुदा सुदपुण्णा। सोधयंतु तापुसुत्तधरेण रोमिचंद मुिण्णा भिण्यं जं।।

ग्नर्थ — भो मुनि नाथ । भो पंडित कैसे ही तुम्ह दोष संचय नुित दोषिन के जु संचय किहिये समूह तिनतें जु रिहत ही । सया नेिमचद मुनिना भिएत । यत् द्रव्य सग्नह इमं प्रत्यक्षी भूता मे जु ही नेिमचद मुनि तिन जु कहारी यह द्रव्य सग्नह शास्त्र । ताहि सोधयंतु । सी धौ हु कि कि सौ हू । तनु सुत्त धरेएा तन् किहिये थोरो सौ सूत्र किहिये । सिद्धात ताकौ जु धारक हारी । त्रास्त्र कास्त्र किर संयुक्त ही जु नेिमचद्र मुनि तेन कहारी जु द्रव्य संग्रह शास्त्र ताकौ भो. पिडत सोधो ।

इति श्री नेमिचंद्राचार्य विरचितं द्रव्य संग्रह बालबोध सपूर्ण।

सवत् १७७१ शाके १६३६ प्र० श्रावरा मासे कृष्यापक्षे तृयोदश्या १३ बुधवासरे लिप्यकृतं विद्याधरेरा स्वात्मार्थे ।

४४१. प्रति सं०२ । पत्र सं०१२ । ले० काल 🗙 । वै० सं०२६३ । ऋ भण्डार ।

भण्डार ।

४४२ प्रति सं०३। पत्र म०,२ से १६। ले० काल स० १८३५ ज्येष्ठ मुदी ८। वे० सं०७७४। ऋ भण्डार।

विशेष--हिन्दी सामान्य है।

४४२. प्रांत सं० ४ । पत्र स० ४० । ले० काल स० १०१४ मगसिर बुदी ६ । वे०मं० ३६३ । श्र भण्डार विशेष—धर्मार्थी रामचन्द्र की टीका के श्राधार पर भाषा रचना की गई है ।

४४४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २३ । ले० काल स० १५५७ ग्रासोज सुदी मा वे० मं० ममा स्व भण्डार

४४६. प्रति सं० ७। पत्र स० २७। ले० काल स० १७४३ श्रावण बुदी १३। वे० स० १११ । छ

प्रारम्भ—बालानामुपकाराय रामचन्द्रे ए। सभाषया । द्रव्यसग्रहकास्त्रस्य व्यारयानेको वितत्यने ।।१।।

४४७. द्रव्यसंग्रह भाषा—पर्वतिधर्माथी। पर्व स० १६ । ग्रा० १३×५ े डब्र । भाषा—गुजराती। लिपि हिन्दी। विषय—छह द्रव्यो का वर्णन। र० काल ×। ले० काल स० १८०० माघ बुदि १३। वे० म० २१/२६२ छ भण्डार।

४४८. द्रव्यसग्रह भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १६ । ग्रा० ११२४७ दे दञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-छह द्रव्यो का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ४२ । घ्र भण्डार ।

४४६. द्रव्यसम्बद्धा भाषा—जयचन्द् छ। वड़ा। पत्र सं० ३१। म्रा० ११३/४४८ डंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-छह द्रव्यो का वर्णन। र० काल स० १८८३ सावन वुदि १४। नै० काल ४। पूर्ण। वे० मं० १०१२। म्रा भण्डार।

४६० प्रति सं०२।पत्र स०३६। ले० काल म० १८६३ सावरण बुदी १४।वे० म० ३२१।क भण्डार।

> ४६१. प्रति सं० ३ । पत्र स० ५१ । ले० काल × । वे० स० ३१८ । क भण्डार । ४६२. प्रति सं० ४ । पत्र स० ४३ । ले० काल स० १८६३ । वे० स० १९५८ । ट भण्डार । विशेष—पत्र ४२ के ग्रागे द्रव्यसग्रह पद्य मे है लेकिन वह ग्रपूर्ण है ।

४६२. द्रव्यसंत्रह भाषा—जयचन्द छावडा । पत्र स० ५ । ग्रा० १२×५ डक्स । भाषा हिन्दी (पद्य) विषय-छह द्रव्यो का वर्णन् । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० ३२२ । क भण्डार ।

४६३ प्रति सं०२। पत्र सं०७। ले० काल स० १६३६। त्रे० स० ३१८। ड भण्डार। ४६४. प्रति सं०३। पत्र स०३०। ले० काल म० १६३३। त्रे० स०३१६। ड भण्डार। विशेष—हिन्दी गद्य मे भी श्रर्थ दिया हुग्रा है।

४६४. प्रति सं०४ । पत्र स०५ । ले० काल स०१८७६ कार्तिक बुदी १४ । त्रे० म०५६१ । च भण्डार ।

विकोप--प॰ सदासुख कासलीवाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की है।

(

४६६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४७। ले० काल ४। वै० मं० १६४। मा भण्डार। विशेष—हिन्दी गद्य मे भी अर्थ दिया गया है।

४६७. प्रति सं०६। पत्र स०३७। ले० काल 🗴। वे० स० २४०। भा भण्डार।

४६८. द्रव्यसंग्रह भाषा-बाबा दुलीचन्द् । पत्र सं० ३८ । आ०११४५ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-

विशेष-जयचन्द छावडा की हिन्दी टीका के अनुसार वावा दुलीचन्द ने इसकी दिल्ली मे भापा लिखी थी।

४८६. द्रुट्यस्वरूप वर्णन । पत्र स० ६ से १६ तक । ग्रा० १२×५ इच्च । भाषा-सस्कृत । विषय-छह

४७०. धवल "" । पत्र स० २८ । ग्रा० १३४८ इख्रा भाषा—प्राकृत । विषय—जैनागम । र० काल 🗴 । त्रपूर्ण । वे० मं० ३५० । क भण्डार ।

४७१. प्रति सं०२। पत्र म०१ मे १८। ले० काल 🗴 । श्रपूर्शा । वे० सं० ३५१ । कः भण्डार । विशेष—संस्कृत मे सामान्य टीका भी दी हुई है ।

४७२. प्रति सं ८३। पत्र स० १२। ले० काल ×। वे० मं० ३५२। क भण्डार।

१७३. तन्दीसूत्र " " । पत स० ८ । ग्रा० १२×४ई इच । भाषा-प्राकृत । विषय-ग्रागम । र० काल × । ले० काल स० १५६० । वे० सं० १८४८ । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—मं० १५६० वर्षे श्री खरतरगच्छे विजयराज्ये श्री जिनचन्द्र सूरि पं० नयसमुद्रगिए। नामा देश ? तस्म शिष्ये वी. गुरुलाभ गिरुमि लिलेखि।

४७४. तवतत्त्वगाथा " " । पत्र सं० ३ । स्रा० ११६४६ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-६ तत्त्वो का वर्रान । र० काल 🔀 । ले० काल मं० १८१३ मंगसिर बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष-प॰ महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।

४७४. प्रति सं २ २ । पत्र स० १० । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ग । वे० म० १०५० । ऋ भण्डार । विशेष—हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

४७६ प्रति सं०३। पत्र सं०३ से ५। ले० काल 🗴। अपूर्ण। वे० म०१७६। च भण्डार। विशेष—हिन्दी मे अर्थ दिया हुम्रा है।

४७७. तवतत्त्व प्रकरण्—लद्मीवल्लभ । पत्र सं० १४ । ग्रा० ६ रें ४४ हे इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-६ तत्त्वो का वर्णन । र० काल सं० १७४७ । ले० काल सं० १८०६ । वे० स० । ट भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का सम्मिश्रग् है। राववचन्द शक्तावत ने शक्तिसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की ।

४७८. नश्रतत्त्ववर्णन """ पत्र सं० ५। ग्रा० ५ १ इन्न । भाषा हिन्दी । विषय-जीव अजीव ग्रादि ६ तत्त्वो का वर्णन । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० ६०१ । च भण्टार ।

विशेष-जीव ग्रजीय, पुण्य पाप, तथा ग्राश्रव तस्व का ही वर्णन है।

, ४७६. नवतत्त्व वचिनका—पश्चालाल चौधरी। पत्र स० ५१। ग्रा० १२×५ इख्र। भाषा हिन्दी। विषय-६ तत्त्वो का वर्णन। र० काल स० १९३४ ग्रापाढ सुदी ११। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६४। क भण्डार।

४८०. नवतत्त्वविचार '" " । पत्र स०६ मे २४ । ग्रा० ९४४ इख्र । भाषा हिन्दी । विषय-६ तत्त्वो का वर्शान । र० काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० स० २५६ । ञ भण्डार ।

४८१. निजस्मृति—जयितलक। पत्र म० ५ मे १३। ग्रा० १०×४६ डख्न । भाषा सम्कृत । क्रियम-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्गा । वै० स० २३१ । ट भण्टार ।

विशेप--ग्रन्तिम पुष्पिका-

४८२. नियमसार-श्रा० कुन्द्कुन्द् । पत्र सं० १०० । ग्रा० १०५×५६ इत्र । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्वात । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३ । घ भण्डार ।

विशेष--प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४८३ नियमसार टीका—पद्मप्रभमलधारिदेव । पत्र स० २२२ । ग्रा० १२५४७ इश्च । भाषा-सम्कत । विषय-सिद्धान्त । र० काल 🗴 । ने० काल सं० १८३८ मात्र बुदी ६ । पूर्सी । वे० सं० ३८० । क भण्डार ।

४८४. प्रति सं २२। पत्र स० ८७। ले० काल स० १८६६। वे० स० ३७१। व्य भण्डार।

४८४. निरयावलीसूत्र """ । पत्र स० १३ से ३६ । ग्रा० १०४४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-

४८६. पञ्चपरावर्तेन ' ''''। पत्र स० ३। ग्रा० ११४५ है दश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्गा । वै० स० १८३८ । ग्रा भण्डार ।

विशेष--जीवो के द्रव्य क्षेत्र ग्रादि पञ्चपरिवर्तनो का वर्णन है।

४-७. प्रति स॰ २। पत्र स॰ ७। ले॰ काल 🗴 । वे॰ स॰ ४१३। क भण्डार।

४८८ पद्धसंत्रह--ग्रा० नेमिचन्द्र । पत्र स० २६ से २४८ । ग्रा० १२×५६ इख्र । भाषा-प्राकृत सन्तृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ४०० । ड भण्डार । ४८. प्रति सं०२। पत्र स०१२। ले० काल सं०१८१२ कार्तिक बुदी ८। वे० सं०१३८। व्य

विशेष—उदयपुर नगर मे रत्नरुचिगिंगा ने प्रतिलिपि की थी। कही कही हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है। ४६०. प्रति स० ३। पत्र स० २०७। ले० काल 🗴। वे० सं० ५०६। व्य भण्डार।

४६१. पञ्चसंग्रहवृत्ति-श्रभयचन्द् । पत्र सं० १२०। ग्रा० १२४६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धात । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० १०८ । ग्रा भण्डार ।

विजेष—नवम अधिकार तक पूर्ण । २४-२५वा पत्र नवीन लिखा हुआ है ।
४६२. प्रति सं०२।पत्र सं०१०६ से २५०। ले० काल ×। अपूर्ण । वे० स०१०६ अप्र भण्डार ।
विजेष—केवल जीव काण्ड हैं।

४६३. प्रति सं० ३। पत्र स० ४५२ से ६१५। ले० काल ×। स्रपूर्ण। वे० सं० ११०। स्र भण्डार। विशेष-कर्मकाण्ड नवमा स्रिधकार तक। वृत्ति-रचना पार्श्वनाथ मन्दिर चित्रकूट मे साधु तागा के सह-धोग से की थी।

४६४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६६ से ७६३ तक । ले० काल सं० १७२३ फाग्रुन सुदी २। अपूर्ण । वे० सं० ७६१। स्त्र भण्डार।

विशेष--वृन्द्रावती मे पार्श्वनाथ मन्दिर मे श्रीरंगशाह (श्रीरंगलेव) के शासनकाल मे हाडा वंशोत्पन्न राव श्री भावसिंह के राज्यकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

> ४६६. प्रति सं० ४। पत्र स० ४३०। ले० काल सं० १६६८ माघ बुदी २। वे० सं० १२७। क भण्डार ४६६. प्रति सं० ६। पत्र स० ६२४। ले० काल स० १६५० वैशाख मुदी ३। वे० सं० १३१। क भण्डार ४६७. प्रति सं० ७। पत्र स० २ से २०८। ले० काल 🗴। ग्रपूर्या वि० सं० १४७। ड भण्डार। विशेष—वीच के कुछ पुत्र भी नहीं है।

४६८. प्रति सं० ८। पत्र सं० ७४ से २१४। ले० काल 🗙 । ग्रपूर्ण । वे० सं० ८५। च भण्डार ।

४६६. पंचसंग्रह टीका—ग्रामितगति । पत्र सं० ११४ । ग्रा० ११४५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल स० १०७३ (शक) । ले० काल सं० १८०७ । पूर्या । वे० स० २१४ । ग्रा भण्डार ।

विशेष--ग्रन्थ संस्कृत गद्य और पद्य मे लिखा हुआ है। ग्रन्थकार का परिचय निम्न प्रकार है।

श्रीमाथुराणामनवद्युतीनां संघोऽभवद् वृत्त विसूपितानाम् । हारो मौरणनामिवतापहारी सूत्रानुसारी शिंगरिंम गुन्न ॥ १ ॥ माधवसेनगणीगण्नीय शुद्धतमोऽजिन तत्र जनीयः ।
भूयसि सत्यवतीव शद्याकः श्रीमिति सिंधुपतावकलंकः ।। २ ।।
शिष्यस्तस्य महात्मनोऽमितगितमोक्षार्थिनामग्रणी ।
रेतच्छाम्त्रमशेषकर्मसमितिप्रस्यापनापाकृत ।।
वीरस्येव जिनेश्वरस्य गण्भृद्भव्योपकारोद्यती ।
दुर्वारस्मरदितदारणहरि श्रीगीतमोऽनुत्तमः ।। ३ ।।
यदत्र सिद्धान्त विरोधिवद्ध ग्राह्म निराकृत्यतदेतदायें ।
गृह्णंति लोका ह्युपकारियन्नाव निराकृत्य फल पवित्र ।। ४ ।।
ग्रमश्वर केवलमर्चनीय यावस्थिर तिष्ठतिमुक्तपक्ती ।
तावद्धरायामिदमत्रवास्त्रं स्थेयाच्छुभं कर्म्मनिरासकारि ।।
ग्रिमसत्यधिकेव्दना सहस्रे शकविद्विष ।
मस्तिकापुरे जातमिद शास्त्र मनोरम ।। ५ ।।
इत्यमितगतिकृता नैगासार तपागच्छे ।

४००. प्रति सं०२। पत्र स० २१५। ते० काल स० १७६६ माघ बुदी १। वे० म० १८७। स्र भण्डार ' ४०१ प्रति सं०३। पत्र स० १८०। ते० काल स० १७२४। वे० म० २१६। स्र भण्डार। विशेष—जीर्ग प्रति है।

४०२. पञ्चसग्रह टीका—। पत्र स० २४ । ग्रा॰ १२×४३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ३६६ । ड भण्डार ।

४०३ पंचास्तिकाय—कुन्द्कुन्टाचार्य । पत्र स० ५३ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल मं० १७०३ । पूर्ण । वे० स० १०३ । ग्रा भण्डार ।

४०४. प्रति सं० २ | पत्र मं० ४३ | ले० काल स० १६४० | वे मं० ४०४ | अ भण्डार |
४०४. प्रति सं० ३ | पत्र स० ३४ | ले० काल × | वे० स० ४०२ | क भण्डार |
४०६ प्रति सं० ४ | पत्र म० १३ | ले० काल स०१८६६ | वे० मं० ४०३ | क भण्डार |
४०७. प्रति सं० ४ | पत्र सं० ३२ | ले० काल × | वे० स० ३२ | क भण्डार
वियोप—दितीय स्कन्ध तक है | गाथाग्रो पर टीका भी दी है |
४०५. प्रति सं० ६ | पत्र म० १८ | ले० काल × | वे० स० १८७ | ज भण्डार |
५०६. प्रति सं० ७ | पत्र म० ११ | ले० काल मं० १७२४ ग्रापाह गुदी १ | वे० मं० १६६ | ज भंडार |
वियोप—ग्रंबावती मे प्रतिलिपि हुई यी |

११०. प्रति सं ० ८। पत्र सं ० २५। ले० काल ×। अपूर्ण । वे० स १६६। इस भण्डार।

४११. पंचास्तिकाय टीका — त्रमृतचन्द्र सूरि। पत्र सं० १२४। म्रा० १२ई ४७ इख्र । भाषा संस्कृत विषय-सिद्धान्त । र० काल ४। ले० काल य० १९३८ श्रावरा बुदी १४। पूर्ण । वै० य० ४०५। क भण्डार।

प्रश्न. प्रति सं २२। पत्र मं० १०५। ले० काल मं० १४८७ वैकाख मुदी १०। वे० सं० ४०२। स् भण्डार।

४१३. प्रति सं० ३। पत्र मं० ७६। ले० काल ×। वे० सं० २०२। च भण्डार।

४१४. प्रति सं० ४ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १९५६ । वे० सं० २०३ । च भण्डार ।

४१५. प्रति संट ४। पत्र मं० ७५। ले० काल सं० १५४१ कार्तिक बुदी १४। वे० मं०। व्य भण्डार।

प्रशस्ति—चन्द्रपुरी वास्तव्ये खण्डेलवालान्वये सा फहरी भार्या धमला तयो पुत्रधानु नस्य भार्या धनिमिरि नाम्या पुत्र मा होलु भार्या सुनलत तस्य दामाद मा हंमराज तस्य भ्राता देवपित एवै पुम्तक पंचास्तिकायात्रिधं लिखाया कुलभूपरास्य कम्मेक्षयार्थं दत्तं ।

४१६. पञ्चास्तिकाय भाषा—पं० हीरानन्द् । पत्र म० ६३ । ग्रा० ११४८ इख्र । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल म० १७०० ज्येष्ठ मुदी ७ । ले० काल 🗴 । पूर्गा । वे० मं० ४०७ । क भण्डार ।

विशेय--जहानावाद मे वादशाह जहांगीर के समय मे प्रतिलिपि हुई।

४१७. पद्धास्तिकाय भाषा—पांडे हेमराज । पत्र म० १७५ । ग्रा० १३×७ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धात । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०६ । क भण्डार ।

४१८. प्रति सं०२। पत्र सं० १३४। ले० काल म० १६४७। वे० म० ४०८। क भण्डार।

४१६. प्रति सं० ३ | पत्र मं० १४६ | ले० काल × | वे० म० ४०३ | ङ भण्डार |

४२०. प्रति सं० ४। पत्र स० १५०। ले० काल सं० १९५४। वे० सं० ६२०। च भण्डार।

४२१. प्रति सं० ४ । पत्र मं० १४४ । ले० काल स० १९३६ ग्राबाढ सुदी ४ । वे० सं० ६२१ । च भण्डार

४२२. प्रति सं० ६। पत्र स० १३६। र० काल X। ते० मंट ६२२ च भण्डार।

४२३. पद्धास्तिकाय भाषा—बुधजन। पत्र सं० ६११। ग्रा० ११×५५ डख्र। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धात। र० काल सं० १८६२। ने० काल ×। वे० सं० ७१। भाभण्डार।

४२४. पुरवतत्त्वचर्च- । पत्र मं० ६ । म्रा० १०३×४३ डब्च । भाषा सम्कृत । त्रिपय-सिद्वान्त । र० काल सं० १८८१ । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० २०४१ । ट भण्डार ।

४२४ वंध उदय सत्ता चौपई—श्रीलाल । पत्र स० ६ । ग्रा० १२ई×६ इख्र । भाषा-हिन्टी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १८-१ । ले० काल × । वे० सं० १९०५ । पूर्ण । ट भण्डार ।

विशेष--प्रारम्भ।

विमल जिनेश्वरप्रगामु पाय, मुनितुद्रत कूं सीस नवाय। सतगुरु सारद हिरदै धरू, बंध उदय सत्ता उचलं ॥१॥ 1

श्रन्तिमा विश्व उदै सत्ता बलाएँ, ग्रन्थ त्रिभंगीसार ते जारिंग।

सृद्ध असुद्ध सुधा रसु नाएा, ग्रन्थ बुद्धि मैं नरू बलाएा।। १२।।

साहिल राम मुक्कक् बुध दई, नगर पचेवर माही लहीं।

मुक्त उत्तपत डगी के माहि, श्रावक कुल गंगवाल कहाहि।। १३।।

काल पाय के पंजित भयो, नैराजन्द के शिष्य म थयो।

नगर पचेवर माहि गयो, ग्रादिनाथ मुक्त दर्गए। दियो।। १४।।

पापकर्म ते विद्यंत भयो, लाव जा कर रहतो भयो।

गीतल जिनक् करि परिस्ताम, म्वपर कारए। ते कहै बलाए।। १४,।।

संवत् ग्रठरासे का कह्या, ग्रवर ग्रवयासी ऊपर लह्या।

पढत सुरात ग्रघ खय होय, पुन्य वंध बुधि बहु होय।। १६।।

।। इति श्री उदै वंध सत्ता समाप्ता।।

इससे आगे चौबीस ठाणा को चौपाई है—
प्रारम्भ—देव धर्म गुर प्रत्थ पद बंदी मन वच काय।
गुण्ठाणिन परि ग्रन्थ की रचना कह बणाय।।
ग्रान्तम—इह विधि जस गुण्स्थान की रचना बरणी सार।
भूल चूक जो होय तो, बुधिजन लेहु सुधार ।
छठि मंगसिर कृष्ण की लावा नगर मभार।
गुण्णीसे ग्रह पाच के साल जाय श्रीलाल।।
।। इति सम्पूर्ण।।

४२६. भगवतीसूत्र-पत्र सं० ५०। त्रा० ११×५६ इख्न । भाषा-प्राकृत । विषय-ग्रागम । र० काल ×। पूर्ण । वे० सं० २२०७ । ह्य भण्डार ।

४२७. भावत्रिभंगी—नेमिचन्द्रचार्थ। पत्र सं० ५१। श्राठ ११×५ इक्ष । भाषा प्राकृत । विषय-सिद्वात । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५६ । क भण्डार ।

विगेप--प्रथम पत्र दुवारा लिखा गया है।

४२ प्रति सं०२। पृत्र सं० ५४। ले० काल स० १८११ माघ सुदी है। वे० स० ५६०। क भण्डार। विशेष---प० रूपचन्द ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर में की थी।

४२६. भावदीपिका भाषा—। पत्र सं० २१८ । श्रा० १२४७६ । भाषा-हिन्दी । विधय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६७ । इ. भण्डार ।

४३०. **मरणकरंडिका" "'।** पत्र सं० ८। ग्रा० ६६×४६ डब्रा भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ सं॰ ६८ ।

विशेष---ग्राचार्य शिवकोटि की ग्राराधना पर ग्रमितिगति का टिप्पण है।

४३१. मार्गणा व गुणस्थान वर्णन—। पत्र स० ३-५५। ग्रा० १४×५ इख्र । भाषा प्राकृत । विषय-निद्धोत । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० १७४२ । ट भण्डार ।

४३२. मार्गणा समास—। पन सं० ३-में १८ । ग्रा० ११३४५ टक्का भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वै० स० २१४६ । ट भण्डार ।

विगेप-संस्कृत टीका तथा हिन्दी ग्रर्थ सहित है।

४३३. रायपसेगी सूत्र—। पत्र सं० १५३। ग्रा० १०×४ है इख्र । भाषा–प्राकृत । विषय–श्रागम । र० काल × । ले० काल सं० १७६७ ग्रासोज सुदी १०। वे० सं० २०३२। ट भण्डार ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टीका सहित है। सेमसागर के शिप्य लालसागर उनके शिष्य सकलसागर ने स्वपठनार्थ टीका की। गाथाम्रो के ऊपर छाया दी हुई है।

४३४. त्रिह्यसार--नेभिचन्द्राचार्य । पत्र स० ५७। ग्रा० १२×५ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्वात । र० काल × । ते० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ३२१ । च भण्डार ।

विशेष-५७ से ग्रागे पत्र नहीं है। संस्कृत टीका सहित है।

४३४. प्रति सं ०२। पत्र स० ३६। ले० काल 🔀 । ग्रपूर्गा । वे० स० ३२२। च भण्डार।

४३६. प्रति स० ३ । पत्र सं० ६५ । ले० काल स० १८४६ । वे० सं० १६०० । ट भण्डार ।

४२७. लिंघ्सार टीका─ा पत्र सं० १५७ । आ० १३४६ इख्रु । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल ४ । ले० काल स० १६५६ । पूर्ण । वे० स० ६३६ । क भण्डार ।

४३० लिखसार भाषा—प० टीडरमल । पत्र सँ० १०० । या० १३४८ इख । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धोत । र० काल ४ । ले० काल १६४६ । पूर्गा । वै० स० ६३६ । क भण्डार ।

४३६. प्रति संट २ । पच स० १६३ । ले० काल × । वे॰ मं० ७४ । ग भण्डार ।

४४०. लिंधमार चपणासार भाषा—प्० टोडरमल । पत्र सं० १०० । ग्रा० १५ \times ६ $\frac{5}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र० काल $\frac{4}{3} \times$ । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० ७६ । रा भण्डार ।

४४१ **लिधसार च्रपासार संदृष्टि—प० टोडर्मल ।** पत्र स० ४६ । ग्रा० १४×७ इञ्च । भाषा— हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र० काल स० १८८६ चैत बुदी ७ । वे० स० ७७ । ग भण्डार ।

विशेष-कालूरीम साह ने प्रतिलिपि की थी।

 χ %२ विपाकसूत्र—। प० स० ३ से ३५ । ग्रा० १२ χ ४ $_{g}^{3}$ डख्र्य । भाषा प्राकृत । विषय—ग्रागम । २० काल χ । ले० काल χ । ग्रपूर्ण । वे० सं० २१३१ । ट भण्डार ।

४४३. विशेषसत्तात्रिभंगी--श्राट नेमिचन्द्र । पत्र सं० ६ । ,श्रा० ११४४६ इक्क । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्मा । वे० सं० २४३ । स्र भण्डार ।

४४४ प्रति स० २ । पर म० ६ । ने० मान ४ । वे० म० ३४२ । प्र भण्डार ४४४. प्रति स० ३ । पत्र मं० ४७ । ने० पात म० १८०२ मामोज गुरी १३ । मनूर्ण । रे० मं॰ ६५४ । प्र भण्डार ।

विशेष—३० मे ३४ तक पत्र नहीं हैं। उत्पृष्ट म प्रतिनिधि हुई। ४४५. प्रति स०४। पत्र स०२०। ने० कान ८, । सपूर्ण । मेल सल =४५ । स्त्र भाषाः। विशेष—केवल ग्राप्त्रय विभिन्नी ही है।

४४७. प्रति संवर्ष । पत्र सव ७३। निवसात 🗸 । सपूर्ण । केवसाव रहा । आ अपना । विशेष—दो तीन प्रतियो का सम्मिश्रमा है।

५४८ रेपट्नेस्या वर्णन " "। पर न० १। मा० १०. ८ इत्र । भागानीः की पण । जियम-विकास । र० काल × । ले० काल × । स्रपूर्ण । ये० म० १८६० । स्त्र भण्यार ।

विशेष-पट नेध्याम्रो पर दोहे हैं।

प्रश्व. पण्ड्याधिक शतक टीका—राज्ञहंसीपाध्याय । पण स० ११ । सा० १०६ ४ १६ । भणा सन्कृत । विषय—सिद्धान । र० कान सं० १४७६ भादवा । पे० कान स० १४७६ धमश्य पृथी ८ । पृर्णे । ३० है० १३५ । घ भण्डार ।

विघेष--- प्रयम्ति निम्न प्रकार है।

श्रीमज्जहबद्धाभिको गोत्रे गीत्रायनियो, मुश्रायरशिरायन हेन्द्रायो गगभू पुरा ॥ १ ॥

स्यजन—जनशिवन्द्रस्ततन्त्रजो वितद्रो, विद्युष्ण गुपुदन द्र नर्गविद्यायमुद्र ।

जयित प्रकृतिभद्र प्राज्यराज्ये समुद्रः, यस हिन्या हरीन्द्रो राजनन्द्रो महीन्द्रः ॥ २ ॥

तद्दर्गजन्माजिनजैनभक्तः परोप्रकारव्यमनेप्रयक्त यदा गदानारिवनारिकः श्रीहगराप मुक्काद्रिकः ॥ ३ ॥

श्रीमाल—भूषानकुलप्रदीष, समेदिनी महाद्र पावनीय । नैशादमद्य गृरमाद्याद त्रस्त्रृत्यस्य गुण्ण श्यान ॥ ४ ॥

भार्यावद्यगुर्गेरायां करभाद्र पितयना, कमनेव हरेम्नस्य याम्त्रामागे निराजते ॥ १ ॥
तन्पुत्रोभद्यचद्रोस्ति भव्यव्चन्द्र त्रवापर निर्भयो निकालकथ निष्कुरंग गलानिष्रिः ।
तस्यास्यर्थनया नया विरन्तिता श्रीराजहमाभिद्योषाध्यागे दौनपष्टिष्णमा विमानावृत्तिः शिद्भूना हिया ।
वर्षे नद मुनिपुचंद्र महिते नावाच्यमाना बुधे । मामे भाद्रपदे सिक्तदरपुरे नंद्याधिर भूनने ॥ ७ ॥
स्वच्छे परतरगच्छे श्रीमार्जनदत्तमूरिसंताने । जिननिनकसूरिसुपुरो शिष्य श्रीहर्षतिनद्वीत्रभूत् ॥ ६ ॥
तिच्छम्येन कृतेय पाठकपुरयेन राजहगेन पष्ट्यधिकशतप्रपरगदीना नद्यादिनदं महा ॥ ६ ॥

इति पष्ट्यधिकवनप्रकरग्गस्य टीका कृता श्री राजहसोपाध्याये ॥ ममयहनेन निरु ॥

मवत् १५७६ नमये प्रगहण वदि ६ रविवामरे लेयक श्री भिलारीदामेन नेन्ति ।

४४०. श्लोकवात्तिक--आ० विद्यानित । पत म० १४८५ । आ० १२४७५ । आ० संस्कृत । विषय-मिहात । र० काल ४ । ले० काल १८४४ श्रावमा बुदी ७ । पूर्ण । वे० म० ७०७ । क भण्डार । विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र की वृहद् टीका है। पन्नालाल चौधरी ने इसकी प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ तोन वैष्टनो मे वधा हुग्रा है। हिन्दी प्रर्थ सहित है।

४४१. प्रति सं० २। पत्र मं० १०। ले० काल ×। वे० मं० ७८। व्य भण्डार। तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम ग्रध्याय की प्रथम सूत्र की टीका है।

४४२. प्रति सं० ३। पत्र स० ५०। ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० सं० १६४। व्य भण्डार।

्रिप्र्य. सप्रहर्गीसूत्र " " । पत्र सं० ३ से २८ । ग्रा० १०४४ इख्र । भाषा प्राकृत । विषय—ग्रागम । र० काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वै० सं० २०२ । ख भण्डार ।

विशेष--पत्र सं० ६, ११, १६ से २०, २३ से २५ नही है। प्रति सचित्र है। चित्र सुन्दर एवं दर्शनीय है। ४, २१ और २८वे पत्र को छोड़कर सभी पत्रो पर चित्र हें।

४४४ ह प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० २३३ । छ भण्डार । ३११ गाथाये हैं ।

प्रश्र. संग्रह्णी बालावबोध —शिविनिधानगिण । पत्र स० ७ मे ५३। ग्रा० १०३×४३ । भापा-प्राकृत-हिन्दी । विषय-ग्रागम । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १००१ । त्र्य भण्डार ।

विशेप-प्रति प्राचीन है।

 $\chi\chi\xi$. सत्ताद्वार""। पत्र सं० ३ से ७ तक । ग्रा० ५ $\frac{3}{7}\times\chi^2$ इख । भाषा सस्कृत । विषय-सिद्धातः र० काल \times । ले० काल \times । त्रपूर्ण । वे० सं० ३६१ । च भण्डार ।

४४७. सत्तात्रिमंगी—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं०२ से ४० । ग्रा०१२×६ इख्र । भाषा प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । श्रपूर्ण । वे० सं०१ ५४२ । ट भण्डार ।

४४८. सर्वार्थिसिद्धि-पूज्यपाद । पत्र सं० ११८ । ग्रा० १२४६ इख्र । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धातः र० काल 🗴 । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ११२ । स्त्र भण्डार ।

४४६. प्रति सं०२। पत्र सं०३६८। ले० काल सं०१६४४। वे० सं० ७६८। क भण्डार।

४६०. प्रति सं० ३। पत्र सं० " "। ले० काल ×। श्रपूर्ण । वे० सं० ८०७ । इः भण्डार ।

४६१. प्रति सं० ४ । पत्र स० १२२ । ले० काल 🗙 । वे० सं० ३७७ । च भण्डार ।

४६२. प्रति सं० ४ । पत्र स० ७२ । ले० काल 🗙 । वे० सं० ३७८ । ᇽ भण्डार ।

विशेष-चतुर्थ अध्याय तक ही है।

४६३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १-१३३, २००-२६३ । ले० काल सं० १६२५ माघ सुदी ५ । वे० सं० ३७६ । च भण्डार ।

निम्नकाल और दिये गये हैं---

सं० १६६३ माघ गुङ्का ७-६ कालाडेरा मे श्रीनारायए। ने प्रतिलिपि की थी। स० १७१७ कार्त्तिक सुदी १३ ब्रह्म नाथू ने भेंट मे दिया था। भण्डार ।

४६४. प्रति सं० ७ । पत्र मं० १८२ । ने० काल 🗷 । वे० मं० ३८० । च अण्यार ।

४६४. प्रति सं० ८ । पत्र मं० १५८ । ने० कान 🗙 । ये० स० ८४ । द्ध भण्डार ।

४६६. प्रति सं ८ । पत्र सं० १३४। ले० काल स० १८८३ ज्येष्ठ युरी २ । वे० गं० ८५ । छ भण्डारः

४६७. प्रति सं०१०। पत्र म० २७८। ने० नाग म० १७०८ वैज्ञान पुरी १। तिर म० २११। ज

४६८. सर्वार्थिसिद्धि भाषा—जयचन्द् छात्रटा । पत्र न० ६८३ । मा० १३४ % इत्रा । भाषा हिन्दी विषय-सिद्धान्त । र० कान मं० १८६१ चैत मुदी १ । ले० कान्द्र गं० १६२६ वार्तिक मुदी ६ । पूर्ण । दे० मं० ४६६ का भण्टार ।

४६६. प्रति स०२ | पत्र सं० ३१८ | ले० गाल × । ये० न० ८०८ । इ. भण्डार ।

४७०. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४६७ । ते० काल स० १६१७ । ने० म० ७०५ । च भण्यार ।

५७१. प्रति सं०४ | पत्र स०२७० । ले० कान स०१८८३ गातिक बुदी २ । पै० गं०१६० । ज भण्डार ।

१७२. सिद्धान्तत्र्यर्थसार—पं० रहभू । पत्र म० ६६ । ग्रा० १३/= इन । भागा घरभ न । निपय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १६५९ । पूर्ण । वे० म० ७६६ । क भण्डार ।

विशेष—यह प्रति स० १५६३ वाली प्रति से लिखी गई है।

४७३. प्रति सं०२। पत्र स० ६६। ले० काल सं० १८६४। पे० स० ८००। च भण्डार।

विशेष--यह प्रति भी सं० १५६३ वाली प्रति ने ही लिखी गई है।

४७४. सिद्धान्तसार भाषा—। पत्र सं० ७५ । ग्रा० १४×७ इश्च । भाषा हिन्दी । विषय-निद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ७१६ । च भण्डार ।

४७४. सिद्धान्तलेशसंग्रह "" । पन स० ६४ । ग्रा० ६×४६ उद्घ । भागा हिन्दी । विषय-निद्धात । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वै० स० १४४८ । ग्रा भण्डार ।

विशेष--वैदिक साहित्य है। दो प्रतियो का सम्मिथ्रण है।

४७६. सिद्धान्तसार दीपक-सकलकीर्ति । पत्र सं० २२२ । ग्रा० १२,८५ इ.ज. । भाषा गन्तृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १६१ ।

४७७. प्रति स० २ । पत्र स० १८४ । ले० काल स० १८२६ पीप वुदी 🕮 । वे० न० १६= । ग्र भटार।

विशेष--प० चोखचन्द के शिष्य प० किशनदास के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

५७८ प्रति सं०३। पत्र स० १५५। ले० काल सं० १७६२। वे० स० १३२। स्त्र भण्डार।

४७६. प्रति सं० ४। पत्र स० २३६। ले० काल स० १८३२। वे० स० ८०२। क भण्डार।

विशेप—सन्तोपराम पाटनी ने प्रतिलिपि की थी।

४८०. प्रति सं ८ ४ । पत्र स० १७८ । ले० काल मं० १८१३ । बैंगाप मुदी ८ । वे० स० १२६ । घ भण्डार । विशेप-शाहजहानाबाद नगर मे लाला शीलापति ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी।

४८१. प्रति सं० ६। पत्र सं० १७३। ले० काल सं० १८२७ वैशाख बुदी १२। वे० सं० २९२। व्य भण्डार।

विशेष-कही कही कठिन शब्दों के ग्रर्थ भी दिये हैं।

४८२. प्रति सं० ७। पत्र मं० ७८-१२४। ले० काल 🗴 । ग्रपूर्श । वे० स० २५२। छ भण्डार ।

४८३. सिद्धान्तसाररीपक "। पत्र स०६। ग्रा०१२×६ डञ्च । भाषा सम्कृत । विषय-सिद्धान्त । द० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० स०२२४। ख भण्डार ।

विशेष--केवल ज्योतिलोक वर्णन वाला १४वा ग्रधिकार है।

४८४. प्रति सं २ । पत्र स० १८४ । ले० काल × । वे० स० २२५ । ख भण्डार ।

४८४. सिद्धान्तसार भाषा—नथमल विलाला । पत्र स० ८७ । आ० १३३४५ इख्र । भाषा हिर्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १८४१ वे० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० १२४। घ भण्डार ।

४८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५० । ले० काल × । वे० स० ८५० । ख भण्डार । विशेप—रचनाकाल 'ख' भण्डार की प्रति मे है ।

४८०. सिद्धान्तसारसंग्रह—आ० तरेन्द्रदेव । पत्र स० १४ । ग्रा० १२×५३ दञ्च । भाषा सम्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । त्रपूर्ण । वे० सं० ११६५ । आ भण्डार ।

विशेष--- नृतीय श्रधिकार तक पूर्ण तथा चतुर्थ श्रधिकार ग्रपूर्ण है।

४८८. प्रति सं० २ | पत्र सं० १०० | ले० काल स० १८६६ | वे० स० १६४ | त्र्य भण्डार । ४८६. प्रति सं० ३ | पत्र स० ५५ | ले० काल स० १८३० मंगसिर बुदी ४ | वे० स० १५० | त्र्य भडार विशेष—पं० रामचन्द्र ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

४६० सूत्रकृतांग " । पत्र स० १६ से ५६ । ग्रा० १०×४६ उख्र । भाषा प्राकृत । विषय-ग्रागम । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० २३३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १५ पत्र नहीं है। प्रति संस्कृत टीका सहित है। बहुत से पत्र दीमको ने खा लिये है। बीच में मूल गाथाये है तथा ऊरर नीचे टीका है। इति श्री सूत्रकृतागदीपिका पोडपमाध्याय।

विषय-धर्म एवं स्राचार शास्त्र

प्रदेशः ऋहाईसमूलगुगावर्णेन '"। पत्र स० १। ग्रा० १०३४७ दक्ष । भाषा-पर्यतः । विषय-मूनियर्न वगान । र० काल 🗙 । पूर्ण । वेष्टन स० २०३० । स्त्र भण्डार ।

प्रश् स्त्रतगारधमिमृत-पंश्राशाधर । पन म०३७७ । आ०११६८७ इझ । भाषा-संस्कृत । विषय-मुनिधर्म वर्णन । र० काल स०१३०० । न० काल स०१७७ माप मुरी १ । पूर्ण । वे० सं०६३१ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वापक्ष टीका महित है । बोली नगर मे श्रीमहाराजा गुमनिंग्हर्जी के झाननतात में माहर्जी रामचन्द्रजी ने प्रतिलिति करवायी थी । म० १८२६ में प० सुखराम के शिष्य प० वेदाय ने गन्यका मशोधन किया था । ६२ से १६१ तक नशीन पत्र है ।

४६३. प्रति सं २ २ । पत्र सं० १२३ । ले० काल 📐 । वे० ग० १= । ग भण्डार ।

प्रदेश. प्रति स् ६ । पत्र स० १७७ । ने० वान म० १६४३ कार्तिक मुदी ४ । ये० मं० १६ । न भण्डार ।

प्रध्य. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३७ । ने० नाल x । ने० नं० ४६० । जा भण्यार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है। प० माधव ने ग्रन्थ की प्रतिनिधि की थी। ग्रन्थ का दूसरा नाम 'धर्मामृतसूत्रि सग्रह' भी है।

प्रधः त्रानुभवप्रकाश-दीपचन्द कासलीवाल । पत्र स० ४४० । ग्राकार १२x१ई इञ्च । भाषा-हिन्दी (राजस्थानी) गद्य । विषय-धर्म । र० काल मं० १७८१ पौप बुदी ५ । ले० काल म० १८१४ । ग्रपूर्म । वे० मं० १ । घ भण्डार ।

प्रहु प्रति सं०२ । पत्र सं०२ मे ७४ । ले० काल 🗴 । अपूर्गा । वे० स० २१ । छ भण्डार ।

४६८ त्रानुभवानन्द'' "' पत्र मं० ५६ । ग्रा०१३५४६ उझ । भाषा-हिन्दी (गरा) । विषय-धर्म । र० काल ४ । ले० काल । पूर्ण । वे० स० १३ । इ भण्डार ।

श्रमृतधर्मरसकाव्य—गुण्चन्द्रदेव। पत स० ३ से ६६। श्रा०१०८४६ भाषा—सस्कृत। विषय— श्राचार शास्त्र। र० काल ४। ले० काल सं० १६८५ पीप सुदी १। श्रपूर्ण। वे० म० २३४। ञ भण्डार।

विशेप—प्रारम्भ के दो पत्र नही है। श्रन्तिम पुष्पिका –इति श्री गुगाचन्द्रदेविवरिचतश्चमृतधर्मरमकाव्य व्यावर्गान श्रावकव्रतनिरूपगं चतुर्विशति प्रकरण सपूर्गा । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

पट्टे श्री कुदकुदाचार्ये तत्पट्टे श्री सहस्रकोत्ति तत्पट्टे त्रिभुवनकोत्तिदेवभट्टारक तत्पट्टे श्री पद्मनिददेव भट्टारक तत्पट्टे श्री जसकोत्तिदेव तत्पट्टे श्री लिलनकोत्तिदेव तत्पट्टे श्री गुगरत्नकीत्ति तत्पट्टे श्री १. गुग्।चन्द्रदेव भट्टारक 41

-)

रिचत महाग्रन्थ कर्मक्षयार्थ। लोहटमुत पिडतश्री सावलदास पठनार्थं। ग्रन्तिसी स्यसावपट्टप्रकाशन धर्मछपदेशकनार्थं।

प्रिम चैत्यालय माघ मामे कृष्णा से पूष्यनक्षत्रे पाधिवि दिने १ शुक्रवारे स० १६६५ वर्षे वैरागरग्रामे चौधरी चन्द्रनेमहाये नत्मुत चतुर्भु ज जगमिन परसरामु खेमराज भ्राता पच सहायिका। शुभं भवतु।

६०० स्रागमविलास—चानतराय। पत्र म० ७३। ग्रा० १०१×६३ दश्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । । एय-धर्म। र० काल स० १७८३। ने० काल मं० १६२८। पूर्ण। वे० सं० ४२। क भण्डार।

विशेष-रचना मवत् सम्बन्धी पद्य-''गुगा वम् शैल सितश''

ग्रन्थ प्रशस्ति के ग्रनुसार द्यानतराय के पुत्र ने उक्त ग्रन्थ की मूल प्रति को भाभू को वेचा तथा उसके पाम न वह मूल प्रति जगतराय के हाथ मे ग्रायी। ग्रन्थ रवना द्यानतराय ने प्रारम्भ की थी किन्तु वीच ही मे स्वर्गवास श्जाने के कारण जगतराय ने सवत् १७८४ मे मैनपुरी मे ग्रन्थ को पूर्ण किया। ग्रागम विलास मे कवि की विविध रचनाग्रो का सग्रह है।

६८१. प्रति सं० २। पत्र म० १०१। ले० काल म० १९५४। वे० स० ४३। क भण्डार।

६०२. श्राचारसार—वीरतिः । पत्र स० ४६ । ग्रा० १२×५ देख । भाषा-सम्कृत । विषय-ग्राचार ग्राम्त्र । र० काल × । ले० काल स० १८६४ । पूर्ण । वे० स० १२७ । श्र भण्डार ।

६०३ प्रति सं०२। पत्र स०१०१। ले० काल 🗙 । वे० स० ४४। क भण्डार।

६०४ अति सं०३। पत्र स०१०६। ले० काल 🔀 । ग्रपूर्ण। वे० स०४। घ भण्डार।

६०५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३२ से ७२। ले० काल 🔀 । ग्रपूर्श । वे० मं० ४८५ । व्य भण्डार ।

६०६. त्र्याचारमार भाषा-पत्रालाल चौधरी । पत्र स० २०३ । ग्रा० ११४८ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्राचारशास्त्र । र० काल म० १९३४ वैजाल बुदी ६ । ले० काल ४ । वे० म० ४५ । क भडार ।

६०७. प्रति सं०२। पत्र म० २६२। ले० काल० 🗙 । वे० सं० ४६। क भंडार।

६०८. श्राराधनासार—देवसेन । पत्र सं० २० । ग्रा० ११×४ । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । २० काल-१०वी जताब्दी । ले० कारा × । ग्रपूर्श । वे० स० १७० । ग्रा भण्डार ।

६०६. प्रति सं०२। पत्र म० ६४। ले० काल 🔀 । ते० स० २२०। 🛪 भण्डार ।

विशेप-प्रति सम्कृत टीका सहित है

६१०. प्रति सं० ३ | पत्र स० १० । ले० काल × । वे० सं० ३३७ । ह्य भण्डार

६१२. प्रति स० ४। पत्र स० ७। ले० काल ४। वे० सं० २८४। ख भण्डार।

६१२ प्रति सं० ४ । पत्र मं० ६ । ले० काल 🗙 । ते० म० २१५१ । ट भण्डार ।

६१२. श्राराधनासार भाषा—पत्रालाल चौधरी । पत्र म० १६ । ग्रा० १०×५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल म० १६३१ चैत्र बुदी ६ । वे० काल × । पूर्ण । वे० मं० ६७ । क भण्डार ।

विशेप—लेखक प्रशस्ति का ग्रंतिम पत्र नहीं है।

६१४. प्रति सं०२। पत्र स० ४०। ले० काल 🗴 । वे० सं० ६८। क भण्टार ।

९१४. प्रति सं० ३। पत्र स० ५२ । ले० काल ४। वे० मं० ६९। क अण्डार ।

६१६. प्रति सं ८४। पत्र स० २४। ले० काल 🗙 । वे० मं० ७५। इ भण्डार ।

, विशेप--गाथाये भी है।

६१७. श्राराधनासार भाषा " । पत्र म०१६ । ग्रा०११४४ द्रद्य । भाषा-हिन्दा । व्यय-धर्म । र० काल × । ते काल × । पूर्ण । वै० मं०२१२१ । ट भण्डार ।

६१८. त्राराधनासार वचितका—वाबा हुलीचन्द्र । पत्र सं० २२। त्रा० १२% ४८ व्या भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । र० काल २०वी शताब्ती । ले० काल ४ । पूर्ण । वॅ० मं० १८३ । छ भण्डार ।

६१६. त्र्याराधनासार वृत्ति-पं० त्र्याशाधर । पत्र स० ६ । ग्रा० १०४८ हे इच । भाषा-मग्रत । विषय-प्रमी । र० काल १३वी शताब्दी । ले० काल ४ । पूर्ण । वै० स० १० । ख भण्डार ।

विजेप--मुित नयचन्द्र के लिए ग्रन्थरचना की थी। टीका का नाम ग्राराधनासार वर्षे ग् है।

६२०. ऋाहार के छियालीस दोप वर्णत्र—भैया भगवतीतास । पत स० २ । म्रा० ११×७३ ज्ञा । भाषा-हिन्दी । विषय-म्राचारवास्त्र । र० काल स० १७४० । ले० कान × । पूर्ण । वे० मं० २०४ । भू भण्डार ।

६२१ उपदेशरत्नमाला—धर्मदासगिए। पत्र सं० २०। आ० १०४४ । भाषा-प्रानृत । विषय-धर्म। र० काल ४। ले० कल न० १७५५ कार्तिक बुदी ७। पूर्ण। वे० स० ५२५। स्र भण्डार।

६२२. प्रति सं०२ । पत्र सं∙१४ । ले० काल 🗴 । वे० स०३४५ । व्याभण्डार ।

विशेष--प्रति प्राचीन एवं सस्कृत टीवा सहित है।

६२३. उपदेशरत्नमाला— सकलभूषणा। पत्र स० १२१ । ग्रा० ११×४ द्वा । भाषा—मन्द्रन । विषय—धर्म । र० काल म० १६२७ श्रावण सुदी ६ । ले० काल स० १७६७ श्रावण सुदी १४ । पूर्ण । वे० म० ११ । त्रा भण्डार ।

विशेष--जयपुर नगर मे श्री गोपीराम बिलाला ने प्रतिलिपि करवाई थी।

६२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३६ । ले० वाल × । वे० स० २७ । व्य भण्डार ।

६२७. प्रति संब ३ । पत्र स० १२६ । लेव काल संव १५२० श्रावरण मुदी ४ । वेव संव २८० । स्त्र भण्टार ।

६२६. प्रति स्न ४ । पत्र स० १६६ । ले० काल सं० १६८८ कार्निक सुवी १२ । अपूर्ण । वे० सं० ८५८ न्य भण्डार ।

विशेष—पत्र मं० ६० मे ६३ तथा १०८ नही है। प्रशस्ति मे निम्नप्रकार निखा है—"शेरपुर की समस्त शावगमी ज्ञान कल्याम निमित्त इस शास्त्र की श्री पार्श्वमाथ निमित्त भण्डार मे रखवाया।"

- ट२७. प्रति स० ४। पत्र सं० २५ से १२३। ले० काल ×। वे० सं० ११७५। ऋ भण्डार।
- ६२्=. प्रति स०६। पत्र सं०१३ मा ले० काल ×। वे० सं०७७। क भण्डार।
 - ६२६. प्रति सं० ७। पत्र सं० १२०। ले० काल 🗙 । वे० स० ६२। इट भण्डार।
 - ६३०. प्रति सट म । पत्र सं०३६ मे ६१। ले॰ काल 🗴 । अपूर्णी। वे० स० म ३। इस भण्डार।
 - ६३१. प्रति सं ८ । पत्र सं ० ६४ से १४५ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० स० १०६ । छ भण्डार ।
 - ६३२. प्रति सं० १८। पत्र सं० ७२। ले० काल 🗙 । प्रपूर्ण। वे० स० १४६। छ भण्डार।
 - ६३३. प्रति सं८ ११। पत्र सं० १६७। ले० काल म० १७२७ ज्येष्ठ बुदी ६। वे० सं० ३१। व्य भण्डार
 - ६३४. प्रति संट १२। पत्र स० १८१। ले० काल 🗙 । वे० सं० २७०। व्य भण्डार।
- ६३४. प्रति सं० १३। पत्र सं० १६५। ले० काल सं० १७१८ फाग्रुण सुदी १२। वे० स० ४५२। स्म भण्डार।
- ६३६. उपदेशसिद्धांतरत्रमाला—भंडारी नेमिचन्द । पत्र स० १६। ग्रा० १२×७ई इख्र । भाषा— प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १६४३ ग्रापाढ़ मुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७८ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे टीका भी दी हुई है।

- 5३७ प्रति स०२। पत्र सं०६। ते० काल ×। वे० स० ७६। क भण्डार। ६३८. प्रति सं०३। पत्र सं०१८। ते० काल सं०१८३४। वे० सं०१२५। घ भण्डार। विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये है।
- ६३६. उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा—भागचन्द् । पत्र सं० २८ । मा० १२४८ इख्र । भाषा— हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल स० १६१२ म्रापाड बुदी २ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ७५६ । स्र भण्डार ।
- विशेष—ग्रन्थ की सं० १६६७ मे कालूराम पोल्याका ने खरीदा था। यह ग्रन्थ पट्कर्मोपदेशमाला का हिन्दी ग्रनुवाद है।
 - ६४०. प्रति सं ० २ । पत्र सं० १७१ । ले० काल मं० १६२६ ज्येष्ठ सूदी १३ । वे० मं० ८० । क भण्डार
 - ६४१. प्रति सं ३। पन स० ४६। ले० काल ×। वे० स० ८१। क भण्डार।
 - ६४२ प्रति सं २४। पत्र स० ७३। ले० काल स० १६४३ सावरा बुदी ३। वे० मं० ८२। क भंडार।
 - ६४३. प्रति सं ६ ४ । पत्र स० ७६ । ले० काल 🗙 । वे० सं० ५३ । क भण्डार ।
 - ६४४. प्रति सं ८ ६ । पत्र स० १२ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ५४ । क भण्डार ।
 - ६४४. प्रति स० ७। पत्र स० ४५ । ले० काल 🗴 । वे० स ५७ । अपूर्ण । क भण्डार ।
 - ६४६ प्रति मः ५। पत्र मं० ५६। ले० काल 🗙। वे० मं० ५४। इ भण्डार।
 - ६४७. प्रति संट ६ । पत्र स० ५६ । ले० काल ४ । वे० सं० ८५ । ड भण्डार ।
- ध्यन. उपदेशरत्नमालाभाषा—बाबा दुलीचन्द् । पत्र सं० २० । ग्रा० १०३४७ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल स० १६६४ फागुरा सुदी २ । पूर्ण । वे० स० दंश । क भण्डार ।

६४६. उपरेश स्त्रपाला भाषा—देवीसिंह छावडा । पत्र म० २० । ग्रा० ११८८७ द्वा । गाषा— हिन्दी पद्य । र० काल म० १७६६ भादवा बुदी १ । ने० काल 🗙 । पूर्ण । वे० म० ५६ । ऋ भण्टार ।

विशेष--- तरवर नगर मे ग्रन्थ रचना की गई थी।

६४०. प्रति सं०२। पत्र म०१६। ले० काल 🗙 । वे० स० ८६। क भण्डार ।

६५१ प्रति सं०३। पत्र सं०१६। ले० काल 🗴 । वे० स० ६६। क भण्डार ।

६४२. उपसर्गार्थे विवरण-वुपाचार्य । पत्र म० १। ग्रा० १०३×४५ डख्न । भाषा-सम्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । पूर्ण । वे० म० ३६० । व्य भण्डार ।

६५३. उपासकाचार दोहा—न्त्राचार्य लदमीचन्द्र । पत्र मं० २७ । ग्रा० ११४५ इख । भाषा-ग्रपश्च'ग । विषय-श्रावक धर्म वर्णान । र० काल 🗙 । ले० काल म० १५५५ वर्गातक मुदी १५ । पूर्ण । वे० म० २२३ । न्यु भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ का नाम श्रावकाचार भी है। पं० लक्ष्मरण के पठनार्थ प्रतिलिपि वी गई यी। विस्तृत प्रशस्ति निम्न प्रकार है —

स्विम्त मवत् १५५५ वर्षे कात्तिक सुदी १५ मीमे श्री मूलमधे मरम्यतीगन्छे बलात्कारगरो भ० विद्यानदी पट्टे भ० मिल्लिमूपरा तिन्छप्य पिंदत लक्ष्मरा पठनार्थं दूहा श्रावकाचार शारत्रं समाप्त । ग्र थ म० २७० । दोहो की सत्या २२४ है।

६४४. प्रति सं०२। पत्र म०१४। ले० काल ×। ते० न० २४८। स्र भण्डार। ६४४. प्रति सं०३। पत्र स०११। ले० काल ×। ते० म०१७। स्र भण्डार।

६४६ प्रति सं०४ । पत्र मं०१५ । ले• काल × । वे० मं० २६४ । ऋ भण्डार ।

६४७. प्रति सं० ४ । पत्र म० ७७ । ले० काल 🗙 । वे० म० ६६५ । क भण्डार ।

६४८ उपासकाचार । पत्र सं०६५। ग्रा०१३५८६ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-श्रावक धर्म वर्णान । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण (१५ परिच्छेद तक) वे० प०४२। च भण्डार ।

६४६. उपासकाध्ययन'''''' । पत्र म० (११४-३४१ । ग्रा० ११६४५ इख्र । भाषा-नस्कृत । विषय-ग्राचार शास्त्र । र० काल 🗙 । ले० काल । ग्रपूर्ण । वे० म० २०६ । त्र्य भण्डार ।

६६०. ऋद्धिशतक—स्वरूपचन्द विलाला । पत्र मंस्या ६ । ग्रा० १०३×१ । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल सं० १६०२ ज्येष्ठ मुदी १ । ले० काल म० १६०६ वैशाख बुदी ७ । पूर्गा । वै० स० २० । स्व भण्डार ।

विशेष--हीरानन्द की प्रेरगा में सवाई जयपुर में इस ग्रन्थ की रचना की गई।

६६१. कुशीलखंडन-जयलाल । पत्र म० २६ । ग्रा० १२×७८ । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल सं० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ४११ । ऋ भण्डार ।

भण्डार ।

६६२. प्रति सं० २। पत्र सं० ५२। ले० कात ×। वे० सं० १२७। ई भण्डार। ६६३. प्रति सं० ३। पत्र स० ३८। ले० काल ×। वे० सं० १७६। छ भण्डार।

६६४. केवलज्ञान का ठ्योरा'''''। पत्र सं० १ । आ० १२६४५ । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० मं० २६७ । ख भण्डार ।

६६४. क्रियाकलाप टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० १२२ । आ० ११६×६ । भाषा-संस्कृत । विषय-श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३ । स्त्र भण्डार ।

६६६ प्रति सं०२। पत्र सं०११७। ले० काल स०१६५६ चैत्र मुदी १। वे० स०११५। क भडार। ६६७ प्रति सं०३। पत्र सं०७४। ले० काल स १७६५ भादवा मुदी ४। वे० स०७५। च भण्डार। विजेप—प्रति सवाई जयपुर में महाराजा जयसिंहजी के जामनकाल में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में लिखी गई थीं। ६६८ प्रति सं०३। पत्र स०२०७। ले० काल सं०१५७७ बैशाख बुदी ४। वे० स०१८८७। ट

विशेष-- 'प्रशस्ति सग्रह' मे ६७ पृष्ठ पर प्रशस्ति छप चुकी है।

६६६. क्रियाकलाप पत्र सं० ७ । ग्रा० ६ $\frac{2}{7} \times 8\frac{2}{5}$ इक्क । भाषा-संस्कृत । विषय-श्रावक धर्म वर्गान । र० काल \times । त्रेण्या । वे० सं० २७७ । क्र भण्डार ।

६७०. कियाकलाप टीका" । पत्र सं० ६१ । ग्रा० १३×५ इक्क । भाषा-संस्कृत । विषय-श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १५३६ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ११६ । क भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

राजाधिराज माडीगढदुर्गे श्री मुलतानगयासुद्दीनराज्ये चन्देरीदेशेमहाशेरखान्व्याप्रीयमाने नेसरे ग्रामे वास्तव्य कायस्थ पदमसी तत्पुत्र श्री राघौ लिखितं।

६७१. प्रति सं०२। पत्र स० ४ से ६३। ले० काल 🗶 । ग्रपूर्शा। वे० न० १०७। व्य भण्डार।

६७२. । क्रयाकलापयृत्ति """। पत्र सं० ६६ । ग्रा० १०×४ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-श्रावक धर्म वर्णान । र० काल × । ले० काल सं० १३६६ फाग्रुगा सुदी ४ । पूर्ण । वे॰ सं० १८७७ । ट भण्डार ।

विगेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

एवं क्रिया कलाप वृत्ति समाप्ता । छ ।। छ ।। छ ।। सा० पूना पुत्रेग छाजूकेन लिखितं क्लोकानामष्ट्रादय-जतानि ।। पूरी प्रशस्ति 'प्रशस्ति संग्रह' मे पृष्ठ ६७ पर प्रकाजित हो चुकी है ।

६७३. क्रियाकोष भाषा—िकशनसिंह । पत्र स० ८१। आ०११×५ इख्र । भाषा—िहन्दी पद्य । निषय—श्रावक धर्म वर्णान । र• काल सं०१७८४ भादवा सुदी १५। ले० काल ×। पूर्गा | वे० सं०४०२। ऋ भण्डार ।

६७४. प्रति सं० २। पत्र सं० १२६। ले० काल सं० १८३३ मंगसिर मुदी ६। वे० सं० ४२६। छा

६७४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४२ । ले० काल 🔀 । श्रपूर्ण । वे० सं० ७५८ । श्र्य भण्डार । ६७६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५० । ले० काल स० १८८५ श्रापाढ बुदी १० । वे० सं० ८ । ग भंडार विशेष—क्योलालजी साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

६७७. प्रति सं ८ ४। पत्र स० १६ से ११५। ले० काल स० १८८८। स्रपूर्ण। वे० सं० १३०। ड भण्डार।

> ६७८. प्रति सं०६। पत्र स०६७। ले० काल ×। वे० सं०१३१। इ. भण्डार। ६७६. प्रति सं०७। पत्र स०१००। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स०५३४। च भण्डार। ६८०. प्रति सं०८। पत्र स०१४२। ले० काल स० १८५१ मगमिर बुदी १३। वे० स०१६५।

छ भण्डार।

े ६८१. प्रति सं०६। पत्र स० ६६। ले० काल स०१६५६ ग्रापाढ सुदी ६। वे० सं०१६६। छ् भण्डार।

विशेष-प्रति किशनगढ के मन्दिर की है।

६८२ प्रति स०१०। पत्र सं०४ से ६। ले० काल 🗴 । स्रपूर्ण । वे० सं० ३०४। ज भण्डार। ६८३. प्रति सं०११। पत्र स०१ से १४। ले० काल 🗴 । स्रपूर्ण । वे० स० २०५७। ट भण्डार। विशेष—१४ से स्रागे पत्र नहीं है।

६८४. क्रियाकोश""। पत्र सं०५०। ग्रा० १०३४५ इक्क । भाषा-हिन्दी। विषय-श्रावक धर्म वर्गान । र० नाल 🗴 । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० सं०६०६ । ग्रा भण्डार ।

६८४ कुगुरुलच्या""। पत्र सं०१। ग्रा०६×४० इख्राभाषा—हिन्दी । विषय—धर्म। र०काल ×। पूर्ण। वे० सं०१७१६। अभण्टार।

६८६ त्तमावत्तीसी—जिनचन्द्रसूरि । पत्र स० ३ । ग्रा० ६५×४ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१४१ । त्र्य भण्डार ।

६८७. चेत्र समासप्रकरणः । पत्र स० ६ । ग्रा० १०×४६ । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ने० काल मं० १७०७ । पूर्ण । वै० म० ८२६ । त्र्य भण्डार ।

६८८ प्रति सं०२।पत्र स०७।ले० काल ४।वे० सं० ४। ऋ भण्डार।

६८६ चेत्रसमामटीका—टीकाकार हरिभद्रसृरि । पत्र सं० ७ । ग्रा० ११×४६ । भाषा-संस्कृत । निषय-प्रमं । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३० । श्र भण्टार ।

हर गग्। सार ' । पत्र सं० म । ग्रा० ११५ ×५६ भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० नान × । पूर्ण । वे० मं० ५३५ । च भण्डार ।

६६१ चडसरण् प्रकरण्णाः । पत्र म० ४। ग्रा० ११×८ दञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० राप >. । पूर्त । वे० म० १८४६ । श्र भण्डार ।

विशेष---

प्रारम्भ — सावजजोगिवरइ उकित्तरा ग्रुग्वि अपिविवर्ताः ।

रविल अस्सय निदगाविण तिगिच्छ ग्रुग् धारगा चेव ।।१।।

चारित्तस्स विसोही कीरई सामाईयग किलइह्य ।

सावज्जे अरजोगागं वज्जगा सेवर्ग्तरगुउ ।।२।।

दसग्यारिवसोही चउवीसा इच्छएग किज्जइय ।

अच्चपत्त अग्रुग् कित्तग् रूवेग जिग्गवरिदागं ।।३।।

श्रमित्स-मदराभावावद्धा तिन्वराषु भावाउ कुराई ताचेव।

श्रमुहाऊ निरराषु वंधउ कुराई निन्वाउ मदाउ।। ६०॥

ता एव कायन्वं बुहेहि निन्चिप सिकलेसंमि।

होई तिक्कालं सम्म श्रसिकले सिम सुगइफलं।। ६१॥

चउरगो जिराधम्मो नकउ चउरगसररा मिव नकमं।

चउरगभवच्छेउ नकउ हादा हारिउ जम्मो ।। ६२॥

ं इ श्रजीव पमीयमहारि वीरभइ तमेव श्रम्खयरा।

भाए सुति संभम वंभं काररा निन्बुइ सुहारा ।। ६३॥

इति चउसरण प्रकरण संपूर्णं । लिखित गिणवीर विजयेन मुनिहर्षविजय पठनार्थं ।

६६२ चारभावना"""। पत्र सं० ६ । ग्रा० १० $\frac{1}{2}$ \times ६ $\frac{1}{2}$ । भाषा—सस्कृत । विसय—धर्म । र० काल \times ले० काल \times । पूर्या । वे० स० १७६ । ड भण्डार ।

विशेप—हिन्दी मे अर्थ भी दिया हुआ है।

६६३. चारित्रसार-श्रीमचामुं खराय । पत्र स० ६६ । ग्रा॰ ६३ ४४ ई इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-माचार धर्म । र॰ काल 🗙 । ले॰ काल सं॰ १५४५ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे॰ स॰ २४२ । त्र्य भण्डार ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

इति सकलागमसयमसम्पन्न श्रीमज्जिनसेनभट्टारक श्रीपादपद्मप्रासादासारित चतुरनुयोगपारावार पारगधर्मविजयश्रीमच्चामुण्डमहाराजविरचिते भावनासारसग्रहे चरित्रसारे श्रनागारधर्मसमाप्त ॥ ग्रन्थ सख्या १८५० ॥

सं० १५४५ वर्षे बैशाख वदी ५ भौमवासरे श्री मूलसघे नद्याम्नाये वलात्कारगरो सरस्वतीगच्छे श्रीकुं दकु दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारकश्रीजनचन्द्र देवा तत् शिष्य
ग्राचार्य श्री मुनिरत्नकीर्ति तदाग्राम्नाये खण्डेलवालान्वये ग्रजमेरागोत्रे सह चान्वा भार्या मन्दोवरी तयो पुत्रा. साह
डावर भार्या लक्ष्मी साह ग्रजु न भार्या दामातयो पुत्र साह पूत (?) साह ऊदा भार्या कम्मी तयो पुत्र साह दामा साह
योजा भार्या होली तयो पुत्रौ ररणमल क्षेमराजसा. डाकुर भार्या खेत्त तयो पुत्र हरराज। सा जालप साह तेजा भार्या
त्यजिसरि पुत्रपौत्रादि प्रभृतीना एतेपा मध्ये सा. ग्रजु न इद चारित्रसार शास्त्रं लिखाप्य सत्पात्राय ग्रार्यसारगाय प्रदत्तं
लिखित ज्योतिग्रणा।

६६४ प्रति सं ८२। पत्र सं० १४१। ले॰ काल स० १६३५ श्राषाढ सुदी ४। वे॰ स० १५१। क भण्डार।

विशेष—बा॰ दुलीचन्द ने लिखवाया।

६६४. प्रति सं० ३। पत्र मं० ७७। ले॰ काल सं० १४८५ मंगसिर बुदी २।वे॰ स॰ १७७। ह

६६६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५५। ले० काल 🗴 । वे० सं० ३२। वा भण्डार ।

विशेप--कही कही कठिन शब्दों के ग्रर्थ भी दिये हुये हैं ।

६६७. प्रति सं० ४। पत्र स० ६३। ले० काल मं० १७८३ कार्तिक मुदी ८। वे० म० १३४। व्य भण्डार।

विशेष--हीरापुरी मे प्रतिनिपि हुई।

६६८. चारित्रसार भाषा-मञ्जालाल । पत्र सं० ३७ । आ० १२४६ । भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-धर्म । र० काल मं० १८७१ । ने० कान 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० २७ । म भण्डार ।

६९६. प्रति सं०२। पत्र स०१६८। ले० काल म०१८७७ ग्रासोज मुदी ६। ते० सं०१७८। इस भण्डार।

७००. प्रति सं० ३। पत्र स० १३८। ले० काल मं० १६६० कात्तिक बुदी १३।वे० मं० १७६। इ. भण्डार।

७०१. चारित्रसार"" । पत्र सं० २२ मे ७६ । ग्रा० ११४५ । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्राचारगास्त्र र० काल ४ । ले० काल सं० १६४३ ज्येष्ठ बुदी १० । ग्रपूर्ण । वे० सं० २१६४ । ट भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सं० १६४३ वर्षे जाके १५०७ प्रवर्तमाने ज्येष्ठमासे कृष्णापक्षे दशम्या तिथौ सामवागरे पातिमाह श्री अक-न्बरराज्येप्रवर्त्तते पोथी लिखित माधौ तत्पुत्र जोसी गोदा लिखितं मालपुरा ।

७०२. चौबीस द्राडकभाषा—दौलतराम । पत्र सं० ६ । ग्रा० ६६×४६ । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल १८वी शताब्दि । ले० काल स० १८४७ । पूर्या । वे० सं० ४५७ । ऋ भण्डार ।

विशेष-लहरीराम ने रामपुरा मे प० निहालचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

७०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल 🗴 । वे० सं० १८६६ । 🛪 भण्डार ।

७०४. प्रति सं० ३। पत्र स० ११। ले॰ काल सं० १९३७ फाग्रुग्। सुदी ४। वै० सं० १५४। क भडार।

७०४. प्रति सं० ४। पन सं० ६। ले० काल ×। वे० म० १६०। क भण्डार।

७०६ प्रति सं० ४। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० म० १९१। हर भण्डार।

७०७, प्रति सं० ६। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० म० १६२। इ भण्डार ।

७०८. प्रति सं ७ ७। पत्र सं ० ६। ले० काल स० १८१८। ते० सं० ७३५। च भण्डार।

७०६. प्रति स० म। पत्र मं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ७३६। च भण्डार। ७१० प्रति सं० ६। पत्र स० ४। ले० काल ×। वे० स० १३६। छ भण्डार। विजेप—५७ पद्य है।

७१. चौराभी आसादना "। पत्र सं०१। आ० ६४४ इख्रा भाषा-हिन्दी। दिषय-धर्म। २० काल ४। ले० काल ४। पूर्णा वे० म० ५४३। स्त्र भण्डार।

विजेप-जेन मन्दिरों में वर्जनीय ५४ क्रियाग्रों के नाम है।

७१२. प्रति सं०२। पत्र म०१। ले० काल 🗙 । वे० म० ४४७। व्य भण्डार।

७१३. चौरासी आसादना । पत्र मं० १। ग्रा० १०×४६ । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० वाल × । पूर्ण । वे० स० १२२१ । स्र भण्डार ।

विशेष--प्रति हिन्दी दन्त्रा टीका सहित है।

७१४ चौरासीलाख उत्तर गुगा । पत्र स० १। आ० ११६ ४४६ डब्झ । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । पूर्ण । वै० स० १२३३ । स्र भण्डार ।

विशेप-१८००० शील के भेद भी दिये हुए हैं।

७१४. चौसठ ऋद्धि वर्णन : । पत्र स० ६ । ग्रा० १०४४ ई इख्र । भापा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । पूर्ण । वे० स० २५१ । व्य भण्डार ।

७१६. छ्हढाला— दौलतराम । पत्र सं० ६ । ग्रा० १०×६ई डब्झ । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल १८वी गताव्दी । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२२ । स्त्र भण्डार ।

७ ७ प्रति सं २ २ । पत्र स १३ । ले० काल स० १६५७ । वे० स० १३२५ । स्त्र भण्डार ।

७१८ प्रति सं० ३। पत्र सं० २८। ले० काल सं० १८६१ वैशाख मुदी ३। वे० सं० १७७ । क भंडार विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

७१६ प्रति सं २४। पत्र सं०१६। ले० काल ×। त्रे० स०१६६। ख्र भण्डार।

विशेप-इसके ऋतिरिक्त २२ परीषह, पचमगलपाठ, महावीरस्तोत्र एव सकटहरएाविनती भ्रादि भी दी हुई है।

७२० छहढाला — बुधजन । पत्र सं० ११ । ग्रा० १०×७ इख्र । भाषा – हिन्दी पद्य । विषय – धर्म । र० काल स० १८५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६७ । इ भण्डार ।

७२१. छेद्पिएड—इन्द्रनिष्ट् । पत्र सं० ३६ । ग्रा० ८४६ इच्च । भाषा-प्राकृत । विषय-प्रायश्चित । जास्त्र । र० काल × । पूर्ण । वे० स० १८२ । क भण्डार ।

७२२. जैनागारप्रक्रियाभाषा—वा० दुलीचन्द् । पत्र मं० २४ । ग्रा० १२×७ इख । भाषा-हिन्दी विषय-श्रावक धर्म वर्णन । र० काल सं० १९३६ । ले० काल × । ग्रानूर्ण । वे० सं० २०८ । क भण्डार ।

७२३. प्रति सं०२। पत्र स० ६५। ले० काल सं० १६६६ ब्रासोज मुदी १० । वे० सं०२०६। क

७२४. ज्ञानानन्दश्रावकाचार—साधर्मी भाई रायमल्ल । पत्र सं० २३१ । ग्रा० १३×६ इश्व । भाषा—हिन्दी । विषय—ग्राचार शास्त्र । र० काल १८वी शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३३ । क भण्डार । ७२५ प्रति सं० २ । पत्र स० १५६ । ले० काल × । वे० सं० २६६ । मा भण्टार । ७२६. प्रति सं० २ । पत्र स० १० । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० २२१ । ड भण्टार । ७२७. प्रति सं० ३ । पत्र स० २३२ । ले० काल सं० १६३२ श्रावरण सुदी १४ । वे० सं० २२२ ।

ड भण्टार।

७२८ प्रति सं० ४ | पत्र सं० १०२ से २७४ | ले० काल × । वे० सं० ५६७ । च भण्डार ।
७२६ प्रति सं० ४ | पत्र स० १०० । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ५६८ । च भण्डार ।
७३०. ज्ञानिंकतामिणि—मनोहरदास | पत्र सं० १० | ग्रा० ६३×५६ टब्र । भाषा-हिन्दी । विषयधर्म । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १५५३ । ग्रा भण्डार ।

विगेप-- ५ से द तक पत्र नहीं है।

७३१. प्रति स०२। पत्र स०११। ले० काल स०१८६४ श्रावण सुदी ६। वे० सं०३३। ग्राभडार ७३२ प्रति सं०३। पत्र स० ८। ले० काल ४। वे० स०१८७। च भण्डार। विशेप—१२८ छन्द है।

७२२, तत्त्वज्ञानतरंगिणी—भट्टारक ज्ञानभूषण्। पत्र सं० २७। ग्रा० ११×५ इख्र । भाषा—संस्कृत विषय—धर्म । र० काल स० १५६० । ले० काल स० १६३५ श्रावण् सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १८६ । ग्र भण्टार । ७३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल स० १७६६ चैत बुदी ८ । वे० स० ३३३ । ग्र भडार । ७३५. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १६३४ ज्येष्ठ बुदी ११ । वे० स० २६३ । क भडार ७३६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४७ । ले० काल स० १८१४ । वे० स० २६४ । क भण्डार । ७३७ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७० । ले० काल × । वे० स० २४३ । ट भण्टार । विशेष—प्रति हिन्दी ग्रर्थ सहित है ।

७३८. प्रति सं०६। पत्र स०२६। ले॰ काल सँ०१७८० फाग्रुगा सुदी १५।वे० सं∙ ५१३। इत भण्डार।

७२६. त्रियणिचार—भ० सोमसेन । पत्र स० १०७ । ग्रा० ११×५ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय— ग्राचार-धर्म । र० काल सं० १६६७ । ले० काल सं० १८५२ भादवा बुदी १० । पूर्ण । वे० स० २८८ । ग्रा भण्डार । विजय—प्रारम्भ के २५ पत्र दूसरी लिपि के है ।

७४०. प्रति स०२ । पत्र सं० ८१। ले० काल स०१८३८ कार्त्तिक सुदी १३। वे० स० ८१। छ भण्डार।

विजेप-पंडित वसतराम और उनने शिष्य गम्भूनाथ ने प्रतिलिपि की थी।

७४१. प्रति सं ३ १ पत्र सं० १४३। ले० काल 🔀 । वे० स० २८६। व्य भण्डार।

७४२. त्रिवर्गाचार ""। पत्र सं०१८। आ०१०३×४३ डखा। भाषा-सस्कृत । विषय-ग्राचार। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० ०७८। ख भण्डार ।

७४३. प्रति सं०२। पत्र सं०१५। ले० काल ×। वे० स०२८५। स्रपूर्या । ड भण्डार।

७४४ त्रेपनिक्रियाः ""। पत्र सं०३। ग्रा०१०×६ इख्र। भाषा-हिन्दी। विषय-श्रावक की क्रियाग्रो का वर्गान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५५४। च भण्डार।

७४४. त्रेपनिकयाकोश—दौलतराम । पत्र सं० ८२ । ग्रा० १२×६ ३ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्राचार । र० काल सं० १७६५ । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ५८५ । च भण्डार ।

७४६. द्राडकपाठ : "। पत्र सं० २३ । ग्रा० ८४३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य (ग्राचार)। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे॰ सं० १६६० । स्त्र भण्डार ।

७४७. दर्शनप्रतिमास्वरूप" " । पत्र सं० १६ । ग्रा० ११३ ४५ देख । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६१ । स्त्र भण्डार ।

विजेप-धावक की म्यारह प्रतिमाम्रो मे से प्रथम प्रतिमा का विस्तृत वर्गीन है।

७४८. दशभिक्ति । पत्र स० ५६। ग्रा० १२×४ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र० काल ×। र० काल सं० १६७३ ग्रासोज बुदी ३ । वे० सं० १०६। व्य भण्डार ।

विशेय—दश प्रकार की भक्तियों का वर्रान है। भट्टारक पद्मनंदि के ग्राम्नाय वाले खण्डेलवात्र ज्ञातीय सा० ठाकुर वश में उत्पन्न होने वाले साह भीखा ने चन्द्रकीत्ति के लिए मौजमाबाद में प्रतिलिपि कराई।

७४६. दशलत्त्राधर्मवर्णन-प० सद्।सुख कासलीवाल । पत्र स० ४१। ग्रा० १२×५ई इञ्च। भापा-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल स० १६३० । पूर्ण । वे० स० २६५ । ड भण्डार ।

विशेप--रत्नकरण्ड श्रावकाचारं की गद्य टीका मे से है।

७५०. प्रति स०२ । पत्र स०३१ । ले० काल 🗴 । वे० स०२९६ । ड भण्डार ।

७४१. प्रति सं०३। पत्र स०२५। ले० काल ×। वे० स०२६७। इ भण्डार।

७४२ प्रति स०४। पत्र स०३२। ले॰ काल ४। वे० स०१८६। छ भण्डार।

७४३. प्रति स॰ ४। पत्र सं० २४। ले॰ काल सं० १६६३ कार्त्तिक सुदी ६। वे० स० १८६। छ भण्डार।

विशेप-श्री गोविन्दराम जैन शास्त्र लेखक ने प्रतिलिपि की ।

७४४. प्रति सं०६। पत्र स० ३०। ले० काल मं० १६४१। वे० स० १८६। छ भण्डार। विशेष—ग्रन्तिम ७ पत्र बाद मे लिखे गये है।

७४४. प्रति सं०७। पत्र म० ३४। ले० काल ×।। वे० म० १८६। छ भण्डार। ७४६. प्रति सं०८। पत्र स० ३०। ले० काल ×। श्रपूर्ण। वे० म० १८६। छ भण्डार। ७४७. प्रति सं०६। पत्र म० ४२। ले० काल ×। वे० स० १७०६। ट भण्डार।

७४८. दशलत्त्वर्ण्धर्मवर्ण्त । पत्र म० २८। ग्रा० १२ ट्रें४७ है इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-त्रर्म। र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ५८७ । च भण्डार ।

> ७४६. प्रति सं०२। पत्र म०६। ले० काल ×। वे० स०१६१७। ट भण्डार। विशेष—जवाहरलाल ने प्रतिलिपि की थी।

७६०. दानपंचाशत-पद्मनिद । पत्र स० ६ । आ० ११×४ देखा । भाषा-मस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । वे० '० ३२५ । ञ भण्डार ।

विशेप---ग्रन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

श्री पद्मनिद्द मुनिराश्रित मुनि पुग्मदान पचागत लिलतवर्गा त्रयो प्रकरण ।। इति दान पंचागत समाप्त ।। ७६१. दानकुल्" । पत्र स० ७ । ग्रा० १०४४ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल ४ । ने० काल स० १७५६ । पूर्ण । वे० स० ६३३ । स्त्रा भण्डार ।

विशेप—गुजराती भाषा मे अर्थ दिया हुआ है। लिपि नागरी है। प्रारम्भ मे ४ पत्र तक चैत्यवदनक भाष्य दिया है।

७६२. दानशीलतपभावना—धर्मसी । पत्र म० १ । ग्रा० ६१४४ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० २१४३ । ट भण्डार ।

७६३. दानशीलतपभावना " । पत्र स०६। ग्रा०१०४४ दृद्धः । भाषा-सस्कृतः । विषय-धर्मः। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्णः । वे० स०६३६ । स्त्र भण्डारः ।

विञेप---४ ५ पत्र नहीं है। प्रति हिन्दी ग्रर्थ सहित है।

७६४. दानशीलतपभावना । पत्र स० १। ग्रा० ६ है \times ४ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल \times । ले॰ काल \times । पूर्ण । वे० म० १२६६ । स्त्र भण्डार ।

विशेप--मोती ग्रीर काकडे का सवाद भी वहुत मुन्दर रूप में दिया गया है।

७६४ दीपमालिकानिर्णाय : । पत्र म०१२। ग्रा०१२×६ इख्र । भाषा-हिन्दी । त्रिपय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वे० म०३०६ । क्र भण्डार ।

विशेप-लिपिकार बाह्यलाल व्यास।

७६६ प्रति सं०२ । पत्र म० ६ । ले० काल 🗴 । पूर्ता । ते० मं० ३०५ । क भण्डार ।

७६७. दोहापाहुड—रामसिंह। पत्र म० २० । ग्रा० ११४४ इख्र । भाषा-ग्रपश्र ग । विषय-ग्राचार गास्त्र । र० काल १०वी क्षताव्दि । ने० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० म० २०६२ । त्र्य भण्डार ।

विशेष-कुल ३३३ दोहे हैं। ६ मे १६ तक पत्र नहीं है।

७६८ धर्मचाहना " '। पत्र सं०८। ग्रा० ५% ४७। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल 🗙।

८६६. धर्मपंचिविशतिका — ब्रह्माजिनदास । पत्र सं०३ । ग्रा० १११×४६ डब्ब । भाषा — हिन्दी । विषय — धर्म । र० काल १५वी शताब्दी । ले० काल स० १८२७ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ११० । छु भण्डार । विशेष — ग्रन्थ प्रशस्ति की पूष्पिका निम्न प्रकार है —

इति त्रिविधसैद्वान्तिकचक्रवर्त्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रस्य शिष्य प्र॰ श्री जिनदास विरचित धर्मपंचिविश्वतिका नामगास्त्रं समाप्तम् । श्रीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

७७०. धर्मप्रदीप्रभाषा—पन्नालाल संघी । पत्र सं० ६४ । ग्रा० १२×७ । भाषा-हिन्दी । र० काल म० १६३५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । ड भण्डार ।

विशेष—संस्कृतमूल तथा उसके नीचे भाषा दी हुई है।

७७१. प्रति स॰ २। पत्र सं० ६४। ले० काल सं० १६६२ ग्रासोज मुदी १४। वे० म० ३३७। स भण्डार।

विशेप--ग्रन्थ का दूमरा नाम दशावतार नाटक है। प० फनेहलाल ने हिन्दी गद्य मे अर्थ लिखा है।

७७२. धर्मप्रश्तोत्तर—विमलकीर्ति । पत्र सं० ५०। ग्रा० १०६×४३। भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल स० १८१६ फागुन मुदी ५। व्य भण्डार।

विशेष—१११६ प्रश्नो का उत्तर है। ग्रन्थ मे ६ परिच्छेद हैं। परिच्छेदों मे निम्न विषय के प्रश्नो के उत्तर है— १ दशलाक्षिणिक धर्म प्रश्नोत्तर। २. श्रावकधर्म प्रश्नोत्तर वर्णन। ३. रत्नत्रय प्रश्नोत्तर। ४ तत्त्व पृच्छा वर्णन। ५ कर्म विषाक पृच्छा। ६. सज्जन चित्त वह्मभ पृच्छा।

मङ्गलाचरण: तीर्थेशान् श्रीमतो विश्वान् विश्वनाथान् जगद्गुरून् । ग्रनन्तमहिमारूढान् वंदे विश्वहितकारकान् ॥ १॥

चोखचन्द के शिष्य रायमल ने जयपुर मे शातिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

७७३. धर्मप्रश्नोत्तर ""। पत्र स० २७ । ग्रा० ५ ४४ । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल 🗙 । ले० काल स० १६३० । पूर्ण । वे० स० ४०० । ऋ भण्डार ।

विशेष---ग्रन्थ का नाम हितोपदेश भी दिया है।

७७४ धर्मप्रश्लोत्तरी "। पत्र स०४ मे ३४। ग्रा०८×६ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म। , र०काल ४। ले०काल स०१६३३। ग्रपूर्ण। वे०स०५६८। च भण्डार।

विशेष--प० खेमराज ने प्रतिलिपि की ।

७०%. धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचारभाषा—चम्पाराम । पत्र सं० १७७ । ग्रा० १२४ = इञ्च । भाषा— हिन्दी । विषय— श्रावको के ग्राचार का वर्णन है । र० काल सं० १८६८ । ले० काल सं० १८६० । पूर्ण । त्रे० सं० ३३८ । इ. भण्डार । ७७६ धर्मप्रश्तोत्तरश्रावकाचार ''''। पत्र सं० १ में २५। ग्रा० ११६×५६ इख्र । भाषा-मस्तृत। विषय-श्रावक धर्म वर्णान। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० मं० २३०। भा भण्डार।

७८७ प्रति सं०२।पत्र सं०३५। ले० काल ×। वे० सं० २६६। व्य भण्डार।

७ अद्म धर्मरत्नाकर-संग्रहकर्ता प॰ संगल । पत्र सं० १६१ । ग्रा० १३४७ इक्का भाषा-मस्त्रत । विषय-धर्म । र० काल सं० १६८० । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ३४० । ग्रा भण्डार ।

विशेष-लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सं० १६८० वर्षे काष्ठासंघे नदतट ग्रामे भट्टारक श्रीभूषण् शिष्य पटित मङ्गल कृत शास्य रत्नाकर नाम शास्त्र सपूर्ण । संग्रह ग्रन्थ है ।

७७६. धर्मरसायन-पद्मनित्। पत्र सर्व २३। ग्राव १२×१ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रव्काल × । लेव काल × । पूर्ण । वैव सव ३४१ । क भण्डार ।

৬=০. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल म० १७६७ वैद्यास बुदी १। वै० स० ४३। স গতাर।

७८१. धर्मरसायन : " । पत्र स० ८ । ग्रा० ११२४६ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० स० १६६५ । अ भण्डार ।

७८२. धर्मलच्गा" "।पत्र सं० १। ग्रा० १०×४ इत्र। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। र० काल ×। विषय-धर्म। र० काल ×। विषय-धर्म। र० काल ×।

७८३ धर्मसंग्रहश्रावकाचार—पं० मेधाबी । पत्र स० ४८। ग्रा० १२८५ टक्क । भाषा-मंस्त्रत । विषय-श्रावक धर्म वर्णन । र० का स० १५४१ । ले० काल स० १५४२ कार्त्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १६६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति बाद में संशोधित की हुई है। मगलाचरण को काट कर दूसरा मगलाचरण लिखा गया है। तथा पुष्पिका में शिष्ण के स्थान में ग्रंतेवासिना शब्द जोडा गया है। लेखक प्रशस्ति निम्न है—

श्री विक्रमादित्यराज्यात् संवत् १५४२ वर्षे कार्तिक सुदी १ ग्रुक्टिने श्री वर्द्ध मानचेत्यालयविराजमाने श्रीहितार पेरोजापत्तने सुलतानश्रीयहलोलसाहिराज्यश्रवर्त्तमाने श्री मुलसधे नद्याम्नाये सारस्वतमछे बलात्कारगर्रे। महारक श्रीपद्मनदिदेवा । तत्पट्टे कुवलयवनिकासनैकन्तन्त्र श्री श्रुमचन्द्रदेवाः । तत्पट्टे पट्तवर्कचक्रचितकृतसेवाः महारक श्री जिनचन्द्रदेवा तत्शिष्ये मडलाचार्य मुनि श्री रत्नकीर्त्तः तस्य शिष्यो दिगम्बर मुत्तिमर्पुनि श्री विमलकीर्त्ति पडितश्रीमीहाल्यः तद्मानाये खडेलवालाच्ये भीसा गोत्रे परमश्राववसाधु साधूनामा तस्याद्या भार्या देवग्रुरुपादारिवद सेवनतत् रत्ता सान्त्री लाच्छिमंत्रिका तयो श्रावकाचारोत्पत्ती साधुभोजा—केशोभिधान्। साधुनाम्नो, द्वितीय भार्या छाह्धी, इति नाम्नी । तन्नंदनो निमित्तज्ञानिकशारदत्तानुसावलाभिषयः श्रथ साधुगोजापत्नीपातिव्रत्यादिग्रुण्निलयाभोलसिरि सज्ञा । तयो प्रथमपुत्रः साधुधामीख्य । तद्भायदिवग्रुरुचरुणार्रविद्यचंचरीका सान्त्री धनश्रोः । द्वितीय पुत्र श्री गिरन्नारिगिरौ श्री नेमीश्वर यात्राकारक संवपति रत्हा नामा । तस्य गेहिनी शीलशालिनी जही इति संशिका । तयोर्ज्यष्ट-पुत्रक्चरुचियदानिवत्ररुवस्यदानिवतररुवस्य साम्नी हन्न सान्ति सान्त्री हन्न सिरि नामन्त्र साम्नी सान्त्री सान्त्री सान्त्री हन्न सिरि नामन्त्री

धेया । द्वितीय पुत्र. पंचाणुद्रतप्रतिपालको नेमिदासः तस्य भार्या विहितानेकधर्मकार्या ग्रुण्सिरि इति प्रसिद्धिः तत्पुत्रौ विरजीविनौ संसार चदराय चदाभिधानौ । ग्रथ साधु केसाकस्य ज्येष्ठा जायाशीलादिग्रुण्रत्नखानिः साध्वी कमलश्री द्वितीयग्रनेकन्नतियमानुष्ठानकारिका परमश्राविकासाध्वी सूवरीनामा तत्तनूज सम्यक्त्वालकृतद्वादगन्नतपालकः । संघपित द्वगराह् । तत्कलत्र नानाशीलविनयादिग्रुण्पात्र साधु लाडी नाम धेय । तयो. सुतो देवपूजादिपट्क्रिया कमिलनीविकासन्तेकमार्तंण्डोपमो जिनदास तन्महिलाधर्मकर्मिठ कर्म श्रीरितनाम । एतेषा मध्येसंघपित रूलहाख्य भार्या जही नाम्ना निजपुत्र शाितदासनेमिदासयो न्योपार्जितवित्तेन इदं श्री धर्मसग्रह पुस्तकपंचकं पंडितश्रीमीहाख्यस्योपदेगेन प्रथमतो लोके श्रवर्तनार्थं लिखापितं भव्याना पठनाय । निजज्ञानावरण्यकर्मक्षयार्थं ग्राचन्द्राक्कंदिनदतान् ।

७८४. प्रति सं०२। पत्र स०६३। ले० काल ×। वे० स० ३४५। क भण्डार।
७८४. प्रति सं०३। पत्र स० ७०। ले० काल स०१७६६। वे० स०३४२। इन् भण्डार।
७८६. प्रति सं०४। पत्र स०६३। ले० काल स०१८६६ चैत सुदी १२। वे० सं०१७२। च भण्डार।
७८७. प्रति सं०४। पत्र स०४६ से ५५। ले० काल सं०१६४२ वैशाख सुदी ३। वे० सं०१७३।
च भण्डार।

७८८ प्रति सं० ६। पत्र स० ७८। ले० काल सं० १८५६ माघ सुदी ३। वे० सं० १०८। छ भंडार। विशेष-भवतराम के शिष्य संपतिराम हरिवशदास ने प्रतिलिपि करवाई।

अन्ह धर्मसंग्रहश्रावकाचार""। पत्र सं० ६६। ग्रा० ११३×४३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-आवक धर्म । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २०३४ । स्त्र भण्डार ।

विशेप--प्रति दीमक ने खा ली है।

७६०. धर्मसंग्रहश्रावकाचार" " । पत्र सं० २ से २७ । ग्रा० १२×५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय- श्रावक धर्म । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वै० स० ३४१ । इ भण्डार ।

७६१. धर्मशास्त्रप्रदीप '। पत्र स० २३ । ग्रा० ९४४ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र० काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० स० १४६९ । ग्रा भण्डार ।

७६२ धर्मसरोवर—जोधराज गोदीका। पत्र स० ३६। आ० ११३×७३ इख । भाषा-हिन्दी। विषय-धर्मियदेश। र० काल सं० १७२४ आपाढ सुदी ऽऽ। ले० काल सं० १६४७। पूर्ण। वै० सं० ३३४। क भंडार विशेष—नागवढ, धनुपबढ़ तथा चक्रबढ़ किताओं के चित्र है। प्रति सं० २ के आधार से रचना संवत् है ७६३. प्रति सं० २। ले० काल सं० १७२७ कार्त्तिक सुदी ए। वै० स० ३४४। क भण्डार। विशेष—प्रतिलिपि सागानेर में हुई थी।

७६४. धर्मसार--पं शिरोमिणिदास । पत्र स० ३१ । ग्रा० १३४७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल सं० १७३२ वैशास सुदी ३ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० स० १०४० । त्र्य भण्डार ।

७६४. प्रति सं०२। पत्र स०४७ । ले० काल स०१८८५ फागुग् बुदी ५। वे० सं०४६। त

विशेप-श्री शिवलालजी साह ने सवाई माधोपुर मे सोनपाल भीसा से प्रतिलिपि करवाई।

७६६ धर्मामृतसूरिकसंग्रह—न्त्राशाधर । पत्र स०६५ । ग्रा०११४४५ दञ्ज । भाषा–संस्कृत । विषत्र– ग्राचारएव धर्म । र० काल सं०१२६६ । ले० काल स०१७४७ ग्रासोज बुदी २ । पूर्ण । वे० स०२६५ ।

विशेप—संवत् १७४७ वर्षे श्रासीज सुदी २ बुधवासरे श्रय द्वितीय मागरधर्म्म स्काय पद्यान्यतपट्मप्तव्य-धिकानि चत्त्वारिशकानि ॥४७६ ॥ छ ॥

ग्रंतमहुत्तमब्लेपी रम मुख्यि सिमापन्ता ।।

हुति ग्रसस्य जीवानिद्दिग सन्वदरसी ।। दुग्धा गाया ।।

सगर कह मिथीमूगचरोगमसू कम्मासं।

एव सन्त्रं विदलं वज्जोपन्वापयत्रेगा ।। १ ।।

विदल जी भी पछा मुहं च पत्त च दोविधो विज्जा ।

ग्रहवावि ग्रत्र पत्तो भु जिज्जं गोरमाईय ।। २ ।।

इति विदल गाथा ॥ श्री ॥

रचना का नाम 'धर्मामृत' है। यह दो भागो मे विभक्त है। एक सागाधर्मामृन तथा दूसरा ग्रनागार धर्मामृत। ७६७ धर्मोपदेशपीयूपश्रावकाचार—सिंहनदि । पत्र मं० ३६ । ग्रा० १०३४४३ डखा। भाषा-सम्कृत । विषय-ग्राचार शास्त्र । र० काल ४ । ले० काल सं० १७५५ माघ मुदी १३ । पूर्गा । वे० मं० ४८ । घ भण्डार ।

७६८ धर्मोपदेशश्रावकाचार—श्रमोघवर्ष। पत्र स० ३३। ग्रा० १०५४ इञ्च। भाषा-मंन्द्रत। विषय-ग्राचार गास्त्र। र० काल 🗙 । ले० काल स० १७८५ माघ मुदी १३। पूर्ण। वे० मं० ४८। घ भण्डार।

विशेप-कोटा मे प्रतिलिपि की गई थी।

७६६. धर्मोपदेशश्रावकाचार—ब्रह्म नेमिटत्त । पत्र स० २६ । प्रा०१०×४३ डब्च । भाषा-मंन्कृत । विषय-ग्राचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० २४५ । छ भण्डार । ग्रन्तिम पत्र नही है ।

५००. प्रति स०२। पत्र स०१५। ले० काल सं०१६६ ज्येष्ठ मुदो ३। वे० सं० ५०। ज भण्डार। विशेष—भवानीचन्द ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

प्ता प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० २३ । वा भण्डार ।

= -2. धर्मीपदेशश्रावकाचार = -1 पत्र सं० २६। ग्रा० ६= -1 प्राचार शास्त्र । र० काल \times । ले० काल \times । ग्रपूर्ण । वे० सं० १७४ ।

विशेप---प्रति प्राचीन है।

प्रवेशसंग्रह—सेवाराम साह। पत्र सं० २१८। ग्रा० १२४८ इख्र । भाषा-हिन्दो। विषय-धर्म। र० काल स० १८५८। ले० काल ४ | वे० स० ३४३।

विशेष --- ग्रन्थ रचना सं० १८५८ मे हुई किन्तु कुछ ग्रश स० १८६१ मे पूर्ण हुग्रा। ५०४ प्रति सं० २। पत्र सं० १६०। ले० काल ×। वे० स० ५६७। च भण्डार। ५०४. प्रति सं० ३। पत्र स० २७६। ले० काल ×। वे० सं० १८६५। ट भण्डार। म०६. **तरकदुःखत्ररात--भूधरदाम । पत्र** सं०३। म्रा० १२×५३ इख्र । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-नरक के दुखो का वर्रान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ग । वे० सं०३६४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-भूधर कृत पार्श्वपुराए। मे से है।

=co .प्रति सं०२। पत्र सं०१०। ले० काल ×। वे० सं० ६६६। ऋ भण्डार।

८०८. सर्कवर्योन ""। पत्र सं० ६ । ग्रा० १०३ \times ५ ६ख्र । भाषा—हिन्दी । विषय—नरको का वर्यान । र० काल \times । ले० काल सं० १८७६ । पूर्या । वे० स० ६०० । च भण्डार ।

विशेष-सदासुख कासलीवाल ने प्रतिलिपि की ।

्रावको का ग्राचार वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १६१२ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ६४ । स्त्र भण्डार

विशेष—श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे खंडेलवाल गोत्र वाली बाई तील्ह् ने श्री ग्रार्थिका विनय श्री को भेट किया। प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६१२ वर्षे वैशाख सुदी ११ दिने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे वलात्कार-गगो श्रीकु दकु दाचार्यान्वये मट्टारक श्री पद्मनंदि देवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्-शिष्य मण्डलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तत्शिप्यमण्डलाचार्य श्री लिलतकीर्तिदेवा तदाम्नाये खंढेलवालान्वये सोनी गोत्रे वार्ड तोल्ह् इदं शास्त्रं नवकारे श्रावकाचारं ज्ञानावरणी कर्मक्षयं निमित्त ग्रर्जिका विनैसिरीए दत्तं।

प्तरिट नेष्टोदिष्ट"" । पत्र सं० ३। आ० ५×५ इखा भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र० काल ×। ते काल ×। पूर्ण । वे० सं० ११३३ । श्र भण्डार ।

प्तर्शः निजामिंशि — व्र० जिनदासः । पत्र सं०२। ग्रा० ५×४ इख्रः । भाषा —हिन्दी । विषय —धर्मः । र० काल × । ते० काल × । पूर्णः । वे० सं०३६ । क भण्डारः ।

प्तर. नित्यकृत्यवर्शनः । पत्र सं०१२। श्रा०१२×५३ दश्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म। र० रकाल ×। पूर्ण । वे० सं०३५८। ङ भण्डार ।

८९३. प्रति सं०२। पत्र स०६। ले० काल ×। वे० सं०३५६। ड भण्डार।

द्धार निर्माल्यदोषवर्णन—बा० दुलीचन्द्। पत्र सं० ६। ग्रा० १०३×६३ भाषा–हिन्दी। विषय— श्रावक धर्म वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० सं० ३८१। क भण्डार।

न्१४. निर्वाणप्रकरण्णा पत्र सं ६२। ग्रा० ६३४८६३ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । त्रिषय-धर्म । र० काल ४। ले० काल सं० १८६६ वैशाख बुदी ७। पूर्ण । वे० सं० २३१। ज भण्डार ।

विशेप--गुटका साइज मे है। यह जैनेतर ग्रन्थ है तथा इसमे २६ सर्ग है।

प्रद. निर्वाणमोदकनिर्णय—नेमिदास । पत्र सं० ११ । आ० ११३×७३ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-महावीर-निर्वाण के समय का निर्णय । र० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० ६७ । ख भण्डार ।

प्रश्चिप्रमेष्ठीगुण्""। पत्र सं० ४ । ग्रा० ७४५२ दञ्च । भाषा-हिन्दी । विथय-धर्म । र० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० १३२० । श्र भण्डार ।

दश्द, पंचपरमेष्ठीगुग्वर्णन—ढालूराम। पत्र मं० ७३ । श्रा० ४३×४३ । भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-ग्ररिहत, सिद्ध, श्राचार्य, उपाध्याय एवं सर्व साधु पंच परमेष्ठियों के ग्रुणों का वर्णन। र० काल सं० १६६५ फाग्रुग् सुदी १०। ले० काल सं० १६६६ श्राषाढ बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० १७। भा भण्डार।

विशेप-६०वें पत्र से द्वादशानुप्रेक्षा भाषा है ।

प्तरह. पद्मनंदिपंचर्विशतिका—पद्मनंदि । पत्र सं० ५ से ५३ । ग्रा० १२३×५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १५६६ चैत सुदी १० । ग्रपूर्ण । वे० सं० १६७१ । ग्रा भण्डार ।

विशेष-लेखक प्रशस्ति श्रपूर्ण है किन्तु निम्न प्रकार है-- '

श्री धर्म वन्द्रास्तदाम्नाये वैद्य गोत्रे खडेलवालान्वये रामसरिवास्तव्ये राव श्री जगमाल राज्यप्रवर्त्तमाने साह सोनपाल

प्तरः प्रति सं०२। पत्र स०१२६ । ले० काल सं०१५७० ज्येष्ठ सुदी प्रतिपदा। वे० स०२४५। स्त्र भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है—सवत् १५७० वर्षे ज्येष्ठ सुदी १ रवी थी मूलसंघे वलात्करगणे सरस्वती गच्छे श्री कु दकु दाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्तिस्त्विखण्य भ० भुवनकीर्तिस्त्विखण्य भ० श्री ज्ञानभूपण तिच्छप्य ब्रह्म तेजसा पठनार्थ । देखुलि ग्रामे वास्तव्ये व्या० शवदासेन लिखिता । शुभं भवत् ।

विषय सूची पर "स० १६८५ वर्षे" लिखा है।

द्रश. प्रति सं०३ । पत्र सं०६ । ले० काल × । वे० सं० ५२ । स्त्र भण्डार ।

द्भर. प्रति सं० ४। पत्र स० ६०। ले० काल सं० १८७२। वे० सं० ४२२। क भण्डार।

म्२३ प्रति सं०४। पत्र स०१५१। ले० काल ४। वे० सं०४२०। का भण्डार।

दर्थ. प्रति सं० ६। पत्र सं० ५१। ले० काल ×। वे० सं० ४२१। क भण्डार।

विशेप--प्रति सस्कृत टीका सहित है।

न्द्र. प्रति सं०७। पत्र स० प्र६। ले० काल स० १७४८ माघ सुदी ४। वे० स० १०२। ख भण्डार।

विशेप--भट्ट बल्लभ ने अवती मे प्रतिलिपि की थी । ब्रह्मचर्याष्ट्रक तक पूर्ग ।

पर्द प्रति सं प्राप्त स० १३६। ले० काल स० १५७८ माच सुदी २। वे० स० १०३। ख

प्रशस्ति निम्नप्रकार है— सवत् १५७८ माघ सुदी २ वुधे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगरो श्री कुदर्कुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनिद देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्तिदेवास्त स्त्रातृ श्राचार्य श्री ज्ञानकीर्तिदेवास्तत्विद्धय श्राचार्य श्री ज्ञानकीर्तिदेवास्तत्विद्धय श्राचार्य श्री ज्ञानकीर्तिदेवास्तत्विद्धय श्राचार्य श्री ज्ञानकीर्तिदेवास्तविद्धय श्राचार्य श्री ज्ञानकीर्तिदेवास्तव्धित्य श्राचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवास्तिच्छित्य श्राचार्य श्री यद्यानिह उपदेवान् हूबड

ज्ञातीय बागड़देशे सागवाड़ शुभस्याने श्री ग्रादिनाथ चैत्यालये हूंबड ज्ञातीय गाधी श्री पोपट भार्या धर्मादेस्तयोःसुत गाधी रामा भार्या रामादे सुत हू गर भार्या दाडिमदे ताभ्या स्वज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थं लिखाप्य इयं पचिंवरातिका दत्ता।

प्तरि सं ६ । पत्र सं ० २८८ । ले० काल स० १६३८ ग्रापाढ सुदी ६ । वे० सं ० ५४ । घ भण्डार विशेष—वैराठ नगर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

प्तरप्त. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४१८ । स अण्डार ।

प्ति सं० ११। पत्र स० ५१ से १४६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४१६। इन भण्डार।

द्ध प्रति सं १२ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । अपूर्या । वे० स० ४२० । ड भण्डार ।

द्भर. प्रति सं० १३। पत्र सं० ८१। ले० काल ×। प्रपूर्ण । वे० सं० ४२१। ड भण्डार।

प्रदेर. प्रति सं० १४। पत्र सं० १३१। ले० काल स १६८२ पौष बुदी १०। वै० सं० २६०। ज भण्डार

विशेष--कही कही कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये है।

द्वेर. प्रति सं०१४ । पत्र स०१६८ । ले० काल स०१७३२ सावरा सुदी ६ । वे० सं०४६ । व्य सण्डार।

विशेप-पडित मनोहरदास ने प्रतिलिपि कराई ।

न्देश्व. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १३७ । ले० कृाल सं० १७३५ कार्तिक सुदी ११ । वे० स० १०५ । अ भण्डार ।

प्तरेश. प्रति सं० १७। पत्र स० ७८। ले० काल ×। वे० सं० २९४। व्य भण्डार। विशेष—प्रति सामान्य संस्कृत टीका सहित है।

परेंद. प्रति सं० १८। पत्र स० ५८। ले० काल स० १५८५ बैशाख सुदी १। वे० सं० २१२०। ट भण्डार।

. विशेष—१५६५ वर्षे वैशाख सुदी १५ सोमवारे श्री काष्टासघे मात्रार्णके (माथुरान्वे) पुष्करगरो भट्टारक श्री हेमचन्द्रदेव । तत् "" "।

प्तरे७. पदानंदिपंचिंशतिटीका" "। पत्र स० २०० । ग्रा० १३×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल स० १६५० भादवा बुदी ३ । ग्रपूर्ण । वे० सं० ४२३ । क भण्डार ।

। विशेप---प्रारम्भ के ५१ पृष्ठ नहीं है।

á

16

1

महन. पद्मनिद्पिचीसीसापा—जगतराय । पत्र स० १८० । ग्रा० ११३×५६ इख । भाषा-हिन्दी पद्य । र० काल स० १७२२ फाग्रुगा सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१६ । क भण्डार ।

विशेप--ग्रन्थ रचना ग्रीरङ्गजेव के शासनकाल मे श्रागरे मे हुई थी।

म३६ प्रति सं०२। पत्र स० १७१। र० काल सं० १७५=। वे० सं० २६२। ञ भण्डार। विभेप—प्रति सुन्दर है। ८४०. पद्मनंदिपश्चीमीभाषा—मन्नालाल खिन्दूका। पत्र सं० ६४१। ग्रा० १३×८ई डब्र । भाषा— हिन्दी गद्य । विर्धय-धर्म । र० काल सं० १९१५ मंगसिर बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४१६ । क भण्डार

विशेष—डम ग्रन्थ की वचिनका लिखना ज्ञानचन्द्रजी के पुत्र जाहरीलालजी ने प्रारम्भ की थी। 'मिड स्तुति' तक लिखने के पश्चात् ग्रन्थकार की मृत्यु होगई। पुन मन्नालाल ने ग्रन्थ पूर्ण किया। रचनाकाल प्रति सं० ३ के ग्राधार में लिखा गया है।

८४१. प्रति सं०२। पत्र स० ४१७। ले० काल ×। वे० स० ४१७। क भण्डार।

प्रश्र प्रति सं०३। पत्र म०३५७ । ले० काल सं०१६४४ चैत बुदी ३। वे० सं०४१७। ड भण्डार।

म्४३. पद्मनिद्विसीभाषा "" । पत्र सं० ६७ । म्रा० ११×७ ई इख्र । भाषा-हिन्दा । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० मं० ४१ म । क भण्डार ।

प्रथ. पद्मनंदिश्रावकाचार-पद्मनंदि । पत्र सं० ४ से ५३। ग्रा० ११६×५६ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्राचार ज्ञास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६१३। ग्रपूर्ण । वै० स० ४२८ । इह भण्डार

८४४. प्रति सं०२। पत्र सं०१० से ६६। ले० काल ४। श्रपूर्ण। वे० सं०२१७०। ट भण्डार। ८४६. परीषह्वर्णन ""। पत्र सं०६। ग्रा०१०३४४ इख्र। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र०

काल X । ले० काल X | पूर्या । वे० सं० ४४१ | ड भण्डार ।

विशेष—स्तीत्र ग्रादि का संग्रह भी है।

८४७ पुच्छीसेया "" । पत्र सं० २। आ० १०×४ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल ×। वे० सं० १२७० । पूर्ण । स्र भण्डार ।

प्रद. पुरूपार्थसिद्ध यूपाय—अमृतचन्द्राचार्थ । पत्र स० १६ । आ० १३ र्४ दे इख्र । भाषा-संस्कृत विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १७०७ मगसिर सुदी ३ । वे० सं० ५३ । श्र भण्डार ।

विशेष--- प्राचार्य कनकर्कीति के शिष्य सदाराम ने फाग्रईपुर मे प्रतिलिपि की थी।

प्रथ£. प्रति स०२ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । । वे० सं० ५५ 1 छ भण्डार ।

न्४०. प्रति सं० ३। पत्र स० ५६। ले० काल सं० १८३२। वे० स० १७८। आ भण्डार ।

प्रति सं० ४। पत्र सं० २८। ले० काल मं० १६३४। वे० सं० ४७१। क भण्डारं।

विशेष--श्लोको के ऊपर नीचे संस्कृत टीका भी है।

म्×२. प्रति सं० ४,। पत्र स० म। ले० काल ×। वे० सं० ४७२। इङ भण्डार ।

प्रथ. प्रति सं० ६ । पत्र स० १४ । ले॰ काल X । वे॰ सं० ६७ । छ भण्डार ।

विशेष-प्रिति प्राचीन है। ग्रन्थ का दूसरा नाम जिन प्रवचन रहस्य भी दिया हुआ है।

प्रश्न. प्रति सं०७। पत्र सं०३६। ले० काल सं०१८९७ भादवा बुदी १३। वे० सं०६८। छ। भण्डार।

विगेप---प्रति टन्वा टीका सहित है तथा जयपुर मे लिखी गई थी।

प्रथ. प्रति सं० पा पत्र स० १०। ले० काल × | वे० सं० ३३१। ज भण्डार।

प्रम्, पुरूपार्थिसिद्ध युपायभाषा—पं टोडरमल । पत्र स० ६७ । ग्रा० ११ई ४५ इख्र । भाषा— हिन्दी । त्रिपय-धम । र० काल सं० १८२७ । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ४०५ । स्र भण्डार ।

= ५७ प्रति स०२। पत्र स०१०५। ले० काल स०१९५२। वे० सं०४७३। ड भण्डार।

म्थ्र प्रति सं०३। पत्र स०१४६। ले० काल स० १६२७ मगसिर मुदी २। वे० स०११६। भा

प्रह. पुरूपार्थसिद्ध चुपायभाषा — भूधरदास । पत्र स० ११६। म्रा० ११५० इख्र । भाषा — हिन्दी । विषय – धर्म । र० काल सं० १८०१ भादवा सुदी १० । ले० काल स० १९५२ । पूर्ण । वे० स० ४७३ । क

प्रकृतार्थसिद्ध-युपाय वचितिका—भूधर मिश्र । पत्र मं० १३६ । म्रा० १३४७ इख्र । भाषा— हिन्दी । त्रिषय—धर्म । र० काल सं० १८७१ । ले० काल ४ । पूर्ण । ते० स० ४७२ । क भण्डार ।

प्रहरार्थानुशासन-श्री गोविन्द् भट्ट। पत्र स० ३८ से ६७। ग्रा० १०४६ डखा। भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म। र० काल ४। ले० काल सं० १८५३ भादवा बुदी ११। ग्रपूर्ण। वे० सं० ४५। ऋ भण्डार।

विशेष-प्रशस्ति विस्तृत दी हुई है। श्योजीराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी।

म्६२. प्रति सं०२।पत्र सं०७६। ले० काल ×।वे० सं०१७६। ऋ भण्डार।

=६३. प्रति सं०३।पत्र सं०७१। ले० काल ४। ने० स०४७०। क भण्डार।

्र प्रितक्रमण् '' । पत्र स० १३ । ग्रा० १२×५ई इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-किये हुये दोषो की ग्रालोचना । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० २३१ । च भण्डार ।

द६४. प्रति सं०२। पत्र सं०१३। ले० काल ×। श्रपूर्ण। वे० सं०२३२। च भण्डार।

प्रतिक्रमण् पाठ "" । पत्र सं० २६। ग्रा० ६×६५ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय किये हुये दोषो की ग्रालोचना र० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० मं० ३२ । ज भण्डार ।

म्द७. प्रतिक्रमण्सूत्र" "। पत्र सं० ६। ग्रा० ६×६ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-विधे हुये दोषो की ग्रालोचना । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६८ । श्र भण्डार ।

प्रतिक्रमग्रा । पत्र स० २ से १८ । ग्रा० ११४५ इख्र । भाषा—सस्कृत । विषय—िकये हुये दोषो की ग्रालोचना । र० काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० सं० २०६६ । ट भण्डार ।

प्द शतिक्रमण्सूत्र—(वृत्ति सहित) । पत्र सं० २२। आ० १२×४ देखा भाषा-प्राकृत संस्कृत । विषय किये हुए दोषो की आलोचना । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । च भण्डार ।

प्रक्रिमा उत्थापक कूं उपदेश—जगरूप । पत्र ग० ४७ । गा० ६×४ ८: । नापार्न, ची । विषय-धर्म । र० काल × । ले० वास म० १८२४ । पूर्ण । वे० ग० ११२ । या नण्यार ।

विभेष--श्रीरङ्गाबाद मे रचना नी गयी यी।

मध्य प्रत्याख्यानः । पत्र त० १। त्या० १०%८; इक्ष । भाषा-प्राप्त । विषय-पर्म । रः काल × । ले० काल × । पूर्श । ते० सं० १७७२ । ट भण्यार ।

= ५२ प्रश्नोत्तरश्रावकाचार । पत्र २० २४ । या ११४८ टक्का भागा-सर्जन । कि न-माना नाम्य । र० नाम ४ । ने० कान ४ । श्राणी । वे० न० १६१८ । ट भण्डार ।

विशेष--प्रति हिन्दी व्याख्या सहित है ।

६७३. प्रश्नोत्तरश्रावकाचारभाषा—बुलाकीयाम । पत्र २०१६६ । धार ११८१ - द्व । भाषा— हिन्दी १४ । विषय-मावार द्वारत । र० का १०१७ वैशाय मुदी २ । वे १ गा मरु १६६८ । भिर हुई १६ । वै० तं ६२ । म भण्डार ।

विशेष—स्योलातजी वे पुत्र हाजूलालजी साह ने अतिसिषि यस्यो । इस प्रत्य या े भाग व्यानाना तथा ने वा ने या ने भाग प्रतानाना स्व

'तीन हिस्ते या गन्य को भन्न जहानभ्याद । चौबाई जलपब विधै बीतराच पानाद ॥'

८७४. प्रति सं०२। पत्र स० ५६। ते० वाल म० १८८४ नात्रम् सुदी १। वे० ६० ६६। स भणार। विभेष--- स्वोलालजी साह ने सत्राई मानोपुर में प्रतितिषि गरागर चीवरियों वे मन्दिर गर्य गण्या।

८७४ प्रति स० ३। पत्र न० १४०। ले० काल स० १८६८ चैत्र गुर्दी ४। दे० ग० ४२१। उ भण्डार.।

विशेष—स० १८२६ फाग्रुस सुदी १३ को वयतराम गाधा ने प्रतिलिशि शिश्री गाँउमी प्रति ने इस की नवल उतारी गई है। महात्मा सीताराम के प्रय लालचन्द ने उमकी प्रतिलिशि शि।

म७६. प्रति सः ४। पत्र स० २१। ने० कान 🗴 । ने० स० ६४८ । अपूर्ण । 🖘 भारार ।

=७७. प्रति सं०४। पत्र स० १०५। ले० काल म० १९६६ माघ नुदी १२। ने० म० १६१। नु

। नअन. प्रति सं ६। पत्र स० १२०। ते० काल म० १८८३ पीप बुदी १८। ने० म० १६। म्ह भण्डार।

न्धः. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० ३४८ । गा० १२ प्र इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—प्राचार शास्त्र । र० काल स० १६३१ पीप बुदी १४ । ले० काल न० १६३८ । पूर्ण । वै० न० ५१८ । क भण्डार ।

and प्रति संव र । पन में ४०० । लेव काल सव १६३६ । वेव सव ५१५ । क भण्यार ।

प्रति सं० ३ । पत्र स० २३१ से ४६० । ले० काल × । ग्रपूर्ग । वे० स० ६४६ । च भण्डार ।

प्रतोत्तरश्रावकाचार " । पत्र सं० ३३ । ग्रा० ११३×५ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय
ग्राचार जास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १८३२ । पूर्ग । वे० स० ११६ । ख भण्डार ।

विशेष-ग्राचार्य राजकीति ने प्रतिलिपि की थी ।

८८३. प्रतिं स०२। पत्र स०१३०। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० सं०६४७। च भण्डार। ८८४. प्रति स०३। पत्र स०३००। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० स०५८६। ड भण्डार। - ८८४. प्रति सं०४। पत्र स०३००। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० सं०५१६। ड भण्डार।

प्रशस्ति—सवत् १६६५ वर्षे फागुण् मुदी १० सोमे खिराडदेशे पनवाडनगरे श्री चन्द्रप्रमचैत्यालये श्री वाष्ट्रामचे नदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री राममेनान्वये भ० श्रीलक्ष्मीसेनदेवास्तत्पट्टो भ० श्री भीमसेनदेवास्तत्पट्टो भ० श्री सोमकीत्तिदेवास्तत्पट्टो भ० श्री विजयमेनदेवास्तत्पट्टो श्रीमदुदयमेनदेवा भ० श्री त्रिभुवनकीत्तिदेवास्तत्पट्टो भ० श्री रत्नभूपण्देवास्तत्पट्टाभरण् भ० जयकीत्तिस्तिच्छण्योपाध्याय श्री वीरचन्द्र लिखितं ।

प्रति मं २ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १६६६ पौष सुदी १ । वे० सं० १७४ । स्र भण्डार ।

प्रात सः ३। पत्र स० ११७। ले॰ काल स० १८८१ मगिसर सुदी ११। वे॰ स० १९७। ऋ भण्डार।

विशेष—महाराजाधिराज सवाई जयसिंहजी के शासनकाल में जैतराम साह के पुत्र क्योजीलाल की भार्या ने प्रतिलिपि कराई। गन्थ की प्रतिलिपि जयपुर में अवावती (आमेर) बाचार में स्थित आदिनाथ चैत्यालय के नीचे जिती ननसागर के शिष्त्र मन्नालाल के यहां सवाईराम गोधा ने की थी। यह प्रति जैतरामजी के घड़ों में (१२वें दिन पर) श्योजीरामजी ने पाटोदी के मन्दिर में स० १८६३ में भेंट की।

प्पटः प्रति स ४ पत्र स॰ १२४। ले॰ काल सं॰ १६००। वे॰ स॰ २१७। ऋ भण्डार।
प्रदः प्रति सं॰ ४। पत्र स॰ २१६। ले॰ काल स॰ १६७६ ग्रासोज बुदी ४। वे॰ सं॰ २११। ऋ

विशेस-नानू गोधा ने प्रतिलिपि कराई थी।

भण्डार ।

प्रशस्ति—सवत् १६७६ वर्षं ग्रासोज विद जनिवासरे रोहगी नक्षत्रे मोजाबादनगरे राज्यश्रीराजाभाविसध राज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसवे नेद्याम्नाये वलात्कारगर्गो सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुँदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपदानिददेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीग्रुभचन्द्रदेवातत्पट्टे भट्टारंकश्रीजिनचन्द्रदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीचन्द्रकीित्ततत्पट्टे भट्टारकश्रीवेवेन्द्रकीित्तस्तदाम्नाये गोधा गोत्रे जाचक-जनसदोहकर्त्पवृक्ष श्रावकाचारचरग्-निरत-चित साह श्री धनराज तद्भार्या सीलतोय-तरिङ्गणी विनय-वागेव्वरी धनमिरि तयो पुत्रा त्रय प्रथमपुत्रवर्मधुरावरण धीरमाह श्री स्या तद्भार्या दानसीलग्रुणभूष्यणभूषितगात्रानाम्ना गूजरि तथो पुत्र राजमभा २७ गारहारस्वप्रनारदिनकरमुकुलिग्रनगत्रुमुप्रगुमुदा-कर स्वज • निसाकरम्राह्मादित कुवलयदानगुण् म्रल्वीकृतकल्पपादप श्री पचपरमेष्टिचिनन पवित्रितचित्त सम्नगुणि-जनविश्वामस्थान साह श्री नानूतन्मनोरमा पच प्रथमनारगदे द्वितीया हरखमदे तृतीया मुजानदे चतुर्था सलालदे पंचम भार्या लाडी । हरखमदेजनितपूत्रा: त्रय स्वकूलनामप्रकाशनैकचन्द्रा प्रथम पुत्र माह ग्राशवर्गा तद्वार्या ग्रहकारदेपुत्र नाथु । दुतीभार्यालाङमदे पुत्र केसवदास भार्या कपूरदे द्वितीय पुत्र चि० लूग्।करग्। भार्या द्वे प्रथमललतादे पुत्र रामकर्ग। द्वितीय लाडमदे । तृतीय पुत्र चि० वलिकर्ण भार्या वालमदे । चतुर्थ पुत्र चि० पूर्णमल भार्या पुरवदे । साह धनराज द्विती पुत्र साह श्रो जोधा तद्भार्या जौगादेतयो पुत्रास्त्रय. प्रथमपुत्रधार्मिक साह करमचन्द तद्भार्या सोहागदे तयो पुत्र चि० दयालदास भार्या दाडमदे । द्वितीपुत्र साह धर्मदास तन्द्वार्याह्रे । प्रथम भार्या धारादे द्वितीय भार्या लाडमदे तयो पुत्र साह इ'गरसी तद्भार्या दाहिमदे तत्पुत्री हो। प्र० पु० लक्ष्मीदास हि० पुत्र चि० तुलसीदास। जोवा नृताय पुत्र जिराचरराकमल-मध्य साह पदार्थ तद्भार्या हमीरदे । साह धनराज तृतीय पुत्र दानग्रुए।श्रेयासमकल जनानन्दकारकम्बवचनप्रतिपालन-समर्थसर्वोपकारकसाहश्रीरतनसी तद्भार्या है प्रथम भार्या रत्नादे हितीय भार्या नीलादे तयो पुत्राश्चन्त्रार प्रथम पुत क्षुपाल तद्भार्या सुप्यारदे तयो पुत्र चि॰ भोजराज तद्भार्या भावलदे । श्रीरतनमी द्वितीय पुत्र साह गेगराज तद्भार्या गीरादे तयोपुत्रा त्रय प्रथम पुत्र चि॰ सादू ल द्वि॰ पुत्र चि॰ मिघा तृतीय पुत्र चि॰ मलहदी । साह रतनसी तृतीय पुत्र साह भरथा तद्भार्या भावलदे चतुर्थ पुत्र चि० परवत तद्भार्या पाटमदे । एतेपा मध्ये सिघवी श्री नामू भार्या प्रथम नारगदे । भट्टार्कश्रीचन्द्रकीत्ति शिष्य ग्रा० श्री शुभचन्द्र इद शास्त्रं व्रतनिमित्त घटापित कर्मक्षयनिमित्त । ज्ञानवान ज्ञानदाने ****

मध् प्रति सं०६। पत्र स० ४६ मे १६४। ले० काल ×। अपूर्गा। वे० स० १६८३। स्त्र भण्डार।
मध्य प्रति सं०७। पत्र स० १३०। ले० काल स० १८६२। अपूर्गा। वे० स० १०१६। स्त्र भण्डार।
विशेप—प्रशस्ति अपूर्ग है। बीच के कुछ पत्र नहीं है। प∙ केशरीसिंह के शिष्य लालचन्द ने महान्मा
शभुराम से सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि करायी।

प्रदेश प्रति सं० मा पत्र सं० १६५ । ले० काल स० १६ म २ वे० स० ५१६ । क भण्डार ।
म्ह४. प्रति सं० ६ । पत्र स० म १ । ले० काल स० १६५ । वे० स० ५२० । क भण्डार ।
मह४. प्रति स० १० । पत्र स० २२१ । ले० काल स० १६७७ पीप मुदी । वे० स० ५१७ । क भण्डार ।

न्ध्द. प्रति सं० ११। पत्र स० ११०। ले० काल स० १८८ । वे० सं० ११४। ख भण्डार। विशेष—प० रूपचन्द ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

म्हर्फ. प्रति सं० १२ । पत्र स० ११६ | ले० काल × | वे० स० ६४ | ख भण्डार |
म्हर्म. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २ से २६ | ले० काल × | अपूर्ण | वे० स० ५१७ | ड भण्डार |
म्हर्म. प्रति सं० १४ | पत्र सं० ६६ | ले० काल × | अपूर्ण । वे० स० ५१७ | ड भण्डार |
म्हर्म प्रति स० १४ | पत्र स० १२६ | ले० काल × | वे० सं० ५२० | ड भण्डार |

१८०१. प्रति सं० १६। पत्र स० १४५। ले० काल 🗶 । वे० सं० १०६ । छ भण्डार । विकास अपित प्राचीन है । ग्रन्तिम पत्र बाद मे लिखा हुआ है ।

१८२. प्रति सं० १७। पत्र सं० ७३। ले० काल सं० १८५६ माघ सुदी ३ । वे० सं० १०८। छ

६०४. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १७७४ फाग्रुगा बुदी ६ । वे० सं० १०६ । विशेप—पाचीलास मे चातुर्मास योग के समय पं० सोभागविमल ने प्रतिलिपि की थी । स० १६२५ ज्येष्ठ बुदी १४ को महाराजा पृथ्वीसिंह के झासनकाल मे घासीराम छावडा ने सागानेर में गोधो के मन्दिर मे चढाई ।

६०४. प्रति सं० १६ । पत्र स० १६० । ले० काल सं० १८२६ मंगसिर बुदी १४ । वे० सं० ७८ । च्या भण्डार ।

६०४. प्रति स० ६०। पत्र मं० १३२। ले० काल ×। वे० सं० २२३। व्य भण्डार।

६०६ प्रति सं०२१। पत्र सं०१३१। ले० काल सं०१७५६ मंगसिर बुदी ८। वे० स०३०२। विशेष—महात्मा धनराज ने प्रतिलिपि की थी।

ह्ट प्रति सं० २२। पत्र स० १६४। ले० काल स० १६७४ ज्येष्ठ सुदी २ । ते० म० ३७५ । व्य भण्डार।

६०८. प्रति सं०२३। पत्र स०१७१। ले० काल सं०१६८८ पीप सुदी ५। वे० सं०३४३। व्य

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति तदाम्नाये खडेलवालान्वये पहाड्या साह श्री कान्हा इदं पुस्तक लिखापितं । ६०६. प्रति सं० २४ । पत्र स० १३१ । ले० काल × । वे० म० १८७३ । ट भण्डार ।

६१०. प्रश्नोत्तरोद्धार " । पत्र सख्या ५०। ग्रा०-१० रे×५२ इन्च । भाषा-हिन्दी । तिपय-प्राचार जास्त्र । र० काल-× । ले० काल-स० १६०५ सावन बुदी ५। ग्रपूर्ण । ते० सं० १६६ । छ्र भण्डार । विशेष—चूरू नगर मे स्यौजीराम कोठारी ने प्रतिलिपि कराई ।

६१२. प्रशस्तिकाशिका — वालकृत्या । पत्र सख्या १६ । ग्रा० ६३ ४४६ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र० काल—४ । ले० काल—स० १८४२ कार्तिक बुदी ८ । वे० सं० २७८ । छु भण्डार ।

विशेष-बस्तराम के शिष्य शभु ने प्रतिलिपि की थी।

प्रारम्भ—नत्वा गरापित देव सर्व विघ्न विनाशनं ।

ग्रुरु च करुराानाथं ब्रह्मानदाभिघानक ।।१।।

प्रशस्तिकाशिका दिव्या बालकृष्णेन रच्यते ।

सर्वेषामुपकाराय लेखनाय त्रिपाठिना ।। २ ।।

चतुर्गामिप वर्गाना क्रमतः कार्यकारिका ।

लिएयते सर्वेविद्यार्थि प्रबोधाय प्रशस्तिका ।। ३ ।।

यस्या लेखन मात्रेग् विद्याकीर्तिपगोपि च। प्रतिष्ठा लम्यते शीघ्रमनायामेन धीमता ॥ ४ ॥

६१२. प्रातः क्रिया ः । पत्र स०४। ग्रा० १२imes५ इञ्च। भाषा–संस्कृत । विषय–ग्राचार । र० काल- imes। ले० काल- imes। पूर्ण। वे० स०१६१६। ट भण्डार ।

६१३. प्रायश्चित प्रथं । पत्र स०३। ग्रा०१३×६ उन्च। भाषा-सम्कृत। विषय-विये हुए दोषो की ग्रालोचना। र० काल-×। ले० काल-×। ग्रपूर्ण। वे० स०३५२। ग्राभण्डार।

६१४ प्रायश्चित विधि —श्रकलंक देव । पत्र स०१०। ग्रा०६४४ दश्च । भाषा–सस्वृत । विषय–िकये हुए दोषो की ग्रालोचना । र० काल–४ । ले० काल–४ । पूर्ण । वे० स०३५२ । त्र भण्डार ।

६१४ प्रति सं०२। पत्र स०२६। ले० काल-×। वे० स०३५२। स्त्र भण्डार। विशेष —१० पत्र से ग्रागे ग्रन्य ग्रथों के प्रयश्चित पाठों का सग्रह है।

११६. प्रति सं २ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १६३४ चैत्र बुदी १ । वे० स० ११७ । त्व भण्डार । विशेष—प० पन्नालाल ने जोबनेर के मदिर जयपुर प्रांतलिपि की थी ।

६१७ प्रतिसं०४। ले० काल-×। वे० स० ५२३। ड भण्डार।

६१८. प्रति सं० ४। ले० काल-सं० १७४४। वे० स० २४४। च भण्डार।

विशेष--ग्राचार्य महेन्द्रकाति ने मू वावती (ग्रवावती) मे प्रतिलिपि की ।

६१६. प्रति सं० ४। ले० काल-सं० १७६६। वे० स० ८। व्य भण्डार।

विशेष--बगरू नगर मे प० हीरानद के शिष्य प चोखचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

६२० प्रायश्चित विधि । पत्र स० ५६ । ग्रा० ६×४ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—िवये हुए दोषो की ग्रालोचना । र० काल-× । ले० काल स० १८०५ । ग्रपूर्ण । वे० स०—१२८० । ग्रा भण्डार ।

विशेप-२२ वा तथा २६ वा पत्र नही है।

६२१. प्रायश्चित विधि" " । पत्र स० ६ । ग्रा॰ ५ $\frac{3}{2}$ \times ४ $\frac{2}{3}$ डक्क । भाषा—मस्कृत । विषय—िकये हुये दोषो का पश्चाताप । र० काल— \times । ले० काल— \times । पूर्ण । वे० स० १२५१ । ग्रु भण्डार ।

६२२ प्रायश्चित विधि — भ० एकसिंध । पत्र स० ४ । ग्रा० १×४ दे इख्र । भाषा—सस्कृत । विषय— किये हुए दोषो की श्रालोचना । र० काल—४ । ले० काल—४ । पूर्ण । वै० स० ११०७ । त्र्य भण्डार ।

६२३. प्रतिसं०२ । पत्र स०२ । ले० काल—४ । वे० स०२८५ । च भण्डार ।

विगेप--प्रतिष्ठासार का दशम ग्रध्याय है।

६२४. प्रति स० ३। ले० काल स० १७६६। वै० स० ३३। व्य भण्डार।

६२४ प्रायश्चित शास्त्र—इन्द्रनिट । पत्र स०१४ । आ०१०३ ४४ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-विषये हुए दोषो का पश्चाताप । र० काल-४ । ले० काल-४ । पूर्ण । वे० स०१६३ । स्त्र भण्डार ।

६२६. प्रायश्चित शास्त्र ः। पत्र स०६। म्रा०१०४४ दुख्र। भाषा-गुजराती (लिपि

देवनागरी) विषय-किये हुए दोषो को ग्रालोचना र० काल-×। ले० काल-×। ग्रपूर्श । वे० स० १६६८। ट भण्डार।

६२७ प्रायश्चित् समुच्चय टीका — नंदिगुरु। पत्र सं० ८। ग्रा० १२४६। भाषा- सस्कृत । विषय-किये हुए दोषो की ग्रालोचना । र० काल-४। ले० काल-स० १६३४ चैत्र बुदी ११। पूर्ण । वे० स० ११८। ख भण्डार ।

ध्रुप्त प्रोपध दोप वर्णन : । पत्र स० १। ग्रा० १०×५ इख्र । भाषा—हिन्दी । विषय—ग्राचार शास्त्र । र० काल-× । वे० स० १४७ । पूर्ण । छ भण्डार ।

्ट्रिट. बाईस त्र्यभत्त्य वर्णान—वाबा दुलीचन्द्। पत्र स० ३२। ग्रा० १०० ४६० इख्रा भाषा— हिन्दी गद्य । विषय—श्रावको के न खाने योग्यपदार्थों का वर्णान। र० काल−सं० १६४१ वैशाख सुदी ५। ले० काल−४। पूर्णा । वे० सं० ५३२। क भण्डार ।

६३० बाईस त्रभच्य वर्णन ×। पत्र सं०६। ग्रा०१०×७। भाषा-हिन्दी। विषय-श्रावको के न खाने योग्य पदार्थों का वर्णन। र० काल ×। ले० काल। पूर्ण। वे० स० ५३३। ञ भण्डार।

विशेष--प्रति संशोधित है।

- ६३१. बाईस परीपह वर्णन—भूधरदास । पत्र स०६। ग्रा०६×४ इऋ । भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—मुनियो द्वारा सहन किये जाने योग्य परीपहो का वर्णन । र० काल १८ वी जताब्दी । ले० काल ×। पूर्ण। वे० स०६६७। ऋ भण्डार।
- ६३२ वाईस परीपह ' \times । पत्र स० ६ । ग्रा० ६ \times ४। भापा-हिन्दी । विषय-मुनियो के सहने योग्य परीपहो का वर्शन । र० कल \times । ले० काल \times । पूर्श । वे० स० ६६७ । ड भण्डार ।
- ६३३ वालाविवेध (ग्रामोकार पाठ का अर्थ) ×। पत्र स०२। ग्रा० १०×४६। भाषा प्राकृत, हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स०२८६। छ भण्डार।

विशेप--मूनि माशिक्यचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

- ६२४. बुद्धि विलास—वखतराम साह । पत्र स० ७५ । ग्रा० ७४६ । भाषा—हिन्दी । विषय—ग्राधार शास्त्र । र० काल स० १८२७ मगसिर सुदी २ । ले० काल स० १८३२ । पूर्गी । वे० स० १८८१ । ट भण्डार ।
 - ध्रेथ. प्रति सं २२। पत्र स० ७४। ले० काल सं० १८६३। वे० स० १९५५। ट भण्डार। विशेष—बखतराम साह के पुत्र जीवरणराम साह ने प्रतिलिपि की थी।
- ६३६. ब्रह्मचरेव्रत वर्णान : ×। पत्र सं०४। ग्रा० ८×१। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल ×। वे० पूर्ण। वे० स० २३१। मा भण्डार।
- ध्रेष्ठ. बोधसार ×। पत्र स० ३७। ग्रा० १२×५ मापा-हिन्दी विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल स० १६२८। काती सुदी ५। पूर्ण। वे० स० १२५। ख भण्डार।

विशेष---ग्रन्थ बीसपंथ की ग्राम्नाय की मान्यतानुसार है।

- ६३८. भगवद्गीता (कृष्णाजु न संवाद) "X। पत्र म०२२ मे ४६ । ग्रा० ६३ X५ इख्र । भाषा— हिन्दी । विषय—वैदिक साहित्य । र० काल X । ले० काल X । ग्रपूर्ण वै० स० १५६७ । ट भण्डार ।
- ६३६. भगवती स्राराधना—शिवाचार्य। पत्र स० ३२१। ग्रा० ११२४५३ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-मुनि धर्म वर्णन। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण वे स० ५४६। क भण्डार।
 - ६४०. प्रति सं० २ | पत्र सं० ११२ | ले० काल × । वे० स० ५५० । क भण्डार । विशेष—पत्र ६६ तक सस्कृत मे गाथाग्रो के ऊपर पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं ।
 - ६४१. प्रति सं० ३ | पत्र स० १०३ । ले० काल × । वे० स० २५६ च मण्डार । विशेप—प्रारम्भ एव श्रन्तिम पत्र बाद में लिखकर लगाये गये है ।
 - १४२. प्रति सं० ४। २६५। ले० काल ×। वे० सं० २६० च भण्डार। विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये है।
 - १८४३. प्रति सं० ४। पत्र मं० ३१ ले० काल × । स्रपूर्ण । वे० स० ६३ । ज भण्डार । विशेष—कही २ सस्कृत मे टोका भी दी है ।
- ६४४. भगवती त्राराधना टीका—त्रपराजितसूरि श्रीनंदिगण्। पत्र सं० ४३४। ग्रा० १२४६ इञ्च। भाषा-सस्कृत । वियय-मुनि धर्म वर्णन। र० काल ४। ले० काल स० १७६३ माघ बुदी ७ पूर्णं। वे० सं० २७६। त्रा भण्डार।
- १४४. प्रति सं०२। पत्र स०३१४। ले० काल म०१४६७ वैशाख बुदो ६। वे० स०३३१। अप्र भण्डार।
- १४६. भगवती त्राराधना भाषा—पं०सदासुखकासलीवाल। पत्र सं० ६०७। आ० १२६४६३ इस्र । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल सं० १६०८ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० ५४८ । क भण्डार ।
- १८४७. प्रति सं०२ | पत्र स०६३० | ले० काल स०१९४५ माह बुदी १३ | वे० मं० ५६० | इ
- ६४८. प्रतिस०३। पत्र स०७२२। ले० काल स०१६११ जेष्ठ सुदो १।वे सं०६६५।च भण्डार।
- ६४६. प्रति सं०४। पत्र स०५७ से ५१६। ले० काल स० १६२८ त्रैशाख सुदी १०। अपूर्गा। वे० म०२५३। ज भण्डार।
- विशेप—यह ग्रन्थ हीरालालजी वगडा का है । मिती १९४२ माघ सुदी १० को श्राचार्य जी के कर्मदहन वृत के उद्यापन में चढाई ।
 - ६४०. प्रति स० ४ । पत्र स० ५६ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० स० ३०५ । ज भण्डार ।
 - ६४१. प्रति सं०६। पत्र सं०३२५। ले० काल ×। स्रपूर्गा। वे स०१६६७। ट भण्डार।

१४१. भावदीपक — जोधराज गोदीका । पत्र सं० १ से २७७ । आ० १०४५ इझ । भाषा-

हरूर प्रति सं०२। पत्र सं० ५६। ले० काल-सं० १८५७ पौष सुदी १५। ग्रपूर्ण। वे० सं० ६५६। च भण्डार।

६५३. प्रति सं०३ |पत्र सं०१७३ | र० काल × । ले० काल-स०१६०४ कार्तिक सुदी१०। वे० स०२५४ । ज भण्डार |

६४४. भावनासारसंग्रह—चामुण्डराय । पत्र स० ४१ । आ० ११×४३ इख्र । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल-× । ले० काल—सं० १५१६ श्रावण बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १८४ । आ भण्डार् ।

विशेष—संवत् १५१६ वर्षे श्रावरा बुदी ग्रष्टमी सोमवासरे लिखितं बाई धानी कर्मक्षयनिमित्त ।

ह्रप्र. प्रति सं०२।पत्र सं०६४।ले० काल स०१५३१ फाग्रुग्। बुदी 55। वे० स० २११६। ट भण्डार।

ध्र६. प्रति सं०३। पत्र सं० ७४। ले० काल-×। प्रपूर्ण। वे० सं० २१३६। ट भण्डार। विशेप—७४ से आगे के पत्र नहीं है।

६५७. भावसग्रह—देवसेत। पत्र सं० ४६। ग्रा० ११४५ इऋ। भाषा-प्राकृत। विषय-भर्म। र० काल-४। ले० काल-सं० १६०७ फाग्रुग् बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० २३। श्र भण्डार।

विशेष-गृ'थ कर्ता श्री देवसेन श्री विमलसेन के शिष्य थे। प्रशस्ति निम्नप्रकार है:--

संवत् १६०७ वर्षे फाग्रुगा वदि ७ दिने बुधवासरे विशाखानक्षत्रे श्री स्नादिनाथचैत्यालये तक्षकगढ महादुर्गे महाराउ श्री रामचंद्रराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसचे वलात्कारगगो सरस्वतीगच्छे श्री कु दकु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनिददेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा।

ध्यन. प्रति सं०२। पत्र सं०४५। ले० काल-सं०१६०४ भादना सुदी १५। ने० सं०३२६। स्त्र भण्डार।

विशेष----प्रशस्ति निम्नप्रकार है.---

सवत् १६०४ वर्षे भाद्रपद सुदी पूर्िणमातिथौ भौमदिने शतिभपा नाम नक्षत्रे धृतनाम्नियोगे सुरित्रारण सलेमसाहिराज्यप्रवर्त्तमाने सिकदरावादशुभस्थाने श्रीमत्काष्ठासघे माथुरान्वये पुष्करगर्णे भट्टारक श्रीमलयकीर्त्ति देवाः तत्पट्टे भट्टारक श्रीग्रुर्णभद्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्रीभागुकीर्त्ति तस्य शिक्षर्णी वा० मोमा योग्य भावसंग्रहाख्य शास्त्रं प्रदत्त ।

६४६. प्रति स॰ ३। पत्र सं० २८। ले॰ काल-४। वे॰ स० ३२७। ऋ भण्डार।

६६०. प्रति सं०४। पत्र स०४६। ले० काल-सं० १८६४ पौप सुदी १। वेक स० ५५८। क भण्डार।

विशेष--महात्मा राधाकृष्णा ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

, ६६१. प्रति सं० ४ | पत्र सं० ७ से ४५ । ले० काल-सं० १५६४ फागुरा बुदी ५ । ऋपूर्ण । वे० स० २१६३ | ट भण्डार ।

, '- ६६२. प्रति सं०६। पत्र सं०४०। ले० काल-सं०१५७१ प्रपाढ बुदी ११। वे० सं०२१६६। ट भण्डार।

विशेष-प्रशस्ति निम्नप्रकार है'-

संवत् १५७१ वर्षे ग्रापाढ बदि ११ ग्रादित्यवारे पेरोजा साहे । श्री मूलसचे परितिजिगादामेन लियापितं । ६६३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६ । ले० काल-× । ग्रपूर्ण । वै० सं० २१७६ । ट भण्डार । विशेष—६ से ग्रागे पत्र नहीं है ।

६६४. भावसंप्रह—श्रुतमुनि । पत्र स०५६ । आ०१२×५३ डञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-थर्म । र० काल-× । ले० काल-सं०१७६२ । प्रपूर्ण । वै० सं० ३१९ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-वीसवा पत्र नही है।

६६५ प्रति संट २ । पत्र सं० १० । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० स० १३६ । स्व भण्टार ।

६६६. प्रति सं०३। पत्र स० ५६। ले० काल-मं० १७ म । वे० मं० ५६६। इ. भण्डार।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है।

६६७. प्रति सं० ४ | पत्र स० १० । ले० काल~× । ते० मं० १८४१ । ट भण्डार ।

विशेप-कही २ संस्कृत मे ग्रर्थ भी दिये हैं।

, १६८. भावसंत्रह—पं वामदेव। पत्र सं २७। ग्रा १२×१२ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म। रत्नाल-×। लेव काल-सव १८२८। पूर्ण। वेव सव ३१७। स्त्र मण्डार।

६६६. प्रति सं०२ | पत्र मं०१४ । ले० काल-× । ग्रपूर्ण | वे० सं०१३४ । स्र भण्डार ।

विशेष—पं० वामदेव की पूर्ण प्रशस्ति वी हुई है । २ प्रतियो का मिश्रग् हैं । ग्रन्त के पृष्ठ पानी ने भीगे हुये है । प्रति प्राचीन है ।

१८७०. भावसंग्रहः । पत्र मं० १४। ग्रा० ११×५६ इश्च। भाषा-सस्कृत। विषय-धर्म। र० काल-×। ते० काल-×। वे० सं० १३४। ख मण्डार।

विशेष---प्रति प्राचीन है। १४ में ग्रागि पत्र नहीं है।

ध्थशः सनोरथमाला''''''। पत्र सं० १। ग्राव व×४ इख्र। मापा-हिन्दी । विषय-धर्म। रव्काल-×। लेव काल-×। पूर्ण । वेव संव १७०। श्र भण्डार।

६७२. सरकतिवलास—पन्नालाल । पत्र सं० ६१। ग्रा० १२×६६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-श्रावक धर्म वर्शन । र० काल-× । ले० काल-× । ग्रपूर्ण । वे० स० ६६२ । च भण्डार ।

६७३ मिथ्यात्वखडन-वखतराम। पत्र सं० १८। आ० १४×१३ इख्र। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-धर्म। र० काल-स० १८२१ पोप सुदी १। ले० काल-स० १८२२। पूर्ण। वे० सं० १७७। क भण्डार।

धर्म एवं आचार शास्त्र]

- ६७४. प्रति सं०२। पत्र सं०१७०। ले० काल-×। वे० सं०६७। स भण्डार।
- १७४ प्रति सं ३ । पत्र स० ६१ । ले० काल-सं० १८२४ । वे० सं० ६६४ । च भण्डार ।
- १७६. प्रति सं०४। पत्र स०३७ से १०५। ले० काल -×। प्रपूर्श । त्रे० सं०२०३६। ट भण्डार।

विशेष--- प्रारम्भ के ३७ पत्र नहीं है। पत्र फटे हुये है।

१८७. मित्थात्वखंडन" "। पत्र स० १७। ग्रा० ११४५ इख्न । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । १० काल-४ । ग्रेपूर्ण । वे० सं० १४६ । ख भण्डार ।

विशेष---१७ से आगे पत्र नहीं है।

१७८. प्रति सं०२। पत्र सं०११०। ले० काल-×। अपूर्ण। वे० स० ५१४। इन भण्डार।

हिंदि. मूलाचार टीका—आचार्य वसुनिद्। पत्र स० ३६८। आ० १२×५३ इख्र। भाषा— प्राकृत संस्कृत। विषय—श्राचार शास्त्र। र० काल—४। ले० काल—स० १८२६ मगसिर बुदी ११। पूर्ण। वै० सं० २७५। स्र भण्डार।

विशेष--जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

६८०. प्रति सं०२। पत्र स०३७३। ले० काल-×। वे० सं० ५८०। क भण्डार।

६८१ प्रति सं० ३। पत्र सं० १५१। ले० काल-४ । अपूर्ण। वे० स० ५६८। ड भण्डार।

विशेष---५१ से आगे पत्र नहीहै।

६८२. मूलाचारप्रदीप—सकलकीर्ति । पत्र सं०१२६ । भ्रा०१२ई×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्राचारशास्त्र । र० काल-× । ते० काल-सं०१६२ । पूर्ण । वे० सं०१६२ ।

विशेष--प्रतिलिपि जयपुर मे हुई थी।

६८२. प्रति स॰ २ । पत्र सं० ८४ । ले० काल-× । वे० स० ८४६ । ऋ भण्डार ।

६८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६१ । ले० काल-× । वे० सं० २७७ । च भण्डार ।

६८४. प्रति सं० ४ | पत्र सं० १५५ । ले० काल-× । वे० स० ६८ । छ भण्डार ।

६८६ प्रति सं०५। पत्र स०६३। ले० काल-स० १८३० पीष सुदी २। वे० स० ६३। च भण्डार।

विशेष-पं० चोखचद के शिष्य पं० रामचन्द ने प्रतिलिपि की थो।

ध्य. प्रति सं०६। पत्र सं०१८०। ले० काल-स०१८५६ कार्तिक बुदी ३। वे० सं०१०१। च भण्डार।

विशेष--महात्मा सर्वसुख ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थो।

धनः प्रति सं०७। पत्र सं०१३७। ले० काल-स०१८२६ चैत बुदी १२। वे० सं०४४५। व भण्डार।

६८. मृलाचारभाषा —ऋषभदास । पत्र स० ३० से ६३ । ग्रा० १०×८ इख्र । भाषा —हिन्दी । विषय-ग्राचार शास्त्र । र० काल —सं० १८८ । ले० काल —स० १८९ । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । च भण्डार ।

- ६६०. मृ्ताःचार भाषा''' "। पत्र स० ३० मे ६३। ग्रा० १०३४८ इख्र। भाषा-हिन्दी। त्रिषय-ग्राचार जास्त्र। र० काल-४। ले० काल-४। ग्रपूर्गा। ते० स० ५६७।
- ६६१. प्रति सं०२। पत्र सं०१ मे १००, ३४६ से ३६०। ग्रा०१०३४८ इख्न । भाषा-हिन्दी। विषय-ग्राचार शास्त्र । र० काल-४। ले० काल-४। ग्रपूर्ण । वे० स० ५६६। ड भण्डार।
 - ६६२. प्रति सं०३। पत्र सं०१ मे ६१, १०१ मे ६००। ले० काल-×। अपूर्ण। वे० स० ६००।
- ६६३. मोत्तपैढी—बनारसीदास। पत्र स०१। आ०११३४६३ इख्र। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल-×। ले० काल-×। पूर्ण। वे० मं० ७६५। ऋ भण्डार।
 - ६६४ प्रति स०२। पत्र सं४। ले० काल-×। वे० स०६०२। ङ भण्डार।
- ६६४. मोत्तमार्गप्रकाशक पं० टोडरमल । पत्र स० ३२१ । ग्रा० १२३ × दञ्ज । भाषा ह ढारी (राजस्थानी) गद्य । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल सं०१६५४ श्रावरण सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ५०३ । क भण्डार ।

विगेप — दू ढारी शब्दों के स्थान पर शुद्ध हिन्दी के शब्द भी लिखे हुये हैं।

- ९६६ प्रतिसं०२ । पत्र सं०२ ६२ । ले० काल-स०१६५४ । वे० स० ५८४ । क भण्डार ।
- ६६७. प्रति सं० ३ । पत्र स० २१२ । ले० काल-स० १६४० । वे० सं० ५६५ । क भण्डार ।
- हम्प. प्रति सं०४। पत्र म०२१२। ले० काल-म० १८८८ वैशाख बुदी ६। वे० सं६८। व भण्डार।

विशेप--छाजूलाल माह ने प्रतिलिपि कराई थी।

- ६६६. प्रति स० ४ । पत्र सं० २२८ । ले० काल-४ । वे० म ६०३ । ङ भण्डार ।
- १०००. प्रति सं०६। पत्र म० २७६। ले० काल-×। वे० स० ६५८। च भण्डार।
- १००१. प्रतिसं०७ । पत्र स०१०१ से २१६ । ले० काल-× । ग्रपूर्ण । वे० स०६५६ । च भण्डार ।
 - १००२. प्रति सं ः ८। पत्र स० १२३ से २२५। ले० काल-४। अपूर्ण। वे० सं० ६६०। च भण्डार।
 - १००३. प्रति सं०६ | पत्र स० ३५१ । ले० काल-×। वे० स० ११६ । म्ह भण्डार ।
- १००४. यतिदिनचर्या—देवसूरि । पत्र सं० २१ । आ० १०३४४३ डब्झ । भाषा-प्राकृत । विषय-ग्राचार शास्त्र । र० काल-४ । ले० काल-सं० १६६८ चैत मुदी ६ । पूर्गा । वे० स० १६२६ । ट भण्डार ।

विशेप--ग्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है--

इति श्री सुविह्तिशिरोमिणिश्रीदेवसूरिविरिचता यतिदिनचर्या सपूर्णा।

प्रशस्ति —संवत् १६६८ वर्षे चैत्रमासे शुक्लपक्षे नवमीभीमवासरे श्रीमत्तपामच्छाधिराज भट्टारक श्री श्री ५ विजयमेन मूरीश्वराय निखित ज्योतिसी उधव श्री शुजाउलपुरे ।

१००४. यत्याचार—आ० वसुनंदि। पत्र मं० ६। ग्रा० १२३×५३ इज्र । भाषा-प्राकृत । विषय-

मुनि धर्म वर्गान । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्गा । वे० सं० १२० । स्त्र भण्डार ।

१००६ रत्नकरण्डश्रावकाचार—श्राचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०७। ग्रा० १०३४५६ इश्च। भाषा-संस्कृत । विषय-ग्राचार शास्त्र । र० काल-४। ले० काल-४। वे० सं० २००६। श्र भण्डार ।

विशेष--प्रथम परिच्छेद तक पूर्रा है। ग्रंथ का नाम उपासकाध्याय तथा उपासकाचार भी है।

१००७. प्रति सं०२ । पत्र स०१५ । ले० काल-× । वे० सं०२६४ । ऋ भण्डार ।

विशेष—कही कही संस्कृत में टिप्पिया दी हुई है। १९३ श्लोक हैं।

१००८. प्रति सं०३। पत्र सं०१६। ले० काल-×। वे० सं०६१२। क भण्डार।

१००६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २२ । ले० काल-सं० १६३८ माह सुदी १०। वे० न०

१५६। ख भण्डार।

विशेष—कही २ संस्कृत से टिप्परा दिया है।

१०१०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७७ । ले० काल-४ । वे० सं० ६३० । ड भण्डार ।

१०११. प्रति सं०६। पत्र सं०१४। ले० काल-×। अपूर्ण | वे० सं०६३१। ड मण्डार। विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हम्रा है।

१०१२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४८ । ले० काल-४ । ग्रपूर्ग । वे० सं० ६३३ । ड भण्डार ।

१०१३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३८-५६ । ले० काल-४ । ग्रपूर्ण । वे० सं० ६३२ । ड मण्डार । विशेष—हिन्दी ग्रर्थ सहित है ।

१०१४. प्रति सं० ६। पत्र सं० १२। ले० काल-×। वे० सं० ६३४। इन् भण्डार। विशेष—ब्रह्मचारी सुरजमल ने प्रतिलिपि की थी।

१०१४. प्रति सं० १०। पत्र सं० ४०। ले० काल-×। वे० सं० ६३४। ड भण्डार।

विशेप—हिन्दी मे पन्नालाल संघी कृत टीका भी है। टीका सं० १९३१ मे की गयी थी।

१०१६. प्रति सं० ११। पत्र सं० २६। ले० काल-×। वे० सं० ६३७। ङ भण्डार। विशेष—हिन्दी टन्वा टीका सहित है।

१०१७. प्रति सं० १२। पत्र सं० ४२। ले० काल-सं० १९५०। वे० मं० ६३८। ड भण्डार। विशेष—हिन्दी टीका सहित है।

१०१म. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १७ । ले० काल-× । वे० सं० ६३६ । ङ भण्डार ।

१०१६. प्रति सं० १४ । पत्र स० ३८ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० २६१ । च भण्डार । विशेष—केवल ग्रन्तिम पत्र नहीं है । संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है ।

१०२०. प्रतिस०१४ । पत्र सं०२० । ले० काल—४ । ग्रपूर्ण। वे० सं०२६२ । च भण्डार ।

१०२१. प्रति सं०१६। पत्र स०११। ले० काल-×। वे० सं० २६३। च भण्डार।

१०२२. प्रति सं०१७। पत्र स०६। ले० काल-×। वे० सं० २६४। च भण्डार।

१०२३. प्रति सं० १८ । पत्र म० १३ । ले० काल-४ । वे० स० २६५ । च भण्डार ।

१८२४. प्रति सं०१६।पत्र स०११।ले० काल-🗙 । ते० सं०७४०। च भण्डार ।

१०२५. प्रति स० २०। पत्र स० १३। ले० काल - 🗙 । वे० ग० ७४२। च भण्डार।

१८२६ प्रति संट २१। पत्र स० १३। ले॰ काल-🔀 । वे॰ स० ७८३। च भण्डार।

१८२७. प्रति सं०२२ । पत्र स०१० । ले० गाल-× । वे० मं०११० । छ भण्डार ।

१८२८ प्रतिस०२३।पत्र सं०१०।ले०काल−×।वे०स०१४४। ज भण्डार।

१८२६. प्रति सं० २४। पत्र सं० १६। ले० काल-×। ग्रपूर्ण। वे० स० २२। मा गण्टार।

१०२० प्रति सं०२४। पत्र सं०१२। ले० काल-ग०१७२१ ज्येष्ठ सुदी ३। वे० म० १४५। व्य भण्डार।

१०३१ रत्नकरराडशावकाचार टीका—प्रभाचन्द । पत्र सं० ४३ । ग्रा० १०ई×५३ इझ । भागा— सस्कृत । विषय—ग्राचार ज्ञास्त्र । र० काल—४ । ले० काल—सं० १८६० श्रावरण बुदी । पूर्ण । त्रे० म० ३१६ । त्र्म भण्डार ।

१०३२. प्रति सं०२ । पत्र सं०२२ । ले० काल--> । त्रे० म०१०६४ । स्त्र भण्टार ।

१८-३ प्रति संट ३ । पत्र स० ३१--५३ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे स० ३८० । अप्र भण्डार ।

१०३४ प्रति सं०४। पत्र सं०३६-६२। ले० काल-×। प्रपूर्ण। वे० नं०३२६। मः भण्डार।

विशेष-इसका नाम उपासकाध्ययन टीका भी है।

९०३५. प्रतिसं०५। पत्र स०१६। ले० काल-×। वे० सं०६३६। ड भण्डार।

१०३६. प्रति सं ६। पत्र म० ४ मा लेव काल-सं० १७७६ फाग्रुण मुदी ५। वेव म० १७८। व्य भण्डार।

विशेष—भट्टारक मुरेन्द्रकीर्त्त की ग्राम्नाय में खंडेलवाल ज्ञानीय भौसा गोत्रोत्पन्न साह छनमलजी के वंशज साह चन्द्रभाए। की भार्या ल्हीडी ने ग्रथ की प्रतिलिपि कराकर ग्राचार्य चन्द्रकीर्ति के शिष्य हर्षकीर्त्त के लिये कर्मक्षय निमित्त भेंट की।

१०३७. रत्नकरण्डश्रायकाचार—प० सदासुष्य कामलीवाल । पत सं० १०४२ । मा०१२५४८६ इख्र । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-ग्राचार गास्त्र । र० वाल सं० १६२० चैत्र बुदी १४ । ने० काल स०१६४१ । पूर्ण । वे० स०६१६ । क भण्डार ।

विशेष--- प्रथ २ वेण्टनो मे है। १ से ४५५ तथा ४५६ से १०४२ तक है। प्रति सुन्दर है।

१०३८. प्रति सं०२। पत्र स० ५६६। ले० काल-४। अपूर्ण। वे० सं० ६२०। क भण्डार।

१०३६. प्रति सं० ३। पत्र स० ६१ से १७६। ले॰ काल-->। ग्रपूर्ण। वे॰ सं० ६४२। क भण्डार।

१०४० प्रति स० ४। पत्र सं० ४१९। ले॰ काल-ग्रासोज बुदि म म० ११२१। वे॰ सं॰ ६६६।

च भण्डार।

१०४१ प्रति सं० ४। पत्र सं० ३१। ले० काल-×। ग्रपूर्ण। वे० स० ६७०। च भण्डार। विशेष---नेमीचद कालख वाले ने लिखा ग्रीर सदामुखर्जी डेडाकाने लिखाया---यह ग्रन्त मे लिखा हुग्रा है। १८४२. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३४६। ले० काल-×। वे० स० १८२। छ भण्डार।

विशेष—''इस प्रकार मूलग्र'थ के प्रमाद तै सदामुखदास देडाका का ग्रंपने हम्त तै लिखि ग्रंथ समाप्त किया ।'' श्रन्तिम पृष्ठ पर ऐसा लिखा है ।

१०४३ प्रति सं०७ । पत्र सं०२२१ । ले० काल-स०१६६३ कार्तिक बुदी ऽऽ । वे० सं०१६८ । छ भण्डार ।

१०४४. प्रति सं० ८ । पत्र मं० ५३६। ले० काल-स० १९५० वैशाख मुदा ६। वे० स० । भाभण्डार।

विशेष—इस ग्रंथ की प्रतिलिपि स्वय सदामुखजी के हाथ में लिखे हुये स० १६१६ के ग्रंथ से सामोद में प्रतिलिपि की गई है। महासुख मेठी ने इसकी प्रतिलिपि की थी।

१०४४. रह्नकरग्रहश्रावकाचार भाषा—नथमल । पत्र स० २६ । ग्रा० ११४५ इञ्च । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय-ग्राचार शास्त्र । र० काल-सं० १६२० माघ मुदी ६ । ले० काल-४ । वे० स० ६२२ । पूर्ण । क भण्डार ।

१८४६. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल-×। वे० सं० ६२३। क भण्डार।

१८४७ प्रति स०३। पत्र स०१५। ले० काल-×। वे० स०६२१। क भण्डार।

१८४८. रत्नकरगडश्रावकाचार—सघी पन्नालाल । पत्र सं० ४४ । ग्रा० १०३८ ७ इख्र । भाषा— हिन्दी गद्य । विषय—ग्राचार शास्त्र । र० काल—स० १६३१ पौप बुदी ७ । ले० काल—स० १६५३ मगसिर मुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ६१४ । क भण्डार ।

१०४६. प्रति सं०२। पत्र सं०४०। ले० काल-×। वे० स ६१४। क भण्डार।

१८५०. प्रति सं० ३। पत्र स० २६। ले० कालं-४। वे० स० १८६। छ भण्डार।

१०५१. प्रति सं० ४। पत्र सं० २७। ले० काल-४। वे० स० १८६। छ भण्डार।

१०४२. रत्नकरग्रहश्रावकाचार भाषा''''' पत्र स०१०१। ग्रा०१२×५ इख्र । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—ग्राचार शास्त्र । र० काल-स०१६५७ । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं०६१७ । क भण्डार ।

१०४३. प्रति सं २ । पत्र स० ७० । ले० काल-स० १९४३ । वे० स० ६१६ । क भण्डार ।

४०५४ प्रति स० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल-× । वे० स० ६१३ । क भण्डार ।

१०४४. प्रति सं० ४ । पत्र स० २८ मे १४६ । ले० काल-🗙 । अपूर्ण । वे० स० ६४० । इ मण्डार ।

१०४६. रत्नमाला- स्त्राचार्य शिवकोटि । पत्र मं० ४ । ग्रा० ११६×४६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्राचार शास्त्र । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० स० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष---प्रारम्भ:--

सर्वज्ञ सर्ववागीश वीरं मारमदायहं।
प्रणमामि महामोहशातये मुक्तिप्राप्तये ॥१॥

मारं यत्मर्वसारेषु वद्यं यद्वंदितेप्वपि !

श्रनेकातमय वदे तदर्हत् वचन मदा ॥२॥

श्रन्तिम-यो नित्य पठित श्रीमान् रत्नमालामिमापरा।

सञ्ज्ञचरणो नूत शिवकोटित्वमाप्नुयात् ॥

इति श्री समन्तभद्र स्वामी शिष्य शिवकोट्याचार्य विरचिता रत्नमाला यमाप्ता ।

१०५७. प्रति स०२ । पत्र स०५ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० मं० २११५ । ट भण्डार ।

१०४८. रयणसार—कुन्द्कुन्टाचार्य। पत्र मं०१०। ग्रा०१०२४५ डख्न। भाषा-प्राकृत। विषय-ग्राचार शास्त्र। र० काल-४। ले० काल-सं १८८३। पूर्ण। वे० स० ६४६। स्र भण्डार।

१०५६. प्रति सं०२ । पत्र सं०१० । ले० काल-× । वे० म०१८१० । ट भण्डार ।

१०६० रात्रि भोजन त्याग वर्णन """। पत्र स० १६। आ० १२×४ इख्र । भाषा-हिन्दी। विषय-ग्राचार शास्त्र । र० काल-× ले० काल-×। पूर्ण । वै० स० ४८० । ञ भण्डार ।

१०६१. राधा नन्मोत्सव"" "। पत्र स० १। ग्रा० १२×६ डख्न । भाषा-मन्द्रत । विषय-धर्म । र० काल-×। ले० काल-×। पूर्ण । वै० स० ११५१ । श्र भण्डार ।

१०६२. रिक्तिविभाग प्रकरण """ पत्र स० २६ । ग्रा० १३×७ इख । भाषा-सम्कृत । विषय-ग्राचार शास्त्र । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० स० ५७ । ज भण्डार ।

१०६३. त्राष्ट्रसामायिक पाठ """। पत्र स० २ । ग्रा० १२४७ इख्र । भाषा-मस्कृत । विषय-धर्म । र० काल-४ । ले० काल-स० १८१४ । पूर्ण । वे० स० २०२१ । स्त्र भण्डार ।

विशेष---प्रशस्ति:---

े १८१४ अगहन सुदी १५ सनै बुन्दी नग्ने नेमनाथ चैत्यालै लिखितं श्री देवेन्द्रकः ति ग्राचारज सीरोज के पट्ट स्वय हस्ते।

१०६४. प्रति सं० २ | पत्र म० १ | ले० काल-× | वे० सं० १२४३ | ऋ भण्डार ।

१०६४. प्रति सं०३। पत्र स०१। ले० काल-×। वै० स०१२२०। ऋ भण्डार।

१०६६. लधुसामायिक''' "। पत्र स० ३। आ० ११ःं४५० इख्र । भाषा-नम्कृत-हिन्दी । विषय-धर्म। र० काल-४। ले० काल-४। पूर्ण। वे० सं० ६४०। क भण्डार।

१०६७. लाटीसहिता—राजमझ । पत्र सं० ७ । ग्रा० ११४५ इख्र । मापा-सस्कृत । विषय-ग्राचार वास्त्र । र० काल-सं० १६४१ । ले० काल-४ । पूर्ण । वै० स० ८८ ।

१०६८ प्रति सं०२। पत्र सं० ७३ । ले० काल-सं० १८६७ वैशाख बुदी " " रिववार वै० स० ६९४। इ भण्डार।

१०६६. प्रति सं०३। पत्र सं०५६। ले० काल-सं०१८६७ मंगसिर बुदी ३। वे० स० ६६६। इ. भण्डार।

विशेष--महात्मा शंभूराम ने प्रतिलिपि की थी।

१८७०. वज्रनाभि चक्रवर्त्ति की भावना—भूधरदास । पत्र सं०२। ग्रा०१०४५ इख्र । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-धर्म । र० काल-४ । ले० काल-४ पूर्ण । वे० स० ६६७ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-पार्श्वपुराण में से है ।

१८७१. प्रति सं०२ । पत्र सं०४ । ले० काल-सं० १८८८ पौप सुदी २ । वै० सं० ६७२ । च भण्डार ।

१८७२ वनस्पतिसत्तरी—मुनिचन्द्र सूरि । पत्र स० ५ । ग्रा० १०×४ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ५४१ । स्त्र भण्डार ।

१०७३ वसुनंदिश्रावकाचार—आ० वसुनदि। पत्र सं० ५६। आ० १०३×५ इख्र। भाषा— प्राकृत। विषय-श्रावक धर्म। र० काल-४। ले० काल-सं० १८६२ पीष सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० २०६। स्र भण्डार।

विशेष---ग्रंथ का नाम उपासकाध्ययन भी है। जयपुर मे श्री पिरागदास वाकलीवाल ने प्रतिलिपि करायी। मंस्कृत मे भाषान्तर दिया हुम्रा है।

१०७४. प्रति स०२। पत्र सं०५ से २३। ले० काल-सं० १६११ पीष मुदी १। ग्रपूर्गी। वे० सं० ८४८। ग्रा भण्डार।

विशेष-सारंगपुर नगर मे पाण्डे दासू ने प्रतिलिपि की थी ।

१०७४. प्रति सं०३। पत्र सं०६३। ले॰ काल-सं०१८७७ भादवा बुदी ११। वे० स०६५२। क भण्डार।

विशेष—महात्मा शंभूनाथ ने सवाई जयपुरमे प्रतिलिपि की थी। गाथाग्रो के नीचे सस्कृत टीका भी दी है। १०७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४४ । ले० काल-×। वे० सं० ५७ । क भण्डार।

विशेष--प्रारम्भ के ३३ पत्र प्राचीन प्रति के हैं तथा शेष फिर लिखे गये है।

१०७७. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५१। ले० काल-×। वे० सं० ४५। च भण्डार।

१०७८. प्रति सं० ६। पत्र सं० २२। ले० काल-सं० १५९८ भादवा बुदी १२। वे० सं० २६६। व भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति— संवत् १५६८ वर्षे भादवा बुदी १२ ग्रुम दिने पुष्यनत्रत्रेग्रमृतिमद्विनामउपयोगे श्रीपथस्थाने मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगर्रो श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री प्रभावनद्रदेवा त्तस्य शिष्य मङलाचार्य धर्मकीर्त्ति द्वितीय मंडलाचार्य श्री धर्मकर्ति तत् शिष्य मुनि वीरनदिने इद शास्त्रं लिखापितं। पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि करके सं० १८६७ मे पार्श्वनाथ (सोनियो) के मंदिर मे चढाया।

१०७६ वसुनंदिश्रावकाचार भाषा—पन्नालाल । पत्र सं० २१८ । ग्रा॰ १२५ ४७ इख्र । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय-ग्राचार शास्त्र । र॰ काल—सं० १६३० कार्तिक वुदी ७ । ले० काल—सं० १६३८ माह बुदी ७ । पूर्ण । वे० म० ६५० । क भण्डार ।

१०८०. प्रति सं० २। ले० काल सं० १६३०। वे० सं० ६५१। क भण्डार।

१८८१. वात्तिसंग्रहः '''। पत्र सं० २४ से ६७ । ग्रा० ६४५ रे उझा भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० रा० १५७ । छ भण्डार ।

१०८२. विद्वज्ञनबोधक " "। पत्र सं० २७ । ग्रा० १२६४८६ इख्रा । भाषा—संरकृत । विषय-धर्म । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० स० ६७६ । ड भण्डार ।

विशेप-- हिन्दी मर्थ सहित है। ४ मध्याय तक है।

१०८३ प्रति सं०२। पत्र सं०३५२। ले० काल ४। प्रपूर्ण। वे० सं०२०४०। ट भण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दो ग्रर्थ सहित है। पन कम मे नहीं है ग्रीर कितने ही बीच के पत्र नहीं है। दो प्रतियों का मिश्रण है।

१०८४ विद्वज्ञनबोधक भाषा—सधी पन्नालाल । पत्र स० ६६० । ग्रा० १४८७ दे इझ । भाषा-सस्कृत, हिन्दो । विषय-धर्म । र० काल स० १९३९ माघ सुदी ५ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० म० ६७७ । इ भण्डार ।

१८८४. प्रति संट२। पत्र स० ५४३। ले० काल स० १६४२ म्रासोज सुदी ४। वे० म० ६७७। च भण्डार।

विशेष—छाजूलाल साह के पुत्र नृत्दलाल ने अपनी माताजी के व्रतोद्यापन के उपलक्ष मे गन्थ मन्दिर दीवान ग्रमरचन्दजी के मे चढाया । यह ग्रन्थ के द्वितीयखण्ड के प्रन्त मे लिखा है

१८८६. विद्वज्ञत्तवोधकटीका" "" पत्र स० ४४ । म्रा० ११३८७ इख्र । भाषा-हिन्दो । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६० । क भण्डार ।

विशेप-प्रथमखण्ड के पाचवें उल्लास तक है।

१०८७. विवेकवितास"""। पत्र स० १८। ग्रा० १०३४५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्राचार शास्त्र । ग्र० काल स० १७७० फाग्रुगा बुदी । ले० काल सं० १८८८ चैत बुदी ३। वे० स० ८२। म्ह भण्डार ।

१८८८. बृह्तप्रतिक्रमण्"""। पत्र सं० १६ । ग्रा० १०४४ हे इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० वाल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० २१४८ । ट भण्डार ।

१०८६. प्रति सं०२। ले॰ काल ×। ने॰ स॰ २१५६। ट भण्डार।

१०६० प्रति सं०३। ले० काल ×। वे० स० २१७६। ट भण्डार।

१८६१. बृहत्प्रतिक्रमण्" ""। पत्र स० १६ । ग्रा० ११४४ई इख्र । भाषा-सस्कृत, प्राकृत । विषय-धर्म'। र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० २०३ । श्र भण्डार ।

१८६२ प्रतिसं०२ । पत्र स०१४ । ले० वाल 🗴 । ये० स०१५६ । स्र्यभण्डार ।

१०६३. बृहत्प्रतिक्रमण । पत्र सं० ३१ । आ० १०३ \times ४६ इख्र । भाश—सस्कृत । विषय—धर्म । र० काल \times । ते० काल \times । पूर्ण । वे० सं० २१२२ । ट भण्डार ।

१०६४. व्रतों के नाम "" । पत्र सं० ११ । ग्रा० ६ ई×४ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ११६ । व्य भण्डार ।

१०६४ व्रतनामावली "" पत्र सं० १२। ग्रा० ५ २ ४ इस्र । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र० नाल स० १९०४ । पूर्ण । वे० सं० २९४ । ख भण्डार ।

१०६६. त्रतसंख्या"""। पत्र सं० ५ । ग्रा० ११×५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० नाल × ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५७ । स्र भण्डार ।

विशेष--१५१ व्रतो एवं ४१ मंडल विधानो के नाम दिये हुये है।

१८६७. त्रतसार्"ः । पत्र सं० १। ग्रा० १०४४ इख्रां भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र० काल ४। विषय-धर्म । र० काल ४। पूर्ण । वे० सं० ६८१ । स्त्र भण्डार ।

विगेप--केवल २२ पद्य है।

१०६८ - त्रतोद्यापनश्रावकाचार "" । पत्र स० ११३ । ग्रा० १३ँ×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्राचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३ । घ भण्डार ।

१०६६. त्रतोपवासवर्णात ""। पत्र सं० ५७ । ग्रा० १०४५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्राचार शास्त्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । त्रपूर्ण । वे० सं० ३३८ । व्य भण्डार ।

विशेष-- ५७ से मागे के पत्र नही है।

१**१०० त्रतोपवासवर्णन " '।** पत्र स०४। ग्रा०१२×४ इख्र । भाषा सस्कृत । विषय-ग्राचार स्नास्त्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं०४७८ । व्य भण्डार ।

११०१. प्रति सं ८ २ । पत्र सं० ५ । ले० काल 🗶 । ग्रपूर्श । वे० स० ४७६ । व्य भण्डार ।

११०२. षट् श्रावण्यक (त्तघुमामायिक)—महाचन्द्। पत्र स०३ । विषय-श्राचार गाम्त्र। र० काल ×। ले० काल स०१६४०। पूर्ण। वे० स०३०३। ख भण्डार।

११८२ पट्त्रावश्यकविधान—पत्रालाल । पत्र स० १४ । ग्रा० १४×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-ग्राचार शास्त्र । र० काल स० १६३२ । ले० काल स० १६३४ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वे० म० ७४४ । इ भण्डार ।

११०४. प्रति सं २ २ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १६३२ । वे० स० ७४५ । इ. भण्डार । ११०४ प्रति सं २ ३ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ४७६ । इ. भण्डार । विशेष—विद्वज्जन बोधक के तृतीय च पश्चम उल्लास ना हिन्दी ग्रनुवाद है ।

११०६. पट् कर्मोपदेशरत्नमाला (छ्कम्मोवस्म)—महाकवि श्रमरकीत्ति । पत्र म० ३ मे ७१। श्रा० १०६×८ इञ्च । भाषा-श्राश्र श । विषय-श्राचार शास्त्र । र० काल स० १२४७ । ले० वाल म० १६२२ चैत्र मुदी १३ । वे० मं० ३५६ । च भण्डार ।

विशेष--नागपुर नगरमे खण्डेलवालान्वय पाटनीगीत्रवाले श्रीमतीहरपमदे ने ग्रन्थकी प्रतिलिपि करवायी थी।

११०७. पट्कर्मीपदेशरत्नमालाभाषा — पांडे लालचन्द । पत्र मध्या १२६ । म्रा० १२४६ टक्स । भाषा-हिन्दी । विषय-म्राचार शास्त्र । र० काल स० १८१८ माघ मुदी ५ । ले० काल मं० १८४६ गांके १७०५ भादवा मुदी १० । पूर्ण । वे० म० ४२६ । म्रा भण्डार ।

विशेष--- ब्रह्मचारी देवकरण ने महात्मा भूरा से जयपुर मे प्रतिलिपि करवायी।

११८ ज्ञ. प्रति सं०२। पत्र सं०१२ । ले० काल सं०१ दह माघ मुदी ६। वे० म० ६७। घ भण्डार। विशेष---पुस्तक प० मदामुख दिल्लीवालो की है।

११०६. पट्संहननवर्णन—सकरन्द पद्मावित पुरवाल । पत्र स० ६। ग्रा० १०१४ इझ । भाषा-हिन्दो। विषय-धर्म। र० काल स० १७६६। ले० काल 🗙। पूर्ण। वै० सं० ७१४। क भण्डार।

१११०. पड्भिक्तिवर्णन । पत्र सं० २२ से २६ । ग्रा० १२×५ देख । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० २६६ । व्य भण्डार ।

११११ पोडशकारणभावनावर्णनवृत्ति—पं० शिवजिदह्रण । पत्र सं० ४६ । म्रा० ११४५ इद्य । भाषा-प्राकृत, संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० २००४ । ख भण्डार ।

१११२. पोडपकारणभावना—पं० सदासुख । पत्र सं० ८० । ग्रा० १२×७ इझ । भाषा हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । वै० स० ६६८ । भ्रा भण्डार ।

विशेष--रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा मे से है।

१११३. पोडशकारणभावना जयमाल— नथमल । पत्र सं० २८ । ग्रा० ११३×७३ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल सं० १६२५ सावन सुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१६ । क भण्डार ।

१११४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ७४६ । ङ भण्डार ।

१११४ प्रति सं० ३। पत्र सं० २४। ने० काल 🗙 | वे० स० ७४६। उ भण्डार |

१११६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल 🗴 । म्रपूर्या । वे० स० ७५० । ड भण्डार ।

११९७ पोडशकारणभावना""। पत्र सं० ६४। प्रा० १३३×५२ इख्न । भाषा-हिन्दी । त्रिपय-धर्म । र० काल × । ले॰ काल सं० १६६२ कार्तिक सुदी १४। पूर्ण । वे० स० ७५३ । ड भण्डार ।

विशेष-रामप्रताप व्यास ने प्रतिलिपि की थी।

१११८. प्रति सं० २ | पत्र सं० ६१ । ले० वाल 🗴 । वे० सं० ७५४ | ड भण्डार |

१११६. प्रति सं० ३। पत्र स० ६३। ले० काल 🗴 । वे० सं० ७५५ । इन भण्डार ।

११२०. प्रति सं० ४ । पत्र मं० ३० । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० स० ६६ ।

विशेष---३० मे आगे पत्र नहीं है।

११२१. षोडवकारणभावना " । पत्र स० १७ । स्रा० १२५ ४७ इस्त्र । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र॰ काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२१ (क) । क मण्डार ।

विशेष--संस्कृत मे संकेत भी दिये हैं।

११२२. शीलनववाड़ ""। पत्र सं० १। ग्रा० १० \times ४ $\frac{1}{2}$ इक्क्र । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना-काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० १२२६ । स्त्र भण्डार ।

११२३ श्राद्धपिडकम्मण्सूत्र"" । पत्र सं० ६ । ग्रा० १०४४ र इख । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० १०१ । घ भण्डार ।

विशेष—पं • जसवन्त के पौत्र तथा मार्नीसह के पुत्र दीनानाथ के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी। गुजराती टब्बा टीका सहित है।

११२४. श्रावकप्रतिक्रमण्भाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० ५०। ग्रा० ११३४७ इख्र । भाषा— हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल सं० १९३० माघ बुदी २ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० ६९८ । क भण्डार ।

विशेष-वावा दुलीचन्दजी की प्रेरणा से भाषा की गयी थी।

११२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल 🗙 । वे० स० ६९७ । क भण्डार ।

११२६. श्रावकधर्मवर्णन " । पत्र सं० १० । ग्रा० १० र्×५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-श्रावक धर्म । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । ग्रपूर्ण । वे० सं० ३४६ । च मण्डार ।

११२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० ३४७ । च भण्डार ।

११२८. श्रावकप्रतिक्रमण्""। पत्र सं० २५। ग्रा० १०२४ इखा। भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म। र० काल 🗴 । ले० काल सं० १८२३ श्रासोज बुदी ११। वे० सं० १११। छु भण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है। हुनमीजीवरण ने ग्रहिपुर मे प्रतिलिपि की थी।

११२६. श्रावकप्रतिक्रमण् " " । पत्र सं० १५ । आ० १२×६ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र० काल × । पूर्ण । वे० स० १८६ । ख भण्डार ।

११३०. श्रावकप्रायश्चित—वीरसेन । पत्र सं० ७ । ग्रा० १२×६ डञ्च । साषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १९३४ । पूर्ण । वे० सं० १९० ।

विशेष--पं० पन्नालाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

११३१. श्रावकाचार--श्रमितिगति । पत्र गं० ६७ । मा० १०८४ दक्ष । भागा-गंग्रत । विषय-

विशेष-नहीं नहीं संस्कृत में टीका भी है। ग्रन्थ का नाम उपासकाचार भी है।

११३२. प्रति संट २ | पत्र सं० ३६ । ले० काल 🗶 | प्रपूर्ण | वे० म० ४४ । च भण्डार ।

११३३. प्रति सट ३। पत्र स० ६३। ले० काल 🔀 । प्रपूर्ण । ने० गं० १०६ । छ भण्टार ।

११३४. श्रावकाचार—उमास्वामी । पत्र म० २३ । ग्रा० ११४४. इक्ष । भाषा-मन्त्र । प्रियन-माचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८६ । श्र्य भण्डार ।

११३४. प्रति संट२। पत्र संट२७। लेव वाल संट १६२६ प्रापाट मुदी २। वेव मट २६०। श्र भण्डार।

११३६. श्रावकाचार-गुराभूपर्याचार्य। पत्र स० २१। प्रा० १०६४४३ दक्षः। भागा-गररतः। विषय-ग्राचार शास्त्र। र० काल 🗴 । ले० काल स० १४६२ वैशास बुदी ४। पूर्ण । वे० ग० १६८। श्र भण्डारः।

विशेष--प्रशस्ति :

सवत् १५६२ वर्षे वैशाख बुदी ४ श्री मूलसघे बलात्कारगरो सरम्वतीगच्छे श्री मुंदगु दानार्यान्यये भा श्री पद्मनिन्द देवास्तत्पट्टो भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टो भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टो भ० श्री प्रभाग-द्रदेना तदाम्नायं खंडेलवालान्वये सा० गोत्रे स० परवत तस्य भार्या रोहातत्पुत्र नेता तस्य भार्या नारंगदे । तत्पुत्र मितदान तस्य भार्या प्रमरी दुतीय पुत्र उर्वा तस्य भार्या वोरयी तत्पुत्र नथमल दुतीय सीवा सा० नर्रासह महादान एतेयामच्ये द्रदंगाम्य लिलायत कर्मक्षयनिमित्तं श्रावकाचार । श्राजिका पदमसिरिज्योग्य बाई नारिंग घटापित ।

११३७. प्रति सं० १ । पत्र स० ११ । ले० काल स० १५२६ भादना बुदी १ । वे० स० ५०१ । जा

प्रशस्ति—संवत् १५२६ वर्षे भादपद १ पक्षो श्री मूलसघे भ० श्री जिनचन्द्र ग्र॰ नर्राम्घ महेन्द्रानान्वचे स० भाजय भार्या जैथी पुत्र हाम्य लिखावदत् ।

११३८. श्रावकाचार—पद्मनिट । पत्र म० २ मे २६ । ग्रा० ११५४५ इञ्च । भाषा—मंन्त्र । विषय— भाचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वै० स० २१०७ ।

विशेष-३६ से धागे भी पत्र नहीं है।

११३६ श्रात्रकाचार--पूज्यपाट । पत्र स० ६ । म्रा० ६ दे ४२ इझ । भाषा- संस्कृत । विषय-प्राचार शास्त्र । र० काल ४ । ले॰ काल स० १८५४ वैशाख सुदी ३ । पूर्गा । वे० स० १०२ । घ भण्डार ।

विशेप--ग्रन्थ का नाम उपासकाचार तथा उपासकाध्ययन भी है।

११४०. प्रति सं०२। पत्र सं०११। ले० काल स०१६६० पौप बुदी १४। वे० स० ६६। ड

धर्म एव आचार शास्त्र]

११४१. प्रति सं ३। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १८८४ ग्राषाढ बुदी २। वे० स० ४३। च भण्डार ११४२. प्रति सं० ४। पत्र स० ७। ले० काल सं० १८०४। भादवा सुदी ६। वे० स० १०२। इस भण्डार।

११४३. प्रति सं० ४। पत्र स० ७। ले० काल 🗴 । वे० स० २१५१। ट भण्डार।

११४४. प्रति सं ६ । पत्र सं०६। ले० काल ४। वे० सं०२१५ ⊏। ट भण्डार।

११४४. श्रावकाचार—सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ६६ । ग्रा० ५३४६३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय—श्राचार शास्त्र । र० काल \times । ले० काल \times । ग्रपूर्ण । वे० स० २०८८ । श्रा भण्डार ।

११४६. प्रति सं० २ । पत्र स० १२३ । ले० काल स० १८५४ । वे० स० ६६३ । क भण्डार ।

११४७ श्रावकाचारभाषा—पं भागचन्द । पत्र सं ० १८६ । ग्रा० १२४८ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-ग्राचार शास्त्र । र० काल सं ० १६२२ ग्रापाढ सुदी ८ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं ० २८ ।

विशेष-प्रमितिगति श्रावकाचार की भाषा टीका है । ग्रन्तिम पत्र पर महावीराप्टक है ।

११४८ मावकाचार " " । पत्र संख्या १ से २१ । ग्रा० ११४४ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय-ग्राचार गास्त्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० सं० २१८२ । ट भण्डार ।

विशेष-इससे आगे के पत्र नहीं है।

११४६. श्रावकाचारः । पत्र स० ७ । ग्रा० १०६ ४४६ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-ग्राचारज्ञाभ्त्र । र० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० १०८ । छ भण्डार ।

विशेप-- ६० गाथाये है।

११४०. श्रावकाचारभाषा : "। पत्र स० ५२ से १३१ । ग्रा० ६२४५ इख्न । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्राचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० २०६४ । त्र्य भण्डार ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

११४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० स० ६६६ । क भण्टार ।

११४२. प्रति सं० ३ । पत्र स० १११ से १७४ । ले० काल 🗙 । अपूर्ण । वे० सं० ७०६ । इ भण्डार ।

११४३. प्रति स०४। पत्र स०११६। ले० काल सं०१६६४ भादता बुदी १। पूर्ण। वे न०७१०। इ भण्डार।

विशेष---गुराभूषरा कृत श्रावकाचार की भाषा टीका है। सबत् १५२६ चैत सुदी ५ रिववार की यह प्रत्य जिहानाबाद जैसिंहपुरा में लिखा गया था। उस प्रति से यह प्रतिलिपि की गयी थी।

११४४. प्रति सं ८ ४। पत्र सं० १०८। ले० वाल 🗙 । ग्रपूर्गा । वे० सं० ६८२। च भण्डार ।

११४४ श्रुतज्ञानवर्णन । पत्र म० ६। ग्रा० १११८७ देख । भाषा-श्निदी । विषय-अर्म । र० या । × । ने० कान × । पूर्ण । वे० म० ७०१ । क भण्डार ।

१६४६ प्रति स० २। पत्र स० ८। ले० काल 🗙 । ते० न० ७०२। क भण्डार।

११४७. सप्तरलोकीगीता " " । पत्र म० २ । ग्रा० १४४ इख्र । भाषा-मम्फृत । थिपय-धर्म । उ० वाल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ग । वे० मं० १७४० । ट भण्डार ।

११४८ समिकतढाल-आसकरण । पत्र मं० १। ग्रा० ६ ४४ इद्ध । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । -० काल × । ले० काल सं० १८३५ । पूर्ण । वे० म० २१२६ । अभण्डार ।

११४६. समुद्धात्भेट " " । पत्र स० ४ । म्रा० ११४५ इञ्च । भाषा-सम्मृत । विषय-निद्धात । २० वाल 🗴 । ले० काल 🗴 । म्रपूर्ण । वे० सं० ७८८ । ए भण्डार ।

११६०. सम्मेटशिखर महात्म्य—दीत्तित देवदत्त । पत म० ६१ । म्रा० ११%६ उद्या भाषा— भंग्कृत । र० काल मं० १६४५ । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० म० २८२ । स्त्र भण्डार ।

११६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४७ । ले॰ काल 🗴 । वे॰ मं॰ ७६५ । ढ भण्डार ।

११६२. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४० । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० स० ३७५ । च भण्टार ।

११६३ सम्मेदशिखरमहात्म्य-लालचन्द । पत्र म० ६५ । म्रा० १३×५ । भाषा-हिन्दी (पद्य) ।

विपत्र-धर्म। र० काल स० १८४२ फाग्रुग्। सुदी ४। ले० काल 🗙 । पूर्ग । वे० सं० ६६०। क भण्डार।

विशेष-भट्टारक श्री जगतकीर्ति के शिष्य लालचन्द ने रेवाडी में यह ग्रन्थ रचना की थी।

११६४. सम्मेदशिखरमहात्म्य-मनसुखलाल । पत्र म० १०६ । ग्रा० ११४५ दृ दृ । भागा-

विशेप--रचना सवन् सम्बन्धी दोहा--

वान वेद शशिगये विक्रमार्क तुम जान । अश्विन मित दशमी सुग्रुरु ग्रन्थ ममापत ठान ।।

लोहाचार्य विरचित ग्रन्थ की भाषा टीका है।

११६४. प्रांत सं०२। पत्र सं०१०२। ले० काल म०१८८४ चैत सुदी२। वे० सं०७८। रा भण्डार। ११६६. प्रति सं०३। पत्र सं०६२। ले० काल सं०१८८७ चैत सुदी १५। वे० म० ७६९। इ भण्डार।

विशेष-श्योजीरामजी भावसा ने जयपुर मे प्रतिलिपि की।

११६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४२ । ले० काल स० १६११ पीप बुदी १५ । वे० स० २२ । क्र

११६८. सम्मेदशिखरविलास —केशरीसिंह। पत्र त० २। श्रा० ११६४७ इख । भाषा-हिन्दी। विषय-वर्म। र० काल २०वी शताब्दी। ने० काल ४। पूर्ण। वे० त० ७९७। हः भण्डार।

११६६ सम्मेदशिखर विलास—देवाब्रह्म । पत्र सं० ४ । ग्रा० ११३×७३ डब्र्स । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-धर्म । र० काल १८वी शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६१ । ज भण्डार ।

११७०. संसारस्वरूप वर्णंन "| पत्र म० ५। ग्रा० ११ \times ५ डब्र | भाषा—संस्कृत | विषय—धर्म | र० काल \times | ले० काल \times | पूर्ण | वे० स० ३२६ | व्य भण्डार |

११७१ सागारधर्मामृत—पं० त्र्याशाधर । पत्र सं० १४३ । श्रा० १२६ ४०३ डब्झ । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावको के श्राचार धर्म का वर्णान । र० काल सं० १२६६ । ले० काल स० १७६८ भादवा बुदी ४ । पूर्णा । वे० स० २२८ । श्र भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ सस्कृत टीका सहित है। टीका का नाम भव्यकुमुदचिन्द्रका है। महाराजा सवाई जयसिंहजी के शासनकाल में ग्रामेर में महात्मा मानजी ने प्रतिलिति की थी।

११७२. प्रति संट २। पत्र म० २०६। ले० काल स० १८८१ फाग्रुस सुदी १। वे० स०, ७७४। क भण्डार।

विशेष--महात्मा राधाकृष्णा किशनगढ वाले ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की ।

११७३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५६ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ७७४ । क भण्डार ।

११७४. प्रति स० ४। पत्र म० ४७ । ले० काल 🔀 । वे० म० ११७ । घ भण्डार ।

विशेप---प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

११७४ प्रति सं० ४। पत्र सं० ५७ । ले० काल 🔀 । वे० सं० ११८ । घ भण्डार ।

विशेप—४ मे ४० तक के पत्र किसी प्राचीन प्रति के है बाकी पत्र दुबारा लिखाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है।

११७६. प्रति सं०६। पत्र स०१५६। ने० काल सं०१८६१ भादवा बुदी ४। वे० स०७८। छ

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीका यहित है । सागानेर मे नोनदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय मे स्वपठनार्थ प्रति-लिपि की थी ।

११७७ प्रति स०७। पत्र सं०६१। ले० काल सं०१६२८ फाग्रुए। मुद्दी १०। ते० सं०१४६। ज भण्डार।

विशेष--प्रति टब्बा टीका सिहत है। रिचयता एव लेखक दोनों की प्रशस्ति है।

११७८. प्रति सं ० ८ । पत्र स० १४० । ले० काल 🗴 । वे० स० १ । व्य भण्डार ।

विगेष--प्रति प्राचीन एव शुद्ध है।

११७६. प्रति सं० ६। पत्र स० ६६। ले० काल सं० १५६५ फाग्रुग्। सुदी २। वे० सं० १८। सण्डार।

विशेष-प्रशस्ति-खण्डेलवालान्वये ग्रजमेरागोत्रे पाढे डीडा तेन दृदं धर्मामृतनामोपाध्ययन ग्राचार्य नेमिचन्द्राय दत्तं । भ० प्रभाचन्द्र देवस्तत् शिष्य मै० धर्मचन्द्राम्नाथे । ' ११ में . प्रति सं० १०। पत्र सं० ४६। लेव काल 🗴। यपूर्ण । वेव सव १० क । व्य मण्डार ।

११८१. प्रति सं० ११। पत्र स० १४१। ले॰ काल 🗴 । वे॰ नं॰ ४४६। वा मण्डार ।

विशेष-स्वीपज्ञ टीका सहित है।

११८२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० स० ४५० । व्य भण्डार ।

विशेष-भूलमात्र प्रति प्राचीन है।

११=३. प्रति सं० १३। पत्र स० १६६। ले० काल स० १५६४ फाग्रुग् मुवी १२। ते० सं० ४००। व्य भण्डार।

विशेष-प्रशस्ति— संवत् १५६४ वर्ष फाल्गुन सुदो १२ रिववासरे पुनर्वसुनक्षत्रे श्रीमूलसंघे निन्दसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनित्व तत्पट्टे श्री शुभचन्द्रदेवातरपट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवातत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवतत्शिष्यमण्डलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत्मुख्यशिष्याचार्य श्री नेमिचनद्रदेवास्तैरिय धर्मामृतनामागाधरश्रावकाचार्याका भव्यकुमुदचित्रकानान्नी लिखापितात्मेपठनार्थं ज्ञानावरणादिकमेक्षयार्थं च ।

११८८. प्रति सं १४। पत्र स० ४०। ने० काल 🗙 । अपूर्ण । वै० सं० ५०६। व्य भण्डार !

विशेप--संस्कृत टिप्पए। सहित है।

११८४. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ४१ । ते० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० स० १६६५ । ट भण्डार ।

११८६. प्रति सं०१६। पत्र सं०२ सं ७२। ले० काल स० १५६४ भावता सुवी १ । अपूर्ण। वे० प्रस्था २११०। ट भण्डार।

विशेप--प्रथम पत्र नहीं है। लेखक प्रशस्ति पूर्ण है।

११८७. सातव्यसनस्वाध्याय '''। पत्र सं० १। ग्रा० १०४५ इम्रा। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। ४० काल ४। ते**० काल सं० १७८०। पूर्ण। वे०** स० १८७३।

विशेष—रूपमञ्जरी भी दी हुई है जिसके ग्राठ पद्य है।

े ११८८. साधुदिनचर्या''' ''। पत्र स० ६ । आ० ६३×४३ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-ग्राचार शास्त्र । र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे० सं॰ २७४ ।

विशेष-श्रीमत्त्रपोगरो श्री विजयदानसूरि विजयराज्ये ऋषि स्पा लिखित ।

११८६. सामायिकपाठ—बहुमुनि । पत्र स० १६ । ग्रा० ८४५ इझ । भाषा अप्रकृत , सस्कृत । विषय— धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० २१०१ । ऋ भण्डार ।

विशेष-शिन्तम पुष्पिका निम्न प्रकार है-

इति श्रोबहुमुनिबिरिचतं सामिबकपाठ सपूर्ण।

१९६०. सीमायिकपाठ"" "। पर्त्र स० २६ । आ० मरे×६ इखा। भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण । वे० स० २०६६ । आ भण्डार ।

११६१. प्रति सट २ | पत्र सं० ४६ | ले० काल 🗴 | पूर्यो | वे० सं० १६३ | ऋ भण्डार | विशेष—संस्कृत मे टीका भी दी हुई है |

११६२. प्रति सं० ३। पत्र सं० २। ले० काल 🗴 । वे० स० ७७६ । क भण्डार ।

११६३. सामाधिकपाठ " " । पत्र सं॰ ५० । ग्रा॰ ११५ \times ७ $\frac{1}{8}$ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । १० काल \times । ले० काल स० १६५६ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वे० सं॰ ७७६ । त्र्य भण्डार ।

११६४. प्रति संटर्रा पर्न स० ६८। ले० काल सं० १८६१। वे० सं० ७७७। त्रा भण्डार। विशेष-उदयवन्द ने प्रतिलिपि की थी।

११६४. प्रति सं २ । पत्र स० ५ । ले० काल 🗙 । ज्ञपूर्श । वे० सं० २०१७ । ऋ भण्डार ।

११६६. प्रति सं० ४। पत्र स० २६। ले० काल 🗴 । वे० सं० १०११ । स्र भण्डार ।

११६७. प्रति सं ८ । पत्र सं ० ६ । ले० काल 🗙 । वे० स० ७७८ । क भण्डार ।

११६८. प्रति सं २६। पत्र स० ५४ । ले० काल स० १८२० कार्त्तिक बुदी २। वे० स० ६४। व्य भण्डार।

विशेप-ग्राचार्य विजयकीति ने प्रतिलिपि की थी।

११९६. सामायिक पाठ "" । पंत्र स० २५ । आ० १०×४ इक्र । भाषा-प्राकृत, सस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल स० १७३३ । पूर्ण । वे सं० ८१४ । ड भण्डार ।

१२००. प्रति स०२। पत्र स०६। ले० काल स०१७६८ ज्येष्ठ सुदी ११। वे० सं०८१५। रू भण्डार।

> १२०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल × । श्रपूर्श । त्रि० स० ३६० । च भण्डार । विशेष—पत्रो को चूहो ने खालिया है ।

१२०२ प्रति सं०४। पत्र सं०६। ले० काल ×। प्रपूर्श। वे० म०३६१। च भण्डार।
१५०३. प्रति सं०४। पत्र स०२ से १६। ले० काल ×। प्रपूर्श। वे० स० ६१३। ड भण्डार।
१२०४. सामायिकपाठ (लघु)। पत्र स०१। ग्रा०१०३×५ इख्र। भाषा—मंस्कृत। विषय—धर्म।
र० काल ×। ले० काल ×। पूर्श। वे० स० ३८८। च भण्डार।

१२०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । नै० स० ३८६ । च भण्डार । १२०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । ने० स० ७१३ क । च अण्डार ।

१२०७. सामायिकपाठभाषा—ं बुध महाचन्द । पत्र सं० ६ । ग्रा० ११×५ दे इख्र । नाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल 🗙 । 'ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० ७०८ । च भण्डार ।

विशेष-जीहरीलाल कृत ग्रालोचना पाठ भी है।

१२८८. प्रति संट २ | पत्र स० ७ | ले० काल स० १९५४ सावन बुदी ३ | वे० स० १६४१ | ट भण्डार। १२०६. सामायिकपाठभाषा—जयचन्द् छाबड़ा । पत्र स० ५२ । म्रा० १२५४५ डख्न । भाषा— हिन्दी गद्य। विषय-धर्म । र० काल 🗙 । ले० काल म० १६३७ । पूर्ण । वे० म० ७५० । स्त्र भण्डार ।

१२१०. प्रति सं० २ | पत्र स० ४८ । ले॰ काल स० १६५६ । वे॰ स० ७८१ | स्त्र भण्डार ।

१२११. प्रति सं० ३ । पत्र म० ४६ । ले० काल 🗴 । वे० स० ७८२ । प्र भण्डार ।

१२१२. प्रति संट ४। पत्र स० ४६। ले० काल 🗙 । वे० स० ७८३। स्त्र भण्डार ।

१२१३. प्रति स० । पत्र स० २६ । ले० काल स० १६७१ । वे० स० ५१७ । त्र्य भण्डार ।

विशेष-श्री केशरलाल गोधा ने जयपूर मे प्रतिलिपि की थी।

१२१४. प्रति सं०६। पत्र स०३६। ले० काल स० १८७४ फाग्रुग्। मुदी ६। वे० म०१८३। ज भण्डार।

१२१४ प्रति सं०७। पत्र स०४५। ले० काल स०१६११ श्रामोज मुदी = । वे० स० ५६। ञ भण्डार।

१२१६. सामाथिकपाठभाषा—भ० श्री तिलोकचन्द्र। पत्र स० ६४ । ग्रा० ११×५ इख्र । भाषा— हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल सं० १८६२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७१० । च भण्डार ।

१२१७. प्रति स०२। पत्र सं० ७५। ले० काल सं० १८६१ सावन बुदी १३। वे० सं० ७१३। च भण्डार।

१२१८. सामायिकपाठ भाषा "। पत्र स० ४५ । म्रा० १२×६ डञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल स० १७६८ ज्येष्ठ मुदी २ । पूर्ण । वै० स० १२८ । म्रा मण्डार ।

विशेष—जयपुर मे महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल में जती नैरामागर तरागच्छ वाले ने प्रतिलिपि की थी।

१२१६. प्रति स्प०२। पत्र स० ५८। ले० काल स० १७४० बैशाख मुदी এ। वे० म० ७०६। च भण्डार।

विशेष—महात्मा सावलदास बगद वाले ने प्रतिलिपि की थी। सम्कृत ग्रथवा प्राकृत छन्दो का ग्रर्थ दिया हुग्रा है।

१२२० सामायिकपाठ भाषा" '। पत्र स० २ से ३ । आ० ११३×५१- इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१२ । ड भण्डार ।

१२२१ प्रति सं०२ | पत्र सं०६ । ले० काल 🗙 । वे० स० ५१६ । च भण्डार ।

१२२२. प्रति सं० ३ । पत्र स० १५ । ले० काल × । श्रपूर्ण । वे० स० ४८६ । ड भण्डार ।

१२२३. सामायिकपाठभाषा ''''। पत्र स० ६७ । आ० ६४५६ डब्झ । भाषा-हिन्दी (हू ढारी) विषय-धर्म । रचनाकाल ४ । ले० काल स० १७६३ मगसिर मुदी = 1 वे० स० ७११ । च भण्डार ।

१२२४. सार्समुचय-कुलभद्र । पत्र न० १५ । ग्रा० ११×४ है इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल स० १६०७ पौष बुदी ४ । वे० सं० ४५६ । ञ भण्डार ।

विशेष--मंडलाचार्य धर्मचन्द के शिष्य ब्रह्मभाऊ बोहरा ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी।

१२२४ सावयधम्म दोहा—मुनि रामसिंह । पत्र म० ८ । ग्रा० १०५ ४४ । इब्र । भाषा-ग्रपभ्रंश । विषय-ग्राचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । वे० म० १४१ । पूर्ण । त्र्य भण्डार ।

विशेप---प्रति ग्रति प्राचीन है।

१२२६. सिद्धों का स्वरूप ' । पत्र सं० ३८ । ग्रा० ४imes३ छ्ख्र । भाषा—िहन्दी । विषय—धर्म । र० काल imes । ले० काल imes । पूर्ण । वे० सं० ५५४ । ङ भण्डार ।

१२२७. सुदृष्टि तरंगिग्रीभाषा—टेकचन्द्र । पत्र स० ४०५ । ग्रा० १५×६६ डख्न । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल स० १८३८ सावग्र सुदी ११ । ले० काल म० १८६१ भारवा मुदी ३ । पूर्ण । वे० म० ७५७ । ग्रा भण्डार ।

विशेष---ग्रन्तिम पत्र फटा हुआ है।

१२२८. प्रति सं०२ | पत्र मं० ८०। ले० काल ४। वे० सं० ६६४ । ऋ भण्डार।

१२२६. प्रति स० ३ । पत्र सं० ६११ । ले० काल मं० १६४४ । वे० स० ५११ । क भण्डार ।

१२३०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३६१। ले० काल स० १८६३। वे० म० ६२। ग भण्डार।

विशेष-स्योलाल साह ने प्रतिलिपि की थी।

१२३१. प्रति संट ४ । पत्र मं० १०५ मे १२३ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० म० १२७ । घ भण्डार ।

१२३२. प्रति सं ०६। पत्र मं ०१६६। ले० काल × | ते० मं ०१२८। घ भण्डार।

१२३३ प्रति सं २ ७ । पत्र म० ५४५ । ले० काल सं० १८६८ ग्रामोज मुदी ६ । ते० म० ८६८ । ड

भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष - २ प्रतियो का मिश्रग् है ।

१२३४. प्रति सं०८ । पत्र म० ५००। ले० काल मं० १९६० कात्तिक बुदी ५। वे० मं० ८६९ । ड भण्डार ।

१२३४. प्रति सं० ६ । पत्र मं० २०० । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० स० ७२२ । च भण्डार । १२३६ प्रति सं० १० । पत्र स० ४३० । ले० काल मं० १६४६ चैन बुदी म । वे० मं० ११ । ज

१२३७. प्रति सं० ११। पत्र सं० ५३५। ले० काल म० १८३६ फागुरा बुदी ४। वे० म० ८६। म. भण्डार।

१२३८. सुदृष्टितरंगिस्सीभाषा ' " । पत्र म० ५१ मे ५७ । आ० १२३४७३ डब्र । भाषा प्रहिन्दी । विषय-धर्म । र० काल ४ । ने० काल ४ । अपूर्स । वे० मं० ८६७ । इस्मण्डार ।

१२३६. सोनागरपद्मीसी-भागीरथ। पत्र ग० ६। गा० ११८८ द्वा भागा-हिन्दा । निपय-धर्म । र० काल सं० १८६१ ज्येष्ठ सुदी १४। नि० कारा 🔀 । ये० ग० १४७ । छ भण्यार ।

१२४०. सोलह्कारणभावनावर्णन-पं मदासुत्र । पत्र गर ८६ । प्रात १२८ = इक्ष । भागा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल 🔀 । ते० काल 🔀 । पूर्ण । वे० गर ७२६ । च भण्डार ।

१२४१. प्रति संट २ । पत्र मरु १३ । लेट काल 🗴 । वेट संट १८८ । छ नण्या ।

१२४२. प्रति सं० ३। पत्र म० ४७। ले॰ नाल म० १६२७ नात्रमा गुर्ग ११। ये॰ म० १८८। स्थापा गण्डार।

विशेष--- मवाई जयपुर मे गगोशीताल पाड्या ने फागी के मन्दिर म प्रतिलिपि की था।

१२४३. प्रति सं० ४ । पत्र म० ३१ ने ६६ । ने० गान म० १६५६ मार गुरी २ । पपूर्ण । ने० स० १६० । छ भण्डार ।

विशेष--- प्राहम के ३० पत्र नहीं है । मुन्दरलात पाठ्या ने चारम् में प्रतिलिपि नी वी ।

१२४४. सोलहकारणभावना एवं दशलच्या वर्म वर्णन—१० महासुख । पत्र ग० ११८। माइन ११३×६ डब्ब । भाषा-हिन्दी । विषय-पर्म । र० कात × । ले० काल ग० १६८१ मगमिर मुडी १३ । पूर्ण । पै० स० १४ । म भण्डार ।

१२४४. स्थापनानिर्णयः "। पत्र मं०६। आ०१२४६ इत्रा। भाषा-सम्प्रत्। त्रिपय-भर्म। र०काल ४। त्रुर्ण। वे० सं०६००। इ. भण्डार ।

विगेष-विद्वज्जनबोधक के प्रथम काट का श्रष्टम उल्लाग है। हिन्दी शेका नहित है।

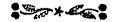
१२४६. स्वाध्यायपाठ " । पत्र म० २०। मा० २८६६ दश्च । भाषा-प्राह्त, सन्तृत । विषय- ह्या । र० काल 🗡 । ले० काल 🗡 । पूर्ण । वे० म० ३३ । ज भण्डार ।

१२४७. स्वाद्यायपाठभाषा"" । पत्र न० ७ । ग्रा॰ ११३×७१ द्वञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५४२ । क भण्डार ।

१२४८. सिद्धान्तधर्मोपदेशमाला" "। पत्र म० १२ । ग्रा० १९×३ । प्रापा-प्राप्तत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२१ । ख भण्डार ।

१२४६. हुण्डावसर्पिणीकालदोप—माण्कचन्द्। पत्र सं० ६ । भागा-हिन्दी । निगय-धर्म । र० काल 🗴 । ले० काल स० १६३७ । पूर्ण । वे० मं० ६४४ । क भण्डार ।

विशेष-वाबा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि की थी।



विषय--श्रध्यात्म एवं योगशास्त्र

> १२५१. प्रति सं०२। पत्र मं०६। ले० काल म० १६३७ भादवा बुदी ६। वे० स० ४। क भण्डार। विजेप--- ऊपर नीचे तथा पत्र के दोनो ग्रोर सस्कृत मे टीका लिखी हुई है।

1 1

१२४२ प्रति सं २ । पत्र स० ६ । ले० काल सं० १६३ स्त्रापाढ बुदी १० । वे॰ सं० ५२ । ज

भण्डार ।

विशेप-प्रति संस्कृत टीका सहिन है। विवुध फतेलाल ने प्रतिलिपि की थी।

१२४३. ऋध्यातमपत्र—जयचन्द् छाबङ्गा । पत्र सं०७। ग्रा० ६४४ इख्र । भाषा-हिन्दी (गद्य)। १० काल १४वी ज्ञाताब्दा । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १७ । क भण्डार ।

१२४४. त्राध्यात्मवत्तीसी—वतारसीतास । पत्र सं०२। त्रा० ६४४ इख्र। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय-ग्रध्यात्म। र० काल १७वी शताब्दी। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं०१३६६। त्रा भण्डार।

१२४४. ऋध्यात्म बारहखडी —किव सूरत । पत्र सं०१४ । ग्रा० ५५ ४४ इख । भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-ग्रन्थात्म । र० काल १७वी जताव्दी । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं०६ । ड भण्डार ।

१२४६. ऋष्ट्रपाहुड़ — कुन्द्कुन्दाचार्य । पत्र सं० १० मे २७ । आ० १०४४ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय—अन्यात्म । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० १०२३ । ऋ भण्डार ।

विजेप--प्रति जीर्गा है। १ से ६ तथा २४--२५वा पत्र नहीं है।

१२४७. प्रति सं० २ । पत्र म० ४८ । ले० काल सं० १९४३ । वे० स० ७ । क भण्डार ।

१२४८. ऋष्ट्रपाहुङ्भाषा—जयचन्ट छ्।बङ्ग । पत्र सं० ४३० । आ० १२×७३ डख्न । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-अध्यात्म । र० काल स० १८६७ भादवा मुदी १३ । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० १३ । क भण्डार ।

विशेष--मूल ग्रन्थकार श्राचार्य कुन्दकुद है।

१२४६. प्रति स॰ २। पत्र स० १७ मे २४६। ले० काल 🗙 । अपूर्गा। वे० सं० १४। क भण्डार।

१२६०. प्रति स० ३ | पत्र स० १२६ । ले० काल 🔀 ।। वे० सं० १४ । क भण्डार ।

१२६१. प्रति सं० ४ । पत्र स० १६७ । ले० काल 🗙 । वे० सं० १६ । क भण्डार ।

१२६२. प्रति सं० ४ । पत्र म० ३३४ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० १ । क भण्डार । १२६३. प्रति स० ६ । पत्र सं० ४५१ । ले० काल सं० १६४३ । वे० स० २ । क भण्डार । १२६४. प्रति सं०७ । पत्र स० १६४ । ले० काल × । त्रे० स० ३ । च भण्डार ।

१२**६५. प्रति स० म ।** पत्र म० १६३ | ले० काल म० १६३६ ग्रामोज मुदी १५ । वै० म० ३८ । द भण्टार ।

विशोप—दश्यत्र प्राचीन प्रति है। यद में १२३ पत्र फिर लिखाये यथे है तहा १२४ में १६३ तक के पत्र किसी अन्य प्रति के हैं।

१२६६ प्रति सं० ६ । पत्र म० २४३ । ले० काल म० १९५१ श्रापाट बुदी १८। २० न० ३६ । प्र भण्डार ।

> १२६७. प्रति सं०१०। पत्र म०१६७। ले० काल 📈 । वे० म० ५०=। च मण्टार। १२६८. प्रति सं०११। पत्र म०१४५ । ले० काल म०१८८० मावन बुदी १। वे० म०३=।

स्त भण्डार ।

१२६६. श्रात्मध्यान-वनारसीटास । पत्र म० १। ग्रा० ८ ४८ इझ । भाषा-हिन्दी (पत्र)। विषय-ग्रात्मचितन । र० काल × । ले० काल × । वे० म० १२७६ । श्रा भण्डार ।

१२७०. **आत्मप्रवोध—कुमारकवि** पत्र स० १३ । आ० १०३×४५ रुझ । भाषा—यम्मृत । विषय— श्रध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्गा । वे० स० २५ । श्र भण्डार ।

१२७१. प्रति स०२। पत्र स०१४। ले० काल 🗵 । वे० म० ३८० (क) व्य भण्डार ।

१२७२ त्र्यात्मसंबोधनकाटय " । पत्र म०२७ । ग्रा०१०×४३ इख्र । भाषा-ग्रपभ्रं म । विषय-

१२७३. प्रति सं २ । पत्र म० ३१ । ले० काल 🗴 । अपूर्मा । वे० म० ५२ । ड भण्डार ।

१२७४. श्रात्मसंबोधनकाटय-ज्ञानभूपण्। पत्र म०२ मे २६ । श्रा० १०४८ ८ इझ । भाषा-

मस्कृत | विषय-ग्रध्यात्म | र० काल 🗴 | ल० काल 🗴 | अपूरा | वे० म० १६८७ | ऋ भण्डार |

१२७४ त्र्यात्मावलोकन दीपचन्द् कासलीवाल । पत्र म० ६६ । ग्रा० १११८५ हम्र । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-ग्रध्यात्म । र० काल 🗙 । ले० काल म० १७७४ फाग्रुन बुदी । वे० म० २१८ । ज्यू भण्डार ।

विशेष--बृन्टावन मे दयाराम लच्छीराम ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिनिधि की थी।

१२७६. **त्रात्मानुशासन—गुणभद्राचार्य ।** पत्र स० ४२ । ग्रा० १०८५ इञ्च । भाषा-सम्द्रन । विषय-ग्रन्यात्म । र० काल 🗴 । ने० काल 🗴 । वे० स० २२६२ । पूर्ण । जीर्म । त्र्य भण्डार ।

विषेप—प्रशस्ति— """ वर्ष """ दाके """
श्रीनिमनाथर्चंप्याजये (श्रीमूलसपे नद्याम्नाये बलात्कारगरो सग्म्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनिद्देवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत् विष्यमङलाचार्य श्रीधर्मचन्द्राम्त-दाम्ताये । लिखित ज्योति (पी) श्री गैया तत्पुत्र महेम लिखित ।

भण्डार ।

१२७७ प्रति मं०२।पत्र सं० ७४। ने० काल सं० १५६४ ग्रापाह बुदी ८। वे० सं० २६६। व्य भण्डार।

१२७८ प्रति सं०३। पत्र स०२७। ने० कान मं०१८६० मात्रण मुदी ४। वे० स०३१५। इत्र

१२७६. प्रति स० ४ | पत्र स० ३१ । ले० काल 🗴 । वे० सं० १२६८ । ऋ भण्डार । विशेष—प्रति जीर्गा एव प्राचीन है । १२८०. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३५ । ले० काल 🗴 । ऋपूर्गा । वे० स० २७० । ऋ भण्डार ।

१२८०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । त्रे० म० ७६२ । द्या भण्डार ।
१२८२ प्रति सं० ७ । पत्र स० २५ । ले० काल × । त्रे० सं० ७६३ । द्या भण्डार ।
१२८३. प्रति सं० ६ । पत्र स० २५ । ले० काल × । प्रपूर्ण । त्रे० सं० २०६६ । द्या भण्डार ।
१२८४. प्रति सं० ६ । पत्र स० १० । ले० काल म० १६४० । त्रे० स० ४७ । क्र भण्डार ।
१२८५. प्रति सं० १ । पत्र स० ४१ । ले० काल म० १८८० । त्रे० स० ४६ । क्र भण्डार ।
१२८६. प्रति सं० ११ । पत्र स० ४१ । ले० काल म० १८८० । त्रे० स० ४६ । क्र भण्डार ।

१२८७. प्रति संट १२। पत्र म० ५३। ले० काल सं० १८७२ चैत सुदी ८। वे० म० ५३। ङ भण्डार।

> विशेष—हिन्दी ग्रर्थ सिहत है। पहिले सस्कृत का हिन्दी ग्रर्थ तथा फिर उसका भावार्थ भी दिया हुग्रा है। १२८८ प्रति सं० १३। पत्र सं० २३। ले० काल सं० १७३० भादवा सुदी १२। वे० स० ५४। छ

भण्डार ।

विशेप--पन्नालाल बाकलीवाल ने प्रतिलिपि की थो।

१२८६. प्रति स०१४। पत्र म०५६। ले० काल स० १६७० फाग्रुन मुदी २। वे० सं० २६। च भण्डार।

विशेप--- रहितगपुर निवामी चौधरी सोहल ने प्रतिलिपि करवायी थी।

१२६० प्रति सं०१४। पत्र म० ४६। ने० काल म० १६६५ मंगिमर मुदी ५। त्रे० न० २२०। त्र भण्डार।

विशेष—मडलाचार्य धर्मचन्द्र के शामनकाल मे प्रतिलिपि की गयी थी।

१२६१. त्रात्मानुशासनद्यीका-प्रभाचन्द्राचार्य। पत्र मं० ५७। त्रा० ११४५ इक्क । भाषा-मन्त्रत । विषय-ग्रन्थात्म । र० काल ४ । ले० काल स० १८८२ फाग्रुए। मुदी १० । पूर्ण । वे० स० २७ । स भण्डार ।

१२६२. प्रति सं २ २ । पत्र म० १०३ । ले॰ काल सं० १६०१ । वे० म० ४८ । क भण्डार । १२६३. प्रति स० ३ । पत्र मं० ८८ । ले॰ काल स० १६८४ मगमिर मुदी १४ । वे० म० ६३ । छ

१२६६. प्रात सं० ६ । पत्र म० ८८ । ल० काल स० १६८५ मगिमर मुदी १४ । दे० म० ६३ । छ अण्डार । विशेष--वृन्दावती नगर मे प्रतिलिपि हुई।

१२६४. प्रति सं० ४। पत्र म० ४२। ने० कान मं० १८३२ बैशाप युर्वा ६। के मं० ५०। जा

विशेप-सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई।

१२६४. प्रति सं० ८ । पत्र स० ११० । स० काल म० १६१६ प्रापार गुरी १ । रे० य० ७१ । विशेष-माह तिहुण श्रग्रवाल गर्ग गोत्रीय ने गन्य की प्रतिनिधि करवामी ।

१२६६ स्त्रात्मानुशासनभाषा-पंटरोहरमतः। पत्र म० ५७ । ग्रा० १४८७ ४आ । भाषा-दिस्स (गणः) विषय-ग्रध्यात्म । र० काल 🗴 । ते० काल सं० १८६० । पूर्णः । वे० गं० ३७१ । स्त्र भण्यार ।

> {२६७. प्रति सट २ । पत्र सर १८६ । लेग राल गर १६०= । वेर गर ३१६ । स्त्र अध्यार । विशेष—प्रति सुन्दर है ।

> १२६८. प्रति सं० ३ । पत्र मं० १४८ । ले० नाल 🔏 । वे० म० ३६८ । ध्र भण्यार । १२६६ प्रति सं० ४ । पत्र म० १२६ । ले० काल स० १६६३ । वे० मं० ४३४ । ध्र्य भण्यार । १३०० प्रति सं० ४ । पत्र स० २३६ । ले० काल मं० १६३० । वे० मं० ४० । कः भण्यार । विशेष—प्रभावन्दाचार्य कृत संस्कृत टीका भी है ।

१३०१. प्रति सं० ६ । पत्र स॰ ३०५ । ले॰ काल मं॰ १६४० । ये॰ म॰ ४१ । का अण्डार । १३०२. प्रति सं० ७ । पत्र म॰ ११८ । ले॰ काल स॰ १८६६ वालिक मुदी ४ । ये॰ मं॰ ४ । छ

भण्डार ।

१३०२ प्रति सं० द्वापत्र म० ७ । ले० काल 🔨 । श्रपूर्ण । वे० स० ४४ । इ. भण्डार । १३०४ प्रति स० ६ । पत्र स० ६६ मे १०२ । ले० काल 🔀 । श्रपूर्ण । वे० स० ४६ । इ. भण्डार । १३०४ प्रति सं० १० । पत्र स० १८ । ले० काल स० १६३३ ज्येष्ठ बुदी द्वा वे० न० ४८ । स्

भग्डार ।

विशेष---प्रति सशोधित है।

१३०७. प्रति सं० १२ | पत्र सं० ६७ | ले० काल × । अपूर्ण | वे० स० ५६ | इ भण्यार | १३०८. प्रति सं० १३ | पत्र स० ६१ से १६५ । ले० काल × । अपूर्ण | वे० स० ६० | इ भण्यार | १३०६. प्रति सं० १४ | पत्र स० ७१ से १८६ | ले० काल × । अपूर्ण | वे० सं० ५१६ | च भण्यार | १३१०. प्रति सं० १४ | पत्र सं० ६६ स १४३ । ले० काल स० १६२४ कार्तिव सुदी ३ । अपूर्ण |

१२११. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ८० । ते० काल 🔀 । प्रपूर्ग । वे० स० ५१५ । च भण्डार । १२१२ प्रति सं० १७ । पत्र सं० ६५ । ते० काल स० १८५८ ग्रापाड बुदी ५ । वे० स० २२२ । ज भण्डार । विशेष—रायचन्द साहवाढ ने स्वत्रठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।
१३१३ प्रति सं०१८ । पत्र मं०१४ । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० म० २१२४ । ट भण्डार ।
विशेष—१४ से ग्रागे पत्र नहीं है ।

१३१४. त्र्याध्यात्मिकगाथा—भ० लत्त्मीचन्द् । पत्र स० ६ । श्रा० १०×४ इख्र । भाषा—श्रपश्र ग । विषय-ग्रध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२४ । व्य भण्डार ।

१३**१४. कार्त्तिकेयानुप्रेन्ता—स्वामी कार्त्तिकेय।** पत्र म० २४ । ग्रा० १२×५ इ**श्च**। भाषा-प्राकृत । विषय-ग्रन्थातम । र० काल × । ले० काल स० १६०४ । पूर्या । वे० सं० २६१ । त्र्य भण्डार ।

१३१६. प्रति सं०२। पत्र म० ३६। ले० काल ४। वे० सं० ६२८। ऋ भण्डार।

विशेष--मंस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये है । १८६ गाथायें है ।

१३१७. प्रति सु० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ६१४ । 🛪 भण्डार ।

विगेप--- २८३ गाथाये है।

१३१८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६०। ले० काल 🗶 । वे० स० ५४४। क भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची जन्द दिये है।

१३१६ प्रति सं० ४। पत्र स० ४८। ले० काल स० १८८८। वे० मं० ८४५। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द है।

१३२० प्रति सं०६। पत्र म०२०। ले० काल 🗴। प्रपूर्गा। वे० स०३१। ख भण्डार।

१३२१ प्रति सं०७। पत्र म० ३४। ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण। वे० म० ११४। इङ भण्डार।

१३२२. प्रति सः 🖛। पत्र सं० ३७। ले० काल स० १६४३ सावरा सुदी ४। वे० स० ११६ । 🗷

भग्डार ।

१३२३. प्रति सट ६। पत्र स० २८ से ७५। ते० काल स० १८८६ । ग्रपूर्स । वे० स० ११७। इ. भण्डार।

१३२४. प्रति सं०१०। पत्र स०५०। ले० काल मं० १८२५ पीप बुदी १०। वे० म०११६। इर भण्डार।

विर्वय--हिन्दी अर्थ भी है । मुनि रूपचन्द ने प्रतिनिधि की थी ।

१३०४ प्रति सं० ११ । पत्र मं० २८ । ले० काल म० १६३६ । वे० स० ४३७ । च भण्टार ।

१३२६. प्रति स० १२ । पत्र स० २३ । ले० काल 🔀 । स्रपूर्श । वे० सं० ४३६ । च भण्डार ।

१२२७. प्रति स० १२ । पत्र म० ३६ । ले० काल म० १८६६ सावरा मुदी ६ । वे० स० ४३६ । च

भेन्हार ।

१३२८ प्रति स० १३। पत्र स० १६। ने० काल स० १६२० सावरा मुदी = । वे० स० ४४०। च

१३२६. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६६ । ते० काल ग० १६५६ । वे० सं० ४८२ । च मण्डार । विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची जब्द दिये हुये हैं ।

१३३०. प्रति सं० १४ | पत्र स० ४६ | ले० काल मं० १८८१ भादया बुदी १० । वे० मं० ८० । छ्र भण्डार ।

> १३३१ प्रति स० १६ । पत्र म० ६३ । ले० काल 🔀 । ते० स० १०७ । ज सण्डार । विशेष—संस्कृत में टिप्पसा दिया हुआ है ।

१३३२. प्रति सं १७। पत्र म० १२। ने० कान 🗴 । त्रपूर्यो । वे० म० ६६ । म्ह भण्डार ।

१३३३ प्रति संट १८ । पत्र म० ६ । ने० काल 🗴 । ने० म० ४२४ । मा भण्डार ।

१३३४. प्रति सं० १६। पत्र सं० १००। ले० काल 🗸 । ग्रपूर्ण । ने० न० २०६१ । ट भण्डार ।

विशेष—११ मे ७४ तथा १०० मे आग के पत्र नहीं है।

१३३४ प्रति सं २ २०। पत्र सं० ३ ६ मे ६४। ले० काल 🔀 । अपूर्ण। वे० न० २०६६। ट भण्डार।

विशेप-प्रति मस्यृत टीका महित है।

१३३६ कार्त्तिकेयानुप्रेताटीका '। पत्र म० ५४ । ग्रा० १०३८ = इड्डा भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रध्यातम । र० कान 🗴 । ले० कान 🗴 । अपूर्ण । वे० म० ७३२ । अप्र मण्डार ।

१३३७ प्रति सं० र । पत्र म० ६१ मे ११० । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० म० ११६ । ह मण्डार ।

१३२८ कार्त्तिकेयानुप्रेत्ताटीका—शुभचन्द्र । पत्र स० २१० । ग्रा० ११३×५ इञ्च । भाषा-नन्त्र । विषय-ग्रन्यातम । र० काल म० १६०० माघ बुदी १० । ने० काल म० १८५८ । पूर्ण । वे० मं० ८४३ । क भण्डार ।

१३३६. प्रति सं०२। पत्र म० ४६। ले० काल 🗴 । वे० म० ११७ । अपूर्ण । इ मण्डार ।

१३४०. प्रति स० ३। पत्र स० ३४। ने० कान 🗴 । प्रपूर्ण । वे० म० ४४१। च भण्डार ।

१४४१ प्रति सं ८४ । पत्र म० ४१ मे १७२ । ने० काल म० १८३२ । अपूर्ण । ने० स० ४८३ । च भण्डार ।

१३४२. प्रति सं० ४ । पत्र में० २१७ । ने० काल न० १८२२ ग्रासीज मुदी १२ । वे० न० ८६ । ह्य मण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे माधोमिह के शामनकाल में चन्द्रप्रभु चैत्यालय में प० चोखचन्द के शिष्य रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१३४२. प्रति सं०६। पत्र मं० २८६। ले० काल म० १८६६ आपाड सुदी ६। वे० मं० ५०५। व्य

१३४४. कार्त्तिकेयानुप्रेत्तासापा—जयचन्द छ।वडा । पत्र म० २३७ । ग्रा० ११४८ इझ । भाषा— हिन्दी (गद्य) । विषय—ग्रन्थात्म । २० काल गं० १८६३ सावरण वृदी २। ते० काल म० १०२६ । पूर्ण । वे० मं० ८४६ । क मण्डार । १३४४. प्रति सं०२। पत्र स०२८१। ले० काल ×। वे० सं०२४६। ख भण्डार। १३४६ प्रति सं०३। पत्र सं०१७६। ले० काल सं०१८८३। वे० स०६५। ग भण्डार। विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायीथी।

१३४७. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०६। ले० काल 🗙 । अपूर्ण। वे० स० १२०। ङ भण्डार।

१३४८ प्रति सं ० ४ । पत्र स० १२६ । ले० काल सं० १८५४ । वे० सं० १२१ । ड भण्डार ।

१३४६ कुशलागुवंधित्राब्सुयगां " "" पत्र सं० ८ । स्रा० १०४४ इख । भाषा-प्राकृत । विषय-अन्यात्म । र० काल ४ । ले० काल ४ । वे० सं० १६८३ । ट भण्डार ।

विशेष-प्रति हिन्दी उच्चा टीका सहित है ।

इति कुशलाणुबंधिग्रज्भुयणं समत्त । इति श्री चतुशरण टवार्थ । इसके ग्रतिरिक्त राजसुन्दर तथा विजयदान सूरि विरचित ऋषभदेव स्तुतिया ग्रौर है ।

१३५०. चक्रवर्त्तिकीबारहभावनाःः । पत्र सं० ४ । ग्रा० १०६ ४५ इख्र । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-ग्रध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४० । च भण्डार ।

१३४१. प्रति सं०२। पत्र सं०३। ले० काल 🗙 । वे० सं० ५४१। च भण्डार।

१३४२. चतुर्विधध्यान " "। पत्र सं०२। श्रा०१० \times ४६ डक्कः। भाषा–सस्कृतः। विषय–योगः। र० काल \times । ले० काल \times \mathbb{I} पूर्णः। वे० सं०१५१। भाभण्डारः।

े १३४३. चिद्विलास—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र सं० ४३। ग्रा० १२४६ इख्र । भाषा-हिन्दी (गद्य) विषय-ग्रध्यातमे । र० काल ४। ले० काल सं० १७७६ । पूर्ण । वे० सं० २१ । घ मण्डार ।

१३४४. जोगीरासो—जिनदास । पत्र सं० २ । ग्रा० १०३ \times ४३ डक्क । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय– ग्रन्थात्म । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ५६१ । च भण्डार ।

१३४४. ज्ञानद्पेश-साह दीपचन्द्। पत्र सं० ४०। ग्रा० १२५४४ इखा। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-ग्रध्यात्म। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । वे० सं० २२६। क भण्डार।

१३४६. प्रति सं०२। पत्र सं०२५। ले० काल सं०१८६४ सावरण सुदी ११। वे० सं० ३०। घ भण्डार।

विशेष—महात्मा उम्मेद ने प्रतिलिपि की थी। प्रति दीवान ग्रमरचन्दजी के मिन्दर मे विराजमान की गई।

१३४७.ज्ञानवावनी—वनारसीदास । पत्र सं० १० । ग्रा० ११४५ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-

१३४८. ज्ञानसार—मुनि पद्मसिंह। पत्र सं० १२। आ० १०३४५६ डखा | भाषा-प्राकृत। विषय-श्रम्यात्म। र० काल स० १०=६ सावरा सुदी ६। ले∙ काल,×। पूर्गा |,वे॰ सं० २१८ |,क भण्डार | विशेष—र्चनाकाल वाली गाथा निम्न प्रकार है—
सिरि विक्कमस्सव्दावे दशसयछासी खुंयमि वहमाग़ीह
सावगासिय गावमीए श्रवयगापरीम्मकयं मेयं ।।

१३४६. ज्ञानार्याव-शुभचन्द्राचार्य। पत्र स० १०५ । आ०, १२३×५३ दश्च। भाषा-सम्कृत। विषय-योग। र० काल ×। ले० काल स० १६७६ चैत्र बुदी १४। पूर्या। वे० स० २७४। ऋ भण्टार।

विशोप-बैराट नगर मे श्री चतुरदास ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी।

१३६० प्रति सं०२। पत्र स०१०३। ले० काल सं०१६५६ भादया सुदी १३। वे० सं०४२। ऋ भण्डार।

१३६१ प्रति सं०३। पत्र सं०२०७। ले० काल स० १६४२ पीप सुदी ६। वे० म०२२०। ऋ भण्डार।

> १३६२. प्रति सं० ४। पत्र स० २६०। ते० काल ×। श्रपूर्ण। वे० म० २२१। क भण्डार। १३६३. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०८। ते० काल ×। वे० स० २२२। क भण्डार।

१३६४. प्रति सं ६ । पत्र सं० २६४ । ले० काल स० १८३५ ग्रापाट सुदी ३ । वे० म० २३४ । क

भण्डार ।

विशेष-ग्रन्तिम अधिकार की टीका नही है।

१३६४ प्रति सं०७। पत्र सं०१० में ५२। ले० काल 🗴। श्रपूर्ण। वे० सं०६२। ख्र भण्डान। विशेष--- प्रारम्भ के ६ पत्र नहीं है।

१३६६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३१ । ले० काल × । वे० सं० ३२ । घ भण्डार । विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१३६७. प्रति सं ८ १ पत्र स० १७६ से २०१। ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० स० २२३। ड भण्डार । १३६८ प्रति सं० १०। पत्र सं० २६८। ले० काल 🗴 । वे० स० २२४। अपूर्ण । ड भण्डार ।

विशेप---ग्रन्तिम पत्र नही है। हिन्दी टीका सहित है।

१३६६. प्रति सु० ११। पत्र स० १०६। ले॰ काल ×। वे॰ स० २२४। ड भण्डार।

१३७०. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ४४ । ले० काल 🗙 । ग्रपूर्ण । वे० सं० २२४ । उ मण्डार ।

१३७१. प्रतिसं० १३ । पत्र सं० १३ । ले० काल 🗙 । अपूर्ण । वे० स० २२६ । उ भण्डार ।

विशेष--प्राणायाम ग्रधिकार तक है।

१२७२. प्रति संटं १४ । पत्र सं० १४२ । ले० काल स० १८८६ । वे० स० २२७ । ड भण्डार । १२७२. प्रति सं० १४ । पत्र स० १४० । ले० काल स० १६४८ झासोज बुदी ८ । वे० स० १२४ ।

ड भण्डार।

विजेप--लक्ष्मीचन्द्र वैद्य ने प्रतिलिपि की थी ।

१३७४. प्रति सं० १६। पत्र स० १३४। ले० काल ×। वे० स० ६४। छ भण्डार। . विशेष—प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत में सकेत भी दिये है।

१३७४. प्रति सं०१७। पत्र स० १२। ले० काल सं०१८८८ माघ सुदी ४। वे० स० २८२। छ। भण्डार।

विशेष—बार्रह भौवना मात्र है।

१३७६ प्रति सं०१⊏। पत्र म०६७। ले० काल सं० १५=१ फाग्रुगा सुदी १। वे० स० २५। ज भण्डार।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

संवत् १४८१ वर्षे फागुरा सुदी १ बुधवार दिने । ग्रथ श्रीमूलसचे बलात्कारगरो सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्द-कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनिन्दिदेवा तत्वट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे जितेन्द्रिय भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे सक्लविद्यानिधानयमस्वाध्यायध्यानतत्वरसक्लमुनि जनमध्यलब्धप्रतिष्ठाभट्टारकश्रीप्रभावन्द्रदेवा । ग्रांवैर गरा स्थानत् । कूरमवर्गे महाराजाधिराजपृथ्वीराजराज्ये खण्डेलवालान्वये समस्तगोठि पचायत शास्त्र ज्ञानार्याव लिखापितं त्रैपनिक्या-वर्तनिवतंबाइ धनाइयोग्र घटापितं कर्म्भक्षयनिमित ।

> १३७७ प्रति सं०१६ | पत्र स०११५ । ले० काल × । । वे० स०६० । भाभण्डार । १३७८. प्रति सं०२० । पत्र स०१०४ । ले० काल × । वे० स०१०० । व्य भण्डार ।

१३७६. प्रति सं०२१। पत्र स०३ से ७३। ले० काल स० १५०१ माघ बुदी ३। ग्रपूर्ण। वे० स० १५३। व्याभण्डार।

विशेष-अह्मजिनदास ने श्री अमरकीर्त्त के लिए प्रतिलिपि की थी।

१३५० प्रति स्०२२। पत्र सं०१३४। ले॰ काल स॰ १७५५। वे॰ स॰ ३७०। व्य भण्डार। १३६१. प्रति सं०२३। पत्र स॰ २१। ले॰ काल सं०१६४१। वे॰ स॰ १६६२। ट भण्डार। विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

१३८२ प्रति सं०२४। पत्र स०६। ले० काल सं०१६०१। श्रपूर्ण। वे० स०१६६३ । ट भण्डार। विशेष—प्रति संस्कृत गद्य टीका सहित है।

१३८३. ज्ञानार्णवगद्यटीका—श्रुतसागर । पत्र स०१४ । ग्रा०११४४ इखा भाषा-सस्कृत । विषय-योग । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं०, ६१६ । स्र भण्डार ।

१३८४. प्रति सं०२। पत्र म०१७। ले० काल ४। वे० सं०२२५। क भण्डार।

१३८४. प्रति सं०३। पत्र स०६। ले० काल सं० १८२३ माघ सुदी १०। वे० सं० २२६। क भण्डार।

⁄ १३८६. प्रतिस•४ । पत्र स०२ से ६ । ले०-काल ४ । प्रपूर्णा। वे० स० ३१ ग म भण्डार ।

१३८७. प्रति सं० ४ । पत्र स० १० । ले० काल सं० १७४६ । जीर्रा । वे० स० २२८ । ड भण्डार । विशेष--मौजमाबाद मे ग्राचार्य कनककीर्ति के शिष्य प० मदाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१३८८. प्रति सं २६। पत्र स०२ मे १२। ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण। वे० सं०२२६। 😸 भण्डार।

१३८६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १७८५ भादवा । वे० सं० २३० । इ भण्डार । विशेष---प रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१३६० प्रति सं ० ८ । पत्र सं ० ६ । ले॰ काल × । वे॰ य॰ २२१ । व्य मण्डार ।

१३६१. ज्ञानार्गावटीका—पं० नय विलास । पत्र स० २७६ । ग्रा० १३४८ इख्र । भाषा-मंस्कृत । विषय-योग । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० २२७ । क भण्डार ।

विशेष--- प्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति शुभचन्द्राचार्यविरिचतयोगप्रदीपाधिकारे पं वन्यविलामेन साह पाञा तत्पुत्र साह टोडर तत्कुलकमल-दिवाकरसाहऋषिदासस्य श्रवराण्ये प व जिनदायो धर्मनाकारापिता मोक्षप्रकरण समाप्तं ।

१३६२. प्रति स० २ | पत्र स० ३१६ । ले० काल ४ । । वे० स० २२८ । क भण्डार ।

१३६३. ज्ञानार्णवटीकाभाषा—लिब्धिवमलगिषा। पत्र म०१४८। ग्रा० ११४६ इझ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—योग । र० काल सं०१७२८ ग्रासोज सुदी १०। ले० काल स०१७३० वैशाख सुदी ३। पूर्ण। वे० स०१६४। छ भण्डार।

१३६४. ज्ञानार्णवभापा—जयचन्द् छ।वडा । पत्र स० ६६३ । ग्रा० १३४७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) विषय—योग । र० काल सं० १८६६ माघ सुदी ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० २२३ । क भण्डार ।

१३६४. प्रति सं०२। पत्र स०४२०। ले० काल ४। वे० स०२२४। क भण्डार। १३६६. प्रति सं०३। पत्र सं०४२१। ले० काल म०१८८३ सावरा बुदी ७। वे० मं०३४। त भण्डार।

विशेप-शाह जिहानाबाद में संतूलाल की प्रेरणा से भाषा रचना की गई। कालूरामजी साह ने मोनपाल भावसा से प्रतिलिपि कराके चौधरियों के मन्दिर में चढाया।

१३६७. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४०८। ले० काल ×। वे० स० ५६५। च भण्डार।
१३६८ प्रति सं० ४। पत्र स० १०३ से २१६। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० सं० ५६६। च भण्डार।
१३६६. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३६१। ले० काल स० १६११ श्रासोज बुदी ८। श्रपूर्ण। वे० स० ५६६।
मा भण्डार।

विशेष--- प्रारम्भ के २६० पत्र नहीं हैं।

१४००. तत्त्वबोध '। पत्र स० ३। ग्रा० १०×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषम-ग्रध्यात्म । र० काल ×। ले० काल स० १८८१ । पूर्ण । वे० स० ३१० । ज भण्डार । , १४८१ त्रयोविंशतिका । पत्र स० १३। ग्रा० १०३×४३ डब्झ । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४० । च भण्डार ।

१४०२. दुर्शनपाहुडभाषा "" । पत्र सं० २६ । ग्रा० १०६ ४८६ डर्झ । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय– ग्राध्यात्म । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० १८३ । छ्र भण्डार ।

विगेष--- ग्रष्ट्रपाहुड का एक भाग है।

१४०३. द्वादशभावना दृष्टान्त" "। पत्र सं० १ । ग्रा० १०४४ ई डर्ष्ट्र । भाषा-गुजराती । विषय-ग्रन्यात्म । र० काल ४ । ले० काल स० १७०७ वैशाख बुदी १ । वे० सं० २२१७ । श्रे भण्डार ।

विशेष--जालोर मे श्री हंसकुशल ने प्रतापकुशल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१४०४. द्वादशभावनाटीका " । पत्र सं० ६। ग्रा० ११×८ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वै० सं० १६४५ । ट भण्डार ।

विशेष---कुन्दकुन्दाच।र्य कृत मूल गाथायें भी दी है।

१४०४ द्वादेशांनुप्रेन्। । पत्र सं० २०। ग्रा० १०३×४ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-ग्रध्यात्म । र० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १६८५ । ट भण्डार ।

१४०६ द्वादशानुप्रेत्तां—सर्कतकीर्ति। पत्र सं ० ४। ग्रां० १०३×५ हेर्झ । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८४ । स्त्र भण्डार ।

१४०७. द्वादशानुभेत्ता""। पत्र २०१। आ० १०×४ दे दर्ख । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५४ । अ भण्डार ।

१४- . प्रति स० २ । पत्र सं० ७ । ले० कॉल 🗶 । ने० सं० १६१ । मा भण्डार ।

१४०६. द्वादशानुप्रेचा—कविछ्त्त । पत्र सं० ६३। म्रा० १२५ ४५ इख्र । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-म्रध्यात्म । र० काल स० १६०७ भादवा बुदी १३। ले० काल ४। पूर्ण । वे० सं० ३६। क्र भण्डार ।

१४१०. द्वादशानुप्रेचा—साह त्रालू । पत्र सं० ४ । ग्रा० ६२ ४४३ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रम्यातम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६०४ । ट मण्डार ।

१४११. द्वादशानुप्रेत्तं " ""। पत्र सं० १३ । ग्रा० १०×५ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रध्यात्म । र० काल × । ते • काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२८ । ङ भण्डार ।

१४१२. प्रति सं०२। पत्र मं० ७। ले० काल 🗙 । वै० सं० ६३। स्त भण्डार।

१ं४१३. पर्स्नतत्त्वंघारेणां "। पत्र सं० ७ । ग्रा० ६३×४३ डक्क । भाषा-संस्कृत । विषय-योग) र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२३२ । ऋ भण्डार । ्,१४१४. पन्द्रहतिथी ''।पत्र सं०४। ग्रा०१०३४५ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रथ्यात्म । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं०४३१ । इ भण्डार ।

विशेष-भूधरदास कृत एकीभावस्तोत्र भाषा भी है।

१४१४. परमात्मपुराण्-दीपचन्द । पत्र स० २४ । ग्रा० १२×६ इख्र । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-ग्रन्थात्म । र० काल × । ले० काल स० १८६४ सावन सुदी ११ । पूर्ण । घ भण्डार ।

विशेप---महात्मा उमेद ने प्रतिलिपि की थी।

१४१६. प्रति सं०२। पत्र स०२ से २२। ले० काल स०१८४३ ग्रासोज बुदी २। ग्रपूर्गा। त्रे० सं० ६२६। च भण्डार।

१४१७ परमात्मप्रकाश—योगीन्द्रदेव। पत्र स० १३ से १४४। आ० १०×५ इख्र । भाषा— ग्रपभ्र श । विषय—ग्रन्थात्म । र० काल १०वी शतान्दी । ले० काल स० १७६६ ग्रासोज मुदी २। ग्रपूर्ण । वे० स० २०=३। ग्रा भण्डार ।

विशेष--खुशालचन्द चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी।

१४१८. प्रति सं०२। पत्र सं०६७। ले० काल स०१६३४। वे० मं०४४४ । क भण्डार। विशेष--संस्कृत मे टीका भी है।

१४१६. प्रति सं० ३। पत्र स० ७६। ले० काल स० १६०४ श्रावणा बुदी १३। वे० स० ५७। घ भण्डार। मस्कृत टीका सहित है।

विशेष---ग्रन्थ सं० ४००० श्लोक । ग्रन्तिम ६ पृष्ठो मे बहुन बारीक लिपि है ।

१४२०. प्रति सं० ४ । पत्र स० १५ । ले० काल 🗙 । अपूर्ण । वे० सं० ४३४ । उ भण्डार ।

१४२१. प्रति सं० ४ । पत्र स० २ से १५ । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ४३५ । द्व भण्डार ।

१४२२. प्रति सं० ६ । पत्र स० २५ । ले० काल 🗴 । स्रपूर्ग । वे० सं० २०६ । च भण्डार विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये है ।

१४२३ प्रति सं०७। पत्र सं०१६। ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० म०२१०। च भण्डार । १४२४. प्रति सं०८। पत्र स०२४। ले० काल स०१८३० वैसाल बुदी ३। वे० स०८२। व्य भण्डार ।

विशेष---जयपुर मे शुभचन्द्रजी के शिष्य चोखचन्द तथा उनके शिष्य प० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की । संस्कृत में पर्यायवाची शब्द भी दिये हुए हैं ।

, १४२४ परमात्मप्रकाराटीका—ग्रमृतचन्द्राचार्य। पत्र स० ६६ मे २४५ । ग्रा० १०३४४ इम्र । भाया-संस्कृत । विषय-ग्रन्यात्म । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । ग्रपूर्ण । वे० स० ४३३ । ड भण्डार ।

१४२६. प्रति संट २ । पत्र स० १३६ । ले० काल 🔀 । वे० स० ४५३ । व्य भण्डार ।

१४२७ प्रति सं २३। पत्र म०१४१। ले॰ काल सं०१७६७ पौप सुदी ५। वे सं०४५४। ञ भण्डार।

विशेष—मायाराम ने प्रतिलिपि की थी।

' १४२≒ परमात्मप्रकाशटीका—ब्रह्मदेव । पत्र स० १६४ । त्रा० ११४५ इख्र । भाषा–संस्कृत । विषय–ग्रध्यात्म । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १७६ । ऋ भण्डार ।

१४२६. प्रति सं०२। पत्र स० ६ से १४६। ने० काल ४। अपूर्ण। ते० सं० ६३। छ भण्डार। विशेष—प्रति सचित्र है ४४ चित्र है।

१४३०. परमात्मप्रकाशाटीका । पत्र स० १६३ । ग्रा० ११५४७ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रध्यात्म । र० काल 🗴 । ले० काल स० १९५८ द्वि० श्रावणा सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४४७ । क भण्डार ।

१४३१. परमात्मप्रकाशटीका । पत्र स० ६७ । ग्रा० ११४५ ६ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय— ग्रम्यात्म । र० काल 🗴 । ले० काल स० १८६० कार्त्तिक सुदी ३ । पूर्या । वे० सं० २०७ । च भण्डार ।

१४३२. प्रति सं०२। पत्र स०२६ से १०१। ले० काल ×। स्रपूर्ण । वे० सं०२०८। च भण्डार। १४३३. परमात्मप्रकाशटीका । पत्र सं०१७०। स्रा०११५४५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल ×। ले० काल स०१६६६ मगसिर सुदी १३। पूर्ण। वे० स०४४६। क भण्डार।

बिशेप-लेखक प्रशस्ति कटी हुई है। विजयराम ने प्रतिलिपि की थी।

१४३४ परमात्मप्रकाशभाषा—दौलतराम । पत्र सं० ४४४ । आ॰ ११×६ । भाषा-हिन्दी । विषय-प्रध्यात्म । र० काल १५वी शताब्दी । ले० काल स० १६३५ । पूर्ण । वे० स० ४४६ । क भण्डार ।

विशेष-मूल तथा ब्रह्मदेव कृत मस्कृत टीका भी दी हुई है।

१४३४. प्रति सं०२। पत्र स०२३० से २४२। ले० काल ×। प्रपूर्ण । वे० सं०४३६। इन् भण्डार। १४३६ प्रति सं०३। पत्र स०२४७। ले० काल स०१६५०। वे० सं०४३७। इन् भण्डार। १४३७. प्रति सं०४। पत्र स०६० से १६६। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० स०६३८। च भण्डार। १४३८. प्रति सं०४। पत्र स०३२४। ले० काल ×। वे० सं०१६२। इक् भण्डार।

१४३६. परमात्मप्रकाशवाल।वशेधिनीटीका—खानचन्द्। पत्र सं० २४१। ग्रा० १२५४५ डख्न । भाषा-हिन्दी। विषय-प्रघ्यात्म। र० काल स० १६३६। पूर्ण। वे० सं० ४४०। क भण्डार।

विशेष—यह टीका मुल्तान में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में लिखी गई थी इसका उल्लेख स्वयं टीकाकार ने किया है।

१४४०. परमात्मप्रकाशभाषा—नथमल । पत्र सं० २१ । ग्रा० ११ई ४७ इख्र । भाषां—हिन्दी (पद्य) । विषय—ग्रध्यातम । र० काल स० १६१६ चैत्र बुदी ११ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० म० ४४० । कं भण्डार । १४४०. प्रति स० २ । पत्र म० १८ । ले० काल स० १६४८ । वे० स० ४४१ । क भण्डार । १४४२ प्रति सं० २ । पत्र स० ३८ । ले० काल ४ । वे० स० ४४२ । क भण्डार ।

१४४३. प्रति स० ४ । पत्र स० २ से १५ । ले० काल म० १६३७ । वे० स० ४४३ । क भण्डार । १४४४ परमात्मप्रकाशभाषा—सूरजभान स्रोसवाल । पत्र म० १५४ | स्रा० १२५४८ इझ । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-अध्यातम । र० काल स० १८४३ श्रापाढ बुदी ७ । ले० काल मं० १६४२ मर्गामर बुदी १०। पूर्ण | वे० सं० ४४४। क भण्डार |

१४४४. परमात्मप्रकाशभाषा "" । पत्र स० ६४ । आ० १३×५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-श्रध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वे० स० ११६० । ऋ भण्डार ।

१४४६ परमात्मप्रकाशभाषा "। पत्र सं० ५६ । ग्रा० ११४८ इख्न । भाषा-हिन्दी । विषय-म्राच्यातम । र० क्।ल × । ले० काल × । पूर्शा । वे० सं० ६२७ । च मण्डार ।

१४४७. परमात्मप्रकाशभाषा''' "ा पत्र स० ६३ मे १०८ । ग्रा० १०×४३ डखा भाषा−िहन्दी। विषम-ग्रध्यात्म । र० काल 🗙 । ले० काल 🔀 । ग्रपूर्ण । वे० म० ४३२ । ड भण्डार !

१४४८. प्रवचनसार---श्राचार्य कुन्द्कुन्द् । पत्र म० ४७ । ब्रा० १२×४३ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-प्राध्यात्म । र० काल प्रथम शताब्दी । ले० काल स० १६४० माघ मुदी ७ । पूर्ण । वे० म० ५० । क भण्डार ।

विशेष --संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये है।

१४४६. प्रति सं०२। पत्र स० ३८। ले० काल 🗴 । वे० म० ५१०।

१४४०. प्रति सं० ३ । पत्र स० २० । ले० काल स० १८६६ भादवा बुदी ४ । वे० स० २३८ । च भण्डार ।

> १४४१. प्रति सं०४। पत्र स्०२म। ले० काल 🗴 । अपूर्ण । । वे० स० २३६ । च भण्डार । विशेष---प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१४४२ प्रति स०४। पत्र स०२२। ले० काल म०१८६७ वैशाल बुदी ६। वे० स०२४०। च भण्डार |

विकोष-परागदास मोहा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

१४४२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० म० १४८ । ज भण्डार । १४४४. प्रवचनसारटीका— असृतचन्द्र।चार्य । पत्र म० ६७ । ब्रा० ६×५ इख्र । भाषा-मंस्कृत । विषय-ग्रध्यातम् । र० काल १०वी वाताब्दी । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० १०६ । श्र्य भण्डार ।

विशेष--टीका का नाम तत्त्वदीपिका है।

१४४४ प्रतिसं०२ । पत्र स०११ माले० काल 🗴 । वे० सं० ८५२ । ऋ। मण्डार । ,१४ ६ , प्रति, सं० ३ । पत्र सं० २ मे ६० । ले० काल 🔀 । अपूर्णा । वे० सं० ७८५ । अप्र भण्डार । १४४७. प्रति सं ८ ४। पत्र सं ० १०१। ले० काल 🗙 । वे० सं ० द१। आ मण्डार । १४४८. प्रति स्व, ४,। पत्र सुरु १०६ । लेरु काल सरु १८६८ । वेरु संरु ५०७ । क भण्डार । विशेष-- महात्मा देवकर्गा ने जयनगर मे प्रतिलिपि की थी।

१४४६. प्रति सं०६। पत्र स०२३६। ले० काल स०१६३८। वे० स०५०६। क भण्डार। १४६० प्रति सं०७। पत्र स०८७। ले० काल 🗶। वे० सं०२६५। क भण्डार। विशेष—प्रति प्राचीन है।

१४६१. प्रति सं० ⊏ । पत्र स० २०२ । ले० काल म० १७४७ फाग्रुग बुदी ११ । वे० स० ५११ । ड भण्डार ।

१४६२ प्रतिस०६। पत्र स०१६२। ले० काल सं०१६४० भादवा बुदी ३। वे० म०६१। ज भण्डार।

विशेष--प० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी।

१४६३ प्रवचनसारटीका " । पत्र स० ४१ । ग्रा० ११×६ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ५१० । ड भण्डार ।

विशेष--प्राकृत मे मूल मस्कृत मे छाया तथा हिन्दी मे ग्रर्थ दिया हुग्रा है।

१४६४ प्रवचनसारटीका "। पत्र स० १२१। ग्रा० १२४५ इख्र । भाषा–सस्कृत । विषय– ग्रध्यात्म । र० काल ४ । ले० काल म० १८५७ ग्राषाढ बुदो ११ । पूर्गा । वे० म० ५०६ । क भण्डार ।

१४६४ प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति "। पत्र स० ५१ मे १३१ । आ० १२×५ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १७६५ । अपूर्ण । वे० स० ७८३ । स्त्र भण्डार ।

विशेष---प्रारम्भ के ५० पत्र नहीं है | महाराजा जयसिंह के शासनवाल में नेवटा में महातमा हरिकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी।

१४६६ प्रवचनमारभाषा—पाढे हेमराज । पत्र सं० ५३ मे ३०४ । ग्रा० १२×४ है इक्स । भाषा— हिन्दी (गद्य) । विषय—ग्रम्यात्म । र० काल स० १७०६ माघ सुदी ४ । ले० काल स० १७२४ । ग्रपूर्ण । वे० म० ४३२ । अ भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे ग्रोसवाल गूजरमल ने प्रतिलिपि की थी।

१४६७ प्रति सं०२। पत्र स० २६७। ले० काल सं० १६४३। वे० सं० ५१३। क भण्डार।

१४६८ प्रति स०३। पत्र स०१७३। ले० काल ×। वे० सं०५१२। क भण्डार।

१४६६. प्रति सं० ४। पत्र स० १०१। ले० काल स० १६२७ फाग्रुरा बुदी ११। वै० सं० ६३। घ भण्डार।

विशेप--प० परमानन्द ने दिल्ली मे प्रतिलिपि की थी।

१४७० प्रतिसः ४। पत्र सं० १७६। ले० काल स० १७४३ पौष मुदी २। ते० सं० ५१३। इस् भण्डार।

१४७१. प्रति स० ६ । पत्र सं० २४१ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० ६४१ । च भण्डार ।

' १४७२. प्रति संट ७। पत्र स० १८४। ले० काल स० १८८३ कार्तिक बुदी २। वे० स० १६३। छ

विशेष--लवाण निवासी ग्रमरचन्द के पुत्र महात्मा गरोश ने प्रतिलिपि की थी।

१४७३ प्रवचनसारभाषा—जोधराज गोढीका। पत्र सं० ३८। आ० ११४४ इख्र । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-ग्रध्यात्म । र० काल स० १७२६ । ले० काल स० १७३० ग्रापाढ सुदी १५ । पूर्ण । वे० म० ६४४ । च भण्डार ।

१४७४ प्रवचनसारभाषा--- वृन्दावनदास । पत्र म० २१७ । आ० १२३४५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १६३३ ज्येष्ठ बुदी २ । पूर्गा । वे० स० ५११ । क भण्डार ।

विशेप---ग्रन्थ के अन्त मे वृन्दावनदास का परिचय दिया है।

१४७४ प्रवचनसारभाषा "। पत्र स० ८६ । आ० ११×६ हुँ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रध्यात्म । द० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० स० ५१२ । ड भण्डार ।

१४७६. प्रति मं २२। पत्र स० ३०। ले० काल ×। श्रपूर्ण। वे० स० ६४२। च भण्डार। विशेष--श्रन्तिम पत्र नहीं है।

् १४७७. प्रवचनसारभाषा "। पत्र स० १२ । ग्रा० ११ \times ४ $\frac{1}{2}$ इख्र । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय- ग्रम्थात्म । र० काल \times । ले० काल \times । प्रपूर्ण । वे० स० १६२२ । ट भण्डार ।

१४७८. प्रवचनसारभापा" ""। पत्र स० १४५ मे १८५ । आ० ११३८७ इख्र । भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-अध्यात्म । र० काल ४। ले० काल स० १८६७ । अपूर्ण । वे० स० ६४५ । च भण्डार ।

१४७६. प्रवचनसारभाषा "'। पत्र स० २३२ । ग्रा० ११×५ इख्र । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-ग्रन्थात्म । र० काल × । ले० काल स० १६२६ । वे० स० ६४३ । च भण्डार ।

१४८०. प्रागायामशास्त्र''' । पत्र स० ६ । ग्रा० ६ १४४ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-योगञास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५६ । त्र्रा भण्डार ।

१४८१. बारह भावना—रङ्घू । पत्र स० ५ । आ० ५ ४६ डञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-प्रध्यातम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ग । वे० स० २४१ । छ भण्डार ।

विशेष--लिपिकार ने रइधू कृत वारह भावना होना लिखा है।

प्रारम्भ--ध्रुववस्त निश्चल सदा ग्रश्नुभाव परजाय । स्कदरूप जो टेखिये पुद्गल तसो विभाव ॥

ऋन्तिम—अनथ कहाणी जान की कहन सुनन की नाहि।
आपनहीं में पाइये जब देखें घटमाहि।।
इति श्री रइघू कृत बारह भावना मपूर्गा।

१४८२. बारहभावना "" । पत्र स० १५ । ग्रा॰ ६ $\frac{1}{5}$ \times ५ इख्र । भाषा–हिन्दी । विषय–चिन्तन । र० काल \times । ले॰ काल \times । ग्रपूर्ण । वे॰ स॰ ५२६ । ह भण्डार ।

१४८३ प्रति स०२। पत्र सं०१। ले० काल 🗴 । वे० म० ६८। भा भण्डार।

1848 वारहभावना—भूधरदास । पत्र सं० १ । ग्रा० ६ $\frac{1}{2}$ \times ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिंतन । र० काल \times । ले० काल \times । वे० स० १२४७ । व्य भण्डार ।

विशेष-पार्र्वपूराएा से उद्धृत है।

१४८४. प्रति सं०२। पत्र स०३। ले० काल ४। वे० स० २५२। ख भण्डार।

विशेष-इसका नाम चक्रवित्त की वारह भावना है !

१४८६ वारहभावना—नवलकि । पत्र स०२। ग्रा० ८४६ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-चितन । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० स० ५३०। ङ भण्डार ।

१४८७. बोधप्राभृत—स्राच।र्य कुंद्कुद । पत्र स० ७ । ग्रा० ११४४ हु इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-ग्रध्यातम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३५ ।

विशेप--सस्कृत टीका भी दी हुई है।

१४८८. भववेराग्यशतक ""। पत्र सं०.१५ । ग्रा० १०×६ इख्र । भाषा—प्राकृत । विषय—ग्रध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १८२४ फागुरा सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ४५५ । व्य भण्डार ।

विशेष — हिन्दी ग्रर्थ भी दिया है।

१४८६ भावनाद्वात्रिशिका " '। पत्र स० २६ । ग्रा० १० \times ४२ इख्र । भाषा–सस्कृत । विषय– ग्रध्यात्म । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० ५५७ । क भण्डार ।

विशेप—निम्न पाठो का सग्रह ग्रौर है । यतिभावनाष्ट्रक, पद्मनिन्दिपचिविशतिका ग्रौर तत्त्वार्थसूत्र । प्रति स्वर्णाक्षरो मे है ।

१४६० भावनाद्वार्तिशिकाटीका "" । पत्र स० ४६ । ग्रा० १०×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रम्थात्म । र० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६ । इः भण्डार ।

१४६१ भावपाहुड कुन्द्कुन्दाचार्य । पत्र स० १ । ग्रा० १४imes१५ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय- ग्रान्यात्म । र० काल imes । ले० काल imes । पूर्ण । वे० स० ३३० । ज भण्डार ।

विशेप--- प्राकृत गाथाम्रो पर सस्कृत श्लोक भी है।

१४६२. मृत्युमहोत्सव । पत्र स०१। ग्रा०११५ \times ५ डख्न । भाषा—सस्कृत । विषय—ग्रब्यात्म । र० काल \times । पूर्ण । वे० स० ३४१ । ग्रु भण्डार ।

१४६३. मृत्युमहोत्सवभाषा—सदासुख । पत्र सं० २२ । ग्रा० ६३४५ इख्र । भाषा–हिन्दी । विषय– ग्रध्यात्म । र० काल स० १६१८ श्राषाढ सुदी ५ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ८० । घ भण्डार ।

१४६४. प्रति सं०२। पत्र स०१३। ले० काल 🗙 । वे० सं०६०४। इङ भण्डार।

१४६४. प्रति सं० ३ । पत्र स० १० । ले० काल 🔀 । वे० सं० १८४ । छ भण्डार ।

१४६६. प्रति स० ४। पत्र स० ११। ले० काल 🗴 । वे० मं० १८४। छ मण्डार ।

१४६७ प्रति सं० ४। पत्र स० १०। ले० काल ×। वे० स० १६५। मा भण्डार।

१४६८. योगविंदुप्रकरण्-ग्रा० हरिभद्रसूरि । पत्र स० १८ । ग्रा० १०४४ हे इञ्च । भाषा-सम्कृत । विषय-योग । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० २६२ । ज भण्डार ।

१४९६. योगभिक्तः "। पत्र स०६। म्रा० १२४५ डंच। भाषा-प्राकृतः । विषय-योगः । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्णः । वे० स०६१५। उत्त भण्डारः ।

१५०० योगशास्त्र—हेमचन्द्रसूरि। पत्र सं० २५। ग्रा० १० \times ४२ टच। भाषा-मस्कृत। विषय-योग। र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण। वे० स० ५६३। श्र्य भण्डार।

१४०१. योगशास्त्रः '। पत्र स० ६४ । ग्रा० १०×४ द्व द्य । भाषा-सस्कृत । विषय-योग । र० काल × । ले० काल स० १७०५ ग्रापाढ बुदी १० । पूर्ण । वे० स० ८२६ । श्र भण्डार ।

विशेप—हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है।

१५०२ योगसार-योगीन्द्रदेव । पत्र स० १२ । आ० ६×४ डक्क । भाषा-अपभ्र श । विषय-ग्रध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १८०४ । अपूर्ण । वे० स० ८२ । स्त्र भण्डार ।

विशेप-सुखराम छावडा ने प्रतिलिपि की थी।

१५०३. प्रति सं०२ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १६३४ । वे० म० ६०६ । क भण्डार ।

विशेष-सम्कृत छाया सहित है।

१५०४. प्रति स० ३। पत्र सं० १५। ले० काल 🗴। वे० स० ६०७। क मण्डार।

विशेष—हिन्दी श्रर्थ भी दिया है।

१५०५. प्रति सं० ४ । पत्र स० १२ । ले० काल म० १८१३ । वे० स० ६१६ । ड भण्डार ।

१५०६. प्रति सं० ४ | पत्र स० २६ । ले० काल ४ | वे० स० ३१० | छ भण्डार ।

१४०७ प्रति सं ६। पत्र स॰ ११। ले॰ काल स॰ १८८२ चैत्र मुदी ४। ते॰ स॰ २८२। च

भण्डार ।

भण्डार !

१४८८ प्रति सं०७।पत्र स०१०। ले० काल स०१८०४ ग्रासोज बुदी ३। वे० स०३३६। ञ

१४०६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५ । ले० काल 🗙 । अपूर्ण । वे० स० ५१६ । व्य भण्डार ।

१४१० योगसारभाषा—नन्दराम । पत्र स० ५७ । ग्रा० १२३×४३ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रध्यात्म । र० काल स० १६०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६११ । क भण्डार ।

विशेप-- आगरे में ताजगञ्ज मे भाषा टीका लिखी गई थी।

१४११. योगसारभाषा--पन्नालाल चौधरी । पत्र स० ३३ । ग्रा० १२४७ इझ । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-ग्रध्यातम । र० काल स० १६३२ सावन सुदी ११। ले० काल ४। पूर्ण । वे० न० ६०६। क भण्डार ।

१४१२. प्रति सं०२। पत्र सं०३६। ले० काल 🗴 । वे० सं०६१०। क भण्डार।

१४१३. प्रति स० ३। पत्र सं० २८। ले० काल 🗴 । वे० सं० ६१७। इ. भण्डार ।

१४१४. योगसारभाषा — पं० बुधजन । पत्र सं० १० । ग्रा० ११४७३ इख्र । भाषा —हिन्दी (पद्य)। विषय-ग्रध्यात्म । र० काल सं० १८६५ सावण सुदी २। ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० ६०८ । क भण्डार ।

१४१४. प्रति सं० २ | पत्र सं० ६ । ले० काल 🗙 । वै० सं० ७४१ । च भण्डार ।

१५१६. योगसारभाषा'''''। पत्र सं० ६ । ग्रा० २१ \times ६५ इख्र । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय— ग्रन्थात्म । र० काल \times । ले० काल \times । ग्रपूर्ण । वे० सं० ६१८ । ड भण्डार ।

१४१७. योगसारसंग्रह "" पत्र सं० १८ । ग्रा० १०×४६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-योग । र० काल × । ले० काल सं० १७५० कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ७१ । ज भण्डार ।

१४१८. रूपस्थध्यानवर्णनः । पत्र सं०२। ग्रा०१०३ ×५६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-योग। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६५६। ड भण्डार।

'धर्मनाथस्तुवे धर्ममयं सद्धर्मसिद्धये । धीमता धर्मदातारं धर्मचक्रप्रवर्त्तकं ।।

१४१६. लिंगपाहुड्—ग्राचार्ये कुन्द्कुन्द् । पत्र सं० ११ । ग्रा० १२×५१ इख । भाषा-प्राकृत । विषय-ग्रध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वे० सं० १०३ । छ भण्डार ।

विशेष-शील पाहुड तथा गुरावली भी है।

१४२०. प्रति सं०२। पत्र सं०२। ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं०१९६। भा भण्डार।

१४२१. वैराग्यशतक—भत्तृहरि । पत्र स० ७ । ग्रा० १२×५ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय— ग्रध्यातम । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । च भण्डार ।

. १४२२. प्रति सं०२। पत्र सं० ३६। ले० काल सं० १८८५ सावरा। बुदी ६। वे० सं० ३३७। च

विशेष-वीच मे कुछ पत्र कटे हुये हैं।

१४२३. प्रति सं०३। पत्र सं०२१। ले० काल ×। वे० सं०१४३। व्य भण्डार।

१४२४. षटपाहुड (प्राभृत)—श्राचार्ये कुन्द्कुन्द् । पत्र सं० २ से २४ । ग्रा० १०×४३ इत्र । भाषा-प्राकृत । विषय-ग्रम्थात्म । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ७ । स्र भण्डार ।

१२२४. प्रति सं०२। पत्र सं० ५२। ले० काल सं० १८५४ मंगसिर सुदी १५। वे० सं० १८८। आ

१४२६. प्रति सं०३। पत्र सं०२४। ले० काल स० १८१७ माघ बुदी ६ । वे० सं० ७१४। क

विशेष---नरायणा (जयपुर) मे पं० रूपचन्दजी ने प्रतिलिपि की थी।

भण्डार ।

भग्डार्।

१४२७. प्रति मं० ४। पत्र स० ४२। ले० काल सं० १८१७ कार्तिक बुदी ७। वे० स० १६५। ख

विशेष-सस्कृत पद्यो मे भी ग्रर्थ दिया है।

१४२८. प्रति सं० ४। पंत्र स० ६। ले० काल ×। वे० स० २८० ख भण्डार।
१४२६. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३४। ले० काल ×। वे० सं० १६७। ख भण्डार।
१४३०. प्रति सं० ७। पत्र सं० ३१ से ५४। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० सं० ७३७। ड भण्डार।
१४३१. प्रति सं० ६। पत्र सं० २६। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० स० ७३८। ड भण्डार।
१४३२. प्रति सं० ६। पत्र स० २७ से ६४। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० सं० ७३६। ड भण्डार।
१४३३ प्रति सं० १०। पत्र सं० ५४। ले० काल ×। वे० स० ७४०। ड भण्डार।
१४३४. प्रति सं० ११। पत्र स० ६३। ले० काल ×। वे० स० ३४७। च भण्डार।

१४३४ प्रति स॰ १२ | पत्र स० २० । ले० काल स० १५१६ चैत्र बुदी १३ । वे० स० ३८० । व्य भण्डार ।

१५३६. प्रति सं० १३। पत्र स० २६। ले० काल ×। वे० स० १८४६। ट भण्डार।
१५३७. प्रति सं० १४। पत्र स० ५२। ले० काल स० १७१४। वे० स० १८४७। ट भण्डार।
विशेष—नयनपुर मे पार्श्वनाथ चेत्यालय मे ब्र० सुखदेव के पठनार्थ मनोहरदास ने प्रतिलिपि की थी।
१५३८. प्रति सं० १५। पत्र सं० १ से ८३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०८५। ट भण्डार।
विशेष—निम्न प्राभृत है— दर्शन, सूत्र, चारित्र। चारित्र प्राभृत की ४५ गाथा से ग्रागे नहीं है। प्रति
प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है।

१४३६ पट्पाहुडटीका" "। पत्र स० ५१ । ग्रा० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६ । ग्रा भण्डार ।

१४४०. प्रति सं०२। पत्र स०४२। ले० काल ×। वे० स० ७१३। क भण्डार। १४४१ प्रति सं०३। पत्र सं०४१। ले० काल सं० १८८० फागुरा सुदी ८। वे० स०१८६। ख

विशेप—पं॰ स्वरूपचन्द के पठनार्थ भावनगर मे प्रतिलिपि हुई। १४४२. प्रति सं॰ ४। पत्र स॰ ६४। ले॰ काल सं॰ १८२५ ज्येष्ठ सुदी १०। वे॰ सं॰ २५८। আ भण्डार ।

भण्डार ।

गई थी।

१४४३. षटपाहुडटीका—श्रुतसागर । पत्र सं० २६५ । ग्रा० १०१४ ६ इञ्च । भाषा— रंस्कृत । विषय— ग्रध्यात्म । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० ७१२ । क भण्डार ।

१४४४. प्रति सं० २। पत्र सं० २६६। ले० काल सं० १८६३ माह बुदी ६। वे० स० ७४१। इन्

१४४४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १५२। ले० काल सं० १७६५ माह बुदी १०। वे० सं० ६२। छ

विशेष--नर्रासह ग्रग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी।

१ ४४६. प्रति स० ४ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १७३६ द्वि० चैत्र सुदी १५ । वे० स० ६ । व्य विशेष--श्रीलालचन्द के पठनार्थ ग्रामेर नगर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

१४४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १७६७ श्रावरण सुदी ७ । वे० स० ६८ । व्य

विशेष—विजयराम तोतूका की धर्मपत्नी विजय शुभदे ने पं० गोरधनदास के लिए ग्रन्थ की प्रतिलिपि करायी थी।

१४४८ संबोधत्रज्ञत्तरबावनी—द्यानतराय । पत्र सं० ५ । आ० ११४५ डब्स । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यातम । र॰ काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ स॰ ६९० । च भण्डार ।

१४४६ संबोधपंचासिका—गौतमस्वामी । पत्र सं ४ । ग्रा० ८×४३ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-ग्रान्यातम । र० काल × । ले० काल सं० १८४० बैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ३६४ । च भण्डार ।

विशेष--बारापूर मे प्रतिलिपि हुई थी।

१४४०. समयसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र स० २३ । आ० १०×५ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषयअध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १५९४ फाग्रुग् सुदी १२ । पूर्ण । वृत सं० २६३ सर्व भवंति । वे० सं० १८१ ।
अप्र भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति—सवत् १५६४ वर्षे फीलगुनमासे शुक्लपक्षे १२ द्वादशीतिथी रवीवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे श्री मूलसघे निदसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनिन्ददेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र-देवास्तत्पट्टे भ० श्रीजनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तिच्छ्रप्यमंडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्रदेवास्तत्प्रुख्यशिष्याचार्यश्रीनेमिचन्द्रदेवास्तैरिमानि नाटकसमयसारवृतानि लिखापितानि स्वपठनार्थं।

१४४२. प्रति सं०२। पत्र सं०४०। ले० काल ×। वे० स० १८६। श्र्य भण्डार। १४४२. प्रति सं०३। पत्र सं०२६। ले० काल ×। वे० सं०२७३। श्र्य भण्डार। विशेष---संस्कृत में पर्यायान्तर दिया हुम्रा है। दीवान नवनिधिराम के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की

१४४३. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १६४२। वे० स० ७३४। क भण्डार।

१४४४. प्रति सं २ ४ । पत्र स० ४६ । ले० काल ४ । वे० सं० ७३४ । क भण्डार । विशेष--गाथाग्रो पर ही सस्कृत मे अर्थ है ।

१४४४. प्रति सं० ६। पत्र स० ७०। ले० काल 🗴 । वे० सं० १०८ । घ भण्डार ।

१४४६ प्रति सं०७। पत्र स०४६। ले॰ काल स०१८७७ वैशास बुदी ४। वे॰ सं०३६६। च

भण्डार ।

विशेष-सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं।

१४४७, अति सं० = । पत्र सं० २६ । ले॰ काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे॰ स० ३६७ । च भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१४४८ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५२ । ले० काल × । ये० न० ३६७ क । च भण्टार ।

विशेष--संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये है ।

१४४६. प्रति सं० १०। पत्र सं० ३ से १३१। ले॰ काल ×। प्रपूर्ण। वे॰ स॰ ३६८। च मण्डार।

विशेष-संस्कृत टीका सहित है ।

१४६०. प्रति सं० ११ | पत्र सं० ५५ | ले० काल 🗙 | प्रपूर्ण । वे० सं० ३६८ क | च मण्डार ।

विशेष--संस्कृत टीका सहित है।

१५६१. प्रति सं० १२। पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३७० । च भण्टार ।

१४६२ प्रति सं० १३ | पत्र सं० ४७ | ले० काल 🗶 | वे० स० ३७१ । च भण्डार ।

विशेष-सस्कृत टीका सहित है।

१४६३. प्रति सं० १४। पत्र सं० ३३। ले० काल सं० १४६३ पौप बुदी ६। वे• सं० २१४०। ट भण्डार।

१४६४. समयसारकलशा—श्रमृतचन्द्राचार्य। पत्र स० १२२ । ग्रा० ११×४३ इख । भाषा-संस्कृत। विषय-मध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १७४३ म्रासीज सुदी २। पूर्ण। वे० सं० १७३। स्त्र भण्डार।

प्रशस्ति—सवत् १७४३ वर्षे म्रासोज मासे शुक्कपक्षे द्वितिया २ तिथौ गुरुवासरे श्रीमत्कामानगरे श्रीश्वेता-म्बरशाखाया श्रीमद्विजयगच्छे भट्टारक श्री १०५ श्री कल्याणसागरसूरिजी तत् शिष्य ऋषि नक्ष्मणेन पठनाय लिपिचक्षे शुभं भवतु ।

१४६४. प्रति सं०२। पत्र सं०१८४। ले॰ काल सं०१६६७ भ्रापाढ सुदी ७। वे० सं०१३३। ज्य

विशेष—महाराजाधिराज जयसिंहजी के शासनकाल मे श्रामेर मे प्रतिलिपि हुई थी। प्रशस्ति निम्न प्रकार है— संवत् १६६७ वर्षे श्रषाढ बदि सप्तम्या शुक्रवासरे महाराजाधिराज श्री जैसिंहजी प्रतापे श्रंबावतीमध्ये लिखाइतं संघी श्री मोहनदासजी पठनार्थं। लिखितं जोशी श्रालिराज। १४६६. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० स० १६२। स्त्र भण्डार।
१४६७. प्रति सं० ४। पत्र स० ४१। ले० काल ×। वे० सं० २१४। स्त्र भण्डार।
१४६८. प्रति सं० ४। पत्र स० ७६। ले० काल स० १६४३। वे० सं० ७३६। क भण्डार।
विशेष—सरल सस्कृत में टीका दी है तथा नीचे क्लोको की टीका है।
१४६६. प्रति सं० ६। पत्र मं० १२४। ले० काल ×। वे० सं० ७३७। क भण्डार।
१४७० प्रति सं० ७। पत्र स० ६४। ले० काल सं० १८६७ भादवा सुदी ११। वे० सं० ७३८। क

भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महात्मा देवकरण ने प्रतिलिपि की थी।

१४७१. प्रति सं० ८। पत्र स० २३। ले० काल ×। वे० सं० ७३६। इप्र भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है।

१४७२. प्रति सं० ६। पत्र स० ३४। ले० काल ×। वे० सं० ७४४। इप्र भण्डार।

विशेष—कलशो पर भी संस्कृत मे टिप्पण दिया है।

१४७३. प्रति स० १०। पत्र सं० २४। ले० काल ×। वे० सं० ११०। घ भण्डार।

१४७४. प्रति सं० ११। पत्र सं० ७६। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० सं० ३७१। च भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है परन्तु पत्र ५६ से संस्कृत टीका नही है केवल क्लोक ही है।

१४७४. प्रति सं० १२। पत्र सं० २ से ४७। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० सं० ३७२। च भण्डार।

१४७६. प्रति सं० १२। पत्र सं० २ से ४७। ले० काल सं० १७१६ कार्तिक सुदी २। वे० सं० ६१। इर्

भण्डार ।

~

विशेष—उज्जैन मे प्रतिलिपि हुई थी।

१५७७. प्रति सं० १४। पत्र सं० ५३। ले० काल ×। वे० सं० ८७। ज भण्डार।
विशेष—प्रति टीका सहित है।

१४७८. प्रति सं०१४। पत्र सं०३८। ले० काल सं०१६१४ पीष बुदो ८। वे० सं∙ २०५। ज भण्डार।

विशेष—वीच के ६ पत्र नवीन लिखे हुये है ।

१४७६. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ५६ । ले॰ काल × । वे॰ सं॰ १६१४ । ट भण्डार ।

१४८०. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १७ । ले॰ काल सं० १८२२ । वे॰ सं॰ १६६२ । ट भण्डार ।

विशेष—न्न॰ नेतसीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१४८१. समयसारटीका (आत्मख्याति)—अमृतचन्द्राचार्य। पत्र सं० १३५। ग्रा० १०३×४५ इख्र भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १८३३ माह बुदो १। पूर्ण। वे॰ सं• २ । श्र भण्डार। १४८२. प्रति सं०२। पत्र सं०११६। ले० काल स०१७०३। वे० स०१०४। स्त्र भण्डार।
विशेष—प्रशस्ति-सवत् १७०३ मार्गसिर कृष्णापण्ड्या तियौ बुद्धवारे लिपितेयम्।
१४८३ प्रति सं०३। पत्र सं०१०१। ले० काल ४। वे० स०३। स्त्र भण्डार।
१४८४ प्रति सं०४। पत्र स०१० से ४६। ले० काल ४। वे० स०२००३। स्त्र भण्डार।
१४८४. प्रति सं०४। पत्र सं०६६। ले० काल स०१७०३ वैद्याख बुदी १०। वे० न०२२६। स्त्र

भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति —स० १७०३ वर्षे वैसाख कृष्णादशम्या तिथी लितितम् ।

१४८६ प्रति स० ६ । पत्र सं० ३१६ । ले० काल स० १६३८ । वे० स० ७४० । क भण्डार ।

१४८७ प्रति सं० ७ । पत्र सं० १३८ । ले० काल स० १६५७ । वे० स० ७४१ । क भण्डार ।

१४८८ प्रति सं० ८ । पत्र स० १०२ । ले० काल स० १७०६ । वे० स० ७४२ । क भण्डार ।

विशेष—भगवत दुवे ने सिरोज ग्राम मे प्रतिलिपि की थी ।

१४८६. प्रति सं ८ । पत्र सं ० ५३ । ले० काल × । वे० स० ७४३ । क भण्डार । १४६०. प्रति सं ० १० । पत्र स० १६५ । ले० काल × । वे० सं० ७४५ । क भण्डार । विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१५६१ प्रति सं० ११। पन स० १७६। ले॰ काल म० १६४८ देशारा मुदी ५। वे॰ स॰ १०६। घ भण्डार।

विशेष—ग्रक्वर बादशाह के शासनकाल मे मालपुरा मे लेखन सूरि श्रोताम्वर मुनि जेमा ने प्रतिनिधि नी थी। नीचे निम्नलिखित पक्तिया ग्रीर लिखी है—

> 'पाढे खेतु सेठ तत्र पुत्र पाढे पारसु पोथी देहुरे। घाली स० १६७३ तत्र पुत्रु वीसाखानन्द कत्रहर।

बीच मे कुछ पत्र लिखवाये हुये है।

१४६२. प्रति सं०१२। पत्र स०१६८। ले० काल म०१६१८ माघ सुदी १। वे० रा० ७५। ज भण्डार।

विशेप--सगर्ही पन्नालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी। ११२ ने १७० तक नीले पत्र है।

१४६३ प्रति सं०१३। पत्र स०२४। ले० नाल स०१७३० मगसिर मुदी १४। वे० स०१०६। व्य भण्डार।

१४६४ समयसार वृत्ति" । पत्र स० ४ । ग्रा० ५ २ ४ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-ग्रध्यात्म । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० स० १०७ । घ मण्डार ।

१४६४. समयसारटीका ' '।'पत्र स० ८१। ग्रा० १०३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ७६६ । ड भण्डार ।

श्र भण्डार ।

१४६६. समयसारनाटक—त्रनारसीदास । पत्र सं० ६७ । ग्रा० ६ ४४ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रध्यात्म । र० काल सं० १६६३ ग्रासोज सुदी १३ । ले० काल स० १८३८ । पूर्ण । वे० सं० ४०६ । श्रम्भण्डार ।

१४६७ प्रति सं०२। पत्र सं०७२। ले० काल स०१८६७ फाग्रुए मुदी ६। वे० सं०४०६। श्र भण्डार।

विशेष--- आगरे मे प्रतिलिपि हुई थी।

१४६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल 🔀 । ग्रपूर्ण । वे० सं० १०६६ । त्र्य भण्डार । १४६६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल 🔀 । ग्रपूर्ण । वे० सं० ६८४ । त्र्य भण्डार । १६००. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ से ११४ । ले० काल सं० १७८६ फागुरा सुदी ४ । वे० सं० ११२८

१६०१ प्रति सं०६। पत्र स०१८४। ले० काल सं०१६३० ज्येष्ठ बुदी १५। वे० सं० ७४६। क

विशेष—पद्यो के वीच मे सदासुख कासलीवाल कृत हिन्दी गद्य टीका भी दी हुई है। टीका रचना सं० १९१४ कार्त्तिक सुदी ७ है।

> १६०२ प्रति सं०७। पत्र स०११। ले० काल स०१६५। वै० सं०७४७। क भण्डार। १६०३. प्रति सं० ८। पत्र सं०४ से ५६। ले० काल 🗙। वे० स०२०८। ख भण्डार। विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नहीं हैं।

१६०४. प्रति सं०१। पत्र स०८७। ले० काल स०१८८७ माघ सुदी ८। वे० स०८४। ग भण्डार। १६०४. प्रति सं०१०। पत्र सं०३६९। ले० काल सं०१६२० वैशाख सुदी १। वे० सं०८४। ग भण्डार।

विशेष—प्रति गुटके के रूप में है। लिपि बहुत सुन्दर है। ग्रक्षर मोटे है तथा एक पत्र मे ५ लाइन भीर प्रति लाइन में १८ ग्रक्षर हैं। पद्यों के नीचे हिन्दी ग्रर्थ भी है। विस्तृत सूचीपत्र २१ पत्रों मे है। यह ग्रन्थ तनसुख सोनी का है।

१६८६. प्रति सं८ ११। पत्र सं० २८ से १११। ले० काल स १७१४। अपूर्ण। वे० स० ७६७। इस् भण्डार।

विगेष- रामगोपाल कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी।

१६०७. प्रति सं०१२ । पत्र स०१२२ । ले० काल स० १६५१ चैत्र सुदी २ । वे० सं० ७६८ । स्ट भण्डार ।

विशेप--- महोरीलाल ने प्रतिलिपि कराई थी।

१६०५ प्रति सं०१३। पत्र सं०१०१। ले० काल सं०१६४३ मगसिर बुदी १३१ वे० सं०७६९। ड भण्डार।

विशेष--लदमीनारायण त्राह्मण ने जयनगर मे प्रतिलिपि की थी।

ं १६८६. प्रति स० १४। पत्र स० १६०। ले० काल सं० १६७७ प्रथम सावरा सुदी १३। वे० स० ७७०। इ. भण्डार।

विशेष-हिन्दी गद्य में भी टीका है।

१६१०. प्रति सं १४ । पत्र स० १० । ले० काल 🗙 । ग्रपूर्ण । वे० सं० ७७१ । स भण्डार ।

१६११. प्रति सं०१६। पत्र स०२ से २२। ले॰ काल 🗴 । श्रपूर्ण। वे० सं०३५७। इ. भण्डार।

१६१२. प्रति सं २१७। पत्र सं०६७। ले० काल सं० १७६३ ग्रापाढ सुदी १५। वे० सं०७७२।

क्क भण्डार।

भण्डार ।

१६१३ प्रति सं०१८। पत्र सं०६०। ले० काल सं०१८३४ मंगसिर बुदी ६। वे० सं०६६२। च

विशेष-पाढे नानगराम ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि कराई

१६१४ प्रति सं० १६। पत्र सं० ६०। ले० काल 🗙। प्रपूर्ण। वै० सं० ६६५। च भण्डार।

१६१४ प्रति सं०२०। पत्र सं०४१ से १३२। ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण। वे० सं० ६९५ (क)। च

भण्डार ।

१६१६. प्रति सं० २१ | पत्र सं० १३ । ले० काल × | वे० स० ६९५ (ख) । च भण्डार । १६१७. प्रति सं० २२ । पत्र सं० २६ । ले० काल × | वे० सं० ६९५ (ग) । च भण्डार ।

१६१८. प्रति सं० २३ । पत्र सं० ४० से ५० । ले० काल सं० १७०४ ज्येष्ठ सुदी २ । प्रपूर्ण । वे०

सं० ६२ (ग्र) । छ भण्डार।

१६१६. प्रति सं०२४। पत्र स० १८३। ले० काल सं० १७८८ ग्रापाढ बुदी २। वे० स०३। ज भण्डार।

विशेष-भिण्ड निवासी किसी कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी।

१६२०. प्रति सं० २४ । पत्र सं० ४ से ८१ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० १५२६ । ट भण्डार ।

१६२१. प्रति सं० २६ । पत्र सं० ३६ । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्श । वे० सं० १७०८ । ट भण्डार ।

१६२२. प्रति सं० २०। पत्र सं० २३७। ले० काल सं० १७४६। वे० सं० १९०६। ट भण्डार।

विशेष--प्रति राजमल्लकृत गद्य टीका सहित है।

१६२३. प्रति सं०२८। पत्र स० ६०। ले० काल ×। वे० सं० १८६०। ट भण्डार।

१६२४. समयसारभाषा--जयचन्द् छाबड़ा । पत्र स० ५१३ । ग्रा० १३×८ इख । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-ग्रध्यात्म । र० काल सं० १८६४ कार्तिक बुदी १० । ले० काल सं० १९४६ । पूर्ण । वे० सं० ७४८ । क भण्डार ।

१६२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६६ । ले० काल × । वे० सं० ७४६ । क भण्डार । १६२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१६ । ले० काल × । वे० सं० ७५० । क भण्डार । भण्डार ।

१६२७. प्रति सं०४। पत्र सं० ३२५। ले० काल सं० १८८३। वे० सं० ७५२। क भण्डार। विशेष-सदासुखजी के पुत्र रुयोचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१६२८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३१७। ले० काल सं० १८७७ ग्रापाढ बुदी १५। वे० सं० १११। घ

विशेष—बेनीराम ने लखनऊ मे नवाब गजुद्दीह बहादुर के राज्य मे प्रतिलिपि की ।
१६२६ प्रति सं० ६। पत्र सं० ३७५। ले० काल सं० १९५२। वे० सं० ७७३। इन्न भण्डार।
१६३०. प्रति सं० ७। पत्र सं० १०१ से ३१२। ले० काल 🗙 । वे० सं० ६६३। च भण्डार।

१६३१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३०५ । ले० काल 🗴 । वे० सं० १४३ । ज भण्डार ।

१६३२. समयसारकलशाटीका ' " । पत्र सं० २०० से ३३२ । म्रा० ११% ४ इख्र । भाषा-ि्न्दी । विषय-म्रध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १७१५ ज्येष्ठ बुदी ७ । म्रपूर्ण । वे० सं० ६२ । छ भण्डार ।

विशेष—वध मोक्ष सर्व विशुद्ध ज्ञान और स्याद्वाद चूलिका ये चार श्रधिकार पूर्ण हैं। शेष अधिकार नहीं है। पहिले कलशा दिये है फिर उनके नीचे हिन्दी मे अर्थ है। समयसार टीका क्लोक सं० ५४६५ हैं।

१६३३. समयसारकत्तशाभाषा " " । पत्र सं० ६२ । म्रा० १२ \times ६ इख्र । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-म्राप्यात्म । र० काल \times । ले० काल \times । म्रपूर्ण । वे० सं० ६९१ । च भण्डार ।

१६३४. समयसारवचितिका "' । पत्र सं० २६ | ले० काल × | वे० सं० ६६४ | च भण्डार |

१६३४. प्रति सं०२। पत्र सं०३४। ले॰ काल 🗙 । वे॰ सं०६९४ (क) । च भण्डार।

१६३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल 🗙 । वे० सं० ३९६ । च भण्डार ।

१६३७. समाधितन्त्र—पूज्यपाद् । पत्र सं० ५१ । ग्रा० १२६ \times ५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-योग शास्त्र । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ७५६ । क भण्डार ।

१६३८. प्रति सं०२। पत्र स०२७। ले० काल ×। वे० सं० ७५८। क भण्डार।

१६३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६३० वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७५६ । क भण्डार ।

१६४०. समाधितन्त्र । पत्र सं॰ १६। ग्रा॰ १० \times ४ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-योगशास्त्र । र॰ काल \times । ले॰ काल \times । पूर्ण । वे॰ स॰ ३६४ । व्य मण्डार ।

विशेप—हिन्दी अर्थ भी दिया है।

१६४२. समाधितन्त्रभाषा"""। पत्र सं० १३८ से १६२ । ग्रा० १० \times ४ $\frac{2}{5}$ इख्र । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-योगशास्त्र । र० काल \times । ले० काल \times । ग्रपूर्यी । वे० सं० १२६० । श्र्य भण्डार ।

विशेष-प्रति प्राचीन है। वीच के पत्र भी नही हैं।

. १६४२. समाधितन्त्रभाषा--माग्यकचन्द्र । पत्र सं० २६ । ग्रा० ११×५ इख । भाषा-हिन्दी विषय-योगशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२२ । ग्रा भण्डार ।

विशेष---मूल ग्रन्थ पुज्यपाद का है ।

भण्डार |

१६४३. प्रति सं० २ | पत्र सं० ७५ । ले० काल स० १६४२ | वे० स० ७५५ । क भण्डार । १६४४. प्रति सं० ३ | पत्र सं० २८ । ले० काल × | वे० स० ७५७ । क भण्डार । विशेष—हिन्दी प्रर्थ ऋषभदास निगोत्या द्वारा शुद्ध किया गया है । १६४४. प्रति सं० ४ | पत्र सं० २० | ले० काल × । वे० स० ७६ । क भण्डार ।

१६४६. समाधितन्त्रभापा-नाथूराम दोसी । पत्र स० ४१५ । ग्रा० १२५४७ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-योग । र० काल स० १६२३ चैत्र सुदी १२ । ले० काल स० १६३८ । पूर्ण । वे० स० ७६१ । क भण्डार ।

१६४७. प्रति सं०२। पत्र स०२१०। ले० काल 🗴 । वे० सं० ७६२। क भण्डार।

१६४८. प्रति सं० ३। पत्र स० १६८। ले० काल स० १९५३ द्वि० ज्येष्ठ युदी १०। वे० स० ७८०। स भण्डार।

१६४६. प्रति सं० ४ | पत्र स० १७५ । ले० काल × । वे० स० ६६७ । च भण्डार ।

१६४०. समाधितन्त्रभाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र स० १८७ । ग्रा० १२६४५ इख्र । भाषा-गुजराती लिपि हिन्दी । विषय-योग । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० ११३ । घ भण्डार ।

विशेष—धीच के कुछ पत्र दुवारा लिखे गये है। सारंगपुर निवासी प० उधरण ने प्रतिलिपि की थी। १६५१. प्रति सं०२। पत्र सं०१४८। ले० काल सं०१७४१ कार्त्तिक सुदी ६। वे० स०११४। घ भण्डार।

१६४२ प्रति सं०३। पत्र सं०५१। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० स० ७८१। ड भण्डार। १६४३ प्रति सं०४। पत्र स० २०१। ले० काल ×। वे० स० ७८२। ड भण्डार। १६४४. प्रति स०४। पत्र सं०१७४। ले० काल सं०१७७१। वे० स०६६६। च भण्डार। विशेष—समीरपूर मे प० नानिगराम ने प्रतिलिपि की थी।

१६४४. प्रति सं०६। पत्र स०२३२। ले० काल 🗴। श्रपूर्ण। वे० स०१४२। छ् भण्डार। १६४६. प्रति सं०७। पत्र स०१२४। ले० काल सं०१७३४ पौप सुदी११। वे० सं०४४। ज

विशेष--पाण्डे ऊघोलाल काला ने नेसरलाल जोशी में विहन नाथी के पठनार्थ सीलोर में प्रतिलिपि कर-चायी थी। प्रति गुटका साइज है।

१६४७. प्रति सं ६ । पत्र स० २३८। ले० काल स० १७८६ ग्रापाढ सुदी १३। वे० स० ५६। मा भण्डार।

१६४८ समाधिमरण्" । पत्र सं० ४। ग्रा० ७३४६३ इख । भाषा-प्राकृत । विषय-ग्रध्यातम । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० स० १३२६।

१६४६- समाधिमरणभाषा—चानतराय । पत्र स० ३ । ग्रा० ८५×४५ इख्र । भाषा—हिन्दी । विषय— प्रध्यातम । र० काल × । के० काल × । पूर्ण । वे० स० ४४२ । स्त्र भण्डार ।

> १६६०. प्रति स० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल 🗴 । वे० स० ७७६ । स्त्र भण्डार । १६६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल 🗴 । वे० स० ७८३ । स्त्र भण्डार ।

भण्डार ।

भण्डार ।

१६६२. समाधिमरणभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १०१ । ग्रा० १२×५ इख्र । भाषा— हिन्दी। विषय-ग्रध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १६३३। पूर्ण। वे० सं० ७६६। क भण्डार।

विशेष--वावा दुलीचन्द का सामान्य परिचय दिया हुम्रा है । टीका बाबा दुलीचन्द की प्रेरणा से की गई थी।

१६६३. समाधिमरण्भापा—सूरचंद । पत्र स० ७ । आ० ७३४५ ६ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यातम । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १४७ । छ मण्डार ।

१६६४. समाधिमरण्भाषा" "। पत्र स०१३ । आ०१३१×५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यातम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८४ । ङ भण्डार ।

१६६४. प्रति सं०२। पत्र स०१४। ले० काल सं०१८८३। वे० स०१७३७। ट भण्डार।

१६६६. समाधिमरग्रास्वरूपभाषा " " । पत्र स० २५ । ग्रा० १०३ \times ५ इख्र । भाषा–हिन्दो । विषय– ग्राध्यात्म । र० काल \times । ले० काल सं० १८७८ मंगसिर बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४३१ । छा भण्डार ।

१६६७. प्रति सं०२। पत्र स०२५। ले० काल सं० १८८३ मगसिर बुदी ११। वे० सं० ८६। ग भण्डार।

विशेष--कालूराम साह ने यह ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियो के मन्दिर मे चढाया ।

१६६८. प्रति सं० ३। पत्र स० २४। ले० काल सं० १८२७। वे० सं० ६९६। च भण्डार।

१६६९. प्रति सं० ४। पत्र सं० १९। ले० काल स० १९३४ भादत्रा सुदी १। वे० स० ७००। च

१६७०. प्रति स० ४। पत्र स० १७। ले० काल सं० १८८४ भादवा बुदी ८। वे० सं० २३६। छ भण्डार।

१६७१. प्रति सं०६। पत्र सं०२०। ले० काल सं०१८५३ पौष बुदी ६। वे० स० १७५। ज

विशेष—हरवश लुहाड्या ने प्रतिलिपि की थी।

१६७२. समाधिशतक-पूज्यपाद । पत्र स० १६ । ग्रा० १२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सम्यातम । र० वाल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६४ । श्रा भण्डार ।

१६७३. प्रति सं०२ | पत्र सं०१२ | ले० काल × | वे० सं० ७६ | ज भण्डार ।

विशेष--प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१६७४. प्रति सं०३। पत्र सं०७। ले० काल स०१६२४ बैशाख बुदी ६ । वे० स०७७ । ज भण्डार।

विगेष-संगही पन्नालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१६७४. समाधिशतकटीका—प्रभाचन्द्र।चार्य। पत्र स० ५२। ग्रा० १२ ४५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—ग्रध्यातम। र० काल ४। ले० काल सं० १९३५ श्रावरण सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ७६३। क भण्डार। १६७६. प्रति सं० २। पत्र स० २०। ले० काल ४। वे० सं० ७६४। क भण्डार।

१६७७. प्रति सं २ ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १६५८ फाग्रुगा बुदी १३ । वे० ग० ६७३ । प्र विशेष---प्रति सस्कृत टीका सहित है । जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१६७५ प्रति स० ४। पत्र सं० ७। ले० काल 🗙 । वे० सं० ३७४। च भण्डार ।

१६७६. प्रति स० ४। पत्र स० २४। ले० काल ४। वे० स० ७८४। इः मण्डार।

१६८० समाधिशतकटीका : "'। पत्र स० १४ । ग्रा० १२४४ दे दञ्ज । भाषा-मंन्युत । भिषय-ग्रध्यातम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० मं० ३३४ । श्रा भण्डार ।

१६८१ संबोधपंचासिका-गौतमस्वामी । पत्र स० १६। म्रा॰ ६२४८ दख । भाषा-प्राग्न । विषय-म्रन्यात्म । र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ मं॰ ७८६ । हः भण्डार ।

विशेष-संस्कृत मे टीका भी है।

१६८२. सबोधपंचासिका—रङ्घू । पत्र स० ४। म्रा० ११×६ दख । भाषा-मपन्न न । र० नात × । ले० काल सं० १७१६ पौप सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० २२६ । स्त्र भण्डार ।

विशेप--प॰ विहारीदासजी ने इसकी प्रतिलिपि करवायी थी। प्रशस्ति-

सवत् १७१६ वर्षे मिती पौस विद ७ सुम दिने महाराजाधिराज श्री जैसिंहजी विजयराज्ये नाह् श्री हसराज तत्पुत्र साह श्री गेगराज तत्पुत्र त्रयः प्रयम पुत्र साह राइमलजी । द्वितीय पुत्र साह श्री विलक्षे नृतीय पुत्र साह देवसी । जाति सावडा साह श्री रायमलजी का पुत्र पित्र साह श्री विहारीदामजी लिखायने ।

> दोहडा-पूरव श्रावक की कहे, ग्रुश इकवीस निवाम । सो परतिख पेरियये, श्रीग विहारीदास ॥

लिखतं महात्मा द्व गरसी पिडत पदमसीजी का चेला खरतर गच्छे वासी मौजे मौहाएगात् मुकाम दिल्ली मध्ये । १६८३. संबोधशतक—द्यानतराय । पत्र सं० ३४। ग्रा० ११४७ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्राम्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७८६ । ख भण्डार ।

विशेष--प्रथम २० पत्रो मे चरचा शतक भी है। प्रति दोनो थ्रोर से जली हुई है।

१६८४. संबोधसत्तरी "" पत्र स०२ से ७। ग्रा० ११×४६ दश्च । भाषा-प्राकृत । विषय-

१६८४. स्वरोद्य "" । पत्र स० १६। आ० १०४४ दृ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-योग । र० काल ४ । ले॰ काल सं० १८१३ मगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० २४१ । ख भण्डार ।

विशेष--प्रति हिन्दी टीका सहित है। देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य उदयराम ने टीका लिखी थी।

१६८६. स्वानुभवदर्पेण-नाथूराम । पत्र सं० २१ । म्रा० १३४८३ इख्र । भाषा हिन्दी (पद्य)। विषय-म्रध्यात्म । र० काल सं० १६५६ चैत्र सुदी ११। ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १८७ । छ भण्डार ।

१६८७. हठयोगदीपिका "" । पत्र सं० २१ । म्रा० ११ \times ५६ इख्र । भाषा-नंस्कृत । विषय-योग । र० काल \times । ले० काल \times । म्रपूर्ण । वे० स० ४४४ । च भण्डार ।

विषय-न्याय एवं दर्शन

१६८८, त्र्रध्यात्मकमलमार्त्ताग्रह-किव राजमञ्ज। पत्र सं०२ से १२। आ०१०×४० इख्र। भाषा-संस्कृत । विषय-जैन दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं०१९७५। आ भण्डार।

१६८. श्रष्टशती—श्रकलंकदेव। पत्र सं० १७। श्रा० १२४५३ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय— जैन दर्शन। र० काल ४। ले० काल स० १७६४ मंगसिर बुदी ८ । पूर्ण। वे० सं० २२२। श्र भण्डार।

विशेष-देवागम स्तोत्र टीका है। प॰ सुखराम ने प्रतिलिपि की थी।

१६६०. प्रति सं०२। पत्र सं०२२। ले० काल स०१८७५ फाग्रुन सुदी ३। वे० सं०१५६। ज भण्डार।

१६६१. त्राष्ट्रसहस्त्री--- त्राचार्य विद्यानित् । पत्र सं० १६७ । ग्रा० १०×४ हे इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-जैनदर्शन । र० काल × । ले० काल सं० १७६१ मंगसिर सुदी १ । पूर्ण । वे० स० २४४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है। लिपि सुन्दर है। ग्रन्तिम पत्र पीछे लिखा गया है। पं॰ चोखचन्द ने ग्रपने पठनार्थ प्रतिलिपि कराई। प्रशस्ति—

श्री भूरामल संघ मडनमिएाः, श्री कुन्दकुन्दान्वये श्रीदेशीगरागच्छपुस्तकिष्ठा, श्री देवसंघाप्रगी संवत्सरे चंद्र रंघ्र मुनीदुमिते (१७६१) मार्गशीर्षमासे शुक्कपक्षे पंचम्या तिथौ चोखचंदेगा विदुषा शुभं पुस्तकमष्टसहरूयाससप्रमा-गोन स्वकीयपठनार्थमायत्तीकृतं ।

> पुस्तकमष्टसहस्त्र्या वं चोखचंद्रे एा धीमता। ग्रहीतं शुद्धभावेन स्वकर्मक्षयहेतवे ॥१॥

१६६२. प्रति सं०२। पत्र सं०३६। ले० काल 🗴 । अपूर्या । वे० सं०४०। इस भण्डार।

१६६३. त्र्याप्तपरीत्ता-विद्यानित्। पत्र सं० २५७ । ग्रा० १२×४३ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-जैन न्याय। र० काल × । ले० काल सं० १९३६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ५८ । क भण्डार ।

विशेष — लिपिकार पन्नालाल चौधरी । भीगने से पत्र चिपक गये हैं ।

१६६४. प्रति सं० २। पत्र सं० १४। ले० काल 🔀 । वे० सं० ५६। क भण्डार । विशेष—कारिका मात्र है।

१६६४. प्रति सं०३ | पत्र सं०७। ले० काल 🗴 | वे० सं०३३ । स्रपूर्ण | 🖘 भण्डार |

१६६६. श्राप्तमीमांसा—समन्तभद्राचार्य। पत्र म० ६४। श्रा० १२३४ एडा। भाषा-मन्द्रम । विषय-जैन न्याय। र० काल ×। ले० काल स० १६३५ श्रापाढ सुदी ७। पूर्ण। वे० म० ६०। क भण्टार।

विशेष—इस ग्रन्थ का दूसरा नाम 'देवागमस्तोत्र सटीक श्रष्टश्वी' दिया हुग्रा है । १६६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०१ । ते० काल × । वे० स० ६१ । क भण्डार । विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । १६६५. प्रति स० ३ । पत्र सं० ३२ । ते० काल × । वे० स० ६३ । क भण्डार ।

१६६६ प्रति सं० ४। पत्र सं० ३२। त० काल ×। व० स० ६३। क भण्डार। १६६६ प्रति सं० ४। पत्र मं० १८। ते० काल ×। वे० स० ६२। क भण्डार।

१७००. श्राप्तमीमासालंकृति—विद्यानिन्द् । पत्र त० २२६ । मा० १६४७ इख्र । भाषा-नंस्कृत । विषय-न्याय । र० काल ४ । ले० काल त० १७६६ भादवा मुदी १५ । वे० त० १४ ।

विशेष—इसी का नाम अप्रशत्ती भाष्य तथा अप्रसहस्री भी है। मालपुरा ग्राम मे महाराजाधिराज राजिसिट जी के शासनकाल मे चतुर्भुज ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी। प्रति काफी बड़ी साइज की है।

१७०१ प्रति सं २ । पत्र स० २२४ । ले० काल 🗙 । वे० स० ८६६ । क भण्डार ।

विशेष--प्रति वडी साइज की तथा सुन्दर लिखी हुई है । प्रति प्रदर्शन योग्य है ।

१७०२ प्रति सं०३। पत्र सं०१७२। म्रा० १२×५ देखा ले० वाल स० १७८४ श्रावण मुर्दा १०। पूर्ण। वे० स० ७३। स भण्डार।

१७०३. श्राप्तमीमासाभापा—जयचन्द छ।बड़ा । पत्र स० ६२ । ग्रा० १२४४ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-न्याय । र० काल स० १८६६ । ले० काल १८६० । पूर्ण । वे० स० ३६४ । ग्र भण्डार ।

१७०४. श्रालापपद्धति—देवसेन । पत्र सं० १० । ग्रा० १०३×१ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १० । स्त्र भण्डार ।

विशेष—१ पृष्ठ से ४ पृष्ठ तक प्राभृतमार ४ से ६ तक सप्तभग गन्थ ग्रीर हैं। प्राभृतसार—मोह तिमिर मार्लंड रियजनन्दिपच शाक्तिकदेवेनेद कथित।

१७०४. प्रति सं०२। पत्र स०७। ले० काल स० २०१० फाग्रुग् युदी ४। वे० स० २२७०। श्र भण्डार।

विशेष—ग्रारम्भ मे प्रामृतसार तथा सप्तभगी है। जयपुर मे नायूलाल वज ने प्रतिलिपि की थी। १७०६. प्रति सं० ३। पत्र स० १६। ले० काल ×। वे० सं० ७६। ड भण्डार। १७०७ प्रति स० ४। पत्र सं० ११। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० सं० ३६। च भण्डार। १७०८ प्रति सं० ४। पत्र स० १२। ले० काल ×। वे० स० ३। च भण्डार। १७०६. प्रति स० ६। पत्र स० १२। ले० काल ×। वे० स० ४। ञ भण्डार। विशेष—मूलसघ के श्राचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।

न्याय एव दर्शन ी

१७१०. प्रति स० ७। पत्र सं० ७ से १५। ले० काल सं० १७८६। अपूर्या। वे० सं० ५१५। त्र भण्डार।

१७११. प्रति संर्ं द। पत्र स० १० ले० काल ४। वे० सं० १८२१। ट भण्डार ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

१७१२. ईश्वरवाद ' "'। पत्र सं० ३ । म्रा० १० \times ४ $१ ६ म्रा० । माषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल <math>\times$ । पूर्ण । वे० सं० २ । व्य भण्डार ।

विशेष - किसी न्याय के ग्रन्य से उद्धृत है।

१७१३ गर्भषडारचक-देवनंदि । पत्र सं०३। ग्रा०११×४६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं०२२७ । मा भण्डार।

१७१४. ज्ञानदीपक "," पत्र सं० २४। ग्रा० १२×५ इश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-न्याय । र० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१ । ख भण्डार ।

विशेप-स्वाध्याय करने योग्य ग्रन्थ है ।

१७१४. प्रति सं २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल 🗴 । वे० सं० २३ । मा भण्डार ।

१७१६. प्रति सं० ३। पत्र स० २७ से ६४। ले० वाल सं० १८५६ चैत बुदी ७। ग्रपूर्ण। वे० सं० १५६२। ट भण्डार।

विशेप-अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इसो ज्ञान दीपक श्रुत पढो सुगो चितधार।

सब विद्या को मूल ये या विन सकल ग्रसार ।।

इति ज्ञानदीपक नामा न्यायश्रुत संपूर्गं।

१७१७. ज्ञानदीपकवृत्ति पत्र सं० ८ । ग्रा० ६३८४ इक्ष्म । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० नाल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ । छ भण्डार ।

विशेष--प्रारम्भ-

नमामि पूर्णिचिद्रूपं नित्यीदितमनावृत ।

सर्वाकाराभाषिभा शक्त्या लिंगितमीश्वर ॥१॥

ज्ञानदीपकमादाय वृत्ति कृत्वासदासरै:।

स्वरम्नेहन संयोज्यं ज्वालयेदुत्तराधरै ।।२॥

१७१८. तर्कप्रकरण '। पत्र सं० ४० । आ० १०×४३ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० फाल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३४८ । स्त्र भण्डार ।

१७१६. तर्कदीपिका ं । पत्र स० १५। ग्रा० १४×४ हुँ इख्र । भाषा—सस्तृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १८३२ माह मुद्दी १३ । वे० स० २२४ । ज भण्डार ।

भण्डार ।

१७२० तर्कप्रमाण ' । पत्र स० म से ५०। ग्रा० ६२४४ हज्ज । भाषा-सम्कृत । विषय-न्याय । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । ग्रपूर्ण एवं जीर्ण । वे० सं० १६४५ । त्र्य भण्डार ।

१७२१. तर्कभाषा—केशव मिश्र । पत्र स० ४४ । ग्रा० १०×४% इख । भाषा-सस्कृत । विषय-

१७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से २६ । ले० काल सं० १७४६ भादवा बुदी १० । वे० सं० २७३ । इ भण्डार ।

१७२३. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६ । ग्रा० १०×४३ इख । ने० वाल सं० १६६६ ज्येष्ठ बुदौ २ । वे० स० २२५ । ज भण्डार ।

१७२४. तर्कभाषात्रकाशिका—वालचन्द्र । पत्र सं • ३५ । ग्रा० १०×३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल × । वे० स० ५११ । व्य भण्डार ।

१७२४ तर्करहस्यदीपिका—गुण्रत्नसूरि। पत्र सं०१३४। म्रा०१२×५ इखः। भाषा-मंस्कृत। विषय-न्याय।र॰ काल ×। ले॰ काल ×। म्रपूर्ण।वे॰ स॰ २२६४। म्र भण्डार।

विशेष--- यह हरिभद्र के पड्दर्शन समुचय की टीका है।

१७२६ तर्कसंग्रह — श्रान्तं भट्ट । पत्र स० ७ । ग्रा० ११६ ×५६ इख्र । भाषा — संस्कृत । विषय — त्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०२ । श्रा भण्डार ।

१७२७. प्रति सं०२। पत्र सं०४। ले० काल सं०१८२४ भादवा बुदी ५। वे० मं० ४७। ज भण्टार।

विशेष-रावल मूलराज के शासन में लच्छीराम ने जैसलपुर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१७२८. प्रति सं०३। पत्र स०६। ले० काल स०१८१२ माह सुदी ११। वे० सं०४८। ज

विशेप—पोथी मार्गकचन्द लुहाड्या की है। 'लेखक विजराम पौप बुदी १३ संवत् १८१३' यह भी लिखा हुमा है।

१७२६. प्रति सं०४। पत्र स० म। ले० काल स० १७६३ चैत्र सुदी १५। वे० सं० १७६५। ट

विशेप—ग्रामेर के नेमिनाथ चैत्यालय मे भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य (छात्र) दोदराज ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१७३०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १८४१ मगसिर बुदी ४ । वे० स० १७६८ । इन् भण्डार।

विशेष-चेला प्रतापसागर पठनाथै।

१७३१. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८३६। वे० सं० १७६६। ट भण्डार। विशेष—सवाई माधोपुर मे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ने श्रपने हाथ से प्रतिलिपि की।

नोट—उक्त ६ प्रतियो के ग्रितिरिक्त तर्कसग्रह की आ भण्डार में तीन प्रतिया (वे० सं० ६१३, १८३६, २०४६) ड भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७४) च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३६) ज भण्डार में ३ प्रतिया (वे० स० ४६, ४६, ३४०) ट भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० १७६६, १८३२) ग्रीर हैं।

१७३२. तर्कसंग्रहटीका " ""। पत्र सं० ५ । ग्रा० १२५×५ इख्र । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० २४२ । व्य भण्डार ।

१७३३. तार्किकशिरोमिण्-रघुनाथ । पत्र सं० ८ । ग्रा० ८४४ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० १५८० । द्य भण्डार ।

१७३४. द्श्नेसार—देवसेन । पत्र सं ५ । आ० १०६४४६ इख्न । भाषा-प्राकृत । विषय-दर्शन । र० काल सं ० ६६० माघ सुदी १० । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० १८४८ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--ग्रन्थ रचना धारानगर मे श्री पाहवैनाथ चैत्यालय मे हुई थी।

१७३४. प्रति सं०२। पत्र स०२। ले० काल सं०१८७ माघ सुदी ४। वे० सं०११९। छ

विशेप—पं० बस्तराम के शिष्य हरवंश ने नेमिनाथ चैत्यालय (गोधो के मन्दिर) जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

> १७३६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० सं० २८२ । ज भण्डार । विशेष—प्रति संस्कृत टब्वा टीका सहित है ।

१७३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ३ । व्य भण्डार । १७३८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १८५० भादवा बुदी ८ । वे० सं० ४ । व्य भण्डार । विशेष—जयपुर मे पं० सुखरामजी के शिष्य केसरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

१७३६ दर्शनसारभाषा—नथमता। पत्र सं० म। ग्रा० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-दर्शन। र० काल सं० १६२० प्र० श्रावणा बुदी ४। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६५। क भण्डार।

१७४०. दर्शनसारभाषा—प० शिवजीलाल । पत्र सं० २८१ । ग्रा० ११×८ इख्र । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-दर्शन । र० काल सं० १९२३ माघ सुदी १० । ले० काल सं० १९३६ । पूर्ण । वे० सं० २९४ । क्रभण्डार ।

१७४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२० । ले० काल 🗴 । वे० सं० २८६ । इङ भण्डार ।

१७४२. दर्शनसारभाषा' ''''। पत्र स० ७२ । ग्रा० ११३×१६ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-दर्शन। र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ५० । ख भण्डार ।

१७४३. द्विजवचनचपेटा । पत्र सं० ६ । ग्रा० ११×५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । वे० सं० ३८२ । ज भण्डार ।

१७४४. प्रति सं २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० १७६८ । ट भण्डार । विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१७४४. त्यचक्र—देवसेन । पत्र स० ४५ । ग्रा० १०३४७ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-सात नयो का वर्गान । र० काल × । ले० काल स० १६४३ पीप सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० ३३५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम सुखवीधार्थ माला पद्धित भी है। उक्त प्रति के ग्रितिरिक्त के भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० स० ३५३, ३५४, ३५६) च छ भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० १७७ व १०१) ग्रीर हैं।

१७४६. नयचक्रभापा—हेमराज । पत्र सं० ५१ । ग्रा० १२ ई×४ दे इख । भापा-हिन्दी (गद्य) । विषय-सात नयो का वर्णन । र० काल स० १७२६ फागुरण सुदी १० । ले० काल स० १६३८ । पूर्ण । वे० सं० ३५७ । क भण्डार ।

१७४७ प्रति मं०२।पत्र स०६०। ले० काल म०१७२६। वे० स०३५८। क भण्डार।

विशेष--७७ पत्र से तत्त्वार्थ सूत्र टीका के अनुसार नय वर्णन है।

नोट-उक्त प्रतियों के ग्रतिरिक्त ड, छ, ज, भ भण्डारों में एक एक प्रति (वै० स० ३४५, १८७, ६२३, ८१) क्रमशः ग्रीर हैं।

१७४८. तयचक्रमापा " । पत्र स० १०६ । ग्रा० १०३×४३ इख्र । भाषा-हिन्दी । र० वाल × । ले० काल म० १९४८ ग्रापाढ बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३५६ । क भण्डार ।

१७४६. नयचक्रभावप्रकाशिनीटीका—निहालचन्द् अप्रवाल । पत्र स० १३७ । ग्रा० १२×७ई इख्र । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-न्याय । र० काल स० १८६७ । ले० काल सं० १६४४ । पूर्ण । वे० स० ६६० । क भण्डार ।

विशेष---यह टीका कानपुर कैट मे की गई थी।

१७४०. प्रति सं० २ । पत्र स० १०४ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ३६१ । क मण्डार ।

१७४१. प्रति सं० ३ | पत्र स० २२४ । ले० काल म० १६३८ फाग्रुग सुदी ६ । वे० स० ३६२ । क

विशेप-जयपुर मे प्रतिलिपि की गयी थी।

१७४२ न्यायकुमुदचन्द्रोद्य-भट्ट श्रव लंकदेव , पत्र म० १५ । आ० १०३×४० इख्न । भाषा-सस्त्रत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५७ । श्र भण्डार ।

विशेष— पृष्ठ १ मे ६ तक न्यायकुमुदचन्द्रोदय ५ परिच्छेद तथा शेष पृष्ठो मे भट्टाकलकशशाकानुस्मृति प्रव-चन प्रवेश है ।

१७४३ प्रति सं २ । पत्र स० ३८ । ले० काल सं० १८६४ पौप सुदी ७ । ने० स० २७० । छ

विशेष-- मवाई राम ने प्रतिलिपि की थी।

१७४४. न्यायकुमुद्चिन्द्रिका-प्रभाचन्द्रदेव । पत्र स० ५दे८ । ग्रा० १४६४ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय-। र० काल 🗙 । ले० काल स० १६३७ । पूर्ण । वे० स० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष-भट्टाकलंक कृत न्यायकुमुदचन्द्रोदय की टीका है।

१७४४. न्यायदीपिका—धर्मभूषगायित । पत्र सं० ३ से ८ । आ० १०३×४६ इख । भाषा-सस्कृत ।
विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२०७ । आ भण्डार ।
नोट—उक्त प्रति के अतिरिक्त क भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३६७, ३६८) घ एव च भण्डार मे एक २ प्रति
(वे० सं० ३४७, १८० , च भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १८०, १८१) तथा ज भण्डार मे एक प्रति
(वे० सं० १२) और है ।

१७५६. न्यायदीषिकाभाषा—सदासुल कासत्तीवात । पत्र स० ७१ । ग्रा० १४×७ देख । भाषा—हिन्दी । विषय-दर्शन । र० काल स० १६३० । ले० काल स० १६३० वैशाल सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३४६ । छ भण्डार ।

१७४७ न्यायदीपिकाभाषा—संघी पन्नालाल । पत्र स० १६० । ग्रा० १२३×७ इख । भाषा— हिन्दी । विषय—न्याय । र० काल स० १६३५ । ले० काल स० १६४१ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

१७४८ न्यायमाला—परमहंस परित्राजकाचायं श्री भारती तीर्थमुनि । पत्र स० ६६ से १२७। आ० १०३×५३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १६०० सात्रण बुदी ५ । अपूर्ण । वे० स० २०६३ । आ भण्डार ।

१७४६ न्यायशास्त्र '। पत्र स० २ मे ५२ । ग्रा० १०३×८ इच । भाषा-संस्कृत । विषय—न्याय। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६७६ । ऋ भण्डार ।

१७६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६४६ । स्त्र भण्डार । विभेष—िकसी न्याय ग्रन्थ से उद्धृत है ।

१७६१. प्रति सं०३। पत्र सं०३। ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० ५५ । ज भण्डार ।

१७६२. प्रति सं ८ ४ । पत्र स० ३ । ले० काल 🗴 । अपूर्या । ते० स० १८६८ । ट भण्डार ।

१७६३. न्यायसार—साधवदेव (तद्मग्रदेव का पुत्र) पत्र सं० २८ से ८७ । आ० १०३४४% इत्र । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल स० १७४६ । अपूर्ण । वे० सं० १३४३ अप्र भण्डार ।

१७६४ न्यायसार । पत्र स० २४। ग्रा० १०×४; इख । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१६ । म्रा भण्डार ।

विशेष---श्रागम परिच्छेद तर्वपूर्ण है।

१७६४ न्यायसिद्धांतमञ्जरी—जानकीनाथ। पत्र सं०१४ मे ४६। ग्रा० ६१४३६ इख्र। भाषा— सम्कृत । विषय-न्याय। र० काल 🗙 । ले० काल स०१७७४। ग्रपूर्ण। वे० स०१४७८। स्र भण्डार। १७६६. न्यायसिद्धांतमञ्जरी-भट्टाचार्ये चूडामिशा । पत्र स० २८ । आ० १३४६ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्श । वे० सं० ५३ । ज भण्ड.र ।

विशेष-सटीक प्राचीन प्रति है।

१७६७. न्यायसूत्र'''''' पत्र स० ४। ग्रा० १०×४ दे इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण । वे० सं० १०२६ । श्र भण्डार ।

विशेष--हेम व्याकरण में से न्याय सम्बन्धी सूत्रो का सग्रह किया गया है। ग्राशानन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१७६८. पट्टरीति—विष्णुभट्ट। पत्र सं० २ से ६। प्रा० १० है×३६ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय। र० का ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२६७ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—ग्रन्तिम पुष्पिका— इति साधर्म्य वैधर्म्य संग्रहोऽय कियानिष विष्णुभट्टे: पट्टरीत्या वालव्युत्पत्तये कृतः । प्रति प्राचीन है ।

१७६६. पत्रपरीत्ता—विद्यानिद् । पत्र स० १५ । ग्रा० १२३४६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ल० काल × । श्रपूर्ण । वे० सं० ७८६ । स्र भण्डार ।

१७७०. प्रति सं०२। पत्र स० ३६। ले० काल स० १६७७ ग्रासोज बुदी ६। वे० म० १६४६। ट भण्डार।

विशेष-शेरपुरा मे श्री जिन चैत्यालय मे लिखमीचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१७७१ पत्रपरीत्ता-पात्र केशरी । पत्र सं० ३७ । ग्रा० १२३×५ इख्न । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १६३४ ग्रासोज सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ४५७ । क भण्डार ।

> १८७२. प्रति स०२ | पत्र स०२० | ले० काल 🗙 | ने० स० ४५८ | क भण्डार | विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१७७३. परीत्तामुख-माणिक्यनंदि । पत्र सं० ४ । ग्रा० १०×५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र॰ काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ स॰ ४३६ । ह भण्डार ।

१७७४. प्रति सं०२ | पत्र स०६ | ले० काल सं० १८६६ भादवा सुदी १ | वे० सं०२१३ । च

१७७४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६७ से १२६। ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० २१४। च भण्डार। विशेष—सस्कृत टीका सहित है।

१७७६. प्रति सं०४। पत्र स०६। ले० काल ×। वे० स० २८१। छ भण्डार। १७७७. प्रति सं०४। पत्र स०१४। ले० काल स०१६०८। वे० स०१४५। ज भण्डार।

लेखन काल अध्टे व्योम क्षिति निधि भूमि ते भाद्रमासगे)

१७७८. प्रति संट ६। पत्र संव ६। लेव काल 🗴 । वेव संव १७३६ | ट भण्डार ।

१७७६. परीत्तामुन्वभाषा—जयचन्द छात्रङा । पत्र सं० २०६ । ग्रा० १२×७६ इस्र । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-न्याय । र० काल स० १८६३ ग्राषाढ सुदी ४ । ले० काल सं० १९४० । पूर्ण । वे० सं० ४५१ । कं भण्डार ।

१७८०. प्रति सं २२। पत्र सं० ३०। ले० काल 🗙 । वे० सं० ४५०। क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर ग्रक्षरों में है। एक पत्र पर हाशिया पर सुन्दर देलें हैं। ग्रन्य पत्रों पर हाशिया में केवल रेखायें ही दी हुई हैं। लिपिकार ने ग्रन्थ श्रघूरा छोड दिया प्रतीत होता है।

१७८१. प्रति सं०३। पत्र सं०१२४। ले० काल सं०१६३० मगसिर सुदी २। वे० स०५६। घ भण्डार।

१७८२ प्रति सं०४। पत्र सं०१२०। ग्रा०१०१४६ इख्रा ले० काल सं०१८७८ श्रावण बुदी १। पूर्ण । वे० स०५०५। क भण्डार ।

१७८३. प्रति सं० ४। पत्र सं० २१८। ले० काल ४। वे० स० ६३६। च भण्डार।
१७८४. प्रति स० ६। पत्र सं० १६५। ले० काल सं० १६१६ कार्तिक बुदी १४। वे० स० ६४०।
च भण्डार।

१७८४. पूर्वमीमासार्थप्रकरण्-संप्रह—लोगान्तिभास्कर । पत्र सं० ६ । ग्रा० १२६४६६ इस । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६ । ज भण्डार ।

१७८६. प्रमाण्नयतत्त्वालोकालंकारटीका—रत्नप्रभसूरि। पत्र सं० २८८। आ० १२४४ इश्च । भाषा—संस्कृत । विषय–दर्शन । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ४९६ । क भण्डार ।

विशेष--टीका का नाम 'रत्नाकरावतारिका' है। मूलकर्त्ता वादिदेव सूरि है।

१७८७ प्रमाण्तिर्णेयः । पत्र स० ६४ । आ० १२३×५ इख्र । भाषा-मस्कृत । विषय-दर्शन । र॰ काल 🗴 । ले॰ काल 🗴 । पूर्ण । वै॰ सं॰ ४६७ । क. मण्डार ।

१७८८. प्रमाणपरीत्ता-श्रा० विद्यानंदि । पत्र स० ६६ । ग्रा० १२४५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-त्याय । र० काल × । ले० कील स० १६३४ ग्रासीज सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ४६८ । क भण्डार ।

१७८६ प्रति सं०२ । पत्र सं०४८। ले० काल 🗴 । वै० स० १७६। ज भण्डांर।

विशेष—प्रति प्राचीन है। इति प्रमाण परीक्षा समाप्ता। मितिराषाढमासस्यपक्षेत्र्यामलके तिथी तृतीयाया प्रमाणान्य परीक्षा लिखिता खलु ॥१॥

१७५० प्रमाणपरीत्ताभाषा—भागचन्द् । पत्र सर्व २०२ । ग्रा० १२३×७ इश्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-न्याय । रवे काल सर्व १६१३ । लेवं कालं संव १६३८ । पूर्ण । वेव सव ४६६ । क भण्डार ।

. १८६१ प्रति सं ६ १ पत्र सं ० २१६ । ले० काल × । वे० स० ५०० । क भण्डार । विशेष । १८६१ प्रति सं ६ १ प्रति सं १८६२ । प्राण्या सं १८६० । प्राण्या १२×४३ इख्र । भाषा संस्कृत । विशेष स्थाप । र० काल × । ले० काल सं ० १६३८ । पूर्ण । वे० सं ० ५०१ । क भण्डार ।

१३८] [न्याय एवं दृशेन

१७६३. प्रमाणमीमांसा—विद्यानिद । पत्र सं० ४० । प्रा० ११३×७३ दख । मापा-मंस्रुत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२ । क भण्डार ।

१७६४. प्रमाण्मीमांसा ' '' । पत्र म० ६२ । ग्रा० ११३× दद्ध । भाषा-नग्नन । यिषय-न्याय । र० काल × । ले० काल स० १६४७ श्रावरा सुदी १३ । पूर्ण । वे० म० ४०२ । क भण्डार ।

१७६४. प्रमेयकमलमार्चाएड-श्राचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सर्व २७६ । धार् १३४४ इझ । भागा-सस्कृत । विषय-दर्शन । रव्यक्त र लेव्यक्त । लेव्यक्त । लेव्यक्त । श्रिप्त । स्वयं । स्वयं

विशेप---पृष्ठ १३४ तथा २७६ से श्रागे नही है।

१७६६. प्रति सं०२। पत्र सं०६३८। ले॰ काल स० १६४२ ज्येष्ठ युदी ४ । ये॰ स०४०३। क

१८६७ प्रति स० ३ । पत्र स० ६६ । ल० काल × । श्रपूर्श । वे० ग० ४०४ । क् भण्डार । १७६८. प्रति सं० ४ । पत्र स० ११८ । ले० काल × । वे० स० १६१७ । ट भण्डार । विजेप—५ पत्रो तक सम्कृत टोका भी है । सर्वज्ञ मिद्धि से सदेहवादियों के राण्डन तक है ।

१७६६. प्रति सं० ४ | पन स० ४ से ३४ । या० १०×४६ इख । ने० कान × । प्रपूर्ण । वे० म० २१४७ | ट भण्डार ।

१८००. प्रमेयरत्नमाला—श्रनन्तवीर्य । पत्र सं० १५६ । ग्रा० १२×५ इख्र । मापा-मन्कृत । विगग-न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १९३४ भादवा सुदी ७ । वे० सं० ४५२ । क भण्डार ।

विशेष-परीक्षामुख की टीका है।

१८०१. प्रति सं०२। पत्र सं०१२७। ले॰ काल सं०१८६८। वे० म०२३७। च भण्डार। १८०२. प्रति सं०३। पत्र स०३३। ले॰ काल स॰ १७६७ माघ दुदी १०। वे० स०१०१। छ्र

विशेष--तक्षकपुर मे रत्नऋषि ने प्रतिलिपि की थी।

१८०३. वालगोधिनी—शंकर भगति। पत्र स० १३। म्रा० ८४४ इम्र। भाषा-सस्कृत। विषय-न्याय। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वै० स० १३६२। म्रा भण्डार।

१८०४. भावदीपिका—कृष्ण शर्मा। पत्र सं० ११। ग्रा० १३×६३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । र॰ काल × । ले॰ काल × । प्रपूर्ण । वै॰ सं० १८६५ । ट भण्डार ।

विशेप-सिद्धातमञ्जरी की व्याख्या दी हुई है।

सम्पूर्णानि ।

१८०४. महाविद्याविद्धम्बन" : । पत्र सं० १२ से १६ । आ० १०१४४ द्व । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल स० १४५३ फाग्रुण सुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० १६८६ । स्त्र भण्डार । विशेष---मनत् १५५३ वर्षे फाग्रुण सुदी ११ सोमे श्रद्योह श्रीपत्तनमध्ये एतत् पत्राणि लिवितानि

१८०६. युक्त्यनुशासन—श्राचार्यं समन्तभद्र । पत्र सं० ६ । ग्रा० १२६४७ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०४ । क भण्डार ।

१८०७. प्रति स० २ | पत्र सं० ४ । ले० काल 🗙 । ६०४ | क भण्डार ।

१८०८. युक्त्यनुशासनटीका—विद्यानिन्द् । पत्र सं० १८८। ग्रा० १२६४५ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-त्याय । रर्वकाल 🗴 । ले० काल स० १९३४ पौष सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६०१ । क भण्डार ।

विशेष-वावा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि कराई थी।

१८०६. प्रति सं० २। पत्र सं० ५६। ले० काल ×। वे० सं० ६०२। क भण्डार।

१८१०, प्रति सं० ३। पत्र सं० १४२। ले० काल सं० १६४७। वै० सं० ६०३। क भण्डार।

१८११. वीतरागस्तोत्र-स्त्रा० हेमचन्द्र । पत्र सं०७ । ग्रा० ११६४४ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल स० १५१२ ग्रासोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २५२ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—चित्रकूट दुर्ग मे प्रतिलिपि की गई थी। संवत् १५१२ वर्षे म्रासोज सुदी १२ दिने श्री चित्रकूट दुर्गेऽलिखतः।

१८१२. वीरद्वात्रिंशतिका—हेमचन्द्रसूरि। पत्र स० ३३। ग्रा० १२४५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ३७७ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-- ३३ से भ्रागे पत्र नहीं हैं।

१८१३. पड्दर्शनवात्ती " " । पत्र सं० २८ । म्रा० ८४६ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । र० काल × । ले॰ काल × । म्रपूर्या । वे० सं० १५१ । ट भण्डार ।

१८१४. षड्दर्शनिवचार" " । पत्र सं० १० । ग्रा० १० $\frac{4}{5}$ ×४ $\frac{1}{5}$ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल \times । ले० काल सं० १७२४ माह बुदी १० । पूर्ण । वे० स० ७४२ । ड भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे जोधराज गोदीका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी। श्लोको का हिन्दी ग्रर्थ भी दिया हुग्रा है।

१८१४. पड्दर्शनसमुच्चय—हिरभद्रसूरि । पत्र सं० ७ । ग्रा० १२३ \times ५ इ च । विषय–दर्शन । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । क भण्डार ।

१८९६. प्रति सं०२। पत्र सं०४। ले० काल ४। वे० सं०६८। घ भण्डार।

विशेष--प्रति प्राचीन शुद्ध एवं संस्कृत टीका सहित है।

१८१७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल 🗴 । वे० सं० ७४३। रू भण्डार ।

१८१८. प्रति सं० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल सं० १५७० भादवा सुदी २ । वे० सं० ३६६ । व्य

१८९१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल 🗴 । वे० सं० १८६४ । ट मण्डार ।

१८२०. पड्दर्शनसमुचन्नि—गण्रतनसूरि। पत्र सं० १८५। ग्रा० १३×८ इंच। भाषा—संस्कृत । विषय-दर्शन। र० काल ×। ले० काल सं० १९४७ द्वि० भादवा सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ७११। क भण्डार।

''' १≒२१. पड्दरीनंसमुचंयटीका'''' । पत्र स० ६० । ग्रा० १२३४५ ई च । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ७१० । क भण्डार ।

१८२२ संचिप्तिवेदान्तशास्त्रप्रक्रियां "। पत्र स०४६। ग्रा०१२×५६ इ च। भाषा-मस्कृत। विषय-दर्शनः। रं० काल ×। ले० काल सं०१७२७। वे० सं०३६७। व्य भण्डार।

१८२३. सप्तनयावबोध—मुनि नेत्रसिंह। पत्र स० ६। ग्रा० १०४४ इ च। भाषा-सस्कृत। त्रिपय-दर्शन (सप्त नयो का वर्णन है)। र० काल ४। ले० काल सं० १७४५। पूर्ण। वे० सं० ३४९। श्र भण्डार।

.विनय-मुनि-नयख्याः सर्वभावा भुविस्था ।
जिनमतकृतिगम्याः नेतेरेपा सुरम्याः ॥
उत्रकृतगुरुगादास्सेव्यमाना सदा मे ।
विदधतु सुकृपाते ग्रन्थ ग्ररम्यमार्गे ॥१॥
माददैव प्रसम्यादौ सप्तनयाववोधक
य श्रुत्वा येन मार्गेस गच्छिन्त सुधियो जना ॥१॥

इसके पश्चात् टीका प्रारम्भ होती है। नीयते प्राप्यते अर्थोऽनेनेति नयः ग्रीअ प्रापगे इति वचनात् ।

श्रन्तिम---

प्रारम्भ--

तत्पुण्य मुनि-धर्मकर्मनिधनं मोक्षं फलं निर्मल ।

लब्ध येन जनेन निश्चयनयात् श्री नेत्रृसिधोदित: ॥

स्याद्वादमार्गाश्रयिएगे जनाः ये श्रोप्यति शास्त्रं सुनयानबोधं ।

मोच्यति चैकातमतं सुदोपं मोक्षं गमिष्यति सुखेन भग्या ॥

इति श्री सप्तनयावबोध शास्त्रं मुनिनेतृसिहेनं विरिचितं शुभं चेयं ॥

१८२४. सप्तपदार्थी'''''''। पत्र सं॰ ३६। ग्रा० ११४५ इ च । मापा-सस्कृत । विषय-जैन मतानुसार मात पदार्थी का वर्रान है। ले॰ काल ४ । र० काल ४ । ग्रपूर्य । वे॰ सं॰ १८८ । व्य भण्डार ।

१८२४. सप्तपदार्थी—शिवादित्य । पत्र सं॰ × । ग्रा॰ १०१४४६ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय— देशेषिक न्याय के श्रनुसार सप्त पदार्थी का वर्णन । र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ स॰ १९६३ । ट भण्डार । विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

१८२६. सन्मतितके--मूलकत्तां सिद्धसेन दिवाकर । पत्र म० ४८ । ग्रा० १०४४३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० सं० ६०३ । ग्रा भण्डार ।

१८२७ सारसंप्रह—वरदराज । पत्र सं० २ से ७३ । ग्रा० १०६×४३ इ च । भाषा-मस्कृत । विषय-

१७२८. सिद्धान्तमुक्तावलिटीकां - मेहादेवभट्ट। पंत्र सं० ६८। ग्रा० ११४४३ इन । भाषा-संस्कृत । विषय-याय । र० काल ४। ले० काल सं० १७५६ । वे० सं० ११७२ । आ भण्डार ।

विशेष-जैनेतर ग्रन्थ है।

888

न्याय एवं दर्शन]

१८२६. स्याद्वादचूिलका "" । पत्र स० १४ । म्रा० ११३×५ इंच । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-दर्शन । र० काल ×। ले० काल स० १६३० कार्त्तिक बुदी ५। वे० सं० २१६। व्य भण्डार ।

विशेष—सागवाडा नगर मे ब्रह्म तेज्पाल के पठनार्थ लिखा गया था। समयसार के कुछ पाठो का ग्रंश है। १८३० स्याद्वादमञ्जरी —मिल्लिपेग्स्स्रिरि। पत्र सं० ४। ग्रा० १२३×५ इंच। भाषा-सम्कृत। विषय-दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ८३४। स्त्र भण्डार।

१८३१. प्रति सं०२ । पत्र स० ५४ से १०६ । ले० काल स० १५२१ माघ सुदी ५ । अपूर्ण । ते० स० ३६६ । च्या भण्डार ।

१८३२. प्रति सं०३ । पत्र स०३ । आ० १२×५३ इच । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६१ । आ भण्डार ।

विशेष--केवल कारिकामात्र है।

१८३३ प्रति सं ८ ४। पत्र सं० ३०। ले० का्ल 🗙 । अपूर्ण । वै० सं० १६०। व्या भण्डार ।



विषय- पुरागा साहित्य

१८२४. श्रजितपुराण्—पंडिताचार्ये श्ररुणमणि । पत्र स० २७३। श्रा० १२४५ इस्र । भाषा—संस्कृत । विषय-पुराण् । र० काल सं० १७१६ । ले० काल स० १७८६ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २१८ । श्र भण्डार ।

प्रशस्ति—सवत् १७८६ वर्षे मिती जेष्ट सुदी ६ । जहानाबादमध्ये लिखापित ग्राचार्य हर्पकीत्तिजी मयाराम स्वपठनार्थं ।

१८३४. प्रति सं०२। पत्र स० ६६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७। छ भण्डार। विशेष—१६वें पर्व के ६४वें क्लोक तक है।

१८२६. ऋजितनाथपुराण्—विजयसिंह । पत्र स० १२६ । आ० ६३४४ इख । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पुराण् । र० काल सं० १५०५ कॉत्तिक सुदी १४ । ले० काल सं० १५८० चैत्र सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० २२८ । व्य भण्डार ।

विशेष—सं० १५८० मे इब्राहीम लोदी के शासनकाल मे सिकन्दराबाद मे प्रतिलिपि हुई थी।
१८३७. श्रनन्तनाथपुराण्—गुण्भद्राचार्य । पत्र स० ८ । श्रा० १०५४६ इख्र । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण् । र० काल × । ले० काल सं० १८८५ भादना सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ७४ । व्य भण्डार ।
विशेष—उत्तरपुराण् से लिया गया है।

१८३८. श्रागामीत्रेसठशलाकापुरुषवर्णानः "। पत्र स० ८ से २१। श्रा० १२५४६ इक्क । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराख । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । श्रपूर्ण । वे० सं० ३८ । श्र्य भण्डार ।

विशेष-एकसौ उनहत्तर पुण्य पुरुषो का भी वर्णन है।

१८३६. त्रादिपुराण्-जिनसेनाचाये। पत्र स० ५२७ । प्रा० १०६४६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल 🗙 । ले० काल स० १८६४ । पूर्ण । वै० सं० ६२ । श्र भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे पं० खुशालचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

१८४०: प्रति सं० २। पत्र स० ५०६। ले० काल स० १६६४। वे० स० १५४। स्त्र भण्डार।

१८४१ प्रति सं० ३। पत्र सं० ४०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०४२। स्त्र भण्डार।

१८४२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४६१। ले० काल स० १६५०। वे० स० ५६। क भण्डार।

१८४३. प्रति सं० ४। पत्र स० ४३७। ले० काल × वे० सं० ५७। क भण्डार।

विशेष—देहली मे सन्तलालजी की कोठी पर प्रतिलिपि हुई थी।

१८४४. प्रति सं०४। पत्र स०४७१। ले० काल सं० १९१४ वैशाख सुदी १०। वे० सं०६। घ भण्डार।

विशेप—हायरस नगर मे टीकाराम ने प्रतिलिपि की थी।

१८४८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४६१ । ले० काल सं० १८६४ चैत्र सुदी ५ । वे० सं० २५० । ज भण्डार ।

विशेष—मेठ चम्पराम ने ब्राह्मण् स्यामलाल गौड से ग्रपने पुत्र पौत्रादि के पठनार्थ प्रतिलिपि करायी। प्रशस्ति काफी बड़ी है। भरतखण्ड का नक्शा भी है जिस पर सक १७८४ जेठ सुदी १० लिखा है। कही कही किठन शब्दो का सस्कृत मे ग्रर्थ भी दिया है।

१८४६. प्रति सं०७। पत्र स०४१६। ले० काल 🗙 । जीर्गा। वे० सं०१४६। व्य भण्डार। १८४७ प्रति सं०८। पत्र सं०१२६। ले० काल स०१६०४ मगसिर बुदी ६। वे० सं०२५२। व्य भण्डार।

१८४८ प्रति स०६। पत्र सं०४१०। ले० काल सं०१८०४ पीष बुदी ४। वे० स० ४५१। व्य

विशेष-नैरासागर ने प्रतिलिपि की थी

१८४६ प्रति सं०१०। पत्र म०२०६। ले० काल 🗙 । अपूर्ण। वे० सं०१८८८ । ट भण्डार।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त आ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०४२) के भण्डार में एक प्रति (वे० स० १५) छ भण्डार में एक प्रति (वे० स० ६६) च भण्डार में ३ अपूर्ण प्रतिया (वे० सं० ३०, ३१, ३२) ज भण्डार में एक प्रति (वे० स० ६६६) और है।

१८४० त्रादिपुराण टिप्पण-प्रभाचन्द्र। पत्र स०२७। ग्रा०११३४५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। र०काल ४। ले० काल ४। ग्रपूर्ण। वे०स० ८०१। त्र्य भण्डार।

१८४१. प्रति सः २ । पत्र सं० ७६ । ले० काल 🗙 । ग्रपूर्ण । वे० सं० ८७० । ऋ भण्डार ।

१८४२. ऋादिपुरार्णाटिष्पण्-प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ५२ से ६२ । ऋा० १०१४४६ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-पुरार्ण । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । अपूर्ण । वे० स० २६ । च भण्डार ।

विशेष-पुष्पदन्त कृत यादिपूराण का टिप्पण है।

१८४३ श्रादिपुराण-महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ३२४ । ग्रा० १०६४४ इख्र । भाषा-ग्रपभ्रंश । विषय-पुराण । र० काल 🗴 । ले० काल स० १६३० भादवा सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ५३ । क भण्डार ।

१८४४. प्रति स० २ । पत्र सं० २६६ । ले० काल 🗶 । अपूर्ण । वे० स० २ । छू भण्डार । विशेष—वीच मे कई पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन है । साह व्यहराज ने पचमी स्रतोद्यापनार्थ कर्मक्षय निमित यह प्रत्य लिखाकर महात्मा खेमचन्द को भेंट किया ।

१-४४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०३। ले० काल ×। श्रपूर्ण। वे० सं० ५४। क भण्डार।

१८४६. प्रति सं० ४ । पत्र स० २६४ । ले० काल स० १७१६ । वे० स० २६३ । व्य भण्डार । विशेष—कही कही कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

१८४७ स्त्रादिपुरागा—प० दौलतराम । पत्र स० ४०० । ग्रा० १५×६ दश्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुरागा । र० काल सं० १८२४ । ले० काल स० १८८३ माघ सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ५ । ग्राभण्डार ।

विशेप-कालूराम साह ने प्रतिलिपि कराई थी।

१=४= प्रति सः २। पत्र स० ७४६। ले० काल ४। वे० स० १४६। छ भण्डार ।

विशेष--प्रारम्भ के तीृन पत्र नवीन लिखे गये हैं।

१८४६ प्रति स॰ ३। पत्र स० ५०६। ले॰ काल स॰ १८२४ ग्रासोज बुदी ११। वे॰ स॰ १४२। छ भण्डार।

विशेष—उक्त प्रतियों के श्रितिरिक्त रा भण्डार में एक प्रति (वे० स० ६) छ भण्डार में ४ प्रतिया (वे० स० ६७, ६८, ७०) च भण्डार में २ प्रतिया (वे० सं० ५१८, ५१६) छ भण्डार में एक प्रति (वे० स० १५५) तथा सा मण्डार में २ प्रतिया (वे० स० ६६, १४६) श्रीर हैं। ये सुभी प्रतिया श्रपूर्ण हैं।

१८० उत्तरपुराग्य—गुग्यभद्राचार्थ। पत्र सं० ४२६। ग्रा० १२४५ इच । भाषा–सस्कृत । विषय्-पुराग्य । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वै० स० १३० । ब्र्य भण्डार ।

१८६१ प्रति संट२। पृत्र स० ३६३। ले० काल स० १९०६ श्रासीज सुदी १३ । वे० स० ८ । घ अण्डार ।

विशेप—बीच मे २ पृष्ठ नये लिखाकर रखे ग्ये है । काष्ठासधी माथुरान्व्यी भट्टारक श्री उद्धरमेन की बडी प्रशस्ति दी हुई है । जहागीर वादशाह के शासनकाल मे चीहाएगाराज्यान्तर्गत श्रलाखपुर (श्रलवर) के तिजारा नामक ग्राम मे श्री श्रादिनाथ चैत्यालय मे श्री गोरा ने प्रतिलिपि की थी ।

१८६२, प्रति संट ३। पत्र स० ५४०। ले० काल स० १६३५ माह सुदी ५। वे० स० ५६०। इट

विशेष--मम्कृत में सकेतार्थ दिया है।

१८६३ प्रति स०४। पत्र स०३०६। ले॰ काल स०१८२७। वे॰ सं०१। छ भण्डार।

विशेष-सवाई जयपुरमे महाराजा पृथ्वीसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई । सा० हेमराज ने मतोषराम के शिष्य बखतराम को भेंट किया । कठिन शब्दों के संस्कृत मे ग्रर्थ भी दिये है ।

१८६४ प्रति सं ८ ४। पत्र स० ४५३। ले० काल सं० १८८८ सावरण सुदी १३। वे० स० ६। छ

विशेष—सागानेर मे नोनदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

१८६४. प्रति स०६। पत्र सं० ४८४। ले० काल सं० १६६७ चैत्र बुदी १ । ते० स० ८३। स मण्डार।

विद्येप--भट्टारक जयकीर्ति के बिष्प ब्रह्मकल्यासागर ने प्रतिलिप की थी।

१८६. प्रति सं० ७। पत्र सं० ३६६। ले० काल स० १७०६ फाग्रुस् सुदी १० वि० सं० ३२४। स्म भण्डार।

विशेष पाड़े गोर्छन् ने प्रतिलिपि की थी। कही कही कहिन शब्दों के अर्थु भी दिये हुये हैं। १८६७ प्रति संट द। पत्र स० ३७२। ले० काल स० १७१८ भादवा सुदी १२। वे० स० २७२।

व भण्डार् ।

विशेष — उक्त प्रतियो के ग्रुतिरिक्त श्रा, क ग्रीर ड भण्डार मे एक-एक प्रति (वै॰ स॰ ६२४, ६७३,७७) ग्रीर हैं। सभी प्रतिया ग्रपूर्ण हैं।

१८६८. बुत्तरपुरा्ण्टिप्पण-प्रभाचन्द्र । पृत्र स० ५७ । ग्रा० १२्४४ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-पुरारा । र० काल सं० १०८० । ले० काल स० १५७५ भादवा सुदी ५ । पूर्णं । वे० स० १४४ । श्रू भण्डार ।

विशेष-पुष्पदन्त कृत् उत्तरपुराण का टिप्पण है। लेखक प्रशस्ति-

श्री विक्रमादित्य सवत्सरे वर्षागामशीत्यृधिक सहस्रो महापुरागाविषमपदविवरणसागरसेनसैद्धातान् परि-ज्ञाय मूलिटप्यग्रकानुवृत्कोक्य कृतिमद समुख्यिद्धिप्यगं । झज्ञपातृभीतेन श्रीमृद् बृलात्कारगग्रश्रीसधाचार्य सत्कवि विष्येगा श्रीचन्द्रमुनिना निज दौर्दंडाभिभूतिरपुराज्यविज्यिन श्रीभोजदेवस्य ॥ १०२ ॥

इति उत्तरपुराग्विष्टिंग्ग्रकं प्रभावन्द्राचार्यविरिचतसमाप्तं ॥ श्रथ सवत्सरेस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्द समृत् १५७५ वर्षे भादवा सुदी ५ बुधिदिने कुरुजागलदेशे सुलितान सिक्दर पुत्र सुलितानुन्नाहिसुराज्यप्रवर्त्तमाने श्री काष्ठा-संघे माथुरान्वये पुष्करगग्गे भट्टारक श्रीग्रग्राभद्रसूदिदेवा तदाम्नाये जैसवालु चौ० जगमी पुत्रु चौ० टोडरमल्लु इद लुत्रपुराग् टीका लिखानित । शुभं भवतु । मागृत्य दधित लेखक पाठकयोः ।

१८६६. प्रति सं०२। पत्र सं०६१। ले० काल ४। वे० स०१४५ । स्रा भण्डार।

वृशेष—श्री जयसिंहदेवराज्ये श्रीमद्वारानिवासिना परापरमेष्टिप्रगामोपाजितामलपुण्यनिराकृताखिलमल कलंकेन श्रीमत् प्रभाचन्द्र पडितेन महापुराग् टिप्पग्क सतत्र्यधिक सहस्रत्रय प्रमाग् कृतिमिति ।

१८७०. प्रति स० ३। पत्र सं० ५६। ले० काल 🗙 । वे० स० १८७६। ट भण्डार।

१८७१. उत्तरपुराणभाषा—खुशालचन्द । पत्र सं० ३१० । ग्रा० ११×८ इख । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुराण । र० काल स० १७८६ मगसिर सुदी १० । ले० काल सं० १६२८ मंगसिर सुदी १ । पूर्ण । वे० स० ७४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति में खुशाल्चन्द का ५३ पद्यों में विस्तृत पूर्विचय दिया हुआ है । वस्तावरलाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१८७२. प्रति स०२ | पत्र सं० २२० । ले० काल सं० १८८३ वैशास सुदी ३ । वे० सं० ७ । स

विशेष--कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी।

१८७३. प्रति सं०३। पत्र सं०४१५। ले० काल सं० १८६६ मगसिर सुदी १। वे० सं०६। घ भण्डार।

१८७४ प्रति सं०४। पत्र सं०३७४। ले० काल स०१८५८ कार्त्तिक बुदी १३। वे० स०१८। अर्घ भण्डार।

१८७४. प्रति सं० ४ । पत्र स० ४०४ । ले० काल स० १८६७ । वे० स० १३७ । मा भण्डार । विशेष—च भण्डार मे तीन श्रपूर्ण प्रतिया (वे० स० ५२२, ५२३, ५२४) श्रीर है ।

१८६. उत्तरपुराग्यभाषा—संघी पन्नालाल । पत्र स० ७६३ । म्रा० १२४८ इख । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराग् । र० काल स० १६३० म्रापाढ सुदी ३ । ले० काल स० १६४५ मगसिर बुदी १३ । पूर्ग । वे० स० ७५ । क भण्डार ।

१८७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३५ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० स० ८० । ड भण्डार । विशेप—५३४वा पत्र नहीं हैं । कितने ही पत्र नवीन लिखे हुये हैं ।

१८७८ प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६६। ले० काल 🗴 । वे० स० ८१ । ड भण्डार ।

विशेय---प्रारम्भ के १६७ पत्र नीले रग के है। यह सशोधित प्रति है। इ भण्डार मे एक प्रति (वें सं० ७६) च भण्डार मे दो प्रतिया (वें० स॰ ५२१, ५२५) तथा छ भण्डार मे एक प्रति ग्रीर है।

पुराण्। र० काल स० १९१३ भादवा बुदी १३। ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० १७६। क भण्डार ।

१८८०. जिनेन्द्रपुराग्य—भट्टारक जिनेन्द्रभूपग्य। पत्र सं० ६६०। ग्रा० १६४६ इक्ष। भाषा— सस्कृत। विषय-पुराग्य। र० काल ४। ले० काल सं० १८४२ फाग्रुग्य बुदी ७। वे० स० ६४। व्य भण्डार।

विशेप--जिनेन्द्रभूषरा के प्रशिष्य ब्रह्महर्पसागर के भाई थे। १६५ प्रधिकार हैं । पुरारा के विभिन्न विषय हैं।

१८८१. त्रिपष्टिसमृति—महापिडत स्त्राशाधर । पत्र स० २४ । आ० १२४५३ इख । भाषा—संस्कृत । विशय-पुराए। र० काल स० १२६२ । ले० काल सं० १८१५ शक स० १६८०। पूर्ण । वे० स० २३१ । आ
भण्डार ।

विशेप—नलकच्छपुर में श्री नेमिजिनचैत्यालय मे ग्रन्थ की रचना की गई थी। लेखक प्रशस्ति विस्तृत

१८८२. त्रिपष्टिशालाकापुरुषवर्णानः । पत्र स० ३७ । ग्रा० १०३×१६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-पुरारा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० १६९४ । ट भण्डार ।

विशेष---३७ से आगे पत्र नहीं हैं।

१८८३ नेमिनाथपुराण-भागचन्द् । पत्र सं० १६६ । ग्रा० १२५४८ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र० काल स० १६०७ सावन बुदी ५ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० ६ । छ भण्डार । १८८४ नेमिनाथपुराण्-न० जिनदास। पत्र सं० २६२। ग्रा० १४×५३ इख्र। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६। छ भण्डार।

१८-४. नेमिपुराग् (हरिवंशपुराग्ण)-ब्रह्म नेमिद्त्त । पत्र सं०१६० । श्रा०११४४ ई इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराग्ग । र० काल ४ । ले० काल स०१६४७ ज्षेष्ठ सुदी ११ । पूर्ण । जीर्गा । वे स०१४६ । अप्र भण्डार ।

विशेष-लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

सवत् १६४७ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ११ बुधवासरे श्री मूलसधे नद्याग्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दावार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनित्द देवातत्पट्टे भ० श्रीकुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा
द्वितीय शिष्य मंडलाचार्य श्री रत्नकीत्तिदेवा तत्शिष्य मडलाचार्य श्रीभुवनकीत्तिदेवा तत्शिष्य मडलाचार्य श्रीवकालकीत्तिदेवा तत्शिष्य मडलाचार्य श्रीकालकीत्तिदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री श्री श्री नेमचन्द तदाग्नाये ग्रगरवालान्वये मुगलगोत्रे साह जीगा तस्य भार्या ठाकुरही तयो पुत्रा
पच । प्रथम पुत्र सा खेता तस्य भार्या छानाही । सा. जीगा द्वितीय पुत्र सा. जेता तस्य भार्या वाधाही तयो पुत्रा त्रय
प्रथम पुत्र सा देइदास तस्य भार्या साताही तयो. पुत्रात्रयः प्रथमपुत्र चि० सिरवत द्वितीयपुत्र चि० मागा वृतीयपुत्र चि०
चतुरा । द्वितीयपुत्र साह पूना तस्य भार्यागुजरहो वृतायपुत्र सा. चीमा तस्य भार्या मानु । सा जीगा तस्य वृतीयपुत्र सा.
सातु तस्य भार्या नान्यगही तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र सा. गोविंदा तस्य भार्या पदर्थही तयो पुत्र चि० धर्मदास द्वि० पुत्र
चि० मोहनदास । मा जीगातस्य चतुर्थपुत्र सा. मल्लू तस्य भार्या नीवाही तयोपुत्रा त्रय प्रथमपुत्र सा उत्मा तस्य भार्या
धनराजही तयोपुत्र चि० दूरगदास द्वितीयपुत्र सा महोदास तस्यभार्या उदाही वृतीयपुत्र सा टेमा तस्य भार्या मोरवगही ।
सा जीगा तस्य पंचमपुत्र सा. साचू तस्यभार्या होलाही तयोपुत्र चि० सावलदास तस्यभार्या पूराही एतेषा मध्ये सा.
मल्तेनेदं शास्त्रं हरिवशपुरागाल्य ज्ञानावरगीकर्मक्षयनिमित्तं मडलाचार्य श्री श्री श्री श्री लक्ष्मीचन्द्रतस्यशिष्या ग्राजिका शांति
श्री योग्य घटापितं ज्ञानावरगीकर्मक्षयनिमित्त ।

१८८६. प्रति सं०२। पत्र स०१२७। ले० काल सं०१६६३ ग्रासोज सुदी ३। वे० सं०३८७। क

विशेष--लेखक प्रशस्ति वाला पत्र बिलकुल फटा हुमा है।

१८८७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १५७। ले० काल स० १६४६ माघ बुदी १। वे० स० १८६। च

विशेष—यह प्रति अम्बावती (ग्रामेर) मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे नेमिनाथ चैत्यालय मे लिखी गई थी। प्रशस्ति, प्रपूर्ण है,।

१८८८ प्रति सं ८,४। पत्र स० १८८। ले० काल सं० १८३४ पौष बुदी १२। वे० सं० ३१। इद् भण्डार।

विशेष — इसके अतिरिक्त क्य भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३८) छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११३) और है।

भण्डार ।

१८८६ पद्मपुराण् - रिवपेण्याचार्य । प्य मं॰ ८७६ । म्रा० ११८५ डब्र । भाषा-मन्द्रन । विषय-पुराण् । र० काल 🗴 । ले० काल सं॰ १७०८ चैत्र सुदो ८ । पूर्ण । वे॰ सं॰ ६३ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—टोडा ग्राम निवासी साह ख़ीवसी ने प्रतिनिधि कराकर पर श्री हर्ष वल्याण ना भेट विया।
१८६०. प्रति सं०२। पत्र सं० ५६५। ले० काल मर० १८८२ श्रासीज बुदी है। ये० गर्० ४२। ग

विशेष--जैतराम साह ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवाई थी।

१८६१ प्रति सं०३। पत्र सं०४४५। ले० काल स०१८८५ भादवा बुदी १२। वे० ग०४२२ ! इहामण्डार ।

१८६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७६८ । ले० काल स॰ १८३२ मावणा मुदी १० । ने० म १८२ । ज भण्डार ।

विशेष-चीधरियों के चैत्यालय में पं॰ गोरधनदाम ने प्रतिलिपि की थी।

१्८६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४८१ । ले० काल स० १७१२ श्रासोज मुदी 🖂 । पे० म० १८३ । व्य

विशेष-अग्रवाल जातीय विसी श्रावक ने प्रतिलिपि को थी।

इसके म्रति्रिक्त क भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ४२६) तथा इ भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० ४२३, ४२५) म्रोर है।

१८६४ पद्मपुराण् (रामपुराण्)—महारक सोमसेन । पत्र स्० ४२०। घा० ६५ ४ इझ्। भाषा— सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल शक सं० १६४६ श्रावण सुदी १२। ने० काल स० १८६ श्रापाढ मुदी १८। पूर्ण । वे० स० २४। स्त्र भण्डार ।

१८६४. प्रति सं २ १ पत्र सं० ३५३ । ले० काल स० १६२५ ज्येष्ठ बुदी ऽऽ । वे० म० ४२५ । क भण्डार ।

विशेष---थोगो महेन्द्रकीर्ति के प्रसाद से ग्रह द्रचना की गई ऐसा स्वय लेखक ने लिखा है। लेखक प्रशस्ति कृटी हुई है।

१८६. प्रति स० रे। पत्र स० २००। ले० काल सं० १८३६ वैशाख सुदी ११। ये० न० ८। छ् सप्डार।

विदीप--- ब्राचार्य रत्नवीति के बिष्य नेमिनाथ ने सागानेर मे प्रतिलिपि को थी।

१८६७ प्रति स०४। पत्र सं॰ २५७। ले॰ काल सं॰ १७६४ ग्रासोज बुदी १३। वे॰ सं॰ ३१२। व्या मण्डार।

विशेष-सागानेर मे गोधो के मन्दिर मे प्रतिशिष हुई।

१८८८. प्रति सं० ४। पत्र सं० २५७। ले० काल मं० १७६४ ग्रासीज बुदी १३। वे॰ सं० ३१२। व

विशेप-सागानेर मे गोधो के मन्दिर मे महूराम ने प्रतिलिपि की थी।

इसके ग्रतिरिक्त ड भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ४२५, ४२६) च भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २०४) तथा छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५६) ग्रौर है।

१८६. पद्मपुराग् — भ० धर्मकीित । पत्र सं० २०७ । ग्रा० १३×६ई इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय— पुराग् । र० काल सं० १८३५ कार्तिक सुदी १३ । वे० स० ३ । छ भण्डार ।

विशेष-जीवनराम ने रामगढ नगर मे प्रतिलिपि की थी।

१६००. पद्मपुराग् (उत्तरखण्ड) " " । पत्र सं० १७६ । आ० ६×४६ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराग् । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६२३ । ट भण्डार ।

विशेष—वैष्णाव पद्मपुरागा है । बीचके कुछ पत्र चूहोने काट दिये है । ग्रन्त मे श्रीकृष्ण का वर्णन भी है ।

१६८१. पद्मपुराण्भाषा—पं० दौलतराम । पत्र सं०४६६ । ग्रा०१४×७ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । र० काल सं०१८२३ माघ सुदी ६ । ले० काल सं०१६१८ । पूर्ण । वे० सं०२२०४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—महाराजा रामसिंह के शासनकाल में प॰ शिवदीनजी के समय में मोतीलाल गोदीका के पुत्र श्री अमरचन्द ने हीरालाल कासलीवाल में प्रतिलिपि कराकर पाटौदी के मन्दिर में चढाया।

१६०२. प्रति सं०२। पत्र सं०५४१। ले॰ काल सं०१८८२ श्रासोज सुदी ६ । वे० सं०५४। रा भण्डार।

विशेष--जैतराम साह ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवायी थी।

१६०३ प्रति स० ३। पत्र सं० ४५१ | ले० काल स० १८६७ | वे० सं० ४२७ । इस अण्डार ।

विशेष—इन प्रतियों के अतिरिक्त आ भण्डार में दो प्रतिया (वै० सं० ४१०, २२०३) क ग्रीर रा भण्डार में एक एक प्रति (वै० स० ४२४, ५३) घ भण्डार में २ प्रतिया (वै० सं० ५५, ५६) च ग्रीर ज भण्डार में दो तथा एक प्रति (वै० स० ६२३, ६२४, व २५२) तथा मा भण्डार में २ प्रतिया (वै० सं० १६, ८८) ग्रीर हैं।

१६०४ पद्मपुराग्यभाषा—खुशालचन्द । पत्र सं० २०६ । ग्रा० १०४५ इ**ड** । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुराग्य । र० काल सं० १७६३ । ले० काल ४ । ग्रपूर्य । वे० सं० १०८७ । श्र भण्डार ।

१६०४. प्रति सं०२ । पत्र सं०२०६ से २६७ । ले॰ काल सं०१८४५ सावरा बुदी ८८ । वे॰ सं॰ ७८२ । श्र भण्डार ।

विशेष---ग्रन्थ की प्रतिलिपि महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल मे हुई थी। इसी भण्डार मे (वे॰ सं॰ ३४१) पर एक ग्रपूर्ण प्रति ग्रीर है।

भण्डार ।

१६०६. पाग्रह्मयुराग् — भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र स० १७३ । ग्रा॰ ११४५ इझ । भागा—सन्द्रन । विषय—पुराग् । र० काल स० १६०८ । ले० काल स० १७२१ फाग्रुग् चुदी ३ । पूर्गा । वे० न० ६२ । ग्र्य भण्डार । विशेष—ग्रन्थ की रचना श्री शाकवाटपुर में हुई थी । पत्र १३५ द्या १३७ बाद में न० १८८६ में पुन. लिखे गये हैं।

१६०७. प्रति सं०२। पत्र सं० ३००। ले० काल ग० १६२६। वे० ग० ४६४। क मण्डार। विशेष—प्रत्य ब्रह्मश्रीपाल की प्रेरणा मे लिखा गया था। महाचन्द्र न उपका नशीधन निया। १६०८. प्रति सं०३। पत्र स० २०२। ले० काल गं० १६१३ चेत्र बुदी १०। वे० ग० ४४५। ह

विशेष-एक प्रति ट भण्डार मे (वे० सं० २०६०) श्रीर है।

१६०६. पाग्डवपुराग्-भ० श्रीभूषण । पत्र स० २४६ । ग्रा० १२×५६ एख । भाषा-मंम्युत । विषय-पुराग् । र० काल स० १६५० । ले० काल स० १८०० मंगसिर बुदी ६ । पूर्ण । ते० ग० २३७ । ग्रा भण्डार । विशेष-लेखक प्रशस्ति विस्तृत है । पत्र वडकगो है ।

१६१०. पांगडवपुरांग्य—यश कीर्ति । पत्र सं० ३४० । ग्रा० १०३×४३ छन्न । भाषा-ग्रपभ्रं म । विषय-पुराग्। र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ६६ । छा भण्डार ।

र्१६११. पाग्डवर्पुराणभाषा—बुलाकीदाम । पत्र २०१४६ । श्रा० १३×६३ इच । भाषा-हिन्दा पद्य । विषय-पुराण । र० काल सं० १७५४ । ले० काल २० ८=१२ । पूर्ण । वे० स० ४६२ । प्र नण्डार ।

ंविशेष---श्रेन्तिमं ५ पत्रो में बाईस परीपह वर्णन भाषा में है।

क्र भण्डार मे इसकी एक अपूर्ण प्रति (वे० म० १११८) श्रीर है।

१६१२. प्रति सं०२ | पत्र स० १५२ | ले० काल स० १८८६ | ते० म० ५५ । ता भण्डार | विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी |

१६१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०० । ले० काल × । वे० स० ४४६ । इ भण्डार ।

१६१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४६ । ले० काल × । वै० सं० ४४७ । उ भण्डार ।

१६१४. प्रति स० ४ । पत्र स० १५७ । ले० काल स० १८६० मगमिर बुदी १० । वे० म० ६२६ । च भण्डार ।

१६१६. पार्यंडवंपुराया पत्रालांल चौधरी। पत्र'सं० २२२। ग्रा० १३×६३ इख । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराया । र० कालं सं० १६२३ वैशाख 'बुदी २। ले० काल स० १६३७ पांप बुदी १२। पूर्ण । वे० मं० ४६३ । 'क भण्डार'।

१६१७. प्रति सं०२ । पत्र स०३२०। ले० काल सं० १६४६ कार्तिक मुदी १५। ये० म० ८६४। क भण्डार।

> विकोप---रामरत्न पाराक्षर ने प्रतिलिपि की थी । ह भण्डार मे इसकी एक प्रति (वै० सं० ४४८) ग्रीर है।

१९१८ पुराणसार-अीचन्द्रमुनि । पत्र सं० १०० । म्रा० १०६×५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल स० १०७७ । ले० काल सं० १६०६ भ्राषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २३६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--- प्रामेर (ग्राम्रगढ) के राजा भारामल के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

१६१६. प्रति सं०२। पत्र सं०६६। ले० काल सं०१५४३ फाल्गुरा बुदी १०। वे० सं०४७१। रू भण्डार।

१६२०. पुराणसारसंग्रह—भ० सकलकीित्त । पत्र स० १५६। ग्रा० १२×५३ इक्र । भाषा— मस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल स० १८५६ मगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । क भण्डार ।

१६२१ वालपद्मपुराग्य—पं० पन्नालाल बाकलीवाल । पत्र सं० २०३ । म्रा० द×५ देख । भोषा— हिन्दी पद्य । विषय-पुराग्य । र० काल × । ले० काल सं० १६०६ चैत्र सुदी १५ । पूर्ण । वै० स० ११३८ । म्रा

विशेष-लिप बहुत सुन्दर है। कलकते मे रामग्रधीन (रामादीन) ने प्रतिलिपि की थी।

१६२२. भागवत द्वादशम् स्कंध टीका । । पत्र सं० ३१ । ग्रा० १४×७ देख । भाषा-संस्कृत । विषय-पुरागा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० २१७८ । द्व भण्डार ।

विशेष-पत्रो के बीच में मूल तथा ऊपर नीचे टीका दी हुई है।

१६२३. भागवतमहापुराण (सप्तमस्कंघ) " "। पत्र सं० ६७। ग्रा० १४३×७ डझ । भाषा-सर्तकृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ सं० २०८८ । ट भण्डार ।

१६२४. प्रति स०२ (षष्टम स्कंध) : ः । पत्र सं०६२। ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं०२०२६। ट भण्डार।

विशेष-वीच के कई पत्र नहीं है।

१६२४ प्रति सं० २। (पद्धम स्कंध) "। पत्र सं० ८३। ले० काल स० १८२० चैत्र सुदी १२। वे० सं० २०६०। ट भण्डार।

विशेष-चीवे सरूपराम ने प्रतिलिपि की थी।

१६२६. प्रति स० ४ (श्रष्टम स्कंध)। पत्र सं० ११ से ४७ । ले० काल 🗶 । अपूर्ण । वे० स० २०६१ । ट भण्डार ।

१६२७ प्रति सं०५ (तृतीय स्कंध) ' । । पत्र सं० ६७ । ले० काल 🗴 । म्रपूर्ण । वे० स० २०६२ । ट मण्डार ।

विशेष--६७ से ग्रागे पत्र नही है।

वै० सं० २८८ से २०६२ तक ये सभी स्कंघ श्रीधर स्वामी कृत संस्कृत टीका संहित हैं।

१६२८ भागवतपुराण "" "। पत्र स० १४ से ६३ । मा० १०३×६ इख्र । माणा—संस्कृत । विषय— पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१०६ । ट भण्डार ।

विशेष-६०वा पत्र नही है।

१६२६. प्रति सं० २ | पत्र सं० १६ | ले० काल 🗴 । वे० म० २११३ | ट भण्डार ।

विशेप--द्वितीय स्कध के तृतीय श्रध्याय तक की टीका पूर्ण है।

१६३०. प्रति सं० ३ । पत्र मं० ४० मे १०५ । ले• काल ४ । ग्रपूर्गा । वे० म० २१७२ । ट भण्डार । विशेष—नृतीय स्कथ है ।

१६३१. प्रति स०४। पत्र सं०६। ले० काल ×। श्रपूर्ण। वे० म० २१७३। ट भण्डार। विशेष—प्रथम स्वंध के द्वितीय श्रन्थाय तक है।

१६३२ मिल्लाथपुराण-सकलकीित्त । पत्र सं० ४२। ग्रा० १२×५ इख्र । भागा-सम्रत । विषय-चरित्र । र० काल × । ने० काल १८८८ । वे० सं० २०८ । ग्रा भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ८३६) ग्रीर है।

१६३३ प्रति सं०२। पत्र स०३७ । ले० काल स०१७२० माह गुदी १४। वे० स०५७१। क

१६३४ प्रति सं० ३ । पत्र स० ४७ । ले० काल म० १६६३ मगिमर बुदी ६ । वे॰ म० ५७० ।

विशेष--- उदयचन्द लुहाड़िया ने प्रतिलिपि करके दीवाए। ग्रमरचन्दजी के मन्दिर मे रखी।

१६३४. प्रति सं०४ । पत्र स०४२ । ले० काल स० १८१० फाग्रुग्। सुदी ३ वि० स०१३६ । स्व

भण्डार ।

भण्डार ।

१६३६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८८१ सावरण मुदी मा वि० स० १३६ । स्व भण्डार ।

१६३७. प्रति सं०६। पत्र स०४५। ले० काल य० १८६१ सावरण मुदी ८। वे० य० ५८७। स भण्डार।

विशेष-जयपुर मे शिवलाल गोघ। ने प्रतिलिपि करवाई थी।

१६३८ प्रतिसं०७ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १८४६ । वे० सं० १२ । छ भण्डार ।

१६३६. प्रति सं ० म । पत्र सं ० ३२ । ले० काल म० १७८६ चैत्र मुदी ३। वे० म० २१०। भ

१६४०. प्रति सं०६। पत्र सं०४०। ले० काल स० १८६१ भादना बुदी ४। ने० स० १५२। व्य

विशेष-शिवलाल साह ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी।

१६४१ मिल्लिनाथपुराणभाषा—सेवाराम पाटनी । पत्र स० ३६ । ग्रा० १२×७३ इख्र । भाषा— हिन्दी गद्य । विषय—विरित्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ६८८ । ग्रा भण्डार ।

१६४२ महापुराण (सिक्षत) । पत्र स०१७। आ०११×४३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५८६ । इ भण्डार । १६४३, महापुराण-जिनसेनाचार्य। पत्र सं० ७०४। म्रा० १४×८ इख्र। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ७७।

> विशेष—लितकीर्ति कृत टीका सहित है। घ भण्डार मे एक ग्रपूर्ण प्रति (वे॰ सं० ७८) ग्रीर है।

१६५४. महापुराग् — महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ५१४ । ग्रा० ६ $\frac{2}{5} \times 6\frac{2}{5}$ इख्र । भाषा—ग्रपभ्रंश । विषय—पुराग् । र० काल \times । ले० काल \times । ग्रपूर्ण । वे० मं० १०१ । त्र्य सण्डार ।

विशेष-बीच के कुछ पत्र जीर्गा होगये है।

१६४४. मार्कराडेयपुरागा"""। पत्र स० ३२। म्रा० ६×३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-पुरागा। र० काल × । ले० काल सं० १८२६ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २७३ । छ भण्डार ।

विशेष--- ज भण्डार में इसकी दो प्रतिया (वे॰ सं॰ २३३, २४६,) श्रीर हैं।

१६४६. मुनिसुत्रतपुराण-नह्मचारी कृष्णदास । पत्र सं० १०४ । आ० १२४६ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल स० १६८१ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल सं० १८६९ । पूर्ण । वे० सं० ५७८ । क भण्डार ।

> १६४७. प्रति स० २ । पत्र सं० १२७ । ले० काल × । वे० सं० ७ । छ भण्डार । विशेष—र्काव का पूर्ण परिचय दिया हुम्रा है ।

१६४८ मुनिसुत्रतपुराण्—इन्द्रजीत । पत्र सं० ३२ । ग्रा० १२×६ इख्र । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूराण् । र० काल सं० १८४५ पौष बुदी २ । ले० काल सं० १८४७ ग्राषाढ बुदी १२ । वे० सं० ४७५ । व्य भण्डार । विशेष—रतनलाल ने वटेरपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

१६४६. र्तिगपुराग् "" । पत्र सं० १३ । ग्रा० ६ \times ४६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-जैनेतर पुराग् । र० काल \times । ले० काल \times ! पूर्ग । वे० सं० २४७ । ज भण्डार ।

१६४०. वर्द्धमानपुराणा—सकलकीर्ति । पत्र स० १५१ । आ० १०ई×५ इख्न । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १८७७ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १० । आ भण्डार ।

विशेष--जयपुर मे महात्मा शंभुराम ने प्रतिलिपि की थी।

१६४१ प्रति सं०२। पत्र सं०१३०। ले० काल १८७१। वे० सं०६४६। क मण्डार। १६४२. प्रति सं०३। पत्र सं०८२। ले० काल सं०१८६६ सावन सुदी ३। वे० सं०३२८। च मण्डार।

१६४३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ११३। ले० काल स० १८६२। वे० सं० ४। इत् भण्डार। विशेष-सागानेर मे पं० नोनदराम ने प्रतिलिपि की थी। १६४४. प्रति सं० ४। पत्र सं० १४३। ले० काल सं० १८४६। वे० सं० ४। इद् भण्डार।

ं १९४४. प्रति सं०६। पत्र सं०१४१। ले० काल सं०१७८५ कार्तिक बुदी ४। वे० सं०१४। व्र भण्डार।

१६४६. प्रति सं० ७। पत्र स० ११६। ले० काल ×। वै० सं० ४६३। ञ्र भण्डार।
विशेष—श्रा॰ शुभवन्द्रजी, चोखवन्दजी, रायवन्दजी गी पुस्तक है। ऐसा लिगा ह।
१६४७. प्रति सं० ६। पत्र सं० १०७। ले० काल सं० १६३६। वै० म० १६६१। ट भण्डार।
विशेष—सवाई माधोपुर मे भ० सुरेन्द्रकीर्ति ने ग्रादिनाय चैत्यालय में लिगवायी थी।
१६४८. प्रति सं० ६। पत्र सं० १२३। ले० काल सं० १६६८ भादवा मुदी १२। वै० म० १८६३।

ट भण्डार । विशेष—वागड महादेश के सागपत्तन नगर मे भ० सकलचन्द्र के उपदेश मे हुवडज्ञातीय निजयाए॥ गोत्र

वाले साह भाका भार्या वाई नायके ने प्रतिलिलिपि करवायी थी।

इस ग्रन्थ की घ ग्रीर च भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० ८६, ३२६) व्य भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३२, ४६) ग्रीर है।

१६४६. वर्द्धमानपुराण्-पं० केशरीसिंह । पत्र स० ११८ । ग्रा० ११४८ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पूराण् । र० काल सं० १८७३ फाग्रुण् सुदी १२ । ले० काल 🗴 । पूर्ण् । वे० म० ६४७ ।

विशेष—बालचन्दजी छावडा दीवान जयपुर के भीत्र ज्ञानचन्द के ग्राग्रह पर इस पुराण की भाषा रचना की गई।

च भण्डार मे तीन अपूर्ण प्रतिया (वे० स० ६७४, ६७५) छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १५६) और है।

१६६०. प्रति सं० २ । पत्र स० ७८ । ले० काल सं० १७७३ । वे० स० ६७० । इ. भण्डार ।
१६६१ वासुपूज्यपुराण्"" । पत्र सं० ६ । आ० १२६४८ दश्च । भाषा-हिन्दी नद्य । विषय-पुराण ।
१० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० १५८ । छ भण्डार ।

१६६२. विमलनाथंपुराण-- व्रह्मकृष्णदास । पत्र स० ७५ । आ० १२४५३ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल स० १६७४ । ले० काल सं० १८३१ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० १३१ । आ भण्डार ।

्१६६३. प्रति सं०२ | पत्र सं० ११० । ले० काल स० १८६७ चैत्र बुदी ८ । वे० स० ६६ । घ भण्डार ।

१६६४. प्रति सं ३ । पत्र स० १०७ । लें० काल स० १६६६ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० मं० १८ । छ

विशेष---प्रन्थकार का नाम अ० कृष्णिजिष्णु भी दिया है। प्रशस्ति निन्न प्रकार है---

संबत् १६६६ वर्षे ज्येष्ठमासे कृष्णांपक्षे श्री धेमलासा महानगरे श्री ब्रादिनाथ चैत्यालये श्रीमत् काष्ठासधे नंदीतटगच्छे विद्यागरो भट्टारक श्री रामसेनान्वये एतदनुक्रमेरा ५० श्री रत्नभूपरा तत्पट्टी भ० श्री जयकीत्ति झ० श्री

मण्डार ।

मगलाग्रज स्थिवराचार्य श्री केशवसेन तत् शिष्योगाध्याय श्री विश्वकीत्ति तत्युरु भा० द्रा० श्री दीपजी ब्रह्मं श्री राजसागर युक्तै लिखित स्वज्ञानावर्ण कर्मक्षयार्थं। भ० श्री १ विश्वसेन तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री १ जयकीत्ति पं० दीपचन्द पं० मयाचंद युक्तै ब्रात्म पठनार्थ।

१६६४. शान्तिननाथपुरागा—महाकिव ऋशगा। पत्र सं० १४३। म्रा० ११×५ इस्र । भाषा-सस्कृत। विषय-पुरागा। र० काल शक सवत् ६१०। ले० काल सं० १५५३ भादवा बुदी १२। पूर्गा। वे० सं० ६६। ऋ मण्डार।

विशेष-प्रशस्ति—सवत् १५५३ वर्ष भादवा विद वारीस रवी ग्रद्योह श्री गधारमध्ये लिखितं पुस्तकं लेखक पाठकमो चिरजीयात् । श्री मूलसघे श्री कुंदकुन्दाचार्य्यान्वये सरस्वती गच्छे बलात्कारगरो भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुभवन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुभवन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुभवन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक जिनवन्द्रदेवाद्यिष्य मंडलाचार्य्य श्री रत्नकीत्तिदेवास्तिच्छिष्य ब्र० लाला पठनार्थ हुवड न्यातीय श्रे० हापा भार्य्या संपूरित श्रुत श्रेष्टि धना सं० थावर सं० सोमा श्रेष्टि धना तस्य पुत्र वीरसाल भा० वनादे स्यो पुत्र. विद्याघर द्वितीय- पुत्र धर्मधर एतै. सर्वेः शान्तिपुरार्गं लखाप्य पात्राय दत्त ।

ज्ञानवान ज्ञानदानेन निर्भयोऽमयदानतः। श्रन्नदानात् सुखी नित्य निर्व्याधी भेषजाद्भवेत ॥१॥

१६६६. प्रति सं०२ | पत्र स०१४४ । ले० काल सं०१८६१ । वे० सं०६८७ । क भण्डार । विशेष—इस ग्रन्थ की छ, ज भौर ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं०७०४, १६, १६३४) भौर है । १६६७. शान्तिनाथपुराण—खुशालचन्द । पत्र सं०५१ । भ्रा० १२५× दक्ष । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं०१५७ । क्ष भण्डार ।

विशेष---उत्तरपुराण में से है।

द भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० १८६१) ग्रौर है।

१६६८. हरिवंशपुरागा—िकतसेनाचार्थ। पत्र सं० ३१४। ग्रा० १२४५ इख्र । भाषा-संस्कृत। विषय-पुरागा। र० काल शक सं० ७०५। ले० काल सं० १८३० माघ सुदी १। पूर्गा। वे० सं० २१६। स्त्र भण्डार।

विशेष—र प्रतियो का सम्मिश्रस्स है। जयपुर नगर मे प० दू गरसी के पठनार्ध ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई भी।

इसी भण्डार मे एक श्रपूर्ण प्रति (वे० सं० ६६८) ग्रीर है।

१६६६. प्रति सं०२। पत्र सं०३२४। ले० काल स०१८३६। ते० सं०८४२। क मण्डार। १६७०. प्रति सं०२। पत्र सं०२८७। ले० काल म०१८६० ज्येष्ठ सुदी ४। ते० सं०१३२। घ

विशेष-गोपाचल नगर मे ब्रह्मगंभीरसागर ने प्रतिलिपि की थी।

१६७१. प्रति सं ८४। पत्र सं ० २४२ से ५१७। ले॰ काल स॰ १६२५ कार्तिक मुदी २। ग्रपूर्ण। वे० स॰ ४४७। च भण्डार।

विशेष-श्री पूररामल ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४४६) ग्रीर है।

१९७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७४ से ३१३, ३४१ मे ३४३ । ले० काल मं० १६६३ कार्तिक बुदी १३ । ब्रपूर्ण । वे० स० ७६ । ह्यू भण्डार ।

१६७३ प्रति सं०६। पत्र सं०२४३। ले० काल म० १६५३ चैत्र बुदी २।वे० म० २६०। ऋ भण्डार।

विशेष---महाराजाधिराज मानसिंह के शासनकाल में भागानेर में श्रादिनाथ चैत्या नय में प्रविलिपि हुई थी। लेखक प्रशस्ति श्रपूर्ण है।

उक्त प्रतियों के ग्रितिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे० स० ४४६) ह्यू भण्डार में दो प्रतिया (वे० सं० ७६ में) ग्रीर हैं।

१६७४. हरिवंशपुरागा—ब्रह्मजिनदास । पत्र म०१२८। म्रा०११३८५ इख्र । भागा-सस्कृत । विषय-पुरागा । र० काल 🗴 । ले० काल सं०१८८० । पूर्ण । वे० म० २१३ । स्र भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ जोधराज पाटोदी के बनाये हुये मन्दिर मे प्रतिलिपि करवाकर विराजमान किया गया। प्राचीन श्रपूर्ण प्रति को पीछे पूर्ण किया गया।

१६७४. प्रति सं०२। पत्र स०२५७। ले० काल सं०१६६१ ग्रामोज बुदी ६। वे० म०१३१। घ भण्डार।

विशेष—देवपत्ती शुभस्याने पार्श्वनाथ चैत्यालये काष्ठासघे नदीतटगच्छे विद्यागर्गे रामसेनान्वये · · · अप्राचार्य कल्याराकीर्तिना प्रतिलिपि कृत ।

१६७६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३४६ । ले० काल स० १८०४ | वे० स० १३३ । घ भण्डार । विशेष—देहली मे प्रतिलिपि की गई थी । लिपिकार ने महम्मदशाह का शासनकाल होना लिखा है ।

१६७७. प्रति स० ४। पत्र स० २६७। ले० काल स० १७३०। वे० स० ४४८। च भण्डार। १६७८. प्रति सं० ४। पत्र स० २५२। ले० काल स० १७८३ कार्त्तिक मुदी ४। वे० स० ६६। व्य

विशेष—साह मल्लूकचन्दजी के पठनार्थ बौली ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी। व्र० जिनदास भ० सकलकीत्ति के शिष्य थे।

१६७६.प्रति स०६। पत्र गं० २६८। ले० काल सं० १५३७ पीप बुदी ३। वे० स० ३३३। न्य

विशेष-प्रशस्ति-स॰ १५३७ वर्षे पीष वुदी २ सोमे श्री मूलसघे बलात्कारगरो सरस्वतीगच्छे श्री

भण्डार ।

कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० सकलकीत्तिदेवा भ० भुवनकीत्तिदेवा. भ० श्री ज्ञानभूषरोन शिष्यमुनि जयनदि पठनार्थं । हूंबड़ ज्ञातीयः "।

१६८० प्रति सं०७। पत्र सं०४१३। ले० काल सं० १६३७ माह बुदी १३। वे० सं०४६१। व्य

विशेष---ग्रन्थ प्रशस्ति विस्तृत है।

उक्त प्रतियों के अतिरिक्त क, इ एवं व्य भण्डारों में एक एक प्रति (वे० सं० ६५१, ६०६, ६७) श्रीर हैं।

१६८१. हरिवंशपुरागा-श्री भूषगा। पत्र सं० ३४५। ग्रा० ११४५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-पुरागा। र० काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्गा। वे० स० ४६१। व्य भण्डार ।

१६८२. हरिवंशपुराग्-भ० सकलकीित । पत्र सं० २७१ । ग्रा० ११३×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराग्। र० काल ×। ले० काल स० १६५७ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ५५० । क भण्डार ।

विशेष--लेखक प्रशस्ति फटी हुई है।

१६८३ हरिवंशपुराग्—धवल । पत्र सं० ५०२ से ५२३ । ग्रा० १० \times ४ $\frac{1}{4}$ इख्र । भाषा—ग्रपभ्रंश । विषय—पुराग्। र० काल \times । ले० काल \times । ग्रपूर्ग । वे० स० १९६६ । स्त्र भण्डार ।

्रध्नप्तरः हरिवशपुराण—यशःकीत्ति । पत्र स० १६६ । आ० १०६४४ दुद्ध । भाषा—अपभ्र श । विषय—पुराण । र० काल × । ले० काल स० १५७३ । फाग्रुण सूदी ६ । पूर्ण । वे० स० ६८ ।

विशेष--तिजारा ग्राम मे प्रतिलिपि की गई थी।

श्रथ सवत्सरेऽतस्मिन् राज्ये सवत् १५७३ वर्षे फाल्गुगि शुदि ६ रविवासरे श्री तिजारा स्थाने । श्रलाव-लखा राज्ये श्री काष्ट '''। अपूर्ण ।

१६८४ हरिवशपुराग्य-महाकवि स्वयंभू । पत्र स० २० । ग्रा० ६×४३ । भाषा-ग्रपभ्रं श । विषय-पुराग्य । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ग । वे० सं० ४५० । च भण्डार ।

१६८६. हरिवंशपुराणभाषा—दौलतराम । पत्र सं० १०० से २०० । ग्रा० १०४८ इख्र । भाषा— हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र० काल सं० १८२६ चैत्र मुदी १५ । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० सं० ६८ । म भण्डार ।

१६८. प्रति सं०२। पत्र स॰ ५६६। ले॰ काल सं०१६२६ भादवा सुदी ७। वे॰ स॰ ६०६ (क) क भण्डार।

१६८८ प्रति सं० ३। पत्र स० ४२५। ले० काल स० १६०८। वे० सं० ७२८। च भण्डार। १६८६. प्रति सं० ४। पत्र स० ७०६। ले० काल सं० १६०३ ध्रासीज सुदी ७। वे० स० २३७। छ

विशेष—उक्त प्रतियो के अतिरिक्त छ भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० सं० १३४, १५१) छ, तथा मा भण्डार ने एक एक प्रति (३० स० ६०६, १४४) और हैं। १६६०. हरिवंशपुरागाभापा—खुशालचन्द्र। पत्र सं० २०७ । ग्रा० १४४७ इझ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुरागा । र० काल स० १७५० वैशाख सुदी ३ । ले० काल स० १८६० पूर्मा । वे० म० ३७२ । श्र भण्डार ।

विशेष-दो प्रतियो का सम्मिश्रण है।

१६६१ प्रति सं०२। पत्र स०२०२। ले० काल मं०१८०५ पीप बुदी द। ग्रपूर्गा। वे० मं०१५४। रू भण्डार।

विशेष---१ मे १७२ तक पत्र नहीं हैं। जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

१६६२. प्रति सं० ३। पत्र स० २३४। ले० काल 🗶। वे० स० ४६६। व्य भण्डार।

विजेष--- ब्रारम्भ के ४ पत्रों में मनोहरदास कृत नरक दुख वर्णन है पर श्रपूर्ण है।

१६६३. हरिवंशपुरायाभाषा "। पत्र स० १५० । म्रा० १२×५ दे दक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-पुरारा । र० काल × । ले० काल × । म्रपूरा । वे० मं० ६०७ । द्व भण्डार ।

विभेप--एक अपूर्ण प्रति । (वे० स० ६०८) और है।

१६६४. हरिवशपुराग्रभापा " । पत्र स० ३८१ । आ० ८३४४ डख । भाषा-हिन्दी गद्य (राजस्थानी)। विषय-पुराग्र। र० काल ४ । ले० काल स० १६७१ स्रासोज बुदी ८ । पूर्ग । वै० स० १०२२। स्त्र,भण्डार।

विशेप-प्रथम तथा ग्रन्तिम पत्र फटा हुग्रा है ।

श्रादिभाग— श्रथ कथा सम्बन्ध लीखीयइ छई। तेण कालेण तेण ममएणं समणो भगवंत महावीरे रायगेहे समोसरीये तेहीज काल, तेही ज समउ, ते भगवंत श्री बीर वर्ष्वमान राजग्रही नगरी श्राबी समोसर्या। ते विसा छइ वीतराग चउतीस ग्रतिसइ करी सहित, पइतीस वचन वाणी करी सोभित, चउदडसह साथ, छतीस सहस परवर्या। ग्रनिक भविक जीव प्रतिवोधता श्रीराजग्रही नगरी श्रावी समोसर्या। तिवारड वनमाली ग्रावी राजा श्री मेणिक कनड। वधामणी दिथी। सामी श्राज श्री वर्द्ध मान श्रावी समोसर्या छइ। सेणीक ते बात साभली नड बधामणी ग्रापी। राजा ग्रापण महाहर्णवत थकउ। वादवानी सामग्री करावण लागउ। ते कि सामा गलीसा कीधउ। पछि श्रानद भेरि उछली जय जयकार वद थउ। भवीक लोक सघलाइ श्रानद परिथया। धन धन कहता लोक सघलाड वादिवा चाल्या। पछड राजा श्रेणक सिचाणक हस्ती सिणागारी उपरि छइठउ। माथइ सेत छत्र धरापउ। उभइ पास चामर ढालड छड। वदी जण कइ वार करड छड। मृिग्ण जण बिडद बोलइ छइ। पाच शब्द वाजित्र वाजते। चतुरिगनी मेना सजकरी। राय राणा मडलीक मुक्व्यधनी सामत चउरासिया " ।

,एक श्रन्य उदाहरसा- पत्र १६८

तिराणी श्रजोध्या नज हेम्रथ राजा राज पाले छइं। तेह राजा नइ धाराणी राणी छइ। तेह नज भाव धर्म जर्गार घाणज, छइ। तेहनी कुषि तें कुमर पणइ जरनी। तेह नज नाम बुधुकीत जािएवज। ते पुणु कुमर जािणे सिस समान छइ। इम करता ते कुमर जोवन भरिया। तिवारइ पिताइ तेह नइ राज भार थाप्पज। तिवारइ तेग जाना मुग्य भोगवता काल श्रतिक्रमडं छइ। वली जिए। नज धर्म घर्णु करइ छइं।

पत्र संख्या ३७१

नागश्री जे नरक गई थी । तेह नी कथा साभलउ । तिग्गी नरक माहि थी । ते जीवनीकलियउं । पछइ मरी रोइ सर्प्य थयउ । सयम्भू रमिंग द्वीपा माहि । पछइ ते तिहा पाप करिवा लागउ । पछई बली तिहा थको मरग्र पाम्यो । बीजै नरक गई तिहा तिन सागर ग्रायु भोगवी । छेदन भेदन तापन दुख भोगवी । वली तिहा थकी ते निकलि-यउ । ते जीव पछइ चंपा नगरी माहि चाडाल उइ घरि पुत्री उपनी तेहा निचकुल ग्रवतार पाम्यउं । पछइं ते एक बार वन माहि तिहा उवर वीग्गीवा लागी ।

श्रन्तिम पाठ-पत्र स्ह्या ३८०-८१

श्री नेमनाथ तिन त्रिभवण तारणहार तिणी सागी विहार क्रम कीयउं। मछइ देस विदेस नगर पाटणना भवीक लोक प्रवोधीया। बलीत्रिणो सामी समिकत, ज्ञान चारित्र तप सपनीयउ दान दीयउ। पछइ गिरनार, प्राच्या। तिहा समोसर्या। पछइ घणा लोक सबोध्या। पछइ सहस वरस ग्राउषउ भोगवीनइ दस धनुष प्रमाण देह जाणवी। ईणी परइ घणा दीन गया। पछइ एक मासउ गरयउ। पछड जगनाथ जोग धरी नइ । समो सरण त्याग कीयउं। तिवारइ ते घातिया कर्म षय करी चउदमइ ग्रुणठाणइ रह्या। तिहा थका मोष सिद्धि थया। तिहा ग्राठ ग्रुण सिहत जाणवा। वली पाच सई छत्रीस साध साथइ मूकित गया। तिणी सामी ग्रचल ठाम लाघउ। तेहना सुखनीउपमा दीधी न जाई। ईसा सुखनासवी भागी थया। हिनइ रोक था सुगमार्थ लिखी छइ । जे काई विरुद्ध बात लिखाणी होई ते सोध तिरती कीज्यो। वली सामनी सांखि। जे काई मह ग्रापणी बुध थकी। हरवस कथा माहि ग्रघ कोउ छइ लीखीयउ होइ। ते मिछामि दुकड था ज्यों।

नबत् १६७१ वर्षे ग्रासोज मासे कृष्णपक्षे ग्रष्टमी तिथी। लिखितं मुनि कान्हजी पाडलीपुर मध्ये। विज शिष्यणी ग्रार्या सहजा पठनार्थ।



काव्य एवं चरित्र

१९६४. श्रकलङ्कचिरित्र—नाथूराम । पत्र स० १२ । श्रा॰ १२×७ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-जैनाचार्य प्रकलङ्क की जीवन कथा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७६ । श्र भण्डार ।

१६६६. श्रकलङ्कचिरित्र''''' । पत्र स० १२ । श्रा० १२ $rac{1}{2}$ ४८ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल imes । ले० काल imes । पूर्ण । वे० म० २ । छ भण्डार ।

१६६७. श्रमरुशतक''' '''। पत्र स० ६ । ग्रा० १०१४४ है इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र•

१९६८. उद्भवसंदेशाख्यप्रवन्धः । पत्र स॰ ६। ग्रा॰ ११३×५ इख । भाषा-सम्मृत । विषय-काव्य । र॰ काल × । ले॰ काल स॰ १७७६ । पूर्ण । वे॰ सं॰ ३१६ । ज भण्डार ।

१६६६ ऋपभनाथचरित्र—भ० सकलकीत्ति । पत्र स० ११६ । ग्रा० १२×५ हु इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रथम तीर्थेद्धर ग्रादिनाथ का जीवन चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १५६१ पीप बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० स० २०४० । श्र भण्डार ।

विशेष---ग्रन्थ का नाम ग्रादिपुराण तथा वृपभनाथ पुराण भी है।

प्रशस्ति — १५६१ वर्षे पीप बुदी ऽऽ रवी । श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगरो श्रीकुन्दकुन्दाचार्या-न्वये म० श्री ६ प्रभाचन्द्रदेवा. भ० श्री ६ पद्मनिददेवा भ० श्री ६ सकलकीत्तिदेवा. भ० श्री ६ भुवनकीत्तिदेवा भ० श्री ६ प्रभाचन्द्रदेवाः भ० श्री ६ विजयकीत्तिदेवा. भ० श्री ६ शुभचन्द्रदेवा भ० श्री ६ सुमितकीत्तिदेवाः स्थिवराचार्य श्री ६ चदकीत्तिदेवास्तत्शिष्य श्री ५ श्रीवंत ते शिष्य ब्रह्म श्री नाकरस्येदं पुस्तक पठनार्थं ।

> २०००. प्रति सं०२। पत्र स०२०६। ले० काल स०१८८०। वे० स०१५०। स्त्र भण्डार। इस मण्डार मे एक प्रति (वे० स०१३५) ग्रीर है।

२००१. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६०। ले० काल शक सं० १६६७। वे० स० ५२। क भण्डार। एक प्रति वे० सं० ६६६ की श्रौर है।

२००२. प्रति सं० ४। पत्र स० १६४। ले० काल सं० १७१७ फाग्रुग् बुदी १०। वे० स० ६४। स

२००३. प्रति सं० ४ । पत्र स० १८२ । ले० काल सं० १७८३ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० स० ६५ । रू मण्डार । काञ्च एवं चरित्र]

२००४. प्रति सं० ६। पत्र सं० १७१ ति के काल स० १८५५ प्र० श्रावण सुदी ह । वे॰ सं० ३०। ह्यू भण्डार।

विशेष—चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी।

२००४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६१ । ले० काल सं० १७७४ : वे० सं० २८७ । व्या सम्पदार । इसके प्रतिरिक्त ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७६) तथा ट भण्डार में एक प्रति (वे० म० २१८३) श्रीर हैं।

२००६. ऋतुंसंहार कोलिदास । पत्र सं०१३। ग्रा०१०×३ई इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य,। र० काल × । ले० कोल स०१६२४ ग्रासोज सुदी १०। वे० स०४७१। व्य भण्डार।

विशेष- प्रशस्ति—सवत् १ ६२४ वर्ष ग्रश्वनि सुदि १० दिने श्री मलधारगच्छे भट्टारक श्री श्री मानदेव सूरि तत्शिष्यभावदेवेन लिखिता स्वहेर्तवे ।

२००७. करकर्ग्डुचिरित्र—मुनि कनकामर । पत्र स० ६१ । ग्रां० १०३×५ इख्र । भाषा-ग्रपभ्र श । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १५६५ फागुगा बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० १०२ । क मण्डार ।

विशेष-लेखक प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नही है।

२००८. करकग्रुचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ६४ । श्रा० १०४५३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल सं० १६११ । ले० काल सं० १६५६ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २७७ । श्र भण्डार ।

विशेष- प्रशस्ति—संवत् १६५६ वर्षे मागसिर सुदि ६ भीमे सोमंत्रा (सोजत) ग्रामे नेमनाथ चैत्यालये श्रीमत्काष्टासघे भ० श्री विश्वसेन तत्पट्टे भ० श्री विद्याभूषण् तन्शिष्य भट्टारक श्री श्रीभूषण् विजिरामेस्तत्शिष्य द्र० नेमसागर स्वहस्तेन लिखित ।

्रैप्राचार्यावराचार्य श्री श्री चन्द्रकीत्तिजी तत्त्रिष्य श्राचार्य श्री हर्षकीत्तिजी की पुस्तक ।

२००६. प्रति सं०२। पत्र सं०४६। ले० काल ४। वे० सं०२५४। व्य भण्डार।

२०१०. कविप्रिया—केशबदेव । पत्र सं० २१ । ग्रा० ६ \times ६ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-काव्य (शृङ्गार) । रर्ण काल \times । ले० काल \times । ग्रपूर्ण । वे० सं० ११३ । ड भण्डार ।

२०११. कादम्बरीटीका : "। पत्र सं॰ १५१ से १८३ । आ० १०३×४५ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-काब्य । र० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० सं० १९७७ । स्र भण्डार ।

२०१२. कांव्यप्रकाशसटीक "" । पत्र सं० ६३। ग्रा० १०३×४० इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-कान्य । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १९७६ । स्र भण्डार ।

विशेय-टींकाकार का नाम नही दिया है।

२०१३. किरातार्जु नीय-महाकि भारित । पत्र सं० ४६ । ग्रा॰ १०३×४३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ६०२ । ग्रा भण्डार ।

२०१४ प्रति सं०२। पत्र सं०३१ से ६३। ले बाल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं०३५ । ख भण्डार । विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२०१४. प्रति स०३। पत्र स०६७। ले० काल सं०१५३० भादवा बुदी ८ । वे० स०१२२। ड

भण्डार ।

२०१६. प्रति स० ४। पत्र सं० ६६। ले० काल स० १८४२ भादवा बुदी । वे० स० १२३। इ

भण्डार ।

विशेष-सामेतिक टीका भी है।

२०१७ प्रति सं० ४। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १८१७। वे० सं० १२४। ड भण्डार। विशेष—जयपुर नगर मे माधोसिंहजी के राज्य मे पं० ग्रुमानीराम ने प्रतिलिपि करवायी थी। २०४८. प्रति स० ६। पत्र स० ६६। ले० काल ×। वे० सं० ६६। च भण्डार। २०१६. प्रति स० ७। पत्र स० १२०। ले० काल ×। वे० सं० ६४। छ भण्डार। विशेष—प्रति मह्निनाथ कृत संस्कृत टीका सहित है।

इनके म्रतिरिक्त म्रा भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६३८) ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३५) च भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७०) तथा छ भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० स० ६४, २५१, २५२) म्रौर है।

२०२०. कुमारसभव—महाकिव कालिदास । पत्र स० ४१ । आ० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल स० १७८३ मगसिर सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ६३९ । ऋ भण्डार ।

विशेष-- पृष्ठ चिपक जाने से ग्रक्षर खराब होगये है।

२०२१. प्रति सं० २ | पत्र स० २३ | ले० काल सं० १७५७ | वे० सं० १८४५ | जीर्गा । स्त्र भण्डार । २०२२ प्रति सं० ३ | पत्र सं० २७ | ले० काल × | वे० स० १२५ । ड भण्डार । अष्टम सर्ग पर्यत । इनके स्रतिरिक्त स्त्र एवं क भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० ११८०, ११३) च भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० ७१, ७२) व्य भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० १३८, ३१०) तथा ट भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० स० २०५२, ३२३, २१०४) स्रोर हैं।

२०२३ कुमारसंभवटीका—कनकसागर। पत्र सं० २२। ग्रा० १०४४ है इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०३८। ग्रा भण्डार।

विशेष-प्रति जीर्गा है।

२०२४. सत्र-चूड़ामिण्-वादीभिसिंह। पत्र सं० ४२। ग्रा० ११×४३ इ च । भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। र० काल सं० १६८७ सावरा बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १३३। इ भण्डार।

विशेष-इसका नाम जीवधर चरित्र भी है।

२८२४. प्रति संट २। पत्र स० ४१। ले॰ काल सं० १८६१ भादवा बुदी ६। वे॰ म० ७३। च भण्डार।

विशेष--दीवान ग्रमरचन्दजी ने मानूलाल वैद्य के पास प्रतिलिपि की थी।

च भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७४) और है।

२०२६. प्रति सं०३। पत्र सं०४३। ले० काल सं० १६०५ माघ सुदी ५। वे० सं०३३२। व्य भण्डार।

२०२७ ख्राउद्वप्रशस्तिकाट्य ' " । पत्र सं॰ ३। ग्रा० ८१×५१ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल स० १८७१ प्रथम भादवा बुदी ४ । पूर्ण । वे॰,स० १३१४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—सवाईराम गोधा ने जयपुर मे म्रबावती वाजार के म्रादिनाथ चैत्यालय (मिन्दर पाटोदी -) मे प्रतिलिपि की थी।

ग्रन्थ मे कुल २१२ श्लोक हैं जिनमे रघुकुलमिए। श्री रामचन्द्रजी की स्तुति की गई है। वैसे प्रारम्भ मे रघुकुल की प्रशसा फिर दशरथ राम व सीता ग्रादि का वर्णन तथा रावण के मारने मे राम के पराक्रम का वर्णन है। ग्रन्तिम पुष्तिका—इति श्री बंडप्रशस्ति काव्यानि संपूर्णा।

२०२८ गर्जासंहकुमारचरित्र—विनयचन्द्र सूरि। पत्र सं० २३ । ग्रा० १०३८४६ इख्र । भाषा— मंस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १३५ । ड भण्डार ।

विशेष---- २१ व २२वा पत्र नही है।

२०२६. गीतगोविन्द्—जयदेव । पत्र स० २ । ग्रा० ११३×७ हु इ च । भाषा—संस्कृत । विषय— कान्य । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १२२ । क भण्डार ।

विशेष-भालरापाटन मे गौड ब्राह्मण पंडा भैरवलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२०३०. प्रति सं० २। पत्र सं० ३१। ले० काल स० १८४४। वे० मं० १८२६। ट भण्डार। विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि करवायी थी।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वै० स० १७४६) ग्रीर है।

२०३१. गोतमस्वामीचरित्र—मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र। पत्र स० ५३ । ग्रा० ६३×५ इख्र । भाषा-सम्कृत विषय-चित्र । र० काल स० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २ । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० २१ । ग्रा भण्डार ।

२०३२. प्रति सं०२। पत्र सं०६०। ले० काल स०१८३६ कार्तिक सुदी १२। वे० मं०१३२। क भण्डार।

२०३३. प्रति सं०३। पत्र स०६०। ले० काल स०१८६४। वे०स०५२। छ भण्डार। २०५४ प्रति सं०४। पत्र सं०५३। ले० काल स०१६०६ कार्तिक सुदी१२। वे०स०२१। आ भण्डार।

२०३४. प्रति स॰ ४ । पत्र सं० ३० । ले० काल 🗶 । वे० म० २५४ । व्य भण्डार ।

२०३६. गौतमस्वामीचरित्रभाषा—पत्रालाल चौधरी । पत्र स० १०६ । ग्रा० १३×५ इख्र । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र० काल × । ने० काल सं• १६४० मगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १३३ । क भण्डार र विशेष—मूलग्रन्थकर्ता ग्राचार्य घर्मचन्द्र हैं । रचना सवत् १४२६ दिया है जो ठीक प्रतीत नहीं होता ।

२०३७ घटकपैरकाव्य-घटकपैर । पत्र स० ४ । ग्रा० १२×५६ इझ । भाषा-मंग्रत । विषय-काव्य । र० काल × । ने० काल स० १८१४ । पूर्ण । वे० म० २३० । ग्रा भण्डार ।

विशेष—चम्पापुर मे भ्रादिनाथ चैत्यालय मे ग्रन्थ'लिखा गया था।
भ्रान्भीर च भण्डार मे इसकी एक एक प्रति (वे० सं० १५४८, ७५) भीर है।

२०३८. चन्द्नाचरित्र—भ० शुभचन्द्र। पत्र स० ३६। आ० १०४१ है इझ। मापा-नम्यून । विषय-चरित्र। र० काल सं० १६२५। ले० काल म० १८३३ भादवा बुदी ११ । पूर्ण। ने० म० १८३। श्र मण्डार।

२०३६ प्रति सं०२। पत्र सं०३४। ले० काल सं० १८२५ माह बुदी ३। ते० म० १७२। क भण्डारा

१०४०. प्रति स० ३ । पत्र स० ३३ । ले० काल स० १८६३ हि० श्रावण । वे० म० १६७ । ह भण्डारं।

े २०४१. प्रति सं०४। पत्र स०४०। ले० काल सं०१८३७ माह बुदी ७। वै० मं० १४। ह्य भण्डार।

विशेष-सागानिर मे पं० सवाईराम गोघा के मन्दिर मे स्वपठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

२०४२ प्रति स० ४ । पत्र स० २७ । ले० काल स० १८६१ भादवा मुदी ८ । वॅ० म० ४८ । छ् भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ स॰ ५७) ग्रीर है।

२०४३. प्रति सर्व ६। पत्र स०१६। ले० काल स० १६३२ मंगसिर बुदी १। वे० स० ४०। स्व भण्डार।

२०४४. चन्द्रप्रभचरित्र—वंश्रिनिद्। पत्र स० १३०। ग्रा० १२४५ इ च। भाषा-मस्कृत । विषय-चरित्र। र० काल ४। ले० काल स० १४५६ पीप सुदी १२ । पूर्ण। वे० स० ६१। ग्रा भण्डार।

विशेष---प्रशस्ति स्रपूर्ण है।

२०४४. प्रति सं० २ । पत्र स० १८६ । ले॰ काल स॰ १६४१ मगसिर बुदी १० । वे॰ म॰ १७४ । क भण्डार ।

२०४६. प्रति स० ३। पत्र सं० ८७ । ले॰ काल सं० १५२४ भादवा बुदी १०। वे० स० १६। घ मण्डार।

विशेष--- प्रन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

श्री मत्बेडल वर्शे विवुध मुनि जनानदकंदै प्रसिद्धे रूपानामिति साधु सकलकलिमलक्षालनेक प्रचीए। मध-स्थास्तस्यपुत्रे जिनवर वचनाराधको दानत्यास्तेनेद चाककाव्य निजकरितितितं चन्द्रनाथस्य सार्थे । म० १४२४ वर्षे भादवा वदी ७ ग्रन्थ लिखित कर्मक्षयानिमित्त । २०४७. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५७ से ७४। ले० काल मं० १७८५ । प्रपूर्ति । वेर्० संर् २१७७। ट भण्डार।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

संवत् १५८५ वर्षे फागुण बुदी ७ रिववासंरे श्रीमूर्लिसे बलात्कार गर्गे श्री कुन्दकुन्दां चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनिदिवा तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री त्रिभुवंनकीर्तिदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री सहसकीर्त्ति देवातित्वाप्य व्र० संजैयित इद शास्त्र ज्ञानावरेंगी कर्मेक्षया निमित्तें लिखीयित्वा ठीकुरेदारस्थानो ... साधु लिखित ।

इन प्रतियों के ग्रितिरिक्त द्या भण्डार में एक प्रिति (वेर्क सं० ६४६) च भण्डार में दो प्रतिया (वे० स० ६०, ८०) ज भण्डार में तीन प्रतिया (वे० स० १०३, १०४, १०५) व्य एवं ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० स० १६४, २१६०) ग्रीर हैं।

२०४८. चन्द्रप्रभकाठयपैं जिंका —टीकांकार गुंग्रांनिन्द् । पत्रं सं० ८६। आ० १०४४ ड च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल ४ । ले० काल ४ । वे० स० ११ । व्य भण्डार ।

विशेष-मूलकर्ता ग्राचार्य वीरनंदिं। संस्कृतं में सक्षिन्तं टीकां दी हुई है। रेट सर्गों मे है।

२०४६ चंद्रप्रभचरित्रपंख्निका " । पत्रं स० २१ । म्रा० १०३ ×४३ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १५६४ म्रासोज सुदी १३ । वे० सं० ३२५ । ज भण्डार ।

२०४०. चन्द्रप्रभचरित्र चर्याः की सि । पत्रं स॰ १०६ । ग्रां॰ १०३×४३ इख । भाषा-ग्रपभ्रंश । विषय-ग्राठवें तीर्थद्धर चन्द्रप्रभ का जीवन चरित्र । र० कॉल × । ले॰ कॉल सं० १६४१ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वे॰ सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष- प्रथ संवर्त १६४१ वर्षे पोह श्रुदि एकंदिशी बुधवांसरे काष्ट्रांसंघे मा " (अपूर्ण)

२०४१. चन्द्रप्रभचरित्र—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सर्व ६४ । ग्रांव ११४४ है इख । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रव काल 🗴 । लेव काल संव १८०४ कार्तिक बुदी रव । पूर्ण । वेव सर्व १ । श्र भण्डार ।

विशेषं — वसवां नगरें चन्द्रेप्रभे चैत्यालय मे आचार्यवंर श्री मेरूकोर्ति के शिष्य पं परशुरामजी के शिष्य नंदराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

२०४२. प्रति सं०२। पत्र सं० ६६। ले॰ काल सं० १८३० कार्तिक सुदी १०। वे० स० ७३। क

२०४२. प्रति सं० ३। पत्र स० ७३। ले० काल सं० १८६४ जेठ सुदी म। वे० स० १६६ । ह

इस प्रति के श्रतिरिक्त ख एंके ट्रेंट भण्डार में एके एक प्रति (के सं ४६, २१६६) श्रीर हैं। २६४४. चन्द्रप्रभचेरित्र—किव दामीदेर (शिंध्य धर्मचन्द्र) पत्र सं १४६। श्रा॰ १० दे×४३ इक्क । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काले सके १७२७ भादेंको सुदी है । ते के काल सं १६०१ सावेंगा बुदी ह । पूर्ण । वे॰ सं० १६। अ भण्डार । विशेष---ग्रादिभाग--

अन्मः। श्री परमात्मने नमः। श्री सरस्वत्यै नमः।
श्रियं चंद्रप्रभो नित्या वद्वं दश्चन्द्र लाछनः।
श्रय कुमुदचंद्रोवश्चद्रप्रभो जिनः क्रियात्।।१।।
कुशासनवचो चूडजगताररणहेतवे।
तेन स्ववानयसूरोस्नैद्धं मपोतः प्रकाशितः।।२।।
युगादी येन तीर्थशाधर्मतीर्थः प्रवर्त्तितः।
तमह व्रपभं यदे व्रषद व्रपनायकं।।३।।

चक्री तीर्थकर कामो मुक्तिप्रियो महावली ।

शातिनाथः सदा शान्ति करोतु नः प्रशाति कृत् ॥४॥

म्रन्तिम भाग---

भूभृन्नेत्र। चल (१७२१) शशघराक प्रमे वर्षेऽतीते

नविमिदिवसेमासि भाद्रे सुयोगे ।

रम्ये ग्रामे विरचितिमद श्रीमहाराष्ट्रनाम्नि

नाभेयश्चप्रतरभवने भूरि शोभानिवासे ।। ५॥।

रम्यं चतुः सहस्राणि पचदशयुतानि वै

ग्रनुष्द्रपै. समाख्यातं श्लोकैरिदं प्रमाणतः ।। ६६।।

इति श्री मडलसूरिशीभूषणा तत्पट्टगच्छेश श्रीधर्मचंद्रशिष्य कवि दामोदरिवरिचते श्रीचन्द्रप्रभ निर्देत निर्वाण गमन वर्गान नाम सप्तविशति नामः सर्ग ॥२७॥

इति श्री चन्द्रप्रभचरितं समाप्त । सवत् १८४१ श्रावण द्वितीय कृष्णपदी नवम्या तिथी सोमवासरे सवार्षं जयनगरे जीधराज पाटोदी कृत मदिरे लिखतं पं • चोखचद्रस्य शिष्य सुग्रामजी तस्य शिष्य कल्याणदासस्य तत् शिष्य म्युगालचंद्रे ग स्वहस्तेनपूर्णीकृत ।।

२०४४. प्रति सं०२। पत्र सं०१६२। ले० काल सं०१८६२ पीय बुदी १४। वे० स०१७४। क

२०४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ । ले॰ काल सं० १८३४ श्रवाढ सुदी २ । ये० सं∗ २५५ । व्य भण्डार ।

विशेष---प० चोखचन्दजी शिष्य पं० रामचन्द ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी।

२०४७. चन्द्रप्रभचरित्रभाषा-जयचन्द छावड़ा। पत्र सं० ६६। म्रा० १२½×६। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल १६वी शताब्दी। ले० काल सं० १६४२ ज्येष्ठ सुदी १४। वे० सं० १६४। यह अण्डार।

विजेप--केवल दूसरे सर्ग मे भ्राये हुये न्याय प्रकरण के श्लोको की भाषा है। इसी भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० सं० १६६, १६७, १६८) भीर है।

२०४८. चारुदत्तचरित्र-कल्याण्कीत्ति । पत्र सं० १६ । आ० १० र्डे ४४ दे इख । भाषा-हिन्दी । विषय-सेठ चारुदत्त का चरित्र वर्णन । र० काल सं० १६६२ । ले० काल सं० १७३३ कार्तिक बुदी ६ । अपूर्ण । वे० स० ८७४ । श्र भण्डार ।

विशेष—१६ से भ्रागे के पत्र नहीं हैं। भ्रन्तिम पत्र मौजूद है। बहादुरपुर ग्राम मे प० भ्रमीचन्द ने प्रति-

ग्रादिभाग--- ॐ नम: सिद्धे भ्यः श्री सारदाई नम: ।।

म्रादि जनम्रादिस्तवु म्रंति श्री महावीर ।
श्री गौतम गएाघर नमुं विल भारित गुरागंभीर ।।१।।
श्री मूलसंघमिहमा घर्णो सरस्वितगछ श्रुंगार ।
श्री सकलकीत्ति गुरु म्रनुक्रमि नमुश्रीपद्मनंदि भवतार ।।२।।
तस गुरु श्राता शुभमित श्री देवकीति मुनिराय ।
चारुदत्त श्रेष्ठीतरणो प्रवंध रचुं नमी पाय ।।३।।

अन्तिम- " " " भट्टारक सुखकार ॥

सुखकर सोभागि ग्रति विचक्षण विद वारण केशरी।

भट्टारक श्री पद्मनंदिचरण्कज सेवि हरि ॥१०॥

एसहु रे गछ नायक प्रणमि करि

देवकीरित रे मुनि निज गुरु मन्य घरी।

धरिचित चरणे निम कल्याणकीरित इम भणीं।

चारुदत्तकुमर प्रबंध रचना रिचिम ग्रादर घिण ॥११॥

रायदेश मध्य रे भिलोड डंविस

निज रचनायि रे हरिपुर निहसि

हसि ग्रमर कुमारनितिहा धनपित वित्त विलसए।

प्राशाद प्रतिमा जिन प्रति करि सुकृत संचए ॥१२॥

सुकृत संचि रे व्रत बहु ग्राचिर

दान महोद्द्वरे जिन पूजा करि

करि उद्द्व गान गंध्रव चन्द्र जिन प्रासादए।

वावन सिखर सोहामण् ध्वज कनक कलश विलासए ॥१३॥

मंडप मिध्य समवसरण् सोहि

श्री जिन बिंबरे मनोहर मन मोहि ।

मोहि जिनमन ग्रति उन्नत मानस्तमविशालए। तिहा विजयभद्र विक्षात मुन्दर जिनसासन रक्षपालए।।१४॥ तहा चोमासि रे रचना करि

सोलबाणु पिरे म्रासो म्मनुसरि । म्मनुसरि म्रासो गुक्ल पचमी श्रीगुरु चरण्हदय धरि । कल्याणुकीरति कहि सज्जन भणो म्रादर करि ॥१५॥

दोहा—श्रादर ब्रह्म सघ जीतिशा विनय सहित सुबकार । ते देखि चारुदत्त नो प्रवध रच्यो मनोहार ॥१॥ भिशा स्रीश स्रीश स्रीश स्रीश स्रीश द्वीप वहुमान ॥२॥ इति श्री चारुदत्त प्रवंध समाप्त ॥

विशेष—सवत् १७३३ वर्षे कार्तिक वदि ६ ग्रुरुवारे लिखितं बहाँदुरपुरग्रामे श्री चितामनी चैंत्यालये भट्टा-रक श्री ५ धर्म्मभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री ५ देविद्रकीर्ति तत्किष्य पडित ग्रमीचद स्वहस्तेन लिखित ।

॥ श्री रस्तुः॥

२०४६. चारुद्त्तचरित्र—भारामल्ल । पत्र स० ५० । आ० १२×८ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल स० १८१३ सावन बुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६७८ । क्रा भण्डार ।

२०६० चारुद्त्तचरित्र—उद्यलाल्-। पत्र-सं०१६। ग्रा०१२३४८ इख । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र। र० काल म०१६२६ माघ सुदी १३ ले० काल ४। वे० स०१७१। छ भण्डार।

२०६१ जम्बूस्वामीचरित्र-- त्रथ जिंनदासः । पत्र संव १०७ । ह्या० १२×४६ इखा । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रव काल × । लेव काल संव १६३३ । पूर्ण । वैव सव १७१ । ह्य भण्डार ।

२०६२ प्रति सं०२। पत्र स०११६ः। ले॰ काल स॰ '१७५६ फांगुए। बुदी ५। वे॰ स॰ २५५। स्त्र भण्डार।

२०६३ प्रति सं०३ । पत्र सर्०११४ । ले० काल सं०१६२४ मादवा सुदी १२ । वे० स०१६४ । क मण्डार ।

स्व भण्डार में एक प्रति (वे० स० ४४) झीर है।
२०६४ प्रति सं० ४। पत्र स० ११२। ले० काल ×। वे० सं० २६। घ भण्डार।
विशेष—प्रति प्राचीन है। प्रयम २ तथा। झिन्तम पत्र नये लिखे हुये हैं।
२०६४. प्रति सं० ४। पत्र स० १५४। ले० काल ×त्र वे० सं० १६६। इस्प्यार।
विशेष—प्रथम तथा झन्तिम पत्र नये लिखे हुये हैं।

२०६६ प्रति सं०६ | पत्र सं०१०४ | ले० काल सं०१८६४, पीप बुदी १४ | वै० सं०२०० । रू

२ ६७. प्रति सं०७ । पत्र सं० ८७ । ले० काल स० १८६३ चैत्र बुदी ४ । वे० सं० १०१ । च भण्डार ।

विशेष—महातमा शम्भूराम ने सवाई ज्यपुर मे प्रतिलिपि की थी।
२०६८. प्रति सं० ८। पत्र स० १०१। ले० काल सं० १८२५। वे० सं० ३५। छ भण्डार।
२०६८. प्रति सं० ६। पत्र स० १२३। ले० काल 🗴 । वे० सं० ११२। व्य भण्डार।

२०७०. जम्बूस्वामीचरित्र—पं० राजमञ्ज । पत्र स० १२६ । म्रा० १२६ ४६ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल स० १६३२ । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० १८५ । क भण्डार ।

विशेष-१३ सर्गों मे विभक्त है तथा इसकी रचना 'टोडर' नाम के साघु के लिए की गई थी।

२८७१ जम्बूम्वामीचरित्र—विजयकीित | पत्र सं० २०। ग्रा० १३×८ इख्र । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल सं० १८२७ फाग्रुन बुदी ७ । ले० काल 🗙 । पूर्या । वै० सं० ४० । ज भण्डार ।

२०७२. जम्बूग्वामीचरित्रभाषा-पत्रातात चौधरी । पत्र सं० १८३ । आ० १४३×५६ इख । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल स० १९३४ फागुरा सुदी १४ । ले० काल सं० १९३६ । वे० सं० ४२७ । ख्र भण्डार ।

२०७३. प्रति सं० २। पत्र स० १६६। ले० काल 🗙 । वे० सं० १८६। क भण्डार।

२०७४. जम्बूस्वामीचरित्र—नाथूराम । पत्र सं० २८ | म्रा० १२६०६ इख । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल \times । ले० काल \times । वे० सं० १६६ । छ भण्डार ।

२०७४. जिनचरित्रः । पत्र स० ६ से २० । ग्रा० १०४४ हुआ । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ११०५ । ग्रु भण्डार ।

२०७६. जिनदंत्तचरित्र—गुगाभद्राचार्य । पत्र सं० ६४ । आ० ११×४ इख । भाषा-सस्कृत । विष्यु-मुरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १४६४ ज्येष्ठ बुदी १ ॥ पूर्ण । वे० सं० १४७ । ऋ भूण्डार ।

२०७७ प्रति सं०२ । पत्र सं०३२ । ले० काल सं०१८६ माघ सुदी ४ । वे० सं०१८ । क अण्डार ।

विशेप-लेखक प्रशस्ति फटी हुई है।

२०७८ प्रति सं० ३। पत्र स० ६६। ले० काल सं० १,5६३ फाग्रुस बुदी १। वे० सं० २०३। ङ भण्डार।

२०७६. प्रति सं० ४। पत्र स० ५१। ले० क्राल सं० १६०४ सासील सुदी २। वे० सं० १०३। च

```
१७०
                                                                                काव्य एव चरित्र
           २०८०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३४। ले० काल स० १८०७ मगसिर सुदी १३। वे० स० १०४। च
भण्डार ।
          विशेष--यह प्रति पं० चोलचन्द एवं रामचद की थी ऐसा उल्लेख है ।
           छ् भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे॰ सं॰ ७१) श्रीर है।
           २०⊏१. प्रति सं०६। पत्र स०५७। ले० काल स०१६०४ कार्त्तिक बुदी १२। वे० सं०३६। व्य
भण्डार ।
           विशेष-गोपीराम बसवा वाले ने फ़ागो मे प्रतिलिपि की थी।
           २०८२. प्रति सं० ७ । पत्र स० ३८ । ले० वाल स० १७८३ मगसिर बुदी ८ । वे० स० २४३ । ज
भण्डार ।
           विशेष-भिलाय मे प० गोर्द्ध न ने प्रतिलिपि की थी।
           २०८३. जिनदत्तचरित्रभापा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० ७६ । ग्रा० १३×५ इख्र । भापा-हिन्दी
गद्य । विषय-चरित्र । रू० काल स० १६३६ माघ सुदी ११ । ले० काल 🗶 । पूर्णं । वे० स० १६० । क भण्डार ।
           २०८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल 🗴 । वे० स० १६१ । क भण्डार ।
           २०८४. जीवंधरचरित्र-भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सं० १२१ । ग्रा० ११×४३ इख्र । भाषा-सस्कृत ।
विषय—चरित्र। र०काल स०१५९६। ले०काल सं०१८४० फाग्रुए। कुदी १४।पूर्सा वे०स० २२। स्त्र
भण्डार ।
                            2 , 61 ,
           इसी भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया ( वे॰ सं॰ ८७३, ८६९ ) श्रीर है।
           रं० महं. प्रति सं०२ । पत्रं सं०७२ । ले० काल स० १८३१ भादवा बुदी १३ । वे० स० २०६ । क
भण्डार।
           विशेष-लेखन प्रशस्ति फटी हुई है।
           २०८७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६७ । ले०' काल स० १८६८ फागुए। बुदी ८ । वे० स० ४१'। छ
भण्डार ।
           विशेष-सवाई जयनगर में महाराजा जगतिसह के शासनकाल में नेमिनाथ जिन चैत्यालय ('गोधो की
मन्दिर ) मे वलतराम कृष्णाराम ने प्रतिलिपि की थी । 🗥 🚶 🗸 💃
           २०५५. प्रति सं०४। पत्र स०१०४। ले० काल_स० १८५० ज्येष्ठ बुदी ५। वे० स०४२'। छ
भण्डार ।
                                                                              .411
           २०८६. प्रति सें र्थ । पर्य सर्व ६१ । ले० काल सर्व १८३३ वैगाख सुदी २ । वें० सर्व २७ । ज
```

ं रंट्ट. जीवंधरचरित्र—न्धर्मल विलाला । पर्त्र सं० ११४ । ग्राठ १२३×६३ ईश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल स० १८४०। ले० काल स० १८५६। पूर्ण । वे० स० ४१७। त्रा भण्डार ।

1150

भण्डार १

भण्डार

२०६१. प्रति सं०२। पत्र सं०१२३। ले० काल सं०१६३७ चैत्र बुदी ६। वे० सं० ४४६। च

२०६२. प्रति सं २ १ पत्र सं ० १०१ से १५१। ले काल 🗙 । अपूर्ण। वे० सं० १७४३। ट

२०६३. जीवंधरचरित्र--पन्नलाल चौधरी। पत्र स० १७० । ग्रा० १३×५ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । 'र० काल स० १६३५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०७ । क भण्डार ।

२०६४. प्रति सं० २। पत्र स० १३५। ले॰ काल ४। वे॰ सं० २१४। इन् भण्डार।

विशेष-अन्तिम ३५ पत्र चूहो द्वारा खाये हुये है।

२०१४. प्रति सं०३। पत्र स०१३२। ले० काल ×। वे० स०१६२। छ भण्डार।

२०६६. जीवंधरचंिरत्र \cdots । पत्र स० ४१ । ग्रा० ११ $\frac{3}{5}$ \times $\stackrel{1}{\sim}$ दश्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल \times । ले० काल \times । ग्रपूर्ण । वे० स० २०२६ । त्र्य भण्डार ।

२०६७. ग्रोमिग्राहचरिख—कविरत्न अवुध के पुत्र लच्नमग्रादेव। पत्र सं० ४४। आ० ११×४ई इख । भाषा-अपभ्र श। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ६० १५३६ शक १४०१ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । श्र

२०६८. गोमिणाहचरिय—दामोद्र ! पत्र मं० ४३ । ग्रा० १२×५ इख्रं। भाषा-अपभ्रं शं विषय-ें कोव्य । र० काल स० १२८७ ो ले० काल सं० १५८२ भादवा सुदी ११ । वे० स० १२५ । व्य भण्डार ।

विशेप-चदेरी मे ग्राचार्य जिनचन्द्र के शिष्य के निमित्त लिखा गया।

२०६६. त्रेसंठशंलाकापुरुपचरित्र" "। पत्र सं० ३६ से ६ १ । म्रा० १०३×४३ डच । भाषा-प्राकृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० स० २०६० । म्रा भण्डार ।

र्दै००० दुर्घटकाव्य ""। पत्र सं० ४। ग्रा० १२ X १६ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र॰ काल X । ले॰ काल X । वे॰ सं॰ १८५१ । ट भण्डार ।

२००१ द्वाश्रयकाच्य हैमचन्द्राचार्य। पत्र स०६। ग्रा०१०×४३ दश्च । भाषा-मंस्कृत । विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०१८३२। ट भण्डार। (दो सर्ग है)

३००२. द्विसंधानकाव्य-धनञ्जय। पत्र स० ६२। ग्रा० १०५×५३ इख्रं। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्श। वे० सं० ८५३। ऋ भण्डार।

विशेष—ंबीच के पत्र टूट गये हैं। ६२ से ग्रागे के पत्र नहीं हैं। इसका नाम राघव पाण्डवीय काव्य

२००२. प्रति सं०२। पत्र म० ३२। ले० काल ×। प्रपूर्ण । वे० स० ३३१ वि भण्डार।
२००४ प्रति सं०२। पत्र सं० १६। ले० काल स० १६७७ मादवा वृदी ११। वे० सं० १६८। क

विशेष—गौर गोत्र वाले श्री खेळ के पूत्र पदारथ ने प्रतिलिपि की थीं हैं। है है हैं है

३००५. द्विसंधानकाञ्यटीका-विनयचन्द । पत्र म० २२ । ग्रा० १२३×५३ टक्क । भागा-मंन्यून । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (पंचम सर्ग तक) ये० म० ३३० । क भण्डार ।

३००६. द्विसधानकाव्यटीका—नेमिचन्द्र। पत्र स० ३६१। विषय-काव्य । भाषा-मरात । र० , काल × । ले० काल सं० १६५२ कात्तिक सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ३२६ । क भण्डार ।

विशेष-इसका नाम पद कौमुदी भी है।

३००७. प्रति सं०२। पत्र स० ३५८। ले० वाल स० १८७५ गाघ गुदी है। वे० मं० १५७ । य

३००८. प्रति सं० ३। पत्र स० ७०। ले० काल स० १५०६ कार्तिक मुदी २। वे० स० ११३। त्र मण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति श्रपूर्श हैं। गोपाचल (ग्वालियर) में महाराजा हूगरेद्र के शासनकाल में प्रतिलिपि की गई थी।

३००६ द्विसंधानकाव्यटीका : । पत्र स० २६४। ग्रा० १०३×८ दश्च। भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० ३२८। क मण्डार।

३०१०. धन्यकुमारचरित्र — आ० गुण्भद्र । पत्र सं० ५३ । आ० १०४५ इझ । भाषा-मस्तृत । विषय-चरित्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ३३३ । क भण्डार ।

३०११. प्रति सं०२। पत्र स०२ से ४५। ले० काल स०१५६७ धासोज गुर्दा १०। प्रपूर्ण। वे० सं०३२५। इः भण्डार।

विशेष—दूदू गाव के निवासी खण्डेलवाल जातीय ने प्रतिलिपि की थी। उस समय टूटू (जयपुर) पर घडसीराय का राज्य लिखा है।

३०१२ प्रति सं०३।पत्र स०३६। ले० काल स०१६५२ द्वि० ज्येष्ठ बुदी ११। वे० सं०४३। छ

विकोप—ग्रन्थ प्रकास्ति दी हुई है । ग्रामेर मे ग्रादिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई । नेखक प्रकास्ति ग्रपूर्ण है ।

३०१३ प्रति सं० ४। पत्र स० ३५। ले० काल स० १६०४। वे० सं० १२८। व्य भण्डार। वे०१४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३३। ले० काल 🗴। वे० स० ३६१। व्य भण्डार।

३०१४. प्रति सं०६। पत्र स०४८। ले० काल स० १६०३ भादवा सुदी ३। वे० स०४५८। व्य

विशेष—श्राविका सीवायी ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करके मुनि श्री कमलकीत्ति को भेंट दिया था।
२०१६. धन्यकुमारचरित्र—भ० सकलकीत्ति । पत्र स० १०७ । ग्रा० ११×४३ दक्क । भाषा—गंस्कृत ।
विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६३ । श्रा भण्डार ।

विशेष-- चतुर्थं ग्रधिकार तक है।

३०१७. प्रति सं०२ । पत्र सं०३६ । ले० काल स०१८५० ग्राषाढ बुदी १३ । वे० सं०२५७ । श्र भण्डार ।

विशेष--- २६ से ३६ तक के पत्र बाद में लिखकर प्रति को पूर्ण किया गया है।

३०१८. प्रतिसं०३ । पत्र सं०३३ । ले० काल स० १८२५ माघ सुदी १ । वे० सं० ३१४ । ऋ भण्डार ।

३०१६. प्रति सं०४। पत्र सं० २७। ले० काल सं० १७५० श्रावशा सुदी ४ । श्रपूर्ण । वे० स० ११०४। स्त्र भण्डार।

विशेप-१६वा पत्र नहों है। ब्र॰ मेघसागर ने प्रतिलिपि की थी।

२ ३०२० प्रति सं०४। पत्र सं०४१। ले० काल स० १८१३ भादवा बुदी ८ । वे० स०४४। छ

भण्डार ।

मण्डार ।

विशेष—देविगरि (दौसा) मे पं० बख्तावर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई। कठिन शब्दों के हिन्दी मे अर्थ दिये हैं। कुल ७ अधिकार हैं।

३०२१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे॰ सं० १७ । व्य भण्डार ।

३०२२ प्रति सं०७। पत्र सं०७६। ले॰ काल सं०१६६१ बैशाख सुदी ७। वे॰ स॰ २१८७। ट भण्डार।

विशेष—संवत् १६६१ वर्षे वैशाख सुदी ७ पुष्यनक्षत्रे वृषिनाम जोगे गुरुवासरे नद्याम्नाये वलात्कारगरो सरस्वती गच्छे " " ।

३०२३. धन्यकुमारचरित्र—व्र० नेमिद्ता। पत्र सं० २४। ग्रा० ११×४३ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३२। क भण्डार।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

३०२४. प्रति सं०२। पत्र सं० ४२। ले० काल सं० १६०१ पौप बुदी ३,। वे० सं० ३२७। रू भण्डार।

विशेष--फोजुलाल टोग्या ने प्रतिलिपि की थी।

३०२४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १८। ले० काल सं० १७६० श्रावणा सुदी ४। वे० सं० ६६। व्य

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति ने अपने शिष्य मनोहर के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी। ३०२६. प्रति संट ४। पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८१६ फाग्रुए। बुदी ७। वे० सं० ८७। व्य

11

विशेष-सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

३०२७. धन्यकुमारचरित्र—खुशालचंद । पत्र सं० ३०। प्रा० १४४७ इ'च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ३७४ । स्म भण्डार । ३०२८. प्रति सं० २। पत्र स० ३६। ले० काल ×। वे० स० ४१२। श्र भण्डार। इ०२६. प्रति सं० ३। पत्र स० ६२। ले० काल ×। वे० सं० ३३४। क भण्डार। ३०३०. प्रति स० ४। पत्र स० ३६। ले० काल ×। वे० स० ३२६। ड भण्डार। ३०३१ प्रति सं० ४। पत्र सं० ४४। ले० काल स० १६६४ कार्तिक युदी ६। वे० स० ५६३। अ

भण्डार ।

३०३२. प्रति सं० ६ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १ ८ १ । वे० स० २४ । मा भण्डार ।
३०३३. प्रति सं० ७ । पत्र स० ६६ । ले० काल × । वे० स० ४६४ । व्य भण्डार ।
विशेष—सतोपराम छावडा मीजमाबाद वाले ने प्रतिलिपि की थी । प्रत्य प्रशन्ति काकी विम्तृत है ।
इनके अतिरिक्त च भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४६४) तथा छ ग्रीर मा भण्डार मे एक एक प्रति
(वे० स० १६८ व १२) ग्रीर हैं ।

३०३४. धन्यकुमारचरित्र''''''। पन स० १८ । ग्रा० १०×८ डझ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ३२३ । ङ भण्डार ।

३०३४. प्रति सं०२ | पत्र सं०१ द। ले० काल × । प्रपूर्ण। वे० स० ३२४ । हा भण्डार । ३०३६. धर्मशर्माभ्युटय-सहाकवि हरिचन्द् । पत्र स० १५३ । प्रा०१०५ ×५५ हन्न । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१ । श्र भण्डार ।

३०३७. प्रति सं०२। पत्र स०१६७। ले॰ काल स०१६३८ कार्त्तिक सुदी ८। वे० सं० ३४८। क भण्डार।

विशेप-नीचे संस्कृत में सकेत दिये हुए हैं।

३०३८. प्रति सं०३। पत्र स॰ ५४। ते० काल ४। वे० म० २०३। व्य भण्डार।

विशेप-इसके अतिरिक्त आ तथा क भण्डार मे एक एक प्रति (वे० मं० १४८१, ३४६) और है।

३०३६. धर्मशर्माभ्युद्यदीका—यशःकीत्ति । पन सं० ४ मे ६६ । मा० १२×१ इख । भाषा— सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । मपूर्ण । वे० स० ८१६ । स्र भण्डार ।

विशेष-टीका का नाम 'संदेह ब्वात दीविका' है।

३०४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३०४ । ले० काल सं० १६५१ ब्रापाढ बुदी १ । पूर्ण । वे० स० ३४७ । क भण्डार ।

विशेष--- के भण्डार में एक प्रति (वे० स० ३४६) की भीर है।

३०४१. नलोद्यकाव्य—माणिक्यसूरि। पत्र सं० ३२ से ११७। मा० १०×४६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल । ले० काल सं० १४४५ प्र० फाग्रुन बुदी = । म्रपूर्ण । वे० स० ३४२ । व्य भण्डार ।

पत्र सं०१ से ३१ ४४, ४६ तथा ६२ से ७२ नहीं हैं। दो पर्त बीच के भीर है जिन पर पत्र सं० नहीं है। विशेष--इसका नाम 'नलायन महाकाव्य' तथा 'कुबेर पुरान' भी है। इसकी रचना सं० १४६४ के पूर्व हुई थी। जिन रत्नकोष मे ग्रन्थकार का नाम मासावयसूरि तथा मासावयदेव दोनो दिया हुन्ना है।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

संवत् १४४५ वर्षे प्रथम फाल्युनं वदि ८ शुक्ते लिखितमिदं श्रीमदर्गाहिलपत्तने ।

३०४२ नलोदयकाव्य—कालिद्।स । पत्र सं० ६ । ग्रा० १२×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय— काव्य । र० काल × । ले० काल स० १८३६ । पूर्ण । वे० स० ११४३ । । श्र्य भण्डार ।

्र३०४३. नवरत्नकाव्य ; । पत्र म०२। ग्रा०११४५३ इंच। भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र०. काल ×। ने० काल ×। पूर्ण । वे० सं०१०६२। त्र्य भण्डार।

विशेष-विक्रमादित्य के नवरत्नो का परिचय दिया हुम्रा है।

३ ४४ प्रति सं०२ | पत्र स०१ | ले० काल 🗴 । वे० सं०११४६ | ऋ भण्डार ।

३०४४. नागकुमारचरित्र—मिल्लिषेण सूरि । पत्र स० २२ । श्रा० १०६४६ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । राज्याला 🗙 । ले० काल स० १५६४ भादवा सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २३४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--लेखक प्रशस्ति विस्तृत है।

सवत् १५६४ वर्षे भादवा सुदी १५ सोमदिने श्री मूलसंघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुदा-चार्यान्वये भ० श्री पद्मनदिदेवा त० भ० श्री शुभचन्द्रदेवा त० भ० श्री जिनचन्द्रदेवा त० भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये साह जिण्रदास तद्भार्या जमणादे त० साह सागा द्वि० सहमा नृप चुंडा सा० सागा भार्या सूहवदे द्वि० श्र गारदे तृ० सुरताण्दे त० सा० ग्रासा, धण्पाल ग्रासा भार्या हकारदे, धण्पाल भार्या धारादे । द्वि० सुहागदे । सहसा भार्या स्वरूपदे त० सा० प्रासा द्वि० महिपाल । पासा भार्या सुगुणादे द्वि० पाटमदे त० काल्हा महिपाल महिमादे । चुंडा भार्या चादणादे तस्यपुत्र सा० दासा तद्भार्या दाडिमदे तस्यपुत्र नरसिंह एतेषा मध्ये ग्रासा भार्या ग्रहकारदे इदंशास्त्र लि०मडलाचार्य श्री धर्म्यचंद्राय ।

२०४६ प्रतिस् २ । पत्रस०२४ । ले॰ कालस० १८२६ पौष सुदी ४ । वे० सं० ३६४ । क

२०४७. प्रति संट २ । पत्र स० ३५ । ले० काल सं० १८०६ चैत्र बुदी ४ । वे० स० ४० । घ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ६ पत्र नवीन लिखे हुँगै हैं। १० से १६ तथा ३२वा पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं। प्रन्त मे निम्न प्रकार लिखा है। पाढे रामचन्द के मार्थ पधराई पोथो। संवत् १८०६ चैत्र वदी ५ सनिवासरे दिल्ली।

३०४८ प्रति सं० ४'। पत्र स० १७। ले० काल सं० १५८० । वे० स० ३५३। इक भण्डार। १०४६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५। ले० काल सं० १६४१ माघ बुदी ७। वे० सं० ४६६। व्य

> विशेष—तक्षकगढ में 'कल्यार्गराजं के समय में ग्रां॰' भोपति ने प्रतिलिपि कराई थी। े ३०४०. प्रति सं० ६। पत्र स० २१। ले॰ काल 🗴। ग्रपूर्ण। वे॰ स॰ '१८७७। ट भण्डार।

ै ३०४१. नागकुमारचरित्र—पं० धर्मधर । पत्र स० ४४ । ग्रा० १०३४ इंच । भाषा-सम्कृत । विषय-चरित्र । र० काल स० १५११ श्रावण सुदी १४ । ल० काल स० १६१६ वैद्याख सुदी १० । पूर्ण । वे० स० २३० । व्य भण्डार ।

३०४२ तागकुमारचरित्र : : । पत सं० २२ । ग्रा० ११×५ इंच । भाषा-सम्युत्त । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १८६१ मादता बुदी ८ । पूर्ण । वे० न० ८६ । ल भण्डार ।

· ३०४३ नागकुमारचिरतटीका—टीकाकार प्रभाचन्द्र। पत्र स० २ मे २०। ग्रा० १०४४ इन । माषा-सस्कृत । विषय-चिरत्र। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० स० २१८८ । ट भण्डार ।

विशेष---प्रति प्राचीन है। ग्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है---

श्री जयसिंघदेवराज्ये श्रीमद्वारानिवासिनो परागरमेष्टिप्रमाणोपाजितमलपुण्यनिराकृताद्विलकलंकेन श्रीमत्प्रभा-चन्द्रपडितेन श्री मत्पचमी टिप्पणक कृतमिति ।

३०४४, नागकुमारचरित्र—उद्यलाल । पत्र म० ३६ । ग्रा० १३× दश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्णं । वे० स० ३५४ । ह भण्डार ।

३०४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल 🗴 । वे० स० ३५५ । द्व भण्डार ।

, ३०४६ नागकुमारचरित्रभाषाः । पत्र म०४४ । ग्रा०१३×६ इख्र । नाषा-र्हन्दो । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७७ । श्रा भण्डार ।

३०५७. प्रति सं० २ । पत्र स० ४० । ले० काल 🗴 । ने० सं० १७३ । छ भण्डार ।

३०४८. नेसिजी का चरित्रश्राणन्द । पत्र सं० २ से ४ । ग्रा० ६×४३ इक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-वरित्र । र० काल सं० १८०४ फागुरा सुदी ४ । ले० काल सं० १८४१ । ग्रपूर्ण । वे० सं० २२४७ । श्र भण्डार ।

विशेष-ग्रन्तिम भाग---

नेम तस तात सघर मध्ये रे रह्या ज रूड भावो ।
चरत पाल्ये सात सारे सहस बरसना ग्राव ।।
सहस वरसना ग्रावज पूरा जिएावर करुडी धीरुडी ।
ग्राठ कर्म कीधा चकचूरा पाच सछ तास सघात पूरा जी ।
मंवत १६ चिंडोत्तर फाग्रुए। मास मफारो ।
सुद पंचमी सनीसर रे कीधो चरित उदारो ।।
कीधो चरत उदार ग्राए।दा इम जाए। छाडो ग्रहफदा ।
धन २ समुद गिरानंदा ऋप जैम लह नेम जिएांदा ।।५२॥
इति श्री नेमजी को चरित्र समाप्त ।

स॰ १८५१ केसालें श्री श्री भोजराज जी लिखतं कल्याएाजी राजगढ मध्ये। श्रागे नेमिजी के नव मव दिये हुये हैं। काव्य एवं चरित्र]

२१४६. नेमिनाथ के दशभव ' '। पत्र सं० ७ । म्रा० ६×४६ इर्खे । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० कान × । ले० काल स० १६१८ । वे० सं० ३५४ । म्ह भण्डीर ।

२१६०. नेमिदूतकाव्य-सहाकिव विक्रम । पत्र सं० २२ । ग्रा० १३×५ डब्झ । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६१ । क भण्डार ।

विशेष —कालिदास कृत मेघदूत के श्लोकों के ग्रन्तिम चरण की समस्यापूर्ति है।

२१६१ प्रति स०२। पत्र स०७। ले० काल ×। वे० स०३७३। वा भण्डार।

२१६२ नेमिनाथचरित्र—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं०२ से ७८। ग्रा० १२×४ई इख्र। भाषा-मम्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल स० १५८१ पौष सुदी १। ग्रपूर्ण। वे० सं० २१३२। ट भण्डार।

विगेप---प्रथम पत्र नही है।

२१६३ नेमिनिर्वाण—महाकवि वाग्भट्ट। पत्र सं० १०० । ग्रा० १३ $\stackrel{\checkmark}{\times}$ ५ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय—नेमिनाथ का जीवन वर्णन । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ३६० । क भण्डार ।

२१६४. प्रति सं०२। पत्र स० ५५। ले० काल स० १८२३। वे० सं० ३८८। क भण्डार। विशेष—एक श्रपूर्ण प्रति क भण्डार मे (वे० स० ३८९) श्रीर है।

२१६४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५। ले० काल 🗴 । ऋपूर्ण । वे० स० ३८२। इ. मण्डार ।

२१६६. नेमिनिर्वाण्पंजिकाः । पत्र स० ६२ । ग्रा० ११६×४ इ.च । माषा-संस्कृत । विषय-काच्य । र० काल × । ले० काल-× । ग्रपूर्ण । वे० सं० २६ । व्य भण्डार ।

विशेष--- ६२ से श्रागे पत्र नहीं है।

' प्रारम्भ-धत्वा नेमिश्वर चित्ते लव्व्वानत चतुष्ट्य । कूर्वहं नेमिनिर्वाणमहाकाव्यस्य पंजिका ॥

२१६७ नैषधचरित्र—हर्षकिवि । पत्र स०२ से ३०। ग्रा०१०३×४३ इंच । भाषा- सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स०२६१ । छ भण्डार ।

विशेष--पंचम सर्ग तक है। प्रति सटीक एवं प्राचीन है।

२१६८. पद्मचरित्रसारः "। पत्र स० ५। ग्रा० १०×४६ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र॰ काल × । त्रपूर्ण । वे० स० १४७ । छ्यु भण्डार ।

विशेष-पद्मपुरागा का सक्षित भाग है।

२१६६ पर्यूषण्करुप ' '''। पत्र सं० १००। ग्रा० ११३ ४४ इंच। भाषा-मंस्कृत । विषय-वरित्र । ् र० काल ४। ले० काल सं० १६६६। ग्रपूर्ण। वे० म० १०४। ख्रु भण्डार।

विशेप-- ६३ वा तथा ६५ से ६६ तक पत्र नहीं हैं। श्रुतस्कंध का प्रवा श्रध्याय है।

प्रशस्ति—सं॰ १६६६ वर्षे मूलताएँगमच्ये सुर्थावक सोनू तन् वधू हरसी तन् मृतां सुलखेगी मेलूपु धडागृहे वयू तेन एपा प्रति प॰ श्री राजकीतिंगिएनां विहरेर्जपता स्वपुन्याय वि २१७०. परिशिष्टपर्वे "" "। पत्र स० ५८ से ५०। आ० १० $\frac{3}{6}$ \times ४ $\frac{1}{6}$ इंच। भाषा—सम्कृत। विषय— चरित्र। र० काल \times । ले० काल सं० १६७३। श्रपूर्ण। वे० म० १६६०। श्र्य भण्डार।

विशेष-६१ व ६२वा पत्र नही है। वीरमपुर नगर मे प्रतिलिपि हुई थी।

२१७१. पवनदूतकाच्य-वादिचन्द्रसूरि । पत्र स० १३ । म्रा० १२×५५ द च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल स० १६५५ । पूर्ण । वे० स० ४२५ । क भण्डार ।

विशेष—स० १६४५ मे राव के प्रसाद से भाई दुलीचन्द के श्रवलोक्नार्थ ललितपुर नगर मे प्रतिलिपि हुई। २१७२. प्रति सं० २। पत्र स० १२। ले० काल 🔀 । वै० सं० ४५६। क भण्डार।

२१७३. पाग्डवचरित्र—तात्वर्द्धन । पत्र स० ६७ । ग्रा० १०३×४३ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल सं० १७६८ । ले० काल सं० १८१७ । पूर्ण । वे० स० १९२३ । ट भण्डार ।

२१७४. पार्श्वनाथचिरित्र—वादिराजसूरि। पत्र स० ६६। ग्रा० १२×४ इ च। भाषा-सम्कृत । विषय-पार्श्वनाथ का जीवन चरित्र। र० काल शक स० ६४७। ले० काल स० १४७७ फागुए। बुदी ६। पूर्ण । ग्रत्यन्त जीर्ए। वे० सं० २२४६। स्त्र भण्डार।

विशेष--पत्र फटे हुये तथा गले हुये है। ग्रन्थ का दूसरा नाम पार्श्वपुराण भी है। प्रशस्त निम्न प्रकार है---

भवत् १५७७ वर्षे फाल्युन बुदी ६ श्री मूलसघे वलात्कारगरी सरस्वतीगच्छे नद्याम्नाये भट्टारक श्री पद्मनिद तत्पट्टी भट्टारक श्री शुभचद्रदेवास्तत्पट्टी भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टी भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तद्य साधु गोत्रे साह काधिल तस्य भार्या कावलदे तयो: पुत्रः चतुर्विघदान कल्पवृक्ष: साह अछा तस्य भार्या पदमा तयो पुत्र पंचाइरा तस्य भार्या बातापदे तयोपुत्रः साह दूलह एते नित्यं प्रणामंति ।

२१७४. प्रति सं०२। पत्र सं०२२। ले० काल ×। श्रपूर्ण। वे० म०१०७। व भण्डार। विशेष---२२ से श्रागे पत्र नहीं हैं।

२१७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०५ । ले० काल स० १५६५ फाल्गुरा सुदो २ । त्रे० म० २१८ । च

विशेप-लेखक प्रशस्ति वाला पत्र नही है।

२१७७ प्रति स०४। पत्र स०३४। ले० काल स० १८७१ चैत्र सुदी १४ । ते० म० २१६। च भण्डार।

२१७८ प्रति स० ४। पत्र सं० ६४। ले॰ काल स० १६८५ आषाह। वे॰ स॰ १६। छ भण्डार। २१७६. प्रति सं० ६। पत्र सं॰ ६७। ले॰ काल स० १७८५। वे॰ सं॰ १०५। व्य मण्डार। विशेष—वृन्दावती मे आदिनाथ चैत्यालय में गोर्द्ध न ने प्रतिलिपि की थी।

२१८०. पार्श्वनाथचरित्र—भट्टारक सकलकीत्ति । पत्र स० १२०। ग्रा० ११४५ इंच । भाषा— सस्कृत । विषय-पार्श्वनाथ का जीवन वर्णान । र० काल १५वी शताब्दी । ले० काल सं० १८८८ प्रथम वैशाख सुदी ६। पूर्ण । वे० सं० १३। स्र भण्डार ।

२१८९. प्रति सं०२। पत्र सं० ११०। ले० काल स० १८२३ कार्त्तिक बुदी १०। वे० म० ४६६। क भण्डार।

२१८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६१ । ले० काल स० १७६१ । वे० सं० ७० । घ मण्डार । २१८३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७५ से १३६ । ले० काल सं० १८०२ फाग्रुस बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ४५६ । ड भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति--

सवत् १८०२ वर्षे फाल्गुनमासे कृष्णापक्षे एकादक्षी बुघे लिखितं श्रीउदयपुरनगरमध्येसुश्रावक-पुण्यप्रभावक-श्रीदेवगुरुभक्तिकारक श्रीसम्यक्त्वमूलद्वादशव्रतधारक सा० श्री दौलतरामजी पठनार्थं ।

२१८४ प्रति सं० ४। पत्र स० ४२ से २२६। ले० काल सं० १८५४ मंगसिर सुदी २। अपूर्ण। वे० सं० २१६। च भण्डार।

विशेष--प्रति दीवान संगही ज्ञानचन्द की थी।

२८५४. प्रति सं०६। पत्र स० ८६। ले० काल स० १७८५ प्र० वैशाख सुदी ८। वे० स० २१७। च भण्डार।

विशेष-प्रित खेमकर्मा ने स्वपठनार्थ दुर्गादास मे लिखवायी थी।

२१८६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १८५२ श्रावरण सुदी ६ । वे० स० १५ । छ् भण्डार ।

विशेष—प॰ श्योजीराम ने श्रपने शिष्य नौनदराम के पठनार्थ गगाविष्णु से प्रतिलिपि कराई। २१८% प्रति सं० ८। पत्र सं० १२३। ले॰ काल 🗙। पूर्ण। वे॰ मं॰ १६। व्य भण्डार। विशेष—प्रति प्राचीन है।

२१८८. प्रति सं ०६। पत्र स०६१ से १४४। ले॰ काल स०१७८७ । अपूर्ण। वे॰ सं०१९४५। ट भण्डार।

निशेष—इसके अतिरिक्त आ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० १०१३, ११७४, २३६) क तथा घ भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० ४६६, ७०) तथा क भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ४५६, ४५६, ४५७, ४५८) व्य तथा ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० २०४, २१८४) और है।

२१८. पार्श्वनाथचरिख—रइधू। पत्र स० ८ से ७६ । ग्रा० १०३४ इंच । भाषा-ग्राभंश। विषय-चरित्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० सं० २१२७ । ट भण्डार ।

२१६०. पार्श्वनाथपुराण — भूधरदास । पत्र स० ६२ । म्रा० १०६४ ४ इच्च । भाषा – हिन्दी । विषय – पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन । र० काल म० १७६६ म्रापाढ सुदी ४ । ले० काल सं० १८३३ । पूर्ण । वे० सं० ३४६ । म्रा भण्डार ।

२१६१. प्रति सं०२। पत्र स० ८६। ले० काल सं० १६२६। वे० सं० ४४७। स्त्र भण्डार। विशेष-तोन प्रतिया और हैं।

२१६२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६२ । ले० काल स० १८६० माह बुदी ६ । वे० सं० ५७। त

भण्डार ।

२१६३ प्रति सं ८४। पत्र सं ०६३। ले० काल सं ०१८६१। वे० सं ०४५०। छ भण्डार। -२१६४ प्रति स०४। पत्र सं ०१३८। ले० काल स०१८६४। वे० स०४५१। छ भण्डार। २१६४. प्रति सं ०६। पत्र स०१२३। ले० काल स०१८८९ पीप सुदी १४। वे० स०४५३। छ

भण्डार ।

२१६६. प्रति सं०७। पत्र स०४६ से १३०। ले० काल स०१६२१ सावन बुदी हा वे० स०१७४। छ भण्डार।

२१६७. प्रति सं० ८ । पत्र स० १०० । ले० काल स० १८२० । वे० सं० १०४ । २६ मण्डार । २१६८. प्रति सं० ६ । पत्र स० १३० । ले० काल स० १८५२ फाग्रुगा बुदी १४ । वे० स० १० । व्य

भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी। स० १८५२ मे लूएकरएए गोधा ने प्रतिलिपि की।
२१६६. प्रति सं० १०। पत्र स० ४६ से १५४। ले॰ काल स० १६०७। प्रपूर्ण। वे॰ सं॰ १८४।
स्न भण्डार।

२२००. प्रति स० ११। पत्र सं० ६२। ले० काल सं० १८६६ ग्रापाढ बुदी १२। वे० स० ५८। व्य भण्डार।

विशेष-फतेहलाल सबी दीवान ने सोनियों के मन्दिर में सं० १६४० भादवा सुदी ४ को चढाया।

इसके श्रितिरक्त श्रि भण्डार में तीन प्रतिया (वे० स० ४४४, ४०८, ४४७) ग तथा श्र भण्डार में एक एक प्रति (वे० स० ५६, ७१) इस भण्डार में तीन प्रतिया (वे० सं० ४४६, ४४२, ४४४), च भण्डार में १ प्रतिया (वे० स० ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४) इस भण्डार में एक तथा जा भण्डार में २ (वे० स० १६६, १, २) तथा ट भण्डार में दो प्रतिया (वे० स० १६१६, २०७४) श्रीर हैं।

२२०१. प्रद्युम्नचरित्र—पं० महासेनाचार्य । पत्र स० ५८ । ग्रा० १०१×४५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० २३६ । च भण्डार ।

२२०२. प्रति सं०२। पत्र स०१०१। ले० काल 🗶 । वे० सं० ३४५। व्य भण्डार । २२०२. प्रति सं०३। पत्र सं०११८। ले० काल सं०, १५६५ ज्येष्ठ बुदी ४। वे० स० ३४६। व्य भण्डार।

विशेष—सवत् १५६५ वर्षे ज्येष्ठ बुदी चतुर्धीदिने ग्रुरुवासरे सिद्धियोगे मूलनक्षत्रे श्रीमूलमधे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचंद्र देवास्तत्यहुं भ० श्री प्रभावन्द्रदेवास्तिख्य्य मडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये रामसरनगरे श्रीचंद्रप्रभचैत्यालये खंढेल-बालान्वये काटरावालगोत्रे सा० वीरमस्तद्रभार्या हरपख् । तत्पुत्र सा० वेला तद्भार्या वील्हा तत्पुत्रौ ही प्रथम साह दामा द्वितीय साह पूना । सा० दामा तद्भार्या गोगी तयो. पुत्र. सा० वोदिय तद्भार्या हीरो । सा० पूना तद्भार्या कोइल तयो: पुत्र सा० खरहय एतेषा मन्ये जिनपूर्णपुरदरेगा सा० चेलाख्येन इदं श्री प्रद्युम्न शास्त्रलिखाप्य ज्ञानावरगीकम्म क्षयांथं निमित्त सत्यात्रायम श्री धर्म बन्द्राय प्रदत्त ।

२२०४. प्रद्युम्नचरित्र—त्र्याचार्य सोमकीित्त । पत्र सं० १६४ । ग्रा० १२×५३ दञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल स० १५३० । ले० काल स० १७२१ । पूर्ण । वे० सं० १५४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—रचना सवत् 'ङ' प्रति मे से 'है। संवत् १७२१ वर्षे ग्रासौज वदि ७ शुभ दिने लिखितं ग्रावर (ग्रामेर) मध्ये लिखानि ग्रावार्यं श्री महीचंद्रकीतिजो। लिखितं जोसि श्रीघर।।

र्२०४. प्रति स० २। पत्र सं० २५५। ले० काल सं० १८८५ मंगसिर सुदी ५। वे० सं०' ११३। ख

विशेष-लेखक प्रशस्ति प्रपूर्ण है।

भट्टारक रत्नभूषण की भ्राम्नाय मे कासलीवाल गोत्रीय गोवटीपुरी निवासी श्री राजलालजी ने कर्मीदय से ऐलिचपुर ग्राकर हीरालालजी से प्रतिलिपि करोई।

> २२०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२६ । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० सं० ६१ । ग भण्डार । २२०७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२४ । ले० काल सं० १८०२ । वे० सं० ६१ । घ भण्डार ।

विशेष—हासी (भासी) वाले भैया श्री ढमल्ल श्रग्रवाल श्रावक ने ज्ञानावर्गी कर्म क्षयार्थ प्रतिलिधि करवाई थी। पं अपरामदास के शिष्य रामचन्द्र को सम् ए। की गई।

२२० म्प्रित सं० ४ । पत्र सं० ११६ से १६५ । ले० काल सं० १८६६ सावन सुदी १२ । वे० सं० ४०७ । क भण्डार ।

विशेप—लिस्यतं पंडित संग्हीजी का मन्दिर का महाराजा श्री सवाई जगतसिंहजी राजमध्ये लिखी पिडत गोर्द्ध नदासेन ग्रात्मार्थं।

२२०६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २२१ । ले० काल मं० १८३३ श्रावरा बुदी ३ । वे० मं० १६ । छ

विशेष-पिडत, सवाईराम ने सांगानेर मे प्रतिलिपि की थी। ये आ० रत्नकी तिजी के शिष्य थे। २२१० प्रति सं०७। पत्र स० २०२। ले० काल सं० १५१६ मार्गशीप सुदी १०। वे० मं० २१। इस मण्डार।

विशेष-व बतराम ने स्वपठनार्थ प्रतिनिपि की थी।

स्य भण्डार ।

२२११. प्रति सं० द। पत्र सं० २७४। ले॰ काल स॰ १८०४ भादवा बुदी १। वे॰ सं० ३७४। व्य

विशेष--- प्रगरचन्दजी चादवाड ने प्रतिलिपि करवायी थी।

्र इसके भ्रतिरिक्त स्त्र भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० सं० ४१६, ६४८, २०८६ तथा ह भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५०८) भीर है।

२२१२. प्रस्मनचरित्र । पत्र सं० ४०। ग्रा० ११×४ इच। भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० २३४ । च भण्डार ।

२२१३. प्रसुम्नचरित्र—सिंहकवि । पत्र सं० ४ से ८६ । ग्रा० १० है ४४ ईच । भाषा-ग्रपभंश । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० २००४ । श्र भण्डार ।

२२१४. प्रद्युम्नचरित्रभाषा—मन्नालाल । पत्र सं० ४०१ । म्रा० १३×४ इख्र । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-चरित्र । र० काल सं० १६१६ ज्येष्ठ बुदी ४ । ले० काल सं० १६३७ वैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४६४ । क् भण्डार ।

२२१४. प्रति सं०२। पत्र स० ३२२। ले० काल सं० १६३३ मंगसिर सुदी २। वे० सं• ४०६। ङ भण्डार।

२२१६. प्रति सं० ३ । पत्र स० १७० । ले० काल × । वे० सं० ६३८ । च भण्डार । विशेष—रचियता का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२२१७ प्रसुम्नचरित्रभाषा" "। पत्र सं० २७१। म्रा० ११३ ×७३ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र॰ काल × । ले॰ काल स॰ १६१६ । पूर्ण । वे॰ स॰ ४२०। स्त्र भण्डार ।

२२१८ प्रीतिकरचरित्र—झ० नेमिदत्त । पत्र सं० २१ । म्रा० १२×५६ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८२७ मगसिर बुदी ८ । पूर्ण वे० स० १२६ । स्र भण्डार ।

> २२१६. प्रति सं० २ । पत्र स० २३ । ले० काल सं० १८६४ | वे० स० ५३० । क भण्डार । २२२०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल 🗙 । अपूर्ण । वे० सं० ११६ । स्व भण्डार ।

विशेष—२२ से ३१ पत्र नहीं हैं। प्रति प्राचीन है। दो तीन तरह की लिपि है।

२२२१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८१० वैशाख । वे० मं० १२१ । ख भण्डार । २२२२ प्रति स० ४ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६७६ प्र० थ्रावरण सुदी १० । वे० मं० १२२ ।

२२२३. प्रति सं०६ । पत्र सं० १४ । ले॰ काल सं० १८३१ श्रावरण सुरी ७ । वे० सं० हा । ज्य

वियोष-प० चोसचन्द के किष्य पं० रामचन्दजी ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। इसकी दो प्रतिया स्त्र भण्डार में (वे० सं० १२०, २८६) और हैं।

काव्य एवं चरित्र]

२२२४. प्रीतिकरचरित्र—जोधराज गोदीका। पत्र सं॰ १०। ग्रा० ११×८ इख्र। भाषा-हिन्दी। विषय-वरित्र। र० काल स० १७२१। ले० काल ×। पूर्या। वे० सं० ६८२। ग्रा भण्डार।

२२२४. प्रति सं०२। पत्र स०११। ले० काल 🗴। वे० सं०१४६। छ भण्डार।

२२२६. ।ति सं २३। पत्र स०२ से ६३। ले० काल 🗴। श्रपूर्ण। वे० सं०२३६। छ भण्डार।

२२२७. भद्रवाहुचरित्र—रत्ननिद्। पत्र सं० २२ । ग्रा० १२×५३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८२७ । पूर्ण । वे० स० १२८ । स्र भण्डार ।

२२२ प्रति स० २ । पत्र स० ३४ । ले॰ काल 🗙 । वे॰ स॰ ५५१ । क भण्डार ।

२२२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले॰ काल सं० १६७४ पौप सुदी म । वे॰ सं० १३० । ख

विशेष-प्रथम पत्र किसी दूसरी प्रति का है।

२२३ . प्रति स० ४ | पत्र स० ३४ | ले० काल सं० १७८६ वैशाख बुदी ६ । वे० सं० ४५८ | च भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण (कृष्णगढ) किशनगढ वालो ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

२२३% प्रति सं० ४। पत्र सं० ३१। ले० काल सं० १८१६। वै० सं० ३७। छ् भण्डार।
विशेष—वस्तराम ने प्रतिलिपि की थी।

२२३२. प्रति सं०६। पत्र सं०२१। ले० काल सं०१७६३ म्रासोज सुदी १०। वे० सं०५१७। स्व भण्डार।

विशेष-क्षेमकीति ने बीली ग्राम मे प्रतिलिपि की थी।

२२३३. प्रति मं० ७। पत्र सं० ३ से १५। ले० काल 🗶 । म्रपूर्ण। वे• सं० २१३३। ट भण्डार।

२२३४. भद्रबाहुचरित्र—नवलकि । पत्र सं० ४८ । ग्रा० १२ई×८ इश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १९४८ । पूर्ण । वे० सं० ५५९ । इस भण्डार ।

२२३४. भद्रबाहुचरित्र—चंपाराम । पत्र सं० ३८ । आ० १२३×८ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल स० श्रावरा सुदी १४ । ले० काल ×। वे० सं० १६५ । छ भण्डार ।

२२३६. भद्रवाहुचरित्र """। पत्र सं० २७। ग्रा० १३×८ इख्र । भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र । र॰ भाल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० ६८५ । स्त्र भण्डार ।

२२३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८ । ग्रा० १३×८ इख्र । माषा-हिन्दो । विषय-चरित्र । र० काल ×। विषय-चरित्र । र० काल ×। विषय-चरित्र । एक काल ×। पूर्ण । वे० सं० १६५ । ख्रु भण्डार ।

२२३८. भरतेशवैभव """। पत्र सं० ४। म्रा० ११×४३ इয় । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । ए० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

२२३६. भनिष्यदत्तचरित्र—पं० श्रीधर । पत्र सं० १०८ । ग्रा० ६३×४३ डख । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्णे । वे० स० १०२ । स्त्र भण्डार ।

विशेष---श्रन्तिम पत्र फटा हुग्रा है। संस्कृत मे सक्षिप्त टिप्पगा भी दिया हुग्रा है।

२२४०. प्रति सं०२।पत्र स० ६४। ले० काल म० १६१४ माघ बुदी 🖒 । वे० स० ५५३। क

भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिनिपि तक्षकगढ में हुई थी। लेखक प्रशस्ति वाला म्रन्तिम पत्र नहीं है। २२४१. प्रति सं०३। पत्र स०६२। ले० काल स०१७२४ वैशाख बुदी १। वे० सं०१३१। स्र

भण्डार । विशेष—मेडता निवासी साह श्री ईसर सोगाणी के वश में में सा० राइचन्द्र की भार्या रहणादे ने प्रति-लिपि करवाकर मडलाचार्य श्रीभूषण के शिष्य रूपचन्द को कर्मक्षयार्थ निमित्त दिया ।

२२४२. प्रति सं०४। पत्र स० ७०। ले० काल स० १६६२ जेठ सुदी ७। वे० सं० ७४। घ भण्डार।

विशेष-प्रजमेर गढ मध्ये लिखित प्रजु न ुत जोसी सूरदास ।

दूसरी ग्रोर निम्न प्रशस्ति है।

हरसार मध्ये राजा श्री सावलदास राज्ये खण्डेलवालान्वय साह देव भार्या देवलदे ने ग्रन्य की प्रतिलिपि करवायी थी।

रुप २२४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १८३७ प्रांसीज सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ४६४ । इ. भण्डार ।

विशेप-लेखक पं॰ गोवद्ध नदास।

२२४४. प्रति सं०६। पत्र सं०६६। ले० काल ×। वे० स० २६३। च मण्डार।
, २२४४. प्रति सं०७। पत्र सं०५०। ले० काल ×। वे० स० ५१। अपूर्ण। छ भण्डार। विशेष—कही कही कठिन शब्दों के अर्थ दिये गये है तथा अन्त के २५ पत्र नही लिखे गये है।
२२४६. प्रति सं०६। पत्र स०६५। ले० काल स०१६७७ आपाढ सुदी २। वें० स० ७७। व्य

भण्डार ।

विशेप-साधु लक्ष्मण के लिए रचना की गई थी।

ें २२४७. प्रति सं० ६। पत्र स० ६७। ले० काल सं० १६६७ ग्रासीज मुंदी ६। वे० स० १६४४। ट भण्डार।

विशेष--- प्रामेर मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी। प्रणस्ति का ग्रण्तिम पत्र नहीं है।

२२४८. भविष्यदत्तचिरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पंत्र सं १००। ग्रा० ११३×७३ इच । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—चित्र । र० काल सं० १६३७। ले० कील सं० १६४०। पूर्ण । वेठ सं० ४४४। क भण्डार ।

२२४६. प्रति सं० २ | पत्र सं० १३४ | ले० काल × | वे० सं० ४४४ | क भण्डार | २२४०. प्रति सं० ३ | पत्र सं० १३६ | ले० काल सं० १६४० | वे० सं० ४४६ | क भण्डार | २२४१. भोज प्रवन्ध—पंडितप्रवर बह्माल | पत्र सं० २६ | ग्रा० १२५×६ इंच | भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ४७७ | क भण्डार ।

२२४२. प्रति सं०२ । पत्र सं०५२ । ले० काल स०१७११ मासोज बुदी ६ । वे० सं०४६ । श्रपूर्ण । वा भण्डार ।

२२४३. भौमचरित्र—भ० रत्नचन्द्र । पत्र स० ४३ । ग्रा० १०४५ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय— चरित्र । र० काल ४ । ले० काल स० १८४६ फाग्रुए। बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । क भण्डार ।

२२४४. मंगलकलशमहामुनिचतुष्पदी—रंगिवनयगिषा । पत्र सं० २ से २४ । म्रा० १०४४ इश्च । माषा-हिन्दी (राजस्थानी) विषय-चरित्र । र० काल सं० १७१४ श्रावण सुदी ११ । ले० काल सं० १७१७ । अपूर्ण । वे० सं० ६४४ । अ भण्डार ।

विशेष—चीतोडा ग्राम मे श्री रंगविनयगिंग के शिय्य दयामेरु मुनि के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।
राग धन्यासिरी—

एह बा मुनिवर निसदिन गाईयइ, मन सुधि ध्यान लगाइ। पुण्य पुरूषसा गुरा घुरातां छता पातक दूरि पुलाइ ।।१।। ए० ।। शातिचरित्र थकी ए चउपई कीधी निज मति सारि। मंगलकलसमूनि सतरंगा कह्या ग्रुए। म्रातम हितकारि ॥२॥ ए० ॥ गछ, सरतर युग वर गुण ग्रागलउ श्री जिनराज सरिंद। तस् पट्टधारी सुरि शिरोमग्री श्री जिनरग मूर्गिद ॥४॥ ए० ॥ तासु सीस मंगल मुनि रायनउ चरित कहेउ स सनेह। रंगविनय वाचक मनरग सु जिन पूजा फल एह ।।५।। ए०।। नगर श्रभयपुर श्रति रलिग्रामण्ड जहा जिन गृहचउसाल। मोहन मूरति वीर जिखंदनी सेवक जन सु रसाल ।।६॥ ए० ।। जिन ध्रनइवलि सोवत घणी जुणा देवल ठाम । जिहा देवी हरि सिद्ध गेह गहइ पूरइ बिछत काम ॥७॥ ए० ॥ निरमल नीर भरयउं सोहइं याएं ऊभ महेश्वरं नाम। ग्राप विधाता जींग ग्रवतरी कींघंड की मित काम ।। ।। ए॰।। '-'जिहा किए। श्रावक सगुर्ए। शिरोमेग्री धरमं मरम नउ जाए।। श्री नारायणदास सराहियइ मानइ जिल्लवर भ्राल ॥१॥ ए० ॥

- . 1 .,

1 fr 3 1 1 1

श्रासु तराइ श्राग्रह ए चउपई कीधी मन उल्लाम 1
श्रिधकउ उछउ जे इहा भाष्त्रियउ मिछा दुक्कड ताम ।।१०।। ए०।।
शासरा नायक वीर प्रसाद थी चउनी चडीय प्रमारा।
भिरास्यड सुशिस्यइ जे नर भावसु धारयइ तासु कल्यारा।।११।। ए०।।
ए सबध सरस रस गुरा भरयउ भाष्य मित श्रनुमारि।
धरमी जेरा गुरा गावरा मन रली रगविनय सुखकार।।१२।। ए०।।
एह वा मुनिवर निसि दिन गाईयड सर्व गाथा दूहा ।। ५३२।।

इति श्री मगलकलसमहामुनिचउपही सपूर्तिमगमत् लिखिता श्री सवत् १७१७ वर्षे श्री ग्रामोज सुदी विजय दसमी वासरे श्री चीतोडा महाग्रामे राजि श्री परतापसिंहजी विजयराज्ये वाचनाचार्य श्री रगविनयगिएा विष्य पण्डित दयामेरु मुनि ग्रात्मश्रेयसे ग्रुभ भवतु । कल्याएामस्तु लेखक पाठकयो ।।

२२४ महीपालचरित्र—चारित्रभूपण्। पत्र सं०४१। ग्रा०११३४४६ दख्र। भाषा-सस्कृत्। विषय-चरित्र। रूकाल स०१७३१ श्रावण् सुदी १२ (छ)। ले० काल स०१८५ फाग्रुण् सुदी १४। पूर्ण। वे०। प्रे०१६४। स्त्र भण्डार।

विशेष--जींहरीलाल गोदीका ने प्रतिलिपि करवाई।

२२४६ प्रति सं०२ । पत्र स० ४६ । ने० काल 🗶 । वे० स० ५६१ । उह भण्डार ।

२२५७ । प्रति सं८ ३ १ पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १६२८ फाल्गुरा सुदी १२ । वे० मं० २७१ । च भण्डार ।

विशेप-- होहराम वैद्य ने प्रतिलिपि की थी।

२२४=. प्रति सं० ४ । पत्र स० ४४ । ले० काल ⋉ा वे० सं० ४६ । छ अण्डार ।

२२४६. श्रति'सं ० ४ 1 पत्र सं० ४५ । ले० काल ४ । वै० स० १७० । छ भण्डार ।

२२६०. महीपालंचरित्र-भ० रत्ननिद्। पत्र सर्व ३४ । म्रा० १२×५६ इख । भाषा-मस्कृत । विषय-चरित्र । र० कालं 🗙 । ले० काल स० १८३६ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५७४ । क भण्डार ।

२२६१. महीपाल चरित्रभाषा--नथमल । पत्र सं० ६२ । आ० १३×५ इख्र । भाषा-हिन्दी गन्छ । विषय-चरित्र । र० काल सं० १६१६ । ले० काल स० १६३६ श्रावरा सुदी ३ । वै० मं० ५७५ । क भण्डार ।

विकेप-मूलकर्ता चारित्र भूपरंग ।

२२६२ प्रति सं् २ | पत्र स॰ ५६ | ले॰ काल सं॰ १६३५ । वे॰ म॰ ६६२ । छ भण्डार । विशेष---प्रारम्भ के १५ न्ये पत्र लिखे, हुये हैं।

कवि परिचय-नयमल सदासुख, कासलीयाल के शिष्य थे। इनके पितामह का नाम दुलीचन्द तथा पिता का नाम शिवचन्द था। काव्य एवं चरित्र 🔒

भण्डार ।

२२६३. प्रति सं ३ । पत्र सं ० ५७ । ले० वाल सं ० १६२६ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ६६३ । चमण्डार ।

२२६४. मेघदूत—कालिनास । पत्र सं० २१ । ग्रा० १२×५६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ६०१ । इन् भण्डार ।

२२६४. प्रति स० २ । पत्र स० २२ । ले० काल ४ । वे० सं० १६१ । ज मण्डार । वि गेप-प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है । पत्र जीर्ग है ।

२२६६. प्रति स? ३। पत्र स॰ ३१। ले॰ काल ×। अपूर्ण। वे॰ सं० १६६६। ट भण्डार। विशेष—प्रति प्राचान एव सस्कृत्र टीका सहित है।

२२६७. प्रति स०४। पत्र स०१६। ले० काल स०१६५४ वैशाख सुदी २। वे० संको २००५। ट भण्डार।

२२६८. मेचदूतटीका-पग्महंस परिल्लाजकांचार्य । पत्र स० ४८ । म्रा० १०३४४ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल सं० १५७१ भादवा सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३६९ । व्य भण्डार ।

े २२६६. यशस्तिलक चम्पू —सोमदेव सूरि। पत्र सं० २५४। ग्रा० १२६४६ इख्र । भाषा-संस्कृत गंद्य पद्य । विषय-राजा यशोधर का जीवन वर्णन । र० काल शक स० ८८१ । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० सं०० कंपर । ग्राप्त ।

विशेष—कं प्रतियो का मिश्रण है तथा बीच के कुछ पत्र नहीं हैं।

२२७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल स० १६१७ । वे० सं० १६२ । छा भण्डार । २२७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १५४० फाग्रुग् सुदी १४ । वे० स० ३५६ । छा

विशेष—करमी गोधा ने प्रतिलिधि करवाई थी। जिनदास करमी के पुत्र थे। २२७२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६३। ले० काल ×। वे० सं० ५६१। क भण्डार।

२२७३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४४६ । ले० काल सं० १७४२ मंगसिर बुदी ६ । वे० सं० ३४१ । वर् भण्डार ।

- विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है। प्रति प्राचीन है। कही कही कठिन शब्दो के ग्रर्थ दिये हुँये हैं।
ग्रंबावती मे नेमिनाथ चैत्यालय मे भ० जगत्कीत्ति के शिष्य पं० दोदराज के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थीं।
पर्रिष्ठ. प्रति सं० ६१ पत्र सं० १०२ से ११२ । ले० काल × । ग्रेपूर्ण । वे० सं० १८०८ । रूप्

२२७४. यशस्तिलकचम्पू टीका—श्रुतसागर । पत्र सं० ४०० । ग्रा० १२४६ इज्र । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १७६६ श्रासोज सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १३७ । श्रु अण्डार । विशेष—मूनकर्त्ता सोमदेव सूरि ।

२२७६. यशस्तिलकचम्पूटीका""। पत्र सं० ६४६। ग्रा० १२३×७ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वै० सं० ५८८ । क भण्डार ।

२२७७. प्रति सं० २ | पत्र स० ६१० | ले० काल × । वे० स० ५८६ । क भण्डार ।
२२७८. प्रति सं० ३ | पत्र स० ३८१ । ले० वाल × वे० सं० ५६० । क भण्डार ।
२२७६. प्रति सं० ४ | पत्र सं० ४०६ से ४५६ । ले० काल सं० १६४८ । अपूर्ण । वे० स० ५८७ ।
क भण्डार ।

२२८०. यशोधरचरित—महाकिव पुष्पदन्त । पत्र सं० ८२ । म्रा० १०४४ इख्र । भाषा-मपभ्रंश । विषय-चरित्र । र० काल ४ । ले० काल सं० १४०७ म्रासोज सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २४ । म्रा भण्डार ।

विशेष—संवत्सरेहिमन १४०७ वर्षे श्रश्विनमासे शुक्लपक्षे १० बुधवासरे तिहमन चन्द्रपुरीदुर्गेहोलीपुरविराज-माने महाराजाधिराजसमस्तराजावलीसेव्यमाएा खिलजीवश उद्योत्तक सुरित्राएामहमूदसाहिराज्ये तिहजयराज्ये श्रीकाष्ठा-संघे माथुरान्वये पुष्करगएो भट्टारक श्री देवसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री विमलसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीधर्मसेन देवा-स्तत्पट्टे भट्टारक श्री भावसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सहस्रकीर्त्त देवास्तत्पट्टे श्रीग्रुएाकीर्त्त देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यशःकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक मलयकीर्ति देवास्ति च्छिष्य महात्मा श्री हरिषेण देवास्तस्याम्नाये श्रग्नोतकान्वये मीतलगोत्रे साधु श्रीकरमसी तद्भार्यासुनखा तयोः पुत्रास्त्रयः जेष्ठः सा मैणपाल द्वितीयः सा. पूना तृतीय सा. भाभरण । साधु मैणपाल भाये द्वे चाऊ भूराही । सा. भाभरण पुत्र जगमल मोमा एतेपामच्ये इदपुस्तकं ज्ञानावरणीकर्म क्षयार्थं वाइ वधो इद यशोधरचरित्र लिखाप्य महात्मा हरिषेणादेवा, दत्त पठनार्थं । लिखित पं० विजयसिहेन ।

> २२=१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४५ । ते० काल सं० १६३६ । वे० सं० ५६८ । क्र भण्डार । विशेप—कही कही संस्कृत मे टीका भी दी हुई है ।

२२८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० से ६८ । ले० काल सं० १६३० भादी""। प्रपूर्ण । वे० सं० २८८ । च भण्डार ।

विशेप-प्रतिलिपि ग्रामेर मे राजा भारमल के शासनकाल में नेमीश्वर चैत्यालय में की गई थी। प्रशस्ति श्रपूर्ण है।

२२८३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६३। ले० काल स० १८९७ ग्रासोज सुदी २। वे० सं० २८६। च भण्डार।

२२८४. प्रति सं० ४। पत्र सं० दहा ले० वाल सं० १६७२ मगसिर सुदी १०। वे० सं० २८७। च भण्डार।

्ररूप. प्रति सं०६। पत्र सं० वह। ले॰ काल ×। वे॰ सं० २१२६। ट मण्डार। ं

२२-६. यशोधरचरित्र — भ० सकलकीति । पत्र सं० ५१ । आ० १० ई×५ इश्च । भाषा-संस्कृति । विषय-राजा यशोधर का जीवन वर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्श । वे० सं० १३४ । स्र भण्डीर ।

ः ' २२८७. प्रति सं०२ | पत्र सं०४६ । ले० काल × । वे० सं० ५६६ । क भण्डार ।

२२८८. प्रति सं० ३। पत्र सं० २ से ३७। ले० काल सं० १७६५ कार्तिक सुदी १३। अपूर्ण । वे० सं० २८४। च भण्डार।

२२८६. प्रति सं०३। पत्र स०३८। ले० काल सं०१८६२ ग्रासोज सुदी ६। वे० सं०२८५। ज

विशेष--पं नोनिषराम ने स्वपठनार्थ प्रतिसिपि की थी।

२२६०. प्रति सं० ४ । पत्र स० ५६ । ले॰ काल सं० १८५५ ग्रासोज सुदी ११ । वे॰ सं० २२ । छ

२२६१. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३८। ले॰ काल सं० १८६४ फाग्रुग् सुदी १२। वे॰ सं० २३। च भण्डार।

२२६२. प्रति सं० ६। पत्र स० ३५। ले॰ काल ×। वे॰ सं० २४। छ भण्डार। विशेष—प्रति प्राचीन है।

२२६२. प्रति सं० ७ | पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १७७४ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० २४ । छर् भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति - संवत्सर १७७५ वर्षे मिती चैत्र बुदी ६ मंगलवार । भट्टारक-शिरोरत भट्टारक श्री श्री १०८ । श्री देवेन्द्रकीत्तिजी तस्य ग्राज्ञाविषायि ग्राचार्य श्री क्षेमकीत्ति । पं० बोखचन्द ने बसई ग्राम मे प्रतिलिपि की थी— भन्त मे यह ग्रीर लिखा है—

संवत् १३५२ थेलौ भौंसे प्रतिष्ठा कराई लाडगा मे तदिस्यौ ल्हीडसाजगा उपजी।

२२६४. प्रति सं० म। पत्र सं० २ से ३८। ले० काल सं० १७८० भाषाढ बुदी २। भपूर्या। वे० स० २९। ज भण्डार।

२२६४. प्रति सं०६। पत्र स० ५५। ले० काल ४। वे० सं० ११४। व्य भण्डार।

विशेप—प्रति सचित्र है। ३७ चित्र हैं, मुगलकालीन प्रभाव है। पं० गोवर्द्ध नजी के शिष्य पं० टोस्टरमल के लिए प्रतिनिधि करवाई थी। प्रति दर्शनीय है।

२२६६. प्रति सं० १०। पत्र सं० ४४। ले० काल सं० १७६२ जेष्ठ सुदी १४। धपूर्ण । वे० सं० ४६३। व्य भण्डार।

श्र भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६०४) क भण्डार मे दो प्रतियां (वे० सं० प्रेट्६, प्रेट्७) श्रीर हैं। २२६७. यशोधरचरित्र—कायस्थ पद्मनाभ । पत्र सं० ७०। श्रो० ११×४६ देखा। भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र। रं० काल ×। ले० काल सं० १८३२ पीष बुदी १२। वे० सं० प्रेट्२। के भण्डार। २२६ में. प्रंति सं०२ । प्रति सं०६ ६ । ले० काल स०१५६५ सावन सुदी १३ । वे० स०१५२ । ख

विशेष—यह ग्रन्थ पौमसिरी से ग्राचार्य भुवनकीत्ति की शिप्या ग्रायिका मुक्तिश्री के लिए दयासुन्दर से लिखवाया तथा वैशाख सुदी १० स० १७=५ को मंडलाचार्य श्री ग्रनन्तकीत्तिजी के लिए नाथूरामजी ने समर्पित किया।

> २२६६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५४। ले० काल 🔀 । वे० सं० ५४। घ भण्डार । विशेष---प्रति नवीन है ।

, २३००. प्रति सं० ४। पत्र स० ६५। ले० काल स० १६६७। वै० सं० ६०६। रू भण्डार। विशेष—मानसिंह महाराजा के शासनकाल मे ग्रामेर मे प्रतिलिपि हुई।

भण्डार।

विशेष- सेवाई जयपुर में पं व वर्षतराम ने नेमिनांध चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

२३०२. प्रति सं० ६। पत्र स० ७६। ले० काल स० भादवा बुदी १० १ वे० सं० ६६। ज्य भण्डार।

े विंशेष में टीइरमलेजी के पंठनार्थ पाँढे गोरधनदास ने प्रतिलिपि कराई थी। महामुनि गुराकीर्ति के उपदेश से ग्रन्थकार ने ग्रन्थ की रचना की थी।

ं ' र्वेट्वें: यशोधर्विरिश्रे—वीदिरार्जसूरि । पत्र सं ७ र से १२ । ग्रा० ११४५ इख । मापा-सस्कृत । विर्वय-वरित्रें । रंं क्विंस् रें विर्व कील सं ० १६३६ । ग्रिपूर्ण । वेठ सं ० व्यप्त । श्रा भण्डार ।

२३०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल १८२४ । वे० स० ४६४ । क भण्डार । ''
२३०४. प्रति सं० ३ । पत्र से० १ से १६ । ले० काल स० १४१८ । प्रमूर्ती । वे० सं० ६३ । घ
पीर्डार । ''

विशेष--लेखक प्रशस्ति म्रपूर्ण है।

२३८६: प्रीति सं ८ ४। पत्र सं ७ २२ । ति० कार्ति 🔀 । वे० स० २१३= । ट भण्डार ।

धिं। विशेष—प्रयमि पद्म नवीन लिखा गया है।

२३०७. यशोधरचरित्र-पूर्यादेव । पत्र सं० ३ से १२० । खाँ० १७४४ है इंड । धाषा-संस्कृत । विषय-चिरित्र । र० काल ४ । लें० काल ४ । अपूर्ण । जीर्ण ॥ वे० स० २८१ । च भण्डार ।

२३०८. यशोधरचरित्र-वासवसेन । पत्र सं० ७१ । आ० १२×४६ इख । भाषा-संस्कृतः। विषय-चरित्र । र० काल सं० १४६५ माघ सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । आ भण्डार ।

, , , विशेप---प्रवस्ति-

संवत् १५६५ वर्षे माधमासे कृष्णापते द्वादशीदिवसे वृहस्पितवासरे मूलनक्षत्रे राष श्रीमालदे राज्यप्रवर्तन् माने रावत श्री ज़ेतसी प्रातापे साखीण नाम नगरे श्रीशांतिनाष जिराचैत्यालये श्रीमूलसधैबलात्कारण्णे सरस्वतीगन्हे नृद्याम्नाये श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये, भट्टार्क श्रीपद्मनंदि, देवास्तुत्पट्टे भ० श्री गुभुचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिर्णचन्द्रदेवास्त हाट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्माये खंडेलवालान्वये दोशीगोत्रे सा. तिहुणा तद्भार्या तोली तयोपुत्रास्त्रय प्रथम मान्न ईसर द्वितीय टोहा तृतीय सा. उल्हा ईसरभार्या म्रजपिशी तयो. पुत्रा चत्वार प्र० सा० लोहट द्वितीय सा भूणा तृतीय सा उधर चचुर्थ सा. देवा सा. लोहट भार्या लिलतादे तयो पुत्रा पंच प्रथम धर्मदास द्वितीय सा. धीरा तृतीय लूणा चतुर्थ होला पंचम राजा सा. भूणा भार्या भूणामिरि तयोपुत्र नगराज साह उधर भार्या उधिसरी तयो. पुत्रो द्वी प्रथम लाला द्वितीय खरहथ— सा० देवा भार्या द्योसिरि तयो पुत्र धनिउ वि० धर्मदास भार्या धर्मश्री चिरजी धीरा भार्या रमायी सा टोहा भार्ये द्वे वृहद्भीला लघ्वी सुहागदे तत्पुत्रदान पुण्य शीलवान सा. नाल्हा तद्भार्या नयराश्री सा० उल्हा भार्या वाली तयो. पुत्र सा डालू तद्भार्या डलिसिर एतेषामध्ये चतुविधदान वितरणाशक्तेनित्रपंचाशतश्रावकर्सात्क्रया प्रति-पालग्य सावधानेन जिरापूजापुरदरेण सद्गुहपदेश निर्वाहकेन संघपित साह श्री टोहानामधेयेन इद शास्त्र लिखाप्य उत्तम-पात्राय घटापित ज्ञानावर्णी कर्मक्षय निमित्त ।

२३०६. प्रति सं०२। पत्र सं०४ से ५४। ले० काल × । प्रपूर्ण। वै० सं०२०७३। त्र्य भण्डार। २३१०. प्रति सं०३। पत्र सं०३४। ले० काल मं० १६६० वैशाख बुदी १३। वै० सं०५६३। क्र

विशेष--मिश्र केशव ने प्रतिलिधि की थी।

२३११. यशोधर्चरित्र " " | पत्र सं० १७ से ४४ । आ० ११×५३ इख्न । भाषा-संस्कृत् । विषयू-

२३१२. प्रति सं० २ । पत्र सं७ १५ । ले० काल × । वे० सं० ६१३ । ङ भुण्डार ।

२३१३. यशोधरचरित्र—गारवदास । पत्र सं० ४३। म्रा० ११४५ इझ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल स० १५५१ भादवा सुदी १२ । ले० काल सं० १६३० मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ४६६ ।

विशेष-कृति कफ़्रोतपुर का रहने वाला था ऐसा लिखा है।

२३१४. यशोधरचरित्रभाषा—खुशालचंद्। पत्र सं० ३७। आ० १२×५३ इख्ना आपा-हिन्दी पद्य। विषय-चरित्र। र० काल सं० १७८१ कार्तिक सुदी ६। ले० काल स० १७६६ म्रासोज सुदी १। पूर्ण । वे० सं० १०४६। स्त्र भण्डार।

विशेष---प्रशस्ति-

मिती भासीज मासे शुक्कपक्षे तिथि पडिवा वार सनिवासरे सं० १७६६ छिनवा । श्रे० कुशलोजी तत् विष्येन लिपिकृतं पं० खुस्यालचंद-श्री , धृतिविल्वोलजी की देहुरी, पूर्ण कर्तव्यं ,।

> दिवालो ज़ित्द्रांज को देखस,दिवालो जाय । निसि दिवालो वलाइये कर्म दिवालो शाय ।।

्त्री रस्तु । नल्यासम्स्तु । मृहार्ष्ष्ट्रपु र मध्ये परिपूर्सा ।

२३१४. यशोधरचरित्र—पत्नालाल । पत्र सं० ११२। ग्रा० १३४४ इस । भाषा-हिन्दी गंदा। विषय-चरित्र । र॰ काल सं० १६३२ सावन बुदी ऽऽ । ले॰ काल ४ । पूर्ण । वे॰ स॰ ६०० । क भण्डार ।

विशेष--पुष्पदत कृत यशोधर चरित्र का हिन्दी अनुवाद है।

२३१६. प्रति सं०२। प्रत्र सं०७४। ले॰ काल 🗴। वे० सं० ६१२। रू भण्डार।

२३१७. प्रति सं० ३ | पत्र सं० ८२ । ले० काल ४ । वे० स० १६४ । छ भण्डार ।

३२१८. यशोधरचरित्र ""। पत्र सं० २ से ६३। ग्रा० ६३×४३ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ६११ । ड भण्डार ।

२३१६. यशोधरचरित्र--श्रुतसागर । पत्र स० ६१ । ग्रा० १२×५६ इक्क । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १४६४ फाग्रुए। सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ५६४ । क भण्डार ।

५३००. यशोधरचरित्र—भट्टारक ज्ञानकीत्ति । पत्र मं० ६३ । श्रा० १२४४ इख । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल सं० १६४६ । ले० काल सं० १६६० ग्रासोज बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २६४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—सवत् १६६० वर्षे ब्रासौजमासे कृष्ण्यक्षे नवम्यातिथौ सोमवासरे ब्रादिनाथचैत्यालये मोजमाबाद वास्तव्ये राजाधिराज महाराजाश्रीमामसिंघराज्यप्रवर्तते श्रीमूलसंघेवलात्कारगर्ग नंद्याम्नायेसरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये तस्तत्वट्टे भट्टारक श्रीपद्मनिंदिदेवातत्वट्टे भट्टार श्री ग्रुभचन्द्रदेवा तत्वट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तत्वट्टे श्रीचन्द्रकीति देवास्तदाम्नाये खंडेलवालये पान्वाङ्यागोत्रे साह हीरा तस्य भार्या हरषमदे । तयो पुत्राचन्दार । प्रथम पुत्र साह नातू तस्यभार्या नौलादे पुत्र त्रयः प्रथमपुत्र साह नादु तस्य भार्या नायकदे तयोपुत्रा द्वौ प्रथम पुत्र चिरंजीव गीरधर । द्वितीयपुत्र साह वोहिथ तस्य भार्या वहुरगदे तस्य पुत्रा त्रय प्रथमपुत्र चिरजी स्थिरपाल द्वितीय पुत्र जेसा । तृतीयपुत्र देहु । तृतीय पूरण तस्यभार्या कपूरदे । साह हीरा । द्वितीयपुत्र चोहथ तस्यभार्या चादणदे । तस्यपुत्रा द्वौ प्रथमपुत्र साह गुजर तस्यभार्या गारवदे । द्वितीयपुत्र चिरजी छाजू । हीरा तृतीयपुत्र साह पचाइण । हीरा चतुर्थपुत्र साह नराइण तस्य भार्या नैएवि तस्यपुत्र साह दुरगा एतेपामध्ये वोहिथ तेनेदंशास्त्र यशोधरचिरत्रकर्मक्षयिनिमित्तं भट्टारक श्रीचन्द्रकीत्तितर्शष्य स्थार्य लालचद योग्य घटापित ।

२३२१. प्रति सं०२। पत्र सं०४६। ले० काल सं०१५७७। वे० सं०६०६। इक्त मण्डार।

२३२२. प्रति सं० ३ | पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६५१ मगसिर बुदी २ | वे० सं० ६१० । क

विशेष—साह छीतरमल के पठनार्थ जोशी जगन्नाथ ने मौजमांबाद में प्रतिलिपि की थी'। प्रेशी कि कि अपहार में २ प्रतिर्या (वे० सं० ६०७, ६०६) और है कि कि

२३२३. यशोधरचरित्रटिष्पंग्-प्रभाचंद् । पेत्र 'सं '१६'। ग्रां १०३×४६ इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १४'=४ पीवं बुदीं ११'। पूर्ण । वें कें सं ०' वें ४ मण्डीर । विशेष--पुष्पदत कृत यशोधर चरित्र का संस्कृत टिप्पण है। वादशाह वावर के शासनकाल में प्रतिलिपि की गई थी।

२३२४ रघुवंशमहाकाव्य—महाकवि कालिदास । पत्र सं० १४४ । म्रा० १२६ ४५ देखा । मापा-पस्कृत । विषय-काव्य । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । म्रपूर्ण । वे० स० ६५४ । स्त्र भण्डार ।

विजेष—पत्र सं० ६२ से १०५ तक नहीं है। पंचम सर्ग तक कठिन शब्दों के ग्रर्थ संस्कृत में दिये हुये हैं। २३२४. प्रति सं० २। पत्र स० ७०। ले० काल सं० १६२४ काती बुदी ३। वे० सं० ६४३। अप

विशेष-कडी ग्राम मे पाड्या देवराम के पठनार्थ जैतसी ने प्रतिलिपि की थी।

२३२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १८४४ । वे० सं० २०६६ । श्र भण्डार ।

२३२७. प्रति स० ४। पत्र स० १११। ले० काल सं० १६८० भादवा सुदी ८। वे० सं० १५४। ख

२३२८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३२ । ले॰ काल सं० १७८६ मंगसर सुदी ११ । वे॰ सं० १४४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—हाशिये पर चारो ग्रोर शब्दार्थ दिये हुए हैं। प्रति मारोठ मे पं० ग्रनन्तकीर्त्त के शिष्य उदयराम ने स्वपठनार्थ लिखी थी।

२३२६. प्रति सं ६ । पत्र स० ६६ से १३४। ले० काल सं० १६६६ कार्तिक बुदी ६। प्रपूर्ण। वे० स० २४२। छ् भण्डार।

२३२०. प्रति सं० ७। पत्र सं० ७४। ले० काल सं० १८२८ पौष बुदी ४। वे० सं० २४४। छ्य भण्डार।

२५२१ प्रति सं० म । पत्र सं० ६ से १७३ । ले० काल सं० १७७३ मगिसर सुदी प्रे। मंपूर्ण । वे० सं० १९६४ । ट भण्डार ।

विशेप-प्रति सस्कृत टीका सिहत है तथा टीकाकार उदयहर्ष हैं।

इनके अतिरिक्त आ भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० १०२८, १२६४, १२६४, १८७४, २०६४) ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १४५ [क])। इस भण्डार मे ७ प्रतिया (वे० सं० ६१६, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५)। च भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० २८६, २६०) छ मीर द भण्डार में एक एक प्रतिया (वे० सं० २६३, १६६६) और है।

२३३२ रघुवशटीका—मिल्लिनाथसूरि । पत्र स० २३२ । मा० १२×५ देखा । भाषा-संस्कृत । विषय-कान्य । र० काल × । ते० काल × । वे० स० २१२ । ज भण्डार ।

९३३३ प्रति सं०२। यत्र स०१८ से १४१। ले० काल ⋉। प्रपूर्शी वे० म०३६८। व्या भण्डार।

२३३४. रघुवंशटीका—पं० सुमिति विजयगणि। पत्र स० ६० से १७६ म्रा० १२४५३ इख । मापा— सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल ४ । ले० काल ४ । म्रपूर्ण । वे० स० ६२७ ।

विशेप--टोकाकाल-

निविग्रहरस शिश सवत्सरे फाल्गुनिसर्तैकादरेया तिथी सपूर्णा श्रीरस्तु मगल सदा कर्तुः टीकाया: । विक्रम-पुर मे टीका की गयी थी ।

२३३४. प्रति सं०२। पत्र सं० ५४ से १४७। ले० काल स० १८४० चैत्र सुदी ७। ग्रपूर्ण। वे० सं० ६२८। इ. भण्डार।

विशेष-गुमानीराम के शिष्य प० शम्भूराम ने ज्ञानीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। विशेष-ह भण्डार में एक प्रति (वें सं॰ ६२६) श्रीर है।

२३६६. रेघुवंशांटीकी — सेमेथ सुनेद्र । पत्र सि ६। ग्री० रे०२×५ इखे । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रे० केल सि १६६२ । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० सि १८७५ । ग्रि भण्डार ।

विशेप—सगयसुन्दर कृत रघुवश की टीका द्वयार्थक है। एक ग्रर्थ तो वही है जो काव्य का है तथा दूसरा 'श्रर्थ जैनेहं पृकीण से 'है ।

२३३७. प्रति सं०२। पत्र स० ५ से ३७। ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं०२०७२। ट भण्डार । २२५६८. रें घुवंशटीका—गुरावित्तयगिरा। पत्र स० १३७। ग्रा० १२×५३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । वे० स० ८६ । व्य भण्डार ।

विशेष—खरंतरगच्छीय वाचनाचार्थ प्रमोदमाणिक्यगिण के शिष्य सस्यवनुख्य श्रीमत् जयसोमगिण के शिष्य गुण्विनयगिण ने प्रतिलिपि की थी।

२३३६. प्रति सं० २ । पत्र स० ६६ । ले० काल सं० १८६५ । वे० सं० ६२६ । ह भण्डार । इनके प्रतिरिक्त स्त्र भण्डार में दो प्रतिया (वे० स० १३५०, १०८१) ग्रीर हैं । केवल व्य भण्डार की प्रति ही ग्रुगुविनयगिंगु की टीका है ।

२३४०. रामकुष्णकाठय-दैवज्ञ पं० सूर्य । पत्र स० ३०। आ० १०४४ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६०४ । श्र भण्डार ।

२३४१ रामचिन्द्रका—केशवदास । पत्र सर्० १७६ । आर ६×४३ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-काव्य । रुकाल × । लेर्जकाल सं० १७६६ श्रावंख बुंदी १५ । पूंर्ण । वेर्जसर्० ६५५ । छ भण्डार ।

२३४२ वरांगचरित्र—भ० वर्द्धमानदेव। पत्र स० ४६। श्रा० १२×५ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-राजा वराग का जीवन चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५६४ कींतिक संदी १० । पूर्ण । वे० स० ३२१ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-प्रशस्त---

सं० १५६४ वर्षे शाके १४५६ कार्त्तिगमासे शुक्लपक्षे र्वशमीदिवसे शनैश्वरवासरे घनिष्टानक्षत्रे गंडयोगे श्रावा नाम महानगरे राव श्री सूर्वशेणि राज्यप्रवर्त्तमाने कवर श्री पूरणंगल्लप्रतापे श्री शान्तिनाथ जिनचैत्यालये श्रीमूल- सघे वलात्कारगएो सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपदानिद देवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तिच्छव्य भ० श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नायेखण्डेलवालान्वये शावडागोत्रे संघाधिपति साह श्री रएामल तद्भार्या रेएादे तयो पुत्रास्त्रयः प्रथम स. श्री खीवा तद्भार्ये हें श्रथमा सं० खेमलदे दितीयो सुहागदे तत्पुत्रास्त्रय प्रथम चि० सधारए। द्वि० श्रीकरए। तृतीय धर्मदास । द्वितीय सं० वेएा। तद्भार्ये हे प्रथमा विमलादे दिं नौलादे । तृतीय स. हं गरेसी तद्भार्या दां खेलेवे एतेसा मध्ये स. विमलादे इदं शास्त्रं लिखाप्य उत्तमपात्राय दत्तं जीनावर्णी कंमेक्षय निमित्तम् ।

२३४३. प्रति सं०२'।'पत्र'सं०' ६५ । ले० काल सं० १६६३ भादवी ख़ुदी १४ । वे० सं० ६६९ । रू भण्डार ।

र्श्विप्त प्रति सं०३। पत्र स० ७४। ले० काल सं० १८६४ मंगसिर सुदी ८। वै० सं०३३०। च

२२४४. प्रति सं० ४। पत्रं स० ५८। ले० काल सं० १८३६ फाग्रुण सुदी १। वे० सं० ४६। छ

ंविशेष--जयपुर के नेमिनाथ चैतेयॉर्लय मे^{ल्}सतीषराम के शिंव्य वर्स्तराम ने प्रैंतिलिपि की थी।

रं३४६. प्रीति सं० ४। पंत्र सं० ७६ । ले० काल स० १८४७ वैशाख सुदी १। वे० सं० ४७। छ

विशेष—सार्गीवती ('सांगानेर) मे गोंधी के चैर्त्यालय में पं क सवाईराम के शिष्य नीनिधराम ने प्रति-लिपि की थी।

२२४७. प्रति सं०६। पत्र सं० ३८। ले० काल सं०१८३१ स्राषाढ सुदी ३। वै० सं०४६। त्य भण्डार।

विशेष-जयपुर मे चद्रप्रभ चैत्याल्य मे पं । रामचद ने प्रतिलिपि की थी ।

२३ँ४८. प्रति सं० ७'। पत्र सं० ३० से '५६ । ले० कॉल 🗴 । श्रवूर्र्स । वि० सं० २०५७ । ट भण्डार । विरोष—ं वर्वे सर्ग से '१'वें सर्ग तक है ।

रेरेश्वेर. वरांगचरित्र—संतृ हिरि। पत्र सं० ३ से १० । ग्रा० १२३×५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १७१ । खंभण्डार ।

विशेष-प्रारम्भ के २ पत्र नहीं है।

२३४०. वर्द्धमानकाव्य—मुनि श्री पद्मनंदि । पत्र सं० ५० । ग्रा० १०×४ इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १५१८ । पूर्ण । वे० सं० ३६९ । व्य भण्डार ।

इति श्रो वर्द्धमान कथावतारे जिनरात्रिव्रतमहात्म्यप्रदर्शके मुनि श्री पद्मनदि विर्चिते सुखनामा दिने श्री वर्द्धमानिर्वाणामन नाम द्वितीय परिच्छेद.

२३४१. वर्द्धमानकथा—जयिमत्रहल । पत्र सं० ७३ । ग्रा० ६३×५३ डख । भाषा-ग्रपग्र श । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल स० १६६५ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० १५३ । ग्रा भण्डार ।

विशेप---प्रशस्त-

स० १६५५ वरपे वैशाख सुदी ३ शुक्रशरे मृगसीरनिखने मूलसघे श्रीकुदकुंदाचार्यान्वये तत्तृ महारक श्री गुराभद्र तत्तृ भट्टारक श्रीमिल्लभूपर्या तत्तृ भट्टारक श्रीप्रभाचद तत्तृ भट्टारक श्रीचंदर्भीतः विरिचत श्री नेमदत्त श्राचार्य श्रवावतीगढ महादुर्गातः श्रोनेमिनाथ चैत्यालये कुछाहावस महाराजाधिराज महाराजा श्री मानस्यघराज्ये श्रज- मेरागोने सा. धीरा तद्भार्याधारादे तत्पुत्र चत्वार प्रथम पुत्र " " " । (श्रपूर्ण)

२३४२ प्रति सं०२ । पत्र स० ५२ । ले० काल × । वे० सं० १६५३ । ट भण्डार ।

२३४३. वर्द्धमानचरित्र" ""। पत्र स० १६८ से २१२ । म्रा० १०४४ई इख । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । म्रपूर्ण । वे० सं• ६८६ । स्त्र भण्डार ।

२३४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल 🗙 । प्रपूर्ण । वे० सं० १६७४ । स्त्र भण्डार ।

२३४४. वर्द्धमानचिरित्र— केशरीसिंह। पत्र सं० १८४। ग्रा० ११४४ इख्र । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र। र० काल सं० १८६१ ले० काल स० १८६४ सावन वृदी २। पूर्ण । वे० स० ६४८ । क भण्डार ।

विशेष-सदासुखजी गोधा ने प्रतिलिपि की थी।

२३४६ विक्रमचरित्र—वाचनाचार्य श्रभयसोम । पत्र स० ४ से ५ । ग्रा० १०×४६ इख्र । भाषा— हिन्दी । विषय-विक्रमादित्य का जीवन । र० काल सं० १७२४ । ले० काल स० १७८१ श्रावरण बुदी ४ । प्रपूर्ण । वे० सं० १३६ । व्य भण्डार ।

विशेष-उदयपुर नगर में शिष्य रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२३४७. विद्ग्धमुखमंडन—बौद्धाचार्य धर्मदास । पत्र सं० २० । म्रा• १०३४४ इझ । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल ४ । ले० काल स० १८५१ । पूर्ण । वे० स० ६२७ । म्र भण्डार ।

> २३४८. प्रति सं०२। पत्र स०१८। ले० काल ×। वे० सं०१०३३। स्त्र भण्डार। २३४६. प्रति स०३। पत्र स०२७। ले० काल स०१८२२। वे० स०६५७। क भण्डार। विशेष--जयपुर मे महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

> २३६०. प्रति सं० ४। पत्र सं० २४। ले॰ काल सं० १७२४। वे॰ स॰ ६४८। क भण्डार। विशेष—संस्कृत मे टीका भी दी है।

२३६१ प्रति स० ४ | पत्र स० २६'। ले॰ काल × । वे॰ सं॰ ११३ । छ भण्डार । विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

प्रथम व म्रन्तिम पत्र पर गोल मोहर है जिस पर लिखा है 'श्री जिन सेवक साह वादिराज जाति सोगार्गा पीमा सुत । काव्य एवं चरित्र 🍴

२३६२. प्रति सं ६ । पत्र सं ० ४७ । ले० काल स १९१५ चैत्र सुदी ७ । वे० सं० ११५ । छ भण्डार ।

विशेष—गोधो के मन्दिर मे प्रतिलिपि हुई थी।

२३६३. प्रति सं०७। पत्र सं०३३ । ले० काल स०१८८९ पौष बुदी ३। वे० सं०२७८। ज भण्डार।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है।

२३६४ प्रति सं ०८। पत्र स० ३०। ले० काल सं०१७५६ मंगसिर बुदी ८। वे० सं०३०१। वे भण्डार।

विगेष--प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२३६४ प्रति स०६। पत्र स०३८। ले० काल सं०१७४३ कार्तिक बुदी २। वे० स०४०७। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। टीकाकार जिनकुशलसूरि के शिष्य क्षेमचन्द्र गिए। हैं।
इनके ग्रतिरिक्त छ भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ सं॰ ११३, १४६) आ भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं॰ १०७) ग्रीर है।

२३६६. विद्ग्धमुखमंडनटीका—विनयरतः । पत्र स० ३३ । ग्रा० १०६४४३ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । टीकाकाल सं० १५३५ । ले० काल सं० १६८३ ग्रासोज सुदी १० । वे० स० ११३ । छ भण्डार ।

२३६७. विद्वारकाव्य—कालिदास । पत्र सं०२। ग्रा०१२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-वाव्य । र० काल × । ले० काल सं०१८४६ विर्व सं०१८५३ । श्रा भण्डार ।

विशेष-जयपुर में चण्द्रप्रभ चैत्यालय मे भट्टारक सुरेन्द्रकीित्त के समय मे लिखी गई थी।

२३६८. शंबुप्रसुम्तप्रवंध—समयप्तुम्द्रंगिणि । पत्र सं० २ से २१ । आ० १०३८४६ इच । भाषा— हिन्दी । विषय—श्रीकृष्ण, शबुकुमार एवं प्रद्युम्न का जीवन । र० काल ४ । ले० काल सं० १६४६ । अपूर्ण । वे० स ७०१ । इक्ष भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

संवत् १६५६ वर्षे विजयदशस्या श्रीस्तंभतीर्थे श्रीवृहरखरतरगच्छाधीश्वर श्री दिल्लीपित पातिमाह जलालद्दीन श्रकवरसाहिप्रदत्तयुगप्रधानगदधारक श्री ६ जिनवन्द्रसूरि सूरश्वरागा (सूरीश्वरागा) साहिसमक्ष्महस्तस्थापिता श्रावार्यश्रीजिनसिंहसूरियुगरिकरागा (सूरीश्वरागा) शिष्य मुख्य पंडित सकलचन्द्रगिग तच्छिष्य वा० समयमुन्दरगिगाना भोजैसलमेह वास्तन्त्रे नानात्विय शास्त्रविचाररसिंक लो० सिवरीज समस्यर्थनयां कृत्ते. श्री शवप्रदान्तप्रवन्त्रे प्रथमः खडः ।

२३६६. शान्तिनाथचरित्र—श्रजितप्रभसूरि । पत्र स० १६६ । ग्रा० ६३×४३ दश्च । भाषा-मन्तृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १०२४ । श्र्य भण्टार ।

विशेप--१६६ से श्रागे के पत्र नहीं है ।

२३७०. प्रति सं०२। पत्र स०३ से १०४। ले० काल गं० १७१४ पीप बुदी १४। प्रपूर्ण। वे० स०१६२०। ट भण्डार।

२३७१. शान्तिनाथचरित्र-भट्टारक सकलकीर्त्ति । पत्र सं० १६४ । ग्रा० १३४४३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल ४ । ले० काल स० १७८६ चैत्र सूदी ४ । ग्रपूर्ण । वे० स० १२६ । स्त्र भण्डार ।

२२७२. प्रति सं० २। पत्र स० २२६। ले० काल ×। वे० मं० ७०२। द्व भण्डार। विशेष—तीन प्रकार की लिपिया है।

२३७३ प्रति सं०३। पत्र सं०२२१। ले० काल सं•१८६३ माह बुदी १। वे० सं० ७०३। स भण्डार।

विशेष—लिखित गुरजीरामलाल सवाई जयनगरमध्ये वासी नेवटा का हाल मंघही मालावता के मन्दिर लिखी । लिखाप्यतं चपारामजी छावडा सवाई जयपुर मध्ये ।

२३७४. प्रति सं० ४। पत्र सं० १८७। ले॰ काल स॰ १८६४ फाग्रुग्। बुदी १२। वे॰ स॰ ३४१। च भण्डार।

विशेष--- यह प्रति श्योजीरामजी दीवान के मन्दिर की है ।

२३७४. प्रति सं० ४। पत्र स० १४६। ले० काल सं० १७६६ कार्तिक सुदी ११। वे० स० १४। छ

विशेष--सं• १८०३ जेठ बुदी ६ के दिन उदयराम ने इस प्रति का संशोधन किया था !

२३७६ प्रति सं०६। पत्र स०१७ से १२७। ले० काल सं० १८८८ वैशास्त्र सुदी २। सपूर्ण। वे० स०४६४। व्या भण्डार।

विशेप--महात्मा पन्नालाल ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

इनके अतिरिक्त छ, व्य तथा ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० मं० १३, ४८६, १६२६) श्रीर है।

२३७७. शालिभद्रचौपई—मतिसागर। पत्र सं० । श्रा० १०ई×४ई इझ । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल सं० १६७८ श्रासीज बुदी ६ । ले० काल × । श्रपूर्ण । वे० सं० २१५४ । श्र भण्डार ।

विशेष---प्रथम पत्र ग्राधा फटा हुन्ना है।

२३७८. प्रति सं० २ । पत्र स० २४ । ले० काल × । वे० स० ३६२ । व्य भण्डार ।

२३७६. शालिभद्र चौपई । पत्र सं० ४ । ग्रा० ८×६ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० २३० ।

विशेष—रचना मे ६० पद्य है तथा अशुद्ध लिखी हुई है। अन्तिम पाठ नहीं है।

प्रारम्भ---

श्री सासगा नायक सुमरिये वर्द्ध मान जिनचंद। श्रलीइ विघन दुरोहरं श्रापे प्रमानंद ॥१॥

२३८०. शिशुपालवध—महाकवि माघ । पत्र सं० ४६ । आ० ११ई×५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६३ । श्र भण्डार ।

२३८१. प्रति सं०२ । पत्र सं०६३ । ले० काल 🗙 । वे० सं०६३४ । घ्य भण्डार ।

विशेष--प० लक्ष्मीचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

२३८२. शिशुपात्तवध टीका--मिल्लिनाथसूरि । पत्र सं०१४४ । म्रा०११ई४४३ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं०६३२ । स्र भण्डार ।

विशेष—६ सर्ग है। प्रत्येक सर्ग की पत्र संख्या ग्रलग ग्रलग है।

२३८३. प्रति सं०२। पत्र सं०१७। ले० काल ×। वे० सं०२७६। ज भण्डार । विशेष—केवल प्रथम सर्ग तक है।

२३८४. प्रति सं०३ | पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ३३७ । ज भण्डार ।

२३८४. प्रति सं०४ । पत्र सं०६ से १४४ । ते० काल सं०१७६६ । अपूर्ण । वे० म०१४५ । स्व भण्डार ।

२२=६. श्रवग्रभूपग्-नरहिर्मेट्ट । पत्र सं० २४ । ग्रा० १२ है ×५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४२ । श्र भण्डार ।

विशेष-विदग्धमुखमडन की व्याख्या है।

प्रारम्भ-ग्रो नमो पार्श्वनाथाय ।

हेरवक्व किमंव किम् तव कारता तस्य चाद्रीकला
कृत्यं किं शरजन्मनोक्त मन पादंतारू रं स्यादिति तात.।
कुप्पति गृह्यतामिति विहायाहर्जु मन्या कला—
माकाशे जयति प्रसारित कर स्तंवेरमयामणी ॥१॥
यः साहित्यसुर्घेदुर्नरहरि रल्लालनदन ।
कुरुते सैशवण भूषणव्या विदग्धमुखमंडणव्याख्या ॥२॥
प्रकाराः संतु वहवो विदग्धमुखमंडने।
तथापि मत्कृतं भावि मुख्यं भुवण—भूषणं ॥३॥

अन्तिम पुरिवका-इति श्री नरहरभट्टविरचिते श्रवराभूपरो चतुर्थ. परिच्छेदः मंपूर्गा।

1

२३८७. श्रीपालचरित्र-नि नेमिद्त्त । पत्र सं० ६८ । ग्रा० १०३४५ इंन । भाषा-मंग्यून । विषय-चरित्र । र० काल सं० १५८५ । ले० काल सं० १६४३ । पूर्ण । वे० स० २१० । ग्रा भण्डार ।

विगेप-लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है। प्रशस्ति-

संवत् १६४३ वर्ष श्रापाढ सुदी ५ शनिवासरे श्रीमूलसघे नंद्याम्नाये वलात्कारगणे मरम्यतीगन्दे श्रीपुंद-कुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपदानदिदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवातत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द्र-देवा मडलाचार्य श्री रत्नकीत्तिदेवा तत्शिष्य म० भुवनकीत्तिदेवा तत्विष्य म धर्मकीत्तिदेवा द्वितीय विष्यमदलाचार्य विशालकीत्तिदेवा तत्शिष्य मडलाचार्य लक्ष्मीचंददेवा तदन्वये मं० सहसर्कात्तिदेवा तदन्यये मदलाचार्य नेमचद नदाम्नाय पाडलवालान्वये रैवासा वास्तव्ये दगडा गोत्रे सा० लीला त " """।

२३८८ प्रति सं०२। पत्र सं०६६। ले० काल सं०१८४६। वे० गं०६६६। क भण्डार।
२३८६. प्रति सं०३। पत्र स० ४२। ले० काल सं०१८४६ ज्येष्ठ सुदी ३। ने० ग०१६२। सा

विशेष—मालवदेश के पूर्णासा नगर मे म्रादिनाथ चैत्यालय मे गन्य रचना की गई थी। विजयराम ने तक्षकपुर (टोडारायसिंह) में भ्रपने पुत्र चि॰ टेकचन्द के स्वाध्यायार्थ इसकी तीन दिन मे प्रतिलिपि की थी।

यह प्रति पं सुखलाल की है । हरिदुर्ग मे यह ग्रन्य मिला ऐसा उल्नेस है ।

२३६०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३६। ले० काल सं० १८६५ ग्रामोज मुदी ४। वे० म० १६३। ख

भण्डार ।

विशेष-केकडी मे प्रतिलिपि हुई थी।

२३६१. प्रति सं० ४। पत्र स० ४२ से ७६। ले० काल सं० १७६१ सावन सुदी ४। वे० मं०

इ भण्डार ।

विशेष--वृन्दावती मे राय बुधिसह के शासनकाल मे ग्रन्य की प्रतिलिपि हुई थी।

२३६२. प्रति सं ६ । पत्र सं० ६० । ले० काल स० १८३१ फाग्रुण बुदी १२। वे० मं० ३८ । छ

भण्डार ।

विशेष-सवाई जयपुर मे श्वेताम्बर पहित मुक्तिविजय ने प्रतिलिपि की थी।

२३६३. प्रति सं०७। पत्र सं० ५३। ले० काल स० १८२७ चैत्र मुदी १४ । वे० म० ३२७। ज

भण्डार ।

विशेष-सवाई जयपुर मे पं० ऋषमदास ने कर्मक्षयार्थ प्रतिलिपि की थी।

२३६४. प्रति सं द = । पत्र सं ० ४४। ले० काल सं ० १८२६ माह सुदी = । वे० सं ० ६। व्य मण्डार ।

विशेष--पं० रामचन्दजी के शिष्य सेवकराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

२३६४. प्रति सं० ६ । पत्र स॰ ५८ । ले॰ काल सं० १६४४ भादवा सुदी ५ । वे॰ स॰ २१३६ । ट

HOEIL !

भवद्वार !

विशेष—इनके ग्रतिरिक्त आ मण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० २३३, २५६) इन, छ तथा व्य भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं॰ ७२१, ३६ तथा ५५) ग्रीर हैं।

२३६६. श्रीपालचरित्र—भ० सकलकीत्ति । पत्र सं० ५६ । ग्रा० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल शक सं० १६५३ । पूर्ण । वे० सं० १०१४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-- ब्रह्मचारी माण्कचंद ने प्रतिलिपि की थी।

२३६७. प्रति सं०२। पत्र सं०३२८। ले॰ काल सं०१७६५ फाग्रुन बुदी १२। वे॰ स॰ ४०। छ्र भण्डार।

विशेष—ताररापुपुर मे मंडलाचार्य रत्नकीत्ति के प्रशिष्य विष्पुरूप ने प्रतिलिपि की थी।

२३६८. प्रति सं० ३। पत्र सं० २८। ले० काल ×। वै० सं० १६२। ज भण्डार।

विशेप—यह ग्रन्थ चिरंजीलाल मोढ्या ने सं० १६६३ की भादना बुदी ८ को चढाया था।

२३६६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २६ (६० से ८८) ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६७। आ

विशेष--पं० हरलाल ने वाम मे प्रतिलिपि की थी।

२४००. श्रीपालचरित्र" " | पत्र सं० १२ से ३४ | ग्रा० ११% ४% इश्च | भाषा-संस्कृत | विषय-चरित्र । र० काल × | ले० काल × | ग्रपूर्ण । वे० सं० १९६३ । श्च भण्डार ।

२४०१. श्रीपाताचरित्र''''''। पत्र सं० १७ । ग्रा० ११३×५ इश्च । भाषा-ग्रपभ्रंश । विषय-चरित्र । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० स० १९६६ । ऋ भण्डार ।

२४०२. श्रीपालचरित्र—परिमञ्ज। पत्र सं० १४४। आ० ११४८ इंच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-वरित्र। र० काल स० १६४१। ग्राषाढ बुदी ८। ले० काल स० १९३३। पूर्ण। वै० सं० ४०७। श्रा भण्डार।

२४०३. प्रति सं०२। पत्र सं०१६४। ले० काल सं०१८६८। वे० सं०४२१। श्र भण्डार।

न्४०४. प्रति स० ३। पत्र सं० ५२ से १४४। ले० काल सं० १८५६। वे० सं० ४०४। ग्रपूर्ण। आ भण्डार।

> विशेष—महात्मा ज्ञानीराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। दीवान शिबचन्दजी ने ग्रन्य लिखवाया था। २४०४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १८८६ पीप बुदी १०। वे० स० ७६। ग

विशेष---प्रत्य ग्रागरे मे श्रालमगज मे लिखा था।

२४०६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १२४। ले० काल सं० १८६७ बैशाख सुटी ३। ने० सं० ७१७। 🕿

विशेष—महात्मा कालूराम ने सवाई जबपुर मे प्रतिलिपि की थी।

इत्र] काव्य एवं चुरित्र]

३४०७. प्रति सं ६ । पत्र सं० १०१ । ले० काल स० १८५७ ग्रासीज बुदी ७ । वे० सं० ७१६ । 🖝

भण्डार ।

विशेष--- श्रभयराम गोधा ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

२४० इ. प्रति स० ७। पत्र सं० १०२। ले० काल स० १८६२ माघ बुदी २। वे० स० ६८३। चू

भण्डार ।

२५०६. प्रति सं० 🗆 । पत्र सं० ५५ । ले० काल स० १७६० पौष सुदी २ । वे० सं० १७४ । छ

भण्डार।

विशेष—गुटका साइज है। हिएगैड में प्रतिलिपि हुई थी। ग्रन्तिम ५ पत्रों में कर्मप्रकृति वर्णन है जिसका लेखनकाल स॰ १७६३ ग्रासोज बुदी १३ है। सागानेर में गुक्जी मदूराम ने कान्हजीदास के पठनार्थ लिखा था।

२४१०. प्रति सं० ६। पत्र सं० १३१। ले० काल स० १८८२ सावन बुदी ५। वे० स० २२८। म

विशेप—दो प्रतियो का मिश्ररा है।

विशेष—इनके श्रतिरिक्त स्त्र भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १०७७, ४१६) घ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १०४) ड भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० सं० ७१५, ७१६, ७२०) छ, मे श्रीर ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० २२५, २२६ श्रीर १६१३) श्रीर हैं।

२४११. श्रीपालचरित्र : " । पत्र सं० २५ । ग्रा० ११६ \times = इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल \times । र्ले० काल स० १=६१ । पूर्ण । वै० सं० १०३ । घ भण्डार ।

विशेष—ग्रमीचन्दजी सीगाणी तवेला वालोको बहूने लिखवाकर विजेरामजी पाड्या के मन्दिर मे विराज-मान किया।

२४१२. प्रति सं०२। पत्र सं०४२। ले० काल 🔀 । वे० सं० ७००। क भण्डार।

२४१३. प्रति सं०३। पत्र स० ४२। ले० काल सं०१६२६ पौप सुदी म। वे० सं० म०। ग

२४१४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६१। ले० काल सं० १६३० फाग्रुग्। मुदी ६। वे० स० ८२। स

२४१४ प्रति स्० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल स० १६३४ फाग्रुन बुदी ११ । ते० स० २४६ । ज भण्डार ।

विशेष-मन्नालाल पापडीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी।

- २४१६. प्रति सं०६। पत्र स०२४। ले० काल ×। वे० स०६७४। ह्य भण्डार। २४१७. प्रति सं०७। पत्र स०३३। ले० काल सं०१६३६। वे० सं०४४०। ह्य भण्डार।

भण्डार ।

२४१८. श्रीपालचरित्र """। पत्र सं० २४ । ग्रा० ११६×६ इख्र । भाषा-हिन्दो । विषय-चरित्र । र० काल × । ले॰ काल × । ग्रपूर्ण । वे॰ सं॰ ६७५ ।

विशेष—२४ से आगे पत्र नहीं हैं। दो प्रतियों का मिश्रग़ हैं।

२४१६. प्रति सं०२। पत्र स०३६। ले० काल ×। वे० सं० द१। ग भण्डार।

विशेष--कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

२४२०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० ६८४ । च भण्डार ।

२४२१. श्रेणिकचरित्र''''' । पत्र सं० २७ से ४८ । ग्रा० १०×४३ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ७३२ । ङ भण्डार ।

२४२२. श्रेशिकचरित्र—भ० सकुलुकीर्त्ति । पत्र स० ४६ । आ० ११४४ इखा भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० सं० ३५६ । च भण्डार ।

२४२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०७ । त्वे० कालु सं० १६३७ क्यूर्तिक सुदी । अपूर्ण । वे० सं० २७ । ह्य भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रुण है।

२४२४. प्रति सं है। पृत्र सं १० । ले० काल् × । है० सं २८ । छ भण्डार । विशेष—दो प्रतियों को मिलाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है।

२४२४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५१। ले० काल सं० १५१८। वे० स० २६। छ भण्डार।

२४२६. श्रेणिकृच्रित्र-भ० शुभचन्द्र । पृत्र सुं० ५४। ग्रा० १२४४ इच् । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १५०१ ज्येष्ठु बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २४६ । श्रु भण्डार ।

विशेष—टोक मे प्रतिलिपि हुई थी। इसका दूसरा नाम भविष्यत् पद्मनाभपुरारा भी है

२४२७. प्रति सं २ १ पत्र सं ० ११६ । ले० काल सं० १७०८ चैत्र बुदी १४ । वे० सं० १६४ । स्व

२४२८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४८ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० १०५ । घ भण्डार । २४२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १८०१ । वे० सं० ७३५ । ह भण्डार । विशेष—महात्मा फकीरदास ने लख़राौती मे प्रतिलिपि की थी ।

२४२०. प्रति सं० ४। पत्र सं० १४६ हे० काल सं० १५६४ ग्रापाढ सुदी १०। हे० सं० ३५२। च मण्डार।

२४३१. प्रति सं०६। पत्र सं० ७५। ले० काल सं० १८६१ थावरण बुदी १। वे० सं० ३५३ भा

विशेष--जयपुर मे उदयचंद लुहाहिया ने प्रति।लेपि की थी।

२४३२. श्रेणिकचरित्र—भट्टारक विजयकीत्ति । पत्र सं० १२६ । ग्रा० १०×४६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल सं० १६२० फाग्रुण बुदी ७ । ले० काल सं० १६०३ पीप सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ४३७ । श्रु भण्डार ।

विशेष---ग्रन्यकार परिचय-

विजयकीति भट्टारक जान, इह भाषा की घी परमाण ।
संवत मठारास वीस, फाग्रण बुदी साते सु जगीस ।।
बुधवार इह पूरण भई, स्वाति नक्षत्र वृद्ध जोग सुथई ।
गोत पाटणी है मुनिराय, विजयकीति भट्टारक थाय ।।
तसु पटधारी श्री मुनिजानि, बडजात्यातसु गोत पिछाणि ।
त्रिलोकेन्द्रकीतिरिपिराज, नितप्रति साध्य म्रातम काज ।।
विजयमुनि शिपि दुतिय सुजाण श्री बैराड देश तसु म्राण ।
धर्मचन्द्र भट्टारक नाम, ठोल्या गोत वरण्यो म्रिभराम ।
मलयखेड सिंघासण मही, कारंजय पट सोभा सही ।।

२४३३. प्रति स०३। पत्र सं० ७६। ले० काल सं० १८८३ ज्येष्ठ सुदी ४ । वे० स० ८३। ग भण्डार।

विशेष—महाराजा श्री जयसिंहजी के शासनकाल में जयपुर में सवाईराम गोधा ने श्रादिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी। मोहनराम चौधरी पाड्या ने ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियों के चैत्यालय में चढाया।

२४२४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६६ । ले० काल 🗙 । वे० सं० १६३ । छ भण्डार ।

२४२४. श्रेंगिकचरित्रभाषा " " । पत्र सं० ४४ । ग्रा० ११×५६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ७३३ । छः भण्डार ।

२४३६. प्रति सं०२ । पत्र सं०३३ से ६५ । लै० काल 🗙 । अपूर्श । वे० स० ७३४ । हा भण्डार ।

२४२७. संभविज्ञण्याहचरिड (संभवनाथ चरित्र) तेजपाल । पत्र सं० ६२ । म्रा० १० \times ४ इंच । भाषा-म्रपभंश । विषय-चरित्र । र० काल \times । ते० काल \times । वे० सं० ३६४ । च भण्डार ।

२४३८. सागरदत्तचरित्र—हीरकवि । पत्र सं० १८ से २० । ग्रा० १०×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल सं० १७२४ श्रासोज सुदी १० । ते० काल स० १७२७ कार्तिक बुदी १ । श्रपूर्ण । वे० सं० ६३४ । श्र भण्डार ।

विशेष-प्रारम्भ के १७ पत्र नही है।

हाल पचतालीसमी 'गुरुवानी-

संवत् वेद युग जाएंगिय मुनि शशि वर्ष उदार ।। सुगुए। नर साभलो० ॥ 💄 मेदपाढ माहे लिख्यो विजइ दशमि दिन सार ।। ५ ।। सुग्रुए। गढ जालोद्रइ युग तस्यु लिखीउए 'म्रधिकार । भ्रमृत सिधि योगइ सही श्रयोदसी दिनसार ।। ६ ।। सु० भाद्रव मास महिमा घणी पूरण करयो विचार। ं ं ं भार के अविक नर साभलो पचतालीस ढाले सही गाया सातसईसार ॥ ७ ॥ सु॰ ' लूंकइ गच्छ लायक यती वीर सीह जे माल। गुरु भाभरण श्रुत केवली थिवर गुरो चोसाल ।। ५ ।। सु० समरथियवर महा मुनी सुदर रुप उदार । ् । त्रत शिष्यभाव धरी भगाइ सुग्रुरु तर्गाइ ग्राधीर ।। ६ ।। सु० ँ 🗇 🦠 उछौ ग्रधिक्यो कह्यो कवि चातुरीय किलोल। मिथ्या दु कृत ते होज्यो जिन साखइ चउसाल ।। १० ।। सु० 📩 🖒 😘 सजन जन नर नारि जे संभली लहइ उल्हास | देश देखन नंद न सुहाबई नही आवद कहे दाय। ा । भाषी वदन नादरइ ग्रसुचितिहा चिल जाय ॥ १२ ॥ सुकृ प्राप्ता र विकास कर उन्हें का प्रारो लागइ संतनइ पामर चित संतोष। , प्राप्त कराविका के ं डाल भली २ संभली चिते थी ढाल रोष ॥ १२॥ सु० . १००० १०० १०० । र र पर भी गेच्छ नायक तेजसी जब लग प्रतपो भागा। 💎 🗸 💢 🙌 🖒 हु भाग्नि भागा। रें हीर मुनि ब्रांसीस चंद हो ज्यों कोडि कल्यारा । १४ ।। सु० ैं। त ं ं सरस ढाल सरंसी कथा सरसो सहु ग्रिधकार। - 0 15 17 277 - 111 1-ं हीर मुनि गुरु नाम घी त्राराद हरव उदार ।। १५ ।। सु०

इति श्री ढाल सागरदत्त चरित्र संपूर्ण । सर्व गाथा ७१७ संवत् १७२७ वर्षे कार्तिकं बुदी १ दिने सोम-वासरे लिखतं श्री धन्यजी ऋषि श्री केशवजी तत् शिष्य प्रवर पंडित पूज्य ऋषि श्री-५ मामाजातदतेवासी लिपिकृते अ मुनिसावल ग्रात्मार्थे । जोधपुरमध्ये । शुभं भवतु ।

२४३६. सिरिपालचरिय-प० नरसेन। पत्र सं० ४७। मा० ६३ ४५६ इ'च,। सुपा-प्रपन्न श। विषय-राजा श्रीपाल का जीवन वर्शान में रें काल ४। लें० काल सं० १६१५ कार्त्तिक सुदी ६ । पूर्श । वे० सं० ४१०। ज भण्डार।

विशेष--प्रिन्तिम पत्र जीर्रा है। तक्षकगढ नगर के म्रादिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

२४४० सीताचरित्र—किव रामचन्द (वालक)। पत्र सं० १००। ग्रा० १२४८ दश्च। भाषा— हिन्दी पद्य। विषय-चरित्र। र० काल सं० १७१३ मंगसिर सुदी ५। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स० ७००।

विशेप-रामचन्द्र कवि बालक के नाम मे विख्यात थे।

२४४१. प्रति सं०२। पत्र स०१८०। ले० काल ४ । वे० सं० ६१। ग भण्डार ।

२४४२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६६। ले० काल स० १८८४ कास्तिक बुदी ६। वे० सं० ७१६। च भण्डार।

विशेष---प्रति सजिल्द है।

२४४३. सुकुमालचरिउ-श्रीधर । पत्र स० ६५ । ग्रा० १०×४३ इख । भाषा-अपभ्रंग । विषय-सुकुमाल मुनि का जीवन वर्णान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २८८ । ख भण्डार ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

२४४४ सुकुमालचरित्र—भ० सकलकीत्ति । पत्र स० ४४ । मा० १०×४ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६७० कार्तिक सुदी = । पूर्ण । वे० सं० ६४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवत् १६७० वाके १५२७ प्रवर्तमाने महामागल्यप्रदर्कात्तिकमामे शुद्धपक्षे प्रपृम्या तियौ सोमवासरे नागपुरमध्ये श्रीचद्रप्रभन्तेत्यालये श्रीमुलसक्षे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुंदाचार्यान्यये भट्टारकश्रीपद्मनिदिवा तत्पट्टे भ० श्रीश्रुभचंद्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीसहस्रकीतिदेवा तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीभुवनकीतिदेवा तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीभुवनकीतिदेवा तत्पट्टे भडलाचार्य श्रीभुवनकीतिदेवा तत्पट्टे भडलाचार्य श्रीश्रुभचंद्रत्वा तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीश्रुभचंद्रत्वा तत्पट्टे भडलाचार्य श्रीश्रुभचंद्रत्वा तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीश्रुभचंद्रत्वा तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीश्रुभचंद्रत्वा तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीश्रुभचंद्र त्वा पुत्र पट्ट । प्रथम पुत्र सा० नर्रासह तस्यभार्या नर्रास्वदे । द्वितीयपुत्र सा. वर्रासह तस्यभार्या वहुरंगदे तयो पुत्र सा ठाकुर तस्यभार्या ठाकुरदे । तृतीयपुत्र सा. लेता तस्यभार्या लेतलदे तयो. पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र चि० नाथू द्वित कवरा द्वितीय पुत्र चि० धनेड । द्वितीय पुत्र सा. पट्टा तस्यभार्या पटमदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र चि० नाथू द्वितीयपुत्र सुलतान । पष्टमपुत्र सा भीवा तस्यभार्या द्वेत्राय भावलदे द्वितीय भीवलदे । तयो पुत्रा श्रुश्च च० वह्य द्वितीय भीवलदे । तयो पुत्रा । द्वितीय पुत्र सा. हेमा तस्यभार्या हेमलदे । तृतीयपुत्र चि० भूठा चतुर्थ पुत्र चि० पूरण् । एतेपामध्ये सा. भीवा तस्यभार्या साध्वी भीवलदे तयेद शास्त्र मुकुमालचरित्राख्यं ज्ञानावरणी कर्मक्षयनिमित्त लिखाप्य सत्यात्राय प्रदत्तं ।

२४४४. प्रति स०२। पत्र स०४८। ले० काल सं०१७८५। वे० सं०१२५। स्त्र भण्डार। २४४६. प्रति स०३। पत्र स०४२। ले० काल स०१८६४ ज्येष्ठ बुदी१४। वे० सं०४१२। च भण्डार। काव्य एवं चरित्र]

विशेष—महात्मा राधाकृष्णा ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

२४४७. प्रति सं० ४ | पत्र सं० २६ | ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० ३२ | छ भण्डार ।

विशेष-कही कही संस्कृत मे कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये हुए है।

२४४८ प्रति सं०४ । पत्र सं०३४ । ले० काल सं०१८४६ ज्येष्ठ बुदी ४ । वे० सं०३४ । छ् भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी।

२४४६. प्रति सं०६। पत्र सं०४४। ले० काल सं० १८२६ पौष बुदी छ। वे० सं० ८६। व्य

विशेष-एं रामचन्द्रजी के शिष्य सेवकराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

इनके श्रतिरिक्त आ, इन, इन, भा तथा व्य भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ६६४, ३३, २, ३३४) श्रीर हैं।

२४४० सुकुमालचरित्रभाषा—पं नाथूलाल दोसी। प्रत्र सं १४३ । म्रा० १२३×४३ इख । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । रा काल सा १९१८ सावन सुदी ७ । ले काल सं १९३७ चैत्र सुदी १४। पूर्ण । वे० सं ० ८०७ । क भण्डार ।

विशेष--- प्रारम्भ मे हिन्दी पद्य मे है इसके बाद वचनिका मे हैं।

२४४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ १ । ले० काल सं० १६६० । वे० सं० ५६१ । ङ भण्डार ।

२४४२. प्रति सं०३। पत्र सं०६२। ले० काल ४। वे० सं० ५६४। ड भण्डार!

े २४४३. सुकुमालचरित्र—हरचंद गंगवाल । पत्र सं० १५३ । ग्रा० ११×५ इख । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल स० १६१८ । ले० काल सं० १६२६ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ७२० । च भण्डार ।

२४४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७४ । ले० काल सं० १९३० । वे० सं० ७२१ । च भण्डार ।

२४४४. सुकुमालचरित्र "। पत्र सं० ३६। आ० ७×५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १९३३ । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । इस्मण्डार ।

विशेष-फतेहलाल भावसा ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। प्रथम २१ पत्रो मे तत्त्वार्थसूत्र है।

२४४६. प्रति सं०२। पत्र सं०६० से ७६। ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण। वे० सं० ५६०। इन भण्डार।

२४४७. सुखिनधान—किव जगन्नाथ। पत्र सं० ५१। ग्रा० ११३×५१ इख्र । भाषा—संस्कृत। विषय-चरित्र । र० काल सं० १७०० ग्रासोज सुदी १० । ले० काल सं० १७१४ । पूर्ण । वे० सं० १६६ । ऋ भण्डार।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

संवत् १७१४ फाल्गुन सुदी १० मोजावादं ('मोजमावाद) मध्ये श्री'श्रादीश्चर चैत्यालये लिखित पं• दामोदरेगा ।

२४४८. प्रति सं० २। पत्र सं० ३१। ले॰ काल सं० १८३० कार्त्तिक सुदी १३। वे० स० २३६। ञ भण्डार।

२४४६. सुदर्शनचरित्र-भ० सकलकोत्ति । पत्र सं० ६०,। ग्रा० ११×४६ द्व । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १७१४ । प्रपूर्ण । वे० स० ८ । ग्रा भण्डार ।

विशेप--- ५६ से ५ तक पत्र नही हैं।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सवत १७७५ वर्षे माघ शुक्लैकादश्यासोमे पुष्करज्ञातीयेन मिश्रजयरामेग्रोदं सुदर्शनचरित्रं तेखक पाठकयोः शुभं भूयात् ।

२४६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ६४ । ले० काल 🗙 । स्रपूर्ण । चे० सं० ४१५ । च भण्डार । र्थे ६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ४१ । ले० काल 🔀 । स्रपूर्ण । चे० स० ४१६ । च भण्डार ।

२४६२. प्रति सं० ४ । पत्र स० ५० । ले० काल 🗴 । वे० सं० ४१ । छ भण्डार ।

२४६३. सुद्रशंनचरित्र—ब्रह्म नेमिद्त्तं। पत्र सं० ६९। आ० ११×५ द्रञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-वरित्र। र॰ काल ×। वे॰ काल ×। पूर्ण । वे॰ सं॰ १२। आ भण्डार।

२४६४. प्रति सं०२। पत्र सं६६। लेब काल ४। वे० सं०४। द्य मण्डोर । े री

विशेप---प्रशस्ति अपूर्ण है। पत्र ५६ से ५५ तक नवीन निखे हुए है। कि कि

२४६४. प्रति सं०२ । पत्र स०५८ । ले० काल सं०१६५२ फाग्रुंग बुर्दी ११ । वे॰ सं० २२६ । स्त्रं भण्डार ।

विशेप, साह मनोरथ ने मुकुंदवास से प्रतिलिपि कराई थी ।

नीचे- सं० १६२८ मे अवाढ बुदी १ को पं ं तुलसीदास के पठनार्थं ली गई।

२४६६. प्रति सं०४। पत्र स॰ ३८ । ले॰ काल सं॰ १८३० चैत्र बुदी ६। वे॰ सं०६२। व

विशेप—रामचन्द्र ने श्रपने शिष्य सेवकराम के पठनार्थ लिखाई।

२४६७ प्रति सं ६ । पत्र सं ० ६७ । लें काल 🗶 । वे० सं ० ३३४ । वे भण्डीर । वे० सं ० २१६८ । २४६८ प्रति सं ११६८ ।

भण्डार । विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

भण्डार ।

i ng ngata tabun nga mi

२४६६ सुद्शेनचरित्र—सुमुत्तु विद्यानंदि । पत्र सं०२७ से ३६ । आ० १२ $\frac{1}{2}$ \times ६ इख्र । भाषा— संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल \times । ले० काल \times । अपूर्ण । वे० स० ५६३ । ड भण्डार ।

२४७०. प्रति सं०२। पत्र सं०२१८। ले० काल स०१८१८। वे० सं०४१३। च भण्डार। २४७१. प्रति सं०३। पत्र सं०११। ले० काल 🗴। ग्रपूर्ण। वे० सं०४१४। च भण्डार।

२४७२. प्रति सं०४। पत्र स०७७। ले० काल स०१६६५ भादवा बुदी ११। वे० स०४६। छ् भण्डार।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

ग्रथ संवत्सरेति श्रीपनृति (श्री नृपति) विक्रमादित्यराज्ये गताव्द संवत् १६६५ वर्षे भादौ बुदि ११ ग्रर-वासरे कृष्णाक्षे ग्रग्न लापुरदुर्ग ग्रुभस्याने ग्रश्वरतिगजपितनरपितराजत्रय मुद्राधिपितश्रीमन्साहिसलेमराज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमत् काष्ठासंघे मायुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्रीमलयकीर्तिदेवास्तत्पट्टे श्रीग्रुणभद्रदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री भानुकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री कुमारश्रेणिस्तदाम्नाये इक्ष्वाकवंशे जैसवालान्वये ठाकुराणिगोत्रे पालव सुभस्थाने जिनचैत्यालये ग्राचार्यग्रुणकीर्तिना पठनार्थ लिखित।

२४७३. प्रति सं०४। पत्र स०७७ । ले० काल सं०१८३ वैशाख बुदो ४। वे० सं०३। स्त भण्डार।

विशेष—चित्रकूटगढ में राजाधिराज राएग श्री उदर्यासहजी के शासनकाल मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे भ० जिनचन्द्रदेव प्रभाचन्द्रदेव ग्रादि शिष्यो ने प्रतिलिपि की । प्रशस्ति ग्रपूर्ण है ।

२४७४ प्रति सं ०६। पत्र सं० ४५। ले० काल × । वे० सं० २१३६। ट भण्डार।

२४७४. सुद्रशंतचरित्र''''''। पत्र सं० ४ से ४६ । आ० ११ई×५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६८ । आ भण्डार ।

२४७६. प्रिति स० २ । पत्र सं० ३ से ४० । ०ले काल 🗶 । अपूर्णा । वे० सं० १६८५ । आ भण्डार । विशेष—पत्र सं० १, २, ६ तथा ४० से आगे के पत्र नहीं हैं ।

२४७७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३१। ले० काल 🗴 । त्रपूर्श । वै० स० ८५६ । ङ भण्डार ।

२४७८. सुदर्शनचरित्र' : " । पत्र सं० ५४ । ग्रा० १३४८ इक्ष । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १६० । छ भण्डार ।

२४७६. सुभौमचरित्र—भ० रतनचन्द् । पत्र स० ३७ । ग्रा० ५३×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय~सुभौम चक्रवर्त्ति का जीवन चरित्र । र० काल सं० १६६३ भादवा सुदी १ । ले० काल सं० १८५० । पूर्ण । वे० स० ११ । छ भण्डार ।

विशेष—विबुध तेजपाल की संहायता में हेमराज पाटनी के लिये ग्रन्थ रचा गया । पं॰ सवाईराम के शिप्य नौनदराम के पठनार्थ गंगाविष्णु ने प्रतिलिपि की थी । हेमराज व भं॰ रतंनचन्द्र का पूर्ण परिचय दिया हुग्रा है। २४८०. प्रति सं०२। पत्र स०२४। ले० काल स०१८४० वैद्याख सुदी १। वे० स०१४१। च भण्डार।

विभेप--हेमराज पाटनी के लिये टोजराज की सहायता से ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी।

२४८१ हनुमन्द्वरित्र— त्र श्रजित । पत्र स०१२४ । श्रा०१०३×४३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले॰ काल सं०१६८२ वैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वे० स०३० । आ भण्डार ।

विजेप-भृगुकच्छपुरी मे श्री नेमिजिनालय मे ग्रन्थ रचना हुई।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

स्वत् १६८२ वर्षे वैशाखमासे वाहुलपक्षे एकादश्यातिथी काव्यवारे । निखापित पडित श्री शावल इदं दाास्त्र तिखितं जोधा लेखक ग्राम वैरागरमध्ये । ग्रन्थाग्रन्थ २००० ।

२४८२. प्रति सं०२। पत्र स० ५४। ले० काल सं० १६४४ चंत्र बुदी ४। वे० स० १४६। अप्र भण्डार।

२४८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८२६ । वे० सं० ८४८ । क भण्डार ।

२४८४. प्रति सं ० ४ । पत्र स० ६२ । ले० काल सं० १६२८ वैशाख सुदी ११ । वे० स० ८४६ । क भण्डार ।

२४८४. प्रति सं ८४, । पत्र स० ५१ । ते ने नि सं० २४३ । ख भण्डार ।

विशेष--- तुलसीदास मोतीराम गगवाल ने पडित उदयराम के पठनार्थ कालाडेहरा (कृष्णद्रह) मे प्रति-लिपि करवायी थी ।

२४८६. प्रति सं०६। पत्र सं० ६२। ले० काल स० १८६२। वे० स० ६६। ग भण्डार।

२४८७ प्रति सं०७। पत्र सं०११२। ले० काल स०१५८४। वे० स०१३०। घ मण्डार।

विशेष -- लेखक प्रशस्ति नहीं है।

२४८८. प्रति स० ८। पत्र स० ३१। ले० काल 🔀 । अपूर्या । वे० स० ४४५ । च भण्डार ।

विशेप-प्रति प्राचीन है।

२% मध्य प्रति स०६। पत्र सं० मध्य ने० काल 🗙 । वे० स० ५०। छ भण्डार ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

२४६०. प्रति स० १०। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १६३३ कार्त्तिक सुदी ११। वे० सं० १०८ क। व्य भण्डार।

विशेष-लेखक प्रशन्ति काफी विस्तृत है।

भट्टारक पद्मनिद् की श्राम्नाय मे सङ्केलवाल ज्ञातीय साह गोत्रोत्पन्न साधु श्री वोहीथ के बद्म में होने वाली बार्ट गहनानदे ने मोनहकारण व्रतोद्यापन में प्रतिलिपि कराकर चढाई। २४६१. प्रति सं०११ । पत्र सं०१०१ । लैं० काल सं०१६२६ मंगिसर सुदी ४ । वे० सं०३४७ । व भण्डार ।

विशेष-- प्र॰ डालू लोहशल्या सेठी गोत्रावाले ने प्रतिलिपि कराई।

२४६२. प्रति सं०१२ । पत्र सं०६२ । ले० काल सं०१६७४ । वे० सं० ५१२ । व्य भण्डार ।

२४६३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २ से १०५ । ले० काल सं० १६८८ माघ सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० २१४१ । ट भण्डार ।

विशेष -- पत्र १, ७३, व १०३ नहीं हैं लेखक प्रशस्ति बड़ी है ।

इनके ग्रतिरिक्त भा ग्रीर व्य भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० १७७ तथा ४७३) ग्रीर है।

२४६४. हनुमचरित्र— ब्रह्म रायमञ्ज । पत्र सं० ३६ । आ० १२× दञ्ज । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल सं० १६१६ वैशाख बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०१ । स्त्र भण्डार ।

२४६४. प्रति सं २ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८२४ । वे० सं० २४२ । ख भण्डार ।

२४६६ प्रति सं ३ १ पत्र सं० ७५। ले० काल स० १८८३ सावणा बुदी ६। वे० सं० ६७। ग भण्डार।

विशेष—साह कालूराम ने प्रतिलिपि करवायी थी।

२४६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८८३ श्रासोज सुदी १० । वे० सं० ६०२ । इस् भण्डार ।

विशेष—सं० १९५६ मगसिर बुदी १ शनिवार को सुवालालजी वंकी बालों के घडो पर संघीजी के मन्दिर मे यह ग्रन्थ भेंट किया गया।

२४६८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३०। ले० काल सं० १७६१ कार्तिक सुदी ११। वे० सं० ६०३। इस् भण्डार।

विगेष-वनपुर ग्राम मे घासीराम ने प्रतिलिपि की थी।

२४६६. प्रति सं०६। पत्र स०४०। ले० काल ४। वे० सं०१६६। छ भण्डार।

२४००. प्रति सं० ७। पत्र सं० ६४। ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० १४१। स्त भण्डार ।

विशेष---ग्रन्तिम पत्र नहीं है।

२४०१. हारावित महामहोपाध्याय पुरुषोत्तमदेवं । पत्र सं० १३। ग्रा० ११×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५३। क भण्डार ।

२४०२. होलीरेसुकाचरित्र-पं० जिनदास । पत्र सं० ५६ । ग्रा० ११×५ इश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल सं० १६०८ । ले० काल सं० १६०८ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्या । वे० सं० १४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--रचनाकाल के समय की ही प्राचीन प्रति है ग्रत: महत्वपूर्ण है। लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

स्वस्ति श्रीमते शाितनाथाथ । संवत् १६० वर्षे ज्येष्ठमासे गुक्कपक्षे दशमीितयौ गुक्कनासरे हम्तनक्षत्रे श्री राएस्तंभदुर्गस्य शाखानगरे शेरपुरनािन श्रीशाितनाथिजननैत्यालये श्री श्रालमसाह सािहग्रालम श्रीसल्लेममाहराज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसपे वलात्कारगणे नद्यानगरे सरस्वतीगच्छे श्रीशुंदकुदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनिददेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तिच्छण्य म० श्रीधर्मचंद्रदेवास्तदाम्नायेखदेलवालान्वये सेठीगोत्रे सा० सोल्हू तद्धार्य फूला तत्पुत्रास्त्रय प्र. सा पचायण हि. सा डीडा तृतीय सा करमा। मा. पचायण भार्या वील्हा तत्पुत्र सा. दामोदर तद्भार्ये हे. प्र. खेमी द्वि० नौलादे तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा. नेमा द्वितीय मा. वोशू तृतीय सा० तेजा। सा. नेमा भार्या चतुरा। सा वोशू भार्या सवीरा सा. डीडा भार्या गौरा तत्पुत्र सा. हेमा तद्धार्ये हे प्रथम श्रीरिण् द्वितीय सुहागदे तत्पुत्रास्त्रय प्रथम सा भीखु द्वितीय सा. चतुरा तृतीय सा. भोवाखु । मा. करमा भार्या टरमी तत्पुत्रो हो प्र सा धर्मदास द्वि० सा. जसवत । सा. धर्मदास भार्या निगारदे जसवत भार्या जसमादे तत्पुत्र चिरजीवो ईमरदाम एतेषामध्ये जिनपूजापुरंदरेण जत्मगुणगणालंकृतगात्रेण सा. कर्मानामध्ये येनेदशास्त्रतिदाप्य ग्राचार्य श्री लित्तकौत्त्रेय घटापित दशलक्षणप्रतोद्यपनार्थं।

२४०३. प्रति सं०२। पत्र सं०२०। ले० काल ×। वे० सं०३६। ह्या भण्डार।
२४०४. प्रति सं०३। पत्र स०५४। ले० काल सं० १७२६ माघ सुदी ७। वे० सं० ४५१। च

विशेष—यह प्रति पं॰ रायमल्ल के द्वारा वृत्दावती (वृत्दी) मे स्वपठनार्थ चन्द्रप्रभु चैत्यालय में लिखी गर्ड थी। कवि जिनदास रए। थभौरगढ के समीप नवलक्षपुर का रहने वाला था। उसने शेरपुर के शान्तिनाथ चैत्यालय में स॰ १६०६ में उक्त ग्रन्थ की रचना की थी।

२४०४. प्रति सं ४ । पत्र स० ३ से ३५ । ले० काल 🗴 । श्रपूर्ण । वे० सं० २१७१ । ट भण्डार । विशेष—प्रति प्राचीन है ।



कथा-साहित्य

२४०६. स्रकलंकदेवकथा"""। पत्र सं० ४। ग्रा० १०४४३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल ४। ले॰ काल ४। ग्रपूर्ण । वे॰ सं० २०५९ । ट भण्डार ।

२४०७. ऋत्त्यनिधिमुष्टिकाविधानत्रतकथा"""। पत्र सं० ६। ग्रा० २२×६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १८३४ । ट भण्डार ।

२४०८. ऋठारहनाते की कथा—ऋषि लालचन्द्। पत्र सं०४२। ग्रा०१०४५ इख्र। भाषा— हिन्दी। विषय—कथा। र० काल स०१८०५ माह सुदी ५। ले० काल सं०१८८३ कार्त्तिक वुदी ८। वे० स० ६६८। स्त्र भण्डार।

विशेष-ग्रन्तिम भाग-

संवत ग्रठारह पचडोतर १८०५ जी हो माह सुदी पाचा ग्रुस्वार। भगाय मुहरत सुभ जोग मै जी हो कथगा कह्यो सुवीचार ॥ धन धन ।।४६६॥ श्री चीतोड तल्हटी राजियो, जी हो ऋषि जीनेश्वर स्याम। श्री सीध दोलती दो घएगी जी हो सीध की पूरी जे हाम ।। माहा मूनि० धन० ।।४७०॥ त्तलहटी श्री सीगराज तो, जी हो बहुलो छय परीवार । बेटा वेटी पोतरा जी हो अनधन अधीक अपार ।। माहा मुनि० धन० ।।४७१।। श्री कोठारी काम का धर्गी, जी हो छाजड सो नगरा सेठ। था रावत सुराएा गोखरु दीपता जी हो ग्रोर वाण्या हेठ ।। माहा मुनी० धन० ।।४७२।। श्री पुन्य मग छगीडवो महा जी हो श्री विजयराज वाखाए। पाट घणार म्रातर जी हो ग्रुण सागर ग्रुण खारा।। माहा मूनी० धन० ।।४७३।। सोभागी सीर सेहरो जी हो साग सुरी कल्याएा । परवारा पूरो सही जी हो सकल वाता सु वीयाए।। माहा मुनी० धन० ।।४७४।। श्री वीजयेगछै गीडवोषणी जी हो श्री भीम सागर सुरी पाट। श्री तीलक सुरद वीर जीवज्यो जी हो सहसगुराो का याटै।। माहा मुनी वन ।।४७५।। साध सकल मे सोभतो जी हो ऋषि लालचन्द सुसीस ! ष्रठारा नता चोथी कथी जी हो ढाल भग्गी इगतीस ।। माहा मुनी० धन० ।।४७६।।

ईती श्री धर्मउपदेस ग्राठारा नाता चरीत्र सपूर्ण समाप्ता ।।

लिखतु चेली सुवकुवर जी ग्रारज्या जी श्री १०८ श्री श्री श्री भागाजी तत् सखराो जी श्री श्री टमरुजा श्री रामकुवर जी। श्री सेवकुवर जी श्री चंदनरााजी श्री दुल्हडी भराता ग्रुगता सपूर्या।

सवत् १८६३ वर्षे साके वर्षे मिती ग्रासीज (काती) वदी ६ मे दिन वार सोमरे। ग्राम संग्रामगडमन्ये सपूर्णा, चोमासो तीजो कीघो ठाएग ६।। की घो छो जदी लखीइ छ जी। श्री श्री १०६ श्री श्री मासत्या जी क प्रसाद लखेइ छ सेवुली।। श्री श्री मासत्या जी वाचवाने ग्ररथ। ग्रारका जी वाचवान ग्ररथ ठाएग।। ६।।

२५०६ अनन्तचतुर्देशी कथा—ब्रह्म ज्ञानसागर। पत्र स० १२। आ० १०×५ इख्र । भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ४२३। अ भण्डार।

२५१०. त्रानन्तचतुर्देशीकथा-मुनीन्द्रकीत्ति । पत्र स० ५ । आ० ११×५ इख । भाषा-प्राकृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ३ । च भण्डार ।

२४११. श्रनन्तचतुर्दशीकथा" "। पत्र सं० ३। म्रा० ६×६ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०४ । म्ह भण्डार ।

२४१२. श्रनन्तव्रतविधानकथा—मद्नकीर्त्ति । पत्र स०६। श्रा०१२×५ इख्र । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स०२०५८। ट भण्डार।

२४१३, श्रनन्तव्रतकथा-श्रुतसागर । पत्र सं० ७ । आ० १०×४३ इख्र । भाषा-सम्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६ । ख भण्डार ।

विभेप-सस्कृत पद्यो के हिन्दी ग्रर्थ भी दिये हुये हैं।

इनके श्रतिरिक्त ग्रा भण्डार मे १ प्रति (वे० स० २) इक् भण्डार मे ४ प्रिनया (वे० सं० ८, ६, १०, ११) छ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७४) श्रीर हैं।

२४१४. श्रनन्तव्रतकथा—भ० पद्मनिद् । पत्र स० ५ । ग्रा० ११×५ इख । भाषा-मस्कृत । विषय-कथा। र० काल × । ले० काल स० १७८२ सावन बुदी १ । वे० मं० ७४ । छ भण्डार ।

२५१५.त्र्यनन्तन्नतकथा"""। पत्र सं ॰ ४ । ग्रा० ७३×५ इख्र । भापा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ७ । रू भण्डार ।

२४१६. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० २१८०। ट भण्डार ।

२४१७. श्रनन्तत्रतकथा ' ""। पत्र स॰ १० । ग्रा० ६×३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा (जैनेतर) र० काल × । ले० काल सं० १८३८ भादवा सुदी ७ । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

२४१८ अनन्तव्रतकथा—खुशालचन्द् । पत्र मं० ५ । आ० १०×४२ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ने० काल सं० १८३७ आसीज बुदी ३ । पूर्ग । वे० सं० ६६६ । अ भण्डार । २४१६. श्रंजनचोरकथा"""। पत्र सं० ६ । ग्रा० ५ $\frac{1}{2}$ ४५ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल \times । ले० काल \times । ग्रपूर्ण । वे० स० १६१४ । ट भण्डार ।

२४२०. ऋषाढएकादशीमहात्म्यः ः। पत्र सं०२। आ०१२४६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स०११४६। ऋ भण्डार।

विशेष--यह जैनेतर ग्रन्थ है।

२४२१. ऋष्टांगसम्यग्दर्शनकथा—सकलकीत्ति । पत्र सं० २ से ३६ । ग्रा० ७३×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । श्रपूर्ण । वे० सं० १६२१ । ट भण्डार ।

विशेष-कुछ वीच के पत्र नहीं हैं। ग्राठो ग्रङ्गो की ग्रलग २ कथायें हैं।

२४२२. ऋष्टांगोपाख्यान—पं० मेधावी । पत्र स० २८ । आ० १२ $\frac{2}{9}$ \times ५ $\frac{2}{9}$ इक्क । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र॰ काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ३१८ । ऋ भण्डार ।

२४२३. श्रष्टाह्विकाकथा—भ० शुभचंद्र । पत्र सं० ८ । ग्रा० १०४४ई इख्न । भापा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल ४ । ले॰ काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ३०० । श्र भण्डार ।

विशेष—ग्रा भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ४८५, १०७०, १०७२) ग भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ३) ड भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ४१, ४२, ४३, ४४) च भण्डार मे ६ प्रतिया (वे० सं० १५, १६, १७, १८, २०) तथा छ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७४) ग्रौर हैं।

२४२४. त्र्याहिकाकथा—नथमल । पत्र सं० १८ । ग्रा० १०३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र० काल सं० १६२२ फाग्रुण सुदी ५ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० ४२५ । त्र्रा भण्डार ।

विशेष-पत्रो के चारो भ्रोर बेल बनी हुई है ।

इसके श्रतिरिक्त क भण्डार मे ४ प्रतियां (वे० सं० २७, २८, ७६३) ग भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ४) ड भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ४५, ४६, ४७, ४८) च भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ५०६, ५१०, ५११, ५१२) तथा छ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १७६) श्रीर है।

इसका दूसरा नाम सिद्धचक्र व्रतकथा भी है।

२४२४. श्रष्टाहिकाकौमुदी। पत्र सं० ४ । ग्रा० १०×४३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १७११ । ट भण्डार ।

२४२६ श्रष्टाह्विकात्रतकथा' '' पत्र स०४३। ग्रा०६४६३ इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा। र०काल ४। ले० काल ४। ग्रपूर्ण । वे० स० ७२ । छ भण्डार ।

विशेष-इ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १४५) की और है।

२४२७. द्यष्टाहिकान्नतकथासंप्रह—गुग्चन्द्रसूरि । पत्र सं० १४ । आ० ६५×६६ दख । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२ । इ भण्डार ।

२४२८ त्रशोकरोहिणीकथा-श्रुत्सागर। पत्र स० ६। आ०१०३×५ दञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स०१८६४। पूर्ण। वे० सं०३५। ह भण्डार।

२४२६. त्र्यशोकरोहिर्गीत्रतकथा ""। पत्र स० १८। म्रा० १०३४५ दखा भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। र० काल 🗴। ले० काल 🗴। पूर्ण। वे० स० ३६। ङ भण्डार।

२५३०. श्रशोकरोहिग्गित्रतकथा : ""। पत्र स० १० । आ० ५३×६ इच । भाषा-हिन्दी गद्य । र० काल सं० १७५४ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० २५१ । म भण्डार ।

२४३१. त्र्याकाशपंचमी व्रतकथा — श्रुतसागर । पत्र स० ६ । ग्रा० ११३×६६ डच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १६०० श्रावण सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ४१ । उ भण्टार ।

२४३२ स्त्रकाशपंचमीकथा''''''। पत्र स० ६ से २१। स्रा० १०×४ है इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। स्रपूर्ण। वे० स० ५०। ङ भण्डार।

२४३३. त्राराधनाकथाकोप ""। पत्र स० ११८ से ३१७ । ग्रा० १२×५३ दख । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० १९७३ । त्रा भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १७) तथा ट भण्डार मे १ प्रति (वे० स० २१७४) ग्रीर है तथा दोनो ही ग्रपूर्ण है ।

२४३४. श्रारधनाकथाकोश'''''' । पत्र सं० १४४ । श्रा० १०३४४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल ४ । ले० काल ४ । श्रपूर्ण । वे० सं० २०६ । श्र्य भण्डार ।

विशेष--- मध्वी कथा तक पूर्ण है। ग्रन्थकर्ता का निम्न परिचय दिया है।

श्री मूलसंघे वरभारतीये गच्छे वलात्कारगरोति रम्ये ।
श्रीकुदकुदाख्यमुनीद्रवशे जातं प्रभाचन्द्रमहायतीन्द्रः ॥१॥
देवेंद्रचंद्रार्कसम्मचितेन तेन प्रभाचन्द्रमुनीश्वरेरा ।
श्रनुग्रहाथं रचित सुवावये श्राराधनासार्यथाप्रवन्ध ॥६॥
तेन क्रमेरीव मया स्वशक्त्या श्लोकं प्रसिद्धं श्चिनगद्यते स. ।
मार्गेन कि भानुकरप्रकाशे स्वलीलया गच्छित सर्वलोक ॥७॥

प्रत्येक कथा के ग्रन्त मे परिचय दिया गया है।

२४३४. श्राराधनासारप्रबंध-प्रभाचन्द्र । पत्र स० १४६ । ग्रा० ११×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० २०६४ । ट भण्डार ।

विशेष--- ५६ से ग्रागे तथा बीच मे भी कई पत्र नहीं हैं।

२५३६. त्र्यारामशोभाकथा'''''। पत्र सं०६। ग्रा०१० \times ४३ दंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण। वे० सं० ५३६। ग्रा भण्डार।

विगेष--जिन पूजाफल कथायें हैं।

प्रारम्भ--

भ्रन्यदा श्री महावीरस्वामी राजगृहेपुरे समवासरदुद्याने भूयो ग्रुग् शिलाभिषे ॥१॥ सद्धर्ममूलसम्यक्तव नैर्मल्यकरग्रे सदा । ' यतम्बमिति तीर्थेशा वक्तिदेवादिपर्षदि ॥२॥ देवपूजादिश्रीराज्यसपदं सुरसंपदं। निर्वागुकमलाचापि लभते नियतं जनः ॥३॥

प्रन्तिम पाठ-

यावह वी सुते राज्यं नाम्ना मलयसुंदरे । क्षिपामि सफल तावत्करिष्यामि निजं जनु ।।७५॥ सूरि नत्वा गृहे गत्वा राज्यं क्षिप्त्वा निजागजे । श्रारामशोभयायुक्ते राजाव्रतमूपाददे भ्रधीत सर्वसिद्धातं संविग्नगुरासंयतं । एवं संस्थापयामास मुनिराजो निजे पदे ।।७७॥ गीतार्थायै तथारामशोभायै गुराभूमये । 🔑 प्रवर्त्तिनीपद प्रादात् गुरुस्तद्गुग़रंजितः ॥७८॥ संबोध्य भविकान् सूरि: कृत्वा तैरनशन तथा। विपद्यद्वाविप स्वर्गसंपद प्रापतुर्वरं ॥७६॥ त्ततश्च्युत्वा क्रमादेती नरता सुदता वरान् । भयान् कतिपयान् प्राप्य शास्वती सिद्धिमेष्यत ॥५०॥ एवं भोस्तीर्थकृद्भक्ते. फलमाकर्ष सुंदर । कार्यस्तत्कररोपन्नो युव्माभि प्रमदात्सदा ॥५१॥' ।। इति जिनपूजा विषये म्रारामशोमाकथा सपूर्ण ।। सस्कृत पद्य संख्या २८१ है ।

२४३७. उपांगलित व्रतकथा ""। पत्र स० १४। ग्रा० ८३×४ डंच । भाषा - संस्कृत । विषय-किथा (जैनेतर) र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० २१२३। ग्रा भण्डार ।

२५३८. ऋग्यसंवंधकथा—अभयचन्द्रगिश् । पत्र सं० ४ । आ० १०४४ है इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-कथा । र० काल ४ । ले० काल सं० १६६२ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । वे० स० ८४० । आ भण्डार । विशेष—आग्रादरायग्रुरुणा सीसेण अभयचदगिराणाय माहणचन्द्रपुत्राण कहाकिय ग्यारघनरमण् ।।१२।। इति रिण सबधे छ ॥१॥

श्री श्री प० श्री श्री ग्रागादविजय मुनिभिलेंखि । श्री किहरोरमध्ये सवत् १६६२ वर्षे जेठ वदि १ दिने । २४३६. श्रीषधदानकथा—व्र० नेमिद्त्त । पत्र सं०६। ग्रा० १२४६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० २०६१ । ट भण्डार ।

विशेष-- २ मे ५ तक पत्र नही हैं।

२४४०. किंद्यारकानडरीचौपई—सानसागर । पत्र स० १४ । ग्रा० १०×४३ ड च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स० १७४७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १००३ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--ग्रादि भाग।

श्री गुरुम्योनम. ढाल जंबूढीप मभार एहनी प्रथम—

मुनिवर श्रार्यसुहस्तिकिए। इक ग्रवसरइ नयइ उजेएो। श्रावियारे ।

चरण करण व्रतधार ग्रुणमिए। ग्रागर बहु परिवारे परिवस्याए।।१।।

वन वाडी विश्राम लेइ तिहा रह्या दोइ मुनि नगर पठाविया ए।

थानक मागए। काज मुनिवर मान्ह्रता भद्रानइ घरि ग्राविया ए।।२।।

सेठानी कहे ताम शिष्य तुम्हे केहनास्य काज श्राव्या इहा ए।

ग्रार्यसहस्तिना सीस श्रम्हे छा श्राविका उद्याने ग्रुष्ट छै तिहाए।।३।।

ग्रन्तिम---

सत्तरे सैताले समै म. तिहा की घी ची मास 11 मं० 11
सदगुरु ना परसाद थी म. पूगी मन की ग्रास 11 म० 11
मानसागर सुख सपदा म. जित सागरगिए। सीस 11 म० 11
साधुतए।। गुएगावता म. पूगी मनह जगीस 11
दिग पट कथा कीस थी म. रचीयो ए ग्रधिकार ।
श्रद्धि को उछो भाषीयो म. भिछ। दुकड कार 11
नवमी ढाल सोहामजी म० गीडी राग सुरंग ।
मानसागर कहै साभलो दिन दिन वधतो रंग 11 १० 11

इति श्री सील विषय कठीयार कानडरी चौपई संपूर्ण।

२५४१. कथाकोश—हरिषेणाचार्य । पत्र सं० ४६१ । ग्रा० १०×४ई-इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल स० ६८६ । ले० काल सं० १५६७ पीष सुदी १४ । वे० स० ८४ । व्य भण्डार ।

विशेष-सधी पदारय ने प्रतिलिपि करवायी थी।

२५४२ प्रति सं०२। पत्र सं०३१८। ग्रा० १०×५६ इ.च । ले० काल १८३३ भादवा बुदी ऽऽ। वे० सं०६७१। क भण्डार।

२५४३. कथाकोश—धर्मचन्द्र । पत्र सं० ३६ से १०६। आ० १२×५६ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १७६७ अषाढ बुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० १६६७। अ भण्डार।

विशेष--१ से ३८, ५३ से ७० एवं ८७ से ८९ तक के पत्र नहीं है ।

लेखक प्रशस्ति-

संवत् १७६७ का ग्रासाढमासे कृष्णापक्षे नवम्मा शनिवारे ग्रजमेराख्ये नगरे पातिस्याहाजी ग्रहमदस्याहजी महाराजाधिराज राजराजेश्वरमहाराजा श्री उभैसिहजी राज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमूलसघेसरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे नद्याम्नाये कृदकुंदाचार्यान्वये मडलाचार्य श्रीरत्नकीर्त्तजी तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीश्रीमहेन्द्रकीर्त्तजी तत्पट्टे मंडलाचार्य्यजी श्री श्री श्री १०८ श्री ग्रनंतकीर्त्तजी तदाम्नाये ब्रह्मचारीजी किसनदासजी तत् शिष्य पंडित मनसारामेण ब्रतकथाकोशाख्य शास्त्रलिखापितं धम्मोपदेशदानार्थं ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं मंगलभूयाच्चतुर्विधसंघाना ।

२४४४ कथाकोश (आराधनाकथाकोश)— त्र० नेमिद्त्त । पत्र सं० ४६ से १६२ । आ० १२६ ४६ व । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल ४ । ले० काल सं० १८०२ कार्तिक बुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० २२६६ । आ भण्डार ।

२४४४. प्रति सं २ । पत्र सं० २०३ । ले० काल सं० १६७५ सावन बुदी ११ । वे० सं० ६८ । क भण्डार ।

विशेप-लेखक प्रशस्ति कटी हुई है।

इनके ग्रितिरिक्त ड भण्डार में १ प्रिति (वे० सं० ७४) च भण्डार मे १ प्रिति (वे० सं० ३४) छ भण्डार मे २ प्रितिया (वे० स० ६४, ६५) ग्रीर हैं।

२४४६. कथाकोशः । पत्र स० २४। ग्रा० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० स० ५६। च भण्डार।

विशेप--- च भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ५७, ५८) ट भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० २११७ २११८) और हैं।

२४४७. कथाकोश"""। पत्र सं० २ से ६८। ग्रा० १२×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ६६ । इ भण्डार ।

२४४८. कथारत्नसागर—नारचन्द्र । पत्र सं० ५ । ग्रा० १०३८४३ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १२५४ । श्र भण्डार ।

विशेष-वीच के १७ से २१ पत्र हैं।

२५४६. कथासग्रह—जहाज्ञानसागर'। पत्र सं० २५ । ग्रा० १२×६ इस । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा। र० काल × । ले० काल स० १८५४ वैशाख बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३६८ । स्त्र भण्डार ।

नाम कथा	पत्र	पद्य संख्या
[१] त्रैलोक्य तीज कथा	१ से ३	५२
[२] निसल्याष्टमी कथा	४ से ७	٩¥
[३] जिन रात्रिवत कथा	७ से १२	६६
[४] श्रष्टाह्मिका वत कथा	१२ से १५	प्रर
[४] रक्षवधन कथा	१५ से १६	७६
[६] रोहिगो व्रत कथा	१६ से २३	દય
[७] ग्रादित्यवार कथा	२३ से २५	३७

विशेष--१८५४ का वैशाखमासे कृष्णपक्षे तिथो २ ग्रुग्वासरे । विख्यत महात्मा स्यंभुराम सवाई जयपुर मध्ये । लिखायतं चिरंजीव साहजी हरचदजी जाति भौंसा पठनार्थं ।

२४.४०. कथा समह "" । पत्र सं० ३ से ६ । म्रा० १०×४ हु इख । भाषा-प्राकृत हिन्दी । विषय-

२४४१. कथासंग्रह। पत्र स० ६४। ग्रा० १२४७३ इंच। भाषा-सस्कृत हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं० ६६। क भण्डार।

विशेष--- त्रत कथायें भी है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १००) ग्रीर है।

२४४२. कथासंग्रहः "। पत्र स० ७६ । ग्रा० १० $\frac{1}{2}$ \times ५ इख्र । भाषा—मस्कृत । विषय—कथा । र० काल \times । पूर्ण । वै० स० १४४ । त्र्य भण्डार ।

२४४३. प्रति सं०२। पत्र स० ७६। ले० काल सं० १५७८। वे० सं० २३। ख भण्डार। विशेष—३४ कथाग्रो का संग्रह है।

२४४४८ प्रति सं०३। पत्र स०६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स०२२। ख भण्डार। विशेप—निम्न कथार्ये हो है।

- १. पोडशकारगाकथा—पद्मप्रभदेव ।
- २. रत्नत्रयविधानकथा -- रत्नकोत्ति ।

ड भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६७) ग्रीर है।

२४४४ कथवन्नाचौपई--जिनचंद्रसूरि। पत्र सं० १५। स्ना० १९०६×४३ हे इच । भाषा-हिन्दी (राजस्थानी)। विषय-कथा। र० काल स० १७२१। ले० काल सं० १७६६। पूर्ण। वे० सं० २४। ख भण्टार।

विशेप-चयनविजय ने कृष्णागढ मे प्रतिलिपि की थी।

२५५६ कर्मविपाक " । पत्र सं० १८ । आ० १०४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८१६ मगसिर बुदी १४ । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

विशेष--- ग्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्री सूर्यारुणसवादरूपकर्मविपाक संपूर्ण ।

२४४७ कवताचन्द्रायण्व्रतकथा ****। पत्र स०४। ग्रा०१२×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-

विशेष—क भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १०६) तथा वा भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४४२) स्रौर है।

२४४८. कृष्ण्यक्तिमण्गिमंगल-पद्मभंगत् । पत्र सं० ७३ । आ० ११३४६ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८६० । वे० सं० ११६० । पूर्ण । स्त्र भण्डार ।

विशेष-शी गरोशाय नमः । श्री गुरुम्यो नमः । स्रथं रुक्मरा मंगल लिखते ।

यादि कीयो हिर पदमयोजी, दीयो विवास खिनाय।
कीरतकरि श्रीकृष्ण की जी, लीयो हजुरी बुलाय।
पावा लाग्यो पदमयोजी, जहा बढ़ां रूकमस्मी जादुराय।
क्रमां करी हरी भगत पे जी, पीतामर पहराय।
श्राग्यादि हिर भगत ने जी, पुरी दुवारिका माहि।
क्रमिशा मगल सुरों जी, ते श्रमरापुरि जाहि।।
नरनारियो मगल सुरों जी, हिरचरस चितलाय।
वै नारी इह की श्रपछरा जी, वे नर वैंकुठ जाय।।
व्याह बेल भागीरिथ जी गीता सहसर नाव।
गावतो श्रमरापुरी जी पाव(व)न होय सव गाव।।
वोलै रासी रुक्मिशा जी, सुराज्यो भगति सुजास ।
या किया रित केशो तसी जी, यसडीर करोजी वर्खास।।
यो मंगल परगर्ट करो जी, सत को सवद विचारि।
वीडा दीयो हरी भगत ने जी, कथीयो कुम्स मुरारि।।

गुरु गोविंद नै विनवा जी, व अभिनासी जी देव। तन मन तो आगे धरा जी, कराजी गुरां की जी मेव।। गुरु गोविंद वताइया जी, हरी थापै ब्रहमट । गुरु गोविंद के सरनै आये, होजो कुल की लाज मव पेली। कृष्णा कृपा तें काम हमारो, भएता पदम यो तेली।।

पत्र ४० - राग सिंधु ।

सिसपाल राजा बोलियो जी मुिंग जे राज कवार । जो जादु जुध श्रायसी, तो भीत बजाऊ सार ।। ये के सार धार करु वैरखा, बागा वह श्रपार । गोला नालि श्रनेक छूटै सारग्या री मार ।। डाहलतिंग फीजै भली पर श्राप मुिंगज्यों राज्य के बार ।। भूप बतलाइयाइ जी """।

ग्रन्तिम--

माता करी नै प्रभुजी रो आरितो भोमि दान दत होय।
श्रवण सत ग्रुर साभलो, दोप न लागै कोय।।
श्रीकृष्ण की व्याहली, सुणी सकल चितलाय।
हरि पुरवै सब कामना, मगित मुकति फलदाय।।
द्वारामित आनन्द हुवा, मुनिजन देत असीस।
जन पिय सामिलया, सीगासिण जगदीस।।

रकमिए। जी मगल सपूर्श ।।

संवत १८७० का साके १७३५ का भाद्रपदमासे शुक्कपक्षे पंचम्या चित्राभीमनक्षत्रे द्वितीयचरगो तुलालग्नेमं समाप्तीयं ॥ शुभ ॥

२४४६. को मुदीकथा—श्राचार्य धर्मकीत्ति । पत्र सं० ३ मे ३४ । म्रा० ११४४ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १६६३ । मपूर्ण । वे० मं० १३२ । स भण्डार ।

विशेष--- ब्रह्म इ गरसी ने लिखा। बीच के १६ से १८ तक के भी पत्र नहीं है।

२४६०. ख्यात्त गोपीचद्का "" '। पत्र स०१६। म्रा० ६×६३ इक्स । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा। र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० २८४ । मा भण्डार ।

विशेष--अत मे और भी रागिनियों के पद दिये हुये हैं।

२४६१. चतुर्दशीविधानकथा" ""। पत्र स० ११ । आ० ५×७ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-तथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८७ । च भण्डार ।

२५६२ चंद्रकुवर की वार्ती—प्रतापसिंह। पत्र सं० ६। ग्रा० ११×४३ डंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८४१ भादवा। पूर्ण। वे० सं० १७१। ज भण्डार।

विशेप--- ६६ पद्य है। पंडित मन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

ग्रन्तिम---

प्रतापिंसघ घर मन बसी, कविजन सदा सुहाइ। जुग जुग जीवो चदकुवर, बात कही कविराय।। ६६।

२५६३. चन्द्रनमलयागिरीकथा—भद्रसेन । पत्र स० ६ । ग्रा० ११×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७४ । छ भण्डार । विशेष--प्रति प्राचीन है । ग्रादि ग्रंत भाग निम्न प्रकार है ।

प्रारम्भ स्वस्ति श्री विक्रमपुरे, प्रणामी श्री जगदीस ।

तन मन जीवन सुख करण, पूरत जगत जगीस ।।१॥

वरदाइक श्रुत देवता, मित विस्तारण मात ।

प्रणामी मन घरि मोद सी, हरै विघन संघात ।।२॥

मम उपकारी परमगुरु, गुण ग्रक्षर दातार ।

बदे ताके चरण जुग, भद्रमेन मुनि सार ।।३॥

कहा चन्दन कहा मलयगिरि, कहा सायर कहा नीर ।

कहिये ताकी वारता, सुणो सबै वर वीर ।।४॥

श्रन्तिम— कुमर पिता पाइन छुवै, भीर लिये पुर संग ।
श्रासुन की धारा छुटी, मानो न्हावरण गग ।। १८६॥
दुख जु मन मे सुख भयो, मागौ विरह विजोग ।
श्रानन्द सों च्यारौ मिले, भयो अपूरव जोग ।। १८७॥

गाहा— कच्छवि चदन राया, कच्छव मलयागिरिविते । कच्छ जोहि पुण्यवल होई, दिढता सजोगो हवड एव ॥१८८॥

कुल १८८ पद्य है। ६ कलिका हैं।

२४६४. चन्द्नमत्तयागिरिकथा—चत्तर । पत्र सं० १० । ग्रा० १०३×४ डब्न । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स० १७०१ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० २१७२ । स्त्र भण्डार ।

यन्तिम ढाल-ढाल एहवी साधनुमु ।

कठिन माहावरत राख ही व्रत राखीहि मोइ चतर सुजारा।। अनुकरमइ सुख पामीयाजी, पाम्यो ग्रमर विमारा।। १।। ग्रुरावंता साधनमु।। गुरा दान सील तप भावना, व्या रे धरम प्रधान ॥ सुघइ चित्त जे पालइ जी पासी सुख कल्यारण ।। २ ।। ग्रुरा॰ ।। सितयाना गुरा गावता जो जावह पातिग दूर ।। भली भावना भावइ जी जाइ उपसरग दूर ॥ ३ ॥ गुर्ए।। समत सत्रासइ इकोत्तरइ जी कीधो प्रथम ग्रभास ।। जे नर नारी साभलो जी तस मन होइ उलास ।। ४ ।। गुए। ।। राखी नगर सो पावगो जी वसइ तहा सरावक लोक ।। देव गुरा नारा गाया जी लाजइ सघला लोक ा। ५ ॥ गुरा० ॥ गुजराति गच्छ जाएगीयइ जी श्री पुज्य जी जसराज ।। श्राचारइ करो सोभतो जी स वीरज रूपराज ।। ६ ।। ग्रुग् ।। तस गछ माहि सोभता जी सोभा थिवर सुजाए।।। मोहला जी ना जस घरणा जी सीव्या बुद्धि निधान ।। ७ ।। गुरा ।। वीर वचन कहइ वीरज हो तस पाटे घरमदास ।। भाऊ थिवर वरवांगीयइ जी पहित गुगाहि निवास ॥ ८ ॥ गुगा० ॥ तस सेवक इम वीनवइ जी चतर कहइ चितलाय।। ग्रुग्भिण्ता ग्रुग्ता भावसूजी तस मन विद्यत थाय ।। १ ।। गुग् ।।

॥ इति श्रीचदनमलयागिरिचरित्रसमापत ॥

२४६४. चन्द्रनषष्ठिकथा— व श्रुतसागर । पत्र स०४ । ग्रा०१२×६ इञ्च । भाषा-नंस्कृत । विषय-कथा। र० कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०१७०। क भण्डार।

विशेष — ड भण्डार मे एक प्रति वे० स० १६६ की और है।

२४६६. चन्द्नषष्टिकथा""" । पत्र स० २४ । ग्रा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-नथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८ । घ भण्डार ।

विशेष--- अन्य कथायें भी हैं।

२४६७. चन्दनषष्ठित्रतकथाभाषा—खुशालचंद काला। पत्र सं० ६। ग्रा० ११×४ द च। विषय-

२४६८. चद्रहंसकी कथा—टीकम। पत्र स० ७०। ग्रा० १४६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल स० १७०८। ले० काल स० १७३३। पूर्ण्। वे० स०,२०। घ भण्डार।-

विशेष--इसके अतिरिक्त सिन्दूरप्रकरण एकीभाव स्तोत्र मादिः और है।

२४६६. चारिमित्रों की कथा—श्राजयराज । पत्र सं० ५ । श्रा० १०६४५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स० १७२१ ज्येष्ठ सुदी १३ । ले० काल स० १७३३ । पूर्ण । वे० स० ५५३ । च भण्डार । २४७०. चित्रसेनकथा ' "। पत्र स० १८ । श्रा० १२×५६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८२१ पौष बुदी २ । पूर्ण । वे० स० २२ । च भण्डार ।

विशेष---श्लोक सख्या ४६५।

२५७१. चौद्याराधनाउद्योतककथा—जोधराज । पत्र सं० ६२ । म्रा० १२५४७३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा। र० काल ४ । ले० काल स० १९४६ मगसिर सुदी द । पूर्ण । वे० स० २२ । घ भण्डार ।

विशेष—स० १८०१ की प्रति से लिखी गई है। जमनालाल साह ने प्रतिलिपि की थी।

स॰ १८०१ चाकसू" इतना ग्रीर लिखा है। मूल्य- ५) ≥)।।) इस तरह कुल ५।।≥ लिखा है।

२५७२. जयकुमारसुलोचनाकथा"" । पत्र सं० १६। ग्रा० ७×५ दृ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७६ । छ भण्डार ।

२४७३. जिनगुरासंपत्तिकथा ""। पत्र स० ४ । ग्रा० १०३×५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा। र० काल × । ले० काल स० १७८५ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ३११ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में (वे० स॰ १८८) की एक प्रति श्रीर है जिसकी जयपुर में मागीलाल बज ने प्रतिलिपि की थी।

२४७४. जीवजीतसंहार—जैतराम । पत्र सं० ४ । ग्रा० १२४८ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य । त्रिपय-कथा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ७७६ । ग्रा भण्डार ।

विशेष-इसमे कवि ने मोह ग्रौर चेतन के सग्राम का कथा के रूप मे वर्शन किया है।

२४७४. व्येष्ठजिनवरकथा " "। पत्र स० ४। ग्रा० १३×४ इ च। भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४८३। व्य भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार में (वे० स० ४८४) की एक प्रति और है।

२४७६. ज्येष्टजिनवरकथा—जसकीित्त । पत्र सं० ११ से १४ । ग्रा० १२×५३ इ च । भाषा— हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १७३७ ग्रासीज बुदी ४ । ग्रपूर्ण । वे० सं० २०८० । ग्रा भण्डार ।

विशेष-जसकीत्ति देवेन्द्रकीत्ति के शिष्य थे।

२४७७. ढोलामारुवणी चौपई —कुशललाभगिण । पत्र स० २८ । ग्रा० ८४४ इम्र । भाषा-हिन्दी (राजस्थानी) । विषय-कथा । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वै० स० २३८ । ड भण्टार । २५७८. ढोलामारुणीकीवात "। पन स० २ मे ७०। श्रा० ६×८ दे इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ४ । ले० काल स० १६०० श्रापाढ सुदी ८ । श्रपूर्ण । वे० म० १५६१। ट भण्डार।

विशेप---१, ४, ५ तथा ६ठा पत्र नहीं है।

हिन्दी गद्य तथा दोहे है । कुल ६८८ दोहे है जिनमे ढोलामार की वात तथा राजा नल की विपत्ति श्रादि का वर्शान है । श्रन्तिम भाग इस प्रकार है—

मारूजी पीहरने कागद लिखि प्रोहित ने सीख दीनी । ई भाति नरवल को राज करें छैं । मारूजी का कू स कवर लिखमए। स्यघ जी हुवा । मालवरा की कू खि कवर वीरभाए। जी हुवा । दीय गंवर ढोला जी क हुवा । ढोला जी की मारूजी को श्री महादेव जी की किरपा मुं ग्रमर जोडी हुई । लिखमए। स्यघ जी कंवर मुं ग्रौलाद कुछाहा की चाली । ढोला सूंराजा रामस्थंघ जी ताई पीढी एक सौदस हुई । राजाधिराज महाराजा श्री मवार्ट ईमरीमिहजी तींडी पीटी एक सौ चार हुई ।।

इति श्री ढोलामारूजी वा राजा नल का विषा की वारता सपूरगा । मिती साढ सुदी म बुधवार मं० १६०० का लिखमगाराम चादवाड की पोथी सु उतार लिखित " "रामगंज मेर " ।

पत्र ७७ पर कुछ २२ गार रस के कवित्त तथा दोहे हैं। बुधराम तथा रामचरण के कवित्त एव गिरधर की कुडलिया भी है।

२४७६ ढोलामारुणी की बात " । पत्र स० ६ । प्रा० ५ रू×६ इख्र । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० स० १५६० । ट भण्डार ।

विशेप--५२ पद्य तक गद्य तथा पद्य मिश्रित हैं। वीच बीच मे दोहे भी दिये गये है।

२४८०. स्मोकारमत्रकथा" ' । पत्र स० ४२ मे ७१ । ग्रा० १२६ ४ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले• काल × । श्रपूर्सी । वे० स० २३७ । ड भण्डार ।

विगेप--- एामोकार मन्त्र के प्रभाव की कथायें हैं।

२४८१. त्रिकालचीवीसीकथा (रोटतीजकथा)—प० प्राभ्रदेव । पत्र सं०२ । ग्रा० ११३४५३ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल ४ । ले० काल स० १८२२ । पूर्ण । वे० स० २६६ । प्रा

विशेप--इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० २०८) की और है।

२४८२ त्रिकालचौबीसी (रोटतीज) कथा—गुण्तन्दि। पत्र सं०२। मा० १०५×४ ड च। मापा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १८६६। पूर्ण। वे० सं०४८२। स्र भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं॰ १३३७) ख भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं॰ २५४) इ भण्डार मे तीन प्रतिया (वे॰ सं॰ ६६२, ६६३, ६६४) और है।

२४८३. त्रिलोकसारकथा" ''। पत्र स० १२े। ग्रा० १०३८४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स० १६२७ वि० काल स० १८५० ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३८७ । त्र्य भण्डार ।

विशेष--लेखक प्रशस्ति--

स० १८५० शाके १७१५ मिती ज्येष्ठ शुक्का ७ रिविदिने लिखायित पं० जी श्री भागचन्दजी साल कोटै पधारया ब्रह्मचारीजी शिवसागरजो चेलान लेवा । दक्षण्याकेर उ भाई के राडि हुई सूबादार तक्रूंजी भाग्यो राजा जी की फते हुई । लिखित ग्रुक्जी मेघराज नगरमध्ये ।

२४८४. दत्तात्रय : " । पत्र सं० ३६ । ग्रा० १३३×६२ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० र० काल × । ले० काल स० १९१४ । पूर्ण । वे० सं० ३४१ । ज भण्डार ।

२४८४. द्श्तेनकथा—भारामञ्ज । पत्र सं० २३ । ग्रा० १२४७ डे डब्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ६८१ । श्र भण्डार ।

विशेष—इसके ग्रितिरिक्त ऋ भण्डार मे एक प्रित (वे॰ सं॰ ४१४) कं भण्डार मे १ प्रित (वे॰ स॰ २६३) ऋ भण्डार मे १ प्रित (वे॰ सं॰ ३६) च भण्डार मे १ प्रित (वे॰ सं॰ ५६६) तथा ज भण्डार मे ३ प्रितिया (वे॰ स॰ २६५, २६६, २६७) ग्रीर हैं।

२४८६. दर्शनकथाकोश''''''। पत्र सं०२२ से ६०। ग्रा०१०३४४३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्श । वे० सं० ६८ । छ भण्डार ।

२४८७. दशमूर्खोकी कथा"" "। पत्र स० ३६ । ग्रा० १२×५ई इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १७४६ । पूर्ण । वे० स० २६० । रू भण्डार ।

२४८८. दशलक्ष्णकथा —लोकसेन-। पत्र सं० १२ । ग्रा० ६३×४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। र० काल × । ले० काल सं० १८६० । पूर्ण । वे० स० ३५० । त्रा भण्डार ।

विशेष-घ भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० ३७, ३८) ग्रीर है।

२४८६. दशलच् एकथा : । पत्र सं० ४ । ग्रा० ११४४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१३ । श्रा भण्डार ।

विशेप-- ड भण्डार में १ प्रति (वे० स० ३०२) की और है।

२४६०. दशलच्राज्ञतकथा--श्रुतसागर। पत्र सं० ३। ग्रा० ११×५ इ'च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले॰ काल ×। पूर्ण। वे० स० ३०७। स्त्र भण्डार।

२४६१. दानकथा—भारामल्ल । पत्र स० १८ । ग्रा० ११३४८ इस । भाषा-हिन्दी पर्य । प्रिपय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ४१६ । स्र भण्डार ।

विशेष—इसके म्रितिरिक्त श्र भण्डार मे १ प्रित (वे० सं० ६७६) क भण्डार मे १ प्रित (वे० ग० ३०४) इ भण्डार मे १ प्रित (वे० स० ३०४) झ भण्डार मे १ प्रित (वे० स० १८०) तथा ज मण्डार मे १ प्रित (वे० स० २६८) ग्रीर है।

२४६२. दानशीलतपभावनाका चोढाल्या—समयसुन्दरगिए। पत्र मं० ३। ग्रा० १०%८ इन। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ल० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५३२। स्त्र भण्यार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २१७६) की ग्रीर है। जिन पर केवल दान शिल नप भावना ही दिया है।

२४६३. देवराजवच्छराज चौपई—सोमदेवसूरि । पत्र सं० २३ । मा० ११८११ एझ । भागा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० मं० ३०७ । हा भणार ।

२४६४. देवलोकनकथा" '। पत्र सं०२ से ४। म्रा०१२×४३ डच। भाषा-मन्यत्र । विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स०१ ५४३ कार्तिक सुदी ७। म्रपूर्ण। वे० ग०१६६१। म्र भण्डार।

२४६४. द्वाद्शव्रतकथा —पं० श्रभ्रदेव । पत्र मं० ७ । ग्रा० ६×५३ दक्ष । भाषा-मन्द्रन । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२५ । क भण्डार ।

विशेष-- इ भण्डार मे दो प्रतिया (वे॰ स॰ ७३ एक ही वेप्टन) ग्रीर है।

२४६६. द्वादशत्रतकथासंमह—नदाचन्द्रसागर । पत्र स० २२ । ग्रा० १२४६३ द्वा । भाषा-हिन्से । र० काल ४ । ले० काल सं० १८५४ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ३६६ । श्र भण्डार ।

विशेप---निम्न कथायें श्रीर है।

मौन एकादशीकथा— ब्र॰ ज्ञानसागर भाषा— हिन्दी ।
श्रुतस्कधव्रतकथा— ,, ,, हिन्दी र० काल सं० १७३६
जिनग्रुएसंपत्तिकथा— व्र॰ ज्ञानसागर भाषा— हिन्दी ।
रात्रिभोजनकथा— —

२४६७ द्वादशत्रतकथा"""। पत्र स० ७। ग्रा० १२×५ इख्र । भाषा-यस्कृत । विगय-वथा । र काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०० । श्र भण्डार ।

विशेष--प॰ ग्रभ्रदेव की रचना के ग्राधार पर इसकी रचना की गई है।

व्य भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० १७२, ४३६ तथा ४४०) स्रीर है।

२४६८. धनदत्त सेठ की कथा "" पत्र सं० १४। म्रा० १२१४७ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-

२४६६. धन्नाकथानक'''''। पत्र सं० ६ । ग्रा० ११ई×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० ४७ । घ भण्डार ।

२६००. धन्नासांतिभद्रचौपई ""। पत्र सं० २४। ग्रा० ८४६ इख्र । भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० सं० १६७७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । मुगलकालीन कला के ३८ सुन्दर चित्र हैं। २४ से ग्रागे के पत्र नहीं है । प्रति

२६०१. धर्मवृद्धिचौपई—लालचन्द । पत्र सं० ३७ । ग्रा० ११५×४२ इञ्च । विषध-कथा । भाषा-हिन्दी पद्य । र० काव स० १७३६ । ते० काल सं० १८३० भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ६० । स्त्र भण्डार ।

विशेष—खरतरगच्छपति जिनचन्द्रसूरि के शिष्य विजेराजगिए। ने यह ढाल कही है। (पूर्ण परिचय दिया हुम्रा है।

२६०२. धर्मबुद्धिपापबुद्धिकथा " ""। पत्र सं० १२ । ग्रा० ११×५ डब्ब । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८५५ । पूर्ण । वे० सं० ६१ । ख भण्डार ।

२६०३. धर्मबुद्धिमन्त्रीकथा--वृन्दावत । पत्र सं० २४ । ग्रा० ११×५३ इख्र । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल स० १६०७ । ले० काल स० १६२७ सावगा बुदी २ । पूर्ण । वे० स० ३३६ । क भण्डार ।

नंदीश्वरकथा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ८ । ग्रा० १२×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६२ ।

विशेष—सागानेर मे ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी।

छ भण्डार मे १ प्रति (वे॰ सं॰ ७४) सं॰ १७८२ की लिखी हुई स्रौर है।

२६०४ नंदीश्वरविधानकथा—हिर्षेशा । पत्र सं० १३ । ग्रा० ११६४५ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । क भण्डार ।

२६०६. नंदीश्वरविधानकथा''''' । पत्र सं०३। मा०१०९४४६ इच। भाषा-संस्कृत । विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० स०१७७३। ट भण्डार।

२६०७. नागमता"" "। पत्र सं० १० । ग्रा० १२×५६ इंच । भाषा-हिन्दी (राजस्थानी) । विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६३ । त्र्य भण्डार। विशेष-- प्रावि श्रंत भाग निम्न प्रकार है। श्री नागमंता निस्यते--

> नगर हीरापुर पाटमा अगीयड, माहि हर मेदारदेव । नगिंग करह वर नाम लेट नइ, करह तुन्हारी सेव गर्ध करह तुम्हारी मेन्नह, यमिगराह सेहार्वध्व । काल करोहनड नित्यमिक बर, मयर वेम वा सकीया छन्। नाद वेद श्राणद प्रिया, यदह तुम्लारी नेप । नगर हीरापुर पाटमा भगीगड, मिर्न रेट में नर्देर ॥३॥ राउ देहरागर बद्दठंड, माणे निरमल नीर । इक्त गवड भागीरमी, समुद्रह यहाइ सीर ॥४॥ नीर लेई उक्त मोगन्यत नागी मृद्धि पणवार । द्यापं सवारत परीं लोगह, मगुद्रह पर्देगार ॥५॥ महस्र ब्रह्मामी जिहा देवता, जाई तिमार्शन वरहर । गगा तराउ प्रवाह जु मायड, राज देहरा गग्यह एउ ॥६॥ राम मोबल्या छे बाढीये, मागो सर ही जाह । आगो मुरही पातरी, आगो गुररी भाइ ११५॥ धाले मुस्ही भाइ नइ, घाले गुगधी पातरी। मानतुन छीनद पापनी, नरि क्ण भीर मुरातकी ॥=॥ जाइ बेवल करण्ड, वेषधो गए मच १२ व सारी। पूष्फ करंडक भरीनद, मायो राजमी बन्याहर बाजी ।।हा।

1 211-

एक कामिणि भवर बाली, विद्योही भरतार ।
उन तएइ बिर बरसही, ताल्हण भमी मंचारि ।।
ताल्हण भ्रमीय संचारि, मुभ प्रिय मरइ भपूटद ।
बाजि लहीर विष धंधालिउ, ताल्ह धवल नडं ऊटर
रदन करइ मुख धाह हुउं सु सनेहा टाली ।
विद्योही भरतार एक कामिणि श्रह बाली ।।३।।
डाकमुंडा वल बाजही, बहु कासी भमकार ।

चंद्र रोहिग्गी जिम मिलिउं, तिम घगा मिली भरतार नइ ।।
तित्य गिरागाउ तूठउ बोलइ, ग्रमीयविष गयउ छडी ।
डक तगाइ शिर वूठउ, उठिउ नाह हुई मन संती ।।
'मू'घ मंगलक छाजइ,''''''''
बहु कासी भमकार डाक छंडा कल वाजइ ।।
इति श्री नागमता संपूर्णम् । ग्रन्थाग्रन्थ ३००७

पोथी ग्रा॰ मेरकीर्ति जी की ।। कथा के रूप मे है। प्रति ग्रगुद्ध लिखी हुई है।

२६०८. नागश्रीकथा—ब्रह्मनेमिद्त्त । पत्र सं०१६। ग्रा०११३४५ इंच। भाषा–संस्कृत । विषय– कथा। र० काल ४। ले० काल सं०१८२३ चैत्र सुदी ६। पूर्ण। वे० सं०३६६। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३६७) तथा ज भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १०८) की स्रोर है।

ज भण्डार वाली प्रति की गरूढमलजी गोधा ने मालपुरा मे प्रतिलिपि की थी।

२६०६. नागश्रीकथा—िकशनिसिंह। पत्र स०२ ७५। आ० ७३×६ इन । भाषा—िहन्दी। विषय-कथा। र० काल सं० १७७३ सावरा मुदी ६। ले० काल सं० १७८५ पौष बुदी ७। पूर्ण। वे० स० ३५६। इन् भण्डार।

विशेष—जोवनेर मे सोनपाल ने प्रतिलिपि की थी। ३६ पत्र से आगे भद्रबाहु चरित्र हिन्दी मे है किन्तु अपूर्ण है।

२६१०. नि शल्याष्टमीकथा"" । पत्र सं० १ । ग्रा० १०×४६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० २११७ । स्त्र भण्डार ।

२६११. निशिभोजनकथा— ब्रह्मनेमिल्त । पत्र सं०४० से ५५ । आ० ८३×६६ इक्क । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ते० काल × । अपूर्ण । वे० सं०२०८७ । स्र भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ६८) की और है जिसकी कि सं० १८०१ म महाराजा ईश्वर सिंहजी के शासनकाल मे जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

२६१२. निशिभोजनकथा"" "। पत्र स० २१। ग्रा० १२×५६ दश्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल ×। ले∙ काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३८३। क भण्डार।

२६१३. नेमिट्याह्लो" ""। पत्र सं॰ ३। आ० १०×४ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले॰ काल ×। अपूर्ण। वे० स० २२४५। ऋ भण्डार।

विशेष---प्रारम्भ-

नरसरीपुरी राजियाहु समदिवजय राय धारो । तस नंदन श्री नेमजी हु सावल वरण सरीरो ।। धन धन श्रदे छी ज्यो तेव राजसदरमण करता । दालदरनासे जीनमो सो सीरजी हु हुती ।। समदवजजी रो नंद श्रतेरो ने श्रावण जी । हतो सावली हु श्री रो नमे यल्याण मुपावणो जी ।।

प्रति ग्रशुद्ध एव जीर्गा है।

२६१४. नेमिराजलब्याहलो—गोपीकृष्ण । पत्र मं०६ । ग्रा०१०४४ रख । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल सं०१८६३ प्र० सावण बुदी ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० मं० २२४० । श्र्य भण्डार ।

प्रारम्भ--

श्री जिए। चरए। कमल नमो नमो प्रए। गार । नेमनाथ र ढाल तरों व्याहव थहु गुखदाय ।। द्वारामती नगरी भली सोरठ देम ममार । इन्द्रपुरी सी ऊपमा मुंदर वहु विस्तार ।। चौडा नो जोजए। तिहा लावा वारा जाए। । साठि कोठि घर माहि रे वाट्र यहत्तर प्रमाए। ।। २।।

ग्रन्तिम---

राजल नेम तर्गा व्याहलो जी गावमी जो नरनारी । भग्र ग्रुण सुग्रमी भलो जी पावसी सुख ग्रपार ॥

कलश— प्रथम सावरा चोय सुकली वार मगलवार ए।
संवत् श्रठारा वरस तरेमिठ माग जुल मुकार ए।
श्री नेम राजल क्रमन गोपी तास चरत वखानउ।
सुतार सीखा ताहि ताहि भाखी वही कथा प्रमारा ए।।

इति श्री नेम राजल विवाहलो सपूर्या।

इसमे आगे नव भव की ढाल दी है वह अपूर्ण है।

२६१४. पंचाख्यान—विष्णु शर्मा । पत्र स०१। ग्रा०१२३×५३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० २०६६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-केवल ६३वा पत्र है। ड भण्डार मे १ प्रति (वै० सं० ४०१) अपूर्ण और है।

२६१६ परसरामकथा '। पत्र स० ६। ग्रा० १०१×४३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१७ । स्त्र भण्डार ।

२६१७ पत्यविधानकथा खुशालचन्द्। पत्र स० २१। ग्रा० १२×५ इख्र। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल स० १७८७ फाग्रुन बुदी १०। पूर्ण। वे० स० २०। मा भण्डार।

२६१८ पत्यविधानव्रतोपाख्यानकथा—श्रुतसागर । पत्र स० ११७ । श्रा० ११५ ×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४५४ । क भण्डार ।

विशेष — ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) तथा ज भण्डार में १ प्रति (वे० स० ६३) जिसका ले० काल स० १६१७ शांके हैं ग्रीर हैं।

् २६१६ पात्रद्।तक्तथा — ब्रह्म नेमिद्त्त । पत्र स० ५ । ग्रा० ११×४३ इख । भाषा – संस्कृत । विषय – कथा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७८ । त्र्य भण्डार ।

विशेप - ग्रामेर मे प॰ मनोहरलालजी पाटनी ने लिखी थी।

२६२८ पुर्याश्रवकथाकोश — मुमुज्ञ रामचन्द्र । पत्र स० २००। ग्रा० ११×४ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० कृाल × । पूर्ण । वे० स० ४६८ । क भण्डार ।

विभेप— इ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४६७) तथा छ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६६, ७०) ग्रीर हैं किन्तु तीनो ही ग्रपूर्ण है।

२६२१. पुर्याश्रवकथाकोश--दौलतराम । पत्र स० २४८ । ग्रा० ११३×६ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र० काल स० १७७७ भादवा सुदी ५ । ले० काल सं० १७८८ मगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ३७० । ग्रा भण्डार ।

विशेष—ग्रहमदाबाद मे श्री ग्रभयमेन ने प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार मे १ प्रतिया (वे० स० ४३३, ४०६, ५६५, ५६६, ५६६, ४६६, ४६६) तथा च भण्डार मे ६ प्रतिया (वे० स० ४६३, ४६४, ४६४, ४६६, ४६६, ४६६) तथा च भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ६३५) छ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १७७) ज भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १६४६) ग्रीर है।

२६२२ पुर्याश्रवकथाकोश ' ' । पत्र सं० ६४ । ग्रा० १६×७ई इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ५८ । ग भण्डार ।

विशेष-कालूराम साह ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि खुशालचन्द के पुत्र सोनपाल से कराकर चौधरियों के मिंदर में चढाई।

इसके ग्रतिरिक्त ड भण्डार में एक प्रति (वे० स० ४६२) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६०) [अपूर्ण] ग्रीर हैं।

२६२३. पुरवाश्रवकथाकोश—देकचन्द्र । पत्र २० ३८१ । ग्रा० ११६४८ रक्ष । नापा-हिन्दी पत्र । विषय-कथा । र० कारा स० १६२८ । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० ग० ४६७ । क भण्डार ।

२६२४ पुण्याश्रवकथाकोरा की सूची " । पत्र स० ४ । ग्रा० ६ र्रे ४ ४ इझ । भागा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वै० ग० ३८६ । क्त भण्यार ।

२६२४ पुष्पांजलीत्रतकथा-श्रुतकीत्ति । पत्र ग० ४ । ग्रा० ११८५ दृख । भाषा-मम्मृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५६ । ग्रा मण्यार ।

विशेष-ग भण्टार में एक प्रति (वे० स० ५६) शीर है।

२६२६ पुष्पाजलीव्रतकथा—जिनदास । पश त० ३१ । घ्रा० १०२८८ द्व रखा भाषा-सम्पृत । विषय-कथा। र० काल 🗙 । ले० काल स० १६७७ फाग्रुग्। बुदी ११ । पूर्ग्। वे० ग० ८०८ । ऋ भण्डार ।

विशेष—यह प्रति वागड देश स्थित घाटसल नगर मे श्री वामुपूज्य चैत्यालय मे हासू ठानरमी के शिष्य गणदास ने लिखी थी ।

२६२७ पुष्पाजलीव्रतविधानकथा । पत्र स०६ मे १०। ग्रा०१०×४ दे दक्ष । मापा-मग्द्रतः । विषय-कथा। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० स० २२१ । च भण्यारः ।

२६२८. पुष्पांजलोत्रतकथा—खुशालचन्द्र । पत्र स०६। ग्रा०१२×५३ टक्न । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स०१९४२ कार्तिक बुदी ४ । पूर्ण । वे० स०३०० । ख भण्टार ।

विशेप—ज भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १०६) की ग्रीर है जिने महात्मा जोशी प्रसालाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

२६२६. वैतालपद्मीसी " । पत्र स० ५५ । ग्रा० ५ $\frac{3}{8}$ \times ४ इञ्च । भाषा-सम्बत्त । विषय-वधा । २० काल \times । मपूर्ण । वे० स० २५० । च भण्ड1र ।

२६३० भक्तामरस्तोत्रकथा—नथमल । पत्र स० ८६ । ग्रा० १०५ ×५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स० १८२६ । ले० काल स० १८५६ फाल्गुरा बुदी ७ । पूर्णा । वे० स० २५५ । ड भण्डार ।

विशेष--च भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७३१) स्रौर है।

२६३१ भक्तामरस्तोत्रकथा—विनोदीलाल । पत्र स०१५७ । आ०१२५४७३ इख्र । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल स०१७४७ सावन सुदी २ । ले० काल स०१६४६ । प्रपूर्ण । वे० स०२२०१ । अ

विशेप-वीच का केवल एक पत्र कम है।

इसके म्रतिरिक्त ड भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ स॰ ५५३, ५५४) छ भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ स॰ १८१, २२८) तथा भा भण्डार मे १ प्रति (वे॰ स॰ १२६) की ग्रीर है

२६३२. भक्तामरस्तोत्रकथा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० १२८ । ग्रा० १३४ इझ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स० १६३१ फागुगा सुदी ४ । ले० काल स० १६३८ । पूर्ण । वे० सं० ५४० । क भण्डार ।

२६३३ मोजप्रबन्ध " । पत्र स०१२ से २५। ग्रा०११ $\frac{5}{2}$ \times ४ $\frac{3}{2}$ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय— कथा। र० काल \times । ले० काल \times । ग्रपूर्ण । वे० सं०१२५६। त्र्य भण्डार ।

विशेष—ड भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५७६) की ग्रीर है!

२६३४ मधुकेटभवध (महिपासुरवध) " । पत्र स० २३ । म्रा० ५ % ४६ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल 🗶 । ले० काल 🗶 । म्रपूर्ण । वे० स० १३५३ । स्त्र भण्डार ।

२६३४. मधुमालतीकथा—चतुर्भु जदास । पत्र स० ४८ । म्रा० ६×६ ईंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १६२८ फागुरा बुदी १२ । पूर्गा । वे० स० ५८० । ड भण्डार ।

विशेष—पद्य स० ६२ = । सरदारमल गोधा ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । ग्रन्त के ५ पत्रो मे स्तुति दी हुई है । इसी भण्डार मे १ प्रति [ग्रपूर्ण] (वे० स० ५ ८१) तथा १ प्रति (वे० स० ५ ८२) की [पूर्ण] ग्रीर हैं ।

२६३६ मृगापुत्रचडढाला " । पत्र स० १ । ग्रा० ६ $\frac{5}{4}$ \times ४ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल \times । पूर्ण । वे० स० ५३७ । श्र्य भण्डार ।

विशेष-मृगारानी के पुत्र का चौढाला है।

२६३७ माधवानलकथा—न्त्रानन्द् । पत्र स० २ से १०। ग्रा० ११ \times ४२ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल \times । ले० काल \times । श्रपूर्ण । वे० स० १८०६ । ट भण्डार ।

२६३८ मानतुगमानवितचौपई—मोहनविजय। पत्र सं० २६। ग्रा० १० \times ४ $१ छ छ । भाषा- हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल <math>\times$ । ले० काल स० १८५१ कार्त्तिक सुदी १। पूर्ण। वे० सं० ५३। छ भण्डार।

विशेष---ग्रादि ग्र तभाग निम्न प्रकार है-

श्रादि— ऋषभ जिराद पदाबुजै, मधुकर करी लीन।
श्रागम ग्रुरा सोइसवर, ग्रांत ग्रारद थी लीन।।१।।
यान पान मम जिनकम, ताररा भविनिध तोय।
ग्राप तर्या तारै ग्रवर, नेहनै प्रसारित होइ।।२।।
भावै प्रसामुं भारती, वरदाता सुविलास।
बावन ग्रह्यर की भरयी, ग्रखय खजानो जाम।।३।।

बुक्र करया केई शनि धना, एह बीने हनी शनि । जिम मूकार तेहना, पद नीको जिपे भनि ॥४।

ग्रन्तिम-- पूर्ण काय मुनीचद्र मुप वर्ष, बुद्धि माम शुचि पक्षे है । (माने पत्र फटा हुमा है) ४७ दान हैं।

२६३६. मुक्तावित्तविश्वास्था-श्रुतमागर । पत्र गं० ४ । ग्रा० ११४५ इंच । भागा-मंग्रुत । विषय-कया । र० काल ४ । ले० काल स० १८७३ पीप बुदो ५ । पूर्ण । वे० ग० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष--यति दयाचद ने प्रतिलिपि की यो।

२६४० मुक्तावित्रतिकथा—मोमप्रभ । पत्र ग०११ । गा०१०३४४३ ट'च । भाषा-मंस्तृत । विषय-कथा । र० काल ४ । ले० काल ग०१६४५ सायन गुदी २ । वे० ग० ७४ । छ भाषार ।

विजेप--जयपुर मे नेमिनाथ चैत्यालय मे बानूलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

२६४१ मुक्तावितिधानकथाः । पत्र न० ६ ने ११। प्रा० १०४४३ उच । भाषा-अपग्र म। विषय-कथा। र० काल ४। ले० काल नं० १४४१ फाल्गुन मुदी १। प्रतूर्ण । वे० नं० १६६= । स्त्र भण्डार।

विशेष—मंबत् १५४१ वर्षे फाल्युन नुदी ५ श्रीमूलमधे बनात्मारगः गरस्वतीगस्त्रे श्री द्वाहुँदाचार्याः विशेष महारिक श्रीपद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारिक श्रीयुभचद्रदेवा तत्सिष्य मुनि जिनचन्द्रदेवा राहेलवालान्वये भावमागोधे रांधर्म विता भार्या होली तत्पुत्राः मंघवी चाहह, श्रासल, कालू, जालप, लखमण तेषा मन्ये मत्रदी कालू भार्या कौलिसिरी तत्पुत्रा हेमराज रिषभदाम तैने री साह हेमराज भार्या हिमिमरी एत रिद राहिग्गीमुक्तावली स्थानक नित्यापत ।

२६४२. मेघमालात्रतोद्यापनकथा । पत्र त० ११। ग्रा० १२×६२ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० द१। घ भण्डार।

विजेप--च भण्डार मे एक प्रति (वे॰ स॰ २७६) ग्रीर है।

२६४२. सेघमालाव्रतकथा " । पत्र स० १। ग्रा० ११×५ इ.च । भाषा-नंस्कृत । विषय-वया। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०६ । स्त्र भण्डार ।

विशेप—छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७४) की स्रीर है।

२६४४ सेघमाल। त्रतकथा — खुशालचद् । पत्र स० ४ । ग्रा० १० है ४४ है इ च । भाषा – हिन्दी। विषय – कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५८१। क भण्डार।

२६४४ मौनिव्रतकथा--गुण्भद्र । पत्र स० ५। ग्रा० १२×५३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४४१ । व्य भण्डार । २६४६. मौनिव्रतकथा ""। पत्र सं०१२। ग्रा०११३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८२। घ भण्डार।

२६४७. यमपालमातंगकीकथा " " । पत्र स० २१ । म्रा० १०४५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १५१ । ख भण्डार ।

विशेष—इस कथा से पूर्व पत्र १ से ६ तक पदारथ राजा दृष्टात कथा तथा पत्र १० मे १६ तक पंच नमस्कार कथा दी हुई है। कही २ हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है। कथायें कथाकोश मे से ली गई हैं।

२६४८. रत्तावंधनकथा—नाथूराम । पत्र सं० १२ । ग्रा० १२३४८ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । श्रा भण्डार ।

२६४६. रत्ताबन्धनकथा "" । पत्र स०१। म्रा०१०३×५ इंच। भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स १८३५ सावन सुदी २। वे० सं०७३। छ्र भण्डार।

२६४० रत्नत्रयगुग्पकथा—पं शिवजीलाल । पत्र सं १०। ग्रा० ११६४५ ह च । भाषा- सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७२ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--- ख भण्डार मे एक प्रति (वे॰ स॰ १५७) ग्रीर है।

२६४१. रत्नत्रयविधानकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० ४ । ग्रा० १११×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०४ श्रावरा बुदी १४। पूर्ण। वे० स० ६५२। स भण्डार। विशेष—छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७३) ग्रौर है।

२६४२ रत्नावित्रत्रतस्था—जोशी रामदास । पत्र सं ० ४। ग्रा० ११×४ दे इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण । वे० सं० ६३४ । क भण्डार ।

२६४२. रिवव्रतकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० १८। ग्रा० ६५ \times ६ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा। र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० ३९। ज भण्डार।

र६४४. रविव्रतं कथा—देवेन्द्रकीर्ति । पंत्र सं० १८ । ग्रा० ६×३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल सं० १७८५ ज्येष्ठ सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४० । छ भण्डार ।

२६४४. रविव्रतकथा—भाऊकवि । पत्र सं० १० । ग्रा० ६३×६३ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १७६५ । पूर्ण । वे० सं० ६६० । ग्रा भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ७४), ज भण्डार में एक प्रति (वे॰ स॰ ४१), भा भण्डार में एक प्रति (वे॰ स॰ ११३) तथा ट भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ १७५०) ग्रीर है। २६४६. राठौडरतनमहेशदशोत्तरी ' ""। पत्र म०३ से ८। आ०६५४४ इंच। भाषा-हिन्दी [राजस्थानी] विषय-कथा। र० काल स० १५१३ वैशाख शुक्का ६। ले० काल ×। श्रपूर्ण। वे० म०६७७। अप्रभण्डार।

विशेष--- ग्रन्तिम पाठ निम्न प्रकार है---

दाहा---

सावित्री उमया श्रीया श्रागै साम्ही श्राई।
सुदर सोचने, इदिर लइ बघाइ।।१।।
ह्या धविल मगल हरप वधीया नेह नवल।
सूर रतन सतीया सरीस, मिलीया जाड महल्ल।।२।।
श्री सुरनर फुरजधरे, वैकुठ कीधावाम।
राजा रयगायरतगी, जुग श्रविचल जस वास ।।३।।
पख वैशाखह तिथि नवमी पनरौतरे वरस्स।
वार शुकल डीयाविहद, हीदू तुरक वहस्स।।४।।
जोडि भगै खिडीयौ जगै, रासो रतन रसाल।
सूरा पूरा सभलउ, भड मोटा भूपाल।।४।।

दिली राउ वाका उजेगी रासा का च्यार तुगर हिसी किंप वात कैसी ।। इति श्री राठौडरतन महेस दासौत्तसरी वचिनका सपूर्ण ।

२६४७. रात्रिभोजनकथा—भारामङ्खा। पत्र सं० ८। ग्रा०११३४८ इच । भाषा-हिन्दी पछ। विषय-कथा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स०४१५। स्त्र भण्डार।

> २६४८. प्रति सं०२। पत्र सं०१२। ले० काल ×। वे० स०६०६। च मण्डार। विशेष—इसका दूसरा नाम निशिभोजन कथा भी है।

२६४६. रात्रिभोजनकथा— किशनसिंह । पत्र स० २४ । ग्रा० १३×५ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल सं० १७७३ श्रावरा सुदी ६ । ले० काल स० १६२८ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० म० ६३५ । क भण्डार ।

विशेष—गं भण्डार मे १ प्रति और है जिसका ले० काल सं० १८८३ है। कालूराम साह ने प्रतिलिपि कराई थी।

२६६०. रात्रिभोजनकथा' "। पत्र स० ४। ग्रा० १०३×५ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा।' र० काल × । ले• काल × । श्रपूर्ण । वे० सं• २६६ । ख भण्डार ।

विशोष-- व्य भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १६१) और है।

२६६१. रात्रिभोजनचौपई: ""। पर्त्र सं०२। ग्रा०१०४४३ ईश्व। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३१। श्रा भण्डार।

र्६६२ रूपसेनचरित्र" । पत्र सं० १७ । म्रा० १०×४२ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६० । हा भण्डार ।

२६६३. रैद्व्रतकथा—देवेन्द्रकीत्ति । पत्र सं० ६ । ग्रा० १०४५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ३१२ । स्त्र भण्डार ।

२६६४. प्रति सं०२। पत्र स०३। ले० काल सं०१८३४ ज्येष्ठ बुदी १। वे० स० ७४। छ

विशेष-- लश्कर (जयपुर) के मन्दिर में केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

इसके ग्रतिरिक्त आ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १८५७) तथा स भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६६१) की ग्रीर हैं।

२६६४. रैंदन्नतकथा''''''। पत्र सं०४ । ग्रा०११ \times ४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण। वे० स०६३६। क भण्डार।

विशेष—व्य भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ३६५) की है जिसका ले० काल स० १७८५ ग्रासोज सुदी ४ है।

२६६६ रोहिस्सित्रतकथा—आचार्य भानुकीर्त्त । पत्र सं०१ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा-मस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८८८ जेष्ठ मुदी ६ । वे० सं० ६०८ । आ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वै० सं० ५६७) छ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७४) तथा ज भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १७२) श्रौर है।

२६६७. रोहिग्गित्रतकथा" '। पत्र सं० २। ग्रा० ११× द इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल ×। पूर्ण । वै० सं० ६६२ । ग्रा भण्डार ।

विशेष—ह भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ६६७) तथा मा भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ६५) जिसका ने• काल सं० १६१७ वैशाख सुदी ३ श्रीर हैं।

२६६८. लिब्धिविधानसथा—पं० ग्राभ्रदेव। पत्र सं० ६। मा० ११×४३ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-सथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०७ भादवा सुदी १४। पूर्ण । वे० सं० ३१७। च भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति का सक्षिप्त निम्न प्रकार है-

संवत् १६०७ वर्षे भादवा सुदी १४ सोमवासरे श्री ग्रादिनाथचैत्यालये तक्षकगढमहादुर्गे महाराउ

श्रीरामचंदराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकु दाचार्यान्वये ""मंडलाचार्य धर्मचन्द्राम्नाये खण्डेलवालान्वये ग्रजमेरागोत्रे सा. पद्मा तद्भार्या केलमदे "" सा. कालू इदं कथा " मंडलाचार्य धर्मचन्द्राय दत्त ।

२६६६. रोहिस्सीविधानकथा " ""। पत्र सं० द । ग्रा० १०×४३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा। र० काल × । ले० काल × । पूर्स । वे० सं० ३०६ । च भण्डार ।

२६७० लोकप्रत्याख्यानधमिलकथा "। पत्र सं० ७। आ० १०४१ इ च। भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। ले॰ काल ४। र० काल ४। पूर्ण। वे॰ सं० १८५०। आ भण्डार।

विशेप--श्लोक स० २४३ हैं। प्रति प्राचीन है।

२६७१. वारिपेण्मुनिकथा—जोधराजगोदीका । पत्र स० ५। ग्रा० ६×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १७६६ । पूर्ण । वे० स० ६७४ । ड भण्डार ।

विशेष-चूहामल विलाला ने प्रतिलिपि की गयी थी।

२६७२ विक्रमचौवीलीचौपई--- त्रभयचन्द्सूरि। पत्र स० १३। ग्रा० ६×४३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल स० १७२४ ग्राषाढ बुदी १०। ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० १६२१। ट भण्डार।

विशेष--मितसुन्दर के लिए ग्रन्थ की रचना की थी।

२६७३ विष्णुकुमारमुनिकथा--श्रुतसागर । पत्र स० ५ । ग्रा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३१० । श्र्य भण्डार ।

२६७४. विष्णुकुमारमुनिकथा : "। पत्र सं० ४ । ग्रा० १०×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७४ । स्व भण्डार ।

२६७४. वैदरभीविवाह—पेमराज । पत्र स० ६ । ग्रा० १०×४३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२५४ । स्त्र भण्डार ।

विशेप---ग्रादि मन्तभाग निम्न प्रकार है---

दोहा—

जिए। घरम माही दीपता करो घरम सुरंग।
सो राधा राजा रागोइ ढाल भवह रग।।१।।
रग चिगारत्य न भावसी किंवता करो विचार।
पढता सिव सुख सपजे हुरस भान हानइ भाव।।
सुख मामगो हो रंग महल में निस भार पोढी सेजजी।
दोध ग्रनता उफण्या जागोनदार विखोराछ मेहजी।।

कथा-साहित्य

ग्रन्तिम---

कवनाथ मुजारा छै वैदरभी वेस्वार ।

सुख ग्रनंता भोगिया बेले हुवा ग्ररागार ।।

दान देई चारित लीयौ होवा तो जय जयकार ।

पेमराज ग्रुक इम भर्गी, मुकत गया तत्काल ।।

भर्गी ग्रुरों जे साभली वैदरभी तर्गो विवाह ।

भएगा तास वे सुख सपजे पहुत्या मुकत मकार ।

इति वैदरभी विवाह संपूर्ण ।।

ग्रन्थ जीर्गा है। इसमे काफी ढालें लिखी हुई हैं।

२६७६ व्रतकथाकोश-श्रुतसागर । पत्र सं० ७६ । ग्रा० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० सं० ८७८ । त्र्य भण्डार ।

२६७७. प्रति सं०२। पत्र सं०६०। ले० काल सं० १६४७ कार्त्तिक सुदी ३। वे० सं०६७। छ् भण्डार।

प्रशस्ति—संवत् १६४७ वर्षे कार्तिक सुदि ३ वुधवारे इदं पुस्तकं लिखायतं श्रीमद्काष्ठासचे नदीतरगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमे भट्टारक श्रीसोमकीर्त्ति तत्पट्टो भ० यश-कीर्त्ति तत्पट्टो भ० श्रीउदयसेन तत्पट्टोधारणधीर भ० श्रीत्रिभुवनकीर्त्ति तत्विष्य ब्रह्मचारि श्री नरवत इदं पुस्तिका लिखापित खडेलवालज्ञातीय कासलीवाल गोत्रे साह केशव भार्या लाडी तत्पुत्र ६ वृहद पुत्र जीनो भार्या जमनादे। द्वि० पुत्र खेमसी तस्य भार्या खेनलदे तृ० पुत्र इसर तस्य भार्या ग्रहकारदे, चतुर्थ पुत्र नातू तस्य भार्या नायकदे, पंचम पुत्र साह वाला तस्य भार्या वालमदे, पष्ठ पुत्र लाला तस्य भार्या ललतादे, तेषामध्ये साह वालेन इद पुस्तकं कथाकोशनामधेयं ब्रह्म श्री नर्वदावै ज्ञानावर्णीकर्मक्षयार्थं लिखाप्य प्रदत्त । लेखक लषमन श्रेतावर ।

संवत् १७४१ वर्षे माहा सुदि ५ सोमवासरे भट्टारक श्री ५ विश्वसेन तस्य शिष्य मंडलाचार्य श्री ३ जय-कीर्त्ति पं० दीपचद प० मयाचंद युक्तै ।

२६७८ प्रति सं०३। पत्र सं०७३ से १२६। ले० काल १५८६ कार्तिक सुदी २। ग्रपूरा। वे० सं० ७४। छ भण्डार।

२६७६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८०। ले॰ काल सं० १७६५ फागुरा बुदी ६। वे० सं० ६३। छ् भण्डार।

इनके श्रतिरिक्त क भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ६७५, ६७६) ङ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ६८८) तथा ट भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २० ७३, २१००) श्रीर हैं।

२६८०. त्रतकथाकोश--पं०दामोद्र । पत्र सं० ६ । ग्रा० १२×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७३ । क भण्डार ।

२६८१. व्रतकथाकोश-स्कलकीर्त्त । पत्र स० १६४ । ग्रा० ११४५ दश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-

विशेष—छ् भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ७२) की श्रीर है जिसका ले० काल सं० १८६६ सावन बुदी ५ है। क्वेताम्बर पृथ्वीराज ने उदयपुर मे जिसकी प्रतिलिपि की थी।

२६८२ व्रतकथाकोश--देवेन्द्रकीित्त । पत्र स० ८६ । ग्रा० १२४५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । श्रपूर्ण । वे० सं० ८७७ । श्र भण्डार ।

विशेष—चीच के भ्रनेक पत्र नहीं है। कुछ कथायें पं० दामोदर की भी हैं। क मण्डार में १ श्रपूर्ण प्रति (वे० स० ६७४) भीर है।

२६२३ व्रतकथाकोशः ""। पत्र स०३ से १०० । ग्रा० ११×५३ इंच । भाषा-संस्कृत ग्रपन्न श । विषय-कथा। र० काल × । ले० काल स० १६०६ फागुगा बुदी ११ । श्रपूर्ण । वे० सं० ८७६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-बीच के २२ मे २५ तथा ६५ मे ६६ तक के भी पत्र नहीं है। निम्न कथाग्रों का सग्रह है-

- १. पुष्पांजितिविधान कथा । सस्कृत पत्र ३ मे ५
- २. श्रवणद्वादशीकथा—चन्द्रभूपण के शिष्य पं० प्रश्नदेव " " ५ मे =

श्रन्तिम-चद्रभूपणशिष्येण कथेयं पापहारिणी। सस्कृता पडिताश्रेण कृता प्राकृत सूत्रत ॥

રૂ	रत्नत्रयविधानकथा—पं० रत्नकीत्ति	****	संस्कृत गर	पत्र	द से ११
8.	षोडशकारणकथा—षं० अभ्रदेव	••••	,, पह		११ से १४
ሂ.	जिनरात्रिविधानकथा ःःः।	****	"	53	१४ से २६
	२६३ पद्य है	1		**	
ξ.	मेघमालात्रतकथा " ।	••	,, गद्य	"	२६ से ३१
ዏ .	दशलाचिणककथा—लोकसेन।	****	3 7 3 3	77	३१ से ३४
5	सुगंघदशमीत्रतकथा ।	****	3> 29	? ?	३५ से ४०
£.	त्रिकालचउवीसीकथा—स्रभ्रदेव।	••	" " ,, पद्य	77 33	४० से ४३
१०	रत्नत्रयविधि—श्राशाधर	••••	,, गद्य	•••	४३ से ५१

प्रारम्भ श्रीवर्द्ध मानमानस्य गौतमादीश्चसद्गुरून् । रत्तत्रयिविधि वक्ष्ये यथाम्नायिवज्ञुद्धये ॥१॥

अन्तिम प्रशस्ति— साबी मिडतवागवशसुगर्गः सज्जैनचूडामरो । मालाख्यस्यमुत प्रतीतमिहमा श्रीनागदेवोऽभवत् (।१।)

य श्रुक्कादिपदेषु मालवपते नात्रातियुक्तं शिवं। श्रीसल्लक्षरायास्वमाश्रितवसः का प्रापयंत्र. श्रियं ॥२॥ श्रीमत्केशवसेनार्यवर्धवाक्यादुपेयुपा । पाक्षिकश्रावकीभाव तेन मालवमडले ॥ सल्लक्षरापुरे तिष्ठन् गृहस्थाचार्यकुजरः । पडिताशाधरो भक्त्या विज्ञमः सम्यगेकदा ॥३॥ प्रायेगा राजकार्येऽवरुद्धम्माश्रितस्य मे । भाद्रं किचिदनुष्टेय व्रतमादिश्यतामिति ॥४॥ ततस्तेन समीक्षो वै परमागमविस्तरं। उपविष्टसतामिष्टस्तस्यायं विधिसत्तमः ॥५॥ तेनान्यंश्च यथाशक्तिर्भवभीतेरनुष्टितः । ग्र थो बुधाशाधारेगा सद्धम्मार्थमयो कृत: ।।६।। ८३ १२ विक्रमार्कव्यशीत्यग्रद्वादशाव्दशतात्यये । दशम्यापश्चिमे कृष्णे प्रथता कथा ॥७॥ पत्नी श्रीनागदेवस्य नंद्याद्धम्में सा नायिका। यासीद्रत्नत्रयर्विधि चरतीना पुरस्मरी ।। न।।

इत्याशाधरविरचिता रत्नत्रयविधि.

99	पुरदरविधानकथा" ''।	संस्कृत पद्य	५१ से ५४
१२	रज्ञाविधानकथा *****।	गंदा	५४ मे ५६
१३.	दशलच्राजयमाल—रइध् ।	ग्रपभ्र श	५६ से ५८
१४	पल्यविधानकथा	संस्कृत पद्य	५८ से ६३
१४.	श्रनथमोत्रतकथा—पं० हरिचंद्र ।	ग्रपभ्र श	६३ से ६९

मगरवाल वरवसि उप्पण्णाइं हरियदेण। भत्तिए जिराप्रयग्परग्वेवि पयिंडि पद्धियाछंदेगा ।।१६॥

१६.	चंदनपष्ठीकथा—	> >	55	६९ से ७१
१७.	मुखावलोकनकथा		संस्कृत	७१ से ७५
१=	रोहिग्गीचरित्र—	देवनंदि	भ पभ्र ं श	७६ से ८१
88.	रोहिग्गिविधानकथा—	2)	*1	८१ से ८ ४

२०,	ऋ त्त्यनिधिविधानकथा	 सस्कृत	दर्शे दद	
२१.	मुकुटसप्तमीकथा—पं० श्रश्रदेव	11	दद से दृष्ट	
२२.	मोनव्रतविधान—रत्नकीत्ति	संस्कृत गय	१० में ६४	
२३.	रुक्मणिविधानकथा—त्त्रत्रसेन	संस्कृत पद्य	१००	[स्रपूर्ग]

संवत् १६०६ वर्षे फाल्गुण् वदि १ सोमवासरे श्रीमूलसघे वलात्कारगण् मरस्वतीगच्छे कुदकुंदाचार्या-न्वये…...

२६⊏४. व्रतकथाकोश ' "'। पत्र स० १४२ । ग्रा० १२×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-नथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२ । छ भण्डार ।

२६८४. व्रतकथाकोश—खुशालचंद्। पत्र स० ८६। ग्रा० १२५४६ इझ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स० १७८७ फागुन बुदी १३ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ३६७ । श्र भण्डार ।

विशेप--१८ कथायें है।

इसके ग्रतिरिक्त घ मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६१) ड भण्डार में १ प्रति (वे० म० ६५६) तथा छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७८) ग्रीर है।

२६८६. त्रतकथाकोशः । पत्र स० ५०। ग्रा० १०×५३ डख्न । भाषा-हिन्दी । विषय-कवा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १८३५। ट भण्डार।

विशेष--- निम्न कथाग्रो का सग्रह है---

नाम	कर्ता	विजेप
ज्ये प्रजिनवरत्रतकथा —	खुशालचंद	र० काल न० १७५२
त्रादित्यवारकथा—	भाऊ कवि	×
लघुरविव्रतकथा—	व्र० ज्ञानसागर	
सप्तपरमस्थानत्रतकथा—		
मुकुटसप्तमीकथा—	77	र० काल स० १७६३
श्रच्यनिधिव्रतकथा—	97	
षोडशकारगव्रतकथा—	59	
मेघमालात्रतकथा—	"	-
चन्दनपष्ठीव्रतकथा—	"	
लिधविधानकथा—	9 7	
जिनपूजापुरंदरकथा—	? }	
दश-च्राणकथा—	"	3

नाम	['] कत्ता	विशेष
पुष्पांजलिव्रतकथा—	खुशालचन्द	
च्चाकाशपंचमीकथा —	**	र० काल सं० १७८५
मुक्तावलीव्रतकथा—	73	

पृष्ठ ३६ से ५० तक दीमक लगी हुई है।

२६८७. त्रतकथासग्रह "" । पत्र सं० ६ से ६० । ग्रा० ११२×५ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० २०३६ । ट भण्डार ।

विशेष—६० से ग्रागे भी पत्र नही है।

२६८८. व्रतकथासप्रहः । पत्र सं० १२३ । ग्रा० १२४४ हे इख्र । भाषा-संस्कृत ग्रपभ्रंश । विषय-कथा । र० काल 🗴 । ले० काल स० १५१६ सावण बुदी १५ । पूर्ण । वे० स० ११० । व्य भण्डार ।

विशेष---निम्न कथाग्रो का संग्रह है।

नाम	कर्ता	भाषा	विशेष
सुगन्धद्शमीत्रतकथा "	•••1	ग्र पभ्र [*] श	****
श्रनन्तव्रतकथा'''''।		> >	-
रोहिग्गीव्रतकथा—	×	59	-
निर्दोषसप्तमीकथा—	×	33	_
दुधारसविधानकथा—	मुनिविनयचंद् ।	37	
सुखसंपत्तिविधानकथा-	—विमलकीत्ति।	35	
निर्भरपञ्चमीविधानकथ	॥—विनयचंद्र ।	7 7	Continues Contin
पुष्पांजितिविधानकथा-	-पं० हरिश्चन्द्र ।	77	
श्रवणद्वादशीकथा—पं	श्चित्रदेव ।	97	
षोडशकारणविधानकथ	ıı— ₃₃	"	
श्रुतस्कंघविघानकथा—	- 59 .	 59	
रुक्मिग्णीविधानकथा-	_	55	
	•	**	

प्रारम्भ जिनं प्रणम्य नेमीशं संसारार्णवतारकं। रूक्मिणिचरितं वक्ष्ये भव्याना वोधकारणं॥

अन्तिम पुष्पिका - इति छत्रसेन निरचिता नरदेव कारापिता रूपिमणि विधानकथा समाप्ते ।

पल्यविधानकथा	×	جنتيين	संस्कृत	
दशलत्त्रणुविधानकथा— लो	क्सेन		57	
	×		भ्रपञ्ज श	
जिनरात्रिविधानकथा—	×		۹)	
जिनपूजापुरंदरविधानकथा—	-श्रमरकीर्त्त	-	77	
त्रिचतुर्विशतिविधान—	×		संस्कृत	
जिनमुखावलोकनकथा—	×		57	
शीलविधानकथा—	×		27	-
त्रज्ञयविधानकथा—	×		33	
सुखसंपत्तिविधान्कथा—	×		"	-

लेखक प्रशस्ति—संवत् १५१६ वर्षे श्रावण बुदो १५ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणो भ० श्रीपद्म-निवदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा । भट्टारक श्रीपद्मनिद किप्य मुनि मदनकीत्ति किप्य द्र० नर्रासह निमित्तं । खढेलवालान्वये दोसीगोत्रे संघी राजा भार्या देउ सुपुत्र छीछा भार्या गणोपुत्र कातु पदमा धर्मा ग्रात्म-कर्मक्षयार्थं इद शास्त्रं लिखाप्य ज्ञान पात्रादत्तं ।

२६८६ त्रतकथासंग्रह"" "। पत्र सं० ८८। ग्रा० १२×७१ इख्र । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० १०१। क भण्डार ।

विशेष---निम्न कथाग्रो का सग्रह है।

द्वाद्शव्रतकथ—	पं० ऋभ्रदेव।	सस्कृत	
कवलचन्द्रायग्वतकथ	[—	"	-
चन्द्रनषष्ठीव्रतकथा—	- खुशालचन्द् ।	हिन्दी	
नंदीश्वरव्रतकथा—	1	सस्कृत	
जिनगुगसपत्तिकथा-	-	"	
होुली की कथा	छीत् र ठोलिया	हिन्दी	
रैदुव्रतकथा—	त्र॰ जिनदास	"	
रत्नावलित्रतकथा—	गुणनंदि	7)	

२६६०. व्रतकथासंग्रह—व्र० सहितसागर । पत्र सं० २७ । ग्रा० १०×४२ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७७ । क भण्डार ।

२६६१. व्रतक्रथासंग्रह। पत्र सं० ४ । ग्रा० ८४४ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० ६७२ । क भण्डार ।

विशेष—रिवव्रत कथा, श्रष्टाह्मिकाव्रतकथा, पोडशकारएाव्रतकथा, दशलक्षरांव्रतकथा डनका संग्रह है पोडश-कारएाव्रतकथा गुजराती में है।

२६६२. व्रतकथासंग्रह : । पत्र सं० २२ से १०४। ग्रा॰ ११ \times ५६ इख्र । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा। र० काल \times । ले० काल \times । ग्रपूर्ण । वे० स० ६७८। क भण्डार ।

विशेष--प्रारम्भ के २१ पत्र नही हैं।

२६६३. पोडशकारण्विधानकथा—प० अभ्रदेव। पत्र स० २६। आ० १००४४६ इख्र। भाषा— सस्कृत । विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६६० भादवा सुदी ५। वे० सं० ७२२। क भण्डार।

विशेप—इसके अतिरिक्त आकाश पंचमी, रुक्मिग्गीकथा एव अनतव्रतकथा के कर्ता का नाम पं॰ मदनकीर्ति है। ट भण्डार मे एक प्रति (वे॰ स॰ २०२६) और है।

२६६४. शिवरात्रिडद्यापनविधिकथा— शंकरभट्ट । पत्र सं० २२ । म्रा० ६×४ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा (जैनेतर) । र० काल × । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० सं० १४७२ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-- ३२ मे ग्रागे पत्र नही है। स्कधपूराण मे से है।

२६६४. शीलकथा — भारामञ्जा । पत्र स०२० । ग्रा०१२×७६ इक्का भाषा – हिन्दी पद्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स०४१३ । ग्रा भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६६६, १११६) क भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६६२) घ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १००), ड भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७०८), छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १८६७) ग्रौर है।

२६६६. शीलोपदेशमाला—मेरुपुन्दरगिए। पत्र स० १३१। ग्रा० ६ \times ४ इ च । भाषा—गुजराती लिपि हिन्दां। विषय—कथा। र० काल \times । ले० काल \times । ग्रपूर्ण। वे० स० २६७। छ भण्डार।

विशेष-४३वी कथा (धनश्री-तक प्रति पूर्ग है)।

२६६७ शुक्तसप्तिः । पत्र स० ६४। ग्रा० ६ $\frac{1}{2}$ \times ४ $\frac{1}{2}$ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा। र० काल \times । ले० काल \times । प्रपूर्ण । वे० सं० ३४५। च भण्डार ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

२६६८ श्रात्रगाद्वादशीजपाख्यान " । पत्र ,स०३। ग्रा० १०२ ×५३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषल-कथा (जैनेतर) । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ८८० । ग्रु भण्डार । २६६६. श्रावणद्वादशीकथा """। पत्र सं० ६८। ग्रा० १२४५ इ च । भाषा-संस्कृत गद्य । विषय-

२७००. श्रीपालकथा""। पत्र सं० २७ । ग्रा० ११×७३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा। र० काल × । ले० काल सं० १६२६ वैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ७१३ । ड भण्डार ।

विशेय-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं॰ ७१४) और है।

२७०१. श्रेशिकचौपई--ह्रंगा बैद। पत्र स०१४। ग्रा० ६३×४२ डच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल स०१८२६। पूर्ण। वे० स० ७६४। त्रा भण्डार।

विशेष--कवि मालपुरा के रहने वाले थे।

श्रथ श्रेणिक चौपई लीखते---

श्रादिनाथ वदी जगदीस । जाहि चिरत थे होई जगीस ।।
दूजा बंदी ग्रुर निरगंथ । भूला भव्य दीखावरण पर्थ ।।१।।
तीजा साधु सबै का पाइ । चौथा सरस्वती करी सहाय ।
जहि सेया थे सब बुधि होय । करी चौपई मन सुधि जोई ।।२।।
माता हमनै करी सहाई । श्रख्यर हीरण सवारो श्राई ।
श्रेरिणक चिरत बात मै लही । जैसी जारणी चौपई कही ।।३।।राग्णी सही चेलना जारिण । धर्म जैनि सेवै मनि श्रारिण ।
राजा धर्म चलावै बोध । जैन धर्म को काटै खोध ।।४।।

पत्र ७ पर-दोहा---

जो भूठी मुख ये कहै, श्रग्णदोस्या दे दोस ।
जे नर जासी नरक मैं, मत कोइ श्राणी रोस ।।१५१॥
चौपई— कहै जती इक साह सुजाए। वामए। एक पढ़्यो श्रति श्राणि ।
जइ कौ पुत्र नहीं को श्राय। तवे न्यौल इक पाल्यो जाय ।।५२॥
वेटो करि राख्यो निरताइ । दुवैंच पाव एक पे श्राइ ।
वाभएगी सही जाइयो पूत । पली थावे जाएंग श्रजत ।।५३॥
एक दिवस वाभएं। विचारि । पाएंगी नैवा चाली नारि ।
पालएं। वालक मेल्ही तहा । न्यौल वचन ए भाखे जहां ।।५४॥

ऋन्तिम---

भेद भलो जाएगो इक सार । जे सुरिएसी ते उत्तरै पार । हीन पद प्रक्षर जो होय। जको सवारो गुरिएयर लोय।।२८६।। मैं म्हारी वृधि सारू कही । गुिग्यर लोग सवारो सही । जे ता तराो कहै निरताय। सुराता सगला पातिग जाइ।।२६०।। लिखिवा चाल्यी सूख नित लही, जै साधा का गुरा यो कही। यामै भोलो कोइ नही, हुगै वैद चौपइ कही ।।६१।। वास भलो मालपूरो जािए। टौक मही सो कियो वखाए।। जठै बसै माहाजन लोग। पान फूल का कीजै भोग।।६२।। पौिए। छतीसौं लीला करै। दुख थे पेट न कोइ भरै। राइस्यंघ जी राजा वखािए। चीर चवाहन राखे श्राणि । १६३।। जीव दया को श्रधिक सुभाव । सबै भलाई साधै डाव । पितसाहा बंदि दीन्ही छोडि । बुरी कही भिव सुर्गे वहोडि ।।६४।। धनि हिंदवाणो राज वखाणि । जह मैं सीसोद्यो सो जाणि। जीव दया को सदा वीचार। रैति तर्गों राखै ग्राधार ।।६४।। कीरति कही कहा लगि जािए। जीव दया सह पालै म्रािए। इह विधि सगला करें जगीस। राजा जीज्यौ सौ ग्रह बीस ।।६६।। एता वरस मै भोलो नही | बेटा पोता फल ज्यो सही । दुखिया का दुख टालै ग्राय। परमेस्वर जी करै सहाय ॥६७॥ इ पुन्य तराौ कोइ नही पार । वैदि खलास करै ते सार । वाकी बुरी कहै नर कोइ । जन्म श्रापगा चाल खोइ ।।६८।। संवत् सौलह से प्रमाण । उपर सहो इतासौ जागा । निन्याएवे कह्या निरदोष। जीव सबै पावै पोष ॥६६॥ भादव सुदी तेरसं सनिवार । कडा तीन से षट प्रधिकाय । इ सुराता सुख पासी देह । श्राप समाही कर सनेह ।।३००।।

इति श्री श्रेणिक चौपइ संपूरण मीती कार्तिक सुदि १३ सनीसरवार कर्के सं० १८२६ काडी ग्रामे लीखतं वखतसागर वाचे जहने निम्सकार नमोस्तं वाँच ज्यो जी।

२७०२. सप्तपरमस्थानकथा—श्राचार्य चन्द्रकीत्ति । पत्र सं० ११ । ग्रा० ६३×४ इंच । भाषा— संस्कृत । विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६८६ ग्रासोज बुदी १३ । पूर्गा । वे० सं० ३५० । ज्य भण्डार ।

श्रीर है।

२७०३. सप्तन्यसनकथा—श्राचार्य सोमकीत्ति । पत्र सं० ४१। म्रा० १०३×४ द्वे इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल सं० १५२६ माघ सुदो १ । ले० काल 🗴 । पूर्ग । ये० मं० ६ । श्र भण्टार ।

विशेप---प्रति प्राचीन है।

२७०४. प्रति सं०२। पत्र स० ६४। ले॰ काल सं० १७७२ श्रावरण युदी १३। वे॰ सं० १००२। श्र भण्डार।

प्रशस्ति— सं० १७७२ वर्षे श्रावरणमासे कृष्णपदी त्रयोदण्या तिथी ग्रर्कवागरे विजैरामेगा लिपिचक्रे श्रमव्यरपुर समीपेषु केरवाग्रामे ।

२७०४. प्रति सं०३। पत्र सं० ६४। ले० काल मं० १८६४ भारवा मुदी ६। वे० सं० ३६३। च भण्डार।

विशेष—नेवटा निवासी महात्मा हीरा ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । दीवाण सगही ग्रमरचदजी निन्दूका ने प्रतिलिपि दीवाण स्योजीराम के मदिर के लिए करवाई ।

२७०६. प्रति सं०४। पत्र स० ६४। ले॰ काल सं० १७७६ माघ मुदी १। वे॰ सं॰ ६६। म भण्डार।

विशेप--पं नर्रासह ने श्रावक गोविन्ददास के पठनार्थ हिण्डौन मे प्रतिलिपि की थी।

२७०७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १६४७ ग्रामोज मुदी ६ । वे० सं० १११ । व्य

२७०८. प्रति सं•६। पत्र सं० ७७। ले० काल सं० १७५६ कार्त्तिक बुदी ६। वे० सं• १३६। व्य भण्डार।

विणेष--पं॰ कपूरचंद के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।

इनके श्रतिरिक्त घ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १०६) छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७५)

२७०६. सप्तव्यसन्कथा--भारामहा। पत्र सं० ८६। या० ११५×५ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल स॰ १८१४ ग्राध्यिन सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ६८८। च भण्डार।

विशेप--पत्र चिपके हुये हैं। अंत मे कवि का परिचय भी दिया हुआ है।

२७१०. सप्तन्यसनकथाभाषा"। पत्र सं० १०६। म्रा० १२× इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-तथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६३ । क भण्डार ।

विशेष—सोमकीति कृत सप्तव्यसन्कथा का हिन्दी श्रनुवाद है। च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६८१) श्रीर है। २७११. सम्मेदशिखरमहातम्य-लालचन्द्। पत्र सं० २६। ग्रा० १२×५ ई इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल सं० १८४२। ले० काल सं० १८८७ ग्राषाढ बुदीः। वे० सं० ८८। ग भण्डार।

विशेष---लालचन्द भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य थे। रेवाड़ी (पङ्काव) के रहने वाले थे श्रीर वहीं लेखक ने इसे पूर्ण किया।

२७१२. सम्यक्त्त्वकौमुदीकथा—गुणाकरसूरि । पत्र सं० ४८ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल सं० १५०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । च भण्डार ।

२७१३. सम्यक्त्त्वकौमुदीकथा—खेता। पत्र सं० ७६। ग्रा० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८३३ माघ सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० १३६। त्रा भण्डार।

विशेष—भा भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६१) तथा आ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३०) श्रीर है।

२७१४. स्म्यक्त्त्वकौमुदीकथा पत्र सं० १३ से ३३। ग्रा० १२×४३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १६२५ माव सुदी ६ । ग्रपूर्ण । वे० सं० १६१०। ट भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६२५ वर्षे शाके १४६० प्रवर्त्तमाने दक्षिगायने मार्गशीर्ष शुक्लपक्षे पष्टम्या शनीशीकुभलमेरूदुर्गे रा० श्री उदयसिंहराज्ये श्री खरतरगच्छे श्री ग्रुग्णलाल नहोपाच्याये स्ववाचनार्थं लिखापिता सौवाच्यमाना चिर नदनात्।

२७१४. सम्यक्त्त्वकौमुदीकथा"""। पत्र सं० ८६। म्रा० १०३ \times ४ इंच। भाषा-संस्कृत । यिषय-कथा। र० काल \times । ले० काल सं० १६०० चैत सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ४१। व्य भण्डार।

विशेष—संवत् १६०० मे खेटक स्थान मे शाह ग्रालम के राज्य मे प्रतिलिपि हुई । व्र० धर्मदास ग्रग्रवाल गोयल गोत्रीय मडलाएगपुर निवासी के बंश में उत्पन्न होने वाले साधु श्रीदास के पुत्र ग्रादि ने प्रतिलिपि कराई । लेखक प्रशस्ति ७ पृष्ठ लम्बी है ।

२७१६. प्रति सं०२। पत्र सं०१२ से ६०। ले० काल सं०१६२८ वैशाख सुदी ५। प्रपूर्ण। वे० सं० ६४। ऋ भण्डार।

श्री हू गर ने इस ग्रंथ को व़ रायमल को भेंट किया था।

श्रय सवत्सरेस्मिन श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६२८ वर्षे पोपमासे कृष्णपक्षपंचमीदिने भट्टारक श्रीभानुकीत्तितदाम्नाये श्रगरवालान्वये मित्तलगोत्रे साह दासू तस्य भार्या भोली तयोपुत्र सा. गोपी सा. दीपा। सा. गोपी तस्य भार्या वीवो तयो पुत्र सा. भावन साह उवा सा. भावन भार्या वूरदा शही तस्य पुत्र तिपरदाश। साह उवा तस्य भार्या मेघनही तस्यपुत्र हु गरसी सास्त्र सम्यक्त कौमदी ग्रथ ब्रह्मचार रायमहाद्वद्यात् पठनार्थं ज्ञानावर्गी कर्मक्षयहेतु। शुभं भवतु। लिखितं जीवात्मज गोपालदाश। श्रीचन्द्रप्रभु चैत्यालये ग्रहिपुरमध्ये।

भण्डार ।

ं २७१७. प्रति सं०२। पत्र सं०६८। ले० काल सं०१७१९ पीप बुदी १४। पूर्ण। वे० सं०७६६। रू भण्डार।

२७१८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८४। ले० काल सं० १८३१ माघ मुदी ५। वे० सं० ७५४। क

विशेष---मामूराम साह ने जयपुर नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त द्य मण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० २०६६, ६६४) घ मण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ११२), इ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६००), इ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६०), मा भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६१), व्य भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३०), तथा ट भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० २१२६, २१३०) [दोनो अपूर्ण] और है।

२७१६. सम्यक्तवकौमुदीकथाभाषा—विनोदीलाल । पन मं० १६०। ग्रा० ११×५ इंच । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल सं० १७४६ । ले० काल सं० १८६० सानन बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५७ । ग भण्डार ।

२७२०. सम्यक्तवको मुदीकथा भाषा—जगतराय । पत्र सं० १५१ । ग्रा० ११×५३ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल सं० १७७२ माव सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं• ७५३ । क भण्डार ।

२७२१. सम्यक्तवको मुदीकथाभाषा—जोधराज गोदीका। पत्र सं॰ ४७। ग्रा० १०६ ४७६ इ च । भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल सं० १७२४ फाग्रुए। बुदी १३। ले० काल स० १८२४ ग्रासीज बुदी ७। पूर्ण। वै० सं० ४३४। श्र भण्डार।

निशेप—नैनसागर ने श्री गुलावचंदजी गोदीका के वाचनार्य सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। सं॰ १८६८ मे पोथी की निछराविल दिवाई पं॰ खुश्यालजी, पं॰ ईसरदासजी गोदीका सूं हस्ते महात्मा फलाह्व ग्राई ६० १) दिया।

२७२२. प्रति सं०२। पत्र सं०४६। ले० काल सं० १८६३ माघ बुदो २ । वे० सं० २११। ख

२७२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६४ । ले० काल स० १८८४ । वे० सं० ७६८ । हा भण्डार । २७२४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ७०३ । च भण्डार । २७२४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८३५ चैत्र बुदी १३ । वे० सं० १० । म

इनके श्रतिरिक्त च भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७०४) ट भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १५४३)

२७२६. सम्यक्त्वकौमुदीभाषा""। पत्र सं० १७४ । आ० १०३×७३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषन-कथा। र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण। वे० सं० ७०२। च भण्डार।

२७२७. संयोगपंचमीकथा—धर्मचन्द्र । पत्र सं० ३ । ग्रा० ११३×५२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८४० । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । त्र्य भण्डार ।

विशेष—ह भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५०१) ग्रीर है।

२७२८. शालिभद्रधन्नानीचौपई—िजनिसिंहसूरि । पत्र सं० ४९ । ग्रा० ६४४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल सं० १६७८ ग्रासोज बुदी ६ । ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी १४ । ग्रपूर्ण । वे० सं० ५४२ । इ भण्डार ।

विशेप — किशनगढ मे प्रतिलिपि की गई थी।

२७२६. सिद्धचक्रकथा "" । पत्र स० २ से ११ । म्रा० १० \times ४ $१ ६ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल <math>\times$ । ले० काल \times । प्रपूर्ण । वे० सं० ५४३ । हा भण्डार ।

२७३०. सिंहासनबत्तीसी "" । पत्र सं० ११ से ६१ । ग्रा० ७ \times ४ $_8^3$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल \times । ले० काल \times । ग्रपूर्ण । वे० स० १५६७ । ट भण्डार ।

विशेष--- ५वे मध्याय से १२वें मध्याय तक है।

२७३१. सिंहासनद्वार्त्रिशिका—च्लेमंकरमुनि । पत्र सं० २७ । ग्रा० १०×४ दूँ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय–राजा विक्रमादित्य की कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२७ । ख भण्डार ।

विशेष-प्रति प्राचीन है । श्रन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

श्रीविक्रमादित्यनरेश्वरस्य चरित्रमेतत् कविभिनिवद्धं । पुरा महाराष्ट्रपरिष्ट्रभाषा मय महाश्चर्यकरंनराएा।। क्षेमंकरेएा मुनिना वरपद्यगद्यवधेनमुक्तिकृतसस्कृतवद्युरेएा। विश्वोपकार विलसत् गुएाकीतिनायचक्रे चिरादमरपडितहर्पहेतु।।

२७३२. सिंहासनद्वार्त्रिशिका''''' । पत्र सं० ६३ । ग्रा० ६×४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १७६५ पौष सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ४११ । च मण्डार ।

विशेष--लिपि विकृत है।

२७३३. सुकुमालमुनिकथा ' '। पत्र सं० २७ । ग्रा॰ ११३×७३ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले ० काल स० १८७१ माह बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १०५२ । त्र्य भण्डार ।

विशेप-जयपुर मे सदासुखजी गोधा के पुत्र सवाईराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी।

२७३४. सुगन्धदशमीकथा"" । पत्र सं० ६। म्रा० ११५४४ हे इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० ८०६ । क भण्डार ।

विशेष--उक्त कथा के श्रतिरिक्त एक श्रीर कथा है जो श्रपूर्ण है।

२७३४. सुगन्धदशमीव्रतकथा—हेमराज । पत्र स० ४। म्रा॰ ५३×७ इ'च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १६८५ श्रावण सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ६६५ । श्रा भण्डार । विशेष—भिण्ड नगर मे रामसहाय ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ-प्रथ सुगन्धदशमी प्रतक्या लिख्यते-

चौपई— वर्द्ध मान वदी सुखदाई, ग्रुर गौतम वदी चितलाय ।
सुगन्धदशमीव्रत सुनि कथा, वर्द्ध मान पर्यकाशी यथा ।।१।।
पूर्वदेस राजग्रह गाव, श्रेनिक राज करे श्रिभराम ।
नाम चेलना गृहपटरानी, चंद्ररोहिग्गी रूप समान ।
नृप सिहासन बैठो कदा, वनमाली फल त्यायी तदा ।।२।।

श्रन्तिम— सहर गहे लींड तिम वास, जैनधर्म को करेंप्रकास ।।
सब श्रावक व्रत संयम धरे, दान पूजा सी पातिक हरें ।
हेमराज कवियन यो कही, विस्वभूषन परकासी सही ।
सो नर स्वर्ग श्रमरपित होय, मन वच काय सुनै जो कोय ।।३८।।
इति कथा सपूरग्रम्

दोहा— श्रावरा शुक्षा पंचमी, चंद्रवार शुभ जान।
श्रीजिन भुवन सहावनों, तिहा लिखा घरि घ्यान।।
सवत् विक्रम भूप को, इक नव श्राठ सुजान।
ताके ऊपर पाच लिख, लीजे चतुर सुजान।।
देश भंदावर के विषे, भिंड नगर शुभ ठाम।
ताही मैं हम रहत हैं, रामसाय है नाम।।

२७३६. सुद्यत्रंच्छसाविताकी चौपई—ंसुित केश्व । पत्र सं० २७ । ग्रा० ६×४३ इंच । भाषान हिन्दी । विषय—कथा । र० काल स० १६६७ । ले० काल स० १८३७ । वे० स० १६४१ । ट भण्डार । विशेष—कटके में लिखा गया ।

२७३७. सुदर्शनसेठकीढाल (कथा) "" । पत्र सं० ६। ग्रा० ६३ ४४३ इ न । भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० ८६१ । श्रा भण्डार।

२७३८. सोमशर्मावारिषेणार्कथा"""। पेत्र सं० ७ । ग्रा० १०×३६ इंच । भोपां-संस्कृत । विषय-

२७३६. सौभाग्यपंचमीकथा — मुन्द्रविजयगिषा । पंत्रं सं० ६ । ग्रां० १०४४ ई च । भाषा संस्कृत । विषय-कथा । र० काल सं० १६६६ । ले० काल सं० १८११ । पूर्ण । वे० सं० २६६ । ग्रां भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे अर्थ भी दिया हुआ है।

२७४०. हरिवंशवर्णन """ पत्र सं० २०। म्रा० १० है 🗙 ४३ इंच। भाषा - हिन्दी। विषय - कथा। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । म्रपूर्ण। वै० सं० ५३६ । स्त्र भण्डार।

२७४१. होतिकांकथा'''''। पत्र सं० २ । म्रा० १०३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १६२१ । पूर्ण । वे० सं० २६३ । झा भण्डार ।

२७४२. होत्तिकाचौपई—द्वांगरकि । पत्र सं० ४ । ग्रा० ६×४ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल सं० १६२६ चैत्र बुदी २ । ले० काल सं० १७१८ । ग्रपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष — केवल अन्तिम पत्र है वह भी एक ओर से फटा हुआ है । अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

सोलहसइ गुणतीसइ सार चैत्रहि विद दुतिया बुधिवार । नयर सिकदरावाद''''''गुणकिर प्रायाध, वाचक मंडरण श्री खेमा साध ॥५४॥ तासु सीस ह्रंगर मित रली, भण्यु चरित्र गुण साभली । जे नर नारी सुणस्यइ सदा तिह घरि वहुली हुई संपदा ॥५४॥

२७४३. होलीकीकथा छीतर ठोलिया। पत्र सं०२। ग्रा०११३×५३ इंच। मापा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल सं०१६६० फागुण सुदी १४। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०४४६। स्त्र भण्डार। २७४४. प्रति सं०२। पत्र सं०४। ले० काल सं०१७५०। वे० सं०६५६। क्र भण्डार। विशेष लेखक मीजमाबाद [जयपुर] का निवासी था इसी गांव मे उसने ग्रंथ रचना की थी। २७४४. प्रति सं०३। पत्र सं०६। ले० काल सं०१८६३। वे० मं०६६। ग्र भण्डार। विशेष कालूराम साह ने ग्रंथ लिखवाकर चौधरियों के मन्दिर में चढाया। २७४६. प्रति सं०४। पत्र सं०४। ले० काल सं०१६३० फागुण बुदी १२। वे० सं०१६४२। ट

विशेष-पं । रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२४६]

२७४७. होलीकथा—जिनसुन्दरसूरि । पत्र सं० १४। ग्रा० १०३×४३ दंच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा × । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में इसके ग्रतिरिक्त ३ प्रतिया वे० स० ७४ में ही श्रीर है।

२७४८. होतीपर्वकथा" ""। पत्र स० ३। ग्रा० १०×४३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा। र० काल × । त्रेण । वे० स० ४४६ । त्र्य भण्डार ।

२७४६. प्रति स०२। पत्र स०२। ले० काल स० १८०४ माघ सुदो ३। वे० मं० २८२। ख भण्डार।

विशेप-इसके अतिरिक्त ड भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ६१०, ६११) और है।



व्याकरगा-साहित्य

२७४०. त्र्यनिटकारिका''''''। पत्र सं० १ । ग्रा० १०३ \times ५ $\frac{1}{8}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० २०३५ । श्र्य भण्डार ।

२७४१ प्रति स०२ | पत्र सं०४ | लि० काल 🗙 | वे० सं० २१४६ । ट भण्डार |

२७४२ स्रितिटकारिकावचूरि "" पत्र सं॰ ३। म्रा० १३×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र॰ काल × । ले॰ काल अ । पूर्ण। वे॰ सं॰ २५०। व्याकरण।

२७५३ ऋडययप्रकर्गा " ""। पत्र स० ६ । ग्रा० ११ $\frac{1}{5}$ \times ५ $\frac{1}{5}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० २०१८ । श्र भण्डार ।

२७४४. ऋज्ययार्थः । पत्र सं० द । ग्रा० द्र १६ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८४६ । पूर्ण । वे० सं० १२२ । भ भण्डार ।

२७४४. प्रति सं०२। पत्र स०२। ले० काल 🔀 । अपूर्ण । वे० सं०२०२१। ट भण्डार। विशेष—प्रति दीमक ने खा रखी है।

२७४६. उणादिसूत्रसंग्रह—सग्रहकत्ती-उज्ज्वत्तदृत्त । पत्र सं० ३८ । श्रा० १०४५ इंच । मापा-संस्कृत । विषय-वैयाकरण । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १०२७ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--प्रति टीका सहित है।

२७५७. उपाधिन्याकर्गा''''''। पत्र सं० ७ । ग्रा० १०४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७२ । म्रा भण्डार ।

२७४८. कातन्त्रविभ्रससूत्रावचूरि—चारित्रसिंह। पत्र सं० १३। ग्रा० १०३×४३ इंच। भाषा— संस्कुत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १६६६ कार्त्तिक सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० २४७। ग्रा भण्डार।

विशेष--ग्रादि ग्रन्त भाग निम्न प्रकार है-

नत्वा जिनेंद्रं स्वग्रुरं च भक्त्या तत्सत्त्रसादाप्तसुसिद्धिशक्त्या । सत्संप्रदायादवचूर्शिमेता लिखामि सारस्वतसूत्रयुक्त्या ॥१॥ प्रायः प्रयोगादुर्जे याः किलकातन विश्नमो ।

येषु मो मुद्यते श्रेष्ठः शान्तिकोऽपि यथा जडः ॥२॥

कातत्रसूनविसरः रातु साप्तत ।

यन्नाति प्रसिद्ध इह चाति व्यरोगरीयान् ॥

स्वस्येतरस्ये च सुबोधवित्रद्वनार्थी ।

ऽशित्वस्य ममात्र सफलो लियन प्रयासः ॥

श्रन्तिम पाठ---

वाणाश्चिपडिंदुमि सन्वति धवरायनपुर वरे समहे ।
श्रीखरतरगणपुष्करमुदि गपुष्टप्रकाराणा ॥१॥
श्रीजिनमाणिक्याभिधमूर्रगणा सकलतार्वभीमाना ।
पट्टे करे विजयिषु श्रीमिज्जनचद्रसूरिराजेषु ॥२॥
गीति वाचवमितभद्रगणे शिष्यस्तदु गरत्यवाप्तपरमार्थः ।
चारित्रसिंहसायुर्व्यद्यवयूर्णियिह सुगमा ॥३॥
यित्तिखितं मितमायादनुत प्रक्नोत्तरेन विचिदिष ।
तत्सम्यक् प्राज्ञवरे, शोध्य स्वपरोपकाय । ४॥
इति कातन्नविश्रगावयूरि सपूर्णा लिसनत ।

म्राचार्य श्रीरत्नभूषग्एरतिच्छ्य्य पंडित केशव तेनेय लिपि कृता गात्मपठनार्थं । शुभ भनतु । सनत् १६६९ वर्षे कार्त्तिक सुदी ५ तिथौ ।

२७४६ कातन्त्रटीका' ""। पत्र सं० ३। ग्रा० १०३×४२ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण। र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० १६०१ । ट मण्डार ।

विशेष-प्रति सस्कृत टीका सहित है।

२७६०. कातन्त्ररूपमालाटीका—दौर्भिमंत । पत्र स० ३६४ । आ० १२%×४% इ'च । आपा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १६३७ । पूर्ण । ते० स० १११ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम कलाप व्याकरणा भी है।

२७६१. प्रति सं०२। पत्र सं०१४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं०११२। क भण्डार।
२७६२ प्रति सं०३। पत्र स०७७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स०६७। च मण्डार।
२७६३ कातन्त्ररूपमालावृत्ति'। पत्र सं०१४ से ८९। आ०९४४ इंच। भाषा-सस्कृत।
विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं०१४२४ कॉत्तिक सुदी ४। अपूर्ण। वे० स०२१४४। ट भण्डार।

प्रशस्ति—सवत् १५२४ वर्षे कार्तिक मुदी ५ दिने श्री टोकपत्तने सुरत्राग्गग्नलावदीनराज्यप्रवर्त्तमाने श्री
मूलसंघे बलात्कारगग्गे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीग्रुभचद्रदेवातत्पट्टे
भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्शिष्य ब्रह्मतीनम निमित्त । खडेलवालान्वये पाटग्गीगोत्रे स० धन्ना भार्या धनश्री पुत्र स.
दिवराजा, दोदा, मूलाप्रभृतय एतेपामध्ये सा दोदा इद पुस्तक ज्ञानावरग्गीकम्मक्षयनिमित्त लिखाप्य ज्ञानपात्राय दत्तं ।

२७६४. कातन्त्रत्याकरण्-शिववर्मा। पत्र सं० ३४ । ग्रा० १०४४ है इच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण्। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० स० ६६ । च भण्डार ।

२७६४ कारक १ किया । पत्र स०३। ग्रा०१०३×५ इ च। भाषा- संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६५५ । ग्रा गण्डार।

२७६६ कारकविवेचन । पत्र स० ६। ग्रा० ११×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण वे० स० २०७ । ज भण्डार ।

२७६७ कारकसमासप्रकरण । पत्र स० ५ । ग्रा० ११×४३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३३ । श्र्य भण्डार ।

२७६८. कृद्न्तपाठ ' । पत्र स० ६ । ग्रा० ६९४५ इ'च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण् । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० १२६६ । ऋ भण्डार ।

विशेष--- नृतीय पत्र नहीं है। सारस्वत प्रक्रिया में से है।

२७६६ गण्पाठ—वादिराज जगलाथ। पत्र म० ३४। आ० १०३ \times ४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण। र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण। वे० स० १७८०। ट भण्डार।

२०७०. चंद्रोन्सीलन " । पत्र सं० २० । ग्रा० १२×५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १८३५ फाग्रुन बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६१ । ज भण्डार ।

विशेष---मेवाराम ब्राह्मगा ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

२७७१. जैनेन्द्रव्याकरण्— द्वनन्दि । पत्र स० १२६ । ग्रा० १२×५२ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण् । र० काल × । ले० काल स० १७१० फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३१ ।

विशेष—ग्रथ का नाम पंचाव्यायी भी है। देवनन्दि का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है। पचवस्तु तक। सीलपुर नगर मे श्री भगवान जोशी ने प० श्री हर्प तथा श्रीकल्याएं के लिये प्रतिलिपि की थी।

संवत् १७२० आसोज सुदी १० को पुन श्रोक्त्यागा व हर्प को साह श्री लूगा विघरवाल द्वारा भेंट की गयी थी। २७७२. प्रति सं०२। पत्र सं०३१। ले० काल सं०१६६३ फाग्रुन सुदी ६। वे० सं०२१२। क

२७७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६४ से २१४ । ले० काल सं० १६६४ माह बुदी २ । अपूर्ण । वे० स० २१३ । क भण्डार ।

२७७४. प्रति सं०४। पत्र सं०६०। ले० काल स०१८६६ कास्तिक मुदी ३। वे० स०२१०। क

विशेष---सस्कृत मे सक्षिप्त सकेतार्थ दिये हुये है। पन्नालाल भीसा ने प्रतिलिपि की थी।

, २७७४. प्रति स॰ ४। पत्र स० ३०। ले० काल स० १६०८। वे० स० ३२८। ज भण्डार।

२७७६. प्रति सं०६। पत्र स०१२४। ले० काल सं०१८८० वशास सुदी १४। वे० स०२००। व्य भण्डार।

विशेष—इनके ग्रतिरिक्त च भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १२१) व्य भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३२३, २८८) श्रीर हैं। (वे० स० ३२३) वाले ग्रन्थ मे सोमदेवसूरि कृत शब्दार्शव चिन्द्रका नाम की टीका भी है।

२७७७ जैतेन्द्रमहावृत्ति—स्रभयनिद्। पत्र स० १०४ से २३२ । आ० १२३×६ इख्र । भाषा— सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०४२ । स्र भण्डार ।

२७७८ प्रति सं०२। पत्र स० ६६०। ले० काल स० १६४६ भादवा बुदी १०। वे० स० २११। क भण्डार।

विशेष-पन्नालाल चौधरी ने इसकी प्रतिलिपि की थी।

२७७६. तद्धितप्रक्रिया : "। पत्र सं० १६। ग्रा० १०४५ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० स० १८७० । श्र भण्डार ।

२७८०. धातुपाठ—हेमचन्द्राचार्थ। पत्र सं० १३। श्रा० १०४४ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल 🗴 । ले० काल स० १७६७ श्रावण सुदी ५ । वे० स० २६२ । छ भण्डार ।

२८८१. धातुपाठ....। पत्र स० ५१। आ० ११×५ इखा भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल ×। अपूर्ण । वे० सं० ६६०। आ भण्डार ।

विशेप-धातुग्रो के पाठ है।

२७५२. प्रति सं०२। पत्र सं०१७। ले० काल सं०१५६४ फाग्रुए सुदी १२। वे० सं०६२। ख भण्डार।

विशेष--- प्राचार्य नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इनके प्रतिरिक्त म्त्र भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १३०३) तथा ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २६०) ग्रीर हैं।

२७८३ धातुरूपावित्ति''''''। पत्र सं० २२ । ग्रा० १२४५३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरणा । र० काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० स० ६ । व्य भण्डार ।

विशेष-शब्द एव धातुस्रो के रूप हैं।

२७८४. धातुप्रत्ययः ""। पत्र सं०३। ग्रा० १०४४ हु इख्रा भाषा—संस्कृत । विषय-व्याकरणा। र०काल ४। ले०काल ४। पूर्ण । वे० सं०२०२८। ट भण्डार।

विशेष-हेमशब्दानुशासन की शब्द साधनिका दी है।

२७८४. पचसंधि " "। पत्र सं० २ से ७ । ग्रा० १०४४ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल ४ । ले० काल स० १७३२ । ग्रपूर्ण । वे० स० १२६२ । त्र्य भण्डार ।

२८ ५६. पंचिकरण्वात्तिक-सुरेश्वराचार्य । पत्र सं० २ से ४ । म्रा० १२×४ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० सं० १७४४ । ट भण्डार ।

२७८७. परिभाषासूत्र " '। पत्र स० ५ । म्रा० १०३ \times ४३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल \times । ले० काल स० १५३० । पूर्ण । वे० स० १६५४ । ट भण्डार ।

विशेष--- श्रतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है---

ेंइति परिभाषा सूत्र सम्पूर्ण ॥

प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

स० १५३० वर्षे श्रीखरतरगच्छेश्रीजयसागरमहोपाध्यायशिष्यश्रीरत्नचन्द्रोपाध्यायशिष्यभक्तिलाभगिणना लिखिता वाचिता च ।

२७८८. परिभाषेन्दुशेखर—नागोजीभट्ट। पत्र सं० ६७। ग्रा० ६×३६ इख्र। भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५८ । ज भण्डार ।

२७८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५१ । ले० काल 🗙 । वे० स० १०० । ज भण्डार ।

२७६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११२ । ले० काल 🗶 । वे० स० १०२ । ज भण्डार ।

विशेष—दो लिपिकत्तिम्रो ने प्रतिलिपि की थीं। प्रति सटीक है। टीका का नाम भैरवी टीका है।

२७६१. प्रक्रियाकौमुदी "। पत्र स० १४३ । ग्रा० १२४५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० सं० ६५० । त्रा र्भण्डार ।

विशेष-१४३ से ग्रागे पत्र नहीं है।

२७६२. पाणिनीयव्याकरण—पाणिनि । पत्र सं० ३६ । म्रा० ५६×३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । म्रपूर्ण । वे० सं० १६०२ । ट भण्डार ।

विशेष-प्रति प्राचीन है तथा पत्र के एक ग्रीर ही लिखा गया है।

२६२]

२७६३. प्राकृतरूपमाला-शीरामभट्ट सुत वरदराज । पत्र सं० ४७ । ग्रा० ६३ ४४ डख । भाषा-प्राकृत । विषय-व्याकरण । र० काल ४ । ले० काल स० १७२४ ग्रापाढ बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५२२ । इन् भण्डार ।

विशेष--- प्राचार्य कनककीति ने द्रव्यपुर (मालपुरा) मे प्रतिलिपि की थी ।

२७६४. प्राकृतरूपमाला''''''। पत्र स० ३१ रे ४६ । भाषा-प्राकृत । विषय-व्याकरण । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० सं० २४६ । च भण्डार ।

विशेष--सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये है।

२७६४. प्राकृतन्याकरण्—चंडकवि । पत्र स० ६ । ग्रा० ११३×५३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याकरण् । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष---ग्रन्थ का नाम प्राकृत प्रकाश भी है। सस्कृत, प्राकृत, ग्रपभ्रंग, पैशाचिकी, मागघी तथा सीरसेनी भ्रादि भाषाभ्रो पर प्रकाश डाला गया है।

२.७६६. प्रति सं०२। पत्र सं०७। ले० काल सं०१८६६। वे० स० ५२३। क भण्डार।
२७६७ प्रति सं०३। पत्र स०१६। ले० काल स०१८२३। वे० स०५२४। क भण्डार।
विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स०५२२) ग्रीर है।

२७६८ प्रति सं० ४। पत्र स० ४०। ले० काल स० १८४४ मगसिर सुदी १५। वे० सं• १०८। छ

विशेष-जयपुर के गोधो के मन्दिर नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

२७६६ प्राकृतन्युत्पत्तिदीपिका—सीभाग्यगिष्। पत्र सं० २२४। ग्रा० १२३×५६ इक्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल ×। ले० काल सं० १८६६ ग्रासोज सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ५२७। क भण्डार ।

२८०० भाष्यप्रदीप—कैंग्यटं । पत्र सं० ३१ । ग्रा० १२ $\frac{3}{6}$ \times ६ इच । भाषा—संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल \times । ले० काल \times । ग्रपूर्ण । वे० स० १५१ । ज भण्डार ।

२८०१ रूपमाला"" "। पत्र सं० ४ से ५०। ग्रा० ५३×४ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ३०६ । च भण्डार ।

विशेप-धातुम्रो के रूप दिये हैं।

इसके म्रतिरिक्त इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ३०७, ३०८) भीर हैं।

२८०२ लघुन्यासवृत्ति""। पत्र स० १२७। ग्रा० १०×४३ इ च। भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १७७६ ट भण्डार । २८०३ ताघुरूपसर्गेवृत्ति''''''। पत्र सं०४। म्रा०१०३×५ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं०१६४८। ट भण्डार ।

२८०४. लघुशब्देन्दुशेखर " " । पत्र सं॰ २१४ । म्रा० ११३×५ हुन्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११ । ज भण्डार ।

विशेष---प्रारम्भ के १० पत्र सटीक हैं।

२८०४ तघुसारस्वत-अनुभूति स्वरूपाचार्य । पत्र सं० २३ । ग्रा० ११×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२६ । श्र भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ३११. ३१२, ३१३, ३१४) ग्रीर हैं।

२८०६. प्रति सं०२।। पत्र सं०२०। आ०११है×५१ इख्र। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३११। च भण्डार।

२८०७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १८६२ भाद्रपद शुक्का ८। वे० सं० ३१३। च भण्डार।

विशेप-इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० ३१३, ३१४) ग्रौर हैं।

२८०८ तघुसिद्धान्तको मुदी-वरद्राज । पत्र सं० १०४ । म्रा० १०४४ हे इख । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७ । ख भण्डार ।

२८८. प्रति सं०२। पत्र सं०३१। ले० काल सं०१७८६ ज्येष्ठ बुदी ४। वे० स०१७३। ज भण्डार।

विशेष--ग्राठ ग्रघ्याय तक है।

च भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ३१५, ३१६) श्रीर है।

२८१०. लघुसिद्धान्तकौस्तुभर । पत्र सं० ५१। आ० १२×५६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०१२ । ट भण्डार ।

विशेष--पाणिनी व्याकरण की टीका है।

२८११. वैय्याकरणभूषण कौहत्तभट्ट । पत्र सं० ३३ । ग्रा० १०×४ इख्न । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १७७४ कार्त्तिक मुदी २ । पूर्ण । वे० स० ६८३ । क्ष भण्डार ।

२८१२. प्रति स॰ २। पत्र सं० १०४। ले० काल सं० १९०५ कार्त्तिक बुदी २। वे० सं० २८१। इन् भण्डार।

२८१३. वेंच्याकरण्भूषण्""। पत्र सं०७। ग्रा०१०३×५ इख्र। भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण्। र० काल ×। ले० काल सं० १८६६ पौष सुदी ८। पूर्ण्। वे० स०६८२। ङ भण्डार। २८९४. प्रति सं०२। पत्र सं०४। ले० काल सं०१८६ चैत्र बुदी ४। वै० सं०३३४। च

विशेष--माणिक्यचन्द्र के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी।

२८१४. व्याकरण "" । पत्र सं० ४६ । आ० १०३×५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

२८१६. व्याकरण्टीका ""। पत्र सं० ७ । म्रा० १०×४३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण् । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३८ । छ भण्डार ।

२८१७. व्याकरणभाषाटीका " । पत्र स० १८। म्रा० १०४५ डख्न । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-त्र्याकरण । र० काल ४ । ले० काल ४ । म्रपूर्ण । वे० स० २६८ । छ भण्डार ।

२८१८. शब्दशोभा —कवि नीलकठ । पत्र सं० ४३ । श्रा० १० $\frac{3}{7}$ \times ५ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल सं० १६६३ । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ७०० । ड भण्डार ।

विशेप---महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

२८१६ शब्दरूपावली पत्र स॰ ६६। ग्रा॰ ६ \times ४ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र॰ काल \times । ले॰ काल \times । पूर्ण । वे॰ स॰ १३६। म्ह भण्डार ।

२८२०. शब्द्रूपिणी—आचार्य वरस्चि । पत्र स० २७। ग्रा० १०१×३१ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० वंश्व × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१२ । म्र भण्डार ।

२८२१. शब्दानुशासन—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं० ३१। ग्रा० १०४४ इख्र। भाषा-सस्कृत। विषय-त्र्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० सं० ४८८। व्य भण्डार।

२८२२ प्रति सं०२।। पत्र सं०१०। ग्रा० १०३×४२ इख्र । ले० काल × । श्रपूर्ण। वे० सं० १९८६। त्रा मण्डार।

विशेष—क भण्डार मे ६ प्रतिया (वै० सं० ६८१, ६८२, ६८३, ६८३, (क) ६८४, ५२६) तथा श्र भण्डार मे एक प्रति (वै० सं० १९८६) ग्रीर है।

२८२३ शब्दानुशासनवृत्ति-हेमचन्द्राचार्य। पत्र स० ७६। आ० १२×४३ इख । भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । श्रपूर्ण । वे० सं० । २२६३ । श्र भण्डार ।

विशेष---ग्रन्थ की नाम प्राकृत व्याकरण भी है।

२५२४. प्रति सं०२। पत्र स०२०। ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी ३। वे० स० ५२५। क

विशेष-आमेर निवासी पिरागदास महुग्रा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

२८२४. प्रति सं०३ । पृत्र सं०१६ । ले० काल् सं०१८६ चैत्र बुदी १ । वे० सं०२४३ । च

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३३६) ग्रीर है।

२=२६. प्रति सं०४। पत्र स०८। ले० काल सं०१५२७ चैत्र बुदो ८। वे० सं०१६५०। ट भण्डार।

प्रशस्ति—सवत् १५२७ वर्षे चैत्र विद मीमे गोपाचलदुर्गे महाराजाधिराजश्रीकीर्त्तिसहदेवराज-प्रवर्त्तमानसमये श्री कालिदास पुत्र श्री हिर ब्रह्मे।

२८२७. शाकटायन व्याकरण—शाकटायन । २ से २० । म्रा० १४×४३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० सं० ३४० । च भण्डार ।

२८२. शिशुबोध—काशीनाथ । पत्र सं०६। ग्रा०१०×४३ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल स०१७३६ माघ सुदी २। वे० स० २८७ । छ भण्डार ।

प्रारम्भ-भूदेवदेवगोपालं, नत्वागोपालमीश्वरं । क्रियते काशीनाथेन, शिशुबोधविशेषतः ।।

२८. संज्ञाप्रिकृया''' '''। पत्र सं०४। ग्रा०१०३×४३ दख्रा भाषा—संस्कृत । विषय~व्याकरण । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० २८५। छ भण्डार ।

२५२० सम्बन्धविवस्। । पत्र स०२४ । ग्रा० ६ $\frac{1}{2}$ ४४ $\frac{3}{2}$ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल \times । वे० सं०२२७ । ज भण्डार ।

२८३१. संस्कृतसञ्जरी "" । पत्र सं० ४ । म्रा० ११×५३ इख्र । भाषा – सस्कृत । विषय – व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० ११९७ । म्रा भण्डार ।

२८३२ सारस्वतीधातुपाठःःः। पत्र स० ५। ग्रा० १०३ \times ४३ इख्र । भाषा—संस्कृत । विष्य— ब्याकरण । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष-कित् शब्दों के ग्रर्थ भी दिये हुये है।

२८३२. सारस्वतपंचसंधि " । पत्र स० १३। ग्रा॰ १०४४ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल ४ । ले० काल स० १८४४ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

२८३४. सारस्वत् प्रिक्तिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य। पत्र सं० १२१ से १४५। ग्रा० ५३×४६ इख्र। भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० कृति × । ले० कृति सं० १८४६ । ग्रपूर्ण । वे० सं० १३६५। स्त्र भण्डार । २८३८. प्रति सं० २ । पत्र स० ६७ । ले० कृति सं० १७६१ । वे० सं० ६०१ । अ भण्डार ।

२८३६ प्रति सं० ३। पत्र स० १८१। ले० काल सं० १८६६। वे० सं० ६२१। स्त्र भण्डार।
२८३७ प्रति सं० ४। पत्र स० ६३। ले० काल सं० १८३१। वे० स० ६५१। स्त्र भण्डार।
विशेष—चोखचद के शिष्य कृष्णुदास ने प्रतिलिपि की थी।
२८३८. प्रति सं० ४। पत्र स० ६० से १२४। ले० काल स० १८३८। स्रपूर्ण। वे० सं० ६८५। स्त्र

भण्डार ।

बशई (वस्सी) नगर मे प्रतिलिपि हुई थी I

२८३६ प्रति सं०६। पत्र स० ४३। ले० काल सं० १७५६। वे० सं० १२४६। स्त्र भण्डार। विशेष—चन्द्रसागरगिंग ने प्रतिलिपि की थी।

२८४०. प्रति सं० ७। पत्र सं० ४७। ले० काल स० १७०१। वे० सं० ६७०। स्त्र भण्डार। २८४१. प्रति सं० ८। पत्र स० ३२ से ७२। ले० काल स० १८५२ । अपूर्ण। वे० स० ६३७। स्त्र

भण्डार ।

२८४२ प्रति सं ६ । पत्र सं ०२३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०५५ । स्त्र भण्डार । विशेष—चन्द्रकीर्ति कृत संस्कृत टीका सहित है ।

२८४३. प्रति सं० १०। पत्र सं० १६४। ले० काल सं० १८२१। वे० स० ७६०। क भण्डार। विशेष—िचमनराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

२८४४. प्रति सं०११। पत्र स०१४६। ले० काल स०१८२७। वे० सं०७६१। क भण्डार। २८४४ प्रति सं०१२। पत्र स०१। ले० काल सं०१८४६ माघ सुदी१४। वे० स०२६८। ख

भण्डार ।

विशेप—पं० जगरूपदास ने दुलोचन्द के पठनार्थ नगर हिरदुर्ग मे प्रतिलिपि की थी । केवल विसर्ग संधि तक हैं।

२८४६. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८६४ श्रावरण सुदी ५ । वे० सं० २६६ । ख भण्डार ।

> २८४७. प्रति सं० १४। पत्र स० ६६। ले० काल सं० १७। वे० स० १३७। छ भण्डार। विशेष—दुर्गाराम शर्मा के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

२८४८. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६७ । ले॰ काल सं० १६१७ । वे० स० ४८ । मा भण्डार । विशेप—गरोशलाल पाड्या के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । दो प्रतियो का सम्मिश्रमा है । २८४६ प्रति सं० १६ । पत्र सं० १०१ । ले॰ काल सं० १८७६ । वे० स० १२५ । मा भण्डार । विशेष—इनके प्रतिरिक्त प्रा भण्डार मे १७ प्रतिया (वे० सं० ६०७, ६५२, ८०६, ६०३, १००६,

१०३४, १३१३, ६४३, १२६६, १२७२, १२३२, १६४०, १२४०, १८८०, १२६१, १२६८, १२६४, १३०१, १३०२) ख भण्डार मे ७ प्रतिया (वे सं० २१४, २१४ [अ], २१६, २१७, २१८, २१६, २६८) घ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ११६, १२०, १२१) ङ भण्डार मे १४ प्रतिया (वे० सं० ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२६, ६२७, ६२६, ६२६, ६३६, से ६३६, ६३६) च भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० ३६६, ४००, ४०१, ४०२, ४०३) छ भण्डार मे ६ प्रतिया (वे० स० १३६, १३७, १४०, २४७, २४४, ६७) मा भण्डार में ३ प्रतिया (वे सं० १२१, १४०, २२२) व्य भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० २०) तथा ट भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० १६६०, १६६०, २१००, २०७२, २१०४) और हैं।

उक्त प्रतियो मे बहुत सी अपूर्ण प्रतियां भी हैं।

२८४० सारस्वतप्रक्रियाटीका—महीभट्टी । पत्र सं० ६७ । ग्रा० ११४५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ५२४ । इस मण्डार ।

विशेष---महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

२८४१' सङ्घाप्रिक्रिया'''''' । पत्र सं० ६ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०० । व्य भण्डार ।

२८४२. सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति —िजनप्रभसूरि । पत्र सं०३। ग्रा० ११×४६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल । ले० काल सं० १७२४ ज्येष्ठ सुदी १०। पूर्ण । वे . सं० ****** ज भण्डार ।

विशेष-संवत् १४९४ की प्रति से प्रतिलिपि की गई थी।

२८४३. सिद्धान्तकौमुदी-भट्टोजी दीत्तित । पत्र सं० ८ । ग्रा० ११×५३ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ६४ । ज भण्डार ।

२-४४. प्रति स०२।पत्र सं०२४०। ले० काल 🗴 । वे० स० ६६। ज मण्डार।

विशेष--पूवाद्ध है।

Y

7

२८४४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १७६। ले० काल 🔀 । वे० सं० १०१। ज भण्डार।

विशेष---उत्तरार्द्ध पूर्ण है।

इसके श्रतिरिक्त ज भण्डार मे २ प्रतियां (वे॰ सं॰ ६५, ६६) तथा ट भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ सं॰ १६३४, १६६६) श्रीर हैं।

२८४६. सिद्धान्तकौमुदी """। पत्र सं० ४३ । आ॰ १२६४६ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-

विशेष—ग्रतिरिक्त इ, च तथा ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ६४८, ४०७, २७२) ग्रीर हैं।
२८४७. सिद्धान्तको मुदीटीका ""। पत्र सं० ६४। ग्रा० ११३ ×६ इच । भाषा-सस्तृत । विषय—
व्याकरण । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० ६४। ज भण्डार ।

विजेप-पत्रो के कुछ ग्रंग पानी से गल गये है।

२८४८. सिद्धान्तचिन्द्रका—रामचंद्राश्रम । पत्र सं० ४४ । ग्रा० ६५४६६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० वाल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४१ । श्रु भण्डार ।

२८४६. प्रति सं०२। पत्र स०२६। ले० काल सं०१८४७। वे० मं०१९४२। श्र भण्डार। विशेष—कृष्णागढ मे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी।

रूद्० प्रति सं० ३। पत्र स० १०१। ले० वाल स० १८४७। वे० सं० १९४३। स्त्र भण्डार। विशेष—इसी भण्डार मे १० प्रतिया (वे० सं० १६३१, १९४४, १९४४, १६४६, १९४७, १९५६, ६०८, ६१७, ६१८, २०२३) ग्रीर है।

२८६१ प्रति स० ४। पत्र सं ६४। ग्रा॰ ११६४४६ इंच। ले॰ काल स॰ १७८४ ग्रुपाढ बुदी १४।

२५६२ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १६०२ । वे० सं० २२३ । स्व भण्डार । विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० २२२ तथा ४०८) ग्रीर है ।

२८६३. प्रति सं०६। पत्र सं०२६। ले० काल सं०१७५२ चैत्र बुदी ६ वे० सं०६०। छ भण्डार। विशेष---इसी वेष्टन मे एक प्रति ग्रीर है।

रूप्टिंश प्रति सं०७। पत्र स्ट्र्इट। ले० काल सं० १८८४ श्रावरा बुदो ६। वे० सं० ३५२। ज भण्डार।

विशेप----प्रथम वृत्ति तक है । संस्कृत में कही शब्दार्थ भी हैं । इसी भण्डार में एक प्रति (वै० स० ३५३) भीर है ।

इसके श्रतिरिक्तः स्त्र भण्डार मे ६ प्रतिया (वे० स० १२८५, १६५४, १६५४, १६५६, १६५७, ६०८, ६१७, ६१८) ख भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २२२, ४०८) छ तथा ज भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ६०, ३५३ श्रीर है। स्त्र भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ११७७, १२६६, १२६७) अपूर्ण। च भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ४०६, ४१०) छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ११६) तथा ज भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ३४५, ३४८, ३४८) श्रीर है।

ये सभी प्रतिया श्रपूर्ण है।

२८६४. सिद्धान्तचित्रकाटीका—लोकेशकर । पत्र सं० १७ । ग्रा० ११३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र॰ काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ स॰ ८०१ । क भण्डार ।

विशेष--टीका का नाम तत्त्वदीपिका है ।

२८६६ प्रति सं २ । पत्र स० ६ से ११ । ले० काल × । श्रपूर्शा । वै० सं० ३४७ । ज भण्डार । विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२८६७ सिद्धान्तचिन्द्रकावृत्ति—सदानन्दगिषा । पत्र सं०१७३। ग्रा०११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रं काल × । ले० काल × । वे० सं० ८६ । छ भण्डार ।

विशेष--टीका का नाम सुबोधिनीवृत्ति भी है।

२८६८ प्रति सं०२। पत्र सं०१७८। ले० काल सं०१८५६ ज्येष्ठ बुदी ७। वे० सं०३५१। ज

विशेष--पं० महाचन्द्र ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

२८६९. मारस्वतदीपिका—चन्द्रकीर्त्तिसूरि । पत्र सं० १६०। ग्रा० १०४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल स० १६५६ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ७९५ । स्त्र भण्डार ।

ब्द्धः प्रति सं २ १ पत्र सं ६ ६ से ११६। ले॰ काल स॰ १६५७। वे॰ सं॰ २६४। इद् अण्डार। विशेष—चन्द्रकीर्ति के जिप्य हर्षकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी।

२८७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७२ । ले॰ काल सं० १८२८ । वे॰ सं० २८३ । क्यू भण्डार । विशेष—मुनि चन्द्रभागा खेतसी ने प्रतिलिपि की थी । पत्र जीर्गी हैं ।

२८७२. प्रति सं० ४ ' पत्र स० ३। ले० काल स० १६६१। वे० सं० १६४३। ट भण्डार।

विजेष—इनके अतिरिक्त अस्य च और ट भण्डार में एक एक प्रति (वे॰ सं॰ १०५५, ३६८ तथा २०६४) भीर है।

२८७३. सारस्वतद्शाध्यायी । पत्र सं० १० । म्रा० १०५×४६ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरता । रच काल × । ले० काल सं० १७६८ वैशाख बुदी ११ । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

विञेष - प्रति संस्कृत टीका सहित है। कृष्ण्दास ने प्रतिलिपि की भी।

२८७४. सिद्धान्त'चन्द्रिकाटीका " " । पत्र सं० १६ । ग्रा० १०×४६ इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्याकरसा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्स । वे० सं० ८४६ । ड भण्डार । २८७४. मिद्धान्तविन्दु-श्रीमधुसूद् सरस्वती । पत्र सं॰ २८ । ग्रा० १०३४६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १७४२ ग्रासोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८१७ । श्र भण्डार ।

विशेष्—इति श्रीमत्परमहुस परिद्राजकाचार्य श्रीविश्वेश्वर सरस्वती भगवत्पाद शिष्य श्रीमधुसूदन सरस्वती विरचितः सिद्धान्तिविदुस्समाप्तः ॥ सवत् १७४२ वर्षे ग्राश्विनमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्या बुधवासरे वगरूनाम्निनगरे मिश्र श्री श्यामलस्य पुत्रेण भगवन्नाम्ना सिद्धान्तिविदुरलेखि । शुभमस्तु ॥

२८७६ सिद्धान्तमंजूषिका—नागेशभट्ट। पत्र सं० ६३। ग्रा० १२३×५३ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० स० ३३४। ज भण्डार।

रूप्त । सिद्धान्त मुक्तावली — प्वानन भट्टाचार्य । पत्र सं० ७० । ग्रा० १२×५ है डंच । भाषा — संस्कृत । विषय - व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८३३ भादवा बुदी ३ । वे० सं० ३०८ । ज भण्डार ।

२८७८. सिद्धान्तमुक्तावली । पूत्र स० ७० । आ० १२×५ है इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरसा । र० काल × । ले० काल सं० १७०५ चैत सुदी ३ । पूर्सा । वे० स० २८६ । ज भण्डार ।

२८७६. हेमनीवृहद्वृत्ति ' । पत्र सं० ५४ । ग्रा० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० १४६ । म्ह भण्डार ।

२८८०. हेमव्याकरण्वृत्ति—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं० २४। आ० १२४६ इ च । भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण्। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० सं० १८४४। ट भण्डार।

२८८१. हेमीन्याकरण—हेमचन्द्राचार्य। पत्र स० ६३। ग्रा० १०×४३ इ'च । भाषा-सस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० स० ३५६।

विशेष—वीच मे अधिकाश पत्र नही हैं। प्रति प्राचीन है।



कोश

२८८२. अनेकार्थध्वितमंत्ररी—महीस्तपण कवि । पत्र सं० ११ । आ० १२४५ है इंच । भाषा— संस्कृत । विष्य-कोश । र० काल ४ । ले० काल ४ । वै० सं० १४ । ड भण्डार ।

२८६३. अनेकार्थध्विनमञ्जरी । पत्र स० १४। आ० १०४४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ४। ले० काल ४। अपूर्ण । वै० सं० १९१४। ट भण्डार।

विशेष- तृतीय ग्रधिकार तक पूर्ण है।

न्द्रप्त अनेकार्थमञ्जरी—नन्द्रास । पत्र स० २१ । ग्रा० ५६ ×४६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१८ । मा भण्डार ।

२८८४ अनेकार्थशत—अृद्वारक हर्षकीत्ति । पत्र सं० २३ । आ० १०३×४३ इंज् । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १६६७ वैशाल बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १४ । इन् भण्डार ।

२८५६. अनेकार्थसंग्रह—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं०४। आ० १०४१ इंच। आषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ४। ले० काल सं० १६६९ अषाढ बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ३८। क मुण्डार।

२८६७. अनेकार्थसग्रह" "। पृत्र सं० ४१ ! आ० १०×४ है इ व । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण | वे० सं० ४ । च भण्डार ।

विशेष-इसका दूसरा नाम महीपकोश भी है।

रम्म्यः अभिधानकोष्र—पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० ३४ । ग्रा० ११६×६ इ व । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७१ । अ भण्डार ।

२८८६. अभिधानचितामिणनाममाला—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं• ६। ग्रा० ११४४ इच। भाषा— संस्कृत। विषय—कोश। र॰ काल ४। ले॰ काल ४। पूर्ण। वे॰ सं॰ ६०४। श्र भण्डार।

विशेष-केवल प्रथमकाण्ड है।

२८०. प्रति सं २ । पत्र सं ० २३४ । ले० काल सं ० १७३० ग्राषाढ सुदी १० । वे० सं० ३६ । क

विशेष—स्वोपज्ञ संस्कृत टीका सहित है। महाराणा राजसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

२८६१. प्रति सं०३। पत्र सं०६६। लेल काल मंत १८०२ ज्येष्ठ मुदी १०। येल मंत्र ३३। क

विशेष—स्योपञवृत्ति है।

२८६२ प्रति सं०४। पत्र मं०७ मे १३४। ते० गाल गं० १७८० प्रामीज गुर्दा ११। प्रामा । वेट स०५। च भण्डार।

२८६३ प्रति सं०५। पत्र सं०११२। ले॰ कान गं॰ १६२६ घाषाद युदी २। वै० गं॰ ६५। ज भण्डार।

२८६४. प्रति सं०६। पत्र स ५८। ने० गाल मं॰ १८१३ वैद्याप मुदी १३। वे॰ मं॰ १११। ज भण्डार।

विशेष-पं ० भीमराज ने प्रतिलिपि की थी।

२८६४. स्त्रिभिधानरत्नाकर—धर्मचन्द्रगिशा । पत्र गं० २६ । म्रा० १०४४६ र च । भाषा-मन्द्रत । विषय-कोशा । र० काल ४ । ले० काल ४ । म्रपूर्ण । वे० गं० ८२७ । स्त्र भण्टार ।

२८६६. श्रभिधानसार—पं० शिवजीलाल । पत्र स० २३ । ग्रा० १२४५ हच । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ८ । स्त्र भण्यार ।

विशेष-देवकाण्ड तक है।

२८७. श्रमरकोश-श्रमरसिंह । पत्र सं० २६ । आ० १२%६ इ.च । भाषा-संस्कृत । निषय-कोश । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १८०० ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २०७४ । श्रा भण्डार ।

विशेष-इसका नाम लिंगानुशासन भी है।

२८६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल स० १८३४ । वै० स० १६११ । त्र भण्डार । २८६६. प्रति स० ३ । पत्र स० ५४ । ले० काल स० १८११ । वे० स० ६२२ । ऋ भण्डार ।

२६००. प्रति स०४। पत्र स०१६ से ६१। ले० काल सं०१८८२ ग्रासोज सुदी १। प्रपूर्ण । वे० सं० ६२१। स्त्र भण्डार।

२६०१. प्रति सं० ४ | पत्र स० ६६ | ले० काल सं० १८६४ | वे० सं० २४ | क भण्डार | २६०२. प्रति सं० ६ | पत्र स० १३ से ६१ | ले० काल सं० १८२४ | वे० सं० १२ | प्रपूर्ण | स

२७३

कोश]

२६०३. प्रति सं०७ । पत्र स०१६। ले० काल स०१८६ ग्रासोज सुदी १। वे० सं०२४। ड भण्डार।

विशेष -- प्रथमकाण्ड तक है। अन्तिम पत्र फटा हुआ है।

२६०४ प्रति सं द । पत्र स० ७७ । ले० काल सं० १८८३ ग्रासोज मुदी ३ । वे० सं० २७ । ड भण्डार ।

विशेष-जयपुर मे दीवाए। ग्रमरचन्दजी के मन्दिर मे मालीराम साह ने प्रतिलिपि की थी।

२६०४. प्रति सं०६। पत्र स० ८४। ले० काल सं० १८१८ कार्त्तिक बुदी ८। वे० सं० १३६। छ

विशेष—ऋषि हेमराज के पठनार्थ ऋषि भारमह्म ने जथदुर्ग मे प्रतिलिपि की थी। स० १८२२ आषाढ भुदी २ मे ३) रु० देकर प० रेवतीसिंह के शिष्य रूपचन्द ने श्वेताम्बर जती से ली।

२६०६. प्रति स० १०। पत्र स० ६१ से १३१। ले० काल सं० १८३० आषाढ बुदी ११। अपूर्ण। वै० स० २६५। छ भण्डार।

विशेष-मोतीराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

२६०७ प्रति सं०११। पत्र स० द४। ले० काल स०१८८१ वैशाख सुदी १५। वे० सं०३४४। ज भण्डार।

विशेष—कही २ टीका भी दो हुई है।

२६०८. प्रति म०१२। पत्र स० ४६। ले० काल सं०१७६६ मंगसिर सुदी ५। वे० सं०७। व्य

विशेष—हनके अतिरिक्त आ भण्डार मे २१ प्रतिया (वै० स० ६३६, ६०४, ७६१, ६२३, ११६६, ११६२, ५०६, ६१७, १२६६, १२६७, १२६६, १६६०, १३४२, १६३६, १४४६, १४६० १६४१, २१०४) क भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० २१, २२, २३, २४, २६) ख भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स०, १०, ११, २६६ २६६) छ भण्डार मे ११ प्रतिया (वे० सं० १६, १७, १८, १८, २०, २१, २२, २३, २४, २६) च भण्डार मे ७ प्रतिया (वे० सं० ६, १०, ११, १२, १३, १४) छ भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० १३६ १३६, १४१, २४ कि]) ज भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ५६, ३५०, ३५२, ६२) मा भण्डार १ प्रति (वे० स० ६४), तथा ट भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० १६००, १६६५, २१०१ तथा २०७६) मौर हैं।

े २६०६ अमरकोषटीका—भानुजीदीिकत। पत्र स० ११४ आ० १०×६ इख्र। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६। च भण्डार।

विशेष—बचेल वशोद्भव श्री महीधर श्री कीर्त्तिसिहदेव की श्राज्ञा से टीका लिखी गर्ड।

२६१०. प्रति स० २। पत्र सं० २४१। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० स० ७। च भण्डार।

२६११. प्रति सं० ३। पत्र स० ३२। ले० काल ×। वे० स० १८८६। ट भण्डार।

विशेष—प्रथमखण्ड तक है।

२६१२. एका ज़रकोश--ज्ञपग्राक । पत्र सं०४। ग्रा०११४५३ इ.च। भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वै० स० ६२। क भण्डार।

२६१३. प्रति सं०२। पत्र सं०२। ले० काल सं०१८८६ कार्तिक मुदी ४ । वे० स० ४१। च भण्डार।

२६१४. प्रति सं०३। पत्र स०२। ले॰ काल स०१६०३ चैत बुदी ६। वे० स० १५५। ज भण्डार।

विशेष--पं व सदासुखजी ने अपने शिष्य के प्रतिबोधार्थ प्रतिलिपि की यी।

२६१४. एकात्तरीकोश—वररुचि । पत्र स० २ । ग्रा० ११९४५६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे० स० २०७१ । श्र भण्डार ।

२६१६. एकात्त्रीकोश"' । पत्र स० १०। म्रा० ११×५ इ च। भाषा-सम्कृत । विषय-कोश । र० काल ×। ले० काल ×। म्रपूर्ण । वे० स० १३००। म्रा भण्डार ।

२६१७. एकात्त्रताममाला "। पत्र स०४। ग्रा० १२०४६ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-कोश। र० काल ४। ले० काल स० १६०३ चैत्र बुदी ६। पूर्ण। वे० स० ११५। ज भण्डार।

विशेष—सवाई जयपुर मे महाराज। रामसिंह के शासनकाल मे भ० देवेन्द्रकीर्त्त के समय मे पं० सदासुखजी। के शिष्य फतेलाल ने प्रतिलिपि की थीं।

२६१८. त्रिकाय्डशेषसूची (अमरकोश) -- अमर्सिह । पत्र स० ३४ । आ० ११३×५६ इ'च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४१ । च भण्डार ।

विशेष—अमरकोश के काण्डो में श्राने वाले शब्दो की श्लोक सख्या दी हुई है। प्रत्येक श्लोक का प्रारम्भिक। श्रंश भी दिया हुआ है।

इसके अतिरिक्त इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे॰ सं० १४२, १४३, १४५) श्रीर है।

भण्डार ।

२६१६. त्रिकाग्रहशेषांभिधान—श्री पुरुषोत्त्रमदेव । पत्र सं० ४३। ग्रा० ११×५ इंच । भाषा— सस्कृत । विषय—कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८०। ङ भण्डार ।

रहेर० 'प्रति'सं० २ । पत्र सं० ४२ । लिं० काल 🗴 । वे० सं० १४४ । च मण्डार ।

रहर१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५ । लिं० काल सं० १९० ३ म्रासींज बुदी ६ । वे० सं० १८ ।

विशेष—जंगपुर के महाराजा रामिसिंह के श्रोसनकाल में पं० सदासुखजी के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिमि

२६२२. नाममाला—धनजय। पत्र सं० १६। ग्रा० ११×५ इ न । भाषा-सस्कृत । विषय—कोश। र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० १४७। ग्रा भण्डार।

२६२३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० केल सं० १८३७ फेर्गुग् सुदी १ । वे० स० २८२ । ख भण्डार ।

विशेष-पाटीदी के मन्दिर मे खुशालचेन्द ने प्रतिलिपि की थीं।

इसके अतिरिक्त आ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे॰ सं॰ १४, १०७३, १०५६) और हैं।

२६२४. प्रति सं०३।पत्र सं०१५। ले० काल सं०१३०६ कार्त्तिक बुदी ८। वे० सं०६३। ख

विशेष—ङ भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं॰ ३२२) ग्रीर है।

२६२४. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६। ले० काल स० १६४३ ज्येष्ठ सुदी ११। वे० सं० २४६। छ्र

विशेष--पं० भाराम्ल ने प्रतिलिपि की थी।

इसके अतिरिक्त इसी भण्डार मे एक प्रति (वि सं २६६) तथा जै भण्डार मे (वे० सं १५६) की एक प्रति और है।

२६२६ प्रति सं० ४'। पत्र सर्० २७ । ले॰ कार्ल सं० १८६६ । ने॰ सं॰ १८५ । न भण्डीर । २६२७. प्रति सं० ६'। पत्र सं० १५ । ले॰ कार्ल सं॰ १८०१ फाग्रुग सुदी है । ने॰ सं॰ ५२२ । न भण्डार ।

२६२८. प्रति सं०७। पत्र सं०१७ से ३६। ले० काल ४। अपूर्ण। वे० सं०१६०८। ट भण्डार। विशेष—इसके अतिरिक्त अपा भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं०१०७३, १४, १०८६) इ, इइ तथा जभण्डार मे १-१ प्रति (वे० स०३२२, २६६, २७६) और है।

२६२६ नाममाला "" '। पत्र सं० १२। ग्रा० १०×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कोप। र० काल ×। त्रपूर्ण। वे० स० १६२८। ट भण्डार।

२६३० नाममाला—वनारसीदास । पत्र सं०१४। ग्रा० ५४५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय कोश । र० काल 🗙 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० ६४ । ख भण्डार ।

२६३१ बीजक(कोश) : "'। पत्र स० २३। आ० ६३ ×४१ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १००४। स्त्र भण्डार।

विशेष-विमलहसगिए ने प्रतिलिपि की थी।

२६३२. मानमञ्जरी—नंद्दास । पत्र सं० २२ । ग्रा० द×६ इ च । भाषा—हिन्दी विषय-कोश । र० काल × । ले० काल सं० १८५२ फाग्रुग सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ५६३ । द्व भण्डार ।

विशेष-चन्द्रभान बज ने प्रतिलिपि की थी।

२६३३. मेदिनीकोश । पत्र स० ६४। ग्रा० १०३ \times ४३ इच। भाषा—संस्कृत । विषय-कोश । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० ५६२। क भण्डार ।

२६३४. प्रति सं०२ | पत्र स० ११६ । ले० काल × । वे० सं० २७८ । च भण्डार ।

२६३५. रूपमञ्जरीनाममाला—गोपालदास सुत रूपचन्द् । पत्र सं० ८ । ग्रा० १०४४ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल स० १६४४ । ले० काल स० १७८० चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १८७६ । श्र भण्डार ।

विशेष--प्रारम्भ मे नाममाला की तरह क्लोक है ।

२६३६. त्रघुनाममाता—हर्षकीत्तिसूरि। पत्र सं०२३। ग्रा० ६×६२ इख्न । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल सं०१८२८ ज्येष्ठ बुदी ६। पूर्ण । वे० स०११२। ज भण्डार ।

विशेप-सवाईराम ने प्रतिलिपि को थी।

२६३७ प्रति सं०२। पत्र सं०२०। ले० काल ४। वे० स०४६८। व्य भण्डार।

२६३८ प्रति स०३। पत्र स०६ से १६, ३७ से ४५। ले० काल 🗙 । म्रपूर्ण । वे० स०१५८४। ट भण्डार।

२६३६. लिंगानुशासन ' "। पत्र सं० ५। ग्रा० १०×४३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण । वे० स० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष-- ५ से मागे पत्र नहीं हैं।

į

२६४०. लिंगानुशासन—हेमचन्द्र। पत्र सं० १०। श्रा० १०×४३ इख्र। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६०। ज भण्डार।

विशेष-कही २ शब्दार्थ तथा टीका भी संस्कृत मे दी हुई है।

२६४१. विश्वप्रकाश —वैद्यराज महेश्वर । पत्र सं० १०१ । आ० ११४४ई इख । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल सं० १७६६ श्रासीज सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । क भण्डार ।

२६४२. प्रति सं०२। पत्र सं०१६। ले० काल ४। वै० सं० ३३२। क भण्डार।

२६४३. विश्वलोचन-धरसेन। पत्र सं० १८। ग्रा० १०३×४३ इख्रा भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल सं० १५६६। पूर्ण। वे० सं० २७५। च भण्डार।

विशेष---ग्रन्थ का नाम मुक्तावली भी है।

२६४४. विश्वलोचनकोशकीशब्दानुक्रमिण्का"""। पत्र सं० २६। ग्रा० १०४४ई इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ८८७ । स्त्र भण्डार ।

२६४४. शतक "''। पत्र सं० ६ । ग्रा० ११×४३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ६६८ । ङ भण्डार ।

२६४६. शब्दप्रभेद व धातुप्रभेद—सकत वैद्य चूडामिण श्री महेश्वर । पत्र सं० १६ । ग्रा० १०×५३ इन । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वै० सं० २७७ । ख भण्डार ।

२६४७ शब्द्रतः । पत्र सं० १६६ । म्रा० ११×५ इख्न । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । ८० काल × । म्रपूर्ण । वे० सं० ३४६ । ज भण्डार ।

२६४८. शारदीनाममाला"""। पत्र सं० २४ से ४७। ग्रा० १०००४४१ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ६८३ । ग्रा भण्डार ।

२६४६. शिलोञ्ज्ञकोश—कवि सारस्वत । पत्र सं० १७ । श्रा० १०३×५ दख्र । भाषा-संस्कृत । । वषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (तृतीयखंड तक) वे० सं० ३४३ । च भण्डार ।

विशेष—रचना अमरकोश के आधार पर की गई है जैसा कि कवि के निम्न पद्यों से प्रकट है।

कवेरमहसिंहस्य कृतिरेषाति निर्मला। श्रीचन्द्रतारकं भूयान्नामलिंगानुकासनम्। पद्मानिबोधयत्यकर्कः शास्त्राणि कुरुते कविः तत्सौरभनभस्वंतः संतस्तन्वन्तितद्युणाः॥

लूनेष्वमरसिंहेन्, नामृजिगेषु शालिषु । एष वाङ्गमयवप्रेषु शिलोछ क्रियते मया ।।

२६४०. सर्वाथसाधनी—भट्टवररुचि । पत्र सं० २ से २४ । म्रा० १२×५ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल सं० १५६७ मंगसिर बुदी ७ । म्रपूर्ण । वे० सं० २१२ । ख भण्डार । विशेष—हिसार पिरोज्यकोट मे रुद्रपङ्गीयगच्छ के देवसुंदर के पट्ट मे श्रीजिनदेवसूरि ने प्रतिलिपि की थी ।



ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान

२६४१. श्रारिहंत केवली पाशा । पत्र सं० १४ । ग्रा० १२४५ इंच । भाषा- संस्कृत । वषय-ज्योतिष । र० काल सं० १७०७ सावन सुदी ५ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० ३५ । क भण्डार ।

विशेष---ग्रन्थ रचना सहिजानन्दपुर मे हुई थी।

२६५२. ऋरिष्ट कर्ता '''' '''' । पत्र सं० ३ । म्रा० ११४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० २५६ । ख भण्डार ।

विशेष-- ६० श्लोक हैं।

२६४३. श्रारिष्टाध्याय ''''''' । पत्र सं० ११ । श्रा० ५४ । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल ४ । ले० काल सं० १८६६ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १३ । ख भण्डार ।

विशेष—प० जीवरणराम ने शिष्य पन्नालाल के लिये प्रतिलिपि की । ६ पत्र से ग्रागे भारतीस्तोत्र दिया

२६४४. अवजद केवली "" । पत्र सं० १० । आ० ८४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० १४६ । ञा भण्डार ।

२६४४. उच्चप्रह फल्ल । पत्र सं० १। म्रा० १०३४७३ इंच । भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष र० काल ४। ने० काल ४। पूर्ण । वे० सं० २६७ । ख भण्डार।

२६४६. कर्गा कौतूहल "" । पत्र सं० ११ । ग्रा० १०३४४ है इंच । भाषा-मंस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वै० सं० २१४ । ज भण्डार ।

२६४७. करलक्खण्'''''' । पत्र सं० ११ । आ० १०३४४ इ'च । भाषा-प्राकृत । विषय-ज्योतिष । र॰ काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं। माशिष्वयचन्द्र ने वृन्दावन मे प्रतिलिपि की।

२६४८. कर्पूरचक्र—। पत्र सं० १। आ० १४३×११ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८६३ कार्तिक बुदी ४।पूर्ण। वे० सं० २१६४। आ भण्डार।

विशेष—चक्र भवन्ती नगरी से प्रारम्भ होता है, इसके चारो श्रोर देश चक्र है तथा उनका फल है। पं० खुशाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। २६४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल सं० १८४० । वे० स० २१६६ स्त्र भण्डार । विशेष—मिश्र धरणीधर ने नागपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२६६०. कर्मराशि फल (कर्म विपाक)*****। पत्र सं० ३१। ग्रा॰ ५३×४ इ'च। भाषा-संस्कृत विपय-ज्योतिष । र॰ काल \times । ले॰ काल \times । पूर्ण \times । वे॰ सं॰ १६५१। ग्रा भण्डार ।

२६६१. कर्म विपाक फल """। पत्र सं० ३। ग्रा० १०४४ई इ च। भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष र॰ काल ४। ले॰ काल ४। पूर्ण । वे॰ सं० १३। श्र भण्डार।

विशेप--राशियों के अनुसार कर्मों का फल दिया हुआ है।

२६६२. कालज्ञान—। पत्र सं० १ । ग्रा० ६ \times ४ $\frac{1}{2}$ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० १८१८ । ग्रा भण्डार ।

२६६३. काल्रह्मान"""। पत्र सं०२। श्रा०१० $\frac{1}{2}$ \times ४३ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण। वे० सं०११८६। श्रा भण्डार।

२६६४. कौतुक लीलावती। पत्र सं० ४। म्रा० १०३×४ई इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ४। ले० काल स० १८६२। वैशाख सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० २६१। स्व मण्डार।

२६६४. च्लेत्र व्यवहार"""। पत्र सं॰ २० | म्रा० ५६४६ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल ४ । ले० काल ४ । म्रपूर्ण । वे० सं० १६६७ । ट भण्डार ।

रह६६. गर्गमनोरमा ""। पत्र सं०७। आ०७३×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष।
र० काल ×। ले० काल सं० १८८८। पूर्ण । वे० सं० २१२। मा भण्डार।

२६६७. गर्गसहिता—गर्गऋषि । पत्र स० ३ । ग्रा० ११४५६ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष र० काल ४ । ले० काल स० १८८६ । ग्रपूर्ण । वे० सं० ११६७ । ग्रा भण्डार ।

२६६८. प्रह दशा वर्णन""" । पत्र सं० १८ । आ० ६४४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल ४ । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० १७२७ । ट भण्डार ।

विशेष---ग्रहो की दशा तथा उपदशाग्रो के ग्रन्तर एवं फल दिये हुए हैं।

२६६६. प्रह् फल " " | पत्र स०६ | ग्रा०१०३४५ इच । भाषा-संस्कृत | विषय-ज्योतिष | र० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण | वे० सं० २०२२ । ट भण्डार ।

रध्यः. ब्रह्ताघव—गर्गेश देवझ । पत्र सं० ४ । आ० १००४४६ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय– ज्योतिष । र० काल ४ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० सं० ४४ । ख भण्डार । २६७८. चन्द्रनाडीसूर्यनाडीकवच"""। पत्र सं०,४-२३ । ग्रा० १०४४ दे इंच । भाषा-संस्कृत । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्या । वे० सं० १६८ । ड भण्डार ।

विशेष-इसके आगे पचन्नत प्रमाण लक्षण भी है।

२६७६. चसत्कारिचतामिषाःःः। पत्र स० २-६। ग्रा० १०×४६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० ×। १८१८ फाग्रुगा बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ६३२। स्त्र भण्डार।

रेह्न०. चमत्कारचिन्तामिणः पत्र स० २६। ग्रा० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० १७३०। ट भण्डार।

२६८१. छायापुरुषतान्त्रगाःःःः। पत्र सं०२। म्रा० ११×४ है इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सामुद्रिक शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं०१४४ । छ् भण्डार ।

विशेष--नौनिधराम ने प्रतिलिपि की थी।

२६८२. जन्मपत्रीग्रहविचार """। पत्र स० १। ग्रा० १२×५६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स० २२१३। श्र भण्डार।

२६८३. जन्मपत्रीविचार******। पत्र सं० ३। ग्रा० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिप र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६१०। श्र भण्डार।

२६८४. जन्मप्रदीप—रोमकाचार्य। पत्र स० २-२०। ग्रा० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८३१। ग्रपूर्ण। वे० सं० १०४८। श्रा भण्डार।

विशेष-शंकरभट्ट ने प्रतिलिपि की थी।

२६८६ जातककर्मपद्धति"" श्रीपति । पत्र सं०१४। ग्रा०११४४३ इंच । भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष । र० काल ४। ले० काल सं०१६३८ वैशाख सुदी १। पूर्ण । वे० सं०६००। स्त्र भण्डार ।

२६५७. जातकपद्धति—केशव । पत्र सं० १० । ग्रा० ११ \times ५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० २१७ । ज भण्डार ।

२६८८. जातकपद्धति""। पत्र सं० २६ । आ० ५ \times ६३ । भाषा–सस्कृत । र० काल \times । ले० काल \times । अपूर्ण । वे० सं० १७४६ । ट भण्डार ।

विशेष-प्रति हिन्दी टीका सहित है।

२८२]

२६८६. जातकाभरण्—देविझहू हिराज । पत्र सं० ४३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १७३६ भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८६७ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--नागपुर मे पं॰ सुखकुशलगिए। ने प्रतिलिपि की थी।

२६६०. प्रति सं०२। पत्र सं०१००। ले० काल सं०१६४० कार्तिक सुदी ६। वे• सं०१५७। ज भण्डार।

विशेष--भट्ट गंगाधर ने नागपुर मे प्रतिलिपि की थी।

२६६१. जातकालंकार : " | पत्र स०१ से ११। ग्रा० १२×५ डच। भाषा-संस्कृत | विषय-ज्वोतिष । र० काल × । ले० काल × । श्रपूर्ण । वे० सं०१७४५ । ट भण्डार ।

३६६२. उयोतिपरत्नमाला''''''। पत्र स० ६ मे २४। ग्रा० १०३८४३ इंच। भाषा-सस्कृत । विषय-उयोतिष । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० १६८३ । त्र भण्डार ।

> २६६३. प्रति सं०२ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० स० १५४ । ज मण्डार । विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२०४ । स्र भण्डार ।

२६६४. ज्योतिषफलाग्रंथ" । पत्र सं० ६ । ग्रा० १०३४४३ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय-ज्योतिष र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० २१४ । ज भण्डार ।

२६६६. ज्योतिषसारभाषा—कृपाराम । पत्र सं०३ से १३। ग्रा०६३×६ इख्र । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८४१ कार्तिक बुदी १२ । ग्रपूर्ण । वे० स० १५१३ । भण्डार ।

विशेष-भतेराम वैद्य ने नोनिधराम बज की पुस्तक से लिखा। आदि भाग-(पत्र ३ पर)

ग्रय केंदरिया त्रिकोएा घर को भेद--

केंदरियो चोथो, भवन सप्तम दसमी जान।
पंचम ग्ररु नोमो भवन येह त्रिकोरा बखान ॥६॥
तीजो पसटम ग्यारमो ग्रर दसमो वर सेखि।
इन को उपचे कहत है सबै ग्रंथ मे देखि ॥७॥

ग्रन्तिम---

वरष लग्यो जा ग्रंस मे सोई दिन चित घारि । वा दिन उतनी घडी जु पल बीते लग्न विचारि ॥४०॥ लगन लिखे तै गिरह जो जा घर बैठो ग्राय । ता घर के फल सुफल को कीजे मिठ बनाय ॥४१॥

इति श्री कवि कृपाराम कृत भाषा ज्योतिषसार सपूर्ण।

२६६७. ज्योतिषसारत्तमचिन्द्रका—काशीनाथ। पत्र सं० ६३। म्रा० ६३×४ इंच। भाषा-संस्कृत | विषय-ज्योतिष | र० काल × | ले० काल स० १८६३ पौष सुदी २ | पूर्ण । वे० सं० ६३ | ख भण्डार ।

२६६८. ज्योतिषसारसूत्रिटिप्पण्—नारचन्द्र । पत्र सं० १६ । ग्रार्० १०×४ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल-× । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८२ । व्य भण्डार ।

विशेष--मूलग्रन्थकर्ता सागरचन्द्र हैं।

२६६६. ज्योतिषशास्त्र''' ""। पत्र सं० ११। आ० ५×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण। वै० सं० २०१। इक भण्डार।

३०००. प्रति सं० २। पत्र स० ३३ | ले० काल 🗶 | वे० सं० ५२१ | व्य भण्डार।

३००१. ज्योतिषशास्त्र'''''। पत्र सं० ४ । ग्रा० १०×५३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १६८४ । ट भण्डार ।

२००२. ज्योतिषशास्त्र"ः । पत्र सं० ४८ । आ० ६×६३ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १७६८ ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्या । वे० सं० १११४ । ऋ भण्डार ।

विशेष--ज्योतिष विषय का संग्रह ग्रन्थ है।

प्रारम्भ में कुछ व्यक्तियों के जन्म टिप्पगा दिये गये है इनकी संख्या २२ है। इनमें मुख्यरूप से निम्न नाम तथा उनके जन्म समय उल्लेखनीय हैं—

महाराजा विश्वनिसह के पुत्र महाराजा जयसिंह जन्म सं० १७४५ मंगसिर
महाराजा विश्वनिसह के द्वितीय पुत्र विजयसिंह जन्म सं० १७४७ चैत्र सुदी ६
महाराजा सवाई जयसिंह की राग्गी गींडि के पुत्र
रामचन्द्र (जन्म नाम मांभूराम) सं० १७१५ फागुगा सुदी २
दौलतरामजी (जन्म नाम बेगराज) सं० १७४६ श्रापाढ बुदी १४

३००३. ताजिकसमुचय''''''। पत्र स० १५। ग्रा० ११×४३ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८५६। पूर्ण। वै० सं० २५५। ख भण्डार

विशेष-वडा नरायने मे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे जीव ग्राम ने प्रतिलिपि की थी ।

३००४ तात्कालिकचन्द्रशुभाशुभफलः ""। पत्र सं०३। ग्रा०१०३×४६ इख्र। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स०१२२। छ भण्डार।

३००५ त्रिपुरवंधमुहूर्तं ""। पत्र सं०१। ग्रा०११×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स०११८८ । ऋ भण्डार ।

३००६. त्रैलोक्यप्रकाशः ""। पत्र स० १६ । ग्रा० ११×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ सं॰ ६१२ । श्र भण्डार ।

विशेप—१ से ६ तक दूसरी प्रति के पत्र है। २ से १४ तक वाली प्रति प्राचीन है। दो प्रतियो का सिम्मश्रण है।

२००७. दशोठनमुहूर्ताः "। पत्र सं० ३ । आ० ७३%४ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७२४ । स्त्र भण्डार ।

२००८. नत्त्रविचारः । पत्र सं० ११ । ग्रा० ८४६ डञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १८६८ । पूर्ण । वे० स० २७६ । भा भण्डार ।

विशेप--छीक ग्रादि विचार भी दिये हुये है।

निम्नलिखित रचनायें ग्रीर है-

संज्ञनप्रकाश दोहा— किव ठाकुर हिन्दी [१० किवत्त]

मित्रिवेषय के दोहे— हिन्दी [४४ दोहें है]

रक्तगुझाकलप— हिन्दी [ले० काल सं० १६६७]

विशेप—लाल चिरमी का सेवन बताया गया है निसके साथ लेने से क्या ग्रसर होता है इसका वर्शन 3६ दोहों में किया गया है।

२००१. नत्तत्रवेधपी हाज्ञान """। पत्र सं० ६ । मा० १०१ ४४ हे इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-

३०१०. नत्तत्रसत्र ""। पत्र सं० ३ से २४। ग्रा० ६×३६ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८०१ मंगसिर सुदी ८ । ग्रपूर्ण । वे० सं० १७३६ । ग्रा भण्डार

ब्योतिष एवं निमित्तज्ञान

३०११. नरपितजयचर्या — नरपित । पत्र सं० १४८ । ग्रा० १२३×६ इंच । भाषां-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल सं० १५२३ चैत्र सुदी १५ । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ६४६ । त्र्य भण्डार । विशेष—४ से १२ तक पत्र नहीं है ।

३०१२. नारचन्द्रज्योतिपशास्त्र—नारचन्द्र । पत्र सं० २६ । आ० १०×४३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विपय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८१० मगसिर बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १७२ । आ भण्डार ।

३०१३ प्रति स०२। पत्र स०१७। ले० काल ×। वे० सं० ३४४। ऋ भण्डार।

३०१४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३७। ले० काल सं० १८६५ फाग्रुग सुदी ३। वे० सं० ६५। ख भण्डार।

विशेष--- प्रत्येक पक्ति के नीचे मर्थ लिखा हुमा है।

३०१४. निमित्तज्ञान (भद्रबाहु संहिता)—भद्रबाहु । पत्र सं० ७७ । ग्रा० १०३×५ इंग्र । भाषां— संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७ । ग्रा भण्डार ।

३०१६ निषेकाध्यायवृत्ति """। पत्र सं० १८ । श्रा० ५×६ ई इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १७४८ । ट भण्डार ।

विशेष--१८ से आगे पत्र नहीं है।

३०१७. नीलकठताजिक—नीलकंठ। पत्र सं० १४। ग्रा० १२×५ इख्र। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। श्रपूर्ण। वे० सं० १०५८। स्त्र भण्डार।

३०१८. पद्धागप्रबोध """। पत्र सं० १० । ग्रा० ८४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिर्ष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७३४ । ट भण्डार ।

३०१६. पंचांग—चरहू। छ भण्डार।

विशेष---निम्न वर्षो के पचाग है।

सवत् १८२६, ५२, ५४, ५४, ५६, ६८, ६१, ६२, ६४, ७१, ७२, ७३, ७४, ७६, ७७, ७८, ७०, ६०, ६१, ६३, ६७, ६८।

३०२०. पंचांग"""। पत्र सं० १३ । म्रा० ७ $\frac{2}{5}$ \times ५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-उयोतिष । र० काल \times । ले० काल सं० १६२७ । पूर्ण । वे० स० २४७ । ख भण्डार ।

३०२१. पंचांगसाधर्न---गरोश (केशवपुत्र)। पत्र सं० ५२। आ० ६×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १८६२। वे० स० १७३१। ट मण्डार।

३०२२. पल्यविचार*****। पत्र सं० ६ । ग्रा० ६ $\frac{1}{9}$ \times ४ $\frac{3}{9}$ दख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ६५ । ज भण्डार ।

३०२३ पत्यविचार """। पत्र सं०२। ग्रा० ६ ४४% इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-शकुनशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्णी । वे० स०१३६२। ग्रा भण्डार।

३०२४ पाराशरी''' '' । पत्र सं० ३ । म्रा० १३ \times ५ $\frac{3}{6}$ इच । भाषा-सस्कृत । विपय-ज्योतिष । र० काल \times । ते० काल \times । पूर्ण । वे० स० ३३२ । ज भण्डार ।

३०२४. पाराशरीसज्जनरंजनीटीका ""। पत्र सं० २३ । ग्रा० १२×६ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्योतिप । र० काल × । ले० काल स० १८३६ ग्रासोज सुदी २ । पूर्ण वे० स० ६३३ । म्र भण्डार ।

३०२६. पाशाकेवली-गर्गमुनि । पत्र स० ७ । आ० १०३×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८७१ । पूर्ण । वे० स० ६२५ । स्त्र भण्डार ।

विशेप---ग्रन्थ का नाम शकुनावली भी है।

३०२७. प्रति सं० २ | पत्र स० ४ । ले० काल स० १७३६ | जीर्गा । वे० सं० ६७६ । स्त्र भण्डार । विशेष—ऋषि मनोहर ने प्रतिलिपि की थी । श्रीचन्द्रसूरि रचित नेमिनाथ स्तवन भी दिया हुमा है । ३०२८. प्रति सं० ३ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० सं० ६२३ । स्त्र भण्डार ।

३०२६. प्रति सं० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८१७ पौप सुदी १ । वे० सं० ११८ । छ

विशेष—निवासपुरी (सागानेर) मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे सवाईराम के शिष्य नौनगराम ने प्रतिलिपि की थी।

३०३०. प्रति स० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल 🗡 । वे० स० ११८ । छ भण्डार ।

३०२१. प्रति सं०६। पत्र स०११। ले० काल स०१८६ वैशाख बुद। १२। वे० स०११४। छ भण्डार।

विशेप--दयाचन्द गर्ग ने प्रतिलिपि की थी।

२०२२. पाशाकेवली--ज्ञानभास्कर। पत्र सं० ४। ग्रा० ६×४३ इख्र। भाषा-संस्कृत। विषय-निमित्त शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्णी वे० स० २२०। च भण्डार।

३०३३. पाशाकेवली ""। पत्र सं० ११ । आ० ६×४३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्तशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४६ । आ भण्डार ।

२०२४. प्रति सं०२। पत्र सं०६। ले० काल सं०१७७५ फाग्रुग् बुदी १०। वे० सं०२०१६। स्र भण्डार। विशेष—पाढे दयाराम सोनी ने स्रामेर मे मिल्लिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी। इसके अतिरिक्त आ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० १०७१, १०८८, ७६८) ख भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १०८) छ भण्डार मे ३ प्रतियां (वे० सं० ११६, ११४, ११४) ट भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १८२४) और हैं।

२०२४ पाशाकेवली। पत्र सं० ४ । आ० ११३×५ इख । भाषा —हिन्दी विषय — निमित्तशास्त्र । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । स्र भण्डार ।

विशेष-पं० रतनचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

३०३६. प्रति सं०२।पत्र सं०५। ले० काल ४। वे० स० २५७। ज भण्डार।

३०३७. प्रति सं० ३। पत्र सं० २६। ले० काल 🗙। वे० स० ११६। व्य भण्डार।

३०३८. पाशाकेवली ""। पत्र सं० १ । म्रा० ६×५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । ,र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५६ । स्र भण्डार ।

३०३६ पाशाकेवली "" । पत्र सं० १३ । म्रा० ५३×५ई इख । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८५० । म्रपूर्ण । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

विशेष-विशनलाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। प्रथम पत्र नही हैं।

२०४०. पुरश्चरण्विधि" ""। पत्र सं० ४ । म्रा० १० \times ४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल \times । पूर्ण । वे० स० ६३४ । स्र भण्डार ।

विशेष-प्रति जीर्गा है। पत्र भीग गये है जिससे कई जगह पढा नही जा सकता।

३०४१. प्रश्तचृ्हामिंग्ःःः। पत्र स० १३। ग्रा० ६ \times ४२ दश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० १३६६ । स्त्र भण्डार ।

३०४२ प्रति सं०२। पत्र सं०१६। ले० काल सं०१८०८ ग्रासोज सुदी १२ । प्रपूर्ण। वे० सं० १४५। छ भण्डार।

विशेष--तीसरा पत्र नहीं है विजैराम अजमेरा चाटसू वाले ने प्रतिलिपि की थी।

२०४२ प्रश्नविद्या । पत्र स०२ से ४। ग्रा०१०४४ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल ४। ले० काल ४। ग्रपूर्श । वे० सं०१३३। छ् भण्डार ।

२०४४. प्रश्निवेनोद् " "" पत्र सं० १६ । आ० १०×४६ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । पूर्ण । वे० स० २८४ । छु भण्डार ।

२०४४. प्रश्नमनोरमा—गर्ग। पत्र सं० ३। ग्रा० १३×४ इख्रं। भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल ×। ले० काल सं० १९२८ भादवा सुदी ७।वे० सं० १७४१। ट भण्डार।

३०४६. प्रश्तमाला'''''। पत्र सं० १०। ग्रा० ६×१३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र॰ काल ×। ले॰ काल ×। ग्रपूर्श । वे॰ सं० २०६५ । ग्रा भण्डार ।

३०४७. प्रश्नसुगनावित्सित्सतः । पत्र सं०४। ग्रा०६३×५ इ च । भापा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स०४६ । मा भण्डार ।

३०४८. प्रश्नावित ""। पत्र स०७। ग्रा०६×३३ इच। भाषा—संस्कृत । विषय ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। प्रपूर्ण । वे० सं०१८१७। स्त्र भण्डार ।

विशेप--- ग्रन्तिम पत्र नही है।

३०४६ प्रश्नसार" ""। पत्र सं० १६ । ग्रा० १२५ ४६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल ×। ले० काल स० १६२६ फागुए। बुदी १४ । वे० स० ३३६ । ज भण्डार ।

३०४०. प्रश्तसार—हयप्रीव । पत्र सं० १२ । आ० ११×५ हंच । भाषा—संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६२६ । पे० सं० ३३३ । ज भण्डार ।

विशेप—पत्रो पर कोष्ठक बने हैं जिन पर अक्षर लिखे हुये है उनके अनुसार शुभाशुभ फल निक्लता है ३०४१. प्रश्नोत्तरमाणिक्यमाला—संप्रहकत्ती व्र० ज्ञानसागर। पत्र सं० २७। आ० १२४५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ४। ले० काल स०१६६०। पूर्ण। वे० सं० २६१। ख भण्डार।

३०४२. प्रति सं०२। पत्र स०३७। ले॰ काल स०१८६१ चैत्र बुदी १०। श्रपूर्ण। वे॰ स०११०। विशेप—शन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति प्रश्नोत्तर माणिक्यमाला महाग्रन्थे भट्टारक श्री चरणार्रविद मधुकरोपमा व्र० ज्ञानसागर संग्रहीते श्री जिनमाश्रित प्रथमोधिकार: ॥ प्रथम पत्र नहीं है ।

२०४२. प्रश्नोत्तरमाला ""। पत्र स० २ से २२। आ० ७२०४३ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। र० काल ४। ले० काल सँ० १८९४। अपूर्ण। वे० स० २०६८। अ भण्डार।

विशेप-श्री वलदेव वालाहेडी वाले ने बाबा वालमुकुन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२०४४. प्रति सं०२ | पत्र स० ३६ | ले० काल सं०१८१७ ग्रासोज सुदी ४ | वे० स०११४ | ख

दे०४४. भवांनीवाक्य' ' ""। पत्र सं० ५। ग्रा० ६×५६ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२६२ । स्त्र भण्डार ।

िकोप-सं १६०५ से १६६६ तक के प्रतिवर्ष का भविष्य फल दिया हुआ है।

ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान

375

३०४६. सङ्ली ' ""। पत्र सं० ११ । ग्रा० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । पूर्ण । वे॰ स॰ २४० । इर भण्डार ।

िशोष—मेघ गर्जना, वरसना तथा बिजली ग्रादि चमकने से वर्ष फल देखने सम्बन्धी विचार दिये हुये हैं। ३०४७. भाष्त्रती—पद्मनाभ । पत्र सं० ६। ग्रा० ११×३० इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । ३० काल × । पूर्ण । वे० स० २६४ । च भण्डार ।

३०४८. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ४। वे० सं० २६४। च भण्डार।

३०४६. सुवनदीपिका । पत्र सं० २२। म्रा० ७३ ×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिप। र० काल ×। ले० काल स० १६१४। पूर्ण। वे० सं० २४१। ज भण्डार।

३०६०. भुवनदीपक—पद्मप्रससूरि । पत्र सं० ५८ । श्रा० १०३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-इयोतिषः र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८९५ । श्रा भण्डार ।

विशेष -प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३८६१. प्रति सट २ । पत्र स० ७ । ले० काल सं० १८५६ फाग्रुग्। सुदी १० । वे० सं० ६१२ । ऋ भण्डार ।

विशेष--खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

३०६२. प्रति सं० ३। पत्र सं० २०। ले० काल 🗙 । वे० सं० २६६। च भण्डार । 💉

विशेष--पत्र १७ से ग्रागे कोई ग्रन्य ग्रन्थ है जो ग्रपूर्या है।

३०६३. भृगुसंहिता । पत्र सं० २० । आ० ११४७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । इक भण्डार ।

विशेष--प्रति जीर्गा है।

· 🔭

३०६४. मुहूर्त्तचिन्तामिंगः ""। पत्र स० १६। ग्रा० ११×५ इ च। भाषा—संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल ×। ले० काल स० १८८६। ग्रपूर्ण । वे० सं० १४७ । ख भण्डार ।

२०६४. मुहूर्त्तमुक्तावली । पत्र सं० ६। ग्रा॰ १० \times ४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। रि॰ काल सं० १८१६ कार्तिक बुदी ११। पूर्ण। वै० सं० १३६४। श्र्य भण्डार।

२०६६. मुहूर्त्तमुक्तावली-परमहंस परिव्राजकाचार्य। पत्र सं०६। म्रा० ६ र् ४६ र् इंच। भाषासम्कृत । विषय -ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०१२ । स्र भण्डार ।

विशेष—सब कार्यों के मुहर्त्त का विवरण है।

३०६७. प्रति सं०२।पत्र सं०६। ले॰ काल सं०१८७१ वैशाख बुदी १। ते० सं०१४८।ख

२६०] [ज्योतिप एव निमित्तज्ञान

३०६८. प्रति सं० ३। पत्र स० ७। ले० काल सं० १७८२ मार्गशीर्प बुदी ३। ज भण्टार। विशेप—सथाएग नगर मे मुनि चोखचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

३०६६ मुहूर्त्तमुक्ताविति"" । पत्र स०१५ मे २६। ग्रा०६३×४ इंच । मापा–हिन्दी, सम्मृत । विषय-ज्योतिप । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स०१४६ । ख भण्टार ।

२०७० मुहूर्त्तमुक्तावली " । पत्र स० ६ । ग्रा० १०४४३ इ च । भाषा-मन्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल ४ । ले० काल स० १८१६ कार्त्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १३६४ । ग्रा भण्डार ।

२०७१. मुहूर्त्तदीपक- महादेव । पत्र सं० ८ । ग्रा० १०४५ इ न । भाषा-मंस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल ४ । ले० काल स० १७६७ वैशाख बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ६१४ । ग्रा भण्डार ।

विशेप---प० हूं गरसी के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

३०७२. मुहूर्त्तसंत्रह : ""। पत्र सं० २२ । ग्रा० १०३×५ इंच । भाषा-सम्मृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । त्रपूर्ण । वे० स० १५० । ख भण्डार ।

३०७३. मेघमाला" । पत्र सं० २ मे १८ । ग्रा० १०५×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । ग्रपूर्ण । वे० सं० ८६६ । ग्रा भण्डार ।

विशेप—वर्षा ग्राने के लक्षणो एव कारणो पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। ब्लोक स० ३४६ हैं। ३०७४. प्रति स० २। पत्र स० ३५। लि० काल सं० १८६२। वे० सं० ६१५। श्र्य भण्डार। ३०७४. प्रति स० ३। पत्र स० २८। ले० काल ×। श्रपूर्ण। वे० सं० १७४७। ट भण्डार।

३०७६. योगफल "। पत्र सं०१६। ग्रा०६१×३५ इच। भाषा-मस्यृत। विषय-ज्योतिष 'र० काल ×। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० स०२८३। च भण्डार।

३०७७. रत्नदीपक--गग्रापति । पत्र स० २३ । ग्रा० १२×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १८२८ । पूर्ण । वे० सं० १६० । ख भण्डार ।

२०७८. रत्नदीपक ""। पत्र स० ४ । ग्रा० १२×५६ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १८१० । पूर्ण । वे० स० ६११ । स्त्र भण्डार ।

विशेप-जन्मपत्री विचार भी है।

३०७६. रमलशास्त्र—प० चिंतामिए। पत्र स०१४। म्रा०८×६ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। म्रपूर्ण। वे० स०६५४। ड भण्डार।

२०८०. रमलशास्त्र " '| पत्र सं० १६ | ग्रा० ६×६ इख्र । भाषा-हिन्दी | विषय-निमित्त शास्त्र र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३२ । ञ भण्डार । ज्यातिप एवं निमित्तज्ञान

ि २६१

३ प्रश्. रसल्जान " ""। पत्र सं० ५। ग्रा० ११×५ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-निमित्तशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८६ । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रादिनाथ चैत्यालय मे ग्राचार्य रतनकीत्ति के प्रशिष्य सवाईराम के शिप्य नीनदराम ने प्रतिलिपि की थी।

३०८२ प्रति सं०२। पत्र सं०२ से ४४। ले॰ काल सं०१८७८ म्रापाढ बुदी ३। म्रपूर्ण। वे॰ स॰१४६४। टभण्डार।

३०=३. राजादिफल "'। पत्र स० ४ । ग्रा० ६ $\frac{5}{2}$ \times ४ इक्क । भाषा—सं-कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल \times । ले० काल स० १५२ । पूर्ण । वे० सं० १६२ । ख भण्डार ।

३०८४. राहुफला " "" पत्र स० ६ । आ० ६३८४ इखा भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल ४ । ले० काल स० १८०३ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० ६६६ । च भण्डार ।

२०८४. स्द्रज्ञान "" । पत्र सं० १ । आ० ६२% ४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल ४ । ले० काल सं० १७५७ चैत्र । पूर्ण । वे० सं० २११६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-देधणाग्राम मे लालसागर ने प्रतिलिपि की थी।

३०८६. त्रग्नचित्रकाभाषा " ""। पत्र सं० ८ । म्रा० ८४६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । म्रपूर्ण । वे० सं० ३४८ । म्र भण्डार ।

३०८७. लग्नशास्त्र—वर्द्धमानसूरि । पत्र सं० ३ । आ० १०४४ है इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० २१६ । ज भण्डार ।

ै ३०⊏८. लघुजातक—भट्टोत्पल । पत्र सं०१७ । ग्रा० ११४४ इच । भाषा—संस्कृत । विषय— ज्योतिष । र० काल ४ । ले० काल ४ । वे० स०१६३ । ञ भण्डार ।

३०८. वर्षबोध"" । पत्र सं० ५०। ब्रा० १०२ \times ५ इ.च.। भाषा—संस्कृत । विपर्य-ज्योतिष र० काल \times । ले० काल \times । ब्रपूर्ण। वे० सं० ८६३। स्त्र भण्डार।

विशेष -- ग्रन्तित्र पत्र नही है । वर्षफल निकालने की विधि दो हुई है ।

३, ६०. विवाहशोधन **** । पत्र स० २। ग्रा० ११×१ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१६२ । स्त्र भण्डार ।

३०६१. बृहद्धातक—भट्टोत्पता। पत्र सं० ४। ग्रा० १०३×४६ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८०२ । ट भण्डार ।

विशेष---भट्टारक महेन्द्रकीर्ति के शिष्य भारमहा ने प्रतिलिपि की थी।

३०६२. पट्पंचानिका—वराह्मिहर। पत्र सं० ६। ग्रा० ११×८३ दख । भाषा-मन्द्रत । विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १७६६ । पूर्गा । वे० सं० ७३६ । छ भण्डार ।

३०६३ पटप्ंचासिकावृत्ति—भट्टोत्पत्त । पत्र सं० २२ । ग्रा० १२×५ दञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १७८८ । ग्रपूर्ण । वे० स० ६४४ । श्र भण्डार

ं विशेष—हेमराज मिश्र ने तथा साह पूरणमल ने प्रतिलिपि की थी। इसने १,२,५,११ पत्र नहीं है।

३०६४ शकुनविचार ""। पत्र सं० ४। म्रा० ६३×४३ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-शरुन शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४८ । छ भण्डार ।

३०६४. शक्कुनावली " । पत्र स०२। ग्रा०११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र॰ काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ स॰ ६५ मध्य भण्डार ।

विशेप-- ५२ अक्षरो का यत्र दिया हुआ है।

३०६६ प्रति सं०२। पत्र स०४। ले० काल स० १८६६। वे० सं० १०२०। स्त्र मण्डार। विशेप-प० सदासुखराम ने प्रतिलिपि की थी।

३०६७. शक्कुनावली —गर्ग। पत्र स० २ से ५। ग्रा० १२×५१ इख्न। भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० स० २०५४। ग्र्य भण्डार।

विशेप-इसका नाम पाशाकेवली भी है।

३०६८. प्रति स० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० स० ११६ । ग्रा भण्डार

विशेप--ग्रमरचन्द ने प्रतिलिपि की थो।

३०६६. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल स० १८१३ मंगसिर सुदी ११ । प्रपूर्ण । वे० स० २७६। स्र भण्डार

३१०० प्रति सं०४। पत्र स०३ से ७। ले० काल ४। श्रपूर्श । वे० सं० २०६८ । ट भण्डार ।

३१०१. शकुनावली—श्रवजद । पत्र सं० ७ । ग्रा० ११ \times १५ इ च । भापा-हिन्दी । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल \times । ले० काल स० १८६२ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २५८ । ज भण्डार

३१०२. शकुनावली : "। पत्र स॰ १३ । ग्रा० ५३ \times ४ इच । भाषा-पुरानी हिन्दी । विषय-शकुन श्रास्त्र । र० काल \times । ले० काल \times । श्रपूर्ण । वे॰ सं॰ ११४ । छ भण्डार

३१०३. प्रति सं०२। पत्र स०१६। ले॰ काल सं०१७८१ सावन बुदी १४। वे० स०११४। छ

विशेष—रामचन्द्र ने उदयपुर मे रागा संग्रामिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की थी। २० कमलाकार चक्र हैं जिनमे २० नाम दिये हुये हैं। पत्र ५ से ग्रागे प्रश्नो का फल दिया हुग्रा है।

ं ३१०४. प्रति सं०३ । पत्र सं०१४ । ले० काल 🗴 । वे० सं०३४० । मा भण्डार

३१०४. शकुनावली ""। पत्र सं० ५ से ८। आ० ११×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८६० । अपूर्ण । वे० स० १२५८ । आ भण्डार ।

३१०६. शकुनावली "" पत्र सं०२। ग्रा०१२×५ इंच। भाषा-हिन्दो पद्य। विषय-शकुनशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं०१ न० न ग्रासोज बुदी न। पूर्ण। वे० सं०१६६६। स्त्र भण्डार।

विशेष-पातिशाह के नाम पर रमलशास्त्र है।

३१०७. श्रनश्चिरदृष्टिविचार्" "। पत्र सं०१। म्रा० १२×५ इख्र। भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८४६। श्र भण्डार

विशेष-दादश राशिचक्र मे से शनिश्चर दृष्टि विचार है।

३१०८. शीघ्रवोध—काशीनाथ। पत्र सं०११ से ३७ । ग्रा० ८३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० सं०१६४३। त्र्य भण्डार।

३१०६. प्रति सं० २। पत्र सं० ३१। ले० काल सं० १८३०। वे० सं० १८६। ख मण्डार। विशेष—पं० माणिकचन्द्र ने चोढीग्राम मे प्रतिलिपि की थी।

३११०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८४८ श्रासोज सुदी ६ । वे० सं० १३८ । छ्र भण्डार । विशेष—संपतिराम खिन्द्रका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि को थी ।

३१११. प्रति स० ४। पत्र सं० ७१। ले० काल सं० १८६८ ग्रापाढ बुदी १४। वे० सं० २५५। छ

विशेष---ग्रा॰ रत्नकीर्त्त के शिष्य पं॰ सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी।

इनके अतिरिक्त स्त्र भण्डार मे ४ प्रतिया (वे॰ सं॰ ६०४, १०५६, १५५१, २२००) ख भण्डार मे १ प्रति (वे॰ सं॰ १८०) छ, मा तथा ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे॰ स॰ १३८, १६२ तथा २११६) और हैं।

३११२. शुभाशुभयोग "" । पत्र सं० ७ । ग्रा० ६३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । . र० काल × । ले० काल सं० १८७५ पौष सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १८८ । ख भण्डार ।

विशेष--पं॰ हीरालाल ने जोवनेर मे प्रतिलिपि को थी।

३११३. संक्रांतिफलः । पत्र सं० १ । ग्रा० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र॰ काल × । पूर्या । वै० सं० २०१ । ख भण्डार ।

३११४. सक्रांतिफलः । पत्र सं० १६ । ग्रा० ६५ ४३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल 🗴 । ले० काल स० १६०१ भादवा बुदी ११ । वे० सं० २१३ । ज भण्डार

३११४. संक्रांतिवर्शनः । पत्र स०२। म्रा०६×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स०१६४६। स्त्र भण्डार

३११६. समरसार—रामवाजपेय। पत्र सं० १८। श्रा० १३४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल ४ । ले० काल सं० १७१३ । पूर्ण । वे० सं० १७३२ । ट भण्डार

विशेप-योगिनीपुर (दिल्ली) मे प्रतिलिपि हुई । स्वर शास्त्र से लिया हुन्ना है ।

३११७. संवत्सरी विचार "" । पत्र सं० ५ । ग्रा० ६×६३ इच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५६ । मा भण्डार

विशेप--सं० १९५० से स० २००० तक का वर्षफल है।

३११८. सामुद्रिकलत्त्रग्णः । पत्र सं० १८ । ग्रा० ६४४ इंच । भाषा-सम्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । स्त्री पुरुषो के ग्रगो के शुभाशुभ लक्षग्। ग्रादि दिये है । र० काल ४ । ले० काल सं० १५६४ पौप सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० २८१ । व्य भण्डार

३११६. सामुद्रिकविचार" " । पत्र स० १४ । आ० ५३ ×४० इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त । बास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १७६१ पौप बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ६८ । ज भण्डार ।

२१२०. सामुद्रिकशास्त्र-श्रीनिधिसमुद्र । पत्र स० ११ । ग्रा० १२×४३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-निर्मत्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११६ । छ भण्डार ।

विजेप--अत में हिन्दी में १३ शृङ्कार रस के दोहें हैं तथा स्त्री पुरुषों के अगो के लक्षण दिये हैं।

३१२१. सामुद्रिकशास्त्र ' '' । पत्र स० ६ । ग्रा० १४×४ इ'च । भाषा-प्राकृत । विषय-निमित्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ७५४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--- पृष्ठ प तक संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं।

३१२२. सामुद्रिकशास्त्र ' । पत्र स० ४१ । ग्रा० ५ रे×४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त । र० काल × । ले० काल स० १८२७ ज्येष्ठ सुदी १० । श्रपूर्ण । वे० सं० ११०६ । श्र भण्डार ।

विशेप—स्वामी चेतनदास ने गुमानीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। २, ३, ४ पत्र नहीं हैं।

३१२3. प्रति सं०२। पत्र स० २३। ले० काल स० १७६० फाग्रुए। बुदी ११। अपूर्ण। वै० सं०

विशेप—बीच के कई पत्र नहीं है।

३१२४. सामुद्रिकशास्त्र " । पत्र सं० ६ । ग्रा० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त । र० नाल × । ने० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० स० ८६२ । ऋ भण्डार ।

२१२४. प्रति सं० २। पत्र स० ५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११४७। अ भण्डार।

3१२६. सामुद्रिकशास्त्र । पत्र स०१४। ग्रा० ८४६ इ च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-निमित्त। र० काल ४। ले० काल सं०१६०८ ग्रासोज बुदी ८। पूर्ण। वे० स०२७७। मा भण्डार।

३१२७ सार्गी " "। पत्र सं० ४ से १३४। ग्रा० १२×४ई इंच। भाषा-ग्रपभ्रंश। विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल म० १७१६ भादवा बुदी द । ग्रपूर्ण । वे० सं० ३६३। च भण्डार।

विशेप-इसी भण्ढार मे ४ अपूर्ण प्रतिया (वे० सं० ३९४, ३९४, ३९६, ३९७) और है।

३१२८ सारावली """। पत्र सं० १। आ० ११ \times ३ है दे । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० नान \times । प्रेंग । वे० स० २०२४ । अ भण्डार ।

३१२६ सूर्यगमनिविधि "। पत्र सं० ४। ग्रा० ११३×४३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । रे॰ काल ×। ते॰ काल ×। पूर्ण । वे॰ स॰ २०४६। ऋ भण्डार।

विजेप - जैन ग्रन्थानुसार सूर्यचन्द्रगमन विधि दी हुई है । केवल गिएत भाग दिया है ।

३१२. सोमउत्पत्ति : "। पत्र स० २। झा० ८००% ४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिप । र० काल ४। ले० काल स० १८०३। पूर्ण । वे० स० १३८६। ऋ भण्डार ।

. ३१२१. स्वप्तिविचार " ' | पत्र स० १ | ग्रा० १२×५३ इ च | भाषा-हिन्दी | विषय-निमित्तशास्त्र | र० काल × | ले० काल स० १०१० | पूर्ण | वे० स० ६०६ | ऋ भण्डार |

३१३२. म्ब्राताध्याय । पत्र सं० ४। आ० १०×४३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४७ । स्त्र भण्डार ।

३१३३. स्वानावली—देवनितः । पत्र सं० ३ । ग्रा० १२×७६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १९५८ भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ८३६ । क भण्डार ।

३१३४ प्रति स० २। पत्र स० ३। ले० काल ×। वे० स० ५३७। क भण्डार।

३१३४. स्वप्नावितः "। पत्र सं०२। ग्रा०१०×७ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-निमित्तशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। त्रपूर्ण। वे० सं० ५३४। क भण्डार।

३१३६ होराज्ञानः "। पत्र सं० १३। ग्रा० १०४५ इच। भाषा-संस्कृत। र० काल ४। ले० काल ४। ग्रपूर्ण। वे० सं० २०४५। इत्र भण्डार।

विषय-ग्रायुर्वेद

३१३७. श्रजीर्ग्यरसमखरी ""। पत्र सं० ४। म्रा० ४१५×४५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ग्रायुर्वेद। र० काल ×। ले० काल स० १७८८। पूर्ण। वे० सं० १०५१। श्र भण्डार।

३१३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल ४ । वे० स० १३६ । छ भण्टार ।

विशेप---प्रति प्राचीन है।

३१३६. श्रजीर्णमञ्जरी—काशीराज । पत्र स० ५ । ग्रा० १०१४५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८६ । ख्र भण्डार ।

३१४०. श्रद्भतसागर " "। पत्र मं० ४०। ग्रा० ११२४४ है इ च। भाषा-हिन्दो । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल 🗶 । ले० काल 🗶 । श्रपूर्ण । वे० सं० १३४०। श्र भण्डार ।

३१४१ त्रामृतसागर---महाराजा सवाई प्रतापसिंह। पत्र स० ११७ मे १६४। ग्रा० १२६४६३ इ'च | भाषा-हिन्दी | विषय-ग्रायुर्वेद। र० काल ४। ले० काल ४। ग्रपूर्ण। वे० स० २१। ड भण्डार।

विशेष--संस्कृत ग्रन्थ के ग्राधार पर है।

३१४२. प्रति सं०२। पत्र सं० ५३। ले० काल 🗴। ग्रपूर्ण। वे० सं० ३२। ट भण्डार। विशेष—सस्कृत मूल भी दिया है।

ह भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ३०, ३१) अपूर्ण और हैं।

३१४३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४ से १५०। ले० काल 🗶 । अपूर्ण । वे० स० २०३६। ट भण्डार।

३१४४ ऋथेप्रकाश—लंकानाथ। पत्र सं० ४७। म्रा० १०५ै×८ इंच। भाषा–सस्कृत। विषय∽

ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १९८४ सावरा बुदी ४ । पूर्गा । वे० स० ८८ । व्य भण्डार ।

विशेप--- श्रायुर्वेद विषयक ग्रन्थ है। प्रत्येक विषय को शतक मे विभक्त किया गया है।

३१४४. स्त्रात्रेयवैद्यक—स्त्रात्रेयऋषि। पत्र सं० ४२। म्रा० १०×४३ इंच। भाषा-सस्कृत । विषय-म्रायुर्वेद। र० काल ×। ले० काल स० १८०७ भादवा बुदी १४। वे० स० २३०। छ भण्डार।

३१४६. श्रायुर्वेदिक नुस्खों का संग्रह ""। पत्र सं० १६। ग्रा० १०×४३ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–ग्रापुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्या। वे० सं० २३०। छ भण्डार।

३१४७. प्रति सं०२ । पत्र सं०४ । ले० काल ४ । वे० स०६३ । ज भण्डार ।

३१४८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३३ से ६२। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० सं० २१८१। ट भण्डार। विशेष—६२ से ग्रागे के भी पत्र नहीं हैं।

३१४६. श्रायुर्वेदिक नुस्दे "" । पत्र सं० ४ से २० । ग्रा० ८४६ इंच । भाषा~संस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ६५ । क भण्डार ।

विशेष-ग्रायुर्वेद सम्बन्धी कई नुस्ले दिये हैं।

३१४०. प्रति सं० २। पत्र सं० ४१। ले० काल 🗙 । वे० सं० २५६। ख भण्डार।

विशेष-एक पत्र मे एक ही नुस्ला है।

इसी भण्डार मे ३ प्रतियां (वे॰ सं॰ २६०, २६६, २६६) ग्रीर हैं।

३१४१. ऋायुर्वेदिकग्रंथ """। पत्र सं० १६। ग्रा० १०३×५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० २०७६ । ट भण्डार ।

३१४२. प्रति सं०२। पत्र सं०१६ से ३०। ले० काल 🗙 । अपूर्ण। वे० सं०२०६६। ट मण्डार। ३१४३. अयुर्वेदमहोद्धि—सुखदेव। पत्र सं०२४। आ० ६३४४३ इखा। भाषा-संस्कृत। विषय-

श्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५५ । व्य भण्डार ।

३१४४. कत्तपुट—सिद्धनागार्जुन । पत्र सं०४२ । म्रा० १४४५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-म्रायुर्वेद एवं मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं०१३ । घ भण्डार ।

विशेष---प्रन्थ का कुछ भाग फटा हुम्रा है।

३१४४. कल्पस्थास (कल्पन्याख्या) पत्र सं० २१ । म्रा० ११३×५ इ'च । मापा-संस्कृत । विषय-म्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १७०२ । पूर्ण । वे० स० १८७ । ट भण्डार ।

विशेष---सुश्रुतसंहिता का एक भाग है। ग्रन्तिम पुष्पिका निन्न प्रकार है---

इति सुश्रुतीयायां संहितायां कल्पस्थानं समाम्तं ।।

३१४६. कालज्ञान''''''। पत्र सं० ३ से १६। म्रा० १०×४ है इंच। भाषा—संस्कृत हिन्दी | विषय— म्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । म्रपूर्श | वे० सं० २०७८ | म्रा भण्डार ।

३१४७. प्रति सं० २ | पत्र सं० ४ | ले० काल 🗙 | वे० सं० ३२ | स भण्डार |

विशेष-केवल ग्रष्टम समुद्देश है।

३१४८. प्रति सं०३। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८४१ मंगसिर सुदी ७। वे० सं० ३३। ख्र भण्डार।

विशेष-भिरुद् ग्राम मे लेमचन्द के लिए प्रतिलिपि की गई थी। कुछ पत्रों की टीका भी दी हुई है।

३१४६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ११८। छ भण्डार। ३१६०. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० स० १९७४। ट भण्डार।

३१६१. चिकित्साजनम् — उपाध्यायविद्यापित । पत्र स० २० । मा० ६× न इंच । भाषा – सस्कृत । विषय-प्रायुर्वद । र० काल × । ले० काल सं० १६१५ । पूर्ण । वे० स० ३५२ । व्य भण्डार ।

३१६२. चिकित्सासार''''''। पत्र सं०११। ग्रा०१३×६३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-ग्रायुर्वेद। र०काल ×। ले०काल ×। ग्रपूर्शी । वे० सं०१ प्र०। रू भण्डार।

३१६३ प्रति सं०२। पत्र स० ५-३१।। ले० काल 🔀। अपूर्ण। वे० सं०२०७६। ट भण्डार।

३१६४. चूर्णाधिकार" "। पत्र स०१२। म्रा०१३×६३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-म्रायुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वे०स०१८१९ । ट भण्डार ।

३१६४. ज्वरत्तक्त्याः । पत्र स०४। ग्रा० ११ \times ४ दृ इख्र । भाषा हिन्दी । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल \times । ले० काल \times । प्रपूर्ण । वे० स० १८६२ । ट भण्डार ।

३१६६. ज्वरिचिकित्सा" "। पत्र सं० ४। म्रा० १०६ ×४ हे इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-म्रायुर्वेद । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० १२३७ । स्त्र भण्डार ।

३१६७ प्रति सं०२। पत्र स०११ से ३१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स०२०६४। ट मण्डार। २१६८. ज्वरतिमिरभास्कर—चामुंडराय। पत्र स०६४। आ०१०×६३ इच। भाषा—संस्कृत। विषय-आयुर्वद। र० काल ×। ले० काल सं०१८०६ माह सुदी १३। वे० स०१३०७। आ भण्डार।

विशेष-माधोपुर मे किशनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

३१६६ त्रिशती—शाङ्गिधर । पत्र स० ३२ । ग्रा० १०३ \times ५ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—ग्रायुर्वेद । र० काल \times । ते० सं० ६३१ । श्र्य भण्डार ।

३१७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६२ । ले० काल स० १९१६ । वे० सं० २५३ । व्य भण्डार । विशेष—पद्य स० ३३३ है ।

३१७१. नहनसीपाराविधि''''''। पत्र स० ३ । ग्रा० ११४४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १३०६ । श्र्य भण्डार ।

३१७२ नाडीपरीन्ता''' ''' । पत्र स॰ ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्रायुर्वेद । र॰ काल × । ले॰ काल × । पूर्ण् । वे॰ स॰ २३० । इद भण्डार ।

३१७३ निघंटु ""। पत्र सं०२ से ८८। पत्र सं०११४५। भाषा-संस्कृत। विषय-ग्रायुर्वेद। र० काल ४। ले० काल ४। ग्रपूर्ण। वै० सं०२०७७। स्त्रु भण्डार।

३१७४. प्रति सं०२। पत्र सं०२१ से ८६। ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं०२०८४। आ भण्डार । ३१७४ पंचप्ररूपणा "। पत्र सं०११। आ० १०×४५ इख्न । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल स०१५५७ । अपूर्ण । वे० सं०२०८० , ट भण्डार ।

, विशेष---केवल ११वा पत्र,ही है। ग्रन्थ मे कुल १५८ श्लोक हैं।

प्रशस्ति—स० १५५७ वर्षे ज्येष्ठ बुदी द । देवगिरिनगरै राजा सूर्यमल्ल प्रवर्त्तमाने व्र० आहू लिखितं कर्म-क्षयिनिमित्तं । व्र० जालप जोग्र पठनार्थं दत्तं ।

् ३१७६, पथ्यापथ्यिवचार। पत्र स० ३ से ४४। म्रा॰ १२×५३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-म्रायुर्वद । र० काल × । ले० काल × । म्रपूर्श । वे० स० १६७६ । ट भण्डार ।

विजेष—श्लोको के ऊपर हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है। विषरोग पण्यापथ्य अधिकार तक है। १६ से आगे के पत्रों में दीमक लग गई है।

३१७७ पाराविधि ""। पत्र सं०१। ग्रा०६३ \times ४३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-ग्रायुर्वेद। र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण। वेठ स० २६६। ख भण्डार।

३१७८. भावप्रका्शं—मानमिश्र । पत्र सं० २७५ । आ० १०३ ४४३ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय-भागुर्वद । र० काल ४ । ले० काल सं० १८६१ वैशाख सुदी ६ । पूर्गा । वे० सं० ७३ । ज भण्डार ।

विशेष-श्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्रीमानमिश्रलटकनतनयश्रीमानमिश्रभावविरचितो भावप्रकाश संपूर्ण ।

प्रशस्ति—सवत् १८८१ मिती वैशाख शुक्का ६ शुक्के लिखितमृपिंगा फतेचन्द्रे गा सवाई जयनगरमध्ये।

देश्ष्ट. भावप्रकाश "" । पत्र स० १९ । ग्रा० १० $\frac{3}{5}$ \times ४ $\frac{3}{5}$ इख्र । भाषा—संस्कृत । विर्षय=ग्रायुर्वेद । ं र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० २०२२ । श्र भण्डार ।

विशेष---म्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है-

इति श्रो जगु पडित तनयदास पडितकृते त्रिसतिकाया रसायन वा जारण समाप्त ।

र् काल × । ले॰ काल × । प्रपूर्ण । वे॰ सं॰ २०१६ | ट भण्डार ।

३१८१. सद्नविनोद—सद्नपाल । पत्र सं०१४ से ६२। श्रा०८३४३३ इख्र । भाषा-संस्तृत । विषय-श्रायुर्वेद । र० काल ४ । ले॰ काल सं०१७६५ ज्येष्ठ सुदी १२ । श्रपूर्ण । वे०स० १७६८ । जीर्ग । श्र भण्डार ।

विशेष-पत्र १५ पर निम्न पुष्पिका है-

इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे प्रपादिवर्गः ।

पत्र १८ पर- यो राज्ञा मुर्खातलकः कटारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेशा निर्मितेन ग्रन्येऽरिमन् मदनविनोदे वटादि पंचमवर्गः।

लेखक प्रशस्ति-

ज्येष्ठ शुक्का १२ ग्रुरी तिह्ने लि"""शामजी विश्वकेन परीपकारार्थं । नवत् १७६५ विश्वेश्वर मिप्रधी"" मदनपालिवरिचते मदनिवनोदे निघटे प्रशस्ति वर्गश्चतुर्देश: ।।

३१८२. मंत्र व श्रोपिध का तुस्खा"""। पत्र स० १। ग्रा० १०४५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-ग्रायुर्वद। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं० २६८। त्व भण्डार।

विशेष--तिल्ली काटने का मन्त्र भी है।

३१=३. माधननिदान—माधन । पत्र सं० १२४ । ग्रा० ६×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६४ । श्र भण्डार ।

३१८४. प्रति सं०२। पत्र सं०१५४। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० सं० २००१। ट भण्डार। विशेष—पं० ज्ञानमेरु कृत हिन्दी टीका सहित है।

म्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है---

इति श्री प॰ ज्ञानमेरु विनिर्मितो बालबोधसमाप्तोक्षरार्थो मधुकोप परमार्थ.।

प० धन्नालाल ऋषभचन्द रामचन्द की पुस्तक है।

इसके अतिरिक्त स्त्र भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ८०८, १३४५, १३४७) ख भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स॰ १४३, १६५) तथा ज भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७४) और है।

३१८४. मानविनोद्—भानसिंह। पत्र सं॰ ६७। श्रा० ११३४५ इख्रा भाषा-सस्कृत। विषय-श्रायुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। श्रपूर्ण। वै० स० १४४। ख अण्डार।

प्रति हिन्दी टीका सहित है। ६७ से आगे पत्र नहीं हैं

३१८६. मुष्टिज्ञान—ज्योतिषाचार्य देद्चन्द । पत्र स० २ । ग्रा० १०४४ दे इखा । भाषा-हिन्दी । विषय-म्रायुर्वेद ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६१ । स्र भण्डार ।

आयुर्वेद]

भण्डार ।

३१८७. योगचिन्तामिण-मनूर्सिह। पत्र सं०१२ से ४८। आ० ११४५ इख्र। भाषा-संस्कृत। विषय-ग्रायुर्वेद। र० काल ४। ले० काल ४। प्रपूर्ण। वे० सं० २१०२। ट भण्डार।

विशेष-पत्र १ से ११ तथा ४८ से ग्रागे नहीं है।

द्वितीय ग्रधिकार की पुष्पिका निम्न प्रकार है-

इति श्री वा. रत्नराजगिए ग्रंतेवासि मनूसिंहकृते योगिंचतामिए। बालाववोधे चूर्णाधिकारो द्वितीयः।

३१८८. योगचिन्तामिण । पत्र सं० ४ । ग्रा० १३४६ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० १८०३ । ट भण्डार ।

३१८६. योगचिन्तामिण्णापत्र सं० १२ से १०५। ग्रा० १०५×४३ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १८५४ ज्येष्ठ बुदी ७ । ग्रपूर्ण । वे० सं० २०८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्गा है। जयनगर मे फतेहचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

३१६०. योगचिन्तामियाः । पत्र सं० २०० । ग्रा० १०×४३ डञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्या । वे० सं० १३४६ । ग्रा भण्डार ।

विशेष-दो प्रतियो का मिश्रगा है।

३१६१. योगचिन्तामिण्वीजक """ । पत्र सं० ५ । म्रा० ६ ई ४४ ई इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-भ्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । व्य भण्डार ।

३१६२. योगचिन्तामिण्-उपाध्याय हर्षकीित । पत्र सं० १५८ । ग्रा० १०ई×५३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०४ । श्र भण्डार ।

विशेष--हिन्दी में संक्षित ग्रर्थ दिया हुगा है।

३१६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२८ । ले० काल 🗴 । वे० सं० २२०६ । 🖘 भण्डार ।

विशेष--हिन्दी टव्वा टीका सहित है ।

३१६४. प्रति सं०३। पत्र स० १४१। ले० काल सं० १७८१। वे० सं० १६७८। स्त्र भण्डार।

३१६४. प्रति सं०४। पत्र सं०१५६। ले० काल सं०१८३४ आपाढ बुदी २। वे० सं०८८। छ

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित है । सागानेर मे गोधो के चैत्यालय मे पं० ईश्वरदास के चेले की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी ।

३१६६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १२४। ले० काल सं० १७७६ वैशाख सुदी २। वे० सं० ६६। ज

विशेष--मालपुरा मे जीवराज वैद्य ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

William of

३१६७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १७६६ ज्येष्ठ बुदी ४ । यपूर्ण । ने० स० ६९ । ज भण्डार ।

विशेष-प्रति सटीक है। प्रथम दो पत्र नहीं है।

३१६८. योगशत—वररुचि । पत्र सं० २२ । ग्रा० १३×८ इश्र । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ते० काल सं० १६१० श्रावण सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २००२ । ट भण्डार ।

विशेष—श्रायुर्वेद का संग्रह ग्रंथ है तथा उसकी टीका है। चंपावती (चाटसू) मे पं० शिवचन्द ने ध्यास भूतीलाल से लिखवाया था।

३१६६. योगशतटीका"""। पत्र सं० २१ । ग्रा० ११ई×३० ईच । भाषा-मंस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७६ । श्रा भण्डार ।

३२००. योगशतक """ | पत्र सं० ७ | ग्रा० १० र्४ ४ है इख । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १६०६ | पूर्ण । वे० सं० ७२ । ज भण्डार ।

विशेष--- प० विनय समुद्र ने स्वपठनार्थं प्रतिलिपि की थी । प्रति टीका सहित है ।

३२०१. योगशतक"""। पत्र सं० ७८ । ग्रा० ११६/४४३ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५३ । ख भण्डार ।

३२०२. रसमखरी—शालिनाथ। पत्र सं० २२। ग्रा० १०×५५ इखा भाषा-सस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्श। वे० स० १८५६। ट भण्डार।

३२०३. रसमखरी—शाङ्गधर । पत्र स० २६ । ग्रा० १०३×५६ ईच । भाषा-संस्कृत । विषयश्रीयुवेंग । र० काल × । ले० काल स० १९४१ सावन बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० स० १६१ । ख भण्डार ।

विशेष—पं ॰ पन्नालाल जोबनेर निवासी ने जयपुर में चिन्तामिए। के मन्दिर में शिष्य जयचन्द्र के पठ-नार्थ प्रतिलिपि की थी।

३२०४ रसप्रकरणः ""। पत्र सं० ४। ग्रा० १०३×१५ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रायुर्वेद । रत् काल ४। ले० काल ४। ग्रपूर्ण । वे० सं० २०३५ । जीर्ण । ट भण्डार ।

३२०४. रसप्रकरण्" "। पत्र सं० १२। आ० १×४२ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३६१। अप्र भण्डार।

३२०६. रामविनोद--रामचन्द्र । पत्र सं० २१६ । ग्रा० १०३×४५ इ'च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-श्रायुर्वेद । र० काल स० १६२० । ले॰ काल × । ग्रपूर्ण । वे॰ सं० १३४४ । श्र भण्डार ।

विशेष-- मार्झ धर कृत वृंद्यकसार ग्रन्थ का हिन्दी पद्यानुवाद है।

आयुर्वेद]

३२०७. प्रति सं० २। पत्र सं० १६२। ले० काल मं० १८५१ वैशाख सुदी ११। वे० स० १६३। ख भण्डार।

विशेष—जीवग्रानालजी के पठनार्थ भैसलाना ग्राम मे प्रतिनिधि हुई थी।

३२०८ प्रति सं० ३। पत्र सं० ६३। ले० काल ४। वे० स० २३०। छ भण्डार।

३२०६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३१। ले० काल ४। ग्रपूर्श। वे० सं० १६६२। ट भण्डार।
विशेष—इसी भण्डार मे ६ प्रतियो ग्रपूर्श (वे० सं० १६६६, २०१८, २०६२) ग्रीर है।

३२१०. रासायिनिकशास्त्र : "। पत्र सं० ५२। ग्रा० ५६९३ दख्व। भाषा-हिन्दी। विषय-

३२१०. रासायिनिकशास्त्र '''। पत्र सं० ५२। ग्रा० ५६ै×६३ दश्च। भाषा–हिन्दी । विषय⊸ ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ६६० । च भण्डार ।

३२११. लद्दमगोत्सव — असरसिंहात्मज श्री लद्दमग्। पत्र सं० २ से ८६। ग्रा० ११६×१ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्श । वे० स० १०५४ । ख्र भण्डार ।

३२१२. लह्वनपथ्यनिर्णयः । पत्र सं०१२ । ग्रा० १०३×५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-भ्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं०१ ६२२ पौष सुदी २ । पूर्ण । वे० सं०१६६ । ख भण्डार ।

विशेष - प० जीवमलालजी पन्नालालजी के पठनार्थ लिखा गया था।

३२१२ विपहरतिविधि संतोष किव। पत्र सं० १२। म्रा० ११×५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-ध्ययुर्वेद । र० काल स० १७४१ । ले० काल स० १८६६ माघ सुदी १०। पूर्ण । वे० स० १४४ । छ् भण्डार ।

सिस रिप वैद ग्रर खंडले जेष्ठ सुकल रूदाम ।
चंद्रापुरी संवत् गिनौ चंद्रापुरी मुकाम ॥२७॥
सर्वत यह संतोप कृत तादिन कविता कीन ।
सिश मिन गिर विव विजय तादिन हम लिख लीन ॥२८॥

३२१४. वैद्यकसार'''''''। पत्र स० ५ से ५४। ग्रा० ६×४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । पूर्ण | वै० सं० ३३४ | च भण्डार ।

३२१४. वैद्यजीवन—लोलिम्बराज । पत्र सं० २१ । ग्रा० १२×५२ इस्र । भाषा-संस्कृत । विषय-भायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५७ । ऋं भण्डार ।

विशेप -- ५वाँ विलास तक है।

३२१६. प्रति सं०२। पत्र सं० २१ ते ६२। ले० काल सं०१८६८। वे० सं० १५७१। इप्र

३२१७ प्रति सं०३। पत्र सं० ३१। ले० काल सं० १८७२ फाग्रुए । वे० सं० १७६। ख

विशेष—इसी भण्डार मे दी प्रतिया (वे॰ सं॰ १८०, १८१) ग्रीर है। ३२१८. प्रति स० ४। पत्र सं॰ ६१। ले॰ काल ४। ग्रपूर्ण। वे॰ स॰ ६८१। ङ सण्डार।

३२१६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे॰ सं० २३० । छ भण्डार ।

३२२०. वैद्याजीवनग्रन्थः । पत्र स० ३ मे १८ । ग्रा० १० र्४४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । ग्रपूर्श । वे० स० ३३३ । च भण्डार ।

विशेष---अन्तिम पत्र भी नही है।

३२२१. वैद्यजीवनटीका—रुद्रभट्ट । पत्र सं० २५ । आ० १०×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६६ । स्र भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० २०१६, २०१७) श्रीर है।

३२२२. वेंद्यमनोत्सव—नयनसुख । पत्र स० ३२। आ० ११×५ दुख । भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल स० १६४९ आषाढ सुदी २। ले० काल सं० १८५३ ज्येष्ठ सुदी १। पूर्ण । वे० स० १८७६। श्र भण्डार ।

३२२३. प्रति सं०२ । पत्र स०१६। ले० काल सं०१८०६। वे० स०२०७६। स्रा मण्डार।

विशेप-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ११६५) ग्रीर है।

३२२४. प्रति सं०३ । पत्र सं०२ मे ११ । ले० काल 🗙 । ग्रपूर्ण । वे० स०६८० । ड भण्डार ।

३२२४ प्रति सं०४। पत्र मं०१६। ले० काल सं०१६६३। वे० सं०१५७। छ भण्डार।

३९२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६६ सावएा बुदी १४ । वे० स० २००४ । ट

भण्डार ।

विशेष-पाटण मे मुनिमुद्रत चैत्यालय मे भट्टारक मुखेन्द्रकीर्ति के शिष्य पं॰ चम्पाराम ने स्वय प्रतिलिपि
की थी।

३२२७. वैद्यवस्मभ" " । पत्र मं० १६ । ग्रा० १०३×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ते० काल म० १६०१ । पूर्ण । वे० सं० १८७१ ।

विषेप--गेवाराम ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

३२२ प. प्रति सं०२। पत्र सं०६। ले० काल ४। वे० सं०२६७। ख भण्डार।

३२२६. वैद्यकसारोद्धार—संग्रहकत्तां श्री हर्षकीत्तिसूरि । पत्र सं० १६७ । ग्रा० १०४४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल ४ । ले० काल सं० १७४६ ग्रासोज वुदी द । पूर्ण । वे० स० १८२ । ख भण्डार ।

विशेष—भानुमती नगर मे श्रीगजकुशलगिए के शिष्य गिएसुन्दरकुशल ने प्रतिलिपि की थी । प्रति हिन्दी श्रतुवाद सहित है।

३२३०. प्रति सं०२ । पत्र सं० ४६ । ले॰ काल सं॰ १७७३ माघ । वे० सं० १४६ । ज भण्डार।

विशेष-प्रति का जीर्गोद्धार हुआ है।

३२३१. वैद्यामृत—माणिक्य भट्ट । पत्र सं० २० । ग्रा० ६× द इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वे० सं० ३५४ । व्य भण्डार ।

विशेष--माणित्यभट्ट ग्रहमदावाद के रहने वाले थे।

३२३२. वैद्यविनोद्******। पत्र स० १८३ । ग्रा० १०३×८३ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० १३०६ । ग्रा भण्डार ।

३२३३. वैद्यविनोद्—भट्टशंकर । पत्र सं० २०७ । म्रा० ५३×४३ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-म्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० सं० २७२ । ग्व भण्डार ।

विशेष---पत्र १४० तक हिन्दी संकेत भी दिये हुये हैं।

३२३४. प्रति सं०२। पत्र सं०३४। ले० काल 🔀 । स्रपूर्ण । वे० सं०२३१। ह्य भण्डार। ३२३४. प्रति सं०३। पत्र सं०११२। ले॰ काल सं०१८७७। वे० स०१७३३। ट भण्डार। विशेष—लेखक प्रशस्ति—

संवत् १७५६ वैशाख सुदी ५ । वार चंद्रवासरे वर्षे शाके १६२३ पातिसाहजी नौरंगजीवजी महाराजाजी श्री जयसिंहराज्य हाकिम फौजदार खानग्रव्युल्लाखाजी के नायबरूप्लमखा स्याहीजी श्री म्याहग्रालमजी की तरफ मिया साहवजी श्रव्युलफतेजी का राज्य श्रीमस्तु कल्याएक । सं० १८७७ शाके १७४२ प्रवर्त्तमाने कार्त्तिक १२ ग्रुक्वारिलिखितं मिश्रलालजी कस्य पुत्र रामनारायएो पठनार्थं ।

३२३६. प्रति सं०४। पत्र सं० २२ से ४८। ले० काल ×। अपूर्ण । वे० सं० २०७०। ट भण्डार। ३२३७. शाङ्क धरसंहिता—शाङ्क धर। पत्र सं० ५८। आ० ११×५ इच । भाषा-संस्कृत । विषयभागुर्वेद । र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण । वे० सं० १०८५ । आ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे॰ सं॰ ८०३, ११४२, १५७७) श्रीर है।

3२3 द. प्रति सं० २। पत्र सं० १७०। ले० काल ×। वै० स० १८४। य भण्डार। विशेप—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २७०, २७१) ग्रीर है।

३२३६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४-४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८२ । ट भण्टार । ३२४०. शाझ धरसंहिताटीका —नाडमल्ल । पत्र सं० ४१३ । आ० ११×४२ इच । भाषा-मंस्कृत । विषय-आयुर्वद । र० काल × । ले० काल सं० १८१२ पोष सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० १३१५ । छा भण्डार ।

विशेष-टीका का नाम शार्ङ्ग धरदीपिका है। ग्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है-

वास्तध्यान्वयप्रकाश वैद्य श्रीभाविसहात्मजेनाढमल्लेन विरिचितायाम शाङ्ग धरदीपिकामुत्तरखण्डे नैत्रप्रसादन कर्मविधि द्वात्रिशोरध्यायः । प्रति सुन्दर है ।

> ३२४१. प्रति सं०२ । पत्र सं०१०५ । ले० काल ४ । वे० सं०७० । ज भण्डार । विशेष—प्रथमखण्ड तक है जिसके ७ म्राच्याय है ।

३२४२. शालिहोत्र (श्रश्विचिकित्सा)—नकुल पिटत । पत्र सं • ६। ग्रा० १०४४ है इंच । भाषा-संन्कृत हिन्दी । विषय-श्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १७५६ । पूर्ण । वे० न० १२३६ । श्र भण्डार । विशेष—कालाडहरा में महात्मा कुशलसिंह के श्रात्मज हरिकृत्ण ने प्रतिलिपि की थी ।

३२४३. शालिहोत्र (अश्विचिकित्सा) """। पत्र म० १८। ग्रा० ७३८४३ इश्च। भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल ×। ले० काल स० १७१८ ग्रापाढ सुदी ६। पूर्ण । जीर्ण । वे० स० १२८३ । ग्रा भण्डार ।

२२४४. सन्तानविधि "" । पत्र सं० २०। ग्रा० ११×४२ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्श । वे॰ सं० १६०७ । ट भण्डार ।

विशेप-सन्तान उत्पन्न होने के सम्बन्ध मे कई नुस्खे है।

३२४४. सिन्नपातनिदान " ""। पत्र संव द । आ॰ १०४४३ इ'न । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र॰ काल ४ । ले॰ काल ४ । पूर्ण । वे॰ स॰ २३० । छ भण्डार ।

३२४६. सिन्नपातिनदानिचिकित्सा—चाहडटास । पत्र स०१४ । ग्रा०१२×५ दे इच । भाषा~ सस्कृत । विषय–ग्रायुवंद । र० काल × । ले० काल सं०१८३६ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

निगेप-हिन्दी ग्रर्थ सहित है।

३२४७ सिन्नपातकितिका"""। पत्र सँ० १ । ग्रा० ११३४५३ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-भ्रायुर्वद्वा र० काल ४ । ले० काल सँ० १८७३ । पूर्ण । वै० सँ० २८३ । ख भण्डार ।

विशेष — बीवनपुर मे पं० जीवरादास ने प्रतिलिपि की थी।

३२४८. सप्तविधि । पत्र सं ० ७ । ग्रा० ८ १४४५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रायुर्वेद । ६० काल 🔀 । त्रेपूर्या । वे० सं० १४१७ । स्त्र भण्डार ।

३२४६. सर्वे ज्वरसमुख्यद्रपेगा पत्र सँ० ४२। ग्रा० ६×३ ई च । भाषा-सस्कृत । विषय-भायुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १८८१ । पूर्ण । वे० सै० २२६ । वा भण्डार ।

३२४०. सारसंग्रह "" । पत्र सं० २७ से २४७ । आ० १२×५६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-भायुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १७४७ कॉत्तिक । अपूर्यो । वे० सं० ११५६ । आ भण्डार ।

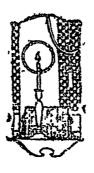
विशेष-हरिगोविंद ने प्रतिलिपि की थी।

३२४१. लालोन्तरराख " " । पत्र सँ० ७३ । ग्रा० ६×४ इ च । भोषा-हिन्दी । विषय-ग्रायुर्वेद । ६० काल × । ले० काल सं० १८४३ ग्रासोज बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ७१४ । ऋ भण्डार ।

३२४२ सिद्धियोग ' '''। पत्र स० ७ से ४३ । म्रा० १०×४३ डंच । भाषा—संस्कृत । विषय-म्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० सं० १३५७ । म्रा भण्डार ।

३२४३. हरहैकल्प ""। पत्र सं ूरा श्रा० ५३×४ ड च । भाषा-हिन्दी । विषय-श्रायुर्वेद । र ॰ काल × । पूर्ण । वे० सं ० १८१६ । त्र्य भण्डार ।

विशेप---मालकागडी प्रयोग भी है। (ब्रपूर्स)



विषय-छंद एवं ऋलङ्गार

३२४४. श्रमरचिद्रिका''''''| पत्र सं० ७५। ग्रा० ११४४३ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। वषय-छंद ग्रसङ्कार। र॰ काल ४। ले० काल ४। ग्रपूर्ण। वे० सं० १३। ज भण्डार।

विदोप-चतुर्थ श्रधिकार तक है।

३२४४. त्र्यलंकाररत्नाकर—द्लिपतराय बशीधर । पत स० ५१ । ग्रा० ५३×५३ दंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४ । ह भण्डार ।

३२४६. श्रतङ्कारवृत्ति-जिनवर्द्धन सूरि। पत्र स०२७। श्रा० १२४८ डंच। भाषा-संस्कृत। विषय-रस श्रतङ्कार। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं० ३४। क भण्डार।

३२४७. श्रालङ्कारटीका""" '। पत्र सं० १४ । ग्रा० ११×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६ द । ट भण्डार ।

३२४८. श्रातङ्कारशास्त्र "" । पत्र स० ७ से ११२ । आ० ११है×५ इंच । भाषा-मंम्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल × । ले॰ काल × । अपूर्ण । वे॰ सं॰ २००१ । श्र भण्डार ।

विशेप-प्रति जीर्ए। शीर्ण है। बीच के पत्र भी नहीं है।

३२४६. कविकपटी """। पत्र सं० ६। आ० १२×६ इंच। भाषा-सस्वृत । विषय-रस ग्रलङ्कार। र० काल ×। ले॰ काल ×। श्रपूर्ण। वे॰ सं॰ १८५०। ट भण्डार।

विशेष---प्रति सस्कृत टीका महित है।

३२६०. कुत्रलयानन्द् """। पत्र सं० २०। त्र्या० ११×५ इ'च। भाषा-सस्कृत । विषय-म्रलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६१ । ट भण्डार ।

३२६१. प्रति सं०२। पत्र सं० ५। ले॰ काल 🗴 । वे॰ स॰ १७८२। ट भण्हार।

३२६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल 🗙 । अपूर्ण । वे० स० २०२५ । ट भण्डार ।

३२६३. कुवलयान-द्—अप्पय दीिक्त । पत्र सं० ६० । ग्रा० १२×६ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-

विशेष—स॰ १८०३ माह बुदी ५ को नैरासागर ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

३२६४. प्रति सं०२। पत्र सं०१३। ले० काल सं०१८६। वे० सं०१२६। इन् भण्डार। विशेष—जयपुर मे महात्मा पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

३२६४. प्रति स० ३। पत्र सं० ८०। ले० काल सं० १९०४ वंशाख सुदी १०। वे० सं० ३१४। ज

विशेष--प॰ सदासुख के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी।

३२६६. प्रति मं० ४। पत्र सं० ६२। ले० काल सं० १८०६। वे० सं० ३०६। ज भण्डार।

३२६७. कुवलयानन्दकारिकाः । पत्र स० ६। ग्रा० १०४४३ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रनङ्कार। र० काल ४। ले० काल सं० १८१६ ग्रावाढ सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० २८६। इद भण्डार।

विशेष--प० कृष्ण्दास ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । १७२ कारिकाये है ।

3२६८ प्रति सं०२। पत्र स०८। ले० काल ४। वै० सं० ३०६। ज भण्डार।

विशेष--हरदास भट्ट की किताब है रामनारायन मिश्र ने प्रतिलिपि की थी।

३२६६. चन्द्रावलोक" "। पत्र स० ११ । ग्रा० ११ \times ५२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ग्रलङ्कार । र० काल \times । ने० काल \times । पूर्ण । वे० स० ६२४ । श्र्य भण्डार ।

३२७० प्रति सं०२। पत्र सं०१३। ग्रा० १० है×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ग्रलङ्कारशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं०१६०६ कार्तिक बुदी ६। वे० सं०६१। च भण्डार।

विशेष—रूपचन्द साह ने प्रतिलिपि की थी।

३२७१. प्रति सं० ३ । पत्र स० १३ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । च भण्डार ।

२२७२. छंटानुशासनवृत्ति हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ८ । म्रा० १२४४६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० २२६० । स्त्र भण्डार ।

विशेष--- ग्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है--

इत्याचार्य श्रीहेमचन्द्रविरिचिते व्यावर्णानोनाम श्रष्टमोऽध्याय समाप्तः । समाप्तोयग्रन्थः । श्री ' " भ्रुवनकीर्त्ति शिष्य प्रमुख श्री ज्ञानभूपण योग्यस्य ग्रन्थः लिख्यत । मु० विनयमेच्णा ।

३२७३ छदोशतक—हपैकीत्ति (चंद्रकीत्ति के शिष्य)। पत्र स० ७। ग्रा० १०६४४६ इंच। भाषा-मम्कृत हिन्दी। विषय-छदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८८१। स्त्र भण्डार।

३२७४ छंदकोश—रत्नशेखर सूरि। पत्र स० ३१। ग्रा० १०४४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-छदगास्त्र। र० काल ४। ले० काल ४। ग्रपूर्ण। वे० स० १६५। इ. भण्डार। ३२७४ छंदकोश'''''। पत्र सं०२ मे २४ । ग्रा०१०×४३ इंच। भाषा-मंस्कृत । विषय-छद जास्त्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं०६७ । च भण्डार ।

३२७६. निद्ताढ्यछ्रदः " । पत्र स० ७ । ग्रा० ६ \times ४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-छद शास्त्र। र० काल \times । ते० काल \times । वे० स० ४५७ । ञ भण्डार ।

३२७». पिंगलळंदशास्त्र—माखनकवि । पत्र सं० ४६। ग्रा० १३×४३ इ च । भाषा-हिन्दो । विषय-छदंशास्त्र । र० काल सं० १८६३ । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ६४४ । ग्रा भण्डार ।

विशेप-४६ मे आगे पत्र नही है।

अविभाग- श्री गरोशायनुमा अथ पिगल । सर्वेया ।

मगल श्री गुरुदेव गरोश क्रिपाल गुपाल गिरा सरमानी ।
वदन के पद पकज पावन माखन छद विलाम बखानी ।।
कोविद वृ'द वृ दिन की कल्पद्रुम का मधु का काम निधानी ।
मारद ई दु मयूप निसोतल सुन्दर नेस सुधारस बानी ।।१।।

दोहा— पिंगल सागर छदमिए। वरए। वहुरङ्ग ।

रस उपमा उपमैय तें मुदर ग्ररथ तरत ।।२।।

तातें रच्यो विचारि के नर वानी नरहेत ।

उदाहरए। वहु रसन के वरए। सुमित समेत । ३।।

विमल चरए। भूपन किलत, वानी लिलत रसाल ।

मदा सुकवि गोपाल की, श्री गोपाल कृपाल ।।४।।

तिन सुत माखन नाम है, उक्ति युक्ति त हीन ।

एक समै गोपाल किव, सासन हरिथह दीन ।।५।।

पिंगल नाग विचारि मन, नारी वानीहि प्रकास ।

यथा सुमित मौं कीजिये, माखन छद विलास ।।६।।

दोहरागीत यह सुकिव श्री गोपाल की सुभ भई सासन है जबै ।

पद जुगल वदन मुनिये उर सुमित बाढी है तबै ।

श्रित निम्न पिंगल मिंधु मैं मनमीन ह्वै किर मिचरयौ ।

मिंध काढि छंद विलास माखन किवन मौ बिनती करयौ ।

छद एवं ऋलङ्कार]

दोहा--

हे किव जन सरवज्ञ हो मित दोषन कछु देह ।
भूल्यौ भ्रम तै हौ वहा जहा सोधि किन लेहु ॥६॥
संवत वसु रस लोक पर नखतह सा तिथि मास ।
सित वारा श्रुति दिन रच्यौ माखन छद विलास ॥६॥

विंगल छद मे दोहा, चौबोला, छप्पय, भ्रमर दोहा, सोरठा म्रादि कितने ही प्रकार के छदो का प्रयोग किया गया है । जिस छंद का लक्षण लिखा गया है उसको उसी छद मे वर्णन किया गया है। म्रन्तिम पत्र भो नहीं है।

३२७८. पिंगलशास्त्र—नागराज । पत्र सं० १० । आ० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय— छंदगास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२७ । व्य भण्डार ।

३२७६ पिंगलशास्त्र"" । पत्र स० ३ से २०। ग्रा० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-छद जाम्त्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ५६। ग्रा भण्डार ।

३२८ - पिंगलशास्त्र'''''' । पत्र स० ४ । ग्रा० १०३×४३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-छंदशास्त्र । र॰ काल × । ले॰ काल × । ग्रपूर्ण । वे॰ सं॰ १६६२ । ऋ भण्डार ।

३०८१. पिंगलछंदशास्त्र (छन्द रत्नावली)—हरिरामदास । पत्र सं० ७ । आ० १३×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-छन्द शास्त्र । र० काल सं० १७६५ । ले० काल सं० १८२६ । पूर्ण । वे० म० १८६६ । ट भण्डार ।

विशेष— सवतशर नव मुनि शशीन म नवमी गुरु मानि । डिडवाना हढ कूप तहि ग्रन्थ जन्म-थल ज्यानि ॥

इति श्री हरिरामदास निरञ्जनी कृत छद रत्नावली संपूर्ण।

३२८२ पिंगलप्रदीप—भट्ट लन्दमीनाथ । पत्र स० ६८ । आ० ६४४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-रस ग्रलङ्कार । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ८१३ । ग्रा भण्डार ।

३२८३. प्राकृतछंदकोष—रह्नशेक्षर । पत्र सं० ५ । ग्रा० १३४५३ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-छदशास्त्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ११६ । आ भण्डार ।

३२८४ प्राकुतछंदकोष—अल्हू । पत्र सं० १३ । आ० ८ ४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-छद

२२-४. प्राकृतछ्ंदकोश " ""। पत्र सं० ३ । म्रा० १०४५ इन्द । भाषा-प्राकृत । विषय-छंदशास्त्र । र० काल ४ । ले० काल सं० १७६२ श्रावरा सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १८६२ । ऋ भण्डार ।

विशेष-प्रति जीर्श एवं फटी हुई है।

३२८६. प्राकृतिर्पगलशास्त्र "" । पत्र सं०२। ग्रा० ११४४ है इंच। भाषा-प्राकृत । विषय-छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं०२१४८ । श्रा भण्डार ।

३२८७. भाषाभूषण्--जसवंतर्सिह राठौड । पत्र स० १६ । आ० ६×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ग । वे० सं० ५७१ । ड भण्डार ।

३२८८ रघुनाथ विलास—रघुनाथ। पत्र सं० ३१। ग्रा० १०४४ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-रसालङ्कार। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं० ६६४। च भण्डार।

विशेष--इसका दूसरा नाम रसतरिङ्गाणी भी है।

३२८ रत्नमंजूषा "" । पत्र स० ६ । आ० ११६४४६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-छदगास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६१६ । आ भण्डार ।

३२६०. रत्नमंजूपिकाः ः ःः। पत्र स० २७। ग्रा० १०३ \times ५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० ४४ । व्य भण्डार ।

विशेष--- अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है---

इति रत्नमजूषिकाया छदो विचित्याभाष्यतोऽष्टमोध्याय ।

मङ्गलाचरण-अ पचपरमेष्ठिम्यो नमो नम. ।

३२६१. वाग्भट्टालङ्कार-वाग्भट्ट । पत्र स॰ १६ । आ० १०३×४६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल × । ले० काल सं० १६४६ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६५ । आ भण्डार ।

३२६२. प्रति सं०२। पत्र स०२६। ले० काल स० १६६४ फाग्रुए। सुदी ७। वे० स०६५३। क भण्डार।

विशेष---लेखक प्रशस्ति कटी हुई है । कठिन शब्दों के ग्रर्थ भी दिये हुए है ।

. ३२६३. प्रति स०३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६५६ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० १७२ । ख भण्डार ।

विशेप-प्रति सस्कृत टीका सहित है जो कि चारो ग्रोर हासिये पर लिखी हुई है।

इसके प्रतिरिक्त श्र भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ११६). स भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६७२), स्त भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १३८), स्त भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० ६०, १४३), स्त भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २१७), व्य भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १४६) श्रीर है।

३२६४. प्रति सं०४। पत्र सं०६। ले० काल स० १७०० कार्तिक बुदी ३। वे० सं०४५। व्य

विशेष—ऋषि हंसा ने सादडी मे प्रतिलिपि कराई थी। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ स० १४६) ग्रौर है।

३२६४. वाग्भट्टालङ्कारटीका—वादिराज । पत्र स० ४० । आ० ६३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल स० १७२६ कार्त्तिक बुदी ऽऽ (दीपावली) । ले० काल स० १८११ श्रावरा सुदी ६ । पूर्ण वे० स० १५२ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-टीका का नाम कविचिन्द्रका है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवत्सरे निषिद्दगश्वशाकयुक्ते (१७२६) दीपोत्सवाख्यदिवमे सगुरी सचित्रे । लग्नेऽलि नाम्नि च समीपगिरः प्रसादात् सर्द्वादिराजरिचताकविचन्द्रकेयं ।। श्रीराजसिंहनुपत्तिजयसिंह एव श्रीटोडाक्षकाख्यनगरी श्रपहिल्य तुल्या । श्रीवादिराजविबुधोऽपर वाग्भटोयं श्रीसूत्रवृत्तिरिह नंदतु चार्कचन्द्र: ।।

श्रीमद्भीमनृपात्मजस्य विलनः श्रीराजसिंहस्य मे मेवायामवकाशमाप्य विहिता टीका शिशूनां हिता । हीनाधिकवचीयदत्र लिखित तद्वे बुधै. क्षम्यता गार्हस्थ्यविनाथ सेवनाधियासकः स्वष्ठतामाभूयात् ।।

इति श्री वाग्भट्टालङ्कारटीकाया पोमराजश्रेष्ठिमुतवादिराजिवरिचिताया किवचिद्रिकाया पंचम. परिच्छेद: समाप्त । सं० १८११ श्रावण सुदी ६ ग्रुरवासरे लिखत महात्मौक्यनगरका हेमराज सवाई जयपुरमध्ये । सुभं भूयात् ।। ३२६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल स० १८११ श्रावण सुदी ६ । वे० स० २५६ । श्रम्भण्डार ।

३२६७ प्रति स० ३। पत्र स० ११६। ले० काल स० १६६०। वे० स० ६४४। क भण्डार। ३२६८. प्रति स० ४। पत्र स० ६६। ले० काल स० १७३१। वे० सं० ६४४। क भण्डार।

विशेष---तक्षकगढ मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे "" " खण्डेलवालान्वये सौगागी गौत्र वाले सम्माट गयासुद्दीन से सम्मानित साह महिगा " साह पोमा मृत वादिराज की भार्या लौहडी ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी।

३२६६. प्रति सं० ४ । पत्र स० २० । ले० काल स० १८६२ । वे० सं० ६५६ । क भण्डार ।
३२००. प्रति स० ६ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० स० ६७३ । ड भण्डार ।
३२०१ वाग्भट्टालङ्कार टीका " । पत्र स० १३ । ग्रा० १०×४ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय—
अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण (पचम परिच्छेद तक) वे० स० २० । त्र्य भण्डार ।
विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

રૂ

ŧ

३३०२ वृत्तरत्नाकर---भट्ट केदार । पत्र स० ११ । ग्रा० १०४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-छद शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५२ । श्र भण्डार ।

३३०३. प्रति सं० २ । पत्र स० १३ । ले० काल सं० १६८४ । वे० सं० ६८४ । इन् भण्डार ।

विशेष—इनके ग्रतिरिक्त स्त्र भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १५०) ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २७५) অ भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० १७७, ३०६) ग्रीर है।

३३०४. वृत्तरत्नाकर—कालिदास । पत्र स० ६ । ग्रा० १०४५ इ'च । भाषा-सस्कृत । विषय-छद शास्त्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० २७६ । ख भण्डार ।

३३०४. वृत्तरत्नाकर" " । पत्र सं॰ ७ । स्रा॰ १२ \times ५३ इन । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशाम्त्र । र॰ काल \times । ले॰ काल \times । पूर्ण । वे॰ सं॰ २५४ । ज भण्डार ।

३३०६. शृत्तरत्नाकरटीका—सुल्हगा कवि । पत्र स० ४० । ग्रा० ११×६ इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६ । क भण्डार ।

विशेष--सुकवि हृदय नामक टीका है।

३३०७. वृत्तरत्नाकरछंदटीका—समयसुन्दरगिषा। पत्र स०१। ग्रा० १०६४५६ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-छदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० २२१६। स्त्र भण्डार।

३३०८ श्रृतबोध—कालिदास । पत्र सं०६। ग्रा०८×४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वे० स०१५६१ । श्र्य भण्डार ।

विशेष--- अष्टगरा विचार तक है।

३३०६. प्रति स०२।पत्र स०४। ले० काल मं० १८४६ फाग्रुग् सुदी १। वे० स० ६२०। स्त्र भण्डार।

विशेष--पं ॰ डालूराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

३३१०. प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल 🗙 । वै० सं० ६२६ । ऋ भण्डार ।

विशेष--जीवराज कृत टिप्परा सहित है।

३३११. प्रति स०४। पत्र स० ७। ले० काल स० १८६५ श्रावरण बुदी ह। वे० स० ७२४। इन् भण्डार।

३३१२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४। ले० काल स० १८०४ ज्येष्ठ मुदी ४ । ते० स० ७२७। भण्डार।

विकोप--प० रामचद ने भिलती नगर मे प्रतिलिपि की थी।

र ३३१३. प्रति सं०६। पत्र सं०५। ले॰ काल स० १७८१ चैत्र मुदी १। वे० स० १७८। व्य भण्डार।

विशेष—पं अधुलानन्द के शिष्य नैनसुख ने प्रतिलिपि की थी। प्रति संस्कृत टीका सहित है। ३३१४. प्रति सं ७ । पत्र स० ४। ले० काल ×। वे० सं १८११। ट भण्डार। विशेष—श्राचार्य विमलकीति ने प्रतिलिपि कराई थी।

इसके अतिरिक्त द्धा भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ६४८, ६०७, ११६१) क, ह, च और ज भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ७०४, ७२६, ३४८, २८७) व्या भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १५६, १८७) और हैं।

३३१४. श्रुतबोध--वररुचि । पत्र सं० ४ । म्रा० ११३×५ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८५६ । वे० सं० २८३ । छ भण्डार ।

३३१६ श्रृतबोधटीका—मनोहरश्याम। पत्र सं० ८। ग्रा० ११ई×५५ इख्र। भाषा—सस्कृत। विषय-छदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८६१ ग्रासोज सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ६४७। क भण्डार।

३३१७. श्रुतबोधटीका"""। पत्र सं० ३ । म्रा० ११ई \times ५ई इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र० काल \times । ले० काल सं० १८२८ मंगसर बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६४५ । स्त्र भण्डार ।

३३१८. प्रति सं०२। पत्र सं०८। ले० काल ४। वे० सं०७०३। क भण्डार।

३३१६ श्रुतवोधवृत्ति—हर्षकीत्ति। पत्र सं०७। ग्रा• १०३×४६ इख्र। भाषा—संस्कृत । विषय— 'दशास्त्र। र० काल ×। ले० काल स०१७१६ कार्तिक सुदी १४। पूर्ण। वे० सं०१६१। स्त्र भण्डार।

विशेष-श्री ५ सुन्दरदास के प्रसाद से मुनिसुख ने प्रतिलिपि की थी।

३३२०. प्रति सं०२। पत्र सं०२ से १६। ले० काल सं०१६०१ माघ सुदी ६। अपूर्ण। वे० स० २३३। छ भण्डार।



३३०२ वृत्तरत्नाकर-भट्ट केदार। पत्र सं० ११। श्रा० १०४४ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-छव श्वास्त्र। र० काल ४। ते० काल ४। पूर्ण। वे० सं० १८५२। स्त्र भण्डार।

३३०३. प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल सं० १६८४ । वे० सं० ६८४ । उ भण्डार ।

विशेष—इनके ग्रतिरिक्त श्र भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६५०) ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २७५) स्त्र भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० १७७, ३०६) ग्रीर हैं।

३३०४. वृत्तरत्नाकर—कालिदास । पत्र स०६ । ग्रा० १० \times ५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-छंद शास्त्र । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स०२७६ । ख भण्डार ।

३३८४ वृत्तरत्नाकर"" "। पत्र स०७। ग्रा०१२×५३ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-छंदशास्त्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्णं। वे०स०२८५। ज भण्डार।

३३०६. शृत्तरत्नाकरटीका-सुल्हण कवि । पत्र स० ४० । भ्रा० ११×६ इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६ । क भण्डार ।

विशेष-सुकवि हृदय नामक टीका है।

३३०७. वृत्तरल्लाकरछंदटीका—समयसुन्दरगिण । पत्र स०१। आ० १०३×५३ इन्च । भाषा— सस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२१६ । आ भण्डार ।

३३०८ श्रृतवोध—कालिदास । पत्र सं०६। ग्रा०८×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वे० स०१४६१ । श्र्र भण्डार ।

विशेष--- प्रष्टुगरा विचार तक है।

३३०६. प्रति स०२।पत्र स०४।ले० काल मं०१८४६ फाग्रुग् मुदी १।वे० स०६२०। स्त्र भण्डार।

विशेष-पं बालूराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थो।

३३१०. प्रति स० ३। पत्र स० ६। ले० काल 🗙 । वे० स० ६२६। ऋ भण्डार ।

विशेष-जीवराज कृत टिप्परा सहित है।

२३११. प्रति स०४। पत्र स० ७। ले० काल स० १८९५ श्रावरण बुदी ६। वे० सं० ७२५। रू भण्डार।

३३१२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल स० १८०४ ज्येष्ठ मुदी ५ । वे० स० ७२७ । भण्डार ।

विशेष--प० रामचद ने मिलती नगर मे प्रतिलिपि की थी।

्र ३३१३. प्रति सं०६। पत्र सं० ४। ले॰ काल सं० १७८१ चैत्र मुदी १। वे० स० १७८। व्य भण्डार।

विशेष—पं भुखानन्द के शिष्य नैनसुख ने प्रतिलिपि की थी। प्रति संस्कृत टीका सहित है। ३३१४. प्रति सं ०७। पत्र सं ०४। ले० काल ×। वे० स १८११। ट भण्डार। विशेष—ग्राचार्य विमलकी ति ने प्रतिलिपि कराई थी।

इसके अतिरिक्त स्त्र भण्डार मे ३ प्रतिया (वै० सं० ६४८, ६०७, ११६१) क, छ, च और ज भण्डार मे एक एक प्रति (वै० सं० ७०४, ७२६, ३४८, २८७) व्य भण्डार मे २ प्रतिया (वै० सं० १५६, १८७) और हैं।

३३१४. श्रुतबोध—वररुचि । पत्र सं० ४ । ग्रा० ११३×५ इख । भाषा—संस्कृत । विषय—छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८५६ । वे० सं० २८३ । छ भण्डार ।

३३१६ श्रृतबोधटीका—मनोहरश्याम । पत्र सं० ८ । ग्रा० ११३×५३ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८६१ श्रासोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६४७ । क भण्डार ।

३३१७. श्रुतबोधटीका"""। पत्र सं० ३ । ग्रा० ११ई \times ५६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-छंदशास्त्र । र० काल \times । ले० काल सं० १८२८ मंगसर बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६४५ । श्रु भण्डार ।

३३१८. प्रति सं० २ | पत्र सं० ८ | ले० काल 🗙 | वै० सं० ७०३ | क भण्डार |

३३१६ श्रुतवोधवृत्ति—हर्षकीर्ति। पत्र सं०७। श्रा• १०३×४६ डञ्च। भाषा-संस्कृत । विषय-देशास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १७१६ कार्तिक सुदी १४। पूर्ण। वे० स० १६१। ख भण्डार।

विशेष-श्री ५ सुन्दरदास के प्रसाद से मुनिसुख ने प्रतिलिपि की थी।

३३२०. प्रति सं०२। पत्र सं०२ से १९। ले० काल सं०१६०१ माघ सुदी ६। अपूर्ण। वे० स०२३३। छ भण्डार।



विषय-संगीत एवं नाटक

+}-{+

३३२१. त्र्यकलङ्कनाटक--श्री मक्खनलाल । पत्र सं० २३ । ग्रा० १२×८ इश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-नाटक । र० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० सं० १ । ड भण्डार ।

३३२२. प्रति सं०२। पत्र सं०२४। ल० काल सं०१९६३ कार्तिक सुदी ६। ये० सं०१७२। छ भण्डार।

३३२३. श्रिमिझान शाकुन्तल-कालिदास । पत्र सं० ७ । ग्रा० १०१४४ है इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-नाटक । र० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० सं० ११७० । श्र भण्डार ।

३३२४, कर्पूरमञ्जरी—राजशेखर । पत्र स० १२ । ग्रा० १२६ ×४३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-नाटक । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । मुनि ज्ञानकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थ के दोनो ग्रोर प्र पत्र तक संस्कृत मे व्याख्या दी हुई है ।

३३२४. ज्ञानसूर्योदयनाटक—वादिचन्द्रसूरि । पत्र सं० ६३ । आ० १०३×४३ इख । भाषा— संस्कृत । विषय—नाटक । र० काल सं० १६४८ माघ सुदी ८ । ले० काल स• १६६८ । पूर्ण । वे० सं० १८ । ऋ भण्डार ।

विशेप-- श्रामेर मे प्रतिलिपि हुई थी।

३३२६. प्रति सं०२। पत्र स० ६५। ले० काल स०१८८७ माह सुदी ५। वे० स०२३१। क भण्डार।

३३२७. प्रति सं०३। पत्र सं०३७। ले॰ काल सं०१६४ ग्रासीज बुदी ६। वे॰ स०२३२। क भण्डार।

विशेष—कृष्णगढ निवासी महात्मा राधाकृष्ण ने जयनगर मे प्रतिलिपि की थी तथा इसे सघी ग्रमरचन्द दीवान के मन्दिर मे विराजमान की ।

३६२८ प्रति स०४। पत्र स०६६। ले० कोल स०१६३४ सावरण बुदी ४। वे० स०२३०। क भण्डार।

२२२६. प्रति सं० ४ । पत्र स० ४३ । ले० काल स० १७६० । वे० सं० १३४ । व्य भण्डार ।
विशेष—भट्टारक जगत्कीर्ति के शिष्य श्री ज्ञानकीर्ति ने प्रतिलिपि करके पं० दोदराज को भेंट स्वरूप दी
थी। इसके ग्रतिरिक्त इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १४७, ३३७) ग्रीर है ।

३३३०. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—पारसदास निगोत्या। पत्र सं० ४१। म्रा० १२×८ इच। माषा—हिन्दी। विषय—नाटक । र० काल सं० १६१७ दैशाख बुदी ६। ले० काल सं० १६१७ पौष ११। पूर्ण। वे० स० २१६। ज भण्डार।

३३३१. प्रति सं०२। पत्र सं० ७३। ले० काल सं० १६३६। वे० सं० ५६३। च भण्डार। ३३३२. प्रति सं०३। पत्र सं० ४८ से ११५। ले० काल सं० १६३६। अपूर्ण। वे० स० ३४४। म्रा

३३३३. ज्ञानसूर्योदयूनाटक भाषा—भागच्न्द्। पत्र सं०,४१ । आ० १२×७३ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-नाटक । र० क्वाल × । ले० काल सं०,१६३४ । पूर्ण । वे० सं० ५६२ । च भण्डार ।

३३३४. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भगवतीदास। पत्र सं० ४०। ग्रा० ११३×७३ इख्र। भाषा—हिन्दी। विषय-नाटक। र० क्राल ×। ले० काल सं० १८७७ भादवा बुदी ७। पूर्णी वे० सं० २२०। ङ भण्डार।

३३३४. ज्ञातसूर्योदयताटक भाषा—बख्तावरलाल । पत्र सं० ८७ । म्रा० ११×५३ इख । भाषा— हिन्दी । विषय—नाटक । र० कार्ल स० १८४४ उयेष्ठ सुदी २ । ले० काल सं० १६२८ वैशाख बुदी ८ । वे० सं० ५६४ । पूर्ण । च भण्डार ।

विशेष--जींहरीलाल खिन्दूका ने प्रतिलिपि की थी।

३३३६. धर्मद्शावतारनाटक """। पत्र सँ० ६६ । ग्रा० ११३×५३ इख । भाषा—संस्कृत । विषय— नाटक । र० काल सं० १६३३ । ले० काल ×] वै० सँ० ११० । ज भण्डार ।

विशेष--पं० फतेहलालजी की प्रेरणा से जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी । इसका दूसरा नाम धर्मप्रदीप भी है।

३३३७. नलद्मयुवी नाटक । पत्र सं० ३ से २४ । आ० ११×४३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-नाटक । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६ म । ट अण्डार ।

३३३८. प्रबोधचिन्द्रका—वैजल भूपति। पत्र सं० २६। ग्रा० ६×४३ दश्च । भाषा-संस्कृत। विषय-नाटक। र० काल ×। ले० काल स० १६०७ भादवा बुदी ४। पूर्ण । वे० सं० ६१४। श्र भण्डार।

३३३६. प्रति सं०२। पत्र सं०१३। ले० काल ×। वे० सं०२१६। मा भण्डार।

३३४०. भविष्यदत्त तिलकासुन्दरी नाटक-न्यामतसिंह। पत्र सं० ४४। आ० १३×५० इआ। भाषा-हिन्दी। विषय-नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्णी वे० सं० १६७। छ भण्डार।

३३४१. मदनपराजय-जिनदेवसूरि। पत्र सं० ३६। म्रा० १०३×४३ इख । भाषा-सस्कृत। विषय-नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। म्रपूर्ण। वे० सं० ८८४। स्त्र भण्डार।

भण्टार ।

1

विशेष—पत्र सं० २ से ७, २७, २८ नहीं है तथा ३६ में ग्रागे के पत्र भी नहीं हैं।

३२४२. प्रति सं० २ | पत्र सं० ४५ | ले० काल सं० १८२६ | वे० सं० ५६७ | क भण्डार |

३२४३ प्रति स० ३ | पत्र सं० ४१ | ले० काल × | ने० मं० ५७८ | हा भण्डार |

विशेष —पारम्भ के २५ पत्र नवीन लिखे गये है |

३३४४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० १०० । छ भण्डार । ३३४४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६१६ । वे० सं० ६४ । मा भण्डार । ३३४६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३१ । ले० वाल सं० १८३६ माह सुदी ६ । वे० सं० ४८ । ज

विशेष—सवाई जयनगर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे पं० चोराचन्द के सेवक प० रामचन्द ने सवाईराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३३४७ प्रति सं०७। पत्र सं०४०। ले० काल ×। वे० म० २०१। विशेष—श्रग्रवाल ज्ञातीय मित्तल गोत्र वाले मे प्रतिलिपि कराई थी।

रेरे४८. मदनपराजय"""। पत्र स० ३ से २५। मा० १०×४५ इस । भाषा-प्राकृत । विषय -नाटक । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६४ । स्र भण्डार ।

३३४६. प्रति सं०२। पत्र सं०५७। ले० काल 🗙 । प्रपूर्ण । वे० सं० १६६४ । स्र भण्डार ।

३३४०. मदनपराजय—पं० स्वरूपचन्द् । पत्र सं० ६२। म्रा० ११३४८ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-नाटक । र० काल स० १६१८ मंगसिर सुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५७६ । स्व भण्डार ।

- २३४१. रागमाला''''''। पत्र सं० ६। ग्रा० ५३×५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-सङ्गीत । र० काल ×। त्रपूर्ण । वे० स० १३७६ । श्र्म भण्डार ।
- ३३४२. राग रागिनियों के नाम """ पत्र सक न श्राठ दर्श्य इड्डा भाषा-हिन्दी । विषय-सङ्गीत । रक्काल X । लेक काल X । पूर्ण । वैठ संक २०७ । मा भण्डार ।

विषय-लोक-विज्ञान

३३४३. श्रदाईद्वीप वर्णान "" पत्र सं० १०। श्रा० १२×६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान-जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड, पुष्कराद्व द्वीप का वर्णान है। ह० काल ×। ले० काल स० १८१५। पूर्ण । वे० सं० ३। ख भण्डार ।

३३४४. ब्रहोंकी अंचाई एषं आयुवर्णन "" पत्र सं०१। आ० ५३×६३ इख्र। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-नक्षत्रों का वर्णन है। र० कान ×। ले० काल ×। पूर्णी वे० सं० २११०। आ मण्डार।

३३४४. चंद्रप्रज्ञिप्त "" । पत्र सं० ६२ । आ० १०३×४६ इख्न । भाषा-प्राकृत । विषय-चन्द्रमा सम्बन्धी वर्णन है । र० काल × । ले० काल सं० १६६४ भादवा बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० १६७३ ।

विशेष-भन्तिम पुष्पिका-

इति श्री चन्द्रपण्णंतसी (चन्द्रप्रज्ञप्ति) संपूर्णा । लिखत परिष करमचर ।

३३४६. जम्बूद्वीपप्रक्षप्ति—नेमिचन्द्रचार्थ। पत्र सं० ६० । ग्रा० १२×६ इख्रा भोषा-प्राकृत । विषय-जम्बूद्वीप सम्बन्धी वर्णान। र० काल ×। ले० काल सं० १८६६ फाल्ग्रुन सुदी २। पूर्ण। वे० सं० १००। च भण्डार।

विशेष-मधुपुरी नगरी मे प्रतिलिपि की गयी थी।

३३४७. तीनलोककथन **** । पत्र सं० ६६ । ग्रा० १०५ ४७ ६ इझ । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान-तीनलोक पर्णन । र० काल ⋉ । ले० काल ⋉ । पूर्ण । वे० स० ३४० । म्ह भण्डार ।

३३४८. तीनलोकवर्णन् । पत्र सं० ११४, । आ० ६३४६ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-लोक विज्ञान-तीन लोक का वर्णन है । र० काल 🔀 । ले० कोल स० १८६१ सावरण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १० । ज भण्डार ।

विशेष—गोपाल व्यास उग्नियावास वाले नै प्रतिलिपि की थी। प्रारम्भ मे नेमिनाथ के दश भव का वर्णान है। प्रारम्भ में लिखा है— ढूंढार देश में सर्वाई जयपुर नगर स्थित ग्राचार्य शिरोमिण श्री यशोदानन्द स्वामी के शिष्य पं० सदासुख के शिष्य श्री पं० फतेहलाल की यह पुस्तक है। भादवा सुदी १० स० १९११।

३३४६. तीनलोकचार्ट """। पत्र सं० १ । ग्रा० ४ं×६ ई इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय- लोकविनान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—त्रिलोकसार के ग्राधार पर बनाया गया है। तीनलोक की जानकारी के लिए वहा उपयोगी है। ३३६०. त्रिलोकचित्र :: । ग्रा० २०×३० इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-लोकविज्ञान । र० काल × । ले० काल सं० १५७५। पूर्ण । बे० सं० ५३६। ह्य भण्डार ।

विशेष--कपडे पर तीनलोक का वित्र है।

३३६१ त्रिलोकदीपक—वासदेव । पत्र सं० ७२ । स्रा० १६×७% इख्र । भाषा-मंस्कृत । विषय-लोकविज्ञान । र० काल × । ले० काल सं० १८५२ ग्रापाढ सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ४ । ज भण्डार ।

विशेष--- प्रन्य संचित्र है । जम्बूद्वीप तथा विदेह क्षेत्र का चित्र सुन्दर है तथा उस पर वेल चूटे भी है ।

३३६२. त्रिलोकसार—नेमिचद्राचार्य। पत्र सं० ८१। ग्रा० १३×५ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-लोकविज्ञान। र० काल ×। ले० काल सं० १८१६ मगसिर बुदी ११। पूर्ण। वे० स० ४६। ग्रा भण्डार।

विशेष—पहिले पर्त्र पर ६ चित्र हैं। पहिले नेमिनाय की मूर्ति का चित्र है जिसके वाई ग्रोर वलभद्र तथा वाई ग्रोर श्रीकृष्ण हाथ जोडे खडे हैं। तीसरा चित्र नेमिनन्द्राचार्य का है वे लकड़ी के सिंहासन पर बैठे हैं सामने लकड़ी के स्टैंड पर ग्रन्थ है ग्रांगे पिच्छी ग्रीर कंमण्डलु हैं। उनके ग्रांगे दो चित्र ग्रीर हैं जिसमे एक चामुण्डराय का तथा दूसरा ग्रीर किसी श्रोता का चित्र है। दोनो हाथ जोडे गोडी गाले बैठे हैं। चित्र बहुत सुन्दर हैं। इसके ग्रतिरिक्त ग्रीर भी लोक-विज्ञान सम्बन्धी चित्र हैं।

३६३. प्रति सं०२। पत्र सं०४४। ले० काल सं०१६६६ प्र० वैशाख सुदी ११। वे० सं०२८८। क भण्डार।

३३६४. प्रति सं०३। पत्र स०६२। ले० काल सं० १८२६ श्रावण बुदी ४। वे० सं• २८३। क भण्डार।

३३६४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७२। ले० काल × 1 वे० स० ९८१ क भण्डार 1 विशेष—प्रति सचित्र है।

३३६६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६६। ले० काल ४। वे० स० २६०। क भण्डार १ विशेष—प्रति सचित्र है। कई पृण्ठो पर हाशिया मे सुन्दर चित्राम हैं।

३३६७. प्रति सं०६। पत्र स०६६। ले० काल स० १७३३ माह सुदी थे। वे० सं० २५३। ङ भण्डार।

विशेष—महाराजा रामसिंह के शासनकाल में वसवा में रामचन्द काला ने प्रतिलिपि करवायी थी। ३३६८ प्रति सं० १०। पत्र स० ६६। लेंग काल स० १४४३। तेंग सं० १६४४। ट भण्डार । विशेष - काल साम पूर्व ऋषिमंडल पूजा भी है।

इनके ग्रतिरिक्त आ भण्डार मे २ प्रतियां (वे॰ सं॰ २६२, २६३,) च भण्डार मे २ प्रतियां (वे॰ सं॰ १४७, १४८) तथा ज भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं॰ ४) ग्रीर है।

३३६६. त्रिलोकसारदर्पेणकथा— खड्जसेन । पत्र सं० ३२ से २२८ । ग्रा० ११×४३ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-लोक विज्ञान । र० काल सं० १७१३ चैंत सुदी ४ । ले० काल स० १७४३ ज्येष्ठ सुदी ११ । ग्रपूर्ण । वे० सं० ३६० । श्रा भण्डार ।

विशेष-लेखक प्रशस्ति विस्तृत है । प्रारम्भ के ३१ पत्र नहीं हैं ।

३३७०. प्रति सं०२। पत्र सं०१३६। ले० काल सं०१७३६ द्वि० चैत्र बुदी ४। वे० सं०१८२। स्त भण्डार।

विशेष —साह लोहट ने म्रात्म पठनार्थ प्रतिलिपि करवायी थी ।

३३७१. त्रिलोकसारभाषा--पं० टोडरमल । पत्र सं० २८६ । ग्रा० १४×७ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-लोक विज्ञान । र० काल सं० १८४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । ग्रा भण्डार ।

३३७२ प्रति सं०२। पत्र सं०४४। ले० काल ×। ग्रपूर्गा। वे० सं०३७३। श्रा भण्डार। ३३७३. प्रति सं०३। पत्र सं०२१८। ले० काल सं०१८८४। वे० सं०४३। ग भण्डार।

विशेप--जैतराम साह के पुत्र कालूराम साह ने सोनपाल भौंसा से प्रतिलिपि कराकर चौधरियो के मन्दिर मे चढाया।

३३७४ प्रति सं० ४। पत्र सं० १२५। ले० काल ×। वे० सं० ३६। घ भण्डार। ३३७५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३६४। ले० काल स० १६६६। वे० सं० २५४। ड भण्डार। विशेष—सेठ जवाहरलाल सुगनचन्द सोनी प्रजमेर वालो ने प्रतिलिपि करवायी थी।

३३७६. त्रिलोकसारभाषा "'। पत्र स० ४५२। आ० १२३× द इच । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल सं० १६४७ । पूर्ण । वे० सं० २६२ । क भण्डार ।

३३७७. त्रिलोकसारभाषा''''''। पत्र सं० १०८ । ग्रा० ११ई×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० २९१ । क भण्डार ।

विशेष-भवनलोक वर्णन तक पूर्ण है।

३३७८. त्रिलोकसारभाषा''''''। पत्र सं० १५० । ग्रा० १२×६ इ व । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८३ । च भण्डार ।

३३७६. त्रिलोकसारभाषा (वचितका)। पत्र सं० ३१०। आ० १०३×७३ इच। भाषा-हि-दी गद्य। विषय-लोक विज्ञाम। र० काल ×। ले० काल सं० १८६५। वे० स० ८५। स्म भण्डार। 3३८०. त्रिलोवसारवृत्ति—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेय । पत्र स० २४० । स्रा० १३४८ ट च । भाषा— सस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । र० काल ४ । ले० काल स० १६४५ । पूर्ण । वे० सं० २८२ । क भण्डार ।

३३=१ प्रति संट २ । पत्र स० १४२ । ले॰ काल 🗴 । वे॰ स० ६६ । छ भण्डार ।

३३८२ त्रिलोकसारवृत्ति' ""। पत्र सं० १० । ग्रा० १०×११२ ड'च । भाषा-मस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र॰ काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वै० सं० प्र । ज भण्डार ।

३३८३. त्रिलोकसारवृत्ति"" । पत्र सं० ३७ । श्रा० १२० ४५६ द च । भाषा—सस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । श्रपूर्ण । वै० सं० ७ । ज भण्डार ।

३३८४. त्रिलोकसारवृत्ति""। पत्र सं० २४ । ग्रा० १० \times ५२ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल \times । ले० काल \times । ग्रपूर्ण । वे० स० २०३३ । ट भण्डार ।

३३८. त्रिलोकसारवृत्ति ""। पत्र स० ६३ । मा० १३×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० सं० २६७ । व्य भण्डार ।

विशेष--प्रत प्राचीन है।

३३८६ त्रिलोकमारसर्द्धि—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र स०६३। ग्रा०१३१४८ इ च। भाषा-प्राकृत। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८४। क भण्डार।

२२८०. त्रिलोकस्वरूपव्याख्या— उद्यलाल गंगवालाल । पत्र सं० ५०। ग्रा० १३४७ है इच। भाषा-हिन्दी गद्य | विषय-लोक विज्ञान | र० काल स० १६४४ | ले० काल सं० १६०४ | पूर्ण | वे० सं० ६ । ज भण्डार |

विशेप—मु ० धन्नालाल भीरीलाल एव चिमनलालजी की प्रेरणा से ग्रन्य रचना हुई थीं।

रेश्पनः त्रिलोक्षवर्णनः । पत्र सं० ३६ । ग्रा० १२×६ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-नोकविज्ञान र० काल × । ले० काल स० १८१० कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७७ । ख्र भण्डार ।

विशेष—गायार्थे नही है केवल वर्णनमात्र है। लोक के चित्र भी हैं। जम्बूद्वीप वर्णन तक पूर्ण है
भगवानदास के पठनार्थ जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

३२८ त्रिलोक्षवर्णन""। पत्र स०१५ से ३७। ग्रा०१०१८४३ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल × ग्रपूर्ण। वे० सं० ७६। ख भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है। १ से १४, १८, २१ २३ से २६, २८ से ३४ तक पत्र नहीं है। पत्र सं० १५ ३६, तथा ३७ पर चित्र नहीं है। इसके प्रतिरिक्त तीन पत्र सचित्र और हैं जिनमें से एक में नरक का, दूसरे में चंद्र, सूर्यचक्र कुण्डलद्वीप और तीसरे में भौरा, मछली, कनखजूरा के चित्र हैं। चित्र सुन्दर एवं दर्शनीय है।

३३६०. त्रिलोकवर्णन ' । एक ही लम्बे पत्र पर । ले० काल 🗴 । वे० सं० ७५ । ख भण्डार ।

विशेष—सिद्धशिला से स्वर्ग के विमल पटल सक ६३ पटलो का सचित्र वर्णन है। चित्र १४ फुट ८ इंब लम्बे तथा ४३ इ च चौडे पत्र पर दिये हैं। कही कही पीछे कपडा भी चिपका हुआ है। मध्यलोक का चित्र १४१ फुट है। चित्र सभी विन्दुओं से बने है। नरक वर्णन नहीं है।

३३६१. प्रति सं०२। पत्र सं०२ से १०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५२७। व्य भण्डार। ३३६२. त्रिलोकवर्णन् ""। पत्र स॰ ५। ग्रा० १७×११६ इंच। भाषा-प्राकृत, संस्कृत। विषय- लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०६। ज भण्डार।

३३६३. त्रैलोक्यसारटीका—सहस्र्कीित्त । पत्र सं० ७६ । आ० १२×५३ इ च । भाषा-प्राकृत, सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८६ । क भण्डार ।

३३६४ प्रति सं०२।पत्र सं० ५४। ले० काल ४। वे० सं० २८७। ङ भण्डार।

३३६४. भूगोलिनिर्माण " ""। पत्र सं० ३। ग्रा० १०×४६ इंच। भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल सं० १५७१। पूर्ण। वे० सं० ८६८। स्त्र भण्डार।

विज्ञेप--पं० हर्षांगम गिंग वाचनार्थं लिखितं कोरटा नगरे सं० १५७१ वर्षे । जैनेतर भूगोल है जिसमे सत्युग, द्वापर एवं त्रेता मे होने वाले अवतारो, का तथा जम्बूद्वीप का वर्णन है।

३३६६. सघपग्रटपत्र """ । पत्र सं० ६ से ४१ । आ० ६३०४४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३ । ख भण्डार ।

विशेष — सस्कृत में टब्बा टीका दी हुई है। १ से ४, १४, १४। २० से २२, २६। २८ से ३०, ३२, ३४, ३६ तथा ४१ से आगे ।त्र नहीं है।

३३६७. सिद्धांत त्रिलोकदीपक—बामदेव । पत्र सं० ६४ । ग्रा० १३×५ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३११ । व्य भण्डार ।



विषय- सुमाषित रवं नीतिशास्त्र

३३६८. श्रक्तमन्द्वार्त्ताः । पल सं० २०। ग्रा० १२×५५ इव। भाषा-हिन्दो । विषय-मुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११। क भण्डार।

३३६६, प्रति सं० २ | पत्र सं० २० | ले० काल 🔀 । वै० सं० १२ । क भण्डार ।

३४००. उपदेशञ्जीसी—जिनहर्ष । पत्र सं० ४ । ग्रा० १०४४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल ४ । ले० काल सं० १८३६ । पूर्ण । वे० सं० ४२८ । श्र भण्डार ।

विशेष---

प्रारम्भ-श्री सर्वज्ञेम्यो नमः । ग्रथ श्री जिनहर्षेण वीर चितायाम्पदेश छत्रीसी कामहुमेव लख्यते स्यात् ।

जिनस्तुति-

सकल रूप यामे प्रमुता म्रतूप सूप,

धूप छाया माहे हैं न जगदीश छुं।

पुण्य हि न पाप हे निसत हे न ताप हे,

जाप के प्रताप कट करम म्रतिसम् ॥

झान की म्रगज पुंज सूख्य वृक्ष के निकुज,

श्रतिसय चौतिस फुति वचन ये तिसम् ।

श्रैसे जिनराज जिनहर्ष प्रग्राम उपदेश,

की छतिसी कही सबद एसतीसम् ॥१॥

श्रथिरत्व कथन~

श्ररे जिंउ काचिनीं ताहु परी श्रमार तीते,

तो श्रतींगति करी जो रसी उठानि है।

तु तो नहीं चेतता है जाएों है रहेगी बृद्ध,

मेरी २ कर रह्यों उपिम रित मानी हे।।

ज्ञान की नीजीर खोल देख न कबहे,

तेरी मोह दारू में भयो वकाएगें श्रज्ञानी है।

कहे जीनहर्ष दह तन लगैंगी वार,

कागद की गुढ़ी कींलू रहे जी हा पाएगी।।२।।

मुभाषित एवं नीतिशास्त्र]

श्रन्तिम- धर्म परीचा कथन सबैया-

घरम धरम कहै मरम न कोउ लहे,

भरम में भूलि रहे कुल रूढ कीजीये।

कुल रूढ छोरि के भरम फंद तोरि के,

सुमित गित फोरि के सुज्ञान दृष्टि दीजीये।।

दया रूप सोइ धर्म धर्म तं कटे है मर्म,

भेद जिन धरम पीयूष रस पीजीये।

करि के परीक्ष्या जिनहरष धरम कीजीये,

कसि के कसोटी जैसे कंच्या क लीजीये।।३५॥

श्रथ प्रंथ समाप्त कथन सवैया इकतीसा
भई उपदेस की छतीसी परिपूर्ण चतुर नर
है जे याकी मध्य रस पीजीयै।
मेरी है श्रलपमित तो भी मैं कीए किवत,
किवताह सौ हो जिन ग्रन्थ मान लीजीपै।।
सरस है है वखाएा जीऊ भ्रवसर जाएा,
दोइ तीन थाके भैया सवैया कहीजीयौ।
कहै जिनहरष संवत्त गुएा सिसि भक्ष कीनी,
जु सुएा के सावास मौकु दीजीयौ।।३६॥
इति श्री उपदेश छतीसी संपूर्ण।

संवत् १८३६

गविड पुछेरे गविड श्रा, कवरा भले रौ देश । संपत हुए तो घर भलो, नहीतर भलो विदेश ।। सूरविल तो सूहामगी, कर मोहि गंग प्रवाह । माडल तेरो प्रगरो पासी श्रथग श्रथाह ॥२॥

३४०१. उपदेश शतक—द्यानतराय । पत्र सं० १४ । आ॰ १२३×७३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं॰ ५२६ । च भण्डार ।

३४०२. कपूरप्रकर्गा पत्र सं० २४। म्रा० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६३।

विशेष-१७६ पद्य है । अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है-

श्री वज्रसेनस्य ग्रुरोस्त्रिपष्टि सार प्रबंधस्फुट सदग्रणस्य । शिष्येण चर्के हरिणेय मिष्टा सूत्तावली नेमिचरित्र कर्ता ।।१७६।।

इति कपूराभिध सुभाषित कोशः समाप्ताः ।।

३४०३. प्रति सं०२ | पत्र सं०२०। ले० काल स०१९४७ ज्येष्ठ सुदी ५ | वै० म० १०३ | क

३४०४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२। ले० काल सं० १७७६ श्रावरा ४। वे० स० २७६। ज भण्डार।

विशेप-भूधरवास ने प्रतिलिपि की थी।

३४०% कामन्द्कीय नीतिसार भाषा " " । पत्र सं० २ से १७ । ग्रा० १२× द इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-नीति । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० २८० । स्त भण्डार ।

२४०६ प्रति सं०२। पत्र सं०३ से ६। ले० काल 🗴 । अपूर्ण। वे० स० ६०६ । अप्र भण्डार। ३४०७. प्रति स०३। पत्र सं०३ से ६६ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण। वे० सं०६६ । अप्र भण्डार।

३४०८. चाग्यक्यनीति—चाग्यक्य । पत्र सं॰ ११ । ग्रा० १०४४ई इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-नीतिशास्त्र । र० काल ४ । ले० काल स० १८६६ मंगसिर बुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ८११ । आ भण्डार ।

२४०६. प्रति सं०२।पत्र सं०१०।ले० काल सं०१६ पौष सुदी ६।वे० स०७०। ग भण्डार।

इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे॰ स॰ ६३०, ९६१, ११००, १६५४, १९४५) ग्रीर है।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७१) ग्रीर है। १४९०. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३४ । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १७५ । छ भण्डार । इसी भण्डार में २ प्रतिया (वे० सं० ३७, ६५७) ग्रीर है।

३४११. प्रति सं०४। पत्र स०६ से १३। ले० काल सं० १८८५ मगसिर बुदो ऽऽ। ग्रपूर्ण। वे० स०६३। च भण्डार।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ६४) श्रीर है।

२४१२. प्रति सं० ४। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १८७४ ज्येष्ठ बुदी ११। वे० सं० २४६। ज् भण्डार। इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे॰ सं॰ १३८, २४८, २५०) स्रीर हैं।

३४१३. चाण्यक्यनीतिसार—मूलकर्त्ता-चाण्य्य । संग्रहकर्त्ता-मशुरेश मट्टाचार्य । पत्र सं० ७ । ग्रा० १०×४३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-नीतिशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१० । श्रुप्त भण्डार ।

३४१४- चार्णक्यनीतिभाषा पत्र सं० २०। ग्रा० १०×६ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-नीति शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १५१६ । ट भण्डार ।

विशेष—६ ग्रध्याय तक पूर्ण है। ७वें ग्रध्याय के २ पद्य है। दोहा ग्रौर कुण्डलियो का ग्रधिक प्रयोग हुग्रा है।

३४१४ छंद्शतक--वृन्दावनदास । पत्र सं० २६। आ० ११४५ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र० काल स० १८६८ माघ सुदी २ । ले० काल सं० १९४० मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १७८ । क भण्डार।

३४१६. प्रति स्व०२ । पत्र सं०१२ । ले० काल सं०१६३७ फाग्रुण सुदी ६ । वे० स०१ मण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १७६, १८०) ग्रीर हैं।

३४१७. जैनशतक—मूधरद्।स । पत्र स०१७। ग्रा०६×४ इ°च। भाषा-हिन्दी । विषय-सुभापित । र०काल स०१७=१ पौष सुदी १२। ले०काल ×। पूर्ण। वे० सं०१००५। स्त्र भण्डार।

३४१८. प्रति सं०२। पत्र स०११। ले० काल सं०१६७७ फाग्रुन सुदी ५। वे० सं०२१८। क भण्डार।

३४१६. प्रति स० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० २१७। इ भण्डार।
विशेष—प्रति नीले कागजो पर है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २१६) ग्रीर है।
३४२०. प्रति सं० ४। पत्र सं० २२। ले० काल ×। वे० सं० १६०। च भण्डार।
३४२१. प्रति स० १। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १८८९। वे० सं० ११८। भ्र भण्डार।
विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २८४) ग्रीर है जिसमे कर्म छत्तीसी पाठ भी है।
३४२२. प्रति सं० ६। पत्र सं० २३। ले० काल सं० १८८१। वे० सं० १६४०। ट भण्डार।
विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १६५१) ग्रीर है।

देशरेदे. ढालगण्""। पत्र स० ८। ग्रा० १२×७६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३५। क भण्डार।

३४२४. तत्त्वधर्मामृत"" । पत्र सं० ३३ । ग्रा० ११४५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल ४ । ले० काल सं० १६३६ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४६ । स्त्र भण्डार ।

विशेप---लेखक प्रशस्ति-

सवत् १६३६ वर्षे ज्येष्टमासे शुक्कपक्षे दशम्यातिथी वृथवासरे चित्रानक्षत्रे परिचयोगे अत्रा दिवसे । आदीश्वर चैत्यालये । चंपावितनामनगरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगरो श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टा॰ पद्मनिन्ददेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री श्रभाचन्ददेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री धम्मं (च) द्र देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री लिलतकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री चन्दकीर्त्ति देवास्तद्मनाये खडेलवालान्वये भसावङ्या गोत्र साह हरजाज भार्या पुत्र द्विय प्रथम समतु द्वितिक पुत्र मेघराज । साह समतु भार्या समतादे तत्र पुत्र लक्षिमी-दास । साह मेघराज तस्य भार्या द्विय प्रथम भार्या लाडमदेइ द्वितीक """। अपूर्ण ।

३४२४. प्रति सं०२। पत्र स०३०। ले० काल 🗙 । अपूर्ण । वे० सं० २१४५ । ट भण्डार । विशेष—३० से आगे पत्र नहीं हैं ।

श्रारम्भ गुद्धात्मरूपमापन्नं प्रशािपत्य गुरो गुर्स ।

तत्वधम्मामृतं नाम वस्ये सक्षेपतः ।।

धर्मे श्रुते पापमुपैति नाश धर्मे श्रुते पुण्य मुपैति वृद्धिः ।

स्वर्गापवर्ग प्रवरोष्ट् सौख्य, धर्मे श्रुते रेव न चात्यतोस्ति ॥२॥

३४२६. दशबोल ""। पत्र सं०२। ग्रा०१०×६ई इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभापित। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० सं०१६४७। ट भण्डार।

३४२७. द्वष्टातशतकः""। पत्र सं० १७ । ग्रा० ६ र्२ ४३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० ५५६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—हिन्दी ग्रर्थ दिया है। पत्र १५ से ग्रागे ६३ फुटकर क्लोको का सग्रह ग्रीर है।

३४२८. द्यानतिवत्तास—द्यानतराय। पत्र सं०२ से १३। ग्रा० ६४४ इ च। भाषा–हिन्दी। विषय-रुभापित। र० काल ४। ले० काल ४। ग्रपूर्ण। वै० सं०३४४। इ. भण्डार।

३४२६. धर्मविलास—खानतराय । पत्र स० २३४ । म्रा० ११६४८३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल ४ । ले० काल सं० १६५८ फाग्रुए। बुदी १ । पूर्ण । वे० स० ३४२ । क भण्डार ।

३४२०. प्रति सं०२। पत्र सं०१३६। ले० काल सं० १न०१ ग्रासोज बुदी २। वे० स० ४५। ग

विशेप-जैतरामजी साह के पुत्र शिवलालजी ने नेमिनाथ चैत्यालय (चौधरियो का मन्दिर) के लिए चिम्मनलाल तेरापथी से दौसा मे प्रतिलिपि करवायी थी ।

३४३१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६१ । ले० काल सं० १६१६ । वे० सं० ३३६ । ङ भण्डार । विशेष—तीन प्रकार की लिपि है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३४०) श्रीर है।

३४३२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६४ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ५१ । स्म भण्डार ।

३४३३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० १५६३ । ट भण्डार ।

३४३४. नवरत्न (कवित्तं)। पत्र सं० २। ग्रा॰ ५४ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र॰ काल ×। ते॰ काल ×। पूर्ण । वे॰ सं० १३८८ । स्र भण्डार ।

३४३४. प्रति सं०२। पत्र सं०१। ले० काल ×। वे० सं०१७८। च मण्डार।
३४३६. प्रति सं०३। पत्र स०५। ले० काल सं०१६३४। वे० सं०१७६। च भण्डार।
विशेष—पंचरत्न और है। श्री विरधीचद पाटोदी ने प्रतिलिपि की थी।

३४३७. नीतिसार """। पत्र सं० ६। म्रा० १०३×५ इंच। भोषा-संम्कृत। विषय-नीतिशास्त्र। र० काल ×। ने० सं० १०१। छ भण्डोर।

३४३८. नीतिसार—इन्द्रनन्दि। पत्र स० ६। म्रा० ११४५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-नीति सास्त्र। र० काल ४ | ले० काल ४ | पूर्ण । वे० सं० ८६। स्त्र भण्डार।

विशेष—पत्र ६ से भद्रवाहु कृत कियासार दिया हुग्रा है। ग्रंन्तिम ६वें पत्र पर दर्शनसार है किन्तु श्रपूर्ण है।

३४३६. प्रति सं०२। पत्र सं० १०। ले० काल सं०१६३७ भादवा बुदी ४। वे० सं० ३८६। क भण्डार।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ३८६, ४००) और हैं।

३४४०. प्रति सं०३ । पत्र सं०२ से ८ । ले० काल सं० १८२२ भादवा सुदी ४ । ग्रपूर्ण । वे० स० ३८१ । ड भण्डार ।

३४४१. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ३२६। ज भण्डार।
३४४२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १७५४। वे० सं० १७६। व्य भण्डार।
विशेष—भलायनगरे मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे गोर्ड नदास ने प्रतिलिपि की थी।

३४४३. नीतिशतक—भर्तृ हरि। पंत्र सं० ६ । आ० १०३×५३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-ुभ षित । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । ङ भंण्डार ।

३४४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १४२ । व्य भण्डार ।

३४४४. नीतिवाक्यामृत —सोमदेव सूरि । पत्र सं० ४४ । आ० ११४४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-नीतिशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५४ । क भण्डार ।

३४४६. नीतिविनोद्***** । पत्र सं० ४ । आ० ६×४३ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-नीतिशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६१ म । वे० सं० ३३४ । म भण्डार ।

विशेष---मन्नालाल पाड्या ने सग्रह करवाया था।

३४४७. नीलसूक्त । पत्र सं० ११ । ग्रा० ६ $\frac{3}{5}$ \times ४ $\frac{1}{5}$ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० २२६ । ज भण्डार ।

३४४८. नौशेरवां बादशाह की दस ताज । पत्र सं० ५ । म्रा० ४३४६ इंच । भाषा-हिन्दी। विषय-उपदेश । र० काल × । ले० काल स० १९४६ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ४० । म्र भण्डार ।

विशेप--गरोशलाल पाड्या ने प्रतिलिपि की थी।

३४४६. पद्धतन्त्र—प० विष्णु शर्मा । पत्र सं१ ६४ । आ० १२×५३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-नीति । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१८ । अ भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६३७) ग्रीर है।

३४४०. प्रति सं०२। पत्र स० ६६। ले० काल ×। वे० सं०१०१। ख भण्डार। विशेष—प्रति प्राचीन है।

३४४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ से १६८ । ने० काल सं० १८३२ चैत्र सुदी २ । अपूर्ण । ने० स० १६४ । च भण्डार ।

विशेष-पूर्णचन्द्र सूरि द्वारा संशोधित, पुरोहित भागीरथ पत्नीवाल बाह्यण ने सवाई जयनगर (जयपुर) मे पृथ्वीसिंहजी के शासनकाल मे प्रतिलिपि की थी। इस प्रति का जीर्णोद्धार स० १८५५ फाग्रुण बुदी ३ मे हुँ आ था।

३४४२. प्रति सं० ४। पत्र सं० २८७। ले्० काल सं० १८८७ पीय बुदी ४। वे० सं० ६११। च भण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी ग्रर्थं सहित है। प्रारम्भ में संगही दीवान ग्रमरचदजी के ग्राग्रह से नयनसुख व्यास के शिष्य माणिक्यचन्द्र ने पञ्चतन्त्र की हिन्दी टीका लिखी।

३४४३. पद्धतन्त्रभाषा """। पत्र सं० २२ से १४३ । ग्रा० ६×७३ इंच । भाषा−हिन्दी गद्य। विषय−नीति । र० काल × । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० स० १५७ । ट भण्डार ।

विशेष-विष्णु शर्मा के संस्कृत पञ्चतन्त्र का हिन्दी अनुवाद है।

२४४४. पांचवोत्तःःः। पत्र सं० ६ । म्रा० १०४४ इंच । भाषा-गुजराती । विषय-उपदेश । र० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० १६६६ । ट भण्डार ।

सुभाषित एवं नीतिशास्त्र]

३४४४. पेंसठवोल ' । पत्र सं० १ म्रा॰ १०×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-उपदेश । र॰ काल × । पूर्ण । वे॰ सं० २१७६ । स्र भण्डार ।

विशेष---ग्रथ बोल ६५

[१] ग्ररथ लोभी [२] निरदई मनख होसी [३] विसवासघाती मंत्री [४] पुत्र सुत्रा ग्ररना लोभा [५] नीचा पेषा भाई वधव [६] ग्रसतोष प्रजा [७] विद्यावत दलद्री [६] पाखण्डी शास्त्र बाच [६] जती क्रोधी होइ [१०] प्रजाही ए नगग्रही [११] वेद रोगी होसी [१२] ही ए जाति कला होसी [१३] सुधारक छल छद्र होसी [१४] सुभट कायर होसी [१५] खिसा काया कलेस घागु करसी दुष्ट बलवंत सुच सो [१६] जोबनवंतजरा [१७] अकाल मृत्यु होसी [१८] युद्रा जीव घर्णा [१६] ग्रगहीरा मनुख होसी [२०] ग्रलप मेघ [२१] उस्ल सात बीली ही ? [२२] वचन चूक मनुष होसी [२३] विसवासघाती छत्री होसी [२४] संथा [२५] [२६] [२७] [२६] [२६] ग्रएकिंघा न कीघो कहसी [३०] ग्रापको कीघो दोष पैला का लगावसी [३१] ग्रसुद्ध साप भएासी [३२] कुटल दया पालसी [३३] भेष धारावैरागी होसी [३४] ग्रहंकार द्वेष मुरख घरणा [३४] मुरजादा लोप गऊ ब्राह्मण [३६] माता पिता ग्रुरुदेव मान नही [३७] दुरजन सु सनेह होसी [३८] सजन उपरा विरोध होसी [३८] पैला की निद्या घर्गी करेसी [४०] कुलवंता नार लहोसी [४१] वेसा भगतरा लज्या करसी [४२] ग्रफल वर्षा होसी [४३] बाण्या की जात कुटिल होसी [४४] कवारी चपल होसी [४५] उत्तम घरकी स्त्री नीच सु होसी [४६] नीच परका रूपवंत होसी [४७] मुहमाग्या मेघ नही होसी [४८] घरती मे मेह थोडो होसी [४८] मनख्या मे नेह थोडो होसी [५०] बिना देख्या चुगली करसी [५१] जाको सरगो लेसी तासूं ही द्वेष करी खोटी करसी [५२] गज होगा चाजा होसासी [५३] न्याइ कहा हान क लेसी [५४] ग्रवबंसा राजा हो [५५] रोग सोग घएा होसी [५६] रतवा प्राप्त होसी [५७] नीच जात श्रद्धान होसी [५८] राडजीग घणा होसी [५८] ग्रस्त्री कलेस गराघण [६०] ग्रस्त्री सील हीए। घरणी होसी [६१] सीलवंती विरली होसी [६२] विप विकार घनो रगत होसी [६३] संसार चलावाता ते दुखी जाए। जोसी ।

।। इति श्री पचावरा बोल संपूरण ।।

३४४६. प्रबोधसार—यशःकीत्ति । पत्र सं० २३ । म्रा० ११×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-युभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७५ । म्रा भण्डार ।

विशेष-संस्कृत मे मूल अपभ्रंश का उल्या है।

३४४७. प्रति सं०२ । पत्र सं०१६। ले० काल सं०१६५७। वे० सं०४६५। क भण्डार।

३४४८. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—तुलसीदास । पत्र सं० २ । ग्रा० ६ ४३३ इ'च । भाषा—गुजराती । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७० । ट भण्डार ।

३४४६. प्रश्तोत्तरस्त्रमालिका—श्रमोघवर्ष । पत्र स०२। ग्रा०११×४६ व च । मापा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं०२०७। स्त्र भण्डार ।

३४६० प्रति सं०२ | पत्र स०२ | ले० काल सं०१६७१ मंगसिर सुदी ४ | ने० स० ५१६ । क भण्डार ।

३४९१. प्रति सं० ३। पत्र सं० २। ले० काल 🗙 । वे० स० १०१ । छ भण्डार ।

३४६२, प्रति सं० ४। पत्र सं० ३। ले० काल 🗙 । वे० सं० १७६२ । ट भण्डार ।

३४६३ प्रस्तावित श्लोक "' । पत्र स० ३६। ग्रा० ११×६ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१४ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी ग्रर्थ सहित है। विभिन्न ग्रन्थों में से उत्तम पद्यों का संग्रह है।

३४६४. वारहखड़ी "" सूरत । पत्र स० ७ । आ० ६×६ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-मुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५६ । भं भण्डार ।

३४६४. बारहस्बड़ी ... । पत्र स० २० । ग्रा० ४×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल × । पूर्ण । वे० स० २५६ । भू भण्डार ।

३४६६. बांरहंखड़ी-पार्श्वदास । पत्र सं० ४। ग्रा० ६४४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल सं० १८६६ पौष बुदी ६ । ले० काल ४ । पूर्ण । वें० सं० २४० ।

३४६७. बुधजनवितास—बुंबजन । पत्र स० ६४ । आ० ११×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । र० काल स० १८६१ कार्तिक सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८७ । मा भण्डार ।

३४६८. बुधजन सतसई—बुधजन। पत्र सं० ४४। ग्रा० ८४६३ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल स० १८७६ ज्येष्ठ बुदी ८। ले० काल सं० १६८० माध बुदी २। पूर्ण। वे० स० ४४४। म्र भण्डार।

विशेप--७०० दोहो का सग्रह है।

२४६६. प्रति मृ०२। पत्र स०२५। ले० काल ×। वै० सं० ७६४। स्त्र भण्डार। इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६५४, ६६४) और हैं।

३४७०. प्रति सं०३ । पत्र रं० ८ । ले० काल 🗙 । अपूर्ण । वे० सं० ५३४ । ड भण्डार ।

३४७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ७२६ । च भण्डार । इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७४६) ग्रीर है ।

३४७२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७३। ले० काल सं० १९४४ ग्राषाढ सुदी १०। वे० सं० १६४०। ट भण्डार।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं॰ १६३२) ग्रीर है।

३४७३. बुधजन सतसई — बुधजन । पत्र सं० ३०३ । ले० काल 🔀 । वे० सं० ५३५ । क भण्डार । विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ५३६) और है । हिन्दी मर्थ सहित है ।

३४७४. ब्रह्मविलास—भैया भगवतीदास । पत्र सं० २१३ । ग्रा० १३४४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल सं० १७५४ वैशाख सुदी ३ । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वै० सं० ५३७ । क भण्डार ।

विशेष-किव की ६७ रचनात्रों का संग्रह है।

३४७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३२ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ५३६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है। चौकोर लाइनें सुनहरी रंग की हैं। प्रति गुटके के रूप मे है तथा प्रदर्शनी में रखने योग्य है।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं० ५३८) ग्रीर है।

३४७६. प्रति सं० ३ । पत्र स० १२० । ले० काल 🗴 । वे० सं० ५३८ । क भण्डार ।

३४७७. प्रति सं० ४। पत्र सं० १३७। ले० काल स० १८५७। वे० सं० १२७। ख भण्डार।

विशेष—माधोराजपुरा मे महात्मा जयदेव जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी। मिती माह सुदी ह सं॰ १८८६ मे गोबिन्दराम साहवडा (छावडा) की मार्फत पचार के मन्दिर के वास्ते दिलाया। कुछ पत्र चूहे काट गये हैं।

३४७८. प्रति सं०४। पत्र सं० १११। ले० काल सं० १८८३ चैत्र सुदी ६। वे० सं० ६५१। च भण्डार।

विशेष--यह ग्रन्थ हुकमच्न्दजी वज ने दीवान ग्रमरचन्दजी के मन्दिर मे च्ढाया था।

३४७६. प्रति सं० ६। पत्र सं० २०३। ले० काल 🗙 । वे० सं० ७३। व्य भण्डार।

३४८०. ब्रह्मचर्याष्ट्रकः । पत्र सं० ५६। ग्रा० ६५×४३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७४८ । पूर्ण । वै० सं० १२६। ख भण्डार ।

३४८१. भतृ हरिशतक-भतृ हरि । पत्र सं० २० । ग्रा० ८६ ४५६ इखा भाषा-संस्कृत । विषय-

विशेष--- प्रत्य का नाम शतकत्रय प्रथवा त्रिशतक भी है।

भण्डार ।

इसी भण्डार मे = प्रतिया (वै॰ सं॰ ६४, ६२, ६२, ६४६, ७६३, १०७४, ११३६, ११७३) श्रीर हैं।

> ३४८२ प्रति सं०२। पत्र सं०१२ से १६। ले० काल ×। श्रपूर्ण। वे० सं०५६१। छ भण्डार। इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स०५६२, ५६३) श्रपूर्ण श्रीर हैं। ३४८३. प्रति स०३। पत्र स०११। ले० काल ×। वे० स०२६३। च भण्डार। ३४८४. प्रति सं०४। पत्र सं०२८। ले० काल स०१८७५ चैत सुदी ७। वे० सं०१३८। छ

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २८८) ग्रौर है।

३४८४. प्रति स० ४। पत्र स० ५२। ले० काल स० १६२८। वे० सं० २८४। ज भण्डार।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है। सुखचन्द ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

३४८६. प्रति सं० ६। पत्र स० ४५। ले० काल ×। वे० स० १६२। व्य भण्डार।

३४८०. प्रति स० ७। पत्र स० ६ से २६। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० स० ११७५। ट भण्डार।

३४८८. भावशतक—श्री नागराज। पत्र सं० १४। ग्रा० ६×४६ इख्र। भाषा-संस्कृत। विषयसुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १८३८ सावन बुदी १२। पूर्ण। वे० स० १७०। इ भण्डार।

३४८. मनमोदनपंचशतीभापा—छत्रपति जैसवाल । पत्र स० ६६ । ग्रा० ११×५३ इश्च । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र० काल सं० १६१६ । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वे० सं० ५६९ । क भण्डार ।

> विशेष—सभी सामान्य विषयो पर छदो का सग्रह है। इसी भण्डार मे एक प्रति-(वे० सं० ५६९) और है।

२४६०. सान वावनी—सानकिव । पत्र सं० २ । आ० ६३×३३ दश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१६ । वा भण्डार ।

३४६१. मित्रविलासं—घासी। पत्र सं० ३४। ग्रा० ११×५३ इख्र । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र० काल सं० १७६६ भागुरा सुदी ४। ले० काल सं० १६५२ चैत्र बुदी १। पूर्ण । वे० सं० ५७६। क भण्डार।

विशेष—लेखक ने यह ग्रन्थ ग्रपने मित्र भारामल संथा पिता वहालसिंह की सहायता से लिखा था। देश्रध्यः रत्नकोप पार्मित्र स० ५ । ग्रा० १०४५ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल ४ । ले० काल सं० १७२२ फाग्रुण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १०३५ । श्र भण्डार ।

विशेष-विश्वसेन के शिष्य वलभद्र ने इसकी प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १०२१) तथा व्य भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३४५ क) स्रोर है।

३४६३. रह्नकोष "" "। पत्र सं० १४ । ग्रा० ११×५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल × । पूर्ण । वे॰ सं० ६२४ । क भण्डार ।

विशेष—१०० प्रकार की विविध बातों का विवरण है जैसे ४ पुरुषार्थ, ६३ राजवंश, ७ ग्रंगराज्य, राजाग्रों के गुरा, ४ प्रकार की राज्य विद्या, ६३ राज्यपाल, ६३ प्रकार के राजविनोद तथा ७२ प्रकार की कला सादि।

३४६४. राजनीतिशास्त्रभाषा—जसुराम । पत्र सं० १८ । ग्रा० ५५ ४ इख्र । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-राजनीति । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० २८ । मा भण्डार ।

विशेष-श्री गरोश्रायनमः ग्रथ राजनीत जसुराम कृत लीखतं ।

दोहा---

म्रछर भ्रगम भ्रपार गति कितहु पार न पाय। सो मोकू दीजे सकती जै जै जै जगराय।।

छप्पय--

वरनी उज्ज्वल वरन सरन जग भ्रसरन सरनी ।

कर करूनों करन तरन सब तारन तरनी ।।

शिर पर धरनी छत्र भरन सुख संपत भरनी ।

भरनी श्रमृत भरन हरन दुख दारिद हरनी ।।

धरनी त्रिसुल खपर धरन भव भय हरनी ।

सकल भय जग वंध श्रादि वरनी जसु जे जग धरनी ।। मात जें० '

,दोहा--

जे जग धरनी मात जे दीजे वुधि ग्रपार । करी प्रनाम प्रसन्न कर राजनीत वीसतार ॥३॥

ग्रन्तिम---

लोक सीरकार राजी ग्रोर सब राजी रहै।

चाकरी के कीये विन जालच न चाइयै।।

'किन हु की भली बुरी कहिये न काहु ग्रागै।

सटका 'दे जछन कछु न श्राप साई है।।

राय के उजीर नमु राख राख लेत रंग।

येक टेक हु की बात उमरनीवाहिये।।

रीभ खीभ सिरंकुं चढाय लीजें जसुराम।

येक परापत कु येते ग्रुन चाहीये।।४।।

३४६४. राजनीति शास्त्र—देवीदास । पत्र सं० १७ । ग्रा० ५३×६ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-राजनीत । र० काल 🗙 । ले० काल सं० १९७३ । पूर्ण । वे० स० ३४३ । मा भण्डार ।

३४६६. लघुचाशिक्य राजनीति—चाशिक्य। पत्र सं॰ ६। ग्रा॰ १२×५० इख्र। भाषा-मंन्कृत। विषय-राजनीति। र॰ काल ×। ले॰ काल ×। पूर्ण। वे॰ स॰ ३३६। ज भण्डार।

२४६७. वृन्दसतसई—कृषि वृन्द। पत्र सं० ४। ग्रा० १३६४६६ इ च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सुभाषित। र० काल सं० १७६१ | ले० काल स० १८३४। पूर्ण। वे० सं० ७७६ | श्र भण्डार।

३४६=. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० कान 🗴 । ने० स० ६८५ । ड भण्डार ।

३४६६. प्रति सं० ३ | पत्र स० ६४ | ले० काल सं० १८६७ । वं० स० १६६ | छ भण्डार ।

३४००. वृहद् चाणिक्यनीतिशास्त्र भाषा—िमश्रशसराय। पत्र सं० ३८। ग्रा० ८३४६ इंच । भाषा-हिन्दी। विषय-नीतिशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्णी वे० सं० ५५१। च भण्डार।

विशेष-माशिक्यचद ने प्रतिलिपि की थी।

३४०१. प्रति सं० २ | पत्र सं० ४८ | ले० काल 🗙 । प्रपूर्ण | वे० सं० ५५२ । च भण्डार ।

३४०२. पष्टिशतक टिप्पण्—मिक्तिलाल । पत्र सं० ४ । आ० १०४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल ४ । ले० काल सं० १५७२ । पूर्ण । वे० सं० ३५८ । स्र भण्डार ।

विशेष---श्रन्तिम पुष्पिका-

इति पष्टिशतकं समाप्त । श्री भक्तिलाभोपाध्याय शिष्य पं॰ चारू चन्द्रे गुलिखि ।

इसमे कुल १६१ गाथायें हैं। ग्रत की गायां मे ग्रन्थकर्ता का नाम दिया है। १६०वी गाया की संस्कृत टीका निम्न प्रकार है—

एवं सुगमा । श्री नेमिचन्द्र भाडारिक पूर्व ग्रुरु विरहे धर्मस्य ज्ञातानाभूत । श्री जिनवल्लभसूरि ग्रुरणानश्रुत्वा तत्कृते पिंड विशुद्धयादि परिचयेन धर्मतत्त्वज्ञो ततस्तेन सर्वधर्म मूल सम्यनत्व शुद्धि दृढताहेतुभूता ।। १६० ।। संख्या गाथा विरचया चक्री इति सम्बन्ध ।

व्याख्यान्वय पूर्वाऽवचूिंग रेषातुभिक्तलाभकृता । सूचार्थ ज्ञान फला विज्ञेया पिष्ठ शतकस्य ॥१॥

प्रशस्ति— सं० १५७२ वृर्षे श्री विक्रमनगरे श्री जय सागरोपाध्याय शिष्य श्री रत्नचन्द्रोपाध्याय शिष्य श्री भक्तिलाभी पाध्याय कृता स्वशिष्या वा चार्त्रिसार पं० चारू चंद्रादिभिर्वाच्यमाना चिर नदतात् । श्री कल्याण भवतु श्री श्रमण संघस्य ।

२४०२. शुभसीख"""। पत्र सं० २ । ग्रा० दहुँ ४४ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सुभाषित । र० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

३५०४ प्रति स०२। पत्र स०४। ले० काल ×। वे० सं०१४६। छ भण्डार। विशेष—१३६ सीखो का वर्गान है।

३४०४ सज्जनचित्तवल्लभ—मिल्लिपेगा। पत्र सं०३। ग्रा० १०१३×५३ इख्र। माषा-सस्कृत। विषय-सुमापित। र० काल ×। ले० काल स० १८२२। पूर्ण। वे० सं० १०५७। स्त्र भण्डार।

३५०६. प्रति स०२।पत्र स०४। ले० काल सं०१६१६। वे० स० ७३१। क भण्डार।
३५०७ प्रति सं०३। पत्र सं०४। ले० काल सं०१६५४ पीप बुदो ३।वे० सं० ७२६। क

३४० = प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल ४ । वे० सं० २६३ । छ भण्डार ।

३५०६ प्रति सं०५। पत्र सं०३। ले० काल सं० १७४६ ग्रासोज सुदी ६। वे० सं०३०४। व्य भण्डार।

विशेष-भट्टारक जगत्कीति के शिष्य दोदराज ने प्रतिलिपि की थी।

३५१०. सज्जनचित्तवल्लभ-शुभचन्द । पत्र सं० ४ । ग्रा० ११४८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १६६ । व्य भण्डारं ।

३४११. सज्जनचित्तवल्लभ """। पत्र सं०४ । स्रा० १०६ ४४६ डझ। भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । ख भण्डार ।

> ३४१२. प्रति स०२। पत्र सं०३। ले० काल ×। वे० सं०१५३। ज भण्डार। विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३४१३. सज्जनचित्तवल्लभ—हर्गू लाल । पत्र सं० ६६ । ग्रा० १२ई×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल स० १९०६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७२७ । क मण्डार ।

विशेष—हर्गू लाल खतौली के रहने वाले थे | इनके पिता का नाम प्रीतमदास था। बाद मे महारनपुर चले गये थे वहा मित्रो की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना की थी।

इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वे॰ सं॰ ७२६, ७३०) ग्रीर हैं।

३४१४. सज्जनचित्तवल्लभ—मिहर्च । पत्र सं० ३१ । ग्रा० ११×७ डब्र । भाषा-हिन्दी । विषय-

३४१४. प्रति सं० २। पत्र सं० २६। ले० काल ×। त्रे० सं० ७२५। क भण्डार। विशेष—हिन्दी पद्य मे भी अनुवाद दिया है।

३४१६. सद्भाषिताविति—सकलकीित । पत्र सं० ३४ । श्रा० १०३×५ इ च । भाषा-सम्मृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५७ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे १ प्रति (वे॰ सं॰ १८६८) ग्रीर है।

३४१७. प्रति सं०२। पत्र सं०२५। ले० काल सं० १८१० मगसिर मुदी ७। वे० सं०४७२। व्य भण्डार।

विशेष-धासीराम यति ने मन्दिर मे यह ग्रन्थ चढाया था।

३४१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल 🗙 । वे० सं० १६४९ । ट मण्डार ।

३४१६. सद्भापिनावलीभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १३६ । म्रा० ११×८ डञ्च। मापा— हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १९४९ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण। वै० स० ७३२। क भण्डार।

विशेष-पृद्वो पर पत्रो की सूची लिखी हुई है।

३४२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० ७३३ । क भण्डार ।

३४२१ सद्भाषितावलीभाषा"""। पत्र सं० २५ । म्रा० १२×५३ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र० काल सं० १६११ सावन सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ५६ । व्य भण्डार ।

३४२२ सन्देहसमुख्य-धर्मकत्तशसूरि। पत्र सं०१८। ग्रा०१०४४३ इख्र। भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स०२७१। छ भण्डार।

३५२३. सभासार नाटक--रघुराम । पत्र स० १५ से ४३ । आ० ५ ५ ४ न ६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल स० १८८१ । अपूर्ण । वै० स० २०७ । स्व भण्डार ।

विशेष-प्रारम्भ मे पचमेरु एवं नन्दीश्वरद्वीप पूजा है।

६४२४. सभातरग । पत्र स० ३८ । ग्रा० ११४५ दश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल ४ । ले० काल सं० १८७४ ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वै० स० १०० । छ मण्डार ।

विशेष-गोधो के नेमिनाथ चैत्यालय सागानेर मे हरिवशवास के शिष्य कृष्णचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

रेश्रश्च. सभाश्वद्भार ""। पत्र स० ४६ । आ० ११×१ इंच । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७३१ कात्तिक सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १८७७ ।

विशेष---प्रारम्भ-

सकलगरिए गजेंद्र श्री श्री साधु विजयगिग्गिगुरुम्योनमः। ग्रथा सभाशृङ्कार ग्रन्थ लिस्यते । श्री ऋषभ दैवाय नम । श्री रस्तु ।। नाभि नदनु सकलमहीमडनु पंचरात धनुष मानु तो " तोर्गा सुवर्ण समानु हर गवल श्यामल कुंतलावली विभूषित स्कधु केवलज्ञान लक्ष्मी सनायु भव्य लोकािह्नमुत्ति[क्ति]मार्गनी देखाउई। साध संसार शधकूष (अधकूष) प्राणिवर्ग पडता दइं हाथ। युगला धर्म धर्म निवार वा समर्थ। भगवत श्री आदिनाथ श्री संघतराो मनोरथ पुरो ॥१॥ चीतराग वार्णा ससार समुत्तारिस्तो । महामोह विष्वसनी । दिनकरानुकारिस्तो । क्रोधाग्नि दावानलोपशामिनीमुक्तिमार्ग प्रकाशिनी । सर्व जन वित्त सम्मोहकारिस्तो । आगमोदगारिस्ती वीतराग वास्ती ॥२॥

विशेष ग्रतीसय निधान सकलग्रुणप्रधान मोहाधकारिवछेदन भानु त्रिभुवन सकलसंदेह छैदक । श्रछेद्य श्रभेद्य प्राणिगण हृदय भेदक ग्रनतानत विज्ञान इसिउं ग्रपनुं केवलज्ञान ॥३॥ श्रन्तिम पाठ—

प्रथस्त्री गुणा— १ कुलीना २. शीलवती ३. विवेकी ४. दानसीला ४. कीर्तवती ६. विज्ञानवती ७. गुणाग्राहणी ८. उपकारिणी ६. कृतज्ञा १० धर्मवसी ११. सोत्साहा १२. संभवमत्रा १३. क्लेससही १४. ग्रनुपतापीनी १४. सूपात्र सधीर १६. जितेन्द्रिया १७. संभूष्हा १८. ग्रल्पाहारा १६ ग्रल्डोला २०. ग्रल्पनिद्रा २१. मितभाषिणी २२. चितज्ञा २३. जीतरोषा २४ ग्रलोभा २४. विनयवती २६. सरूपा २७ सौभाग्यवती २६. सूचिवेषा २६. श्रुषाश्रूषा ३०. प्रसन्नमुखी ३१. सुप्रमाणकरीर ३२. सूलवण्यवती ३३ स्नेहवती। इतियोदगुणा।

इति सभाष्ट्रज्ञार संपूर्ण ॥

ग्रन्थाग्रन्थ संख्या १००० सवत् १७३१ वर्षेमास कात्तिक सुदी १४ वार सोमवारे लिखत रूपविजयेन ।। स्त्री पुरुषों के विभिन्न लक्षरण, कलाग्रों के लक्षरण एनं सुभाषित के रूप में विविध वातें दी हुई है।

३४२६ सभाश्वद्गार। पत्र सं० २८। ग्रा० १०×४३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय -सुभाषित । र० काल × । ले० काल स० १७३२ । पूर्ण । वे० सं० ७६४ । हः भण्डार ।

३४२७ सबोधसत्ताणु—वीर्चंद् । पत्र सं०११। झा०१०४४ इंच। भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं०१७५६ । ऋ भण्डार ।

प्रारम्भ-- परम पुरुष पद मन घरी, समरी सार नोकार ।
परमारथ पिए पन्साम्यु , संबोधसतास्यु बीसार ॥१॥
प्रादि प्रनादि ते श्रात्मा, ग्रडवड्यु ऐहग्रनिवार ।
धर्म विहुस्तो जीवस्तो, वापडु पंड्यो ये संसार ॥२॥

भन्तिम— सूरी श्री विद्यानदी जयो श्रीमिल्लभूषणा मुनिचंद। तसपरि माहि मानिलो, गुरु श्री लक्ष्मीचन्द ॥ ६६॥ तेह कुले कमल दीवसाती जयन्ती जती वीरवद। सुगाता भगाता ए भावना पीमीये परमानन्द ॥६७॥

इति श्री वीरचद विरचिते संवोधसत्तारापुदुग्रा सपूर्ण ।

३४२८ सिन्दूरप्रकरग्र—सोमप्रभाचार्थ। पत्र स०६। श्रा०६३४४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । जीर्गा । वे० स०२१७ । ट भण्डार ।

विशेप—प्रति प्राचीन है। क्षेमसागर के शिष्य कीर्त्तिसागर ने खखा मे प्रतिलिपि की थी।

३४२६. प्रति सं०२ । पत्र स० १ मे २७ । ले० काल स० १६०३ । म्रपूर्ण । वे० स० २००६ । ट भण्डार ।

विशेष-हर्पकीति सूरि कृत सस्कृत व्याख्या सहित है।

ग्रन्तिम - इति सिन्दूर प्रकरण्ख्यस्य व्यारयाणा हर्पकीत्तिभिः सूरिभिविहितायात ।

३४३०. प्रति स० ३ । पत्र स० ४ मे ३४ । ले० काल सं० १८७० श्रावरा सुदी १२ । अपूर्ण । वे० स० २०१६ । ट भण्डार ।

विशेप---हर्षकीति सूरि कृत सस्कृत व्याट्या सहित है ।

३४३१. सिन्दूरप्रकरणभाषा— वनारसीदास । पत्र सं० २६ । आ० १०३×४३ । भाषा हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल सं० १६६१ । ले० काल सं० १८५२ । पूर्ण । वे० स० ८५६ ।

विशेष-सदासुख भावसा ने प्रतिलिपि की थी।

३४३२. प्रति सं०२ । पत्र स०१३ । ले॰ काल 🗴 । वे॰ सं० ७१८ । च भण्डार । इसी भण्डार मे १ प्रति (वे॰ सं० ७१७) और है ।

३४३३ सिन्दूरप्रकरणभाषा—सुन्द्रदास । पत्र सं० २०७ । ग्रा० १२×४ दश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल स० १६२६ । ले० काल स० १६३६ । पूर्ण । वे० स० ७६७ । क भण्डार ।

३४३४. प्रति सं०२। पत्र स०२ से ३०। ले० काल सं०१६३७ सावन बुदी ६। वे० स० ८२३। क भण्डार।

विशेप—भाषाकार वधावर के रहने वाले थे। बाद मे ये मालवदेश के इ वावितपुर मे रहने लगे थे। इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ७६८, ৮२४, ৮५७) श्रीर हं।

३४३४ सुगुरुशतक—जिनदास गोधा। पत्र सं०४। म्रा० १०३×५ इख्र। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सुभाषित। र० काल स०१६५२ चैत्र बुदी द। ले० काल स०१६३७ कार्त्तिक सुदी १३। पूर्ण। वे० स० ६१०। क भण्डार।

३४३६. सुभाषितमुक्तावली : "। पत्र सं० २९। ग्रा० ६४४, इञ्च। भाषा-सस्कृत । विषय-मुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२६७ । त्र्य भण्डार ।

३४३७ सुभापितरत्नमन्द्रोह—न्त्रा० त्र्रमितिगति । पत्र सं० ४४। ग्रा० १०४३ हंच । भाषा- / सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल स० १०५० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८६६ । अ भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २६) ग्रीर है।

३४३८. प्रति स०२। पत्र स०५४। ले० काल सं०१८२६ भादवा सुदी १।वे० सं०६२१।क भण्डार।

विशेष—सग्रामपुर मे महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

३५३६ प्रति सं०३। पत्र सं०६ से ४९। ले० काल सं०१८६२ स्रासोज बुदी १४। स्रपूर्ण। वे० स०८७६। इन भण्डार।

३५४० प्रति सं०४। पत्र स०७८। ले० काल सं०१६१० कार्तिक बुदी १३। वै० सं०४२०। च भण्डार।

विशेप—हाथीराम खिन्दूका के पुत्र मोतोलाल ने स्वपठनार्थ पाड्या नाथूलाल से पार्श्वनाथ मंदिर मे प्रतिलिपि करवाई थी।

'३४४१. सुभाषितरत्नसन्दोहभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र स० १८८। ग्रा० १२३×७ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सुभाषित। र० काल स० १९३३। ले० काल ×। वे० सं० ८१८। क भण्डार।

विशेष—पहले भोलीलाल ने १ द ग्रधिकार की रचना की फिर पन्नालाल ने भाषा की । इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० द१६, द२०, द१६, द१६) ग्रौर हैं।

३४४२ सुभाषितार्गाव-शुभचन्द्र । पत्र स० ३८ । ग्रा० १२×५३ इख्न । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल स० १७८७ माह सुदी १५ । पूर्गा । वे० सं० २१ । व्य भण्डार ।

> विशेष—प्रथम पत्र फटा हुग्रा है। क्षेमकीर्त्ति के शिष्य मोहन ने प्रतिलिपि की थी। श्र भण्डार मे १ प्रति (वे॰ स० १६७६) ग्रीर है।

३४४३. प्रति स०२। पत्र सं०१४। ले० काल 🗴 । वे० सं०२३१। ख भण्डारी इसी भण्डारमे २ प्रतिया (वे० स०२३०, २६५) ग्रीर है।

३५४४. सुभाषितसंग्रह '''। पत्र स० ३१। ग्रा० ५४६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ४। ले० काल स० १८४३ वैशाख बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० २१०२। श्र भण्डार।

विशेष-नैरावा नगर मे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य विद्वान द्रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे १ प्रति पूर्ण (वे॰ सं॰ २२५६) तथा २ प्रतिया श्रपूर्ग (वे॰ स॰ १६६६, १६५०) श्रीर हैं।

३४४४. प्रति सं०२। पत्र सं०३। ले० काल ×। वे० स० ८८२। ड भण्डार। ३४४६. प्रति सं०३। पत्र स०२०। ले० काल ×। वे० स०१४४। छ भण्डार। ३४४७. प्रति सं०४। पत्र स०१७। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० स०१६३। व्य भण्डार।

३५४८. सुभाषितसंग्रह "" । पत्र सं० ४ । ग्रा० १०×४; उंच । भाषा-सस्कृत प्राकृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । ग्रा भण्डार ।

विशेष-हिन्दी मे टब्बा टीका दी हुई है। यति कर्मचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

, ३४४६. सुभाषितसंग्रह ""। पत्र स०११ । ग्रा० ७४५ इ च । भाषा-मंन्द्रत हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० स० २११४ । ग्रा भण्डार ।

३४४०. सुभाषितावली — सफलकीर्ति । पत्र स० ४२ । श्रा० १२×५३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७४८ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १८५ । श्र भण्डार ।

विशेप—लिखितंमिदं चीवे रूपमी खीवसी श्रात्मज ज्ञाति सनावद वराहटा मध्ये । लिखपित पहाड्या मयाचंद । स० १७४८ वर्षे मार्गशीर्ष शुक्का ६ रविवासरे ।

े ३४४१. प्रति सं०२ । पत्र सं०३१ । ले० काल स० १८०२ पीप सुदी १ । वे० २०२२४ । इप्र भण्डार ।

विशोप---मालपुरा ग्राम मे प० नोनिध ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३४४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल स० १६०२ पीप सुदी १ । वे० स० २२७ । ग्रा भण्डार ।

विशेष--लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

संवत् १६०२ समये पौप बुदो २ शुक्रवासरे श्रीमूलसघे बलात्कारगरो सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदिदेवा. तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा. तदाम्नाये मडलाचार्य श्री सिंहनदिदेवा: तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीधर्मकीत्तिदेवा. तत्शिष्यर्गी पचारणुत्रतधारिस्मी वीईस्योसिरि तत्शिष्यिन वाई उदद सिरि पठनार्थ अग्रोतकान्वये मित्तलगोत्रे साधु श्रीधाने भार्या रयवा तयो पुत्रा त्रया प्रथमपुत्र साधु श्री रदमल भार्या पदारय । द्वितीय पुत्र चाइमल भार्या ग्रजैसिरि तयो: पुत्र परात । तृतीयपुत्र (तपवपु क्रियाप्रतिपालकान् ऐकादश प्रतिमा धारकान जिनशासन समुद्धरस्थिरान् साधु श्री कोडना भार्या साध्वी परिमल तयो इदं ग्रन्थ लिखापित कर्मक्षय निमित्तं । लिखितंकायस्थगौडान्वयश्रीकेशव तत्पुत्र गनेस ।।

३४४३. प्रति सं० ४। पत्र सं० २६। ले॰ काल सं० १६४७ माघ सुदी । वे॰ स॰ २३४। छा भण्डार।

विशेष-लेखक प्रशस्ति-

भट्टारक श्रीसकलकीत्तिविरचिते सुभाषितरत्नावलीग्रन्थसमाप्तः । श्रीमछ्रीपद्यसागरसूरिविजयराज्ये संवत् १६४७ वर्ष मावमासे शुक्लपक्ते ग्रुख्वासरे लीपीकृतं श्रीमुनि शुभमस्तु । लखक पाठकयो ।

सवत्सरे पृथ्वीमुनीयतीन्द्रमिते (१७७७) माघाशितदशम्या मालपुरेमध्ये श्रीद्यादिनाथचैत्यालये शुद्धी-कृतोऽय सुभाषितरत्नावलीग्रन्थ पाढेश्रीतुलसीदासस्य शिष्येण त्रिलोकचंद्रेण ।

अ भण्डार मे ४ प्रतिया (वे॰ सं॰ २८१, ७८७, ७८८, १८६४) और है।

३४४४. प्रति स० ४-। पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० द१३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ५१४) ग्रीर है।

३४४४. प्रति सं०६। पत्र ं० २६। ले० काल स० १८४६ ज्येष्ठ सुदी १। वे० सं० २३३। ख भण्डार विशेष—प० माणकचन्द की प्रेरणा से पं० स्वरूपचन्द ने पं० कपूरचन्द से जवनपुर (जोबनेर) मे प्रतिलिप कराई।

३४४६. प्रति सं०७ । पत्र स०४६ । ले० काल सं०१६०१ चैत्र सुदी १३ । वे० सं०८७४ । इट

- विगेप--श्री पाल्हा बाकलीवाल ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे॰ मं॰ ५७३, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८) ग्रौर हैं।

३४४७. प्रति सं०८। पत्र सं०१३। ले० काल सं०१७६५ ग्रासोज सुदी ८। वे० सं०२६५। छ

३४४८. प्रति सं०६। पत्र सं०३०। ले० काल सं०१६०४ माघ बुदी ४। वे० सं०११४। ज भण्डार।

२४४६. प्रति सं० १०। पत्र सं० ३ से ३०। ले० काल सं० १६३४ वैशाख सुदी १४। अपूर्ण । वे० सं० २१३४। ट भण्डार।

विशेष--- प्रथम २ पत्र नहीं हैं। लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है।

३४६०. सुभाषितावली प्राप्ता पत्र सं० २१ । आ० ११० ४६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-

विशेष--यह ग्रन्य दीवान संगही ज्ञानचन्दजी का है।

च भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ४१ म, ४१६) स्त्र भण्डार मे २ स्रपूर्ण प्रतिया (वे० सं० ६३५, १२०१) तथा ट भण्डार १ (वे० स० १० म) स्रपूर्ण प्रति स्रौर है।

३४६१. सुभापितावलीभापा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १०६। ग्रा० १२३×५ इख । भाषा— हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स० ५१२। क भण्डार।

३४६२. सुभाषितावलीभाषा—दूलीचन्द । पत्र स० १३१ । ग्रा० १२५४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल सं० १६३१ ज्येष्ठ सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८८० । द्व भण्डार ।

३४६३. सुभाषितावलीभाषा ***** । पत्र स०४४ । म्रा० ११×४३ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८६३ प्र० म्रापाढ सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ११ । भा भण्डार । विशेष--- ५०४ दोहे है ।

३४६४. सूिक मुक्तावली — सोमप्रभाचार्य। पत्र सं०१७। ग्रा०१२×५३ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०१६६। स्त्र भण्डार।

विशेष-इसका नाम सुभाषितावली भी है।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५५१) श्रीर हैं।

३४६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १६६४ । वे० सं० ११७ । स्त्र भण्डार । विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६८४ वर्षे श्रीकाष्ठासधे नंदीतटगच्छे विद्यागरो भ० श्रीरामसेनान्वये तत्पट्टे भ० श्री विश्वभूषरा तत्पट्टे भ० श्री यश्नकीर्ति ब्रह्म श्रीमेघराज तत्त्विष्यब्रह्म श्री करमसी स्वयमेव हस्तेन लिखितं पठनार्थं।

स्त्र भण्डार मे ११ प्रतिया (वे० स० १६५, ३३४, ३४८, ६३०, ७६१, ३७६, २०१०, २०४७, १३४८ २०३३, ११६३) ग्रीर हैं।

३४६६. प्रति स॰ ३।पत्र स॰ २५। ले॰ काल सं॰ १९३४ सावन सुदी द। वे॰ सं॰ द२२। ऋ भण्डार।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ८२४) ग्रीर है।

रे४६५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० २२६ । ख भण्डार ।

विशेष—दीवान श्रारतराम खिदूका के पुत्र कुंवर बखतराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । ग्रक्षर मोटे एव सुन्दर है।

इसी भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (वे० सं० २३२, २६८) और हैं।

३४६६. प्रति सं०६। पत्र सं०२ से २२। ले० काल × । ग्रपूर्ण। वे० सं०१२६। घ भण्डार। विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

क्ष भण्डार मे ३ अपूर्ण प्रतिया (वे॰ सं॰ ८८३, ८८४, ८८५) ग्रीर है।

३५७०. प्रति सं०७। पत्र स०१५। ले० काल स०१६०१ प्र०श्रावरण बुदी ऽऽ।वे० सं०४२१। च भण्डार।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ४२२, ४२३) ग्रीर है।

३५७१. प्रति सं० म। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १७४६ भादना बुदो ६। ने• सं० १०३। छ् भण्डार।

> विशेष—रैनवाल मे ऋषभनाथ चैत्यालय मे ग्राचार्य ज्ञानकीर्ति के शिष्य सेवल ने प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार मे (वै॰ स॰ १०३) मे ही ४ प्रतिया ग्रीर है।

३५७२. प्रति सं०६। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १८६२ पौप सुदी २।वे० सं∙ १८३। ज भण्डार ।

विशेष--हिन्दी टव्वा टीका सहित है।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ३६) श्रीर है।

३४७३. प्रति सं० १०। पत्र स० १०। ले० काल स० १७६७ ग्रासोज सुदी द। वे॰ सं॰ द०। व्य भण्डार।

विशेष-ग्राचार्य क्षेमकीति ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० १६५. २८६. ३७७) तथा ट भण्डार मे २ म्रपूर्ण प्रतिया (वे० स० १६९४, १६३१) स्रीर हैं।

३४७४. सूक्तावली''''''। पत्र सं॰ ६। म्रा० १०४४% इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ४। ले० काल स० १८६४। पूर्ण। वे० स० ३४७। ऋ भण्डार।

३४७४ स्फुटस्रोकसंग्रह '। पत्र सं०१० मे २०। ग्रा०६×४ इन । भाषा-संस्कृत । विपय-सुभाषित । र० काल ×। ले० काल स०१८८३ । प्रपूर्ण । वे० स० २५७ । ख भण्डार ।

३५७६. स्वरोद्य-रनजीतदास (चरनदास) । पत्र स० २ । आ० १३३×६३ इंच । भाषा-हिन्दी । सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१५ । अ भण्डार ।

३४७७. हितोपदेश—विष्णुशर्मा। पत्र सं० ३६। ग्रा० १२३×५ इख्न । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । र० काल ×। ले० काल स० १८७३ सावन सुदी १२। पूर्णा । वे० स० ८५४ । क भण्डार ।

विशेष--मारिएक्यचन्द ने कुमार ज्ञानचंद्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३४७८ प्रति सं०२। पत्र सं०२। ले० काल ४। वे० सं०२४६। व्य भण्डार।
३४७६. हितोपदेशभाषा '। पत्र स०२६। आ० ५४५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित ।
र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० स०२१११। आ भण्डार।
३४८०. प्रति सं०२। पत्र स०६६। ले० काल ४। वे० स०१६६२। ट भण्डार।



વિષય-મન્ત્ર-શાસ્ત્ર

३४८१ इन्द्रजाल " "" पत्र सं० २ से ४२। आ० ५३ ×४ इंच। भाषा-हिन्दी । विषय-तन्त्र । र० पाल ×। ले० काल स० १७७८ वैजाख सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० २०१०। ट भण्डार ।

विशेष-पत्र १६ पर पुष्पिका-

इति श्री राजाधिराज गोख साव वंश केसरीसिंह समाहितेन मिन मंडन मिश्र विरिचिते पुरदरमाया नाम , ग्रन्थ विद्गित स्वामिका का माया।

पत्र ४२ पर-इति इन्द्रजाल समाप्तं ।

कई नुसक्षे तथा वशीकरण ग्रादि भी हैं। कई कौतूहल की सी वार्ते हैं। मंत्र संस्कृत मे है ग्रजमेर मे प्रतिलापे हुई थी।

३४८२. कर्मदहनव्रतमन्त्रः "। पत्र सं० १० । ग्रा० १०३ ×५३ इख । भाषा-सम्कृत । विषय-मत्र गाम्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६३४ भादवा मुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १०४ । ड भण्डार ।

३४८३ च्लेत्रपालस्तोत्र " ' । पत्र सं० ४ । आ० ८३४६ इ'च । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १९०६ मगसिर सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ११२७ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-सरस्वती तथा चौसठ योगिनीस्तोत्र भी दिया हुम्रा है।

३४८४ प्रति स०२। पत्र सं०३। ले० काल ४। वे० स०३८। ख भण्डार।

३४८४ प्रति स० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल स० १६६६ । वे० स० २८२ । स्त भण्डार ।

विशेष--चक्रेश्वरी स्तोत्र भी है।

३४८६. घटाकर्याकल्प । पत्र सं०५। ग्रा०१२३४६ इंच। भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रजास्त्र । र० काल ४। ले० काल स०१६२२ । ग्रपूर्या । वे० सं०४५ । स्त्र भण्डार ।

विशेष---प्रथम पत्र पर पूरुपाकार खड्गासन चित्र है। ५ यत्र तथा एक घंटा चित्र भी है। जिसमे तीन घण्टे दिये हुये हैं।

२४८०. घटाकर्श्मन्त्र''' ''''। पत्र सं० ४। ग्रा० १२५४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र । र० काल ४। ले० काल सं० १६२४। पूर्ण । वे० स० ३०३ । ख भण्डार ।

३४८८. घंटाकर्षावृद्धिकल्प" "" पत्र स० ६। ग्रा० १०३×५ इ'न । भाषा-हिन्दी । विषय-मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६१३ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वे० म० १५ । घ भण्डार ।

३४८६. चतुर्विशतियद्यविधान "" । पत्र स० ३ । आ० ११६४५६ टच । भाषा- गम्गृन । जिपग-मन्त्रज्ञास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०६६ । स्त्र मण्डार ।

३४६०. चिन्तामिश्सतोत्र"""। पत्र स० २ । म्रा० दर्४६ इ'च । भाषा-गर्ग्न । विषय मन्य शास्त्र । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्शा । वै० सं० २८७ । मा भण्डार ।

विशेय-चक्र श्वरी स्तोत्र भी दिया हुन्ना है।

३४६१. प्रति सं०२। पत्र सं०२। ले० काल 🗴 । वे० स० २४५ । व्य भण्डार।

३४६२ चिन्तामिं एयन्त्र । पत्र स० ३। श्रा० १०४५ उच। भागा-सम्कृत। विषय-यन्त्र। र० काल ४। ले० काल ४। श्रपूर्ण। वे० सं० २६७। स्त्र भण्डार।

३४६३. चौसठयोगिनीस्तोत्र""। पत्र स० १। ग्रा० ११×५३ इ.च । भाषा-मम्बृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२२ । छा भण्डार ।

विशेष--इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ११८७, ११६६, २०६४) ग्रीर हैं।

३५६४. प्रति सं० २ | पत्र सं० १ | ले॰ काल स॰ १८५३ । वे॰ स॰ ३६७ । व्य भण्डार |

३४६४. जैनगायत्रीमनत्रविधान " । पत्र गं० २ । ग्रा० ११×५३ इ च । भाषा-मंन्यृत । विषय-मन्त्र । र० काल × । ले० पाल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । ख भण्डार ।

३४६६. स्मोकारकल्प" ""। पत्र सं० ४। म्रा० ६३४६ इख्र । भाषा-सस्तृत । विषय-मन्त्रशान्त्र । र० काल ×। ले० काल सं० १६४६ । पूर्ण । वे० सं० २८८ । म्रा भण्डार ।

३४६७. समोकारकल्प " ""। पत्र स० ६। ग्रा० ११३×५ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६० ६। पूर्सा वे० सं० ३५५। श्च भण्डार।

> ३४६८. प्रति सं०२। पत्र सं०२०। ले० काल ×। श्रपूर्ण। वे० स० २७४। स्व भण्डार। ३४६६. प्रति सं०३। पत्र स०६। ले० काल सं०१६६४। वे० स०२३२। हा भण्डार। विशेष—हिन्दी मे मन्त्रसाधन की विधि एव फल दिया हुआ है।

३६०० समोकारपैंतीसी'''''। पत्र सं०४। ग्रा०१२×५६ इ च। भागा-प्राकृत व पुरानी हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स०,२३५। ड भण्डार।

३६०१. प्रति सं०२ । पत्र सं०३ । ले० काल ⋉ । वे० स० १२५ । च भण्डार ।

३६०२. नमस्कारमन्त्र कल्पविधिसहित—सिंहनन्दि । पत्र सं० ४४ । आ० ११३४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल 🗴 । ले० काल स० १६२१ । पूर्ण । वे० स० १६० । स्त्र भण्डार ।

३६०३. नवकारकल्प "। पन स०६। ग्रा०६ \times ४३ इ च। भाषा—सस्कृत। विषय—मन्त्रजास्त्र। ए० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण। वे० स०१३४। छ भण्डार।

विशेष-ग्रक्षरो की स्याही मिट जाने से पढ़ने मे नहीं ग्राता है '

३६०४. पचद्श (१४) यन्त्र की विधि । पृत्र स० २। मा० ११×५३ इ.च । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल ×। ले० काल स० १९७६ फाग्रुण बुदी १। पूर्ण । वे० स० २४। ज भण्डार ।

३६०४. पद्मावतीकल्प "। पत्र स०२ मे १०। ग्रा० ८४६३ ड च। भाषा-संस्कृत । विषय- मंत्र शास्त्र । र० काल ४ । ले० काल स०१६८२ । ग्रपूर्ण । वे० स०१३३६ । श्र भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति समत् १६८२ ग्रामादेर्गलपुरे श्री मूलसमसूरि देवेन्द्रकीत्तिस्तंदेतेवासिभिराचार्थश्री हर्पकीत्तिभिरिदमलेखि । विर नदतु पुस्तकम् ।

३६०६. वाजकोश '। पत्र सं० ६। ग्रा० १२×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० ६३५ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-सग्रह ग्रन्थ है । दूसरा नाम मातृका निर्घट भी है।

३६०७. भुवनेश्वरीस्तोत्र (सिद्ध महामन्त्र)—पृथ्वीधराचार्थ । पत्र सं० ६ । ग्रा० ६ रै४४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रगास्त्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० २६७ । च भण्डार ।

३६०८. भूवल ः ः । पत्र स० ६ । आ० ११ है ४५ है इख । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रज्ञास्त्र । र० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६८ । च भण्डार ।

विशेष---ग्रन्थ का नाम प्रथम पद्य मे 'ग्रयातः सप्रवश्यामि भूवलानि समासतः' ग्राये हुये भूवल के ग्राधार पर ही लिखा गया है।

३६०६ भैरवपद्मावतीकलप-सिल्लिपेण सूरि । पत्र स० २४। ग्रा० १२×५ इंच । भापा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० मं० २५० । ऋ मण्डार ।

विशेष--३७ यंत्र एवं विधि सहित है।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ स॰ ३२२, १२७६) और है।

३६१०. प्रति सं०२। पत्र स०१४६। ले० काल न०१७६३ वैशाख मुदी १३। वे० सं० ४६५। क भण्डार।

विणेप---प्रति सचित्र है।

इसी भण्डार मे १ अपूर्ण सचित्र प्रति (वे० स० ५६३) स्रीर है।

२६११. प्रति सं०३ | पत्र स०३५ | ले० काल ४ | वे० स०५७५ | छ भण्टार |

३६१२. प्रति स०४। पत्र स०२६। ले० काल सं०१६६६ चैत बुदी ""। वे० सं०२६६। च भण्डार।

> विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति संस्कृत टीका सहित (वे० स० २७०) ग्रीर है। ३६१३, प्रति सं० ४। पत्र स० १३। ले० काल ×। वे० सं० १६३६। ट भण्डार।

विशेष—वीजाक्षरों में ३६ यत्रों के चित्र है। यत्रविधि तथा मत्रों सहित है। सस्कृत टीका भी है।
पत्र ७ पर बीजाक्षरों में दोनों ग्रोर दो त्रिकोण यन्त्र तथा विधि दी हुई है। एक त्रिकोण में ग्राभूषण पहिने खडे हुये
नग्न स्त्री का चित्र है जिसमें जगह २ श्रक्षर लिले है। दूसरी ग्रोर भी ऐसा ही नग्न चित्र है। यन्त्रविधि है। ३ से
६ व ६ से ४६ तक पत्र नहीं हैं। १-२ पत्र पर यत्र मत्र सूची दी है।

३६१४. प्रति सं०६। पत्र स०४७ मे ५७। ते० काल स०१८९७ ज्येष्ठ मुदी ५। श्रर्जूर्ण। वै० सं० . १६३७। ट भण्डार।

विशेष-सवाई जयपुर मे पं॰ चोखचन्द के शिष्य मुखराम ने प्रतिलिपि की थी | इसी भण्डार मे एक प्रति प्रपूर्ण (वे॰ स॰ १६३६) ग्रीर है !

३६१४ भेरवपद्मावतीकलपः । पत्र स०४०। म्रा० ६x४ इंच। भाषा सस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५७४। स भण्डार ।

३६१६ सन्त्रशास्त्र" । पत्र स० ६ । ग्रा० ६×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ५३१ । व्य भण्डार ।

विशेष--- निन्न मन्त्रो का सग्रह है।

१ चौकी नाहरिसह की २. कामगा विधि ३ यत्र ४ हनुमान मत्र ५. टिड्डी का मन्त्र ६ पलीता भूत व चुढेल का ७ यत्र देवदत्त का द हनुमान का यन्त्र ६ सर्पाकार यन्त्र तथा मन्त्र १०. सर्वकाम सिद्धि यन्त्र (चारो कोनो पर श्रीरङ्गजेब का नाम दिया हुग्रा है) ११. भूत डाकिनी का यन्त्र ।

३६१७ सन्त्रशास्त्र "। पत्र स०१७ मे २७। ग्रा०६३×५३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्णं । वे० स०५ ८४ । ड भण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे दो प्रतिया (३० सं० ५८५, ५८६) ग्रीर हैं।

३६१८. मन्त्रमहोद्धि-प० महीधर। पत्र सं० १२०। ग्रा० ११३४५ डच। भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ४। ले० काल स० १८३८ माघ सुदी २। पूर्ण। वे० स० ६१६। त्र्य भण्डार।

३६१६. प्रति सं०२। पत्र स० ४। ले० काल 🔀। वे० सं० ४८३। ड भण्डार।

विशेष--- अन्नपूर्णा नाम का मन्त्र है।

३६२० मन्त्रसंग्रह " " पत्र सं० फुटकर । ग्रा० । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्र । र० काल ×। पूर्ण । वै० स० ५६८ । क भण्डार ।

विशेष -- करीव ११५ यन्त्रों के चित्र है। प्रतिष्ठा ग्रादि विधानों में काम ग्राने वाले चित्र है।

३६२१. सहाविद्या (सन्त्रों का संग्रह) पत्र सं० २० । आ० ११३×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६ । घ भण्डार ।

विशेष--रचना जैन कवि कुत है।

३६२२. यित्योकिल्प " " । पत्र स० १ । ग्रा० १२×५ ई इंच । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०५ । ड भण्डार ।

३६२३ यंत्र मंत्रिविधिफल् ""। पत्र सं० १५। आ० ६३४८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६६ । ट भण्डार ।

विशेष—६२ यंत्र मन्त्र सहित दिये हुये हैं। कुछ यन्त्रों के खाली चित्र दिये हुये हैं। मन्त्र बीजाक्षरों में हैं।

३६२४. वर्द्धमानविद्याकलप—सिंहतिलक । पत्र स० ६ से २६ । ग्रा० १०३×४ इंच । माषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ल० काल स० १४९५ । ग्रपूर्ण । वे० सं० १९९७ । ट मण्डार ।

विशेप-- १ से ४, ७, १०, १४, १६, १६ से २१ पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन एवं जोर्रा है।

प्रवें पृष्ठ पर— श्री विबुधचन्द्रगराभृद्धिष्य श्रीसिहतिलकसूरि रिमासाह्लाददेवतोन्वलविगदमनाः लिखत वान्कल्प ।।६६।। इति श्रीसिहतिलक सूरिकृते वर्द्ध मानविद्याक्ल्पः ।।

- हिन्दी गद्य उदाहरएा- पत्र ८ पंक्ति ५-

जाइ पुष्प सहस्र १२ जाप. । गूगल गउ वीस सहस्र ।।१२।। होम कीजइ विद्यालाभ हई ।

पत्र पिक्त ६— ग्रो कुरु कुरु कामाल्यादेवी कामइ ग्रावीज २। जग मन मोहनी सूती वइठी उठी जगामगा हाथ जोडिकरि साम्ही ग्रावइ। माहरी भक्ति ग्रुरु की शक्ति वाथदेवी कामाल्या म'हरी शक्ति ग्राकिष्।

पृष्ठ २४ — ग्रन्तिम पुष्पिका - इति वर्द्ध मानविद्याकलास्तृतीयाधिकार ।। ग्रन्थाग्रन्थ १७५ ग्रक्षर १६ स० १४६५ वर्षे सगरकूपशालाया ग्रिगिह्ल्लपाटकपरपर्याये श्री ।

पत्र २५- गुटिकाग्रो के चमत्कार है | दो स्तीत्र है | पत्र २६ पर नालिकेर बल्प दिया है |

३६२४. विजययन्त्रविधान''''''। पत्र सं० ७ । ग्रा० १०३४४ इ'च । भाषा-मस्कृत । विषय-मन्त्र बास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्णी । ने० सं० ५०० । स्त्र मंण्डार ।

विशेष--इसी भण्डार मे २ प्रतिया (ने० स० ५६८, ५६९) तथा च भण्डार मे १ प्रति (ने० स० ३३१) और है।

३९२६. विद्यानुशासन"""। पत्र स० ३७०। म्रा० ११×५ ई इ च । भाषा-मंस्तृत । र० काल × । ले० काल स० १६०६ प्र० भादना बुदी २ । पूर्ण । वे० स० ६५६ । व्य भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ सम्बन्धित यन्त्र भी है। यह ग्रन्थ छोटीलालजी ठीलिया के पठनार्थ ए० मोनी नालजी के द्वारा हीरालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराई। पारिश्रमिक २४।-) लगा।

३६२७. प्रति स०२। पत्र स०२८५। ले॰ काल म०१६३३ मगसिर बुदी ४। बै॰ स॰ ९४। घ भण्डार।

विशेष--गङ्गावक्स ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

३६२८. यत्रसत्रह" '। पत्र स० ७ । ग्रा० १३३ै×६३ इ'च । भागा—मन्द्रत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५४५ । श्र भण्डार ।

विशेप-लगभग ३५ यन्त्रो का सग्रह है।

३६२६. पटकर्मकथन"""। पत्र सं० ३ । ग्रा० १०३×७ इख्र । भाषा-सम्यृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१०३ । ट भण्डार ।

विशेप---मन्त्रशास्त्र का ग्रन्थ है ।

३६३०. सरस्वतीकल्प" ""। पत्र स० २ । ग्रा० ११३×६ इ'च । भाषा-संस्कृत । निषय-मन्त्रशान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७० । क भण्डार ।



विषय-कामशास्त्र

३६३१. कोकशास्त्र" "। पत्र सं० ६ । ग्रा० १०३×५६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-कोक । र० काल × । ले० काल स० १८०३ । पूर्ण । वे० सं० १६५६ । ट भण्डार ।

विशेष--निम्न विषयो का वर्शन है।

द्रावराविधि, स्तम्भनविधि, वाजीकररा, स्थूलीकररा, गर्भाधान, गर्भस्तम्भन, सुखप्रसव, पुष्पाधिनिवाररा, योनिसस्कारविधि ग्रादि ।

३६३२. कोकसार """। पत्र सं० ७ । आ० ६×६३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र । र० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । इक भण्डार ।

३६३३. कोकसार—म्यानन्द्। पत्र सं० ५ । ग्रा० १३६४६६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-काम शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ८१६ । म्रा भण्डार ।

३६३४. प्रति सं०२। पत्र स०१७। ले० काल 🗙 । प्रपूर्ण । वे० सं०३६। ख भण्डार।

३६३४ प्रति सं० ३। पत्र स० ३०। ले० काल 🗙 । वे० सं० २६४। मा भण्डार।

३६३६. प्रति सं०४। पत्र स०१६। ले॰ काल सं०१७३६ प्र॰ चैत्र सुदी ४। वे॰ सं०१४४२। ट भण्डार।

विशेष--प्रति जीर्ग है। जट्टू व्यास ने नरायगा मे प्रतिलिपि की थी।

२६२७. काससूत्र—किवहाल । पत्र सं० २२ । आ० १० रें ४४ र्ट्रे इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-काम शास्त्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । ख भण्डार ।

विशेष-इममे कामसूत्र की गाथायें दी हुई हैं। इसका दूसरा नाम सत्तसम्रसमत्त भी है।



विषय- जिल्प-अहरू

+}-{+

३६३८. बिम्बिनिर्माणिविधि"""। पत्र सं० ६ । ग्रा० ११३४७३ इ'च । भाषा-हिन्दी । विषय-शिल्य शीस्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३३ । क भण्डारे ।

३६३६. यिम्बनिर्माणिविधि """ पत्र सं० ६। मा० ११×७३ इ'च । भाषा-हिन्दी । विषय-जिल्प शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३४ । क भण्डार ।

३६४०. बिम्बंसिमीग्रिविधि"" । पत्र सँ० ३६। ग्रा० ८३×६६ दंच। भाषा-संस्कृत । विषय-शिल्पकला [प्रतिष्ठा] र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वै० सं० २४७। च भण्डार।

विशेष—कापी साइज है। पं० कंस्तूरचन्वजी साह द्वारा लिखित हिन्दी अर्थ सहित है। प्रारम्भ मे ३ पेत्र की भूमिका है। पत्र १ से २५ तक प्रतिष्ठा पाठ के क्लोको का हिन्दी अनुवाद किया गया है। क्लोक ६१ है। पत्र २६ से ३६ तक बिम्ब निर्माणविधि भाषा दी गई है। इसी के साथ ३ प्रतिमाम्रो के चित्र भी दिये गये है। (वै० स० २४६) च भण्डार। कलशारोपण विधि भी है। (वै० सं० २४५) च भण्डार।

३६४१. वास्तुविन्यास'''''। पत्र सं० ३ । आ० ६१४४ हु इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय-शिन्यकला । द० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।



विषय - लक्तरा एवं समीचा

३६४२, त्र्यागमपरी ह्या • । पत्र सं० ३ । ग्रा० ७×३ ई ईच । भाषा—संस्कृत । विषय—समीज्ञा । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४५ । ट भण्डार ।

३६४३. ह्रंद्शिरोमिण्-शोभनाथ। पत्र स० ३१। ग्रा० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-लक्षण। र० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी ""। ले० काल सं० १८२६ फाग्रुण सुदी १०। पूर्ण। वै० सं० १९३६। ट भण्डार।

३६४४. छंदकीय किवत्त-भट्टारक सुरेन्द्रकीित । पत्र सं० ६ । ग्रा० १२×६३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-लक्षण ग्रन्थ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१४ । ट भण्डार । ग्रन्तिम पुष्पिका- इति श्री छंदकीयकवित्वे कामधेग्वाख्ये भट्टारकश्रीसुरेन्द्रकीितविरिचते समवृतप्रकरण समाप्त । ग्रारम्भ मे कमलवंध कवित्त मे चित्र दिये हैं ।

३६४४. धर्मपरीत्ताभाषा—दशरथ निगोत्या । पत्र सं० १६१ । म्रा० १२×४३ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी गद्य । विषयं—समीक्षा । र० कील स० १७१८ । ले० काल सं० १७५७ । पूर्ण । वे० स० ३६१ । त्र्य भण्डार । विशेष—संस्कृत मे मूल के साथ हिन्दी गद्य दीका है । दोकाकार का परिचय—

साहु श्री हेमराज सुत मात हमीरदे जािए।

कुल निगोत श्रावक धर्म दशरथ तज्ञ वखािए।।

संवत सतरासे सही श्रष्टादश श्रधिकाय।

फागुरा तम एकादशी पूररा भई मुभाय।।

धर्म परीक्षा वचिनका सुंदरदास सहाय।

साधर्मी जन समिक नै दशरथ कृति चितलाय।।

हीका— विषया के विस पड्या किंगरा जीव पाप।

करें छै सहाी न जाई ती थे दुखी होइ मरे।।

भैंखंक प्रशस्ति— संवद् १७५७ वर्षे पौष शुक्ला १२ भृगौवारे दिवसा नगर्या (दौसा) जिन चैध्यालये लि॰ भट्टारक-श्रीनरेन्द्रकीर्ति तत्शिष्य पं० (गिरधर) कटा हुग्रा । ३६४६. प्रति सं०२। पत्र सं०४०५। ले० काल सं०१७१६ मंगसिर सुदी ६। वे० सं०३३०। ड

भण्डार ।

विशेष—इति श्री ग्रमितिगतिकृता धर्मपरीक्षा मूल तिहकी वालबोधनामटीका तज्ञ धर्मार्थी दशरथेन कृताः

समाप्ता ।

३६४७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १३५। ले० काल सं० १८६६ भादवा सुदी ११। वे० सं० ३३१। ड भण्डार।

३६४८. धर्मपरी हा- श्रमितिगति । पत्र स० ३५ । श्रा० १२×४६ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-समीक्षा । र० काल सं० १०७० । ले० काल सं० १८८४ । पूर्ण । वे० स० २१२ । स्त्र भण्डार ।

३६४. प्रति सं०२। पत्र स० ७५। ले० काल सं० १८८६ चैत्र सुदी १५। वै० स० ३३२। इप्र भण्डार।

विशेय-इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ७८४, ६४५) श्रीर है।

३६४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १६३६ भादवा सुदी ७ । वे० स० ३३४ । क

३६४१. प्रति सं०४। पत्र स०६४। ले० काल सं०१७८७ माघ बुदी १०। वे० सं०३२६। ङ भण्डार।

३६४२ प्रति सं०४। पत्र सं०६६। ले० काल 🗴। वे० सं०१७१। च मण्डार।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

३६४३. प्रति स०६। पत्र सं०१३३। ले० काल सं०१६५३ वैशाख सुदी २। वे० सं०५६। छ् भण्डार।

विशेष--- श्रलाउद्दीन के शासनकाल में लिखा गया है। लेखक प्रशस्ति श्रपूर्ण है। इसी भण्डार में २ प्रतिया (वे० सं० ६०, ६१) श्रीर हैं।

३६४४. प्रति सं०७। पत्र सं०६१। ले० काल ं×। वे० सं०११५। व्य मण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ सं॰ ३४४, ४७४) प्रीर हैं।

३६४४. प्रति सं० ८। पत्र सं० ७८। ले० काल सं० १४६३ भादवा बुदी १३ । वे० सं० २१५७। ट मण्डार।

विशेष—रामपुर मे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे जमू से लिखवाकर वर श्री धर्मदास को दिया। ग्रन्तिम पत्र फटा हुमा है। भण्डार ।

३६४६ धर्मपरीत्ताभाषा—मनोहरदास सोनी । पत्र सं० १०२। आ० १०३×४३ ड च । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय-समीक्षा । र० काल १७०० । ले० काल स० १८०१ फाग्रुगा सुदी ४ । पूर्गा । वे० स० ७७३ । स्र भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति अपूर्ण (वे० सं० ११६६) ग्रीर हैं। ३६४७ प्रति सं०२। पत्र सं० १११। ले० काल स० १९५४। वे० सं० ३३६। क भण्डार। ३६४८. प्रति स०३। पत्र स० ११४। ले० काल सं० १८२६ ग्रापाढ बुदी ६। वे० सं० ५९५। च

विशेप—हंसराज ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । पत्र चिपके हुये हैं।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ५६६) स्रीर है।

३६४६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६३। ले० काल सं० १८३०। वे० सं० ३४५। स्त भण्डार।

विशेप-केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १३६) झौर है।

३६६० प्रति सं०४। पत्र सं०१०३। ले० काल सं०१८२१। वे० सं०५२। व्य भण्डार।

विशेष —वखतराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ३१४) ग्रीर है।

३६६१. धर्मपरीत्ताभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ३८९ । ग्रा० ११×५३ इ'च । भाषा— हिन्दी गद्य । विषय-समीक्षा । र० काल सं० १६३२ । ले॰ काल सं० १६४२ । पूर्ण । वे० सं० ३३८ । क भण्डार ।

३६६२. प्रति सं०२। पत्र स० ३२२। ले० काल सं० १९३८। वे० सं० ३३७। क भण्डार।

३६६३. प्रति सं०३। पत्र सं०२५०। ले० काल स०१६३६। वे० सं०३३४। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ३३३, ३३५) ग्रीर है।

३६६४ प्रति सं०४। पत्र सं०१६२। ले० काल 🗴 । वे० सं०१७०७। ट भण्डार।

३६६४. धर्मपरीचारास—व्र० जिनदास । पत्र सं० १८ । ग्रा० ११×४ ई इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-समीक्षा । र० काल × । ले० काल सं० १६०२ फाग्रुग सुदी ११ । ग्रपूर्ण । वे० सं० ६७३ । त्र्य मण्डार ।

विशेष-- १६ व १७वा पत्र नहीं है । श्रन्तिम १८वे पृष्ठ पर जीराविल स्तोत्र है।

यादिभाग---

धर्म जिग्गेसर २ नमूं ते सार, तीर्थंकर जे पनरमु वाछित फल बहू दान दातार, सारदा स्वामिग्गि वली तवुं वुधिसार, मुक्त देउमाता श्रीगराधर स्वामी नमसक्छी सकलकीति भवतार,
मुनि भवनकीति पाय प्ररामिन कहिसूं रासह सार ॥१॥

दूहा---

धरम परीक्षा करू निरूमली भवीयण सुर्णु तह्मे सार । श्रह्म जिरादास किह निरमलु जिम जार्गु विचार ॥२॥ कनक रतन माणिक श्रीदि परीक्षा करी लीजिसार । तिम धरम परीषीइ सत्य लीजि भवतार ॥३॥

म्रन्तिम प्रशस्ति-

दूहा—

श्री सकलकीरतिगुरुप्रग्मीनि-मुनिभवनकीरितभवतार । श्रह्म जिग्रदास भिग्रिक श्रदु रासकीउ सिवचार ।।६०॥ घरमपरीक्षारासिनरमे घरमत्रगु निधान । पढि गुग्रि जे सामिल तेहिन उपिज मित ज्ञान ।।६१॥

इति धर्मपरीक्षा रास समाप्तः

संवत् १६०२ वर्षे फाग्रुण सुदी ११ दिने सूरतस्थाने श्री शीतलनाथ चैत्यालये श्राचार्य श्री विनयक्रीत्तः पंडित मेघराजकेन लिखितं स्वयमिदं ।

३६६६. धर्मपरीत्वाभाषा"""। पत्र सं०६ से ५०। ग्रा० ११४८ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय--समीक्षा । र० काल × । के० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३२ । ड भण्डार ।

३६६७. मूर्खेके लच्च्या । पत्र सं० २ । म्रा० ११×६ इंच । भाषा -सस्कृत । विषय -लक्ष्याग्रन्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्या । वे० सं० ५७६ । क भण्डार ।

३६६८. रत्नपरीत्ता—रामकि । पत्र सं०१७। ग्रा० ११×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-लक्षरा ग्रन्थ। र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं०११८ । छ भण्डार ।

विशेष--इन्द्रपुरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

प्रारम्भ--

गुरु गरापति सरस्वति शंमिर यातै वध है बुद्धि । सरंसबुद्धि छेवह रचो रतन परीक्षा सुधि ।।१॥ रतन दीपिका ग्रन्थ में रतन परिछ्या जान । सगुरु देव परताप ते भाषा वरनो ग्रानि ।।२॥ रतन परीछ्या रंगसु कीन्ही राम किंवद । इन्द्रपुरी में ग्रानि के सिखी जुभामारांद ।।६१॥

भ्रन्तिम---

*

३६६६. रसमझरीटीका—टीकाकार गोपालभट्टी। पत्र सं०१२ । ग्रा० ११×५ इ च । भाषा→ संस्कृत । विषय-लक्षराग्रन्थ । र० कार्ल × । ले० कार्ल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० २०५३ । ट भण्डार ।

विशेष--१२ से भ्रागे पत्र नहीं है।

३६७०. रसमझरी—भानुद्त्तिमिश्र । पत्र सं० १७ । ग्रा० १२×५३ ई च । भाषा-संस्कृत । विषय-लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल सं० १८२७ पौष सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ६४१ । स्त्र भण्डार ।

३६७१. प्रति सं०२ । पत्र सं०३७ । ले० काल सं०१६३५ म्रासोज सुदी १३ । वे० स०२३६ । ज भण्डार ।

३६७२. वक्ताश्रोतालस्यां "। पत्र सं० १। ग्रा० १२६४५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-लक्षरां ग्रन्थ । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्यो । वे० स० ६४२ । क भण्डार ।

३६७३ प्रति सं २ । पत्र स० ५ । ले० काल 🗙 । वे० सं० ६४३ । क भण्डार ।

३६७४. वक्ताश्रीतालत्त् ए " । पत्र स० ४। ग्रा० १२×४ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-लक्षण ग्रन्थ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६४४ । क अण्डार ।

३६७४. प्रति सं०२। पत्र सं०४। ले० काल 🗙 । वे० सं० ६४४ । क अण्डार ।

३६७६. शृङ्गारतिलक---स्ट्रभट्ट । पत्र सं० २४ । आ० १२६४ ६ इझ । भाषा-संस्कृत । विषय-लक्षण ग्रन्थ । र० काल × । ते० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६३६ । अ भण्डार ।

३६७७. शृङ्गारतिलक् कालिस्। पत्र सं०२। ग्रा०१३×६ इख्र। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षगाग्रन्य। र० काल ×। ले० काल सं०१८३७। पूर्ण। वे० सं०११४१। स्त्र भण्डार।

इति श्री कालिदास कृतौ शृङ्गारतिलक संपूर्णम्

प्रशस्ति— संवत्सरे सप्तत्रिकवस्त्रेदु मिते श्रसाढसुदी १३ त्रयोदेश्या पंडितजी श्री हीरानन्दजी तिस्छिष्य पंडितजी श्री चोक्षचन्दजी तिन्छिष्य पंडित विनयवताजिनदासेन निपीकृतं । भूरामनजी या श्राका ।।

्३६ अन्. ्स्त्रीलस्या "" । पत्र स० ४। म्रा० ११६ ४५ हे इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-लक्षराग्रन्य । र० कान × । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० सं० ११८१ । ऋ भण्डार ।



विषय- फागू रासा एवं वेति साहित्य

३६७६. श्रद्धनारास-शांतिकुशल । पत्र सं० १२ से २७ । ग्रा० १०४४ दे इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स० १६६७ माह मुदी २ । ले० काल म० १६७६ । ग्रदूर्श । वे० स० २ । ख भण्डार । विशेष-ग्रिन्तम प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

रास रच्यू सती श्रक्षना मइ जूनी चउपई जोई रे।
श्रिधकु उछउ जे कहा मुक्त मिथ्या दोकड होई रे।।
सवत् सोलइ सतइ सिठ माहा श्रुदि नी बीज बखारणु रे।
सोवन गिरिरास माक्तीउ जह सोलइ पुरु जारणु रे।।
तप गछ नायक ग्रुर्णा निलउ विजय सेन सूरी सरगाजइ रे।
श्राचारिज मिहमा घरणो विज देव सूरी पद छाजइ रे।।
तात पचाडिए। दीपलु जस मिहमा कीरित भिरिउस।
मात प्रेमलदे उरि घरया देव कई पाटर्णो श्रवतरिज रे।।
विनयकुशल पिडत वरु परगारी ग्रुर्णादरिज रे।।
श्रिवचलकीरित श्रद्धना जा रिव सस ही इइ श्राकाश रे।
पढ ग्रुर्णोई जे सामलड रिह लिखमी तस घर पासई रे।।

३६८०. स्त्राविश्वरफाग—झानभूपण । पत्र स०४०। स्रा० ११४५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—फाग्र (भगवान ग्रादिनाथ का वर्णन है)। र० काल ४ । ले० कान स० १५६२ वैशाख सुदी १०। पूर्ण। वै० सं० ७१। ड भण्डार।

विशेष-श्री मूलसधे भट्टारिक श्री ज्ञानभूषण क्षुक्तिका वाई कल्याणमती कर्मक्षयार्थं लिखितं।

३६८१. प्रति सं० २। पत्र सं० ११ मे ५। ले० काल ४। वे० सं० ७२। ख भण्डार।

३६८२ कर्मप्रकृतिविधानरास-वनारसीटास । पत्र स० १८। ग्रा० १४४ इंच। भाषा-हिन्दी।
विषय-रासा। र० काल सं० १७००। ले० काल सं० १७८४। पूर्ण। वे० सं० १६२७। ट भण्डार।

३६८३. चन्द्रनवालारास "पत्र सं० २। ग्रा० ६३४४३ इव। भाषा-हिन्दो। विषय-सती चन्द्रनवाला की कथा है। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स० २१६४। त्र भण्डार।

३६८४. चन्द्रलेहारास-सित्दुशल । पत्र सं० २६ । ग्रा० १०४४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-रासा (चन्द्रलेखा की कथा है) र० काल सं० १७२८ ग्रामोज बुदी १० । ले० काल सं० १८२६ ग्रासोज मुदी । पूर्ण । वे० स० २१७१ । श्र भण्डार ।

विशेष—ग्रक्वरावाद मे प्रतिलिपि की गयी थी। दशा जीर्गा शीर्ग तथा लिपि विकृत एवं ग्रशुद्ध है। प्रारम्भिक २ पद्य पत्र फटा हुग्रा होने के कारण नहीं लिखे गये हैं।

सामाइक सुधा करो, त्रिकरण सुद्ध त्तिकाल। सत्रु मित्र समतागिंग, तिमतुटै जग जाल । ३।। मरूदेवि भरथादि मुनि, करी समाइक सार। केवल कमला तिए। वरी, पाम्यो भवनो पार ॥४॥ सामाइक मन सुद्ध करी, पामी द्वांम पकता। तिथ ऊपरिन्दु सामलो, चंद्रलेहा चरित्र ।।५।। वचन कला तेह वनिछै, सरसंघ रसाल । तीरो जारण सक्त पडसी, सोभलता खुस्याल ।।६।। सवत् सिद्धि कर मृनिससी जी वद ग्रास् दसमे विचार। श्री पभीयाख में प्रेम सुं, एह रच्यी ग्रधिकार 11१२।। खरतर गरापित सुखकरूंजी, श्री जिन सुरिद । वडवती जिम साखा खमनीजी, जो घू रजनीस दिराद ॥१३॥ सुगुरा श्री सुगुराकोरति गराीजी, वाचक पदवी धरत । अतयवासी चिर गयो जी, मतिवल्लभ महंत ।।१४।। प्रयमत सुसी ग्रति प्रेम स्यु जी, मतिकुसल कहै एम। सामाइक मन सुद्ध करो जी, जीव वए भ्रइं लेहा जेम ।।१५॥ रतनवल्लभ गुरु सानिधम, ए कीयो प्रथम श्रम्यास। छसय चौवीस गाहा भ्रछै जी, उगुरातीस ढाल उल्हास ॥१६॥ भरों गुरों सुरों भावस्युं जी, गरुम्रातरा गुरा जेह । मन सुध जिनधर्म तै करैं जी, त्री भुवन पति हुवै तेह ॥१७॥ सर्व गाथा ६२४। इति चन्द्रलेहारास स्पूर्ण ॥

थ्रन्तिम---

3६८४. जलगालगारास—झानभूपगा । पत्र स०२। ग्रा०१०५४५ इ च । भाषा-हिन्दी गुजराती । विषय-रासा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स०१६७ । ट भण्डार ।

विशेप-- जल छानने की विधि का वर्शन रास के रूप में किया गया है।

३६८६ ध्रत्राशालिभद्ररास-जिनराजसूरि । पत्र स० २६ । श्रा० ७३×४५ द्व । भाषा-हिन्दी । विषय-रासा । र० काल स० १६७२ श्रासीज बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४८ । श्र भण्डार ।

विशेष--- मूनि इन्द्रविजयगिए। ने गिरपोर नगर मे प्रतिलिपि को थी।

३६८७. धर्मरासा ""। पत्र सं० २ मे २०। ग्रा० ११४६ इ च। भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल ×। त्रपूर्ण। वै० सं० १९४८। ट भण्डार।

विशेष-पहिला, छठा तथा २० से श्रागे के पत्र नहीं है।

३६८८. नवकाररास "" । पत्र स० २ । ग्रा० १०×४३ इक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-गामीकार मन्त्र महातम्य वर्गान है । र० काल × । ले० काल स० १८३१ फाग्रुगा सुदी १२ । पूर्गा । वे० स० ११०२ । ग्रा भण्डार ।

३६८. नेमिनाथरास—विजयदेवसूरि । पत्र स० ४ । म्रा० १०४४ हुझ । भाषा-हिन्दी । विषय-रासा (भगवान नेमिनाथ का वर्शन है) । र० काल ४ । ले० काल सं० १८२६ पीप सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १०२६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-जयपुर मे साहिबराम ने प्रतिलिपि की थी।

३६६०. नेसिनाथरास--ऋपि रामचन्द् । पत्र सं० ३ । आ० ६५×४८ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-रासा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४० । ह्य भण्डार । विशेष---आदिभाग--

दूहा श्रिहित सिध ने श्रापरीया उपजाया श्रणवार ।
पाचेपद तेहुनमूं, श्रठोत्तर सो वार ॥१॥
मोखगामी दोनु हुवा, राजमती रह नेम ।
चित्रेकतर लीया मणी, साभल जे घर प्रेम ॥२॥
ढाल जिंग्सेसुर मुनिराया ।
सुंखकारी सोरठ देसे राज कीसन रेस मन मोहीलाल ।

दीपती नगरी दुवारकाए ॥१॥
समुद विजे तिहासूप सेवा देजी राग्गी रूरेरू ।
महाराग्गी मानी जतीए ॥२॥

फांगु रासा एवं वेलि साहित्य]

जारण जन (म)मीया ग्ररिहन्त देव इह चीसट सारे।
ज्यारी गेव मे बाल ब्रह्मचारी बाबा समीए।।३।।

ग्नन्तिम---

सिल ऊरर पच ढालियो दीठो दोय सुत्रां मे निचोडरे । तिगा ग्रनुसार माफक है, रिपि रामचं जी कीनी जोड रे ।।१३।।

इति लिखतु श्री श्री उमाजीरी तत् सीवग्गी छोटाजीरी वेलीह सतु लीखतु पाली मदे । पाली मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३६६१. नेमीश्वरफाग—ब्रह्मरायमञ्जा । पत्र सं० द से ७० । ग्रा० ६४४ ई इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-फाग्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वै० स० ३८३ । द्वा भण्डार ।

३६६२. पचेन्द्रियरास ""। पत्र स॰ ३। आ॰ ६४४ है इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-रासा (पांची इन्द्रियो के विषय का वर्णन है)। र॰ काल ४। ल० काल ४। पूर्ण। वै॰ सं॰ १३५६। अ भण्डार।

३६६३. पत्यविधानरास—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ५ । आ० ५२%४३ इच । भाषा- हन्दी । विषय-रासा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४४३ । ड भण्डार ।

विशेष-पत्यविधानवत का वर्णन है।

३३६४. वंकचृत्तरास-जयकीत्ति । पत्र सं० ४ से १७ । मा० ६x४ डंच । भाषा-हिन्दी । विषय-रासा (कथा)। र० काल स० १६८५ । ले० काल सं० १६६३ फाग्रुग्ग बुदी १३ । म्रपूर्गा । वे० सं० २०६२ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--प्रारम्म के ३ पत्र मही है। ग्रन्थ प्रशस्ति--

कया धुर्गी बंकचूलनी श्रेरिंगक घरी उल्लास । बीरिंग वादी भावसु पुहुत राजग्रह वास ॥१॥ संवत सोल पच्यासीइ गूर्जिर देस ममार । कल्पवल्लीपुर सोभती इन्द्रपुरी ग्रवतार ॥२॥ नर्रासघपुरा वार्गिक विस दया धर्म सुस्तकद । चैत्यालि श्री वृषभवि ग्रावि भवीयरा वृंद ॥३॥ काष्ठासंघ विद्यागरो श्री सोमकीर्त्त मही सोम । विजयसेन विजयाकर यशकीर्त्त यशस्तीम ॥४॥ उदयसेन महीमीदय त्रिभुवनकीर्त्त विख्यात । रत्नभूषरा गछपती हवा भुवनरयरा जेहजात ॥४॥ तस पिट्ट मूरीवरभलु जयकीर्त्त जयकार ।
जे भिवयण भिव साभली ते पामी भवपार ॥६॥
रूपकुमर रलीया मणु वकचूल बीजु नाम ।
तेह रास रच्यु रूबडु जयकीर्ति मुखधाम ॥७॥
नीम भाव निर्मल हुई ग्रुख्वचने निर्द्धार ।
साभलता मपद मिल ये भिण नरितनार ।।६॥
याद्रुसायर नन्न महीचद सूर जिनभास ।
जयकीर्ति कहिता रहु बंकचूलनु रास ॥६॥
इति वकचूलरास समाप्तः।

सवत् १६६३ वर्षे फाग्रुगा बुदी १३ पिपलाइ ग्रामे लक्षतं भट्टारक श्री जयकीर्ति उपाध्याय श्री वीरचद ब्रह्मा श्री जसवंत वाइ कपूरा या बीच रास ब्रह्मा श्री जसवत लक्षत ।

३६६४. भविष्यद्त्तरास— ब्रह्मरायमञ्ज । पत्र म० ३६ । ग्रा० १२×८ इख्र । मापा-हिन्दी । विषय-रासा-भविष्यदत्त की कया है । र० काल सं० १६३३ कार्तिक सुदी १४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स ६८६ । श्र भण्डार ।

> ३६६७ प्रति स० ३ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १८१८ । वे० स० ५६६ । ड भण्डार । विशेष---प० छाजूराम ने जयंपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

इनके ग्रतिरिक्त ख भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १३२) छ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १६१) तथा भू भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १३५) ग्रीर है।

३६६८ रुकिमिणीविवाहवेलि (कृष्ण्रुकिमिणीवेलि)—पृथ्वीराज राठौड । पत्र स० ५१ से १२१ । आ० ६×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-वेलि । र० काल स० १६३८ । ले० काल स० १७१६ चैत्र बुदी ५ । अपूर्ण । वे० स० १६४ । ख भण्डार ।

विशेष—देविगरी मे महात्मा जगन्नार्थं ने प्रतिलिपि की थी। ६३० पद्य हैं। हिन्दी गद्य मे टीका भी दी हुई है। ११२ पृष्ठ से श्रागे श्रन्य पाठ हैं।

३६९६. शीलरासा—विजयदेव सूरि। पत्र सं० ४ से ७। ग्रा॰ १०ई×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-रामा। र० काल ×। ले० काल स० १६३७ फाग्रुए। सुदी १३। वे० सं० १६९६। श्र भण्डार।

विशेष-लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवत् १६३७ वर्षे फागुगा सुदी १३ गुरुवारे श्रीखरतरगच्छे श्राचार्य श्री राजरत्नसूरि शिष्य प० निंदरग लिखितं। उसवसेसघ वालेचा. गोत्रे सा हीरा पुत्री रतन सु श्राविका नाली पठनार्थं लिखितं दारुमध्ये।

म्रन्तिम पाठ निम्न प्रकार है-

श्रीपूज्यपासचद तगाइ सुपसाय,

सीस धरी निज निरमल भाड।

١

नयर जालउरहि जागतु,

नेमि नमउ नित वेकर जोडि ॥

बीनती एह जि वीनवड,

इक खिए। ग्रम्ह मन वीन विछोडि।

सील सवातड जी प्रीतडी,

उत्तराध्ययन वावीसमु जोइ ॥

वली भ्रने राय थकी भ्रस्य भ्राज्ञा विना जे कहसु होड । विफल हो यो मुभ पातक सोइ, जिम जिन भाष्यउ ते सही ।। दुरित नइ दुक्ल सहूरइ दूरि, वेगि मनोरथ माहरा पूरि । ग्राग्रासुसयम ग्रापियों, इम वीनवइ श्री विजयदेव सूरि ॥

।। इति शील रासउ समाप्त ।।

३७०० प्रति स०२ । पत्र म०२ मे ७ । ले० काल सं०१७०५ ग्रासोज सुदी १४ । त्रे० सं०२०६१ । स्र भण्डार ।

विशेष-आमेर मे प्रतिलिपि हुई थी।

३७०१. प्रति सं०३ । पत्र मं०१२ । ले० काल × । ते० सं० २५७ । व्य भण्डार ।

३७०२. श्रीपालरास — जिनहर्पगिए। पत्र तं० १०। ग्रा० १०४४ई इंच। मापा-हिन्दी | विषय-रासा (श्रीमाल रासा की कथा है)। र० काल स० १७४२ चैत्र बुदी १३। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं० ५३०। अ भण्डार।

विशेष—ग्रादि एवं मन्त भाग निम्न प्रकार है—

श्रीजिनाय नमः ।। ढाल सिंघनी ।।

चउवीसे प्रणामुं जिर्णराय, जास पसायड नयनिधि पाय।
सुयदेवा धरि रिदय मभारि, कहिस्यु नवपदनउ श्रधिकार।।
मत्र जत्र छइ श्रवर श्रनेक, पिणि नवकार समंउ नहीं एक।
सिद्धचक नवपद सुपसायइ, सुरा पाम्या श्रीपाल नररायइ।।
श्राविल तप नव पद संजोग, गलित सरीर थयो नीरोग।
तास चरित्र कहु हित श्राणी, सुिंगुज्यो नरनारी मुक्त वाणी।।

ग्रन्तिम----

श्रीपाल चरित्र निहालनइ, सिद्धचक्र नवपद धारि ।
ध्याईयइ तउ सुख पाईयई, जगमा जस विस्तार ॥६५॥
श्री गछखरतर पति प्रगट श्री जिनचन्द्र सरीम ।
गिए शाति हरप वाचक तराो, कहइ जिनहरप मुसीस ॥६६॥
सतरै वयालीसै समै, चिंद चैत्र तेरिस जाए।
ए रास पाटएा मा रच्यो, सुराता सदा कल्याएा ॥६७॥
इति श्रीपाल रास सपूर्या। पद्य स० २८७ है।

३७०३. प्रति स० २। पत्र सं० १७। ले० काल स० १७७२ भादवा बुदी १३। वै० स० ७२२। हा भण्टार।

३७०४ पट्लेश्यावेलि—साह लोहट । पत्र सं० २२ । ग्रा० ५२ ४४ ई इंच । भाषा-हिन्दो । विषय-सिद्धात । र० काल सं० १७३० ग्रासोज सुदी ६ । तेर्० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० ५० । मा भण्डार ।

रेअ०४. सुकुमालस्वामीरास— ब्रह्म जिनदास । पत्र सं० ३४ । ग्रा० १००० ४४०० इच । भाषा— हिन्दी गुजराती । विषय—रासा (सुकुमाल मुनि का वर्णन)। ले० काल स० १६३४ । पूर्ण। वे० स ३६६ । अप्रभण्डार।

२७०६. सुदर्शनरास—ब्रह्म रायमञ्जा । पत्र स० १३ । ग्रा० १२×६ इद्या भाषा-हिन्दी । विषय-रासा (मेठ सुदर्शन का वर्णन है)। र० काल सं० १६२१ । ले० काल स० १७५६ । पूर्णा । ने० सक १०४६ । ग्र्र भण्डार ।

विशेप-साह लालचन्द कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

३७०७. प्रति स०२। पत्र स० ३१। ले० काल सं० १७६२ सावरण सुदी १०। वे० सं० १०६। पूर्सा भाभण्डार। फागु रासा एवं वेलि साहित्य]

३६७

३७०८. सुभौमचकवर्त्तिरास—ब्रह्मजिनदास । पत्र सं० १३ । ग्रा॰ १०३×५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल \times । ले॰ काल $\hat{\times}$ । पूर्ण । वे॰ सं० १६२ । व्य भण्डार ।

३७०६. हमीररासी—महेश कवि । पत्र सं० ८८ । ग्रा० ६×६ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-रासा (ऐतिहासिक) । र० काल × । ले० काल सं० १८८३ श्रासीज सुदी ३ । श्रपूर्ण । वे० सं० ६०४ । क भण्डार ।



विषय- गरिगत-शास्त्र

३७१०. गिष्तित्तासमाला—हरदन्त । पत्र स० १४ । आ० ६३×८ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-गिष्तिशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४० । ख भण्डार ।

३७११. गिंग्तिशास्त्र ' "। पत्र स० ६१। ग्रा० ६imes३ इख्र । भाषा- सस्कृत । विषय-गिंग्ति । र० काल imes । तुर्गा । वे० सं० ७६ । च भण्डार ।

२७१२ गिर्मितसार—हेमराज । पत्र स० ५ । आ० १२४८ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-गिर्मित । र॰ काल ४ । ले॰ काल ४ । अपूर्म । वे॰ स॰ २२२१ । आ भण्डार ।

विशेष-हाशिये पर मुन्दर बेलबूटे है। पत्र जीर्रा हैं तथा बीच मे एक पत्र नहीं है।

३७१३. पट्टी पहाङों की पुस्तक " । पत्र स० ४७। म्रा० ६×६ ४२ । भाषा-हिन्दी । विषय-गिरात । र० काल × । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० स० १६२८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के पत्रों में खेतों की डोरी म्रादि डालकर नापने की विधि दी है। पुन. पत्र १ में ३ तक मिंधों वर्ण समाम्नाय.। म्रादि की पाचों सिंधथों (पाटियों) का वर्णन है। पत्र ४ में १० तक चािएक्य नीति के क्लोक है। पत्र १० से ३१ तक पहाड़े है। किसी २ जगह पहाड़ों पर सुभापित पद्य है। ३१ में ३६ तक तील नाउ के ग्रुरु दिये हुये है। निम्न पाठ मौर हैं।

१. हरिनाममाला-शङ्कराचार्य । सस्कृत पत्र ३७ तक।

२. गोकुलगांवकी लीला— हिन्दी पत्र ४५ तक।

विशेष — कृष्ण ऊधव का वर्णन

३ सप्तरलोकीगीता—

पत्र ४६ तक |

४. स्नेहलीला-

पत्र ४७

(अपूर्ण)

३७१४. राजूप्रमाण्""। पत्र सं० २। ग्रा० ५३×४ इखा भाषा-हिन्दी । विषय गिणतशास्त्र । र० काल × । पूर्ण । वे॰ सं० १४२७ । श्रा भण्डार ।

३७१४. लीलावतीभाषा—मोहनमिश्र । पत्र स० ६ । ग्रा० ११×६ इ'च । भाषा-हिन्दी । विषय-गिरातशास्त्र । र० काल सं० १७१४ । ले० काल सं० १६३६ फाग्रुसा बुदी ६ । पूर्सा । वे० म० ६४० । श्र्य भण्डार ।

विशेष-लेखक प्रशस्ति पूर्ण है

३७१६. लीलावतीभाषा—च्यास सथुरादास । पत्र सं०३। ग्रा० ६४४३ डच । भाषा-हिन्दी। विषय-गिर्मातशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ६४१ । क भण्डार ।

३७१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५५ । ले॰ काल 🗙 । ते॰ सं० १४४ । व्य भण्डार ।

३७१८. लीलावतीभापा ""। पत्र सं० १३ । आ० १३४८ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-गिर्णित । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० स० ६७१ । च भण्डार ।

३७१६. प्रति सं०२। पत्र स०२७। ले॰ काल ×। ग्रपूर्ण। वे० सं०१६४२। ट भण्डार।
३७२०. लीलावती—भास्कराचार्य। पत्र स०१७६। ग्रा०११३×५ इंच। भाषा-सस्कृत।
विषय-गिर्गत। र० काल ×। ले॰ काल ×। पूर्ण। वे० स०१३६७। त्र्य भण्डार।

विशेष-प्रित संस्कृत टीका सहित सुन्दर एवं नवीन है।

३७२१. प्रति स०२। पत्र स०४१। ले० काल स०१८६२ भादवा बुदी २। वे० सं० १७०। ख

विशेष—महाराजा जगतिसह के शासनकाल मे माए।कचन्द के पुत्र मनोरथराम सेठी ने हिण्डौन मे प्रति-लिपि की थी।

३७२२. प्रति सं० ३। पत्र स० १४४। ले० काल ×। वे० से० ३२६। च भण्डार।

किशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ३२४ से ३२७ तक) ग्रीर है।

३७२३. प्रति सं० ४। पत्र स० ४८। ले० काल सं० १७६४। वे० सं० २१६। मा भण्डार।

किशेष—इसी भण्डार मे २ ग्रपूर्ण प्रतिया (वे० सं० २२०, २२१) ग्रीर हैं।

३७२४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४१। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० स० १६६३। ट भण्डार।



विषय इतिहास

-*}-{+

३७२४. त्राचार्यो का व्योरा " । पत्र सं० ६। म्रा० १२३४४३ टच । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १७१६ । पूर्ण । वे० स० २९७ । ग्व भण्डार ।

विशेष--सुखानन्द सीगाएगी ने प्रतिलिपि की थी। इसी वेप्टन मे १ प्रति ग्रीर है।

३७२६. खंडेलवालोत्पत्तिवर्णन " " । पत्र स० ८ । म्रा० ७४४ दञ्ज । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० १५ । म्ह भण्डार ।

विशेप--- ५ गोत्रो के नाम भी दिये हुये है ।

३७२७ गुर्वावलीवर्णन "" । पत्र स० ५ । ग्रा० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दा , विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३० । व्य भण्डार ।

३७२८. चौरासीज्ञातिछ्दः । पत्र स० १। म्रा० १०४५३ दञ्ज । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० स० १६०३। ट भण्डार ।

३७२६. चौरासीजाति की जयमाल-विनोदीलाल । पत्र स॰ २। आ॰ ११×५ दृखा भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल 🗴 । ले० काल सं० १८७३ पौप बुदी १। पूर्ण । वे० स० २४१। छ भण्डार।

३७३०. छठा श्रारा का विस्तार "। पत्र स० २। ग्रा० १०३×४ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१८६ । त्र भण्डार ।

३७३१ जयपुर का प्राचीन ऐतिहासिक वर्णन "। पत्र स०१२७। श्रा०६४६ इ.च.। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ४। ले० काल ४। ग्रपूर्ण। वे० सं०१६८६। ट मण्डार।

विशेष-रामगढ सवाईमाधोपुर म्रादि वसाने का पूर्ण विवरण है।

३७३२ जैनबद्री मृडबद्री की यात्रा—भ० सुरेन्द्रकीित्त । पत्र सं०४ । ग्रा० १०३४ ६ च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ३०० । ख भण्डार ।

३७३३. तीर्थङ्करपरिचय" " । पत्र स० ४ । आ० १२×५३ ई च । भाषा-हिन्दो । विषय-इतिहास । र० काल × । ल० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६४० । आ भण्डार ।

३७२४. तीर्थेद्धरों का अन्तराल " । पत्र सं० १ । आ० ११×४३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल सं० १७२४ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २१४२ । अ अण्डार । ३७३४. दादूपद्यावली """। पत्र मं० १। ग्रा० १०४३ इ'च। मापा-हिन्दो । विषय-इतिहाम। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं० १३६४। आ भण्डार।

दादूजी दयाल पट गरीव मसकीन ठाट। जुगलवाई निराट निरागै विराज ही।।

बलनींस कर पाक जसी चावी प्राय टाक। बड़ो हू गोपाल ताक गुरुद्वारे राजही ॥

सागानेर रजवसु देवल दयाल दास । घडसी कडाला वसे घरम कीया जही ॥

र्डंड वैंह्र जनदास तेजानन्द जोधपुर । मोहन सु भजनीक श्रासोपनि वाज ही ।।

यूलर मे माधोदास विदाध मे हरिसिंह । चतरदास सिंध्यावट कीयो तनकाज ही ।।

विहाणी पिरागदास डोडवानै है प्रसिद्ध । सुन्दरदास जू सरसू फतेहपुर छाजही ।।

बाबो वनवारी हरदास दोऊ रतीय मैं। साधु एक माडोडी मैं नीके नित्य छाजही।।

सुदर प्रहलाद दास घाटडैसु छीड़ माहि । पूरव चतरभुज रामपुर छाजही ।। १ ।।

निराणदास माडाल्यौ सडाग माहि । इकलौद रणतभवर डाढ चरणदास जानियौ।

हाडीती गेगाड जामें माखूजी मगन भये।
जगोजी भडीच मध्य प्रचाधारी मानियी।

लालदास नायक सो पीरान पटग्णदास ।

फोफली मेवाड माहि टीलोजी प्रमानियो ॥

साधु परमानद इदोखली मे रहे जाय। जैमल चुहाए। भलो खालड हरगानियौ।।

जैमल जोगो कुछाहो वनमाली चोकन्यौस । साभर भजन सो वितान तानियौ ।।

मोहन दफतरीस मारोठ चिताई भली। रुघनाथ मेडतैस् भावकर ग्रानियौ ॥ कालैडहरै चत्रदास टीकोदास नागल में। भोटवाडै भाभूमाभू लघु गोपाल धानियी ।। श्रावावती जगनाथ राहोरी जनगोपाल I वाराहदरी सतदास चावढ्यलु भानियौ।। श्राघी में गरीबदास भानगढ माधव कै। मोहन मेवाडा जोग साधन सी रहे है।। टहटडे में नागर निजाम हु भजन कियो। दास जग जीवन चौंमा हर लहे हैं।। मोहन दरियायीसो सम नागरचान मध्य। वोकडास सत जूहि गोलगिर भये है।। चैनराम कासीता मे गोदेर कपलमूनि । स्यामदास कालाएगींसू चोड के मे ठये हैं।। सींक्या लाखा नरहर श्रलूदै भजन कर। महाजन खडेलवाल दादू गुर गहे हैं।। पुररादास ताराचन्द म्हाजन सुम्हेर वाली। श्राघी मे भजन कर काम क्रोघ दहे है।। रामदास राखीवाई क्राजल्या प्रगट भई। म्हाजन डिगाइचसू जाति बोल सहे है।। वावन ही थाभा श्रर वावन ही म्हंत ग्राम। दादूपथी चत्रदास सुने जैसे कहे हैं।। ३।। जै नमी गुर दादू परमातम श्रादू सब सतन के हितकारी। में श्रायो सरनि तुम्हारी ।। टेक ।। जै निरालंब निरवाना हम मत तै जाना। संतिन को सरना दीजै, ग्रव मोहि ग्रपनू कर लीजै ॥१॥ सबके ग्रंतरयामी, श्रव करो कृपा मोरे स्वामी श्रवगति श्रवनासी देवा, दे चरन कवल की सेवा ॥२॥

जै दादू दीन दयाला काढो जग जजाला ।

सतिनत ग्रानद मे बासा, गानै वखतावरदासा ॥३॥

सोरठ—

राग रामगरी-

ग्रैमे पीव क्यू पाडये, मन चंचल भाई।
ग्राख मीच मूनी भया मंछी गढ काई।।टेक।।
छापा तिलक बनाय करि नाचे ग्रह गावे।
ग्रापण तो समभै नहीं, ग्रौरा समभावे।।१।।
भगति करे पाखंड की, करणी का काचा।
कहै कचीर हरि क्यू मिले, हिरदे नहीं साचा।।२।।

३७३६ देहली के बादशाहों का व्यौरा"""। पत्र सं० १६। ग्रा० ५३×४ इख्र । भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६। भा भण्डार

३७३७ पद्धाधिकार: । पत्र स० ५ । ग्रा० ११×४३ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० १६४७ । ट भण्डार ।

विशेष--जिनमेन कृत धवल टीका तक का प्रारम्भ मे ग्राचार्यो का ऐतिहासिक वर्णन है।

३७३८. पट्टावली "" पत्र सं० १२ । आ० ५×६ । इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । वे० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३० । भा भण्डार ।

विशेष—दिगम्बर पट्टाविल का नाम दिया हुआ है। १८७६ के संवत् की पट्टाविल है। अन्त मे खंडेलवाल वंशोत्पत्ति भी दी हुई है।

३७३६. पट्टाविलः । पत्र सं० ४। ग्रा० १०३ ×५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल ×। अपूरा । वे॰ सं० २३३ । छ भण्डार ।

विशेप--सं० ८४० तक होने वाले भट्टारवो का नामोल्लेख है।

३७४०. पट्टावितः । पत्र तं॰ २। म्रा० ११३×५३ डखा भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। २० काल ×। ले॰ काल ×। म्रपूर्ण। वे॰ सं॰ १५७। छ भण्डार।

विशेष—प्रथम चौरासी जातियों के नाम है। पीछे सवत् १७६६ में नागौर के गच्छ से अजमेर का गच्छ निकला उसके भट्टारकों के नाम दिये हुये हैं। स० १५७२ में नागौर से अजमेर का गच्छ निकला। उसके सं० १८५२ तक होने वाले भट्टारकों के नाम दिये हुये हैं।

३७४१. प्रतिष्ठाकुंकुंमपत्रिका''' ''''। पत्र सं०१ । ग्रा० २५×६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४५ । छ भण्डार । विशेष—सं १६२७ फागुन मास का कुंकुमपत्र पिपलीन की प्रतिष्ठा का है। पत्र कार्तिक बुदी १३ का लिखा है। इसके साथ स० १६३६ की कुकुमपत्रिका छपी हुई शिक्षर सम्मेद की और है।

३७४२. प्रतिष्ठानामावितः प्राप्त स०२०। ग्रा०६४७ इच। भाषा-हिन्दी। त्रिपय-उतिहाम। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं०१४३। छ भण्डार।

३७४३. प्रति सं०२। पत्र मं०१८। ले० काल 🗴 । वे० म०१८३। छ भण्डार।

३७४४. बलात्कारगण्गुर्वाविलि""। पत्र स० ३। ग्रा० ११३×४५ दञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०६ । श्र भण्डार ।

३७४८. भट्टारक पट्टावित । पत्र सं० १। ग्रा० ११४५३ दश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० कान ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० सं० १८३७ । श्च भण्डार ।

विशेप—सं० १७७० तक की भट्टारक पट्टाविल दी हुई है।

३७४६. प्रति सं०२ । पत्र सं०६ । ले० काल 🗴 । वे० सं०११८ । ज भण्डार ।

विशेष--संवत् १८८० तक होने वाले भट्टारको वे नाम दिये है।

३७४०. यात्रावर्णनः ""'। पत्र स० २ से २६ ' आ० ६×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१४ । ड भण्डार ।

३७४१. रथयात्राप्रभाव-स्त्रमोत्तकचंद्। पत्र स०३ । ग्रा० १०१×५ दव । भाषा-सम्कृत। विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १३० । त्रा भण्डार।

विशेष--जयपुर की रथयात्रा का वर्रान है।

११३ पद्य हैं- ग्रन्तिम--

एकोनिविश्वतिशतेवश सहावर्षे मासस्यपश्चभी दिनेसित फाल्गुनम्य श्रीमिजनेन्द्र वर सूर्यरथस्ययात्रा मेलायक

जयपुर प्रकटे वसूव ॥११२॥

रथयात्राप्रभावोऽय कथितो दृष्ट्यूर्वकः

।। इति रथयात्रा प्रभाव समाप्ता ।। गुभ भूयात् ।।

नाम्ना मौलिवयचन्द्रे ए। साहागोत्रे या संमूदा ११११३।।

३०४२. राजप्रशस्ति"""। पत्र सं० ४ । ग्रा० ६×४६ ड च । भाषा-सस्कृत । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १८६४ । श्रा भण्डार ।

विशेष—दो प्रशस्ति (अपूर्ण) हैं अर्जिका श्रावक वनिता के विशेषण दिये हुए हैं।

३७४३. विज्ञप्तिपत्र—हंसराज । पत्र सं० १ । ग्रा० ८×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल स० १८०७ फागुन सुदी १३ । पूर्ण । वे० म० ५३ । भा भण्डार ।

विशेष—भोपाल निवासी हसराज ने जयपुर के जैन पंची के नाम अपना विज्ञिसिपत्र व प्रतिज्ञा-पत्र लिखा
है। प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री सवाई जयपुर का सकल पच साधर्मी बडी पंचायत तथा छोटी पचायत का तथा दीवानजी साहिब का मन्दिर सम्बन्धी पचायत का पत्र ग्रादि समस्त साधर्मी भाइयन को भोपाल का वासी हंसराज की या विज्ञिति है सो नीका ग्रवधारन की ज्यो । इसमे जयपुर के जैनो का ग्रच्छा वर्णान है । ग्रमरचन्दजी दीवान का भी नामोल्लेख है । इसमे प्रतिज्ञा पत्र (ग्राखडी पत्र) भी है जिसमे हसराज के त्यागमय जीवन पर प्रकाश पडता है । यह एक जन्म-पत्र की तरह गोल सिमटा हुग्रा लम्बा पत्र है । सं० १८०० फाग्रन सुदी १३ ग्रुख्वार को प्रतिज्ञा ली गई उसी का पत्र है ।

३७४४. शिलालेखसंप्रहः "। पत्र सं० ६ । ग्रा० ११४७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-इतिहास । र० काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० सं० ६६१ । त्र्य भण्डार ।

विशेष---निम्न लेखो का सग्रह है।

- १. चालुक्य वंशोरात्र पुलकेशी का शिलालेख।
- २ भद्रवाहु प्रशस्ति
- ३. मिल्लिपेसा प्रशस्ति

६७४४. श्रावक उत्पत्तिवर्णान ""। १ सं०१। ग्रा० ११×२८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०१६०८। ट भण्डार।

विशेष-चौरासी गौत्र, वंश तथा कुलदेवियो का वर्णन है।

३७४६. श्रावकों की चौरासी जातियां "। पत्र सं०१। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०७३१। स्त्र भण्डार।

३७४७. श्रावकों को ७२ जातियां ृःःः। पत्र सं०२। ग्रा०१२×५३ इ च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०२०२६। श्र भण्डार।

बिशेप-जातियों के नाम निम्न प्रकार है।

१. गोलाराढे २. गोर्लासघाडे ३ गोलापूर्व ४. लवेचु ५ जैसवाल ६. खंढेलवाल ७. वघेलवाल ५. ध्रगरवाल, ६. सहलवाल, १० असरवापोरवाड, ११. वोसखापोरवाड, १२. दुसरवापोरवाड, १३. जागडापोरवाड, १४. परवार, १५. वरहीया, १६. भैसरपोरवाड, १७. सोरठीपोरवाड, १८. पद्मावतीपोरंभा, १६. खयड, २०. घुसर

२१. वाहरमेन, २२ गहोड, २३ श्रग्णाय क्षात्री २४. सहाग्ण, २४. ग्रजोब्यापुरी, २६. गोरवाड, २७. विद्वलस्वा, २८. कठनेरा, २६. नाम, ३० गुजरपल्लीवाल, ३१. घीकडा, ३२ गागरवाडा, ३३ वारवाट, ३४. खढेरवाल, ३५ हर सुला, ३६ नेगडा, ३७ सहरीया, ३६ मेवाडा, ३६ खगडा, ४०. चीतोडा, ४१ नरमगपुरा, ४२ नागदा, ४३. बाव, ४४. हमड, ४५. रायकवाडा, ४६. बदनोरा, ४७ दमग्पश्रावक, ४६. पत्रमश्रावक, ४६ हलधरश्रावक, ५०. सादरश्रावक, ५१. हमर, ५२ लत्रर, ५३ ववल, ५४. वलगारो, ५५ कर्मश्रावक, ५६ वरिकर्मश्रावक ५७. वेमर ५६. सुदेवज, ५६. वलशीगुल, ६०. कोमडी, ६१ गगरका, ६२. ग्रनपुर, ६३ तुलाश्रावक, ६४. कन्त्रगश्रावक, ६५. हेवगाश्रावक, ६६ भोगाश्रावक ६७. सोमनश्रावक, ६६ वाउदाश्रावक, ६६ नंगवलीश्रावक, ७०. पग्रीसगा, ७१ वगीरिया, ७२. काकलीवाल,

नोट--हुमड जाति को दो बार गिनाने मे १ सरया बढ गई है।

३७४८ श्रुतस्कंध- व्र० हेमचन्द्र । पत्र स० ७ । आ० ११ रे४ उच । भाषा-प्रावृत्त । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५१ । स्त्र भण्डार ।

३७४६. प्रति सं० २ | पत्र स० १० | ले० काल × । वे० सं० ७२९ । ऋ भण्डार ।

३७६०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल 🗴 । ते० स० २१६१। ट भण्डार।

विशेप--पत्र ७ से ग्रागे श्रुतावतार श्रीधर कृत भी है, पर पत्रो पर ग्रक्षर मिट गये है।

३७६१. श्रुतावतार—पं० श्रीधर । पत्र स० ५ । आ० १०×४३ डच । भाषा-सस्कृत । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६ । स्त्र भण्डार ।

३७६२. प्रति सं०२।पत्र स०१०। ले० काल स०१८६१ पीप मुदं११। वे० सं०२०१। ह्य भण्डार।

विशेष-चम्पालाल टोग्या ने प्रतिलिपि की थी।

३७६३ प्रति स०३। पत्र सं० ४। ले० काल 🗙 । त्रे० स० ७०२। इ भण्डार।

३७६४. प्रति सं० ४ । पत्र स० १ । ले० काल 🗶 । अपूर्ण । वे० न० ३५१ । च भण्डार ।

३७६४. संघपचीसी-द्यानतराय । पत्र स० ६ । ग्रा० ८४५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल ४ । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वे० स० २१३ । ज भण्डार ।

विशेष—निर्वागकाण्ड भाषा भेया भगवतीदास कृत भी है।

३७६६. सवत्सरवर्णन " । पत्र स०१ से ३७ । ग्रा० १०३×४ई इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-रतिहास । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ७६५ । ड भण्डार ।

į.

३७६७. स्थूलभद्र का चौमासा वर्णन" ""। पत्र सं०२ । ग्रा० १०४४ इंच। भाषा-िन्दी। विषय-इतिहास। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण। वे० सं०२११८ । स्त्र भण्डार।

ईंडर आवा आवली रे ए देसी

सावण मास सुहावणो रे लाल जो पीउ होवे पास। अरज करूं घरे भ्रावजो रे लाल हु छूं ताहरी दास। चत्र नर ग्रावो हम चर छा रे सुगरा नर तू छ प्रारा ग्राधार ।।१।। भादवड़े पीउ वेगली रे लाल हूं कीम करूं सरागारे। ग्ररज करूं घर ग्रावजो रे लाल मोरा छंछत सार ॥२॥ ग्रासोजा मासनी चांदगी रे लाल फुलतगी वीछाइ सेज। रंग रा मत कीजिय रे लाल श्राणी हीयड़े तेज ॥३॥ कातीक महीने कामीनि रे लाल जो पीउ होने पास । संदेसा सयरा भरा रे लाल ग्रलगायो केम ॥४॥ नजर निहालो वाल हो रे लाल ग्रावो मीगसर मास । लोक कहावत कहा करो जी पीउड़ा परम निवास ॥५॥ पोस बालम वेगलो रे लाल ग्रवडो मूज दोस। ं परीत पनोतर पालीये रे लाल श्राणी मन मे रोस ॥६॥ सीयाले ग्रती घर्णो दोहलो रे लाल ते माहे वल माह। पोताने घर ग्रावज्यो रे लाल ढीलन कीजे नाह। ७॥ लाल गुलाल अवीरस्रं रे लाल खेलए। लागा लोग। तुज विरा मुज नेइहा एक्ली रे लाल फाग्रुस जाये फोक ॥ ।।।। सुदर पान सुहामगाो रे लाल कुल तगाो मही मास। चीतारया घरे ग्रावज्यो रे लाल तो करसु गेह गाट ॥६॥ बीसारयो न वीसरे रे लाला जे तुम वोल्या बोल । वेसाखे तुम नेम खुंरे लाल तो वजउ ढोल ॥१०॥ केहता दीसे कामो रे लाल काइ करावी वेठ। ढीठ वर्णो हुने काहा करो लाल म्राछी लागो जेठ ॥११॥

श्रसाढो घरमुमछोरे लाल बीच बीच जबुके बीजली रे लाल ।

तुज बीना मुज नैहारे लाल धरम श्रावे खीज ।।१२।।

रे रे सखी उतावली रे लाल सजी सोला सए।गार ।

धेर बली पंथी सुदर्गरे लाल थे छोडी नार ।।१३।।

चार घढी नी श्रव छकी रे लाल श्रायो मास श्ररसाढ ।

कामए। गालो कंत जी रे लाल सखी न श्राव्यो श्राज ।।१४।।

ते उठी उलट धरी रे लाल बालम जीवे श्रास ।

थूलभद्र गुरु श्रादेस थी रे लाल ऐह बठ्यो चीमास ।।१५।।

३७६८. हमीर चौपई " " पत्र सं० १३ से ३७ । ग्रा० ८४६ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १४१६ । ट भण्डार । विशेष—रचना मे नामोल्लेख कही नहीं है । हमीर व ग्रलाउद्दीन के युद्ध का रोचक वर्णन दिया हुन्ना है



विषय- स्तोत्र साहित्य

३७६६. त्र्रकृतंकाष्ट्रकः । पत्र सं० ४। ग्रा• ११३×५ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५०। ज भण्डार।

३७७०. प्रति सं०२। पत्र सं०२। ले० काल 🗴 । वे० सं०२५। व्य मण्डार।

३७०१. अकलकाष्ट्रकभाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० २२ । ग्रा० ११६४५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल सं० १९१५ श्रावण सुदी २ । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० ५ । क भण्डार ।

विशेष-इसी मण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ६) ग्रीर हैं।

३७८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८ । ले० काल 🗙 । वे० सं० ३ । ड भण्डार ।

३७७३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १९१५ श्रावण सुदी २ । वै० सं० १८७ ॥ च भण्डार।

३७७४. श्रजितशांतिस्तवन """। पत्र सं० ७ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १६९१ श्रासोज सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३५७ । व्य भण्डार ।

विशेष--प्रारम्भ मे भक्तामर स्तोत्र भी है।

३७७४. ऋजितशांतिस्तवन—निद्षेशा। पत्र सं० १५। ग्रा॰ ५३४४ इ'च । भाषा-प्राकृत। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५४२। श्र भण्डार।

३७७६. श्रनाघीऋषिस्वाध्याय" ""। पत्र सं०१। श्रा० ६३×४ इख्र। भाषा-हिन्दी गुजराती। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०१६०८। ट भण्डार।

३ऽ७७. अ्रतादिनिधनस्तोत्र । पत्र सं० २ । ग्रा० १० \times ४६ इंच । सापा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल \times । पूर्ण । वै० सं० ३६१ । व्य भण्डार ।

३७७८. श्ररहन्तस्तवनः ""। पत्र सं० ६ से २४। ग्रा० १०×४ है इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल सं० १६५२ कार्तिक सुदी १० । ग्रपूर्ण । वे० सं० १६५४ । श्र भण्डार ।

३७७६. श्रवंतिपारवेजिनस्तवन—हर्पसूरि । पत्र सं० २ । श्रा० १०×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । वा भण्डार ।

विशेप-- ७ पद्य हैं।

३७८०. त्रात्मिनिदास्तवन—रत्नाकर । पत्र सं०२। श्रा० ६३×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स०१७ । छ भण्डार ।

विशेष—२५ श्लोक है । ग्रन्थ ग्रारम्भ करने से पूर्व पं० विजयहंस गिए। को नमस्कार किया गया है । पं० जय विजयगिए। ने प्रतिलिपि की थी।

३७८१. श्राराधना"" "'। पत्र स० २ । ग्रा० ८४४ ई च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । क भण्डार ।

३७=२. इष्ट्रोपदेश--पूज्यपाद । पत्र स० ४ । म्रा० ११३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०४ । म्र भण्डार ।

विशेष-सस्कृत मे संक्षिप्त टीका भी हुई है।

३७५३ प्रति सं०२। पत्र सं०१२। ले० काल 🗴। वे० सं०७१। क भण्डार।

विशेप-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं० ७२) ग्रीर है।

३७८४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल 🗶 । वे० सं० ७। घ भण्डार।

विशेष-देवीदास की हिन्दी टन्वा टीका सहित है।

३७=४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० ६० । ङ भण्डार ।

विशेष--सघी पत्रालाल दूनीवाले कृत हिन्दी श्रर्थ सहित है। सं० १६३५ मे भाषा की थी।

३७≒६. प्रति सं०४। पत्र सं०४। लि० काल स०१६७३ पौप बुदी ७। वे० स०४० ८० । व्य भण्डार।

विशेप-वेगीदास ने जगरू मे प्रतिलिपि की थी।

३७८७. इष्टोपदेशटीका-श्राशाधर । पत्र स॰ ३६ । ग्रा० १२३×५ इव । भाषा-संस्कृत । तिपय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७० । क भण्डार ।

३७८८. प्रति सं०२। पत्र स०२४। ले० काल ×। वे० सं० ६१। ड भण्डार।

३७८६. इष्टोपदेशभाषा "" । पत्र सं० २५ । ग्रा० १२४७३ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२ । इ. भण्डार ।

विशेष--ग्रन्थ को लिखाने व कागज मे ४॥=)॥ व्यय हुये हैं।

३७६०. उपदेशसन्माय-ऋषि रामचन्द् । पत्र सं० १ । ग्रा० १०४५ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-तोत्र । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० १८६० । आ भण्डार । स्तोत्र साहित्य

३७६१. उपदेशसङ्माय-रंगविजय। पत्र सं०४। ग्रा० १०×४ई डंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८३। स्र भण्डार।

विशेप—रंगविजय श्री रत्नहर्ष के शिष्य थे।

३७६२. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० २१६१ । अ भण्डार ।

विशेप---३रा पत्र नही है।

३७६३. उपदेशसन्माय—देवादिल । पत्र सं० १ । ग्रा० १०×४२ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तीत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६२ । स्र मण्डार ।

३७६४. उपमर्गहरस्तोत्र-पूर्णचन्द्राचार्य। पत्र सं० १४ । म्रा० ३३४४३ डब्झ । भाषा-संस्कृत प्राकृत । विषय-स्तोत्र। र० काल 🗴 । ले० काल सं० १५५३ म्रासोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४१ । च भण्डार ।

विशेष—श्री वृहद्गच्छीय भट्टारक गुरादेवसूरि के शिप्य गुरानिधाम ने इसकी प्रतिलिपि की थी। प्रति यन्त्र सहित है। निम्नलिखित स्तोत्र हैं।

नाम स्तोत्र कर्त्ता भाषा पत्र विशेष १. ऋजितशांतिस्तवन— × प्राकृत संस्कृत १ से ६ ३६ गाथा विशेष—ग्राचार्य गोविन्दकृत संस्कृत वृत्ति सहित है।

२. भयहरस्तोत्र--- × संस्कृत ६ से १०

विशेष—स्तोत्र अक्षरार्थ मन्त्र गिमत सिंहत हैं। इस स्तोत्र की प्रतिलिपि सं० १५५३ श्रासोज सुदी १२ को मेदपाट देश मे राएग रायमल्ल के शासनकाल मे कोठारिया नगर मे श्री ग्रुएविवसूरि के उपदेश से उनके शिप्य ने की थी।

३. भयहरस्तोत्र— × ,, ११ से १४

विशेप—इसमे पार्श्वयक्ष मन्त्र गिभत ग्रष्टादश प्रकार के यन्त्र की कल्पना मानतुंगाचार्य कृत दी हुई है। ३७६४. ऋषभदेवस्तुति—जिनसेन। पत्र सं० ७। ग्रा० १०१४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल 🗴। ले० काल 🗴 । पूर्ण। वे० सं० १४६। छ भण्डार।

३७६६. ऋषभदेवस्तुति-पद्मनिद्। पत्र सं० ११। आ० १२×६ई इंच। भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५४६। आ भण्डार।

विशेप—दर्ने पृष्ठ से दर्शनस्तोत्र दिया हुम्रा है। दोनो ही स्तोत्रो के संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुँये हैं।

३७६७. ऋपभस्तुति "" पत्र सं० ५ । आ० १०६ ×५ इंच । भाषा-सम्बत्त । विषय-स्नीत्र । र० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५१ । श्र भण्डार ।

३७६८. ऋपिमंडलस्तोत्र—गौतमस्वामी । पत्र सं० ३ । म्रा० ६५×४ इंच । भाषा-मस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । पे० सं० ३४ । म्रा भण्डार ।

३७६६, प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८५६ । वे० म० १३२७ । स्र भण्टार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ३३८, १४२६, १६००) श्रीर है।

३८००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल ४ । वे० सं० ६१ । क भण्टार ।

विशेष-हिन्दी श्रर्थ तथा मन्त्र साधन विधि भी दी हुई है।

३८०१. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४। ले० काल 🗴 । वे० स० २१।

विशेष-कृष्णालाल के पठनार्थ प्रति लिखी गई थी। ख भण्डार मे एक प्रति (वे० न० २६१) ग्रीर है।

३५०२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल 🗙 । वे० म० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष--इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २६०) ग्रीर है।

३८०३. प्रति सं०६। पत्र सं०२। ले० काल स०१७६८। वे० स०१४। व्य भण्डार।

३८०४. प्रति सं०७ । पत्र सं०७६ से १०१ । ले० काल 🗙 । वे० स० १८३६ । ट भण्डार ।

३८०४. ऋषिमंडलस्तोत्र ""। पत्र स० ४ । ग्रा० ६३×४६ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३०४ । भा भण्डार ।

३८०६. एकास्तरीस्तोत्र—(तकारास्तर) " " । पत्र स०१। ग्रा०११×५ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं०१८६१ ज्येष्ठ सुदी । पूर्ण। वे० स०३३६। आ भण्डार।

३८०७. एकीभावस्तोत्र—वादिराज । पत्र स० ११ । ग्रा० १०×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८८३ माघ कृष्णा १ । पूर्ण । वे० स० २५४ । ग्रा भण्डार ।

विशेष-अमोलकचन्द्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है। प्रदर्शन योग्य है।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १३८) ग्रीर है।

३८०८. प्रति सं०२। पत्र सं०२ से ११। ले० काल Х। पूर्ण। वे० स० २६६। ख भण्डार !

३=०६. प्रति स० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० स० ६३ । ड भण्डार ।

विशेष--प्रति संस्कृत टीका सहित है।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ६४) ग्रीर है।

३८१०. प्रति सं०४। पत्र सं०४। ले० काल 🗴 । वे० सं०५३। च भण्डार।

विशेष---महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी। प्रति सस्कृत टीका तहित है।

इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ५२) और है।

३८११. प्रति सं० ४ । पत्र स० २ । ले० काल ४ । वे० सं० १२ । व्य भण्डार ।

३८१२. एकीभावस्तोत्रभापा-भूधरदास । पत्र सं० ३ । ग्रा० १०३×४३ डंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०३६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--बारह भावना तथा शातिनाथ स्तोत्र ग्रौर है।

३८१३. एकीभावस्तोत्रभाषा-पन्नालाल । पत्र सं० २२ । ग्रा० १२३×५ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल सं० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६४) ग्रीर है।

२८८. एकी भावस्तोत्रभाषा " ' । पत्र सं०१०। ग्रा०७×४ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रं• काल ×। ले॰ काल सं०१९१८। पूर्ण। वे॰ स॰ ३५३। भा भण्डार।

३८१४. श्रोंकारवचितिका "। पत्र सं० ३ । ग्रा० १२३४४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तीत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६४ । क भण्डार ।

३८१६. प्रति सं०२। पत्र सं०३। ले० काल सं० १६३६ ग्रासोज बुदी ४। वे० सं०६६। क

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६७) ग्रीर है।

३८१७. कल्पसूत्रमहिमा" ""। पत्र सं० ४ । ग्रा० ६३८४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-महात्म्य । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

३८९८. कल्या एक — समन्तभद्र । पत्र सं० ४ । त्रा० १०३८४६ दञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र० काल ४ । ले॰ काल ४ । पूर्ण । वे॰ सं० १०६ । इ. भण्डार ।

विशेष- पर्णविवि चडवीसवि तित्ययर,

सुरएार विसहर थुव चलएा।

पुराषु भरामि पंच कल्यारा दिता,

भवियहु शिसुशाह इनकमशा।।

₹---

ग्रन्तिम—

करि कल्लागपुरज जियागाहही,

ग्रगु दिगु चित्त ग्रविचलं ।

कहिय समुच्च एए। ते कविए।,

लिज्जइ इमगुव भव फल ।।

इति श्री समन्तभद्र कृत कल्याग्यक समाप्ता ।।

३८१६. कल्याग्मिन्दिरस्तात्र—कुमुद्चन्द्राचार्थ। पत्र स० ४। आ० १०४४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पार्श्वनाथ स्तवन। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं० ३५१। श्र भण्डार।

विशेष--इसी भण्डार मे ३ प्रतियां (वे० सं० ३५४, १२३६, १२६२) स्रीर हैं।

३८८०. प्रति सं० २ । पत्र मं० १३ । ले० काल 🗴 । वे० स० २६ । ख भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे ३ प्रतिया श्रीर हैं (वै० स० ३०, २६४, २८१)।

३८२१. प्रति सं०३।पत्र स०१६। ले० काल सं०१८१७ माघ सुदी १।वे० सं०६२। च भण्डार।

३८२२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६४९ माह सुदी १५। श्रपूर्ण । वे० सं० २५६। छ भण्डार।

विशेष--- ५वा पत्र नही है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १३४) ग्रीर है।

3=२३. प्रति सं० ४ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १७१४ माह बुदी ३ । वे० सं ७ । मा भण्डार ।

विशेष—साह जोधराज गोदीकाने श्रानदराम से सागानेर मे प्रतिलिपि करवायी थी । यह पुस्तक जोधराज गोदीका की है।

3=२४. प्रति स० ६। पत्र सं० १८। ले० काल स० १७६६। वे० स० ७०। व्य भण्डार।

विशेष—प्रति हर्पकीर्ति कृत संस्कृत टीका सहित है। हर्पकीर्ति नागपुरीय तपागच्छ प्रधान चन्द्रकीर्ति के

३८२४ प्रति स० ७। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १७४६। वे० सं० १६८८। ट भण्डार। विशेष—प्रति कल्यागामञ्जरी नाम विनयसागर कृत सस्कृत टीका सहित है। ग्रन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार

इति सकलकुमतकुमदखडचडचंडरिमश्रीकुमुदचन्द्रसूरिविरचित श्रीकल्याग्गमन्दिरस्तोत्रस्य कल्याग्मञ्जरी टीका सपूर्ण । दयाराम ऋषि ने स्वात्मज्ञान हेतु प्रतिलिपि की थी ।

> ३८२६. प्रति सट ८ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १८६६ । वे० स० २०६५ । ट भण्डार । विशेष—छोटेलाल ठोलिया मारोठ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

?

३८२७. कल्याग्रामंदिरस्तोत्रटीका—पं त्र्याशाघर। पत्र सं ४। ग्रा० १०४४ हे इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० सं० ५३१। स्त्र भण्डार।

३८२८. कल्याग्मिद्रस्तोत्रवृत्ति—देवितिलक । पत्र सं० १५ । श्रा० ६३×४२ इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १० । स्त्र भण्डार ।

विशेष-टीकाकार परिचय-

श्रीउकेशगणाव्यिचन्द्रसहशा विद्वज्जनाह्नादयन्,
प्रवीण्याधनसारपाठकवरा राजन्ति भास्वातर ।
तिच्छज्यः कुमुदापिदेवतिलकः सद्बुद्धिवृद्धिप्रदा.
श्रेयोमन्दिरसस्तवस्य मुदितो वृत्ति व्यधादद्भुत ॥१॥
कल्याणमदिरस्तोत्रवृत्तिः सीभाग्यमञ्जरी ।
वाच्यमानाज्जनैनदाच्चद्राक्कं मुदा ॥२॥
इति श्रेयोमदिरस्तोत्रस्य वृत्तिसमाप्ता ॥

३८२६. कल्याग्रामंदिरस्तोत्रटीका " । पण सं० ४ से ११ । आ० १०४४ हम्म । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । सपूर्ण । वै० सं० ११० । ङ भण्डार ।

३८३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० मं० २३३ । स्न भण्डार । विशेष—रूपचन्द चौधरी क्लेसुं सुन्दरदास अजमेरी मोल लीनी । ऐसा अन्तिम पत्र पर लिखा है।

३-३१. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—पन्नालाल । पत्र सं० ४७ । ग्रा० १२३४५ इक्र । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तीत्र । र० काल सं० १६३० । ले० काल ४ । पूर्ण | वे० स० १०७ । क भण्डार ।

३८३२. प्रति स०२।पत्र सं०३२। ले• काल ४। वे० सं०१०८। क भण्डार।

२८३३. कल्याण्मंदिरस्तोत्रभाषा—ऋषि रामचन्द्र। पन सं० ४। ग्रा० १०४४३ इख्रा भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स० १८७१। टॅभण्डार।

३८२४. कल्याण्मंदिरस्तोत्रभाषाः—वनारसीदास । पत्र स० ८ । ग्रा० ६×३३ इख्न । भाषा— हिन्दी । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२४० । श्र भण्डार ।

३८३४. प्रति स०२। पत्र स०६। ले० काल ४। वे० सं०१११ ह भण्डार।

३८३६. केवलज्ञानीसङ्माय—वितयचन्द्र । पत्र स०२। ग्रा०१०×४१ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स०२१८८ । ऋ भण्डार ।

३८३७. च्रेत्रपालनामावली""" | पत्र सं० ३। ग्रा० १०४४ इ च | भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४४ | व्य भण्डार ।

३८३८ गीतप्रबन्धः । पत्र स० २। म्रा० १०३×४३ इ च । भाषा-मंस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । पूर्ण । वे० स० १२४ । क भण्डार ।

विशेष-हिन्दी मे वसन्तराग मे एक भजन है।

३८६. गीत वीतराग—पिंडताचार्य श्रभिनवचारूकीित्त । पत्र सं० २६ । आ० १०३४६ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल सं० १८८६ ज्येष्ठ बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० स० २०२ । श्रभण्डार ।

विशेष-जयपुर नगर मे श्री चुन्नीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

गीत वीतराग सस्कृत भाषा की रचना है जिसमे २४ प्रबंधों में भिन्न भिन्न राग रागनियों में भगवान ग्रादिनाय का पौरािंग्य ग्रास्थान विशिष्ठ है। ग्रन्थकार की पिंडताचार्य उपाधि से ऐसा प्रकट होता है कि वे ग्रपने समय के विशिष्ठ विद्वान थे। ग्रन्थ का निर्माण कव हुम्रा यह रचना से ज्ञात नहीं होता किन्तु वह समय निश्चय ही मवत् १८८६ से पूर्व है क्यों कि ज्येष्ठ बुदी ग्रमावस्या स० १८८६ को जयपुरस्थ लब्कर के मन्दिर के पाम रहने वाले थी चुन्नीलालजी साह ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की है प्रति सुंदर ग्रक्षरों में लिखी हुई है तथा ग्रुद्ध है। ग्रन्थकार ने ग्रंथ को निम्न रागों तथा तालों में सस्कृत गीतों में ग्रंथा है—

राग रागनी— मालव, गुर्ज्जरी, वसत, रामकली, काल्हरा कर्याटक, देशासिराग, देशवैराही, गुराकरी, मालवगीड, गुर्जराग, भैरवी, विराही, विभास, कान्रो ।

ताल- रूपक, एकताल, प्रतिमण्ड, परिमण्ड, तितालो, ग्रठताल ।

गीतो मे स्थायी, श्रन्तरा, सचारी तथा श्राभोग ये चारो ही चरण हैं इस सबमे ज्ञात होता है कि ग्रन्थकार सस्कृत भाषा के विद्वान होने के साथ ही साथ श्रच्छे सगीतज्ञ भी थे।

३८४०. प्रति सं०२। पत्र सं०३२। ले० काल सं०१६३४ ज्येष्ठ सुदी ८। वे० स०१२५। क

विशेष—संघपित ग्रमरचन्द्र के सेवक माणिक्यचन्द्र ने सुरगपत्तन की यात्रा के ग्रवसर पर ग्रानन्ददाम के वचनानुसार सं• १८८४ वाली प्रति से प्रतिलिपि की थी |

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं० १२६) ग्रीर है।

३८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल 🗙 । वे० सं० ४२ । ख भण्डार ।

उ८४२. गुग्स्तवन मा १५। ग्रा० १२४६ इख्र । भाषा —संस्कृत । विषय -स्तवन । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० सं० १८५८ । ट भण्डार ।

३ - ४३. गुरुसहस्रताम "" "। पत्र स० ११ । ग्रा॰ १०×४ ईं डंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७४६ वैशाख बुदी ६ । पूर्णा । वे० स० २६८ । ख भण्डार ।

3⊏४४ गोम्मटसारस्तोत्र · · । पत्र स० १। ग्रा० ७४५ इख्र । भाषा-नम्कृत । विषय-ग्तोत्र । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण् । वे० सं० १७३। व्य भण्डार ।

३८४ घटघरिनसाणी—जिनहर्ष। पत्र सं० २। ग्रा० १०४५ इंच। भाषा-हिन्दी । विषय-स्तीत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०१। छ भण्डार।

विशेप-पार्श्वनाथ की स्तुति है।

ग्रादि---

सुख संपति मुर नायक परतिप पास जिएांदा है।

जाकी र्छाव काति ग्रनोपम उपमा दोपत जात दिखांदा है।

ग्रन्तिम---

मिद्धा दावा सातहार हासा दे सेवक विलवंदा है।

घग्वर नीसाग्गी पास वखाग्गी गुग्गी जिनहरप कहदा है !

इति श्री घगघर निसाग्गी संपूर्ण ।।

३८६ चक्रेश्वरीस्तोत्र। पत्र स०१। ग्रा०१०३४५ इच। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र। र०काल ४। ले०काल ४। ग्रपूर्ण। वे०स०२६१। ख्र भण्डार।

३८४७. चतुर्विशतिजिनस्तुति—जिनलाभसूरि । पत्र सं० ६ । ग्रा० ८४६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८४ । ख भण्डार ।

३-४८. चतुर्विशतितीर्थङ्कर जयमाल"" । पत्र स०१। ग्रा० १०३×५ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४८। ग्रा भण्डार।

३८४६. चतुर्विशितिस्तवन """। पत्र सं० ४। ग्रा० १० \times ४ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण। वे० स० २२६। व्य भण्डार।

विशेष—प्रथम ४ पत्रो मे वसुधारा स्तोत्र है । पं० विजयगित्ता ने पट्टनमध्ये स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । ३८४०. चतुर्विशतिस्तवन """। पत्र मं० ४ । म्ना० ६३८४ई इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । म्रपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष--१२वें तीर्थङ्कर तक की स्तुति है। प्रत्येक तीर्थङ्कर के स्तवन मे ४ पद्य है।

प्रथम पद्य निम्न प्रकार है-

भन्याभोजिवबोधनैकतार्गे विस्तारिकर्मावली रम्भासामजनभिनदनमहानष्टा पदाभासुरै । भक्त्या वंदितपादपदाविदुपा संपादयाभोजिभता । रभासाम जनभिनंदनमहानष्टा पदाभासुरै ॥१॥

३८४१. चतुर्विशति तीर्थेङ्करस्तोत्र—कमलविजयगिष् । पत्र सं०१५ । ग्रा० १२३४५ डंच। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स०१४६ । क भण्डार ।

विशेष--प्रति सस्कृत टीका सहित है।

३८४२. चतुर्विशतितीर्थेङ्करस्तुति—माघनन्दि । पत्र स० ३ । म्रा० १२×५३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१८ । व्य भण्डार ।

३८४३ चतुर्विशति तीथेद्धरस्तुति""। पत्र स०। ग्रा० १०३×४३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ग्रपूर्ण । वै० सं० १२६१ । स्र भण्डार ।

३८४४. चतुर्विशतितीथङ्करस्तुति"""। पत्र स० ३। ग्रा॰ १२×५ इ च। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २३७ । ध्य भण्डार ।

विशेष--प्रति सस्कृत टीका सहित है।

३८४४. चतुर्विशतितीर्थङ्करस्तोत्र" ""। पत्र स० ६ । ग्रा० ११४४३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तीत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६८२ । ट भण्डार ।

विशेष-स्तोत्र कट्टर वीसपन्थी ग्राम्नाय का है। सभी देवी देवताग्रो का वर्णन स्तोत्र मे है।

३८४६. चतुष्पदीस्तोत्र""। पत्र स०११। ग्रा० ८३४५ डब्र । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वै० सं०१५७५ । भ्रा भण्डार ।

३८४७. चामुण्डस्तोत्र—पृथ्वीधराचार्य। पत्र स० २। ग्रा० ८४४२ इख्र । भाषा-मस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० १३८१ । श्र प्रण्डार ।

३८४८. चिन्तामिणपार्श्वनाथ जयमालस्तवन ""। पत्र सं० ४ | ग्रा॰ ८४३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र॰ काल ४ । पूर्ण । वे॰ स॰ ११३४ । स्त्र भण्डार ।

३८४६. चिन्तामिणपार्श्वनाथ स्तोत्रमंत्रसहित' "। पत्र स० १०। ग्रा० ११४५ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० सं० १०६०। त्र्य भण्डार । ३८६० प्रति सं०२ । पत्र स०६ 'ले० काल सं०१८३० श्रासोज सुदी २ । वे० सं०१८१ । ड भण्डार ।

३८६१. चित्रबधस्तोत्रः "। पत्र सं०३। ग्रा० १२×३६ इख्रं। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २४८। व्य भण्डार।

विशेष-पत्र चिपके हुये है।

३८६२. चैत्यवदना : "। पत्र म० ३ । ग्रा० १२×३१ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । वे० काल × । पूर्ण । वे० म० २१०३ । श्रा भण्डार ।

३८६३. चौदीसस्तवन "। पत्र सं०१। ग्रा०१०×४ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल स०१६७७ फाग्रुन बुदी ७। पूर्ण । वे० स०२१२२ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-वरशीराम ने भरतपुर मे रराधीरसिंह के राज्य मे प्रतिलिपि की थी।

३८६४. छंटसंग्रह" "। पत्र स०६। ग्रा० ११२४४ हुँ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र• काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० स०२०५२ । श्र भण्डार ।

विशेप---निम्न छद हैं---

नाम छंद	नाम कत्ती	पत्र	विशेप
महावीर छंद	शुभचन्द	१पर	×
विजयकीत्ति छद	77	٦ "	×
गुरु छद	? ?	₹ ,,	×
पार्श्व छंद	प्र० लेखराज	₹ 33	×
गुरु नामावलि छद	×	٧ ,,	×
म्रारती संग्रह	न्न० जिनदास	٧ ,,	×
चन्द्रकोत्ति छद .		٧ ,,	×
कृपग्। छंद	चन्द्रकीर्त्ति	¥ "	×
नेमिनाय छंद	शुभचन्द्र	Ę "	×

३८६४. जगन्नाथाष्टक-शिद्धराचार्य। पत्र सं० २। ग्रा० ७४३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । (जैनेतर्र साहित्य)। र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० २३३ । छ भण्डार ।

३८६६. जिनवरस्तोत्र । पत्र सं० ३। ग्रा० ११६४६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र। र० काल ४। ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वे० सं० १०२। च भण्डार।

विशेष-भोगीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

३८६७. जिनगुरामाला" " । पत्र सं० १६ । आ० ८×६ दश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तीत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४१ । स्त भण्डार ।

३७६८. जिनचैत्यबन्दनाः । पत्र स० २। ग्रा० १०४५ इंच। भाषा-संस्कृत । विपर्य-स्तवन। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० सं० १०३५ । श्र भण्डार।

२८६६. जिनदर्शनाष्टक"""। पत्र स०१। ग्रा०१०×४ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वै० सं०२०२६। ट भण्डार।

३८७०. जिनपंजरस्तोत्र''''''। पत्र सं०२। ग्रा० ६२४५३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तीत्र । र० काल 🗴 । पूर्ण । वै० स० २१५४ । ट भण्डार ।

३८९ जिनपंजरस्तोत्र—कमलप्रभाचार्य। पत्र स॰ ३। श्रा॰ ५१४१ इख्र । भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र॰ काल ४। ले॰ काल ४। पूर्ण। वे॰ सं॰ ५६। ख्र भण्डार।

विशेष--प॰ मन्नालाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

३८७२: प्रति स० २ । पत्र सं० २ । ले० काल 🗙 । वे० सं० ३० । वा भण्डार ।

३८७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल 🗴 । वे० सं० २०५ । ह भण्डार ।

३८७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० नाल 🗙 । वे० स० २६५ । म्ह भण्डार ।

स्तोत्र । र० काल 🗙 । ले० काल स० १८६४ । पूर्ण । वै० सं० २०८ । स भण्डार ।

३८७६ जिनवासीस्तवन-जगतराम । पत्र सं०२। आ०११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वे०स०७३३। च भण्डार।

३८७७. जिनशतकटीका—शंबुसाधु । पत्र स० २६ । आ० १०३×४३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तीत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६१ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम— इति शंबु साधुविरचित जिनशतक पजिकाया वाग्वर्गान नाम चतुर्थपरिच्छेद समात । ३८७८ प्रति सं०२। पत्र सं०३४। ले० काल ४। वे० स० ४६८। व्य भण्डार।

३८७४. जिनवरदर्शन-पद्मनिद् । पत्र स० २ । ग्रा० १०३×५ इ ५ । भापा-प्राकृत । विषय-

स्तोत्र साहित्य

३८७६. जिनशतकटीका--नरसिंहभट्ट । पत्र सं० ३३ । आ० ११४४ ई इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल सं० १५६४ चैत्र सुदी १४ । वे० मं० २६ । व्य भण्डार ।

विशेप-ठाकर ब्रह्मदास ने प्रतिलिपि की थी।

३८८०. प्रति सं०२। पत्र सं०५६। ले० काल सं०१६५६ पौप बुदा १०। वे० सं०२००। क

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वें० स० २०१, २०२, २०३, २०४) ग्रीर है।

३८८१. प्रति सं०३। पत्र स० ५३। ले० काल सं० १९१५ भादवा बुदी १३। ने० सं० १००। छ

३८८२, जिनशतकालङ्कार—समंतभन्न। पत्र सं०१४। ग्रा०१३४७६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स०१३०। ज भण्डार।

३८८३ जिनस्तवनद्वात्रिशिका ""। पत्र सं०६। स्रा०६३×४६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स०१८६६। ट भण्डार।

विशेष-गुजराती भाषा सहित है।

३८८४. जिनस्तुति—शोभनमुनि । पत्र स० ६। ग्रा० १००४४६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वै० स० १८७ । ज भण्डार ।

विशेप-प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है।

३८८४. जिनसहस्रनामस्तोत्र—न्त्राशाधर । पत्र सं०१७ । श्रा० ६४४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स०१०७६ । ऋ भण्डार ।

विशेप-इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ५२१, ११२६, १०७६) और है।

३५-६ प्रति सं०२। पत्र सं०५। ले० काल ४। वे० सं० ५७। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५७) ग्रीर है।

२८८७. प्रति सं० ३। पत्र स० १६। ले० काल सं० १८३३ कार्तिक बुदी ४। वे० सं० ११४। च भण्डार।

विशेप-पत्र ६ से ग्रागे हिन्दी मे तीर्थ द्वारो की स्तुति ग्रीर है।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ११६, ११७) ग्रीर हैं।

२८८८ प्रति स०४। पत्र सं०२०। ले० काल 🗙 । अपूर्ण । वे० सं०१२४। 🛱 भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २३३) ग्रीर है।

३८८६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १४। लेंग काल मंग १८६३ ग्रामीज बुदी ४। वेग मंग २८। ज भण्डार।

विशेष—इसके ग्रतिरिक्त लघु सामयिक, लघु स्वयभूम्तोत्र, लघुसहस्त्रनाम एव चैत्यवदना भी है। ग्रंकुरा-रोपण मडल का चित्र भी है।

३८६० प्रति सं०६। पत्र सं०४६। ने० कान मं० १६५३। वे० सं०४७। व्य भण्डार।

विशेष—सवत् सोल १६५३ त्रेपनावर्षे श्रीमूलसघे भ० श्री त्रिद्यानःन्द तत्पट्टे भ० श्री मिह्मभूपण्तत्पट्टे भ० श्री लक्ष्मीचद तत्पट्टे भ० श्रीवीरचंद तत्पट्टे भ० ज्ञानभूपण् तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्र तत्पट्टे भ० वादिचद्र तेपामच्ये श्री प्रभाचन्द्र चेली बाइ तेजमती उपदेशनार्थ बाइ श्रजीतमनी नारायणाग्रामे इद सहस्रनाम स्तोत्र निजकर्म क्ष्मयार्थं लिखितं।

इसी भण्डार से एक प्रति (वै० सं० १८१) श्रीर है।

३८१ जिनसहस्रनामस्तोत्र—जिनसेनाचार्य। पत्र स० २८। ग्रा० १२×५३ इख्र। मापा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण। वे० स० ३३६ । स्त्र भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वेट स० ५३२, ५४३, १०६४, १०६८) ग्रीर है।

३मध्य प्रति सं०२। पत्र सं०१०। ले० काल 🗴। वे० सं०३१। ग भण्डार।

३८६३ प्रति सं०३। पत्र स०६२। ले० काल 🗴। ने० स०११७ क। च भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ११६, ११८) श्रीर है।

३८६४. प्रति स०४। पत्र म०८। ले० कान स०१६०३ ग्रामोज सुदी १३। वे० म० १६५। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० १२५) ग्रीर है।

३८६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३३ । ले० काल 🗴 । वे० सं० २६६ । 🚓 मण्डार ।

विशेष —इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २६७) और है।

३८६ प्रति स०६। पत्र सं० ३०। ले० काल स०१८८४। वै० स ३२०। व्य भण्डार।

विशीय-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३१६) ग्रीर है।

३८७. जिनसहस्रनामस्तोत्र—सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सं०४। ग्रा० १२३८७ इ'च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० स० २८ । घ भण्डार ।

३८८ प्रति सं०२। पत्र स॰ ३। ले० काल सं० १७२६ ग्रापाढ बुदी १०। पूर्गा | वे० सं० ६। मा भण्डार।

विशेष--- पहले गद्य है तथा अन्त मे ५२ व्लोक दिये हैं।

स्तोत्र साहित्य]

ग्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है-

इति श्रीसिद्धसेनदिवाकरमहाकवीश्वरिवर्त्तितं श्रीसहस्रनामस्तोत्रमंपूर्ण । दुवे ज्ञानचन्द से जोधराज गोदीका ने ग्रात्मपठनार्थं प्रतिलिपि कराई थी ।

३८६६. जिनसहस्रनामस्तोत्र "। पत्र स० २६। ग्रा० ११३×५ इ'च। भाषा- संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे०० सं० ५११ । ड भण्डार ।

३६०० जिनमहस्रनामस्तोत्र " । पत्र स०४। ग्रा०१२×५३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं०१३६ । घ भण्डार ।

विशेष —इसके ग्रतिरिक्त निम्नपाठ ग्रीर हैं- घटाकरण मत्र, जिनपजरस्तीत्र पत्रों के दोनो किनारों पर सुन्दर वेलवूटे हैं। प्रति दर्शनीय है।

३६०१. जिनसहस्रनामटीका " ""। पत्र सं० १२१ । ग्रा० १२४५ हे इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३ । क भण्डार ।

विगेष-यह पुस्तक ईश्वरदास ठोलिया की थी।

३६०२. जिनसहस्रनामटीका—श्रुतसागर । पत्र स० १८० । ग्रा० १२ \times ७ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तीत्र । र० काल \times । ले० काल सं० १९५८ ग्रापाढ सुदी १४ । पूर्या । वे० सं० १९२ । क मण्डार ।

३६०३. प्रति सं०२। पत्र स० ४ से १६४। ले० काल 🗙 । अपूर्ण । वे० सं० ६१०। ह भण्डार ।

३६०४. जिनसहस्त्रनामटीका — श्रमरकीर्त्ति । पत्र स० द१ । ग्रा० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८८४ पीष सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० १६१ । श्र भण्डार ।

३६०४. प्रति सं २ । पत्र स० ४७ । ले० काल सं० १७२५ । वे० सं० २६ । च मण्डार ।

विशेष—वध गोपालपुरा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३६०६. प्रति स० ३। पत्र स० १८। ले० काल 🗴 । वे० सं० २०६ । छ भण्डार ।

३६०७. जिनसहस्रनामटीका "" । पत्र सं० ७ । ग्रा० १२×५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र र० काल ×। ले० काल स० १८२२ श्रावरा। पूर्या । वे० स० ३०६ । व्य भण्डार।

३६०८ विषय-स्तोत्र। र० काल सं० १६५६। ले० काल स० १६८४ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० स० २१०। ह भण्डार ।

३६०६ जिनोपकारस्मरण "। पत्र स० १३। श्रा० १२५×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तीत्र। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८७। क भण्डार। ३६१०. प्रति सं० २ | पत्र सं० १७ | ले० काल × | वे० सं० २१२ | ङ भण्डार | ३६११. प्रति सं० ३ | पत्र सं० ७ | ले० काल × | वे० स० १०६ | च भण्डार | विशेप—इसी भण्डार मे ७ प्रतिया (वे० सं० १०७ से ११३ तक) ग्रीर है |

३६१२. सामोकारादिपाठ "" । पत्र सं० ३०४। श्रा० १२×७६ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८५२ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्सा । वे० स० २३३ । ड भण्डार ।

विशेष—११८८ बार ग्रामोकार मन्त्र लिखा हुग्रा है । ग्रन्त मे द्यानतराय कृत समाधि मरण पाठ तथा २१८ वार श्रीमद्वृपभादि वर्द्ध मानातेम्योनमः । यह पाठ लिखा हुग्रा है ।

३६१३, प्रति सं०२ | पत्र स०६ | ले० काल × । वे० सं० २३४ । ड भण्डार ।

३६१४ ग्रामोकारस्तवन "''। पत्र सं०१। स्रा०६ $\frac{3}{5}$ \times ४ $\frac{1}{5}$ इ च। भाषा हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं०२१६३। स्राभण्डार ।

३६१४ तकारास्तरीस्तोत्र"" । पत्र सं० २ । ग्रा० १२२४६ इख । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० १०३ । व्य भण्डार ।

विशेस—स्तोत्र की संस्कृत मे व्याख्या भी दी हुई है। ताता ताती ततेता ततित ततता ताति तातीत तता इत्यादि।

३६१६ तीसचौबीसीस्तवन ""। पत्र स० ११। ग्रा० १२×५ इ च ।। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १७५८ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २७६ । रू भण्डार ।

३६१७ दलालीनी सङ्माय " " । पत्र स०१। ग्रा० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। जीर्ण। वे० स० २१३७। द्वां मण्डार।

३६१८ देवतास्तुति—पद्मनंदि। पत्र सं०३। म्रा०१०४४ ई ई च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण। वे० स० २१६७। ट भण्डार।

३६१६, देवागमस्तोत्र—स्राचार्य समन्तभद्र । पत्र स० ४ । ग्रा० १२×५३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७६५ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३७ । स्र भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३०८) श्रीर है।

३६२०. प्रति सं०२ । पत्र स०२७ । ले० काल स०१८६६ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं०१६६ । च भण्डार ।

> विशेष—अभयचद साह ने सवाई जयपुर मे स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी। इसी मण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १६४, १६५) श्रीर है।

स्तोत्र साहित्य]

३६२१. प्रति संट ३। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १८७१ ज्येष्ठ सुदी १३। वे० सं० १३४। छ

३६२२. प्रति सं०४। पत्र मा मा ना ले काल स० १९२३ वैशाख बुदी ३। वे० सं०७६। ज भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २७७) स्रीर है।

३६२३. प्रति सं० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल म० १७२५ फाग्रुन बुदी १० । वे० सं० ६ । मा

विशेप—पाडे दीनाजी ने सागानेर मे प्रतिलिपि की थी । साह जोधराज गोदीका के नाम पर स्याही पोत दी गई हैं ।

३६२४. प्रति सं०६। पत्र स०७। ले० काल ४। वे० सं० १८१। व्य भण्डार।

३६२४. देवागमस्तोत्रटीका—न्त्राचार्य वसुनंदि । पत्र सं०२४ । आ० १३४४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र (दर्शन) । र० काल ४ । ले० काल सं० १४४६ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० १२३ । श्र्य भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवत् १५५६ भाइपद सुदी २ श्री मूलसचे नद्याम्नाये बलात्कारगरो सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुं दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदि देवास्तत्यट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तित्याच्य सुनि श्रीरत्नकीत्ति-देवास्तित्याच्य सुनि हेमचद्र देवास्तदाम्नाये श्रीपथावास्तव्ये खण्डेलवालान्वये वीजुवागोत्रे सा. मदन भार्या हरिसिरगी पुत्र सा परिसराम भार्या भषी एतैसास्त्रमिद लेखियत्वा ज्ञानपात्राय सुनि हेमचन्द्राय भक्त्याविधिना प्रदत्तं ।

३६२६. प्रति सं०२। पत्र स०२४। ले० काल स०१६४४ भादवा बुदी १२। वे० स०१६०। ज भण्डार।

विशेष—कुछ पत्र पानी मे थोड़े गल गये हैं। यह पुस्तक पं० फतेहलालजी की है ऐसा लिखा हुआ है। ३६२७. देवागमन्तोत्रभाषा—जयचंद छाबड़ा। पत्र सं० १३४। आ० १२४७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—न्याय। र० काल सं० १६६६ चैत्र बुदी १४। ले० काल सं० १६३८ माह सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ३०६। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वै० स० ३१०) ग्रौर है ।

३६२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से ६ । ले० काल सं० १८६८ । वै० सं० ३०६ । इ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वै० स० ३०८) ग्रौर है ।

३६२६. देवागमस्तोत्रभाषा ' ""। पत्र स० ४ । ग्रा० ११×७२ इ.च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (द्वितीय परिच्छेद तक) वै० सं० ३०७ । क भण्डार ।

विंगेष—न्याय प्रकरण दिया हुग्रा है।

३६३० देवाप्रभस्तोत्रवृत्ति—विजयसेनसूरि के शिष्य त्राणुभा । पत्र स०६। त्रा० ११४८ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल स० १८६४ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १६६ । मा भण्डार ।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३६३१ धर्मचन्द्रप्रवन्ध-धर्मचन्द्र। पत्र सं०१। आ०११×४ है इ च। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० म०२०७२। अ भण्डार।

विशेष-पूरी प्रति निम्न प्रकार है-

वीतरागायनम.। साटा छंद-

सन्वगो सदद तिम्राल दिसऊ सन्वत्य वत्यूगदो । विस्सचवखुवरो स म्रा म्रविसऊ जो ईस माऊ समो । सम्मदसग्राणाग्रसचरिम्रदोईसो मुग्गीग्रा गमो पत्ताग्रा त चउदुउ सविमलो सिद्धो वस कुज्जमो ॥१॥

विज्जुमाला छद-

देवाणं सेवा काग्रीएं बाणीए ग्रवाडाऊण । गुरुणदो साराहीत्ताण विज्जुमाला सोहीत्राण ॥२॥

भुजगप्रयात छद—

वरे मूलसघे वलात्कारगण्णे सरम्सत्तिगछे पभंदोपयण्णे । वरो तस्स सिस्सो धम्मेदु जीग्रो बुहो चारूचारित भूग्रगजीश्रो ॥३॥

म्रापछिंद--

सम्रल कलापट्वीगो लीगो परमागमस्स सत्थिमा । भव्ति म्रजग् उद्धारो धुम्मचदो जम्रो मुगिदो ॥४॥

कामावतारछद---

मिछाक अन्तेण आईसरेण आईहिसुण्णाण पटनव्यमिगाण । ।।१।। सिस्साण माणेगा सत्थाण दाणेण धम्मोपएसेण बूहाणरेजेण ।।२।। मिछः तप्पस्ससूरेण दूम्मत फेडेण सुअन्वपूरेण ।।३।। मन्वाण भन्नेण लोआण लोएण फाणांग मुहेण कम्मेह हूएण ।।४।। जित्तोड मादेण कामावआरेण इदीकंदूरेण मोनवनकरत्तेण ।।४।। स्तोत्र साहित्य]

जत्ताचदेजागा भव्वाज्जगोभाग भत्ताजईग्राण कत्तासुहम्मण ॥६॥ धम्मदुकदेण सद्धम्मचदेग ग्रम्मोत्युकारेग भत्तिव्वभारेग ॥ त्युज ग्रस्ट्रिंग गोमीवि तित्येग दासेग बूहेग संकुज्जभत्तेग ॥६॥

द्वात्रिशत्यत्र कमलवंधः ॥

म्रायछिद---

कोही लोहोर्चत्ती भंती अजईए सासरो लीखो । मा अमोहिव खींखी मारत्थी कॅकराो छेसी ।।६।।

भुजगप्रयात्तछद—-

सुचित्तो वितित्तो विभामो जईसो सुसीलो सुलीलो सुसीहो विईसो । सुधम्मो सुरम्मो सुकम्मो सुसीसी विराग्रो विमाग्रो विचिट्ठो विमोसो ॥१०॥

भार्याछद--

सम्मद् संग्राणाणं सच्चारितं तहे वसु ग्राणो । चरइ चरावइ धम्मो चंदो श्रविपुण्ण विक्लाम्रो ॥११॥

मौत्तिकदामछद---

तिलग हिमाचल मालव श्रंग वरव्वर केरल कण्णड वग ।
तिलात कालग कुरंगडहाल कराडग्र गुज्जर डंड तमाल ।।१२।।
सुपोट श्रवंति किरात श्रकीर सुतुक्क तुष्क्क वराड सुवीर ।
मक्त्यल दक्खण पूरवदेस सुणागवचाल सुकुभ लसेस ।।१३।।
चऊड गऊड सुककणलाट, सुवेट सुभोट सुदिव्वड राट ।
सुदेस विदेसहं श्राचंद राग्र, विवेक विचक्खण पूजद पाग्र ।।१४।।
सुचक्कल पीणपग्रोहरि णारि, रणज्मण गोउर पाद विधारि ।
सुविव्भम श्रंति श्रहाउ विभाउ, सुगावद गीउ मग्गोहरसाउ ।।१४।।
सुउज्जल मुत्ति श्रहीर पवाल, सुपूरउ णिम्मल रंगिहि वाल ।
चउक्क विउपरि धम्मविचंद वधाश्रउ श्रक्लिह वाह सुभंद ।।१६।।

भार्याछंद--

जइ जगादिसिवर सिहम्रो, सम्मदिद्वि साव भ्राइ परि म्रारिउ। जिगाधम्मभवगालंभो विस भ्रंल भ्रंकरो जभ्रो जभ्रइ॥१०॥ स्रग्विगोछद--

जत्त पतिह विबाद उद्धारकं सिस्स सत्थाण दाणाभरो माण्यकं । धम्मणी राणधारा ण भन्वाणकं चारसस्स ग्राउ द्धारिणिप्यादक ॥१८॥ छद्हा श्रग्यली भावणाभावए, दस्सधम्मा वरा सम्पदा पालए । चारू चारित्तींह भूसिग्री विग्यहो, धम्मचंदी जग्नी जित इंदिग्यहो ॥१६॥

पद्यछछद---

सुरग्रर खगचरखचर चारू चिच्च प्रकम जिग्गवर ।

चरग् कमलिह प्रधरण सरग् गोयम जइ जइवर ।

पोसि प्रवित्तर धम्म सोसि प्रवक्तमपवलतर ।

उद्धारी कयसिम वग्गभव्य चातक जलधर ।

वम्मह सप्प दप्प हरग्गवर समत्य तारग्ग तरग्ग ।

जय धम्मधुरंधर धम्मचंद सयलसंघ मगलकरग् ।।२०।।

इति धर्मचन्द्रप्रवंध समाप्त: ।।

३६३२ नित्यपाठसंग्रहःःःः। पत्र सं० ७। म्रा० ५३ \times ४६ इक्ष । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय - स्तोत्र । र० काल \times । ले० काल \times । म्र्यूर्ग । वे० सं० ५२० । स्त्र भण्डार ।

विशेष---निम्न पाठो का सग्रह है।

बडा दर्शन—	संस्कृत	-	
छोटा दर्शन—	हिन्दी	बुधजन	
भूतकाल चौबीसी—	"	×	
पंचमैंगलपाठ—	27	रूपचंद	(२ मगल हैं)
म्रभिषेक विधि—	सस्कृत	×	

३६३३. तिर्वाणकारखगाथा''''''। पत्र सं० ५ । म्रा० ११४५ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्त र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ५६५ । म्र भण्डार ।

विशेष—महावीर निर्वागा कल्यागाक पूजा भी है।

३६३४. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० स० ३७२। द्व भण्डार।

३६३४. प्रति सं० ३। पत्र सं० २। ले० काल स० १८८४। वे० स० १८७। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १८८) ग्रीर है।

३६३६. प्रति सं० ४ | पत्र स० २ | ले० काल × । वे० स० १३६ । छ मण्डार । विशेष—इसी भण्डार ३ प्रतिया (वे० स० १३६, २५६ २५६/२) धौर हैं । ३६३७. प्रति सं० ४ | पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४०३ । व्य भण्डार । ३६३८ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० स० १८६३ । ट भण्डार ।

३६३६. निर्वाणकारहटीका" "। पत्र सं॰ २४। ग्रा० १०४५ इख्र। भाषा-प्राकृत संस्कृत। विषय-स्तवन। र॰ काल ४। ले॰ काल ४। पूर्ण। वे॰ स॰ ६६। ख भण्डार।

३६४०. निर्वाणकाराङभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र सं० ३ । ग्रा० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल सं० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७५ । क भण्डार ।

विशेष -इसी भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (वे० सं० ३७३, ३७४) और हैं।

३६४१. निर्वाणभक्ति "" । पत्र २०२४। ग्रा०११×७३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०३८२। क भण्डार।

३६४२. निर्वाणभक्ति "" । पत्र सं० ६ । ग्रा० ६६ ४६३ इंच । भाषा- संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल 🗴 । बे० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० सं० २०७५ । ट भण्डार ।

विशेष--१६ पद्य तक है।

३६४३. निर्वाणसप्तशतीस्तोत्र। पत्र सं० ६ । आ० ८४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल ४ । ले० काल स० १६२३ म्रासोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० । ज भण्डार ।

३६४४. निर्वाणस्तोत्र " " । पत्र सं० ३ से ४ । म्रा० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० स० २१७५ । ट भण्डार ।

विशेष-हिन्दी टीका दी हुई है।

३६४४. नेमिनरेन्द्रस्तोत्र—जगन्त्राथ । पत्र स० ८ । ग्रा० ६३×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तीत्र । र० काल × । ले० काल स० १७०४ भादवा बुद, २ । पूर्ण । वे० सं० २३२ । व्य भण्डार ।

विलेष--पं० दामोदर ने शेरपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

३६४६. नेमिनाथस्तोत्र—पं० शाली । पत्र सं० १ । ग्रा० ११४५३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वे० सं० ३४० । स्त्र भण्डार ।

> विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। द्वययक्षरी स्तात्र है। प्रदर्शन योग्य है। ३६४७. प्रति सं०२। पत्र स०१। ले० काल 🗴। वे० स०१८३०। ट मण्डार।

३६४८ नेमिन्तवन--ऋषि शिव । पत्र स० २ । ग्रा० १०३×४३ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० स० १२०८ । श्र भण्डार)

विशेष- बीस तीर्थह्मर स्तवन भी है।

३६४६. नेभिस्तवन-जितसांगरगणी । पत्र स० १ । ग्रा० १०×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय - स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१५ । श्र भण्डार ।

विशेष-दूसरा नेमिस्तवन और है।

३६४०. पद्ध क्त्याग्यकपाठं —हरचंद् । पत्र स०१ । भाषा-िहन्दी । विषय-स्तत्रन । र०्वाल ०१८३३ ज्येष्ठ सुदी ७ । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० २३८ । छ भण्डार । •

विशेष--श्रादि श्रन्त भाग निम्न है--

प्रारम्भ---

कल्यान नायक नमी, कर्न कुर्रह कुलकंद ।
कल्मप दुर कल्यान कर, बुधि कुल कमल दिनद ।।११।
मंगल नायक विदक्ते, मंगल पंच प्रकार ।
वर मगल मुक्त दीजिये, मगल वरनन सार ।।२।।

ग्रन्तिम-धत्तःछद---

यह मगल माला सब जनविधि है,

सिव साला गल में धरनी ।

बाला ब्रध तरुन सब जग की,

सुख समूह की है भरनी ।।

मन वच तन श्रधान करै गुन,

तिनके चहुंगति दुख हरनी ।।

ताते भविजन पढि कढि जगते,

पंचम गति वामा वरनी ॥११६॥

दोहा---

व्योम ग्रगुल न नापिये, गनिये मघवा घार । उडगन मित भू पैडन्यी, त्यो गुन वरने सार ॥११७॥ तीनि तीनि वसु चद्रं, संवतसर के ग्रक । जेष्ठ गुक्ल सप्तम दिवस, पूरन पढी निसंक ॥११८॥

।। इति पचकल्यागुक संपूर्ण ।।

३६४१. पञ्चनमस्कारस्तोत्र—आचार्य विद्यानंदि । पत्र सं० ४। या० १०१४४ है ड च। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४। ले० काल स० १७६६ फाग्रुगा । पूर्गा । वै० म० ३५ । स्र भण्डार ।

३६४२. पश्चमगलपाठ-रूपचंद । पत्र सं० ६ । ग्रा० १२३ ४३ डच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८४४ कर्तिक सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ५०२ ।

विशेष—श्रन्त मे तीस चौबीसी के नाम भी दिये हुये हैं। पं० खुस्यालचन्द ने प्रतिनिधि की यी। इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ६५७, ७७१, ६६०) ग्रीर है। ३६५३. प्रति सं० २। पत्र स० ४। ले० काल स० १६३७। वे० सं० ४१४। क भण्डान। ३६५४. प्रति सं० ३। पत्र स० २३। ले० काल ×। वे० स० ३६४। इन भण्डार। विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति ग्रीर है।

३६४४. प्रति सं० ४। पत्र स० १०। ले० काल सं० १८८६ ग्रासोज सुदी १४। वे० स० ६१८। च भण्डार।

विशेष—पत्र ४ चौथा नही है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २३६) और है। ३६४६. प्रति स० ४। पत्र सं० ७। ले० काल 🗴। वे० सं० १४४। छ भण्डार। विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २३६) ग्रीर है।

३६४७ पचस्तोत्रसंग्रह "" । पत्र सं० ५३ । श्रा० १२×५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तीत्र । द० काल × । पूर्ण । वै० स० ६१८ । त्रा भण्डार ।

विशेष-पाची ही स्तीत्र टीका सहित हैं।

स्तोत्र	टीकाकार	भाषा
१. एकीभाव	नागचन्द्र सूरि	संस्कृत
२. कल्यागामन्दिर	हर्षकीति	77
३. विषापहार	नागचन्द्रसूरि	17
४. भूपालचतुर्विशति	श्राशाधर	2)
५. सिद्धिप्रियस्तोत्र		57

देह४८. पंचस्तोत्रसंग्रह " । पत्र सं० २४ । ग्रा० ६×४ इ'च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४०० । ऋ भण्डार ।

३६४६. पंचस्तोत्रटीका"" । पत्र सं० ५०। भ्रा० १२४८ इ'च। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र॰ काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० सं० २००३ । ट भण्डार ।

विशेष---भक्तामर, विषापहार, एकीभाव, कल्याग्रामंदिर, भूपालचतुर्विशति इन पाच स्तोत्रो की टीका है। ३६६०. पद्मावत्यष्टकवृत्ति---पार्श्वदेव। पत्र सं० १४। ग्रा० ११×४६ इन्न । भाषा-संस्कृत । विषयस्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १८६७। पूर्ण। वे० स० १४४। छ भण्डार।

विशेष—ग्रन्तिम-ग्रन्याया पाश्वेदेवविरचित्त्रया पद्मावत्यष्टकवृत्ती यत् किमप्यवधयित तत्सर्व सर्वाभिः क्षतव्य देवताभिरिष । वर्षागा द्वादशिभ शतैर्गतेस्तुत्तरैरिय वृत्ति वैशाखे सूर्यदिने समाप्ता गुक्लपंचम्या ग्रस्याक्षरगणनातः पचगतानि जातानिद्वाविशदक्षराणि वासदनुष्यछदसा प्रायः ।

इति पद्मावत्यष्टकवृत्तिसमाप्ता ।

३६६१. पद्मावतीस्तोत्रः । पत्र सं०१५। म्रा०११ $\frac{1}{2}$ \times ५ $\frac{1}{2}$ इच । माषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स०१३२ । ज भण्डार ।

विशेष-पद्मावती पूजा तथा शान्तिनाथस्तोत्र, एकीभावस्तोत्र और विषापहारस्तोत्र भी है।

३६६२ पद्मावती की ढाल "। पत्र सं०२। म्रा०६ ई \times ४३ इत्र। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तात्र। र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण। वे० स०२१ प्रभण्डार।

३६६३. पद्मावतीदण्डक ''। पत्र स०१। आ० ११३×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० २५१। आ भण्डार।

३.६४ पद्मावतीसहस्रनाम """। पत्र सं० १२। ग्रा० १०×५३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १६०२। पूर्ण । वै० सं० ६६५ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-शान्तिनाथाष्ट्रक एव पद्मावती कवच (मत्र) भी दिये हुये है ।

३६६४ पद्मावतीम्तोत्र : । पत्र सं॰ ६। ग्रा॰ ६५ \times ६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तीत्र । र॰ काल \times । पूर्ण । वे॰ स॰ २१५३ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १०३२, १८६८) ग्रीर है।

३ ६६. प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल सं० १९३३ । वे० स० २९४ । स्व भण्डार ।

३६६७ प्रति स० ३। पत्र सं० २। ले० काल 🗶 । वे० स० २०६। च भण्डार ।

३६६ प्रति स० ४। पत्र स० १६। ले० काल ४। वे० म० ४२६। इ. भण्डार।

३६६६ परमज्योतिस्तोत्र—बनारसीदास । पत्र स०१। ग्रा०१२३×६३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२११ । श्र भण्डार ।

३६७०. परमात्मराजस्तवन—पद्मनिद्। पत्र स० २। ग्रा० ६×५३ इख्र। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र॰ काल ×। ले॰ काल ×। पूर्गा। वे॰ स॰ १२३। सः भण्डार। ३६७१. परमात्मराजस्तोत्र—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र स० ३। ग्रा० १०×५ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । रं काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० मं० ६६५ । स्त्र भण्डार ।

ग्रय परमात्मराज स्तोष लिख्यते

यन्नामसंस्तवफलात् महता महत्यप्येष्टो, विशुद्धय इहाशु भवंति पूर्णाः । सर्वार्थसिद्धजनकाः स्वचिदेकमूर्ति, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराज ॥१॥ यद्वचानवष्त्रहननान्महता प्रयाति, कम्मीद्रयोति विपमा शतचूर्णता च। भ्रेतातिगावरगुणा प्रकटाभवेयुर्भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराजं ॥२॥ पस्यावबोधकलनात्त्रिजगरप्रदीपं, श्रीकेवलोदयमनंतसुखाब्धिमाशु । सत श्रयन्ति परम भ्रवनार्च्य वंद्य , भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराज ॥३॥ यहर्शनेनमूनयो मलयोगलीना, ध्याने निजात्मन इह त्रिजगत्पदार्थान् । पश्यन्ति केवलदृशा स्वकराश्रितान्वा, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराजं ॥४॥ यद्भावनादिकरणाद्भवनाशनाच, प्रण्रश्यंति कर्मरिपवोभवकोटि जाताः। भ्रभ्यन्तरेऽत्रविविधाः सकलार्द्धय स्पूर्भक्त्यास्तुवैतमनिशं परमात्मराजं ॥५॥ सन्नाममात्रजपनात् स्मरणाच्च यस्य, दु कर्मदुर्मलचयाद्विमला भवंति दक्षा जिनेन्द्रगराभृत्सुपदं लभते, भक्त्यास्तुवैतमनिनं परमात्मराज ॥६॥ यं स्वान्तरेतु विमलं विमलाविवृद्धय, शुक्लेन तत्वमसमं परमार्थरूप । श्रर्हत्पद त्रिजगता शरणा श्रयन्ते, भन्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥७॥ यद्वयानशुक्कपविनाखिलकर्माशैलान्, हत्वा समाप्यशिवदा स्तववदनार्चाः । सिद्धासदष्टुगुणभूषणभाजना स्यूर्भन्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराजं ॥५॥ यस्यातये सुगिएनो विधिनाचरंति, ह्याचारयन्ति यमिनो वरपञ्चभेदान्। श्राचारसारजनितान् परमार्थेवुद्धचा, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥६॥ य ज्ञातुमात्मसुविदो यात्तपाठकाश्च, सर्वागपूर्वजलघेर्लघ् याति पार । श्रन्यात्रयतिशिषद परतत्वचीजं, भक्त्यास्त्वेतमनिशं परमात्मराज ॥१०॥ ये साधयति वरयोगवलेन नित्यमध्यात्ममार्गनिरतावनपर्वतादौ । श्रीसाधवः शिवगते करम तिरस्थ, भक्त्यान्त्वेतमनिशं परमात्मराजं ॥११॥ रागदोपमलिनोऽपि निर्मलो, देहवानिप च देह विज्जत:। कर्मवानिष कुकर्मदूरगो, निश्चयेन भुवि य: स नन्दतु ॥१२॥

जन्ममृत्युक्तितो भवातक, एक रूप इह यांध्यनेकथा।

ग्यक्त एव यमिना न रागिगा, यांश्रदात्मक इहास्तुनिर्म्मलः ॥१३॥

यत्तत्वं ध्यानगम्यं परपदकर तीर्थनाथादिमेव्य ।

कर्मिष्नं ज्ञानदेहं भवभयमथन ज्येष्ठमानदमूल ॥

ग्रंतातीत ग्रुगाप्त रित्तिविधिगगा मिद्धसाष्ट्रश्यरूप ।

तद्ध दे स्वात्मतत्व शिवसुखगतये स्तौमि युक्त्याभजिह ॥१४॥

पठित नित्य परमात्मराजमहास्तव ये विवुधा किलं मे ।

तेपा चिदात्माविरतीगद्धरो ध्यानी ग्रुगी स्यात्परमात्स्य ॥१४॥

इत्य यो वारवार ग्रुगुगगारचनैवँदितः सस्तुतोऽिस्मन्

सारे ग्रन्थे चिदात्मा समग्रुगुजलिष सोस्तुमे व्यक्तरूप ।

व्येष्ठ स्वध्यानदाताखिलविधिवपुपा हानयं चित्तगुद्धगै

इति श्री सकलकीत्तिभट्टारकविरचितं परमात्मराजस्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

सन्मत्यैवो धकर्ता प्रकटनिजग्रुखो धैर्य्यशाली च शुद्धः ॥१६॥

३६७२. प्रमानंदपचिंशितिः "। पत्र स०१। आ० ६४४ इंच। भाषा-सम्कृतः। विषय-स्तोत्र र• काल ४। ले॰ काल ४। पूर्णः। वे॰ स॰ १३३। व्य भण्डारः। ३६६३. प्रमानंदस्तोत्रः "। पत्र स०३। आ० ७३४५ इखः। भाषा-संस्कृतः। विषय-स्तोत्रः। र

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ११३० । ऋ मण्डार ।

३६७४. प्रति सं०२ । पत्र स०१। ले॰ काल x। ते॰ स० २६८ । श्र मण्डार।

३६७४. प्रति स०३ | पत्र सं०२। ले० काल ×। ने० सं० २१२ | च भण्हार |

विशेष—फूलचन्द विन्दायका ने प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २११) और विशेष-स्तोष्ठ विशेष-स्तोष्ठ ११४७३ इ.च.। मापा-संस्कृत । विषय-स्तोष्ठ

विशेष—हिन्दी ग्रर्थ भी दिया हुग्रा है।

३६७७. परमार्थस्तोत्र ःः। पत्र स०४। ग्रा० ११६४४० इंच। भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र र०काल ४। ले०काल ४। पूर्ण। वे० सं०१०८। स्त्र भण्डार।

विशेष---सूर्य की स्तुति की गयी है। प्रथम पत्र में नुठ लियने से रह गया है।

र॰ काल 🔀 । ले॰ काल स॰ १९६७ फाग्रुसा बुदी १४ । पूर्मा | वे॰ सं० ४३८ | स भण्डार । '

अहार पाठसम्रह "। पत्र स० ३६। म्रा० ४०० ४६ च । भागा-संस्कृतः । विषय -स्तोत्र । र० काल ×। पूर्ण । वै० स० १६२८ । स्र भण्डार ।

निम्न पाठ है — जैन गायत्री उर्फ वज्यपञ्चर, शान्तिस्तीत्र, एकीभावस्तीत्र, समोकारक्त्य, न्हाव

३६७६. पाठसग्रह । पत्र स० १०। ग्रां० १२×७ इश्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-स्तोत्र । राज्याल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण । वे० स० २०६८ । स्त्र भण्डार ।

३६=० पाठसंग्रह—सग्रहकर्ता—जैतराम वाफना। पत्र स० ७०। ग्रा० ११३×७३ इख्र । भाषा— हिन्दी। विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४६१ । क भण्डार ।

३६८ पात्रकेशरीस्तोत्र । पत्र स० १७ । ग्रा० १० \times ५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० वाल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष-५० श्लोक हैं। प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है।

३६८२. पाथिवेश्वरचिन्त।मिण् "। पत्र सं० ७ । ग्रा० ५२४५ इ.च । भाषा-सस्कृत । विषयं-स्तोत्र । र० काल 🗴 । ले॰ काल स० १८६० भादवा सुदी ८ । वे॰ सं० २३४ । ज भण्डार ।

विशेष — वृन्दावन ने प्रतिलिपि को थी।

३६८२. पार्थिवेश्वरः । पत्र स०३। म्रा० ७ $\frac{3}{5}$ \times ४ $\frac{3}{5}$ ड च। भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक् साहित्य। र० काल \times । ले० काल \times । वे० सं० १५४४। पूर्ण। स्त्र भण्डार।

३६८८. पार्श्वनाथ पद्मावतीस्ते।त्रः । पत्र सं०३। ग्रा०११४५ इंच। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं०१३६ । छुभण्डार ।

३६=४ पाश्वेनाथ लच्मीस्तोत्र—पद्मप्रभदेव। पत्र सं०१। ग्रा० ६×४ है इख्र। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० नाल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६४। ख्र भण्डार।

३६८६. प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६२ । भ भण्डार ।

३६८७. पार्श्वनाथ एव वर्द्ध मानम्तवन " " । पत्र सं० १ । ग्रा० १०×४ई इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । छ भण्डार ।

३६८६ पार्श्वनाथस्तोत्रः । पत्र सं० ३। ग्रा० १०३४१६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० सं० ३४३ । त्रा भण्डार ।

विशेष - लघु सामायिक भी है।

३६८६, पारवेनाथहतोत्रः । पत्र स०, १२। ग्रा० १०४४ है इ च। भाषा -सम्कृत । विषय-न्तोत्र । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० स० २५३,। स्त्र भण्डार ।

विशेष---मन्त्र सहित स्तोत्र है। श्रक्षर सुन्दर एव मोटे हैं।

३६६.. पार्श्वनाथस्तोत्र " "। पत्र सं० १। ग्रा० १२% ४७३ इ च। भाषा- संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । स्त्र भण्डार ।

३६६१. पार्श्वनाथस्तोत्र "'। पत्र स०१। ग्रा०१०३४५ इच्। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र• काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०६६३। स्त्रुभण्डार।

३६६२. पारवं नाथस्तोत्रदीका ""। पत्र सं० २ ' ग्रा० ११×५६ इ च । भाषा--सस्कृत । विषय-स्तोत्र । द्रा० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४२ । अ भण्डार ।

३६६३ पार्श्वनाथस्तोत्रटीका ' ''' । पत्र स०२। ग्रा॰ १०४५ इच। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ६ न७ । ग्रा भण्डार ।

३६६४. पार्श्वनाथस्तोत्रभाषा—द्यानतराय । पत्र स०१। ग्रा० १०४५ इत्त । भाषा हिन्दी। दिपय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० २०५५ । स्त्र भण्डार ।

३६६५. पार्श्वनाथाष्ट्रकः । पत्र सं०४ । ग्रा० १२×५ इच । भाषा सम्बृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वे० स० ३५७ । श्रा भण्डार-।

विशेष-प्रति मन्त्र सहित है।

३६६६. पार्श्वमहिम्नस्तोत्र—महामुनि राजसिंह । पत्र स० ४ । ग्रा० ११३४६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १६८७ । पूर्ण । वे० स० ७७० । स्र भण्डार ।

देह्ह७ प्रश्तोत्तरस्तोत्र "' । पत्र स०७। स्रा०८×६ इ.च.। भाषा—सस्कृत । विषय स्तोत्र । र∙ काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वै० स०१८६ । व्य भण्डार ।

३६६८ प्रातःस्मरण्मंत्र " "। पत्र सं०१। ग्रा०८१×४ इच। भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वे०स०१४८६ । ऋ भण्डार ।

३६६६. भक्तामरपिञ्जका ""। पत्र सं० ८। म्रा० १३×४ इ'त्र। भाषा सस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स०१७८१। पूर्ण। वे० स०३२८। व्य भण्डार।

विशेष-श्री हीरानन्द ने द्रव्यपुर मे प्रतिलिपि की थी।

क्तोत्र साहित्य]

४००० भक्तामरस्तोत्र-मानतुंगाचार्य। पत्र सं० ६ । ग्रा० १०४५ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १२०३ । ऋ भण्डार ।

४००१ प्रति सं २ । पत्र स० १०। ले० काल स० १७२०। वै० स० २६। श्र भण्डार । ५००२. प्रति सं० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १७५५ । वे० सं० १०१५ । श्र भण्डार । विशेष—हिन्दी ग्रर्थ सहित है ।

४००३ प्रति सं० ४ । पत्र स० १० । ले० काल ४ । वे० स० २२०१ । श्रा भण्डार ।

विशेष—प्रति ताडपत्रीय है। ग्रा० ५×२ उ च है। इसके ग्रातिरिक्त २ पत्र पुट्टो की जगह हैं। २×१३ इ'च चौड़े पत्र पर रामोकार मन्त्र भी है। प्रति प्रदर्शन योग्य है।

४००४. प्रति सं० ४। पत्र स० २४। ले॰ काल सं० १७४४। वे॰ स० १०१४। स्त्र मण्डार। विशेष—इसी भण्डार में ६ प्रतियों (वे॰ स॰ ४४१, ६४६, ६७३, ८६०, ६२०, ६४६, ११३४, ११८६, १३६६) ग्रीर है।

४००४ प्रति सं०६। पत्र स०६। ले० काल सं० १८६७ पीष सुदी ८। वे० सं०२५१। ख

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हैं। मूल प्रति मधुरादास ने निमखपुर मे लिखी तथा उदेराम ने टिप्पण किया। इसी भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० स० १२८, २८८, १८५६) ग्रीर है।

४०८६ प्रति स० ७। पत्र स० २५। ले० काल 🗙 । वै० सं० ७४। घ भण्डार ।

४००७ प्रति सट = । पन स० ६ से ११ । ले० काल स० १८७८ ज्येष्ठ बुदी ७ । ग्रपूर्शा । वै० सं० १४६ । ह भण्डार ।

> विशेष — इसी भण्डार मे १२ प्रतिया (वे० सं० ५३६ से ५४५ तथा ५४७ से ५५०, ५५२) श्रीर हैं। ४००८ प्रति स०६। पत्र स० २५। ले० काल 🔀 । वे० स० ७३८। च भण्डार।

विशेष—संस्कृत दीका सहित है। इसी मण्डार मे ७ प्रतिया (वे० सं० २५३, २५४, २५६, २५७, ७३८, ७३८) ग्रीर है।

४००६ प्रति सं०१०। पत्र स०६। ले० काल स० १८२ चैत्र बुदी ६। वे० सं० १३४। छ

विशेष — इसी भण्डार मे ६ प्रतिया (वे० स० १३४ (४) १३६, २२६) और है। ४०१०. प्रति सं० ११। पत्र स० ७। ले० काल ×। वे० स० १७०। स्त भण्डार। विशेष— इसी भण्डार एक प्रति (वे० स० २१५) और है।

४०११. प्रति सं० १२ । पत्र स० १ । ले० काल × । वे॰ स० १७५ । ज मण्डार ।
४०१२. प्रति सं० १३ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १=७७ पीप मुटी १ । वे॰ स० २६३ । व्य विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतिया (वे॰ स॰ २६६ ३३६, ५२५) श्रीर है ।

४८१३. प्रति स० १४। पत्र स० ३ से ३६। ले० काल स० १६३२। प्रपूर्ण। वे० म० २०१३। ट भण्डार।

विशेष—इस प्रति मे ५२ श्लोक है। पत्र १, २, ४, ६, ७ ६, १६ यह पत्र नहीं हैं। प्रति हिन्दी व्या-ख्या सहित है। इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० १६३४, १७०४, १६६६, २०१४) ग्रीर है।

४८१४. भक्तामरस्तोत्रवृत्ति—व्र रायमतः। पत्र स० ३०। ग्रा० ११३×६ इ च। भाषा-सस्कृतः। विषय-तोत्र। र० काल स० १६६६। ले० काल स० १७६१। पूर्णः। वे० स० १०७६। स्र भण्डारः।

विशेष—ग्रन्थ की टीका ग्रीवापुर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में की गयी। प्रति क्था सहित है। ४०१४. प्रति सं०२। पत्र स०४८। ले० काल स०१७२४ ग्रासोज बुदी ६। वे०स०२८७। स्त्र

भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं॰ १४३) और है।

४०१६ प्रति सं० ३। पत्र स॰ ४०। ले॰ काल स॰ १६११। वे॰ स॰ ५४४। क भण्डार।
४०१७. प्रति सं० ४। पत्र स॰ १४६। ले॰ काल ×। वे॰ स॰ ६५। ग भण्डार।
विशेष—फतेवन्द गगवाल ने मन्नालाल कासलीवाल मे प्रतिलिपि कराई।

प्रदश्य. प्रति सद्धापत्र सद्धा लेक काल मंद्र १७४४ पीप बुदी मा वेद मद्र १५३। इस अण्डार ।

४०१६ प्रति सं०६। पत्र स०४७। ले० काल स० १८३२ पीप सुदी २। वे० स० ६६। छ्य

विशेष—मागानेर मे प० सवार्ष्टराम ने नेमिनाथ चैत्यालय मे ईसरदास की पुस्तक मे प्रतिलिपि की थी। ४०२० प्रति सं०७। पत्र स०४१। ले० काल स०१८७३ चैत्र बुदी ११। वे० स०१८। ज

विशेष—हिरनारायण ब्राह्मण ने प० कालूराम के पठनार्थ म्रादिनाथ चैत्यालय में प्रति लिप की थी।
४०२१ प्रति सं० ६। पत्र सं० ४६,। ले० काल स० १६८८ फाग्रुन बुदी ८। वे० स० २८। व्य भण्डार। विशेष-प्रशस्ति संवत् १६८८ वर्षे फाग्रुग् बुदी ८ शुक्रवार निक्षत्र अनुराध व्यतिपात नाम जोगे महा-राजाधिराज श्री महाराजाराव छत्रसालजी बू दीराज्ये इदपुस्तक लिखाइत । साह श्री स्योपा तत्पुत्र सहलाल तत् पुत्र साह श्री ध्याराज माई मनराज गीत्रे पटवोड जाती वघेरवाल इद पुस्तक पुनिख्य दीयते । लिखत जोसी नराइया ।

४०२७. प्रति सं ८ ६ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १७६१ फाग्रुए। वे० सं० ३०३। व्य भण्डार।

४०२३. भक्तामरस्तोत्रटीका—हपेकीर्त्तसूरि। पत्र स० १०। म्रा० १०४४ दे इस्र। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोष। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० ग० २७६। स्र भण्डार।

४८२४ प्रति स० २। पत्र स० २६। ले० काल स० १६४०। वे० सं० १६२५। ट भण्डार। विशेष—इस टीका का नाम भक्तामर प्रदीपिका दिया हुआ है।

४०२४. भक्तासरस्तोत्रटीकां ... । पत्र सं० १२। ग्रा० १०४४३ इम्बें। भोपा-संस्कृत । विषय-स्तीर्थे। र० काल ×। लें० काल ×। ग्रंपूर्णे। वै० म० १६६१। टे मण्डार।

> ४००६. प्रति सं० २। पंच सं० १६। लै० कॉल ×। वै० सं० १८४४। हो भेण्डार। विभेप--पण चिपके हुये है।

४८५७. प्रति संट है। पत्र सं० १६। लें० काल सं० १८७२ पौष बुदी १ । वे० सं० २१०६। ऋ भण्डार।

निशेप—मन्नालाल ने कीतलनाथं के चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ स॰ ११६०) भीर है।

४०२६. प्रीते सं० ४। पत्र सं० ४६। किं० काल \times । वे० सं० ५६६। के भण्डार। ४०२६. प्रीतें सं० ४। पेत्रं सं० ७। ते० काल \times । ग्रंपूंरों। वे० सं० १४६। विशेष—३६ काव्य तक है।

४०२०. भक्तार्मरस्तीन्नटीका । पर्न सं०११। आ०१२३× इचे । भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-स्तीन । र० काल × । ले० काल स०१६१ म चैत मुदी म । पूर्ण । वे० सं०१६१२ । द भण्डार ।

विशेष—प्रक्षर मोटे हैं। संस्कृत तथा हिन्दी में टीका दी हुई है। सगही पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी। आ अण्डार में एक ग्रपूर्ण प्रति (वे० सं० २०६२) ग्रीर है।

४०३१. भक्तामरम्तोत्र फ्रिद्धिमत्र सहित''' । पच स० २७ । ग्रा० १०×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोव । र० काल × । ले० काल स० १८४३ वैद्याल बुदी ११ । पूर्गा । वे० सं० २८४ । आ भण्डार ।

विशेष—श्री नयनसागर ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। ग्रन्तिम २ पृष्ठ पर उपसर्ग हर स्तोत्र दिया हुआ है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं॰ १५१) ग्रीर है।

४०३२. प्रति स०२ । पत्र सं० १२ । ले० काल स॰ १८१३ बैशाल सुदी ७ । वे० सं० १२६ । स्र

भण्डार ।

विशेष-गोविदगढ मे पुरुपोत्तमसागर ने प्रतिलिपि की थी।

४८३३, प्रति स० ३। पत्र सं० २४। ले॰ काल ४। वे॰ स० ६७। वा भण्डार।

विशेष-मन्त्रों के चित्र भी हैं।

४०३४. प्रति सं०४। पत्र स०३१। ले० काल स० १८२१ वैशाख मुदी ११। वे॰ सं०८१। व्य

भण्डार ।

विशेष-प० सदाराम के शिष्य गुलाव ने प्रतिलिपि की थी।

४०३४ भक्तामरस्तोत्रभाषा--जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ६४। म्रा० १२३×१ इंच। भाषा-

हिन्दी गद्य । विषय–स्तोत्र । र० काल म० १५७० कार्त्तिक सुदी १२ । पूर्ण । वे० म० ५४१ ।

विशेष--क भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ स० ५४२, ५४३) ग्रीर है।

४०३६. प्रति स०२ । पत्र स०२१ । ले० काल स०१६६० । वे० सं० ५५६ । क भण्डार ।

४०३७. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४४ । ले० काल स० १९३० । वे० स० ६५४ । च मण्डार ।

४०३८ प्रति सं०४। पत्र स॰ २२। ले॰ काल स॰ १६०४ वैशाख सुदी ११। वे॰ स॰ १७६। छ

भण्डार ।

४०३६. प्रति स० ४ । पत्र स० ३२ । ले० काल 🗴 । वे० स० २७३ | भा भण्डार ।

४०४०. भक्तामरस्तोत्रभाषा—हेमराज । पत्र स० ६ । ग्रा० ६३×६ इश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११२५ । श्र भण्डार ।

४०४१. प्रति सं०२। पत्र म० ४। ले० काल स०१८८४ माघ सुदी २। वे० स०६४। ग

विशेप--दीवान अमरचन्द के मन्दिर मे प्रतिलिपि की गयी थी।

४०४२ प्रति सं०३। पत्र सं०६ से १०। ले० काल 🔀 । ग्रपूर्ण। वे० सं० ५५१। ङ भण्डार।

४०४३. भक्तामरस्तोत्रभापा—गंगाराम । पत्र सं० २ से २७ । ग्रा० १२३×५३ इख्र । भापा-सत्कृत हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८६७ । ग्रपूर्ण । वे० स० २००७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है। पहिले मूल फिर गंगाराम कृत सर्वेया, हेमचन्द्र कृत पद्य, कही २ भाषा तथा इसमे ग्रागे ऋदि मन्त्र सहित है।

श्रन्त मे लिखा है— साहजी ज्ञानजी रामजी उनके २ पुत्र शोलालजी, लघु भ्राता चैनमुखजी ने ऋषि भागचन्दजी जती को यह पुस्तक पुण्यार्थ दिया स॰ १८७२ का साल मे ककोड मे रहे छै।

४०४४ भक्तामरस्तोत्रभाषा । पत्र सं० ६ से १०। ग्रा० १०४५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल स० १७८७ । ग्रपूर्ण । वै० सं० १२६४ । स्र भण्डार ।

४०४४. प्रति स० २ । पत्र स० ३३ । ले० काल सं० १८२८ मंगसिर बुदी ६ । वे० सं० २३६ । छ

विशेष—भूधरदास के पुत्र के लिये मभूराम ने प्रतिलिपि की थी ।
४०४६ प्रति सं० ३ | पत्र स० २० । ले० काल × । वे० स० ६५३ | च भण्डार ।
४०४७. प्रति सं० ४ | पत्र स० २१ । ले० काल स० १८६२ । वे० स० १५७ । भू भण्डार ।
विशेष—जयपूर में पन्न.लाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४०४८, प्र'त सं० ४। पत्र सं० ३३। ले० काल सं० १८०१ चैत्र बुदी १३। वे० सं० २६०। ञ भण्डार।

४०४६ भक्तामरस्तोत्रभाषा : । पत्र स० ३। आ० १०ई×७० इच । भाषा-िह्न्दी । विषय-स्तोत्र । र० नात × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ६५२ । च भण्डार ।

४०४०. भूपालचतुर्विशतिकास्तोत्र—भूपाल कवि । पत्र स० ६ । आ० ६५×४३ डंच । भाषा— सम्भूत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १६४३ । पूर्ण । वे० सं० ४१ । आ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्वा टीका सहित है। स्त्र भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३२३) स्त्रीर है। ४०४१ प्रति स०२। पत्र स०३। ले० काल ×। वे० स० २६८। ख भण्डार। ४०४२. प्रति सं०३। पत्र स०३। ले० काल ×। वे० सं० ५७२। स भण्डार। विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५७३) है।

४०४३ भूपालचतुर्विंशतिटीका—आशाधर । पत्र सं० १४ । आ० ६३×४० इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७७८ भादवा बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६ । आ भण्डार ।

विशेष-श्री विनयचन्द्र के पठनार्थ पं० ग्राशाधर ने टीका लिखी थी। पं० हीराचन्द के शिय्य चोखचन्द्र के नठनार्थ मीजमाबाद मे प्रतिलिपि कराई गई। प्रशस्ति निम्न प्रकार है— संवत्सरे वसुमुनिसप्तेन्दु (१७७८) मिते भाद्रपद कृष्णा द्वादगी तिथी मौजमावादनगरें श्रीमूलसंघे नद्याभ्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकोत्तम श्री श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्तिजी वस्य शासनकारी बुधजी श्रीहीरामन्दजीकस्य शिष्येन विनयवता चोखचन्द्रे ग्रास्वशयेन स्वपठनार्थ लिग्वितेय भूपान चनुविशतिका दीका विनयचन्द्रस्यार्थमित्याशाधरविरचिताभूपालचतुर्विशते जिनेन्द्रस्तुतेष्टीका परिसमाप्ता ।

अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४०) स्रोर है।

४०५४. प्रति सं०२। पत्र सं०१६। ले० काल स०१५३२ मगसिर सुदी १०। वै० स०२३१। ठा भण्डारी।

विशेष- प्रशस्ति—सं० १५३२ वर्षे मार्ग सुदी १० गुरुवासरे श्रीघाटमपुरगुभस्थाने श्रीचन्द्रप्रभूचैत्यालय लिख्यते श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीर्गर्चेक्षे कुंबर्कुंदीचार्यान्वये ।

४०४. भूर्पालंचतुर्विशतिंकीर्स्तीन्नटीकां—विंनयचन्द्र । पत्र मं० ६ । आ० १२×५ इख्र । भाषासस्कृत । विषय-स्तोत्र । रं० कालं × । लें० काले × । पूर्णा विव सं० ३२० ।

विशेष—श्री विनयचन्द्र नरेन्द्र द्वारा भूपालं चतुर्विशति स्तोत्र रचा गया था ऐसा टीका की पृष्पिका में लिखा हुंग्रा है। इसका उल्लेखं २७वें पद्य में निर्म्त प्रकार है।

यः विनयचन्द्रनामायतीवरो जिन समभूत । लिलतचद्रात् । उपशमद्द्योपक्षेपतेयमुप्कमः साक्षान्भूत्तिमान् सः क्यभूतः सञ्चकोरचन्द्रः सतः पढिताः एव चकोराः तेपा प्रमोदवे द्वितीयश्चन्द्रः यस्यशुचि चरित चरिदनोः शुचि च तच्चरित च तच्चरण शीलं शुचि चरित चरिद्याः तस्य वाचो वाष्य जगल्लोकाधिन्वन्ति कथभूतावाचः श्रमृतगर्भो श्रमृतगर्भे यासा तास्त्रयानाः शास्त्रसदर्भगर्भा शात्रस्ताा संदर्भाः विस्ताराः शास्त्रसदर्भास्तेगर्भे यासा तास्तासा ॥२७॥ इति विनयचन्द्रनरेन्द्र विरचित भूपाल स्तोत्र समाप्तं ।

प्रारम्भ में टीकाकार का मंगलाचरण नहीं है। मूल स्तोत्र की टीका ग्रारम्भ करदी गई है।

४०४६. भूपालचौबीसीभाषा—पत्राताल चौधरी। पत्र स० २४। आ० १२५४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल सं० १६३० चैत्र मुदी ४। ले० काल स० १६३०। पूर्ण। वे० सं० ५६१। कर

इसो भण्डार मे एके प्रति (वे० सं० प्रद्र) धीर है।

४०४७ मृत्युर्महोत्सवः । पत्र स०१। ग्रा० ११×१ इ व । भाषां-हिन्दी । विषय-स्तीत्र । र क्राल × । ते० क्राल × । पूर्ण । वे० स० १६ व । भा भण्डार ।

४०४८ सहर्षिस्तवन " ""। पत्र सं० ३१ से ७४ । ग्रा० ५×५ इश्चं । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तीत्र । द० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्श । वे० सं० ५८८ । हा भण्डार ।

म्तोत्र साहित्य]

४०४६. महर्पिस्तवन "" । पत्र सं०२। ग्रा०११×५ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ×। पूर्ण । वे० सं०१०६३। ग्रा मण्डार ।

विशेष--- ग्रन्त मे पूजा भी दी हुई है।

४०६० प्रति सं०२। पत्र मं०२। ले० काल सं०१८३१ चैत्र बुदी १४। वे० मं०६११। ऋ भण्डार।

विशेष--- मस्कृत मे टीका भी दी हुई है।

४०६१. महामिहिम्नस्तोत्र """ पत्र मं० ४। ग्रा० ५४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-म्तोत्र । ७० वाल ४। ने० काल स० १६०६ फाग्रुन बुदी १३। पूर्ण । वे० सं० ३११ । ज भण्डार ।

८०६२ प्रति सं०२ | पत्र सं० म । ले० काल × | वे० सं० ३१५ । ज भण्डार ।

विभेर-प्रति मस्कृत टीका महित है।

प्रट इस्तामहर्षिम्तवनटीका" ""। पत्र सं०२। ग्रा० ११३×४ई इंत्र। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वै० मं० १४८। छ भण्डार।

४०६४ महालद्मीस्तोत्र "। पत्र स० १० । म्रा० ५३ ४६३ इंच । भाषा-सम्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६५ । ख भण्डार ।

४०६४. महालद्मीस्तोत्र " ' । पत्र सं० ६ ने ६ । ग्रा० ६×३३ डंच । भाषा-सस्कृत । विषय-वैदिक माहित्य स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्श । वै० मं० १७८२ ।

४०६६ महावीराष्ट्रक-भागचन्द्। पत्र सं० ४। ग्रा० ११३४६ इंच। भाषा-सम्कृत । विषय-स्तोत्र। -० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७३। क भण्डार।

विशेष--इसी प्रति मे जिनोग्देशोपकारम्मर स्तोत्र एवं ग्रादिनाथ स्तोत्र भी हैं।

४०६७. महिम्रस्तोत्र "" पत्र सं० ७। ग्रा० ६×६ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ×। पूर्ण । वे० सं० ५६ । मा भण्डार ।

४०६=. यमकाष्टकस्तोत्र—भ० श्रमरकीित्त । पत्र सं० १। श्रा० १२×६ डंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्नोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८२२ पौप बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५८६ । क भण्डार ।

४०६६. युगादिदेवमहिम्नस्तोत्र ' " । पत्र सं० २ से १४ । आ० ११४७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ते० काल × । प्रपूर्ण । वे० सं० २०६४ । ट भण्डार ।

विशेष-प्रथम तीन पत्रों में पार्श्वनाथ स्तोत्र रघुनाथदास कृत अपूर्ण हैं। इससे आगे महिम्नस्तोत्र है।

४०७०. राधिकानासमाला''''''। पत्र सं० १। ग्रा० १०३×८ इ'च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० १७६९ । ट भण्डार ।

४०७१. रामचन्द्रस्तवसः । पत्र सं० ११। म्रा० १०४५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वै० सं० ३३ । छ भण्डार ।

विशेष--ग्रण्तम- श्रीसनत्कुमारसंहिताया नारदोक्तं श्रीरामचन्द्रस्तवराज संपूरणम् ॥ १०० पद्य है ।

४०७२. रामबतीसी—जगनकि । पत्र सं० ६ । म्रा० ६ रू४६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १७३५ प्रथम चैत्र बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० १५१० । ट भण्डार ।

विशेष—कवि पौहकरना (पुष्करना) जाति के थे। नरायगा मे जट्दू व्यास ने प्रतिनिधि की थी।

विशेय---११ से आगे पत्र नहीं है। पत्र नीचे की श्रोर में फटे हुए है।

४०७४. रामस्तोत्र """ पत्र स०१। म्रा०१०×४ इ च। भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ×। ले० काल सं०१७२५ फाग्रुण सुदी १३। पूर्ण। वे० सं०६५८। अर भण्डार।

विशेय-जोधराज गोदीका ने प्रतिलिपि करवायी थी।

४०७४ लघुशान्तिस्तोत्र । पत्र सं० १। म्रा० १०×४३ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र॰ काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ स॰ २१४६ । स्त्र भण्डार ।

४०७६. त्वच्मीस्तोत्र-पद्मप्रभदेव । पत्र सं० २ । म्रा० १३×६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३ । स्र भण्डार ।

> विशेष—प्रति संस्कृत टीका सिहत है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० १०३६) और है। ४८७७. प्रति स० २ । पत्र सं० १। ले० काल × । वे० स० १४८। छ भण्डार।

विजेय-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १४४) ग्रीर है।

४७५०. प्रति स० ३। पत्र सं० १। ले० काल 🗴 । वे० सं० १५२५ | ट भण्डार ।

विशेष-प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है।

४०७६. तद्मीस्तोत्र...। पत्र सं०४। आ०६×३ इंन। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तीत्र। द० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण। वे० सं०१४२१। आ भण्डार।

विर्शय—ट भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०६७) और है।

४०८०, त्रघुस्तोत्र " । पत्र सं०२१ ग्रा० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० के काल × । पूर्ण । वे० सं० ३९६ । व्य भण्डार ।

४०८१. वञ्चपंजरस्तोत्र "" । पत्र सं० १ । ग्रा० ६ ४८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ते० काल × । वै० सं० ६६८ । इ भण्ड(र ।

४०८२. प्रति सं०२ | पत्र सं०४ | ले० काल × । वै० स०१६१ | व्य मण्डार | विशेष—प्रथम पत्र में होम का मन्त्र है ।

४०८३. श्रद्ध सामद्वार्त्तिशिका—सिद्धसेन दिवाकर। पत्र सं० १२। श्रा० १२४६ हंच। भाषा— सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । श्रपूर्ण । वे० स० १८६७ । ट भण्डार ।

४०८४. वद्धीमानस्तोत्र—स्त्राचार्य गुगाभद्र । पत्र सं० १२ । आ० ४३४७ इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल मं० १६३३ मासोज सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १४ । ज भण्डार ।

विशेष—गुराभद्राचार्य कृत उत्तरपुरागा की राजा श्रीराक की स्तुत्ति है तथा ३३ व्लोक है । संग्रहकर्ता श्री फतेहलाल धर्मा है ।

४०८४. वर्द्धमानस्तोत्र" ""। पत्र सं०५। ग्रा० ७३४६६ इंच। भाषा-संस्कृता। विषय-स्तोत्र। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वै० स० १३२८। ऋ भण्डार।

विजेप-पत्र ३ से म्रागे निर्वाणकाएड गाथा भी है।

४०८६. वसुधारापाठ """। पत्र स० १६। ग्रा० ८४१ इ'च। भाषा-संस्कृत । विषय-म्तोत्र । र० काल ×। के० काल ×। पूर्ण । वे० सं० ६०। छ भण्डार ।

४०८७ वसुधारास्तोत्र । पत्र सं० १६। ग्रा० ११४५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वै० सं० २७६ । स्व मण्डार ।

४०८८ प्रति संव २। पंत्र सव २६। लेव काल 🔀 । ग्रपूर्ण । वेव संव ६७१ । इ भण्डार ।

४०८६. विद्यमानचीसतीर्थंकरस्तवन—मुनि टीप। पष सं०१। ग्रा०११×४६ इंच। मापा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्गी। वे० म०१६३३।

४०६०. विपापहारस्तोत्र—धनंजय। पत्र स० ४। म्रा० १२३×६। भाषा-संस्कृतं। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १८१२ फागुरा बुदी ४। पूर्ण। वै० सं० ६६६।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है। इसकी प्रतिलिपि प० मोहनदासजी ने श्रपने शिष्य गुमानीरामजी के पठनार्थ क्षेमकरएाजी की पुस्तक मे बसई (बस्सी) नगर मे जान्तिनाथ चैत्यालय में की थी।

४०६१. प्रति सं० २। पत्र स० ४। ले० काल 🗴 । वे० स० ६७६ । इ. भण्डार ।

४०६२. प्रति स० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल ४ । वे० स० १५२ । ज भण्डार ।

विशेष-सिद्धिप्रियस्तोत्र भी है।

४०६३. प्रति सं० ४ । पत्र स० १५ । ले० वाल × । वै० सं० १६११ । ट भण्डार ।

विशेष--प्रति सरकृत टीका सहित है।

४०६४. विषापहारस्तोत्रटीका—नागचन्द्रसूरि । पत्र स० १४ । आ० १०×४५ डच । भाषा— सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४ । स्त्र भण्डार ।

४०६४. प्रति सं०२ । पत्र सं० म से १६ । ले॰ काल स० १७७८ भादवा बुदी ६ । वे० स० ८८६। च्या भण्डार ।

विशेष-मौजमाबाद नगर मे प० चोखचन्द ने इसकी प्रतिलिपि की थी।

४०६६. विद्यापहारस्ते।त्रभाषा-पन्नालाल । पत्र सं० ३१। स्रा० १२३×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विद्याप्ति । र० काल स० १६३० फागुण सुदी १३। ले० काल 🗶 । पूर्ण । वे० सं० ६६४। क भण्डार।

विशेष-- सी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६६५) और है।

४०६७. विषापदारस्तोत्रभाषा—श्रचलकीत्ति । पत्र स०६। ग्रा॰ ६६×५ ई इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल ×। ल० काल ×। पूर्ण । वे० स०१५८५ ! ट भण्डार ।

४०६८. वीतरागस्तोत्र—हेमचन्द्राचार्य। पत्र स०६। ग्रा०६३×४ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स०२४७। छ भण्डार।

४०६६. वीरछ्त्तीसी"" "। पत्र स० २। आ० १०×४३ इ च । भाषा-संस्कृत । विष्य-स्तात्र । २० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५० । ऋ मण्डार ।

४१००. बीरस्तवन ' ' । पत्र स० १ । ग्रा० ६ २४४ द्व । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वे० स० १२४६ । म्रा भण्डार ।

४१०१. वैराग्यगीत—सहसत । पत्र स०१। ग्रा० द×३३ इ'च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२६ । आ भण्डार ।

विशेष-- 'मूल्यो भमरा रे काई भमै' ११ अंतरे है।

४१०२. पट्पाठ- चुधजन । पत्र स०१। आ० ६×६ इ'च। आषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल ×। ले० काल स०१८५०। पूर्या। वे० स० ५३५ । व्य भण्डार ।

४१०३. पट्पाठ। पत्र सं० ६ । ग्रा० ४×६ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय - स्तोत्र । र० काल × । विषय - स्तोत्र । र० काल × । पूर्ण । वे० स० ४७ । स्त भण्डार ।

४१०४ शान्तिघोषणास्तुति । पत्र सं०२। ग्रा०१०४४ दै इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ४। ले० काल मं०१४६६। पूर्ण। वे० सं० ८३४। स्त्र भण्डार।

४१०४. शान्तिनाथस्तवन--ऋषि लालचन्द्। पत्र सं०१। म्रा० १०४४ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल मं०१८५६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०१२३५। स्त्र भण्डार।

विशेष--शातिनाथ का एक स्तवन श्रीर है।

४१०६. शान्तिनाथस्तवन ""। पत्र सं० १। ग्रा० १०३ \times ४३ इंच । भण्या-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० १६५६ । ट भण्डार ।

विशेष--- गान्तिनाथ तीर्थं द्वार के पूर्वभव की कथा भी है।

ग्रन्तिमपद्य---

7

कुन्दकुन्दाचार्य विनती, शान्तिनाथ गुरा हिय मे धरै। रोग सोग सताप दूरे जाय, दर्शन दीठा नवनिधि ठाया।।

इति शान्तिनाथस्तोत्रं संपूर्ण।

४१०७. शान्तिनाथस्तोत्र—मुनिभद्र । पत्र सं० १ । ग्रा० ६५ \times ४ $_{g}^{3}$ ब्रञ्ज । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० २०७० । श्र भण्डार ।

विशेप-अथ शान्तिनाथस्तोत्र लिख्यते-

काव्य-

नाना विचित्रं भवदु खरागि, नामा प्रकारं मोहाग्निपाशं ।
पापानि दोषानि हरन्ति देवा, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ।।१।।
संसारमध्ये मिथ्यात्विचन्ता, मिथ्यात्वमध्ये कर्माणिवंध ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ।।२।।
कामं च क्रोध मायाविलोभं, चतु कषायं इह जीव बंध ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ।।३।।
नोहाक्यहीने कठिनस्यचित्ते, परजीविनिदा मनसा च वाचा ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ।।४।।
चारित्रहीने नरजन्ममध्ये, सम्यक्त्वरत्नं परिपालनीयं ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ।।४।।

जातस्य तरगां युक्तस्य वचनं, हो शान्तिजीव बहुजन्मदुःखं ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरंगां तव शान्तिनाथ ॥६॥
परद्रव्यचोरी परदारसेवा, शकादिकक्षा अजनुत्यवध ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरगां तव शान्तिनाथ ॥७॥
पुत्राणि मित्राणि कलित्रदंदं, इहदंदमध्ये बहुजीववधा ।
ते बध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरण तव शान्तिनाथ ॥५॥

जयित पठित नित्यं श्री शान्तिनाथादिशाति
स्तवनमधुरवाग्गी पापतापोपहारी।
कृतमुनिभद्रं सर्वकार्यपु नित्यं

. 11811

इतिश्रीशोन्तिनाथस्तीत्र सपूर्ग । शुभम् ॥

४१०८. शान्तिनाथस्तोत्र """। पत्र सं० २। ग्रा० ६×८ हे डच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७१६ । स्त्र भण्डार ।

४१०६. शान्तिपाठ"""। पत्र सं० ३ । म्रा० ११×५३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११६ । छ्र भण्डार ।

४११०. शान्तिविधान " । पत्र सं० ७ । आ० ११५४४३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र : र० काल × । ले० काल × । पूर्शा । वे० सं० २०३१ । स्त्र भण्डार ।

४१११. श्रीपतिस्तोत्र—चैनसुखजी। पत्र स०६। ग्रा० =×६५ इत्र । भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७१२। ख भण्डार।

४११२. श्रीस्तोत्र" " । पत्र सं०२ । ग्रा० ११४५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल स० १६०४ चैत बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० १८०४ । ट भण्डार ।

विशेष-प्रति सस्कृत टीका सहित है।

४११३. सप्तनयिवचारस्तवनं " । पत्र सं० व । ग्रा० १२×५१ इ च । भाषा~सस्कृत । विषय~ स्तीत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३५ ।

विशेष---३७ पद्य हैं।

४११४ समवशरणस्तोत्र ""। पत्र सं० ६। ग्रा० १२×५३ ड'च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तीत्र । र० काल × । ले० काल स० १७६६ फाग्रुन सुदी १४ । पूर्ण । ते० सं० २६६ । छ भण्डार ।

विशेष —हिन्दी टथ्वा टीका सहित है।

प्रारम्भ--

बृपभाद्यानभिनंद्यान् विदित्वा वीरपश्चिमजिनेंद्रान् । भक्त्या नतोत्तमागः स्तोष्ये तत्त्समवशरणािग् ॥२॥

४११४. समवशरणस्तोत्र—विष्णुसेन मुनि । पत्र म० २ से ६। ग्रा० ११५×५ इ व । भाषा-

४११६ प्रति सं०२ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे . स० ७७८ । त्रा भण्डार ।

४११७. प्रति सं० ३। पन्न सं० ४। ले० काल स० १७८५ माघ बुदी ४। वे० स० २०४। व्य भण्डार।

विजेप-प० देवैन्द्रकीर्ति के शिष्य पं० मनोहर ने प्रतिलिपि की थी।

संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । प्रपूर्ण । वे० म० ६७ । स्त्र भण्डार ।

४११८. संभविजनस्तोत्र—मुनि गुणानींद । पत्र स०२। आ० ५२४४३ इखा भाषा-मंस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ७६०। इ भण्डार।

४११६. समुदायस्तोत्र " ""। पत्र स० ५३। मा० १३×५६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८८७ । पूर्ण । वै० स० ११४ । घ भण्डार ।

विशेष-स्तोषो का सग्रह है।

४१२०. समवशरणस्तोत्र—विश्वसेन । पत्र सं० ११ । आ० १०५×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

विशेप—सस्कृत श्लोको पर हिन्दी मे ग्रर्थ दिया हुन्रा है।

४१२१. सर्वतोभद्रमंत्र " " । पत्र स० २ । ग्रा० ६×३३ डंच । भाषा-सम्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८६७ ग्रासोज सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० १४२२ । ग्रा भण्डार ।

४१२२ सरस्वतीस्तवन-लघुकवि। पत्र स० ३ मे ४ । ग्रा० ११-१×४० इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० सं० १२४७। त्र्य भण्डार।

विशेष--प्रारम्भ के २ पत्र नहीं है।

अतिमपुष्पिका- इति भारत्यालघुकवि कृत लघुस्तवन सम्पूर्णातामागतम् ।

४१२३ प्रति सं०२। पत्र सं०३। ले० काल ×। वे० म० ११५५। इत्र भण्डार।

४१२४ सरस्वतीस्तोत्र- बृहस्पति । पत्र स०१। ग्रा० ८३×४३ ड'च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र (जैनेतर)। र० काल × । ले० काल स०१८५१। पूर्णा । वे० स०१५५०। स्त्र भण्डार।

४१२४ सरस्वतीस्तोत्र—श्रुतसागर । पत्र स० २६ । ग्रा० १०३८४६ द च । भाषा- सस्कृत । विषय स्तवन । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० १७७४ । ट भण्डार ।

विशेष-वोच के पत्र नहीं है।

४१२६. सरस्वतीस्तोत्र" ''। पत्र सं० ३। ग्रा० ८४४ दे द च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । पूर्ण । वे० स० ८०६ । ड भण्डार ।

४१३७ प्रति सं०२। पत्र स०१। ले० काल स०१ ८६२। वे० स०४३६। व्य भण्टार।

विशेष - रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी। भारतीस्तीत्र भी नाम है।

४१२८. सरस्वतीस्तोत्रमाला (शारदा-स्तवन) "' '। पत्र सं॰ २। ग्रा० ६४४ इन। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे॰ मं० १२६। व्य भण्डार ।

४१२६. सहस्रनाम (लघु)—श्राचार्य समन्तभद्र। पत्र सं० ४। आ० ११३×४ इ च। भाषा— मस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १७१४ ग्राश्विन बुदी १०। पूर्ण। वे० स० ६। भा भण्डार।

विशेष—इसके ग्रतिरिक्त भद्रवाहु विरिचत ज्ञानाकुण पाठ भी है। ४३ श्लोक हैं। ग्रानन्दराम ने स्वय जोधराज गोदीका के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। 'पोथी जोधराज गोदीका की पढिवा की छैं' पत्र ४ मु० भागानेर।

४१३०. सारचतुर्विशति " '। पत्र स० ११२ । ग्रा॰ १२×५ द च । भाषा-सस्कृत । विषय-म्तोत्र । र॰ काल × । ले॰ काल स॰ १८६० पौष सुदी १३ । पूर्ण । वे॰ स॰ २८८ । ज भण्डार ।

विशेप-प्रथम ६५ फुठो मे सकलकीत्ति कृत श्रावकाचार है।

४१३१. सायसन्ध्यापाठ : " । पत्र म० ७ । म्रा० १०×४ है इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स॰ १८२४ । पूर्ण । वे० स० २७८ । ख मण्डार ।

४१३२. सिद्धवद्ना '' । पत्र सं० द । म्रा० ११×५३ इ च । भाषा-सम्यृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८८६ फाल्ग्रुन सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ६० । म भण्डार ।

विशेष--श्रीमाणिक्यचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

४१३३. सिद्धस्तवन : " । पत्र स० ८ । मा० ८३×६ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र० वाल 🗙 । ले० काल 🗙 । म्रपूर्ण । वे० स० १६५२ । ट भण्डार ।

४१३४. सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवनंदि । पत्र सं० ६ । ग्रा० ११४५ इख्र । भाषा-मस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल ४ । ले० काल स० १८८६ भाद्रपद बुदी ६ । पूर्ण । वै० सं० २००८ । ग्रा भण्डार ।

४१३४. प्रति सं०२। पत्र सं०१६। ले० काल ४। वे० सं० ८०६। क भण्डार।

विशेष--हिन्दी टीका भी दी हुई है।

४१३६ प्रति सं०३। पत्र स०६। ले० काल ×। वे० सं०२६२। ख मण्डार।

विशेष—हासिये मे कठिन शब्दों के ग्रर्थ दिये हैं। प्रति सुन्दर तथा प्राचीन है। ग्रक्षर काफी मोटे हैं।
मुनि विशालकीर्ति ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ सं॰ २६३, २६८) श्रीर हैं।

४१३७. प्रति सं० ४ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० सं० ५५३ । इ भण्डार ।

४१३ः प्रति स०४ । पत्र सं०५ । ले० काल सं०१ ६६२ ग्रासोज बुदी २ । ग्रपूर्ण । वे० स०४०६ । च भण्डार ।

थिशेष-प्रित संस्कृत टीका सहित है। जयपुर मे अभयचन्द साह ने प्रतिलिपि की थी।

४१३६ प्रति सं०६। पत्र स०६। ले० काल ×। वे० सं०१०२। छ भण्डार।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३८, १०३) श्रीर है।

४१४०. प्रति सं० ७ । पत्र स० ५ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० १०६ । ज भण्डार ।

४१४१. प्रति स० ६ । पत्र स० ६ । ले० काल 🗴 । वे० सं० १६८ । व्य भण्डार ।

विशेष-प्रति प्राचीन है। ग्रमरसी ने प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २४७)

ग्रीर है।

४१४२ प्रति स०६। पत्र सं०३। ले० काल ×। वै० सं०१८२५। ट भण्डार।

४१४३ सिद्धिप्रियस्तोत्रटीका ""। पत्र सं० ५। ग्रा० १३×५ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-

विशेष-- त्रिलोकदास ने अपने हाथ मे म्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

४१४४ सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा-पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० ३६। ग्रा० १२५×५ इंच । आपा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल सं० १६३०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८०५। क भण्डार।

४१४४ सिद्धिप्रियस्तोत्रभापा—नथमल । पत्र सं० ८ । म्रा० ११×६ उख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । पूर्ण । वे० स० ८४७ । क भण्डार । प्रश्यह प्रति सं०२। पत्र स०३। ले० काल ×। वे० सं० ६५१। इन् भण्डार।

विशेय-इसी भण्डार मे एक प्रति (वै० सं० ८५२) ग्रीर है।

४१४७. सिद्धिप्रियस्तोत्र """। पत्र स० १३ । आ० ११३×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०४ । क भण्डार ।

४१४८ सुगुरुस्तोत्र" " । पत्र स० १। ग्रा० १०३×६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०६८ । स्त्र भण्डार ।

४१४६ वसुधारास्तोत्र " ""। पत्र सं० १० । ग्रा० ६३×४ इत्र । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तीत्र । र० काल × । पूर्श । वे० स० २४६ । ज भण्डार ।

विशेष--- अन्त मे लिखा है- अथ घटाकर्णकल्प लिख्यते ।

४१४० सौद्र्यलहरीस्तोत्र-भट्टारक जगद्भूषण्। पत्र स० १०। म्रा० १२×५ई इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ने० काल स० १८४४ । पूर्ण । वे० स० १८२७ । ट भण्डार ।

विशेष--वृत्दावती केर्वट मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे भट्टारक सुरेन्द्रकीत्ति श्रामेर वालो ने सर्वसुख के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

४१४१ सोदर्शतहरीस्तोत्र"" '। पत्र स० ७४। ग्रा० ६३×५५ इंच। भाषा-सस्कृत । विषय-म्तोत्र । ७० काल २। ते० काल सं० १८३७ भादवा बुदी २। पूर्ण। वे० स० २७४। ज भण्डार।

४१४२. म्तुति" ""। पत्र सं० १ । श्रा० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विपय-स्तवन । र० काल ×। ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६७ । आ भण्डार ।

विशेष-भगवान महावीर की स्तुति है। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

प्रारम्भ---

त्राता त्राता महात्राता भर्ता भर्ता जगत्त्रभु

वीरो वीरो महावीरोस्तव देवासि नमोस्तुति ॥१॥

४१४२ स्तुतिसग्रह " । पत्रं स०२ । ग्रा० १०×४ दे इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तीत्र । र० काल × । पूर्ण । वै० सं• १२४० । ग्रा भण्डार ।

४१४४. स्तुतिसम्रहः "। पत्र स०२ से १७। ग्रा० ११×४ इ च। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र॰ काल ×। ने० काल ×। श्रपूर्ण । वे० सं० २१०६ । ट भण्डार ।

विशेष--पद्मपरमेष्टीस्तवन, वीसतीर्थन्द्वरस्तवन भ्रांदि है।

स्तोत्र साहित्य]

४१४४. स्तोत्रसंग्रह " । पत्र सं० ६। ग्रा० ११ है×५ इंच । भाषा-प्राकृत, संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र॰ काल × । ले॰ काल × । ग्रपूर्ण । वे॰ सं० २०५३ । त्र्य भण्डार ।

विशेप--- निम्नलिखित स्तीत्र है।

नाम स्तोत्र	कत्ती	भाषा
१. शान्तिकरस्तोत्र	सुन्द र सूर्य	प्राकृत
२ भयहरस्तोत्र	×	77
३. लघुशान्तिस्तोत्र	×	सस्कृत
४ चृहद्शान्तिस्तोत्र	×	77
५. ग्रजितशान्तिस्तोत्र	×	37

२रा पत्र नहीं है। सभी श्वेताम्बर स्तीत्र है।

४१४६ स्तोत्रसंग्रह। पत्र स० १० । ग्रा० १२×७३ इख्र । भाषा --संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३०४ । श्र भण्डार ।

विशेष---निम्न स्तोत्र है।

१. पद्मावतीस्तोत्र —	×ι
२. कलिकुण्डपूजा तथा स्तोत्र —	×Ι
३. चिन्तामिंग पार्श्वनाथपूजा एव स्तोन्न —	लक्ष्मीसेन
४. पार्श्वनाथपूजा —	×ι
५ लक्ष्मीस्तोत्र —	ਪਬਾਰਪਟੇਰ

विशेष---निम्न सग्रह है- १ एकीभाव, २. विपापहार, ३. स्वयभूस्तीय।

४१४८ स्तोत्रसंग्रह " " । पत्र सं० ४६ । ग्रा० ८ ४५ १ इद्ध । भाषा-प्राकृत, सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल 🗶 । ले० काल स० १७७६ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० १३१२ । ऋ भण्डार ।

विशेष — २ प्रतियो का मिश्रग् है । निम्न सग्रह है —

१. निर्वाणकाण्डभाषा—	×	हिन्दी
२. श्रीपालस्तुति	×	संस्कृत
३. पद्मावतोस्तवन मंत्र सहित	×	•

- ४. एकीभावस्तोत्र, ५. ज्वालामालिनी, ६ जिनपञ्जरस्तोत्र, ७. लक्ष्मीस्तीत्र,
- **८.** पार्श्वनाथस्तोत्र
- ६ वीतरागस्तोत्र-- पद्मनंदि सस्कृत
- १० वर्द्ध मानस्तोत्र

, श्रपूर्ग

११ चांसठयोगिनीस्तोत्र, १२ शनिस्तोत्र, १३. शारदाष्ट्रक, १४ त्रिकालचीवीसीनाम

X

१५. पद, १६. विनती (ब्रह्मजिनदास), १७ माता के मोलहस्वप्न, १८ परमानन्दस्तयन ।

सुखानन्द के शिष्य नैनसुख ने प्रतिलिपि की थी।

४१४६. स्तोत्रसम्रह : । पत्र म० २६ । ग्रा० मळ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० ७६० । ऋ भण्डार ।

विशेप---निम्न स्तोत्र है।

१. जिनदर्शनस्तुति, २ त्रः विमडलस्तोत्र (गौतम गराधर), ३ लघुशातिकमन्त्र,

४ उपसर्गहरम्तोत्र, ५, निरञ्जनस्तोत्र।

४१६० स्तोत्रपाठसंत्रह "। पत्र स० २२१। ग्रा० ११३×१ इ च । भाषा-सस्कृत, प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० २४० । त्र्य भण्डार ।

विशेष-पत्र स० १७, १८, १६ नहीं हैं। नित्य नैमिक्तिक स्तोत्र पाठो का संग्रह है।

४१६१ स्तोत्रसम्रह : । पत्र स० २७६ । म्रा० १०×४ दे इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत । र० काल × । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० स० ६७ । स्म भण्डार ।

विशेष---२४६, २४६वा पत्र नहीं है। साधारण पूजागठ तथा स्तुति सग्रह है।

४१६२. स्तोत्रसम्रह " । पत्र स० १४३ । म्रा० ११×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० स० १०६७ । म्रा भण्डार ।

४१६३. स्तोत्रसंग्रह '। पत्र स०१८। ग्रा० ७२४४) इ.च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ३५३ । स्त्र भण्डार ।

४१६४. प्रति सं०२। पत्र स० १३। ले० काल 🗴। वे० स० ३५४। ऋ भण्डार।

४१६४ स्तोत्रसंग्रह '। पत्र स०११। ग्रा० ५३ \times ४ इच। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र॰ काल \times । पूर्ण । वे० स०२६०। ऋ भण्डार ।

विशेष---निम्न सग्रह हैं---

स्तोत्र साहित्य

. भगवतीस्तोत्र, परमानन्दस्तोत्र, पार्श्वनायस्तोत्र, घण्टाकर्णमन्त्र ग्रादि स्तोत्रो का मग्रह है।
४१६६. स्तोत्रसंग्रह " । पत्र सं० ५२। ग्रा० ११३×६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे॰ सं० ५३२ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम स्तोत्र अपूर्ण है। कुछ स्तोत्रो की संस्कृत टीका भी साथ मे दी गई है।
४१६७ प्रति सं०२। पत्र स०२५७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे॰ सं० द३३। क भण्डार।
४१६८. स्तोत्रपाठसंग्रह ""। पत्र सं०५७। ग्रा०१३×६ इंच। भाषा—संस्कृत, हिन्दी। विषय—
स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे॰ सं० द३१। क भण्डार।

विशेष-पाठो का सग्रह है।

४१६६. स्तोत्रसप्रह " ""। पत्र सं० द१ । ग्रा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत, प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० द२६ । क भण्डार ।

विशेष —निम्न संग्रह है।

नामस्तोत्र	कत्ती	भाषा
प्रतिक्रमरा	×	श्राकृत, संस्कृत
सामायिक पाठ	×	संस्कृत
श्रुतभक्ति	×	সা কূর
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत
सिद्धभक्ति तथा ग्रन्य भक्ति संग्रह	ani-uni-	प्राकृत
, स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्र	संस्कृत
['] देवागमस्तोत्र	>>	संस्कृत
जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	>>
भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	37
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	?>
एकीभावस्तोत्र	वादिराज , ,	3)
सिद्धिप्रयस्तोत्र	देवनन्दि	55
विषा९हार्स्तोत्र	धनञ्जय	- 5)
भूपालचतुर्विशतिका	भूपालकवि	57
महिम्नस्तवन	जयकीत्ति	9 7
समवशरण स्तोत्र	विष्णुसेन	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
महर्षि तवन	×	संस्कृत
ज्ञानाकुशस्तीत्र	×	19
चित्रबधस्तोत्र	×	97
लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभ देव	57
नेमिनाथ एकाक्षरीस्तोत्र	पं॰ शालि	17
लघु सामायिक	×	37
चतुर्विशतिस्तवन	×	35
यमकाष्ट्रक	भ० ग्रमरकीत्ति	17
यमकवध	×	11
पार्श्वमाथस्तोत्र	×	77
वर्द्ध मानस्तोत्र	×	15
जिनोपकारस्मरग्रस्तोत्र	×	95
मह,वीराष्ट्रक	भागचन्द	17
लघुसामायिक	×	31

४१७० प्रति सं०२। पत्र स० १२८। ले० क.ल ×। वे० सं० ८२८। क मण्डार।

विशेष--प्रधिकांश उक्त पाठो ना ही संग्रह है।

४१५१. प्रति सं० ३ | पत्र सं० ११८ । ले० काल × । वे० मं० ८२६ । क भण्डार ।

विशेय--उक्त पाठों के ग्रतिरिक्त निम्नपाठ ग्रीर हैं।

वीरनाथस्तवन × सस्कृत श्रीपार्व्वजिनेश्वरस्तोत्र × "

४१७२ स्तोत्रसंग्रहः । पत्र स० ११७ । ग्रा० १२३४७ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ध । वे० सं० = २७ । क भण्डार ।

विशेष--निम्न संग्रह है।

नाम स्तोच	कर्ता	भाषा
प्रतिक्रमस्	×	संस्कृत
सामायिक	×	93
भक्तिगठसैन्नह	×	12

नाम म्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
तत्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत
स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्र	57

४१७३. स्तोत्रसंग्रह : "। पत्र सं० १०। ग्रा० ११२४७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ×। पूर्ण । वे० सं० ५३०। क भण्डार ।

विशेष---निम्न सग्रह है।

नेमिनायस्तोत्र सटीक	×	संस्कृत
द्वचक्षरस्तवन	×	11
स्वयंभूस्तोत्र	×	17
चन्द्रप्रस्भतोत्र	×	1)

४१७४. स्तोत्रसंग्रहः "। पत्र सं० ८ । ग्रा० १२३×५ है इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । पूर्ण । वै० सं० २३६ । स्व भण्डार ।

विशेष--निम्न स्तोत्र है।

कल्यागमन्दिरस्तोत्र	जु मुदचन्द्र	संस्कृत
विषापहारस्तोत्र	घनञ्जय	17
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	41

४१७४. स्तोत्रसग्रहः "। पत्र सं॰ २२। ग्रा० १२३×५% इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ×। क्रं काल ×। पूर्ण । वै० स० २३६ । ख्र भण्डार ।

विशेष--निम्न स्तोत्र हैं।

एकी भाव	बादिराज	संस्कृत
सरस्वतीस्तोत्र मन्त्र सहित	×	**
ऋषिमण्डलस्तोत्र	×	\$9
भक्तानरस्तोत्र ऋद्धिमंत्र सहित	×	77
हनुमानस्तोत्र	×	•
ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	11
चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	

४१७६. स्तोत्रसंग्रह ""। पत्र स०१४। ग्रा० ७×४३ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं०१ द४४ माह सुदी १। पूर्श। वे० सं०२३७। ख भण्डार।

विशेष---निम्न स्तीत्री का संग्रह है।

ज्वालामालिनी, मुनीश्वरी की जयमाल, ऋपिमडलस्तीत्र एव नमस्कारस्तीत्र।

४º७७ स्तोत्रसंग्रह "। पत्र स०२४। आ०६×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण वि० सं०२३६। खभण्डार।

विशेष---निम्न स्तोत्रो का संग्रह है।

पद्मावतीस्तोत्र	×	संस्कृत	१ से १० पत्र
चक्रे श्वरीस्तोत्र	×	37	११ से २० पत्र
स्वर्णाकर्षगविधान	महीधर	"	२४

४१७८. स्तोत्रसंप्रह " ""। पत्र सं० ८१। ग्रा० ७३×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । पूर्ण । वे० स० ८६६ । इः भण्डार ।

४१७६ स्तोत्रसंग्रह । पत्र स० २७ । म्रा० १०६ ४४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । वि० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६६ । इस भण्डार ।

विशेष---निम्न स्तोत्र हैं।

भक्तामर, एकीभाव, विपापहार, एवं भूपालचुतुर्विशतिका।

४१८०. स्तोत्रसंग्रह "" । पत्र स० ३ से ५६ । ग्रा० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं• ८६७ । इस भण्डार ।

४१८१. स्तोत्रसंग्रहः : ""। पत्र सं० २३ से १४१ । ग्रा॰ ८४१ इ च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । त्रपूर्ण । वै० सं० ८६६ अ भण्डार ।

विशेष--निम्न पाठी का संग्रह है।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
पचमंगल	रूपचंद	हिन्दी प्रपूर्ण
कलशविधि	×	, संस्कृत
देवसिद्धपूजा	×	77
शान्तिपा ठ	×	, n
जिनेन्द्रभक्तिस्तोत्र ः	×	" हिन्दी

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
कल्याग्।मन्दिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	हिन्दी
जैनशतक	भूघरदास	7)
निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	75
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	99
तेरहकाठिया	वनारसीदास	33
चैत्यबदना	×	"
भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	79
पचकल्यारापूजा	×	1 7

४१८२. स्तोत्रसंग्रह" "। पत्र स० ५१। ग्रा० ११४७३ इच। भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वै० मं० ८६५ । इक भण्डार ।

विशेष--निम्न प्रकार सग्रह है।

निर्वाराकाण्डभाषा	भेया भगवतीदास	हिन्दी	श्रपूर्ण
सामायिकपाठ	प ० महाचन्द्र	"	पूर्ग
सामायिकपाठ	×	23	श्रपूर्ण
पंचपरमेष्टीगुरा	×	37	पूर्ण
लघुसामायिक	×	संस्कृत	25
वार्हभावना	नवलकवि	हिन्दी	>>
द्रव्यसग्रहभाषा	×	27	मपूर्श
निर्वा ग् काण्ड गा था	×	प्राकृत	पूर्या
चतुर्विशतिस्तोत्रभाषा	भूषरदास	हिन्दी	3 3
चौवीसदंडक	दौलतराम	23	? }
परमानन्दस्तोत्र	×	37	मपूर्वा
भक्तामरस्तोत्र	मानतु ग	संस्कृत	पूर्ण
कल्यारगमन्दिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	हिन्दी	35
स्वयभूस्तोत्रभाषा	चानतराय	37	27
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदा स	37	श्रपूर्श
ग्रालोचनापाठ	×	n	27
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत	55

नीम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	
विर्पापहारस्तोत्रभाषा	*	हिन्दी	पूर्गा
सबोधपचासिका	Ŕ	33	1)

४१८३. स्तोत्रसम्रहः । पत्र सं० ५१ | ग्राँ० १०५४७ उन । भाषा-मन्कन । निषय-न्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० ८६४ । र्ड भण्डार ।

विशेष--निम्न स्तोत्री का संग्रह है।

नवगहस्तोत्र, यो गनीस्तोत्र, पद्मावतीस्तोत्र', तीर्थ द्वारस्तोत्र, सामागिकपाठ ग्रादि है।

४१८४ स्तोत्रसम्रहः । पत्र स०२५। म्रा० १०५४४ उचा भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र॰ कील ४। ले॰ काल ४ (पूर्ण । वे॰ सं॰ ६६३ । ङ भण्डार ।

विशेप-भक्तामर ग्रादि स्तोत्रों का संग्रह है।

४२=४ स्तोत्रसंग्रह " "" पत्र सं० २६। ग्रा० ५३×६ उच । भाषा-मन्तृत हिन्दा। विषय-स्नवन । र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण । वे० सं० ५६२ । ढ भण्डार ।

४१८६ स्तोत्र—स्त्राचार्ये जसवंत । पत्र सं० १। ग्रा० ६ ४४ इच । भाषा-सम्मृत । विषय-स्तोत्रं । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८६१ । इ भण्डार ।

४१८७. स्तीत्रपूजासंग्रहः । पत्र सं ० ६ । ग्रा० ११८५ इ च । भाषा-हिन्दा । विषय-स्तीत्र पूजा । र० काल × । ले॰ काल × । ग्रपूर्ण । वे॰ सं॰ ८६० । हे भण्डार ।

४१८८ स्तोत्रसम्रहः ""। पत्र सं० १३। म्रा० १२४८ डंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० कालं ४। ने० काल ४। म्रपूर्ण। वै० मं० ८८६। स भण्डार।

४१८६ र्स्तोत्रसंप्रह् """। पत्र सं० ७ से ४७ । या० ६ \times ४, इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र र० काल \times । ले० काल \times । प्रपूर्ण । वे० सं० ६६६ । क्षि भण्डार ।

४१६०. स्तीत्रसम्बद्धाः । पत्र सं० ६ से १६। म्रा० ११८४ एँ ई च । भाषा-सस्कृत । विषय-म्तीत्र । र० भाल 🗴 । लें० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० ४२६ । च भण्डार ।

एकीभावस्तोत्र **वादिरा**ज मस्कृत कल्याग्मिन्दरस्तोत्र कुमुदचन्द्र ,,

प्रित प्राचीन है। मस्कृत टीका सहित है।

४१६१. स्तोत्रसंग्रह" ""। पत्र सं०२ मे ४८। ग्रा० ५४४ द्वा भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । से० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ४३०। च भण्डार ।

४१६२. स्तोत्रसंग्रह """ पत्र मं० १४। ग्रा० ५३×५३ इ'च। भाषा-सम्कृत। त्रिषय-स्तोत्र। र० काल ×। ने० काल मं० १८५७ उंग्रेंष्ठ सुदी ४। पूर्ण। वे० मं० ४३१। च भण्डार।

विशेष--निम्न संग्रह है।

₹.	सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत
₹.	कल्यारामन्दिर	कुर्मुदचन्दीचीर्य	, 72
3	भक्तामरस्तोत्र	मीनतु गिर्वार्ध	ıĵ

४१६३ स्तोत्रसंप्रह" "। पत्र में० ७ मे १७। ग्रा० ११×८ है इंच । भाषा-सस्कृतं । विषय-म्तोत्र । र० काल \times । त्रे० काल \times । त्रपूर्णे । वे० सं० ४३२। चं भण्डारं ।

४१६४. स्तोत्रसंग्रह मार्थित सं २४। ग्रा० १२ं४७ इंच। मर्थि। हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत। विषय-म्नोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० २१ं६३। ट मण्डार।

४१६४. स्तोत्रसम्रहः "। पत्र सं० ४ से ३४ । ग्रा० ६×५३ इ दं । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० कील सं० १८७५ । म्रपूर्ण । वे० सं० १८७२ । ट भण्डार ।

४१६६' स्तोत्रसम्रह """। पत्र सं० १५ मे ३४। म्रा० १२imes६ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल imes। ले० काल imes। प्रपूर्ण । वे० स० ४३३। च मण्डार ।

विशेष---निम्न संग्रह है।

नामायिक वडा	×	मंस्कृत	श्रपूर्रा
सामायिक लघु	×	ż	पूर्ख
महस्रनाम नघु	×	23	"
सहस्रनाम वडा	×	79	17
ऋषिमडलस्तोत्र	×	*2	39
र्निवरिएका ण्डेगार्था	×	3 39	11
नवकारमन्त्र	×	39	11
वृत्द् नवंकार	×	यपञ्च ग	19
वीतरागस्तोत्र	पष्पनंदि	संस्कृत	39
जिनपजरस्तोत्र	×	33	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	
पद्मावतीचक्रे स्वरीस्तोत	×	77	77
वच्चपजरस्तोत्र	×	77	"
हनुमानस्तोत्र	×	हिन्दी	7-
ब डादर्श न	×	संस्कृत	37
ग्राराधना	×	प्राकृत	27

४१६७. स्तोत्रसंग्रह"" " पत्र स० ४। ह्या० ११×८ इंच । भाषा-मस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । पूर्ण । वे० स० १४८ । छ भण्डार ।

विशेष---निम्नलिखित रत्तोत्र है।

एकीभाव, भूपालचीबीसी, विपापहार, नेमिगीत भूधरकृत हिन्दी में है।

४१६८. स्तोत्रसंग्रहः •••। पत्र सं० ७ । ग्रा० ४६ ४३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-न्तात्र । र० काल × । पूर्ण । वे० स० १३४ । छ भण्डार ।

निम्नलिखित स्तोत्र हैं।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
पार्वनायस्तोत्र	×	संस्कृत
तीर्घावलीस्तोत्र	×	*5

विशेष-ज्योतियी देवो मे स्थित जिनचैत्यो की स्तृति है।

चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	संस्कृ त	
जिनपञ्चरस्तोत्र	कमलप्रभ	••	श्रपुर्ण

श्री रुद्रपञ्जीयवरेगा गच्छः देवप्रभाचार्यपदाव्यहंस । वादीन्द्रचूडामग्गिरेप जैनो जियादसी कमलप्रभास्य ।।

४१६६. स्तोत्रसंग्रहः । पत्र म० १४। ग्रा० ४५ \times ३ $\frac{1}{2}$ इंस । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० \times । ने० काल \times । वे० स० १३४। छ भण्डार ।

लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	
नेमिस्तोत्र	×	37	
पद्मावतीस्तोत्र	×	,	

स्तात्र साहित्य

४२०० स्तोत्रसंग्रह "" पत्र सं० १३। म्रा० १३×७३ इ'च। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ×। पूर्ण । वे० सं० द१। ज भण्डार ।

विशेप---निम्नलिखित स्तोत्र हैं।

एकीभाव, सिद्धिप्रिय, कल्याणमिन्दर, भक्तामर तथा परमानन्दस्तीत्र ।

४२०१. स्तोत्रपूजासंग्रह । पत्र सं० १५२ । ग्रा० ६३×५ इंच । भाषा - संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४१ । ज भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाम्रो का संग्रह है। प्रति गुटका साइज एवं सुन्दर है।

४२०२ स्तोत्रसंग्रह ""। पत्र सं० ३२। श्रा॰ ४३×६३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ×। ते० काल सं० १९०२। पूर्ण । वे० सं० २६४,। मा भण्डार ।

विशेष-पद्मावती, ज्वालामालिनी, जिनपञ्जर म्रादि स्तोत्रो का संग्रह है।

४२०३. स्तोत्रसंग्रह। पत्र सं०११ से २२७। ग्रा० ६ र्५४५ इख्र । भाषा-संस्कृत, प्राकृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। श्रपूर्ण । वे० सं०२७१। भाभण्डार।

विशेष--गुटका के रूप मे है तथा प्राचीन है।

४२०४. स्तोत्रसंग्रहः ""। पत्र सं० १४ । ग्रा॰ ६×६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ सं॰ २७७ । व्य भण्डार ।

विशेष-भक्तामर, कल्याणमन्दिर स्तोत्र श्रादि हैं।

४२०४. स्तेतित्रत्रयः । पत्र सं०२१। ग्रा०१०४४ इख्राभाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र।र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण।वे० सं०५२४। व्याभण्डार।

विशेष-कल्याणमन्दिर, भक्तामर एवं एकीभाव स्तीत्र हैं।

४२०६. स्वयंभूरतोत्र—समन्तभद्राचार्य। पत्र सं० ४१। म्रा० १२३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। म्रपूर्ण। वे० सं० ५४०। क मण्डार।

विशेष-प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है। इसका दूसरा नाम जिनचतुर्विशति स्तोत्र भी है।

४२०७ प्रति सं०२। पत्र सं०१६। ले० काल सं०१७५६ ज्येष्ठ बुदी १३। वे० सं०४३५। च

विशेय—कामराज ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ४३४, ४३६) और हैं। ' ५२५. प्रति सं० ३। पत्र सं० २४। ले० काल ×। वे० सं० २६। ज भण्डार।

ावशेष—संस्कृत टीका सहित है।

४२०६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २४। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० सं० १५४। च्य भण्डार।
विशेष—संस्कृत में सकेतार्थ दिये गये हैं।

४२१०. स्वयंभूस्तोत्रंटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र सं० ४३ । आ० ११×६ इझ । भाषा-मस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८६१ मंगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ८४१ । क भण्डार ।

विशेष---प्रन्थ का दूसरा नाम क्रियाकलाप टीका भी दिया हुआ है। इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० ८३२, ८३६) और हैं।

४२११. प्रति सं०२। पत्र सं०११६। ले० काल सं०१६१५ पीष बुदी १३। वै० स० ८४। ज भण्डार।

विशेष—तनुसुखलाल पाड्या चौधरी चाटसू के मार्फत श्रीलाल पाटनी से प्रतिलिपि कराई।

४२१२. स्वयंभूस्तोन्नटीका"""। पत्र सं० ३२ । ग्रा० १०×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषयस्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० सं० ६५४। स्त्र भण्डार।



पद भजन गीत खादि

४२१३, त्र्यनाथानोचोढाल्या—खेम। पत्र सं २। म्रा० १०४४ इख्र। भाषा-हिन्दी। विषय-गीत। १० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं० २१२१। स्त्र भण्डार।

विशेष—राजा श्रेणिक ने भगदान महावीर स्वामी से अपने आपको श्रनाथ कहा था उसी पर नार ढालो मै प्रार्थना की गयी है।

१२१४. अमाधोमुनि संक्ष्माय" । पत्र स० १। आ० १०×४३ इख्रा भाषा-हिन्दी । विषय-गीत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० २१७३। अ भण्डार।

४२११ ऋहैं नकचौढालियागीत — विमल विनय (विनयरंग)। पत्र सं०३। आ०१०४४ ; इक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल ४। ले० काल १६८१ मासीज सुदी १४। पूर्ण । वै० सं० ६४५ । ऋ भण्डार ।

विशेष-शिद अन्तं भौग निम्म है-

भारमभ-- भवर्दी मान चउनीसमंउ जिनवदी जगदीस ।

भरहनक मुनिवर चरीय भिए। सुधरीय जगीस ।।१११

चौपई-- सु जगीसधरी मनमाहे, कहिसि संवव उछाहे।

प्ररहंनिक जिमब्रत लीधउ, जिम ते तारी वसि कीघड ॥२॥

निज मातः गाइ उपदेसइ, विलव्रत ब्रादरीय विसेसइ।

पहुतउ ते देव विमानि, सुिएाज्यो भवियस तिम कानि ॥३॥

नगरा नगरी जाणीयइ, अलकापूरि अवतार ।

वसइ तिहा विवहारीयउ सुदत नाम सुविचार ॥४॥

भौपर्ड-- स्विचार सुभद्रा घरणी

तसु नंदन रूप निधान, सरहंनक नाम प्रधान ॥१॥

मन्तिम— च्यार सरए। वित चीतवइ जी, परिहरि च्यारि क्वाय।

दोष तजइ इत उचरइ जी, सल्य रहित निरमाय ॥५४॥

٠,

ग्रसनपाल खादम बली जी सादिम सेवे निहार । इणि भाव ए सवि परिहरी जी, मन समरइ नवकार ॥५६॥ सिला संघारउ श्रादरया जी, सूर किरण तिन ताप। सहइ परीसह साहसी जी, छेदइ भवना पाप ॥५७॥ समतारस माहि भीलतं जी, मनेधरतं सुभ ध्यान । काल करी तिग्री पामीयउ जी, सुंदर देव विमान ॥५८॥ सूरग त्या सुख भोगवी जी. परमागंद उलास । तिहा थी चिव विल पामेरयड जी, श्रनुक्रमि सिवपुर वास ॥५६॥ श्ररहंनक जिमते घर उजी, श्रंत समय मुभभागा। जनम सफल करि ते सही जी, पामइ परम कल्याण ।।६०॥ श्री खरतर गच्छ दीवता जी, श्री जिनचद मुर्गिद । जयवंता जग जाएशियइ जी, दरसए। परमाएांद ॥६१॥ श्री ग्रुण सेखर ग्रुण निलंड जी, वाचक श्री नयरंग। तास सीस भावइ भएाइ जी, विमलविनय मतिरंग ।।६२।। ए संबंध सुहायउ जी, जे गावइ नर नारि। ते पामइ सुख संपदा जी, दिन दिन जय जयकार ।।६३॥

इति अरहंनक चउढालियागीतम् समाप्तम् ॥

संवत् १६६१ वर्षे श्रासु सुदी १४ दिने बुधवारे पंडित श्री हर्पसिहगणिशिप्यहर्पकीितगिणिशाय्येण पद्मरगमुनेना लेखि । श्री गुरुवचनगरे ।

४२१६. श्राविजिनवरस्तुति—कमलकीत्ति । पत्र सं० ४ । आ० १०६ ४४ इ च । भाषा-गुजराती । विषय-गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७४ । ट भण्डार ।

विशेप-दो गीत हैं दोनों ही के कर्ता कमलकीत्ति हैं।

४२१७. श्रादिनाथगीत--मुनिहेमसिद्ध। पत्र स०१। ग्रा० ६३×४३ इंच। भाषा-हिन्दी। विंषयं- विं

विशेष-भाषा पर गुजराती का प्रभाव है।

४२१८ आदिनाथ सन्माय ' ''''। पत्र स०१। आ०६२ ४४ इझा भाषा-हिन्दी। विषय-गीत।
र० काल ×। ने० काल। पूर्ण। वे० सं० २१६८। छा भण्डार।

' ४२१६. श्रादीश्वरविञ्जत्ति "" । पत्र सं० १ । ग्रा० ६३×४३ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल स० १५६२ । ले० काल सं० १७४१ वैशाख सुदी ३ । ग्रपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष-- प्रारम्भ के ३१ पद्य नहीं हैं। कुल ४५ पद्य रचना में है। ग्रन्तिम पद्य--

पनरवासिंठु जिननूर ग्रविचल पद पायो ।

वीनतडी कुलट पूर्णीया ब्रामुमस विद् दशम दिहाहै मिन वैरागे इम भर्गीया ॥४५॥

४२२०. कृष्ण्वात्तिवित्तास-श्री किशनतात्त । पत्र सं० १४ । आ० ५×५३ दश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२८ । रू भण्डार ।

४२२१. गुरुस्तवत-भूधरहास । पत्र सं० ३ । ग्रा० ५६ ६ ई इ च । भाषा-हिन्दी । विषय -गीत । दे काल × । पूर्ण । वे० स० १४५ । इ भण्डार ।

४२२२. चतुर्विशति तीर्थेङ्करस्तवन — हेमविमलसूरि शिष्य आगांद । पत्र स० २ । आ० ५३×४६ इक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल स० १५६२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८३ । ट भण्डार । विशेष--प्रति प्राचीन है ।

४२२३ चम्पाशतक—चम्पाबाई। पत्र सं० २४। आ० १२४५ई इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स० २२३। छ भण्डार।

विशेष—एक प्रति ग्रीर है। चंपाबाई ने ६६ वर्ष की उम्र में रुग्णावस्था में रचना की थी जिसके प्रभाव मे रोग दूर होगया था। यह प्यारेलाल ग्रलीगढ (उ० प्र०) की छोटी बहिन थी।

४२२४. चेलना सङ्माय—समयसुन्द्र । पत्र सं० १ । ग्रा० ६३ ४४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल ४ । ले० काल सं० १८६२ माह सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २१७५ । आ भण्डार ।

४२२४. चैत्यपरिपाटी" ""। पत्र स० १। आ० ११३४४० म्झा भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२५५। आ भण्डार।

४२२६ चैत्यवंदना ""। पत्र सं०३। ग्रा०६×५० इख्रः। भाषा-हिन्दी। विषय-पदः। र०काल ×। ले॰ काल ×। ग्रपूर्ण। वे॰ सं० २९५। भाभण्डारः।

४२२७. चौवीसी जिनस्तुति—खेमचंद । पत्र सं० १ । आ० १०×४६ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल × । ले० काल × । ले० काल सं० १७६४ चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १५४ । इन् भण्डार ।

४२२८. चौवीसतीर्थङ्करतीर्थपरिचय "" । पत्र सं०१। ग्रा० १०४४३ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२० । श्र भण्डीर । ४२२६. चीबीसतीर्थङ्करस्तुति—ब्रह्मदेव। पत्र सं० १७। म्रा० ११३×१३ उच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६४१। स्त्र भण्डार।

विशेष--रतनचन्द पाड्या ने प्रतिलिपि की थी।

४२३०. चौबीसीस्तुति"" पत्र सं० १५ । म्रा० ८४४ इश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल स० १६०० । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वै० सं० २३६ । छ भण्डार ।

४२३१. चौबीसतीर्थद्धरवर्णन"""। पत्र सं० ११ । म्रा० ६२×४२ इस्र । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५८३ । ट भण्डार ।

४२३२. चौबीसतीर्थद्धरस्तवन—लूग्णकरम् कासलीवाल । पत्र सं० ६ । आ० ६×४३ ६ च । भागा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० वाल × । पूर्ण । वे० सं० ५५७ । च भण्डार ।

४२३३. जखड़ी—रामकृष्ण् । पत्र सं० ४ । मा० १०३×६३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन्। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण् । वे० सं० १६८ । ङ भण्डार ।

४२६४. जम्बूकुमार सन्भाय"" "'। पत्र सं०१। म्रा० ६५×४३ दख । भापा-हिन्दी। विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३६ । श्र भण्टार ।

४२२४. जयपुर के मंदिरों की वंदना—स्वरूपचद । पत्र स० १० । ग्रा० ६×४३ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल सं० १६१० । ले० काल स० १६४७ । पूर्ण । वे० स० २७८ । म्ह भण्डार ।

४२३६. जिण्भिक्ति—हर्पेकीित । पत्र सं० १ । आ० १२x ५ ई इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल x । ले॰ काल x । पूर्ण । वे॰ सं॰ १८४३ । स्र मण्डार ।

४२३७. जिनपश्चीसी व अन्य संग्रह " । पत्र रा० ४। ग्रा० ८३×६ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं० २०४। क्ष भण्डार।

४२३८ ज्ञानपञ्चमीरतवन-समयसुन्दर। पत्र स०१। ग्रा० १०४४६ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र०काल ४। ले०काल सं०१७८५ श्रावरा सुदी २। पूर्ण । वे० स०१८८५। स्त्र भण्डार।

४२३६. मखड़ी श्रीमन्दिरजीकी "" पत्र स०४। ग्रा० ७५ 🗙४ इख्र। भाषा-हिन्दी । विषय-न्तवन । र० काल 🗶 । ले० काल 🗶 । पूर्ण । वै० सं० २३१। ड भण्डार ।

४२४० मांमारियानुचोढाल्याः । पत्र सं०२। आ०१०४४ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-गीत। द० काल ४। ले॰ काल ४। अपूर्या। वे० सं०२२४६। आ भण्डार।

विशेष-प्रारम्भ- सीता ता मृनि संकर ढाल-

रमती चरणे मीस नमानी, प्रणमी सतगुरु पाया रे।

भाभिरिया ऋषि ना गुण गाता, उल्हें ग्राज सनाया रे।।

भवियण वदो मुनि भाभिरिया, संसार समुद्र जे तरियो रे।

सनल साह्या परिसा मन सुधे, सील रयण करि भारियो रे।।

पइठतपुर मकरधुज राजा, मदनसेन तस राणी रे।

तस सुत मदन भरम बालुडो, किरत जास कहाणी रे।।

सीजी ढाल श्रपूर्ण है। भामरिया मुनि का वर्णन है।

प्र२४१ गामोकारपचीसी—ऋषि ठाकुरसी। पत्र सं०१। स्रा० १०४४ इ'च। भाषा - हिन्दा । क्षिय-स्तोत्र। र० काल सं०१ नर प्रापाढ सुदी १। ले० काल 🗴 । पूर्ण। वे० सं०२१७८ । स्र भण्डार।

४२४२. तसास्त्रकी जयमाल-आर्यादमुनि । पत्र सं०१। आ० १०२४४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० २१७० । आ भण्डार ।

४२४३ दर्शनपाठ-- खुधजन । पत्र सं० ७ । ग्रा० १०×४६ इ.च । भाषा-हिन्दी । विषय-गतत्रन । १० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वै० सं० २८८ । ङ भण्डार ।

४२४४. द्शीनपाठस्तुति " "। पत्र सं० = । ग्रा० =×६३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवनं । रक्ष्ण काल × । ते० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १६२७ । ट भण्डार ।

४२४४. देवकी की ढाल-लूणकरण कासलीवाल । पत्र सं० ४। ग्रा॰ १०३४४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल ४। ले० काल सं० १८८५ बैशाख बुदी १४। पूर्ण । जीर्ण । ते० सं० २२४६। अ भन्दार ।

विशेष--- प्रारम्भ दोहा---

साघर्णा सुध ग्रादरो देस मछतनी नाम । बैलेरथावरण स्वामी जी करावो जीव जीव ॥५॥

मध्यभाग---

देव छी तगाइ नंदण वादवारे उभी श्री नेम जिग्नेसवार ।
नन्यणा साधा न देख नर कारवालागा इम श्ररदीसार ।।
साध्या साम्हो देवकी देखी नर उभा रहा छ नजर नीहाल रे ।
कसतो" टाछ काव वाताग्मीर छुटी छे हुद तग्मीए धार रे ।।२।।
तनमन वाग सोहावडी उलस्यो र फल मे फुली छे जेहना कायरे ।
बलाया माहा तो माव रही रे देख तो लोचन तीरपत न थायरे ।।३।।
दीवकी तो साधान छ दिग्गा करो र पाछा धाइ छ माहीलो माहारे ।
सोच फिकर देवकीरे ज्यीर मोहतग्मी ए वातरे ।।४।।
सासो तो भाज्यो श्री नेमजीरे एतो छहु थारा वालरे ।
श्राख्या माही श्रासु पड़ेरे जागी मो त्यारे हुटा मालरे ।।४।।

ग्रन्तिम---

मरजी तांव छोडो सगला नगर मकारो,
मुहमागा दीजे घणारे मिए माएक मंडार ।
मिए माएक बहु दीधा देवकी मनरा इछा काइ न राखी ।।
हूराकरण ए ढाल ज भाषा तीज चोथ इसही ए साखी ए ॥६॥

इति श्री देवकी की ढाल स० ॥०॥ रूपमजी ॥

· दसवत चूनीलाल छावडा चैतराम ठाकरका बेटा छोटाका छै वाच पढे ज्यासू जया जोग वाचक्यो ! मिती दैशाल युदी १४ सं० १८८५।

देवकी की ढाल- रतनचन्दकृत श्रीर है। प्रति गल गई है। कई ग्रंश नष्ट होगये हैं। पढने में नहीं माता है।

ग्रन्तिम---

गुण गाया जी मार्वाड मकार कर जीडि रतन्चंद भए ।।१०॥

४२४६. द्वीपायनढाल-गुर्गसागरसूरि। पत्र सं० १। मा० १०३×४३ इस्र। भाषा-हिन्दी ग्रुज-राता। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे॰ सं० २१६४। क भण्डार।

४२४७. नेमिनाथ के नवमङ्गल-विनोदीलाल । पत्र सं०, १ । मा० १६३×६ इझ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । र० काल स० १७७४ । ले० काल स० १८५२ मंगसिर सुदी, २ । वे० सं० ५४ । मा भण्डार ।

विशेष-चौमू मे प्रतिलिपि हुई थी। जन्मपत्री की तरह गोल सिमटा हुआ है।

पद् भजन गीत आदि]

४२४८. प्रति सं०२। पत्र सं०२२। ले० काल ×। वै० सं०२१४३। ट भण्डार। विशेष — लिख्या मंगल फौजी दौलतरामजी की मुकाम पुन्या के मध्ये तीपखाना। १० पत्र से आगे नेमिराजुलपञ्चीसी विनोदीलाल कृत भी है।

४२४६. नागश्री सर्ज्यमाय — विनयचंद् । पत्र सं०१। ग्रा०१०×४६ इंच। भाषा — हिन्दी। विषय — स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० सं०२२४८। श्रा भण्डार। विशेष — केवल ३रा पत्र है।

श्रन्तिम---

स्रापरा वाधी श्राप भोगवे कोरा गुरु कुरा चेला ।
संजम लेइ गई स्वर्ग पांचमें श्रजुही नादी न वेरारे ।।१५।। भा०॥
महा विदेह मुकते जासी, मोटी गर्भ वसेरा रे ।
विनयचद जिनधर्म श्रराधो सब दुख जान परेरारे ।।१६॥
इति नागश्री सङ्भाय कुचामरो लिखिते ।

४२४०. निर्वाणकारङभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र सं० ८ । म्रा० ८४४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय-स्तुति । र० काल स० १७४१ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वै० सं० ३७ । मा भण्डार ।

४२४१. नेमिगीत—पासचन्द । पत्र सं० १ । म्रा० १२३४४ई इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वै० स० १८४७ । स्त्र भण्डार ।

४२४२. नेमिराजमतीकी घोड़ी "" । पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१७७ । आ भण्डार ।

४२४३. नेमिराजमती गीत-इतिरमल । पत्र सं० १। आ० ६ ४४ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३५ । स्त्र भण्डार ।

४२४४. नेमिराजमतीगीत-हीरानन्द । पत्र सं० १ । आ० ५३×४ इ च । आपा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७४ । स्र भण्डार ।

सूरतर ना पीर दोहिलोरे, पाम्यो नर भवसार ।

ग्रालइ जन्म महारिड भोरे, कांइ करचारे मन माहि विचार ।।१।।

मित राचो रै रमणी ने रंग क सेवोरे जीए। वाणी ।

तुम रमड्यो रै सजम न संगक चेतो रै चित प्राणी ।।२।।

ग्रिरहंत देव ग्रराधाइचोजी, रै ग्रर गरुचा श्री साध ।

धर्म केवलानो भाखीउ, ए समकित वे रतन जिम लाद्धक ।।३।।

पहिलो समिकत सेवीय रे, जे छे धर्मनो मूल। संजम सक्तित बाहिरो, जिला भारूयो रे तुस खडला तुलिक ॥४॥ तहत करीन सरदही रे, जै भाखी जलनाथ। पाचेइ मालव परिहरो, जिम मिलीइ रे सिवपुरनो साथक ॥५॥ जीव सहूजी जीवेवा वाछिरे, मर्गा न वाछे कोइ। ग्रपस राखा लैखवा, तस थावर रे हगा जो मत कोइ।।६।। चोरी लीजे पर तर्णा रे, तिरण ती लागे पाप। धन कचरा किम चोरीय, जिसा बांधइ रे भव भवना संताप क ॥७॥ अजस अकीरत ए। भव रे, पेरे भव दुख अनेक। कुड कहता पामीइ, काइ श्राणी रे मन माहि निवेक ॥ । ।।।। महिला संग घुइ हर, नव लख सम जुत। कुए। सुख कारए। ए तला, किम काजे रे हिस्या मतिवत ।।६।। पुत्र कलत्र घर हाट भरि, ममता काजे फोक । जु परिगह डाग माहि छै ते छाडरै गया बहूना लोक ॥१०॥ मात पिता बधव सुतरे, पुत्र कलत्र परवार। सवार्थया सह की सगा, कोइ पर भव रे नही राखणहार ।।११।। श्रंजुल जल नीपरे रे, खिएा रे तुटइ श्राउ। जाइ ते बेला नही रे वाहुिंड जरा घालरे यौवन ने धाड ।।१२।। व्याधि जरा जब लग नही रे, तब लम धर्म समाल। धारा हर घंगा बरसते, कोइ समरिथ रे बाधैगोपाल क ।।१३।। भ्रलप दीवस को पाहुणा रे, सद्ग कोइण संसार। एक दिन उठी जाइनउ, कवेगा जागाइ रे किए। हो अवतारक ।।१५।। क्रोध मान माया तजी रे, लीभ मेधरड्यो लीगारे। समतारसं भवपुरीय वली दौहिलो रे नर अवतारक ॥१६॥ श्रारंभ छाडा श्रन्तमा रे पीउ संजम रसप्रि। सिद्ध बधू से संहुं को बरो, इम बोले सखज देवसुरक ॥१७॥

चाल वृमचारही जिए। वाइसममा ।। समदिवजइजी रा नद हो, वैरागी माहरो मन लागो हो नेम जिएाँद सू जादव कुल केरा चद हो ।। वाल० ।।१।।

देव घंगा छइ हो पुभ जीदोवता (देवता)
तेती न चढइ चेत हो, कैंइक रे चेत म्हामत हो ।। वाल० ।।२।।
कैंइक दोम करइ नर नारनइ मामइ तेलसिंदूर हर हो ।
वाके इक वन वासे वासे वास, कक वनवासो करइ ।
(कष्ट) कसट सहइ भरपुर हो ।।३।।

तु नर मोह्यो रे नर माया तर्णे, तु जग दीनदयाल हो ।
नोजोवनवती ए सुंदरी तजीउ राजुल नार हो ।।४॥
राजल के नारिश्णे उद्धरी पहुतीउ सुकति मम्मार ।
हीरानंद संवेग साहिबा, जी वी नव म्हारी बीनतेडा अवधारि हो ॥५॥
॥ इति नेमि गीत ॥

४२४४ नेमिराजुलसङ्भाय """। पत्र सं०१। म्रा० १४४ इंच। भाषा - हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल सं०१८५१ चैत्र "। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०२१८४। स्त्र भण्डार।

४२४६ पद्भपरमेष्ठीस्तषत—िजनवल्लभ सूरि। पत्र सं०२। आ० ११४५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल सं० १८३६। पूर्ण। वै० स० ३८८। स्र भण्डार।

४२४७. पद्—ऋषि शिवलाल । पत्र सं०१। ग्रा०१०×४३ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१२८ । स्र भण्डार ।

विशेष-पूरा पद निम्न है-

या जग म का तेरा श्रंघे ।।या०।।
जैसे पंछी वीरछ वसेरा, वीछरै होय सवेरा ।।१।।
कोडी २ कर धन जोड्या, ले धरती मे गाडा ।
श्रंत समै चलएा की वेला, ज्याँ गाडा राहो छाडारे ।।२।।
ऊंचा २ महल वर्णाये, जीव कह इहा रैगा।
चल गया हंस पडी रही काया, लेय कलेवर दएा।।३।।
मात पिता सु पतनी रे थारी, तीए। धन जोवन खाया।
उड गया हँस काया का मडएा, काडो प्रेत पराया।।४।।

करी कमाइ इस भी श्राया, उलटी पूछी मोद । मेरी २ करके जनम गमाया, चलता मक न होद्र ११५१) पाप की पोट घग्री सिर लीनी, हे गूरण भीरा। हलकी पोट करी तु चाहै, तो होय फ़ुटुम्बर्सु न्यारा ॥६॥ मात विता मुत साजन गेरा, मेरा धन परिवारो । मेरा २ पढा पुकारै चलता, नही बखु तारो ॥७॥ जो तेरा तेरे संग न चलता, भेद न जाका पाया। मोह वस पदारय वीराणी, हीरा जनम गमाया ॥=॥ म्रात्या देवत केते चल गए जगर्म, म्रायर मार्ही चलएा। श्रीसर वीता बहु पछतावे, मानी जु हाथ मसलएा। ।।१।। श्राज करु धरम काल करु, याही व नीयत धारे। काल प्रचारो घाटी पकडी, जब क्या कारज सारे ।।१०।। ए जोगवाइ पाइ दुहेली, फेर न बार वारो। हीमत होय तो ढील न कीजे, कृद पढ़ो निरधारी ॥११॥ सीह मुखे जीम मीरगलो श्रायो, फेर नइ छूटण, हारो। इस दीसदते मरस मुखे जीव, पाप करी निरधारो । १२।। सुगर सुदेव धरम कु सेवो, लेवो जीन का मरना। रीप सीवलाल कहे भी प्राणी, श्रातम कारज करणा ॥१३॥

มริสิท

४२४८. पदसंग्रह ""। पत्र सं० ५६। ग्रा० १२४४ इखा भाषा-हिन्दो। विषय-भजन। २० वाल ४। ले० काल ४। ग्रपूर्णी वे० स० ४२७। क भण्डार।

४२४६. पद्संग्रह''''''| पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १२७३ । स्त्र भण्डार । विशेष—शिभुवन साहव सावला''''''। इसी भण्डार मे २ पदसंग्रह (वे० सं० १११७, २१३०) भीर है । ४२६०. पद्संग्रह''' ''। पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० सं० ४०५ । ह भण्डार । विशेष—इसी भण्डार मे ११ पदसंग्रह (वे० सं० ४०५, ४०६ से ४१५) तक भीर है । ४२६१. पदसग्रह''' '''। पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० सं० ६२५ । च मण्डार ।

४२६२ पदसंग्रह "" पत्र सं० १२ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ३३ । मा भण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे २७ पदसंग्रह (वे० सं० ३४, ३४, १४६, २३७, ३०६, ३१०, २६६, ३००, ३०१ से ६ तक, ३११ मे ३२४) ग्रीर हैं। नोट—वे० सं० ३१६वें मे जयपुर की राजवंशाविल भी है।

४२६३. पद्संग्रह ... । पत्र स॰ १४। ले॰ काल ×। वे॰ सं॰ १७५६। ट मण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ पदसग्रह (वे॰ सं॰ १७४२, १७४२, १७४८) ग्रीर है। नोट—द्यानतराय, हीराचन्द, भूघरदास, दौलतराम ग्रादि कवियो के पद हैं।

४२६४. पद्संग्रहः । पत्र स०३। श्रा०१० \times ४ 3_y इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण। वे० स०१४७। छ भण्डार।

विशेष-केवल ४ पद हैं---

- १. मोहि तारी सामि भव सिंधु तै।
- २. राजुल कहै तुमे वेग सिधावे।
- ३. सिद्धचक वंदो रे जयकारी।
- ' ४ चरम जिरोसर जिहो साहिवा चरम धरम उपगार वाल्हेसर ॥

४२६४. पदसंग्रह """। पत्र स० १२ से २४। ग्रा० १२४७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। २० काल 🗴। ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० सं० २००५ । ट भण्डार।

विशेष—भागचन्द, नयनसुख, द्यानत, जगतराम, जादूराम, जोधा, बुधजन, साहिवराम, जगराम, लाल विशेष, भूगभूराम, खेमराज, नवल, भूधर, चैनविजय, जीवरादास, विश्वभूषरा, मनोहर म्रादि कवियो के पद हैं।

४२६६. पदसग्रह—उत्तमचन्द् । पत्र स० १८ । आ॰ ६×६३ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र० कोल × । ले॰ काल × । प्रपूर्ण । वे॰ सं॰ १५२८ । ट भण्डार ।

विशेष—उत्तम के छोटे २ पदोका सग्रह है। पदों के प्रारम्भ मे रागरागृतियों के नाम भी दिये हैं। ४२६७. पद्संग्रह—ज्ञ० कपूरचन्द्। पत्र मं॰ १। ग्रा० ११३×४३ इख्र। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले॰ काल ×। पूर्ण। वे॰ सं॰ २०४३। आ मण्डार।

ं ४२६८. पद्—केशरगुताव । पत्र सं०१। म्रा० ७४४३ इ'च। भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० २२४१ । म्रा भण्डार । विशेष-- प्रारम्भ-

श्रीध्र नन्दन नयनानन्दन सांवादेव हमारो जी ।

दिलजानी जिनवर प्यारा वी

दिल दे बीच बसत है निसदिन, कबहू न होवत न्यारा वो ।।

४२६६ पदसंग्रह—चैनसुख। पत्र सं०२। ग्रा० २४×३३ डंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। र० काल ×। ले० वाल ×। पूर्ण। वे० सं०१७५७। ट भण्डार।

४२७०. पदमंग्रह—जयचन्द् छावडा । पत्र स० १२ । ग्रा० ११×१३ डंच । भाषा-हिन्दी विषय-पर । र० काल स० १८७४ ग्रापाढ सुदी १० । ले० काल सं० १८७४ ग्रापाढ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४३७ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्तिम २ पत्रो मे विषय सूची दे रखी है। लगभग २०० पदो का संग्रह है।

४२७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । से० काल सं० १८७४ । वे० सं० ४३८ । क भण्डार ।

४२७२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १ मे ४०। ले० काल 🔀 । ब्रपूर्या। वे० सं० १६६०। ट भण्डार।

४२७३. पटसंग्रह—देवाब्रह्म । पत्र सं० ४४ । मा० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पद भजन । र० काल × । ले० काल सं० १८६३ । पूर्ण । वे० स० १७५१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति गुटकाकार है। विभिन्न राग रागिनयों में पद दिये हुये है। प्रथम पत्र पर लिखा है- श्री देवसागरजी स॰ १८६३ का वैशाख सुदी १२। मुकाम वसवै नैशाचद।

४२७४. पदसंत्रह —दौलतराम । पत्र सं०२०। ग्रा०११×७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र० काल × । ले० काल × । श्रपूर्ण । वे० सं०४२६ । क भण्डार ।

४२७४. पद्समह—बुधज्ञन । पत्र सं० २६ से ६२ । ग्रा० ११३× द द । भाषा-हिन्दी । विषय-पद भजन । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ७६७ । श्र भण्डार ।

४२७६. पद्संग्रह्—भागचन्द् । पत्र सं० २५ । ग्रा० ११८७ इत्त । भाषा-हिन्दी । विषय-पद व भजन । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वै० नं० ४३१ । क भण्डार ।

४२७७. प्रति सं०२ । पत्र सं०६ । ले० काल 🗶 । वे० स० ४३२ । क भण्डार ।

विशेप--थोडे पदो का सग्रह है।

४२७८. पदं — मलूकचंद् । पत्र सं०१। ग्रा०६×४६ इंच । भाषा-हिन्दी । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२४२ । अप्र भण्डार। विशेष -- प्रारम्भ-

पंच सखी मिल मोहियो जीवा,

काहा पावैगो तु धाम हो जीवा।

समभो स्युत राज।।

४२७६. पदसंग्रह—मंगलचंद् । पत्र सं० १० । ग्रा० १०३×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पद व भजन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३४ । क भण्डार ।

४२८०. पदसंग्रह—माश्चिकचंद्। पत्र सं० ५४। ग्रा॰ ११४७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पद व भजन। र० काल ४। ले० काल स० १९५५ मगसिर बुदी १३। पूर्ण। वै० सं० ४३०। क भण्डार।

४२८१. प्रति सं २ । पत्र सं० ६० । ले० काल 🗙 । वे० सं० ४३८ । क भण्डार ।

४२=२. प्रति स० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० सं० १७५४ । ट भण्डार ।

४२८३. पदसम्रह—सेवक । पत्र सं• १ । म्रा० ६३४४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५० । ट भण्डार ।

विशेष -- केवल २ पद है।

Ą

४२८४. पदसम्रह—हीराचन्द् । पत्र स० १० । ग्रा० ११४५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-पद व भजन । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ४३३ । क भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वै० सं० ४३५, ४३६) स्रीर है।

४२ नर प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० ४१६ । क मण्डार ।

४२८६. पद व स्तोत्रसंग्रह """। पत्र सं० ८८। ग्रा० १२३×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३६ । क भण्डार ।

विशेष--- निम्न रचनाम्रो का सम्रह है।

नाम	कत्ती	भाषा	पत्र
पश्चमङ्गल	रूपचन्द	हिन्दी	4
सुगुरुशतक	जिनदास	57	१०
जिनयशमञ्जल	सेवग्राम	5 7	* 1 *
जिनग्रुग्(पचीसी	77	19	-
गुरुश्रो की स्तुति	भूधरदास	99	

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
एकीभावस्तोत्र	भूदरदास	हिन्दी	1.1
वज्रनाभि चक्रवित्त की भावना	77	? ?	-
पदसग्रह्	मारिएकचन्द	27	Y
तेरहपंथपचीसी	>>	77	११
हुडावसर्पिग्गीकालदोप	57	51	3*
चौबीस दडक	दीलतराम	27	१०
दशबोलपचीसी	द्यानतराय	39	? (6

४२८७ पार्विजिनगीत—छाजू (समयसुन्दर के शिष्य)। पत्र मं०१। ग्रा० १०४४ दश्च। भापा-हिन्दी। विषय-गीत। र० काल 💢। ले० काल 🗴। पूर्ण। वे० सं०१८५८। स्र भण्डार।

े ४२८८. पार्श्वनाथ की निशानी—जिनहर्ष। पत्र म० ३। ग्रा०१०४४ उचा भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० म० २२४७। स्त्र भण्डार।

विशेष--- २रे पत्र से-

प्रारम्भ--

मुख संपत्ति दायक सुरनर नायक परतिख पाम जिग्गदा है।

जाकी छवि काति अनोषम ओषम टिपति जाग् दिगांदा है।।

धन्तिम---

तिहा सिधादावास तिहा रे वासा दे नेवक विलवंदा है।

घघर निसागो पास वखागी गुगा जिनहर्ष गावदा है।।

प्रारम्भ के पत्र पर कोध, मान, माया, लोभ की सल्भाय दी है।

४२६८. प्रति सं०२। पत्र मं०२। ले० काल सं०१६२२। वे० सं०२१३३। स्त्र भण्डार।
४२६०. पार्श्वेनाथचौपई --पं० लाखो। पत्र सं०१७। ग्रा०१२५४५३ इच। भाषा-हिन्दी
विषय-स्तवन। र० काल सं०१७३४ कॉत्तिक सुदी। ले० काल स०१७६३ ज्येष्ठ बुदी २। पूर्गा वे० सं०१६१६
द भण्डार।

विशेप---ग्रन्थ प्रशस्ति-

सवत् सतरासे चौतीस, कार्तिक शुक्क पक्ष शुभ दीस।
नौरंग तप दिल्ली सुलितान, सबै नृपति वहै पिरि आण ।।२६६।।
नागर चाल देश सुभ ठाम, नगर वर्गाहटो उत्तम धाम।
सब श्रावक पूजा जिनधर्म, करै भक्ति पावै बहु शर्म ।।२६७।।

कर्मक्षय कारण युअहेत, पार्श्वनाथ चौपई मचेत ।
पंडित लाको लाख मभाव, नेवो धर्म लखो मुमयान ॥२६८॥
श्राचार्य श्री महेन्द्रकोत्ति पार्श्वनाय चौपई संपूर्ण ।

मट्टारक देवेन्द्रकांत्ति के जिष्य पाढे दयाराम सोनीने मट्टारक महेन्द्रकीर्ति के शासन मे विल्ली के जर्यामहपुरा के देऊर में प्रतिलिपि की थी।

४२६१. पार्श्वनाथ जीरोछ्न्द्रसत्तरी """। पत्र मं०२। ग्रा० ६४४ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-स्तवन । र० काल ४। ले० काल सं०१७८१ वैशाख बुदी ६। पूर्ण। जीर्ण। वै० मं०१८६४। अ भण्डार।

४२६२. पार्श्वनाथस्तवन''''''। पत्र मं० १। आ० १०×४३ डंच । भाषा-हिन्दी। विषय-म्तोत्र । र० काल ×। पूर्ण । वे० मं० १४८ । छ भण्डार ।

विजेप-डमी वेष्टन में एक पार्वनाय स्तवन श्रीर है।

४२६३ पार्श्वनाथस्तोत्र"" । पत्र सं०२। स्रा० ५ रे४७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तात्र । र० काल 🗴 । पूर्ण । वै० सं० ७६६ । स्त्र भण्डार ।

४२६४. वन्द्रनाजावड़ी—विहारीदास । पत्र सं०४ । आ० ५४७ ६ व । भाषा-हिन्दी । विषय-रतवन । र० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० ६१३ । च भण्डार ।

४२६४. प्रति सं०२। पत्र मं०४। ले० काल ४। वे० सं०६२। ञ भण्डार।

४२६६ वन्द्रनाजखड़ी-- बुधजन । पत्र मं० ४ । ग्रा० १० ४४ ड च । भाषा-हिन्दी । विषय-न्तवन । र० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० २६७ । ज भण्डार ।

४२६७. प्रति सं०२। पत्र मं०३। ले० काल 🗙 । वे० सं० ५२४ । ङ मण्डार ।

४२६म. बारहत्वड़ी एवं पद् """। पत्र सं० २२ । आ० ५ $\frac{3}{7}$ \times ४ इंच । मापा–हिन्दी । विषय–म्फुट । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ४५ । म्ह भण्डार ।

४२६६. वाहुवली सब्माय-विमलकीत्ति । पत्र सं०१। ग्रा॰ ६३/४४ इ'च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ने० काल × । ने० स० १२४४ ।

विशेष-श्यामसुन्दर कृत पाटनपुर सडकाय और है।

४२००. भक्तिपाठ-पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १७६ । ग्रा० १२×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । र० काल × । ने० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४५ । क भण्डार ।

विशेष--निम्न भक्तिया है।

3

म्वाध्यायपाठ, सिद्धभिक्त, श्रुतभिक्त, चारित्रभिक्त, श्राचार्यभिक्त, योगभिक्त, वीरभिक्त, निर्वाणभिक्त श्रीर नंदीश्वरभिक्त ।

• ४३८१ प्रति सं०२।पत्र सं०१०८। ले० काल ×।वे० सं०५४७। क भण्डार।

४३०२. भिक्तपाठ """। पत्र सं० ६०। म्रा० ११३×७३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४६ । क भण्डार ।

४३०३ भजनसंग्रह—नयन किव। पत्र स० ४१। ग्रा० ६×४६ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। द० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। जीर्ण। वै० स० २४०। छ भण्डार।

४३०४ मरुदेवी की सब्भाय-ऋषि लालचन्द । पत्र स०१। ग्रा० ५३×४ इ च । भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन । र० काल सं०१५०० कार्तिक बुदी ४। ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१८७ । ऋ भण्डार।

४३०४. महावीरजी का चौढाल्या— ऋषि लालचन्छ। पत्र सं० ४। ग्रा० ६१×४३ इ च। माषा— हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१८७। स्त्र मण्डार।

४३०६ मुनिसुत्रतिवनती— देवाब्रह्म। पत्र सं०१। ग्रा०१०३×४ई इख्र । भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स०१८७। स्त्र भण्डार।

४३०७ राजारानी सब्साय " ""। पत्र स०१। म्रा०६ $\frac{1}{8}$ \times ४३ दश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल \times । ले॰ काल \times । पूर्ण । वे० स० २१६६ । स्र भण्डार ।

४२०८. रांडपुरास्तवन " " । पत्र स० १ । आ० ६×५६ इ'च । भाषा हिन्दी । विषय—स्तवन । र० काल × । पूर्या । वे० सं० १८६३ । ऋ भण्डार ।

विशेष-राडपुरा ग्राम में रचित ग्रादिनाथ की स्तुति है।

४३०६. विजयकुमार सब्माय—ऋषि लालचन्द। पत्र म०६। ग्रा०१०×४६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषण-स्तवन। र० काल सं०१६६१। ले० काल स०१६७२। पूर्ण। वै० स०२१६१। स्त्र भण्डार।

विशेय—कोटा के रामपुरा मे ग्रन्थ रचना हुई। पत्र ४ मे ग्रागे स्थूलभद्र सज्भाय हिन्दी मे ग्रौर है। जिस का र० काल सं० १८६४ कार्त्तिक सुदी १५ है।

४३१०. प्रति सं०२। पत्र स०४ । ले० काल 🗙 । वे० स० २१८६ । ऋ भण्डार ।

४२११ विनतीसंप्रह। पत्र सं० २ । ग्रा० १२×५ ई च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० कान ४ । ने० काल सं० १८५१ । पूर्ण । वे० स० २०१३ । श्र्य भण्डार ।

विशेष--महात्मा शम्भूराम ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

पद् भजन गीत आदि

४२१२. विनतीसंप्रह—ब्रह्मदेव । पत्र सं० ३८ । श्रा० ७३४१ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३१ । स्त्र भण्डार ।

विगेप-सासू वहू का भगडा भी है।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६६३, १०४३) श्रीर है।

४३१३ प्रति स०२। पत्र स०२२। ले० काल X। वे० सं०१७३। स्त भण्डार।

४३१४. प्रति स०३। पत्र सं०१६। ले० काल ४। वे० सं०६७८। इन् भण्डार।

४३१४. प्रति सं० ४। पत्र स० १३। ले० काल सं० १८४८। वे० सं० १६३२। ट भण्डार।

४३१६. बीरभक्ति तथा निर्वाणभक्ति "'। पत्र सं० १। ग्रा० ११४४ इंच। मापा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स० ६६७। क भण्डार।

४३१७. शीतलनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द्। पत्र सं०१। म्रा०६×४० दंच। माषा−हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स०२१३४। म्रा भण्डार।

विशेष--ग्रन्तिम-

पूज्य श्री श्री दोलतराय जी बहुगुए। श्रगवासी ।
रिपलाल जी करि जोडि वीनवें कर सिर चरसासी ।।
सहर माधोपुर सवत् पचावन कातीग सुदी जासी ।
श्री सीतल जिन गुरा गाया श्रति उलास श्रासी ।। सीतल० ।।१२॥
।। इति सीतलनाथ स्तवन संपूर्ण ।।

४३१८. श्रेयांसस्तवन—विजयमानसूरि । पत्र स० १ । ग्रा॰ ११६×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८४१ । ऋ भण्डार ।

४३१६. सितयोंकी सङ्गाय—ऋषि खजमत्ती। पत्र सं० २। ग्रा० १०×४३ इख्र। मापा-हिन्दी ग्रुजराती। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। जीर्गा। वे० सं० २२४५। ग्रुपण्डार।

विशेष---श्रन्तिम भाग निम्न है---

. 3

इतीदक सितयारां गुण कहाँ। ये सुण सांभलो । उत्तम पराणी खजमल जी कहइ !!३४॥

चिन्तामिए। पार्श्वनाथ स्तवन भी दिया है।

४२२० सङ्माय (चौदह बोल)—ऋषि रायचुन्द । पत्र सं० १। ग्रा० १०×४३ इस्र । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१८१ । स्त्र भण्डार । ४३२१. सर्वार्थसिद्धिसङ्गाय "।पत्र सं० १। ग्रा० १० \times ४ 3_7 उञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-म्तयन। र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण। वे० सं० १४७। छ भण्डार।

विशेष-पर्य पर्या स्तुति भी है।

४३२२. सरस्वतीश्रष्टकः "। पत्र सं०३। ग्रा०६×७३ डंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २११। मा भण्डार।

४३२३. साधुवद्ना—माणिकचन्द् । पत्र स०१। म्रा०१०ई×४८ दख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं०२०५४। ट भण्डार ।

विशेष--- स्वेताम्बर ग्राम्नाय की साधुवदना है। कुल २७ पद्य हैं।

४३२४. साधुवद्ता--पुर्यसाग्रा। पत्र सं०६। ग्रा०१०×४ इञ्च। भाषा-पुरानी हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै• स० ६३६। श्रा भण्डार।

४३२४. सारचौबीसीभाषा--पारसदास निगोत्या । पत्र सं० ४७० । म्रा० १२३४७ टंच । भाषा - हिन्दी । विषय-स्तुति । र० काल सं० १६१८ कॉत्तिक मुदी २ । ले० काल सं० १६३६ चैत्र मुदी ४ । पूर्ण । वे० म० ७८४ । क भण्डार ।

४३२६. प्रति सं०२।पत्र सं०५०५। ले० काल सं० १९४८ वैजाख मुदी २। वे० स० ७८६। क भण्डार।

४३२७. प्रति सं ३ । पत्र स० ५७१ । ले० काल × । वे० म० ८१६ । इ भण्डार ।

४३२८. सीताढाल "" । पत्र सं०१। म्रा० ६५ ×४ डख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० मं० २१६७ । स्र भण्डार ।

विशेष-फतेहमल कृत चेतन ढाल भी है।

४३२६. सोलहसतीसङमाय । पत्र स०१। ग्रा०१० \times ४६ इ च। भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन। र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण। वे० स०१२१ मा श्रा भण्डार।

४३२० स्थूलभद्रसञ्माय"" । पत्र स०१। म्रा०१०×४ इद्य। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स०२१८२। स्त्र भण्डार।



पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य

४३३१. ऋंकुरोपण्विधि—इन्द्रनंदि । पत्र सं० १५ । म्रा० ११×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठादि का विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७० । स्त्र भण्डार ।

विशेष-पत्र १४-१५ पर यंत्र है।

४३३२. ऋंकुरोपग्विधि—पं० स्त्राशाधर । पत्र सं० ३ । ग्रा० ११×५ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय— प्रतिष्ठादि का विधान । र० काल १३वी स्रताब्दि । ले० काल 🗙 । ग्रपूर्ग । वे० सं० २२१७ । ऋ भण्डार ।

विशेष-प्रतिष्ठापाठ मे से लिया गया है।

४३३३. प्रति सं०२। पत्र स०६। ले० काल ४। श्रपूर्ण। वे० सं०१२२। छ भण्डार।

विशेष-प्रति प्राचीन है। २रा पत्र नहीं है। संस्कृत में कठिन शब्दों का ग्रर्थ दिया हुग्रा है।

४३३४. प्रति सं०३। पत्र स०४। ले० काल ×। वे० सं० ३१६। ज भण्डार।

४३३४. ऋंकुरोपग्विधि " " । पत्र सं० २ से २७ । ग्रा० ११६ ४५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठादि का विधान । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । ग्रपूर्ण । वे० सं० १ । ख भण्डार ।

विशेष---प्रथम पत्र नही है।

४३३६. श्रकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल """। पत्र सं० २६। श्रा० १२×७ इंच। भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० १ । च भण्डार ।

४३३७. त्र्रकृत्रिमिजिनचैत्यालयपूजा—िजनदास । पत्र सं० २६ । ग्रा० १२×५ इंच । भाषा— संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७६४ । पूर्ण । वे० सं० १८५६ । ट भण्डार ।

४२२८. ऋकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा-लालजीत । पत्र सं० २१४ । आ० १४४६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १८७० । ले० काल सं० १८७२ । पूर्ण । वे० सं० ५०१ । च भण्डार ।

विशेप--गोपाचलदुर्ग (ग्वालियर) मे प्रतिलिपि हुई थी।

४३३६. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—चैनसुख । पत्र स० ४८ । ग्रा० १३×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १६३० फाल्गुन सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०५ । आ भण्डार ।

४२४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल × । वे० सं० ४१ । क भण्डार । विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६) ग्रीर है । ४३४१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७७। ले० काल सं० १६३३। वे० सं० ५०३। च भण्डार। विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५०२) ग्रीर है।

४३४२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३६। ले० काल ×। वै० सं० २०८। छ भण्डार।

विजेप-इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वै० स० २०५ मे ही) श्रीर है।

४३४३ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० स० १६६ । मा भण्डार ।

विगेष—म्रापाढ सुदी ५ सं० १६६७ को यह ग्रन्थ रघुनाथ चांदवाड ने चढाया।

४३४४ अकृतिमचैत्यालयपूजा—मनरङ्गलाल । पत्र सं० ३० । आ० ११×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १६३० माघ सुवी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०४ । स्त्र भण्डार ।

विशेप---ग्रन्थकार परिचय-

नाम 'मनरंग' धर्मरुचि सौ मो प्रति राखै प्रीति । चोईसीं महाराज को पाठ रच्यो जिन रीति ॥ प्रेरकता श्रतितास की रच्यो पाठ सुमनीत । याम नग्र एकोहमा नाम भगवती सत ॥

रचना संवत् संबधीपच-

विश्वति इक ब्रात शतक पै विश्वतसमत जानि । माघ शुक्क त्रयोदशी पूर्ण पाठ महान ।।

४३४४. अन्यतिधिपूजा"""। पत्र सं०३। म्रा०१२×५३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा।
रिकाल × । ले॰ काल × पूर्ण । वे॰ सं॰ ४०। क भण्डार।

४३४६. ऋत्त्रयनिधिपूजा''''' । पत्र सं० १। ग्रा॰ ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले॰ काल < । पूर्या । वे॰ सं० ३८३ । व्य भण्डार ।

विशेष भयमाल हिन्दी मे हैं।

४३४७ ऋत्त्रयनिधिपृजा—झानभूषणा। पत्र सं० ४। आ० ११३×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १७८३ सावन सुदी ३। पूर्ण । वे० सं० ४। उर अण्डार।

विशेष--श्री देव स्वेताम्बर जैन ने प्रतिलिपि की थी।

४२४न. अन्त्यनिधिविधान"""। पत्र स० १४ । आ० १२×५ इंच । भाषा नसस्कृत । विषय-पृजा र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । बे॰ सं० ६४३ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--प्रति जीर्रा है। इसी भण्डार में एक प्रति (बे॰ स॰ १९७२) और है।

४३४६. श्रदाई (साद्धं द्वयं) द्वीपपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ६१ । ग्रा० ११×५६ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ने० का र × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ५५० । आ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १०४४) ग्रौर है।

४३४०. प्रति सं०२। पत्र सं०१५१। ले० काल सं०१८२४ ज्येष्ठ बुदी १२। वे० सं० ७८७। क

भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७६८) ग्रीर है।

४३४१ प्रति सं ३ । पत्र सं ० ८४ । ले० काल सं ० १८६२ माघ बुदी ३ । वे० सं ० ८४० । इ

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (ने० स० ५, ४१) और है।

४३४२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६०। ले० काल सं० १८८४ भादवा सुदी १। वे० सं० १३१। छ

भण्ड र (

: -- *\

४३४३. प्रति सं० ४। पत्र स० १२४। ले० काल सं० १८६०। वे० स० ४२। ज भण्डार। ४३४४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६३। ले० काल ×। वे० स० १२६। म्ह भण्डार। विशेष—विजयराम गांड्या ने प्रतिलिप की थी।

४३४४. ब्राह्यद्वीपपूजा—विश्वभूषरा। पत्र सं०११३ । ब्रा० १०३४७३ डच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ४ । ले० काल सं०१६०२ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० २ । च मण्डार ।

४३४६. ऋढाईद्वीपपूजा"" । पत्र सं० १२३। म्रा० ११×५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६२ पीष सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ५०५ । ऋ भण्डार ।

विशेष---ग्रवावती निवासी पिरागदास बाकलीवाल महुग्रा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४३४) ग्रीर है।

४३४७. प्रति सं०२। पत्र सं०१२१। ले० काल सं०१८८०। वे० स०२१४। ख भण्डार। विशेष—महात्मा ज़ीशी जीवण ने जोबनेर मे प्रतिलिपि की थी।

४३४८ प्रति सं०३। पत्र स० ६७। ले० काल स० १८७० कार्तिक सुदी ४। वे० सं० १२३। घ भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति [वे॰ सं॰ १२२] ग्रौर है।

४३६०. प्रति सं० २। पत्र स० ६८। ले॰ काल स० १९५७। वे॰ सं० ५०६। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया [वे॰ सं॰ ५०४, ५०५] ग्रीर हैं।

४३६१ प्रति सं०३। पत्र स०१४४। ले० काल ×। वे० स०२०१। छ भण्डार।

४३६२. त्र्यनन्तचतुर्देशीपूजा —शांतिदास । पत्र स०१९। ग्रा० ५३४७ इच। भाषा सस्कृत।

विषय-पूजा। र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्गा। वे० स० ४ । स्व भण्डार।

विशेष—व्रतोद्यापन विधि सहित है। यह पुस्तक गरोशजी गंगवाल ने वेगस्यो के मन्दिर मे चढाई थी।

४३६३. प्रति सं०२। पत्र स०१४। ले० काल ४। वे० सं०३८६। व्य भण्डार।

विशेष-पूजा विधि एव जयमाल हिन्दी गद्य मे है।

इसी भण्डार मे एक प्रति सं० १८२० की [ने० स० ३६०] भ्रौर है।

४३६४. श्रनन्तचतुर्द्शीव्रतपूजा "। पत्र स० १३ । श्रा० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ृजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० ५८८ । अप्र भण्डार ।

विशेष--ग्रादिनाथ से ग्रनन्तनाथ तक पूजा है।

४३६४. अनन्तचतुर्द्शीपूजा — श्री भूषण । पत्र सं० १८ । आ० १०३४७ इ'च । भाषा – हिन्द । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४ । ज भण्डार ।

४३६६. प्रति स०२। पत्र स० ५६। ले० काल स० १५२७। वे० सं० ४२१। व्य भण्डार।

विशेष--सवाई जयपुर मे पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

४३६७. स्रनन्तचतुर्दशीपूजा "। पत्र सं॰ २०। ग्रा० १०३४५ इख्र । भाषा-संस्कृत, हिन्दी। विषय-पूजा। र॰ काल ×। ले॰ काल ×। पूर्ण। वै॰ सं॰ ५। ख भण्डार।

४३६८ अनन्तजिनपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं०१। ग्रा० १०ई×५३ इख्र। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। वे० स० २०४२। ट भण्डार।

४३६६ स्त्रनन्तनाथपूजा—श्री भूषण् । पत्र स०२। ग्रा०७ \times ४ $है इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल <math>\times$ । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स०२१५५ । स्त्र भण्डार ।

४२७०. श्रनन्तनाथपूजा ' ''' । पत्र स० १ । ग्रा० ५३ \times ४२ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० ५२१ । श्र भण्डार ।

४३७१. अनन्तनाथपूजा—सेवग । पत्र सं० ३ । आ० ५२ ×६३ इख्र । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । ज मण्डार ।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

विशेष-प्रथम पत्र नीचे से फटा हुआ है।

· ४३७२. अप्रनन्तनाथपूजा ·····। पत्र सं०३। ग्रा०११४५ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स०१६४। सः भण्डार।

४३७३. अनन्तत्रतपूजा " ""। पत्र सं० २। म्रा० ११×५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६४ । श्र भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ५२०, ६६५) स्रौर हैं।

४३७४. प्रति सं०२। पत्र सं०११। ले० काल ४। वे० सं०११७। छ भण्डार।

४३७४. प्रति सं० ३ | पत्र सं० २६ | ले॰ काल × । वे॰ सं० २३० । ज भण्डार ।

४३७६ अनन्तन्नतपूजा : " । पत्र सं० २ । म्रा॰ १०४५ इ.च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १३५२ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-जैनेतर पूजा ग्रन्थ है।

४३७७. ऋनन्त ब्रतपूजा—भ० विजयकी ति १ पत्र सं०२। आ० १२×५३ इ च । भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं०२४१। छ भण्डार।

४३७८. श्रनन्तव्रतपूजा—साह सेवाराम । पत्र सं० ३ । मा० ५ \times ४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल \times । ले॰ काल \times । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । श्र भण्डार ।

४३७६. स्रानन्तव्रतपूजाविधि ""। पत्र सं०१८। स्रा०१०३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं०१८५८ भादवा सुदी ६। पूर्ण। वे० सं०१। ग्र भण्डार।

४३८०. त्र्यनन्तपूजाव्रतमहात्म्य'''' । पत्र स० ६ । ग्रा० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय— पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८४१ । पूर्ण | वे० स० १३६३ । ऋ भण्डार ।

४३८१. अनन्तव्रतोद्यापनपूजा—आ० गुगाचन्द्र। पत्र सं० १८। आ० १२×५३ इ'व। भाषा— सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल स० १६३०। ले० काल सं० १८४५ आसोज सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ४१७। अ भण्डार।

विशेप--- अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है---

इत्याचार्याश्रीग्रुग्चन्द्रविरचिता श्रीग्रनन्तनाथव्रतपूजा परिपूर्या समाप्ता ॥

सवत् १८४५ का- श्रश्चिनीमासे शुक्कपक्षे तिथी च चौथि लिखितं पिरागदास मोहा का जाति वाकलीवाल प्रतापिसहराज्ये सुरेन्द्रकोत्ति मट्टारक विराजमाने सति पं कल्याणदासतत्सेवक ग्राज्ञाकारी पंडित खुस्यालचन्द्रेण द्दं मनन्तव्रतोद्यापनिल्खापितं ॥१॥

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५३९) और है।

४३६८२. प्रतिसं०२ । पत्र सं०१६ । ले०काल स० १६२६ ग्रासोज बुदी १५ । वे० स०७ । ख

भण्डार ।

४३८३ प्रति सं०३। पत्र स०३०। ले० काल ×। वे० स०१२। इङ मण्डार।

४३=४ प्रति स० ४। पत्र स० २५। ले० काल ४। वे० स० १२६। छ भण्डार।

४३८४. प्रति सं ५ ४। पत्रं सं० २१। ति० काल स० १८६४। वे० स० २०७। व्य भण्डार।

४३ द६, प्रति सं०६। पत्र सं०२१। ले० काल ४। वे० स० ४३२। व्य भण्डार।

विशेष--- २ चित्रं मण्डल के हैं। श्री शाकमडगपुर चूहडवश के हर्प नामक दुर्गा विशिष ने ग्रन्थ रचना कराई थी।

४३८७ अभिषेकपाठ """। पत्र स० ४। म्रा० १२×५१ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-भगवान के म्रिभिषेक के समय का पाठ। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ६६१। ऋ भण्डार।

४५ँ==. प्रति सं०२ । पत्र स०२ से ५७ । ले० कोल × । ग्रपूर्ण । वे० सं०३५२ । ड भण्डार ।

विशेष-विधि विधान सहित है।

४३८६ प्रति सं०३ । पत्र स०२। ले० काल ×। वे० सं० ७३२। च भण्डार।

४३६०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४। ले० काल ४। वे० स० १६२२। ट भण्डार।

४३६१ अभिषेकिविधि — लंदमीसेन । पत्र स०१४। आ०११×५६ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-भगवान के प्रभिषेक के समय की पाठ एवं विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं०३४ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ स॰ ३१) श्रीर हैं जिसे भाजूराम साह ने जीवनराम सेठी के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। चिंतामीं पार्श्वनाथ स्तीत्र सोमसेन कृत भी है।

४३६०. अभिषेकविधि । पत्र स० म। आ० ११×४ है इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय भगवान के अभिषेक की विधि एव पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७ म अ भण्डार ।

४३६३. प्रति स॰ २ । पत्र स॰ ७ । ले॰ काल X । वे॰ स॰ ११६ । ज भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २७०) और है।

४३६४. प्रति स॰ ३ । पत्र स॰ ७ । ले॰ काल 🗙 । प्रपूर्श । वे॰ सं॰ २११४ । ट भण्डार ।

४३६४. श्रीभिषेकविधि । पत्र स०१। श्रा० पर्-रे×६ दश्च। माषा—हिन्दी । विषय—मगवान के स्रीभ-पैक की विधि। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स०१३३२। श्रा भण्डार। ४३६६ अशिष्टाध्याय" ""। पत्र सं०६। म्रा० ११४५ इ'च। भावा-प्राकृत। विषय-सल्लेखना विधि। र० काल ४। र्ल० काल ४। पूर्ण। वै० सं० १६७। स्त्र भण्डार।

विशेष—२०३ कुल गाथायें हैं— ग्रन्थका नाम रिट्ठाड है। जिसका संस्कृत रूपान्तर प्ररिष्टाच्याय है। स्रादि भन्त की गाथायें निम्न प्रकार हैं—

> पर्णमंत सुरामुरमङ लिरयण्वरिकरण्कंतविद्धृरिय । भीरिजिर्ण्यायज्ञयल ग्रिकिस्य भेर्णमि रिद्ठाइं ॥१॥ संसारिम्म भेमतो जीवो वहुभेय भिण्ण जोण्सिसु । पुरकेण कहवि पावइ सुहमस्य भ्रतं स्य सदेहो ॥२॥

भन्त-

पुत्तु विज्जवेज्जहणूणं वारत एव वीस सामिय्यं।
सुगीव सुमंतेण रइय भिण्यं मुिण ठीरे वर्रि देहि ।।२०१।।
सूई भूमीलें फलए समरे हाहि विराम परिहाणो ।
कहिजइ भूमीए समवरे हातयं वच्छा ।।२०२।।
स्रद्वाहारह छिणे जे लढीह लच्छरेहाउं।
पढमोहिरे ग्रंकं गविजए याहि एां तच्छ ।।२०३।।
इति प्ररिष्टाष्यायशास्त्र समासम्। म्रह्मवस्ता लेखित ।।श्री।। छ ।।

इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० २४१) ग्रीर है।

४३६७. श्रष्टाहिकाजयमाल ""। पत्र सं० ४ । ग्रा० ६३८५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रष्टा-ह्निका पर्व की पूजा । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्या । वे० सं० १०३१ ।

विशेष-जयमाला प्राकृत में है।

४३६८. श्रष्टाहिकाजयमाल "। पत्र सं०४। ग्रा०१३४४ है इ च। भाषा-प्राकृत। विषय-ग्रष्टा-ह्रिका पर्व की पूजा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वै० सं० ३०। क भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३१) ग्रीर है।

४३६६ अष्टाहिकापूजा ""। पत्र सं० ४। म्रा० ११×५ इश्व । भाषा-संस्कृत । विषय-म्रष्टाहिका पर्व की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० ५६६ । स्त्र भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६६०) और है।

४४००. श्रष्टाहिकापूजा" "। पत्र सं० ३१ । म्रा० १०२×४३ इंच । भाषा-मंस्कृत । विषय-मप्टाह्मिका पर्व की पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १५३३ । पूर्ण । वे० सं० ३३ । क भण्डार । विशेष — संवत् १५३३ में इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई जाकर भट्टारक श्री रत्नकीर्त्त की भेंट की गई थी। जयमाला प्राकृत में है।

४४०१. श्रष्टाहिकापूजाकथा — मुरेन्द्रकीर्त्ति। पत्र स०६। श्रा० १०३×५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-श्रष्टाहिका पर्व की पूजा तथा कथा। र० काल सं० १८५१। ले० काल सं० १८६८ श्रापाढ सुरी १०। वे० स० ५६६। श्र भण्डार।

विकोष--पं ॰ खुशालचन्द ने जोधराज पाटोदी के वनवाये हुए मन्दिर मे अपने हाथ से प्रतिलिपि की थी।

भट्टारकोऽमूज्जगदादिकोत्ति श्रीमूलसघे वरधारदायाः ।

गच्छेहि तत्पट्टसुराजिराजि देवेन्द्रकीत्ति समभूततश्च ।।१३७।।

तत्पट्टपूर्वाचलभानुकक्ष श्रीकुदर्कुदान्वयलब्धमुख्यः ।

महेन्द्रकीत्तिः प्रवभूवपट्टे क्षेमेन्द्रकीत्तिः गुरुरस्थमेऽभूत ।।१३८।।

योऽभूत्क्षेमेन्द्रकीत्तिः भुवि सग्रणभरश्चारुचारित्रधारी ।

श्रीमद्भट्टारकेंद्रो विलसदवगमो भव्यसघे प्रवंद्यः ।

तस्य श्रीकारशिष्यागमजलिषपटु श्रीसुरेन्द्रकीत्ति ।

रेना पुण्याचकार प्रलचुमतिविदा वोधतापार्जशब्दै ।।१३६॥

मिति ग्रवादमासे गुक्तपक्षेदगम्या तिथौ सवत १८७८ का सवाई जयपुर के श्रीऋषभदेवचैत्यालये निवास पं कल्याग्रदासस्य शिष्य खुस्यालचन्द्रे ग्रा स्वहस्तेन लिपीकृत जोघराज पाटोदी कृत चैत्यालये ॥ शुभं भूयात् ॥

इसके अतिरिक्त यह भी लिखा है-

मिति माहसुदी ३ सं० १८८६ मुनिराज दोय ग्राण । बडा वृष्यभेनजी लघु वाहुबिल मालपुरासु प्रकाशमें ग्राया । सागानेर सु भट्टारकजी की निसया मे दिन घड़ी च्यार चढ्या जयपुर मे दिन सवा पहर पाछै मिदरा दर्शन सगही का पाटोदी उगहर (वगैरह) मिदर १० कीया पाछै मोहनवाडी नदलालजी की कीर्तिस्तम की निसया संगही विरधीचदजी ग्रापकी हवेली मे रात्रि १ रह्या भोजनकरि साहीवाड रात्रिवास कीयो समेदिगिर् यात्रापधारया पराकृत बोले श्री ऋषभदेवजी सहाय ।

इसी भण्डार मे एक प्रति स० १८८८ की (वे॰ सं० ५४२) भीर है।

४४०२. श्रष्टाहिकापूजा—द्यानतराय । पत्र सं०,३। श्रा० ५×६३ दश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०३ । श्रा भण्डार ।

विशेष-पत्रो का कुछ भाग जल नया है।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

४४०३. प्रति स०२। पत्र सं०४। ले० काल सं०१६३१। वे० सं०३२। क भण्डार।

४४०४. त्र्रष्टाहिकापूजा"" "। पत्र सं० ४४ । ग्रा० ११×५३ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रष्टाहिका पर्व की पूजा । र० काल सं० १८७६ कात्तिक बुदी ६ । ले० काल सं० १६३० । पूर्या । वे० सं० १० । क भण्डार ।

४४०४. त्र्रष्टाहिकान्नतोद्यापनपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्रं सं० ३ । आ० ११४४ इख । भाषा— हिन्दी । विषय-प्रष्टाह्निका व्रत विधान एवं पूजा । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० ४२३ । व्य भण्डार ।

४४०६. त्र्रष्टाहिकान्नतोद्यापन। पत्र सं० २२। ग्रा० ११×५३ इख्र । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-ग्रष्टाहिका न्नत एवं पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६ । क भण्डार ।

४४८७. त्राचार्य शान्तिसागरपूजा-सगवानदासः। पत्र सं० ४। ग्रा० ११३×६३ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १६८४ । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

४४०८. त्राठकोडिमुनिपूजा-विश्वभूषण्। पत्र सं० ४। ग्रा० १२×६ इख । भाषा-सस्कृत । पय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० ११६। छ भण्डार।

४४०६. स्रादित्यव्रतपूजा-केशवसेन । पत्र सं० ५ । स्रा० १२×५६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-रविव्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०० । स्र भण्डार ।

४४१०. प्रति सं०२। पत्र सं०७। ले० काल सं०१७८३ श्रावण सुदी १।वे० स०६२। ङ

४४११. प्रति सं०३। पत्र सं०८। ले० काल सं० १६०५ म्रासोज सुदी २। वे० सं०१८०। म

४४१२. त्र्यादित्यत्रतपूजा''''''। पत्र सं० ३५ से ४७। ग्रा० १३×५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-रविव्रत पूजा । र० काल ×। ले० काल सं० १७९१ । ग्रपूर्ण । वै० सं० २०६८ । ट भण्डार ।

४४१३. ऋगदित्यवारपूजा """ पत्र सं० १४। ग्रा० १०×४३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-रिव व्रतपूजा। र० काल ×। ले० काल ×। श्रपूर्ण। वे० सं० ५२०। च भण्डार।

४४१४ स्त्रादित्यवारत्रतपूजा """ पत्र सं ६ श्रा० ११×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-रिव व्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४४१४. द्यादिनार्थपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं०४ । ग्रा०१०३×५ इंच । भोपा-हिन्दी । विषय-पूजा । रें काल × । लें काल × । पूर्ण । वें कं ५४८ । ग्रा भण्डार ।

४४१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल 🔀 । वे० सं० ५१६ । च भण्डारे । विशेष—इंसी मण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५१७) श्रीर हैं । ४४१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले॰ काल × । वे० सं० २३२ । ज भण्डार ।

विशेप--- प्रारम्भ मे तीन चौबीसी के नाम तथा लघु दर्शन पाठ भी हैं।

४४१८. श्रादिनाथपूजा """। पत्र सं० ४। ग्रा० १२३४५ हुँ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं० २१४५। ग्रा भण्डार।

४४१६. श्रादिनाथपूजाष्टक """। पत्र सं० १। ग्रा० १०३×७३ दख । भाषा-हिन्दी । विषय-एजा। र० काल ×। ते० काल ×। वे० सं७ १२२३ । श्रा भण्डार ।

विशेष-नेमिनाथ पूजापृक भी है।

४४२०. आदीश्वरपूजाष्टक""" । पत्र सं॰ २ । ग्रा॰ १०३×५ इ'च । भाषा-हिन्दी । विषय-प्रादि-नाथ तीर्यद्भर की पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं॰ १२२६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-महावीर पूजापृक भी है जो संस्कृत में है।

४४२१. श्राराधनाविधान " ""। पत्र स० १७ । मा० १०×४ई इंच । भाषा-सम्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१५ । व्य भण्डार ।

विशेप-त्रिकाल चौबीसी, पोडशकारण श्रादि विधान दिये हुये हैं।

४४२२. इन्द्रध्वजपूजा--भ० विश्वभूपगा। पत्र स० ६८ । ग्रा० १२×५६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल × । ते० काल सं० १८५६ दैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ४६१ । ग्रा भण्डार ।

विशेप--'विशालकीर्त्यात्मज भ० विश्वभूषण् विरचिताया' ऐसा लिखा है।

४४२२. प्रति स०२। पत्र सं० ६२। ले० काल सं० १८५० द्वि० वैशाख सुदी ३। वे० सं० ४८७। ऋ भण्डार।

विशेष कुछ पत्र चिपके हुये हैं। ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर मे महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल में हुई थी।

४४२४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल 🗙 । वे० सं० ८८ । ह भण्डार ।

४४२४. प्रति सं० ४ । पत्र स० १०६ । ले॰ काल × । वे॰ सं० १३० । छ भण्डार ।

विशेष-- व भण्डार मे २ श्रपूर्ण प्रतिया (वे० स० ३५, ४३०) श्रीर है।

४४२६. इन्द्रध्वजमङलपूजा " । पत्र स० ६७ । म्रा० ११३ × १६ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-मेलो एव उत्सवो म्रादि के विधान मे की जाने वाली पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६३६ फाग्रुण सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० १६ । ख भण्डार ।

विशेप—पं ० पन्नालाल जोवनेर वाले ने स्योजीलालजी के मन्दिर मे प्रतिलिपि की । मण्डल की सूची भी दी हुई है।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य

४४२७. उपवासमृह्णविधि । पत्र सं० १। ग्रा० १०×१ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-उपवास विधि । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२२४ । पूर्ण । श्र मण्डार ।

४४२८. ऋषिमंडलपूजां — आचाय गुणानन्दि । पत्र सं० ११ से ३० । आ० १०६४ ६ च । भाषा – संस्कृत । विषय-विभिन्न प्रकार के मुनियो की पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६१ र बैशाख बुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । श्र भण्डार ।

विशेष-पन्न १ से १० तक ग्रन्य पूजायें है। प्रशस्तिं निम्न प्रकार है।

संवत् १६१५ वर्षे वैद्याख बृदि ५ ग्रुरुवासरे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे ग्रुणनंदि-मुनीन्द्रोण रचिताभक्तिभावतः । शतमाधिकाशीतिश्लोकाना ग्रन्थ सख्यख्या ।।ग्रन्थाग्रन्थ ३८०।।

इसी भण्डार भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ५७२) और है।

४४२६. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० स० १३६। छ भण्डार।

विशेष—अष्ठाह्मिका जयमाल एवं निर्वारणकाण्ड ग्रीर हैं। ग्रन्थ के दोनो ग्रोर सुन्दर बेल वूंटे हैं। श्री
, मादिनाथ व महावीर स्वामी के चित्र उनके वर्णानुसार हैं।

४४३०. प्रति सं० ३। पत्र स० ७। ले० काल 🗴 । वे० सं० १३७ । घ भण्डार ।

विशेष--- प्रन्थ के दोनो भ्रोर स्वर्श के बेल वू टे हैं। प्रति दर्शनीय है।

४४३१. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १७७५। वे० सं० १३७ (क) घ भण्डार।

विशेष-प्रति स्वर्णाक्षरों में है प्रति सुन्दर एवं दर्शनीय है।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १३८) ग्रौर है।

४४३२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४ । ले० काल स० १८६२ । वे० सं० ६४ । इ भण्डार ।

४४३३ प्रति सं०६। पत्र स०१२। ले० काल ×। ने० सं०७६। स्त भण्डार।

४४३४ प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल 🗶 । वे० सं० २१० । व्य भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ४३३) ग्रौर है जो कि मूलसंघ के भाचार्य नेमिचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थो।

४४३४. ऋषिमंडलपूजा—मुनि ज्ञानभूषण । पत्र सं० १७ । म्रा० १०३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

४४३६. प्रति सं०२। पत्र सं०१४। ले० काल ×। वे० सं०१२७। छ भण्डार। ४४३७. प्रति स०३। पत्र सं०१२। ले० काल ×। वे० सं० २५६।

विशेप-प्रथम पत्र पर सकलीकरण विधान दिया हुआ है।

४४३८. ऋषिमंडलपूजा """। पत्र संर्० १८ । ग्रा० ११६४५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० कान 🗴 । ले० काल १७६८ चैत्र बुदी १२ । पूर्ण । वे० संर ४८ । च भण्डार ।

विशेष-महात्मा मानजी ने ग्रामेर मे प्रतिलिपि की थी।

४४३६. ऋषिमडलपूजा"" । पत्र स० ६ । ग्रा० ६ रे४५ देख । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल स० १८०० कार्तिक बुदी १० । पूर्ण । वे० स० ४६ । च भण्डार ।

विशेष--प्रति मत्र एवं जाप्य सहित है।

४४४०. ऋषिमंडलपूजा — दौलत आसेरी। पत्र स० ६। म्रा० ६३×६३ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६३७। पूर्ण। वे० स० २६०। मा भण्डार।

४४४१. वंजिकाव्रतोद्यापनपूजा'''। पत्र स० ७। आ० ११×५२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एव विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६५ । च भण्डार ।

विशेष--काजीवारस का व्रत भांखापुरी १२ की किया जाता है।

४४४२. कंजिकात्रतोद्यापन "" । पत्र सं ६ । आ० ११३ 🗙 ६ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० ६४ । च भण्डार ।

विशेष-जयमाल ग्रपभ्र श में है।

४४४३ कंजिकात्रतोद्यापनपूजा" " । पत्र सं० १२ । आ० १०२ 🗓 १५ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा एव विधि । र० कल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० ६७ । मा भण्डीर ।

विशेष-पूजा संस्कृत मे है तथा विधि हिन्दी मे है ।

४४४४. कर्मचूरव्रतोद्यापन "" । पत्र सं प्रा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६०४ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० स० ५६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६०) श्रीर है।

४४४४. प्रति स०२। पत्र संर्वि । ग्रा०१२×६३ इंच। भाषां-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। पूर्ण। वे० संव १०४। क भण्डार।

४४४६. कर्मचूरत्रतोद्यापनपूजा-लद्मीसेन। पत्र सं० १०। ग्रा० १०×४३ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ११७। छ भण्डार।

४४४७ प्रति सं०२। पत्र सं० म्। ले० काल X। वे० सं० ४१३। व्य भण्डार

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

४४४८. कमेद्हतपूजा-भ० शुभचद्र । पत्र सं० ३०। म्रा० १०३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कर्मों के नष्ट करने के लिए पूजा। र० काल 🔀 । ले० काल सं० १७६४ कार्त्तिक बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० १६। ज भण्डार।

विशेष--इसी मण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३०) भ्रीर है।

४४४६. प्रति सं०२। पत्र स० ५। ले० काल सं०१६७२ ग्रासोज। वै० स०२१३। व्य भण्डार। ४४४०. प्रति सं० ३। पत्र सं० २४। ले० काल स० १६३५ मगिसर बुदी १०। वे० सं० २२५। व्य

विशेष—ग्रा० नेमिचन्द के पठनार्थ लिखा गया था।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २६७) ग्रीर है।

४४४१. कर्मदहतपूजा "" । पत्र सं० ११। आ० ११६ ×५ इ च। भाषा-संस्कृत । विषय-कर्मी के नष्ट करने की पूजा। र० काल ४ । ले० काल सं० १८३६ मगिसर बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ५२५ । ऋ भण्डार । विशेष — इसी भण्डार एक प्रति (वे० सं० ५१३) ग्रीर है जिसका ले० काल सं० १८२४ भादवा सुदी

४४४२. प्रति सं०२। पत्र सं०१५। ले० काल सं० १८८८ माघ शुक्का ८। वे० सं०१०। घ भण्डार ।

विशेष-लेखक प्रशस्ति विस्तृत है। ४४४३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १८। ले० काल सं० १७०८ श्रावण सुदी २। वे० सं० १०१। इ

भण्डार ।

१३ है।

भण्डार ।

विशेष--माइदास ने प्रतिलिपि करवायी थी।

इसी अण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ सं० १००, १०१) स्रीर हैं।

४४४ प्रति सं०४ । पत्र सं०४३ । ले० काल 🗙 । वे० सं०६३ । च भण्डार ।

४४४४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३०। ले० काल 🗶 । वे० सं० १२५ । छ भण्डार ।

विशेष—निर्वागुकाण्ड भाषा भी दिया हुग्रा है। इसी भण्डार मे ग्रीर इसी वेष्टन मे १ प्रति ग्रीर है।

४४४६. कर्मद्हनपूजा—देकचन्द । पत्र सं० २२ । म्रा० ११×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कर्मों को नष्ट करने के लिये पूजा। र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं ७०६ । ऋ भण्डार ।

४४४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । ने० सं० ११ । घ भण्डार ।

४४४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६८ फाग्रुए। बुदी ३ । वे० सं० ५३२ । च

भण्डार |

विशेष-इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ५३१, ५३३) श्रीर है।

४४४६. प्रति सं० ४। पत्र स० १६। ले० काल सं० १८६१। वे० सं० १०३। ड भण्डार। ४४६०. प्रति सं० ४। पत्र स० २४। ले० काल स० १९५८। वे० स० २२१। छ भण्डार। विशेष—अजमेर वालो के चीवारे जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४४६१. कलशिवधान—मोहन । पत्र स०६। ग्रा०११×५३ इख्र । भाषा—मंस्कृत । विषय-कलश एव ग्रिभिपेक ग्रादि की विधि । र० का व सं०१६१७ । ले० काल स०१६२२ । पूर्ण । वे० सं०२७ । ख्र भण्डार ।

विशेष—भैरविसह के शासनकाल मे शिवकर (सीकर) नगर मे मटंव नामक जिन मन्दिर के स्थापित करने के लिए यह विधान रचा गया।

ग्रन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २३६) ग्रीर है।

लिखितं प॰ पन्नालाल भ्रजमेर नगर मे भट्टारकजी महाराज श्री १०८ श्री रत्नभूषराजी के पाट भट्टारक जी महाराज श्री १०८ श्री लिलितकीर्त्तिजी महाराज पाट विराज्या वैद्यास सुदी ३ नै त्याकी दिक्षा मे आया जीवनेरमुं पं॰ हीरालालजी पन्नालाल जयचंद उत्तरचा दोलतरामजी लोढा श्रोसवाल की होली मे पडितराज नोगावा का उत्तरचा एक जायगा ११ ताई रह्या।

४४६२. कलशविधान****** पत्र सं०६। म्रा॰ १००० ४५०० भाषा-संस्कृत । विषय-कलश एवं ग्रिभिषेक म्रादि की विधि । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ७६ । ऋ भण्डार ।

४४६३. कलशिविधि—विश्वभूपण् । पत्र सं० १० । ग्रा० ६२ \times ४६ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–विधि । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० ४४८ । श्र भण्डार ।

४४६४ कलाशारोपण्विधि—स्त्राशाधर। पत्र सं० ५। ग्रा० १२४८ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय-मन्दर के शिलार पर कलश चढाने का विधि विधान। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स० १०७। इन् भण्डार।

विशेष--प्रतिष्ठा पाठ का ग्रग है।

४४६४. कलारोपण्विधि " " । पत्र स०६। ग्रा०११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—मन्दिर के शिखर पर कलश चढाने का विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०१२२। छ भण्डार।

विशेप--इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १२२) ग्रौर है।

7

. ४४६६. कलशाभिषेक — स्त्राशाधर। पत्र सं०६। स्रा०१०१४४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय— स्रिभिषेक विधि। र० काल ४। ले० काल स०१८३८ भादवा बुदी १०। पूर्ण। वे० स०१०६। ङ भण्डार।

विशेष-पं । शम्भूराम ने विमलनाथ स्वामी के चैत्यालय मे प्रातिलिपि की थी ।

४४६७. कित्रुग्डपार्श्वनाथपूजा—स० प्रसाचन्द्र । पत्र स० ३४। ग्रा० १०३ ८५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजाने र० काल 🗙 । ले० काल सं १६२६ चैत्र सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ५५१ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

संवत् १६२६ वर्षे चैत्र सुदी १३ वुधे श्रीमूनसंघे नंद्याम्माये वलात्कारगरो सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्या-न्वये भ० पद्मनंदिदेवास्तराट्टी भ० श्रीगुभचन्द्रदेवास्तराट्टी भ० श्रीजिराचन्द्रदेवास्तरपट्टी भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा तच्छिष्य श्रीमंडलाचार्यधर्मचंद्रदेवा तत्तिछ्य मडलाचार्यश्रीलिलतकीत्तिदेवा तदाम्नाये खडेलवालान्वये मंडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्र तत्-शिष्यिग् वाई लाली इद शास्त्रं लिखापि मुनि हेमचन्द्रायदत्तं।

४४६८. किलकुण्डपार्श्वनाथपूजा"" । पत्र सं० ७। प्रा० १०३४४ई इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं० ४१६। व्य भण्डार।

४४६६. कितकुरखपूजा''''''। पत्र सं०३। ग्रा० १०३ \times ५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण। वे० स० ११८३। त्रा भण्डार।

४४७०. प्रति सं०२। पत्र सं०६। ते० काल 🗴 । वे० स० १०८। स भण्डार ।

४४७१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४७। ले० काल ×। वे० सं० २५६। ज भण्डार। ग्रीर भी पूजायें है। ४४७२. प्रति सं० ४। पत्र स० ४। ले० काल ×। वे० स० २२४। मा भण्डार।

४४७३. कुर्डलगिरिपूजा--भ० विश्वभूषण्। पत्र सं० ६ । ग्रा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कुण्डलगिरि क्षेत्र की पूजा। र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० ५०३ । ग्रा भण्डार ।

विशेष--रुचिकरगिरि, मानुपोत्तरगिरि तथा पुष्करार्द्ध की पूजायें और हैं।

४४७४. च्रेत्रपालपूजा-श्री विश्वसेन । पत्र सं० २ से २८ । म्रा० १०३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १२७४ भादवा बुदी ६ । म्रपूर्ण । वे० सं० १३३ । (क) हा भण्डार ।

४४ ४ प्रति सं २ १ पत्र स० २०। ले० काल सं० १६३० ज्येष्ठ सुदी ४। वे० सं० १२४। छ् भण्डार।

विशेय---गरोशलाल पाड्या चौधरी चाटसू वाले के लिए प० मनसुखजी ने गोधों के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी। भण्डार ।

४४७६. प्रति सं० ३। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १९१६ वैशाख बुदी १३। वे० सं० ११८। ज

४४७७. च्लेत्रपालपूजा पत्र सं०६। म्रा०११ई×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-जैन मान्यतानुसार भैरव की पूजा। र० काल ×। ले० काल स०१८६० फागुए। बुदी ७। पूर्ण। वे० स० ७६। स्र भण्डार।

विशेष--कवरजी श्री चपालालजी टोग्या खढेलवाल ने प० श्यामलाल ब्राह्मणा मे प्रतिलिपि करवाई थी। ४४७८ प्रति संट २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १८६१ चैत्र सुदी ६। वे० स० ४८६। श्र

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ स॰ ५२२, १२२५) श्रीर हैं। ४४७६. प्रति स॰ ३। पत्र स॰ १३। ले॰ काल 🗴 ।वे॰ स॰ १२४। छ, भण्डार। विशेष —२ प्रतिया श्रीर हैं।

४४८० कजिकात्रतोद्यापनपूजा—मुनि लिलतकीित्त । पत्र सं० ४ । ग्रा० १२४५३ इंच । भाषा— संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ५११ । स्त्र भण्डार ।

४४⊏१. प्रति सं०२ | पत्र स०६। ले० काल ×। वे० सं०११० | क भण्डार।

४४८२ प्रति सं०३। पत्र स०४। ले० काल सं०१६२८। वे० स०३०२। ख भण्डार।

४४८३. कंजिकात्रतोद्यापन""। पत्र स०१७ से २१। श्रा०१०३४५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल ४। श्रपूर्ण। वे० स०६८। ड भण्डार।

४४८४. राजपथामंडलपूजा--भ० चेमेन्द्रकीत्ति (नागौर पट्ट)। पत्र सं० ८ । श्रा० १२४५३ इख्र। भाषा-सस्कृतं। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल स० १६४०। पूर्ण । वे० स० ३६ । ख भण्डार।

मूलसंघे वलात्कारें गंच्छे सारस्वते भवत् ।
कुन्दकुन्दान्वये जात श्रुतसागरपारग ।।१६।।
नागौरिपट्टेपि झनंतकीर्तिः तत्पट्टधारी शुभ हर्षकीर्तिः ।
तत्पट्टविद्यादिसुभूषणाख्यः तत्पट्टहेमादिसुकीर्त्तमाख्य ।।२०),
हेमकीर्तिमुने पट्टे क्षेमेन्द्रादियका'प्रभुः ।
तस्याज्ञया विरचितं गजपंथसुपूजनं ।।२१।।
विदुषा शिवजिद्रक्तः नामधेयेन मोहनः ।
प्रेम्णा यात्राप्रसिद्धचर्थं चैकाह्मिरचितं चिरं ।।२२।।

जीयादिद पूजनं च विश्वभूषरावध्युवं । तस्यानुसारतो ज्ञेयं न च बुद्धिकृत त्विदं ॥२३॥

इति नागौरपट्टविराजमान श्रीभट्टारक्क्षेमेन्द्रकीर्त्तिविरिचतं गजपंथमंडलपूजनविधानं समाप्तम् ।।

४४८४. गण्धरचरण्।रविन्दपूजा''' ''' । पत्र सं०३। म्रा० १०३४४३ इंच। भाषा–सस्कृत। विषय-पूजा। र० कप्त ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं०१२१। क भण्डार।

विशेष--प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है।

४४८६. गण्धरजयमाला । पत्र स०१। म्रा० ८४५ इंच। भाषा-प्राकृतः। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्णः। वे० स०२१००। स्त्र भण्डारः।

४४-७ गण्धरवत्तयपूजा "" । पत्र सं०७। ग्रा० १०ई×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण। वे० स० १४२ । क भण्डार।

४४८८. प्रति सं०२। पत्र सं०२ से ७। ले० काल ×। वे० सं०१३४। हा भण्डार।
४४८६ प्रति सं०३। पत्र स०१३। ले० काल ×। वे० सं०१२२। छ भण्डार।
विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं०११६,१२२) ग्रीर हैं।

४४६० गण्धरवत्तयपूजाः । पत्र सं० २२। म्रा० ११ \times ४ इ च । भाषा-विषय-पूजा । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ४२१ । व्य भण्डार ।

४४६१. गिरिनारत्तेत्रपूजा-भ० विश्वभूषण्। पत्र सं० ११। ग्रा० ११×५ इंन। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल सं० १७५६। ले० काल सं० १६०४ माघ बुदी ६। ूर्णा। वे० सं० ६१२। स्र भण्डार।

४४६२. प्रति सं०२। पत्र सं०६। ले० काल ×। वे० सं०११६। छ भण्डार। विशेष—एक प्रति ग्रीर है।

४४६३ गिरनारचेत्रपूजा " । पत्र सं० ४ । आ० ८×६३ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र॰ काल × । ले॰ काल स॰ १९६० । पूर्ण । वे॰ सं॰ १४० । ङ मण्डार ।

४४६४. चतुर्दशीव्रतपूजा""। पत्र सं० १३ । ग्रा० ११५×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५३ । ड भण्डार ।

४४६४. चतुर्विशतिजयमाल-यित माघनिद्। पत्र सं०२। ग्रा०१२४१ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०२६८। ख भण्डार।

४४६६. चतुर्विशतितीथङ्करपूजा । पत्र सं० ५१ । ग्रा० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र॰ काल × । के० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० १३ न । ज भण्डार ।

विशेष-केवल ग्रन्तिम पत्र नहीं है।

४४६७ प्रति सं०२। पत्र स०४६। ले० काल स०१६०२ वैशाख बुदी १०। वै० स०१३६। ज भण्डार।

> ४४६८. चतुर्विशतितीर्थङ्करपूजा " " । पत्र सं० ४६ । म्रा० ११४५३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १ । म्र भण्डार ।

विशेष --- दलजी बज मुशरफ ने चढाई थी।

४४६६. प्रति सं० २। पत्र स० ४१। ले० काल स० १६०६। वे० स० ३३१। व्य भण्डार।

४४००. चतुर्विशतितीर्थेङ्करपूजा''''' । पत्र सं० ४४ । ग्रा० १०३×५ इ'च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६७ । त्र्य भण्डार ।

विशेष-कही २ जयमाला हिन्दी मे भी है।

४४०१. प्रति सं०२। पत्र सं०४८। ले० काल स० १६०१। वे० सं०१५६। छ भण्डार। विशेष--इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं०१५५) और है।

४४०२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० स० ६६ । च भण्डार ।

४४०३. चतुर्विशतितीर्थङ्करपूजा—सेवाराम साह। पत्र स०४३ । म्रा० १२४७ इंच । भाषा— हिन्दी। विवय-पूजा। र० काल सं०१८२४ मगसिर बुदी ६। ले० काल स०१८५४ मासीज सुदी १४। पूर्ण। वे० स०७१४। स्र भण्डार।

विशेप—भाभूराम ने प्रतिलिपि की थी । किन ने श्रपने पिता वसतराम के बनाये हुए मिथ्यात्वसंडन श्रीर बुद्धिविलास का उल्लेख किया है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७१४) और है ।

४४०४. प्रति सं०२। पत्र स०६०। ले० काल स०१६०२ म्रापाढ सुदी म। वे० स०७१४। स्र भण्डार।

४४०४ प्रति स० १। पत्र स० ४२। ले० काल स० १९४० फाग्रुए। बुदी १३। वे० स० ४६। ख

४४०६. प्रति सं० ४ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १८८३ । वे० सं० २३ । ग भण्डार । विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २१, २२) और है । ४४०७ चतुर्विशतिपूजा"""। पत्र सं० २०। ग्रा० १२×५ दे इ'च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ते० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० सं० १२०। छ भण्डार।

४४०८. चतुर्विशतितीर्थङ्करपूजा-- घृन्दावन । पत्र सं० ६६ । आ० ११×५१ इंच । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १८१६ कार्तिक बुदी ३ । ले० काल सं० १९१५ आषाढ बुदी ४ । पूर्ण । वै० सं० ७१६ । स्र भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ७२०, ६२७) और हैं।
४४०६. प्रति सं० २। पत्र स० ४६। ले० काल ४। वे० सं० १४४। क भण्डार।
४४१०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६४। ले० काल ४। वे० सं० ४७। ख भण्डार।
४४११ प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६। ले० काल सं० १६४६ कार्तिक सुदी १०। वे० सं० २६। ग

भण्डार ।

४४१२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । स्रपूर्शा । वे० सं० २४ । घ भण्डार । विशेष—वीच के कुछ पत्र नहीं हैं।

४४१३. प्रति सं०६। पत्र सं०७०। ले० काल सं०१६२७ सावन सुदी ३।वे० सं०१६०। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० १६१, १६२, १६३, १६४) और है।
४४१४. प्रति सं० ७। पत्र स० १०५। ले० काल ×। वे० सं० ५४४। च भण्डार।
विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ५४२, ५४३, ५४५) और है।
४४१४. प्रति सं० ८। पत्र स० ४७। ले० काल ×। वे० सं० २०२। छ भण्डार।
विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० २०४ मे ३ प्रतिया, २०५) और है।

४४१६. प्रति सं० ६। पत्र स० ६७। ले० काल स० १६४२ चैत्र सुदी १५ । वे० सं० २६१। ज

भण्डार ।

भण्डार ।

४४१७ प्रति स०१०। पत्र स० ६१। ले० काल ×। वे० सं०१६६। मा भण्डार।
विशेष—सर्वसुखजी गोधा ने स०१६०० भादना सुदी ५ को चढाया था।
इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं०१४५) ग्रीर है।

४४१८. प्रति सं० ११। पत्र सं० ११४। ले० काल सं० १६४६ सावरा सुदी २। वे० स० ४४५। व

४४१६. प्रति सं० १२। पत्र सं० १४७। ले० काल स० १६३७। वे० सं० १७०६। ट भण्डार। विशेष—छोटेलाल भावसा ने स्वपठनार्थ श्रीलाल से प्रतिलिपि कराई थी। ४४२०. चतुर्विशतितीर्थङ्करपूजा - रामचन्द्र । पत्र सं० ६० । ग्रा० ११×५३ इंच । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल स० १८५४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २१५८, २०८५) ग्रीर हैं।

४४२१. प्रति सं०२। पत्र स० ५०। ले० काल सं०१८७१ श्रासीज सुदी ६। वे० स० २४। त

विशेष-सदामुख कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २५) ग्रीर है।

प्रथ्रे प्रति स०३। पत्र स० ५१। ले० काल सं० १६६६। वे० सं० १७। घ भण्डार।

विशेष--इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १६, २४) श्रीर हैं।

४४२३. प्रति सं०४ । पत्र स० ५७ । ले० काल × । वे० स० १५७ । इ भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० १५८, १५६, ७८७) ग्रीर हैं।

४५२४. प्रति सं० ४ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १६२६ । वे० सं० ५४६ । च भण्डार ।

विशेष--इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ५४६, ५४७, ५४८) श्रीर हैं।

४४२४. प्रति सं०६। पत्र स० ५४। ले० काल स० १८६१। वे० स० २१६। छ भण्डार।

विशेष--इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० २१७, २१८, २२०/३) ग्रीर है।

४४२६ प्रति स० ७। पत्र सं० ६६। ले० काल ×। वे० सं० २०७। ज भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं॰ २०५) ग्रीर हैं।

४४२७ प्रति सं०८। पत्र सं०१०१। ले० काल सं०१८६१ श्रावण बुदी ४१वे० स०१८। मा

विशेप-जैतराम रावका ने प्रतिलिपि कराई एव नाथूराम रावका ने विजैराम पाड्या के मन्दिर मे चढाई थी। इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ५८, १८१) श्रीर है।

४४२८. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७३। ले० काल सं० १८५२ ग्रापाढ सुदी १५। वे० स० ६४। व्य

विशेष--महात्मा जयदेव ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ स॰ ३१४, ३२१) ग्रीर है।

४४२६. चतुर्विशतितीर्थङ्करपूजा—नेमीचन्द पाटनी । पत्र सं० ६०। ग्रा० ११३×५३ इख्र । भाग-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १८८० भादवा सुदी १०। ले० काल सं० १६१८ ग्रासोज बुदी १२। वे० सं० १४४ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्त मे किव का संक्षिप्त परिचय दिया हुम्रा है तथा वतलाया गया है कि किव दीवान ग्रमरचद जी के मन्दिर मे कुछ समय तक ठहरकर नागपुर चले गये तथा वहा से ग्रमरावती गये।

४४३०. चतुर्विशतितीर्थङ्करपूजा—सनरंगलाल । पत्र सं०५१। ग्रा०११४८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०७२१। ग्रा भण्डार।

४४३१. प्रति सं०२। पत्र सं०६६। ले० काल ×। वे० सं०१४३। क भण्डार।

विशेष-पूजा के अन्त मे कवि का परिचय भी है।

४४३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० सं० २०३ । छ भण्डार ।

४५३३. चतुर्विशतितीर्थद्भरपूजा-वस्तावरताल । पत्र सं० ५४। आ० ११३४५ इंच। भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १८५४ मगसिर बुदी ६ । ले० काल सं० १९०१ कार्त्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ५५०। च भण्डार ।

विशेप--तनसुखराय ने प्रतिलिपि की थी।

४४३४. प्रति सं०२। पत्र स० ५ से ६६। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० सं०२०५। छ भण्डार।
४४३४. चतुर्विशतितीर्थङ्करपूजा—सुगतचन्द्। पत्र सं०६७। ग्रा०११३×६ इख्र। भाषा-हिन्दी।
विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं०१६२६ चैत्र बुदी १। पूर्ण। वे० सं०५५५। च भण्डार।

४५३६. प्रति सं०२। पत्र सं० ८४। ले० काल सं० १६२८ वैशाख सुदी ५। वे० सं० ५५६। च

४४३७. चतुर्विशतितीर्थङ्करपूजा पत्र सं० ७७ । म्रा० ११×५ दे इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९१६ चैत्र सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६२६ । स्र भण्डार ।

४४३८ प्रति सं०२। पत्र सं०११। ले० काल 🗴 । प्रपूर्श । वे० सं०१४४ । ह भण्डार।

४४३६. चन्द्नपष्टीत्रतपूजा-भ० शुभचन्द्र। पत्र म० १०। ग्रा० ६×६ इंच। भाषा-संस्कृत।

विषय-चन्द्रप्रभ तीर्थंद्धर पूजा । र॰ काल 🗙 । ले॰ काल 🗙 । पूर्ण । वे॰ सं॰ ६८ । भू भण्डार ।

४४४०. चन्द्रनपष्टीव्रतपूजा—चोखचन्द् । पत्र सं० ८। ग्रा० १०४४ ईच । भाषा-संस्कृत । विषय-चन्द्रप्रभ तीर्थद्धर पूजा । र० काल ४ । ले॰ काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ४१६ । व्य भण्डार ।

विशेय-'चतुर्थ पूजा की जयमाल' यह नाम दिया हुम्रा है। जयमाल हिन्दी मे है।

४४४१. चन्द्रनपष्ठीत्रतपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं०६। श्रा० पर्न्४४६ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-चन्द्रप्रभ की पूजा। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० १७१। क भण्डार।

४४४२. चन्द्नपष्ठीव्रतपूजा । पत्र सं०२१। ग्रा० १२४५ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-

विशेष---निम्न पूजायें ग्रौर हैं- पश्चमी व्रतोद्यापन, नवग्रहपूजाविधान।

४४४३ चन्द्रतपष्ठीव्रतपूजा '। पत्र सं०३। ग्रा० १२४५३ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-चन्द्रप्रभ तीर्थद्धर पूजा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० म० २१६२। ग्रा भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २१६३) श्रीर है।

४५४४. प्रति सं०२। पत्र सं०६। ले० काल ४। अपूर्ण । वे० सं०२०६३। ट भण्डार।

४५४४. चन्द्नषष्ठीत्रतपूजा । पत्र सं० ६ । ग्रा० ११३४५ है इंच । भाषा-सस्तृत । विषय-चन्द्रप्रभ तीर्थाच्कर पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० स० ६५७ । स्त्र भण्डार ।

विशेप--३रा पत्र नही है।

४४४६. चन्द्प्रभिजिनपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ७ । म्रा० १०३×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८७६ म्रासीज बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ४२७ । व्य भण्डार ।

विशेप-सदासुख वाकलीवाल महुग्रा वाले ने प्रतिलिपि को यी।

४४४७ चन्द्रप्रभिजिनपूजा—देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ५। ग्रा० ११×४३ इख्र। भाषा-संस्क्रत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १७६२। पूर्ण। वे० सं० ५७६। श्र भण्डार।

> ४४४८ प्रति मं०२। पत्र स० ५। ले० काल सं० १८६३। वे० स० ४३०। व्य भण्डार। विशेष—ग्रामेरमे स० १८७२ में रामचन्द्र की लिखी हुई प्रति से प्रतिलिपि की गई थी।

४४४६ चमत्कारस्रतिशयत्तेत्रपूजा" । पत्र सं० ५ । ग्रा० ७४५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल स० १६२७ वैशाख बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ६०२ । स्त्र भण्डार ।

४४४०. चारित्रशुद्धिविधान-श्री भूषणा। पत्र स०१७०। ग्रा०१२३४६ इ व । भाषा-सस्कृत। विषय-मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें। र० काल ४। ले० काल स०१ ददद पीप मुदी द। पूर्ण। वै० सं०४४५। स्र भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम बारहसी चीतीसाव्रत पूजा विधान भी है।
४४४१. प्रति स० २। पत्र स० ८१। ले० काल ×। वे० स० १५२। क भण्डार।
विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है।

४४४२. चारित्रशुद्धिविधान-सुमिति ब्रह्म। पत्र सं० ८४। ग्रा० ११३४५ई इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मुनि दीवा के समय होने वाले विधान एव पूजायें। र० काल ४। ले० काल सं० १६३७ वैशाख सुदी १४। पूर्ण। वे० स० १२३। ख भण्डार।

४४४३ चारित्रशुद्धिविधान—शुभचन्द्र। पत्र सं०६६। ग्रा०११३४५ इंच। भाषा—संस्कृत।
मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एव पूजाये। र० काल ४। ले० काल सं० १७१४ फाल्गुए। सुदी ४। पूर्ण।
वै० सं०२०४। ज भण्डार।

विशेष-लेखक प्रशस्ति-

संवत् १७१४ वर्षे फाग्रुग्मासे शुक्लपक्षे चउथ तिथी शुक्रवासरे । घडसोलास्थाने मुंडलदेशे श्रीधर्म्मनाय चैत्यालये श्रीमूलसचे सरम्वतीगच्छे बलात्कारगगो श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री ५ रत्तचन्द्राः तत्पट्टे भ० हर्पचन्द्राः तदाम्नाये ब्रह्म श्री ठाकरसी तित्शच्य ब्रह्म श्री गगादास तिशच्य ब्रह्म श्री महीदासेन स्वज्ञानावर्गी कर्म क्षयार्थ उद्यापन बारमे चौत्रीसु स्वहस्तेन लिखितं ।

४४. चितामणिपूजा (वृहत्)—विद्याभूषणा सूरि । पत्र सं० ११ । ग्रा० ६२×४३ इंच । भाषा -संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५५१ । आ भण्डार ।

विशेष--पत्र ३, ८, १० नही हैं।

ì

४४४४. चिंतामिंग्एरार्धनाथपूजा (घृहद्)—शुभचन्द्र । पत्र सं० १० । आ० ११३४४ इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ५७४ । अ भण्डार ।

४४४६. प्रति सं- २ । पत्र सं० ५२ । ले० मल स० १६६१ पौप बुदी ११ । वे० सं० ४१७ । व्य

४४४७. चिन्तामिणपार्श्वनाथपूजा ""। पत्र सं० ३ । ग्रा० १०३४५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । वे० काल 🗴 । वे० स० ११८४ । स्त्र भण्डार ।

> ४४४८. प्रति स०२। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० २६। मा भण्डार। विशेष—निम्न पूजार्थे और हैं। चिन्तामिश्यास्तीत्र, किन्कुण्डस्तीत्र, किलकुण्डपूजा एवं पद्मावतीपूजा। ४४४६. प्रति स०३। पत्र सं०१४। ले० काल ×। वे० स०६६। च भण्डार।

४४६०. चिन्तामिषापार्श्वनाथपूजा । पत्र सं०११। मा० ११×४ ई इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८३ । च भण्डार ।

भण्डार।

४४६१. चिन्तामिण्पार्श्वनाथपूजा"" । पत्र मंत्रा मात् ११६८७३ इ.म. भाषा-प्रमात । विषय-पूजा। र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० म० २२१८ । श्र भण्यार ।

विशेष--यज्ञविधि एउ ग्तोत्र भी दिया है।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८४०) ग्रीर है।

४४६२ चौदहवृज्ञा """। पर मं० १६ । मा० १०×७ इन । भाषा-माकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले॰ काल × । पूर्गा | वे॰ मं॰ २६६ । ज भण्डार |

विशेष-- ऋषभनाय में लेकर श्रनतना र तक पूजायें ? ।

४५६३. चौसठऋद्विपूजा-स्वरूपचन्द्र। पर ग० ३५। या० १११८५ इ.न । भाषा-निर्दा। विषय-६४ प्रकार की ऋदि धारण करने वाले मुनियोंनी पूजा। रत नाम मंत्र १६१० मावन मूरी ७ १ ने० कान मत १९५१ । पूर्गा । वे० म० ६६४ । छा भण्डार ।

विशेष-इमका दूसरा नाम वृहद्युवितिल पूजा भी है।

इसी भण्टार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ७१६, ७१७, ७१८, ७३७) घीर है।

१४६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ने० गान सं० १६१०। ने० म० ६७०। क भण्डार।

प्रथ्रद्र प्रति सं० ३ । पत्र मं० ३२ । ले० काल मं० १६५२ । वे० म० २६ । रा भण्डार ।

४४६६. प्रति सं० ४ । पत्र मं० २६ । ने० गान मं० १६२६ पागुमा मुदी १२ । ये० म० ७६ । घ

४४६७ प्रति सं० ४। पत्र स॰ २४। नै० कान ×। वे० म० १६३। ह भण्डार। विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १६४) ग्रीर है।

४४६८. प्रति सं० ६। पत्र स० ८। ले० वाल 🗴 । ने० में ७३४। च नण्डार । ४४६६. प्रति सं० ७। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १६२२। वे० म० २१६। छ भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे॰ सं॰ १४३, २१६/३) भीर है।

विशेय-इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे॰ सं॰ २६२/२ २६५) प्रोर है।

४४७१ प्रति सं ० ६ । पत्र सं ० ४६ । ले० काल 🗙 । वे० स० ५३४ । व्य भण्डार ।

४४७०. प्रति सं० = । पत्र सं० ४५ । ते० काल 🗴 । ते० मं० २०६ । ज भण्डार ।

४४. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४३ । ले॰ काल 🗶 । वे० सं० १६१३ । ट भण्डार ।

४४७३. छोतिनिवारणविधि"""। पत्र त०३। म्रा० ११×४ इ च । भाषा-हिन्दी। वि

विधान । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० १८७८ । स्त्र भण्डार ।

४४७४. जम्बूद्वीपपूजा—पांडे जिनदास । पत्र स०१६। ग्रा०१०३४६ इच। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल १७वी शताब्दी। ले० काल सं० १८२२ मंगुसिर बुदी १२। पूर्ण। वे० स० १८३। क भण्डार।

विशेष-प्रति ग्रकृतिम जिनालय तथा भून, भविष्यत्, वर्तमान जिनपूजा सिहत है। पं॰ चोखचन्द ने माहचन्द से प्रतिलिपि करवाई थी।

प्टर्थ. प्रति सं०२।पत्र सं०२८।ले० काल सं०१८८४ ज्येष्ठ सुदी १४।वे० सं०६८। च भण्डार।

विशेष-भवानीचन्द भावासा भिलाय वाले ने प्रतिर्लिप की थी।

४४७६. जम्बूस्वामीपूजो "। पत्र सं ० १०। म्रा० ८४६ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-ग्रन्तिम केवली जम्बूस्वामी की पूजा। र० काल 🗙 । ले० काल सं ० १९४८। पूर्ण। वे० स० ६०१। स्र भण्डार।

४४७७. जयमाल-रायचन्द् । पेत्र स० १। ग्रा० ८३४४ इ'च। मॉर्था-हिन्दी। विषय-पूजा। र० वाल सं० १८५५ फाग्रुण सुदी १। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं० २१३२। स्त्र भण्डार।

विशेष-भोजराज जी ने किशनगढ में प्रतिलिपि की थी।

४४७८. जलहरतेलाविधान ः । पत्र सं०४। ग्रां०ं ११ $\frac{1}{2}$ \times ७ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा—हिन्दी । विषय—विधान । र० काल \times । ते० काल \times । वे० सं० ३२३। ज भण्डार ।

विशेष-जलहर तेले (व्रत) की विधि है। इसका दूसरा नाम भरतेला व्रत भी है।

४५७६. प्रति सं०२। पत्र सं०३। ले० काल सं०१६२८। वे० सं०३०२। ख भण्डार।

४४८०. जलयात्रापूजाविधान । पत्र सं०२। ग्रा०११४६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्णी वे० सं०२६३। ज भण्डार।

विशेष-भगवान के ग्रिभिषेक के लिए जल लाने का विधान !

. ४४=१. जलयात्राविधान—महा पं० श्राशाधर । पत्र स० ४ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—जन्माभिषेक के लिए जल लाने का विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्यो । वे० सं० १०६६ । श्र भण्डार ।

४४८२. जलयात्रा (तीर्थोदकाद्।निविधान) ""। पत्र सं०२। ग्रा० ११४५ ई च। मापा-सस्कृत। विषय-विधान। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

विशेष-जलयात्रा के यन्त्र भी दिये हैं।

४४८३. जितगुणसंपत्तिपूजा—भ० स्त्रचन्द्र । पत्र सं० ६ । ग्रा० ११३×५ इंच । भाषा स्स्वृत । विषय-पूजा । र० काल × । वे० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२ । ड भण्डार ।

४४८४ प्रति स०२। पत्र सं०६। ले० काल सं०१६८३। वे० सं०१७१। व्य मण्डार।

विशेष-शीपति जोशी ने प्रतिलिपि नी थी।

४४८४. जिनगुगासंपत्तिपूजा''''' । पत्र सं०११। ग्रा०१२४५ इंच। भाषा-सस्कृत । विषय - पूजा। र०कान ×। ले० कान ×। ग्रपूर्ण। वे० स०२१६७। ग्राभण्डार।

विशेय--- ५वा पत्र नही है।

-४८. प्रति सं०२। पत्र स०४। ले० काल स०१६२१। वे स० २६३। स्व भण्डार।

४४८७. जिनगुर्णामंपित्तपूजा "। पत्र सं० ४। ग्रा० ७६४६३ इंघ। भाषा-संस्कृत प्राकृत। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वै० स० ५१४। स्त्र भण्डार।

४४८८ जिनपुरन्दरत्रतपूजा "। पत्र स० १४। मा० १२×५ देश्य । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०६ । ड भण्डार ।

४४८६. जिन्रूजाफतप्राप्तिकथा '। पत्र सं० ४ । आ० १०३×४३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८३ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-पूजा के साथ २ कथा भी है।

४४६०. जिनयज्ञकलप (प्रतिष्ठासार)—महा पं० श्राशाधर। पत्र स० १०२। ग्रा० १०३४४ इंच। भाषा—सस्कृत। विषय-पूर्ति, वेदी प्रतिष्ठादि विधानो की विधि। र० काल स० १२६५ ग्रासोज बुदी ⊏। ले० काल स० १४६५ माघ बुदी ⊏ (शक सं० १३६०) पूर्ण। वे० सं० २८। श्रा भण्डार।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

संवत् १४६५ शाके १३६० वर्षे माघ वदि म गुरुवासरे (प्रपूर्ण)

४४६१. प्रति स० २ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १६३३ । वै० सं० ४५६ । ग्र्य भण्डार ।

विशेप---प्रशस्ति- संवत् १६३३ वर्षे।

४४६२ प्रति स०३। पत्र सं०१४। ले० काल सं० १८८४ भादवा बुदी १३। वे० स०२७। ध भण्डार।

विशेष —मथुरा मे श्रीरङ्गजेब के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई।

लेखक प्रशस्ति---

श्रीमूलसघेषु मरस्वतीयो गच्छे वलात्कारणे प्रसिद्धे । सिहासनी श्रीमलयस्य खेटे सुदक्षिणाशा विषये विलीने । श्रीकुंदकुंदाखिलयोगनाय पट्टानुगानेकमुनीन्द्रवर्गाः ।
दुर्वादिवागुन्मयनैकसञ्ज विद्यामुनंदीश्वरसूरिमुख्यः ॥
तदन्वये योऽमरकोत्तिनाम्ना भट्टारको वादिगजेभशत्रुः ।
तस्यानुशिष्यशुभवन्द्रसूरि श्रीमालके नर्मदयोपगाया ॥
पुर्या शुभाया पट्टपशत्रुवत्या सुवर्णकारााप्रत नीचकार ॥

४५६३. प्रति सं० ४। पत्र सं० १२४। ले० काल सं० १६५६ भादवा सुदी १२। वे० स० २२३। भाभण्डार।

विशेष—वंगाल मे अकबरां नगर मे राजा सवाई मानसिंह के शासनकाल मे आचार्य कुन्दकुन्द के बला-त्कारगण सरस्वतीगच्छ मे भट्टारक पदानंदि के शिष्य भ० शुभचन्द्र भ० जिनचन्द्र भ० चन्द्रकीर्ति की आम्नाय मे खंडेल-बाल बंशोत्पन्न पाटनीगोत्र वाले साह श्री पट्टिराज, वलू, फरना, कपूरा, नाषू आदि मे से कपूरा ने षोडशकारण व्रतोद्या-पन मे पं० श्री जयवंत को यह प्रति भेंट की थी।

४४६४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ११६। ले॰ काल ×। वे॰ सं० ४२। न भण्डार। विशेष—प्रति प्राचीन है।

नंद्यात् खडिल्लवशोत्यः केल्हणोन्यासवित्तरः । लेखितोयेन पाठार्थमस्य प्रणमं पुस्तकं ॥२०॥

, ४४६४. प्रति स० ६। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १६६२ भादवा बुदी २। वे० सं० ४२५। व्य भण्डार।

विशेष — सवत् १६६२ वर्षे भाद्रपद विद २ भीमे अद्योह राजपुरनगरवास्तव्यं ग्राम्य सरनागरज्ञाती पंचीली त्यात्राभाट्टसुत नरसिंहेन लिखितं।

ङ भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०७) च भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (वे० सं० १२०, १०५) तथा मा भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०७) और है।

४४६६. जिनयज्ञविधान " "। पत्र सं० १। ग्रा० १०×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७८३ । ट भण्डार ।

४४६७. जिनस्तपन (श्रिभिषेक पाठ) """। पत्र सं०१४। आ० ६३×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल सं०१ दश्र वैशाख सुदी ७। पूर्ण। वे० सं०१७७८। ट भण्डार।

४४६८. जिनसंहिता " "। पत्र सं॰ ४६। म्रा० १३४८३ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा प्रति-ष्ठादि एवं म्राचार सम्बन्धी विधान । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० सं॰ ७७ । छ भण्डार । ४४६६. जिनसंहिता—भेद्रवाहु। पत्र सं० १३०। ग्रा० ११×५३ इंच। भाषा-संम्कृत। विषय-पूजा प्रतिष्ठादि एवं ग्राचार सम्बन्धी विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्णी वि० सं० १६६। क भण्डार।

४६००. जिनसंहिता—भ० एकसंधि। पत्र संग्रह । आ० १३×१ इख्र । नापा-सस्तृत । विषय-पूजा प्रतिष्ठादि एव आचार सम्बन्धी विधान। र० काल × । ले० काल संग्रह ३७ चैत्र बुदी ११ । पूर्ण । वे० संग्रह । क भण्डार ।

विशेप- ५७, ५८, ८१, ८२ तथा ५३ पत्र खाली हैं।

४६०१. प्रति सं० २ | पत्र स० ६५ | ते० काल सं० १६५३ | वे० स० १६६ | क भण्डार | ४६०२. प्रति सं० ३ | पत्र स० १११ | ते० काल × | वे० स० ५६ | ख भण्डार |

४६०३ जिससंहिता"" । पत्र सं० १०६ । ग्रा० १२×६ इ च । भाषा-सस्वृत । विषय-पूजा प्रति-ष्ठादि एव प्राचार सम्बन्धी विधान । र० काल × । ले० काल सं० १८५६ भादवा बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १९५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्य का दूसरा नाम पूजासार भी है। यह एक सग्रह ग्रन्थ है जिसका विषय वीरमेन, जिनमेन पूज्यपाद तथा ग्रुगभद्रादि ग्राचार्यों के ग्रन्थों से सग्रह किया गया है। ६६ पृष्ठों के ग्रितिरिक्त १० पत्रों में ग्रन्थ से सम्बनिधत ४३ यन्त्र दे रखे हैं।

४६०४, जिनसहस्रनामपूजा-धर्मभूपरा। पत्र सं० १२६। ग्रा० १०×४३ इख्र। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९०६ वैशाख बुदी १। पूर्ण। वे० सं० ४३८। श्र भण्डार।

विशेष—लिखमणलाल से प० सुखलालजी के पठनार्थ हीरालालजी रैणवाल तथा पचेवर वालो ने किला खण्डार मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

ग्रन्तिम प्रशस्ति— या पुस्तक लिखाई किला खण्डारि के कीटडिराज्ये श्रीमानसिंहजी तत् कंवर फतेंसिंहजी बुलाया रैंग-वाललूं वैदगी निमित्त श्रीसहस्रनाम को मंडलजी मंडायो उत्सव करायो । श्री ऋपमदेवजी का मन्दिर मे माल लियो दरोगा चत्रभुजजी वासी वगरू का गोत पाटगी रु० १५) साहजी गरोशलालजी साह ज्याकी सहाय सूं हुवी ।

४६०४. प्रति सं० २ | पत्र सं० ५७ | ले० काल × | वे० सं० १६४ | क भण्डार |

४६०६. जिनसहस्रनामपूजा—स्वरूपचन्द्विलाला । पत्र सं० ६४ । ग्रा० ११×५३ इञ्च । भाषा— हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १६१६ ग्रासोज सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८७१३ । क भण्डार ।

४६०७. जिनसहस्रनामपूजा—चैनसुख लुहाडिया। पत्र सं० २६। ग्रा० १२×५ इञ्च। भापा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६३६ माह सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ७७२। क भण्डार।

쥓

£ 4

४६०८. जिनसहस्रनामर्जा · ··· । पत्र सं०१८ । आ०१३×८ इ'च । भाषा-हिन्दी) विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० म०७२४ । स्र भण्डार ।

४६०६ प्रति सं०२। पत्र सं०२३। ले० काल ×। वे० सं० ७२४। च भण्डार।

४६१०. जिनाभिषे हिनाएँ य "। पत्र सं • १०। आ० १२×६ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-अभिषेक विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २११ । इस भण्डार ।

विशेष-विद्वज्जनवीधक के प्रथमकाण्ड मे सातवें उल्लास की हिन्दी भाषा है।

४६११. जैनप्रतिष्ठापाठ : " पत्र सं० २ से ३५ । ग्रा० ११३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय - विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ११६ । च भण्डार ।

१६१२. जेन।ववाहपद्धति । पत्र सं० ३४। ग्रा० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-विवाह विधि । र० काल × । पूर्ण । वे॰ सं० २१५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्राचार्य जिनसेन स्वामी के मतानुसार संग्रह किया गया है । प्रति हिन्दो टीका सहित है। ४६१३ प्रति सं०२। पत्र स०२७। ले० काल ×। वै० स०१७। ज भण्डार।

४६१४ ज्ञानपंचिविशतिकान्ननोद्यापन—भ० सुरेन्द्रकीित्त । पत्र सं०१६। मा०१०३८५ इंच। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं०१८४७ चैत्र बुदी ६। ले० काल सं०१८६३ ग्रापाट बुदी ५। पूर्ण। वै० सं०१२२। च भण्डार।

विशेष—जयपुर मे चन्द्रप्रभु चैत्यालय मे रचना की गई थी। सोनजी पाड्या ने प्रतिलिपि की थी। ४६२४. ज्येष्ठिजिनवरपूजा " ""। पत्र सं० ७। ग्रा० ११×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५०४। स्त्र भण्डार।

विशेष- इसी भण्डार मे एक प्रति (वै॰ सं० ७२३) ग्रीर है।

४६१६ ब्येष्टिजिनवरपूजा''''' । पत्र सं० १२ । ग्रा० ११३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २१६ । क भण्डार ।

४६१७. प्रति सं०२। पत्र सं०६। ले० काल सं०१६२१। वे० सं०२६३। ख भण्डार। ४६१८. ज्येष्ठजिनवरत्रतपूजा । पत्र स०१। म्रा०११ई×५६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-

पूजा। र० काल 🗙 । ले० काल सं० १८६० श्रापाढ सुदी ४ | पूर्या | वे० सं० २२१२ | द्या भण्डार |

विशेष—विद्वान खुशाल ने जोबराज के वनवाये हुए पाटोदी के मन्दिर मे प्रतिलिपि की । खरडो सुरेन्द्र-कीत्तिजी को रच्यो । ४६१६. एमोकारपेतीसपूजा—ग्रज्ञयराम । पत्र स०३। ग्रा० १२४५ डम्र । भाषा-सम्बत । विषय-एमोकार मन्त्र पूजा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ४६६ । ग्रा मण्डार ।

विशेष---महाराजा जयसिंह के शासनकाल मे ग्रन्थ रचना की गई थी।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५७८) श्रीर है।

४६२०. प्रति सं०२। पत्र सं०२। ले॰ काल सं० १७६५ प्र॰ ग्रासोज ग्रुदी १। वे॰ न॰ ३६४। व मण्डार।

४६२१ ग्रामोकारपेंतीसीव्रतविधान—श्वा० श्री कनककीर्त्ति। पत्र स० ४। ग्रा० १०४४ इत्र। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा एवं विधान। र० काल ४। ले० वाल सं०१८२४ । पूर्ण। वे० सं० २३६। इ भण्डार।

विशेप-- हूँ गरंसी कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

४६२२. प्रति सं० २ | पत्र सं० २ | ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० सं० १७४ | व्य भण्डार ।

४६२ दे. तंत्त्वार्थसूत्रदंशाध्यायपूजा—द्याचन्द्र। पत्र सं०१। ग्रा०११×४ इंच। म पा-सस्वृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६०। क भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति वे० सं० २६१ । ग्रीर है ।

४६२४. तत्त्वार्थसूत्रदशाध्यायपूजा"" '। पत्र सं०२। ग्रा०११६४४ । भाषा-सःकृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण । वे० सं०२६२। क भण्डार।

विशेप-केवल १०वें ग्रध्याय की पूजा है।

४६२. तीनचौंबीसीपूंजा"" । पत्र सं० ३८ । ग्रा० १२ × १६ च । भाषा-संकृत । विषय-भूत, भविष्यत् तथा वर्त्तमान काल के चौबीसो तीर्थङ्करो की पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७४। क भण्डार।

४६२६. तीनचौबीसीसमुचयपूजा"""। पत्र सं० ४। ग्रा० ११३×५ ३ च । भाषा-स्त्रृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ले॰ काल ×। पूर्ण । वे॰ सं० १८०६। ट भण्डार।

४६२७. तीनचौबीसीपूजा—नेमीचन्द पाटनी । पत्र सं० ६७ । ग्रा० ११५ ×५ इंच । भाषा- हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १६६४ कार्तिक बुदी १४ । ले० काल सं० १६२ माद्राद सुदी ७ । पूर्ण । ३० सं० २७५ । क भण्डार ।

४६२८. तीनचौबीसीपूजा "। पत्र सं० ५७। ग्रा० ११४५ इंच भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ए० काल सं० १८८२। ले० काल सं० १८८२। पूर्ण । वे० स० २७३। क भण्टार।

४६२६. तीनचौबीसीसमुद्धयपूजा "। पत्र सं० २०। ग्रा० ११२४४ दे वं । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल 🗴 । लें वे वाल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० १२५ । छ भण्डार।

४६३०. तीनलोकपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० ४१० । ग्रा॰ १२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १८२८ । ले० काल स० १९७३ । पूर्ण । वे० सं० २७७ । ड भण्डार ।

विशेष--ग्रन्थ लिखाने मे ३७॥-) लगे थे।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ५७६, ५७७) ग्रीर हैं।

४६३१. प्रति सं० २। पत्र सं० ३५०। ले० काल ×। वे० स० २४१। छ भण्डार।

४६३२. तीनलोकपूजा—नेसीचन्द्। पत्र सं० ८५१। म्रा० १३×८ हुः च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९९३ ज्येष्ठ सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० २२०३। स्र भण्डार।

विशेष-ईमका नाम त्रिलोकसार पूजा एवं त्रिलोकपूजा भी है।

४६३३. प्रति सं०२। पत्र सं० १०८८। ले० काल ४। वे० सं० २७०। क भण्डार।

४६३४ प्रति सं २ । पत्र सं ० ६८७ । ले० काल सं ० १६६३ ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० सं० २२६ । छ

विशेप—दो वेष्टनो मे है।

४६३४. तीसचौबीसीनाम """। पत्र सं०६। ग्रा०१०४४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ४। ले० काल ४। वे० सं० ५७८। च भण्डार।

४६३६. तीसचौदीसीपूजा- वृन्दावत । पत्र मं० ११६ । ग्रा० १०० ६७३ इंच । मापा-हिन्दी । विषय-पूजा । रं० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८० । च भण्डार ।

विशेष--प्रतिलिपि वनारस मे गङ्गातट पर हुई थी।

४६३७. प्रति सं०२। पत्र सं०१२२। ले० काल स०१६०१ मापाढ सुदी २। वे० मं० ५७। मा

४६३८. तीसचौबोसीसमुखयपूजा" ""। पत्र सं० ६। ग्रा० ८४६१ २ च। भाषा-हिन्दी। विषयपूजा। र० काल स० १८०८। ले० काल 🗙 । पूर्ण। वे० सं० २७८ । द्वः भण्डार।

विशेष — श्रढाईद्वीप श्रन्तर्गत ५ भरत ५ ऐरावत १० क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी पूजा है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७६) श्रीर है।

४६३६. तेरहंद्वीपपूजा—शुभंचन्द्र। पत्र स० १५४। ग्रा० १०३×१ इंच। भंपा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६२१ सॉवन सुदी १५। पूर्ण। वै० सं० ७३। ख भण्डार। ४६४०. तेरहृद्वीपपूजा—भ० विश्वभूपण । पत्र सं० १०२ । स्रा० ११४५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-जैन मान्यतानुसार १३ द्वीपो की पूजा । र० काल ४ । ले० काल सं० १८५७ भादवा सुदी २ । वे० सं० १२७ । भा भण्डार ।

विशेष-विजेरामजी पाड्या ने बलदेव बाह्मण से लिखवाई थी।

४६४१. तेरहद्वीपपूजा " । पत्र सं०२४। ग्रा० ११ दे×६ दे इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-जैन मान्यतानुसार १३ द्वीपो की पूजा। र० काल ×। ले० काल म०१८६१। पूर्ण। वै० सं०४३। ज भण्डार।

विशेष - इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे॰ सं॰ ५०) श्रीर है !

४६४२. तेरहद्वीपपूजा "" । पत्र सं०२०८ । ग्रा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६२४ । पूर्ण । वे० सं० ५३५ । स्त्र भण्डार ।

४६४३. तेरहद्वीपपूजा--लालजीत । पत्र स० २३२ । ग्रा० १२६४ द च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १८७७ कार्त्तिक सुदी १२ । ले० काल सं० १९६२ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वे॰ सं० २७७ । क भण्डार ।

विशेष-गोविन्दराम ने प्रतिलिपि की थी।

४६४४. तेरहद्वीपपूजा। पत्र सं० १७६। ग्रा० ११×७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५८१ । च भण्डार ।

४६४४. नेरहद्वीपपूजा " । पत्र सं० २६४ । आ० ११×७३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र॰ काल × । ले॰ काल स॰ १६४६ कार्त्तिक सुदी ४ । पूर्ण । वै॰ स॰ ३४३ । ज भण्डार ।

४६४६. तेरहद्वीपपूजाविधान " " । पत्र सं० ८६। ग्रा० ११४५२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० १०६१ । श्र भण्डार ।

४६४७ त्रिकालचौबीसीपूज।—त्रिभुवनचन्द्र। पत्र स०१३। आ०११ई×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-तीनो काल मे होने वाले तीर्थङ्करो की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५७५। स्त्र भण्डार।

विशेष-शिवलाल ने नेवटा मे प्रतिलिपि की थी।

४६४८. त्रिकालचौबीसीपूजाः ""। पत्र स० ६ । ग्रा० १०×६६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० का। ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २७८। क भण्डार।

४६४६. प्रति स०२। पत्र सं०१७। ले० काल सं०१७०४ पीप बुदी ६। वे० सं० २७६। क

विशेष--बसवा मे म्राचार्य पूर्णचन्द्र ने म्रपने चार शिज्यों के साथ मे प्रतिलिपि की थी।

प्रदेश प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १६६१ भादवा सुदी ३। वे० सं० २२२। छ भण्डार।

विशेष--श्रीमती चतुरमती ग्रर्जिका की पुस्तक है।

४६४१. प्रति स०४। पत्र सं०१३। ले० काल सं० १७४७ फाल्गुन बुदी १३। वे० सं०४११। व्य

विशेष—विद्याविनोद ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १७५) ग्रीर है।

४६४२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ४। वे० सं० २१६२। ट भण्डार।

४६४३. त्रिकालपूजा """ । पत्र स० १६ । आ० ११×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५३० । अ भण्डार ।

विशेष-भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान के त्रेसठ शलाका पुरुषो की पूजा है ।

४६४४. त्रिलोकचेत्रपूजा ""। पत्र सं० ५१। ग्रा० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८४२। ले० काल सं० १८८६ चैत्र सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ५८२। च भण्डार।

४६४४. त्रिलोकस्थिजिनालयपूजा"" । पत्र सं० ६ । म्रा० ११×७३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२८ । ज भण्डार ।

४६४६ त्रिलोकसारपूजा — श्रभयतिन्द्। पत्र सं० ३६। आ० १३३४७ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल स० १८७८। पूर्ण। वे० सं० ५४४। श्र भण्डार।

विशेष-१६वें पत्र से नवीन पत्र जोडे गये हैं।

४६४७. त्रिलोकसारपूजा " ""। पत्र सं० २६० । ग्रा० ११४५ इंच | माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल सं० १९३० भादवा सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ४८६ । स्र भण्डार ।

४६४८. त्रेपनिक्रियापूजा'''''। पत्र सं०६। मा० १२४५ई इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल स० १८२३। पूर्ण। वे० सं० ५१६। स्त्र भण्डार।

४६४६. त्रेपनिकयात्रतपूजा''''' "''। पत्र सं० ५ । ग्रा० ११३४५ हु इख । भाषा-संस्कृत । विषय-

विशेष-- आचार्य पूर्णचन्द्र ने सागानेर मे प्रतिलिपि की थी।

४६६०. त्रैलोक्यसारपूजा-सुमितसागर। पत्र सं०१७२। ग्रा०११३४५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल सं०१८२६ भादवा बुदी ४। पूर्ण। वे० सं०१३२। छ भण्डार।

४६६१. त्रैलोक्यसारमहापूजा ""। पत्र सं० १४५ । ग्रा० १०४५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वे० स० ७६ । ख भण्डार ।

४६६२. दशलत्त्रणजयमाल--पं० रइधू। म्रा० १०×५ इंच । भाषा-मपभंश । विषय-धर्म के दश भेदो की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २६८। स्त्र भण्डार।

विशेप-सस्कृत मे पर्यायान्तर दिया हुम्रा है।

४६६३. प्रति सं०२। पत्र स०६। ले० काल सं०१७६४। वे० सं०३०१। स्त्र भण्डार।
विशेष — संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं०३०२) ग्रीर है।
४६६४ प्रति सं०३। पत्र सं०११। ले० काल ×। वे० सं०२६७। क मण्डार।
विशेष — संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं०२६६) ग्रीर है।
४६६४. प्रति सं०४। पत्र सं०७। ले० काल स०१८०१। वे० सं० ६३। स्व भण्टार।

विशेष--जोशी खुशालीराम नै टोक मे प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ स० ५२, ५३/१) भ्रीर है।

४६६६. प्रति सं ४ । पत्र सं ० ११ । ले० काल × । वे० सं ० २१४ । इक मण्डार । विशेष--संस्कृत में सकेत दिथे हुये हैं । इसी भण्डार में एक प्रपूर्ण प्रति (वे० सं० २१२) ग्रीर है ।

४६६७. प्रति सं०६। पत्र सं०६। ले० काल 🗙 । वे० सं०१२६। च मण्डार।

विशेष--इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १५०) ग्रीर है।

४६६८ प्रतिसं०७।पत्र स०६।ले०काल सं०१७≒२ फाग्रुस सुदी १२।वे० सं०१२६।छ

भण्डार् ।

; ,

४६६८. प्रति सं० द्वा पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८६८। वे० सं० ७३। म्न भण्डार। विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १६८, २०२) ग्रीर है। ४६७०. प्रति सं० ६। पत्र स० ४। ले० काल सं० १७४६। वे० सं० १७०। व्य भण्डार। विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० २६८, २८५) ग्रीर है। ४६७१. प्रति सं० १०। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० स० १७८६। ट भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे॰ सं॰ १७८७, १७८८, १७६४) ग्रीर हैं। ४६७२. दशलन्याजयमाल-पं॰ भाव शर्मा। पत्र सं॰ ८। ग्रीप १२४५३ ई व । भाषा-प्राकृत।

विषय-पूजा। र० काल 🗴 । ले० काल स० १ ५११ भाववा सुदी ११। ग्रपूर्ण । वे० सं० २६८ । स्त्र भण्डार।

विशेष-सस्कृत मे टीका दी हुई है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४८१) और है।

 $y_i^{-\frac{3}{2}}$

2 4

४६७३. प्रति सं०२। पत्र सं०५। ले० काल सं०१७३४ पौष बुदी१२। वे० सं०३०२। क

विशेष—ग्रमरावती जिले में समरपुर नामक नगर में श्राचार्य पूर्णचन्द्र के शिष्य गिरधर के पुत्र लक्ष्मरण ने स्वयं के पढ़ने के लिए प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०१) ग्रीर है!

४६७४. प्रति सं०३ । पत्र सं०१०। ले० काल सं०१६१२। वे० सं०१८१। ख भण्डार।

विशेष--जयपुर के जोवनेर के मन्दिर मे प्रतिलिपि की थी।

४६७४. प्रति सं० ४। पत्र सं० १२। ले० काल सं० १८६२ भादना मुदी दा ने• सं० १४१। च भण्डार।

विशेष--सस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं।

४६७६. प्रति सं > ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल ४ । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

४६७७ प्रति सं ६। पत्र स० ५। ले० काल ×। वे० सं० २०५। व्य मण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ४५१) ग्रीर है।

४६७८. प्रति सं० ७। पत्र स० १८। ले० काल ×। वे० सं० १७८४। ट भण्डार।

विशेष - इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वै० स० १७८६, १७६०, १७६२, १७६४) ग्रीर हैं।

४६७६. दशलस्याजयमाल " - । पत्र सं० = । ग्रा० १०×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूना । र० काल × । ले० काल स० १७=४ फाग्रुस सुदी ४ । पूर्सा । वे० स० २६३ । इक भण्डार ।

४६८०. प्रति सं०२ | पत्र स०८ । ले० काल × । वे० सं०२०६ | क्क अण्डार |

४६ म १ प्रति सं० ३। पत्र स० १५। ले० काल ×। वे० सं० ७२६। अ भण्डार।

४६=२. प्रति सं०४। पत्र स०४। ले० काल ४। प्रपूर्ण । वे० सं० २६०। क भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ सं॰ २६७, २६८) मीर है।

४६८३ प्रति सं०४। पत्र सं०६। ले० काल स०१८६६ भाववा सुदी ३। वे० सं०१५३। च

विशेष—महात्मा चौथमल नेवटा वाले ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत में यर्पायवाची शब्द दिये हुये हैं । इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ सं॰ १५२, १५४) ग्रौर है।

४६८४. दशलक्रणजयमाल ""। पत्र सं० ४। म्रा० ११ है 🗓 ४५ है इ च । भाषा-प्राकृत, संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल 🗴 । ते० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० २११४ । म्र भण्डार ।

```
४८८ ]

( पृजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य

४६८४. दशलत्त् ग्राज्यमाल """ । पत्र मं० ६ । ग्रा० १०३४४३ इ.च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा।

र० काल ४ । ले० काल सं० १७३६ ग्रासोज बुदी ७ । पूर्ण । वे० मं० ८४ । स्त भण्डार ।

विशेष—नागौर मे प्रतिलिषि हुई थी ।

४६८६. दशलत्त् ग्राज्यमाल """ । पत्र मं० ७ । ग्रा० ११४४ इ.च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ७४४ । च भण्डार ।
```

र काल X । ल काल X । पूर्ण । व ० स ० ७४४ । च भण्डार ।
४६८७. दशलच्रापूजा—श्रभ्रदेव । पत्र गं ० ६ । ग्रा ० १२×५३ ई च । भाषा-मं मृत । विषयपूजा । र काल X । ले ० काल X । पूर्ण । वे० सं० १०८२ । ग्रा भण्डार ।

४६८८ दशलक्त्रापूजा—श्रभयनन्दि । पत्र स०१४ । द्या०१२४६ इ'च । भाषा-मंस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० २६६ । स भण्टार । ४६८६ दशलक्त्रापूजा''' ''''। पत्र सं०२ । द्या० ११४५३ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।

र० काल 🔀 । ले० काल 🔀 । पूर्रा । वे० सं० ६६७ । ग्र्य भण्डार । विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १२०४) ग्रीर है ।

४६६०. प्रति स० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १७४७ फाग्रुण बुदी ४ । वे० न० ३०३ । ड भण्डार ।

> इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं० २६८) श्रीर है। ४६६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल 🗶 । वे॰ सं० १७८५ । ट भण्डार ।

विशेष--सागानेर मे विद्याविनोद ने पं० गिरधर के वाचनार्य प्रतिलिपि की थी।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १७६१) ग्रीर हैं।

४६६२. दशलत्त्रणपूजा"""। पत सं० ३७ । म्रा० ११×४ई इ च । भाषा-सस्धृत । विषय-पूजा । द० काल × । ले० काल सं० १८६३ । पूर्ण । वे० सं० १४४ । च भण्डार ।

विशेप—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४६६३. दशलक्षणपूजा-चानतराय। पत्र सं० १०। म्रा० ५३ ४६३ इ'च । भाषा-हिन्दो । विषय-पूजा। र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० ७२५ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--पत्र सं ७ ७ तक रत्नत्रयपूजा दी हुई है।

४६६४. प्रति सं०२। पत्र सं०४। ले० काल सं०१६३७ चैत्र बुदी २। वे० सं० ३००। क भण्डार।

४६६४. प्रति सं०३। पत्र स०५। ले० काल 🗙 । वे० सं०३००। ज भण्डार।

भण्डार ।

४६६६. दशलत्त्रग्णपूजाः ःः। पत्र सं० ३५ । ग्रा० १२३×७३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६५४ । पूर्ण । वे० सं० ५८८ । च भण्डार ।

विशेप-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं॰ ५८६) श्रीर है।

४६६७. प्रति सं०२। पत्र सं०२५। ले० काल सं०१६३७। वे० सं०३१७। च भण्डार।

४६६८. दशलस्राप्यूजा ""। पत्र सं०३। ग्रा०११४५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । त्रपूर्ण । वे० सं०१६२०। ट मण्डार ।

विशेष—स्थापना द्यानतराय कृत पूजा की है अष्टक तथा जयमाला किसी अन्य कवि की है।

४६६६. दशलक्ष्णमंडलपूजां ""। पत्र सं० ६३। ग्रा० ११३×५३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल स० १८८० चैत्र सुदी १३। ले० काल 🗴। पूर्ण। वे० सं० ३०३। क भण्डार।

४७०० प्रति सं० र । पत्र स० ५२ । ले० काल × । वे० सं० ३०१ । ङ भण्डार ।

४७०१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३४। ले० काल सं० १६३७ भादवा बुदो १०। वै० सं० ३००। हा भण्डार।

४७०२. दशलस्याञ्चतपूजा - सुमतिसागर । पत्र सं० २२ । आ । १०३४५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १८६६ भादवा सुदी ३ । पूर्या । वे० सं० ७६६ । स्त्र भण्डार ।

४७०३. प्रति सं०२। पत्र सं०१४। ले० काल सं०१८२६। वे० स०४६८। आ भण्डार। अ७०४. प्रति सं०३। पत्र सं०१३। ले० काल सं०१८७६ ब्रासीज सुदी ५। वे० सं०१४६। च

विशेष--सदासुख वाकलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

४७०४. दशलच्राव्रतोद्यापन—जिनचन्द्र सूरि। पत्र सं०१६ - २५ । ग्रा० १०३×५ इ'च। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। श्रपूर्ण । वे० सं० २६१। ङ भण्डार।

४७०६. दशलच्यात्रतोद्यापन-सिल्लभूषण । पत्र सं०१४। ग्रा०१२३×६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं०१२६। छ भण्डार।

४७०७ प्रति सं०२। पत्र स॰ १६। ले० काल ×। वे० स० ७५। मा भण्डार।

४७-८. द्शलक्ष्णञ्जतोद्यापनः । पत्र सं० ४३ । आ० १०४५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-

विशेष---मण्डलविधि भी दी हुई है।

्रिजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य

880 7

भण्डार ।

४७०६ दशलस्याविधानपूजा """। पत्र सं० ३०। म्रा० १२३×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्या। वे० सं० २०७। छ भण्डार।

विशेष--इसी भण्डार मे २ प्रतिया इसी वेष्ट्रन मे स्रौर है।

४७१०. देवपूजा—इन्द्रनिन्द् योगीन्द्र । पत्र स० ५ । ग्रा० १० है×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । क्षे० काल × । पूर्ण । वे० स० १६० । च भण्डार ।

४७११. देवपूजाः '। पत्र सं०११। म्रा० ६३×४३ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। पूर्ण। वे० सं०१ ८५३। स्त्र भण्डारं।

४७१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ से १२ । ले० काल 🔀 । अपूर्ण । वे० सं० ४६ । घ मण्डार ।

४७१३ प्रति सं० ३। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ३०५। उर भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३०६) ग्रीर है।

४७१४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३। ले० काल 🗙 । वे० सं० १६१। च भण्डार।

विशेष--इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वै० सं० १६२, १६३) ग्रीर है।

४७१४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८८२ पौष बुदी ८। वे० सं० १३३ । ज भण्डार।

विञेप--इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १६६, १७८) ग्रीर है।

४७१६ प्रति सं०६। पत्र सं०६। ले० काल सं०१६५० ग्रापाढ बुदी १२। वे० सं०२१४२। ट

विशेष-छीतरमल ब्राह्मए। ने प्रतिलिपि की थी।

४४१७. देवपूजाटीका"" "। पत्र स॰ ८। म्रा० १२×५३ इंच। ाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६६ पूर्ण। वे० सं० ११६। छ भण्डार।

४७१८. देवपूजाभाषा-जयचन्द छ।वडा । पत्र स०१७ । आ०१२×५३ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स०१८४३ कार्तिक सुदी द । पूर्ण । वे० सं०५१९ । ऋ भण्डार ।

४७१६. देवसिद्धपूजा"" ""। पत्र सं० १४ । म्रा० १२×५२ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पृजा । र० र० कान × । ले० काल × । पूर्या । वे० सं० १५६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन मे एक प्रति ग्रीर है।

४७२०. द्वाद्शत्रतपूजा—प० श्रश्नदेव । पत्र स० ७ । ग्रा० ११×५ इ च । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८४ । श्र भण्डार ।

४७२१. द्वाटरात्रतोद्यापनपूजा—देवेन्द्रकीित । पत्र सं० १६ । आ० ११×५१ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ूजा । र० काल म० १७७२ माघ सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३३ । स्त्र भण्डार ।

४७२२. प्रति सं०२। पत्र सं०१४। ले० काल ४। वे० सं०३२०। ड भण्डार।

४७२३ प्रति सं०३। पत्र सं०१५। ले० काल ४। वे० सं०११७। छ भण्डार।

४७२४. द्वादशन्नतोद्यापनपूजा-पद्मनित्। पत्र सं० ६। ग्रा० ७३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० ५६३। स्त्र भण्डार ।

४७२४. द्वादशत्रतोद्यापनपूजा—भ० जगतकीर्त्ति । पत्र सं० १। ग्रा० १०३४६ इझ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६ । च भण्डार ।

४७२६. द्वादशञ्जतोद्यापनः ः। पत्र स० ५ । म्रा० ११ है ×५ है इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८०४ । पूर्ण । वे० सं० १३५ । ज भण्डार ।

विशेष-गोर्धनदास ने प्रतिलिपि की थी।

४७२७. द्वादशांगपूजा—डालूराम। पत्र सं०१६। म्रा०११४५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल स०१८७६ ज्येष्ठ मुदी ६। ले० काल सं०१६३० म्राषाढ बुदी ११। पूर्ण। वे० सं०३२४। क

विशेष-पन्नालाल चौधरी ने प्रतिलिपि की थी।

४७२८. द्वादशागपूजा " " । पत्र सं० ८ । आ० ११३×१३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल स० १८८६ माध सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० ५६२ ।

विशेष-इसी वेष्ट्रन मे २ प्रतिया और हैं।

४७२६ द्वादशागरूजा ""।पन स०६। म्रा० १२×७१ इ.च.। भाषा –संस्कृत । विषय –पूजा। र०काल ×। ले०काल ×।पूर्ण। वे०स०३२६। क्रभण्डार।

विशेष--इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३२७) और है।

४५३०. प्रति सं०२। पत्र स०३। ले० काल ४। वे० सं० ४४४। ह्य भण्डार।

४७३१ धर्मचक्रपूजा—यशोनन्दि। पत्र सं०१६। ग्रा० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५१८। ग्रा भण्डार।

४७३२. प्रति सं०२। पत्र स०१६। ले० काल स०१६४२ फाग्रुए। सुदी १०। वे० सं० ५६। स्व

विशेष-पन्नालाल जोवनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी।

४७३३. धर्मचक्रपूजा—साधुरण्मल्ल । पत्र स० ६ । ग्रा० ११×५ दुंच । भाषा मस्कृत । विषय-

विशेष--पं॰ खुशालचन्द ने जोधराज पाटोदी के मन्दिर मे प्रतिलिपि की थी।

४७३४. धर्मचक्रपूजा""। पत्र स० १०। आ० १२×५२ इंच। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५०६। स्त्र भण्डार।

४७३४. ध्वजारोपगा"""। पत्र सं० ११ । ग्रा० ११×५३ इंच । भारा-मंस्कृत । विषय-पूजाविधान) र० कार्ल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२२ । छ भण्डार ।

४७३६. ध्वजारोपग्रामंत्र"""। पत्र सं० ४। ग्रा० ११५×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२३ । श्र भण्डार ।

४७३७ ध्वजारोपण्विधि—पं० स्त्राशाधर । पत्र स० २७ । ग्रा० १०×४३ इ च । भाषा-मंस्कृत । विषय-मन्दिर मे ध्वजा लगाने कृ विधान । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । च भण्डार ।

४७३८. ध्वजारोपग्रविशि " " । पत्र सं०१३। म्रा०१०२४६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विषय-मन्दिर मे ध्वजा लगाने का विधान । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० । स्त्र भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ सं॰ ४३४, ४८८) ग्रीर है।

४७३६. प्रति स०२। पत्र स० ८। ले० काल सं० १६१६। वे० स० ३१८। ज भण्डार।

४७४०. ध्वजारोहराविधि "" " । पत्र स० न । ग्रा० १०३ ४७३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल स० १६२७ । पूर्ण । वे० स० २७३ । ख भण्डार ।

४७४१. प्रति सं०२। पत्र सं०२ - ४। ले० क.ल × । ग्रपूर्या । ने० सं०१ ८२२ । ट भण्डार । ४७४२. नन्दीश्वरजयमाल ""। पत्र सं०२। ग्रा०६ र्४४ इख्र । भाषा-ग्रपन्न श । निषय-पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्या | ने० स०१७७६ । ट भण्डार ।

४७४३. नन्दीश्वरत्तयमाल" " । पत्र सं० ३ । ग्रा० ११×५ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७० । ट भण्डार ।

४७४४. नन्दीश्वरद्वीपपूजा—रत्नर्नान्द । पत्र सं० १० । ग्रा॰ ११३×५३ इख । भाषा-सस्कृतः। विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६० । च भण्डार ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

प्रब्रध्य. प्रति सं् २ | पत्र सं० १० | ले० काल सं० १८६१ प्रापाढ बुदी ३ | वे० मं० १८१ | च

विशेष-पत्र चूहो ने खा रखे हैं।

४७४६. नन्दीश्वरद्वीपपूजा ""। पत्र सं०४। ग्रा॰ ८४६ इञ्च। भाषा - मंस्कृत। विषय-पूजा। र॰ काल 🗴। ले॰ काल 🗴। पूर्ण। वे॰ सं०६००। स्त्र भण्डार।

विशेष--जयमाल प्राकृत मे है। इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७६७) श्रीर है।

४८४७. तन्दीश्वरद्वे पर्जा-मङ्गल । पत्र सं० ३१ । ग्रा० १२४७ ६ च । भाषा-हिन्दी । विषय-

४७४८. नन्दीश्वर्पिक्तियूजा "। पत्र सं० ६। ग्रा० ११४५ ई इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० कृाल् ४। ले० कृाल सं० १७४६ भादवा बुदी ६। पूर्णा। वे० सं० ५२६। स्त्र भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रांत (वे० सं० ५५७) ग्रीर है।

४७४६. प्रति सं०२। पत्र म०१६। ले० काल ४। वे० स० ३६३। क भण्डार।

४७४०. तन्दीश्वरपंक्तिपृज्ञा "। पत्र सं०३। ग्रा०१०३४५ है इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० कृतल ४। ले० काल ४। ग्रपूर्ण। वै० सं०१८८३। स्त्र मण्डार।

४७४१. तन्दीश्वरपूजा"" "। पत्र स० ६ । ग्रा० ११४४ इंच । भाषा-संख्ता । विषय-पूजा । र० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ४०० । व्य भण्डार ।

विशेष — इसी भ्रण्डार मे ३ प्रतिया (वे० मं० ४०६, २१२, २७४ ले० काल सं० १८२४) ग्रीर हैं।
४७४२. न्न्द्रीश्वरपुत्ता " "। पत्र सं० ४। ग्रा० ८३४६ इ च। भाषा प्राकृत। विषय-पूजा। र०
काल ×। ले० काल ×। पूर्णु। वे० स० ११५२। म्रा नण्डार।

४७४३. प्रति सं०्२ । पत्र स०५ । ले० काल ४ । वे० सं० ३४८ । ह भण्डार ।

४७४४. नन्दीश्वरपूजा " पत्र सं०४। श्रा० ६४७ इंच। भाषा-ग्रपश्र श। त्रियय-पूजा। र० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११६। छ भण्डार।

विशेष- लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये है ।

४७४४. नन्दीश्वरपूजा " ' " । पत्र सं० ३१ । आ० ६५×५६ इंच । भाषा-संस्कृत, प्राकृत । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । ज भण्डार ।

४७४६. नृन्दीश्वरपूजा" "। पत्र मं० ३०। ग्रा० १२४८ इ'च। भाषा-हिन्दी। त्रिपय-पूजा। र० काल सं० १९६१। पूर्ण। वे० सं० २४६। ह भण्डार।

४७४७. नन्दीश्वरमिक्तभाषा—पन्नालाल। पत्र स० २६। म्रा० ११६४७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १६२१। ले० काल सं० १६४६। पूर्ण। वे० सं० ३६४। क भण्डार।

४७४८. नन्दीश्वरविधान—जिनेश्वरदास । पत्र स० १११ । ग्रा० १३×६० इंच । भाषा-हिन्दी । विषय -पूजा । र० काल सं० १६६० । ले० काल स० १६६२ । पूर्गा । वे० मं० ३५० । रू भण्डार ।

विशेष--लिखाई एवं कागज मे केवल १५) रु० सर्च हुये थे।

४७४६. नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा—नन्दिषेगा। पत्र सं० २०। ग्रा० १२३४५३ दश्च । भाषा-मंस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० १६२। च भण्डार।

४७६०. तन्दीश्वरत्रतोद्यापनपूजा—श्रनन्तकीर्त्ति । पत्र सं०१३ । आ० ५५४४ इंच । भाषा— संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० कान सं०१८५७ ग्रापाढ बुदी ६ । ग्रपूर्ण । वे० सं०२०१७ । ट भण्डार । विशेष—दूसरा पत्र नहीं है । तक्षकपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४७६१. तन्दीश्वरत्रतोद्यापनपूजा'''''। पत्र स० ५। म्रा० ११३४५ इ'च । मापा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० स० ११७। छ भण्डार ।

४७६२ नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा" "। पत्र सं० ३०। म्रा० द×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८८६ भादवा सुदी ८। पूर्ण। वे० मं० ३५१। इड भण्डार।

विशेष—स्योजीराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी।

४७६३ नन्दीश्वरपूजाविधान — टेकचन्द । पत्र स०४६ । ग्रा० ८०४६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १८८५ सावन सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १७८ । मा भण्डार ।

विशेष-फतेहलाल पापडीवाल ने जयपुर वाले रामलाल पहाडिया से प्रतिलिपि कराई थी।

४७६४ नन्दूसप्तमीत्रतोद्यापनपूजा '। पत्र स०१० ग्रा० ८४४ ईच । भाषा-सस्कृत । विषय-

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३०३) ग्रीर है।

४७६४ नवम्रह्यूजाविधान-सद्भवाहु। पत्र स० ५ आ० १०३×५३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० २२ । ज भण्डार ।

४७६६ प्रति सं २ । पत्र स० ६ । ले० काल 🗶 । वे० स० २३ । ज मण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र पर नवग्रहका विश्व है तथा किस ग्रह की शांति के लिए किस तीर्थं दूर की पूजा करनी चाहिए, यह लिखा है।

४७६७. नवप्रहपूजा'''''। पत्र सं०७। ग्रा० ११३×६३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । त्र्र्ण । वै० सं० ७०६ । त्र्र भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० ४७५, ४६०, ५७३, १२७१, २११२) और है। ४७६⊏. प्रति सं०२। पत्र स०६। ले० काल सं०१६२८ ज्येष्ठ बुदी ३।वे० सं०१२७। छ भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे॰ सं० १२७) स्रीर है।

४७६६. प्रति सं० ३। पत्र स० १२। ले० काल स० १६८८ कार्तिक बुदी ७। वे० सं०। २०३ ज भण्डार।

> विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे॰ सं॰ १८४, १६३, २८०) ग्रीर हैं। ४७७०. प्रति सं॰ ४। पत्र स॰ ६। ले॰ काल ×।वे॰ स॰ २०१४। ट भण्डार।

४७७१. नवप्रहपूजा''''' । पत्र स० २६ । ग्रा० ६×६३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १११६ । ग्रा भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक मित (वे० सं० ७१३) छीर है।

४७७२. प्रति सं०२। पत्र सं०१७। ले० काल ४। वे० स० २२१। छ भण्डार।

४७७३. नित्यक्तत्यवर्षान """। पत्र स० १० । ग्रा० १०३×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-नित्य करने योग्य पूजा पाठ हैं । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ११६६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष---३रा पृष्ठ नही है।

४७७४ नित्यिकिया "" " । पत्र सं० ६८ । ग्रा० ८ ४६ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-नित्य करने योग्य पूजा पाठ । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्या । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष--प्रति सक्षिप्त हिन्दी अर्थ सहित है। ५४, ६७, तथा ६८ से आगे के पत्र नहीं है।

४७. सित्यनियमपूजा ""। पत्र सं० २६। ग्रा० ६×५ इ च। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण । वै० स० ३७५। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ३७०, ३७१) ग्रीर हैं।
४७७६. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० स० ३६७। छं भण्डार।
विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ३६० से ३६३) ग्रीर है।

४७७७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८६३। वे० सं० ५२६। व्य भण्डार।

४७७८. नित्यतियमपूजा'''''। पत्र सं १४ । ग्रा० १०×७ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । र॰ काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ स॰ ७१२ । ग्रा भण्डार ।

विशेप--इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ७०८, १११४) स्रीर हैं।

४७७६. प्रति सं०२। पत्र स० २१। ले० काल स० १६४० कात्तिक बुदी १२। वे० सं० ३६८। ङ

भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३६६) ग्रीर हैं।

४७८० प्रति स० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १६५४ । वे० स० २२२ । छ भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे॰ सं॰ १२१/२, २२२/२) ग्रीर हैं।

४७८१. नित्यनियमपूजा—पं० सदामुख कासलीवाल । पत्र म० ४६ । आ० ६२×६३ इख्र । भाषा— हिन्दी गद्य । विषय-पूजा । र० काल सं० १६२१ माघ सुदी २ । ले० काल स० १६२३ । पूर्ण । वे० सं० ४०१ । स्र

भण्डार ।

४७८२. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल स० १६२८ सावन सुदी १०। ले० सं० ३७७। क

भण्डार ।

विशेय-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३७६) ग्रीर है।

४७⊏३. प्रति स०३। पत्र स०२६। ले० काल स० १६२१ माघ सुदी २। वे० स०३७१। ड

मण्डार ।

विशेष — इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३७०) ग्रौर है।

४७८४. प्रति सं०४। पत्र सं०३४ । ले० काल सं०१६५५ ज्येष्ठ सुदी ७। वे० सं०२१४। छ

भण्डार |

विशेष--पत्र फटे हुये एवं जीर्श हैं।

४७८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । वे० स० १३० । से भण्डार ।

विशेप-इसका पुट्टा वहुत सुन्दर एवं प्रदर्शनी मे रखने योग्य है।

४५८६. प्रति स० ६ । पत्र सं० ४२ । ले॰ काल सं० १६३३ । वे॰ सं० १८६६ । ट मण्ड़ार ।

४७५७. नित्यनियमपूजाभाषा"" । पत्र सं० १६। मा० ५३×७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-

विशेष—ईश्वरलाल चादवाड़ ने प्रतिलिपि की थी।

४८८६ प्रति सं २ । पूत्र सं० २६ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ४७ । स् अण्डार ।

विशेष—जयपुर मे शुक्रवार की सहेली (संगीत सहेली) स० १६५६ में स्थापित हुई थी। उसकी स्थापना के समय का बनाया हुआ भजन है।

४ ४८८६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६६६ भादना बुदी १३ । ने० सं० ४८ । रा

४७६०. प्रति सं० ४। पत्र सं० १७। ले० काल सं० १६६७। वे० सं० २६२। सा भण्डार। ४७६१. प्रति स० ४। पत्र स० १३। ले० काल सं० १६५६। वे० सं० १२१। ज भण्डार। विशेष— पं० मोतीलालजी सेठी ने यित यशोदानन्दजी के मन्दिर में चढाई।

४७६२. तित्यनैमित्तिकपूजापाठसग्रह " । पत्र सं० ५८ । ग्रा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१ । छ भण्डार ।

४७६३. नित्यपूजासंग्रह """। पत्र सं० ६ । ग्रा० १०×४३ इख्र । भाषा-संस्कृत, ग्रपभंश । विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७७ । ट भण्डार ।

४७६४. नित्यपूजासंग्रह " ""। पत्र सं० ४ । म्रा० ६ रे४ १३ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । पूर्ण । वै० सं० १८४ । च भण्डार ।

४७६४. प्रति सं०२। पत्र सं०३१। ले० काल सं०१६१६ वैशाख बुदी ११। वे० स०११७। ज भण्डार।

४७६६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३१। ले० काल ×। वे० सं० १८६८। ट भण्डार।

विशेष—प्रति श्रुतसागरी टीका सहित है। इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १६६५, २०६३) श्रीर हैं।

ं '४७६७. नित्यपूजासंग्रह" "" । पत्र सं० २-३० । ग्रा० ७३४२ई इंच । भाषा-संस्कृत, प्राकृत । वषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १६५६ चैत्र सुदी १ । ग्रपूर्ण । वे० सं० १६२ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वें सं० १८३, १८४) ग्रीर है।

४७६८. नित्यपूजासंग्रह " ""। पत्र सं० ३६ । म्रा० १०३×७ इ च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६५७ । म्रपूर्ण । वे० सं० ७११ । म्रा भण्डार ।

विशेप—पत्र स० २७, २८ तथा ३५ नहीं है कुछ पत्र भीग गये हैं। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३२२) ग्रीर हैं।

४७६६. प्रति सं०२। पत्र सं०२०। ले० काल ×। वे० सं०६०२। च भण्डार।
४८००. प्रति सं०३। पत्र सं०१८। ले० काल ×। वे० सं०१७४। ज भण्डार।
४८०१. प्रति सं०४। पत्र सं०२-३२। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० सं०१६२६। ट भण्डार।
विशेष—नित्य व नैमित्तिक पाठो का भी संग्रह है।

४८०२. नित्यपूजा'''''''। पत्र सं० १५ । म्रा० १२×५ है इ च । भाषा-हिन्दी । त्रिषय-पूजा । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७८ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ३७२, ३७३, ३७४, ३७६) ग्रीर है।

१८८०३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३६६ । ड भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३६४, ३६५) ग्रीर हैं।

१८८४. प्रति स० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ६०३ । च भण्डार ।

१८८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ से १८ । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० सं० १६५८ । ट भण्डार ।

विशेष—ग्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमज्जिनवचन प्रकाशक****** संग्रहीतिवद्वज्जवोधके तृतीयकाण्डे पूजनवर्णनो नाम श्रष्टोल्लास 'समाप्त ।

४८०६. तिर्वाणकत्याणकपूजा """। पत्र स०२। म्रा०१२×५ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०४२८। व्य भण्डार।

४८०७, निर्वाणकांडपूजा "" "। पत्र स० ४। म्रा० ८३४७ इख्र । भाषा-संस्कृत, प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल ४। ले० काल स० १९६८ सावरण सुदी ४। पूर्ण । वे० सं० ११११ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-इसकी प्रतिलिपि कोकलचन्द पसारी ने ईश्वरलाल चादवाड से कराई थी !

४८०८: निर्वाण्चेत्रमंडलपूजा—स्वरूपचन्द्। पत्र स०१६। ग्रा० १२४७ इस्र । भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं०१९१६ कार्तिक बुदी १३। लेव काल ४। पूर्ण । वेव सं०४६। स भण्डार।

४८०६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १६२७ । वे० सं० ३७६ । इक मण्डार । विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० स० ३७७, ३७८) ग्रीर है ।

४८१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १६३५ पौप सुदी ३ । ब्रे० सं० ६०४ । च भण्डार ।

विशेष—जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी । इन्द्रराज बोहरा ने पुस्तक लिखाकर मेघराज चुहा-डिया के मन्दिर मे चढायी । इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ सं० ६०५, ६०७) ग्रीर हैं।

४प११. प्रति सं० ४। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १६४३। वे० स० २११। छ अण्डार। विशेष—मुन्दरलाल पाडे चौधरी चाकसू वाले ने प्रतिलिपि की थी। ४८९२. प्रति स० ४। पत्र सं० ३५। ले० काल ४। वे० स० २५५। ज भण्डार।

, ४८१३. निर्वाणन्तेत्रपूजा "" पत्र सं० ११। ग्रा० ११४७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८७१। ले० काल सं० १९९६। पूर्ण। वे० सं० १३०४। त्र्य भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० ७१०, ५२३, ५२४, १०६८, १०६६) ग्रीर हैं। ४५१४. प्रति सट २। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १५७१ भादवा बुदी ७। वै० सं० २६६। ज

,भण्डार । [गुटका साइज]

४८१४ प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८८४ मंगसिर बुदी २। वे० सं० १८७। स

४८१६. प्रति सं० ४। पेत्र सं० ६। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वै० सं० ६०६। च भण्डार। विशेष-- दूसरा पत्र नहीं है।

४८१७. निर्वाणपूर्ता पत्र सं० १। म्रा० १२×४ इ'च। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। पूर्ण । वे० सं० १७१८ । स्र भण्डार ।

४८१८. निर्वार्गपूजापाठ—सनरंगलाल । पत्रं सं० ३३ । ग्रा० १०६४४६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १८४२ भादवा बुदी २ । ले० काल स० १८८८ चैत्र बुदी ३ । वे० सं० ८२ । मा भण्डारं।

४८१६. नेमिनाथपूजा—सुरेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं०५। ग्रा०६×३३ इख्न । ग्रापा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं०५६५ । ऋ भण्डार ।

४८२०. नेसिनाथपूजा । पत्र सं० १ । ग्रा० ७४५३ दश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० १३१४ । श्र भण्डार ।

४८०१. नेमिनाथपूजाष्टक-शंभूराम । पत्र सं० १ । श्रा० ११६×५३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४२ । श्रा भण्डार । '

४८२ े नेमिनाथपूजाष्टक " । पत्र सं०१। म्रा० ६३४६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं०१२२४। स्त्र मण्डार।

४८२३. पद्मकल्याणकपूजा—सुरेन्द्रकीर्त्त । पत्र स०'१६। ग्रा॰ ११३×५ इंग्र । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ सं॰ ५७६ । क भण्डार ।

४८२४. प्रति सं० २ : पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८७६ । वै० स० १०३७ । स्त्र भण्डार । ४८२४. पद्भकत्याणुकपूजा—शिवजीलाल । पत्र स० १२६ । स्रा० ८४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५५६ । स्र भण्डार ।

४८२६. पद्धकल्याग्यकपूजा—ग्रारुगमिग्। पत्र सं० ३६। ग्रा॰ १२४८ इ.च.। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०,काल स० १९२३। ले॰ काल 🗴। पूर्ण । वे॰ सं॰ २५०। ख भण्डार।

४८२७ पञ्चकत्याग्यकपूजा—गुगाकीर्त्ति। पत्र सं०२२। स्रा०१२४५ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ४। ले०काल १९११। पूर्णी वि०सं० ५४। व्य भण्डार।

४=२=. पश्चकल्याग्यकपूजा —वादीभसिंह। पत्र सं०१ = । म्रा०११ × ५ च । भोपा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० ५ = । म्रा भण्डार।

४८२६. पञ्चकल्याग्यकपूजा—सुयशकीत्ति । पत्र स० ७-२६ । झा० ११३×५ इ व । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८५ । स्त्र भण्डार ।

ि ४८३०. पद्धकल्याग्यकपूजा—सुधासागर। पत्र सं०१६। म्रा०११×४,३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४०६। क भण्डार।

ें ४८३१. पद्धकल्याग्यकपूजा'''''। प्रत्र सं० १६ । ग्रा० १०३×४३ इख्र | भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६००० भादवा सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १००७ । स्त्र भण्डार ।

> ४८३२. प्रति सं०२। पत्र सं०१०। ले० काल स०१८१८। वे० सं०३०१। ख भण्डार्। , ४८३३. प्रति सं०३। पत्र स०७। ले० काल ×। वे० सं०३८४। इ भण्डार। विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं०३८४) श्रीर है।

४८३४ प्रति सं १४। पत्र स०२२। ले० कार्ल स०१६३६ म्रासोज सुदी ६। म्रपूर्स। वे० स०१२४ जभण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १३७, १८०) ग्रीर हैं।
४८३४. प्रति सं० ४ । पत्रृस० १४ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० १६३ । च भण्डार ।
४८३६. प्रति सं० ६ । पत्र ि० १५ । ले० काल स० १८२१ । वे० सं० २३६ । व्य भण्डार ।
विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १५५) ग्रीर हैं।

४८६७. पद्धकल्याणकपूजा—छोटेलाल मित्तल । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा र० काल स० १६१० भादना सुदी १३ । ले० काल स० १६५२ । पूर्ण । वे० स० ७३० । आ भण्डार । विशेष—छोटेलाल बनारस के रहने वाले थे । इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६७१, ६७२) और है ।

४८३८. पद्धकल्याण्कपूजा—रूपचन्द् । पत्र सं ० १०४। ग्रा० १२×५। भाषा-हिन्दी । विषय-

४८३६. पद्धकल्याग्यकपूजा—देक्चन्द् । पत्र सं० २२ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १८८७ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । स्र भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १०,५०, ११२०) और है ।

४८४०. प्रति सं०२। पत्र २०२६। ले० कृत्व सं०१६५४ चैत्र सुदी १। वे० सं० ४०। ग्र

४८४१. प्रति सं०३। पत्र सं०२६। ले० काल सं० १६५४ माह बुदी ११। वे० सं०६७। घृ

भण्डार । विशेष—किशनलाल पापडीवाल ने प्रतिलिपि की थी। इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७)

श्रीर है। श्रम्धुर, प्रति सं० ४ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १६६१ जुमेष्ठ सुदी १ । वे० सं० ६१२ । च भण्डार ।

४८४३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३२। ले० काल ×। वे० सं० २१५। छ भण्डार। विशेष—इसी वेष्टन मे एक प्रति ग्रीर है।

४८४४. प्रति सं०६। पत्र सं०१६। ले० काल ×। वे० सं०२६८। ज मण्डार। ४८४४. प्रति सं०७। पत्र सं०२४। ले० काल ×। वे० सं०१२०। क भण्डार। ४८४६. प्रति सं०८। पत्र सं०२७। ले० काल सं०१६२८। वे० सं०५३६। व्य भण्डार।

४८४७. पद्धकल्याण्कपूजा—पत्राताता । पत्र सं० ७ । ग्रा० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय— दूजा । र० काल सं० १९२२ । ले० काल × । पूर्ण । चै० सं० ३८८ । रू भण्डार ।

विशेष-नीले कागजो पर है।

४८४८. प्रति सं०२। पत्र सं०४१। ले० काल × वे० सं० २१५। छ भण्डार। विशेष—संघीजी के मन्दिर की पुस्तक है।

४८४६. पञ्चकल्याणकपूजा—भैरवदास । पत्र सं० ३१ । ग्रा० १११४८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १६१० भादना सुदी १३ । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वे० सं० ६१५ । च भण्डार ।

४८०. पञ्चकल्याण्कपूजाःःः। पत्र सं०२४। म्रा०६×६ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं०६६। ख भण्डार।

४८४१. प्रति सं० २ | पत्र सं० १४ | ले० काल सं० १६३६ | वे० सं० १००/ | स्त मण्डार | ४८४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० | ले० काल × । वे० सं० ३८६ | क भण्डार | विशेष — इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३८७) और हैं |

४८४३ प्रति सं०४ । पत्र स०१२ । ले० काल ४ । वे० सं०६१३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वै० स० ६१४) ग्रीर हैं।

४८४४. पञ्चकुमारपूजा''' ''''। पत्र सं०७ । म्रा० ५३×७ दख्व । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०

काल 🗙 । ले॰ काल 🗙 । पूर्गा । वे॰ सं॰ ७२ । यक्त भण्डार ।

४८४४. पञ्चत्तेत्रपालपूजा—गङ्गादास । पत्र सं० १४ । म्रा० १०×५३ इंच । भाषा-संम्कृत ।

विषय-पूजा । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० ६६४ । भ्र भण्डार ।

४८५६. प्रति सं०२। पत्र सं०१०। ले० काल स०१६२१। वे० सं०२६२। ख मण्डार।

४८४७. पञ्चगुरुकल्यगापूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं॰ २४ । म्रा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा। २० काल 🗙 । ले॰ काल सं० १६३५ मंगसिर सुदी ६। पूर्ण । वे० सं० ४२० । ज भण्डार ।

विशेष--- श्राचार्य नेलिचन्द्र के शिष्य पाढे हुंगर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

४-४८. पद्धपरसेष्ठी उद्यापन """ । पत्र सं० ६१। आ० १२×५ इंच । आपा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १८६२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१० । क भण्डार ।

४८. पद्भपरमेष्ठीसमुचयपूजा""। पत्र सं० ४ । ग्रा० ५१×६६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५३ । ट भण्डार ।

४८६०. पञ्चपरमेष्टीपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० २४ । ग्रा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-

४८६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० स० १६६ । च भण्डार ।

४८६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल ४ । ने० सं० १४० । च भण्डार ।

४८६३ पद्धपरमेष्टीपूजा--यशोनिन्द । पत्र सं० ३२ । ग्रा॰ १२×५३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × ले० काल सं० १७६१ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वें० सं० ५३८ । ग्रा भण्डार ।

विशेष--ग्रन्थ की प्रतिलिपि शाहजहानावाद मे जयसिंहपुरा मे पं॰ मनोहरदास के पठनार्थ हुई थी।

४८६४. प्रति सं०२। पत्र सं०२६। ले० काल सं०१८५६। ने० सं०४११। क भण्डार।

विशेष--चूरू ग्राम मे जानकीदास ने प्रतिलिपि की थी।

४८६४. प्रति सं०३। पत्र सं०५४। ले० काल स०१८७३ मंगसिर बुदी १। वे० सं०६९। घ भण्डार। ४८६६. प्रति सं०४। पत्र सं०४१। ले० काल सं०१८३१। वे० स०१९७। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १६५) ग्रीर है।

४=६७ प्रति सं ४। पत्र सं० ३२। ले० काल ×। वे० सं० १६३। ज भण्डार।
४=६= पद्धपरमे ब्ठीपूजा ""। पत्र सं० १५। ग्रा० १२×५। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०
काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१२। क भण्डार।

४८६६ प्रति स० २। पत्र सं० १७। ले० काल सं० १८६२ प्रापाढ बुदी ८। ने० सं० ३६२। इस् भण्डार।

४८४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । दे० सं० १७६७ । ट भण्डार ।

४८७१. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—टेकचन्द् । पत्र सं० १४ । आ० १२×५६ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-

४५७२. पद्भपरमेष्ठीपूजा — डालूराम । पत्र स॰ ३४ । ग्रा० १०३×४ इंच । भाषा - हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १८६२ मंगसिर बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७० । स्त्र भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १०८६) ग्रौर है।

४८७३. प्रति सं०२। पत्र स०४६। ले० काल सं०१८६२ ज्येष्ठ सुदी ६। वै० सं० ५१। गं

४८७४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३४। ले० काल सं० १६८७। वे० सं० ३८६ । छ भण्डार। विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३६०) ग्रीर है।

४८७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० स० ६१६ । च भण्डार । ४८७६. प्रति सं० ४ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १६२६ । वे० सं० ५१ । व्य भण्डार । विशेष—धन्नालाल सोनी ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

४८७७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३५। ले० काल सं० १६१३। वे० सं० १८७६। ट भण्डार। विशेष-ईसरदा मे प्रतिलिपि हुई थी।

४८७८. पञ्चपरमेष्ठीपूजा """। पत्र सं० ३६। आ० १३×५६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० ३६१। ड भण्डार।

अन्तर. प्रति सं०२ | पत्र स० ३० | ले० काल × | वे० सं० ६१७ । च भण्डार | ४८८०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल × | वे० सं० ३२१ । ज भण्डार । ४८८१. प्रति सं० ४ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० सं० ३१६ । व्य भण्डार । ४८८२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६८१ । वे० सं० १७१० । ट भण्डार । विशेष—द्यानतराय कृत रत्नत्रय पूजा भी है ।

४८८३. पञ्चवालयतिपूजा'''' । पत्र सं०६ । ग्रा० ६×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२२ । छ भण्डार ।

४८-४ पद्धमङ्गलपूजा''''' । पत्र सं० २४ । आ० ८४४ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल 🔀 । पूर्ण । बे० सं० २२४ । व्य भण्डार ।

४८८४. पञ्चमासचतुर्दशीत्रतोद्यापनपूजा—भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं०४ । ग्रा० ११×१ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १८२८ भादवा सुदी १ । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० ७४ । अ
भण्डार ।

४८८६. प्रति सं०२ । पत्र सं०४ । ले० काल × । वे० सं०३६७ । ङ भण्डार । ४८८७ प्रति सं०३ । पत्र सं०५ । ले० काल सं०१८८३ श्रावसा सुदी ७ । वे० स॰ १६८ । च

भण्डार । विशेष—महात्मा शम्भुनाथ ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति (ने॰ सं॰ १९६) श्रौर है ।

४८८८. प्रति सं० ४। पत्र स० ३। ले० काल ४। वे० स० ११७। छ भण्डार।

४८८८. प्रति सं० ४। पत्र स० ४। ले० काल सं० १८६२ श्रावरा बुदी ४। हे० सं० १७०। ज
भण्डार।

विगेष—जयपुर नगर मे श्री विमलनाथ चैत्यालय मे ग्रुरु हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी । ४८६०. पद्धमीव्रतपूजा—देवेन्द्रकीित्त । पत्र स० ५ । ग्रा० १२×५३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-

पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१० । इत्र भण्डार । ४८६१. पद्धमीव्रतोद्यापन—श्री हर्षकीर्त्ति । पत्र सं० ७ । ब्रा० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत ।

विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८८ मासोज सुदी ४। पूर्ण । वे० सं० ३६८। ड भण्डार ।

विशेष—शम्भूराम ने प्रतिलिपि की थी।

४८६२. प्रति सं०२। पत्र सं०८। ले० काल सं०१६१५ मासोज बुदी ५। वे० सं०२००। च भण्डार।

४८६३. प्रति ,स० ३:। पत्र सं० ७ । प्रा० १,०३×५३ इंच ,। भाषा-संस्कृत् । विष्य-पूजा । र० काल × । ने० काल सं० १६१२ कार्तिक बुदी ७ । पूर्ण । ने० सं० ११७ । ह्य भण्डार ॥

४८६४. पृष्टिमीत्रतोद्याप्तनपूजाः । पृत्र सं० १०,। आ० ५३×४ इं.च । भाषा-संस्कृत । विषय-

विशेष-गाजी नारायन शर्मा ने प्रतिलिपि की थी।

प्रदेश प्रति सं०२। पत्र सं०७। ले० काल सं०१६०५ ग्रासीज बुदी १२। वे० सं०६४। मा

४८६६. प्रति सं०२। पत्र सं०५। ते० काल ४। वे० सं०३८८। भण्डार।
४८६७. पद्धमेरुपूजा—टेकचन्द्। पत्र सं०३३। ग्रा०१२४८ इख्र। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा।
र० काल ४। ते० काल ४। पूर्ण। वे० सं०७३२। स्त्र भण्डार।

४८६६. प्रति सं०२। पत्र स०३३। ले० काल सं०१८८३। वे० सं०६१६। च भण्डार।
४८६६. प्रति सं०३। पत्र सं०२६। ले० काल सं०१६७६। वे० स०२१३। छ भण्डार।
विशेष—प्रजमेर वालो के चौबारे जयपुर में लिखा गया। कीमत ४।॥)

४६००. पद्धमेरुपूजा-द्यानतराय । पत्र सं० ६ । ग्रा० १२×५३ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६६१ कार्तिक सुदी = । पूर्ण । वे० सं० ५४७ । आ भण्डार ।

४६०१. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ३६५। इन् भण्डार।

४६०२. पश्चमेरुपूजा-भूधरदास । पत्र सं० द । ग्रा० द्रश्र इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५६ । श्च भण्डार ।

विशेष—श्रन्त मे संस्कृत पूजा भी है जो श्रपूर्ण है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६८) श्रीर '
४६०३ प्रति सं> २। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० १४६। छ भण्डार।
विशेष—वीस विरहमान जयमाल तथा स्नपन विधि भी दी हुई है।

-पूजा।

४६०४. पञ्चमेरुपूजा—डाल्राम । पत्र सं० ४४ । ग्रा० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । रि र० काल × । ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वे० सं० ४१५ । क भण्डार ।

४६०४. पश्चमेरुपूजा—सुखानन्द । पत्र स० २२ । ग्रा० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी खय-शान्ति र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण । वे० सं० ३६६ । इ भण्डार ।

४८०६. पद्धमेरुपूजा "" । पत्र सं० २ । म्रा० ११×५३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय- , काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६६ । म्रा भण्डार ।

४६०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० सं० ४८७ । व्य भण्डार । विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रपूर्ण प्रति (वे० सं० ४७६) ग्रीर है।

४६०८. पद्धमेरुउद्यापनपूजा—भ० रह्मचन्द् । पत्र सं० ६ । ग्रा० १०६ ४५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६३ प्र० सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २०१ । च भण्डार । ४६०६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ७४ । च भण्डार ।

४६१०. पद्मावतीपूजा प्राप्ता पत्र सं १ । ग्रा १० है × १ ईच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र काल × । ले काल सं १ १६६ । पूर्ण । वे स ११८५ । ग्रा भण्डार ।

विशेष--पद्मावती स्तोत्र भी है।

४६११. प्रति सं०२। पत्र सं०१६। लै० काल ×। वे० सं०१२७। च मण्डार।

विशेष-पद्मावतीस्तोत्र, पद्मावतीकवच, पद्मावतीपटल, एवं पद्मावतीसहस्रनाम भी है। मन्त मे २ मन्त्र

भी दिये हुंये हैं। ग्रष्टगंध लिखने की विधि भी दी हुई है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं० २०५) भीर है।

४६१२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ । ले॰ काल × । स्यूर्ग । वै॰ सं० १८० । व्य भण्डार ।

४६१३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल 🗙 । वे० सं० १४४ । छ मण्डार ।

४६१४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० २००। ज मण्डार।

४६१४. पद्मावतीमंडलपूजा"""। पत्र सं० ३ । ग्रा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।

र॰ काल 🗴 । ले॰ काल 🗙 । पूर्ण । वै॰ सं० ११७६ । स्त्र मण्डार ।

विशेप-शांतिमडल पूजा भी है।

४६१६. पद्मावितशान्तिक""" । पत्र से० १७ । म्रा० १०३×५ इ च । मापा—संस्कृत । विषय-पूचा ।

र के काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० २६३ । ख भण्डार ।

विशेष--प्रति मण्डल सहित है।

४६१७. पद्मावतीसहस्रनाम व पूजा'''' । पत्र सं १४। मा० १०×७ इन । भाषा-संस्कृत।

विषय-पूजा। र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० ४३० । इ मण्डार ।

४८१८. पत्यविधानपूजा—ततितकींति । पत्र सं० ७ । ग्रा० ११×५६ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा। र) काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वै० सं० २११ । व्य भन्डार ।

/ विशेप—खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

४६१६. पल्यविधानपूजा-रत्ननिद्। पत्र सं० १४ । ग्रा० ११×५ इ'च । माषा-संस्कृत । विषय-

पूर्ण र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६५ । ऋ भण्डार ।

'विशेष-नरसिंहदास ने प्रतिलिपि की थी।

४६२०. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० सं० २१४ । च भण्डार ।

प्रेटरेरे. प्रति सं २ १ पत्र सं ० ६ । ले० कोल स० १७६० देशाख बुदी १ । वे॰ सं॰ ३१२ । अ

भण्डार ।

विशेष—वासी नगर (वू दी प्रान्त) मे भ्राचार्य श्री ज्ञानकीति के उपदेश से प्रतिलिपि हुई थी।

४६२२, पत्यविधानपूजा-- अनन्तकीति । पत्र सं ० ६ । आ ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं ० ४५३ । क मण्डार ।

४६२३, पत्यविधानपूजा " । प्रा० १०×४३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । क्षे के काल × । पूर्ण । वे० सं• ६७४ । श्र भण्डार ।

४६२४. प्रति सं०२। पत्र सं०२ से ४। ले० काल सं०१८२१। प्रपूर्ण। वे० स० १०५४। स्त्र भण्डार।

विशेष-पं • नैनसागर ने प्रतिलिपि की थी।

४६२४. पत्यत्रतोद्यापन-भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ६। ग्रा० १०१४४ है इ व । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४४ । ग्रा भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ सं॰ ५८२, ६०७) ग्रीर हैं।

४६२६. पल्योपमोपवासिविधि । पत्र सं० ४ । म्रा० १०४४ है इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एव उपवास विधि । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ४८४ । स्त्र भण्डार ।

४६२७. पार्श्वजिनपूजा—साह लोहर । पत्र सं० २ । ग्रा॰ १०३×५ इ'न । भाषा-हिन्दी । निषय-पूजा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५६० । स्त्र भण्डार ।

४६२८. पार्श्वनाथपूना "" " । पत्र सं० ४ । ग्रा० ७४५ई इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र॰ काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० ११३२ । स्र भण्डार ।

४६ र ६. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल 🗙 । प्रपूर्ण । वे० सं० ४६१ । ङ भण्डार ।

४६३०. पुर्याह्वाचन "" ""। पत्र सं० ४ । आ० ११४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शान्ति विधान । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वै० सं० ४७६ । आ मण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ५५६, १३६१, १८०३) ग्रीर है।

४६३१. प्रति सं०२। पप्र सं०४। ले० काल ×। वे• सं०१२२। छ भण्डार।

४६३२. प्रति सं०३। पत्र सं०४। ले० काल स० १६०६ ज्येष्ठ बुदी ६। वे० सं०२७। ज भण्डार।

विशेप--पं० देवीलालजी ने स्वपठनार्थ किशन से प्रतिलिप् कराई थी।

४६२२. प्रति सं० ४। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १६६४ चैत्र सुदी १०। वे॰ सं० २००६। ट

```
४०८ ]
१६३४. पुरंदरत्रतोद्यापन । पत्र म० ६। ग्रा० ११×५३ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा।
र० काल ४। ले० काल स० १६११ ग्रापाढ सदी ६। पूर्ण। वे० म० ७२। ग्र भण्डार।
```

रः काल 🗙 । ले॰ काल स॰ १६११ म्रापाढ सुदी ६ । पूर्ण । वे॰ म॰ ७२ । घ्र मण्डार ।

४६३४. पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा— भ० रतनचन्द्। पत्र मं० ४। श्रा० १०३×७३ टंच। भाषा-मस्कृत।

विषय-पूजा। र० काल स० १६८१। ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२३। च मण्टार ।

विशेष—यह रचना सागवादपुर मे श्रावको की प्रेरणा से भट्टारक रतनचन्द ने मं० १६८१ में निसी थी।

४६३६. प्रति सं० २ । पत्र स० १५ । ले० काल मं० १६२४ ग्रासोज मुदी १०। वे० स० ११७ । छ

मण्डार । विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति इसी वेष्टन में ग्रीर है।

४६३७ प्रति सं०३। पत्र सं०७। ले० काल ×। वे० सं०३८७। व्या भण्डार।

४६३८. पुष्पाञ्जलित्रतपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ६ । मा० १०४५ इंच । भाषा–संस्कृत ।

विषय-पूजा। र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० ५५३ । स्त्र भण्डार । ४६३६. पुष्पाञ्जलित्रतपूजा''' ''' । पत्र स० ८ । स्रा० १०४४ है इंच । भाषा-मंस्कृत प्राकृत । र०

काल × । ले॰ काल स॰ '१८६३ द्वि॰ श्रावणा सुदी ४ । पूर्ण । वे॰ सं॰ २२२ । च भण्डार । ४६४०. पुष्पाञ्जलिन्नतोद्यापन—प॰ गंगादास । पत्र सं॰ ८ । ग्रा॰ ८४५ इंच । भाषा–संस्कृत ।

विषय-पूजा | र० काल × | ले० कॉल स० १८६६ | पूर्या | वे० सं० ४८० | स्त्र भण्डार ।

विशेष—गंगादास मट्टारक धर्मचन्द के शिष्य थे। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ३३६) ग्रीर हैं। ४८४१. प्रति सं०२। पत्र सं०६। ले० काल स०१८८२ ग्रासोज बुदी १४। वे० सं० ७८। म

भण्डार । ४६४२. पूजाक्रिया''' ''''। पत्र स०२। ग्रा०११३×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा करने की

विधि का विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२३ । छ भण्डार ।
४६४३. पूजापाठसंग्रह " " । पत्र सं० २ से ४० । ग्रा० ११×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विधयपूजा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० २०५५ । ट मण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक श्रपूर्ण प्रति (वे० सं० २०७८) भीर है।

४६४४. पूजापाठसंग्रह """। पत्र सं० ३८। आ० ७४५३ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा।

र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स० १३१६। आ भण्डार।

विशेष—पूजा पाठ के ग्रन्थ प्राय. एक से है। अधिकाश ग्रन्थों मे वे ही पूजायें मिलती हैं, फिर भी जिनका विशेष रूप से उल्लेख करना ग्रावश्यक है उन्हें यहां दिया जारहा है। ४६४४. प्रति सं०२। पत्र सं०३७। ले० काल सं०१६३७। वे० सं० ५६०। आ अण्डार। विशेष—निन्न पूजाओं का संग्रह है।

- १. पुष्पदन्त जिनपूजा संस्कृत
- २. चतुर्विशतिसमुचयपूजा "
- ३. चन्द्रप्रभपूजा ',
- ४. शान्तिनाथपूजा
- ५. मुनिसुव्रतनाथपूजा
- ६. दर्शनस्तोत्र-पद्मनन्दिः प्राकृत ले० काल सं० १९३७

"

७. ऋषभदेवस्तोत्र ,, ,,

४६४६. प्रति स० ३। पत्र सं० ३०। ले० काल सं० १८६६ द्वि० चैत्र बुदी ५। वै० सं० ४५३। आ

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिर्या (वे० सं० ७२६, ७३३, १३७०, २०६७) ग्रीर हैं।
४६४७. प्रति सं० ४। पत्र सं० १२०। ले० काल सं० १८२७ चैत्र सुदी ४। वे० सं० ४८१। क

विशेष-पूजाग्रो एवं स्तोत्रो का संग्रह है।

४६४८. प्रति सं० ४। पत्र सं० १८५। ले० काल 🗶 । वे० सं० ४८०। क भण्डार।

विशेष--- निम्न पूजायें हैं।

`

पल्यविधानव्रतोद्यापनपूजा	रत्ननन्दि	संस्कृत
वृहद्षोडशकारगपूजा		77
जेष्ठजिनवरउद्यापनपूजा		27
त्रिकालचौबीसीपूजा	****	प्राकृत
चन्दनषष्ठिय्रतपूजा	विजयकीति	संस्कृत
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	यशोनन्दि	**
जम्बूद्वीपपूजा	पं० जिनदास	77
ग्रक्षयनिधिपूजा		,, 11
कर्मचूरवतोद्यापनपूजा	************	-
		27

भण्डार ।

४६४६. प्रति सं० ६। पत्र सं० १ से ११६। ले० काल-×। प्रपूर्ण। वे० सं० ४६७। क मण्डार। विशेष-मूख्य पूजायें निम्न प्रकार हैं-

जिनसहस्रनाम	فسيب	संस्कृत
पोडशकारगपूजा	श्रुतसागर	77
जिनग्रुग्।सँपत्तिपूजा	भ० रत्नचन्द	57
ग्।वकारपश्चविश्वतिकापूजा	(C)	79
सारस्वतमंत्रपूजा	elemen	77
धर्मचक्रपूजा	ulang data	59
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द	5>

इंसी भेण्डार में २ प्रतियां (वै० सैं० ४७६; ४७६) ग्रीर हैं।

४६५०. प्रति सं० ७। पत्र सं० २७ से ५७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२६। च भव्होर। विशेष—सामान्य पूर्जा एवं पाठी का संग्रंह है।

४६ थर. प्रति सं० म। पत्र सं० १०४। लें कोल ×। वे० सं० १०४। छ भण्डोर ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वै० सं० १३६) ग्रीर है।

४६४२. प्रति सं०६। पत्र सं०१२३। ले॰ काल सं॰ १८५४ प्रासोज सुवी ४। वे॰ सं० ४३६। ञ

विशेष---नित्य नैमिक्तिक पूजा पाठ संग्रह है।

४६४३. पूजापाठसंग्रेहिः । पत्र सं े २२। ग्रा० १२४६ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा पाठ। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७२८ । स्र भण्डार।

विशेष--भक्तामर, तस्वीर्थसूत्र आदि पाठीं का सग्रह है। सामिन्य पूजा पीठोंकी इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे॰ सं॰ ६६२, १०००) और हैं।

४६४४. प्रति सं० रे । पेंत्र सं० नह । तें कील सं० १६५३ आंषाढ शुंदी १४ । वे० सं० ४६८ । स

विशेष—इसी भण्डार मे ६ प्रतियां (वे० सँ० ४७४, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८३, ४८१, ४६२) ग्रीर है।

४६४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५ से ६१ । ले० काल 🗙 । ब्रपूर्ण । वे० सं७ १६५४ । ट मण्डार ।

४६४६. पूजापाठसंग्रहं पत्र सं ४ रं । ग्रा० १२४६ रंच । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । वि काल × । पूर्ण । वे० सं ७ ७३५ । स्त्री भण्डार ।

विशेष-निम्न पूजाग्रो का संग्रह है।

भ्रादिनाथपूजा	मनहरदेव	हिन्दी
सम्मेदशिखरपूजा		27
विद्यमानवीसंतीर्थङ्करो की पूर्जा	<u>~~</u>	र० कालं सं० १६४१
ध्रनुभव विलास		तेवं अ १६४६
[पदसग्रह]		हिन्दी

४६४७. प्रति स० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ७५६ । ङ भण्डार । विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० ४७७, ४७६, ४६६, ७६१/२) ग्रौर है । ४६४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० २४१ । छ भव्डार ।

विशेष--निम्न पूजा पाठ हैं-

भौवीसदण्डक — दीलतराम विनती ग्रेरुग्री की — भूघरेदीसं भीस तीर्थङ्कर जयमाल — — सोलहकारगापूजा — द्यानतराम

४६४६. प्रति सं०४। पत्र सं०२१। ले० काल सं० १८६० फाग्रुग् सुदी २। वे० सं०२९०। ज भण्डार। ४६६०. प्रति सं०४। पत्र सं०६ से २२२। ले० काल 🔀। ग्रपूर्ण। वे० सं०२७०। मा भण्डार। विशेष—नित्य नैमिक्तिक पूजा पाठ संग्रह है।

४६६१. पूजापाठसंग्रह—स्वरूपचंद् । पत्र सं० । ग्रा० ११४४ इंच । भाषा-हिन्दी । विर्षय-पूर्जा । र० काल ४ । ले केलि ४ । पूर्शी । वे० सं० ७४६ । क भण्डार ।

विशेष---निस्न प्रकार संग्रह है--

जयपुर नेगर सम्बन्धी चैस्यालयी की वदना	स्वंक्ष्यचन्द	हिन्दी
ऋदि सिद्धि शतक	7 }	3 3
महावीरस्तोत्र	77	33
जिनपद्धरस्तोत्र	19	37
त्रिलोकसार चौपई	9)	77
चर्मत्कारंजिनैध्वरपूजा	79	33
सुगंधीदशमीपूजा	"	59

४६६२. पूजाप्रकरण-- उमास्वामी । पत्र सं०२। ग्रा० १०×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । क्षे० काल × । पूर्ण । वे० सं०१२२ । छ भण्डार ।

विशेष--- पूजक ग्रादि के लक्षरण दिये हुये हैं । ग्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है--

इति श्रीमदुमास्वामीविरचितं प्रकरण ।।

४६६३. पूजामहात्म्यविधि " " । पत्र स० ३ । ग्रा० ११३×४२ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२४ । च भण्डार ।

४६६४. पूजावराविधि "" '। पन सं० ६ । आ० ५३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजाविधि । र० काल × । ले० काल स० १५२३ । पूर्ण । वे० सं० १४५७ । आ भण्डार ।

४६६४ पूजापाठ। पत्र सं० १४। म्रा० १०३×४३ इंच। भाषा-हिन्दी गर्छ। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८३६ वैशाख सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० १०६। ख भण्डार।

विक्षेष-माण्यकचन्द ने प्रतिलिपि की थी। ग्रन्तिम पत्र वाद का लिखा हुग्रा है।

४४६६. पूजाविधि " "" । पत्र सं० १। ग्रा० १०×४३ इझ । भाषा-प्राकृत । विषय-विधान । र० काल × । ने० काल × । ग्रपूर्ण । ने० स० १७६६ । स्त्र भण्डार ।

१६६७. पूजाविधि । पत्र स०४। म्रा० १०×४ई इच। भाषा-हिन्दी । विषय-विधान। र० काल ×। पूर्ण। वे० स० ११७। व्य भण्डार।

४६६८ पूजाप्टक-आशानन्द । पत्र सं० १ । आ० १०३×५ इख । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२११ । आ भण्डार ।

४६६६ पूजाष्टक-लोहट । पत्र सं० १। म्रा० १०३×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । पूर्ण । वे० स० १२०६ । स्र भण्डार ।

४६७०. पूजाप्टक-ग्राभयचन्द्र । पत्र स० १ । ग्रा० १०ई×५ ६ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१० । श्र भण्डार ।

४६७१. पूजाप्टक''''''''। पत्र सं० १। म्रा० १०५४ ६ इत्र । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । पूर्ण । वे० स० १२१३ । म्रा भण्डार ।

४६७२. पूजाष्टक''''''''| पत्र सं० ११ | ग्रा० $= \frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$ इक्ष्य | भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा | र० काल \times | ले० काल \times | ग्रपूर्ण | वे० सं० १=७= | ट भण्डार |

४६७३. पूजाष्टक-विश्वभूषण्। पत्र सं०१। ग्रा०१०३×५ इ'च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०१२१२। द्या भण्डार।

४६७४. पूजासंग्रह। पत्र सं० ३३१। ग्रा० ११×५ डख्न । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८६३ । पूर्ण । वे० सं० ४६० मे ४७४ । स्र भण्डार ।

विशेप--निम्न पूजाग्रो का संग्रह है--

	नाम ,	कर्त्ता	भाषा	पत्र सं०	वे॰ सं॰
₹.	काजीव्रतोद्यापनमंडलपूजा	×	सस्कृत	१०	ሃ ⊍ሄ
२	श्रुतज्ञानव्रतोद्योतनपूजा	×	हिन्दी	२०	% ⊌3
₹.	रोहिखीव्रतपूजा	मंडलाचार्य केशवसेन	संस्कृत	१२	४७२
٧,	दशलक्षगात्रतोद्यापनपूजा	×	5)	२७	४७१
ų.	लव्यिविधानपूजा	×	;;	१२	४७०
٤.	घ्वजारोप रापूजा	×	>>	११	४६६
o.	रोहिस्गीड्रतोद्यापन	×	7)	१३	४६८
۶.	श्रनन्त्रतोद्यापनपूजा	ग्रा॰ गुराचन्द्र	57	३०	४६७
٤.	रत्नत्रयव्रतोद्यापन	×	75	१६	४६६
१०.	श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	×	3 7	१२	४६५
११.	शत्रुञ्जयगिरिपूजा	भ० विश्वभूषरा	3 7	२०	४६४
१२.	गिरिनारक्षेत्रपूजा	×	? 7	२२	४६३
१₹.	त्रिलोकसारपूजा	×	93	4	४६२
१४.	पार्श्वनाथपूजा (नवग्रहपूजाविः	वान सहित)	77	१८	४६१
१५.	त्रिलोकसारपूजा	×	77	१०	४६०

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ११२६, २२१६) और हैं जिनमे सामान्य पूजायें है।
४६७४ प्रति सं० २ । पत्र तं० १४३ । ले० काल सं० १६५८ । वे० सं० ४७५ । क भण्डार ।
विशेष—निम्न संग्रह हैं—

नाम	कर्त्ता	भाषा	
त्रिपञ्चाशतव्रतोद्यापन		संस्कृत	

नाम	कर्त्ता	भाषा
पञ्चपरमेष्टीपूजा	-	सस्कृत
पञ्चकल्याराकपूजा		99
चौसठ शिवकुमारका काजी की पूजा	ललितकीत्ति	"
गग्धरवलयपूजा		57
सुगधदशमीकथा	श्रुतसागर	n
चन्दनषष्ठिकथा	33	17
पोडशकारग्विधानकथा	मदनकोत्ति	57
नन्दोश्वरिवधानकथा	हरिषेगा	11
मेघमालाव्रतकथा	श्रुतसागर	91

४६७६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८०। ले० काल सं० १६५६। वे० सं० ४८३। क भण्डार। विशेष—निम्न प्रकार सग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
सु खस यत्तिव्रतोद्यापनपूजा	×	सस्कृत
नन्दीश्वरपंक्तिपूजा	×	55
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द्र	99
प्रतिमासातचतुर्दशी व्रतोद्यापनपूजा	×	93
विशेप—तारावन्द [जयसिंह के मन्य	तो] ने प्रतिलिपि की	थी
		•

लघुकल्यारा 🗴 संस्कृत

सक्लीकरणविद्यान 🗙 🤧

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ४७७, ४७८) श्रीर है जिनमे सामान्य पूजाये है। ४६७७. प्रति सं० ४। पत्र से० ६। ले० नाल 🗴 । वे० स० १११। ख भण्डार।

विशेष—निम्न पूजाम्रो का संग्रह है— सिद्धचक्रपूजा, कलिकुण्डमन्त्रपूजा, म्रानन्द स्तवन एवं गराधरवस्य जयमाल । प्रति प्राचीन तथा मन्त्र विधि सहित है ।

> ४६७ - प्रति स० ४। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० ४६४। ड भण्डार। विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ४६०, ४६४) ग्रीर है।

४६७६. प्रति सं २६। पत्र सं ०१२। ले० काल 🗴। वे० सं० २२५। च भण्डार। विभेप---मानुपोत्तर पूजा एवं इक्ष्वाकार पूजा का सग्रह है।

४६८०. प्रति सं० ७। पत्र स० ५५ मे ७३। ते॰ काल X। प्रपूर्ण। वे० मं० १२३। छ भण्डार। ४६८१. प्रति सं० ८। पत्र म० ३८ से ३१५। ते० काल X। प्रपूर्ण। वे० स० २५३। स्त भण्डार। ४६८२. प्रति सं० ६। पत्र स० ४५। ते० काल सं० १८०० ग्रापाढ सुदी १। वे० सं० ६६। व्य

नाम	कत्ती	भाषा	ঘর
धर्मचक्रपूजा	यशोनन्दि	संस्कृत	39-9
नन्दीश्वरपूजा	*****	57	१६- २४
सक्लीकरणविधि	-	77	२४-२५
लघुस्वयंभूपाठ	समन्तभद्र	73	२५–२६
धनन्तव्रतपूजा	श्रीभूपरा	77	२६–३३
भक्तामरम्तोत्रपूजा	केशवसेन	77	3 7-7 5
ग्राचार्य विश्वकीत्ति की सहाय	तासे रचनाकी गई थी।		
पञ्चमीव्रतपूजा	फेशव मेन	37	38-8x

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ४६९, ४७०) ग्रीर हैं जिनमे नैमिक्तिक पूजायें है।

४६६३ प्रति सं०१०। पत्र स० म। ले० काल 🗙 । अपूर्ण । वे० सं०१ मा ट मण्डार ।

४६८४ पूजासंप्रहः । पत्र स॰ ३४। म्रा॰ १०ई×५ इख्र । सस्कृत, प्राकृत । विषय-पूजा । र॰ काल × । वे काल × । पूर्ण । वे॰ सं॰ २२१५ । स्र भण्डार ।

विशेष—देवपूजा, म्रकृतिमचैत्यालयपूजा, सिद्धपूजा, ग्रुवीवलीपूजा, वीसतीर्धञ्चरपूजा, क्षेत्रपालपूजा, पोडप काररणपूजा, क्षोरव्रतनिधिपूजा, सरस्वतीपूजा (ज्ञानभूपरण) एवं शान्तिपाठ म्रादि हैं।

४६८४ पूजासंग्रह "। पत्र सं० २ मे ४५। ग्रा० ७३×५३ इंच। भाषा-प्राकृत, सस्कृत, हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२७। च भण्डार।

विशेष--इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २२८) ग्रीर है।

४६८६. पूजासम्रह ""। पत्र सं० ४६७ । मा० १२×५ इश्च । भाषा-संस्कृत, मपभ्रं श, हिन्दी । विषय-संग्रह । र० काल × । ले० काल सं० १८२६ । पूर्ण । वे० सं० ५४० । व्य भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

	नाम	कर्त्ता	भापा	र० काल	लें = काल	पत्र
₹.	भक्तामरपूजा	-	मम्कृत			
₹.	सिद्धकूटपूजा	विश्वभूपरा	99	₹ 0	१८८६ ज्येष्ठ	मुदी ११
3	बीसतीर्थं द्भूरपूजा	patricies.	77		×	ग्रपूर्गा
٧.	नित्यनियमपूजा	-	मम्ब्रुत हि	[,] त्दी		
¥.	श्रनन्तपूजा		सरकृत			
₹.	परावितक्षेत्रपालपूजा	विश्वमे न	•9	×	सं० १८८६	पूर्ण
७.	ज्येष्ठजिनवरपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्त	"			
۲.	नन्दीश्वरजयमाल	कनककोत्ति	ग्र पभ्र ंश			
3.	पुष्पाञ्जलिवत पू जा	गङ्गादास	सस्कृत	[मंडल चित्र सहित]	
१०.	रस्नत्रयपूजा		33			
११.	प्रतिमासान्त चतुर्दशीपूजा	श्रखयराम	77	र० काल १८००	ले० काल १।	न २७
१२.	रत्तत्रयजयमाल	ऋषभदास बुघदोस	75		,, ,, {:	÷२६
१३.	वारहब्रतो का व्योरा	Mileson.	हिन्दी			
?¥.	पंचमेरुपूजा	देवेन्द्रकीत्ति	संस्कृत		ले० कान १०	;२०
१५.	पञ्चकल्याग्यकपूजा	सुधासागर	77			
१६.	पुष्पाञ्जलिन्नतपूजा	गङ्गादास	1)		ले० काल १५	६२
१७.	पंचाधिकार		17			
१८.	पुरन्दरपूजा					
१६.	त्र ष्टाह्मिकाव्रतपूजा		5)			
२०.	परमस सस्थानकपू जा	सुधासागर	23			
₹१.	पल्यविधानपूजा	रत्ननन्दि	77			
२२		केशवसे न	**			
	जिनग्रुग्संपत्तिपूजा	-	? ?			
२४.	सौस्यवास्यव्रतोद्यापन	श्रक्षयराम	"			

वजा	प्रतिप्रा	एव	विधान	साहित्य	1
7011	21/101	-2-0	12210		

You study as the time	٠ ,		_
२५ कर्मचूरव्रतोद्यापन	लक्ष्मीसेन	संस्कृत	
२६ सोलहकारण व्रतोद्यापन	केशवसेन	"	
२७. द्विपंचकल्यागाकपूजा		77	ले० काल सं० १८३१
२८. गन्धकुटोपूजा		53	
२६. कर्मदहनपूजा	لضيب	37	ले० काल सं० १८२८
३० कर्मदहनपूजा	94,004,000	"	
३१. दशलक्षरापूजा		"	
३२ पोडशकारगजयमाल	रइघू	ग्रपभ्र श	श्रपूर्या
३३. दशलक्षगाजयमाल	भावशर्मा	সান্থূন	,
३४. त्रिकालचौवीसीपूजा	***************************************	संस्कृत	से० काल १८५०
३५ लव्धिविधानपूजा	ग्रभ्रदेव	7 3	
३६. ग्रकुरारोपग्विधि	ग्राशाधर	? 7	
३७. गामोकारपैतीसी	कनककीर्त्ति	75	
३८. मीनव्रतोद्यापन	-	55	
३६. शादिवकपूजा		55	
४०. सप्तपरमस्थानकपूजा	Phillips	77	
४१. सुखसंपत्ति पूजा	•	9)	
४२. क्षेत्रपालपूजा		57	
४३ षोडशकाररापूजा	सुमतिसागर	52	ने० काल १८३०
४४. चन्दनक्ष्ठीव्रतकया	श्रुतसागर	17	
४५ गामोकारपैतीसीपूजा	श्रक्षयराम	99	से० काल १८२७
४६ पञ्चमीउद्यापन	-	संस्कृत हिन्दी	
४७ त्रिपञ्चाशतक्रिया		27	
४८. कञ्जिकाव्रतोद्यापन		55	
४६. मेघमालाव्रतीद्यापन		17	
४०. पश्चमीव्रतपूजा	C Plants	37	ने० काल १८२७
			·

५१. नवग्रहपूजा — संस्कृत हिन्दी
 ५२. रत्नत्रयपूजा — , लै० काल १६१७
 ५३. दशलक्षगाजयमाल रद्यू अपभ्रंश

टव्वा टीका सहित है।

्र ४६८७. पूजासंग्रह "" ""। पत्र सं० १११ । त्रा० ११३४५३ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वै० सं० ११० । ख भण्डार ।

विशेष--- निम्न पूजाग्रो का संग्रह है---

श्रनन्तव्रतपूजा	×	हिन्दी	र• काल स० १८६८
सम्मेदशिखरपूजा	×	93	
निर्वाणक्षेत्रपूजा	×	"	र० काल स्०१८१७
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	×	**	र० काल सं० १८६७
गिरनारक्षेत्रपूजा	×	"	
वास्तुपूजाविधि	×	संस्कृत	
नादीमंगलपूजा	×	19	
शुद्धिविधान	देवेन्द्रकीर्ति	n	

४६८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १४१ । छ मण्डार । ४६८६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५५ । ले० काल × । वे० सं० ३६ । मा भण्डार । विशेष—निम्न संग्रह हैं—

पञ्चकल्यासाकमगल	रूपचन्द	हिन्दी	पत्र १–३
पश्चमल्याग्। कपूजा	×	संस्कृत	,, ¥-१२
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	टैकचन्द	हिन्दी	" १३ –२६
पञ्चपरमेष्ठीपूजाविधि	यशोनन्दि	सस्कृत	,, २७ - ४६
कर्मदहनपूजा	टेकचन्द	हिन्दी	n ?-??
नन्दीश्वरत्नतिधान	77	"	,, १२ – २८

४६६०. प्रति सं० ४। ले॰ काल 🗴 । अपूर्ण । वे॰ सं॰ १८६० । ट भण्डार ।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

४६६१ पूजा एवं कथा सप्रह —खुशालचन्द । पत्र सं० ५०। म्रा० ८४६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल सं० १८७३ पीप बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ५६१। स्त्र भण्डार।

विशेप--निम्न पूजाओं तथा कथाओं का सम्रह है।

सन्दनपष्ठीपूजा, दशलक्षरापूजा, पोडशकाररापूजा, रत्नत्रयपूजा, प्रनन्तचतुर्दशीव्रतकथा व पूजा। तप लक्षराकथा, मेरपक्ति तप की कथा, सुगन्धदशमीव्रतकथा।

४६६२. पूजासग्रह—हीराचन्द् । पत्र स० ५१ । म्रा० ६ $\frac{3}{6}$ ×५ $\frac{3}{6}$ ६ च । मापा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८२ । क भण्डार ।

४६६३. पूजासंब्रह। पत्र सं०६। ग्रा० ५३ ×७ इ'च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७२७। स्त्र भण्डार।

विशेष-पंचमेर पूजा एव रत्नत्रय पूजा का संग्रह है।

इसी मण्डार मे ४ प्रतियां (वे० सं० ७३४, ६७१, १३१६, १३७७) भीर हैं जिनमे सामान्य पूजायें हैं। ४६६४. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० ६०। सा मण्डार। ४६६४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४३। ले० काल ×। वे० सं० ४७६। क मण्डार।

४६६६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २४। ले० काल सं० १६५४ मंगसिर बुदी २। ने० सं० ७३। घ भण्डार।

विशेष--निम्न पूजाग्री का मंग्रह है--

देवपूजा, सिद्धपूजा एवं शान्तिपाठ, पंचमेरु, नन्दीश्वर, सोलहकारण एवं दशलक्षण पूजा द्यानतराय कृत । अनन्तव्रतपूजा, रत्नत्रयपूजा, सिद्धपूजा एवं शास्त्रपूजा।

४६६७. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७५। ले० काल 🗙 । अपूर्या । वे० सं० ४८६ इत भण्डार । विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० ४८७, ४८६, ४८६, ४८६) और हैं जो सभी भपूर्या हैं।

४६६६. प्रति सं०६। पत्र सं० ६५। ले० काल × । वे० स० ६३७। च भण्डार।
४६६६. प्रति सं०७। पत्र सं० ३२। ले० काल × । वे० सं० २२२। छ भण्डार।
४००० प्रति सं०६। पत्र सं०१३४ ले० काल × । वे० सं०१२२। ज भण्डार।
विशेष—पंचकत्यासकपूजा, पंचपरमेण्ठीपूजा एव नित्य पूजायें है।
४००१. प्रति सं०६। पत्र स०३६। ले० काल × । प्रपूर्सा वे० स०१६३५। स भण्डार।

४००२. पूजासंग्रह—रामचन्द् । पत्र सं० २० । ग्रा० ११३×१३ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४६४ । ड भण्डार ।

विशेष--- प्रादिनाय मे चन्द्रप्रभ तक की पूजायें है।

४००३. पूजासार " " । पत्र सं० ८६ । ग्रा० १०४५ ईच । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा एव विधि विधान । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ४५४ । स्त्र भण्डार ।

"००४. प्रति स०२। पत्र स०४७। ले० काल ४। वे० स०२२६। च भण्डार।

विशेय-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं॰ २३०) श्रीर है।

४००४. प्रतिमासान्तेचतुर्देशीत्रतोद्यापनपूजा—श्रज्ञयराम। पत्र सं०१४। ग्रा०१०×५३ इच। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं०१६०० भादवा सुदी १४। पूर्ण। वे० स०५८७। श्र

विशेष-दीवान ताराचन्द ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

४०८६. प्रति सं०२। पत्र सं०१४। ले० काल स०१८०० भादता बुदी १०। वे० स०४८४। क

४००७ प्रति सं०३। पत्र स०१०। ले० काल सं०१८०० चैत्र सुदी ४। वे० स०२०४। व्य भण्डार।

४००८. प्रतिमासान्तचतुर्देशीव्रते। द्यापनपूजा--रामचन्द । पत्र स०१२। म्रा०१२ द्रे४५ इच। नापा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल स०१८०० चैत्र सुदी १४। पूर्ण । वे० स०३८६। व्य भण्डार ।

विशेप-श्री जर्यासह महाराज के दीवान ताराचन्द श्रावक ने रचना कराई थी।

४००६. प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा " । पत्र सं० १३। ग्रा० १०×७३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८०० । पूर्ण । वे० स० ५०० । क्र भण्डार ।

४०१०. प्रति स० २। पत्र स० २७। ले० काल सं० १८७६ ग्रासीज बुदी ६। वे० सं० २३३। च भण्डार।

विशेप—सदासुख वाकलीवाल मीहा का ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी | दीवान ग्रमरचन्द शी संगही ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

४०११. प्रतिष्ठादर्श---भ० श्री राजकीर्त्ति । पत्र स० २१ । ग्रा० १२×५३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा (विधान)। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्या। वे० स० ५०१ ड भण्डार ।

४०१२. प्रतिष्ठादीपक-पंडिताचार्य तरेन्द्रसेन। पत्र सं०१४। आ० १२४५३ इव। भाषा-सस्कृत। विषय-विधान। र० काल ४। ले० काल सं०१८६१ चैत्र बुदी १४। पूर्ण। वे० स० ५०२। छ भण्डार। विशेष-भट्टारक राजकीति ने प्रतिलिपि की थी।

४०१३. प्रतिष्ठापाठ--- श्रा० वसुनिद् (श्रपर नाम जयसेन)। पत्र सं० १३६। श्रा० ११३×६५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र० काल ×। ले॰ काल सं० १६४६ कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण। वे॰ सं० ४६५। क भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम प्रतिष्ठासार भी हैं।

४०१४. प्रति सं०२। पत्र सं०११७। ले० काल सं०१६४६। वे० सं०४८७। क भण्डार। विशेष—३६ पत्रो पर प्रतिष्ठा सम्बन्धी चित्र दिये हुये हैं।

४०१४. प्रति सं ३ ३। पत्र सं० १५४ । ले० काल सं० १६४६ । वे० सं० ४८६ । क भण्डार ।

विशेष—वालावस्था व्यास ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। ग्रन्त मे एक ग्रतिरिक्त पत्र पर ग्रङ्कस्थापनार्थ मूर्ति का रेखाचित्र दिया हुमा है। उसमे श्रङ्क लिखे हुये हैं।

४०१६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २७१। ज भण्डार। विशेष—श्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रोमत्कुंदकुदाचार्य पट्टोदयभूधरदिवामिए। श्रीवसुविन्द्वाचार्येण जयसेनापरनामकेन विरिचतः । प्रतिष्ठा-सार· पूर्णमगमतः ।

४०१७. प्रतिष्ठापाठ-श्राशाधर। पत्र सं० ११६। ग्रा० ११×५३ इ'च। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र० काल सं० १२८५ ग्रासीज सुदी १५। ले० काल सं० १८८४ भादवा सुदी ५। पूर्ण। वे० स० १२। ज भण्डार।

े ४०१८. प्रतिष्ठापाठ"" । पत्र सं० १। ग्रा० ३५ गज लंबा १० इच चौड़ा । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १५१६ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ४० । व्य भण्डारे ।

विशेष—यह पाठ कपडे पर लिखा हुग्रा है। कपडे पर लिखी हुई ऐसी प्राचीन चीजें कम ही मिलती हैं। यह कपडे की १० इंच चौडी पट्टी पर सिमटता हुग्रा है। लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

।।६०।। सिंद्धः ।। श्रो नमो वीतरागाय ।। संवतु १५१६ वर्षे ज्येष्ठ वृदी १३ तेरिस सोमवासरे श्रिश्चिनि नक्षत्रे श्रीदृष्टकापये श्रीसर्वज्ञचैत्यालये श्रीमूलसंघे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये वलात्कारगरो सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्रीरत्नकीत्ति देवाः तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवाः तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवाः तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवाः तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवाः तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवाः ।। तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः ।।

४०१६. प्रति सं०२। पत्र सं०३५। ले० काल सं० १८६१ चैत्र बुदी ४। अपूर्ण। वे० सं०५०४। अस्मार।

विशेष—हिन्दी मे प्रथम ६ पद्य मे प्रतिष्ठा में काम ग्राने वाली सामग्री का विवरण दिया हुन्ना है।

४०२०. प्रतिष्ठापाठभाषा—वाबा दुलीचंद । पत्र स॰ २६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८६ । क भण्डार ।

विशेष-मूलकर्ता श्राचार्य वसुविन्दु हैं। इनका दूसरा नाम जयसेन भी दिया हुआ है। दक्षिण में कुंकुण नामके देश सहद्याचल के समीप रत्निगिरि पर लालाह नामक राजाका बनवाया हुआ विशास चैत्यालय है। उसकी प्रतिष्ठा होने के निमित्त ग्रन्थ रचा गया ऐसा लिखा है।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ४६०) ग्रीर है!

४०२१. प्रतिष्ठाविधि। पत्र स० १७६ से १९९ । ग्रा० ११×४३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्श । वे० स० ५०३ । क भण्डार ।

४०२२. प्रतिष्ठासार—पं० शिवजीलाल । पत्र सं० ६६ । ग्रा० १२x७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय— विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १६५१ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ४६१ । क भण्डार ।

४०२३. प्रतिष्ठासार "" । पत्र सं० ८४ । ग्रा० १२३×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १६३७ ग्रापाढ सुदी १० । वै० स० २८१ । ज भण्डार ।

विशेष---पं क्रितेहलाल ने प्रतिलिपि की थी। पत्री के नीचे के भाग पानी से गले हुये हैं।

४०२४ प्रतिष्ठासारसंप्रह—न्त्रा० वसुनिन्द । पत्र सं० २१ । स्रा० १३×६ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-विधि विधान । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० १२१ । 🖼 मण्डार ।

४०२४ प्रति सं०२। पत्र स० ३४। ले० काल स० १६१०। वे० सं० ४५१। इत्र मण्डार।

४०२७. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३६ । ले॰ काल सं० १७३६ वैशाख बुदी १३ । स्रपूर्ण । वे॰ सं॰ ६व । स्र भण्ड र ।

४०२६. प्रति सं० ३ । पत्र स० २७ । ले॰ काल सं० १६७७ । वे० सं० ४६२ । क भण्डार ।

विशेष--तीसरे परिच्छेद से है।

४०२८. प्रतिष्ठासारोद्धार " " । पत्र सं० ७६ । ग्रा० १०३×४६ इंच । माषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३४ । च मण्डार ।

४०२६. प्रतिष्ठासूक्तिसंप्रह। पत्र स० २१ । ग्रा० १३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल ×। ले० काल सं० १६५१ । पूर्गा । वे० सं० ४६३ । क भण्डार । पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

४०३०. प्राग्पप्रतिष्ठाः ः ः । पत्र सं० ३। ग्रा० ६३×६३ इंच। भाषा संस्कृत । विषय-विधान। ए० काल ×। के० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३७। ज भण्डार।

४०३१. वाल्यकालवर्णन ' ' ' ' पत्र स० ४ से २३। ग्रा० ६x४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × श्रपूर्ण । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

विशेष—बालक के गर्भमें माने के प्रथम मास से लेकर दशवें वर्ष तक के हर प्रकार के सांस्कृतिक विधान का वर्णन है।

४०३२. बीसतीर्थेङ्करपूजा-थानजी श्रजमेरा। पत्र सं० ५८। श्रा० १२३×८ इ'च। भाषा-हिन्दी। विषय-विदेह क्षेत्र के विद्यमान बीस तीर्थेङ्करो की पूजा। र० काल सं० १६३४ ग्रांसीज सुदी ६। ले० काल X। पूर्ण के० सं० २०६। ह्य भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे इसी बेष्टन मे एक प्रति और है।

४०३३. बीसतीर्थेङ्करपूजा - ' ' । पत्र सं० ५३ । म्रा० १३×७३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल स० १९४५ पीप सुदी ७ । पूर्ण । दे० सं० ३२२ । ज भण्डार 1

४०३४ प्रति सं०२। पत्र सं०२। ले० काल X। मपूर्ण। वै० सं० ७१। सा भण्डार।

४०३४. भक्तामरपूजा-श्री झानभूषण । पत्र सं०१०। झा० ११४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-

४०३६ भक्तामरपूजाउद्यापन-श्री भूषण । पत्र सं०१३। ग्रा०११×१ इंस । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । श्रपूर्ण । वै० स० २५२ । च भण्डार ।

विशेष- १०, ११, १२वाँ पत्र मही है।

४०३७. प्रति सं०२। पत्र स० म। ले० काल सं०१ मण्डार।

विशेष--तैमिनाय चैत्यालय में हरवंशलाल ने प्रतिलिपि की थी।

४०३८. प्रति सं०३। पत्र स०१३। ले० काल सं०१८६३ श्रावण सुदी ४। वे० सं०१२०। ज भण्डार।

४०३६. प्रति सं २४। पत्र सं ० ६। ले० काल स० १९११ म्रासोज बुदी १२। वै० सं०५०। भाभण्डार।

विशेष-जयमाला हिम्दी मे है।

४०४०. भक्तामरत्रतोद्यापनपूजा-विश्वकीर्ति । पत्र सं० ७ । ग्रा० १०३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १६९९ । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३७ । इः मण्डार ।

विशेष-- निधि निधि रस चद्रोसंख्य संवत्सरेहि
विशदनमसिमासे सप्तमी मंदवारे।
नलवरवरदुर्गे चन्द्रनाथस्य चैत्ये
विरचितमिति भक्त्या वेशवामंतसेन।।

४०४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल ४ । वे० सं० ५३६ । ड भण्डार ।

४०४२. भक्तामरस्तोत्रपूजा''''' । पत्र स॰ ६ । ग्रा० ११×५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । श्र भण्डार ।

४०४३. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे॰ सं० २५१। च भण्डार। ४०४४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० स० ४४४। व्य भण्डार।

४०४४. भाद्रपद्पूजासंग्रह— द्यानतराय। पत्र सं० २६ से ३६ । आ० १२३×७३ इ न । भाषा— हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२२ । छ मण्डार ।

४०४६. भाद्रपद्पूजासंग्रहः । । पत्र सं० २४ से ३६ । ग्रा० १२३×७३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्श । वे० सं० २२२ । ह्य भण्डार ।

४०४७. भाविजित्तपूजा''' '''। पत्र सं० १। म्रा० ११६×५२ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २००७ । ट भण्डार ।

४०४८. भावनापचीसीव्रतोद्यापन""" । पत्र सं० ३ । आ० १२३×६ इच । भाषा-सस्तृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०२ । ख भण्डार ।

४०४६. मंडलों के चित्र"""। पत्र स० १४। म्रा० ११×५ इ च । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा सम्बन्धी मण्डलो का चित्र । ले० काल × । वे० स० १३८ । स्व भण्डार ।

विशेष-चित्र सं० ५२ है। निम्नलिखित मण्डलो के चित्र हैं -

१. श्रुतस्कध	(कोष्ठ २)	७ ऋषिमंडल	(" ধ্
२. त्रेपनिकृया	(कोष्ठ ५३)	५. सप्तऋपिमडल	(₉ ,
३. वृहद्सिद्धचक	(" ٤٤)	६, सोलहकारएा	(" २५६)
४. जिनगुरासंपत्ति	(,, १०६)	१०. चौबीसीमहाराज	(,, १२०)
५. सिद्धकूट	(" १०६)	११ शातिचक्र	(" २४)
६ जितामिए।पार्श्वना	थ (,, ५६)	१२. भक्तामरस्तोत्र	(" ४५)

f

<u>ئ</u> ئ

```
(कोष्ठ
                                      ३२. ग्रंकुरारोपए।
१३ बारहमासकी चौदस (कोष्ठ १६६)
                                                                  }
१४. पाचमाह की चौदस ( , २४)
                                      ३३. गण्धरवलय
                                                         ( ,, ४५ )
                                      ३४. नवग्रह
                                                                (3
१५. ग्रह्मातका मंडल
                  ३५. सुगन्धदशमी
                                                         ( 55
                                                               E0 )
१६. मेघमालावत -
                  ( ,, १५० )
१७. रोहिस्मीवत
                  (कोष्ठ ६१)
                                                              २५ )
                                      ३६. सारसुतयंत्रमंडल
१८ लब्धिविधान
                  ( ,, 5 ? )
                                      ३७. शास्त्रजी का मडल
                                                         ( ,, १२ )
                  ( ,, २६ )
                                      ३८. ग्रक्षयनिधिमंडल
                                                         ( ,, १५० )
१६. रत्नत्रय
                                      ३१. ग्रठाई का मडल
                                                         (,, 42)
                  ( ,, १२० )
२०. पञ्चकल्याएक
२१. पञ्चपरमेष्ठी
                                      ४०, ग्रंकुरारोपएा
                  ( 535 ,, )
                                                         (,,-)
२२. रविवारव्रत
                   ( ,, 58)
                                      ४१. कलिकुंडपार्श्वनाथ
                                                         ( ,, = )
                                      ४२. विमानशुद्धिशातिक (,, १०८)
२३. मुक्तावली
                  ( ,, 5 ? )
२४. कर्मदहन
                · ( 3) (Y= )
                                      ४३, वासठकुमार
                                                          ( ,, ५२)
२५. कांजीबारस
                   ४४. घर्मचक्र
                                                         ( ,, १५७ )
२६. कर्मचूर
                         ६४)
                                      ४५. लघुशान्तिक
                                                         (,,-)
२७ ज्येष्ठजिनवर
                                      ४६. विमानशुद्धिशातिक
                         ४६)
                                                        ( ,, 58)
२ = . वारहमाहकी पश्चमी ( ,, 🚆 ६५ )
                                      ४७. खिनवे क्षेत्रपाल व
२६. चारमाह की पञ्चमी ( ,, २५)
                                           चौबीस तीर्थङ्कर ( ,, २४)
३०. फलफादल [पञ्चमेह] ( ,, २५)
                                      ४८. श्रुतज्ञान
                                                         ( ,, १४५ )
 ३१. पाचवासो का मडल ( ,, २५)
                                      ४६. दशलक्षरा
                                                         ( 11 200)
```

४०४०. प्रति सं० २ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० सं० १३८ क । ख भण्डार ।

४०४१. मडपविधि । पत्र सं०४। म्रा० ६×४ इ'च। भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल ×। ले० काल स०१८७८। पूर्ण। वे० सं०१२४०। म्रा भण्डार।

४०४२. सडपविधि"""। पत्र सं० १। म्रा० ११३४५३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-विधि विधान। र० काल X। ते० काल X। पूर्ण। वे० सं० १८८। मा भण्डार।

४०४३. सध्यतोकपूजा """। पत्र सं० ४६। म्रा० ११६×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ते० काल ×। म्रपूर्ण। वे० सं० १२४ । ह्य भण्डार ।

रू२६] (पूजी प्रेतिष्ठी धर्व विद्यान साहित्य

ं ४०४४. महावीरनिवर्शिपूजा"" "। पत्र स० ई। ग्रा० ११×१६ इंच। मार्थो-संस्कृत । विषय-

पूजा। र० काल 🗴 । ले० काल सं० १५२१ । पूर्ण । वे० सं० ६५० । श्र भण्डार ।

विशेष--निर्वाणकाण्ड गाथा प्राकृत मे श्रीर हैं।

ं ५०४४. महावीरनिर्वाणंकल्याणपूजा """ । पर्व स० १ १ म्रा० ११×५ इंच । मीषा-सस्कृत ।

विषय-पूजा। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वै० सं० १२०० । श्र भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० १२१६) ग्रीर है।

४०४६ महावीरपूजा-- वृन्दावन । पत्र सं० ६ । श्रा॰ ८×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वै० सं० २२२ । छ मण्डार ।

४०४७. मांगीतुङ्गीगिरिमंडलपूजा—विश्वभूषणा पित्र सं० १३। आ० १२४१३ इँच। माषा— संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल सं० १७५६१ ले० काल स० १९४० वैशाख बुदी १४। पूर्ण। वे० स० १४२। ख भण्डार।

विशेष-भूपारम्म के १८ पद्यों में विश्वभूषणा कृत शतनाम स्तोत्र है।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

भागाम अशास्त । नम्न अवार ह

श्रीमूलसधे दिनकृद्विभाति श्रीकुत्दकुत्दाख्यमुनीद्रचर्द्दः । महद्बलात्कारगगादिगच्छे लव्धप्रतिष्ठा किलपचनाम ॥१॥

> जातोऽभौ किलधर्मकीत्तिरमल वादीभ साद्गीलवत्त साहित्यागमतक्कीपाठनपद्धचारित्रभारोद्वह ।

तत्पट्टे मुनिशीलभूषणगरिण शीलाबरवेष्टितः

तत्पट्टे मुनि ज्ञानभूषण्यमहान सौस्यत्कला केवली

भीमञ्जगद्भूषनवेदभूषनैयायिकाचारविचारदक्षः।

र्कवीन्द्रचन्द्रौरिवं कालिवास-पट्टे तदीये रभवत्प्रतापी ॥३॥ सत्पट्टे प्रकटी जीत विश्वभूषेण योगिनः ।

तैनेद रिचितो यज्ञ मध्यात्मार्युक हेतवे ॥४॥ चंदविह्न रिविश्वन्द्रशसरे माघमासके

एकादश्यामगमत्पूर्णमेवात्मलिकपुरे ॥५॥

श्टेश्च प्रति सं २ र । पत्र सं ० १० । खेल काल सं ० १८१६ । वे व सं ० ५६७६ । उ मण्डार ।

विशेष—मागी तु गी की कमलाकार मण्डल दिवना भी है। पत्री का कुछ हिस्सा चूहीने काट रखा है।

पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

४०४६. मुकुटसप्तमीव्रतोद्यापन "। पत्र सं० २। म्रा० १२३४६ इ'च। भाषा संस्कृत। विषय-घूजा। र० कील ४। ले० काल सं० १६२८। पूर्ण। वे० सं० ३०२ । ख भण्डार।

४०६०. मुक्तावलीव्रतपूजा "। पत्र सं०२। ग्रा० १२×५ है इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं०२७४। च भण्डार।

४०६१. मुक्तावली व्रतोद्यापंनपूजा"" "ं पत्र सं०१६। ग्रा॰ ११३×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० कांल ×। ले० काले सं०१८६६। पूर्ण। वे० सं०२७६। च मण्डार।

विशेष--महात्मा जोशी पन्नालाल ने जयपुर मे प्रतिलिधि की थी।

४० देर. मुक्तावती व्रतिविधान """। पत्र सं० २४। म्रा० दर्भ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा एव विधन। र० काल ×। ले० काल सं० १६२४। पूर्ण। वे० सं० २४८। ख भण्डार।

४०६३. मुक्तावलीपूजा—वर्णी मुखसांगर। पत्र सं०३। ग्रा० ११×५ इंच १ भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६५। इक भण्डार।

४०६४. प्रति सं० २। पत्र स० ३। ले० काल ४। वे० सं० ४६६। ङ भण्डार।

४८६४. सेघमालाविधि " " " । पत्र स० ६। आ० १०×४३ इंच । भाषा- संस्कृत । विषय-त्रत विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ⊏६६ । ऋ भण्डार ।

४०६६. मेघमालाञ्जतोद्यापनपूजा " " । पत्र सं०३। म्रा०१०ई×५ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-अत पूजा। र० काल ×। ले० काल स०१६६२। पूर्ण। वै० सं०५८०। आ भण्डार।

्र ४०६७. रत्नत्रयखद्यापनपूजा "। पत्र स० २६। म्रा० ११ हे×५ है इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६२६। पूर्ण । वे० सं० ११६। इस भण्डार ।

विशेष-१ भपूर्ण प्रति भीर है।

४०६८. प्रति सर्व रापत्र सर ३०। ते काल 🗴 । वे व सर ६९। मा भण्डार।

४०६६. रत्नत्रयं जयमाला '''। पत्र सं ४ । ग्रा० १० ई×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६७ । ऋ भण्डार ।

ं विशेष—ंहिन्दी मे भर्ये दिया हुमा है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २७१) भीर है। ४०७०. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल स० १९१२ भादवा सुदी १। पूर्या। वे॰ सं० १५६। स्त भण्डार।

विशेष - इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १५६) भीर है।

```
४२८ ] [ पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य
```

४०७१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ६४३। ङ भण्डार।

५०७२. प्रति सं०४ | पत्र सं०५ | ले काल सं०१ = ६२ भादना सुदी १२,1 ने० सं०२६७ | न

४०७३ प्रति सं० ४। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० स० २००। मा भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २०१) ग्रीर है।

१०७४. रत्नत्रयज्ञयमालः । पत्र सं०६। ग्रा०१०४७ इंच। भाषा-ग्रपञ्च श। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स०१८३३। वे० सं०१२६। छ भण्डार।

विशेष---संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं। पत्र ५ से ग्रनन्तव्रतकथा श्रुतसागर कृत तथा ग्रनन्त नाथ पूजा दी हुई हैं।

१०७४. प्रति सं०२। पत्र सं०५। ले० काल सं०१८६ सावन सुदी १३। वे० सं०१८६। छ

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया इसी वेष्ट्रन मे और हैं।

१०७६. रत्नत्रयजयमाल : ""। पत्र सं० ६ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८२७ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे॰ सं० ६८२ । श्र भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वै० सं० ७४१) ग्रीर हैं।

४०७७. प्रति स०२। पत्र स०३। ले० काल 🗙 । वै० सं० ७४४। च भण्डार।

४०७८. प्रति सं०३। पत्र सं०३। ले० काल 🗴 । वे० सं० २०३। म्ह भण्डार।

४०७६. रत्नत्रयज्ञयमालाभाषा—नथमल । पत्र स० ५। ग्रा० १२×७३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १९२२ फाग्रुन सुदी न । ले० काल × । पूर्ग । वे० स० ६१३ । स्र भण्डार ।

४०८०. प्रति सं० २। पत्र स० ७। ले० काल स० १९३७। वे० स० ६३१। क भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० ६२६, ६३०, ६२७, ६२८, ६२५) और है।

४०८१. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल 🗙 । वे० सं० ८५ । घ भण्डार ।

४०८२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १९२८ कार्त्तिक बुदी १०। वे० सं० ६४४। ह

विशेष — इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ स॰ ६४४, ६४६) ग्रीर हैं।

४०६३. प्रति सं० ४ ।पत्र सं० ७ । ले० काल 🗙 । वे० सं० १६० । छ भण्डार ।

४० ५४ . रस्नत्रयज्ञयमात् " """। पत्र सं० ३ । ग्रा० १३२ \times ४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल \times । ते० काल \times । वे० सं० ६३६ । क भण्डार ।

४८८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ६६७ । च भण्डार ।

प्रम्ह. प्रति सं०३। पत्र स०५। ले० काल सं०१६०७ द्वि० ग्रासोज बुदी १। वे० म०१६५। मा भण्डार।

४०८७. रत्नत्रयपूजा--पं० आशाधर । पत्र स०४ । आ० ८३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय--पूजा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० १११० । आ भण्डार ।

४०८८ रत्नत्रयपूजा-केशवसेन । पत्र स० १२ । आ० ११×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६६ । च भण्डार ।

४०८६ प्रति सं०२। पत्र सं०८। ले० काल × 1 वे० सं० ४७६। व्य भण्डार।

४०६०. रत्नन्नयपूजा —पद्मतन्दि । पत्र सं०१३ । ग्रा०१०३४५३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे०, सं०३०० । च भण्डार ।

४०६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६३ मंगसिर बुदी ६ । वे० स० ३०५ । च भण्डार ।

४०६२. रत्नत्रयपूजा " """। पत्र सं०-१५ । ग्रा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० स० ४७८ । श्रा भण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० ५८३, ६६६, १२०५, २१५६) ग्रीर हैं।
५०६३. प्रति सं० २। पत्रं सं० ४। ले० काल सं० १६८१। वे० सं० ३०१। ख मण्डार।
५०६४. प्रति सं० ३। पत्र स० १४। ले० काल ४। वे० सं० ८६। घ मण्डार।
५०६४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १६१६। सं० वे० ६४७। इस् भण्डार।
विशेष—छोट्सलाल ग्रजमेरा ने विजयलाल कासलीवाल से प्रतिलिपि करवायी थी।

४०६६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १८। ले० काल स० १८५८ पौप सुदी ३। वै० सं० ३०१। च भण्डार।

विशेष--इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ३०२, ३०३, ३०४) और हैं।

४०६७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६। ले० काल ४। वे० सं० ६०। व्य भण्डार।

विशेय-इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ४८२, ५२६) और है।

४०६८. प्रति सं० ७। पत्र सं० ७। ले० काल 🗙 १ प्रपूर्ण। वे० सं० १६७४। ट भण्डार।

४०६६. रत्नत्रयपूर्ता—द्यानतराय। पत्र सं २ से ४ । ग्रा० १० ई×५२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी ३। प्रपूर्ण। वै० सं० ६३३। क भण्डार।

४१०० प्रति सं०२। पत्र सं०६। ले० काल ×। वे० सं० २०१। ज भण्डार।

४१०१ रत्नत्रयपूजा-- ऋषभदास । पत्र सं० १७ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-हिन्दी (पुरानी) विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८४६ पीप बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ४६६ । ऋ भण्डार ।

४१०२. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। म्रा० १२ई×५ई इंच। ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० ३६५। व्या भण्डार।

विशेष-संस्कृत प्राकृत तथा ग्रपभ्र श तीनी ही भाषा के शब्द हैं।

ग्रन्तिम---

सिहि रिसिकित्ति मुहसीसै,

रिसह दास बुहदास भएरिसे।

इय तेरह पयार चारित्तज,

संखेवे भानिय उपवित्तउ ॥

५१०३. रक्षत्रयपूजा'''''''' । पत्र सं० ५ । ग्रा० १२४६ इंच । मापा-हिन्दी । विषय-पूजा । र॰ काल ४ । ले॰ काल ४ । पूर्ण । वे॰ स॰ ७४२ । स्त्र भण्डार ।

४१०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वे० सं० ६२२ । क भण्डार ।

४१८४. प्रति सं०३। पत्र सं०३३। ले॰ काल सं० १९९४ पौप बुदी २। वे० स०६४९। ङ भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६४८) ग्रीर है।

४१८६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० १०६। भू भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १०६) ग्रीर है।

४१०७. प्रति सं ८ ४ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १६७८ । वे० सं० २१० । छ भण्डार ।

४१० म. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ३१ म । व्य भण्डार ।

४१०६. रत्नत्रयमंडलियान"""। पत्र सं० ३५ । ग्रा० १०४६ इंच । भापा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल × । वे० सं० ५७ । व्य भण्डार ।

४१४०. रत्नत्रयविधानपूजा—पं० रत्नकीत्ति । पत्र सं० ६। ग्रा० १०×४६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एवं विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५१ । इस भण्डार ।

४१११ रत्नत्रयविधान "" । पत्र सं०१२। म्रा०१०३८४६ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एव विधि विधान । र० काल ४ । ले∙ काल सं०१ मन र फाग्रुन सुदी ३। वे० सं०१ हह । ज भण्डार । पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

ł

४११२. रत्नत्रयविधानपूजा—हेकचन्द । पत्र सं० ३६ । म्रा० १३×७३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-

४११३ प्रति सं०२। पत्र सं०३३। ले० काल ×। वे० सं०१६७। स्त भण्डार।
४११४. रत्नत्रयत्रतीद्यापन''' ''''''। पत्र सं०६। मा०७×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा।
र० काल ×। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे॰ स०६५०। स भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६५३) ग्रीर है।

४११४ रत्नावली व्रतिषधान—व्र० कृष्णदास । पत्र सं० ७ । श्रा० १०×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि विधान एवं पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६८४ चैत्र बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । श्र

विशेष-प्रारम्भ- श्री वृषभदेवसत्यः श्रीसरस्वत्ये नमः ॥

जय जय नाभि नरेन्द्रसुत सुरगरा सेवित पाद ।
तत्व सिंधु सागर लित योजन एक निनाद ।।
सारद गुरु चररो नमी नमु निरक्षन हंस ।
रत्नावित तप विधि कह तिम वाधि सुस वंश ॥२॥

चुपई— जंबूद्वीप अरत उदार, वदू वही घरणीघर सार। तेह मध्य एक ग्रार्य सुखंड, पञ्चम्लेक्षधर्माति ग्रखंड ॥ चद्रपुरी नयरी उद्दाम, स्वर्गलोक सम दीसिधाम । उच्चैस्तर जिनवर प्रासाद, भल्लर ढोल पटहशस नाद ॥

भन्तिम - प्रमुक्तिम सुतिन देईराज, दिक्षा लेई करि ग्रातम काज ।
सुक्ति काम नृप हुउं प्रमाण, ए ब्रह्म पूरमल्लह वाण ॥१८॥

दहा— रत्नावित विधि आदरुं, भावि सूं नरनारि।

तिम मन विद्युत कल लहु, आसु भव विस्तारि।।१६॥

मनह मनोर्थ संपित होई, नारी वेद विद्येद।

पाप पङ्क सिव कुमािक, रत्नावित वहु भेद।

जे किससुएसि सुविधि, विश्ववन होइ तस दास।

हर्ष सुत नकुल कमल रिव, किह ब्रह्म कृष्ण उल्लास।।

इति भी रत्नावली वत विभाग निरुपण श्री पास भवतिर सम्बन्ध समाप्त ।।

स० १६८५ वर्षे चैत्र सुदी २ सोमे ब्र० कृष्ण्दास पूरनमल्लजी तांत्राष्य व्र० वर्द्ध मान लिखित ।।
४११६. रविव्रतोद्यापनपूजा—देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्र स० ६ । आ० १२४५ इंच । भाषा-सस्कृत ।
विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल ४ । वे० सं० ५०१ । स्त्र भण्डार ।

४११७. प्रति सं० २। पत्र स० ६। ले० काल स० १८०८। त्रे सं० १०६०। स्र भण्डार।

४११८ रेवानदीपूजा—विश्वभूषण्। पत्र सं०६। श्रा०१२३४६ इच। भाषा–सस्कृत । विषय– पूजा। र० काल स०१७३६। ले० काल स०१६४०। पूर्ण। वे० सं०३०३। खभण्डार।

इति श्री रेवानदी पूजा समाप्ता।

इसका दूसरा नाम श्राहूड कोटि पूजा भी है।

५११६ रैंद्व्रत—गंगाराम । पत्र स० ४ । ग्रा० १३×५ ईंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ने० स० ४३६ । व्य भण्डार ।

४१२०. रोहिग्गित्रतमं इलविधान—केशवसेन । पृत्र स० १४ । ग्रा० ६२४४३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा विधान । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० ७३८ । ऋ भण्डार ।

विशेष—जयमाला हिन्दी मे है। इसी भण्डार मे २ प्रतिया वे० स० ७३६, १०६४) ग्रीर हैं। ४१८९ प्रति सं० २ । पत्र स० ११। ले० काल स० १८६२ पौष बुदी १३। वे० सं० १३४। ज

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० २०२, २६२) और हैं।

४१२२ प्रति सं० ३। पत्र सं० २०। ले० काल सं० १६७६। वे० स० ६१। व्य भण्डार।

४१५३. रोहिसीव्रतोद्यापन ""। पत्र स० ५। ग्रा० ११×६ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा।

र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्स। वे० स० ५५६ । ग्रा भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७४०) ग्रीर है।

४१२४. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १६२२। वे० स० २६२। ख भण्डार।

४१२४. प्रति स० ३। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० सं० ६६६। इ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६४) ग्रीर है।

४१२६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० स० ३२४। ज भण्डार।

४१२७. लघुअभिषेक विधान ""। पत्र सं०३। ग्रा०१२ रे४५० इ च। भाषा सस्कृत। विषय-भगवान के ग्रभिषेक की पूजा व विधान। र० काल 🗴। ले० काल स०१९६६ वैज्ञाख मुदी १४। पूर्ण। वे० मं०१७७। ज भण्डार।

४१२८. लघुकल्याग् "" " पंत्र सं०८। ग्रा० १२×६ इंच। भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रभिषेक विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६३७। क भण्डार।

४१२६. प्रति स०२। पत्र स०४। ले० काल ×। वे० सं०१ पर । ट भण्डार।

४१३०. लघुत्रानन्तंत्रतपूजा " " । पत्र सं० ३ । ग्रा० १२×५३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८३६ ग्रासीज बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १८५७ । ट मण्डार ।

४१३१. लघुशांतिकपूजाविधांन : " " पत्र सं०१४। म्रा० १०३×४३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६०६ माघ बुदी = । पूर्ण । वे० स० ७३ । स्त्र भण्डार ।

४१३२. प्रति स० २ | पत्र स० ७ । ले० काल स० १८६० । अपूर्ण । वे० स० ८८३ । आप्र भण्डार । ४१३३. प्रति स० ३ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १९७१ । वे० सं० ६९० । इस भण्डार । विशेष—राजुलाल भौंसा ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

४१२४. प्रति सं० ४। पत्र स० १०। ले० काल स० १८८६ । वे० स० १४६। छ भण्डार। ४१२४. प्रति स० ४। पत्र स० १४। ले० काल 🗙। वे० स० १४२। ज भण्डार।

४१३६. लघुश्रेयविधि—स्रभयनिद्। पत्र सं० ६। ग्रा० १०२ ४७ इ च। भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल 🗴 । ले० काल स० १६०६ फागुरा सुदी २। पूर्ण । वे० स० १५८ । ज भण्डार ।

विशेष-इसका दूसरा'नाम श्रेयोविधान भी है।

४१३७ लघुस्तपनदीका—पं० भावशर्मा। पत्र सं० २२। ग्रा० १२×१५३ इ च । भाषा-सस्कृत। विषय-ग्रभिषेक विधि। र० काल स० १५६०। ले० काल सं० १८१५ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण। वे० सं० २३२। श्रमण्डार।

४१२८ लघुस्तपत " "। पत्र सं० ४ । ग्रा० ८४४ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय-ग्रभिषेक विधि । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ७३ । ग भण्डार ।

४१३६. लिब्धिविधानपूजा—हर्षकीित्त । पत्र सं० २। ग्रा० ११३×५३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२०६ । श्र भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं॰ १९४६) श्रीर है।

४१४०. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वै० सं० ६६४। ड भण्टार।

४१४१ प्रति सं०३। पत्र सं०३। ले० काल। वे० स० ७७। म्ह भण्टार।

४१४२. लिब्धिविधानपूजा" । पत्र सं ० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा ।

रः काल 🗴 । ले॰ काल 🗴 । ग्रयूर्ण । वे॰ स॰ ४७६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० स० ४६४, २०२०) ग्रीर हैं।

४१४३. प्रति सं०२। पत्र स॰ १६। ले॰ काल Х | वे॰ स॰ १६८ | स्त्र मण्डार |

४१४४. प्रति सं २ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० सं० ८७ । घ भण्डार ।

४१४४. प्रति संट ४। पत्र संव १०। लेव काल सव १६२०। वैव संव ६६३। क भण्डार।

४१x६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० स० ३१८ । च भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वै० से० ३१६, ३२०) स्रीर हैं।

४१४७. प्रति सं० ६। पत्र स० ७। ले० काल ×। वे० सं० ११७। छ भण्डार।

४१४८. प्रति सं०७। पत्र सं०२ से ६। ले० काल स०१६०० भाववा सुदी १। प्रपूर्ण। वै० स॰

३१७। ज भण्डार।

विशेष--इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १६७) और है।

४१४६. प्रति स० = । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६१२ । वे० सं० २१४ । मा मण्डार ।

४१४०. प्रति संव ६। पत्र संव ७। त्रेव काल सब १८८७ माह सुदी १। वेव संव ५३। व भण्डार।

विशेष--मंडल का चित्र भी दिया हुमा है।

४१४१. लब्धिविधानव्रतोद्यापनपूजा" ""। पत्र सं० ६। मा० ११×५ इ च । भाषा-सस्कृत ।

विषय-ूजा। र० काल 🗶 । ले० काल स० भाववा सुदी ३। पूर्ण । वे० स० ७४ । ग भण्डार ।

विशेष--मन्नालाल कासलीवाल ने प्रतिलिपि करके चौधरियो के मन्दिर में चढ़ाई।

४१४२. प्रति सं० २ | पत्र सं० १० | ले० काल × | वे० सं० १७६ । स्त भण्डार ।

४१४३ ताढिधविधानपूजा—झानचन्द्। पत्र सं० २१। ग्रा० ११×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-

पूजा। र० काल स० १९५३। ले० काल सं० १९६२। पूर्या। वे० सं० ७४४। स्त्र भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ स॰ ७४३, ७४४/१) ग्रीर हैं।

१९४४ लिडियविधानपूजा''' । पत्र स० ३५ । ग्रा० १२×५६ इ च । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा।
द० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७० । च भण्डार ।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

प्रथं लिब्धिविधानउद्यापनपूजा : "" पत्र स० म। ग्रा० ११६ ४५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल 🗴 । ले० काल सं० १९१७ । पूर्या। वे० सं० ६६२ । इस भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक श्रपूर्ण प्रति (वे० सं० ६६१) श्रीर है।

४१४६. प्रति सं० २। पत्र स० २४। ले० काल सं० १६२६। वे० सं० २२७। ज भण्डार।

४१४७. वास्तुपूजा " "" पत्र सं० ४ | म्रा० ११६४५ इंच | भाषा-सस्कृत । विषय-गृह प्रवेश पूजा एव विधान । र० काल 🔀 । ले० काल 🔀 । पूर्ण । वे० स० ५२४ । स्त्र भण्डार ।

४१४८. प्रति सं०२। पत्र सं०११। ले० काल सं० १६३१ वैशाख सुदी ८। वे० सं०११६। छ

विशेष--उछवलाल पांड्या ने प्रतिलिपि की थी।

४१४६. प्रांत स०३। पत्र सं०१०। ले० काल सं०१६१६ बैशाख सुदी म। वे० सं०२०। ज भण्डार।

४१६० विद्यमानबीसतीर्थङ्करपूजा—नरेन्द्रकीित्त । पत्र सं०२। म्रा० १०४४ इंच। भाषा— संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल सं० १८१०। पूर्ण। वे० स० ६७२। स्र भण्डार।

४१६१ विद्यमानबीसतीर्थेङ्करपूजा—जौंहरीलाल विलाला । पत्र स० ४२ । ग्रा० १२×७ दे इंच । भाषा-हिन्दी, विषय-पूजा। र० काल सं० १९४६ सावन सुदी १४। ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० ७३६ । ग्रा भण्डार।

४१६२. प्रति सं०२। पत्र स०६३। ले० काल ×। वे० सं०६७४। इ मण्डार।

४१६३. प्रति सं०३। पत्र स० ५६। ले० काल सं० १९५३ द्वि० ज्येष्ठ बुदी २। वे० स० ६७८। ज भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६७६) स्रीर है।

४१६४. प्रति स० ४। पत्र सं० ४३। ले० काल ×। वे० सं० २०६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे इसी वेष्ट्रन में एक प्रति और है।

४१६४. विमानशुद्धि—चन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ६ । ग्रा० ११३×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-विधि विधान एव पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७ । ब्रा भण्डार ।

विशेष-- कुछ पृष्ठ पानी मे भीग गये हैं।

!_

४१६६. प्रति सं०२। पत्र सं०११। ले॰ काल ४। वे॰ सं∙१२२। छ भण्डार।

बिशेष-गोधो के मन्दिर में लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि को थी।

४१६७ विमानशुद्धिपू ना""" "। पत्र स०१२। ग्रा०१२३×७ इ च। भाषा-सम्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ने० काल स०१६२०। पूर्गा। वे० सं०७४६। ग्रा भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १०६२) श्रीर है।

४१६८ प्रति सं०२।पत्र स०१०। ले० काल ×। वै० स०१६८। ज भण्हार।

विशेष-शान्तिपाठ भी दिया है।

४१६८. विवाहपद्धति—सोमसेन । पत्र स० २५ । ग्रा॰ १२४७ डच । भाषा-सस्तृत । विषय जैन विवाह विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे॰ सं॰ ६६२ । क भण्डार ।

४१७०. विवाहिविधि - ' ' ' । पत्र स० म। आ० ६×५ इ च। भाषा-सस्यृत । विषय-जैन विवाह विधि । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११३६ । श्र मण्डार ।

४१७१. प्रति सं०२। पत्र स० ४। ले० काल ×। वे० स० १७४। ख मण्डार।

४१७२ प्रति सं०३। पत्र सं०३। ले० काल × 1वे० स० १४४। छ भण्डार।

४१७३. प्रति सं०४। पत्र सं०६ ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ बुदी १२। वे० मं०१२२। छ भण्डार। ४१७४. प्रति सं०४। पत्र सं०८। ले० काल ×। वे० म० ३४६। व्य भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २४६) और है।

४१७४. विष्णुकुमार मुनिपूजा—वाबूलाल । पत्र स० ६ । ग्रा० ११×७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७४४ । स्त्र भण्डार ।

४१७६. विहार प्रकर्ण "। पत्र सं०७। ग्रा० प्र३३ इ'च। भाषा-सस्कृत। विषय-विधान। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण। वै० स० १७७३। ग्रा भण्डार।

४१७७. व्रतिनिर्णय— मोहन । पत्र स० ३४ । ग्रा० १३×६, इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल स० १६३२ । ले० काल स० १६४३ । पूर्ण । वे० स० १८३ । ख्र भण्डार ।

विशेष—श्रजयदुर्ग मे रहने वाले विद्वान् ने इस ग्रन्थ की रचना की थी। ग्रजमेर मे प्रतिलिपि हुई।

४१७८ व्रतनास । पत्र स०१०। ग्रा०१३×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-व्रतो के नाम। र० काल × । ले॰ काल × । पूर्णा वि० स०१८३७। ट भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त २ पत्रों पर् ध्वजा, माला तथा छत्र आदि के चित्र हैं। कुल ६ चित्र है। ४१७६ व्रतपूजासमहः " " । पत्र सं० ३६ । आ० १२३×१३ इ च । भाषा—कस्कृत । विषय—पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण । वे० स० १२८ । छू भण्डार ।

विशेष--निम्न पूजाग्रो का सग्रह है।

नाम पूजा	कर्त्ता	भाषा	विशेष
वारहसौ चौतीसव्रतपूजा	श्रीभूषरा	संस्कृत	ने० काल सं० १८००
विशेष—देबगिरि मे पाइ	र्वनाय चैत्यालय मे लिखी गई।		पौप बुदी ४
जम्बूद्वीपपूजा	जिनदास	77	ले० काल १८०० पौप बुदी ६
रत्नत्रयपूजा .		99	_{छ छ छ} पौष बुदी ६
वीसतीर्थं द्ध रपूजा		हिन्दी	
श्रुतपूजा	ज्ञानभूषरा	संस्कृत	
ग्रस्पूजा	जिनदास	97	
सिद्धपूजा	पद्मनिन्द	77	
पोडशकारसा		"	
दशलक्षरापूजाजयमाल	रह्मू	अ पभ्रं श	-
लघुस्वयंभूस्तोत्र	-	संस्कृत _	
नन्दोश्वर उद्यापन	delings	23	ने० काल सं० १८००
समवशरगपूजा	रत्नशेखर	57	
ऋषिमंडलपूजाविधान	ग्रुग्।नन्दि	93	
तत्वार्थसूत्र	उमास्वाति '	59	
तीसचौबीसीपूजा	शुभचन्द	संस्कृत	
धर्म चक ्रपूजा	-	77	
' जिनगुरासंपत्तिपूजा	केशवसेन	93	र० काल १६६५
रत्नत्रयपूजा जयमाल	ऋषभदास	श्रपभ्र'श	
नवकार पॅतीसीपूजा	ennes.	संस्कृत	
कर्मदहनपूजा	शुभचन्द	77	
रविवारपूजा		27	
पञ्चकल्याग्यकपूजा	सुघासागर	57	

११८० झतिधान। पत्र सं०४। भ्रा० ११२×४२ दंच। भाषा-हिन्दी। विषय-विधि विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६७६। स्त्र भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे॰ सं० ४२४, ६६२, २०३७) झीर हैं।

४१८१. प्रति सं०२ | पत्र स०३० | ले० काल × | वे० स० ६८० | फ भण्टार |

४१८२. प्रति सं० ३। पत्र स० १६। ले० काल 🗙 । वे० सं० ६७६। क मण्डार।

४१८३. प्रति सं० ४ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० सं० १७८ । छ मण्डार ।

विशेष-चौवीस तीर्थदूरों के पंचकल्याएक की तिथियां भी दी हुई हैं।

४१८४. व्रतिधानरासी—दौलतरामसंघी। पत्र सं० ३२। म्रा० ११४४ दै दं न। भाषा—हिन्दी विषय—विधान। र० काल स० १७६७ म्रासीज सुदी १०। ले० काल सं० १८३२ प्र० भादया बुदी ६। पूर्ण। वे० मं १६६। छ भण्डार।

४१८४. व्रतिविवर्गाः ""। पत्र सं० ४ । म्रा० १०३४४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-व्रत विधि र० काल ४ । ले० काल ४ । म्रपूर्ण । वे० स० ८८१ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १२४६) और है।

४१८६ प्रति स०२। पत्र स०६ से १२। ले० काल ×। ब्रपूर्ण वे० स०१८२३। ट मण्डार। ४१८० व्रतिबंदरणः । पत्र स०११। ब्रा०१०×५ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-व्रतिविधि र० काल ×। ले० काल ×। ब्रपूर्णं। वे० स०१८३६। ट भण्डार।

४१८८ त्रतसार—स्त्रा० शिवकोटि । पत्र सं० ६ । आ० ११×४३ इ च । भाषा-संस्तृत । विषय यत विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७६४ । ट भण्डार ।

४१८ त्रतोद्यापनसम्बद्धः । पत्र सं० ४५६। म्रा० ११८४६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय सत्तपूजा। र० काल ४। ले० काल स० १८६७। म्रपूर्ण। वे० सं० ४५२। स्त्र भण्डार।

विशेष--- निम्न पाठो का सग्रह है--

नाम	कर्त्ता	भाषा
पल्यमडलविधान	शुभचन्द्र	संस्कृत
त्रक्षयदशमी विधान	g-vices	"
मौनिव्रतोद्यापन		73
मीनिव्रतोद्यापन	parame.	71

पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

पचमेरुजयमाला	भूधरदास	हिन्दी
ऋषिमंडलपूजा	पुरानन्दि	संस्कृत
पद्मावतीस्तोत्रपूजा		75
पञ्चमेरुपूजा		"
घनन्तव्रतपूजा		77
मुक्तावलिपूजा		77
शास्त्रपूजा '		77
षोडशकारसा व्रतोद्यापन	केशवसेन	99
मेघमालाव्रतोद्यापन	-	າາ
चतुर्विशतिव्रतोद्यापन	-	57
दशलक्षरापूजा	-	77
पुष्पाञ्जलित्रतपूजा [वृहद]	passions	"
पञ्चमीव्रतोद्यापन	कवि हर्षकल्याएा	9)
रत्न त्रयव्रतोद्यापन [वृहद्]	केशवसेन	7)
रत्नत्रयव्रतोद्यापन		"
भ्रनन्तव्रतोद्यापन	गुणचन्द्रसूरि	7)
द्वादशमासातचतुर्दशीव्रतोद्यापन	Privates	5) ,
पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन		79
भ्रष्टाह्निकान्नतोद्यापन		99
प्रक्षयनिधिपू जा		1)
सौस्यव्रतोद्यापन	Decision	"
ज्ञानप ञ्च विशतित्रतोद्यापन	-	ກ
रामोकारपैंतीसी पूजा		73
रत्नावलिव्रतोद्यापन	denning	97
जिनगुरासंपत्तिपूजा	-	37
सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन	-	n

त्रेपनक्रियाव्रतोद्यापन		संस्रत
श्रादित्यव्रतोद्यापन		**
रोहिस्गीय्रतोद्यापन	Balance	***
कर्मचूरव्रतोद्यापन	euro.	37
भक्तामरस्तोत्रपूजा	श्री भूपरा	27
जिनसहस्रनामस्तव न	ग्रावाधर	11
द्वादशयतमडलोचापन		***
ल व्यिविधानपूजा	-	17

४१६०. प्रति सं० २। पत्र सं० २३६। ते० काल 🗴 । वे० मं० १८४। म्य भण्डार ।

निम्न पूजाओं का संग्रह है-

कर्त्ता	भाषा
-	मंस्नु त
_	हिन्दी
केदावसेन	मंस्रुत
मुमतिसागर	27
	27
गुगाचंदसूरि	,,
	77
-	7)
भ० सुरेन्द्रकोत्ति	77
	77
	33
_	"
	मुमितसागर — गुग्गचंदसूरि —

४१६१. बृहस्पतिविधान " " । पत्र सं० १ । म्रा० ६×४ इ'च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८७ । स्त्र भण्डार ।

४१६२ वृहद्गुरावलीशांतिमंडलपूजा (चौसठ ऋद्धिपूजा)—स्वरूपचंद । पत्र स० ५६। म्रा० ११×५ इ च । भाषा-हिन्दो । विषय-पूजा । र० काल सं० १६१०। ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७० । क भण्डार ।

४१६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० ६४ । घ भण्डार ।

४१६४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ६८० । च भण्डार ।

४१६४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८६ । ड भण्डार ।

४१६६. षणवित्तिचेत्रपूजा—विश्वसेन । पत्र स० १७ । आग० १०३×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-

विशेष----ग्रन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं।

पुजा | र० काल 🗙 | ले० काल 🗙 । पूर्ण | वे० सं० ७१ | ऋ भण्डार ।

श्रीमच्छ्रीकाष्ठासघे यत्त्पितित्वके रामसेन्स्यवशे।
गच्छे नदोत्तटाख्ये यगदितिह् मुखे तु छक्मांमुनीन्द्र।।
ख्यातोसौविश्वसेनोविमलतरमितर्येनयज्ञ चकार्षीत्।
सोमसुग्रामवासे भविजनकलिते क्षेत्रपालाना शिवाय।।

चौबीस तीर्थद्धरो के चौबीस क्षेत्रपालो की पूजा है।

४१६७. प्रति सं०२। पत्र सं०१७। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं०२६२। स्त्र भण्डार ∤

४१६८ पोडशकारणुजयमाल ""। पत्र स०१८। ग्रा०११३×५३ इ च। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स०१८६४ भादवा बुदी १३। वे० स० ३२६। ग्रा भण्डार।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं। इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० ६९७, २६६, ३०४, १०६३, २०४४) ग्रीर हैं।

४१६६. प्रति सं०२। पत्र सं०१४। ले० काल सं०१७६० स्रासीज सुदी १४। वे० सं०३०३। स्र भण्डार।

विशेष-संस्कृत मे भी अर्थ दिया हुआ है।

भण्डार ।

४२००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ७२० । क मण्हार । विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७२१) ग्रीर है ।

४२०१. प्रति स० ४। पत्र सं० १८। ले॰ काल ×। वे० सं० १६८। ख मण्डार।

४२०२. प्रति सं० ४। पत्र स० १६। ले० काल सं० १६०२ मंगसिर मुदी १०। वे० सं० ३६०। च

विशेष-इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३५६) और है।

४२०३. प्रति स० ६। पत्र स० १२। ले० काल ×। वे० स० २०८। मा भण्डार।

४२०४ प्रति सं०७। पत्र स०१६। ले० काल सं०१८०२ मगसिर बुदी ११। वे० स०२०८। न्य

४२०४ पोडशकारगाजयमाल—रइधू । पत्र स०२१ । श्रा०११४४ इंच । भागा-ग्रपभंश । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० ७४७ । इ. भण्डार ।

विशेष-संस्कृत टीका सहित है। इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० ==६) श्रीर है।

४२०६. पोडशकारणजयमालः ः । पत्र सं०१३। श्रा०१३४४ इ'च। मापा-झपत्रं द्या। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स०१६६। ख भण्डार।

४२०७. प्रति सं० २। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० सं० १२६। छ भण्डार।

विशेष---सस्कृत में टिप्पण दिया हुम्रा है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ स॰ १२६) मीर है।

४२ > चो डशकारणाउद्यापन : "। पत्र सं० १४ । आ० १२ X १३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल सं० १७६३ झापाढ बुवी १३ । पूर्ण । वे० स० २४१ । व्य भण्डार ।

विशेष--गोधो के मन्दिर मे प० सदाराम के वाचनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

४२०६. घोडशकारणजयमाल "" । पत्र सं० १० । आ० ११५ ×५३ इंच । भाषा-प्राकृत, संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४२ । आ भण्डार ।

४२१०. प्रतिस०२ । पत्रस० १ । ले० काल ⋉ । वे० स० ७१७ । कः भण्डार ।

४२११. पे। डशकारणजयमाल """ । पत्र स० ४२ । म्रा० १२× इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स• १६६४ माषाढ बुदो ४ । पूर्ण । वै० सं० ६६६ । स्त्र भण्डार ।

४०१२ पोडशकारणतथा दशलत्त्रण जयमाल—रइधू । पत्र सं• ३३ । मा० १०×७ इ च । मापाअर्गम्र श । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११९ । छ मण्डार ।

४२१२. पोडशकाररापूजा—केशवसेन । पत्र स०१३ । म्रा० १२×५३ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल स०१६९४ माघ बुवी ७ । ले० काल सं०१८२३ म्रासीज सुदी १ । पूर्ण । वे० सं०५१२ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स॰ ५०८) ग्रीर है।

४२१४. प्रति स० ३। पत्र सं० २१। ले० काल 🗴 । वे० सं० ३००। एव भण्डार ।

४२,१४ घोडशकारगापूजा " " । पत्र स०२। ग्रा०११×५३ इच। भाषा∽संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्णा वे० स०६६८। ऋ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६२५) ग्रीर है।

४२१६. प्रति सं० २ | पत्र सं० १३ | ले० काल × । ग्रपूर्श | वे० सं० ७५१ । क्षः भण्डार । ४२१७ प्रति सं० ३ | पत्र सं० ३ से २२ | ले० काल × । ग्रपूर्श | वे० सं० ४२४ | च भण्डार । विशेष — ग्राचार्य पूर्णचन्द्र ने मौजमाबाद मे प्रतिलिपि की थी । प्रति प्राचीन है । ४२१८. प्रति सं८ ४ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १८६३ सावसा बुदी ११ । वे० सं० ४२४ । च

भण्डार । विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ४२६) और है।

४२१६. प्रति सं ८ ४। पत्र स० १३। ले० काल ×। वे० सं० ७२। स्त भण्डार।

४२२०. षोडशकारणपूजा (षृहद्) । पत्र स० २६ । ग्रा० ११३×४६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० ७१८ । क भण्डार ।

४२२१. प्रति स**०२ । पत्र स०२ से २२ । ते॰ काल 🔀 । श्र**पूर्ण । वे॰ स० ४२६ । ञा भण्डार ।

४२२२. पोडशकारण व्रतोद्यापनपूजा—राजकीन्ति । पत्र सं० ३७। ग्रा० १२×५६ इंच । भाषा— सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल सं० १७६६ ग्रासोज सुदी १०। पूर्ण । वे० सं० ५०७। अ भण्डार ।

४२२३. घोडशकारगाञ्चतोद्यापनपूजा—सुमितसागर । पत्र सं २१ । प्रा० १२४५६ इंच । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ५१४ । ऋ भण्डार ।

४२२४ शञ्चुख्रयगिरिपूजा-भट्टारक विश्वभूषण्। पत्र सं० ६। मा० ११३×५३ इच। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० कान × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६७ । स्म भण्डार ।

४२२४ शरदुत्सवदीपिका , मडल विधान पूजा)—सिंहनन्दि । पत्र सं० ७ आ० ६४४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले॰ काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । श्रा भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ- श्रीवीर शिरसा नत्वा वीरनिदमहागुरुं।
सिंहनिदरह वक्ष्ये शरदुत्सवदीपिका ॥१॥
श्रयात्र भारते क्षेत्रे जबूद्वीपमनोहरे।
रम्पदेशेस्ति विख्याता मिथिलानामतः पुरी ॥२॥

पितमपाठ एव महप्रभाषं च हृष्ट्वा लग्नास्तया जनाः ।

भत्तु प्रभावनागं च ततोऽत्रैय प्रवर्तते ।।२३।।

तदाप्रमृत्यारम्येद प्रसिद्धं जगतीतले ।

हृष्ट्वा हृष्ट्वा गृहीतं च वैष्णावादिकशैवकै: ।।२४।।

जातो नागपुरे मुनिर्वरतर श्रीमूलसघोवरः ।
सूर्यः श्रीवरपूज्यपाद ग्रमतः श्रीवीरनंद्याह्नयः ।।
तिच्छिष्यो वर सिंघनंदिमुनियस्तेनेयमाविष्कृता ।
लोकोद्वोधनहेतवे मुनिवर बुवंतु भो सज्जनाः ।।२५।।
इति श्री शरदुत्सवकथा समाप्ताः ।।१।।

इसके पश्चात् पूजा दी हुई है।

प्र२६. प्रति स० २। पत्र स० १४। ले० काल स० १६२२। वे० स० ३०१। व्य भण्डार।
प्र२७ शातिकविधान (प्रतिष्ठापाठ का एक भाग) "। पत्र स० ३२। ग्रा० १२६ ४६
इच। भाषा-संस्कृत। विषय-विधि विधान। र० काल ४। ले० काल स० १६३२ फाग्रुन सुदी १०। वे० स०
५३७। स्त्र भण्डार।

विशेष— प्रतिष्ठा में काम ग्राने वाली सामग्री का वर्शान दिया हुना है। प्रतिष्ठा के लिये ग्रुटका महत्व-पूर्श है। मण्डलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्ति के उपदेश से इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी। १४वे पत्र से यन्त्र दिये हुये हैं जिनकी संख्या ६ द है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

ॐ नमो वीतरागायनम । परिमेष्टिने नमः । श्री गुरुवेनम ।। सं० १६३२ वर्षे फाग्रुगा सुदी १० गुरौ श्री मूलसघे भ० श्रीपदानिददेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीणिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचद्रदेवा तत्पट्टे भढलाचार्यश्रीधर्मचनद्रदेवा तत् मंडलाचार्य लिलतंकीर्तिदेवा तिच्छाप्यमडलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्ति उपदेशात् ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ स॰ ५६२, ५५४) ग्रीर हैं।

४२२८. शातिकविधान (वृहद्) " ' ! पत्र स० ७४ । ग्रा० १२×५३ इ'च । भाषा-संस्कृत् । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल स० १६२६ भादवा बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० स० १७७ । स्व भण्डार ।

विशेष--प • पन्नालालजी ने शिप्य जयचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

४२२६ प्रति सं०२ | पत्र स०१६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३३८ । च भण्डार ।

५२३०. शातिकविधि—अईहे व । पत्र स०५१ । आ०११३×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषयसंस्कृत । विषय विधि विधान । र० काल × । ले० काल स०१८६ माघ बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं०६८६ । क

४२३१. शान्तिविधि""" " । पत्र सं० ५ । ग्रा० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र॰ काल × । ले॰ काल × । ग्रपूर्श । वे० सं॰ ६८४ । क भण्डार ।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

४२३२. शान्तिपाठ (वृहद्) प्राण्या पत्र सं०४० । आ० १०४१ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल ४ । ले० काल सं० १६३७ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वै० सं० १६४ । ज भण्डार ।

विशेष--पं० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी।

४२३३, शान्तिचक्रपूजा" ""। पत्र सं०४। ग्रा० १०३×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले॰ काल सं०१७६७ चैत्र सुदी ५। पूर्ण। वे० सं०१३६। ज भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १७६) ग्रीर है।

४२३४. प्रति सं०२ | पत्र सं०३ | ले० काल × । वे० सं० १२२ | छ भण्डार |

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १२२) ग्रीर है।

४२३४. शान्तिनाथपूजा — रामचन्द्र । पत्र सं०२। ग्रा०११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०५। इक भण्डार।

४२३६. प्रति सं०२। पत्र सं०४। ले० काल ४। वे० सं०६ ५२। च भण्डार।

४२३७. शांतिमंडलपूजा """। पत्र सं० ३८ । म्रा० १०३×५३ डंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । क्ष भण्डार ।

४२३८. शांतिपाठ "" । पत्र सं०१। ग्रा०१०३ँ×५ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा के ग्रन्त मे पढा जाने वाला पाठ। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०१२२७। श्रा भण्डार।

विशेष--इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० १२३८, १३१८, १३२४) भ्रीर हैं।

४२३६. शांतिरत्नसूची "" । पत्र सं०३। ग्रा० ५३ ×४ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १९६४। ट भण्डार।

विशेष--प्रतिष्ठा पाठ से उद्धृत हैं।

४२४०. शान्तिहोसविधान — स्त्राशाधर । पत्र सं० ५ । ग्रा० ११३×६ ई इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४७ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-प्रतिष्ठापाठ मे मे संग्रहीत है ।

४२४१. शास्त्रगुरुजयमाखः । पत्र सं०२। ग्रा०११४५ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्या। जीर्या। वे० सं०३४२। च भण्डार।

४२४२. शास्त्रजयमाल—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ३ । ग्रा० १३ई×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले• काल × । पूर्ण । वे॰ सं० ६८८ । क भण्डार । ४२४३ शास्त्रप्रवचन प्रारम्भ करने की विधि "" । पत्र सं०१। ग्रा०१०५×४३ ईच। भाषा-सस्कृत । विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० स०१८८४। स्त्र भण्डार।

४२४४. शासन्देवतार्चनविधान " "। पत्र स० २१ से २५ । ग्रा० ११×५० इ च । भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०७ । द्व भण्डार ।

५२.४ शिखरविलासपूजा' · · · · । पत्र स॰ ७३। ग्रा० ११×५३ इ च । भाषा - हिन्दी । विषय् - पूजा । र० काल ४ । ले • काल ४ । पूर्ण । वै० स० ६ न १ । क भण्डार ।

४२४६. शीतलनाथपूजा-धर्मभूषण । पत्र सं० ६ । स्रा० १०३×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६२१ । पूर्ण । वे० स० २६३ । ख भण्डार ।

४२४७. प्रति सं० २ । पत्र स० १० । ले० काल सं० १६३१ प्र० स्रापाढ बुदी १४ । वे० स० १२५ । छ् भण्डार ।

४२४८. शुक्तपद्धमीत्रतपूजा'''''। पत्र सं०७। ग्रा० १२×५६ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल सं०१८ ...। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०३४४। च भण्डार।

विशेष-रचना सं । निम्न प्रकार है - ग्रब्दे रंध्र यमलं वसु चन्द्र ।

४२४६. शुक्तपद्धमीत्रतोद्यापनपूजा"" ""। पत्र स० ५ । म्रा० ११४५ ६ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे॰ सं० ५१७ । स्त्र भण्डार ।

४२४०. श्रुतज्ञानपूजा'''''' । पत्र स० ५ । ग्रा० ११×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६१ ग्रापाढ सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ७२३ । ड भण्डार ।

४२४१. प्रति सं०२। पत्र सं०६। ले० काल ×। वे० सं०६८७। च भण्डार।

४२४२. प्रति सं ३ । पत्र सं ० १३ । ले० काल 🗙 । वे० स० ११७ । छ भएडार ।

४२४३. श्रुतज्ञा नव्रतपूजा " " । पत्र सं० १० । ग्रा० ११×५३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६६ । ज भण्डार ।

४२४४. श्रुतज्ञानत्रतोद्यापनपूजा : " " । पत्र सं० ११ । आ० ११×५ हे इंच । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ७२४ । ह भण्डार ।

४२४४ श्रुतज्ञानत्रतोद्यापन ""। पत्र स० ६ । ग्रा० १०३×५ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल सं० १६२२ । पूर्ण । वे० सं० ३०० । ख मण्डार ।

४२४६. श्रुतपूजा । पत्र सं० ४। ग्रा० १०३×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० ज्येष्ठ सुदी ३। पूर्ण । वे० सं० १०७० । त्र भण्डार ।

४२४७. श्रुतस्कंधपूजा-श्रुतसागर। पत्र मं०२ से १३। ग्रा० ११३×५ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्श। वे० सं० ७०५। क भण्डार।

> ४२४८ प्रति संट २ | पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० ३४६ । च भण्डार । विजेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३५०) ग्रीर है ।

> ४२४६. प्रति सं ३। पत्र सं ७। ले काल X। वे स १ १४। ज भण्डार।

४२६०. श्रुतस्कंघपूजा (ज्ञानपञ्चिवशितपूजा)—सुरेन्द्रकीित्त । पत्र सं० ४ । ग्रा० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १८४७ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५२२ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—इस रचना को श्री सुरेन्द्रकीत्तिजी ने ५३ वर्ष की ग्रवस्था मे किया था।

१२६१. श्रुतम्कधपूजा " " " पत्र सं०५। ग्रा० ५३४७ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा।

१० काल ४। ले० काल ४। पूर्या। वे० सं० ७०२। ऋ भण्डार।

४२६२. प्रति सं० २ | पत्र सं० ५ | ले० काल × | वे० सं० २६२ । ख भण्डार | ४२६३. प्रति सं० ३ | पत्र सं० ७ | ले० काल × | वे० सं० १८८ । ज भण्डार । ४२६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × | वे० सं० ४६० । ज भण्डार |

४२६४. श्रृतस्कधपूजाकथा "" " । पत्र स० २८ । म्रा० १२३४७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा तथा कथा । र० काल × । ले० काल वीर सं० २४३४ । पूर्ण । वे० सं० ७२८ । इस भण्डार ।

विशेष—चावली (ग्रागरा) निवासी श्री लालाराम ने लिखा फिर वीर सं० २४५७ को पन्नालालजी गोधा ने तुकीगञ्ज इन्दौर मे लिखवाया। जौहरीलाल फिरोजपुर जि॰ ग्रुडगावी।

वनारसीदास कृत सरस्वती स्तोत्र भी है।

. .

४२६६ सकलीकरण्विधि "" "। पत्र स० ३। ग्रा० ११×५३ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-विधि विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७५। ऋ भण्डार।

> विभेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे॰ सं॰ ८०, ५७१, ६६१) ग्रौर है। ४२६७. प्रति सं०२। पत्र स०२। ले॰ काल ×। वे॰ स० ७२३। क भण्डार। बिक्षेप—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं॰ ७२४) ग्रौर है।

- ४२६८. प्रति स० ३। पत्र स० ४। ले० काल ×। वे० सं० ३६८। व्य भण्डार। विशेष—ग्राचार्य हर्षकीर्ति के वाचको के लिए प्रतिलिपि हुई थी। ४२६६. सकलीकरण "" पत्र सं०२१। आ० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७१ । स्त्र भण्डार ।

४२७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ७५७ । इ भण्डार ।

४२७१. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ११६) ग्रीर है।

४२७२, प्रति संo ४ | पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० संo १६४ | ज भण्डार ।

४२७३ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४२४ । व्य नण्डार ।

विशेष—हासिया पर संस्कृत टिप्पण दिया हुम्रा है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ म॰ ४४३)

४२७४. संथाराविधि" "" । पत्र स०१। आ०१०×४३ डच। भाषा-प्राकृत, सम्कृत। विषय विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स०१२१६। स्त्र भण्डार।

विवीप-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १२५१) श्रीर है।

५२७४. सप्तपद्गे "" । पत्र स०२ से १६। श्रा० ७३४४ डंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । र० काल ४। ले० काल ४। अपूर्ण । वे० सं० १६६६ । अ भण्डार ।

४२७६. सप्तपरमस्थानपूजाः """। पत्र सं०३। आ०१०३८५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स० ६६६। आ भण्डार।

४२. प्रति सं०२ । पत्र स०१२ । ले० काल × । वे० स० ७६२ । क भण्डार ।

४२७८. सप्तर्षिपूजा-- जिरादास । पत्र सं०७। मा०८×४३ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण। वे० सं०२२२। छ भण्डार।

४२७६. सप्तर्षिपूजा—तत्त्वमीसेन । पत्र सं० ६ । ग्रा० ११×५ इंच । भःषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र॰ काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ सं॰ १२७ । छ भण्डार ।

४२८०. प्रति सं०२। पत्र सं०६। ले० काल २०१६२० कार्तिक सुदी २। वे० २०१। व भण्डार।

४२८१. प्रति स० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २१६० । ट भण्डार ।

निशेष-भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति द्वारा रिचत चादनपुर के महावीर की संस्कृत पूजा भी है।

४२८२. सप्तर्षिपूजा—विश्वभूषण । पत्र सं० १६ । ग्रा॰ १०३४५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल सं० १६१७ । पूर्ण । वे० सं० ३०१ । ख भण्डार । ४२८३, प्रति सं०२। पत्र सं०६। ले० काल सं०१६३० ज्येष्ठ मुदी मावे० सं०१२७। छ्य

४२८४. सप्तर्षिपूजा....। पत्र सं०१३। ग्रा०११४५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ४। ने० काल ४। पूर्ण। वे० सं०१०६१। श्र भण्डार।

४२८४. समवशरणपूजा — लितकीर्त्त । पत्र सं० ४७। ग्रा० १०३४५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र॰ काल ४ । ले० काल सं० १८७७ मंगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ४५१ । त्र भण्डार ।

विशेष-- खुस्यालजी ने जयपुर नगर में महात्मा शभुराम से प्रतिलिपि करवायी थी।

प्रद=६ समवशरणपूजा (बृहद्) — रूपचन्द। पत्र स० ६४। श्रा० ६६ ४५ इख्र। भाषा-सस्कृत। विषय पूजा। र० काल स० १५६२। ले० काल सं० १८७६ पीप बुदी १३। पूर्ण। वे० स० ४५५। त्रा भण्डार।

विशेष—रवनाकाल निम्न प्रकार है— ग्रतीतेहगनन्दभद्रासकृत परिमिते कृप्णपक्षेच मासे ॥

४२८७. प्रति स०२। पज्ञ स०६२। ले० काल स०१६३७ चैत्र बुदी १५। वे० सं०२०६। ख भण्डार।

विशेष-पं० पन्नालालजी जोवनेर वालो ने प्रतिलिपि की थी।

५२८८. प्रति स० ३ । पत्र सँ० १५१ । ले० काल सँ० १६४० । वे० सं० १३३ । छ मण्डार ।

४२८६. समवशरणपूजा-सोमकीित्त । पर्त्र सं० २८ । आ० १२४६३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल सं० १८०७ वैशाख सुदी १ । वे० सं० वेट४ । व्य भण्डार ।

विशेष---ग्रन्तिम श्लोक-

व्याजस्तुत्यार्चा गुरावीतरागः ज्ञानार्कसाम्राज्यविकासमानः। श्रीसोमकीत्तिविकासमानः रत्नेषरत्नाकरवार्ककीत्तिः।।

जयपुर में सदानन्द सौगाग्री के पठनार्थ छाजूराम पाटनी की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४०५) भीर है।

४२६०. समवशरण्यपूजा'''''''। पत्र सं० ७ । म्रा० ११×७ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० सं० ७७४ । इः भण्डार ।

४२६१. सम्मेदशिखरपूजा--गङ्गादास । पत्र सं० १० । ग्रा० ११३८७ इच । मापा-संस्कृत । विषय-पूजा । रः काल × । ले० काल स० १८८६ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० २०११ । श्र भण्डार ।

विशेष---गगादास धर्मचन्द्र भट्टारक के शिष्य थे। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं० ५०६) श्रीर है। ५२६२. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल सं० १६२१ मंगसिर बुदी ११। वे० सं० २१०। ख ४२६३. प्रति सं०३।पत्र सं०७।ले०काल सं०१८६३ वैशाख सुदी ३।वे०सं० ४३६। वा

४२६४. सम्मेदशिखरपूजा—पं० जवाहरतात् । पत्र स० १२ । म्रा० १२×८ इध्व । भाषा-हिन्दी ।

विषय-पूजा। र॰ काल 🗙 । ले॰ काल 🗙 । पूर्गी । वै॰ सं॰ ७४८ । स्र भण्डार ।

४२६४. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। र० काल सं० १८६१। ले० काल सं० १६१२। वे० सं० ११६। ध भण्डार।

भण्डार। ४२६६. प्रति सं०३। पत्र स०१८। ले० काल सं०१६५२ ग्रासीज बुदी १०। वे० स०२४०। छ भण्डार।

४२६७. सम्मेदशिखरपूजा-रामचन्द्र । पत्र सं० ६ । ग्रा० ११३×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६५५ श्रावरा सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३६३ । श्र मण्डार । विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ११२३) श्रौर है ।

४२६८. प्रति सं०२ । पत्र सं०७। ले० काल स०१९५८ माघ सुदी १४। वे० सं०७०१। च

४२६६ प्रति सं०३। पत्र स०१३। ले० काल ×। वे० स० ७६३। ड भण्डार। विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७६४) और है।

४३००. प्रति सं०४ | पत्र सं०७ | ले० काल × । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

४३०१. सम्मेदशिखरपूजा—भागचन्द्श् पत्र (स०१० । आ० १३८४४ इंच । भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १६२६। ले० काल स०१६३०। पूर्णा विषय-पूजा। र० काल सं० १६२६। ले० काल स०१६३०। पूर्णा विषय स०७६७। क भण्डार।

विशेष- पूजा के पश्चात् पद भी दिये हुये हैं।

४३०२. प्रति सं०२। पत्र स० मा ले० काल ×। वे० सं०१४७। छ भण्डार।

विशेष-सिद्धक्षेत्रो की स्तुति भी है।

४३०३. सम्मेदशिखरपूजा—भ० सुरेन्द्रकीत्ति । पत्र स० २१ । म्रा० ११×५ इ च । भाषा हिन्दी ।

विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १९१२। पूर्ण । वे० सं० ५९१। स्त्र भण्डार। विशेप---१०वे पत्र से ग्रागे पञ्चमेरु पूजा दी हुई है।

४३>४ सम्मेदशिखरपूजाः ...। पत्र सं० ३। ग्रा० ११×४३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे∙ सं० १२३१ । स्त्र भण्डार ।

४३०४. प्रति सं०२।पत्र स०२।ग्रा०१०×५ इच।भाषा-हिन्दी।विषय-पूजा।र० काल ×।

ते॰ काल X | पूर्शा | वे॰ स॰ ७११ | ङ भण्डार |

विशेप--इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं० ७६२) ग्रीर हैं।

४३०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० २६१ । स्त भण्डार !,

४३०७. सर्वतीभद्रपूजा : """ । पत्र सं० ५ । ग्रा० ६×३६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १३६३ । ग्रा भण्डार ।

४३०८. सरस्वतीपूजा-पद्मनिन्। पत्र सं०१।ग्रा० ६४६ इंच। भाषा-पंस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ४। ले॰ काल ४। पूर्ण। वे॰ सं०१३३४। श्च भण्डार।

४३०६. सरस्वतीपूजा—ज्ञानभूवण । पत्र सं० ६ । म्रा० ८४४ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ४ । ले० काल १६३० । पूर्ण । वे० सं० १३६७ । म्रा भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ६८६, १६११, ११०८, १०१०) श्रीर हैं।

४३१०. सरस्वतीपूजाः ' ' ' पत्र सं० ३ । म्रा० ११×५६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०३ । ड भण्डार ।

विशेप-इसो भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ८०२) भ्रौर है।

४३११. सरम्वतीपूजा—सघी पन्नालाल । पत्र सं०१७ । ग्रा० १२४८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं०१६२१ । ले० काल ४ । पूर्या । वे० सं०२२१ । छ भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में इसी वैष्ट्रन में १ प्रति और है।

४२१२. सरस्वतीपूजा—नेमीचन्द बख्शी। पत्र सं० द से १७। म्रा० ११×५ इंच। भाषा— हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल स० १६२५ ज्येष्ठ सुदी ५। ले० काल सं० १६३७। पूर्श। वे० स० ७७१। क भण्डार।

४३१३. प्रति स० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ५०४ । ङ भण्डार ।

४३१४. सरस्वतीपूजा-प० बुधजनजी । पत्र स० ६ । ग्रा० ६×४३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १००६ । ग्रा भण्डार ।

४३१४. सरस्वतीपुत्ता" " " । पत्र सं० २१। म्रा० ११४४ इ च । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । 'र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । च भण्डार ।

विशेप---महाराजा माधोसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की गयी थी।

४२१६. सहस्रकृटिजिनालयपूजा ""। पत्र सं० १११ । ग्रा० ११३ ४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १६२६ । पूर्ण । वे० सं० २१३ । ख भण्डार ।

विशेष--पं० पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

४३१७. सहस्रगुणितपूजा — भ० धर्मकीर्ति । पत्र सं० ६६ । ग्रा० १२३४६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७६६ ग्रापाढ सुदी २ । पूर्ण । वै० सं० ५३६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ५५२) स्रीर है।

४३१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १६२२ । वे० स० २४६ । ख भण्डार ।

५३१६ प्रति सं०३। पत्र सं०१२२। ले० काल सं०१६६०। वे० स० ८०६। इ भण्डार।

४३२० प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० स० ६३ । मा भण्डार ।

४३२१ प्रति सं० ४ । पत्र स० ६४ । ले० काल ४ । वे० मं० ६६ । ञ मण्डार ।

िकोप—श्राचार्थ हर्षकीति ने जिहानावाद मे प्रतिलिपि कराई थी।

४३२२ सहस्रगुश्चितपूजा" ""। पत्र स० १३ । आ० १० ४१ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४३२३. प्रति सं०२। पत्र स० दद। ले० काल ×। श्रपूर्ण। वे० सं० ३४। व्य भण्डार।

४३२४. सहस्रतामपूजा—धर्मभूपगा। पत्र त० ६९। ग्रा० १०३४५३ इंच। भाषा-संस्कृत।
. विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। श्रपूर्गा। वे० सं० ३८३। च भण्डार।

४३२४. प्रति सं०२। पत्र सं०३६ से ६६। ले॰ काल सं०१८८४ ज्येष्ठ बुदी ४। अपूर्ण। वे॰ सं० ३८५। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ श्रपूर्ण प्रतिया (वे० सं० ३८४, ३८६) श्रीर हैं।

४३२६. सहस्रानामपूजा''''''। पत्र स० १३६ से १५८ । ग्रा० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३८२ । च मण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३८७) और है।

४३२७. सहस्रनामपूजा — चैनसुख । पत्र स० २२ । श्रा० १२६४८ । इ च । भाषा – हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २२१ । छ मण्डार ।

४३२८ सहस्रनामपूजा'''''' । पत्र सं १८ । ग्रा० ११×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा।
र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०७ । च भण्डार ।

४३२६ - साररंवतेयन्त्रपूजाः ''''' । पत्र सं०४। ग्रा०१०३×४६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-

४२३०. प्रति सं०२ । पत्र सं०१ । ले० काल × । वे० सं०१२२ । छ भण्डार ।

४३३१. सिद्धत्तेत्रपूजा--द्यानतराय। पत्र सं०२ । श्रा० ६३×५२ दखा भाषा-हिन्दी। विषय-

४३३२. सिद्धस्तेत्रपूजा (बृहद् —स्वरूपचन्द्। पत्र मं० ५३। ग्रा० ११३×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १६१६ कात्तिक बुदी १३। ले० काल सं० १६४१ फाग्रुए। सुदी प्र। पूर्ण। वे० सं० प्रह। ग भण्डार।

विशेष—ग्रन्त मे मण्डल विधि भी दी हुई है। रामलालजी बज ने प्रतिलिपि की थी। इसे सुगनचन्द गगवाल ने चौधरियो के मन्दिर मे चढाया।

४३३३. सिद्धत्तेत्रपूजा'''' ''' । पत्र सं० १३ । ग्रा० १३×६३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९४४ । पूर्ण । वै० सं० २०४ । छ भण्डार ।

४३३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले॰ काल × । वे॰ सं० २६४ । ज भण्डार ।

४३३४. सिद्धत्तेत्रमहातम्यपूजा "" " पत्र सं० १२६। ग्रा० ११३×५६ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १९४० माघ सुदी १४। पूर्ण । वे० सं० २२०। ख भण्डार।

विशेष-- ग्रतिशयक्षेत्र पूजा भी है।

ķ

४३३६. सिद्धचक्रपूजा (बृहद्)—भ० भातुकीत्ति । पत्र सं० १४३ । म्रा० १०३४५ इश्च । भाषा— संस्कृत । विषय पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० १७८ । ख भण्डार ।

४३३७. सिद्धचक्रपूजा 'बृहद्)—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ४१ । म्रा० १२×८ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९७२ । पूर्ण । वे० सं० ७५० । ता भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं॰ ७५१) ग्रीर है।

४३३८. प्रति सं०२। पत्र सं०३४। ले० काल ४। वे० सं० ५४४। ङ भण्डार।

४३३६ प्रति सं०३। पत्र स० ४४। ले० काल ×। वे० सं०१२६। छ भण्डार।

विशेष—स० १६६६ फाग्रुण सुदी २ को पुष्पचन्द ग्रजमेरा ने संशोधित की । ऐसा ग्रन्तिम पत्र पर लिखा है । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २१२) ग्रौर ।

४२४०. सिद्धचक्रपूजा-श्रुतसागर । पत्र स० ३० से ६० । ग्रा० १२×६ इंच्। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ५४४ । द्व भण्डार ।

४३४१. सिद्धचक्रपूजा-प्रभाचन्द्। पत्र सं०६। ग्रा० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा 'र० काल ×। ले० काल ×। पूर्या। वे० सं० ७६२। क भण्डार। ४३४२. सिद्धचक्रपूजा (वृहद्) """ पत्र सं० ३४। ब्रा॰ १२×५३ ड'च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। ब्रपूर्श। वे• स० ६८७। ड भण्डार।

४३४३. सिद्धचकपूजा''''''' । पत्र सं० ३। ग्रा० ११४५३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० सं० ५२६ । श्र भण्डार ।

४३४४. प्रति सं०२। पत्र सं०३। ले० काल ×। वे० सं०४०५। च भण्डार।

४३४४. प्रति सं०३। पत्र स०१७। ले० काल सं० १८६० श्रावणा बुदी १४। वे० सं०२१। ज भण्डार।

४३४६. सिद्धचक्रपूजा (वृहद्) — सतलाल । पत्र सं० १०८ । ग्रा० १२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६८१ । पूर्ण । वै० स० ७४६ । श्र भण्डार ।

विशेप-ईश्वरलाल चादवाड ने प्रतिलिपि की थी।

४२४७. सिद्धचक्रपूजा''' ''''' । पत्र सं० ११३ । म्रा० १२×७३ इ च । मापा-हिन्दी ' विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४६ । क्क भण्डार ।

४३४८. सिद्धपूजा-रत्नभूषण्। पत्र सं० २। म्रा० १०३×४३ इ च । भाषा-संस्कृत । त्रिषय-पूजा। र० काल × । ले० काल सं० १७६०। पूर्ण । वे० सं० २०६० । स्र भण्डार ।

विशेष--ग्रोरङ्गजेव के शासनकाल मे सग्रामपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४३४६. प्रति स०२। पत्र सं०३। ग्रा० ५५ ईच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ४। विषय-पूजा। र० काल ४। विषय-पूर्ण। वे० सं० ७६६। क भण्डार।

४३४०. सिद्धपूजा-महा पं० श्राशाधर । पत्र सं०२ । ग्रा० ११३×६ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० ७१४ । क् भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ स॰ ७६५) और है।

४३४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल स० १८२३ मगसिर सुदी ८ । वे० सं• २३३ । छ

ं विशेष-पूजा के प्रारम्भ मे स्थापना नही है किन्तु प्रारम्भ मे ही जल चढाने का मन्त्र है।

४२४२. सिद्धपूजा """ । पत्र सं०४। म्रा० ६३×४३ इ'च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र॰ काल ×। ले॰ काल ×। पूर्ण। वे॰ सं०१६३०। ट भण्डार।

विशेष— इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० १६२४) श्रीर है।

*

४३४३ सिद्धपूजा पत्र सं० ४४। ग्रा० ६×५ इंच। भाषा-हिन्दी | विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६५६ | पूर्या। वे० सं० ७१५। च भण्डार।

४३४४. सीसंधरस्वामीपूजा """। पत्र स० ७ । म्रां० ८×६३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८५८ । रू भण्डार ।

४३४४. मुखसंपत्तित्रतोद्यापन—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ७ । ग्रा० ५४६३ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १८६६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०४१ । श्र भण्डार ।

४३४६. सुखसंपत्तिव्रतपूजा-ग्राखयराम । पत्र सं० ६ । ग्रा० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १८०० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८०८ । क भण्डार ।

४३४७. पुरान्धदशमी व्रतोद्यापनं। पत्र सं०१३। ग्रा० ८×६६ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०१११२। स्त्र भण्डार।

विशेष—इसो भण्डार मे ७ भ्रतिया (वे० सं० १११३, ११२४, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६)

४३४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६२८ । वे० स० ३०२ । ख भण्डार ।

४३४६. प्रति सं० ३ | पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० सं० ८६६ । ङ भण्डार ।

४३६०. प्रति सं २४। पत्र स० १३। ले० काल सं ४ १६४६ म्रासोज बुदी ७। वे० स० २०३४। ट भण्डार।

४३६१. सुपार्श्वनाथपू ना-रामचन्द्र । पत्र सं० ५ । ग्रा० १२×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । बिषय-पूजा । र० काल । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ७२३ । च भण्डार ।

४३६२. सूतकनिर्णय""" "। पत्र स० २१। ग्रा० द×४ इ'च। भाषा-सस्कृत। विषय-विधि, विधान। र०,काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५। मा भण्डार।

विशेष-सूतक के अतिरिक्त जाप्य, इष्ट अनिष्ट विचार, माला फेरने की विधि आदि भी है।

४३६३. प्रति सं०२। पत्र सं०३२। ले० काल ४। वे० स० २०६। मा भण्डार।

४३६४ सृतकवर्णन ""। पत्र सं०१। ग्रा०१०३×५ इंच। भाषा-सस्कृत । विषय-विधि विधान। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण। वे० नं० ५४०। ग्रा भण्डार।

४३६४. प्रति स०२। पत्र सं०१। ले० काल सं०१८४१। वे० स०१२१४। आ भण्डार। विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं०२०३२) और है।

४३६६. सोनागिरपूजा--आशा । पत्र सं० ८ । आ० ४३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९३८ फाग्रुन बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३४६ । छ भण्डार ।

विशेष---पं० गगाधर सोनागिरि वासी ने प्रतिलिपि की थी ।

४३६७. सोनागिरपूजा'''''''। पत्र सं० ८ । ग्रा॰ ८३४४३ ड च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा।

र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८४ । स भण्डार ।

४३६८. सोलहकारणपूजा--द्यानतराय। पत्र सं०२। आ०८×५३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०१३२६। आ भण्डार।

४३६६ प्रति सं०२। पत्र स०२। ले० काल सं०१६३७। वे० स०२५। क भण्डार।
४३७०. प्रति सं०३। पत्र स०५। ले० काल ×। वे० स०६३। ग भण्डार।
४३७१. प्रति सं०४। पत्र स०५। ले० काल ×। वे० सं०३०२। ज भण्डार।
विषय—इसके प्रतिरिक्त पञ्चमेरु भाषा तथा सोलहकारण संस्कृत पूजार्थे ग्रीर हैं।
इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स०१६४) ग्रीर है।

४३७२. सोलहकारणपूजा'''''' । पत्र स० १४ । आ० द×५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७५२ । ड भण्डार ।

४३७३. सोलहकारणसङ्लविधान—टेकचन्द्। पत्र स० ४८ । म्रा० १२४८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स० ८८७। इ भण्डार।

४३७४. प्रति सं०२। पत्र सं०६६ । ले० काल × । वे० स० ७२४ । च भण्डार । विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७२५) ग्रीर है।

४३७४. प्रति स० ३। पत्र स० ४५। ले० काल ×। वे० स० २०६। छ मण्डार।

४३७६. प्रति सं०४। पत्र स०४५। ले० काल ४। वे० स० २६४। ज भण्डार।

४३७७. सौख्यव्रतोद्यापनपूजा—श्रज्ञयराम । पत्र सं० १२ । ग्रा० ११×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल स० १८२० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५८६ । श्र भण्डार ।

४२७८. प्रति सं०२। पत्र स०१५। ले० काल स०१८६ चैत्र बुदी ६। वे० स० ४२७। च भण्डार।

४२७६. स्तपनिवधान "" ""। पत्र सं० द । म्रा० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । र॰ काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ सं॰ ४२२ । व्य भण्डार १

४२८०. स्नपनविधि (गृहद्)। १७ सं० २२ । म्रा० १०४५ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-५ूजा। र० काल ४ । ले० काल ४ । वे० स० ५७० । स्त्र भण्डार ।

विशेष---श्रन्तिम २ पृष्ठो मे त्रिलोकसार पूजा है जो कि मपूर्ण है।

गुटका-सँग्रह

(शास्त्र भएडार दि॰ जैन मन्दिर पाटों की, जयपुर)

४३८१ गुटका सं०१। पत्र स०२८४। ग्रा०६×६ इंच। भाषा-हिन्दो सस्कृत। विषय-सग्रह। ने० काल स०१८१८ ज्येष्ठ सुदी ६। ग्रपूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष--- निम्न पाठो का संग्रह है-

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशोप
१. भट्टाभिषेक	×	संस्कृत	पूर्ख
२. रत्नत्रयपूजा	× .	33	77
३. पश्चमेरुपूजा	×	>>	9 5
४. ब्रनन्तचतुर्दशीपूजा	×	79	25
५. षोडगकाररापूजा	मुमतिसागर	संस्कृत	97
६. दशलक्षराउद्यापनपाठ	×	35	37
७. सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	व्रह्मजयसागर	37	55
८. मुनि मुद्रतछन्द	भ० प्रभाचन्द्र	संस्कृत हिन्दी	77
			78

मुनिगुव्रत छन्द लिख्यते—

१२०-१२४

पुण्यापुण्यनिरूपकं गुरानिधि शुद्धवत सुव्रतं

स्याद्वादामृतत्तितािखलजनं दुःखाग्निधाराधरं ।

क्रोधारण्यधनेजयं धनकरं प्रध्वस्तकर्मारिएां

वंदे तद्गुरासिद्धये हरिनुतं सोमात्मजं सौस्यदं ॥१॥

जलविसमगभीरं प्राप्तजनमास्थितीरः

प्रबलमदनवीरः पंचधामुक्तचीरः

हतविषयविकारः सप्ततत्वप्रचारः

स जयित गुराधारः सुव्रतो विघ्नहारः ॥२॥

ሂሂሩ

ग्रायी---

त्रिभुवनजनहितकर्ता भर्ता मुपवित्रमुक्तिवरलक्ष्माः ।
कन्दर्पदर्पहर्ता सुयुत्तदेवी ज्यति ग्रुग्धर्मा ॥१॥
यो वज्रमौलिसगतमुकुटमहारत्नरक्तनप्रनिकरं ।
प्रतिपालितवरचरणं केवलवीचे मंडितसुभगं ॥२॥
तं मुनिसुयतनाथं नत्वा कथयामि तस्य छन्दोहं ।
श्रृण्वन्तु सकलभव्याः जिनधर्मपराः मौनसयुक्ताः ॥३॥

मडिल्लखंद---

प्रथम कल्याण कहु मनमोहन, मगध मुदेश वसे ग्रित सोहन ।

राजगेह नयि वर सुन्दर, सुमित्र भूष तिहा जिसो पुरदर ॥१॥

चन्द्रमुखीमृगनयनी बाला, तस राणी मोमा सुविद्याला ।

पिछम्रयणी ग्रिलकुलबाला, म्बप्न मोल देखें गुणमाला ॥२॥

इन्द्रादे सें ग्रित सु विचक्षण, छपन छुमारि सेवे शुभलक्षण ।

रत्नवृष्टि करें धनद मनोहर, एम छुमाम गया सुभ मुखकर ॥३॥

हरिवम्मां भूषित भुवि मंगल, प्राणत स्वर्ग हवो ग्राखण्डल ।

श्रावणविद बीजे गुणधारी, जननी गर्भ रह्यो मुखकारी ॥४॥

भुजङ्गप्रपात---

धरित ग्रनगे पर गर्भभार न रेखात्रयं भगमापन्नसार ।
तदा ग्रागता इन्द्रचन्द्रानरेन्द्रासुर्द्रायात्राया न युक्ता सुभद्रा ।।१।।
पुर त्रि:परित्याखिलंदेवसंघा ग्रह प्राप्त सोमित्र कंते गता या ।
स्थित गर्भवामे जिन्न निक्कृलकं , प्र्याम्यादराते गताहिम्बनाक ।।२।।
कुमार्यो हि सेवा प्रकुर्वन्ति गृद्ध क्रियर्योज्ज्वलद्दीपसुहवृत्यवाढं ।
वर पत्रपूगं ददानासुन्त्रयाँ प्रकृतिम् सित्तछुत्रकं कुंभ सुपूर्यं ।।३।।
सुर्द्धदेवमान्दर्भवत्यवित्र लसद्दर्द्ववृष्ट् ग्रुभ पुण्यपात्र ।
जिन गर्भवासा विनिर्मुक्तदेहं पर स्तौमि सौमात्मज सौव्धगेह ।।४।।
श्रीजित्तत्र प्रवत्रयो महि त्रिभ्रवन चिह्न हवा सुराता महि ।

श्रहिल्लखन्द—

श्रीजितत्र्र अवत्र्यो महि तिश्वन चिह्न हवा सुराता महि। घटा सिहं सुन पूरहारव, सुरपति सहसा करें जय जयरव ॥१। वैद्याल वृदी दश्मी जिन्न जायो, सुरनरवृद वेगे तब श्रायो । ऐरावरा श्रारूढ पुरदर, सचीसहित सोहें ग्रुगमदिर ॥२॥ गुटका-संप्रह

मोतीरेगुछु-दु-=

तब ऐरावण सजकरी, चढ्यो शतमुख ग्राणंद भरी।
जस कोटी सतावीस छे ग्रमरी, करें गीत नृत्य वलीदें भमरी।।३।।
गज कानें सोहे सोवर्ण चमरी, घण्टा टड्झार विद सहु भरी।
ग्राखण्डलग्रंकुशवेसेंधरी, उछवमंगल गया जिन नयरी।।
राजगरों मलया इन्द्रसहू, वाजें वाजित्र सुरंग वहु।
अक्षे कह्युं जिनवर लावें सही, इन्द्राणी तब घर मभे गई।।
जिन वालक दीठो निज नयरों, इन्द्राणी वोले वर वयरों।
माया मेसि सुतहि एक कीयी, जिनवर युगतें जह इन्द्र दीयो।।

इसी प्रकार तप, ज्ञान और मोक्ष कल्याण का वर्णन है। सबसे अधिक जन्म कल्याण का वर्णन हैं जिसका रचना के आधे से अधिक भाग में वर्णन किया गया है इसमें उक्त छन्दों के अतिरिक्त लीलावती छन्द, हनुमतछन्द, दूहा, ब्भाण छुन्दों का और प्रयोग हुआ है। अन्त का पाठ इस प्रकार है—

कलस—

बीस धनुष जस देह जहे जिन क्छप लाछन ।
श्रीस सहस्र वर वर्ष श्रायु सज्जन मन रखन ।।
हरवंशी गुरावीमलः, भक्त दादिद्र विहंडन ।
मनवाछितदातार, नयरवालोडमु मडन ।।
श्री मूलसंघ संघद तिलक, ज्ञानभूषरा भट्टाभररा ।
श्रीप्रभावन्द्र सुरिवर वहे, मुनिसुबतमगलकररा ।।

इति मुनिसुवत छद सम्पूर्णोऽय ।।

पत्र १२० पर निम्न प्रशस्ति दी हुई है-

सवत् १८१ वर्षे शाके १६८४ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठ सुदी ६ सोमवासरे श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कार-गर्णो श्रीकुंदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि तत्पट्टो भ० श्रीदेवेन्द्रकीत्ति तत्पट्टो भ० श्रीविद्यानन्दि तत्पट्टो भट्टारक श्री मिल्लभूषण तत्पट्टो भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्र भ० तत्पट्टो श्रीवीरचन्द्र तत्पट्टो भ० श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टो भ० श्रीप्रभाचन्द्र तत्पट्टो भ० श्रीवादीचन्द्र तत्पट्टो भ० श्रीमहीचन्द्र तत्पट्टो भ० श्रीमेरुचन्द्र तत्पट्टो भ० श्रीजैनचन्द्र तत्पट्टो भ० श्रीविद्यानन्द तिच्छ्रप्य ब्रह्मनेमसागर पठनार्थं । पुण्यार्थं पुस्तक लिखायितं श्रीसूर्यपुरे श्रीग्रादिनाथ चैत्यालये ।

गुटका-समह

विषय	कत्ती	भाषा	विशेष
६. मातापद्मावतीछन्द	महीचन्द्र भट्टारक	मस्कृत हिन्दी	१२५२=
१०. पादर्वनाथपूजा	×	संस्कृत	
११. कर्मदहनपूजा	वादिचन्द्र	59	
१२ भनन्तव्रतरास	व्रह्मजिनदास	हिन्दी	
१३. ग्रष्टक [पूजा]	नेमिदत्त	संस्कृत	पं० राघव की प्रेरणा मे
१३. अष्टक	×	हिन्दी	मक्ति पूर्वक दी गई
१५. ग्रन्तरिक्ष पार्वनाथ ग्रष्टक	×	संस्कृत	
१६. नित्यपूजा	×	27	

विशेष-पत्र न० १६८ पर निम्न लेख लिखा हुवा है-

भट्टारक श्री १०८ श्री विद्यानन्दजी स० १८२१ ता वर्षे साके १६६६ प्रवर्त्तमाने कार्तिकमासे दृष्णपके प्रतिपदादिवसे रात्रि पहर पाछलोई देवलोक थया छेजी।

४३=२. गुटका सं० २ । पत्र सं० ६३ । ग्रा० ५३ ×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल स० १८२० । ले० काल म० १८३५ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेप—इस गुटके मे बस्तराम साह कृत मिथ्यात्व खण्डन नाटक है। यह प्रति स्वयं लेखक द्वारा लिखी हुई है। ग्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री मिथ्यातखण्डन नाटक सम्पूर्ण । लिखत वखतराम साह । य० १८३% ।

४३=३ गुटका सं० ३ । पत्र स० ७५ । ग्रा० ४×४ इख्र । भाषा-संस्कृत-हिन्दो । विषय-× । ले॰ काल स० १६०४ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विगेप-फतेहराम गोदीका ने लखा था।

१. रसायनविवि	×	हिन्दी	१-३
२. परमज्योति	वनारसीदास	37	4-2 7
३. रत्नत्रयपाठविधि	×	संस्कृत	१३–४ ३,
४. ग्रन्तरायवर्शन	×	हिन्दी	**- **
५. मंगलाष्ट्रक	×	सस्कृत	34-48
६. पूजा	पद्मनिद	, ? }	X0-XX

भूधरदास

४. दशलक्षरापूजा

```
४६२
                                                                                               गुटका-संप्रह
    ५. पञ्चमेरु एवं नंदीश्वरपूजा
                                                                   हिन्दी
                                                                                                7-34
                                           चानतराय
   ६, तीन चौबोसी के नाम व दर्शनपाठ
                                                               संस्कृत हिन्दी
                                             ×
   ७. परमानन्दस्तोत्र
                                           वनारसीदास
                                                                                                    8
                                                                    "
   ८. लक्ष्मीस्तोत्र
                                                                                                   Ę
                                           द्यानतराय
                                                                    77
    ६. निर्वाग्यकाण्डभापा
                                           भगवतीदास
                                                                                                 X-Ę
                                                                    "
  १०. तत्त्वार्थसूत्र
                                           उमास्वामी
                                                                    37
  ११. देवशास्त्रगुरुपूजा
                                                                  हिन्दी
                                             X
  १२. चीबीस तीर्थङ्करो की पूजा
                                             X
                                                                                                १५३ तक
                                                                    37
            ४३६१. गुटका सं० ११। पत्र सं० २२२। ग्रा॰ ू१० ई×६ इख्र। भाषा-हिन्दी । ले॰ काल स॰
१७४६।
            विशेष---निम्न पाठो का संग्रह है।
   १. ,रामाराण महाभारत कथा
                                          X
                                                               हिन्दी गद्य
                                                                                               ३ -१४
      [४६ प्रश्नो का उत्तर है]
   २. ,कर्मचूरव्रतवेलि
                                ृ मुनि सकलकीत्ति
                                                                                             १५−१५
            अथ वेलि लिस्थते---
दोहा---
                                   र्कर्मचूर वृत जे कर, जीनवाणी तंतसार।
                                   नरनारि भव भंजन धरे, उत्तर चौरासी सु पार ।;
                         👉 कीधी कुरी कुरा झारम्यो सकलकीत्ति नाम,
                            कर्म सेइय कीधो गुर्गी कोसंबी वसि गाम ।।
                          - नम्णी ग्रह निरगंथ नै, सारद दस्गुण पुरै।
13
                            कहो बरत बेलि उदयु करमसेएा कर्मचुरै।।
                           ज्ञानावर्ण, दर्स्न सात्ता वेदनी मोह मृंदुराई।
       >
                           श्रन्हें जीतने चेति होसी, कहालु कर वृख्ण सुहाई।।
                           नाम कर्म पाचमौग कुछुगे ग्रायु भेदो ।
                           गोत्र नीच गति पोहो चाहै, श्रन्तुराई भय भेदो ।।
                           चितामिंग सुचित ग्रविलागी, कर्मसेगा गुरागाई ।।१।।
```

۲,

दोहा--

एक कर्म को वेदना, भु जै है सब लोइ ! नरनारी करि उधरे, चरण गुरासंस्थान संजोई ॥१॥

मन्तिमपाठ- कवित्त-

सकलकीति मुनि ग्राप सुनत मिटै संताप चौरासी मिर जाई फिर ग्रजर ग्रमर पद पाइये ।।
जूनी पोथी भई ग्रक्षर दीसे नहीं फेरु उतारी वंध छंद किन्त वेली वनाई क गाईये ।।
चंप नेरी चाटसू केते भट्टारक भये साधा पार ग्रडसिंठ जेहि कर्मचूर बरत कही है वर्णाई ध्याइये ।।
संवत् १७४६ सीमवार ७ करकौ बु कर्मचूर ब्रत वैठगौ ग्रमर पद चुरी सीर सीधातम जाइये ।।

नोट-पाठ एक दम प्रशुद्ध है। लीपि भी विकृत है।

२. ऋविमण्डलमन्त्र	×	संस्कृत	लं० काल १७३६	
			१ <i>७-</i> १६	
४. चितामिए। पार्विनायस्तीत्र	×	99	श्रपूर्ण २०	
५. ग्रंजना को रास	धर्मभूषग्र	हिन्दी	२१-३४	

प्रारम्भ---

पहैलो रे म्रह्त पाय नमें।

हरें भव दुखं भंजन त्वं भगवंत कर्म कायातना का पसी ।
पाप ना प्रभव ग्रसि सी ग्रंत ती रास भर्णे इति ग्रंजना
ते ती संयम साधि न गई स्वर लीक ती सती न सरोमिशा वदीये ।।१।।
वसं विधाधर उपनी माय, नामै तीन वनंधि सपजे ।
भाव करंता ही भवदुख जाय, सतो न सरोमिशा वंदये ।।२।।
ग्राह्मी ने सुंदरी वदये, राजा ही रसभ तर्णे घर हैय ।
वाल पर्णे तप वन गई काम ना भीगन वंछीय जे हती ।। सती म "" ३ ।।
मेघ सेनापित ने घरनारि ग्रंजना सो मदालसा ।
त्यारे न कीने सीयाल लगार तो "।। सती न " " ४ ।।
पंचसे किसन कुमारिका, ईनि वाल कुवारी लागी रे पावे ।
जादव जग जानी करि, हारिका दहन सुनि तप जाय ।
हरी तनी ग्रंजना वंदीय जिने राग छोडी मन मैं धरची वैराग तो ।। सती न " ५।।

श्रन्तिमपाठ---

वंस विद्याधरे उपनि मात, नामे नवनिधि पावसो ।

भाव करंता हो भव दुख जायतो, साती न सरोमिए। वंदीये ।। ५८ ।।

इम गावै धमैभूपए। रास, रत्नमाल गुंथो रिच रास ।

सर्व पंचिमिल मगल थयो, कहै ता रास ऊपजै रस विलास ।।

ढाल भवन केरी इम भएो, कठ विना राग किम होई ।

बुधि विना ज्ञान निवसोई, गुरु विना मारग कीम पानी सी ।

दीपक विना मंदर अधकार, देवभिक्त भाव विना सब द्वार तो ।।५६।।

रस, विना स्वाद न ऊपजै, तिम तिम मित वधे देव गुरु पसाव ।

खिमा विन सील करे कुल हािए।, निर्मल भाव राखो सदा ।

केतन कलक आनि कुल जाय, कुमित विनास निर्मल भावन्यू ।

ते समभो सबही नरनारि, अहँत विना दुर्लभ सरावक अवतार ।

खुहि समता भावसू स्योपुरवास, एह कथी सब मगल करी।।

इति श्री अजनारास सती सु दरी हनुमत प्रसादात् सपूरए।।।

स्वस्ति श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगरो श्रीकुंदकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीजगत्कीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीदेवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीमहेन्द्रकीर्ति तस्य भ० श्रीक्षेमेन्द्रकीर्ति तस्योपदेश ग्रुएकीर्तिना इत्यादि तन्मध्ये पिंडत कुस्यालि लिखामि वोराव नगरे सुथाने श्रीमहावीरचैत्यालये श्रमुक श्रावके सर्व वघेरवाल ज्ञात वृधिति समपात रहा श्रीवृषभनाथ यात्रा निमित्त गवन उपदेश मासोत्तममासे शुभे शुक्कपक्षे ग्रासोज वदी ३ दीतवार संवत् १८२० शालिवाहने १६७६ शुभमस्तु ।

६ न्हवराविध

 संस्कृत ले० काल १८२० ग्रासोज वदी ३

 छियालीसग्रुरा

 स्वियालीसग्रुरा

 स्वियालीसग्रुरा

 स्विवी

 स्विवी

विशेष—पत्र ४०वें पर भी एक चित्र है सं० १८२० मे पं० खुशालचन्द ने वैराठ मे प्रतिलिपि की थी।
१०. भविष्यदत्तपञ्चमीकथा व्र० रायमल हिन्दी ४१-८१

रचनाकाल सं० १६३३ पृष्ठ ५० पर रेखाचित्र ले० काल सं० १८२१ वोराव (वोराज) मे खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी। पत्र ८२ पर तीर्थे द्धरों के ३ चित्र हैं।

११ हनुमंतकथा	ब्रह्म रायमल	ाहन्दा	5°\$-\$°E
१२. वोस विरहमानपूजा	हर्षकीति	79	११०
१३. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	97	१११
१४. सरस्वतीजयमाल	ज्ञानभूषण	सस्कृत	११२
१५. ग्रभिषेकपाठ	×	77	११२
१६. रविव्रतकया	भाउ	हिन्दी	११२-१२१
१७. चिन्तामिएलग्न	×	सस्कृत ले० का	ल १८२१ १२२
१८. प्रद्युम्नकुमाररासो	त्रह्मरायमल	हिन्दी	१२३-१५१
	•	र० काल	१६२८ ले० कॉल १८११
१६. श्रुतपूजा	×	सस्कृत	१५२
२०. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	5 7	१५३—१५६
२१. सिन्दूरप्रकरण	वनारसीदास	हिन्दी	१ ५७-१६६
२२ पूजासग्रह	×	59	१६७–१७२
२३. कल्याग्।मन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	सस्कृत	१८३
२४. पाशाकेवली	×	हिन्दी	१५ ४–२१७
२५. पञ्चकल्याग्यकपाठ	रूपचन्द	"	२१७–२२२

विशेष-कई जगह पत्रों के दोनों ग्रोर सुन्दर वेले हें।

४२६२. गुटका सं० १२। पत्र स० १०६। ग्रा० १०३×६ इख्र । भाषा-हिन्दी । विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

१. यज्ञ को सामग्री का व्योरा

×

हिन्दी

δ

विशेष — (ग्रथ जागी की मौजे सिमरिया मे प्र॰ देवाराम नै ताकी सामा म्राई संख्या १७६७ माह बुदी पूर्णिमा पुरानी पोथी मे से उतारी। पोथी जीरण होगई तब उतरी। सब चीजो का निरख भी दिया हुग्रा है।

२. यज्ञमहिमा

X

हिन्दी

२

विशेष—मीजे सिमरिया मे माह सुदी १५ सं० १७६७ मे यज्ञ किया उसका परिचय है। सिमरिया मे चौहान वंश के राजा श्रीराव थे। मायाराम दीवान के पुत्र देवाराम थे। यज्ञाचार्य मोरेना के प० टेकचन्द थे। यह यज्ञ सात दिन तक चला था।

३. कर्मविपाक

X

सस्कृत

3-83

१२-१४

विशेष-- ब्रह्मा नारद संवाद मे से लिया गया है। तीन अध्याय है।

४. ग्रादोश्वर ना समवशरण

X

हिन्दी १६६७ कार्तिक सुदी

ग्रादीश्वर को समोशरण-ग्रादिभाग--

गुर गनपित मन ध्याऊं, चित चरन सरन ल्याउ।

मित मागि लैंड ग्रेसी, मुनि मानि लैहि जैसी ।।१।।

ग्रादीश्वर गुएा गाऊं, वरु साध सगु (र) पाउ।

चारित्र जिनेस लीया, भरथ को राजु दीया ।।२।।

तिज राज होइ भिखारी, जिन मीन बरत धारी।

तव ग्रापनी कमाई, भई उदय ग्रंतराई।।३।।

मुनि भीख काज जावइ, निह भानु हाथ ग्रावइ।

तेंइ कन्या सरूपा, कोई रतन ग्रित ग्रनूपा।।४।।

रिपि सहस गुन गावइ, फल वोधि वीजु पावइ।

अन्तिमभाग---

दोहरा---

वर जोडिइ मुख भासइ, प्रभु चरंन सरन राखइ ॥७१॥ समीसरण जिनरायी की, गाविह जे नरनारि । मनविछित्र फल भोगवई, तिरि पहुचिह भवपार ॥७२॥ सोलसह सडसिठ वरप, कातिक सुंदी विलराज । सालकोट सुम थानवर, जयड सिंध जिनराज ॥७३॥

इति श्री ग्रादीश्वरजी को समोसरण समाप्त ।।

५ द्वितीय समीसरण

ब्रह्मगुलाल

हिन्दी

28-24

म्रादिभाग--

प्रथम सुमिरि जिनराज अनत, सुख निवान मगल सिव संत
जिनवार्गी सुमिरत सनु वहै, ज्यौ गुनठान छिपक छिनु चहै ।।१।।
गुरुपद मैवह ब्रह्म गुलाल, देवसास्त्र गुर मगल माल ।
इनिह सुमार वरन्यौ सुखसार, समवसरन जैसे विसतार ।।२।।
दीठ बुधि मन भायो करै, मूरिख पद ग्रान पायौ डरै ।
सुनह मन्य मेरे परवान, समोसरन कौ करौ वखान ।।३।।

सुभ ग्रासन दिढ जीग ध्यान, वर्द्धभान भयो केवल ज्ञान । समोसरण रचना ग्रति वनी, परम धरम महिमा ग्रति तर्णी ॥४॥

ग्रन्तिमभाग--

चल्यो नगर फिरि ग्रपने राइ, चरण सरण जिन ग्रति सुख पाइ। समोसरणय पूरण भयो, सुनत पढित पातिग गलि गयौ।। ६४।।

दोहरा---

सौरह सै श्रठसिठ समै, माघ देसै सित पक्ष ।
गुलालब्रह्म भिन गीत गित, जसोनिद पद सिक्ष ॥६६॥
स्रदेस हथि कंतपुर, राजा वक्रम साहि ।
गुलालब्रह्म जिन धर्म्मु जैय, उपमा दीजै काहि ॥६७॥

इति समोसरन ब्रह्मगुलाल कृत संपूर्ण ।।

६. नेमिजी को मगल

जगतभूपरा के शिष्य

हिन्दी

१६-१७

विश्वभूपग्

रचना स० १६६ म श्रावरा सुदी म

विभाग--

प्रथम जपौ परमेष्ठि तौ गुर हीयौ घरौ।

सस्वती करहु प्रगाम कवित्त जिन उचरौ।।
सोरिठ देस प्रसिद्ध द्वारिका श्रति वनी।
रची इन्द्र नै श्राइ सुरिन मिन बहुकनी।।
वहु कनीय मिदर चैत्य खीयौ, देखि सुरनर हरपीयौ।
समुद विजै वर भूप राजा, सक्र सोभा निरखीयौ।।

प्रिया जा सिव देवि जानौ, रूप ग्रमरी अन्नसा।

राति सुदरि सैन सूती, देखि सुपनै पोडशा ॥१॥

ग्रन्तिम भाग---

भवत् सौलह सै प्रठानूवा जाएगियौ ।

सावन माम प्रसिद्ध ग्रष्टमी मानियौ ॥

गाऊ सिकदरावाद पार्श्वजिन देहरे।

श्र.वग क्रीया सुजान धर्म्म सौ नेहरे।।

घरे धर्म्म सो नेहु स्रति ही देही सबकी दान जू।

स्यादवाद वानी ताहि मानै करै पडित मान जू।।

जगतभूषणा भट्टारक जै विश्वभूषणा मुनिवर । तर नारी मंगलचार गांचे पढत पातिग निम्त ।।

इति नैमिनाथ जुकी मंगरा समाप्ता ।।

७ पार्श्वनाथचरित्र

विश्वभूपरा

हिन्दी

39-05

ग्रादिभाग राग्रुनट-

पारस जिनदेव की सुनहु चिरयु मनु लाई ।। टेक ।।

मनउ सारदा माइ, भजी गनधर चितुलाई ।

पारस कथा सबध, कही भाषा सुखदाई ।।

जंबू दिखन भरथ में, नगर पोदना माम ।

राजा श्री ग्रिरिवंद जू, भुगते सुख अवाम ।। पारम जिन० ।।

विप्र तहा एकु वसे, पुत्र ही राज मुचारा ।

कमठु बडी विपरीत, विमन सेथे जु प्रपारा ।।

लघु भैया मरभूति सी, वमुधिर दई ता नाम ।

रित क्रीडा मेज्या रच्यी, ही कमठ भाव के धाम ।। पारम जिन० ।।

कोषु कीयी मरभूति, कही मंत्री सी राच्यी ।

सीख दई नही गह्यो काम रस ग्रंतर साच्यी ।।

कमठ विषे रस कारने, श्रमर भूति वाधी जाई ।

सो मरि वन हाथी भयी, हिथिन भई श्रिय श्राइ ।। पारम जिन० ।।

ग्रन्तिमपाठ---

<

अविध हेत किर वात सही देविन तव जानी ।
पदमावित धरऐन्द्र छत्र मस्तिग पर तानी ।।
सब उपसर्गु निवारिके, पार्श्वनाथ जिनद ।
सकल करम पर जारिके, भये मुक्ति वियवद ।। पारस जिने ।।
मूलसंघ पट्ट विश्वभूषएा मुनि राई ।
उत्तर देखि पुराए। रिच, या वई सुभाई ।।
वसे महाजन लोग जु, दान चतुर्विधि का देत ।
पार्श्वकथा निहचै सुनी, हो मोछि प्राप्त फल लेत ।।
पारस जिनदेव को, सुनहु चरितु मन लाइ ।।२५॥

इति भी पार्श्वनाथजी की चरित्रु संपूर्ण ।।

गुटका-संप्रह]			. [પ્રફદ
म. वीरजि गांदगी त	भगौतीदास	हिन्दी	१६-२०
 सम्यन्ज्ञानी घमाल 	"	"	२०-२१
१० स्थूलभद्रशीलरासो	×	"	२१-२२
११. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	33	२२-२३
१२. "	द्यानतराय	77	२३
१३. "	×	संस्कृत	२३
१४. पार्श्वनायस्तोत्र	राजसेन	99	२४
१ ५ %	पद्मनिन्द	37	२४
१६. हनुमतकथा	व० रायमल	हिन्दी र० काल १	६१६ २४-७४
		ले० काल १०	२३४ ज्येष्ठ सुदी ३
१७. सीताचरित्र	×	हिन्दी ग्रपुरा	3 0 9-00

४३६३. गुटका स० १३। पत्र सं० ३७। ग्रा० ७६ ×१० इख्र । ले० काल सं० १८६२ ग्रासीज बुदीः ७। पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष---निम्न पूजा पाठो का संग्रह है---

		=		
१. कल्य	ामन्दिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	हिन्दी	षूर्ग
२. लक्ष्म	गिस्तोत्र (पार्श्वनायस्तोत्र)	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	,,
३. तस्व	ार्थसूत्र	उमास्वामी	7)	77
४. मक्त	ामरस्तोत्र ः	म्रा० मानतु [*] ग	33	9 2
५. देव	पूजा	× हिन	दी संस्कृत	"
६. सिद्ध	धूजा	×	9 7	27
৬ বহাব	नक्षरापूजा जयमाल	×	संस्कृत	7 7-
द. षोड	वाकार रापू जा	×	"	33
६. पार	र्वनाथपूजा	×	हिन्दी),),
१०. शाहि	तपाठ	×	संस्कृत	? ?
११. सहस	त्रनामस्तोत्र ७	ं० ग्राशाधर	"	3 7
१२. पञ्च	नेरुपूजा	भूधरयति	हिन्दी	,, ,,

विशेष-धहापुम्तक सुखलालजी वज के पुत्र मनसुख के पढ़ने के लिए लिखी गई थी ।

४३६% गुटका नं १४ । पत्र सं०१३ । ग्रा० ४×४३ इख्र । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामा य ।

विशेष-शारदाप्टक ('हिन्दी')' तथा ५४ ग्रांसादनी के नाम हैं।

४३६४. गुटकी नंदा १४ । पत्र स०४३ । ग्रां० ४×३३ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल १६६० । पूर्ण विशेष-पाठ प्रशुद्ध हैं-

१. कहज्योची नेमनीसू जाय महेती थाही सग चीला 🇴 हिन्दी ξ २. हो मुनिवर कब मिलि है,उपगारी ¹ भागचर्न्द १–२ 97 ३ घ्यावाला ही प्रभु-भारमोजी × २- म-11 ४. प्रभु याकीजी सूर्त मन्हो सोहियो ^गब्रह्मकर्पूर* 5-8 " ५ गरज गरज गहै नवस्सै देखी भाई 3 ६ मान लीज्यो म्हारी श्ररंज रिपभ जिनजी १० 57 ७. तुम सी रमा विचारी तजि ११ 77,, वहज्योजी नेमिजीस् जाय महे तो X, १२, 53 ६. मुके तारोजी भाई साइया १३ " १०. सर्वोधपंचासिकाभाषां बुधर न १३-२० 29 ११. महज्योजी निमजीसू, जाय महेती थाकही संगचाला राजंचन्द ₹१-२३ " १२. मान लीज्यो म्हारी धाज द्विभाजिनजो २३ 3> १३. तिजकै गये पीया हमारे तुमधी रमा विचारी **२३**–२४ " १४. में ध्यायाना हो प्रमु;मावनू 1 २४ 73 , सायु दिर्गतर नगन-उर अद संवर मूर्यग्रधारी * × ""

33

२५

गुटका-संप्रह]			[૪૯૧
१६ म्हे निशिदिन घ्यावाला	बुधजन	77	२६
१७. दर्शनपाठ	×	"	२६–२७
१८. कवित्त	×	***	₹5₹€
१९. वारहभावना	नवल	11	34-3X
२०. विनती	×	91	३ ६—३७
२१. वारहभावना	दलंजी	77	३५-३६

् ४३६६. गुटका स० १६। पत्र सं० २२६। ग्रा० ५३×५ इख । ले० काल १७५१ कास्तिक सुदी १.। पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—दो गुटकाग्री को मिला दिया गया है।

विषयसूची			
१. वृहद्कल्यारण	×	हिन्दी	३-१२
२. मुक्तावलिक्रत की तिथिया	×	35	१२
३. भाडा देने का मन्त्र	×	77	१२-१६
४. राजा प्रजीको वशमे नरनेका	मन्त्र 🗙	71	१७-१=
५. मुनीश्वरों की जयमाल	ब्रह्म जिनदास	5 7	२३–२४
६: दश प्रकार के ब्राह्मग्रा	×	सस्कृत	२५–२६
७. सूतकवर्णन (यशस्त्रिलक से)	सोमदेव	19	₹०—३१
= गृ हप्रवेशविचार ् ्र	×	>>	३२
६. भक्तिनामवर्गन	×	हिन्दी सस्कृत	₹ ₹ —₹
१०. दोपावतार्मन्त्र	/ x	"	३६
११. काले विच्छुके डब्क्स उतारने		हिन्दी	३८
नो ज- यहा मे फिर सर्	व्या प्रारम्भ होती है।		
१२. स्वाध्याय	×	सस्कृत	१−३
१३. तत्वार्थसूत्र	उमास्वा ति	4.	१ ३
१४ प्रतिक्रमरापाठ	×	31	of-99
१५. भक्तिगठ (सान)	×	77	३ <i>७–</i> ७२

[गुटका-सम्रह

Vie	7
304	- [

- · J			•
१६. वृह्तस्वयमूस्तोत्र	समन्तभद्राचार्य	77	७३–८६
१७ वल त्कारगएा गुर्वाविल	×	33	58−8 <i>₹</i>
१=. श्रावकप्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	६४-१०७
१६ श्रुतस्कंध	व्रह्म हेमचन्द्र	प्राकृत	१०७−११≂
२०. श्रुतावतार	श्रीघर	सस्कृत गद्य	११५-१२३
२१. श्रालीचना	×	সাকুন	१ २३-१३२
ृ२२, लघु प्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	१३२-१४६ ॔
२३ भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	77	१४६-१५५
२४ वंदेतान की जयमाला	×	सस्कृत	१५५-१५६
२५. श्राराधनासार	देवसेन	সাকূন	१५६–१६७
२६. संवोधपचासिका	×	23	१६५-१७२
२७. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	सस्कृत	१७२–१७६
२८. भूगानचीवीसी	भू पालकि	99	१७७-१८०
२६. एकीमावस्तोत्र	वादिराज	77	१५०-१५४
३०. विषापहारम्तोत्र	धनञ्जय	37	१५४-१५६
३१ दशलक्षराजयमाल	पं॰ रइद्यू	श्रपभ्र श	\$ 56- \$ 64
३२ कल्याणमदिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	सस्कृत	१९६-२०३
३३ लदमीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	77	२०३–२०४
३४. मन्त्रादिनंग्रह	×	37	२०५–२२६

प्रयास्ति—सवत् १७५१ वर्षे शाके १६१६ प्रवर्त्तमाने कार्त्तिकमासे शुक्कपक्षे प्रतिपदा १ तिथी मञ्जलवारे माचार्य श्री चारकीर्ति पं॰ गगाराम पठनार्थ वाचनार्थ।

४३६७. गुटका सं० १७ । पत्र स० ४०७ । प्रा० ७×५ इख ।

१. ग्रशनगमितिस्वरूप	×	प्राकृत	संस्कृत व्याख्या सहित १-३
२ भषहरस्तोत्रमन्त्र	×	सस्कृत	¥
३. वंधस्यिति	×	"	मूलाचार से उद्धृत ५-६
y. म्यरविचार	×	"	৬

ر آندین دستهما

गुटका-सन्नह]			[২৬३
५ संदृष्टि	×	सस्कृत	89-3
६. मन्त्र	×	**	१४
७. उपवास के दशभेद	×	77	१प
५. फुटकर ज्योतिष पद्य	×	3)	१५
ध्रुढाई का व्यौरा	×	33	१८
१०. फुटकर पाठ	×	"	१५-२०
११. पाठसंग्रह	×	संस्कृत प्राकृत	२१ –२४
	गो	मट्टसार, समयसार, द्रव्यसंग्रह	ग्रादि में संगृहीत पाठ है।
१२. प्रश्नोत्तरस्तमाला	ग्रमोघवर्ष	संस्कृत	२४–२५
१३. सज्जनचित्तवल्लभ	मिल्लिपेगाचार्य	33	२६–२८
१४. गुग्स्थानव्यास्या	×	१) प्रवस्त्रमार तथा	२६-३१ टीका म्रादि से संगृहीत
१५. छातीसुख की श्रौपिंघ का नुसखा	×	हिन्दी	३२
१६. जयमाल (मालारोहण)	×	श्चपञ्च ञ	३२–३ ५
१७. उपवासविधान	×	हिन्दी	₹4–₹
१ न. पाठसंग्रह	×	प्राकृत	35-36
१६. भ्रन्ययोगव्यवच्छेदकद्वात्रिक्षिका	हेमचन्द्राचार्यं		मन्त्र ग्रादि भी हैं ३५-४०
२०. गर्भ कल्याएाक क्रिया मे भक्तिया	×	हिन्द <u>ी</u>	88
२१. जिनसहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	¥?-¥€
२२. भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	17	¥ € –¼२
२३. यतिभावनाष्ट्रक	म्रा ० कुंद कुंद	93	५२
२४. भावनाद्वात्रिंशतिका	श्रा॰ श्रमितगति	"	43–48
२५. श्राराधनासार	देवसेन	" प्राकृत	44-4 5
२६. संबोधपंचासिका	×	ग्र पभ्र ंश	५६–६०
२७. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	₹ १ – ६ ७
२८. प्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	₹७ – ==
२६. भक्तिस्तीत्र (म्राचार्यभक्ति तक)	×	संस्कृत	5€− ₹0७

্ ধ্তপ্ত]			[गुटका-संप्रह
३० स्वयभूस्तोत्र	ग्रा० समन्तभद्र	सस्कृत	१०५–११५
३१. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	77	११न
३२ दर्शनस्तोत्र	सकलचन्द्र	79	388
३३. सुप्रभातस्तवन	×	33	११६-१२१
३४. दर्शनस्तोत्र	×	प्राकृत	१२१
३५ बलात्कार गुरावली	×	सस्कृत	१ २२–२४
३६. परमानन्दस्तोत्र	पू ज्यया द	77	\$? ४ ~ ? x
३७. नाममाला	धनञ्जय	77	१२५–१३७
३८. वीतरागस्तोत्र	पद्मनिन्द	55	१३८
३६ करुएाष्ट्रकस्तीत्र	1)) 99	१३६
४० सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	1)	१३६-१४१
४१. समयसारगाथा	म्रा० कुन्दकुन्द	33	१४१
४२. ग्रई-द्रक्तिविधान	×	"	\$ %\$-\$ %\$
४३. स्वस्त्ययनविधान	×	77	१४४-१५६
४४. रत्नत्रयपूजा	×	9 7	१५६-१६२
४५. जिनस्नपन	×	"	१ <i>६२</i> —१६ <i>८</i>
४६. कलिकुण्डपूजा	×	"	१६=-१७१
४७. षोडशकारगापूजा	×	"	<i>\$</i> 09–\$03
४८. दशलक्षरापूजा	×	37	४७१–६७१
४६. सिद्धस्तुति	×	"	१७५–१७६
५० सिद्धपूजा	×	27	१ ७६-१८०
५१ शुभमालिका	श्रीधर	"	१८२-१६२
५२ सारसमुच्चय	कुलभद्र	72	१ ६२२०६
४३. जातिवर्णन	×	🤫 ५८ पदा ७	७ जाति २०७–२०¤
५४. फुटकर वर्णन	×	25	२०६
५५ पोडशकार्गपूजा	×	97	₹१•

गुटका-सम्रह]			[yox
५६. ग्रीषिधयो के नुसखे	×	हिन्दी	~ ~ ? ? ?
५७. संग्रहसूक्ति	×	सस्कृतं	२१ २
५५. दीक्षापटल	×	77	२१३
५६. पार्श्वनाथपूजा (मन्त्र सहित)	×	19	२१४
६०. दीक्षा पटल	*	77	रि१न
६१ सरस्वतीस्तोत्र	×	77	२२३
६२. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	33	२२३-१२४
६३ सुभाषितसग्रह	×	19	२२५-२२⊏
६४ तत्वसार	देवसेन	সাক্রর	` ₹३१– २ ३५
६५. योगसार	योगचन्द	सस्कृत	२३१–२३ ५
६६. द्रव्यसंग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत	735-730
६७ श्रावकप्रतिक्रमण	×	सस्कृत	<i>२३७–२</i> ४५
६८. भावनापद्धति	पद्मनिन्द	73	२४६–२४७
६९. रत्नत्रयपूजा	57	77	२४८–२५६
७०. कल्यारामाला	प० ग्राशाधर	97	२५६–२६०
७१ एकीभावस्तोत्र	वादिराज	57	२६० –२६३
७२. समयसारवृत्ति	श्रमृतचन्द्र सूरि	77	₹ \$~₹<
७३. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	भपम्र श	₹5,400
७४. कल्यागामन्दिरस्तोत्र	कृमुदचन्द्र	सस्कृत	३०४–२०६
७५. परमेष्ठियो के ग्रुगा व स्रतिशय	×	प्राकृत	७०६
७६ स्तोत्र	पद्मनन्दि	सस्कृत	305-308
७७ प्रमाग्पप्रमेयकलिका	नरेन्द्रसूरि	"	३१०—३२१
७८ देवागमस्तोत्र	श्रा॰ समन्तभद्र	"	३२२ —३२७
७६. मनलङ्काष्ट्रक	भट्टाकलङ्क	55	३२५-३२६
^{क्} ; ८० सुभाषित	×	37	₹ ₹०—₹ ₹ १
८१ जिनगु ग्स्तवन	×	"	₹ ₹2

५७६]			[गुटका-संघ्रह		
८२. क्रियाकलाप	× .	,,	337-338		
८३. संभवनाथपद्धडी	×	য়ঀৠ বা	334-336		
५४ स्तोत्र	लक्ष्मीचन्द्रदेव	प्राकृत	3=4-436		
८५. स्त्रीम्युङ्गारवर्णन	×	संस्कृत	きまを一き木 を		
५६. चतुर्विशतिस्तोत्र	माघनन्दि	99	ミンドーラン ラ		
८७ पञ्चनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामि	95	3,4,4		
८८. मृत्युमहोत्सव	×	1)	38%		
 प्रनन्तगंठीवर्णन (मन्त्र सहित) 	×	99	₹ ¥ €-₹¥		
६० भ्रायुर्वेद के नुसखे	×	#	346		
६१. पाठसंग्रह	×	77	きゃーきょく		
६२ म्रायुर्वेद नुसखा संग्रह एव मत्रा	दे संग्रह 🗙	मस्कृत हिन्दी योगदात वै	चक से मंगृहीत ३५७३८०		
६३. ग्रन्य पाठ	×	**	キニーメ・6		

इनके अतिरिक्त निम्नपाठ इस गुटके मे भीर है।

१ कल्याण वडा २. मुनिश्वरोकी जयमाल (ब्रह्म जिनदास) ३. दशप्रकार विप्र (मत्म्यपृरागोपु कथिते)
४ सूतकविधि (यशस्तिलक चम्पू से) ५. गृहविवलक्षण ६. दीपावतारमन्त्र

४३६८. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ४४ । म्रा० ७४४ इख्र । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८०४ थावरा बुदी १२ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

श. जिनराज महिमास्तोत्र × हिन्दी १-३
 २. सतसई विहारीलाल , ले० काल १७७४ फाग्रुए। बुदी १ १-४८
 ३. रसकौतुक रास सभा रक्षन गङ्गादास , , १८०४ सावरा। बुदी १२ ४६-५५

दोहा--- श्रथ रस कीतुक लिख्यते---

गगाधर सेवहु सदा, गाहक रिसक प्रवीन ।
राज सभा रंजन कहत, मन हुलास रस लीन ।।१।।
दपित रित नैरोग तन, विधा सुधन सुगेह ।
जो दिन जाय प्रनद सौ, जीतन को फल ऐह ।।२।।

गुटका-सम्रह

सुंदर पिय मन भावती, भाग भरी सकुमारि ।
सोइ नारि सतेवरी, जाकी कोठि ज्वारि ।।३।।
हित सौ राज सुता, विलसि तन न निहारि ।
ज्या हाथां रै वरह ए, पात्या मैड कारन भारि ।।४।।
तरसै हू परसै नही, नौढा रहत उदास ।
जे सर सूकै भादवै, की सी उन्हाले ग्रास ।।४।।

ग्रन्तिमभाग---

समये रिर्त पोसित नहीं, नाहिर मिलै विनु नेह ।

श्रीसरि चूंन्यों मेहरा, काई वरिस करेह ।।६८।।

मुदरों ले छलस्यों कहा, श्री ही फिरे ना पैद ।

काम सरे दुख वीसरे, वैरी हुवो वैद ।।६६।।

मानवती निस दिन हरे, बोलत खरीवदास ।

नदी किनारे रूखडी, जब तब होइ विनास ।।१००।।

सिव सुंखदायक प्रानपित, जरो श्रान की भोग ।

नासे देसी रूखडी, ना परदेसी लोग ।।१०१।।

गंता प्रेम समुद्र हैं, गाहक चतुर सुजान ।

राज सभी इंहैं, मन हित प्रीति निदान ।।१०२।।

इति श्री गंगाराम कृत रस कौतुक राजसभा रक्षन समस्या प्रबंध प्रभाव। श्री मिती सावरण विद १२ बुधवार संवत् १८०४ सवाई जयपुरमध्ये लिखी दीवान ताराचन्दजी को पोथी लिखत माणिकचन्द वज वाचै जीहेने जिसा माफिक वच्या।

४३६६. गुटका सं० १६। पत्र स० ३६। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १६३० श्रापाढ सुदी १५। पूर्या।

विशेष--रसालकुंवर की चौपई-नेंबरू कवि कृत है।

४४०० गुटका सं० २०। पत्र सं० ६८। म्रा० ६×३ इख्र । ले० काल सं० १६६५ ज्येष्ठ बुदी १२। पूर्या । दशा-सामान्य ।

विशेष--महीधर विरचित मन्त्र महौदधि है।

४४ १. गुटका सं: २१। पत्र सं: ३१६। ग्रा० ६×५ इख्र । पूर्ण। दशा-सामान्य।

१. सामायिकपाठ	×	संस्कृत प्राकृत	१–२४
२ सिद्ध भक्ति ग्रादि सग्रह	×	प्राकृत	२४,-७०
३ समन्तभद्रस्तुति	समन्तभद्र	संस्कृत	७२
४ सामायिकपाठ	×	प्राकृत	७३–५१
५ सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	संस्कृत	८ ५—८६
६ पार्श्वनाय का स्तोत्र	×	77	००१–७३
७ चतुर्विशतिजिनाष्ट्रक	शुभचन्द्र	23	१०१-१४६
८ पञ्चस्तीत्र	×	55	१ ४७—१७०
६, जिनवरस्तोत्र	×	"	१७० -२००
१० मुनीश्वरो की जयमाल	×	59	२०१–२५०
११ सकलीकरणवियान	×	13	२५१–३००
१२ जिनचीबीसभवान्तररास	विमलेन्द्रकीर्त्ति	हिन्दी पद्य पद्य	स०४५ ३०१-५

श्रादिभाग---

जिनवर चुवीसइ जिए भानू पाय नमी कहु भवहं विचार ।

भाविइं सुग्गृत ये सत ।।१।।

यज्ञञ्जय राजा परिंग भगीइ, भाग भूमि ग्राड परिंग सुग्गीड ।

श्रीधर ईंशानि देव ।।२।।

सुचिराज सातयई भवि जागु, श्रच्युतेन्द्र सीलम वखागु ।

वज्रनाभि चन्द्रेश ।।३।।

तप करि सर्वार्थ सिद्धि पासी, भव ग्रग्यारम वृपभह स्वामी ।

मुगितइ ग्या जगनाह ।।४।।

विमलवाहना राजा धरि जायुं, पचामुत्तरि ग्रहमिन्द्र सुभागु ।

इय भविजन परमपद पास्यू ।।६।।

विमल वाहन राजा धरि जायुं, पचामुत्तरि ग्रहमिन्द्र सुभागु ।

विमल वाहन राजा धरि जायु, पचामुत्तरि ग्रहमिन्द्र वखारापुं। ग्रजित ग्रमर पद पास्यूं।।६।। विमल वाहन राजा धरि मुखीइ, प्रथमग्रीवि ग्रहमिंद्र सुभखीइ। शंभव जिन ग्रवतार ॥७॥

श्रादिनाय श्रायान भवान्तर, चन्द्रप्रभ भव सात सोहेकर। शान्तिनाथ भवपार ॥४५॥

निमनाथ भवदशा तम्हे जाराष्ट्रे, पार्श्वनाथ भव दसइ वखाराष्ट्रे।

महावीर भव तेत्रीसइ ॥४६॥

म्रजितनाथ जिन म्रादि कही जइ, मठार जिनेश्वर हिइ धरीजई । त्रिणि त्रिणि भव सही जारणु ॥४७॥

जिन चुनीस भनातर सारो, भराता सुग्रता पुण्य प्रपारो ।
श्री निमलेन्द्रकीर्ति इम बोलइ ॥४८॥

इति जिन चुवीस भवान्तर रास समाप्ता ॥

१३	मालीरासो ।	जिनदास	हिन्दी पद्य	३०५-३१०
१४	नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि	×	संस्कृत	३११-१३
१५	पद-जीवारे जिगावर नाम भजै	×	हिन्दी	₹ १४- १५
१६	पद-जीया प्रभु न सुमरचो रे	×	1)	३१६

४४०२. गुटका स० २२ । पत्र सं० १५४ । ग्रा॰ ६×६३ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-भजन । ले॰ काल स० १८५६ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. नाम ग्रुस गाऊ वाछित पाऊँ	महीचन्द सूरि	हिन्दी	१
	वाय नगर मे मं०	१८८२ मे पं० रामचन्द्र	ने प्रतिलिपि की थी।
२. पार्क्वनाथजी की निज्ञासी	हर्प	हिन्दी	१-६
३. रे जीव जिनधर्म	समय सुन्दर	53	
४ सुख कारण सुमरो	×		Ę
५ कर जोर रे जीवा जिनजी	पं ० फतेहचन्द	53	ঙ
६. चरण शरण ग्रव ग्राइयो		77	5
७ रुलत फिरचो श्रनादिडो रे जीवा	7 7	77	5
The state of the s	Ħ	75	3

८. जादम जान्न वर्णाय	फनेहचन्द	हिन्दी	र० काल स० १८४०	ε
 दर्शन दुहेलो जी 	"	"		१०
१०, उग्रसेन घर बारखें जी	27	"		११
११. वारीजी जिनंदजी वारी	77	'n		१२
१२, जामन मरएा का	>>	? ?		१३
१३. तुम जाय मनावी	1)	22		१३
१४. ग्रव ल्यू नेमि जिनदा	11	>>		१४
१५ राज ऋषभ चरण नित वंदियें	>>	97		१ ५
१६. कर्म भरमायै	77	99		१६
१७. प्रघुजी थाकै सरखे श्राया	37	99		१७
१८. पार उतारो जिनजी	"	? 7		१७
१६. थाको सावरी मूरति छवि प्यारी	>;	"		१८
र्२०. तुर्म जाय मनावो	77	37	अपूर्ण	१८
२१. जिन चरणा चितलाग्रो	37	"		38
२२: म्हारो मन लाग्योजी	>>	3)		38
२३. चञ्चल जीव जरे	नेमीचन्द	73		२०
२४. मो मनरा प्यारा	सुखदेव	37		२१
२५ ग्राठ भवारों वाहली	खेमचन्द	33		२२
२६. समदविजयजीरो जादुराय	"	,,		२३
२७, नाभिजी के नन्दन	मनसाराम	ñ		२३
२८. त्रिंभुवन गुरु स्वामी	भूधरदास	2)		२४
२६. नाभिराय मोरा देवी	विजयकीत्ति	17		२६
३०. वारि २ हो वोमाजी	जीवग्राम	"		२६
३१. श्री ऋषभेसुर प्ररामू पाय	सदासागर	"		२७
३२. परम महा उत्कृष्ट भ्रादि सुरि	श्रजैराम	7)		२७
३३. वै गुरु मेरे उर वसो	भूधरदास	v		38
३४. करो निज सुखदाई जिनधर्म	त्रिलोककीर्ति	77		₹o

गुटका-संप्रह]			ि ४८१
३५ श्रीजिनराय की प्रतिमा वंदी जाय	त्रिलोककीर्त्त	हिन्दी	38
३६. होजी थाकी सावली सूरत	पं० फतेहचन्द	>5	३२
३७, कवही मिलसी हो मुनिवर	×	33	३३
३८. नेमीसुर ग्रुरु सरस्वती	सूरजमल	🤧 र० काल स० १७०	\$\$ \\$
३९. श्री जिन तुमसै वीनऊ	ग्रजयराज	39	३४
४०. समदविजयजीरो नंदको	मुनि हीराचन्द	3 ?	३४
४१ शंभुजारो वासी प्यारो	नथविमल	77	३६
४२. मन्दिर ग्राखाला	×	19	3 Ę
४३. ध्यान धरघाजी मुनिवर	जिनदास	77	<i>३७</i>
४४. ज्यारे सोमें राजि	निर्मल	"	३८
४५. केसर हे केसर भीनो म्हारा राज	×	99	38
४६. समिकत थारी सहलड़ीजी	पुरुषोत्तम	? ?	४०
४७. ग्रवगति मुक्ति नही छै रे	रामचन्द्र	33	४१
४८. वधावा	59	33	४२
४६. श्रीमंदरजी सुगाज्यो मोरी वीनती	गुराचन्द्र	"	٧₹
५०. करकसारी वीनती	भगोसाह	77	አ ጸ-ጾጳ
		सूत्रा नगर मे सं० १८२६ मे	(चना हुई थी।
५१. उपदेशवावनी	×	हिन्दी	४५–६१
५२. जैनवद्री देशकी पत्री	मजलसराय	» स॰ १ ८२ १	६२ –६६
५३ ५५ प्रकार के मूर्खों के भेद	×	"	६७– ६६
५४. रागमाला	×	,, ३६ रागनियो के स	गम हैं ७०
५५. प्रात भयो सुमरदेव	जगतरामगोदीका	,, राग भैंहं	৬০
५६. चलि २ हो मिव दर्शन काजै	53	97	७१
५७. देवो जिनराज देव सेव	5 7	"	७२
५८. महाबीर जिन मुक्ति पधारे	77	"	७२
५६. हमरैतो प्रमु सुरति	"	79	७३

५५ छवि जिन देखी देवकी

=२ ी			[गुटका-संप्रह
६० श्रीरिपनजी की ध्यान धरी	जगतराम गोदीका	हिन्दी		4
६१ प्रात प्रथम ही जपो	"	11		७४
६२. जागे श्री नेमिकुमार	97	"	राग रामकली	v
६३ प्रभुके दर्शन को में ग्रायो	**	"		७४
६४. गुरुही भ्रम रोग मिटावे	***	**		৬২
६५. भून कदरी नेमि पडावै	"	"		७४
६६. निंदा तू जागत ययो नहिंरे	9>	**		७६
६७ उतो मेरे प्राणको पियारो	"	33		७६
६८. राखोजी जिनराज सरन	37) }		७६
६९. जिनजी से मेरी लगन लगी	99	1)		७६
७०. सुनि ही श्ररज तेरे पाय परीं	99	"		<i>७७</i>
७१ मेरी कीन गति होसी	27	13		৩৩
७२. देखारी नेम कैसी रिद्धि पाई	2)	19		৬=
७३. ग्राजि ववाई राजा नाभि के	77	11		৬দ
७४ वीतराग नाम मुमरि	मुनि विजयकीत्ति	11		૭૬
७५. या चेतन सब बुद्धि गर्ड	वनारसीदास	"		30
७६ इस नगरी मे किस विध रहना	वनारसीदास	"		૭ ૨
७७ मैं पाये तुम त्रिभुवन राय	हरीसिंह	n		50
७८ ऋपभग्रजित संभव हरगा	भ० विजयकीति	77		50
७६ उठो तेरो मुख देखू	व्रह्मटोड र	"		50
देखोरी श्रादीश्वरस्वामी कैसा व्य	ान लगाया है खुशालचद	•		5 {
८१. जै जै जै जै जिनराज	लालचन्द	73		5
५२ प्रमुजी तिहारी कृ षा	हरीसिंह	"		5
५३ धमिक २ घुम तागड दि दा ना	रामभगत	99		५ २
८४ विषय त्याग शुभ कारज लागो	नवल	77		दर
	_			

फतेहचन्द

77

5

गुटक,-सन्रह]				्रि ४ ५ ३
८६ देखि प्रभु दरस कौए।	फतेहचन्द	हिन्दी	-	५ ३
८७. प्रभु नेमका भजन करि	चलतराम	"		प ३
८८ म्राजि उदै घर सपदा	खेसचन्द	77		দ্র
८९. भज भी ऋषभ जिनद	शोभाचन्द	79		58
धेर तो योही चाव है	×	77		4 8
११. मुनिसुवत जिनराज को	भानुकोत्ति	37		4 8
६२. मोरे प्रभु सूं प्रीति लगी	दीपचन्द	"		ሜ ሄ
६३. शीतल गगादिक जल	बि जयकी त्ति	77		5 1
६४. तुम श्रातम गुग जानि	बनारसोदास	77		ፍ ሂ
६५. सब स्वारथ के मीत है	×	77		
६६, तुम जिन ग्रटके रे मन	श्रीभूषगा	73		75 4
६७. कहा रे श्रज्ञानी जीवकू ँ	×	77		46
६८. जिन नाम सुमर मन बावरे	चानतराय	79		न्दह
६६ सहस राम रस पीजिये	रामदास	77		स ६
१००. सुनि मेरी मनसा मालगो	×	"		75 &
१०१. वो साधु ससार मे	×	7)		50
१०२. जिनमुद्रा जिन सारसी	×	"		59
१०३. इएाविधि देव ग्रदेव की मुद्रा लिख ले	ीजै 🗙	3 9	,	50
१०४ विद्यमान जिनसारसी प्रतिमा जिनवः	रकी लालचद	75		5 5
१०५ काया वाडी काठकी सीचत सूके ग्राप	मुनिपद्मतिलक	53		፝ጜጜ
१०६. ऐसे क्यो प्रभु पाइये	×	"		<u>۾</u> و
१०७ ऐसे यो प्रभु पाइये	×	33		ج و
१०८. ऐसे यो प्रभु पाइये सुनि पडित प्रार्ण	t ×	33		وه
१०६. मेटो विथा हमारी	नयनसुख	n	و	٤٥
, ११०. प्रभुजी जो तुम तारक नाम घरायो	ह्रसचन्द	77		69
१११. रे मन विषया भूलियो	भानुकीत्ति	73	;	·E ?

y=8]			[गुटका-संप्रह
११२. सुमरन ही में त्यारे	द्यानतराय	हिन्दी	€ ₹
११३. भ्रव लै जैनधर्म को सरगो	×	23	६१
११४ वैठे वष्त्रदन्त भूपाल	चानतराय	99	ε,
११५ इह सुंदर मूरत पार्श्व की	×	77	६२
११६. उठि सवारै कीजिये दरसगा	×	29	६२
११७. कौन कुवाए। परी रे मना तेरी	×	99	६२
११८. राम भरथ सी कहे सुभाय	चानतराय	n	६३
११८ कहे भरतजी सुिंग हो राम	37	33	εβ
१२०. मूरति कैसे राजें	जगतराग	33	٤٦
१२१, देखो सिख कौन है नेम कुमार	विजयकोत्ति	. "	£3
१२२. जिनवरजीसू प्रीति करी री	59	77	£ %
१२३. भोर ही श्राये प्रभु दर्शन को	हरखचन्द	"	£¥
१२४. जिनेसुरदेव भ्राये करण तुम सेव	अगतराम	"	٧3
१२५. ज्यो बने त्यों तारि मोकू	गुलावकृष्ण	"	88
१२६. हमारी वारि श्री नेमिकुमार	×	"	83
१२७. म्राछे रङ्ग राचे भली भई	* ×	"	દ્ય
१२८. एरी चलो प्रभुको दर्श करा	जगतराम	"	દ્ય
१२६. नैना मेरे दर्शन है लुभाय	×	"	£\$
१३०. लागी साभी प्रीति तू साभे	×	"	દય }ુ
१३१. तें तो मेरी सुधि हून लई	×	"	£ %
१३२. मानो मैं तो शिव सिधि लाई	×	"	દ ફ
१३३. जानीये तो जानी तेरे मनकी कहानी	विजयकीति	"	१ ६
१३४. नयन लगे मेरे नयन लगे	×	33	इ
१३५. मुक्तपे महरि करो महाराज	विजयकीर्त्ति	"	६६
१३६ चेतन चेत निज घट माहि	97	33	, 80
१ '३७. पिव विन पल छिन वरस विहात	"	39	· 60 }.

गुटका-संग्रह]			[4=4
१३८, ग्रजित जिन सरएा तुम्हारी	मानुकीत्ति	हिन्दी	છ 3
१३६. तेरी मूरित रूप वनी	रूपचन्द	17	<i>શ</i> ક
१४०. ग्रथिर नरमव जागिरे	विजयक <u>ी</u> त्ति	77	. 82
१४१. हम हैं श्रीमहावीर	17	29	ह द
१४२. भलैभल ग्रासकली मुभ ग्राज	"	53	१६
१४३. कहा लो दास तेरी पूज करे	? >	53	१ ५
१४४. ग्राज ऋषभ घरि जावै	77	**	33
१४५. प्रात भयो बलि जाऊं	7>	"	. 33
१४६. जागो जागोजी जागो	99	"	. 33
१४७. प्रात समै उठि जिन नाम लीजै	हर्षचन्द	13	33
१४८. ऐसे जिनवर मे मेरे मन विललायो	श्रनन्तकीत्ति	"	200
१४६. श्रायो सरगा तुम्हारी	×) ;	77
१५०. सरण तिहारी म्रायो प्रभु में	श्रखयराम	53	33
१५१. वीस तीर्थङ्कर प्रात संभारो	विजयकीत्ति	3)	१० १
१५२. कहिये दीनदयाल प्रभु तुम	द्यानतराय	97	57
१५३. म्हारे प्रकटे देव निरञ्जन	वनारसीदास र्	; ;	7)
१५४. हू सरग्गत तोरी रे	×	77	75
१५५. प्रभु मेरे देखत ग्रानन्द भये	जगतराम्	5 7	१०२
९ १५६. जीवडा तू जागिनै प्यारा समिकत म	नहलमे हरीसिंह	93	77
१५७ घोर घटाकरि म्रायोरी जलघर	जयक्रीति	? >	7 5
१५८. कौन दिकासूं म्रायो रे वनचर	×	95	"
१५९. सुमति जिनंद गुरामाला	गुग्चन्द	39	१०३
१६०. जिन बादल चढि ग्रायो हो जगमे	"	7>	77
१६१. प्रभु हम चरएान सरन करी	ऋषभहरी	20	 7#
१६२. दिन २ देही होत पुरानी	जनमल	33	37
१६३, सुग्रुरु मेरे वरसत ज्ञान भरी	हरख चन्द	n	१०४

لهج

المحديد

% =&]			[गुटका-संप्रह
१६४ वया सोचत ग्रति भारी रेमन	द्यानतराय	हिन्दी	१०४
१६५. समिकत उत्तम भाई जगतमे	"	,,	;;
१६६. रे मेरे घटज्ञान घनागम छायो	77	"	१०४
१६७ ज्ञान सरोवर सोइ हो भविजन	57	77	"
१६८ हो परमगुरु बरसत ज्ञानकरी	33	"	99
१६६ उनाः जिन दर्शन को नेस	ा देवमेन	"	33
१७० मेरे प्रव गुरु है प्रभुते वक्तमो	हर्पकीति	***	१०६
१७१. वलिहारी खुदा के वन्दे	जानि मोहमद	"	"
१७२ मैं तो तेरी भ्राज महिमा जानी	भूधरदास	"	23
१७३ देखोरी ग्राज नेमीसुर मुनि	×	21	3)
१७४ कहारी कहु कछु कहत न ग्रावै	द्यानतराय	73	१०७
१७८ रेमन करिसदा सतोप	वनारसीदास	77	37
१७६ मेरी २ करता जनम गयो रे	रूपचन्द	n	"
१७७ देह बुढानी रे मै जानी	विजयकीत्ति	"	23
१७८ साधो लेज्यो मुमित श्रकेली	बनारमोदास	11	१०८
१७६ तनिक जिया जाग	विजयकीति	77	71
१८० तन धन जोवन मान जगत मे	×	"	79
१८१ देख्यो वन मे ठाडो वीर	भूघरदास	"	30\$
१८२ चेतन नेकुन तोहि सभार	वनारसीदास	5)	33
१८३. लगि रह्योरे ग्ररे	वस्तराम	**	"
१८४ लागि रह्यो जीव परभाव मे	×	"	,,
१५५ हम लागे श्रातमराम सो	चानतराय	"	११०
१८५. निरन्तर घ्याऊ नेमि जिनद	विजयकीति	"	"
१८७ कित गयोरे पथी बोल तो	भूघरदास	33	27
१८८ हम वैठे ग्रानी मीन से	बनारसीदास	77	95
१-६ ेंद्रेविधा कब जैहैगी	×	77	१११

गुटका-संप्रह]			E X50
१६० जगत मे सो देवन की देव	बनारसीदास	हिन्दी	१११
१६१. मन लागो श्री नवकारसू	गुरगचन्ह	n	77
१६२. चेतन ग्रव खोजिये	77	" राग स	ारङ्ग ११२
१६३. श्राये जिनवर मनके भावतें '	राजसिंह	77	ור
१६४. करो नाभि कवरजी को स्रारती	लालचन्द	37	77
१९५. री भाको वेद रटत ब्रह्मा रटत	नन्ददास	33	११३
१६६. तें चरभव पाय कहा कियो	रूपचन्द	33	99
१९७. ग्रिखया जिन दर्शन की प्यासी	×	77	99
१६८. विल जङ्ये नेमि जिनदकी र	भाउ	y-	50
१६६. सब स्वारथ के विरोग लोग	विजयकीर्ति	3 7	११४
२००. मुक्तागिरी वंदन जइये री	देवेन्द्रभूपरा	3)	59
	स० १	२२१ मे विजयकीत्ति ने मुक्तायि	ी की वंदना की थी।
२०१. उमाहो लाग रह्यो दरशन को	जगतराम	हिन्दी	११४
२०२. नाभि के नद चरण रज वदी	विसनदास	"	3 9
२०३. लाग्यो म्रातमराम सो नेह	चानतराय	57	99
२०४. घनि मेरी ग्राजको घरी	×	77	११५
२०५. मेरो मन बस कीनो जिनराज	चन्द	37	77
२०६. धनि वो पीव धनि वा प्यारी	ब्रह्मदयाल	97	77
२०७. म्राज मैं नीकै दर्शन पायो	े कर्मचन्द	**	79
२०८ देखो भाई माया लागत प्यारी	×	77	११ ६
२०६. कलिजुग मे ऐसे ही दिन जाये	हर्षकीत्ति	n	59
२१० श्रीनेमि चले राजुल तजिके	×	77	33
२११ नेमि कवर वर वीद विराजें	×	77	११७
२१२ तेइ बडभागी तेइ बड़भागी	सुदरभूवण	17	"
२१३ ग्र रेमन के के बर सम फायो	×	77	"
े २१४ कब मिलिहो नेम प्यारे	विहारीदास	\$ "	7)

7

*

गुटका-संप्रह }			[٢٥٤
२४१. मैं बंदा तेरा हो स्वामी	चानतराय	हिन्दी	१२३
२४२. जै जै हो स्वामी जिनराय	रूपचन्द	19	37
२४३ तुम ज्ञान विभो फूली वसत	चानतराय	39	१२४
२४४, नैननि ऐसी बानि परि गई	जगतराम	77	27
२४५ लागि लौ नाभिनंदन स्यौ	भूधरदास	99	79
२४६ हम ग्रातम को पहिचाना है	चानतराय	97	77
२४७. कौन सयानग्न कीन्होरे जीव	जगतराम	97	19
२४८ निपट हो कठिन हेरी	विजयकीत्ति	99	95
२४६. हो जी प्रभु दीनदयाल मैं बदा तेरा	ग्रक्षयराम	79	<i>६ २</i> ४
२५०. जिनवाणी दरयाव मन मेरा	गुणचन्द्र	15	59
२५१. मनहु महागज राज प्रभु	"	\$ \$	19
- २५२ इन्द्रिय ऊपर ग्रसवार चेतन))	"	17
२५३. आरसी देखत मोहि श्रारसी लागी	समयसुन्दर	***	१२६
२५४. काके गढ फौज चढी है	×	7)	77
२५५. दरवाजे वेडा खोलि खोलि	श्रमृतचन्द्र	11	13
२५६. चेति रे हित चेति चेति	द्यानतराय	77	99
२५७ चिंतामिंग स्वामी सोचा साहव मेरा	वनारसीदास	5 5	77
२५९. सुनि माया ठगिनी तैं सव ठिगी खाया	भूघरदास	99	१२७
२५६ चिल परसै श्री शिखरसमेद गिरिरी	×	73	79
२६०. जिन गुए। गावी री	×	3 7	99
२६१. वीतराग तेरी मोहिनी मूरत	विजयकीत्ति	"	59
२६२. प्रभृ सुमरन की या विरिया	77	"	१२न
२६३. किये ब्राराघना तेरी	नवल	27	5)
२६४. घडो धन म्राजकी ये ही	नवल	99	77
२६५ मैय्या भ्रपराध क्या किया	विजयकीर्त्ति	17	१२६
२६६. तजिके गये पीव हमको तकसीर क्या	विचारी, नवल	? ?	27

Ţ

keo]		[गुटका समह
२६७. मेया री गिरि जानेदे मोहि नेमजीयू काम है, श्रीराम	1)	१२६
२६८. नेम व्याहनकू श्रावा नेम नेहरा बधाया विनादीलान	111	१३ +
२६९. धन्य तुम धन्य तुम पतित पात्रन 💢	91	१३१
२७०. चेतन नाडी गूलिये नपन	9 7	11
२७१. त्यारी श्री महाबीर मोर्र दीन जानिने नवार्रराम	73	11
२७२. मेरो मन बस कोन्हा महात्रीर (चादनपुरके) हर्पकीनि	11	93
२७३ राघो सीता चनहु गेह रा.नतराय	37	77
२७८. वहं मीताजी मुनि रामचन्द्र 19	**	१ ३२
२७५. निंह छाटा हो जिनराज नाम हर्पत्रीसि	71	11
२७६. देवगुरु पहिचान वर्द 💢	77	"
२७७. नेमि जिनद गिरनेरया जीपराम	11	734
२७८ वय परदेसी को पतियारो हर्पकीर्त्त	हिन्दी	१ ३३
२७६ चेतन मान लें साढी तिया यानतराय	11	93
२८०. सावरी मूरत मेरे मन वसी है माई नवल	37	11
२=१ श्रायो रे बुढापी वैरी गूपरदास	tt	31
२८२. साहिबो यो जीवनडी म्हारी जिनहर्प	**	Y\$Y
२=३ पच महाव्रतथार। विद्यनसिंह	17	1)
२८४. तेरी बलिहारी हा जिनराज 💢	37	11
२८५ देख्या दुनिया विच वे काई भ्रजव तमाद्या, भूधरदाम	71	\$ \$ %
२८६ श्रटके नैना नही वहैदा नवल	11	97
२८७ चलो जिनददिये एरी समी यानतराय	33))
२८५ जगतनन्दन तम नायक जादी-पति 🗙	2)	27
२८६ म्राछिन गदिय मानु नेमजी प्यारी म्रसिया राजाराम	77	१ ३६
२६० हाजी इक ध्यान संतजी का घरना हैमराज	**	73
२६१ भला हो माउँ साइ हो 💢	77	77
२६२. तू ब्रह्म भूलो, तू ब्रह्म भूलो ब्रज्ञानी रे प्राणी वनारमीदास	3)	53

गुटका-सम्रह				[४६१
२६३. होजी हो सुधातम एह निज पद भूलि रह्या	×	हिन्दी		१	३६
२६४. मुनि क्नक कीर्ति की जकडी	मोतीराम	77		?	₹
रचना काल स० १८५३ लेखन	काल संवत् १८५६ नार	गौर मे पं	० रामचन्द्र ने लिपि र्क	tı	
२६५ छोक विचार	×	हिन्दी	ले० काल १८५७	१ः	₹ ७
२६६ सावरिया ग्ररज सुनो मुभ दीन की हो पं	• खेमचद	हिन्दी	·	ę s	₹ ¤
२६७. चोदलेडी मे प्रभुजी राजिया	37	73	Y		77
२६८ ज्यो जानत प्रभु जोग घरघो है	चन्द्रभान	"			9)
२६६ म्रादिनाथ की विनती मुनि क	क कीर्ति	77	र० काल १८५६ १३	£-7	60
२००. पार्श्वनाथ की ग्रारती	37	יני		१४	(a
३०१ नगरो की वसापत का सवत्वार विवरसा	77	77		१४	'१
सवत् ११११ नागौर मडाएाो श्राखा	तीज रै दिन।				
,, ६०९ दिली वसाई ग्रनगपाल	न तुंवर वैसाल सुदी १२	भौम ।			
_७ १६१२ श्र क्वर पातशाह श्राग	- <u>.</u>				
, ,, ७३१ राजा भोज उंजराो ब	साई ।				
,, १४०७ ग्रहमदाबाद ग्रहमद प	ातसाह वसाई ।				
,, १५१५ राजा जीवे जोधपुर व	सायो जेठ सुदी ११।				
» १५४५ बीकानेर राव बीकै वस्	गाई				
" १५०० उदयपुर रागौ उदयसिंह	ह वसाई।				
" १४४५ राव हमीर न रावत प	क्लोधी वसाई।				
,, १०७७ राजा भोज रै वेटै वीर	र चौरायण सेवाणो वसाय	ì i			{
" १५६६ रावल वीदै महेवो बस	ायो ।				
🥠 १२१२ भाटी जेसे जैसलमेर ब		१२ रवौ ।			
" ११०० पवार नाहररीव मंडीव	र बसायो। ,				
" १६११ राव मालदे माल कोट	•				
» १५१८ राव जोधांवत मेडतो व	-				
" १७८३ राजा जैसिंह जैपुर वसा	यो कछावै।				

```
सवत् १३०० जालीर सोनडारै वसाई।
```

- ,, १७१४ श्रीरंगसाह पातसाह श्रीरंगावाद बसायो।
- ,, १३३७ पातसाह श्रलावद्दीन लोदी वीरमदे काम श्रायो ।
- " ६०२ ग्रग्राहल गुवाल पाटग्रा वसाई वैसाय सुदी ३।
- ,, २०२ (१२०२)? राव ग्रजेपाल पवार ग्रजमेर बमाई।
- ,, ११४८ सिंधराव जैसिंह देही पाटगा में।
- " १४५२ देवडो सिरोही वसाई।
- " १६१९ पातसाह श्रकवर मुलतान लीयो।
- " १५६६ रावजी तैतवो नगर वसायो।
- ,, ११८१ फलोधी पारसनाथजी।
- ,, १६२९ पातसाह ग्रकवर ग्रहमदावाद लोधी।
- " १५६६ राव मालदे वीकानेर लोधी मास २ रही राव जैतसी ग्राम ग्रायो।
- ,, १६६९ राव कियनसिंह किशनगढ वसायो।
- " १६१९ मालपुरो वसायो।
- " १४५५ रैंगापुरी देहूरी थापना।
- " ६०२ चीतोड चित्रगद मोडीयै बसाई।
- " १२४५ विमल मश्रीस्वर हुवो विमल वसाई।
- ,, १६०६ प्रातसिंह प्रकवर चीतोड लोघी जे० सूदी १२।
- ,, १६३६ पातसाह भ्रकवर राजा उदैसिंहजी नुम्हाराजा रो खिताव दीयो।
- ,, १६३४ पातसाह भ्रवनवर कछोविदा लीधो।

३०२. खेताम्बर मत के चौरासी बोल		हिन्दी	34-648
३०३. जैन मत का सकल्प	×	सस्कृत	ग्रपूर्ग
३०४. शहर मारोठ की पत्री	×	हिन्दी पद्य	१५१

स० १८५८ ग्रसाह वदी १४

सर्वज्ञजिनं प्रग्रमामि हितं, सुभथान पलाडा थी लिखित । सुमुनी महीचन्दजि की विदय, नवनंद हुकम लुग्गा सदय ॥१॥

13

किरपा फुिंगा मोहन जीवरायं, अपरंपुर मारोठ यानकयं।
सरवोपम लायक थान छजै, ग्रुह देख सु ग्रागम भिक्तं यजै।।र।।
तीर्थेङ्कर ईस भिक्त धरै, जिन पूर्ज पुरंदर जेम करै।
चतुसंघ सुभार घुरंघरयं, जिन चैति चैत्यालय कारकय।।३।।
व्रत द्वादस पालस सुद्ध खराँ, सतरै पुनि नेम धरै सुथरा।
वहु दान चतुर्विध देय सदा, ग्रुह शास्त्र सुदेव पुजै सुखदा।।४।।
धर्म प्रश्न जु श्रेगिक भूप जिसा, सद्यश्रेयास दानपित जु तिसा।
निज वंस जु व्योम दिवाकरयं, ग्रुग सौत्य कलानिधि बोधमय।।१।।
सु इत्यादिक वोयम योगि वहु, लिखियो जु कहा लग वोय सहू।
दयुड़ा गोठि जु श्रावग पच लसे, ग्रुद्ध वृद्ध समृद्धि ग्रानन्द वसे। ६।।
तिह योगि लिखै ध्रम वृद्ध सदा, लिह्यो सुख सपित भोग मुदा।

इह थानक ग्रानन्द देव जपै, उत चाहत खेम जिनेन्द्र कृपै।

ग्रापरंच जु कागद ग्राइ इते, समाचार वाच्या परसंन तिते ।।६।।

सह वात जु लाय ध्रमकरं, ध्रम देव ग्रुह पिस भिक्त भरं।

मर्याद सुधारक लायक हो, कल्पद्रुम काम सुदायक हो।।६।।

यशवंत विनैवंत दातृ गहो, ग्रुग्यशील दयाध्रम पालक हो।

इत है व्यवहार सदा तुम को, उपराति तुमै निह ग्रीरन को।।१०।।

लिखियो लघु को विधमान यहु, सुख पत्र जु वाहुडता लिखि हू।

वसू वाग्य वसू पुनि चन्द्र कियं, विद मास ग्रसाढ चतुर्दिशियं।।११।।

इह त्रोटक छद सुचाल मही, लिखवी पतरी हित रीति वही।

तुम भेजि हू यैक संकर नै, समचार कह्या मुख ते सुइने । इनके समाचार इते मुख ते, करज्यो परवान सबै सुखते ॥१३॥

।। इति पत्रिक सहर म्हारोठ की पचायती नु ।।

X

४४०३ गुटका सं० २३। पत्र सं० १८२। श्रा० ८×५३ इंच। पूर्ण। दशा-सामान्य। विशेष—विभिन्न रचनाम्रो मे से विविध पाठो का सम्रह है।

४४०४ गुटका सं० २४। पत्र स० दश । ग्रा० ७×६ इख । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा ।

पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ चतुर्विशति तीर्थन्द्वराप्टक	चन्द्रकीत्ति	मस्कृत	१–६५
२ जिनचैत्यालय जयमाल	रत्नभूषरा	हिन्दी	६६–६६
३ समस्त व्रत की जयमाल	चन्द्रकीति	"	デ ピー0ピ
४. ग्रादिनाथापृक	×	93	४७–६७
५. मिएारत्नाकर जयमाल	×	37	७७- ४७
६ ग्रादीश्वर ग्रारती	×	99	=

४४०४. गुटका सं० २४ । पत्र सं० १५७ । ग्रा॰ ६४५ इख्र । भाषा-सन्द्रत हिन्दी । ले॰ काल सं० १७४५ ग्रासोज सुदी १३ ।

१. दशलक्षरापूजा	×	संस्कृत	१-५
२. लघुम्वयभू स्तोत्र	×	* 20	१६-१=
३ शास्त्रपूजा	×	99	१ ६– २ ४
४. पोडशकारसपूर्वा	×	23	२४–२७
५. जिनसहस्रनाम (लघु)	×	27	२७–३२
६ सोलकारगरास	मुनि सकलकीत्ति	हिन्दी	३३-३८
७. देवपूजा	×	संस्कृत	५०–६६
s. सिद्धपूजा	×	93	६७–७३
६. पद्ममेरुपूजा	×	"	७४-७५
१० ग्रष्टाह्निकाभक्ति	×	77	७६–८६
११ तत्वार्यसूत्र	उमास्त्रामी	7)	209-03
१२. रत्नत्रयरूजा	पंडिताचार्थं नरेन्द्रसेन	71	११६ –१३७
१३. क्षमावस्मीपूजा	ब्रह्मसेन	77	<i>१३</i> ५-१४४
१४. सोलहतियिवर्णन	×	हिन्दी	१ ४६

१५	बीसविद्यमान तीर्थड्करपूजा	×	संस्कृत	१४१-४४
१६	भास्त्रजयमाल	×	प्राकृत	१५५-५१

४८०६. गुटका सं०२६। पत्र स० १४३। म्रा० ५४४ इख्रा ले० काल सं० १६८८ ज्येष्ठ बुदी २ १ पूर्ण। दशा-जीर्ण।

१. विषापहारस्तोत्र	धनक्षय	संस्कृत	१− ४
२. भूपालस्तोत्र	भूपान	77	3-8
३. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	53	E-23
४. सामयिक पाठ	×	"	१३–३२
५ भक्तिगठ (सिद्ध भक्ति ग्रादि)	×	99	₹ ₹ —७०
६. स्वयभूस्तोत्र	समन्तगद्राव र्	17	७१ -5७
७. वन्देतान की जयमाला	×	"	दद–दर्
<. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	• "	e0\$-92
६. श्रावकप्रतिक्रमग्	×	7)	१०५-२३
१० गुर्वावलि	×	"	१ २४ – ३३
११. कल्याग्मिन्दरस्तोत्र	कुमुदचन्द्राचार्य	9 7	१३४-१३६
१२. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	77	१३६-१४३

सवत् १६८८ वर्षे ज्येष्ठ वृदी द्वितीया रवौदिने ग्रद्योह श्री घनौघेन्द्रगे श्रीचन्द्रप्रभचैत्यालये श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगरो कुंदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीविद्यानित्द पट्टो भ० श्रीमिल्लिभूषरापट्टो भ० श्रीज्ञभयचन्द्रपट्टो भ० श्रीग्रभयचन्द्रपट्टो भ० श्रीग्रभयचन्द्रपट्टो भ० श्रीग्रभयचन्द्रो त्रह्य श्री ग्रभयसागर सह।येनेदं क्रियाकलापपुस्तक लिखितं श्रीमद्धनौघेन्द्रगच्छ हुबडजातीयः लघुशाखाया समुत्पन्नस्य परिखरिवदासस्य भार्या वाई कीकी तयो सभवा सुता ग्रताइनाम्नै प्रदत्तं पठनार्थं च।

४४०७ गुटका सं० २७। पत्र सं० १५७। ग्रा० ६४५ इख्र । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । दश-

विशेप-पं तेजपाल ने प्रतिलिपि की थी।

१. शास्त्र पूजा	×	सस्कृत	१-२
२. स्फुट हिन्दी पद्य	×	हिन्दी	₹-७

४६६] _.			[गुटका-संप्रह
३. मँगल पाठ	×	सस्कृत	5-8
४. नामावज़ी	×	91	€ − ११
५. तीन चौबीसी नाम	×	हिन्दी	१२-१ ३
६. दर्शनपाठ	×	संस्कृत	<i>१३</i> –१४
७. भैरवनामस्तोत्र	×	> 7	१४ -१ ५
पश्चमेरूपू जा	मूघरदास	हिन्दी	१ ५–२०
६. ग्रष्टाह्मिकापूजा	×	सस्कृत	૨ १–૨ ૫
१०. षोडशकारगापूजा	×	17	२ ५—२७
११. दशलक्षरापूजा	×	? ?	२७–२६
१२. पश्चपरमेष्ठीपूजा	×	33	₹ - ₹0
१३. श्रनन्तव्रतपूजा	×	हिन्दी	₹₹—३३
१४. जिनसहस्रनाम	म्राशाधर	सम्बृत	३४- ४६
१५. भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	メ ゆーギ á
१६. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	39	43–44
१७. पद्मावतीस्तोत्र	×	? ?	¥ 5 — 6 0
१८. पद्मावतीसहस्रनाम	×	3 3	६१-७१
१६ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	77	<i>७२</i> ~ <i>⊊७</i>
२०. सम्मेद शिखर निर्वाण काण्ड	×	हिन्दी	≒ ≒~€१
२१. ऋषिमण्डलस्तोत्र	×	सस्कृत	03-53
२२. तत्वार्थसूत्र (१-५ म्रध्याय)	उमास्वामि	"	££-{0•
२३ मक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	हिन्दी -	१०० - १६
२४. कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा	वनारसीदास	"	१०७१११
२५. निर्वाग्तकाण्डभाषा	भगवतीदास		
२६. स्वरोदयविचार	×	"	११ २ —१३
२७. बाईसपरिषह	×	»;	११४ - ११ <i>१</i>
२८. सामायिकपाठ लघु	×))))	१२•–१२५ १२५–२६
			2 10 - 14

गुटका-समह]

२६. श्रावक की करणी	हर्षकीति	हिन्दी ,	१२६२=
३०. क्षेत्रपालपूजी	×	"	१२५-३२
३१. चितामगीपार्स्वनाथपूजा स्तोत्र	×	सस्कृत	१३२–३६
३२. कलिकुण्डपार्श्वनाथ पूजा	×	हिन्दी	१३६-३६
३३. पद्मावतीपूजा	×	संस्कृत	१४०–४२
३४. सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	3 7	१४३–४६
३५ ज्योतिष चर्चा	×	"	१४७–१५७

४४०८. गुटका सं० २८ । पत्र सं० २० । म्रा० ८३४७ डख्र । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष-प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठो का संग्रह है।

४४०६ गुटका सं० २६। पत्र स० २१। ग्रा० ६३ र४ इञ्च। ले० काल स० १८४६ मंगसिर सुदी १०। पूर्ण। दशा—सामान्य।

विशेष-सामान्य शुद्ध । इसमें संस्कृत का सामायिक पाठ है ।

४४१०. गुटका सं० ३०। पत्र सं० ८ । ग्रा० ७×४ इञ्च । पूर्ण ।

विशेष-इसमे भक्तामर स्तोत्र'है।

४४११. गुटका सं '३१ । पत्र सर '१३ । ग्री ० ६३×४३ इंच । भाषा-हिन्दी, सस्कृत ।

विशेष-इसमे नित्य नियम पूजा है।

४४१२. गुटका सं० ३२। पत्र स० १०२। ग्रा० ६३४५ इख्र । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८६६ फाग्रुग बुदी ३। पूर्ण एवं शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमे प० जयचन्दजी कृत सामायिक पाठ (भाषा) है। तनसुख सोनी ने ग्रलवर मे साह दुलीचन्द की कचहरी मे प्रतिलिपि की थो। ग्रन्तिम तीन पत्रो मे लघु सामायिक पाठ भी है।

४४१३. गुटका सं० ३३ । पत्र स० २४० । ग्रा० ५×६६ इख्र । विषय-भजन सग्रह । ले० काल × । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष-जैन कवियों के भजनो का संग्रह है।

४४१४. गुटका सं० ३४। पत्र सं० ४१। ग्रा० ६३ ×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । ले० काल स० १६० पूर्ण । सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य ।

कृपाराम

हिन्दी

9-30

र० काल सं० १७६२ कात्तिक सुदी १०।

ग्रादिभाग-दोहा--

१. ज्योतिपसार

सकल जगत सूर प्रसूर नर, परसत गरापित पाय । सो गरापति बुधि दीजिये, जन अपनो जितलाय ।। श्रह परसो चरनन कमल, युगल राधिका स्याम । धरत ध्यान जिन चरन को, सूर न (र) मुनि ग्राठो जाम ॥ हरि रावा राधा हरि, जुगल एकता प्रान । जगत श्रारसी मैं नमो, दूजो प्रतिबिम्ब जान ॥ सोभित ब्रोढे मत्त पर, एकहि जुगल किसोर। मनो लस घन माभ सिस, दामिनी चार श्रीर।। परसे श्रति जय चित्त के, चरन राधिका स्याम। नमस्कार् कर जोरि कै, भाषत किरपाराम ।। साहिजहापुर सहर मे, कायथ राजाराम । तुलाराम तिहि वस मे, ता सुत किरपाराम ॥६॥ लघु जातक को ग्रन्थ यह, सुनो पडितन पास। ताके सबै श्लोक के, दोहा करे प्रकास ॥७॥ ग्रो ग्रवह जे सुनौ, लयो जु ग्ररथ निकारि । ताको बहुविधि हेत सीं, कह्यो ग्रन्थ विस्तार ॥५॥ सवत् सत्तरह सैं वरस, ग्रीर वारावे जानि। कातिक सुदी दशमी गुरु, रच्यौ ग्रन्थ पहचानि ॥६॥ सब ज्योतिप को सार यह, लियो जु अरथ निकारि। नाम धरचो या ग्रन्थ को, तातें ज्योतिष सार ॥१०॥ ज्योतिप सार जु ग्रन्थ कीं, कलप ब्रख मनु लेखि। ताको नव साखा लसत, जुदो जुदो फल देखि ॥११॥

ग्रन्तिम--

श्रथ वरस फल लिखते-

संवत् महै होन करि, जनम वर (ष) ली मिल। रहै सेप सो गत वरप, ग्रावरदा मैं वित्त ।।६०।। भये वरष गत ग्रङ्क ग्रर, लिख घर वाह ईस । प्रथम येक मन्दर है, ईह वही इकतीस [[६१।] ग्ररतीस पहली धूरवा, ग्रंक को दिन ग्रपने मन जानि । दूजै घर फल तीसरो, चौथे ग्र ग्रिखर ज ठान ॥६२॥ भये वरष गत ग्रक को, गुन धरवावी चित्त। गुणाकार के श्रक में, भाग सात हरि मित ।।६३।। भाग हरे ते सात की, लवध ग्रक सो जानि। जो मिले य पल मैं वहूरि, फल तै घटी बलानि ।।६४॥ घटिका मै तै दिवस मै, मिलि जै है जो ग्रंक । तामे भाग जु सप्त को, हरि ये मित न सं ।। १५।। भाग रहै जो सेप सो, बचै ग्रक पहिचानि । तिन मै फल घटीका दसा, जन्म मिलावो ग्रानि ॥६६॥ जन्मकाल के ग्रत रिव, जितने वीते जानि । उतने वाते ग्रस रवि, वरस लिस्थी पहचानि ॥६७॥ वरस लग्यो जा ग्रत में, सोइ देत चित धारि। वादिन इतनी घडी जु, पल बीते लगुन वीचारि ।।६८।। लगन लिखे तै गोरह जो, जा घर बैठो जाइ। ता घर के फल सुफल को, दीजे मित वनाइ ।।६६।। इति श्री किरपाराम कृत ज्योतिषसार संपूर्णम्

र पाशाकेत्रली

२. शुभमुहूर्त्त

X

हिन्दी

77

×

38-38

38-88

४४१४. गुटका सं० ३४। पत्र सं० १८। शा० ६५×५६ इख्र । भाषा-× । विषय-र ग्रह । ले० काल सं० १८८६ भारवा बुदी ४ । पूर्ण शिुगुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-जयपुर मे प्रतिलिपि की गई थी।

१. नेमिनाथजी के दश भन	×	हिन्दी पद्य	१ - ५
२. निर्वाण काण्ड भाषा	भगवतीदास	"र ० काल	१७४१, ४-७
३. दर्शन पाठ	×	सस्कृत	5
४. पाइर्वेनाथ पूजा	×	हिन्दी	09-3
५. दर्शन पाठ	×	93	११
६. राजुलपचीसी	लालचन्द विनोदीलाल	"	१२-१८

४४१६. गुटका सं० ३६। पत्र सं० १०६। ग्रा० वा।×६ उछ। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। ले० काल १७६२ माह बुदी व। पूर्ण । ग्रशुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-गुटका जीर्गा है। लिपि विकृत एवं विलकुल प्रशुद्ध है।

१. ढोला मारूगो की वात	×	हिन्दी प्राचीन पद्य सं	४१५, १–२४
२. बदरीनायजी के छन्द	×	53	२८-३०
		ले॰ काल १७८२ माह	ह बुदी प
३. दान लीला	×	हिन्दी	30-38
४. प्रह्लाद चरित्र	×	33	३१ –३४
५. मोहम्मद राजा की कथा	×	"	३ ५–४२
		११५ पद्य । पौराग्णिक क	थैं। के श्राधार पर ।
६. भगतवत्सावलि	×	हिन्दी	¥ ? –¥¥
		म० १७८	२ माह बुदी १३।
७. भ्रमर गीत	×	,, १२१	पद्य, ४४-५३
८, घुलीला	×	33	<i>x</i> \$ -x x
६. गज-मोक्ष कथा	×	n	44–4 £
१०. घुलीला,	×	,, पद्य सं०	२४ ५६–६०

गुटका-संग्रह]			ि ६० १
११. वारहखड़ी	×	हिन्दी	६०-६२
१२. विरहमञ्जरी	×	35	६२–६८
१३. हरि बोला चित्रावली	×	,, पद्य सं० २६	६ ५-७०
१४. जगन्नाय नारायएा स्तवन	×	13	৬০–৬४
१५. रामस्तोत्र कवच	×	संस्कृत	७५–७७
१६. हरिरस	×	हिन्दी	७५–५५

विशेष—गुटका साजहानावाद जयसिंहपुरा मे लिखा गया था। लेखक रामजी मीगा था। ४४१७. गुटका सं० ३७। पत्र सं० २४०। ग्रा० ७३×४३ इख ।

१. नमस्कार	मंत्र सटीक	×	हिन्दी	3
२. मानवावन	री	मानकवि	99	५३ पद्य हें ४-२८
३. चौवीस त	तीर्थ द्धर स्तुति	×	77	३२
४. ग्रायुर्वेद	के नुसखे	×	97	३४
५. स्तुति		कनककीति	37	३ ७
			लिपि सं० १	७६९ ज्येष्ठ सुदी २ रविवार
६. नन्दीश्वर	द्वीप पूजा	×	संस्कृत	४१
	कुशला सौगागाी ने सं०	१७७० मे सा०	फतेहचन्द गोदीका के ग्रोह	ये से लिखी।
७. तत्त्वार्थस्	্ব	उमा म्वामि	संस्कृत	६ भ्रव्याय तक ६१
 नेमीश्वर 	रास	व्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	र० स० १६१५ १७२
६. जोगीरा	सो	जिनदास	"	लिपि सं० १७१० १७६
१०. पद		×	"	97
११. म्रादित्य	नार कथा	भाऊ कवि	55	२०४
१२. दानशील	तिपभावना	×	77	२०५–२३६
१३. चतुर्विश	ति छप्पय	ग्रुग्सिति	37	र० सं० १७७७ ग्रसाढ वदी १४
_				

म्रादि ग्रंत जिन देव, सेव सुर नर तुभ करता। जय जय ज्ञान पवित्र, नामु लेतिह ग्रघ हरता।।

श्रादि भाग-

सरमुति तनइ पसाइ, ज्ञान मनवाछित पूरइ।

सारद लागी पाइ, जेमि दुख दालिद्र भरइ।।

गुरु निरग्रन्थ प्रणम्य कर, जिन चउनीसी मन घरउ।

गुनकीर्ति इम उच्चरइ, सुभ वसाइ रु देला तरउ।।१।।

नाभिराय कुलचन्द, नद मरुदेवि जानउ।

काइ धनुप शत पञ्च, वृपभ लाछन जु वखानउ।।

हेम वर्ष किह कायु, ग्रायु लक्ष्य जु चौरासी।

पूरव गनती एह, जन्म ग्रयोध्या वासी।।

भरथिह राजु नु सौषि कर, ग्रस्टापद सीधउ तदा।

गुनकीर्ति इम उच्चरइ, सुभवित लोक वन्दह सदा।।१।।

अन्तिम भाग--

श्रीमूलसघ विक्यातगछ सरसुतिय वखानउ।
तिहि महि जिन चउवीस, ऐह सिक्षा मन जानउ।।
पराय छइ प्रसादु, उत्तग मूलचन्द्र प्रभुजानी।
साहिजिहां पितसाहि, राजु दिलीपित श्रानी।।
सतरहसइरु सतोत्तरा, विद श्रसाढ चउदिस करना।
गुनशीति इम उचरइ, मु सकल सघ जिनवर सरना।।

।। इति श्री चतुर्विसततीर्थंकर छपैया सम्पूर्ण ।।

१३. सीलरास

गुराकीति

हिन्दी रचना स० १७१३

280

४४१८. गुटका सं० ३८—पत्रसस्या—२२६ । —ग्रा० १०×७।। दशा—जीर्गा । विशेप—३४ पृष्ठ तक ग्रायुर्वद के ग्रच्छे नुसखे हैं।

१ प्रभावती कल्य

X

हिन्दी

कई रोगो का एक तुसखा है।

२. नाडी परीक्षा

X

संस्कृत

करीब ७२ रोगो की चिकित्सा का विस्तृत वर्णन है।

३. शील सुदर्शन रासी

X

हिन्दी

30-83

४. पृष्ठ सख्या ५२ तक निम्न अवतारों के सरमान्य रगीन चित्र है जा प्रदर्शनी के योग्य हैं।

(१) रामावतार (२) कृष्णावतार (३) परशुरामावतार (४) मच्छावतार (५) कच्छावतार (६) वराहावतार (७) नृसिंहावतार (६) कल्काग्रवतार (६) वुद्धावतार (१०) हयग्रीवावतार तथा (११) पार्श्ववाथ चैत्यालय (पर्व्वनाथ की सूर्ति सहित)

थ. त्राकुनावली
 ६. पाञ्चाकेवली (दोष परीक्षा)
 अन्म कुण्डली विचार

७. पृष्ठ ६८ पर भगे हुए व्यक्ति के वारिस ग्राने का पत्र है।

द. मक्तामरस्तोत्र	मानतु ग	सस्कृत	७३
 वैद्यमतोत्सव (भाषा) 	नयन सुख	हिन्दी	৩ ४– ५ १
१०. राम विनाद (श्रायुर्वेद)	×	77	57-85
११. सामुद्रिक शास्त्र (भाषा)	×	19	£ E - १ ′ १ २

लिपो कर्ता-सुखराम ब्राह्मण पचोली

१२ शोघ्रवोध	काशीनाथ	सस्कृत	
१३. पूजा सग्रह	×	59	\$6X
१४. योगीरासो	जिनदास	हिन्दी	્ક ક
१५. तत्वार्थसूत्र	उमा स्वामि	सस्कृत	२०७१
१६ कल्याग्गमदिर (भाषा)	वनारसोदास	हिन्दी	२१०
१७. रविवारव्रत कथा	×	99	<i>'</i> २२ \$'
१८. व्रतो का व्योरा	×	n	77

म्रन्त मे ६४ योगिनी म्रादि के यत्र हैं।

४४१६ गुटका सं० ३६ -- पत्र स० ६४। म्रा० ६×६ इख्र । पूर्श । दशा-सामान्य । विशेष-सामान्य पाठो का सग्रह है।

४४२० गुटका सं० ४०—पत्र स० १०३ । श्राठ ८॥४६ इख । भाषा—हिन्दी । ले० सं० १८६० पूर्ण । सामान्य गुद्ध ।

विशेष-पूजाओं का सग्रह तथा पृष्ठ ५० से नरक स्वर्ग एव पृथ्वी भ्रादि का परिचय दिया हुवा है ।

माह बुदी ७। पूर	रो। दशा उत्तम।	~	
१. समयसारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी रच	• स० १६६३ म्रासो सु १३ १-५ १
२. माश्चित्यमाला	सग्रह कर्ता	हिन्दी	संस्कृत प्राकृत सुभाषित ५२-१११
ग्र थप्रश्नोत्तरी	ब्रह्म ज्ञानसागर		
३. देवागमस्तोत्र	श्राचार्य समन्तभद्र	मस्कृत	लिपि संवत् १८६९
कृपारामसौगाएग्री	ने करौली राजा के पठनार्थ हाडे	हौती गाव में प्रति	तं लिपि को । पृष्ठ-१११से ११५।
४. ग्रनादिनिधनस्तोत्र	×	17	लिपि स० १८६६ ११५-११६

४. ग्रनादिनिधनस्तीत्र	×	17	लिपि स० १८६९	११५-११६
५. परमानंदस्तोत्र	×	सस्कृत		११६–११७
६. सामायिकपाठ	श्रमितगति	97		११७-११5
७. पंडितमरण	×	57		388
ь. चौवीसतीर्थङ्करभक्ति	×	53		११६-२०

लेखन स० १९७० वैसाख स्	ुदी ३	}	
-----------------------	-------	---	--

६. तेरह काठिया	वनारसोदास	हिन्दी	१२०
१०. दर्शनपाठ	×	सस्कृत	१२३
११. पंचर्मगल	रूपचद	हिन्दी	१२३-१२=
१२. कल्यागामदिर भाषा	बनारसीदास	3 7	१२५-३०
१३. विपापहारस्तोत्र भाषा	ग्र चलकोति	37	१२०-३२

रचना काल १७१५

१४. भक्तामर स्तीत्र भाषा	हेमराज	हिन्दी	१३२ –३५
१५. वजनाभि चक्रवितको भावना	भूधरदास	49	35-25

			[
गुटका-संप्रह]	_		१ <i>३</i> –३७
१६. निर्वाग काण्ड भाषा	भगवती दास	" हिन्दी	१ <i>३७—३</i> ८
१७ श्रीपाल स्तुति	×	ाहाया संस्कृत	१३५-४५
१८. तत्त्वार्यसूत्र	उमास्वामी		१४५–५२
१६. सामायिक बडा	×	17	१५२—५३
२०, लघु सामायिक	×	भ हिन्दी	१५३–५४
२१. एकीभावस्तीत्र भाषा	जगजीवन	ાફત્લા	१५४–५७
२२. वाईस परिषह	भूधरदास	97	१४७ ४८
२३. जिनदर्शन	37	53	
२४. संवोधपंचासिका	द्यानतराय	"	१५५ -६०
२५, बीसतीर्यंकर की जकडी	×	17	१६०–६१
२६. नेमिनाथ मगल	लाल	हिन्दी	१६१ -१६७
14		र० सं	० १७४४ सावरा सु० ६
२७. दान बावनी	द्यानतराय	57	१६७-७१
	भैय्या भगवतीदास	"	१७१-१८३
२८. चेतनकर्म चरित्र			र० १७३६ जेठ वदी ७
२६. जिनसहस्रनाम	ग्राशाधर	संस्कृत	१८४–८६
३०. भक्तामरस्तोत्र	मानतु ग	"	१5६–६२
३१. कल्यागमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द	संस्कृत	83-F3\$
३२. विषापहारस्तोत्र	धनक्षय	99	१९४–६६
३३. सिद्धिप्रयस्तोत्र	देवनन्दि	**	१९६–६=
३४. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	n	१६५–२००
३५. भूपालचौबीसी	भूपाल कवि	77	२००–२०२
३६. देवपूजा	×	"	२०२–२०५
३७. विरहमान पूजा	×	"	२०५-२०६
ेन ३८. सिद्ध ् जा	×	"	२०६–२०७

६०६]			[गुटका-संप्रह
३६ सोलहकारग्पूजा	×	5 >		२०७-२०५
४०. दश्तलक्षरापूजा	×	77		२०५-२०६
४१. रत्नत्रयपूजा	×	77		२०६–१४
४२. कलिकुण्डलपू गा	×	93		२१४–२२५
४३. चितामिंग पार्वनाथपूजा	×	79		२२५-२६
४४. शातिनायस्तोन	×	99		२२६
४५. पार्व्वनायपूजा	×	₅₁ श्र	पूर्ण	२२६–२७
४६. चीवीस तीर्यद्धार स्तवन	देवनन्दि	<i>37</i>		२२८–३७
४७. नवग्रहगभित पार्श्वनाथ स्तवन	×	7)		736-80
४८. कलिकुण्डपार्श्वनायम्तोत्र	×	77		२४४१
		लेखन काल १८६३	माघ	सुदी ५
४८. परमानन्दम्तोत्र	×	"		२४१-४३
५० लघुजिनसहस्रनाम	×	77		२४३–४६
		लेखन काल १८७	० वैश	गख सुदी ५
५१. सूक्तिमुक्तानलिस्तोन	×	99		२४६-५१
४२. जिनेन्द्रस्तोत्र	×	> ;		२ ४ २ –४४
४३. वहत्तरकता पुरुष	×	हिन्दी गद्य		२५७
५४ चीसठ क्ला म्त्री	×	73		97

४४२६. गुटका स० ४२। पत्र स० ३२६। ग्रा० ७४४ इश्च। पूर्ण।

विशेप-इसमे नूधरदास ी का चर्चा समाधान है।

४४२३. गुटका स० ४३ —पत्र मं० ४८ । ग्रा० ६३×४३ इख । मापा-सस्कृत । ले० काल १७८७ कार्तिक शुक्का १३ । पूर्या एवं शुद्ध ।

विशेप—व घेरवालान्वये साह श्री जगरूप के पठनार्ढ भट्टारक श्री देवचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी। प्रति सम्द्रत टोका सहित है। सामायिक पाठ ग्रादि का सग्रह है।

> ४४२४. गुटका स० ४४। पत्र स० ६३। श्रा० १०×५ इख्र । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । दशा जीर्गा । विशेष-- चर्चात्रो का सग्रह है।

४४२४ गुटका सं० ४४। पत्र स०१४०। ग्रा० ६५×५ इख । पूर्ण।

१. देवशास्त्रगुरु पूजा	×	संस्कृत	9-19
२. कमलाष्ट्रक	×	***	₹-१•
३. गुरूस्तुति	×	53	30-55
४. सिद्धपूजा	×	53	१२-१५
 कलिकुण्डस्तवन पूजा 	` ×	77	१६-१६
६ षोडशकाररापूजा	×	1)	१६ –२२
७. दशलक्षरापूजा	×	33	२ २–३२
८. नन्दी श्वरपूजा	×	79	35-58
९. पचमेरुपूजा	भट्टारक महीचन्द्र	"	38-8X
 १०. ग्रनन्तचतुर्दशीपू ।।	"े मेरुचन्द्र	77	४५–५७
११ ऋषिमङलपूजा	गौतमस्वामी	77	<i>≾७–६</i> ४
१२. जिनसहस्रनाम	म्राशाधर	3 7	¥
१३. महाभिषेक पाठ	×	79	७४–९६
१४. रत्नत्रयपूजाविधान	×	33	<i>१</i> - १ - १ - १
१५ ज्येष्ठजिनवरपूजा	×	हिन्दी	१२२ –२५
१६. क्षेत्रगल की ग्रारती	×	3 7	१ २६–२७
१७. गराघरवलयमंत्र	×	संस्कृत	१२८
१८. ग्रादित्यवारकथा	वादीचन्द्र	हिन्दी	· १२ <u>६</u> –३१
१६. गीत			
16. 444	विद्याभूपग्	37	१३१–३३
२०. लघु सामायिक	× ,	संस्कृत	१३४
२१. पद्मवतीछंद	भ० महीचन्द्र	37	१३४–१४०

४४२६ गुटका सं० ४६—पत्र सं० ४६। ग्रा० ७३×५६ इख्र । भाषा-हिन्दी । पूर्ण एव श्रशुद्ध ।

४४२७. गुटका सं० ४७ । पत्र स० ३४० । ग्रा०	प्र×४ इख्न पूर्ग । दशा–सामान्य ।
--	----------------------------------

१. सूर्य के दस नाम	×	सस्कृत	8
२. वन्दो मोक्ष स्तोत्र	×	? ?	१ –२
३, निर्वाणिविधि	×	27	₹–३
४. मार्कण्डेयपुरासा	×	23	8-46
५. कालीसहस्रनाम	×	77	५५-१३२
६. नृसिंहपूजा	×	>>	१३३—३ ४
७. देवीसूक्त	×	77	१३६- ६५
८. मंत्र- सहिता	×	सस्कृत	१९६-२३३
६. ज्वालामालिनी स्तोत्र	×	35	२३३-३६
१०. हरगीरी सवाद	·х, —	71	२३६ -७३
११. नारायएा कवच एव ग्रष्टक	×	27	२७३-७९
१२. चामुण्डोपनिषद्	×	"	२७६–२८१
१३. पीठ पूजा	×	?)	₹5₹-5७
१४. योगिनी कवच	×	"	२८८−३१०
१५. ग्रानंदलहरी स्तोत्र	शकराचार्य	19	३११ –२४

४४२८ गुटका नं०४८। पत्र स०—२२२। आज—६॥×१॥ इञ्च पूर्ण । दशा—सामान्य।

१. जिनयज्ञकल्प	प० म्राशाधर	सस्कृत	१-१४१
२. प्रशस्ति	ब्रह्म दामोदर	**	१४१- ४५

दोहा— ॐ नम सरस्वत्ये। श्रथ प्रशस्ति।

श्रीमत सन्मतिदेव, नि कर्माणम् जगद्गुरुम् ।
भक्त्या प्रणम्य वक्ष्येऽह प्रशस्ति ता ग्रुणोत्तम ।। १ ।।
स्याद्वादिनी ब्राह्मी ब्रह्मतत्व-प्रकाशिनी ।
सत्गिराराधिता चापि वरदा सत्वशकरी ।। २ ।।
गिणानो गौतमादीश्व ससारार्णवतारकान् ।
जन-प्रणीत-सच्छास्त्रकैरवामलचद्रकान् ।। ३ ।।

मूलसंघे वलात्कारगएो सारस्वते सति गच्छे विश्वपदष्ठाने वंद्ये वृंदारकादितिः ॥ ४ ॥ नदिसंघोभवत्तत्र नंदितामरनायकः। कु दकु दार्यसज्ञोऽसौ वृत्तरत्नाकरो महान् ॥ ५॥ तत्पट्टक्रमतो जातः सर्वसिद्धान्तपारगः हमीर-भूपसेव्योयं धर्मचंद्रो यतीश्वरः तत्पट्टे विश्वतत्वज्ञो नानाग्र थविशारदः रत्नत्रयकृताभ्यासो रत्नकीतिरभूनमुनिः 11 9 11 शकस्वामिसभामध्ये प्राप्तमानशतोत्सवः प्रभावद्रो जगद्रं धो परवादिभयकरः 11511 कवित्वे वापि वक्तृत्वे मेघावी शान्तमुद्रकः। पद्मनंदी जिताक्षोभूतत्पट्टी यतिनायकः ॥ ६ ॥ तिच्छिष्योजनिभव्यौघपूजिताहिष्ठविशुद्धधीः श्रुतचद्रो महासाघु साघुलोककृतार्थक ।। १०। प्रामाणिकः प्रमाणेऽभूदरगमाध्यात्मविश्वधीः । लक्षरो लक्षरार्थको भूपालव् दसेवित. ા ૧૧ ા श्रर्हत्प्रग्गीततत्वार्थजाद पति निशापति हतपंचेषुरम्तारिजिनचद्री विचक्षरा. जम्बुद्रुमाकिते जम्बूद्वीपे द्वीपप्रधानको तत्रास्ति भारतं क्षेत्रं सर्वभोगफलप्रदं 11 23 11 मध्यदेशो भवत्तत्र सर्वदेशोत्तमोत्तमः धनधान्यसमाकीर्राग्रामैर्देवहितिसमैः 11 88 11 नानावृक्षकुलैभीति सर्वसत्वसुखकरः मनोगतमहाभोगः दाता दातृसमन्वितः ॥ १५ ॥ तोड़ास्योभूत्महादुर्गो दुर्गमुख्य. श्रियापरः। तच्छाखानगरं योषि विश्वभूतिविधाययत् ।। १६ ॥

स्वच्छपानीयसपूर्गैः वापिकूपादिभिर्महत् श्रीमद्वनहटानामहद्रव्यापारभूपितं ।। १७ ।। श्रर्हत्चैत्यालये रेजे जगदानंदकारकै विचित्रमठमंदोहे विगाजनसुमंदिरो ॥ १८॥ ग्रजन्याधिपतिस्त्रय प्रजापाली लसद्गुराः । कान्त्याचद्रो विभात्येप तेजसापद्मवाधवः ।। १६ ॥ शिष्यस्य पालको जातो दुष्टिनग्रहकारकः । पचागमत्रविच्छूरो विद्याशास्त्रविशारद ।। २०।। शौर्योदार्यग्रुणोपेतो राजनीतिवदावरः। रामसिहो विभुधीमान् भूत्यवेन्द्रो महायशी ।। २१ ।। श्रासोद्विग्यकवरस्तत्र जैनधर्मपरायण । पात्रदानादर श्रेष्ठी हरिचन्द्रोगुणाग्रणी ।।२२।। श्रावकाचारसपन्ना दत्ताहारादिदानकाः'। शीलभूमिरभूत्तस्य गूजरित्रियवादिनी ॥२३॥ पुत्रस्तयोरभूत्साघुव्यक्ताईत्सुभक्तिक । परोपकरगाम्बातो जिनार्चनिक्रयोद्यत ॥२४॥ श्रीवकाचारतत्त्वज्ञो त्रुकारुण्यवारिव्ध । देल्हा साघू व्रताचीरी राजदत्तप्रतिष्ठक ।।२५।। तस्य नार्या महासाध्वी शीलनीरतरगिर्णी। प्रियवदा हितावारावाली सौजन्यधारिंगी ॥२६॥ तयो क्रमेरा सजाती पुत्री लीवण्यसन्दुरी। ग्रगण्यपुण्यसस्थानी रामलक्ष्मगाकाविद ॥२७॥ िनयज्ञोत्मवानन्दकारिंगी वृतघारिगी। अर्हतीर्थमहायात्रासपर्क्तप्रविधायिनौ (।।२८।। रामसिहमहाभूपत्रधानपुरुषौ शुभी समुद्धृतजिनागारी धर्मानाथुमहोत्तमी 117६।

तथ्यादरोभवद्धीरो नायकै खचनद्रमा । लोकप्रशस्यसत्कीति धर्मसिहो हि धर्मभृत् ॥ ३० ॥ तत्कामिनी महछीलधारिखी शिवकारिखी। चन्द्रस्य वसती ज्योत्स्ना पापध्वान्तापहारिखी ॥३१॥ क्रवद्वयविश्द्धासीत् सघभक्तिसुरुषरा।। धर्मानन्दितचेतस्का धर्मश्रीर्भतृभाक्तिकाः ॥३२॥ पूत्रावाम्नान्तयो: स्वीयरूपनिजितमन्मयौ । लक्षणाञ्चरासद्गात्री योषिनमानसवल्लभौ ।।३३।। ग्रहंदे वसुसिद्धान्तगुरुभिक्तसमुचतौ । विद्वज्जनित्रयौ सौम्यौ मोल्हाद्वयपदार्थकौ ॥३४॥ तुधारडिण्डोरसमानकीति कुटुम्बनिर्वाहकरो यशस्वी । प्रतापवानुधर्मधरो हि धीमान् खण्डेलवालान्वयकजभानु: ।।३५।। भूपेन्द्रकार्यार्थकरो दयाढ्यो पूढ्यो पूर्णेन्द्रसंकासमुखोवरिष्ठः । श्रेष्ठी विवेकाहितमानसोऽसौ सुधीर्नन्दतुभूतलेऽस्मिन् ।।३६॥ हम्तद्वये यस्य जिनार्चन वैजैने वरावाग्मुखपकजे च । हृद्यक्षर वार्हत्मक्षय वा करोतु राज्यं पुरुषोत्तमोयं ॥३७॥ तत्र्राणवल्लभाजाता जैनव्रतविधाविनी। सती मतिल्लका श्रेष्ठी दानोत्कण्ठा यशस्विनी ॥३८॥ चतुर्विधस्य संघस्य भक्त्युह्मासि मनोरथा। नैनश्रो: सुधावात्कव्योकोशाभोजसन्मुखी ।।३६।। हर्पमदे सहषात् द्वितीया तस्य वल्लभा। दानमानोन्सवानन्दवद्धिताशेषचेतसः । १४०॥ श्रीरामसिहेन नृपेण मान्यश्रतुविधश्रीवरसघभक्त:। प्रद्योतितागेषपुराएालोको नाथू विवेकी चिरमेवजीयात् ॥४१॥ म्राहारशास्त्रीषधजीवरक्षा दानेषु सर्वार्थकरेषु साधु. । क्लपद्भोयाचककामघेनुर्नाथुसुसाधुर्जयतात्चरित्र्या ॥४२॥

सर्वेषु शास्त्रेषु परप्रशस्य श्रीशास्त्रदानंहतशाव्यभाव ।
स्वर्गापवर्गकविभूतिपात्र समस्तशास्त्रार्थविधानदक्षं ।।४३।।
दानेषु सार शुचिशास्त्रदान यथा त्रिलोक्या जिनपुंगवोऽय ।
धृदीति धृत्वा परमगलार्थं व्यलीलिखान्साधूत्तमा प्रतिष्ठा ।।४४।।
लेखत्वा शुभाधान प्रतिष्ठासारमुत्तमं ।
ब्रह्मदामोदरायापि दत्तवान् ज्ञानहेतवे ।।४५।।
ग्रग्न्याभ्रवाणसूपाके राज्येतीतेति सुन्दरे ।
विक्रमादित्यभूपस्य भूमिपालशिरोमगो ।।४६।।
ज्यष्ठे मासे सिते पक्षे सोमवारे हि सौम्यके ।
प्रतिष्ठासार एवासौ समाप्तिमगमत्परा ।।४७।।
श्रर्हत्क्रमाभोजनक्षावरागी सद्भूषगाकुक्कुटसर्पगाव ।
पद्मावतो शासनदेवता सा नाथू सुसाधु चिरमेव पातात् ।।४६।।
व्युधोतिता परं येन प्रमाग्यपुरुषापरो ।
श्रीमत्सिहत्नवशोत्य नाथू साधु सनन्दतु ।।४६।।

।। इति प्रशस्त्यावली ।।

×	संस्कृत	\$
×	77	१४६
×	? ?	"
×	हिन्दी	१५२-५५
×	सस्कृत	१६०-६४
×	77	४७२-६५
×	73	१९६
×	13	१६५–२१४
×	22	२१=
	× × × × ×	X " X (हन्दी X सस्कृत X " X X X X X X X X X X X X X X X X X X X X X X X X X X

४४२६ गुटका सं० ४६--पत्र स०-५८ | म्रा०-५×४ इख्र | लेखन काल स०--१८२४ पूर्ण | देशा-सामान्य ।

गुटका-संप्रह

१. संयोगवत्तीसी मानकवि हिन्दी १-२५
 २. फुटकर रचनाए × भ २६-५०

४४३० गुटका सं० ४०। पत्र सं० ७४। आ० ५×५ इख्र । ले० काल १८६४ मंगसरसुदी १५। पूर्ग । विशेष—गंगाराम वैद्य ने सिरोज मे ब्रह्मजी संतसागर के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

 १. राजुल पचीसी
 विनोदीलाल लालचंद
 हिन्दी
 १-५

 २. चेतनचित्र
 भैयाभगवतीदास
 "
 ६-२६

 ३. नेमीश्वरराजुलिववाद
 ब्रह्मज्ञानसागर
 "
 २०-३१

नेमीश्वर राजुल को भगडी लिख्यते।

श्रादि भाग--राजुल उवाच--

भोग ग्रनोपम छोडो करी तुम योग लियो सो कहा मन ठाएो। ।
सेज विचित्र तु लाई ग्रनोपम धुदर नारि को सग न जानू।।
सूक्र तनु धुख छोड़ि प्रतक्ष काहा दुख देखत हो ग्रनजानू।
राजुल पूछत नेमि कुंबर कूंयोग विचार काहा मन ग्रानू।। १।।

नेमीश्वर उवाच

सुन रि मित मुठ न जान जानत हो भव भोग तन जोर घटें हैं।
पाप बढे खटकर्म घके परमारथ को सब पेट फटे है।।
इंद्रिय को सुख किंचित्काल ही ग्राखिर दुख ही दुख रटे है।
नेमि कुंवर कहे सुनि राजुल योग बिना निहं कर्म कटे हैं।। २।।

मध्य भाग-राजुलोवाच-

करि निरधार तिज वरवार भये व्रतधार ज्ञोक गोसाई।

धूप ग्रनूप घनाघन धार तुवाट सहो ु काई के तोई।।

भूख पियास ग्रनेक परिसह पावन हो कछु सिद्धन ग्राई।

राजुल नार कहे सुविचार जु नेमि कुंवार सुनु मन लाई।। १७।।

नेमीश्वरोबाच

काहे को वहूत करो तुम स्यापनप येक सुनी उपदेस हमारो । भोगहि भोग किये भव ह्रवत काज न येक सरे जु तुम्हारी ।।

4

मानव जन्म वडो जगमान के काज विना मतु कूप मे डारो ।

नेमी कहे सुन राजुल तू सब मोह तिज ने काज सवारो ॥ १८॥

श्रिनिम भाग—राजुलोवाच—

श्रावक धर्म्म क्रिया सुभ त्रेपन साघ कि संगत वेग सुनाइ।
भोग तिज मन सुघ करि जिन नेम तर्गी जव संगत पाइ।
भेद ग्रनेक करी हढता जिन माण की सव वात सुनाई।
लोच करी मन भाव धरी करी राजुल नार भई तव वाई।। ३१।।

कलश--

द्रादि रचन्हा विवेक सक्ल युन्ती समभायो।

नेमिनाथ हढ चित्त कबहु राजुल कु समाभायो।।

राजमित प्रबोध के सुध भाव संयम लीयो।

प्रह्म ज्ञानसागर कहे वाद नेमि राजुल कीयो।। ३२।।

।। इति नेमीश्वर राजुल विवाद संपूर्णम् ।।

٧.	श्रप्टाह्निकावत कथा	विनयकीर्ति	हिन्दी	३ २–३३
ሂ	पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	
€.	शातिनाथस्तोत्र	मुनिग्रुग्।भद्र	"	- - 7)
9.	वर्धमानम्नीत्र	×	"	३६
۲.	वितामिए।पार्ग्वनाथस्तोत्र	×	73	३७
.3	निर्वाग्रकाण्ड भाषा	भगवतीदास	हिन्दी	३५
१०	भावनास्तोत्र	द्यानतराय	"	38
११.	गुरुविनती	भूधरदास	Ħ	% 0
१२.	ज्ञानपञ्चीसी	वनारसीदास	? 7	४१–४२
₹₹.	प्रभाती ग्रजस्पभवर ग्रवै	×	99	४२
१४.	मो गरीव कूंसाहव तारोजी	गुलाबिकशन	9 3	75
१५	म्रव तेरो मुख देखू [*]	टोडर	2 29	**
₹६.	प्रात हुवो मुमर देव	भूघरदास	"	¥₹

गुटका-सम्रह	•		📱 ६१४
१७. ऋषभजिनन्दजुहार केशरिया	भानुकोति	ह्यि	ሄ ሂ
१८, करू ग्रराधना तेरी	नवल	, 27	77
१६. भूल भ्रमारा केई भर्त	×	77	४६
२०, श्रीपालदर्शन	×	77	४७
२१. भक्तामर भाषा	×	37	85-75
२२. सावरिया तेरे वार वार वारि जाऊ	जंगतराम	"	४२
२३. तेरे दरवार स्वामी इन्द्र दो खडे है	×	77	त्रइ
२४. जिनजी थाकी सूरत मनडो मोह्यो	ब्रह्मकपूर	*5	>>
२५ पार्स्वनाथ तोव	चानतराय	53	ሂሂ
२६. त्रिभुवन गुरु स्वामी	जिनदास	,, र	॰ सं॰ १७४४, ५४
२७. ग्रहो जगत्गुरु देव	भूधरदास	77	યુદ્
२८. चिंतामिंग स्वामी सांचा साहब मेरा	वनारसीदास	"	४६–४७
२६. कल्यारामन्दिरस्तोत्र	कुभुद	77	५७-६०
२०. कलियुग की विनती	व्रह्मदेव	77	₹१ – ६ ३
३१ शीलवत के भेर	×	97	६३–६४
३२. पदसंग्रह	गंगाराम वैद्य	57	६५-६८

४४४१. गुटका सं० ४१। पत्र सं० १०६। म्रा० प्रद इंच। विषय-संग्रह। ले० काल १७६६ फागरा सुदी ४ मंगलवार। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष-सवाई जयपुर मे लिपि की गई थी।

8	भावनासारयंग्रह	चामुण्डराय	संस्कृत	9-60
२	भक्तामरस्तोत्र हिन्दी टीका सहित	×	,, सं०१प	३०१-१७ ००

४१३२. गुटका सं० ४१ क । पत्र सं० १४२ । ग्रा० ८×६ इ व । ले० काल १७६३ माघ सुदी २। पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेप-किशनसिंह कृत क्रियाकीश भाषा है।

४४३३ गुटका सं० ४२ । पत्र सं० १६४+६८+६६ । आ० ८×७ इस ।

विशेष-तीन	ऋपू `रा	गुटको व	न मिश्रएा	ह	þ
-----------	----------------	---------	-----------	---	---

	••	•		
₹.	पडिकम्मग्गसूल	×	प्राकृत	
₹.	पचल्यासः	×	99	
₹.	बन्दे तू सूत्र	×	77	
٧,	थृंभग्गपादर्वनास्तवन (बृहत्)	मुनिग्रभयदेव	पुरानो हिन्दी	
ų.	ग्र जितशातिस्तवन	×	13	
₹.	77	×	27	
٥.	भयहरस्तोत्र	×	99	
۲,	सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	जिनदत्तसूरि	77	
٤.	गुरुपारतत्र एवं सम्रह्मरण	"	97	
१०,	भक्तामरस्तोत्र	ग्राचार्यमानतु ग	संस्कृत	
११.	कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुुदुचन्द्र	"	
१२.	शातिस्तवन	देवसूरि	55	
१३.	स्प्तपिजिनस्तवन	×	प्राकृत	
	लिपि सवत् १७५० श्रासोज सुर्द	ो ४ को सौभाग्य हर्प ने	प्रतिलिपि की थी।	
१४.	. जीवविचार	श्रीमानदेवसूरि	प्राकृत	
१५,	, नवतत्त्वविचार	×	97	
१६.	श्रजितशातिस्तवन	मेरुनन्दन	पुरानी हिन्दी	
१७.	सीमंधरस्वामोस्तवन	×	99	
१८	. शीतलनाथस्तवन	समयसुन्दर गिंग	राजस्थानी	
₹€.	. थंभणपार्श्वनाथस्तवन लघु	×	?)	
२०	77	×	"	
7१	. ग्रादिनाथस्तवन	समयसुन्दर	23	
२२	. चतुर्विशति जिनस्तवन	जयसागर	हिन्दी	
२३	 चौबीसजिन मात पिता नामस्तवन 	श्रानन्दसूरि	**	रचना० स० १५६२
31	८. फलवबी पार्श्वनायस्तवन	समयसुन्दरगित्त	राजस्थानी	

गुटका-संप्रह]		ि ६१७
२५. पार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगिए।	रा नत्थानी
२६. "	"	"
२७. गौडीपाइर्वनाथस्तवन	27	19
२८. "	जीधराज	35
२९. चितामिएापार्श्वनायस्तवन	लालचंद	29
३०. तीर्थमालास्तवन	तेजराम	हिन्दी
₹१. ",	समयसुन्दर	7)
३२. वीसविरहमानजकडी	n	77
३३ नेमिराजमतीरास	रत्नमुक्ति	57
३४. गौतमस्वामीरास	×	"
३५. बुद्धिरास	शालिभद्र द्वारा सकलित)
३६. शीलरास	विजयदेवसूरि	"
	जोघराज र	ने र्खीवसी की भार्या के पठनार्थ लिखा।
३७. साघुवदना	ग्रानंद सूरि	99
३८. दानतपशीलसंवाद	समयपुन्दर	राजस्थानी
१९. म्रापाढभूतिचीढालिया	कनकसोम	हिन्दी
	र० काल १६३८। लि	वि काल सं० १७४० कार्त्तिक बुदी ४।
४०. म्राद्रकुमार घमाल	59	37
	रचना सवत	(१६४४ । ग्रमरसर मे रचना हुई थी ।
४१. मेघकुमार चौढालिया	37	हिन्दी
४२. क्षमाछत्तीसी	समयसुन्दर	"
	लिपि सं	वत् १७५० कार्तिक सुदी १३ । ग्रवरगावाद 🙏
४३. कर्मवत्तीसी	राजसमुद	हिन्दी
४४. बारहभावना	जबसोमगिए।	99

समयसुन्दर

57

४५, पद्मावतीरानीम्राराधना

४६. शत्रुख्जयरास

57

52

•	~
गुटका-संप्रह	j

७२. चेलना री सज्भाय	×	हिन्दी
७३. जीवकाया ",	भुवनकोति	,, •
७४. ,, ,,	राजसमुद्र	37
७५. स्रातमशिक्षा "	? >	13
७६. ,, ,,	पद्मकुमार	7)
99. 39	सालम	ກ
97, s, s,	प्रसन्नचन्द्र	"
७६. स्वार्थवीसी	मुनिश्रीसार	77
<o. td="" जयभास<="" शत्रु=""><td>राजसमुद्र</td><td>79</td></o.>	र ाज समुद्र	79
 सोलह सितयो के नाम 	"	33
८२. वलदेव महामु नि सज्भाय	समयसुन्दर	79
८३ श्रे शिकराजासज्काय	99	हिन्दी
८४ वाहुबलि ,,	77	77 -
८५. शालिसद्र महामुनि 🕠	×	31
८६. वंभ णावाडी स्तवन	कमलकलश	37
५७ श त्रुखयस्तवन	राजसमुद	33
८८. राणपुर का स्तवन	समयसन्दर	37
८६. गौतम पृ च ्छा	77	. 97
६०. नेमिराजमित का चौमानिया	×	33
६१. स्यूलिभद्र सज्माय	X :	53
६२. कर्मछत्तीसी	समयसुन्दर	99
६३. पुण्यछत्तीसी	7 2	59 · 1 · ¢
६४. गौड़ीपार्श्वनायस्तवन	99	' " ए० सं• १ ,०३३
६५. पञ्चयतिस्तवन	समयसुन्दर	77
६६. नन्दषेरामहामुनिसज्भाय	×	59
६७. शीलवत्तीसी	×	33

६८. मीनएकादशी स्तवन

समयसुन्दर

हिन्दी

रचना सं० १६८१ । जैसलमेर मे रची गई । लिपि सं० १७५१।

४४३४. गुटका सं० ४३। पत्र स० २६६। आ० ५३×४३ इख । लेखनकाल १७७५। पूर्ण।

दशा-सामान्य।

१. राजाचन्द्रग्रप्त की चीपई	ब्रह्मरायन ल	हिन्दी
२. निर्वाणकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	3)
पद्—		
३. प्रभुजी जो तुम तारक नाम घरायो	हर्पचन्द्र	77
४. ग्राज नाभि के द्वार भीर	हरिसिंह	n
५. तुम सेवामे जाय सो ही सफन घरी	दलाराम	"
६ चरन कमल उठि प्रात देख मैं	? ;	
७. सोही मन्त बिरोमनि जिनवर गुन ग	ावे "	"
मगल ग्रारती की जै भीर	**	99
 श्रारती की जै श्री नेमकवरकी 	1)	93
१० वदों दिगम्बर गुरु चरन जग तरन	मूधरदास	**
तारन जान		77 €
११. त्रिभुवन स्वामीजी कल्ला निधि नार्म	ोजी "	53
१२. बाजा बजिया गहरा जहा जन्म्या हो	3 3	??
श्रपन कुमार		t
१ ३. नेम कवरजी ये सिज स्राया	साईदास	77
१४. मट्टारक महेन्द्रकीतिजी की जकडी	महेन्द्रकीर्ति	57
१% महो जगत्युरु जगपति परमानंद निध	ान भूघरदास	,,
१६. देख्या दुनिया के बीच वे कोई	33	33
प्रजब तमागा १७. विगनी-यदों श्री प्ररहंतदेव सारद नित्य गुगरता हिरदे परू	>>	"

े. राजमती बीनवै	नेमजी ग्रजी	विश्वभूषग्	हिन्द	व
तुम क्यो चढा गिरनार्ष	रे (विनती)			
१६. नेमीश्वररास	ş	ह्य रायमल्ल	79	र० काल सं० १६१५ लिपिकार दयाराम सोनी
२०. चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप	नोकाफल	×	37	
२१. निर्वाग्तकाण्ड		×	সান্তুর	г
२२. चौवीस तीर्थङ्कर परिच	वय	×	िहन्दी	
२३. पाच परवीव्रत की कथ	π	वेगोदास्	5	लेखन संवत् १७७४
२४. पद	;	वनारसीदास	57	
२५. मुनिश्वरो की जयमाल		×	97	
२६ स्रारती		द्यानतराय	n	
२७. नेमिश्वर का गीत		नेमिचन्द	92	
२८. विनति-(वंदहु श्री जि काब करोजी)	नराय मनवच	कनककीर्ति	79	
२६. जिन भक्ति पद		हर्षकीर्ति	"	
३०. प्रागी रो गीत (प्रार्ग सोवै रैन चित्त)	डिा रेतू काई	×	93	
३१. जकडी (रिषभ जिनेद	वर वंदस्यी)	देवेन्द्रकीति	99	
३२. जीव संबोधन गीत (होजीव	×	**	
नव मास रह्यो गर्भ वा	सा)			
३३. जुहरि (नेमि नगीना वारी म्हारालाल)	नाय था परि	×	19	
३४. मीरही (म्हारो रै म उडि गिरनारि जाइ रै		×	9)	
३५. वटोइ (तू तोजिन भ वटोई मारग भूली रे		×	हिन्दी	1
३६. पंचम गति की वेलि		हर्षकीति	25	र० सं० १६८३

३७. करम हिण्डोलगा	×	हिन्दी
३८. पद-(ज्ञान सरोवर माहि भूलै रे हसा) सुरेन्द्रकीति	97
३९. पद-(चीवीसो तीर्थंकर करो	नेमिचद	97
भवि वदन)		
४० करमा की गति न्यारी हो	ब्रह्मनाषू	3 3
४१. भारती (करीं नाभि कंवरजी की	लालचद	33
श्रारती)		
४२.,श्रारती	चानतराय	? ?
४३. पद-(जीवडा पूजो श्री पारस	55	27
जिनेन्द्र रे)		
४४ गीत (डोरी थे लगावो हो नेमजी	पाडे नाथूराम	11
का नाम स्यो)		
४५. जुहरि-(यो ससार ग्रनादि को सोही	नेमिचन्द	37
वाग वण्यो री लो)		
४६. लुहरि-(नेमि कुवर व्याहन चढयी	53	93
राजुल करे इ सिंगार)		
्र ४७. जोगोरासो	पाढे जिनदास	ູກ
४८. कलियुग की कथा	केशव	ु,, ४४ पद्य । ले० सं० १७७६
४६. राजुलपचीसी	लालचन्द विनोदोलाल	,33 ,37
५० ग्रप्टान्हिका वृत कथा	33	हिन्दी
५१. मुनिश्वरो की जयमाल	ब्रह्मजिनदा स	25
५२. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभापा	वनारसीदास	59
५३ तीर्थङ्कर जकडी	हर्पकीति	53
५४. जगत में सो देवन को देव	वनारसीदास	,
५५ हम बैठे ग्रपने मौन से	77	5)
४६. कृहा, अज्ञानी जीवको गुरु ज्ञान वतावे	"	"

۶ą.	चरराकमल को ध्यान मेर	×	हिन	दी
5 ሄ,	जिनजी थाकीजी मूरत मनडो मोहियो	×	,	"
5 ٤.	नारी मुकति पंथ वट पारी नारी	57	:	"
ج ٤.	समिक नर जीवन थोरी	रूपचन्द		"
۳ ७.	नेमजी थे काई हठ मारचो महाराज	हर्षकीति	:	"
55	देखरी कहू नेमि कुमार	"	:	"
5 ٤.	प्रभु तेरी मूरत रूप बनी	रूपचन्द	;	12
٤٥.	चितामणी स्वामी साचा साहब मेरा	7)	•	,
શ્ શ.	सुखघडी कव ग्रावेगी	हर्षंकीति	,))
६२.	चेतन तू तिहू काल श्रकेला	"	,	,
६३.	पच मगल	रूपचन्द	,	,
٤٧.	प्रश्रुजी थाका दरसएा सूं सुख पावा ह	ह्म कपूरचन्द	,	,
દય.	लघु मंगल	रूपचन्द	,	>
દ દ્દ.	सम्मेद शिखर चली रै जीवडा	×	91	,
٤७.	हम ग्राये हैं जिनराज तुम्हारे वन्दन को	द्यानतराय	7	,
٤5	ज्ञानपञ्चीसी	वनारसीदास	3:	
.33	तू भ्रम भूलि न रे प्राां सज्ञानी	×	2)	
१००	. हुजिये दयाल प्रमु हूजिये दयाल	×	77	
१०१	. मेरा मन की वात कासु कहिये	सवलसिह	**	
१०२	. मूरत तेरी सुन्दर सोहो	×	•	
१०३	. प्यारे हो लाल प्रभु का दरस की बलिह	ारी 🗴	77	
१०४	. प्रभुजी त्यारिया प्रभु म्राप जािगले त्या	रेया 🗙	"	
१०४	. ज्यां जारा ज्या त्यारोजी दयानिधि	खुशालचन्द	"	
१०६	. मोहि लगता श्री जिन प्यारा	हठमलदास		
१०७	. सुमरन ही मे त्यारे प्रमुजी तुम		??	
	सुमरन ही मे त्यारे	चानतराय	"	

१०८ पार्श्वनाथ के दर्शन

वृन्दावन

हिन्दी र॰ सं० १७६८

१०६ प्रभुजी मैं तुम चरणशरण गह्यो

बालचन्द

"

४४३४. गुटका स० ४४ । पत्र सं० ८८ । ग्रा० ८×६ इख । ग्रपूर्श । दशा-सामान्य ।

विशेष—इस गुटके मे पृष्ठ ६४ तक पण्डिताचार्य धर्मदेव विरिचित महाशातिक पूजा विधान है। ६५ से ८१ तक ग्रन्य प्रतिष्ठा सन्वन्धी पूजाएं एवं विधान है। पत्र ८२ पर ग्रपभ्रंश मे चौबीस तीर्थद्भर स्तुति है। पत्र ८५ पर राजस्थानी भाषा मे 'रे मन रिम रहु चरण्जिनन्द' नामक एक वडा ही सुन्दर पद है जो नीचे उद्धृत किया जाता है।

रे मन रिमरह चरण जिनन्द । रे मन रिमरहु चरणजिनन्द ।।ढाल।। जह पठावहि तिहुवरा इदं ।। रे मन० ।। यह ससार श्रसार मुरो घिरापु कर जिय धम्मु दयालं । परगय तच्छु मुराहि परमेट्विहि सुमरीह श्रप्पु गुराल ।। रे मन० ।। १ ।। जीउ ग्रजीउ दुविह पुरा ग्रासव वन्धु मुराहि चउभेयं। संवरु निजरु मोखु वियासाहि पुण्सपाप सुविसोय ।। रे मन० ।। १ ।। जीउ दुभेउ मुक्त संसारी मुक्त सिद्ध सुवियाएो। वसु गुरा जुत्त कलडू विवजिद भासिये केवलराएो।। रे मन०।। ३।। जे ससारि भमहि जिय संबुल लख जोिए। चउरासी । थावर वियलिदिय संयलिदिय. ते पुग्गल सहवासी ।। रे मन० ।। ४ ।। पच श्रजीव पढयमु तिहि पुग्गलु, धम्मु श्रधम्मु श्रागासं । कालु अकाउ पंच कायासी, ऐच्छह दन्व पयास ।। रे मन० ।। ५ ।। श्रासउ दुविह दन्वभावह, पुराषु पच पयार जिरापुत्त । मिच्छा विरय पमाय कसायह जोगह जीव प्रमुत्तं ।। रे मन० ।। ६ ।। चारि पयार वन्धु पयड़िय हिदि तह ग्ररापुभाव पयूसं । जोगा पर्यंडि पंयूसिंठदायत्तु भाव कसाय विसेसं ॥ रे मन० ॥ ७ ॥ मुह परिएामे होइ सुहासउ, श्रसुहि श्रसुह वियागो । सुह परिगामु करहु हो भवियहु, जिम सुहु होय नियागी ।। रे मन० ।। ८ ॥ संवरु करिह जीव जग सुन्दर श्रासव दार निरोहं।

ग्रुरुह सिध समु प्रापु वियाणहु, सोह सोह सोहं ॥ रे मन० ॥ ६ ॥

गिजर जरह विगासहु कारणु, जिय जिग्गवयम् संभाले ।

बारह विह तव दमविह सजमु, पच महावय पाले ॥ रे मन० ॥ १० ॥

ग्रुडविहि कम्मविमुक्कु परमपज, परमप्पयकुत्यि वासो ।

गिज्जु मुखुत्य रक्षनु तहिपुरि, ईन्छिगु ईन्छइ वासो ॥ रे मन० ॥ ११ ॥

जागि ग्रसरम कहु क्या करमा, पडितु मनह विचारइ ।

जिग्गवर सासम् तन्तु प्यासम्म, सो हिय बुई थिर धारइ ॥ रे मन० ॥ १२ ॥

४४३६ गुटका सं० ४४। पत्र सं० २४०। ग्रा० ६×६३ इख । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल र ० १६८८।

विशेष-पूजा पाठ एव स्तीत्र ग्रादि का संग्रह है!

रे४३७. गुटका स० ४६। पत्र स० १५०। ग्रा० ६३×४३ इख्र। पूर्ण एवं जीर्गा। ग्रधिकाश पाठ यशुद्ध है। लिपि विकृत है।

विशेष-इसमे निम्न पाठो का सग्रह है।

१ कर्मनोकर्म वर्णन	×	সাকৃ ন	३-५
२ ग्या ह ग्रग एवं चौदह पूर्वों का विवरण	×	हिन्दी	६ –१२
३. श्रेताम्बरो के ५४ वाद	×	99	१२-१३
४ सहनन नाम	×	? ;	१३
५ सघोत्पत्ति कथन	×	33	१४

अ नम श्री पार्श्वनाय काले बुद्धकीर्तिना एकान्त मिथ्यात्व बौद्ध स्थापितं ॥ १ ॥
सवत् १३६ वर्षे भद्रबाहुशिष्येग जिनचन्द्रेग संशयमिथ्यात्व श्वेतपटमतं स्थापितं ॥ २ ॥
श्री शीतलतीर्थद्धरकाले क्षीरक्दम्बाचार्यपुत्रेग पर्व्वतेन विपरीतमत मिथ्यात्व स्थापितं ॥ ३ ॥
सर्वतीर्थद्धरागा काले विनयमिथ्यात्व ॥ ४ ॥
श्रीपार्श्वनाथगिग शिष्येग मस्करिपूर्णेनाज्ञानिमथ्यात्व श्री महावीर काले स्थापितं ॥ ५ ॥
सवत् ५२६ वर्षे श्री पूज्यपादशिष्येग प्रामृतकवेदिना वज्जनिदना पक्कचग्रकभक्षकेग् द्राविडसंघ स्थापित
सवत् २०५ वर्षे श्वेतपटात् श्रीकलशात् ग्रायलाक सघोत्निर्जीता । ७ ॥

चतुः संघोत्यत्ति कथ्यते । श्रीभद्रबाहुशिष्येण श्रीमूलसघमडितेन श्रर्हद्वलिग्रुप्तिग्रुप्ताचार्यृविशाखाचार्येति नामत्रय चारकेण श्रीग्रुप्ताचार्येण नन्दिसघ., सिहसंघ , सेनसघ., देवसंघ इति चत्वार. संघा स्थापिता. । तेम्यो यथाक्रमं वलात्कारगणादयो गणाः सरस्वत्यादयो गछाश्च जातानि तेषा प्राव्रज्यादिषु कर्म्मसु कोपि भेदोस्ति ।। द ।। सवत् २५३ वर्षे विनयमेनस्य शिष्येण सन्यासभगयुक्तेन कुमारसेनेन दारुसघ स्थापित ।। ६ ।।

संवत् ६५३ वर्षे सम्यक्तप्रकृत्यदयेन रामसेनेन नि पिच्छत्वं स्थापितं ॥ १० ॥ सवत् १८०० वर्षे ग्रतीते वीरचन्द्रमुने सकाशात् भिल्लसघोत्पत्ति भविष्यति ॥ एभ्योनान्येषामुत्पत्ति पचमकालावसाने सर्वेषामेषा ॥

गृहस्थाना शिष्याए। विनाशो भविष्यत्येक जिनमत कियत्काल स्थाष्यतीतिज्ञेयमिति दर्शनसारे उक्त ।।

६. गुरास्थान चर्चा	×	प्राकृत	१५-२०,
७. जिनान्तर	वीरचंद्र	हिन्दी	२१- २३
<. सामुद्रिक शास्त्र भाषा	×	97	२४-२ ७
६ स्वर्गनरक वर्णन	×	77	३२–३७
१०. यति म्राहार का ४६ दोष	×	7 9	३७
११ लोक वर्णन	×	17	३८-५३
१२. ज्उवीस ठाएग वर्चा	×	77	48-EE
१३. ग्रन्यस्फुट पाठ सग्रह	×	"	€0− \$ ⊀0

४४३८ गुटका स० ४७-- पत्र स० ४-१२१ । ग्रा० ६×६ इम्र । ग्रपूर्श । दशा-जीर्श ।

१. त्रिकालदेववंदना	×	सस्कृत	4-65
२. सिद्धभक्ति	×	>>	१२-१४
३ुनदीरवरादिभक्ति	×	प्राकृत	१४-१६
४. चौतीस श्रतिशय भक्ति	×	संस्कृत	8 ६ 88
५ श्रुतज्ञान भक्ति	×	55	र्१-२१
६ दर्शन भक्ति	×	27	२१ –२२
७. ज्ञान भक्ति	× '	77	२२
८ चरित्र भक्ति	×	सस्कृत	२२-२ ४
१. ग्रनागार भक्ति	×	73	२४-२६

६ं२ म]		[गुटका-संग्रह
१०. योग भक्ति	×	31	२६–२⊏
११. निर्विर्णिकाण्डं	×	प्राकृत	२५-३०
१२. वृहत्स्वयमू स्तोत्र	समन्तभद्राचार्थ	संस्कृत	३०-४१
१३. गुरावली (लघु ग्राचार्य भंक्ति)	×	5 5	४१– ४४
१४ चतुर्विशति तीर्थकर स्तुति	×	4.	४ ४–४६
१५. स्तोत्र सग्रह	×	"	४६-५०
१६. भावना वतीसी	×	7)	4 १–4२
१७. श्राराधनांसार	देवसेन	प्राकृत	५३–६०
१८. संबोधपचासिका	×	11	६१–६=
१९. द्रव्यसंग्रह	नेमिच द	*)	₹ ≒−७१
२०. भेर्क्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	.' संस्कृत	७ १- ७५
२१. ढार्डसी गाथा	*	2)	७४ द३
२२, परमानद स्तोत्र	×	1 99	5 3-5 8
२३. झर्गस्तिमिति सिध	हरिश्चन्द्र	प्राकृत	54 -58
२४. चूनढीरास	विनयचन्द्र	99	83-03
२५. समाधिमरण	×	" अपभ्र श	88-FE
२६. निर्भरपंचमी विधान	यितविनयचन्द्र	"	¥08–33
२७. सुप्पयदोहा	×	19	१०५–११०
२८. द्वांदशानुप्रेक्षा	×	., 99	११०-११२
₹ૄ. "	जल्ह्या	"	११ २– ११४
३० योगि चर्चा	महात्मा ज्ञानच द	**	388-488
५४३६. गुटका सं० ४	८ । पत्र स० १३-५१ । स्राट		

४४३६. गुटका सं० ४८। पत्र स० १३-५१। स्ना० ६×६। स्रपूर्ण। विशेष—गुटका प्राचीन है।

१. जिनरात्रिविधानकथा

नरसेन

भ्रप्रभ्र श

श्रपूर्ण १३

१३-२०

श्रन्तिम भाग-

कत्तिय किण्ह चउद्दि रितिहि, गठ सम्मद जिलु पंचम छत्तिहि। इय सम्बन्धु कहिउ सयलामलो, जिनरित हि फलु भवियह मंगलो। श्रवहाव जोगारित करेसइ, सो मरद्ध्यक्ठ लहेसइ।
सारउ सुउ महियाल भुंजेसइ, रइ समाग कुल उत्तिरमेसइ।।
पुग्नु सोहम्म सम्मी जाएसइ, सहु कीलेसइ गिक सुकुमालिहि।
मग्नुवसुखु भुंजिव जाएसइ, सिवपुरि वासु सोवि पावेसइ।
इय जिगारित विहाग्नु पयोसिउ, जहजिगासासिग गगहिर भासिउ।
जे हीगाहिउ काइमि वृत्तउ, तं बुहारग मठु खमहु गिक्तउ।
एहु सत्यु जो लिहइ लिहावइ, पढइ पढावइ कहइ कहावइ।
जो नर नारि एहमगि भावइ, पुग्गइ श्रहिउ पुग्ग फलु पावइ।

धत्ता-

सिरि ग्रारसेग्राह सामिछ, सिवपुरि गामिछ, बड्ढमाण तित्थकर ।
जइ मागिउ देइ करगा करेइ देउ सुबोहि लाहु परमेसर ।। २७ ।।
इय सिरि वड्ढमाग्राकहापूराग्रो सिंघादिभवभावावण्याग्रो जिग्राराइविहाग्राफलसपत्ती ।।
सिरि ग्रारसेग्रा विरइए सुभव्वासण्ग्राग्राग्रिमित्ते पढम परिछेह सम्मत्तो ।

।) इति जिएरात्रि विधान कथा समाप्ता ।।

२. रोहिंगिविधान

मुशिगुगुगभद्र

म्रपभ्र श

२१-२५

प्रारम्भिक भाग-

वासवनुमपायहो हरिपविसायहो निज्जिय कायहो पयजुलु ।
सिवमग्गसहायहो केवलकायहो रिसहहो पर्णाविवि कयकमलु
परमेट्ठि पच पर्णाविवि महत, भवजलिह पोय विहिडिय कयत ।
सारभ सारस सिस जोह्न जेम, शिम्मल विश्विज्ञ केरणकेम ।
जिहि गोयमए विश्विव वरस्स, सेशिय रायस्स जसोहरस्स ।
तिह रोहिणी वय कह कहिम भन्व, जह सितिशि वारिय पावराच ।
इय जबूदीव हो भरइ खेति, कुंक जगल ए सिवि गए जरोति ।
हथिग्गाउक पुरजरा पवररिद्धु जर्गु वसइ जित्यु सह सय सिमद्धु ।
तिह वीयसोउ गयसोउ भूठ, विज्जु पहरइ रइ हियय भूठ ।
तहां शादगु कुलग्रन्दग्र म्रसोउ, जिमह्निवि गठ म्रइ पूरि सींठ ।

बह ग्रग विसइ जरा कुरुह विसए चंपाउरि पयउ ग्रुगाइ विसए।

मट्टइ गामिगी उगाइवतु, सिरिमइ पियलंकिउ रिउ कयन्तु।

सुय ग्रद्ध तासु ग्रिर जित्य तासु, रीहिगी कण्णाण कामपासु।

कित्य ग्रद्धाहिव सोपवास, गयपुर विह जिगा वसु पुज्जवास।

जिग्नु ग्रचिव मुग्नि विदिव ग्रसेस, सिरि वासुपुज्ज पयलविसेस।

मह मिज्भिगा सण्णहो गिवह देइ गोहिगी जातराया ग्रंकलइ।

ग्रवलोइवि सुव जुञ्बगा समेय, परिगायगा चित हयमिग ग्रमेय।

गिग्रमित मतु गिष्हिव ग्रमेउ, गिय वृद्धि वियारिवि विहियसेउ।

धत्ता--

ता पुरवउ विहरि कि परिज साहि, रिवद्ध मंच चज पासिंह । करायमयसु खिचय रयगा करिचय, मिडय मडव पासिह ।। १ ।।

श्रन्तिम भाग--

निसुणाइ जिणाविण सावहणा वियवहणा करनलु म्रावमान ।

वग्वा घायते जह सरणुएिय, मय सावहो जीवहो सहएासिय ।

प्राणु हवइ सुहासुह एक्कुजील, ताणु भिण्णु लेइ मरणाल भील ।

ससार सहुकक्लु पुरकर समुद्दु, म्रगुजि धाल विहलु कुमुद्दु ।

म्रासवइ कम्पु जो एहि विच्न, तहो विलयं सवरु होइ कच्च ।

सम भावि सहियइ कम्पुमाल, परिभमिल लोहु जीविल सपाल ।

दुलहु जिएा धम्मु समुत्ति मग्गु, एवि सगिहयल कम्मेण लग्गल ।

इन्त सुणिवि सरिवि जिएा सिक्स दिक्स, हुन गए।हरु राल म्रसील भिक्स ।

राहिय लपाध्यायल म्रममलए।एगु, केवलु गल मोक्सहु सुह विहाएगु ।

रिह तए।ल चरिवि पवण्णासींग म्रन्तु, एन्छि दिवि थी लिगु भग्गी ।

धीयल विसांग सपत्त म्रज्ल, वलधरी दिक्तिय सुवहु सज्ल ।

हुन के।वमोक्स गयहिए। विकम्म, म्राणु हविह एएरतर मुत्ति सम्म ।

वलधरिय लक्तिएसी धरि सुलन्छि, एर्ग पर्णासिरि नाम इन्दी वलन्छि ।

रो।हेवल विहित ताइएल, रोहिए। कहिवरइय तासु हेल ।

धत्ता--

सिरि गुराभद्मुरागिसरेगा विहिय कहा बुधी भरेगा ।

सिरि मलयिकत्ति पयल जुयलगाविवि, सावयलग्रो यह मरापुछविवि ।

गांदउ सिरि जिरासंख, गांदउ तहमू म बालुिंगा विग्धं ।

गांदउ लक्खागु लक्खं, दितु सया कप्पतरु वजद भिक्खं।

।। इति श्री रोहिगो विधान समाप्त ।।

३. जिनरात्रिविधान कथा	×	ग्रपभ्र श	२६-२९
४ दशलक्षग्राकथा	मुनि गुराभद्र	"	₹0~₹
५ चदनपष्ठीवृतकथा	म्राचार्य छत्रसेन	संस्कृत	३३- ३६

नरदेव के उपदेश से ग्राचार्य छनसेन ने कया की रचना की थी।

श्रारम्भ--

जिन प्रग्राम्य चद्राभ कर्मीघध्वान्तभास्करं ।
विधान चदनपष्ट्यत्र भव्याना कथिमहा ।। १ ।।
द्वीपे जम्बूद्रुम केम्मिनु क्षेत्रे भरतनामिन ।
काशी देशोस्ति विख्यातो वर्ष्जितो बहुधावुधैः ।। २ ।।

श्रान्तम-

श्राचार्यछत्रसेनेन नरदेवोपदेशतः ।
कृत्वा चदनपप्ठीय कृत्वा मोक्षफलप्रदा ॥ ७७ ॥
यो भव्यः कुहते विधानममल स्वर्गापवर्गप्रदा ।
योन्य कार्यते करोति भविनं व्याख्याय संबोधनं ॥
द्रत्वासौ नरदेवयोर्व्वरसुखं सच्छत्रसेनाव्रता ।
यास्यंतो जिननायकेन महते प्राप्तेति जैनं श्रीया ॥ ७६ ॥

।। इति चदनपष्ठी समाप्त ।।

६ मुक्तावली कथा

X

संस्कृत

३६-३5

श्रारम्भ ग्रादि देव प्रग्राम्योक्तं मुक्तात्मान विमुक्तिदं। ग्रथ संक्षेपतो वक्ष्ये कथा मुक्तावर्लिविधिः ॥ १॥

35-88

४१-४२

इति सुगधदशमीकथा समाप्ता

X

८. पुष्पाञ्जलि कथा ग्रपभ्र श **ब्यारम्भ** जज जय अरुह जिरोसर हयवम्मीसर मुत्तिसिरीवरगराधररा। ग्रयसय गराभासुर सहयमहीसर जुित गिराधर समकर्गा ॥ ६ ॥ श्रन्तिम धत्ता वलवत्तरिगाणा रयणाकित्ति मुणि सिस्स वृहिव दिज्जइ।

पुष्पांजलि कथा समाप्ता

भाविकत्ति जुउ अनतिकित्तिथुरु पुष्फुं जिल विहि किज्जइ ।। ११ ।।

.3	भनंतविधान कथा	, ता र र	×	V/	मपभ्र श	¥ ६—५१	۲
	पुट्राहरू १८४० गुट	का 'सं० ४६—प	त्र संख्या—१८३	ाहरूर र ग्रा०-७ ×६ दर	ग्रा-सामान्यजीर्रा ।	înt ir Th	
₹.	नित्यवंदना सामायि					7°7 6 - 9	1
_	नैमित्तिकप्रयोग			trafte there	•		
	श्रुतभक्ति	1, 1	ा उसी विकास प *	म विकासकार	Th. 7 1 -1 -1 -1 -1 -1 -1 -1 -1 -1 -1 -1 -1 -	4 m	
	चारित्रभ क्ति			क्तिमा ५ । म			
	ग्राचार्यभक्ति	t 5 m	भीत्र - मिल् ×	and the major of			
	निर्वाग्यभक्ति				77	₹ ጸ 5-,1	
	योगभक्ति		Υ (Τ΄, Τ΄) Χ	हरेर, ग्राम्	ירודי מולקייורם	, ृ ४३	
5 ,	नदीश्वरभक्ति						
٤.	स्वयभूस्तोत्र	' रानीहामर । श्र	करा । निर्मा तिचार्य समन्तभद्र	त नोपती । ^६ ६७-८०		7 <i>ξ</i>	
	 गुर्वावलि	4 77,-	×	्रिकार कानार	27 - 77 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 -	・ 下門/E ソリ	,
	स्वीध्यायपाठ	ιŧ		Harry.	भ प्राकृत संस्कृ	7. वीवर गर-,,-	
१२.	तत्वार्थसूत्र		उमास्वामि		સંસ્કૃત	- 1 · 1 · 1	-
१३.	सुप्रभाताष्टक		यतिनेमिचंद	ग तः = गर्ने स्तूर्निष	अकृत रात्रा गर्म	ाः पद्य स० ८	
१४.	सुप्रभातिकस्तुति	* (1 11	^{७७} भुवनेभूषर्गः ।	वस्तामा, व्यान पुर	יי ידרין ואָקנוּ דיה	T +7	
१५.						** 45	
	स्वप्नावलि			क्टनस्थादस्य के	••	77	
₹६.	स्वप्नावलि सिद्धिप्रिय स्तोत्र		ामुनि वैवनंदि [†]	1) - साथाशस्त्रकार १९११ - साथा स्वरणकार	भ्दार र (िन्डिंग्स्ट) १९	77- 77- 78	
		ا باد -	् मुनिःदैवनंदि प्रकृतिः दैवनंदि	त्रा, राम द्वापाद	75 () 10	77 78 77 78 71 78	
₹७.	सिद्धिप्रिय स्तोत्र	{ > 1 ^r =	् मुनिःदैवनंदि प्राप्तिः द्वी त ्राप्तिः विक्रम्मान्यस्य		23 23 24 24 25 25 26 27 27 27 27 27 27 27 27 27 27 27 27 27	77 78 78 77 78 78	
१७. १५.	सिद्धिप्रिय स्तोत्र भूपालम्तवन	{ > 1 ^r =	्मुनि देवनंदि । प्राप्ति प्रीप्तु प्राप्ति । वर्षे सूपालकंवि । प्राप्ति वादिराजि	יין די הייקה, אינה אינה. היין די די הייקה,	भारत विशेषात्रका अपना का	77 78 78 78 78 78 78 78 78 78 78 78 78 7	
१७. १८. १६.	सिद्धिप्रिय स्तोत्र भूपालम्तवन एकीभावस्तोत्र	{	मुनि देवनंदि । प्राप्त के दीनु पर्छ । के स्मूपान केवि । प्राप्त वादिराज । प्राप्त केविस्ताल ।	اساء' مستارط تأدير الا اخطيراء الله الماد الاطفه الاطفه	(1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1)	77 78 78 78 78 78 78 78 78 78 78 78 78 7	
१७. १८. १८.	सिद्धिप्रिय स्तोत्र भूपालम्तवन एकीभावस्तोत्र विषापहार स्तोत्र	(> (r → 1, Ţ	मुनि देवनंदि जिल्हे हो हु । हि । विकास के कि । जिल्हे के क	ार, या तामका क्ष स्वायांचे स्वायांचेता कुरू प्र से स्वायांचेता कुरू प	(33	
१७. १८. २८. २०.	सिद्धिप्रिय स्तोत्र भूपालम्तवन एकीभावस्तोत्र विषापहार स्तोत्र पार्श्वनायस्तवन	{	मुनि देवनंदि । जिल्हे होड़ गहरी विद्यान कि विद्यान । जिल्हे विद्यान विद्यान विद्यान । जिल्हे विद्यान विद्यान । जिल्हे विद्यान विद्यान विद्यान । जिल्हे विद्यान विद्यान विद्यान । जिल्हे विद्यान विद्यान विद्यान । जिल्हे विद्यान विद्यान विद्यान । जिल्हे विद्यान विद्यान विद्यान विद्यान विद्यान विद्यान । जिल्हे विद्यान विद्या	त्रातः साम्यत्र प्रकास्त्र विकासिस्य स्थापन स्थितः सम्बद्धाः स्थापन स्थापना समित्र प्रवासन्त्रो	ではてて(「「つか) ではてて、「「です」 ではてて、「です」で、 ではて、「できて、で、」 ではて、「で、」 ではて、、」 ではて、、、、、、、、、、、、、、、、、、、、、、、、、、、、、、、、、、、、	77 78 78 78 78 78 78 78 78 78 78 78 78 7	
१७. १८. २०. २१. २२	सिद्धिप्रिय स्तोत्र भूपालम्तवन एकीभावस्तोत्र विषापहार स्तोत्र पार्श्वनाथस्तवन कल्यारा मंदिर स्तो	{ > ↓ (* * * *), }; * * (*); }	मुनि देवनंदि । मुनि देवनंदि । जारि हो मुनि हो । रेर्ग भूपान किव । पर्मा वादिराज । जिस्सेन अपहा रेद्देवनंद्र सूरिए जुमुदेवन्द्रसूरि पर्मानदी	त्यात् स्वाप्त्यः स्वाप्तः स् स्वाप्तः स्वाप्तिः स्वाप्तः स	(T	77 78 78 78 78 78 78 78 78 78 78 78 78 7	

गुटका-संग्रह

६३४]

२४ मंगलाप्टक

२६. भावना चौतीसी

× भ० पद्मनंदि संस्कृत

"

६२–६५

33

श्रारम

शुद्धप्रकाशमिहिमास्तसमम्तमोह, निद्रातिरेकमसमावगमस्वभापं । ग्रानदकंदपुदयास्तदशानिभन्नं स्वायभुवं भवतु धाम सता शिवाय ।। १ ।। श्रीगौतमप्रभृतयोपि विभोर्मिहिम्न प्राय क्षमानयनयः स्तवन विधातु । ग्रथ विचार्य जहतस्तदमुन्नलोके सौख्याप्तये जिन भविष्यते मे किमन्यत् ।। २ ।।

र्श्वन्तिम

श्रीमत्त्रभेन्दुप्रभुवाक्यरिम विकाशिचेतः कुमदः प्रमोदात् । श्रीमावनापद्धति मात्मशुद्धचै श्रीपद्मनदी स्वयं चकार ॥ ३४ ॥ इति श्री भट्टारक पद्मनदिदेव विरचित चतुस्त्रिशद् भावना समाप्तमिति ।

२७ भनतामररतोत्र

श्राचार्थ मानतु^{*}ग

संस्कृत

२८. बोतरागस्तोत्र

भ० पद्मनदि

77

श्रारम्भ

स्वात्माववोधविश्वद परमं पिवत्र ज्ञानैकमूर्तिमरावद्यगुरोक्पात्रं ।

श्वास्त्रादिताक्षयमुखाव्जलसत्पराग, पश्यित पुण्यसिहता भ्रुवि वीतरागं ।। १ ।।

उवत्तपस्तपराञोजितपापपके चैतन्यिवन्दमचल विमल विशंक ।

वेत्रेन्द्रवृन्दसित करुराालताग पश्यित पुण्य सिहता भ्रुवि वीतरागं ।। २ ।।

जाग्रद्विग्रुद्धिमिहमाविधमस्तशोक धर्मीपदेजविधिवैधितभव्यलोक ।

श्राचारवन्थुरमित जनतासुराग, पश्यिन्त पुण्य सिहता भ्रुवि वीतराग ।। ३ ।।

गद्धि सर्प मदनासनवैनतेय, या पाप हारिजगद्धृत्तमनामवेयं ।

ससार्रासधु परिमयन मदराग, पश्यिन्त पुण्य सिहता भ्रुवि वीतराग ।। ४ ।।

रिग्रिंगिग्रिक्षमलारिक्ति विदम, विद्युल्य सिहता भ्रुवि वीतरागं ।। ४ ।।

श्राण्यदक्द सररीकृत्धर्मपय, ध्याग्नदग्विलिलोद्धतक्ममंकथ ।

व्यस्ताजवाजि गराधात विश्वय जोग, पश्यिन्ति पुण्य सिहता भ्रुवि वीतराग ।। ६ ।।

स्वछोछलव्धिणिविणिज्जितमेघन दं, स्याद्वादवादितमयाकृतसिद्वपादं । नि सीमसंजममुधारसतत्तडागं पश्यन्ति पुण्य सिहता भुवि वीतराग ॥ ७ ॥ सम्यक्ष्रमाण्कुमुदाकरपूर्णचन्द्रं मागल्यकारणमनंतग्रुणं वितन्द्रं। इष्ट्रप्रदाणिविधिपोपितभूमिभाग, पश्यन्ति पुण्य सिहता भुवि वीतरागं॥ = ॥

श्रीपद्मनिः रचितं किलवीतरागस्तीत्रं,

पवित्रमणवद्यमनादिनादौ ।

य कोमलेन वचसा विनय।विधीते,

स्वर्गापवर्गकमलातमलं वृग्गीत ।। ६ ॥

।। इति भट्टारक श्रीपदानन्दिविरिचते वीतरागस्तोत्र समाप्तेति ।।

२६.	ग्राराधनासार	देवसेन	ग्र पभ्र [•] श	र० सं० १०८६
₹0.	हनुमतानुप्रेक्षा	महाकिष स्वयभू	" स्वयंभू	रामयण का एक ग्रंश ११६
₹१.	कालावलीपद्वडी	×	77	?? \$
३ २,	ज्ञानिषण्ड की विवाति पद्धिका	×	"	१३१
₹₹.	ज्ञानाकुश	×	संस्कृत	१३२
३४,	इष्ट्रोपदेश	पूज्यपाद	37	१ ३६
३४.	सूक्तिमुक्तावित	श्राचार्य सोमदेव	53	\$ %¢
३६.	श्रावकाचार	महापंडित ग्राशाधर	" ७ वे श्र	ध्याय से स्रागे स्रपूर्ण १ ५३

४४४१. गुटका सं०६०। पत्र सं०५६। म्रा० ५×६ इख्र । म्रपूर्ण । दशा-सामान्य।

१. रत्नत्रयपूजा	×	प्राकृत	२ २~२७
२. पचमेरु की पूजा	×	39	२७३१
३. लघुसामायिक	×	सस्कृत	३२ —३३
४ भारती	×	99	₹ ४ –₹ <u>¥</u>
४. निर्वागुकाण्ड	×	সা ক ূর	3 5 36

४४४२. गुटका सं० ६१। पत्र सं० ५६। आ० न्रें×६ इख । अपूर्ण। विज्ञेष—देवा ब्रह्मकृत हिन्दी पद संग्रह है।

इम्लार्ड

म्रपभ्र श

्रिका का कियों के आहर पर - न्दे**४३-४७**

भारत । इ.स. १८८० वर्ष । व्यापन के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स

१२: पञ्चमंख्यूजा (पुष्पाञ्जलि)

१३, पराकरहा जयमाल

१४. वारह म्रनुप्रेक्षा

7717

×

```
४४४३. गुटका स० ६२ । पत्र सं िर्दर्भित्रा० ६×६ इख्रा भाषा-हिन्दी । लेल काल सं • १८२८
                               म माराभि में तिसे पुर्वता तक्षा करणा कर्
अपूर्ण ।
           विशेष--प्रति जीर्शशीर्श श्रवस्था-मे<sub>ह</sub>है । मुधुमालती क्षेत्र कथा है । गाउन प्रमार कार्
           ४४४४. सुटका सं० ६३ । पत्र, सं० १९ २५ ) ह्या०, ६४५. इख्र । भाषा-संस्कृत । पूर्ण मा देशा-सामान्य
१. तीर्थोदकविधान
                                                                                       १-११
                                                 म्बियानाः , संस्कृते ,, नन्ति
२. जिनसहस्रनाम
                                   ्यागापर्वातः नातः नातः ।
                                                                                      १२-२२
                                                  र नाम र १ सा नियाधिकोटे
३, देवशास्त्रगुरुपूजा
                                                                                      २२-३६
४. जिनयज्ञकल्प
                                                                                      36-127
                           च्यारिय नयनातम पराजीत । ८ ।।
           ४४१४. गुटका स्०६६४-। पत्र-स्०४० । आ० । प्राः । भाषा-हिन्दी । पूर्ण।
           विशेष-विभिन्न कवियो के पदो का संग्रह है।
                                                                                    D' 1918 .57
      ४४४६ गुटका स० ६४—पत्र संस्था-न६-४११ । आ०-न×६॥ । लेखनकाल—१६६१ । अपूर्ण ।
दशा-जीर्ग ।
   7 4 4
                                                                                 १, सहस्रनाम
                                                                         त्त भूष्यौ | इ६-इ७
हर्माता प्रमुख
                                     प० श्राशाधर
                                          पद्मनदि
  २. ऱ्यूनत्रयपूजा
                                                                                      59-63
  ३, नदीश्वरपक्तिपूजा
                                                                      संस्कृत
                                                                                      23-69
7115-75
                                          77
                                                    ין דין דור
  ४. वडीसिद्धपूजा ( कर्मदहन पूजा )
                                         सोमदत्त
                                                                                 . विक्ति विक्त
                                                   अ मान हाहित
  ५. सारस्वत्यंत्र पूजा
                                                                                    ना। का गा
                                                    र गिलार ग्रिसि 🕶
  ६. वृहत्कलिकुण्डपूजा
                                          X
                                                                                    १०७-१११
  ७. गराघरवलयपूर्णा
                                                                                 ?!! ? ? ? - ? ? ¾
  ५ नंदीर्श्वरजयमाल
                             TIT
                                                                                    THE STATE OF
                                           X
                                                                      प्राकृत
  ६. वृहत्पोडशकारणपूजा
                                                                                  <sup>*</sup> । ११६-१२५ • *
                                           X
                                                                      संस्कृत
 १०. ऋषिमडलपूजा
                              7,14
                                                                                  ११६-३६
                                         ज्ञान भूपरा
                                                                        "
 ११ कातिचक्रपूजा
                                                                                    १३७-३५
                                           X
```

}		,	[६३७
गुटका-संप्रह	×	ग्रपभ्र श	१४७
१५ मुनीश्वरो की जयमाल	×	37	१४६
१६. गामोकार पाथडी जयमाल		77	१५० -१५२
१७ चौवीस जिनद जयमाल	×		१५३-१५५
१८ दशलक्षरा जयमाल	रइवू 	יי सस्कृत	१५५–१५७
१६. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	4154	
२०. कल्यागमदिरस्तोत्र	कुमुदच ं द्र	99	१५७-१५८
२१ एकीभावस्तोत्र	वादिराज	77	१५५-१६०
२२ ग्रकलंकाष्ट्रक	स्वामी ग्रक्तलंक	"	१६०
२३ भूपालचतुर्विंशति	भूगल	75	१६१–६२
२४. स्वयभूस्तोत्र (इष्टोपदेश	पूज्यपाद	53	१६२–६४
२५. लक्ष्मीमहास्तोत्र	, पद्मनदि	57	१६४
२६. लघुसहस्रनाम	×	77	१६५
२७, सामायिकपाठ	×	प्राकृत सस्कृत ले॰ स॰	१६७५, १६५–७०
२८. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनदि	संस्कृत	१७१
२९. भावनाद्वात्रिशिका	×	9>	१७१–७२
३०. विषापहारस्तोत्र	धनक्षय	57	१७२-७४
३१. तत्वार्यसूत्र	उमास्वामि	57	१७४-७=
३२. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्र	प्र १भ्र [ं] श	१७६-८८
7		ले० सं० १६	६१ वैशाख सुदी ५।
३३. सुप्पयदोहा	×	×	१८५–६०
३४. परमानंदस्तोत्र	×	संस्कृत	\$3\$
३५. यतिभावनाष्ट्रक	×	7)	>>
३६. करुएा प्टक	पद्मनदि	77	१६२
३७. तत्वसार	देवसेन	प्राकृत	१६४
३८. दुर्लभानुप्रेक्षा	×	"	"
ेत्र ३६. वैराग्यगीत (उदरगीत)	- छीहल	हिन्दी	१६५
४०. मुनिसुव्रतनाथस्तुति	×	अ पञ्च [°] श	म्रपूर्ण १६५
4			

44=]		l	गुटका-संमह
४१. सिद्धचक्रसूजा	×	सस्कृत	१८६–६७
४२ जिनशासनभक्ति	×	प्राकृत ग्रपूर्ग	266-200
४३. घर्मदुहेला जैनी का (श्रेपनक्रिया)	×	हिन्दी	२०२–३७

विशेष—लिपि स्वत् १६६६। श्रा० शुभचन्द्र ने ग्रुटके की प्रतिलिपि करायी तथा श्री माधवसिंहजी के शासनकाल में गढकोटा ग्राममे हरजी जोशी ने प्रतिलिपि की !

४४ नेमिजिनंद व्याहली	खेतसी	हिन्दी	२३७–४२
४५ गगाघरवलययत्रमण्डल (कोठे)	×	53	२४२
४६. कर्मदहन का मण्डल	×	99	२४३
४७. दशलक्षरावृतोद्यापनपूजा	सुमतिसाग र	हिन्दी	२४३–६४
४८. पंचमीव्रतोद्यापनपूजा	केशवसेन	27	२६४–७४
४१. रोहिगोवत पूजा	×	59	२७५
५०, त्रेपनक्रियोद्यापन	देवेन्द्रकीत्ति	संस्कृत ,	२७५–८६
५१. जिनग्रुगाउद्यापन	×	हिन्दी भ्रपूर्ण	२८६-६४
५२. पंचेन्द्रियवेलि	छीहल	हिन्दी श्रपू	र्ण ३०७
५३. नेमीसुर कवित्त (नेमीसुर	कवि ठक्कुरसी	53	30-08
राजमतीवेलि)	(कविदेल्ह का पुत्र)		
५४. वि ज्ज ुच ्चर की जयमाल	×	3 3	\$3-30\$
४५. हण्डतकुमार जयमाल	×	भ्रपभ्र श	३११-१४
५६. निर्वागिकाण्डगाया	×	प्राकृत	३१४
५७ कृपगाछन्द	ठनकुरसी	हिन्दी	418-30
५०. मानलघुवावनी	मनासाह	"	३१५५-२१
१६. मान की वडी बावनी	"	, 27	३२२-२द
६० नेमीश्वर को रास	भाउकवि	21	₹₹-37
£ 8. ,,	ब्रह्मरायमझ	"र० सं० १६१५	, ३३३–४१
६२ नेमिनायरास	रत्नकीर्ति	**	きゃらーきゃき
६३ श्रीपालरासी	ब्रह्मरायमल्ल	"र. सं. १६३०	3×3-4X

رسر

व्रह्म रायमल

हिन्दी र सं. १६२६ ३५६-६६

सवत् १६६१ मे महाराजांघिराज माधोसिंहजी के शासन काल मे मालपुरा मे श्रीलाला भावसा ने स्रात्म पठनार्थ लिखवाया । हिन्दी ३६७-६८ ६५. जोगीरासा जिनदास भ० सकलकीति ६६. सोलहकारणरास ३६५-६६ 77 ३६६-८३ ६७, प्रद्युम्नकुमाररास **ब्रह्मरायम**ल 77 रचना संवत् १६२८ । गढ हरसौर मे रचना की गई थी। ६८. सकलीकरस्मविधि 353-64 X सस्कृत ६०. वीसविरहमारापूजा X 36X-60 ७०, पकल्याग्यकपूजा अपूर्णे ३६८-४११ × ४४४७. गुटका स० ६६। पत्र स० ३७। आ० ७४१ इख । अपूर्ण। दशा–सामान्य। १. भक्तामरस्तोत्र मंत्र सहित मानलु गाचार्य संस्कृत १-२६ २. पद्मावतीसहस्रनाम X २६-२७ ४४४८. गुटका सं ६७। पत्र स० ७०। ग्रा० ५१×६ इश्व। ग्रपूर्ण। दशा-जीर्ण। १. नवकारमंत्र ग्रादि X प्राकृत P २. तत्त्वार्थसूत्र उमास्वामि संस्कृत **फ--२१** हिन्दी ग्रर्थ सहित । अपूर्ण ३. जम्बूस्वामी चरित्र X हिन्दी श्रपूर्श ४. चन्द्रहसकथा टीकमचन्द र सं. १७०८ । श्रपूर्श ५. श्रीपालजी की स्तुति पूर्ण **53** " ६. स्तुति ऋपूर्श

विशेष—प्रारम्भ मे वैद्य मनोत्सव एषं वाद मे भ्रायुर्वेदिक नुसक्षे है ।

४४४६. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ८८-११२ । भाषा-हिन्दी । श्रपूर्ण । ले॰ काल सं० १७८० चैत्र

विशेष--- प्रारम्भ में वैद्य मनोत्सव एषं बाद में भ्रायुर्वेदिक नुसले है ।

४४४०. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ११८ । ग्रा० ६×६ इंच । हिन्दी । पूर्गी ।
ब्रिशेष---बनारसीदास त समयसार नाटक है ।

४४४१. गुटका सं० ७०। पर नं० ६४। आ० ६१%६ इच । भाषा-सत्कृत हिन्दी। विषय-सिद्धान्त स्पूर्ण एवं महुद्ध । दशा-भोगी।

ित्य — इन गुटके में जनाम्बामि कृत तत्वार्यसूत्र की (हिन्दी) टीवा थी हुई है। टीका मुन्दर एवं विस्तृत है तथा पान्य स्वायन्यकी कृत है।

४४४२ शुटका मं० ७१। पत तक ३४-२२२। आ० ६३×६ इ.च.। अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

•			
१. म्बरोप्य	×	हिन्द।	き なースと
२. मृत्रीवयम	×	सस्यत	४२
3. रतनी द्याप	चारानय	77	¥3-40
इ, देवनिद्धपृता	×	97	X=-£3
) दतस्था ण् रुवा	×	"	£8- £X
६. व्यवप्रा	×	7)	キャー ७३
७. गीनतपारसङ्ग	*	51	ソセー をひ
८. वा विषयून	×	12	७५-७६
६. दर्भिगुण्डपुरः	×	11	७ ६-७८
क. सन्तामुस	×	13	७५–५२
११ सम्बद्धीय	×	37	57-54
१२. व्यक्तिकार	×	73	5 X
१३ शहनाहित्व वीन प्रध्याय सर	उमा म्यामि	23	~ X~ ~ 5
१४, शानिपाठ	×	17	55
११, शह ^र कोर भाग	रामिवनीद	হি-মী	ce- 222

४४४३, सुदक्ष सं० ७२ । १९ मेर २०४ । मार ६५४६३ इ.च । पूर्ण । दशा-सामाना ।

के देशक कामण्या है हैं	दत्रारमीदाग	ែវា	१-१११
		राना गंगा १६६३ तिवि मं०	१७७६ ।
द सम्पूर्ण दिशास	31	fa ä	धपूर्ण
F & minny wants	Х	31 प्रमूर्ण परा मं ०	₹ € −७०

४४४४. गुटका सं० ७३। पत्र सं० १५२। म्रा० ७×६ इ व । म्रपूर्ण। दशा-जीर्ण शीर्ण।

१. राग्रु म्रासावरी

रूपचन्द

यपभ्रं श

१

प्रारम्भ--

विसउगामेगा कुरुजंगले तहि यर वाउ जीउ राजे । धगाकगागायर पूरियउ कगायप्पहु धगाउ जीउ राजे ॥ १ ।।

विशेष-गीत श्रपूर्ण है तथा श्रस्पष्ट है।

२. पद्धडो (कौमुदीमध्यात्)

सहरापाल

ग्रमञ्ज श

3-19

प्रारम्भ--

हाहउं धम्मभुउ हिंडिउ ससारि ग्रसारइ । कोइपए सुगाउ, ग्रगादिठ्ठु संख विग्यु वारइ ॥ छ ॥

अन्तिम घत्ता-

पुरापुमंति कहइ सिवाय सुिरा, साहरामेयहु किज्जइ।
परिहरि विगेहु सिरि सितयत संधि सुमइं साहिज्जइ।। ६।।
।। इति सहरापालकृते कौमुदीमध्यात् पद्धडी छन्द लिखितं।।

३. कल्याग्गकविधि

मुनि विनयचन्द

ग्रपभ्रं श

61-23

प्रारम्भ--

47

11

सिद्धि सुहकरसिद्धियहु

पर्गाविवि तिजइ पयासगा केवलसिद्धिहि कारग्रथुग्रामिहउं।

सयलवि जिग्रा कल्लाग्रा निहयमल सिद्धि सुहंकरसिद्धियहु ।। १ ।।

श्रन्तिम—

एयभत्तु एक्कु जि कल्लागाउ विहिगािव्वयिङ म्रहवइ गरागाउ । भ्रहवासय लहखवगािविहि, विगायचंदि सुगाि कहिउ समत्यह ।। सिद्धि सुहंकर सिद्धियह ।। २४ ॥

।। इति विनयचन्द कृतं कल्यागुकविधिः समाप्ता ।।

४. चूनड़ी (विरायं विदिवि पंच गुरु)

यति विनयचन्द

म्रपभ्र श

१३-१७

	_			
Evis	·]			् गुटका-संपह
7	यापिनी भी	हरिसन्द सरमान	म्रपञ्च' ग	१७-२४
ŧ,	सम्मापि	×	? 1	२४-२७
,	şim kulpı	×	? 7	२७-३१
٤,	4777744	×	91	31-8x
	िसिय-२० गड्यर १।			
٤.	भारनायाम क्षेत्रा	राममेन	77	*X-XE
• •	दप्रसाधानीसमान	×	n	५६–६०
,,	भूपरधामेतास	न्ययभू	2 3	६१–६७
	(हरिश्त मध्यार् विदु	पेराम गयानरे }		
۲¥.	6 x 01	यदा रीति))	50-00
	(पत केंसि विशेष पद्मित	रियनस्थान्)		
\$ 3	ल्हितीमधीर (६७६= गणि)	स्ययमू	" (धन्नाधित) ७७-५६
ž £,	संस्योदन (प्रमुप्ता भाग)	ग्डनू	2)	= ६ —= ६
ţy.	य पुर्वति के पद्धी	Y .	, 11	53-32
",	मधान-रतीपुरी (भाग १)	महरापान	33	£8-E¥
į. s.	भाषम् उत्त वैभी	×	27	33 - 43
3 B.	في متلند سفة	×	प्रापृत	१००२
۲۲.	काश्चामा (हुई सह)	पुरस्य स	मार्ज ग	१०२–३१
e 3	प्रवास्ति (के (मान)	77	n	१
	५५५५ गुटमा मंद ७५	। यम ४० २३ म १२३।	चा॰ ६×६ दस्र । चपूर्ण ।	
1.	may bigging and one	×	हिन्दी	73-38
÷	gen a Sen den panas-fra	ग्या न्द	33	42- 7 3
y	the second to	×	33	¥¥
\$.	# m 1 mail # - Edn 1	-रोहर	n	**
;	No are the	274 . 2748	31	Yo
F _e ,	or and the state	71	n विश्वास मह	13E# YE

गुटका-संप्रह]			[६४३
७. जकडी	द्यानतराय	हिन्दी	५१
८. मगन रहो रे तू प्रभु के भजन	में वृन्दावन	99	५२
हम ग्राये हैं जिनराज तोरे वव	न की द्यानतराय	77	ले० काल सं० १७६६ 🕠
१०. राजुलपत्रीसी	विनोदीलाल लालचन्द	77	<i>x3-40</i>
विशेष—ले० काल स	० १७६६ । दयाचन्द लुहाडि	षा ने प्रतिलिपि की ध	ी। पं० फक्सेरचन्द कासलीवाल
ने प्रतिलिपि करवायी थी।	(
११. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी	६१- ६३
१२. श्रीपालजी की स्तुति) 7	77	६३–६४
१३. मना रे प्रमु चरणा ल बुलाय	हरीसिंह	53	६४
१४. हमारी कख्णा ल्यो जिनराज	पद्मनिन्द	7 7	Ę¥
१५. पानीका पतासा जैसा तनका	तमाशा है [कवित्त] केशवदार	Ŧ ,,	4 4-4 5
१६. कवित्त ज	यकिशन सुंदरदास ग्रादि	57	६६-७२
१७. गुणवेलि	×	हिन्दी	७५
१८. पद-घारा देश मे हो लाल ग	ढ बडो गिरनार 🗴	77	৩৩
१९. कक्का	गुलावचन्द	5)	७५-५२
		र० काल सं	१७६० ले० फाल सं० १८००
२०. पंचवधावा	×	हिन्दी	58
२१. मोक्षपैडी	×	17	द६
२२. भजन संग्रह	×	77	53
२३. दानकीवीनती	जतीदास	संस्कृत	६३
		निहालचन्द ग्रजमेरा	ने प्रतिलिपि की संवत् १८१४।
२४. शकुनावली	×	हिन्दी वि	त्रिकाल १७६७ ६६-१०५
२४. फुटकर पद एवं कवित्त	· ×	"	१२३
४४४६ गुटका सः	७५—पत्र संख्या—११६। ग्र	०-४३×४३ इच।	ले॰ काल सं० १८४८ । दशा
सामान्य । श्रपूर्श ।	`		
१. निर्वागुकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी	
२. कल्यारामंदिरभाषा	बनारसीदास	77	

[دفع			[गुटका-संपर
के कन्मीद्वासिक इ.स.	पद्मप्रसदेव	संस्कृत	
४. र्यसारमी मी मृति	*	हिन्दी	
४ राष्ट्रवीदना	दनारसीदास	7)	
६. वीसमीर्शाम्यो की क्वानी	र्चनीति	"	
 रागभारता 	×	57	
<. रर्गवाप्टर	×	हिन्दी	सब दर्शनों का वर्गान है।
र. पर-भगग गान की प्रात	रचीमिह	33	"
र्क, भगमग्रातिकाम	×	"	"
५४४७ गुटमा सः ७६।	। पत्र मंग्या—१६० । ग्र	ा०—¥॥Х४॥ लेखः	त स॰ १७८३। जीर्ग।
ो. जनसङ्ख्या	उगाग्यामि	सस्कृत	
- किन्द्रश्व भाइवर पूजा	×	3)	
). बर्बलार्ड्डण	×	17	
		पंटित नगराज ने	हिरणीदा में प्रतिलिपि की।
प्र. पीरीएंदर री मी उनही	×	हिन्दी !	प्रतिनिषि ग्रुढा मे गी गई।
५. विदिष्टिया	देशनदि	भस्युत	
f effilteniá	यादिराज	17	
ः, पिन्द्रवितिन स्थित स्वास	×	हिन्दी	
 धिकानिकी की प्रवाद 	मनस्य	33 जीवने	रमं नगराजने प्रतिनिषि की थी।
क ्रीनुपानार सेम	×	मम्यूत	
(*, अध्यासमाव	का रावंमानतुं ग	11	
५५४६ गुरुहा संट ७७।	। या गंव १२५ । माव ६	: ४८६ घ भागा–।	ांग्यत । से० सं• पान १८१६
*** 77 1			
t. Fefnag 1	×	र्वस्था	१− ३%
" र पास्त्रेषु अर्थ	×	7)	\$ \$- 88
t e springer	×	**	YY-X0
४. इस राजानी का	×	n	20-73

गुटका-संग्रह]			ि ६४४
५. रत्नत्रयपूजा	×	हिन्दी	- 44-48
६. पार्श्वनायपूजा	×	77	<i>६२–६७</i>
७. शांतिपाठ	×	57	६७–६६
८ तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	७०-११४

४४४६. गुटका सं० ७८। पत्र संस्था १६०। ग्रा० ६×४ इ च । ग्रपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

विशेष-दो गुटको का सम्मिश्रण है।

१. ऋषिमण्डल स्तवन	×	संस्कृत	२०-२७
२. चतुर्विशति तीर्थङ्कर पूजा	×	57	₹5-₹१
३. चितामिएस्तोत्र	× .	77	३ ६
¥. लक्ष्मीस्तोत्र	×	55	₹७–३८
५. पार्श्वनाथस्तवन	×	हिन्दी	₹-४०
६. कर्मदहन पूजा	भ० शुभचन्द्र	संस्कृत	१-४३
७. चितामिए। पार्श्वनाय स्तवन	×	3 7	४३ -४८
८. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	53	& c- {}
६. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	₹ & − ੬ 8
१०. चितामिए। पार्श्वनाय पूजा	भ० शुभचन्द्र	33	६१–८६
११. गराधरवचय पूजा	×	"	56- 888
१२. भ्रष्टाह्निका कथा	यश-कोर्त्ति	77	१०४–११२
१३. भ्रनन्तव्रत कथा	ललितकीर्त्ति	1 3	११२–११ =
१४, सुगन्धदशमी कथा	53	"	११ =- १२७
१५. षोडषकारण कथा	77	33	१२७ - १३६
१६. रत्नत्रय कथा	29	59	१३६—१४१
१७. जिनचरित्र कथा	33	77	१४१–१४ ७
१८. म्राकाशपंचमी कथा	11	55	१४७-१५३
१६. रोहिगोवत कथा	58	77	अपूर्ण १५४-१५७

६४४				[गुटका-संप्रह
₹.	लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	
٧.	श्रीपालजी की स्तुति	×	हिन्दी	
ሂ.	साघुवंदना	वनारसीदास	77	
ξ.	वीसतीर्थं द्वरो की जकडी	हर्षकीर्ति	"	
७.	वारहभावना	×	77	
ಸ .	दर्शनाष्ट्रक	×	हिन्दी	सब दर्शनो का वर्शन है।
.3	पद-चरण केवल को ध्यान	हरीसिंह	57	33 ,
१०.	भक्तामरस्तोत्रभाषा	×	77	75
	४४४७ गुटका स० ७६।	पत्र सख्या१८० । ग्रा	o—५॥×४॥ लेख	न स० १७८३। जीर्सा
₹.	त्तःवार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	
₹.	नित्यपूजा व भाद्रपद पूजा	×	33 ,	
₹.	नंदीश्वरपूजा	×	***	
			पंडित नगराज ने	हिरगोदा मे प्रतिलिपि की।
٧.	श्रीसीमंघरजी की जकडी	×	हिन्दी	प्रतिलिपि गुढा मे भी गई।
¥.	सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनदि	सस्कृत	
₹,	एकांभावस्तोत्र	वादिराज	99	
७ .	जिनजपिजिन जिप जीवरा	×	हिन्दी	
দ.	चितामिएाजी की जयमाल	मनरथ	" जोव	नेरमे नगराजने प्रतिलिपि'की थी।
.3	क्षेत्रपालस्तोत्र	×	सस्कृत	
१०,	भक्ताम्रस्तोत्र्	म्राचार्यमानतु ग	77	
	४४४६ गुटका स० ७७।	पत्र स० १२४ । मा० ६	×४ इ'च । भाषा-	संस्कृत। ले० सं• काल १८१६
माह	सुबी १२।		•	
	देवसिद्धपूजा	×	सस्कृत	?- ₹%
	नंदीश्वरपूजा	×	73	₹ ₹~४४ ,
₹. :	सोलहकारण पूजा	×	77	**-40

×

४. दशलक्षरापूजा

77

¥0-ሂሂ

गुट्का-संप्रह]			ि ६४४
५. रत्नत्रयपूजा	×	हिन्दी	५ ६–६१
६. पार्श्वनायपूजा	×	37	६२–६ ७
७. शातिपाठ	×	5 5	६७,–६९
८ तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	17	७०–११४

४४४६. गुटका स० ७८। पत्र संख्या १६०। ग्रा० ६×४ इ च। ग्रपूर्ण। दशा-जीर्ण।

विशेष—दो गुटको का सम्मिश्रण है।

१. ऋषिमण्डल स्तवन	×	संस्कृत	२०-२७
२. चतुर्विशति तीर्थद्धर पूजा	×	"	२
३. चितामिएस्तोत्र	× .	77	३६
४. लक्ष्मीस्तोत्र	×	77	₹७-३८
५. पार्श्वनायस्तवन	×	हिन्दी	३६-४०
६. कर्मदहन पूजा	भ० शुभचन्द्र	संस्कृत	१ —४३
७. चितामिए। पार्श्वनाय स्तवन	×	39	४३-४द
पार्श्वनायस्तोत्र	×	37	४५-५३
६. पद्मावतीस्तोत्र	×	? }	₹ % − £ \$
१०. वितामिए। पार्श्वनाथ पूजा	भ० शुभचन्द्र) ;	६१– 58
११. गगाधरवलय पूजा	×	33	≂ €–११४
१२. श्रष्टाह्मिका कथा	यश-कोर्ति	77	१०४–११२
१३. ग्रनन्तव्रत कथा	नलितकीत्ति	in	११२-११ =
१४. सुगन्धदशमी कथा	55	"	११५-१२७
१५. षोडपकारण कया	37	>>	१२७-१३६
१६. रतनत्रय कथा	"	77	१३६–१४१
१७. जिनचरित्र कथा	"	77	१४१–१४७
१८. श्राकाशपंचमी कथा	77	52	१४७-१५३
१६. रोहिग्गीव्रत कथा	59	77	ग्रपूर्ण १५४–१५७

६४६]			[गुटका-सप्रह
२० ज्वालामालिनीस्तीत्र	×	संस्कृत		१५५-१६१
२१ क्षेत्रपालस्तोत्र	×	1)		१६२–६३
२२. शान्तक होम विधि	×	77		१७४-७६
२३. चौबीसी विनती	भ० रत्नचन्द्र	हिन्दी		१८ ६ –८६

४४६० गुटका स० ७६। पत्र सं० ३३। ग्रा० ७×४३ इ च। ग्रनूर्ग।

१ राजनोतिशास्त्र	चारात्रय	सस्कृत	१२८
२. एकीव्लोक रामायएा	×	"	२१
३. एकीश्लोक भागवत	×	7)	"
४. गरोगद्वादगनाम	×	3 7	३०−३ १
५ नवग्रहस्तोत्र	वेदव्यास	"	३ २- <i>३३</i>

४४६१ शुटका सं० ८०। पत्र सं० १८-४४। आ० ६३×४३ इच। भाषा-संस्कृत तथा हिन्दी। अपूर्ण।

विजेप- पञ्चमगल, वाईस परिपह, देवापूजा एव तत्वार्थसूत्र का मग्रह है।

४४६२ गुटका स० ८४ । पत्र सं० २-२६ । ग्रा० ५५×४ इ च । भाषा-सस्कृत । श्रपूर्ण । दशा--

विशेप--- नित्य पूजा एव माठो का सग्रह है।

४४६३ गुटका स० ५३। पत्र सं० ३०। आ० ६४४ इंच। भाषा सस्कृत। ले० वाल सं० १८५३। विशेष---पद्मावती स्तोत्र एत्र जिनसहस्रनाम (प० आशाधर)का सम्रह् है।

४४२४ गुटका स० ५४ । पत्र स० १५-५१ । आ० ७४४३ इ च ।

۶,	स्वस्त्ययनिविधि	×	सस्कृत	१ ५२ <i>०</i>
7	सिद्धपूजा	×	7)	२१ –२३
7	पोडगकारराष्ट्रजा	×		२४ -२५
¥	दशनक्षरापूजा	×	7 7	२६-२७
y	रत्नत्रयरूजा	, *	77	२५-२७ २ ५-३७
Ę	पुरुपूजापृक	×	? 7	
	··-	• •	77	वैष-वेश

 ७. वितामिंग्यूजा
 *
 संस्कृत
 ३६-४१

 ८ तस्वार्थसूत्र
 उमास्वामि
 "
 ४२-५१

४४६४. गुटका सं ८ ६४ । पत्र स० २२ । ग्रा० ६४४ इख्र । भाषा-संस्कृत । श्रपूर्ण । दशा-सामान्य। विशेष-पत्र ३-४ नहीं हैं । जिनसेनाचार्य कृत जिन सहस्रनाम स्तोत्र है । ४४६६. गुटका स० ६६ । पत्र स० ५ से २५ । ग्रा० ६४५ इंच । भाषा-हिन्दी । विशेष-१६ में ६७ सबैयों का सग्रह है किन्तु किस ग्रंथ के हैं यह ग्रज्ञात है । ४४६७. गुटका सं० ६७ । पत्र स० ३३ । ग्रा० ५४४ इंच । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. जैनरक्षास्तीत्र	×	सस्कृत	₹-₹
२. जिनपिजरस्तोत्र	×	>>	K- X
३. पार्श्वनाथरतोत्र	×	97	Ę
४ चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	? ?	ø
५ पद्मावतीस्तोत्र	×	59	B-6x
६. ज्वालामालिनीस्रोत्र	×	55	१५-१८
७. ऋषि मडलस्तोत्र	गीतम गराधर	9 9	१६–२४
५. सरस्वतीस्तुति	प्राशा धर	>>	२४-२६
६. शीतलाष्ट्रक	×	77	२७-३२
१०. क्षेत्रपालस्तीत्र	×	27	३ २–३३

४४६८. गुटका सं० ८८ । पत्र सं० २१ । ग्रा० ७४५ ६ छ । ग्रपूर्ण । दशा—सामान्य। विशेष—गर्गावार्य विरचित पाशा केवली है ।

४४६६. गुटका स० ६६। पत्र स० ११४। म्रा० ६×६३ इ त । भाषा-संस्कृत हिन्दी । म्रपूर्ण । विशेष—मारभ मे पूजामो का सम्रह है तथा मन्त मे म्रचलकीर्ति कृत मंत्र नवकाररास है । ४४७० गुटका सं० ६०। पत्र स० ५० से १२०। म्रा० ५×४३ इच । भाषा-संस्कृत । म्रपूर्ण । विशेष—मित्त पाठ तथा चतुर्विशति तीर्थङ्कर स्तुति (म्राचार्य समन्तमद्रकृत) है । ४४७१ गुटका सं० ६१ । पत्र स० ७ से २२। म्रा० ६×६ इच । विषय-स्तोत्र । म्रपूर्ण । दशा—

सामान्य।

६४८]			[गुटका-संग
१, संबोध पचासिकाभाषा	द्यानतराय	हिन्दी	6– 5
२. भक्तामरभाषा	हेमराज	"	६–१४
३. कल्यारा मदिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास		25-55

४४७२. गुटका सं ८६२। पत्र स० १३०-२०३। ग्रा० ८×८ इ च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल १८३३। श्रपूर्ण । दशा सामान्य ।

१. भविष्यदत्तरास	रायमल्ल	हिन्दी	१३०-८५
२. जिनपञ्जरस्तोत्र	×	संस्कृत	१८५ ८७
३. पार्श्वनायस्तोत्र	×	77	१८८
४. स्तवन (म्ररिहन्त सत का)	×	हिन्दी	१८६–६३
५ चेतनचरित्र	×	***	१६३–२०३

४४७३. गुटका सं० ६३। पत्र सं० २५-१०८। आ० ५×३ इ च । अपूर्ण। विशेप--- प्रारम्भ के २४ पत्र नहीं हैं।

१	पाइर्वनाथपूजा	×	हिन्दी		२५
२	भक्तामरस्तीत्र	मानतु [•] गाचार्य	संस्कृत		ሂሄ
₹.	लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	**		६२
٧.	सासू वहू का भगडा	ब्रह्मदेव	हिन्दी		६५
٧.	पिया चले गिरवर कूं	×	>>		६७
₹.	नाभि नरेन्द्र के नदन कू जय वदन	×	23		६८
9 ,	सीताजी की विनती	×	33		७१
۲,	तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत		७२–६४
٤.	पद- ग्ररज करा छा जिनराजजी राग सा	रग ×	हिन्दी	श्रपूर्ण	६६
१०.	,, की परि करोजी गुमान ये के दिनका म	ाहमान, बुध जन	"		શ3
११.	,, लगिन मोरी लगी ऐसी	×	v		33
१२.	,, शुम गति पावन याही चित धारोजी	नवल	77		33
१३.	,, जाऊंगी संगि नेम कवार	×	"		१००
१४.	,, दुक नजर महर की करना	भूधरदा स	33		१०२

गुटका-संग्रह]			[६२६
१५. खेलत है होरी मिलि साजन की टोरी	हरिश्चन्द्र	हिन्दी	१०२
(राग काफी)			
१६. देखो करमा सूर फुन्द रही ग्रजरी	किशनदास	"	१०३
१७. सली नेमीजीसू मोहे मिलावोरी (रागहो	री) द्यानतराय	13	5)
१८. दुरमित दूरि खडी रही री	देवीदास	17	१०५
१६. ग्ररज सुनो म्हारी ग्रन्तरजामी	खेमचन्द	55	१०६
२० जिनजी की छवि सन्दर या मेरे मन भाई	x		श्चवर्सा १०८

४४७४. गुटका सं० ६४। पत्र स० ३-४७। ग्रा० ४×५ इंच। ले० काल सं० १८२१। ग्रपूर्गा।

विशेष-पत्र संत्या २६ तक केशवदास कृत वैद्य मनोत्सव है। ग्रायुर्वेद के नुसखे हैं। तेजरी, इकातरा

ग्रादि के मंत्र हैं। स० १८२१ में श्री हरलाल ने पावटा में प्रतिलिपि की थी।

४४७४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० १८७ । म्रा० ४×३ इञ्च । पूर्श । दशा-सामान्य ।

१. ब्रादिपुराएा	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	·१ - ११ ६
२. चर्चासमाघान	भूघरदास	हिन्दी	थ् <i>६</i> १–३११
३. सूर्यस्तोत्र	×	संस्कृत	१३ड़
४. सामायिकपाठ	×	2)	१३५-१४४
५. मुनीश्वरो की जयमाल	×	7)	<i>\</i> ₹% X~₹%Ę
६. शातिनायस्तोत्र	×	"	<i>१४७-१४</i> ८
७. जिनपंजरस्तोत्र	कमलमलसूरि	. 57	१४६–१५१
८. भै रवाष्ट्रक	×	77	,१५१ —१ ५ ६
६. ग्रकलंकाष्ट्रक	श्रक्लंक	77	११५६–१५६
१०. पूजापाठ	×	77	११६० –१६७

४४७६. गुटका सं ६६ । पत्र सं० १६० । आ० ३×३ इख्र । ले० काल सं० १८५७ फाग्रुग् सुदी ८ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. विषापहार स्तोत्र	धन क्षय	सस्कृत	?- 4
२. ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	11	

7

३. चितामिएपार्श्वनायस्तीत्र	×	सस्कृत	- /5 ¹
४. लक्ष्मीस्तोत्र	' ×	1)	
५. चैत्यवंदना	×	57	~
६, ज्ञानपचीसी	े वनारसीदास	हिन्दी	₹0-₹¥
, ७. श्रीपालस्तुति	×	"	१ २५–२८
न. विषापहारस्तोत्रभाषा	्र ग्रचलकीति ,	57	78-39
 चौवीसतीर्थङ्करस्तवन 	×	"	· '₹₹ <u></u> _₹७
१०, पचमंगल	रूपचद	"	३ ५—४७
११. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृते	×5-46
; १२. पद-मेरी रेलगावो जिनजी का	। नावसू [*] ×	हिन्दी	६०
१३. कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा	: वनारसीदास	55 '	· . \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \
१४. नेमीश्वर की स्तुति	भू धरदास [']	हिन्दी	७१–७२
१५. जकडी	रूपचंद	7) -	. メローチロ
₹₹, "	भूधरदास	59	ं ७६–द३
, १७. पद- लीयो जाय तो लीजे रे	मानी ×	77	- 48-54
जिनजी को नाम सब भले	ì		
१८. निर्वासकाण्डभाषा	भगवतीदास	77	E
१६. घण्टाकर्णमत्र	×	<i>n</i>	73-03
२० तीर्थं दूरादि परिचय	×	"	१७-१६२
२१. दर्शनपाठ	×	सस्कृत	१६३–६५
२२ पारसनायली की नियागी	× '	' ' हिन्दी	ઁ १ ६६–७७
२३ स्तुति ्	कनककीति	1)	१८०-८२
रं४ पद-(धद्र श्रीजिनराय मनवर	र्वकाय करानी) 🗴		•
५४७७. गुटका सं०	६७। पत्र सं० ७४। ग्रा०	३×५६ इख । भाषा–सस्कृ	त । पूर्ण । दशा सामान्य ।
	ार्ण हो चुका है। ग्रक्षर मिटः		,
• १ तत्वार्थंसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	ı
97		N 16.4	

X

संस्कृत

३. सिद्धपूजां

६ <u>୪</u> ፣	۶]			[गुटका-संप्रह
¥,	एकीभावस्तोत्र	वादिराज	संस्कृत	4 –६
₹.	जिनपूजाविधान (देनपूजा)	×	हिन्दी	9-8×
Ę.	छहढाला	चानतराय	"	१ ६–१८
७.	भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	सस्कृत	१३ —१५
Ę,	तत्त्वार्थसूत्र	उ मास्वामि	77	१५- २१
٤.	सोलहकाररापूना	×	79	२२ २४
१ 0.	दशलक्षरापूजा	×	27	२५-३२
₹₹.	रत्नत्रयपूजा	×	"	3 3- 36
१ २.	पञ्चपरमेष्ठीपूजा ,	×	हिन्दी	३७
१३.	नदोश्वरद्वीपपूजर	×	सस्वृत्त	3 5- 0 5
१४.	शास्त्रपूजा	×	77	%•
१५	सरस्वतीपूजा	×	हिन्दी	¥₹
१६.	तीर्थक्दुरपरिचयः	×	93	¥₹
₹७.	नरक-स्वर्ग के यत्र पृथ्वी आदि का वर्शाः	3 %	77	¥3-40
₹ 5.	जैनशतक	भूघरदास	27	५१–५६
38.	एकीभावस्तोत्रभाषा	33	77	६०−६१
२०.	द्वादशानुप्रेक्षा	×	"	६१ –६३
२१.	दर्शनस्तुति	×	23	६३–६४
२२.	साघुवदना	बनारसीदास	77	६४-६५
२३.	पंचमञ्जल	रूपचन्द	हिन्दी	६ ५–६९
	जोगीरासो	जिनदास	77	e-37
२४.	चर्चार्ये	×	9)	, 90~50

४४८१. गुटका सं० १०१। पत्र सं० २-२१। ग्रा० ५३×५३ इंच। भाषा-प्राकृत । विषय-चर्चा। श्रपूर्ण । दशा-सामान्य । चौवीस ठाएग का पाठ है।

४४८२. गुटका सं० १०२ । पत्र सं० २-२३ । आ०.५×४ इ ज । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । दशा-सामान्य । निम्न कवियो के पदो का संग्रह है ।

गुटका-संप्रह			{
१. भूल क्यो गया जी म्हानें	×	हिन्दी	२
२. जिन छवि पर जाऊ मैं वारी	राम	97	₹
३. श्रखिया लगी तैडे	×	19	२
४. हगनि सुख पायो जिनवर देखि	×	59	२
५. लगन मोहे लगी देखन की	बुधजन	"	ą
६. जिनजी का ध्यान मे मन लिग रह्यो	×	97	ą
७. प्रभु मिल्या दीवानी विछीवा कैसे किया स	।इया 🗙	77	¥
 नहीं ऐसो जनम वारम्बार 	नवलराम	99	*
६. ग्रानन्द मङ्गल ग्राज हमारे	×	>>	¥
१०. जिनराज भजो सोही जीत्यी	नवलराम	97	ሂ
११. सुभ पथ लगो ज्यो होय भला	99	25	¥
१२. छाडदे मनकी हो कुटिलता	3)	33	¥
१३. सबन मे दया है धर्म को मूल	57	>>	Ę
१४. दुख काहू नही दीजे रे भाई	×	> 5	Ę
१५ मारगालाग्यो	नवलराम	39	Ę
१६. जिन चरणा चित लगाय मन	"	59	9
१७. हे मा जा मिलिये श्री नेमकवार	3 >	27	ড়
१८. म्हारो लाग्यो प्रभु सूंनेह	77	>>	4
१९. थां ही संग नेह लग्यो है	77	33	3
२०. था पर वारी हो जिनराय	77	39	8
२१. मो मन यां ही संग लाग्यो	33	"	3
२२. धनि घड़ी ये भई देखे प्रभु नैना	"	"	E
२३. वीर री पीर मोरी कासो कहिये	77	77	१०
२४. जिनराय घ्यावी भिव भाव से	"	73	१०
२५. समी जाय जादो पति को समफावो	77	33	22
२६. प्रभुजी म्हारी विनती ग्रवधारो हो राज,	"	**	' ११

Ę̃x ช]			[गुटका-संप्रह
२७. ई' विध खेलिये हो चतुर नर	नवलराम	हिन्दी	१२
२८. प्रभु गुन गावो भविक जन	77	31	रेर
२९. यो मन म्हारो जिनजी सूं लाग्यो	77	"	\$ \$
३०. प्रभु चूक तकसीर मेरी माफ करो वे	"	99	१३
३१. दरसन करत ग्रघ सब नसे	77	"	१३
३२. रे मन लोभिया रे	79	 "	१४
३३ भरत नृप वैरागे चित भीनो	53	11	१५
३४. देव दीन को दयाल जानि चरण शरण ग्र	ायो ,,	77	77
३५. गावो हे श्री जिन विकलप छारि	"	27	"
३६. प्रभुजी म्हारो ग्ररज सुनी चितलाय	1)	77	१ ६
३७. ये शिक्षा चित लाई	77	77	१ ६—१ ७
३८, में पूजा फल बात सुनी	99	33	१=
३६, जिन सुमरन की वार	77	19	71
४०. सामायिक स्तुति वदन करि के	7>	?;	38
४१ जिनन्दजी की रुख रुख नैन लाय	सतदास	77	53
४२. चेतो क्यो न ज्ञानी जिया	73	55	२०
४३. एक ग्ररज सुनो साहव मोरी	द्यानतराय	77	"
४४. मो से ग्रपना कर दवार रिखभ दीन तेरा	बुधजन	77	₹•
४५: ग्रपना रग मे रग दयोजी साहव	×	77	**
४६. मेरा मन मधुकर ग्रटक्यो	×	77	२१
४७. भैया तुम चोरी त्यागोजी	पारसदास	37	"
४८. घडी २ पल २ छिन २	दौलतराम	77	' 27
४१. घट घट नटवर	×	77	२२
५०. मारग भ्रपनी जोय सुज्ञानी डोरे	×	77	
५१. मुनि जीया रे चिरकाल रै सोयो	×		33
५२. जग डिसया रे भाई	भूघरदास		n

गुटका-संप्रह]			[६४४
५३. ग्राई सोही सुगुरु वंखानि रै	नवलराम	हिन्दी	२३
५४. हो मन जिनजी न क्यो नही रटै	17	5>	97
४४. की परि इतनी मगरूरी करी		37	मपूर्ण

र्थंडिन संव १०३ । पत्र संव ३-२० । आव ६×५ इख्र । अपूर्ण । दशा- जीर्ण । विशेष —हिन्दी पदो का संग्रह है ।

४४८४. गुटका स० ८०४। पत्र सं० ३०-१४४। मा० ६x१ इख्र । ने० काल स० १७२८ कार्तिक

सुदी १५। ग्रपूर्ण। दशा-जीर्ग। १. रत्नत्रयपूजा ३०-३२ X प्राकृत २. नन्दीश्वरद्वीप पूजा シメーを き X 77 ३ स्नपनविधि ४८-६० X संस्कृत ४ क्षेत्रपार्लपूजा ₹0-**६**४ X 11 ५. क्षेत्रपालाष्ट्रक **६४-६**५ X ६. वन्देतान की जयमाला X ६५-६९ 77 ७. पार्वनाथ पूजा X 90 पार्श्वनाथ जयमाल X \$0**−**0€ 19 ६. पूजा घमाल X संस्कृत 198 १०. चिंतामिं की जयमाल हिन्दी **ब्रह्मरायम**ल्ल ওধ ११. कलिकुण्डस्तवन × र्शकृत ७६-७८ ्रांगा र र १२. विद्यमान बीस तीर्थं द्वार पूजा नरेन्द्रकीति संस्कृत **₹**? WT IT १३. पद्मावतीपूजा , 33 **5**ሂ १४. रत्नावली वतो की तिथियो के नाम हिन्दी 77 5X-50 १५. ढाल मंगल की , 55-56 १६, जिनसहस्रनाम माशाधर संस्कृत 56-803 १७. जिनयज्ञादिविधान X १०२-१२१ १८. व्रतो की तिथियो का व्यौरा × हिन्दी १२१-१३६

४४८४. गुटका सं० १०४। पत्र सं० ११७। म्रा॰ ६×६ इ च ।

हिन्दी १. षट्ऋतुवर्णन वारह मासा जनराज

२. कवित्त संग्रह X

विभिन्न कवियो के नायक नायिका सबन्धी कवित्त हैं।

श्रपूर्ण उपदेश पचीसी हिन्दी **E3-E3** X ८६-६७ ४ कवित्त मुखलाल

> ४४८६ गुटका स० १०६। पत्र स० २४। ग्रा० ६४६ इख्र। भाषा- सस्कृत। पूर्ण। जीर्ण। विशेष-उमास्वामि कृत तत्वार्थसूत्र है।

४४८७. गुटका स० १०७। पत्र सं० २०-६४। ग्रा० १×५ इख्र। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १७४८ वैशाख सुदी १४ । प्रपूर्ण । दशा-सामान्य ।

हिन्दी १. कृष्णस्वमिण्विलि हिन्दी गद्य टीका सहित २०-५४ पृथ्वीराज

लेखन काल स० १७४८ वैशाख सुदी १४ | र० काल स० १६३७ | ग्रपूर्ण |

रमता जगदीश्वरत्तगा रहसी रस मिथ्यावचन न ता सम है। सरसित रुकमिग्गी तिगा सहचरि कहि या मुपैतियज कहै।। १०।)

टीका-रहिंस एकान्तइ रुकमणी साथइ श्रीष्क्रणाजी तइ रमता क्रीडाता जे रस ते हिष्ट दीवा सरीख कह्यो । पर ते वचन माही कूडउ नेमतं मानउ साच मानिज्यौ । रुकमणी सरस्वतीनी सहचरी । सरस्वती तिए।इ ग्रुप्त-बात कही मुऋनइं श्रापराउ जाएी।। जाएी सर्ववात कही तेहना मुख थकी मुखी तिमही ज कही।। १०।।

> रूप लक्षण गुरा तराास र भोगि। जहिवा समरयोक कुरा। जािंग्या जि़का सातिसामैं जिपया गोविंद रािंग तथा गुरा ।। ११ ।।

टोका — क्कमिण नउ रूप लक्षण ग्रुण कहिवा भिण समर्थ कुण समर्थ तर छइ अपितु को निह परमइ। माहरि मतिइ श्रनुसार जिसा ज्याण्या तिस्या ग्रन्थ माहि गूँथ्या कह्या तिरा काररा हू ताहरउ बालुक छूँ मौ परि कृपा करिज्यौ ॥ ११ ॥

वसु शिव नयन रस शशि वत्थर विजयदसमि रिव रिष वरगोत । किसन रुकमग्री वेलि कल्पतर कीधी कमध ज कल्यागा उत ।। १२ ।।

टीका-अचल पर्वत सत्त्व रजु तम गुरा ३ अग ६ शशिचन्द्रमा १ सवत् १६३७ वर अचल गुरा रिव सिस संचि तात वीयउ जस ।। करि श्री भरतार श्रवशो दिन रात कंठ करि श्रीफल भगति ग्रपार विषइ श्री लक्ष्मी नउ भत्तरि रुकमणी कृष्णाने श्री रुकमणी जस करी भावना कीघी ए वेली ग्रहो भगती श्रवणे साभलिउ रात दिन गलइ करं श्री लक्ष्मी रूप फल पामइ।

वेद वीज जल वयरा सुकिव जउ मडीस घर ।

पत्र दूहा ग्रुरा पुहपवास भोगी लिखमी वर ।।

पसरी दीप प्रदीप ग्रिधिक गहरी या डवर ।

मनसुजेराति ग्रव फल पामिइ ग्रवर ।।

विसतार कोथ जुनि जुगी विमल घराी किसन कहराहार घन ।

ग्रमृत वेलि पीयल ग्रतइ रोपी कलियारा तनुज ।। ३१३ ।।

अर्थ — मूल वेद पाठ तीको बीज जल पाएं। तिको किवयण तिये वयरो किर जडमाडीस हढ पिंग्इ ।। दहा ते पत्र दूहा गुण ते फूल सुगन्य वास भोगी भमर श्रीकृष्णाजी वेलिङ माकहइ करो विस्तरी जगत्र नइ विपै दीप प्रदीप । व दीवा थी ग्रधिक ग्रत्यन्त विस्तरी जिके मन सुधी एह नउ की जाए।इ तीको इसा फल पामइ । ग्रवर किता स्वर्ग ना सुख पामे । विस्तार करी जगत्र नइ विपइ विमल कहीता निर्मल श्रीकिसनजी बेलि मा धर्णी नइ कहरण हार धन्य तिको पिए। ग्रमृत रूपणो वेलि पृथ्वी नइ लिखइ ग्रविचल पृथ्वी नई विवराज श्री कल्याए। तम वेटा पृथ्वीराजइ कहा। । इति पृथ्वीराज कृत कृपण रूकमणो वेलि संपूर्ण। मुिण जग विमल वाचणार्थ। सवत् १७४८ वर्ष वैशाख मासै कीप्ए। पक्षे तिथि १४ भ्रमुवासरे लिखतं उरिएयरा नग्रे ।। श्री ।। रस्तु ।। इति मगल ।।

२. कोकमजरी	×	हिन्दी		५४
३. बिरहमंजरी	नददाम	17		५५–६१
४ वावनी	हेमराज	"	४९ पद्य है	• •
५. नेमिराजमति वारहमासा	×	77		Ę
६. पृच्छावलि	×	77		₹ € –5७
७. नाटक समयसार	वनारसीदास	37		55-228

४४८८ गुटका सं० १०७ क । पत्र सं० २३५ । आ० ५४४ इख । विषय-पूजा एव स्तोत्र ।

१. देवपूजाप्टक	×	सस्कृत	१-४
२. सरस्वती स्तुति	जानभूपरा	79	% %–६
३. श्रुताष्ट्रक	×	99	₹ <u>~</u> ७
४. गुरुस्तवन	गातिदा स	55	, ·
५ ग्रुर्वाष्ट्रक	वादिराज	99	8

६४५	3			[गुटका-संप्रह
ξ.	सरस्वती जयमाल	व्रह्मजिनदास	हिन्दी		१०-१२
v.	गुरुजयमाला	99	??		१३-१५
5 ,	लघु-नपनविधि	×	संस्कृत		१६-२३
٤.	सिद्धचक्ररूजा	×	"		२४ –३०
१०.	कलिकुण्डपार्स्वनाथपूजा	यशोविजय	"		38-32
११.	पोडशकाररापूजा	×	"		35-25
१२.	दशलक्षरापूजा	×	"		३६-४२
१ ३	नन्दीश्वरपूजा	×	53		४३ – ४ ५
१४.	जिनसहस्रनाम	त्राशाधर	55		४६- ४६
१५.	ग्रहं-द्रक्तिविधान	×	"		५६–६२
१६.	सम्यक्दर्शनपूजा	×	"		६२–६४
१७	सरस्वतीस्तुति	ग्राशाधर	सस्कृत	1	६४–६ ६
५ ५,	, ज्ञानपूजा	×	99		६७–७१
१६	. महर्पिस्तवन	×	77		७१–७३
२०	. स्वस्त्ययनविधान	×	7>		30−₣₺
२१	. चारित्रपूजा	×	11		७ ६ —५१
२२	. रत्नत्रयजयमाल तथा विधि	×	प्राकृत संस्कृत		59-68
२३	वृहद्स्नपन विधि	×	सस्कृत		399-93
२४	 ऋषिमण्डल स्तवनपूजा 	×	23		११६–२६
२४	. ग्र ष्ट्राह्निकापूजा	×	"		१२६-५१
	. विरदावली	×	? ?		१५२–६०
२७	 दर्शनस्तुति 	×	"		१६१–६२
२ः	: ग्राराधना प्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीति	हिन्दी		१ ६३–६८

॥ ॐ नम: सिद्धे भ्य:॥

श्री जिरावरवारिंग रावेवि ग्रुरु निर्ग्रन्थ प्ररामेवी । कह ग्राराधना सुविचार सक्षेपे सारो भीर ॥ १ ॥ हो क्षपक वयस प्रवधारि, हिव चाल्यो तुम भवपारि। हो सुभट कह तुम भेउ, घरी समकित पालन एहु ।। २ ।। हवि जिनवरदेव ग्राराहि, तू सिध समरि मन माहि। सुिंग जीव दया घुरि धर्म्म, हिव छाडि अनुए कर्म ।। ३ ।। मिथ्यात कू सका टालो, गरागुरु वचनि पालो । हवि भान घरे मन घीर, ल्यो संजम दोहोलो वीर ॥ ४ ॥ उपप्राचित करि वृत सुधि, मन वचन काय निरोधि । तु क्रोध मान माया छाडि, ग्रापुरा सू सिलि माडि ।। ५ ।। हिव क्षमो क्षमावो सार, जिम पामो सुख भण्डार। तुं मन्न समरे नवकार, धीए तन करे भवनार ॥ ६ ॥ हिव सवे परिसह जिपि, ग्रभंतर ध्याने दीपि वैराग्य धरै मन माहि, मन माकड गाद साहि॥ ७॥ सुिण देह भोग सार, भवलधी वयण मां हार। हिव भोजन पािंग छािड, मन लेई भुगति मांडि ।। प ।। हिन छुए।क्षरा षुटि भायु, मनासि छाडो काय। इंद्रीय वस करि घीर, कुटंब मोह मेल्हे वीर ।। ६ ।। हिव मन गन गाठु बाघे, तू मरण समाधि साधि। जे साधो मरए। सुनेह, ज्ञेया स्वर्ग मुगतिय भएोय ।। १० ।।

X

`

X

श्रन्तिम भाग

हिव हइडि जािंग विचार, घणु किहइ किहि सु अपार ।
लिम्रा अग्रासगा दीख्या जाग, सन्यास छाडो प्रागा।। ५३।।
सन्यास तगा फल जोइ, स्वर्ग सुद्धि फिल सुखु होइ।
विल श्रावक कोल तू पामीइ, लही निर्वाण मुगती गामीइ।। ५४।।
जे भिंग सुगिन नरनारी, ते जाइ भविव पारि।
थी विमलेन्द्रकीति कह्यो विचार, श्राराधना प्रतिवोधसार।। ५५।।

X

Y

इति श्री ग्राराधना प्रतिवोध समाप्त

६६०]			[गुटका-समह	Ę
१. पचमेरुपूजा (वृहत्)	देवेन्द्रकीर्ति	सस्कृत	१७०–१८०	
३०, ग्रनन्तपूजा	त्रह्मजातिदास	हिन्दी	35-028	
३१. गगाधरवलयपूजा	गुभचन्द्र	सम्कृत	995-339	
३२ पञ्चकल्याएाकोद्यापन पूजा	भ. ज्ञानभूपरा	>>	म्रपूर्ण २११-३४	

४४८६. गुटका स० १०८ । पत्र म० १२० । ग्रा० ५×५ इख्र । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । दशा-जीर्ण ।

१ जिनसहस्रनामभाषा	वनारसीदास ्	हिन्दी		१–२१
२. लघुसहस्रनाम	×	संस्कृत		२२–२७
३ स्तवन	×	ग्रपभ्र श	श्रपूर्श	२८
४. पद	मनराम	हिन्दी		२६

ले॰ काल १७३५ ग्रासोज बुदी ह

चेतन इह घर नाही तेरो।

घटपटादि नैनन गोचर जो, नाटक पुद्गल केरौ ।। टेक ।।
तात मात कामिन सुत वयु, करम वध को चेरो ।
किरि है गौन ग्रानगित की जव, कोई नही ग्रावत नेरौ ।। १ ।।
भ्रमत भ्रमत ससार गहन वन, कीयौ ग्रानि वसेरौ ।
मिथ्या मोह उदै ते समभो, इह सदन है मेरौ ।। २ ।।
सदगुरु वचन जोइ घट दीपक, मिटै ग्रनादि ग्रवेरौ ।
ग्रसस्यात परदेस ग्यान मय, ज्यौ जानऊ निज डेरौ ।। ३ ।।
नाना विकलप त्यागि ग्रापको, ग्राप ग्राप महि हेरौ ।
जी मनराम ग्रचेतन परसी, सहजै होइ निवेरौ ।

५, पद-मो पिय चिदानद परवीन	मनराम	हिन्दी	30	1
६. चेतन समिक देखि घरमाहि	77	53	यपूर्ण ३१	
७. के परमेश्वरी की ग्ररचा विधि	77	33	३२	
 जयित ग्रादिनाय जिनदेव घ्यान गाऊ 	×	77	इंड	
६ सम्यक्त्व पर्णविवि सिरिपास हो	>>	57	₹ % —₹ %	,

१०, पंचमगति वेलि	हर्षकीति	हिन्दी	सं० १६८३ श्रावरा ग्रपूर्रा
११. पंच सघाना	×	57	17
१२. मेघकुमारगीत	पूनी	हिन्दी	४०-४४
१३. भक्तामरस्तोत्र	हेमराज	"	४६
१४. पद-ग्रव मोहे कछून उंपाय	रूपचंद	59	ሃ ७
१५. पंचपरमेष्टीस्तवन	×	সাকৃন	3888
१६. शातिपाठ	×	संस्कृत	५० –५२
१७. स्तवन	श्राशाधर	55	ँ ५ र
१८ वारह भावना	कविग्रालु	हिन्दी	
१९. पंचमंगल	रूपचद	"	
२०. जकडी	7#	39	
२१ "	53	53	
२२. "	77	7)	
२३. "	दरिगह	93	

सुनि सुनि जियरा रे तू त्रिभुवन का राउ रे ।

तूं तिज परपरवारे चेतिस सहज सुभाव रे ।।

चेतिस सहज सुभाव रे जियरा परस्यों मिलि क्या राच रहे ।

ग्रप्पा पर जाण्या पर ग्रप्पाएगा चउगइ दुख्य ग्राएगाइ सहे ।।

ग्रवसो ग्रुएग कीजै कर्म हं छीक्जै सुएगहु न एक उपाव रे ।

दसएग एगएग चररणमय रे जिउ तू त्रिभुवन का राउ रे ।। १ ।।

करमिन विस पिडया रे प्रएग्या मूढ विभाव रे ।

मिथ्या मद निडया रे मोह्या मोहि ग्रुएगाइ रे ।।

मोह्या मोह ग्रुएगाइ रे जिय रे मिथ्यामद नित माचि रह्या ।

पड पिडहार खडग मिदरावत ज्ञानावरएगि ग्रादि कह्या ।।

हिड चित्त कुलाल भडयारीएग ग्राह्य विभाव रे ।।

रे जीवड़े करमिन विस पिड्या प्रएग्या मूढ विभाव रे ।। २ ।।

तू मित सोविह न चीता रे वैरिन मैं काहा वास रैं।

भवभव दुखदाय करें तिनका करें विसास रें।।

तिनका करिह विसास रे जिवढे तू मूढा निह निमपु डरे।

जम्मरा मररा जरा दुखदायक तिनस्यों तू नित नेह करें।।

प्रापे ग्याता ग्रापे द्रिष्टा किह समभाऊं कास रे।

रे जीउ तू मित सोविह न चीता वैरिन में काहावास रे।।

ते जगमाहि जागे रे रहे अन्तरत्यवलाइ रे।

केवल विगत भयारे, प्रगटी जोति सुभाइ रे।।

प्रगटी जोति सुभाइ रे जीवढे मिथ्या रैरिए विहासी।

स्वपरभेद कारसा जिन्ह मिलिया ते जग हूवा वासी।।

सुगुरु सुधर्म पंच परमेष्ठी तिनकै लागौ पाय रे।

कहै दिरगह जिन त्रिभुवन सेवै रहे ग्रतर ल्यवलाइ रे।। ४।।

२४	कल्याग्।मंदिरस्तोत्रभापा	बनारसीदास	हिन्दी	ले० काल १७३५ ग्रासोज बुदी ६
२५	निर्वाग्यकाण्ड गाथा	x ,	प्राकृत	
२६	पूजा सग्रह	×	हिन्दी	

४४६०. गुटका सं० १०६। पत्र स० १५२। म्रा० ६×४ इख्र । ले॰ काल १८३६ सावरा सुदी ६। म्रपूर्ण । दशा—जीर्णशीर्ण ।

विशेष-लिपि विकृत एव श्रशुद्ध है।

१. शनिश्चरदेव की कथा	×	हि॰दी		११४
२. कल्यागमन्दिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	"		१५–२४
३ नेमिनाथ का वारहमासा	×	"	श्रपूर्श	२५–२६
४, जकडी	नेमिचन्द	77		२७
५. सवैया (सुख होत शरीरको दालिद	भागि जाइ) 🗙	99		२द
६. कवित्त (श्री जिनराज के घ्यान व	ो उछाह मोहे लागे	97		35
७. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	53		३० –३३

गुटका-संप्रह]			[६६३
म. स्तुति (म्रागम प्रभु को जब भयो)	×	हिन्दी	३४ –३६
६. वारहमासा	×	17	3 5 —0़ह
१०. पद व भजन	×	77	*0-80
११. पार्श्वनाथपूजा	हर्षकीति	17	¥5 - ¥£ .
१२. ग्राम नीवू का भगडा	×	, 29	ず ●− ズ &
१३. पद-काइ समुद विजयमुत सार	×	77	* 5-X0
१४. गुरुम्रो की स्तुति	भूधरदास	, ,,	ポニーポ を
१५. दर्शनपाठ	×	संस्कृत	६०–६३
१६. विनती (त्रिभुवन गुरु स्वामीजी)	भूधरदास	हिन्दी	६४–६६
१७. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	<i>49-45</i>
१८. पद-मेरा मन वस कीनो जिनराज	×	हिन्दी	७०
१६. मेरा मन बस कीनो महावीरा	हर्पकीत्ति	77	9 ए
२०. पद-(नैना सफल भयो प्रभु दरसण पाय)	रामदास	99	७२
२१. चलो जिनन्द वदस्या	×	53	50- 50
२२. पद-प्रभुजी तुम मैं चरण शरण गह्यो	×	55	<i>1</i> 9%
२३. ग्रामेर के राजाओं के नाम	×	55	હપ્ર
२४ " "	×	3)	७६
२५. विनती-वोल २ भूलो रे भाई	नेमिचन्द्र	"	3 4- 7&
२६. पद-चेतन मानि ले वात	×	39	30
२७. मेरा मन बस कीनो जिनराज	×	"	40
२८. विनती-बंदू श्री ग्ररहन्तदेव	हरिसिंह	77	्रद१-दर
२६. पद-सेवक हू महाराज तुम्हारो	दुलीचन्द	99	5 7 -58
३०. मन धरी वे होत उछावा	×	77	८ १-८६
३१. धरम का ढोल वजाये सूग्गी	×	77	59 _,
३२. ग्रव मोहि तारोजी जगद्गुरु	मनसाराम	99	-বন
३३. लागो दौर लागो दौर प्रभुजी का ध्यानमे म	ान । पूररादेव	7)	~~~
३४. म्रासरा जिनराज तेरा	×	99	ব্র

हेथ. जुलाएो ज्यो तारोजी X हिग्दी ६६ हिग्दी ६६ हुन्होर दर्श देखत ही जोषराज " ६० ०-११ हिग्दी तर्श देखत ही जोषराज " १६ ०-११ हे कीन मेरा गनसाराम " १८ ०-११ हे कीन मेरा गनसाराम " १८ ०-११ हे कीन मेरा चतुर्गीत हुल सहा X " ११ ०-११ हे ही मेमजुलार हमको क्यो ग उतारो पार X " ११ ०-११ थे की प्रमु तुम ही उतारोगे पार " " १८ थे की प्रमु तुम ही उतारोगे पार " " १८ थे की प्रमु तुम ही उतारोगे पार " " १८ थे की प्रमु तुम ही उतारोगे पार " " १८ थे की प्रमु तुम ही उतारोगे पार " " १८ थे की प्रमु तुम ही उतारोगे पार " " १८ थे की प्रमु तुम ही उतारोगे पार " " १८ थे कह श्रीविनराज फनककीित " १००-१०१ थे थे, त्रमुजी मोह्या छे तम मन माराण X " १०२ थे, त्रमुजी मोह्या छे तम मन माराण X " १०२ थे, त्रमुजी सुसाजनन्द " १०३ थे, त्रमुजी सुसाजनन्द " १०६ थे, त्रमुजी सुसाजन्द " १०६ थे, त्रमुजी सुमाजी " " १२१ थे, त्रमुजी सुमाजी " " १२६ थे, त्रमुजी सुमाजी " " १२६ थे, त्रमुजी सुमाजी सुमाजी " " १२६ थे, त्रमुजी सुमाजी सुमाजी " " १२६ थे, त्रमुजी सुमाजी " " १२६ थे, त्रमुजी सुमाजी " " १६ थे, त्रमुजी सुमाजी सुमाजी सुमाजी सुमाजी सुमाजी सुमाजी सुमाजी " " १६ थे, त्रमुजी सुमाजी स	६६४]			[गुटकाःसंप्र _{हे}
हें . तुन्हारे वर्श देखत ही जोघराज " हैं ० न्हरी हैं . जीव मेरा मनसाराम " हैं ० न्हरी हैं . जीव मेरा मनसाराम " हैं ० न्हरी हैं . स्थात र संसार चतुर्गित हुछ सहा	३५. जु जाएो ज्यो तारोजी	×	हिन्दी	58
३७. सुनि २ रे जीव मेरा मनसाराम " १०-११ देन. भरमत २ संसार चतुर्गित हुल सहा × " ११-६३ दे. भरमत २ संसार चतुर्गित हुल सहा × " ११-६३ दे. श्रीनेमकुवार हमको क्यो न उतारो पार × " १६५ ४०. झारती × " १६५-१७ ४१. पद—िवनती कराछा प्रभु मानो जो किशानगुलाव " १६६ ४३. यह भीजनराज फनककीित " १००-१०१ ४५. वह श्रीजनराज फनककीित " १००-१०१ ४५. ताजा बजय्या प्यारा २ × " १०२ ४६. सफल घडी हो प्रमुजी खुशालवन्द " १०३ ४७. पद देवसिंह " १०४-१०५ ४५. सफल घडी हो प्रमुजी खुशालवन्द " १०६ ५००-१७ ४६. सफल पडी हो प्रमुजी खुशालवन्द " १०६ ५००-१७ ५०. चीजीस तीर्यंकर स्तुति " मानतुङ्गाचार्य सस्कृत १०७-१७ ५०. चीजीस तीर्यंकर स्तुति " हिन्दी ११६-२१ ५१. मेककुमारवार्ता " १२१-४१ ५२. कर्मजुढ की विनती " १२१-४१ ५२. कर्मजुढ की विनती " १२६-४१ ५२. कर्मजुढ की विनती " १२६-४१ ५२. कर्मजुढ की विनती " १४६-४१ ५२. कर्मजुढ की विनती " १४६-४१ १४. कर्मजुढ की विनती " १२६-४१ १४. सक्ता कर्स् कुं वीतराग " १४६-४१ १८. मेककुवा स० ११०। पत्र स० १४३। झा० ६४४ इव। मावा-हिन्दी संस्कृत। १. नित्यपूजा × संस्कृत १-२६ ४१. मोकाशास्त्र जमास्ताम " १८-४६ १. मोकाशास १००००००००००००००००००००००००००००००००००००	३६. तुम्हारे दर्श देखत ही	जोघराज	"	
देव. भरमत २ संसार चतुर्गित दुख सहा ३६. श्रीनेमकुवार हमको क्यो न उतारो पार ४०. झारती ४०. झारती ४१. पव—िवनती कराछा प्रभु मानो जो किश्वानगुलाव ११. पव—विनती कराछा प्रभु मानो जो किश्वानगुलाव ११. यव—विनती कराछा प्रभु मानो जो किश्वानगुलाव ११. ये जो प्रभू तुम हो उतारोने पार १३. प्रभूजी मोह्या छै तन मन मारण १३. स्वर्ण विन्ति १३. प्रभूजी मोह्या छी तन मन मारण १३. भ्रम्प विन्ति १३. प्रभूजी मोह्या प्रभूजी १३. प्रभूज विन्ति १३. प्रमुज विन	३७. सुनि २ रे जीव मेरा	मनसाराम	31	
३६. श्रीनेमकुवार हमको क्यो न उतारो पार X " १६८ १ पुटका स्व ११० । पत्र सक्वत श्रीतरा	३८. भरमत २ संसार चतुर्गति दुख सहा	×	,,	-
४०. शारती × " ६६-६७ ४१. पद—विनती कराछा प्रभु मानो जो किश्तनगुलाव " १६ ४२. ये जी प्रभू तुम हो उतारोगे पार " १० ४३, प्रभूजी मोह्या छे तम मन मागा X " १००-१०१ ४४. वह श्रीजिनराज कनककीित " १००-१०१ ४४. ताजा बजय्या प्यारा २ X " १०२ ४६. सकत घडी हो प्रभुजी खुशालवन्द " १०३ ४७. पद वेबिह् " १०४-१०४ ४६. सरका घडी हो प्रभुजी खुशालवन्द " १०६ ४६. सरखा चलता नाही रे प्रभरवास " १०६ ४६. मतकामरसतीत मानतुङ्गाचार्य सस्कृत १०७-१० ४०. चीबीस तीर्यंकर स्तुित " ११	३६. श्रीनेम्कुवार हमको क्यो न उतारो पार	×	**	
भर. पद—विनती कराखा प्रमु मानो जो किशनगुलाव " हिंद भर. ये जी प्रमू तुम ही जतारोगे पार " " हिंद भर. वद्द श्रीजिनराज कनकनीति " १००-१०१ भर. वाजा बजय्या प्यारा २	४०, श्रारती	×	` 33	६ ६–६७
४३, प्रमुणी मोह्या छै तन सन सारण X " ६६ ४४. वद श्रीजिनराज कनककीर्ति " १००-१०१ ४५. वाजा बजय्या प्यारा २ X " १०२ ४६. सफल घडी हो प्रमुणी खुशालचन्द " १०४-१०५ ४७. पद वैविसिह " १०४-१०५ ४६. चरखा चलता नाही २ भूघरदास " १०६-१० ४०. चीवीस तीर्थंकर स्तुति " ११६-२१ ५०. चीवीस तीर्थंकर स्तुति " १२६-२१ ५१. येचकुमारवार्ता " १२१-२४ ५२. वानस्वर को कथा " १२१-२४ ५२. कर्मयुद्ध की विनती " " १२१-४१ ५२ पद—ग्रस्त कर्म छूं वीतराग " १४६-४५ १५ एक्ट पाठ " " १४६-५३ १५ एक्ट पाठ " " १४६-५३ १० एक्ट पाठ " १४६-४६ १८६० १८६० १० न्या " १८६० १८-१६ १० न्या " १८-१६ १८-१६ १० न्या " १८-१६ १८-१६ १० न्या " १८-१६ १८-१६	४१. पद—विनती कराछा प्रभु मानो जी	किशनगुल व	75	,
४३, प्रमुंजी मोह्या छै तन मन माए। X " १००-१०१ ४४. बदू श्रीजिनराज कनककीर्ति " १००-१०१ ४५. वाजा बजय्या प्यारा २ X " १०२ ४६. सफल घडी हो प्रमुंजी खुशालचन्द " १०४-१०५ ४७. पद वेवसिंह " १०४-१०५ ४६. चरखा चलता नाही २ मृष्यदास " १०६-१७ ४०. चीबीस तीर्थंकर स्तुति " हिन्दी ११६-२१ ५०. चीबीस तीर्थंकर स्तुति " १२१-२१ ५२. मिककुमारवार्ता " १२१-२४ ५२. वानक्चर को कथा " १२१-२४ ५२. कर्मगुद्ध की विनती " १४६-४७ ५४ स्फुट पाठ " १४६-४७ ५४ स्फुट पाठ " १४६-४७ १८ नित्यपूजा X संस्कृत १-२६ २. मोक्षशास्त्र उपास्तामि " १८-४६ ३. मोक्षशास्त्र मानवानंत " १०-१६	४२. ये जी प्रमू तुम ही उतारोगे पार	"	л	33
४४. वाजा वजय्या प्यारा २ X १०२ ४६. सफल घडी हो प्रमुजी खुबालवन्द ,, १०३ ४७. पद देवसिंह ,, १०४-१०५ ४८. चरखा चलता नाही रे भूघरदास ,, १०६ ४६. मक्तामरस्तोत्र मानतुङ्गाचार्य सस्कृत १०७-१७ ५०. चीवीस तीर्थंकर स्तुति ,, हिन्दी ११६-२१ ५१. मेचकुमारवार्ता ,, १२१-२१ ५२. वानिश्चर की कथा ,, १२१-४१ ५२. कर्मयुद्ध की विनती ,, १४२-४३ ५४ पद—धरज करू छूं वीतराग ,, १४६-४७ ५५ स्मुट पाठ ,, १४६-४७ ५५ स्मुट पाठ ,, १४६-४५ १५ स्मुट पाठ ,, १४६-४५ १८६१ गुटका स० ११०। पत्र स० १४३। ग्रा० ६×४ इ.च.। मापा-हिन्दी संस्कृत १-२६ २. मोक्षावास्त्र ,, ५०-१८ ३. मोक्षावास्त्र ,, ५०-१८ १८-४६ ,, ५०-१८ १०-१८ ,, ५०-१८	४३, प्रभूजी मोह्या छै तन मन माण	×	19	
४६. सफल घडी हो प्रभुजी खुबालचन्द ,, १०२ ४७. पद देवसिंह ,, १०४–१०४ ४६. चरखा चलता नाही रे मुघरदास ,, १०६ ४६. मक्तामरस्तोत्र मानतुङ्गाचार्य सस्कृत १०७–१७ ५०. चीवीस तीर्थंकर स्तुति , हिन्दी ११६–२१ ५१. मेककुमारवार्ता ,, १२१–२४ ५२. वानिश्चर की कथा ,, १२१–२४ ५२. वानिश्चर की कथा ,, १२५–४१ ५३. कर्मगुद्ध की विनती ,, १४२–४३ ५५ पद—ग्ररज करू छूं वीतराग ,, १४६–४७ ५५ स्फुट पाठ ,, १४६–५३ १५८६१ गुटका स०११०। पत्र स०१४३। ग्रा०६×४६ च । मापा–हिन्दी संस्कृत । १. नित्यपूजा , संस्कृत १–२६ २. मोक्षवास्त्र जमास्वामि ,, २६–४६ ३. मक्तामरस्तोत्र , ग्रा० मानतुंग ,, १५०–५६	४४. वदू श्रीजिनराज	कनकर्नाति	77	१० ०- १० १
प्रथ. पद वेनसिंह ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	४५. वाजा बजय्या प्यारा २	×	1*	१०२
४८. चरखा चलता नाही रे भूघरदास " १०६ ४८. भक्तामरस्तोत्र मानतुङ्गाचार्य सस्कृत १०७-१७ ५०. चीवीस तीर्थंकर स्तृति " हिन्दी ११६-२१ ५१. मेघकुमारवार्ता " " १२१-२४ ५२. वानिश्चर की कथा " " १२५-४१ ५३. कर्मयुद्ध की विनती " " १४२-४३ ५४ पद—श्चरण करू छूं वीतराग " १४६-४७ ५४ स्फुट पाठ " " १४६-४७ ५४ स्फुट पाठ " " १४६-४५ १८६१ गुटका स० ११० । पत्र स० १४३ । आ० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । १. नित्यपूजा * संस्कृत १-२६ २. मोक्षवास्त्र उमास्वामि " २६-४६ ३. भक्तामरस्तोत्र आ० मानतु ग " ५०-५६ ४. पंचमंगल " १४६-१६	४६. सफल घडी हो प्रभुजी	खुशालचन्द	"	१०३
४६. मक्तामरस्तोत्र मानतुङ्गाचार्य सस्कृत १०७-१७ ५०. चीवीस तीर्थंकर स्तुति	४७. पद	देवसिंह	27	१०४-१०५
प्र०. चीवीस तीयँकर स्तुति	४८. चरखा चलता नाही रे	भूघरदास	11	१०६
प्रश्. मेघकुमारवार्ता	४६. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत	१०७–१७
प्र. शनिश्चर की कथा " १२५-४१ प्र. कर्मयुद्ध की विनती " १४२-४३ प्रथ पद—श्ररण करू छूं वीतराग " १४६-४७ प्रथ स्फुट पाठ " " १४६-५७ प्रथ स्फुट पाठ " " १४६-५३ थ्रिष्ट श्रुटका स० ११०। पत्र स० १४३। ग्रा० ६×४ इ च । माषा-हिन्दी संस्कृत । १. नित्यपूजा × संस्कृत १-२६ २. मोक्षशास्त्र उमास्वामि " १६-४६ ३. भक्तामरस्तोत्र ग्रा० मानतुंग " ५०-५६	५०. चीवीस तीर्थंकर स्तुति	77	हिन्दी	११६–२१
प्रव. कर्मगुद्ध की विनती प्रव. कर्मगुद्ध की विनती प्रथ पद—ग्रारण करू छूं वीतराग प्रथ स्फुट पाठ प्रथ स्कुट पाठ प्रथ स्फुट पाठ सिंग स्फुट पाठ प्रथ स्फुट पाठ सिंग स्फुट पाठ सिंग स्फुट स्फुट स्फुट स्फुट स्फुट स्कुट स्फुट स्कुट स्फुट स्यू स्फुट स्	५१. मेघकुमारवार्ता	27	"	१२१–२४
प्रथ पद—ग्ररज करू छूं वीतराग " १४६-४७ प्रथ स्फुट पाठ " " १४६-५३ प्रथ हिर्म स० ११०। पत्र स० १४३। ग्रा० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । १. नित्यपूजा × संस्कृत १-२६ २. मोक्षशास्त्र उमास्वामि " २६-४६ ३. मक्तामरस्तोत्र ग्रा० मानतुंग " प्र०-५६ ४. पंवमंगल क्यान्तर	५२. शनिश्चर की कथा	77	"	१२५–४१
१५ स्फुट पाठ	_	25	"	१४२-४३
४४६१ गुटका स० ११० । पत्र स० १४३ । आ० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । १. नित्यपूजा × संस्कृत १-२६ २. मोक्षशास्त्र उमास्वामि ,, २६-४६ ३. मक्तामरस्तोत्र आ० मानतुंग ,, ५०-५६ ४. पंवमंगल	५४ पद—श्ररज करू छू वीतराग	"	>>	१४६-४७
 नित्यपूजा	_			
२. मोक्षशास्त्र उमास्वामि ,, २६-४६ ३. मक्तामरस्तोत्र ग्रा० मानतुंग ,, ५०-५८ ४. पंचमंगल क्यान्ट	४४६१ गुरका स० ११०। पः	सि० १४३। आ	॰ ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी संस्कृत	ı
२. भक्तामरस्तोत्र ग्रा० मानतुंग ४. पंचमंगल क्यानन्	•	×	संस्कृत	१–२६
ः ः ः ः ः ः ः ः ः ः ः ः ः ः ः ः ः १०—५८ ४. पंत्रमंगल स्वानन्य		उमास्वामि	39	J
४, पनमगल रूपचन्द ',, ५५-६८		े मानतु [*] ग	35	५०-५८
	४, पनमगल	रूपचन्द	· 93	५ ५–६६

५. कल्याग्मिन्दरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	हिन्दी	६८—७४
६. पूजासंग्रह	×	33	७५–१०२
७. विनतीसंग्रह	देवाब्रह्म	77	१०२–१४३

४४६२. गुटका सं ० १११ । पत्र सं ० २८ । ग्रा० ६३×४३ इंच । भाषा-सस्कृत । पूर्ण । दबा-सामान्य

१, भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	3-8
२. लक्ष्मीस्तीत्र	पद्मप्रभदेव	77	११
३. चरचा	×	प्राकृतहिन्दी	११–२६

विशेष--''पुस्तक भक्तामरजी की पं० लिखमीचन्द रैनवाल हाला की छै। मिती चैत सुदी ६ संवत् १९५४ का मे मिली मार्फत राज श्री राठोडजी की सूंपंचासू।'' यह पुस्तक के ऊरर उल्लेख है।

> ४४६३ गुटका स० ११२ । पत्र सं० १४ । म्रा॰ ६४६ इंच । भाषा-संस्कृत । म्रथूर्श । विशेष--पूजाम्रो का संग्रह है ।

४४६४. गुटका सं० ११३। पत्र सं० १६-२२। आ० ६३×५ इंच। अपूर्ण। दश-सामान्य। अथ डोकरी अर राजा भोज की वार्ता लिख्यते। पत्र सं० १८-२०।

डोकरी ने राजा भोज कही डोकरी हे राम राम | वीरा राम राम । डोकरी यो मारग कहा जाय छै | वीरा ई मारग परथी आई अर परथी गई ।। १ ।। डोकरी मेहे वटाउ हे वटाउ | ना वीरा थे वटाऊ नाही । वटाऊ तो संसार माही दोय और ही छै ।। एक तो चाद अर एक सूरज || २ ।। डोकरी मेहे राजा हे राजा ।। ना वीरा थे तो राजा नाही । राजा तो संसार मे दोय और ही । एक तो अन्न अर एक पाणी || ३ ।। डोकरी मेहे चोर हे चोर । ना वीरा थे चोर ना । चोर तो संसार मे दोय और ही । एक तो अन्न अर एक पाणी || ३ ।। डोकरी मेहे चोर हे चोर । ना वीरा थे चोर ना । चोर तो संसार मे दोय और ही छै । एक नेन चोर और एक मन चोर छै ।। ४ ।। डोकरी मेहे तो हलवा हे हलवा | ना वीरा थे तो हलवा नाही ।। हलवा तो संसार मे दोय और ही छै । कोई पराये घर वसत मागिवा जाइ उका घर मे छै पिए। नट जाय सो हलवो ।। ५ ।। डोकरी तू माहा के माता हे माता । ना वीरा माता तो दोय और ही छै । एक तो उदर माही सूं काढे सो माता । दूसरी घाय माता ।। ६ ।। डोकरी मेहे तें हारचा हे हरचा । ना वीरा थे क्या ने हारचो । हारघो तो ससार में तीन ओर ही छै । एक तो मारग चालतो हारचो । दूसरो वेटी जाई सो हारचो तोसरी जैकी भोडी अस्त्री होइ सो हारचो ।। ७ ।। डोकरी मेहे वापडा हे वापडा । ना वीरा थे वापडा नाही । वापडा तो ज्यारा और छै । एक तो गऊ को जावो वापडो । दूसरो छ्याली को जावो वापडो । तीसरो जै की माता जनमता ही मर गई सो वापडो । चौथा वामण वाण्या की वेटी विघवा हो जाय सो वापडी ।। डोकरी आप। मिला ही मर गई सो वापडो । चौथा वामण वाण्या की वेटी विघवा हो जाय सो वापडी ।। डोकरी आप। मिला ही

मिला। बीरा मिलवा वाला तो ससार मे च्यारि ग्रीर ही छै। जैको वाप विरधा होसी सो वा मिलसी। ग्रर जे को बेटो परदेश सू ग्रायो होसी सो वा मिलसी। दूसरो सावरण भादवा को मेह वरस सी सो समन्दर सूं। तीसरो भारोज को भात पैरावा जासी सो वो मिलसी। चौथा स्त्री पुरुष मिलसी। डोकरी जाण्या हे जाण्या। भरिया कहे न उजतेज भलसी ग्राधा। पुरुषा ग्राई पारपा बोलार लाधा।। १०॥

।। इति डोकरी राजा भीज की वार्ता सम्पूर्ण ।।

४४६४ गुटका स० ११४। पत्र म० ६-७२। ग्रा० ६३×१६ इख ।
विशेष—स्तोत्र एव पूजा सगह है।

४४६६ गुटका स० ११४। पत्र सं० १६६। ग्रा० ६×५ इच। भाषा-हिन्दी। ग्रपूर्ण। दशा-सामान्य
विशेष—पूजा सग्रह, जिनयज्ञकल्प (ग्राशाधर) एव स्वयंभूस्तोत्र का सग्रह है।

४४६७. गुटका सं० ११६। पत्र स० १६६। ग्रा० ६×५ इच। भाषा-संस्कृत। पूर्ण। दशा-जीर्ण।
विशेष—गुटके मे निम्न पाठ उल्लेखनीय हैं।

४. भुवनकोति गीत

वूचराज

हिन्दी

27-88

श्राजि बद्धाउ सुराहु सहेली यहु मनु विषसइ जि महलीए।
गोहि ग्रनन्त नित कोटिहि सारिहि सुहु ग्रुरु सुहु ग्रुरु वेदिह सुकरि रलीए।।
करि रली बन्दह सखी सुहु ग्रुरु लविध गोइम सम सरें।
जसु देखि दरसगु टलिह भवदुख होइ नित नविनिध घरे।।
कर्र र चन्दन ग्रगर केसिर ग्राणि भावन भाव ए।
श्रीभुवनकीर्ति चरण प्रणमोहू सखी ग्राज बद्धाव हो।। १।।
तेरह विधि चारित प्रतिपालइ दिनकर दिनकर जिम तिप सोहइ ए।
सर्वोच्चि भासिउ धर्म सुगावे वाणी हो वाणी भवु मन मोहइ ए।
सोहिन्त वाणी सदा भिव सुनु ग्रन्थ ग्रागम भासए।
पट् द्रव्य ग्रुरु पद्धास्तिकाया सप्ततत्व पयासए।।
वावीस परिग्रह सहइ ग्रगिहं गरुव मित नित ग्रुग्गिनिधो।
श्रीभुवनकीर्ति चरण पणिम सु चारितु तनु तेरह विधे।। २।।
मूल ग्रुणाह ग्रठाइसइ धारइए मोहए मोहु महाभटु ताडियो ए।,
रितपित तिराषु देति ह महिइउ पुगु कोवडुए कोवडुकरि तिहि रालीयो ए।।

१५-१८

रालियो जिमि क वैंड करिहि वनउ करि इम वोलइ। गुरु सियाल मेरह जिउम्र जगमु पवरा भइ किम डोलए । जो पंच विषय विरतु चित्तिहि कियउ खिउ कम्मह तस्य । श्री भूवनकीति चरण प्रणमइ घरइ अठाइस मूलगुरणा ॥ ३ ॥ दस लाक्षण धर्म निजु धारि कुं सजमु संजमु भसणु वनिए । सत्र मित्र जो सम किरि देखई गुरिनरगंथु महा मुनीए।। निरगथु गुरु मद ग्रद्ध परिहरि सवय जिय प्रतिपालए। मिय्यात तम निर्द्ध ए। दिन म जैराधर्म उजालए।। त्तेर्न्नवतहं श्रखल चित्रह कियउ सकयो जम। श्री भुवनकीर्ति चरण पर्णमउ घरइ दशलक्षिण धर्म्म ।। ४।। सुर तर सघ कलिउ वितामिए। दुहिए दुहि। महो धरि घरि ए पच सवद नाजिह उछरिन हिए।। गावहि ए कामिए। मधुर सरे ग्रति मधुर सरि गावति कामिए। जिएाह मन्दिर अवही अष्ट प्रकार हि करहि पूजा कुसमयाल चढावहि ।। वूचराज भिंग श्री रत्नकीर्ति पाटिउ दयोसह गुरो। श्री भुवनकीति श्रासीरवादिह संघु कलियो सुरतरो ।।

।। इति ग्राचार्य श्री भुवनकीर्ति गीत ।।

५. नाडी परीक्षा

६. श्रायुर्वेदिक नुसखे

७. पारवेनाथस्तवन

 ×
 सस्कृत

 ×
 हिन्दी

 समयराज
 "

सुन्दर सोहरा ग्रेग निलंड, जग जीवरा जिसा चन्दोजी ।

मन मोहन महिमा निलंड, सदा २ चिरनंदो जी ॥ १ ॥

जेसलमेरू जुहारिए पाम्यंड परमानन्दोजी ।

पास् जिसोसुर जग धसी फलियो सुरतह कन्दोजी ॥ २ ॥ जे० ॥

मिरा मासिक मोती जड्यंड कचरारूप रसालो जी ।

सिहवर सेहर सोहतंड पूर्विम सिंदल भालोजी ॥ ३ ॥ जे० ॥

निरमल तिलक सोहमगाउ जिन मुख कमल रिसालोजी। कानो क्ष्डल दीपता फिक मिग भाक कमालोजी ॥ ४॥ जै० ॥ कठि मनोहर कठिलउ उरि वारि नव सिर हारोजी। बहिर खबहि भला ं करता भव भव कारोजी ।। ५ ।। जे० ।। मरकत मिए तनु दीपती मोहन सूरित सारोजी। मुख सोहग सपद मिलइ जिग्गवर नाम श्रपारोजी ।। ६ ।। जे० ।। इन परि पास जिएोसरं भेटयउ कुल सिएागारोजी । जिराचन्द्र सूरि पसाउ लइ समयराज सुखकारोजी ।। ७ ।। जे० ।।

।। इति श्री पार्वनायस्तवन समाप्तोऽय ।।

४४६८. गुटका सं० ११७। पत्र सं० ३५०। ग्रा० ६३×५ इख्र । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ग्रपूर्ण । दशा सामान्य।

> विशेष- विविध पाठो का सग्रह है। चर्चाएं पूजाए एव प्रतिष्ठादि विषयो से सबिधत पाठहैं। ४४६६. गुटका सं० ११८। पत्र सं० १२६। ग्रा० ६×४ इच।

१. शिक्षा चतुष्क	नवलराम	हिन्दी	ų
२. श्री जिनवर पद वन्दि के जी	वखतराम	77	<i>9–</i> 2
३. ग्ररहंत चरनचित लाऊ	रामकिशन	79	0\$-3
४ चेतन हो तेरे परम निधान	जिनदास	77	११-१ २
५. चैत्यवदना	सकलचन्द्र	सस्कृत	१२- १३
६. करुणाप्टक	पद्मनदि	7)	२१
७ पदम्राजि दिवसि धनि लेखे लेखना	रामचन्द्र	हिन्दी	३७
८, पद–प्रातभयो सुमरि देव	जगराम	95	५३
१. पद—सुफलघडीजी प्रमु	खुशालचन्द्र	99	७५
१०. निर्वाराभूमि मगल	विश्वभूषग्	99	द ६–६ ०
		संवत् १७२६ मे भुसावर मे प०	केसरीसिंह ने लिखा ।
११. पश्चमगतिवेलि	हर्षकीति	हिन्दी	११५-१=

रचना स० १६८३ प्रति लिपि सं० १८३०

४४००. गुटका सं० ११६। पत्र सं० २५१। म्रा० ६३४६ इख्र । ले० काल स० १८३० असाढ बुदी दा मपूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—पुराने घाट जयपुर मे ऋषभ देव चैत्यालय मे रतना पुजारी ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। इसमे कवि वालक कृत सीता चरित्र हैं जिसमे २५२ पद्य हैं। इस ग्रुटके का प्रथम तथा मध्य के ग्रन्य कई पत्र नहीं हैं।

४४०१. गुटका सं० १२० । पत्र सं० १३३ । ग्रा० ६×४ इख्र । भाषा-हिन्दो सस्कृत । विषय सग्रह । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. रविव्रतकथा

जयकीर्ति

हिन्दी २-३ ले० काल सं० १७६३ पौष सु० =

प्रार्म्भ--

सक्ल जिनेश्वर मने घरी सरसित चिस घ्याऊं।
सद्गुरु चरण कमल निम रिवव्रत गुणा गाऊ ।। १।।
व.णारसी पुरी सोभती मितसागर तह साह।
सात पुत्र सुहामणा दीठे टाले दाह।। २।।
मुनिवादि सेठे लीयो रिवनोव्रत सार।
साभालि कहूं बहासा कीया व्रत नद्यो ग्रपार।। ३।।
नेह थी धन कण सहूगयो दुरजीयो थयो सेठ।
सात पुत्र चाल्या परदेश श्रजीच्या पुरसेठ।। ४।।

छन्तिम—

जे नरनारी भाव सहित रिवनो व्रत कर सी।

त्रिभुवन ना फल ने लही शिव रमनी वरसी।। २०॥

नदी तट गच्छ विद्यागणी सूरी रायरत्न सुभूषन।

जयकीर्ति कही पाय नमी काष्ठासघ गित दूषगा।। २१॥

इति रिवव्रत कथा संपूर्ण। इन्दोर मध्ये लिपि कृतं।

ले० काल सं० १७६३ पौष सुदी ५ पं० दयाराम ने लिपी की थी।

२ धर्मसार चौपई

पं॰ शिरोमिशा

हिन्दी

₹-७३

६७०]			[गुटका-संप्रह		
३. विषापहार स्तोत्रभाषा	ग्रचलकीर्ति	हिन्दी	4 %-44		
४. दससूत्र ग्रष्टक	×	संस्कृत	-6-6°		
	दयाराम ने सूरत मे	प्रतिलिपि की थी। सं०	७६४। पूजा है।		
५ त्रिपष्टिशलाकाछन्द	श्रीपाल	सस्कृत	£3 - \$ 3		
६. पदथेई थेई थेई नृत्यित ग्रमरी	कुमुदचन्द्र	हिन्दी	૭૩		
७ पदप्रात समै सुमरो जिनदेव	श्रीपाल	33	છ3		
द. पाश्चेविनती	ब्रह्मनायू	55	33-23		
६ कवित्त	ब्रह्मगुलाल	33	१२५		
गिरनार की यात्रा के समय सूरत मे लिपि किया गया।					
४४०२. गुटका सं० १२१ । पत्र सं० ३३ । म्रा० ६३×४६ इख्र । भाषा-हिन्दी ।					
विशेष-विभिन्न कवियो के पदो	। का सग्रह है।				
४४०३. गुटका सं० १२२	। पत्र सं० १३० । ग्राट	५३×४३ इद्ध । भाषा-हि	्न्दी संस्कृत ।		
विशेष-तीन चोवीसी नाम, द	र्शनस्तोत्र (संस्कृत)	कल्याग्गमंदिरस्तोत्र भाषा ((बनारसीदास) भक्तामर		
स्तोत्र (मानतुंगाचार्य) लक्ष्मीस्तोत्र (सस्कृत) निर्वाणकाण्ड, पचमगल, देवपूजा, सिद्धपूजा, सोलहकारण पूजा,					
पच्चोसो (नवल), पार्स्वनायस्तोत्र, सूरत की वारहखडी, बाईस परीपह, जैनशतक (भूघरदास) सामायिक टीका					
(हिन्दी) ग्रादि पाठो का सग्रह है ।					
४४०४ गुटना सं० १२३	। पत्र स० २६ । आ०	६×६ इञ्च भाषा–संस्कृत हि	हन्दी । दशा–जीर्राशर्ष I		

१. भक्तामरस्तोत्र ऋदि मत्र सहित X सस्कृत २–१ म २. पर्ल्याविध × १5-22 ३ जैनपचीसी नवलराम हिन्दी २२-२६

४४०४. गुटका सं० १२४। पत्र सं० ६६। ग्रा० ७४६ इख्र।

विशेष-पूजाभ्रो एव स्तोत्रो का सम्रह है।

४४०६. गुटका सं० १२४ । पत्र स० ४६ । म्रा० १२×४ इख । पूर्ण । सामान्य गुद्ध । दशा-सामान्य ।

१. कर्म प्रकृति चर्चा × हिन्दी

२. चौवीसठाएग चर्चा X "

 ३. चतुर्दशमार्गणा चर्चा
 ×
 हिन्दी

 ४. द्वीप समुद्रो के नाम
 ×
 "

 ५. देशो (भारत) के नाम
 ×
 हिन्दी

१. भ्रंगदेश । २ वंगदेश । ३ कलिंगदेश । ४ तिलगदेश । ५. राट्टदेश । ६. लाट्टदेश । ७. कर्णाटदेश । ८. मेदपाटदेश । ६. वैराटदेश । १०. गौरुदेश । ११ चीरुदेश । १२. द्राविरुदेश । १३. महाराष्ट्र-देश । १४. सौराष्ट्रदेश । १५ कासमीरदेश । १६. कीरदेश । १७. महाकीरदेश । १८. मगधदेश । १९. सूरसेनुदेश । २०. कावेरदेश । २१. कम्बोजदेश । २२ कमलदेश । २३. उत्करदेश । २४ करहाटदेश । २४. कुरुदेश । २६. क्लाग्रदेश । २७. कच्छदेश । २८ कौसिकदेश । २९. सकदेश । ३०. भयानकदेश । ३१ कौसिकदेश । ३२. "% • •••। ३३. कारुतदेश । ३४. कापूतदेश । ३५. कछदेश । ३६. महाकछदेश । ३७. भोटदेश । ३८. महाभोटदेश । ३६. कीटिकदेश । ४०. केकिदेश । ४१. कोल्लगिरिदेश । ४२ कामरू ग्देश । ४३ कुण्कु गादेश । ४४. कु तलदेश । ४५. कलकूटदेश । ४६. करकटदेश । ४७. केरलदेश । ४८. खशदेश । ४६. खर्परदेश । ५०. खेटदेश । ५१ विल्लर-देश । ५२. वेदिदेश । ५३. जालंघरदेश । ५४. टक्स टक्क । ५५. मोडियास्त्रदेश । ५६. नहालदेश । ५७. तुङ्गदेश । ५८. लायकदेश । ५९. कौसलदेश । ६० दशार्गादेश । ६१. दण्डकदेश । ६२ देशसभदेश । ६३. नेपालदेश । ६४. नर्तक-देश । ६५. पञ्चालदेश । ६६ पल्लकदेश । ६७. पूंडदेश । ६८. पाण्ड्यदेश । ६९ प्रत्यग्रदेश । ७० अंबुददेश । ७१. वसु-देश । ७२. गंभीरदेश । ७३ महिष्मकदेश । ७४. महोदयदेश । ७५ मुरण्डदेश । ७६. मुरलदेश । ७७. मरुस्थलदेश । ७८. मुद्गरदेश । ७१. मंगनदेश । ८०. मल्लवर्तदेश । ८१. पवनदेश । ८२. श्रारामदेश । ८३. राढकदेश । ८४. ब्रह्मोत्तरदेश । ८१. ब्रह्मावर्तदेश । ८६. ब्रह्मास्वेश । ८७ वाहकदेश । विदेहदेश । ८६. वनवासदेश । ६०. वनायुक-देश । ६१. वाल्हाकदेश । ६२. वल्लवदेश । ६३ ग्रवन्तिदेश । ६४. वन्हिदेश । ६५. सिंहलदेश । ६६ सुद्घादेश । ६७. सूपरदेश । ६८. सुहडदेश । ६६. ग्रस्मकदेश । १००. हूग्यदेश । १०१. हुर्म्मकदेश । १०२. हुर्म्मजदेश । १०३ हंसदेश । १०४. हृहकदेश । १०५ हेरकदेश । १०६. वीगादेश । १०७. महावीगादेश । १०८. भट्टीयदेश । १०६. गोप्यदेश । ११० गाडाकदेश । १११. गुजरातदेश । ११२ पारसकुलदेश । ११३. शवालक्षदेश । ११४. कोलवदेश । ११५ शाक भरिदेश । ११६ कन उजदेश । ११७ ग्रादनदेश । ११८. उचीविसदेश । ११६. नीला-वरदेश । १२०. गंगापारदेश । १२१ सजाग्रदेश । १२२. कनकगिरिदेश । १२३. नवसारिदेश । १२४. भाभिरिदेश ।

६. क्रियावादियों के ३६३ भेद

-7

X

हिन्दी

```
् गुटका-संप्रह
६७२
                                                              हिन्दी सस्कृत
                                           X
७. स्फूट कवित्त एव पद्य सग्रह
                                                               संस्कृत
                                            X
 द. द्वादशानुप्रेक्षा
                                                               " ले॰ काल १८३६ श्रावरा शुक्ला १०
                                           X
 ६ सूक्तावलि
                                                              हिन्दी
 १० स्फुट पद्य एव मत्र ग्रादि
                                           X
           ४४०७. गुटका स० १२६। पत्र सं० ४५। ग्रा० १०: ×४३ दख । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-चर्चा
           विशेष-चर्चाग्रो का सग्रह है।
           ४४०८ गुटका स० १२७। पत्र स॰ ३३। ग्रा० ७×५ इखा
           विशेप--पूजा पाठ सग्रह है।
           ४४०६ गुटका स० १२७ क। पत्र स० ४४। ग्रा० ७३ ४६ इखा
                                                                                        १-१६
                                     X
                                                               संस्कृत
   १. शीघ्रबोध
                                                                                       35-08
                                     X
   २. लघुवाचणी
                                                   विशेष-वैद्यावधर्म। ले० काल सं० १८०७
                                   श्रीपति
                                                               संस्कृत
                                                                                      ४०-५१
   ३ ज्योतिव्यटलमाला
                                     ×
                                                                                       ሂ የ-- ሂሂ
                                                               हिन्दी
   ४ सारगी
                                                           ग्रहो को देलकर वर्पा होने का योग
           ४४१० गुटका सं० १२८ । पत्र स० ३-६० । ग्रा० ७३×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत ।
           विशेष-सामान्य पाठो का सग्रह है।
           ४४११ गुटका सब १२६ | पत्र सब ६-२४ | ग्राब ७×१ इ च | भाषा-संस्कृत |
           विशेप-क्षेत्रपालस्तोत्र, लक्ष्मीस्तोत्र (स०) एव पञ्चमञ्जलपाठ है।
            ४४१२. गुंटका स० १३०। पत्र सं० ६८। ग्रा॰ ६×४ इ च । ले॰ काल १७५२ ग्राषाढ बुदी १०।
   १. चतुर्दशतीर्थद्धरपूजा
                                                                                        १-५४
                                        ×
                                                              संस्कृत
   २. चीबीसदण्डक
                                    दीलतराम
                                                              हिन्दी
                                                                                      ५५–६७
   ३ पोठप्रक्षालम
                                        X
                                                                                           ĘS
                                                               सस्कृत
            ४४१३ गुटका सं० १३१। पत्र स० १४। ग्रा० ७×५ इख । भाषा-सस्कृत हिन्दी।
            विशेप-सामान्य पाठो का सग्रह।
```

४४१४ गुटका स० १३२ । पत्र स० १४-४१ । म्रा० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी ।

गुटका-संप्रह

१. पञ्चासिका २. स्तुंति र्वे. दोहाशंतक

त्रि देवनवन्य

हिन्दी कें काल १ दे २ ६ १५ – २ २

रूपचन्द

४. स्फुंटवोहे

X

४४१४. गुंटका सं० १३३। पत्र सं० १२१। श्री० ५३×४ इंच । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विशेष-छहढोला (द्यानतराय), पचमङ्गर्ल (रूपचन्धं), पूजाये एवं तत्त्रार्थ ग्रेंत्र, भक्तामरस्तोत्र मार्दि वां संग्रह है।

४४१६. शुटका सं० १३४ । पत्र स० ४१ । ग्रा० ५३×४ इ'न । भाषा-संस्कृत । विशेष-शातिनाथस्तोत्र, स्कन्वपुराएं, भगवद्गीता के कुछ स्थल । ले० काल स० १व६१ माव सुदी ११। ४४१७. गुटका सं० १३४ । पत्र सं० १३-१३४ । मार्ज ३३×४ ई में । भाषों-संस्कृत हिन्दी । म्रपूर्ण विशेष-पंचमञ्जल, तत्वार्थसूत्र, श्लीविं सामान्य पीठीं का सग्रह हैं। ४४१८ गुटका स० १६६। पत्र सं० ४-१०ई। ग्राठ कड़े×र इंख । भौपा-संस्कृत / विशेष-भक्तामरस्तोत्र, तस्वार्थसूत्र, ग्रष्टक द्यादि हैं।

४४१६. गुटका सं० १३७। पत्र सं० १६। श्री० ६×४३। भाषा-हिन्दी। श्रेपूर्शा

रे. मीरिपच्छघारी (कृष्ण) के कविस

धर्मदास, क्योत, विचित्र दैवे

३ कवित्त हैं 🖡

२ वाजिदजी के ग्रडिल

वाजिद के कविसी के हैं अग हैं। जिमेमें ६० पदा हैं। इसमे से विरह के अभ के द छूँ के मीचे प्रस्तुत किये जाते हैं।

वाजीद विपति वेहव नहीं कहा तुभ सी। सर कर्मान की प्रीत करीं पीव मुंक सी । पहले अपनी और तीर की तान ही, परि हैं। पीछे ड्रारंत दूरि जर्गते सर्वे जार्नई ॥२। विन बीलम वैहाल रह्यी क्यो जीव रे। जरद हरद सी भई विना तोहि पीकंदे। रुधिर मास के सास है क चाम है। परि हाँ जीवें जीव लागी पीर्व और की देखना ॥२५। कहिये सुनिये राम और न चित रै। ईरि अंकुर को भैयान स धेरिये नित रे। जीव विलम्ब्या पीव दुहाई राम की। परि हा सुख सपित वाजिर्व कहो क्यो काम की र रेंदा

४४२०. गुटका सं० १३६ । पत्र सं० ६ । म्रा० ७४४३ इ वं । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । पूर्ण एव शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेप--मुक्तावली व्रतक्या भाषा।

प्ररेश. गुरका सं० १४०। पत्र सं० ६। म्रा० ६६×४६ इत्र । मारा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल सं० १६३५ म्रापाढ सुदी १५ । पूर्ण एवं शुद्ध दशा-सामान्य ।

विशेष-सोनागिरि पूजा है ।

४४२२. गुटका सं० १४१। पत्र सं० ३७। मा० ३×३ इञ्च। भाषा सस्कृत। विषय-स्तोत्र।

विशेष-विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र है।

रूप्र गुटका स० १४२ | पत्र सं० २०। ग्रा० ५×४ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १६१८ ग्रासाढ बुदी १४ ।

विशेष-गुटके में निम्न २ पाठ उल्लेखनीय है।

1444 Sound that I no occurrent

१. छहढाला द्यानतराय हिन्दी १-६

२. छहढाला किशन ,, १०-१२

४४२४. गुटका सं० १४३। पत्र सं० १७४। ग्रा० ५३×४ इ च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल १८६७। पूर्ण।

विशेष-सामान्य पाठी का सग्रह है।

४४२४. गुटका सं० १४४। पत्र स० ६१। ग्रा० न×६ इ'च। भाषा-सस्कृत हिन्दी। पूर्ण।

विशेष--सामान्य पाठी वन सग्रह है।

४४२६. गुटका सं० १४४। पत्र स० ११। ग्रा० ६×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पक्षीशास्त्र। नै० काल १८७४ ज्येष्ठ सुदी १४।

प्रारम्भ के पद्य--

नमस्कृत्यमहादेव गुरु शास्त्रविशारदं।

भविष्यदर्थवोधाय व्सते पचपिक्षरा ।।१।।

भनेन शास्त्रसारेण लोके काल्त्रयं मित ।

फ्लाफल नियुज्यन्ते स्वंकार्येषु निश्चितं ॥२॥

४५२७. गुटका स० १४६। पत्र सं० २५। ग्रा० ७४५ इ च। भाषा-हिन्दी। ग्रपूर्ण। दशा-सामान्य विशेष—श्रादिनाथ पूजा (सेवकराम) भजन एव नेमिनाथ की भावना (सेवकराम) का सग्रह है। पट्टी पहाडे भी लिखे गये हैं। ग्रधिकाश पत्र खाली है।

४४२८. गुटका सं० १४७। पत्र स० ३-४७। ग्रा० ६४६ इ च । भाषा-ंतंस्कृत । विषय-ज्योतिष । दशा-जीर्श शैर्ण ।

विशेष-शोघ्रवोध है।

४४२६. गुटका सं० १४८। पत्र सं० ४४। ग्रा० ७४४ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय स्तीत्र संग्रह हैं
४४३०. गुटका सं० १४६। पत्र स० ८६। ग्रा० ६४६३ इंच। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १८४६
कार्तिक सुदी ६। पूर्ण। दशा-जीर्ण।

१ विहारीसतसई

विहारीलाल

हिन्दी

१-३५

२ वृन्द सतसई

वृन्दक्वि

••

३६-८०

७०८ पद्य हैं। ले० काल स० १८४६ चैत सुदी १०।

३. कावेल

देशीदास

हिन्दी

३६-८०

४४३१. गुटका सं० १४०। पत्र स० १३५। श्रा॰ ६३×४ इंच। भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८४। दशा-जीर्श शीर्श ।

विशेष—िलंपि विकृत है। कक्का बत्तीसी, राग चीतए का दूहा, फूल भीतएी का दूहा, म्रार्थि पाठ है। सिमकाश पत्र खाली हैं।

४४३२. गुटका सं० (४१ ' पत्र स० १८ । म्रा० ६×४ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—पदो तथा विनितयो का संग्रह है तथा जैन पचीसी (नवलराम) वारह भावना (दौलतराम) निर्वाणकाण्ड है।

४४३२. गुटका ६०१४ । पत्र सं०१०७। ग्रा०१२×५ इ च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । दशा-जीर्श शीर्ण।

विशेष—विभिन्न ग्रन्थों में से छोटे २ पाठों का संग्रह है। पत्र १०७ पर मट्टारक पट्टाविल उल्लेखनीय है। ४४२४. गुटका सं० १४३। पत्र सं० ६०। ग्रा० ५×५३ इ च। भ।पा-हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह भपूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—मक्तामर स्तोत्र, तस्वार्थ सूत्र, पूजाए एवं पञ्चमगल पाठ है।

४४३४ गुटका सः १४४। पत्र सं० नह। मा० ६×४ इ'च। ले० काल १८७६।

१. भागवत

×

संस्कृत

१-5

२ सत्र म.दि संग्रह

X

"

8-65

```
गुटका-संप्रेट
५७६
३. चतुरलोकी गीता
                                            ×
                                                                 "
                                                               हिन्दी
४. भागवत महिमा
                                                                                         34-48
                                                                तीर्थी के नाम एवं देवाधिदेव स्तीत्र हैं।
                                            ×
                                                               संस्कृत
५. महाभारत विष्णु सहस्रनाम
                                                                                        42-58
           ४४३६. गुटका सं० १४४ i पत्र सं० ६८ । ६×६ ई च । भाषा-संस्कृत । पूर्या ।
                                                               संस्कृत
१. योगेन्द्र पूजा
                                                                                          १-३
                                            X
२. पार्श्वनाथ जयमाल
                                                                                          ४-१३
                                            X
                                                                  23
३. सिद्धपूजा
                                            X
                                                                  77
४. पार्श्वनाथापृक
                                            X
                                                                                          ३-६
                                                                 12
                                      श्राचार्य केशंव
५. पोडशकाररापूजा
                                                                                          १-३४
                                                                  53
६. सोलहंकारण जयमाल
                                            ×
                                                                ग्रपभ्र श
                                                                                         ₹4-40
७ दशलक्षण जंयमाल
                                            ×
                                                                                         ५१-६३
द. द्वादशत्रतपूजा जयमाल
                                            X
                                                                संस्कृत
                                                                                         €¥–=•
६. गुमोकार पैंतीसी
                                            X
                                                                                        5१—51
                                                                  "
            ४४३७. गुटका सं० १४६। पत्र सं० १७। ग्रा० ५×३ इ च । ले॰ कात्र १७७६ ज्येष्ठ सुदी २।
 भाषा-हिन्दी । पत्र सं० ७६ ।
            विशेप--यादव वंशाविल वर्शन है।
            ४४३८. गुटका सं० १४७। पत्र सं० ३२ । मा० ६×५ इंच । ले० काल १८३२ ।
```

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, श्रक्षर वावनी, (द्यानतराय) एवं पंचमगल के पाठ हैं। पं॰ सवाईराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में सं॰ १८३२ में प्रति लिपि की।

र्थर्थे. गुटका सं० १४७ (क) पत्र सं० १४१ । ग्रा० ६×४ इख्र । भाषा-ित्दी । विभिन्न किवयो के पद्यों का सग्रह है ।

४४४०. गुटका स० १४६। पत्र स० ६६ । म्रा० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८१०। दशा-जीर्ण ।

विशेप-सामान्य चर्चाम्रो पर पाठ हैं।

४४४१. गुटका सं० १४६ । पत्र स० ३५० । आ० ७×४ । ले० काल-×। दशा-जीर्ग । विभिन्न कियो के पदो का संग्रह है ।

४४४२. गुटका सं० १६०। पत्र सं० ६४। आ० ७×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत हिन्दी। पूर्ण। विशेष-सामान्य पाठों का संग्रह है।

४४४३ गुटका स० १६१। पत्र स० २६। ग्रा० ५×५ इञ्च। भाषा हिन्दी संस्कृत। ले० काल १७३७ पूर्गा। सामान्य पाठ है।

४४४४. गुटका सं० १६२। पत्र स० ११। ग्रा० ६×७ इञ्च। भाषा-संस्कृत। प्रपूर्ण। पूजाओं का सग्रह है।

> ४४४४ गुटका सं० १६३। पत्र सं० २१। म्रा० ५×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विशेष-भक्तामर स्तोत्र एवं दर्शन पाठ म्रादि हैं।

४४४६. गुटका सं० १६४ । पत्र सं० १०० । आ० ४×३ इख्र । भाषा-हिन्दो । ले० काल १६३४ पूर्ण। विशेष-पद्मपुराण मे से गीता महात्म्य लिया हुवा है । प्रारम्भ के ७ पत्रो मे सस्वृत मे भगवत गीता माला दी हुई है ।

४४४७. गुटका सं० १६४ । पत्र सं० ३० । आ०६ है × ५ है इख्र । विषय-आयुर्वेद । अपूर्ण । दशा जीर्ण । विशेष-आयुर्वेद के नुनले हैं ।

४४४४ गुटका सं० १६६ । पत्र स० ६८ । ग्रा० ४×२३ इख । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. ग्रायुर्वेदिक नुसखे

X

हिन्दी

?-४०

२. कर्मप्रकृतिविधान

वनारसीदास

44

४१–६८

४४४६. गुटका सं० १६७। पत्र सं० १४५-२४७ । म्रा० २×२ इख । म्रपूर्ण । ४४४०. गुटका सं० १६८। पत्र स० ४०। म्रा० ६×६ इख । पूर्ण ।

४४४१. गुटका सं० १६६ । पत्र सं० २२ । ग्रा० ६×६ इख्र । भाषा-हिन्दी । ले० काल १७८० श्रावरा सुदी २ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. धर्मरासी

X

हिन्दी

१-१5

श्रथ धर्म रासो लिख्यते --

पहली वदों जिए।वर राइ, तिहि वंद्या दुख दालिद्र जाइ। रोग कनेस न संचरे, पाप करम सव जाइ पुलाई।। निश्चै मुक्ति पद सचरे, ताको जिन धर्म्म होई सहाई।। १।। घर्म दुहेली जैनको, छह दरसन जे द्वी परवान ।
श्रावग जन सुगिजे दे कान, भन्यजीव चित संभलो ।।
पढा बित्त सुख होई निधान, घर्म दुहेलो जैन को ।। २ ।।
दूजा बदीं सारद माई, भूलो श्राखर श्राणो हाइ ।।
कुमित कलेस न उर्जे, महा सुमित बदी श्रधिकाइ ॥
जिग्राधम्मे रासो वर्णंड, तिहि पढत मन होइ उछाह ॥
धर्म दुहेलो जैन को ॥ ४ ॥

ग्रन्तिम---

कभी जीमरा जीवै सही, ग्रागम वात जिरोनुर कही।
कर पात्रा ग्राहार लै, ये ग्रहाईस मूलगुरा जारिए।।
धन जती जे पालही, ते मनुक्रम पहुचे निरवारिए।
धर्म दुहेली जैन को ।।१५२।।

मूढ देव ग्रुरुशास्त्र बखािंगा, नङ्ग पट् ग्रनायतन जािंगा।
भाठ दोप शङ्का ग्रादि दे, ग्राठ नद सौ तजे पच्चीस ।।

ते निश्चै सम्यक्त फले, ऐसी निधि भासै जगदीश ।

धर्म्म दुहेली जैन को ।।१५२॥

इति श्री धर्मिरासी समापता ॥१॥ स० १७६० भावण सुदी २ सागानायर मध्ये ।

४४४२. गुटका सं० १८० । पत्र स० ६ । ग्रा० ६×६ इ च । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा ।
विशेष---सिद्धपूजा है ।

४४४३. गुटका सं० १७१ । गत्र स० ६ । ग्रा० ६×७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

विशेष—सम्मेदशिखर पूजा है।

४४४४ गुटका रू० १७२ । पत्र स० १४-६० । आ० ३×३ इ च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १७६८ । सावणा सुदी १० ।

विशेष — पूजा, पद एव विनितयो का सग्रह है।

४४.४४ गुटका स० १७३। पत्र स० १८५। ग्रा० ६×४ इ च । ग्रपूर्ण । वशा-जीर्ण । विशेष —ग्रायुर्वेद के नुसले, मन्त्र, तन्त्रादि सामग्री है । कोई उल्लेखनीय रचना नही है ।

४५४६, गुटका सं० १७४। पत्र सं० ४-६३। ग्रा० ६×४१ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-श्रङ्कार रस। ले० काल स० १७४७ जेठ बुदी १।

् विशेप--इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया का संग्रह है।

४४४० गुटका सं०१८४। पत्र सं०२४। ग्रा०६×४ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। विशेष-पूजा संग्रह है।

्र ४४४८. गुटका सं०१७६। पत्र सं०६। ग्रा० ५×३ इंच। भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । ले० काल सं०१८०२। पूर्ण।

विशेष-पद्मावतीस्तीत्र (ज्वालामालिनी) है।

४४४६ गुटका सं० १७७। पत्र सं० २१। ग्रा० ५'×३३ इ च। भाषा-हिन्दी। ग्रनूर्ण।

विशेष-पद एवं विनती सग्रह है।

४४६०. गुटका सं० १७८ । पत्र सं० १७ । मा० ६×४ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—प्रारम्भ में बादशाह जहांगीर के तस्त पर वैठने का समय लिखा है। स० १६८४ मैंगसिर सुदी १२ | तारातम्बोल की जो यात्रा की गई थी वह उसीके ग्रादेश के ग्रनुसार धरतीकी खबर मगाने के लिए की गई थी।

४४६१. गुटका सं० १७६ । पत्र स० १४ । ग्रा० ६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । मुर्खें ।

विशेष--हिन्दी पद संग्रह है !

४४६२ गुटका स० १८०। पत्र स० २१। ग्रा० ६४४ इ च । भाषा-हिन्दी । विशेष---निर्दोषसप्तमीकया (ब्रह्मरायमञ्ज), श्रादित्यवरकथा के पाठ का मुख्यत. सग्रह है। ४४६३. गुटका सं० १८१। पत्र स० २१-४६।

१ चन्द्रवरदाई की वार्ता

×

हिन्दी

२३--२६

पद्य सं० ११६। ले० काल स० १७१६

२ सुग्रुरुसीख

X

हिन्दी

75-30

३ कनकावत्तीसी

ब्रह्मगुलाल

,, र० काल सं० १७६५ ३०-३४

४ ग्रन्यपाठ

X

19

38-88

विशेष-- श्रधिकाश पत्र खाली है।

४४६४. गुटका सं० १८२। पत्र स० १६। म्रा० ६४६ इ च । भाषा-मस्कृत । विषय-पूजा । म्रपूर्ण । विशेष---नित्य नियम पूजा है। ४४६४. गुटका सं २ १८३ । पत्र स० २० । प्रा० १०४६ ई च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । प्रपूर्ण । दशा-जी. र्ण शीर्ण ।

विशेष—प्रथम ५ पद्यो पर पृच्छायें हैं। तथा पत्र १०-२० तक्त शकुनशास्त्र है। हिन्दी गद्य मे है। ४४६६. गुटका सं० १८४। पत्र स० २४। ग्रा॰ ६३×६ इंच। भाषा-हिन्दी। ग्रपूर्ण।
विशेष—वृन्द विनोद सतसई के प्रथम पद्य से २५० पद्य तक है।

४४६७. गुटका सं० १८४ । पत्र सं० ७-८८ । ग्रा० १०×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल ६० १८२३ वैशाख सुदी ६ ।

विशेष-वीकानेर में प्रतिलिपि की गई थी।

१. समयसारनाटक	वनारसीदास	हिन्दी	<i>७–७६</i>
२. ग्रनायीसाध चौढालिया	विमल विनयगरिए	77	७३ पद्य हैं ७६-७५
३. ग्रध्ययन गीत	×	हिन्दी	७५–५३
	दस ग्रव्याय मे ग्रलग	थ्रलग गीत हैं। श्रन्त	मे चूलिका गीत है।
४. स्फुट पद	×	हिन्दी	58-55

४४६८. गुटका सं० १८६। पत्र सं० ५२। आ० ६×५ इंच भाषा-हिन्दी। विषय पद सग्रह। विशेष--१४२ पदो का संग्रह है मुख्यत द्यातनराय के पद हैं।

४४६६. गुटका सं० १८७। पत्र सं० ७७। पूर्ण।

विशेष--गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

×	हिन्दी	१-२
×	19	?-¥
×	33	५–१६
×	77	१७- १=
×	37	१६-२०
×	77	२१
×	"	२२-४५
	× × × ×	× " × " × " × " × " × " × "

४४७०. गुटका सं० १८८ । पत्र सं० ११-७३ । ग्रा० ६×४६ इंच । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विदोष--गुटके मे भक्तामरस्तोत्र क्लाण्यमन्दिरस्तोत्र हैं । १ पार्वनाथस्तवन एव ग्रन्थ स्तवन

यतिसागर के शिष्य जगरून हिन्दो

र० स० १८००

ग्रागे पत्र जुडे हुए हैं एवं विकृत लिपि मे लिखें हुये हैं।

४४७१ गुटका सं० १८६। पत्र स० ६-७८। म्रा० ५३×४ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-इतिहास ।

विशेष-अकबर वादशाह एवं वीरवल म्रादि की वार्ताए हैं। बीच बीच के एवं म्रादि मन्त भाग नहीं हैं।

४४७२. गुटका सं १६०। पत्र सं १७। ग्रा० ४×३ इख्र । भाषा-हिन्दी।

विशेष--रूपचन्द कृत पञ्चमंगल पाठ है।

४४७३. गुटका सं० १६१। पत्र सं० २८। म्रा० ५३×६ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष--सुन्दरदास कृत सर्वेये एवं अन्य पद्य है। अपूर्ण है।

४४७४. गुटका सं० १६२। पत्र सं० ४५। ग्रा० ५३×६ इ च । भाषा-प्राकृत सस्कृत । ले० काल

१, कवित्त

X

हिन्दी

8-8

۵

२. भयहरस्तोत्र

X

प्राकृत

メーキ

हिन्दी गद्य टीका सहित है।

३, शातिकरस्तोत्र

विद्यासिद्धि

>>

3-0

४. निमऊण्स्तोत्र

×

57

E- ? ?

५. ग्रजितशातिस्तवन

नन्दिषेएा

7>

१३–२२

६. भक्तामरस्तोत्र

मानतुं गाचार्य

संस्कृत

₹3-₹•

७. कल्याग्मंदिरस्तोत्र

×

संस्कृत ३१-३६ हिन्दीगद्य टीकासहित है।

न शातिपाठ

X

प्राकृत ४०-४५

"

४४७४. गुटका सं० १६३ । पत्र सं० १७-३२ । आ० ५३×५३ इख । भाषा-संस्कृत । ले० काल १५६७ ।

विशेष-तत्वार्थसूत्र एवं भक्तामरस्तोत्र है।

४४७६. गुटका सं ० १६४। पत्र सं० १३। ग्रा० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कामशास्त्र। ग्रपूर्ण। दशा-नामान्य। कोकसार है।

४४७७. गुटका सं० १६४ । पत्र सं० ७ । आ० ६×६ इंच । आषा-संस्कृत । • विशेष-भट्टारक महीचन्द्रकृत त्रिलोकस्तोत्र है । ४६ पद्य हैं ।

```
्राटका-संप्रह
```

४४७न. गुटका सं० १६६। पत्र सं० २२ आ० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विशेष - नाटकसमयसार है।

४४७६. गुटका स० १६७ । पत्र सं० ३० । श्रा॰ =×६ इ च । म'पा-हिन्दी । ले॰ कान १=६४ श्रावण बुदो १४। बुधजन के पदो का सग्रह है।

181 1 ४४८०. गुटका सं०१६८। पत्र सं०३६। ग्रा० ५३४४ दे द च। घर्मा । पूना पाठ सग्रह है। ४४=१ गुटका सं० १६६॥ पत्र सं० २-४६। ब्रा० प्रथ इंच । भाषा-मंस्कृत हिन्दी ब्रपूर्ण। -दंशा-जीर्गा।

विशेप-पूजा पाठ सग्रह है।

४४८२. गुटका सं० २०६। पत्र स० ३४। ग्रा० ६३४८ इ च । पूर्ण । दशा—सामान्य ' 321

थ्. जिनदत्त चौर्रोडे

रल्हकवि

प्रा नेन हिन्दी

5)

भ रचना संवत् १३५४ भादवा सुदी ५ । ले० काल सवत् १७५२ । पालव निवासी महानन्द ने प्रतिलिपि की यी। प्राचीन हिन्दी भर्गा २. ग्रादीश्वर रेखता सहस्रकोति

र्ण काल सं० १६ ६७ । रचना स्थान-सालवीट । ले० काल-म० १७४३ मगसिर टुदी ७ । महानद ने मतिलिपि की थी। १२ वद्य से ४५ वे तक ६१ तक के पद्य हैं।

३ पचवधानी	×	राजस्थानी शेरगढ की	33
४ कवित्त	चृ दावनदास	हिन्दी	
४ पद-रेमन रेमन जिनविन कर्डुन	तिवार लक्ष्मीसागर	11	रागमल्हार
-६ तूही तू ही मेरे साहिब	"	95	रायकाफी
५७. तूंती तूही २ तूती बोल	11	**	×
८८ केंबित्त [ि]	ब्रह्म गुलाल एव वृ दावन	r ,,	पत्र १६

ले० काल स० १७५० फागए। ब्रुदो १४। फकोरचन्द जैस । ल ने प्रतिलिपि को थी। कैलास का वार्स जोत्त दीलान हा 🧎 🧲

не जेष्ठ पूरिएमा कथा ्र पूर्ण हि दी X ५१०. कवित्त ब्रह्म गुलाल 33 22. ×

१२. समुय विजय सुत सावरे रंग भीने हो

×

ले॰ काल १७७२ मोतीहटका देहुरा दिल्ली मे प्रतिलिपि की थी।

१३. पञ्चकल्याग्यकपूजा अष्टक

×

सस्कृत ले॰ काल सं॰ १७५२ ज्येष्ठकृ॰ १०।

१४. षट्रस कथा

X

संस्कृत

ले० काल स० १७५२।

४४८३. गुटका स० २०१। पत्र स० ३६। म्रा० ६×६ इ'च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । पूर्ण ।

विशेष—मादित्यवारकथा (भाऊ) खुशालचंद कृत शनिश्चरदेव कथा एव लालचन्द कृत राजुल पश्चीसी के पाठ ग्रीर हैं।

४४८४. गुटका संट २०२। पत्र स० २८ । ग्रा० ६४५६ इच। भाषा-सस्कृत । ले० काल सं० १७४०।

विशेष पूजा पाठ सग्रह के प्रतिरिक्त शिवचन्द मुनि कृत हिण्डोलना, ब्रह्मचन्द कृत दशारास पाठ भी है।

४४=४. गुटका सं० २०३। पत्र सं० २०-३६, १८५ से २०३। म्रा० ६×५६ इंच। भाषा संस्कृत

हिन्दी । ग्रपूर्ण । दशा-सामान्य । मुख्यतः निम्न पाठ है ।

१ जिनसहस्रनाम	म्राशाघर	सस्कृत	२०-२६
२. ऋषिमण्डलस्तवन	×	"	३० - ३६
३. जलयात्राविधि	व्रह्मजिनदास	11	१ ६२–१६६ _.
४ गुरुग्रो की जयम।ल	;	हिन्दी	१ ६ ६–१६७
५. रामोकार छन्द	वह्मलाल सागर	"	१ ह७-२२०

४४-६. गुटका सः २०४। पत्र स० १४०। ग्रा० ६×४ इंच। भाषा-स्स्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १७६१ चैत्र सुदी ६। ग्रनूर्ण। जीर्ण।

विशेष — उज्जैन मे प्रतिलिपि हुई थी। मुख्यतः समयसार नाटक (बनारसीदास) पार्श्वनाथस्तवन (ब्रह्मनाथू) का संग्रह है।

४४८७ गुरकां सं० २०४। नित्य नियम पूजा संग्रह । पत्र सं० ६७। म्रा॰ ५ ४५ । पूर्ण एव शुद्ध । दशा-सामान्य ।

पत्र स०२ नहीं है।

१ सुदर श्रृगार

महाकविराय

हिन्दी

पद्य स० ६३१

महाराजा पृथ्वीसिंहजी के शासनकाल मे ग्रामेर निवासी मालीराम काला ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

नन्ददास

२, श्यामवत्तीसी

वीकानेर निवासी महात्मा फकीरा ने प्रतिलिपि की । मालीराम कालाने सं० १८३२ में प्रतिलिपि कराई थी। श्रान्तिम भाग---

7)

दोहा-कृप्ण ध्यान चरासु ग्रंठ ग्रवनिह सुत प्रवान । कहत स्याम कलमल कछू रहत न रच समान ॥ ३६ ॥

छन्द् मत्तगयन्द्---

स्यो सन रादिक नारदस्मेद ब्रह्म सेस महेस जुपार न पायो। सो सुख व्यास विरंचि बखानत निगम कुं सोचि श्रगम बतायो।। सैक भाक नहिं भाग जसोमति नन्दलला बृज श्रानि कहायो। सो कवि या कवि कहाव्य करी जु कल्यान जुस्याम भले गुनगायो।।३७॥

इति श्री नन्ददास कृत स्याम वत्तीसी संपूर्ण ।। लिखतं महात्मा फकीरा वासी बीकानेर का । लिखावतु मालीराम काला संवत् १८३२ मिती भादवा सुदी १४ ।

४४८६. गुटका सं० २०७। पत्र सं० २००। मा० ७४५ इ'च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ते॰ काल स॰ १६८६।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ, पद एव भजनो का सग्रह है।

४४६०. गुरका सं० २०५। पत्र सं० १७। म्रा० ६३ ६६ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेप—चाएनय नीतिसार तथा नाषूराम कृत जातकसार है।

४४६१. गुरका सं० २०६ । पत्र सं० १६-२४ । मा० १×४ इ'च । भाषा-हिन्दी ।

विशेप-सूरदास, पर्मानन्द ग्रादि कवियो के पदों का संग्रह है। विषय-कृष्ण भक्ति है।

४४६२. गुटका सं० २१०। पत्र सं∙ २५। म्रा० ६३×५३ इ'च। भाषा-हिन्दी।

विशेप-चतुर्दश गुराप्यान चर्चा है।

४४६३. गुटका सं० २११ । पत्र सं० ४६-६७ । प्रा० ६×६ इ'च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८१० ।

विशेष-- ब्रह्मरायमल कृत श्रीपालरास का संग्रह है।

४४६४. गुटका सं० २१२ । पत्र सं० ६-१३० । प्रा० ६×६ इंच ।

विशेष—स्तोत्र, पूजा एवं पद सग्रह है।

४४६४. गुटका सं० २१३। पत्र सं० ११७। ग्रा० ६×५ इंच। भाषा-हिन्दी। ले॰ काल १८४७। विशेष —वीच के २० पत्र नहीं है। सम्बोधपचासिका (द्यानतराय) वृजलाल की वारह भावना, वैराग्य पञ्चीसी (भगवतीदास) ग्रालोचनापाठ, पद्मावतीस्तोत्र (समयसुन्दर) राजुल पञ्चीसी (विनोदीलाल) ग्रादित्य-वार कथा (भाऊ) भक्तामरस्तोत्र ग्रादि पाठों का सग्रह है।

४४६६ गुटका सं० २१४। पत्र सं० ८४। आ० ६×६ इ च। विशेप—सुन्दर श्रंगार का संग्रह है।

४४६७. गुटका सं० २१४ । पत्र सं० १३२ । आ० ६×६ इ च । भाषा-हिन्दी ।

१ कलियुग की विनती	देवाब्रह्म	हिन्दी		4 -0
२ सीताजी की विनती	×	3 7		<i>9−</i> 5
3. हस की ढाल तथा विनती ढा	ৰে 🗙	"		६ –१२
४. जिनवरजी की विनती	देवापाण्डे	"		१२
५. होली कथा	छीतरठोलिया	>>	र० स० १६६०	3-85
६. विनतिया, ज्ञानपचीसी, वारह भावना				
राजुल पच्चीसी म्रादि	×	53		१€− ४०
७. पाच परवी कथा	ब्रह्मवेगु (भ जयकीति के शिष्य)	"	७६ पद्य हैं	88-80
 चतुर्विशति विनती 	चन्द्रकवि	77		४५–६७
ह. वधावा एवं विनती	×	"		६७–६९
१०. नव मंगल	विनोदोलाल	"		48–6 6
११. कक्का वतीसी	× ·	77		७७– ५ १
१२ वडा कक्का	गुलावराय	33		50-52
१३ विनतिया	×	59		- 5 १ –१३२

४४६८ गुटका स० २१६। पत्र स० १६४। ग्रा० ११×६ इंच। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विशेष--ग्रटके के उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार है।

१. जिनवरत्रत जयमाला व्रह्मलाल हिन्दी १-२
 भट्टारक पट्टावली दी गई है |

 २. ग्राराधाना प्रतिवोधसार सकलकीति हिन्दी १३-१५

```
६५६ ]
                                                               हिन्दी
                                       सकलकीति
                                                                                         8%
 ३. मुक्तावलि गीत
                                         गुगाकीति
                                                                                        २०
 ४ चौवीस गएाधर्स्तवन
                                                                 33
                                                                                         २१
                                      भ० गुभचन्द्र
 ५. श्रष्टाह्मिकागीत
                                                                  33
                                                                                         २२
                                       व्रह्मजिनदास
 ६. मिच्छा दुवकड
                                                                  "
                                                                                        ३७-३८
                                          मिशिभद्र
                                                                संस्कृत
 ७. क्षेत्रपालपूजा
                                                                                       १०६-११६
 ८. जिनसम्रहनाम
                                          श्राशावर
                                                                  22
 ६ भद्रारक विजयकीति ग्रप्टक
                                                                                       १५०
                                            X
           ४४६६ गटका सं० २१७। पत्र सं० १७१। श्रा० परे×६३ इ च। भाषा-संस्कृत।
           विशेप-- पूजा पाठो का संग्रह है।
           ४६०० गटका स० २१८ । पत्र सं० १६६ । ग्रा० ६×५३ इ व । भाषा-सस्कृत ।
           विशेप-१४ पूजाग्रो का संग्रह है।
           ४६०१ गुटका सं० २१६ । पत्र सं० १५४ । ग्रा० ६×५ इंच । भाषा-हिन्दी ।
           विशेप—खड्गसेन कृत त्रिलोकदर्ग एकया है। ले० काल १७५३ ज्येष्ठ बुदो ७ बुधनार।
           ४६०२. गुटका सं० २२०। पत्र सं० ८०। श्रा० ७३×५ इ च । भाषा-ग्रामंश संस्कृत ।
१. त्रिशतजिएाचऊबीसी
                                         महणसिंह
                                                               ग्रपभ्र श
                                                                                          9-60
२. नाममाला
                                                               संस्कृत
                                                                                        90-50
                                           धनञ्जय
            विशेष--- गुटके के अधिकाश पत्र जीर्श तथा फटे हुए हैं एव गुटका अपूर्ण है।
            ४६०३. गुटका सं० २२१ । पत्र स० ५१-१६० । ग्रा० ५३×६ इ च । भाषा-हिन्दी ।
            विशेप-जोधराज गोदीका की सम्यक्त की मुदी ( अपूर्ण ), प्रीत्यकरचरित्र, एवं नयचक्र की हिन्दी
नाद्य टीका श्रपूर्ण है।
            ४६० . गुटका सं० २२२ । पत्र स० ११६ । ग्रा० ५×६ इ च । भाषा-सस्कृत ।
            विशेष-सामान्य पाठो का सप्रह है।
            ४६०४ गुटका सं० २२३ । पत्र सं० ५२ । ग्रा० ७×४ इ च । भाषा-हिन्दी ।
            विशेप—यन्त्र, प्रच्छाएं एव उनके उत्तर दिये हुए हैं।
            ४६०६. गुटका स० २२४। पत्र स० १४०। आ॰ ७×५३ इ च। भाषा-सस्कृत प्राष्ट्रत । दशा-
```

विशेष —ग्रुरावली (यपूर्ण), भक्तिपाठ, स्वयभूस्तोत्र, तत्वार्थसूत्र एव सामायिक पाठ ग्रादि है।

जोर्श शोर्श एव अपूर्ण।

गुटका-संप्रह

४६०८. गुटका स० २०४। पत्र सं० ११-१७७। ग्रा० १०×४६ इंच। मापा-हिन्दी।

१. विहारी सतसई सटीक—टीकाकार हरिचरणदास। टीकाकाल सं० १८३४। पत्र सं० १९ से १३१। ले० काल स० १८५२ माघ कृष्णा ७ रविवार ६

विशेष-पुस्तक मे ७१४ पद्य हैं एवं ५ पद्य टीकाकार के परिचय के हैं।

थन्तिम भाग- पुरुषोत्तमदास के दोहे हैं-

जधिप है सोभा सहज मुक्त न तऊ सुदेश । पोये ठौर कुठौर के लरमे होत विशेष 11७१।1

इस पर ७१५ सख्या है। वे सातसौ से ग्रधिक जो दोहे है वे दिये गये हैं। टीका सभी की दी हुई है। केवल ७१४ की जो कि पुरुषोत्तमदास का है, टीका नहीं है। ७१४ दोहों के ग्राये निम्न प्रशस्ति दी है।

दोहा---

सालग्रामी सरजु जह मिली गंगसो प्राथ। श्रन्तराल मे देस सो हरि कवि को सरसाय ।।१।। लिखे दूहा भूषन वहुत अनवर के अनुसार। कहु ग्रीर कहु ग्रीर हू निकलेंगे लड्कार ॥२॥ सेवी जुगल कसोर के प्राननाथ जी नाव। सप्तसती तिनसो पढी विस सिगार वट ठाव ॥३॥ जमुना तट म्हज़ार वट तुलसी विपिन सुदेस । सेवत सत महत जिह देखत हरत कलेस ।।४।। पुरौहित श्रीनन्द के मुनि सडिल्य महान। हम हैं ताके गीत मे मोहन मो जजमान ॥॥॥ मोहन महा उदार तिज श्रीर जाचिये काहि। सम्पत्ति सुदामा को दई इन्द्र लही नही जाहि ।।६।। गहि ग्रक सुमनु तात तै विधि को वस लखाय। राधा नाम कहें सुनैं ग्रानन कान वढाय ।।७।। सवत् ग्रठारहसौ विते ता परि तीसरु चारि । जन्माठै पूरो नियो कृष्ण चरन मन धारि ॥५॥

इति हरचरणदास कृता विहारी रचित सप्तशती टीका हरिप्रकाशाया सम्पूर्णा । सवत् १५५२ माघ कृष्ण्छ ७ रविवासरे शुनमरतु ।

२ क्रांववल्लभ-प्रम्थकार हिस्चरणदास । पत्र मं० १३१-१७७ । भाषा-हिन्दी पद्य , विशेष- ३६७ तक पद्य है । म्रागे के पत्र नहीं हैं ।

प्रारम्भ---

मोहन चरन पयोग मे, है तुलसी को वास ।

ताहि सुमरि हरि भक्त सब, करत विघ्न को नास ।।१।)

कवित्त-

ग्रानन्द को कन्द वृपभान जाको मुख्यन्द, लीला ही ते मोहन के मानस को चीर है। दूजी तैसो रचिवे को चाहत विरचि निति, सिंस को बनावे श्रजो मन कीन मोरे है। फेरत है सान ग्रासमान पे चढाय फेरि,

पानि पै चढाय वे की वारिधि मे बोरै हैं।

राधिका के ग्रानन के जोट न विलोके विधि,

द्रक द्रक तोरे पुनि द्रक द्रक जोरे है।।

ग्रय दोप लक्षण दोहा--

रस म्रानन्द सरप कौ दूपै ते हैं दोप ।

श्रात्मा कीं ज्यो श्रवता श्रीर विघरता रोप ॥३॥

श्रन्तिम भाग-

दोहा---

साका सतरह सी पुजी संवत् पैतीस जान।

म्रठारह सो जेठ बुदि ने सिस रिव दिन प्रात ।।२६४।।

इति श्री हरिचरणजी विरचित कविवल्लभो ग्रन्य सम्पूर्ण। स० १८५२ माघ कृष्णा १४ रिववासरे। ४६०६. गुटका सं० २२६। पत्र स० १००। ग्रा० ६३×६ इ च। भाषा-हिन्दी। ले० काल १८२४ जैठ बुदा १५। पूर्ण। ',

१ सप्तभगीवाणी

भगवतीदास

हिन्दी

\$

२ समयसारनाटक

वनारसीदास

3-800

४६१०. गुटका सं० २२७। पत्र त० २६। ग्रा० ६×५३। भाषा-हिन्दी। विषय-ग्रायुर्वेद। ले० काल स० १८४७ ग्रपाढ बुदी ६। विशेष—रसंसागर नाम का आयुर्वेदिक ग्रंथ है। हिन्दी पद्य में है। पोथी लिखी पंडित हूं गरसी की सो देखि लिखी-हि॰ असाढ बुदी ६ वार सोमवार सं॰ १८४७ लिखी सवाईराम गोधा।

प्रदेश गुटका सं० २२८ । पत्र सं० ४६ से ६२। श्रा० १४७ इ० । भाषा-प्राकृत हिन्दी । ले॰ काल १६५४) द्रव्य संग्रह की भाषा टीका है ।

४६१२. गुटका सं ॰ २२६ । पत्र सं ॰ १८ । ग्रा० ६×७ ६० । भाषा हिन्दी ।

१. पचपाल पैतीसी	×	हिन्दी	१-६	
२. ग्रंकपनाचार्यपूजा	×	>>	५-१ -७	
३ त्रिप्तुकुमारपूजा	×	73	१ ३~ १,5	

४६१३. गुटका सं० २३०। पत्र सं० ४२। ग्रा० ७×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विशेष--िनत्य नियम पूजा संग्रह है।

४६१४. गुटका सं० २३१ । पत्र सं० २५-४७ । ग्रा० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रायुर्वेद । विषय-ग्रायुर्वेद । विषय-ग्रायुर्वेद ।

४६१४. गुटका सं० २३२ । पत्र सं० १४-१५७ । ग्रा० ७×५ इ०। भाषा-हिन्दी । ग्रपूर्ण ।

विशेष—भैया भगवतीदास कृत मनित्य पच्चीसी, बारह भावना, शत मृष्टोत्तरी, जैनशतक, (भूषरदास) दान बावनी (द्यानतराय) चेतनकर्मचरित्र (भगवतीदास) कर्म्मछत्तीसी, ज्ञानपच्चीसी, भक्तामरस्तोत्र, क्ल्यास्य मिंदर भाषा, दानवर्सीन, परिषह वर्सीन का संग्रह है।

४६१६. गुटका सं० २३३ । पत्र संख्या ४२ । ग्रा० १०×४३ भाषा-हिन्दी संस्कृत । विशेष-सामान्य पाठो का संग्रह है ।

४६१७. गुटका सं० २३४। पत्र सं० २०३। म्रा० १०×७३ इ०। मापा-हिन्दी संस्कृत। पूजा पाठ, वनारसी विलास, चौबीस ठागा चर्चा एवं समयसार नाटक है।

४६१८. गुटका सं० २३४। पत्र सं० १६८। ग्रा० १०×६३ इ०। भाषा-हिन्दी।

१. तत्वार्थसूत्र (हिन्दी टीका सहित)

हिन्दी संस्कृत

3-60

६३ पत्र तक दीमक ने खा रखा है।

२ चौवीसठाएगाचर्चा

X

हिन्दी

239-13

४६१६. गुटका सं० २३६ । पत्र सं० १४० । ग्रा० १४७ इ० । भाषा हिन्दी । विशेष-पूजा, स्तोत्र ग्रादि सामान्य पाठी का संग्रह है। प्रहर०. गुरुका सं० २३८ । पत्र सं० २४० । ग्रा० ६४६३ इ० । भाषा-हिन्दी ।। ते० कान सं० १७४८ ग्रासोज बुदी १३ ।

१. कुण्डलिया धगरदास एवं ग्रन्य कविगरा हिन्दी लिपिकार विजवराम १--३३
२. पद ग्रुयन्ददास n ३३-३४
भै० कान १७७५ श्राप्रण गुदी ५
३. त्रिलोकदर्परणकथा राट्गमेन हिन्दी ३४-२४०

४६२१. गुटका सं० २३६ । पत्र मं० १६८ । मा० १३१×६ इछ । मापा-हिन्दी ।

४६२२. गुटका सं० २४०। पत्र स० ४८। मा० १२३४८ द०। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

'विशेष-पहिले भक्तामर स्तोत्र टीका सहित तथा वाद मे यन्त्र मत्र सहिन दिया हुवा है।

.४६२३. गुटका सं० २४१। पत्र सं० ५-१७७। मा० ४×३ इ०। भाषा-हिन्हो। से० काल १०५७ वैशाख बुदी अमावस्या।

विशेष-लिखितं महात्मा शभूराम । ज्ञानदीपक नामक न्याय का ग्रन्य है ।

४६२४. गुटका सं० २४२। पत्र सं० १-२००, ४०० ४६४, ६०४ से ७६४। मा० ४×३ इ०८ भाषा-हिन्दी गद्य।

विशेष-भावदीपक नामक ग्रन्थ है।

४६२४. गुटका सं० २४३ । पत्र सं० २४० । मा० ६x४ इ० । भाषा-सःकृत ।

विशेष---पूजा पाठ सग्रह है।

४६२६. गुटका सं० २४४। पत्र स० २२। मा० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत ।

(१. त्रैलोक्य मोहन कवन्न	रायमल	संख्व	लें काल १७६१ ४
२. दक्षगामूर्तिस्तीय	शंकराचाये	"	¥19
.३. दश रलोकीशं भूस्तोत्र	, ×	7)	9 -=
४. हरिहरनामावलिस्तोन्न	×	#	५- १०
५. हादशराशि फल	×	"	१० १२

```
ि ६६१
गुटका-संमह
                                                                   ले० काल १७६२ १२-१४
६. वृहस्पति विचार
                                          X
                                                                                    १५-२२
                                          X
७. ग्रन्यस्तोत्र
           ४६२७. गुटका सं० २४४ । पत्र स० २-४६ । ग्रा० ७८५ ६० ।
           विशेष—स्तोत्र संग्रह है।
           ४६२८. गुटका सं० २४६। पत्र सं० ११३। म्रा० ६xx इ०। भाषा-हिन्दी।
           विशेष--नन्दराम कृत मानमझरी है। प्रति नवीन है।
           ४६२६. गुटका सं० २४७ । पत्र सं० ६-७० । म्रा० ७×४ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी ।
           विशेष--पूजापाठ संग्रह है।
           ५६३०. गुटका सं० २४८ । पत्र स० १२ । म्रा० ८३×७ ६० । भाषा-हिन्दी ।
           विजेष-तीर्थकुरो के पंचकत्याण मादि का वर्एन है।
           ४६३१. गुटका सं २ २४६ । पत्र सं० ५ । ग्रा० ५३×७ ६० । भाषा-हिन्दी ।
           विशेष-पद संग्रह है।
           ४६३२. गुटका स० २४० । पत्र सं० १४ । ग्रा० ५३×७ ६० । भाषा-संस्कृत ।
           विशेष---बृहत्स्वयभूस्तोत्र है।
           ४६३३. गुटका स० २४१ । पत्र सं० २० । ग्रा० ७×५ ६० । भाषा-सस्कृत ।
           विशेष-समन्तभद्र कृत रत्नकरण्ड श्रावकाचार है।
            ४६२४ गुटका स० २४२। पत्र स० ३। ग्रा० ८३×६ ६०। भाषा-सस्कृत। ले० काल १९३३।
```

विशेष-अमलङ्गाष्ट्रक स्तोत्र है।

४६२४. गुटका रं ०२४३ पत्र सं० ८ | मा० ६×४ इ० | भाषा-सस्कृत ले० काल स० १६३३ | विशेष - भक्तामर स्तोत्र है।

४६३६. गुटका स० २४४। पत्र स० १०। मा० =X५ ६०। भाषा हिन्दी। विशेष--बिम्ब निर्वाण विधि है।

४६३७. गुठ हा सं० २४४ । पत्र स० १६ । ग्रा० ७×६ इ० । भाषा -संस्कृत हिन्दी , विशेष-- वृथजन कृत इष्ट छत्तीसी पचमगल एवं पूजा म्रादि हैं।

४६३८. गुटका सं० २४६। पत्र स० ६। ग्रा० ५३×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ग्रांशी। विशेष-विधानन्द कृत र।मचन्द्र चरित्र है।

y

४६३६ गुटका स० २४७। पत्र सं० ८। म्रा० ८४५ ६०। मापा-हिन्दी। दशा-जीर्शशीर्श। विशेष-सन्तराम कृत कवित्त सग्रह है।

४६४०. गुटका स० २४८ । पत्र स० ६ । ग्रा० ५४४ ६० । भाषा–सस्कृत । अपूर्ण ।

धिशेष —ऋषिमण्डलस्तीत्र है।

४६४१. गुटका सं २४६। पत्र सं० १। ग्रा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल १८३०।

विशेष-हिन्दी पद एवं नायू कृत लहुरी है।

५६४२. गुटका सं० २६० । पत्र सं० ४ । म्रा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेप—नवल कृत दोहा स्तुति एवं दर्शन पाठ हैं।

४६४३. गुटका सं० २६१ । पत्र सं० ६ । आ० ७४५ इ० । भाषा-हिन्दी । र० काल १८६१ ।

विशेष-सोनागिरि पचीसी है।

४६४४. गुटका सं० २६२ । पत्र सं० १० । म्रा० ६×४३ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष-जानोपदेश के पद्य हैं।

४६४४. गुटका सं० २६३। पत्र सं० १६। म्रा० ६३×४ इ०। भाषा-सस्कृत।

विशेष-शंकराचार्यं विरचित ग्रगराधसूदनस्तीत्र है ।

४६४६ गुंटका सं०२६४। पत्र सं०६। म्रा०६×४ द०। भाषा-हिन्दी।

विशेप—सप्तश्लोकी गीता है।

४६४७. गुटका सं० २६४ । पत्र स० ४ । आ० ४३×४ इ० । भागा-संस्कृत ।

विशेष-वराहपुराण मे से सूर्यस्तोत्र है।

४६४८. गुटका सं० २६६ । पत्र सं० १० । म्रा० ६×४ इ० । भाषा सस्कृत । ले० काल १८८७ पौप

विशेष- पत्र १-७ तक महागरापित कवच है।

४६४६ गुटका सं० २६७ । पत्र सं० ७ । म्रा० ६×४३ इ० । भाषां-हिन्दी ।

विशेष-भूधरदास कृत एकीभाव स्तोत्र भाषा है।

४६४०. गुटका सं० २६८ । पत्र सं० ३४ । श्रा० ५३ू×४ इ० । भाषा–संस्कृत । ले० काल १८८४

पौप सुदी २। विशेष—मह।त्मा संतराम ने प्रतिलिपि की थी। पद्मावती पूजा, चतुपष्ठी स्तोत्र एवं जिनसहस्रनाम

(ग्राशाधर) है।

सुदी ६।

प्रदूर गुटका स० २६६। पत्र सं० २७। ग्रा० ७२ 👋 ५६ ६०। भाषा-संस्कृत । पूर्ण। विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है।

४६४२. गुटका सं०२७०। पत्र सं० ८। ग्रा० ६३×४ ६०। भाषा-संस्कृत। ले० काल सं०१६३२। पूर्ण।

विशेष-तीन चौबीसी व दर्शन पाठ है।

४६४३ गुटका सं० २७१। पत्र सं० ३१। म्रा० ६×५ इ०। मापा-संस्कृत। विषय-सग्रह। पूर्ण। विशेष—भक्तामरस्तोत्र, ऋद्विमूलमन्त्र सहित, जिनपञ्जरस्तोत्र हैं।

४६४४. गुटका सं० २७२ | पत्र सं० ६ | ग्रां० ६×४३ इ० | भाषा-संस्कृत । विषय-सग्रह | पूर्श | विशेष-- ग्रनन्तव्रतपूजा है ।

४६४४. गुटका सं० २७३ । पत्र सं० ४ । म्रा० ७×५ई इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

विशेष—स्वरूपचन्द कृत चमत्कारजी की पूजा है। चमत्कार क्षेत्र संवत् १८८६ मे भादवा सुदी २ को प्रकट हुवा था। सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४६४६. गुटका सं० २७४। पत्र सं० १६। म्रा० १०×६३ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। पूर्ण विशेष-इसमे रामचन्द्र कृत शिखर विलास है। पत्र द से म्राग खाली पड़ा है।

४६४७. गुटका सं० २७४। पत्र सं० ६३। म्रा० ५३४५ इ०। पूर्ण।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है तीन चौवीसी नाम, जिनपचीसी (नवल), दर्शनपाठ, निर्यपूजा भक्तामरस्तोत्र, पश्चमञ्जल, कल्याग्यमन्दिर, नित्यपाठ, संबोधपञ्चासिका (द्यानतराय) ।

४६४८. गुटका सं० २७६। पत्र सं० १०। आ० ६५×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १८४३। अपूर्ण ।

विशेष-भक्तामरस्तोत्र, वड़ा कनका (हिन्दी) स्रादि पाठ हैं।

४६४६. गुटका सं० २७७ । पत्र सं० २-२३ । ग्रा० ५३×४३ ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । म्रपूर्ण ।

विशेष-हरखचन्द के पदो का संग्रह है।

४६६०. गुटका सं० २७८। पत्र सं० १-८०। म्रा० ६४४ इ०। म्रपूर्ण।

विशेष—वीच के कई पत्र नहीं हैं । योगीन्द्रदेव कृत परमात्मप्रकाश है ।

४६६१. गुटका सं० २७६। पत्र सं० ६-३४। ग्रा० ६×४ इ०। ग्रपूर्ण।

विशेष---नित्यपूजा संग्रह है।

४६६२. गुटका सं० २८०। पेत्र सं० २-४१। म्रा० ४३×४ इ०। भाषा-हिन्दी गद्य। म्रपूर्ण। विशेष-कषायो का वर्णन है।

४६६३. गुटका सं० २=१। पत्र सं० ६२। म्रा० ६×६ इ०। भाषा-× । पूर्ण।

विशेष—बारहखडी, पूजासग्रह, दशलक्षरण, सोलहकारण, पञ्चमेरुपूजा, रत्नत्रयपूजा, तत्त्वार्धसूत्र मादि
पाठो का संग्रह है।

४६६४. गुटका सं० २८२ । पत्र सं० १६-५४ । आ० ६३×४३ इ० ।

विशेष-- निम्न मुख्य पाठो का संग्रह है- जैनपचीसी, पद (भूधरदास) भक्तामरभाषा, परमज्योतिभाषा विषापहारभाषा (ग्रचलकीत्ति), निर्वाणकाण्ड, एकीभाव, श्रक्तिमचैत्यालय जयमाल (भगवतीदास), सहस्रनाम, साधुनंदना, विनती (भूधरदास), नित्यपूजा ।

४६६४. गुटका सं० २८३ । पत्र सं० ३३ । ग्रा० ७६×४ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-ग्रन्यात्म । अपूर्ण ।

विशेष-३३ से श्रागे के पत्र खाली हैं। वनारसीदास कृत समयसार है।

४६६६. गुटका सं० २८४। पत्र सं० २-३४। आ० ८×६३ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत । अपूर्ण।
विशेष--वर्षातक (द्यानतराय), श्रुतवोध (कालिदास) ये दो रचन में हैं।

४६६७. गुटका सं २ २८४ पत्र सं २ ३८४ । ग्रा० ५४६ इ०। भाषा-सस्कृत प्राकृत । अपूर्ण । विशेष---नित्यपूजा, स्वाध्यायपाठ, चीवीसठाणाचर्चा थे रचनायें हैं।

४६६८. गुटका सं० २८६। पत्र सं० ३१। आ० ८×६ इ०। पूर्ण।

विशोप-द्रव्यसंग्रह संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित ।

४६६६. गुटका स० २८७। पत्र सं० ३२। ग्रा० ७३×५६ ६०। भाषा-सस्कृत। पूर्ण। विशेष-तत्त्वार्थसूत्र, नित्यपूजा है।

४६७०. गुटका सं० २८६। पत्र सं० २८४। ग्रा० ६४४ ६०। विषय-संग्रह। ग्रपूर्ण। विशेप—ग्रह फल ग्रादि दिया हुवा है।

४६७१. गुटका सं० २८६ । पत्र सं० २० । आ० ६×४ इ० । आषा-हिन्दी । विषय-श्रृङ्गार । पूर्ण विशेष---रिसकराय कृत स्नेहलीला मे से उद्धव गोपी संवाद दिया है ।

पारम्भ — एक समय व्रजवास की सुरित भई हरिराइ।

निज जन अपनी जानि के ऊधी लियी बुलाइ।

श्रोकिरसन वचन ऐस कहे ऊधव तुम सुनि ले। नन्द जसोदा श्रादि दे वज जाइ सुख दे।। २।। वज वासी बल्लभ सदा मेरे जीउनि प्रान। तानै नीमप न वीसरू मीहे नन्दराय की श्रान।।

श्रन्तिम--

यह लीला व्रजवास की गोपी किरसन सनेह।
जन मोहन जो गाव ही ते नर पाउ देह।। १२२।।
जो गाव सीष सुर गमन तुम वचन सहेत।
रसिक राय पूरन कीया मन वाछित फल देत।। १२३।।

नोट--ग्रागे नाग लीला का पाठ भी दिया हुवा है।

४६७२. गुटका सं० २६०। पत्र सं० ४२। ग्रा० ६×५ ६०। ग्रपूर्ण। विशेष—मुख्य निम्न पाठो का सग्रह हैं।

१. सोलहकारणकथा	रत्नपाल	संस्कृत	5- 23
२. दशलक्षर्गीकथा	मुनि ललितकीर्ति	7)	१ ३- १७
३. रत्नत्रयव्रतकथा	7)	3 7	39-09
४. पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	53	53	१६-२३
५. ग्रक्षयदशमीकया	7)	5)	73-75
५. ग्रनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	93	77	२७
७. वैद्यमनोत्सव	नयनसुख	हिन्दी पद्य	पूर्ण ३१-५२

विशेष — लाखेरी ग्राम मे दीवान श्री बुधिसहजी के राज्य मे मुिम मैवविमल ने प्रतिलिपि की थी। गुटका काफी जीर्रा है। पत्र चूहो के खाये हुए है। लेखनकाल स्पष्ट नहीं है।

४६७३. गुटका सं० २६१। पत्र सं० ११७। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-सग्रह। विशेष-पूजा एवं स्तोत्र सग्रह है। संस्कृत मे समयसार कलाद्रु मपूजा भी है। ४६७४, गुटका सं० २६२। पत्र स० ४८।

इ. ज्योतिषशास्त्र
 भूटकर दोहे
 भूटकर दोहे
 भूटकर दोहे
 भूटकर दोहे

गोवर्धन

संस्कृत

३७-४८

३. पद्मकोष

ले॰ काल सं॰ १७६३ संत हरिवशदास ने लवागा मे प्रतिलिपि की थी।

४६७४ गुटका स० २६३ । संग्रह कर्ता पाण्डे टोडरमलजी । पत्र स० ७६ । ग्रा० ५×६ इख्र । ले० काल सं० १७३३ । ग्रपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

विशेष-श्रायुर्वेदि न नुसखे एवं मत्रो का संग्रह है।

४६७६. गुटका सं० २६४ । पत्र सं० ७७ । ग्रा० ६×४ इख । ले० काल १७८८ पीप सुदी ६ । पूर्ण । सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेप--पं गोवर्दा न ने प्रतिलिपि की थी । पूजा एव स्तोत्र संग्रह है।

४६७७. गुटका सं० २६४ । पत्र सं० ३१-६२ । ग्रा० ४×४। इख्र भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल शक सं० १६२५ सावन बुदी ४ ।

विशेष--पुण्याहवाचन एवं भक्तामरस्तीत्र भाषा है।

४६७८ गुटका सं०२६६ | पत्र सं०३-४१ | म्रा०३×३३ इख । भाषा-संस्कृत | विषय-स्तोत्र | म्रपूर्ण | दशा-सामान्य |

विशेप-भक्तामरस्तोत्र एव तत्वार्थ सूत्र है।

४६७६. गुटका सं २ २६७ । पत्र सं ० २५ । म्रा० ६×४३ इख । भाषा-ित्दी । म्रपूर्ण । विशेष-- म्रायुर्वेद के नुसखे हैं ।

४६८०. गुटका सं० २६८ । पत्र सं० ६२ । आ० ६३×५ इख । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

ृ विशेष—प्रारम्भ के ३१ पत्र खाली हैं। ३१ से म्रागे फिर पत्र १ २ से प्रारम्भ है। पत्र १० तक श्रृङ्गार के कवित्त हैं।

१. वारह मासा—पत्र १०-२१ तक । चूहर किव का है। १२ पद है । वर्रान सुन्दर है। किवता में पत्र लिखकर बताया गया है। १७ पद्य है।

२. वारह मासा-गोविन्द का-पत्र २६-३१ तक।

४६८१. गुटका सं० २६६ ो पत्रे सं० ४१ । म्रा० ७४४६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-म्युङ्गार । विशेष-कोकसार है ।

४६८२. गुटका सं० ३००। पत्र सं० १२। ग्रा० ६×५३ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र। विषय-मन्त्रशास्त्र। विषय-मन्त्रशास्त्र। विषय-मन्त्रशास्त्र। विषय-मन्त्रशास्त्र, ग्रायुर्वेद के नुसखे। पत्र ७ से ग्रागे खाली है।

४६८३. गुटका सं० ३०१। पत्र सं० १८। आ० ४३×३ ६०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-संग्रह। ले॰ काल १६१८। पूर्ण।

विशेष—लावस्मी मागीतुं मी की- हर्षकीित ने सं० १६०० ज्येष्ठ सुदी १ को यात्रा को थी । १६८८. गुटका सं० ३०२ । पत्र स० ४२ । ग्रा० ४×३३ ६० । भाषा—संस्कृत । विषय—संग्रह । पूर्ण विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

४६८४. गुटका स० ३०३। पत्र सं० १०४। ग्रा० ४६×४६ द०। पूर्ण।

विशेष—३० यन्त्र दिये हुये है। कई हिन्दी तथा उर्दू मे लिखे हैं। ग्रागे मन्त्र तथा मन्त्रविधि दी हुई है। उनका फल दिया हुग्रा है। जन्म्ात्रो सं० १८१७ की जगतराम के पौत्र माएकचन्द के पुत्र की ग्रायुर्वद के नुसखे दिये हुये हैं।

४६८६. गुटका सं० ३०३ क । पत्र स० १५ । म्रा० ८४५३ इ० । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

ं विशेष—प्रारम्भ में विश्वामित्र विरिचित रामकवच है। पत्र ३ से तुलसीदास कृत किवत्तवध रामचरित्र है। इसमें छप्पय छन्दों का प्रयोग हुवा है। १-२० पद्य तक सख्या ठीक है। इसमें आगे ३५९ संख्या से प्रारम्भ कर ३८२ तक संख्या चली है। इसके आगे २ पत्र खाली है।

४६८७. गुटका सं० ३०४। पत्र सं० १६। मा० ७३×५ द०। भाषा-हिन्दी। म्रपूर्सा।

विशेष—४ से ६ तक पत्र नहीं हैं । भ्रजयराज, रामदास, वनारसीदास, जगतराम एव विजयकीर्ति के पदो का संग्रह है।

४६८८. गुटका सं० ३०४। पत्र सं० १०। म्ना० ७४६ इ०। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। पूर्ण। विशेष—नित्यपूजा,है।

४६८. गुटका सं० ३०६। पत्र सं० ६। ग्रा० ६३×४३ इ०। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा पाठ। पूर्या । विशेष-शातिपाठ है।

४६६७. गुटका सं० २०७। पत्र सं० १४। म्रा० ६३×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। म्रपूर्श। विशेष---नन्ददास की नाममञ्जरी है।

४६६१. गुटका सं० २०८ । पत्र सं० १० । म्रा० ४×४६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तीत्र । पूर्ण विशेष-भक्तामरऋदिमन्त्र सहित है ।

क भगडार [शास्त्रभगडार बाबा दुलीचन्द जयपुर]

४६६२. गुटका सं० १ । पत्र सं० २७१ । ग्रा० ६३×७६ इख । वे० सं० ६५७ । पूर्ण । धीरजसिंह राठीड हिन्दी 2-5 १. भाषाभूषण २. ग्रठोत्तरा सनाथ विधि ले० काल सं० १७५६ १३ X श्रीरगजेब के समय मे पं॰ श्रभयसुन्दर ने ब्रह्मपुरी मे प्रतिलिपि की थी। हिन्दी 88 ३. जैनशतक भूधरदास वनारसीदास ११७ ४. समयसार नाटक वादशाह शाहजहा के शासन काल में सं० १७०८ में लाहीर में प्रतिलिपि हुई थी। 355 ५. बनारसी विलास विशेप-वादशाह शाहजहा के शासनकाल स॰ १७११ मे जिहानाबाद मे प्रतिलिपि हुई थी। ४६६३. गुटका स० २। पत्र स० २२५ । आ० ५×५३ इख । अपूर्ण । वे० सं० ५५५ । विशेप—स्तोत्र एव पूजा पाठ सग्रह है। ४६६५. गुटका स० ३ । पत्र सं० २४ । म्रा॰ १०३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । वे० स० ६५६ । १. शातिकनाम हिन्दी १ X २. महाभिषेक सामग्री १-5 X " रे प्रतिष्ठा में काम ग्राने वाले ६६ यत्री के चित्र 8-28 X ४६६४. गुटका सं० ४। पत्र स० ६३। ग्रा० ४३×८५ इ०। पूर्ण । वे० सं० ८६०। विशेष-पूजाग्रो का संग्रह है। ४६६६. गुटका स॰ ४ । पत्र स० ५६ । ग्रा० ६×४ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । अरूर्ग । वे० स० = F 8 1 विशेष--सुभापित पाठो का सग्रह है। ४६६७ गुटका सं० ६। पत्र सं० ३३४। ब्रा० ६४४ इ०। भाषा-संस्कृत । पूर्ण । जीर्गा । वे० सं० 4651 विशेष-विभिन्न स्तोत्रो का सग्रह है। ४७६८. गुटका सं० ७। पत्र स० ४१६। ग्रा० ६३×५ इ०। ले० काल सं० १८०५ ग्रपाढ सुदी ४ पूर्ण । वे० स० ६६३ ।

१. पूजा पाठ संग्रह 🗙

२. प्रविष्ठा पाठ 🗙 "

३. चौवीस तीर्थद्धर पूजा रामचन्द्र

हिन्दी ले॰ काल १८७५ भादवा सुदी १॰

सस्कृत हिन्दी

४६६६. गुटका स० पापत्र सं० ३१७ । आ० ६४५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७६२ ब्रासोज सुदी १४ । पूर्ण । वे॰ सं० प६४ ।

विशेष—पूजा एव प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठो का संग्रह है। पृष्ठ २०७ पत्र भक्तामरस्तोत्र की पूजा विशेषतः उल्लेखनीय है।

४७००. गुटका स०६। पत्र स०१४। आ०४×४ इ०। भाषा-हिन्दी। पूर्ण। वे० सं० ६६४। विशेष-जगतगम, गुमानीराम, हरीसिंह, जोधराज, लाल, रामचन्द्र श्रादि कवियो के भजन एवं पदो का संग्रह है।

ख भगडार [शास्त्रभगडार दि॰ जैन मन्दिर जोबनेर जयपुर]

४७२१. गुटका सं २ १ । पत्र सं० २१२ । आ० ६×४३ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१.` होडाचक	×	सस्कृत	म्रपूर्ण	5
२. न्।ममाला	धनञ्जय	77	57	8-3 7
३. श्रुतपूजा	×	33		37-38
४. पञ्चकल्यासम्बन्धा	×	₃₇ लें	काल १७८३	३ ६–६४
५. मुक्तावृलीपूजा	×	77		- ६ ५–६९
६. द्वाद्शवतोद्यापन	×	17		६९-८९
७. त्रिकालचतुर्दशीपूजा	×	,, লৈ০ কা	ल सं० १७५३	८६-१० २
ॸ_∙॒न तृक़ारपेँतीसी	×	37		
६, भ्रादित्यवारकया	^ ×	17		•
१०. प्रोषधोपनास व्रतोद्यापन	×	77	ş	१०३ –२१ २
११. नन्दोश्वरपूजा	×	***		
१२. पञ्चकल्याग्यकपाठ	×	77		
१३. पञ्चमेरपूजा	×	3)		

४७०२. गुटका सं० २ । पत्र ५० १६६ । ग्रा० ६×६३ इ० । ले० काल × । दशा-जीर्ए जीर्ए ।

१. त्रिलोकवर्णन	×	संस्कृत हिन्दी	₹१०
२. कालचक्रवर्शीन	×	हिन्दी	११ -१ ४
३. विचारगाया	×	प्राकृत	१५–१६
४. चीवीसतीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी	१६-३१
५. चडवीसठाएगचर्चा	×	"	३२-७८
६. ग्राश्रव त्रिभङ्गी	· ×	प्राकृत	519-30
७. भावसंग्रह (भावित्रभङ्गी)	×	,,	११३-१३३
 न. त्रेपनक्रिया श्रावकाचार टिप्पग् 	×	सस्कृत	*
६. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	; ;	१ ५४-१ ६=

४७०३. गुटका सं० ३। पत्र स० २१४। ग्रा० ६×६ इ०। ले० काल ४। पूर्ण । विशेष—नित्यपूजापाठ तथा मन्त्रसंग्रह है। इसके ग्रतिरिक्त निम्नपाठ संग्रह है।

१. शत्रुक्षयतीर्थरास	समयसुन्दर	हिन्दी	ूब्द
२. वृारहभावना	जितचन्द्रसूरि	,, र० काल	१६१६ ३३-४०
३. दश्वैकालिकगीत	जैतसिह	7)	¥ १– ¥€
४. शालिभद्र चीपई	जितसिद्दसूरि	"र०काल १	₹05 ¥8−6¥
५. चतुर्विशति जिनराजम्तुति	77	92	१ ४–१ ०६
,६. व्रीसतीर्थङ्करजिनस्तुति	77	3 5	१०६–११७
७. महावीरस्तवन	जितचन्द्र	"	११७–११६
म्रादीश्वरस्तवन	"	37	१२०
६. पार्श्वजिनस्तवन	77	77	१२०-१२१
१०. विनती, पाठ व स्तुति	77	2)	१२२-१४१

४७०४. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ७१ । स्रा० ५३×३ इ० । भाग-हिन्दी । ले• काल सं० १६०४ । पूर्ण ।

विशेष--- नित्यपाठ व पूजाग्रो का संग्रह है। लश्कर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४७०४. गुटका सं० ४। पत्र सं० ४८। ग्रा॰ ५४४ इ०। ल० काल सं० १६०१। पूर्ण।

विशेष—कर्मप्रकृति वर्णन (हिन्दी), कल्याणमन्दिरस्तोत्र, सिद्धिप्रयस्तोत्र (सस्कृत) एव विभिन्न वियो के पदो का सग्रह है।

४७०६ गुटका सं०६। पत्र सं० ८०। म्रा० ५ रे४६ हे ६०। ने० काल ×। म्रपूर्श। विशेष—गुटके मे निम्न मुख्य पाठो का संग्रह है।

 १. चौरासीबोल
 कौरपाल
 िहन्दी
 म्रपूर्ण
 ४-१६

 २ म्रादिपुराखिनती
 गङ्गादास
 ,,
 १७-४३

विशेष—सूरत मे नरसीपुरा (नरसिंघपुरा) जाति वाले विशिक पर्वत के पुत्र गङ्गादास ने विनती रचना की थी।

४७०७. गुटका सं० ७ । पत्र स० ५० । ग्रा० ५३×४३ इ० । ले० काल × । ग्रपूर्ण ।

विशेप—४८ यन्त्रो का मन्त्र सहित संग्रह है । ग्रन्तं मे कुछ ग्रायुर्वेदिक नुसले भी दिये हैं ।

४७०८. गुटका स० ८ । पत्र स० × । ग्रा० ५×२३ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—स्फुट कवित्त, उपवासो का न्यौरा, सुभाषित (हिन्दो व संस्कृत) स्वर्ग नरक ग्रादि का वर्णन है ।

४७०६. गुटका स० ६ । पत्र सं० ५१ । ग्रा० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—सग्रह । ले० काल

४७०६. गुटका स०६। पत्र सं० ५१। म्रा० ७८५ इ०। भाषा-संस्कृत । विषय-सग्रह । ले० काल सं० १७८३। पूर्या ।

विशेष—ग्रायुर्वद के नुसखे, पाशा केवली, नाम माला ग्रादि हैं।

४७१०. गुटका सं० १०। पत्र सं० ५४। आ० ६×३२ ६०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद सग्रह। के० काल 🗴 । पूर्ण ।

विशेष--लिपि स्पष्ट नही है तथा प्रशुद्ध भी है।

४७११. गुटका स० ११ । पत्र सं० १२-६२ । ग्रा॰ ६४५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष--ज्योतिष सम्बन्धी पाठो का संग्रह है।

४७१२. गुटका स० १२ । पत्र सं० २२३ । श्रा० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १६०५ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेप-पूजा व स्तोत्रो का सग्रह है।

४७१३ गुटका सं० १३। पत्र सं० १६३। ग्रा० ४×५३ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। विशेष—सामान्य स्तोत्र एव पूजा पाठो का सग्रह है।

४७१४. गुटका सं० १४। पत्र स० ४२। ग्रा० =३×५३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। श्रपूर्ण।

१. तिलोकवर्णन	×	हिन्दी	पूर्ण	१–१=
२ खडेला की चरचा	×	"	**	१ <i>६-</i> .२६
३ त्रेसठ शलाका पुरुपवर्णान	×	"	"	२६–४२

४७१४ गुटका सं० १४ । पत्र स० ७६ । म्रा० ६×५ इ० । ले० काल० × । पूर्ण । विशेष — पूजा एव स्तोत्रो का सग्रह है ।

प्रथ१६. गुटका सं० १६। पत्र स० १२०। त्रा० ६×५३ द०। ले० काल सं० १७६३ वैशाख युदी ३।पूर्ण।

१. समयसारनाटक	वनारसीदास	हिन्दी	30-208
२ पार्श्वनायजीकी निसागी	×.	"	११०-११४
३ शान्तिनाथस्तवन	प्रणसाग ^र	"	११५-११६
४. गुरुदेवकीविनती	×	77	११७-१२०

४७१७ गुटका सं०१७। पत्र स०११४। म्रा०६×५ इ०। ते० काल ×। म्रपूर्ण। विशेष—स्तोत्र एव पूजाम्रों का संग्रह है।

अथ्रम. गुटका स० १म। पत्र स० १६४। आ० ४३४४ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ४। अपूर्ण।

विशेष--- नित्य नैमित्तिक पूजा पाठो का सग्रह है।

४७१६. गुटका स० १६। पत्र स० २१३। आ० ४×३३ इ०। ले० काल ४ पूर्ण। विशेष—नित्य पाठ व मत्र आदि का संग्रह है तथा आयुर्वेद के नुसखे भी दिये हुये हैं। ४७२०. गुटका स० २०। पत्र स० १३२। आ० ७४६ इ०। ले० काल सं० १८२२। अपूर्ण। विशेष—नित्यपूजापाठ, पार्श्वनाथ स्तोत्र (पद्मप्रभदेव) जिनस्तुति (रूपचन्द, हिन्दी) पद (शुभ

चन्द्र एव कन क्वीति) खडेलवालो की उत्पति तथा सामुद्रिक बास्त्र ग्रादि पाठो का सग्रह है।

४७२१. गुटका स० २१। पत्र सं० ५-६२। ग्रा० ५ है ४५ ई ६०। ले० काल ४। ग्रपूर्ण। जीर्ण। विशेष—समयसार गाथा, सामाधिकपाठ वृत्ति सहित, तत्त्वार्थसूत्र एवं भक्तामरस्तोत्र के पाठ है। ४७२२ गुटका स० २२। पत्र सं० २१६। ग्रा० ६४६ ६०। ले० काल सं० १८६७ चैत्र सुदी १४।

र्गा ।

विशेष-५० मत्रो एव स्तोत्रो का संग्रह है।

४७२३. गुटका सं० २३। पत्र स० ६७-२०६। ग्रा॰ ६×५ इ०। ले॰ काल ×। ग्रपूर्ण।

१. पद- / वह पानी मुलतान गये)	×	हिन्दी	पूर्ण	69
२. (पद-कौन खतामेरीमै न जानी तिज	×	77	77	17
के चले गिरनारि)	·			
३. पद-(प्रभू तेरे दरसन की विलहारी)	×	n	3)	17
४. ग्रादित्यवारकथा	×	37	> >	x59-33
५. पद-(चलो पिय पूजन श्री वीर जिनद)	×	"	"	१७५–१७६
६ जोगीरासो	जिनदास	77	7)	980-987
७. पञ्चेन्द्रिय वेलि	ठवकु रसी	9 3	77	१६२–१६५
८. जैनविद्रीदेश की पत्रिका	मजलसराय	, ,,	93	१६५–१६७

ग भगडार [शास्त्रभगडार दि॰ जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर,]

४७२४' गुरका स० १। ग्रा॰ ५×५ ६०। ले॰ काल ×। पूर्गा। ने॰ सं॰ १००। विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है।

१. पद- सावरिया पारसनाथ मोहे तो चाकर राखो	खुशालचन्द	हिन्दी
२. ,, मुफे है चाव दरसन का दिखा दोगे तो क्या होगा	×	37
३. दर्शनपाठ	×	संस्कृत
४. तीन चौबीसीनाम	×	हिन्दी
५ कल्यारामन्दिरभाषा	वनारसीदास	"
६. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत
७. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	57

668]		[गुटकासंग्रह
द देवपूजा	×	हिन्दी संस्कृत
 श्रकृतिम जिन चैत्यालय जयमालः 	×	हिन्दी
१०. सिद्ध पूजा	×	संस्कृत
११. सोलहकाररापूजा	×	"
१२. दशलक्षरापूजा	×	37
१३. शान्तिपाठ	×	99
१४. पार्स्वनायपूजा "	×	v
१५. पंचमेरुपूजा	भूघरदान	हिन्दी
१६. नन्दीश्वरपूजा	×	संस्कृत
१७. तत्वार्यसूत्र	उमास्वामि	श्रपूर्वी "
१८. रत्नत्रयपूजा	×	,,
१६. श्रकुत्रिम चैत्यालय जयमाल	×	हिन्दी
२०. निर्वागुकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	33
२१. गुरुय्रो की विनती	×	59
२२. जिनपचीसी	नवलराम	"
२३. तत्वार्थमूत्र	उमास्वामि	पूर्ण सस्कृत
२४. पञ्चकल्याणमंगल	रूपचन्द	हिन्दी
२५. पद- जिन देख्या विन रह्यो न जाग्र	वि श्वनसिंह	37
२६. " कीजी हो भैयन सो प्यार	द्यानतराय	93
२७. " प्रभू यह अरज सुगो मेरी	नन्द कवि	37
२८. ,, भयो सुल चरन देखत ही	77	57
२६. 🚜 प्रमू मेरी सुनो विनती	99	39
३०. " परचो संसार की घारा जिनको वार नही पारा	33	37
३१. " कला दीदार प्रभू तेरा भया कर्मन ससुर हेरा	77	3 7
३२. स्तुति	यु यजन	77
३३. नेमिनाथ के दश भव ३४. पद- जैन मत परखो रे भाई	×	n 🔪
२०० ७५- जन भन ५९ल। ﴿ माइ	×	"

गुटका-संग्रह]

४७२४. गुटका सं० २। पत्र सं० ५३-४०३। आ० ४३×३ इ०। अपूर्ण। वे० सं० १०१। विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है।

१. कल्याग्।मन्दिर भाषा	वनारसीदास	हिन्दी	म्रपूर्ण ५३-६३
२. देवसिद्धपूजा	×	57	६३–११५
३. सोलहकारगपूजा	×	श्रपभ्र श	११५-१२२
४. दशलक्षरापूजा	×	ग्रपभ्रंश संस्कृत	१२३–१२६
५. रत्नत्रयपूजा	×	सस्कृत	१२=-१६७
६. नन्दीश्वरपूजा	×	प्राकृत	१६५-१५१
७. शान्तिपाठ	×	सस्कृत	१५१-१५६
द पञ्चमगल	रूपचन्द	हिन्दी	१८७–२१२
६. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत ग्रपू	र्ण २१३–२२४
१०. सहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	5 >	२२५–२६८
११. भक्तामरस्तोत्र मत्र एव हिन्दी			
पद्यार्थ सहित	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत हिन्दी	756-803

४७२६. गुटका सं० ३। पत्र सं० ८६। ग्रा० १०४६ इ०। विषय-संग्रह। ले० काल सं० १८७६ श्रावरा सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० १०५।

विशेष---निम्न पाठो का संग्रह है।

१. चौबोसतीर्थंकरपूजा	द्यानतराय	हिन्दी
२. भ्रष्टाह्तिकापूजा	, "	73
३. षोडशकारणपूजा	37	73
४. दशलक्षरापूजा	23	53
५. रत्नत्रयपूजा	"	1)
६ पंचमेरुपूजा	23	"
७सिद्धक्षेत्रपू गाष्ट्र भ	39	77
८. दर्शनपाउ	×	33
 १. पद - ग्ररज हमारो मुन 	×	"

१० भक्तामरस्तोत्रोत्पत्तिकथा

X

55

११ भक्तामरस्तोत्रऋद्धिमत्रसहित

संस्कृत हिन्दी X

नथमल कृत हिन्दी ग्रर्थ सहित ।

४७२७ गुटका स०४। पत्र सं० ५५। ग्रा० ८×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १६५४। पूर्ण। वे० सं० १०३।

विशेष-जैन कवियों के हिन्दी पदों का सग्रह है। इनमें दीलतराम, द्यानतराय, जीधराज, नवल, बुधजन भैय्या भागवतीदास के नाम उल्लेखनीय हैं।

घ भगडार [दि० जैन नया मन्दिर वैराठियों का जयपुर]

४७२८ गुटका सं० १ । पत्र सं० ३०० । त्रा० ६३×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे. सं० १४० । विशेष--- निम्न पाठो का सग्रह है ----

१. भक्तामरस्तीत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	१-६
२. घन्टाकरगामन्त्र	×	53	Ę
३. वनारसीविलास	वनारसीदास	हिन्दी	७–१६६
४. कवित्त	77	33	१६७
५. परमार्थदोहा	रूपचन्द	59	१६५-१७४
६ नाममालाभाषा	वनारसीदास	51	\$0X - \$60
७ ग्रनेकाथनाममाला	नन्दकवि	77 ,	<i>8</i> 99-038
जनिवगलखदकोश	×	7 7	१६७-२०६
६. जिनसत्तसई	×	,, म्रपूर्ग	२०७–२११
१० पिगलभाषा	रूपदीप	7)	२११–२२१
११. देवपूजा	×	51	२२२–२६२
१२. जैनशतक	भूघरदास	2)	२६२–२=३
१३ भक्तामरभाषा (पद्य)	× .	5 3	२८४-३००

विशेष--श्री टेकमचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

४७२६. गुटका सं २२। पत्र सं० २३३। ग्रा० ६४६ इ०। ले० काल ४। पूर्ण । वे० सं० १४१ विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

ļ

१. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	श्रपभ्रं श	3 - 8 - 8
विशेष—संस्कृत गद्य मे	डीका दी हुई है।		
२. धर्माधर्मस्वरूप	×	हिन्दी	११० – १७०
३. ढाढसीगाथा	ढाढसीमुनि	সাকৃत	१७१–१६२
४ पंचलव्धिवचार	×	n	863-868
५. श्रठावीस मूलग्रुग्ररास	न्न० जिनदास	हिन्दी	१९४-१८६
६. दानकथा	79	19	<i>१६७–</i> २१५
७. वारह ग्रनुप्रेक्षा	×	99	२१ ५–२१७
इंसतिलकरास	न्न० ग्र जित	हिन्दी	२१७–२१३
६ चिद्रूपभास	×	"	२२०–२१ु७
१० ग्रादिनाथकल्यागाककया	ब्रह्म ज्ञानसागर	73	२२५–२३३
४७३०. गुटका स० ३	। पत्र स० ६८ । ग्रा० ५३ ×१	४ इ०। ले० काल सं०१	६२१ पूर्गा । वे० सं० १४२
१. जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	8 −±x
२. म्रादित्यवार कथा भाषा टीका स	हित मू० क० सकलकीति	हिन्दी	३६—६०
	भापाकार–सुरेन्द्रकीर्ति र०	काल १७४१	
३. पश्चपरमेष्ठिगुग ुस्तवन	×	77	६१– ६८
४७३१. गुटका सं० १	हे। पत्र स० ७० । ग्रा० ७३:	×६ इ०। ले० काल 🗙 ।	पूर्गा। वे० सं० १७४३

१ तस्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	५ –२५
२. भक्तामरभाषा	हेमराज	हिन्दी	२६ –३२
३. जिनस्तवन	दौलतराम	73	३२-३३
४. छहढाला	55	"	38-88
५ मक्तामरस्तोच	मानतु गाचार्य	संस्कृत	६०–६७
६. रविवारकथा	देवेन्द्रभूपगा	हिन्दी	६५-७०

905 T

४७३२. गुटका सं० ४। पत्र स० ३६। आ० ५ ईं ४७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ४। पूर्ण। वै० सं० १४४।

विशेष-पूजाश्रो का संग्रह है।

४७३३. गुटका सं० ६। पत्र सं० ६-३६ । आ० ६३×५ इ०। भाषा-हिन्दी हैं ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष-पूजाग्रो का संग्रह है।

४७३४. गुटका सं० ७ । पत्र स॰ २-३३ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४८ ।

४७३४. गुटका सं० म। पत्र स० १७-४८। ग्रा०६३४४ इ०। भाषा-हिन्दी । ले० काल ४। प्रपूर्ण । वे० सं०१४६।

विशेष-वनारसीविलास तथा कुछ पदो का सग्रह है।

४७३६ गुटका स०६। पत्र स०३२। आ०६×४३ इ०। ले० काल० सं० १८०१ फाग्रुग । पूर्ग विक्तं०१४५।

विशेष-हिन्दी पदो का सग्रह है।

४७३७. गुटका स० १०। पत्र स० ४० । म्रा० ६×४२ इ०। भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ संग्रह । ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० १५०।

४७३८. गुटका स० ११। पत्र सं० २४। आ० ७४४ इ०। भाषा हिन्दी। विषय-पूजा पाठ संग्रह ले० काल ४। अपूर्ण। वे० स० १४१।

४७३६ गुटका स०१२। पत्र स० ३४-८६। आ० ५१×६३ ६०। आपा-हिन्दी। विषय-पूजा पाठ सग्रह। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं०१४६।

विशेष-स्फुट पाठो का संग्रह है।

४७४०. गुटका स० १३ । पत्र स० ४८ । ग्रा० ८×६ इ० । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा पाठ संग्रह । ले० काल × प्रपूर्ण । वे० सं० १५२ ।

ङ भगडार [शास्त्रभगडार दि० जैन मन्दिर संघीजी]

४७४१. गुटका सं० १। पत्र स० १०७ । ग्रा० ५३×५३ ६० । भाषा-हिन्दी सँस्कृत । ले० कान ४। भपूरा । भपूरा । विशेष-पूजा व स्तोत्रो का संग्रह है । ५७४२. गुटका सं०२। पत्र स० ६६ । ग्रा० ६४५ इ० । भाषा- सस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १८७६ वैशाख शुक्ला १०। ग्रपूर्ण ।

विशेष — चि॰ रामसुखजी ह्र'गरसोजी के पुत्र के पठनार्थ पुजारी राधाकृष्ण ने मढा नगर मे प्रतिलिपि की थी। पूजाओं का संग्रह है।

४७४३. गुटका सं० ३। पत्र स० ६६। आ० ६ई×६ ६०। भाषा-प्राकृत संस्कृत । ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेप-भक्तिपाठ, सवीधपश्चासिका तथा सुभाषितावली ग्रादि उल्लेखनीय पाठ हैं।

४७४४. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ४-६६ । आ० ७४८ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १८६८ । अपूर्ण ।

विशेष-पूजा व स्तोत्रो का संग्रह है।

४७४४. गुटका सं० ४ । पत्र स० २८ । आ० ५×६३ इ० । भाषा-सस्कृत । ले० काल सं० १६०७ । पूर्या ।

विशेष-पूजाओं का संग्रह है।

प्रथ8 स्वाह वृदी ११। अपूर्ण।

विशेष—भट्टारक चन्द्रकीर्ति के शिष्य ग्राचार्य लालचन्द के पठनार्थ प्रतिलिर्ण की थी। पूजा स्तोत्रो के ग्रितिरक्त निम्न पाठ उल्लेखनीय है:—

१. श्राराधनासार देवसेन प्राकृत

२. सबोधपंचासिका 🗙 "

३. श्रुतस्कन्च हेमचन्द्र सस्कृत

४७४७. गुटका सं० ७। पत्र सं० १०४। ग्रा० ६५ ४४ई इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण। विशेष-ग्रादित्यवार कथा के साथ अन्य कथायें भी हैं।

४७४८. गुटका सं० ८ । पत्र स० ३४ । म्रा० ४३×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । स्रपूर्ण । विशेष—हिन्दी पदो का संग्रह है ।

४७४९. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ७८ । मा० ७३×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषज-पूजा एवं स्तोत्र सग्रह । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण ।

```
७१० ] [ गुटका-संग्रह
```

४७४० गुटका सं० १०। पत्र सं० १०। ग्रा० ७३×६ इ०। ले० काल ×। ग्रपूर्ण।

विगेष---ग्रानन्दघन एवं सुन्दरदास के पदी का संग्रह है।

४७४१. गुटका सं० ११। पत्र सं० २०। स्रा० ६३×४३ इ०। भाषा–हिन्दी । ले० काल 🗙 ।

श्रपूर्श ।

विशेष--भूधरदास म्रादि कवियो की स्तुतियों का समृह है।

४७४२. गुटका सं० १२। पत्र स० ५०। ग्रा० ६×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले• काल ×। प्रपूर्ण

विशेष-पञ्चमञ्जल रूपचन्द कृत, वधावा एव विनितियो का सग्रह है ।

्र ४७४३. गुटका सं० १३। पत्र स० ६०। म्रा० ५×६ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

धर्मविलास द्यानतराय हिन्दी
 जैनशतक मूधरदास

४७४४. गुटका स० १४। पत्र सं० १४ से १३४। म्रा० ६×६ई इ०। मापा-हिन्दी। ले० काल ×।

पूर्ण। विशेष — चर्चा सग्रह है।

४७४४. गुटका सं० १४। पत्र सं० ४०। म्रा० ७ : ४५३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल 🗴। म्रपूर्ण

विशेप---हिन्दी पदो का सग्रह है।

४७४६. गुटका स० १६। पत्र सं० ११४। म्रा० ६×४६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×।

श्रपूर्श ।

विशेष-पूजापाठ एव स्तोत्रो का सग्रह है।

थ७४७ गुटका सं०१७। पत्र स० ८६। म्रा० ६x४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल x। म्रपूर्ण।

विशेष-गङ्ग, विहारी म्रादि किवयों के पद्यों का संग्रह है।

४७४८ गुटका सं० १८। पत्र सं० ५२। म्रा॰ ६×६ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। मपूर्ण।

जीर्गा। विशेष—तत्त्रार्थसूत्र एव पूजाये है।

४७४६ गुटका स० १६। पत्र स० १७३। ग्रा० ६×७३ इ० । भाषा-हिन्दी। ते० काल × । ग्रह्मर्थ

१ सिन्दूरप्रकरण	वनारसीवास	हिन्दी	भ्रपूर्श
२ जम्बस्वामी चौपई	व्र० रायमल्ल	37	पूर्या
३ धर्मपरीक्षाभाषा	×	"	भपूर्ण
४ समाधिमरणभाषा	×	3 7	"

```
हिन्दी
                                                 ब्रह्मरायमञ्ज
२. प्रद्युम्नराम
३, सुदर्शनरास
                                                                                               33
४. श्रीपालरास
                                                                                               77
                                                     "
५. ग्रादित्यवारकथा
                                                                                               77
                                                    "
            ४७६८. गुटका सं० २८ । पत्र सं० २७६ । ग्रा० ७४४३ इ० । ले० काल ४ । पूर्ण ।
            विगेप-गुटके मे निम्न पाठ उल्लेखनीय है।
                                                धनंजय
                                                                                           संस्कृत
१. नाममाला
२. अकलंकाप्टक
                                             श्रक्लंकदेव
                                                                                               "
३. त्रिलोकतिलकस्तोत्र
                                          भट्टारक महीचन्द
                                                                                               27
४. जिनसहस्रनाम
                                             ग्राशाधर
                                                                                              33
५. योगीरासी
                                             जिनदास
                                                                                            हिन्दी
           ४७६६. गुटका सं० २६। पत्र स० २५०। ग्रा० ७×४६ इ०। ले० काल सं० १८७४ वैशाख कृष्णा
६। पूर्ण ।
१. नित्यनियमपूजासंग्रह
                                              X
                                                                  हिन्दी
२. चौवीम तीर्थंकर पूजा
                                            रामचन्द्र
                                                                    17
३. कर्मदहनपूजा
                                            टेकचन्द
                                                                    77
४. पंचपरमेष्टिपूजा
                                              ×
                                                                             र० काल सं० १८६२
                                                                    22
                                                                              ले॰ का॰ सं॰ १८७६
                                                             स्यौजीराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी।
५. पंचकत्यागुकपूजा
                                              X
                                                                  हिन्दी
६ द्रव्यमंग्रह भाषा
                                           चानतराय
            ४७७०. गुटका सं० ३०। पत्र सं० १००। आ० ६×४ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण।
१. पूजापाठमंग्रह
                                                                  संस्कृत
                                             X
२ सिन्दूरप्रकरण
                                        वनारसीदास
                                                                 हिन्दी
३. लघुचाएक्यराजनीति
                                           चाएात्रय
                                                                   2>
४. वृद्ध
                                             37
                                                                    57
```

७१२ 🍸

गुटका-संग्रह

५ नाममाला

धनञ्जय

संस्कृत

४७७१. गुटका स० ३१। पत्र सं० ६०-११०। म्रा० ७४५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। म्रपूर्या।

विशेष--पूजा पाठ सग्रह है।

४७७२. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ६२ । ग्रा० ५३×५३ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१, कनकावत्तीसी

हिन्दी

२, पूजापाठ 🗙 संस्कृत हिन्दी

३. विक्रमादित्य राजा की कथा 🗙 🥠

४. शनिश्चर्देव की कथा 🗴 "

४७७३. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ८४ । म्रा० ६×४३ ६० । ले० काल × । पूर्ण ।

१. पाशाकेवली (ग्रवजद) 💢 हिन्दी

२ ज्ञानोपदेशवत्तीसी हरिदास 🤧

३. स्यामवत्तीसी 🗶 🤧

४. पाशाकेवली 🗙 🛪

४८७४. गुटका स० ६४। म्रा॰ ५×५ इ०। पत्र सं० द४। ले० काल ×। म्रपूर्ण।

विशेष-पूजा व स्तोत्रो का सग्रह है।

४७७४. गुटका सं० ३४। पत्र स० ६९। आ० ६×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १९४०। पूर्ण।

विशेष--पूजाश्रो का संग्रह है। वचूलाल छावडा ने प्रतिलिपि की थी।

४७७६ गुटका स० ३६। पत्र सं० १५ से ७६। म्रा० ७×५ इ०। ले० काल × । म्रपूर्ण।

विशेष--पूजायो एवं पद समह है।

४७७७. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० ७३ । ग्रा० ६×५ इ० । ले० काल × । म्रपूर्ण ।

१. जैनशतक भूधरदास हिन्दी

२. संवोधपंचासिका द्यानतराय

३. पद—संग्रह

४७७८. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० २६० । ग्रा० ५३×३३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल ×। पूर्या । विशेष-पूजाग्रो तथा स्तोत्रो का संग्रह है ।

४७७६. गुटका सं० ३६। पत्र सं० ११८ । म्रा० ५३×६ ६०। भाषा-हिन्दी । ले० काल रं० १८६१ । पूर्ण।

विशेष-नातू गोधा ने गाजी के थाना मे प्रतिलिपि की थी।

१. गुलालपन्नीसी	ब्रह्मगुलाल	हिन्दी
२. चंद्रहसंकथा	हर्पकवि	,, र का सं. १७०८ ले. का. सं. १८११
३. मोहविवेकयुद्ध	बनारसीदास	"
४. श्रात्मसंबोधन	द्यानतराय	*)
५. पूजासंग्रह	×	53
६. भक्तामरस्तोत्र (मंत्र सहित)	×	संस्कृत ले० का० सं० १८११
७ ग्रादित्यवार कथा	×	हिन्दो ले० का० सं० १८६१

४७८०. गुटका सं ० ४०। पत्र सं० ८२। मा० ५३×४ ६०। ले० काल ×। पूर्ण।

नखशिखनर्गान
 श्रायुर्वे दिकनुसखे
 श्रायुर्वे दिकनुसखे

४७८१. गुरका सं ४१। पत्र सं ० २००। झा० ७३×४३ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष-ज्योतिष संवन्धी साहित्य है।

१८८२. गुटका सं० ४२। पत्र सं० १५८। आ० ८४५ ६०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा पाठ। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष-मनोहरलाल कृत ज्ञानितामिए। है।

४७८३. गुटका सं० ४३। पत्र स० ८०। ग्रा० ६×१ ६०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा व पर। ले० काल ×। ग्रपूर्श।

विशेप-शिनश्चर एवं ग्रादित्यवार कथायें तथा पदो का संग्रह है।

४७५४. गुटका सं० ४४। पत्र सं० ६०। म्रा० ६×५ इ०। ले० काल स० १९५६ फाग्रुन बुदी १४। पूर्ण।

विशेष—स्तोत्रसग्रह है।

४७८४. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ६० । आ० ८×५३ इ० । ले० काल × । पूर्श ।

१. नित्यपूजा

×

हिन्दी संस्कृत

२. पश्चमञ्जल

रूपचन्द

77

३. जिनसहस्रनाम

श्राशाधर

संस्कृत

४७८६. गुटका स० ४६। पत्र सं० २४५। म्रा० ४×३ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। मपूर्णं।

विशेप--पूजामो तथा स्तोत्रो का सम्रह है।

४७८७ गुटका सं० ४७। पत्र सं० १७१। ग्रा० ६×४ इ०। ले० काल सं० १८३१ भादवा बुदा ७। पूर्ण।

१. भतृ हरिशतक

भन्दिर

संस्कृत

२. वैद्यजीवन

लोलिम्मराज

53

३. सप्तशती

गोवद्धनाचार्य ले० काल सं० १७३१

77

विशेष--जयपुर मे गुमानसागर ने प्रतिलिपि की थी।

४७८८. गुटका सं० ४८। पत्र सं० १७२। ग्रा॰ ६×४ इ०। ले॰ काल ×। पूर्या।

१. वारहखडी

सूरत

हिन्दी

२. कक्काबत्तीसी

X

77

३. बारहखडी

रामचन्द्र

22

४. पद व विनती

X

77

विशेष---ग्रधिकतर त्रिभुवनचन्द्र के पद हैं।

४७८६. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० २८ । ग्रा० ८१×६ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० वाल सं० १६५१ । पूर्ण ।

विशेष-स्तोत्रो का संग्रह है।

४७६०. गुटका सं० ४०। पत्र सं० १५६। भ्रा० १०३४७ इ०। ते० काल ×। पूर्या। विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१. शांतिनाथस्तीत्र

मुनिभद्र

सस्कृत

२. स्वयम्भूस्तोत्रभाषा

द्यानतराय ,

"

३. एकीभावस्त्रीत्रभाषा	भृषरदाम	िल्हें
४ मबोषपक्षामियानापा	पाननसम	n
४. निर्याणुराण्डमाना	×	277
६. जेनगरर	कुषरदात	দি-র্বা
७ गिद्धाूना	प्रात्तपर	trzy
<. लघुनामागिक भगा	यस य	ינ
६ सन्पर्ताःपूजा	मुरिसद्दर्गः (11

प्रदर्श सुरुक्ता स्व ४२ । पण रंत १४ । याच ६ई१ १ई इत । ति एक्कार्ड १४१७ ध्रैत सुदी रेत स्रपूर्ण ।

विभेष-चिमनतान भाषमा ने प्रतिविधि की भी।

१. विषासहारग्तोत्रभाषा
 २. दयगत्रावर्णन
 ३. सावलाजी के मन्दिर की स्थ्यात्रा का वर्णन
 ४
 ॥

विधीप---गर राजापा में १६२० पातुमा सुदी व समय पार की हुई थी।

४७६२. गुटका संव ४२। पन संव १३२ । पा० ६×१३ इ०। क्या-संस्कृत हिन्दी। नेव यान सं-१८१८। धनुर्यो।

विशेष-पूजा स्तीत्र व पर संग्रह है।

४७६२. गुटका सब् ४३। पत्र सब ७०। मान १००० दवा माग-मन्द्रा हिया । मेन पान ४३ पूर्ण।

विरोप-पूजा पाठ सग्रह है।

४७६४ गुटका सं० ४४। पत्र स० १०। मा० म×१३ २०। भाषा-हिन्दी। मे० नान सं० ६७४४ मासोज मुदी १०। मपूर्ण। जीर्ण घीर्ण।

विषोप-निमिनाय रासो (ब्रह्मरायमहा) एव मन्य सामा य पाठ है।

४७६४ शुटका स० ४४ । पत्र स० ७-१२८ । मा० ६४४३ ६० । से० कान ४ । शतूर्ण ।

विशेष—गुटके मे मुख्यतः समयगार नाटक (बनारसीदास) तथा धर्मपरीक्षा भाषा (मनोट्रलान) कृत है।

३. कवित्त

४७६६. गुटका सं० ४६। पत्र सं० ७६। ग्रा० ६४४३ इ०। भोषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८१५ वैशाख बुदी ८। पूर्णी जीर्णी

विशेष-कंवर वस्तराम के पठनार्थ प० ग्राशांराम ने प्रतिलिपि की थी।

१. नीतिशास्त्र चाण्नय संस्कृतं

२. नवरत्नकवित्त 🗙 हिन्दी

४७६७. गुटका सं० ४७। पत्र सं० २१७'। आं० ६३×५३ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण।

X

विशेय—सामान्य पाठो का संग्रह है।

४७६८. गुटका सं० ४८। पत्र सं० ११२। ग्रा॰ ६३×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले॰ काल 🗙 Î

अपूर्ण। '

विशेप-सामान्य पाठो का संग्रह है।

प्रथह. गुटका सं० ४६ । पत्र स० ६० । आ० ५×४ इ० । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । ले० काल × । पूर्या ।

विशेष-लघु प्रतिक्रमण तथा पूजाम्रो का संग्रह है।

४८० गुटका सं० ६०। पत्र सं० ३४४। ग्रा० ६×६३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। ग्रपूर्णं विशेष--- ब्रह्मरायमल कृत श्रीपालरास एव हनुमतरास तथा ग्रन्य पाठ भी हैं।

४८०१. गुटका स० ६१। पत्र स० ७२। ग्रा॰ ६४४ ई इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल 🗙 । पूर्ण। जीर्ण।

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है। पुट्ठो के दोनो ग्रोर गरोशजी एवं हनुमानजी के कलापूर्ण चित्र हैं। ४८०२. गुटका सं० ६२। पत्र स० १२१। ग्रा० ६४४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। ४८०३. गुटका सं० ६३। पत्र सं० ७८४। ग्रा० ६३४६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×।

श्रपूर्ण।

४८०४. गुटका सं० ६४। पत्र सं० २०। म्रा० ७४४ इ० । भाषा-हिन्दी। ले० काल ४। म्रपूर्या। ४८०४. गुटका सं० ६४। पत्र सं० ६०। म्रा० ३३४३ इ० । भाषा-हिन्दी। ले० काल ४। पूर्या। विशेष-पदो का संग्रह है।

४८०६. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ८ । ग्रा० ८४४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । ग्रपूर्श । विशेष--- प्रवचनसार भाषा है ।

च भराडार [दि॰ जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर]

प्र=०७. सुटका सं०१। पन मं०१६२। घा०६६००३ तथा नारार्नार संस्कृत। मेर कार स०१७५२ पीर । पूर्ण । पे० मं० ७४७।

विधेष-प्रारम्म में बायुर्वेद में मुनले है नवा किर काराज्य दू रा पाठ भंकर है।

. ४८०८. गुटका सं०२। मंग्रहनां पं० पतेहूव र नागौर। पत गं० २४८। धा० ४४३ ६०। • भाषा-हिन्दी संस्कृत। ते० काल ४। पूर्ण। वे० म० ७४८।

विभेष-तारायन्त्रजी थे पुत्र गेयासमर्गा पाटकी थे पटनार्थ निका ह्या था-

' १. वित्वनियम के दोहे	×	हिन्द <u>ी</u>	नेक सार्य में के देवपण
२. पूजन य नित्य पाठ मंग्रह्	×	11 1177	मेर मान गंग १८४६
^२ ३. घुमगीरा	×	দিখী	१०० तिलाचे हैं।
'४. ज्ञानपदवी	गनीहरराम	- #1	
५. चैत्यवंदना	×	હંત્સ્ય	
६. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	×	िस	
७ द्यादित्यवार की गया	×	3 1	
८. नवकार मंत्र चर्चा	×	71	
६. कर्म प्रकृति का व्योरा	×	17	
१०. लघुसामायिक	×	3 7	
११. पालाकेवली	١×	77	से० गाप० सं १=६६
१२. जैन बद्रीदेश की पत्री	· ×	71	** 33

- ४८०६. गुटका सं० ३ । पत्र सं०.४७ । मा० ६४४३ द० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा
 - ४८१०. गुटका सं० ४। पत्र सं० २०६ । घा० ४४१ ६०। भाषा हिन्दी। विषय-पर भजन। सं० । पूर्ण। वे० सं० ७४०।

४५११. गुटका सं ४ । पत्र सं १२४ । मा० ६ है X ४ ई इ० । मापा-हिन्दी सहकृत । से० बात X । पूर्ण । वे० सं० ७४१ ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठ संग्रह है .

४=१२. गुटका सं०६ । पत्र स०१५१ । ग्रा० ६३ ×५३ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा। पाठ। ले॰ काल ×। पूर्ण। वे० स० ७५२।

विशेष-प्रारम्भ मे भ्रायुर्वेदिक नुसखे भी हैं।

४८१३. गुटका सं०७ । म्रा॰ ६४६० इ॰ भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजापाठ । ले॰ काल ४। पूर्ण । वे॰ सं० ७५३।

४८१४. गुटका सं० ६ । पत्र स० १३७ । म्रा० ७३×४६ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७४४ ।

४८१४ गुटका सं २ ६ । पत्र स० ७२ । म्रा० ७३×५३ इ० । भाष।-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण वे० स० ७५५ ।

४८१६. गुटका सं० १०। पत्र सं ३५७। म्रा० ६८५ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ। के काल 🗴। म्रपूर्ण । वे॰ सं० ७५६।

४८९७. गुटका स० ११ । पत्र स० १२८ । ग्रा० ६६४४ है इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल 🗙 । पूर्ण वे० सं० ७५७ ।

४८१८. गुटका सं० १२। पत्र सं० १४६-७१२। ग्रा० ६x४ इ०। भाषा संस्कृत हिन्दी। ले० काल x। ग्रपूर्या। वे० स० ७५८।

विशेष-निम्नपाठो का स्मह है-

दर्शनपन्नीमी

ζ.	प्राम्पण्याता	×	हिन्दा
₹.	पश्चास्तिकायभाषा	×	, <i>n</i>
₹.	मोक्षपैडी	वनारसोदास	7>
٧.	पंचमेरुजयमाल	×	77
۲.	्रुगधुवंदना	वनारसोदास	"
ξ.	जखडी	भूधरदास	7)
७.	गुरामञ्जरी	×	"
5.	लंघुमंगल	रूपचन्द	73
Э.	लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	
			"

७२०]		(गुटका-संप्र	Eq.
१०. गातिमर्नत्यत्यमात	भैगा भगवनीदाग	n to be just	
११ बार्टम परिगत	र्गरसव) 1	
१२ निर्वाणकाण्य भाषा	भैस भाषतीयाव	, to do 1,315	
१३. बारा: भारता	7*	**	
१४. एशिभाग्नतोष	भेतादाव	• 1	
६५. मगन	विनाधीयात	u to iin hall	•
१६, पक्षमगल	स्त्रा इ	17	
१७. भनागरम्बीय भाषा	नगग 7	**	
१८. रपर्गमुस वर्णन	×	71	
१६. गुरेपस्यस्य वर्णन	×	17	
२०. नमयनारनाटक भाषा	द गारगी शत	n Frie 1551	
२१. प्रातक्षसमूचा	*\$	91	
२२. एकीभावन्तीय	यादिसार	1,12.1	
२३. स्वयभूम्तीय	नर्गमदासर्	11	
२४. जिनगहत्रनाम	सान्तराज	7*	
२५. देवागमस्तीत्र	ममत्रसाय र्घ	5 >	
२६ चनुविश्वतितीर्थगूर न्तुति	77	Fyrth	
२७. चीबीनठाणा	नेमिब द्वारार्य	সহন	
२८, कर्मप्राति भाषा	×	िन-ची। -	

४=१६. गुटना सं० १६ । पत्र न० ४३ । मार ६ 🗙 🖎 छ।। भाषा-ित्यो गंन्त्र । तेर नाव 🗴 पूर्ण । वे० स० ७५६ ।

विशेष-पूजा पाठ के मितिरिक्त लघु पाएगव राजनीति भी है।

प्र=० गुटका स० १४। पा त० ×। मा० १०×६३ ६०। नापा-हिनी। हे० गाव ×। महर्षे वै० सं० ७६० ।

विशेष-पद्मास्तिकाय भाषा टीका सहित है।

४=२१. गुटका सं० १४ । पत्र सं० ३-१५४ । मा० ६२×४३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले॰ काल 🗴 । श्रपूर्श । वे॰ सं॰ ७६१ ।

४८२२. गुटका स० १६ । पत्र सं • १२७ । आ० ६२ ४४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ने० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६२ ।

४८२२. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ७-२३० । ग्रा० ५ र्४ ४७३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १७६३ श्रासीज बुदी २ । ग्रपूर्ण । वे० सं० ७६३ ।

विशेष—यह गुटका बसवा निवासी पं० दौलतरामजी ने स्वयं के पढने के लिए पारमराम ब्राह्मण् से लिखवाया था।

१. नाटकसमयसार	बनारसीदास	हिन्दी	श्रपूर्श १-८१
२. बनारसीविलास	/ 37	77	५ २–१०३
४. तीर्थं दूरी के ६२ स्थान	×	77	१ ९४ –२ २०
४. खंडेलवालो की उत्पत्ति ग्रौर	उनके ८४ गोत्र 🗙	n	२२५–२३०

४=२४ गुटका सं० १= । पत्र सं० ५-३१५ । आ० ६५×६ ६० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले• काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६४ ।

श्रन्तर्थ. गुटका सं० १६। पत्र सं० ४७। श्रा• पर्द्र ४६३ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्तोत्र ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६४।

विशेष-सामान्य स्तोत्रो का संग्रह है।

्रेयन्द्रिक्त सं० २०। पत्र सं० १६५। म्रा० व्र४६ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल 🗴 । म्रपूर्ण । वे० सं० ७६६।

४८२७. गुटका सं० २१ । पत्र सं० १२८ । म्रा० ६×३३ इ० । भाषा- × । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० सं० ७६७ ।

विशेष-गुटका पानी मे भीगा हुमा है।

४८२८. गुटका सं० २२ । पत्र सं० ४६ । ग्रा० ७४५३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० सं० ७६८ ।

विशेष-हिन्दी पदो का संग्रह है।

४८२६, सुद्रमा मद १। पन मन १७० । पान ४८४ १०। नाम हिन्दी मन्द्रत । ते स्मार 🔀 मपूर्ण । वेल सल २३२ ।

विशेष-पूरा एउ	स्तात मण्ड है। बीम के स्वित्ताह	पनगर्दं करेहा	रे। हुस्य पाले का रंग
निमा प्रार है।			
१ नेमीजररास	गुनिरतासीनि	fr-ti	\$2.75 Pi
२ नेमीभार की वेलि	ठनपुरसी	71	# \$-22
३ पनिन्द्रियवेनि	71	34	£4-t+t
४. चीबीमर्तार्धंवरहाम	×	†1	101-101
४. विवेचनवज्ञे	बिनदा म	31	176-11 3
६ मेपगुमारगीत	पूनी	27	₹¥=-{ ₹ ₹
७. टहाणागीत	विम्पा	5 1	१ ११- १ १३
ं ६. चारहेमनुष्रेका	घनपु	**	***-**
		में शान में	• १६६२ वेष्ठ युद्धे १२
६. धान्तिनायम्तीय	<u>पृ</u> राभद्रस्यामी	मंद्रित	140-143
१०. नेमीरवर का हिडीनना	मृ निरतगकीर्ति	17-41	151-157
४५३० गुटफ	। सः २। पत्र सं०२२ । मा०६	X६ र॰। माया-हिन	ो । विषय-संबर् । हैः
्रकाल् ×-। पूरुः । वे० रा० २			

१. नेमिनाथमगत्र	नातनन्द	हिन्दी	to the try tell of
२. राजुलपञ्चांमी	×	#1	१२ -२२

४८३१ गुटका सं० ३। पर सं० ४-४४। मा० ८×६ ६०। भाषा-हित्ती। सं० बान ×। मदूर्ण। ^{> |} वै० सं० २३३ ।

१. प्रग्रुम्नरास	कृष्णराव	हिन्दी	४ –२७
२. ग्रादिनायविनती	कनककीर्ति	7)	३ २
३. वीस तीर्थंकरो की जयमाल	हर्पनीति	***	३ २–२६

४. चन्द्रगुप्त के सोहलस्वप्न

×

हिन्दी

47-48

इनके म्रतिरिक्त विनती संग्रह है किन्तु पूर्णतः श्रशुद्ध है।

४८३२. गुटका स०४। पत्र सं०७४। आ०६३×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं०२३४।

विशेष-ग्रायुर्वेदिक नुसखो का सग्रह है।

४८३३. गुटका सं० ४ । पत्र स० २०-७४ । आ० ७४६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १७६१ माह सुदी ४ । अपूर्ण । वे० स० २३४ ।

१. ग्रादित्यवार कथा

भाऊ

हिन्दी

म्रपूर्ण

३०-३२

२ सप्तव्यसनकवित्त

X

77

३. पार्श्व नायस्तुति

वनारसीदास

44

४. भ्रठारहनाते का चौढाला

लोहट

22

४८३४. गुटका सं० ६ । पत्र स० २-४२ । म्रा॰ ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । ले॰ काल × । म्रपूर्ण । वे॰ सं० २३४ ।

विशेष-शिनश्ररजी की कथा है।

४८३४. गुटका स० ७। पत्र सं० १२-६४। ग्रा० १०३×५३ इ०। ले० काल ×। ग्रपूर्ण । वे० स० २३४।

१. चाराक्यनीति	स्राग्त्य	संस्कृत	श्रपूर्ण	१३
२. साखी	कवीर	हिन्दी		१३-१६
३. ऋदिमन्त्र	×	संस्कृत		18-38
४. प्रतिष्ठाविधान की सामग्री एवं वर्तो	का चित्र सहित वर्णन	हिन्दी		, ६ ሂ

४८३६. गुटका सं० ८ । पत्र स० २-५६ । म्रा० ६×५ ६० । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० सं० २६७ ।

१. वलभद्रगीत	×	हिन्दी	म्रपूर्ण	२–६
२. जोगीरासा	पाडे जिनदास	77		9-28
३. कक्काबलीसी	×	7 7		\$\$ - \$\$
Y ,	मनराम	3 9		१४-१ 5
४. पद- साधो छोड़ो कुमति ग्रकेली	विनोदीलाल	"		१ 5
६. "रे जीव जगत सुपनो जान	छीहल	5 7		₹•

৩ ২৪ ॏ্র্			[गुटका संप्रह
७. भरत सूर घरही में बरागी	ननगर्नाति	<i>;</i> ;	20-21
 चुहरी- हो सुन जीव ग्ररज हमारो या 	सभाषन्द	17	२१२२
६. परमारघ जुहरी	, ×	12	22-23
१०. पद- भवि जीयवदि ने चन्द्रस्वामी	स्पवन्द	7)	२७
११. " जीव सिव देशंट ले पंधारी	मुन्दर	22	२्द
१२. ,, जीव मेरे जिल्लावर नाम भजी	×	77	२ ९
१३. " गोगी या तु बावरो इरा देव	×	97	२६
१४. ,, घरहत ग्रुण गायो भावी मन भावी	मजवराज	33	3,5-3,5
१५. " गिर देयत वालिद्र भाज्या	×	19	वर
१६. परमानन्दस्तोत्र	नुमुदचन्द्र	मं स् र ा	₹ २ —₹४
१७. पद- घट पटादि नैननि गोचर जो	मनराम	हिन्दी	75
नाटिक पुद्रल कैरी			
१८. ,, जिय तें नरभव योही खोगो	मनराम	77	३२
१६. " भ्रखिया म्राज पवित्र भई	ħ		
२०. ,, वनो चन्यो है प्राजि हेली नेमीमुर			
जिन देखीयो	पगतराम		Ye
२१. , नमो नमो जै श्री म्ररिहंत	77	? 7	Υţ
२२. , माधुरी जिनवानी सुन हे माधुरी	11	17	X4-XX
२२. सिव देवी माता को ग्राठवी	मुनि शुभवन्द्र	17	**-**
२४. पद	>>	77	*4-*=
२५. ,,	\$3	13	≯ द− ¥ €
२६. "हलदी चहीडी तेल चहोड्यी छपन कुमारि का			
२७. ,, जे जदि साहिंग ल्यायी कीली घोडी)) 21	23	¥£¼ \$
२८. भन्य पद	-1•	19	n 3 − n c K\$ - X 3
२६६। १८६७. गुरका संदेध। पत्र	सं० ६-१२६ । प्र	" ग०६×४३ इ०। ले० व	४३-४६ गल 🗙 । मपूर्ण । वे॰ सं॰

४८३८, गुटका सं०१०। पत्र सं०४। ग्रा० ५ ३४६ इ०। विषय-सग्रह। ले० काल ४। वे० स० २६६।

१. जिनपचीसी

नवल

हिन्दी

8-2

२. सबोधपंचासिका

द्यानतराय

53

7-४

४६३६. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १०-६० । आ० ५२×४२ ६० । भाषा-सस्कृत । ले॰ काल ×। वे० सं० ३०० ।

विशेष-पूजाश्रो का संग्रहं है।

४८४० गुटका सं० ११। पत्र सं० ११४। ग्रा० ६३ ४६ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा स्तीत्र। कै० काल ४। वै० सं० ३०१।

४८४१. गुटका सं० १२। पत्र सं० १३०। ग्रा० ६३×६ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा स्तोत्र। ले० काल × । श्रपूर्ण। वे० स० ३०२।

४८४२, गुटका स० १३। पत्र सं० ६-१७। म्रा० ६२×६ इ०। माषा-हिन्दी। विर्षय-पूजा स्तोत्र। ले० सं० ×। म्रपूर्ण। वे० स० ३०३।

ध्रद्धकः गुटका सं० १४। पत्र सं० २०१ । आ० ११×५ इ०। ले० काल ×। पूर्गी । वे० स० ३०४ विशेष-पूजा स्तोत्र सग्रह है।

४८४४. गुटका सं १४। पत्र स० ७७। म्रा० १०४६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। ले० काल सं० १६०३ सावन सुदी ७। पूर्या। वे० सं० २०४।

विशेष—इखनाक मह सनीन पुस्तक को हिन्दी भाषा में लिखा गया है। मूल पुस्तक फारसी भाषा में है। छोटी २ कहानिया हैं।

४८४४. गुटका सं० १६। पत्र सं० १२६। ग्रा० ६४४ इ०। ले० काल ४। ग्रपूर्ण। वे० सं० ३०६ विशेष—रामचन्द (कवि बालक) कृत सीता चरित्र है।

४६४६. गुटका सं० १७। पत्र सं० ३-२६। श्रा० ४×२ ६०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४०७।

१. देवपूजा

संस्कृत

श्रपूर्श

२, यूलभद्रजी का रासो

हिन्दी

१0-२१

३. नेमिनाथ राजुल का बारहमासा

"

78-44

४८४७ गुटका सं० १८ । पत्र स० १६० । ग्रा० ८३४६ ६० । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० सं ३०८ विशेष —पत्र स० १ ले ३८ तक सामान्य पाठो का सग्रह है ।

१. सुन्दर श्रुङ्गार	कविराजसुन्दर	हिन्दी	३७४ पद्य है	३६-५०
२ विहारीसतसई टीका सहित	×	1)	भ्रपूर्श	5?-5X
		U	अ पद्यों की ही टी	का है।
३ वखत विलास	×	"		६६-१०३
४. वृहत्घटाकर्शकल्प	कवि भोगीलाल	"		१०४–६६०

विशेप--प्रारम्भ के = पत्र नहीं है ग्रागे के पत्र भी नहीं हैं।

इति श्री कछनाह कुलभवननरुकासी राउराजा बस्तावर्रासह ग्रानन्द कृते किन भोगीलाल विरचिते वसत

पत्र ५-५६ नायक नायिका वर्णन ।

इति श्री कछवाहा कुलभूषननरुकासी। राउराजा वस्तावर सिंह श्रानन्द कृते भोगीलाल कवि विरिचिते वस्तविलासनायकवर्णन नामाष्ट्रको विलास: ।

४८४८. गुटका, सं० १६ । पत्र सं० ४४ । म्रा० ८४६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल ४ । पूर्ण । वै० स० ३०६ ।

विशेष — खुशालचन्द कृत धन्यकुमार चरित है पत्र जीर्गा है किन्तु नवीन है।

४८४६. गुटका स०२०। पत्र सं०२१। ग्रा०६×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वै०स०३१०।

१ ऋपिमडलपूजा	सदासुख	हिन्दी	?- ?0
२ म्रकम्पनाचार्यादि मुनियो की पूजा	×	2)	१६
३. प्रतिष्ठानामावलि	×	7)	7१

४८८०. गुट्रका स०२० (क) । पत्र स०,१०२ । आ० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० ३११ ।

४८४१. गुटका सं० २१। पत्र सं० २८। आ० ५३×६३ इ०। ले० काल सं० १९३७ आवरा बुदी १। पूर्गा। वे० स० ३१३।

विशेष-मडलाचार्य केशवसेन कृष्णसेन विरचित रोहिगी वत पूजा है।

1

४५४२. गुटका सं० २२। पत्र सं० १६। ग्रा० ११×३ इ०। ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१४।

वज्रदन्तचक्रवित का वारहमासा × हिन्दी ६ २. सीताजी का वारहमासा × " ६-१२ ३. मूनिराज का वारहमासा × " १३-१६

४८४३. गुटका स० २३। पत्र सं०२३। ग्रा०८२४६ इ०। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। के० काल × । पूर्ण । वे० स० ३१५।

विशेष-गुटके मे ग्रप्टाह्मिकान्नतकया दी हुई है।

४८४४. गुटका सं० २४। पत्र स० १४ । मा० ८३४६ इ०। भाषा-हिन्दी विषय-पूजा। ले० काल सं० १६८३ पीष बुदी १। पूर्ण । वे० सं० ३१६।

विशेष-गुटके मे ऋपिमडलपूजा, ग्रनन्तव्रतपूजा, चीवीसतीर्थकर पूजादि पाठी का संग्रह है।

४८४४. गुटका सं० २४ । पत्र सं० ३४ । ग्रा॰ ८४६ इ०ः। भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । ले० काल ४ । पूर्ण । वे॰ सं० ३१७ ।

विशेष--- अनन्तव्रतपूजा तथा श्रुतज्ञानपूजा है।

४८४३. गुटका स० २६। पत्र स० ५६। ग्रा० ७४६ ६०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। ले० काल सं० १६२१ माघ बुदी १२। पूर्ण। वे० स० ३१८।

विशेष--रामचन्द्र कृत चौत्रीस तीर्थंकर पूजा है।

४५४७. गुटका स०२७। पत्र स० ५३। आ०६×५ इ०। ले० काल सं० १६५४। पूर्गा। वे० स०३१६। विशेष— गुटके मे निम्न रचनायें उल्लेखनीय हैं।

धर्मचाह
 सर्मचाह
 विहारीदास
 विहारीदास

३. सम्मेदशिखरपूजा गगादास सस्कृत ५-२०

४८४८ गुटका स० २८। पत्र सं० १६। ग्रा० ८×६′६०। ले• काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२०। विशेष—तत्त्वार्थसूत्र उमास्वामि कृत हैं।

४८४६. गुटका स॰ २६ । पत्र सं० १७६ । आ० ६४६ इ० । ते० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ३२१ । विशेष-विहारीदास कृत सतसई है । दोहा सं० ७०७ है । हिन्दी गद्य पद्य दोनो मे ही अर्थ है टीका-काल सं० १७८४ । टीकाकार कवि कृष्णदास हैं । आदि अन्तमाग निम्न है.—

प्रारम्भ.---

श्रय विहारी सतसई टीका कवित्त वध लिख्यते:— मेरी भग वाधा हरी, राधा नागरी सोई । जातन की काई परे, स्याम हरित दुति होइ ।।

टीका—यह मंगलाचरन है तहा श्री राधा जू की स्तुति ग्रथ कर्ता किव करतु है। तहा राधा ग्रीर डटे याते जा तन की काई पर स्याम हित दुति होइ या पद तें श्री वृषभान सुता की प्रतीति हुई — किन्त—

जाकीप्रभा श्रवलोकत ही तिहु लोक की सुन्दरता गहि वारि ।
कृष्ण कहै सरसी रुहे नैंनिन की नामु यहा सुद मंगल कारो ।।
जातन की भलके भलके हिरत द्युति स्याम की होत निहारी ।
श्री वृपभान कु मारि कृपा कें सुराधा हरी भव वाधा हमारो ।। १ ॥

झन्तिम पाठ---

माथुर विश्र ककोर कुल लहा। कृष्ण कवि नाउ। सेवकु ही सब कविनु की वसतु मधुपूरी गाउ।। २४।। राजा मल्ल कवि कृष्ण पर ढरघी कृपा के ढार। भाति भाति विषदा हरी वीनी दरवि श्रवार ॥ २५ ॥ एक दिना किन सी नृपति कही कही को जात। दोहा दोहा प्रति करी कवित बुद्धि प्रवदात ।। २६ ।। पहले हुँ मेरे यह हिय में हु तौ विचार । करी नाइका भेंद की ग्रंथ बुद्धि भ्रनुसार ।। २७ ।। जे कीनै पूरव कवितु सरस ग्रथ सुखदाइ। तिनहिं छाडि मेरे कवित को पढि है मनुलाइ ॥ २८ ॥ जानिय हैं श्रपने हियें कियो न ग्रंथ प्रकास । नृप की ग्राइस पाइकै हिय मे भये हुलास ।। २६ ॥ करे सात सै दोहरा सु कवि विहारीदास । सवाकोऊ तिनको पढे गुनै सुने सविलाल ।। ३०।। बडी भरोसो जानिः मै गह्यौ श्रासरो श्राइ। यार्ते इन दोहानु सग दीने किवत लगाइ ॥ ३१ ॥

उक्ति जुक्ति दोहानु की ग्रक्षर जोरि नवीन ।

करें सातसी कवित में सीखें सकल प्रवीन ।। ३२ ।।

मै ग्रत ही दोढ्यों करीं कवि कुल सरल सुकाइ ।

मूल चूक कछु होइ सो लीजों समिक वनाइ ।। ३३ ।।

सत्रह सतसे ग्रागरे ग्रसी वरस रविवार ।

कातिक वदि चोथि भये कवित सकल रससार ।। ३४ ।।

इति श्री विहारोसतसई के दोहा टोका सहित संपूर्ण ।

सतसै ग्रंथ लिख्यो श्री राजा श्री राजा साहिवजी श्रीराजामल्लजी की । लेखक खेमराज श्री वास्तव वासी मौजे ग्रंजनगीई के प्रगनै पछोर के । मिती माह सुदी ७ वुद्धवार संवत् १७६० मुकाम प्रवेस जयपुर ।

४८६०. गुटका सं० ३० । पत्र सं० १६८ । ग्रा० द×६ इ० । ले० काल × । ग्रपूर्ण वे० सं० ३५२ ।
१. तत्वार्यसूत्रभाषा कनककीित हिन्दी ग० ग्रपूर्ण
२. शालिभद्रचोपई जिनसिंह सूरि के शिष्य मितसागर , प० र० काल १६७८ , ले० काल सं० १७४३ भादवा सुदी ४ । ग्रजमेर प्रतिलिपि हुई थी ।

३, स्फुट पाठ

× ,

४८६१. गुटका सं॰ २१ । पत्र सं॰ ६० । आ० ७४५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । ले॰ काल × । अपूर्ण । वे० सं॰ २२३ ।

विशेष-पूजाम्रो का संग्रह है।

४८६२. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० १७४ । आ० ८४६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा पाठ । ले• काल ४ । पूर्या । वे० सं० ३२४ ।

विशेष-पूजा पाठ संग्रह है । तथा नन हिन्दी पद नैन (सुखनयनानन्द) के हैं।

४८६३. गुटका सं० ३३। पत्र सं० ७५। आ० ६×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ३२४।

विशेष--रामचन्द्र कृत चतुर्विशतिजिनपूजा है।

४८६४. गुटका सं० ३४। पत्र सं० ६६। ग्रा० १४६ ६०। विषय-पूजा। ले० काल सं० १८६१ श्रावण सुदी ११। वे० सं० ३२६।

विशेष—चौवीस तीर्थंकर पूजा (रामचन्द्र) एवं स्तोत्र संग्रह है। हिण्डौन के जती रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

४८ इ. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० १७ । ग्रा० ६४७ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल ४ । पूर्ण ।

विशेष-पावागरि सोनागिर पूजा है।

४८६६. गुटका स० ३६ । पत्र स० ७ । मा० ८४५१ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा नार्ठ एव ज्योतिषपाठ । ले० काल ४ । म्रपूर्ण । वे० सं० ३२८ ।

१. वृहत्पोडशकारण पूजा

×

संस्कृत

"

२. चाणक्यनीति शास्त्र

चाएारय

३ शालिहोत्र

X

सम्कृत

म्रपूर्श

क्ष्रद्भ गुटका सं० ३७। पत्र स० ३०। ग्रा० ७×६ इ०। भाषा-सस्कृत । ले० वाल ×। ग्रपूर्ण ।

४८६८. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० २४ । ग्रा० ५×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष--पूजाग्रो का सग्रह है। इसी मे प्रकाशित पुस्तके भी बन्धी हुई हैं।

४८६६. गुटका सं० ३६। पत्र स० ४४। ग्रा० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल × । पूर्ण। वै० सं० ३३१।

विशेप-देवसिद्धपूजा म्रादि दी हुई हैं।

४८७०. गुटका सं०४०। पत्र सं०८०। ग्रा०४×६९ ६०। भाषा-हिन्दी। विषय ग्रायुर्वेद। ले• काल ×। ग्रपूर्ण। वे० स० ३३२।

विशेप-ग्रायुर्वेद के नुसखे दिये हुये है पदार्थों के गुएगो का वर्रान भी है।

४८०१. गुटका स० ४१। पत्र स० ७१। म्रा० ७४५३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दो । ले० काल ४। पूर्ण। वै० सं० ३३३।

विशेष-पूजा पाठ संग्रह है।

४८७२. गुटका सं १४२। पत्र स० ८६। ग्रा० ७४५३ ६०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल सं० १८४६। ग्रपूर्ण। वे० सं० ३३४।

विशेष—विदेह क्षेत्र के वीस तीर्थंकरो की पूजा एव ग्रढाई द्वीप पूजा का सग्रह है। दोनो ही ग्रपूर्ण हैं। जौहरी काला ने प्रतिलिपि की थी।

४८७३. गुटका सं० ४३। पत्र स० २८। आ० ८३×७ ड०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। ले० काल ×। पूर्ण। वे॰ सं० ३३४।

४८७४. गुटका सं० ४४। पत्र सं० ४८। म्रा० ६४५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ४। पूर्ण। वे॰ सं० ३३६।

विशेष--हिन्दी पद एवं पूजा संग्रह है।

४८७/. गुटका स० ४४। पत्र स० १०८। म्रा॰ ८३×३३ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा पाठ। ले॰ काल ×। पूर्ण। वे॰ स० ३३७।

विशेष—देवपूजा, सिद्धपूजा, तत्वार्थसूत्र, कल्याणमन्दिरस्तोत्र, स्वयभूस्तोत्र, दशलक्षरा, सोलह्कारण मादि का सग्रह है।

४८७६. गुटका स० ४६। पत्र स० ४५। म्रा० ८४६ । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० सं० ३३८।

विशेष-तत्वार्थसूत्र, हवनविधि, सिद्धपूजा, पार्श्वपूजा, सोलहकारए। दशलक्षरा पूजाएं है।

४८७७. गुटका सं० ४७। पत्र सं० ६६। ग्रा० ७४५ इ०। भाषा हिन्दी। विषय-कथा। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं० ३३६।

१. जेष्ठजिनवरकया	खुशालचन्द	े हिन्दी	१–६
		र० काल	सं० १७८२ जेठ सुदी ६
२ म्रादित्यव्रतकथा	33	हिन्दी	41-18
३. सप्तपरमस्थान	27	27	१ ६–२६
४ मुकुटसप्तमीव्रतकथा	n	5 1	२६ –३०
५ दशलक्षरावृतकथा	77	77	₹0 — ₹४
६ पुष्पाञ्जलिवतकथा	,,	"	₹ %- ४०
७ रक्षाविधानकथा	>>	सस्कृत	¥ १- ¥ <u>¥</u>
८ उमेश्वरस्तो त्र	n	95	४ ६–६६

४८८६ गुटका स०४८। पत्र स०१२८। ग्रा०६४५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-ग्रध्यात्म। र० , काल स०१६९३। ले० काल ४। ग्रपूर्ण। वे० सं०३४०।

विशेष--बनारसीदास इत समयसार नाटक है।

४८७६. गुटका सं० ४६। पत्र स० ४६। म्रा० ५×५ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३४१।

विशेष-गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं-

१. जैनशतक	भूधरदाम	हिन्दी	{- {\$
२. ऋपिमण्डलस्तोत्र	गौतमस्वामी	सस्कृत	१४-२०
३ ऋकावनीसी	नन्दराम	ले० कार	7 1555 34-43

४८८०. गुटका सं० ४०। पत्र सं० २५४। ग्रा० ५४५ ६०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा पाठ ले० काल 🗙 । पूर्ण। वे० सं० ३४२

४८८१. गुटका स० ४१। पत्र स० १६३। म्रा० ७३×४३ द०। भाषा-हिन्दे सस्त्रत । ते० कात सं० १८८२। पूर्ण । वे० सं० ३४३।

विशेष-गुटके के निम्न पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय है।

१. नवग्रहगभितपार्श्वस्तीत्र	×	' प्र.कृत	₹-२
२. जीवविचार	ग्रा० नेमिचन्द्र	37	₹-4
३. नवतत्त्वप्रकरण	×	33	¥1–3
४, चौबीसदण्डकविचार	×	हिन्दी	१ ५—६८
५. तेईस वोल विवरण	×	9 7	६६-६५

विशेष— दाता की कसौटी दुरिभछ परे जान जाइ।

सूर की कसीटी दोई शनी जुरे रन मे ।)

मित्र की कसीटी मामलो प्रगट होय। हीरा की कसीटी है जौहरी के धन मे ।।

कुल को कसौटी मादर सनमान जानि।

सोने की कसौटी सराफन के जतन मे 11

कहै जिननाम जैसी वस्त तैसी कीमति सीं।

साधु की कसीटी है दुष्टन के वीच मे 11

१. विनती

समयसुन्दर

हिन्दी

१०३-१०३

२. द्रव्यसग्रहभापा

हेमराज

77

११७-१४१

्र० काल सं० १७३१ माघ सुदी १०। ले० काल सं० १८७६ फाल्युन सुदी ६।

४८८२ गुटका स० ४२। पत्र स० ३४। म्रा० ७३४४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८८४ कार्तिक बुदी १३। वे० सं० ३४४।

विशेष-पूजा पाठ संग्रह है। प० सदासुखजी ने प्रतिलिपि की थी।

४८८२. गुटका सं० ४३। पत्र सं० ८० । ग्रा० ६६ँ×५३ ६० । भाषा—हिन्दी । ले० काल ४। पूर्ण । वै० सं० ३४४।

विशेष--सामान्य पाठो का संग्रह है।

४८८४. गुटका सं० ४४। पत्र सं० ४४। म्रा० ६३४६ इ०। भाषा-हिन्दी। म्रपूर्ण। वे० सं० ३४६ विशेष—भूधरदास कृत चर्चा समाधान तथा चन्द्रसागर पूजा एवं शान्तिपाठ है।

४८८. गुटका सं० ४४। पत्र सं० २०। म्रा० ६३×६ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा पाठ

्र ४८८६ गुटका स० ४६। पत्र सं० ६८। आ० ६३×४३ ६०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। विषय-पूजा पाठ। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स ३४८।

४८८. गुटका सं० ४७। पत्र सं० १७। म्रा० ६६ँ×५६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ३४६।

विशेप--रत्नत्रय व्रतिविध एव कथा दी हुई हैं।

४८८८. गुटका सं० ४८। पत्र सं० १०४। ग्रा० ७×६ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा पाठ। ले॰ काल ×। पूर्ण। वे॰ सं॰ ३५०)

विशेष-पूजा पाठ सग्रह है।

४८८६. गुटका स० ४६। पत्र सं० १२६। ग्रा० ६२४५ इ०। हुभापा-संस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्या । वे० स० ३५१।

विशेष-रुग्नविनिश्चय नामक ग्र'थ है।

४८०. गुरका स० ६०। पय स० ११३। श्रा० ४×३ इ०। भाषा—सःकृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३५२।

विशेप-पूज. स्तोत्र एव बनारसी विलास के कुछ पद एवं पाठ हैं।

४८६१. गुटका सं० ६१। पत्र सं० २२३। म्रा० ४×३ इ०। मापा-संस्कृत हिदी। ले० काल ४। पूर्गा। वे० स० ३५३।

विशेप--पूजा पाठ संग्रह है।

४८६२. गुटका सं० ६२। पत्र सं० २०८। म्रा० ६४४ ई इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं० ३५४।

विशेष—सामान्य स्तोत्र एव पूजा पाठो का सग्रह है ---

४८६३ गुटका सं० ६२। पत्र सं० २६३। ग्रा० ६५४६ इ०। भाषा-हिन्दी ले० काल ×। ग्रपूर्ण।

विशेष---निम्न पाठो का सग्रह है।

१. हनुमतरास	ब्रह्मरायमल	हिन्दी	48-86
		ले० काल स० १८	६० फाग्रुग बुदी ७।
२. शालिभद्रसज्काय	×	हिन्दी	33-23
३. जलालगाहाएी की वार्ता	×	77	१०१–१४७
		ले० काल	१८५६ माह बुदी ३
विशेष—कोठ्यारी प्रतापि	सह पठनार्थ लिखी हलसूरिमध्	ये ।	
४. तत्रसार	×	17 पद्यः	स० ४८ १४८-१५२
५. चन्दकुंवर की वार्ता	×	99	१५२-१६४
६. घग्घरनिसार्गी	जिनहर्ष	"	१६५ –१ ६६
.७, सुदयवद्यसालिंगा री वार्ता	×	, , য	पूर्ण १७०-२६३

४=६४. गुटका सं० ६४। पत्र सं० ६७। ग्रा॰ ६२ ४४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। पूर्ण। ले॰ क ल ×। वे॰ सं० ३५६।

विशेष--नवमञ्जल विनोदीलाल कृत एवं पद स्तुति एवं पूजा सग्रह है।

४८६४ गुटका सं० ६४। पत्र सं० ६३। आ० ६४४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल 🗴।

विजेप--सिद्धवक्रपूजा एव पद्मावती स्तोत्र है।

४८६६. गुटका सं० ६६। पत्र स० ४४। ग्रा० ६×४६ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-पूजा। ने० कान ×। पूर्ण। वे० सं० ३४८।

४=१७. गुटका संट ६७। पत्र स० ४६। ग्रा० ५३×४३ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० ३५१।

विशेष-भक्तामरस्तोत्र, पचमगल, देवपूजा म्रादि का संग्रह है।

े ४८६८. गुटका सं०६८। पत्र सं०६४। ग्रा०४×३ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय–स्तोत्र संग्रह ले० काल ४। वै० सं०३६०।

४८६६. गुटका स० ६६। पत्र सं० १५१। म्रा० ७ ४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल 🗴। पूर्श। वे० स० ३६१।

विशेष-मुख्यत: निम्न पाठो का सग्रह है।

१, सत्तरभेदपूजा साधुकीर्ति हिन्दी १-१४ २. महावीरस्तवनपूजा समयसुन्दर ,, १४-१६ ३ धर्म गरीक्षा भाषा विशालकोति ,, ले० काल १६६४ ३०-१५१

विशेष--नागरुर मे प० चतुर्भु ज ने प्रतिलिपि की थी।

४६००. गुटका स० ७०। पत्र स० ५६। म्रा० ५३×५ इ०: भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८०२ पूर्या। वे० स० ३६२।

१ महादण्डक

X

हिन्दो

37

₹-५३

ले० काल स० १८०२ पौष बुदी १३।

विशेष - उदयविमल ने प्रतिलिपि की थी। शिवपुरी मे प्रतिलिपि की गई थी।

२ बोल

×

५४–५६

४६०१. गुटका सं० ७१। पत्र स० १२३। ग्रा० ६६४४ इ० भाषा ५स्कृत हिन्दी। विषय-स्तोत्रसग्रह ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६३।

४६०२. गुटका स० ७२। पत्र सं० १५७ । ग्रा० ४×३ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दो । ले० काल ४। पूर्ण। वे० स० ३६४।

विशेय-पूजा पाठ व स्तीत्र भ्रादि का संग्रह है।

४६०३ गुटका सं० ४३। पत्र सं० १६। म्रा० ४×३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ल० काल ×। पूर्श। वे० सं० ३६४।

१ पूजा पाठ सग्रह X संस्कृत हिन्दी १-४४ २. श्रायुर्वेदिक नुसखे X हिन्दी ४५-६६

४६०४. गुटका सं० ७४। पत्र सं० ५०। म्रा० ५३×५३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। म्रपूर्णं वै० स० ३६६।

विशेष—प्रारम्भ मे पूजा पाठ तथा नुसखे दिये हुये हैं तथा भ्रन्त के १७ पत्रो मे संवत् १०३३ से भारत के राजाओं का परिचय दिया हुआ है।

४६०४. गुटका सं० ७४। पत्र सं० ६०। म्रा० ५ ई ४५ ई इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल ४। मृतूर्गा। वे० सं० ३६७।

विशेप-सामान्य पाठो का सग्रह है।

प्रह०६. गुटका सं० ७६। पत्र स० १५-१३७। ग्रा० ७×३६ इ०। भाषा हिन्दी सस्कृत। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। ने० सं० ३६८।

विशेप--- प्रारम्भ मे कुछ मंत्र हैं तथा फिर ग्रायुर्वेदिक नुसखे दिये हुये हैं।

४६०७. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० २७ । म्रा० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । म्रपूर्ण वे० सं० ३६६ ।

१. ज्ञानिवन्तामिए।	मनोहरदास	हिन्दी	१२६ पद्य हैं	39-9
२. वज्रनःभिचक्रवर्ती की भावना	भूघरदास	17		१६-२३
३ सम्मेदगिरियूजा	×	"	[`] श्रपूर्ण	२२२७

४६०८ गुटका सं० ७८। पत्र स० १२०। म्रा० ६×३५ इ०। भाषा-सस्कृत। ले० काल ×। म्रपूर्ण से० स० ३७१।

विशेप-नाममाला तथा लव्यसार म्रादि मे से पाठ है।

गुटका-संप्रह]

४६०६. गुटका सं० ७६। पत्र सं० ३० । ग्रा० ६६ ४४६ इ०। भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८१ । पूर्ण । वे० सं० ३७१।

विशेष — ब्रह्मरायमल कृत प्रद्युम्नरास है।

४६१०. गुटका सं० ८०। पत्र सं० ५४-१३६। म्रा० ६३×६ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। म्रपूर्ण। वे० स० ३७२।

विशेष---निम्न पाठो का संग्रह है।

१ श्रुतस्कन्ध	हेमचन्द	प्राकृत	ग्रपूर्ण	x8-0E
२. मूलसंघ की पट्टावलि	×	संस्कृत		८०−८ <i>३</i> ,
३. गर्भपडारचक्र	देवनन्दि	77		5 8- 80
४. स्तोत्रत्रय	×	संस्कृत		६०-१०४
	एकीभाव, भक्तामर एवं	भूपालचतुर्विश	ति स्तोत्र हैं।	
५. वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनिन्द	22		१०५–१०६
६. पार्वनावस्तवन	राजसेन [वीरसेन के शिष्य]	77	٤ "	१०६–१०७-
७, परमात्मराजस्तोत्र	पद्मनिन्द	"	१४ "	309-808
ട . सामायिक पाठ	ग्रमितिगति	57		११०-११३)
६. तत्वसार	देवसेन	प्राकृत		३११–११६
१०. ग्राराधनासार	3 3	17		१२४-१३४
११. समयसारगाथा	म्रा० कुन्दकुन्द	33		१३४-१३८

४६११. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० २-५६ । ग्रा० ६४४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले• काल सं० १७३० भादवा सुदी १३ । ग्रपूर्ण । वे० सं० ३७४ ।

विशेष--कामशास्त्र एवं नायिका वर्शन है।

१६१२. गुटका सं० ८२। पत्र सं० ६३४६ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० ३७४। विशेप—पूजा तथा कथाग्रो का संग्रह है। म्रन्त मे १०६ से ११३ तक १८ वी शताब्दी का (१७०१ से १७५६ तक) वर्षा ग्रकाल युद्ध ग्रादि का योग दिया हुग्रा है।

४६१३. गुटका सं० ८३ । पत्र सं० ८६ । श्रा० ६४४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल ४ । जीर्रा ।

१ कृप्एारास

X

पद्य सं० ७६ है १-१६ हिन्दी

महापुराण के दशम स्कन्ध में से लिया गया है।

२. कालीनागदमन कथा

×

"

18-28

३. कृष्णप्रेमाप्टक

X

37

२६-२८

४६१४. गुटका सं० ८४१ । पत्र सं० १५२-२४१ । म्रा० ६३×५ इ० । भाषा-सस्कृत । ले० काल ×। श्रपूर्श । वे० स० ३७६ ।

विशेष-वैद्यकसार एव वैद्यवल्लन ग्रन्थो का संग्रह है।

४६१४. गुटका स० ८४। पत्र सं० ३०२। ग्रा॰ ८×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले॰ काल ×। ग्रपूर्ण। वे० स० ३७७।

विशेप-दो गुटको का एक गुटका कर दिया है। निम्न पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय है।

१. चिन्तामिएाजयमाल	ठ न कुरसी	हिन्दी	११ पद्य है	२०–२२
२. वेलि	छीहल	"		२२-२५
३. टडागागीत	वूचा	17		२५-२=
४. चेतनगीत	मुनिसिंहनन्दि	**		२८-३०
५. जिनलाहु	ब्रह्मरायम ल	"		३०-३१
६. नेमीश्वरचीमासा	सिंहनन्दि	**		३ २–३३
७ पंथीगीत	छीहल	"		४१–४२
८, नेमीरवर के १० भव	ब्रह्मधर्मरुचि '	17		४३– ४७
६ गीत	कवि पल्ह '	37		४७- ४५
१० सीमंबरस्तवन	ठक्कुरसी	17		8É-4°
११ श्रादिनायस्तवन	किं पल्ह	"		8E-X0
१२. स्तोत्र	भ० जिनचन्द्र देव	33		५०-५१
१३ पुरन्दर चौपई	व्र॰ मालदेव ⁻	97		५२–५७
		ले॰ काल सं० १६	०७ फाग्रुगा बुद	। अर्
१४ मेघकुमार गीत	पूनी	99 /		१२–१५
१५. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	ब्रह्मरायब्रह्म	49		२६–२६

5)

श्रपूर्ण

गुटका-संप्रह

१६. विलभद्र गीत भ्रभयवन्द
भविष्यदत्त कथा प्रह्मरायमल
भविष्यदत्त कथा
भविष्यदित्त क

ले० काल १६४३ ग्रासोज १३।

१६. हनुमन्तरास

37

४६१६. गुटका स० ५६ । पत्र सं० १८८ । ग्रा० ६४६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा एव स्तोत्र । ले० काल सं० १८४२ भादता सुदो १ । पूर्ण । वे० सं० ३७८ ।

४६१७. गुटका स० ८७। पत्र सं० ३००। पा० ५३×४ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३७६।

विशेष-पूजा एव स्तोत्रो के ग्रतिरिक्त रूपचन्द, वनारसोदास तथा विनोदीलाल ग्रादि कवियो कृत हिन्दा पाठ है।

्र ४६१८. गुटका सं० ८८। पत्र सं० ५८। ग्रा० ६४५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। ले० काल ४। ग्रपूर्णं। वे० सं० ३८०।

विशेप-भगतराम कृत हिन्दी पदो का संग्रह है।

४६१६. गुटका सं० ८६। पत्र स० २-२६६। ग्रा० ८४६०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल ४। श्रपूर्ण। वे० सं० ३८१।

विशेष---निम्न पाठो का सग्रह है।

१. पश्चनमस्कारस्तोत्र उमास्वामि संस्कृत १६-२०
 २. वारह अनुप्रेक्षा × प्राकृत ४७ गाथायें हैं । २१-२५
 ३. भावनाचतुर्विश्वित पद्मनिद्द संस्कृत
 ४. अन्य स्फुट पाठ एवं पूजायें × संस्कृत हिन्दी

४६२० गुटका स०६०। पत्र सं० ३-६१। म्रा० ५×५ है इ०। भाषा -हिन्दी। विषय-पद संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५२।

विशेष--नलवराम के पदो का संग्रह है।

४६२१ गुटका स०६१। पत्र स०१४-४६। म्रा० ८३×५३ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३८३।

विशेष-स्तोत्र एवं पाठो का संग्रह है।

४६२२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० २६ । ग्रा० ६४५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल ४ । ग्रपूर्या । वे० मं० ३८४ ।

विशेप-सम्मेदगिरि पूजा है।

४६२३. गुटका सं० ६३ । पत्र स० १२३ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० ३८५।

विशेप-मुख्यत निम्न पाठो का संग्रह है।

१. चेतनचरित	भैया भगवतीदास	हिन्दी	१-१•
२. जिनसहस्रनाम	श्राशाधर	संस्कृत	११-१५
३. लघुतत्त्वार्यसूत्र	×	77	₹₹–₹४
४. चीरासी जाति की जयमाल	×	- हिन्दी	36-80
५. सोलहकारगाकया	व्रह्मज्ञानसागर ₋	हिन्दी	७१-७४
६. रत्नत्रयकथा	? ?	"	७४–७६
७. ग्रादित्यवारकया	भाऊकवि	17	७६–न६
द . दोहाशतक	रूपचन्द	47	88–68
६. त्रेपनिक्रया	ब्रह्मग्रुलाल	"	89-58
१०. ग्रष्ठाहिनका कथा	ब्रह्मज्ञानसागर	3 7	१०० - १०४
११. ग्रन्यपाठ	×	77	१ ०५–१२३

४६२४. गुटका सं० ६४। पत्र सं० ७-७६। ग्रा॰ ५ \times ३३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले॰ काल \times । श्रपूर्ण। वे॰ सं॰ ३६६।

विशेप-देवाब्रह्म के पदो का संग्रह है।

४६२४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ३-६६ । ग्रा० ६४५ ई इ० । भाषा हिन्दी ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण ।

४६२६. गुटका सं० ६६ । पत्र स० ६६ । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्र शास्त्र । ले० काल स० १८६५ । पूर्ण । वे० सं० ३८८ ।

गुट	का-सम्रह]			f @8s
१	भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमत्रयत्रसहित	मानतु गाचार्य	संस्कृत	१-४३
٦,	पद्मावतीकवच	×	99	४३–५२
₹.	पद्मावतीसहस्रनाम	×	99	४२–६३
٧,	पद्मात्रतीस्तोत्र वीजमंत्र एवं साधन वि	धे X	57	६३ — = ६
ሂ.	पद्मावतोपटल	×	37	5 %-5 0
ξ,	. पद्मावतीदंडक	×	<i>)</i> 7	59-58

४६२७. गुटका सं० ६७। पत्र सं० ६-११३ ग्रा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। श्रपूर्णं वे० सं० ३८६।

१. स्फुटवार्ता	×	हिन्दी	श्रपूर्ण	६–२२
२. हरिचन्दशतक	×	17		२३–६६
३. श्रीघूचरित	×	**		६ 3- ० ३
४. मल्हारचरित	×	7>	श्रपूर्ण	E3-883

४६२८. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ५३ । आ० ५×५ ६० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६० ।

विशेप-स्तोत्र एवं तत्वार्थसूत्र ग्रादि सामान्य पाठो का संग्रह है।

४६६६ गुटका सं० ६६। पत्र सं० ६-१२६। श्रा० पर्-१४६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६१।

४६२०. गुटका सं० १०० । पत्र सं० मम । ग्रा० मळ ६० । भाषा-हिन्दी । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० स० ३६२ ।

१. म्रादित्यवारकथा	×	हिन्दौ	१४−३ ४
२. पक्की स्याही बनाने की विधि	×	"	३ ४
३. संकट चीपई कथा	×	37	₹5-8₹
४. कक्का बत्तीसी	×	77	8 %- %0
५. निरंजन शतक ,	×	? >	५१-

विशेष—लिपि विकृत है पढने मे नही ग्राती।

४६३१. गुटका सं० १०१। पत्र सं० २३। आ० ६६×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ४। अपूर्ण। सं• ३६३।

विशेष—कवि सुन्दर कृत नायिका लक्षरा दिया हुम्रा है। ४२ से १५० पद्य तक है।

४६३२. गुटका सं० १०२। पत्र सं० ७५-१०१। म्रा० ५×७ ६०। भाषा-हिन्दी। विषय-सम्रह।
ले० काल ×। म्रपूर्ण। वे० सं० ३६४।

१ चतुर्दशी कथा

डालूराम

हिन्दी र० काल १७६५ प्र जेठ सुदी १०

ले॰ काल सं॰ १७६५ जेठ सुदी १४। मपूर्या।

विशेष--- २६ पद्य से २३० पद्य तक हैं।

मध्य भाग---

दोहा-

माता ए सो हठ मित करी, संजम विना जीव न निसतरें।
काकी माता काको बाप, ग्रातमराम ग्रकेलो ग्राप ॥ १७६॥
ग्राप देखि पर देखिये, दुख सुख दोउ भेद।
ग्रातम ऐक विचारिये, भरमन कहु न छेद॥ १७७॥
मगलाचार कंवर को कीयो, दिख्या लेगा कवर जब गयो।

सुवामी ग्राग जौड्या हाथ, दीख्य दोह मुनीसूर नाथ ।। १७८ ।।

श्रन्तिमपाठ---

वुधि सारु कथा कही, राजघाटी मुलतान ।

करम कटक में देहरीं बैठो पचै सु जारा।। २२८।।

सतरासे पचावने प्रथम जेठ सुदि जानि।

सोमवार दसमी मानी पूरण कथा चलानि।। २२६।।

खंडेलवाल बौहरा गोत, श्रावावतो में वास।

डालु कहै मित मौ हंसी, हू सबन कौ दास।। २३०।।

महाराजा वीसनिसहजी श्राया, साह्या श्राल को लार।

जो या कथा पढे सुर्ण, सो पुरिष में सार।। १३१।।

चौदश की कथा संपूर्ण। मिती प्रथम जेठ सुदी १४ संवत् १७६५

२. चौदशकीजयमाल

X

हिन्दी

¥3-53

३. तारातबोलकी कथा

X

,, ले० काल सं० १७६३ ६४-६६

 ४. नवरत्न कित्त
 वनारसीदास
 "
 ६७-६६

 ५. ज्ञानपच्चीसी
 "
 "
 ६५-१००

 ६. पद
 ×
 "
 अपूर्ण १००-१०१

४६३३. गुटका स० १०३ । पत्र सं० १०-५५ । ग्रा० ५३×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६५ ।

विशेष-महाराजकुमार इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया है।

४६३४. गुटका सं० १०४। पत्र सं० ७। ग्रा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी । ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष--हिन्दी पदो का संग्रह है।

हेटजी है जाहराही की जागाविक गर्ज

ज भगडार [दि॰ जैन मन्दिर यति यशोदानन्दजी जयपुर]

४६३४. गुटका सं० १। पत्र सं० १४०। ग्रा० ७३४५३ इ०। लिपि काल ४। विशेप—मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है।

faraft

र, दहला के वादशाहा का नामावाल एव		हिन्दा	१–१६		
परिचय	×	ले० काल सं० १८४	२ जेठ बुदी ५।		
२. कवित्तसंग्रह	×	77	२०-४४		
३. शनिश्चर की कथा	×	93 गद्य	४५–६७		
४. कवित्त एवं दोहा स्त्रह	×	77	६८–६४		
४. द्वादशमाला	कवि राजसुन्दर)	£4-EE		
ले० काल १८५६ पौप बुदी ५ । विशेष—रण्थमभौर मे लक्ष्मण्दास पाटनी ने प्रतिलिपि की थी ।					
४६३६ गुटका सं०२। प विशेप—पूजा पाठ संग्रह है		८ ८३ ६० ।			
४६३७. गुटका सं० ३।	ात्र सं० ३-१५३। ग्रा०	६×५२ इ० ।			
विशेष—मुख्यतः निम्न पाठी	का संग्रह है।				
१ गीत-धर्मकीर्ति	×	हिन्दी	₹-४		
(जिए।वर ध्याइयडावे, मनि चि	त्या फलु पाया)		, ,		
२. गोत-(जिएावर हो स्वामी चरण	मनाय, सरसति स्वामिखि	र्वानऊ हो)			

-00 1			
१. पुष्पाञ्जलिजयमाल	×	ग्र पत्र ंश	6-5 4
२. लघुकल्यागुपाठ	×	हिन्दी	२४-२६
३. तत्वसार	देवसेन	प्राकृत	¥6-40
४. श्राराधनामार	"	"	53 - 200
५. द्वादशानुप्रेक्षा	लध्मीसेन	"	१००-१११
६. पार्श्वनायस्तोत्र	पद्मनिद	सस्रुत	१११-११२
७ द्रन्यसंग्रह	ग्रा० नेमिचन्द	प्राहृत	१४ ६-१ ५१

ि शहका संबह

४६३८. गुटका सं० ४। पत्र मं० १८६। म्रा० ६४८ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० नाल सं० १८४२ म्रापाढ सुदी १५।

विशेप--निम्न पाठो का सग्रह है।

ଓ୪୪

र. पार्श्वपुराए। भूषरदास हिन्दी १-१०२
 र. एकसोग्रुनहत्तरजीव वर्णन x , १८४२ १०४
 हनुमन्त चीपाई व्र० रायमल , १८२२ घ्रापाड सुदी ३ ,

४६३६. गुटका स० ४। पत्र सं० १४०। म्रा॰ ७३×४ इ०। भाषा-सस्तृत।

विशेप--पूजा पाठ संग्रह है।

४६४०. गुटका सं० ६ । पत्र मं० २१३ । स्ना० ६×५ ६० । भाषा-संस्कृत । ते० काल × । विशेष-सामान्य पाठो का संग्रह है ।

४८४१. गुटका सं० ७। पत्र सं० २२०। ग्रा० ६×७३ इ०। भाषा- हिन्दी। ले० काल ×। पूर्णं। विशेष---पं० देवीचन्दकृत हितोपदेश (संस्कृत) का हिन्दी भाषामे ग्रर्थ दिया हुग्रा है। भाषा गद्य ग्रीर पद्य दोनो मे है। देवीचन्द ने ग्रपना कोई परिचय नहीं लिखा है। जयपुर मे प्रतिलिपि की गई थी। भाषा साधारए। है ---

भव तेरी सेवा मे रहि हो । श्रेसे कहि गंगदत्त कुवा महि ते नीकरो ।

दोहा-छुटो काल के गाल मे श्रव कही काल न श्राय।

श्रो नर श्ररहट मालतें नयो जनम तन पाय।।

वार्त्ता—साप की दाढ में ते छूटी ग्ररु कही नयी जनम पायो । कूवे मे ते वाहिर ग्राय यो कही वहा साप कितनेक वेर तो वाट देखी । न ग्रायो जब ग्रातुर भयो । तब यो कही मे कहा कीयो । जदिप कुवा के मेडक सब दायो पै जब लग गंगादत्त को न खायो तब लग रख्न कहु खायो नही ।

गुटका-संत्रह]

४६४२. गुटका सं दा पत्र सं १६६-४३०। आ० ६×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष-वुलाकीदास कृत पाडवपुराण भाषा है।

४६४३. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १०१ । ग्रा० ७३×६३ इ० । विषय-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एवं सामान्य पाठो का संग्रह है।

४६४४ गुटका सं० १०। पत्र सं० ११८। म्रा० ५३×६ इ०। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सग्रह। ले० काल सं० १८६० माह बुदी १। पूर्ण।

१. सुन्दरविलास

सुन्दरदास

हिन्दी

१ से ११६

विगेष-- त्राह्मण चतुर्भु ज खडेलवाल ने प्रतिलीपि की थी।

२. वारहखडी

दत्तलाल

75

विशेष—६ पद्य है।

४६४४. गुटका सं० ११। पत्र स० ४२। आ० ८३ ४६ इ०। भाषा-हिन्दी पद्य। ले० काल स० १६०८ चैत बुदी ६। पूर्ण।

विशेष — वृंदसतसई है जिसमे ७०१ दोहे हैं। दसकत चीमनलाल कालख हाला का।

४६४६. गुटका सं० १२। पत्र स० २०। ग्रा० प्र×६३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १९६० ग्रासोज बुदी १। पूर्या।

विशेष--प चमेरु तथा रत्नत्रय एवं पार्श्वनाथस्तुति है।

४६४७. गुटका सं० १३। पत्र सं० १५५। ग्रा० ८४६% इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १७६० ज्येष्ठ सुदी १। ग्रपूर्या।

निम्नलिखित पाठ हैं—

कल्याग्रमंदिर भाषा, श्रीपालस्तुति, ग्रठारा नाते का चौढाल्या, भक्तामरस्तोत्र, सिद्धपूजा, पार्श्वनाथ स्तुति [पद्मप्रभदेव कृत] पचपरमेष्टी ग्रुग्माल, शान्तिनाथस्तीत्र ग्रादित्यवार कथा [भाउकृत] नवकार रासो, जोगी रासो, श्रमरगीत, पूजाष्ट्रक, चिन्तामिंग पार्श्वनाथ पूजा, नेमि रासो, ग्रुरुस्तुति ग्रादि ।

बीच के १०० से १३२ पत्र नहीं है। पीछे काटे गये मालूम होते हैं।

म भगडार [शास्त्र भगडार दि० जैन मन्दिर विजयराम पाड्या जयपुर]

४६४८ गुटका सं०१। पत्र सं०२०। ग्रा० ५३×४ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-सग्रह। ले॰ काल सं १६५८ । पूर्ण । वे० स० २७ ।

विशेष--- श्रालोचनापाठ, सामायिकपाठ, छहढाला (दौलतराम), कर्मप्रकृतिविधान (बनारसीदास), अकृतिम चैत्यालय जयमाल आदि पाठों का सग्रह है।

४६४६. गटका सं०२। पत्र स०२२। ग्रा० ५३×४ इ०। भाषा-हिन्दी पद्य। ले० काल ×। पूर्श। वे० स० २६।

विशेप-वीररस के कवित्तो का सग्रह है।

४६४० गुरका स०३। पत्र स०६०। श्रा०६×६ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल XI पूर्ण । जीर्गा शीर्ग । वे० स० ३० ।

विशेप-सामान्य पाठो का सग्रह है।

४६४१. गुटका स० ४ । पत्र स० १०१ । म्रा० ६×६ द० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३१।

विशेप-मूख्यत निम्न पाठो का सग्रह है।

\$	जिनसहस्रनामस्तो	त्र वनारसीदास	हिन्दी	8 9-9
२	लहुरी नेमीश्वरकी	विश्वभूषरा	"	१६–२१
₹.	पद- ग्रातम रूप	सुहावना द्यानतराय	"	२२
٧.	विनती	×	99	२३–२४
	f	वंशेप—रूपचन्द ने सागरे मे स्वपठना	र्थ लिखी थी।	
ų.	सुखयडी	हर्पकीत्ति	37	२४-२५
€.	सिद्दरप्रकरण	वनारसीदास	"	२५–४७
હ	ग्रध्यात्मदोहा	रूपचन्द	3 3	४७-४४
۲,	सायुवदना	वनारसोदास	77	⊀ ⊀–⊀e
٤.	मोक्षपैडी	97	77	x=- {{ .
१०.	क्रमं प्रकृतिविधान	"	77	७६–६१

११. विनती एवं पदसंग्रह

X

हिन्दी

१०१-१3

् ४६४२. गुटका सं० ४। पत्र सं० ६-२६। मा० ४४४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ४। म्रपूर्ण। वे० स० ३२।

विशेष—नेमिराजुलपचीसी (विनोदीलाल), बारहमासा, ननद भौजाई का भगडा ग्रादि पाठो का संग्रह है ।

१६१३. गुटका स०६। पत्र स०१६। म्रा०६×४५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेप — निम्न पाठ है — पद, चौरासी न्यात की जयमाल, चौरासी जाति वर्णन ।

४६४४ गुटका सं०७। पत्र सं०७। मा० ६४४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं०१६४३ वैशाख सुदी १। म्रपूर्ण। वे० स०४२।

विशेष-विपापहारस्तोत्र भाषा एव निर्वाणकाण्ड भाषा है।

४६४४. गुटका स० = । पत्र स० १८४ । ग्रा० ७४५ई इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्तोत्र । ले० काल ४ । पूर्ण | वे० स० ४३ ।

१. उपदेशशतक	द्यानतराय	हिन्दी	१- ३५
२. छहढाला (ग्रक्षरवावनी)	57	"	35-26
३. धर्मपचीसी	77	77	३६-४२
४. तत्वसारभाषा	53	32	47- 8E
५. सहस्रनामपूजा	धर्मचन्द्र -	सस्कृत	& E-\$@¥
६ जिनसहस्रनामस्तवन	जिनसेनाचार्य	57	१–१२

ले॰ काल सं॰ १७६८ फाग्रुन सुदी १०

४६४६. गुटका सं० १ । पत्र सं० १३ । म्रा० ६ ४४३ इ० । भाषा-प्राकृत हिन्दी । ले० काल स० १६१८ । पूर्या । वे० स० ४४ ।

विशेष-सामान्य पाठी का सग्रह है।

४६४७. गुटका स० १०। पत्र सं० १०५। त्रा० म×७ इ०। ले० काल ×।

१. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	म्रपभ्रंश	१- १६
२. तत्त्वसार	देवसेन	সাক্রর	₹o-₹X

৬ ४ ८]			[गुटका संप्रह
३. वारहम्रक्षरी	×	सस्कृत	२४–२७
४. समाधिरास	×	पुरानी हिन्दी	39-98
विशेष—प० डालू	राम ने ग्रपने पढने के लिए लिखा थ	ті	
५. द्वादशानुप्रेक्षा	×	पुरानी हिन्दी	98-39
६, योगोरासी	योगीन्द्रदेव	श्रपभ्र श	३२ —३३
७. श्रावकाचार दोहा	रामसिंह	;;	५३–६३
८, षट् पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	5%- १०४
३. षटलेश्या वर्णन	×	सस्कृत	\$08 - \$08
४६४८. गुटका	सं०११। पत्र स०३५। (खुले हु	ये शास्त्राकार) ग्रा० ७३	×५ इ० । भाषा–हिन्दी
ले० काल 🗙 । पूर्या । वे० स० ।	- 8		•
विशेप—पूजा एव	स्तोत्र संग्रह है।		
४६४६. गुटका	सं०१२।पत्र म०५०।ग्रा०६>	(५ इ० । भाषा-हिन्दी ।	ले॰ काल 🗙 । ग्रपूर्ण ।
वे० स०:१•०	_		
विशेष—नित्य पूज		- 0.0	2
	सं० १३। पत्र स० ४०। म्रा० ६४	(६ इ० । भाषा—ाहन्दा ।	ल० काल 🗶 । अपूरा ।
वे० स० १०१ । १. चन्दकथा	लक्ष्मग्र	िन्दी	१–२१
-	से २६२ पद्य तक ग्राभानेरी के राज	`	•
२. फुटकर कवित्त	श्रगरदास	7)	२ २–४०
	लियागिरि कथा है ।	~	
	स० १४। पत्र सं० ३६६। झा० ए	•×६ इ० । भाषा–सस्कृत	त हिन्दी। ले० काल सं०
१६५३। पूर्ण । वे० सं० १०२			•
१. चौरासी जाति भेद	×	हिन्दी	१–१६
२. नेमिनाथ फाग्र	पुण्यरत्न	**	२०-२५
विशेप—म्नन्तिम		2)	
समुद्र विजय तन गुण् निलउ सेव करइ जसु सुर नर वृन्द ।			
पुण्यरत्न मुनिवर भएाइ श्रीसंघ सुद्रशन नेमि जिएान्द ।। ६४ ।।			
कुल ६४ पद्य हैं। ।। इति श्री नेमिनाथ फाग्रु समाप्त ।।			

गुटका-संग्रह]			[હજ્રદ
३. प्रद्युम्नरास	व्र॰ रायमल्ल	हिन्दी	२६-५०
४. सुदर्शनरास	17	75	५१ –५०
५. श्रीपालरास	53	99	388
		ले० काल सं०	१६५३ जैठ बुदी २
६. शीलरास	27	97	१३३
७. मेघकुमारगीत	पूनो	> 7	१३४
द. पद- चेतन हो परम निधान	जिनदास	33	२३६
 ,, चेतन चिर भूलिउ भिमउ देखउ 			
चित न विचारि ।	रूपचन्द	15	२३५
१०. 🥠 चेतन तारक हो चतुर सयाने वे नि	ार्मल		
दिष्टि ग्रछत तुम भरम भुंलाने।) 7	72	53
११. " वादि ग्रनादि गवायो जीव विधिव	ग्स		
वहु दुख पायो चेतन ।	"	99	
१२. "	दास	55	२४०
१३. " चेतन तेरो दानो वानो चेतन तेरी	जाति । रूपचन्द	v	
१४. " जीव मिथ्यात उदे चिरु भ्रम श्राय	री ।		
वा रत्नत्रय परम घरम न भाय	ो ।।	3)	
१५. " सुनि सुनि जियरा रे, तू त्रिभुवन	का राउ रे दरिगह	3 7	
१६. "हा हा भूता मेरा पद मना जिनव	ार		
घरम न वेये।	77	77	
१७. " जै जै जिन देवन के देवा, सुर व	नर		
सकल करे तुम सेवा ।	रूपचन्द	33	२४७
१८. ग्रकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	×	সান্থূন	૨ ૫ <i>१</i>
१६. ग्रक्षरगुर्णमाला	मनराम	हिन्दी ले० व	नल १७३५ २५५
२०. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	×	,, ले ० ब	हाल १७३ ५ २५७
२१. जकडी	दयालदास	77	२३२

```
[ गुटका-संप्रह
৩২০ ী
२२. पद- कायु वोले रे भव दुख बोलएी
                                         हर्पकीति
        न ग्रावै।
                                                                                          २३२
                                                                "
                                        भानुकीति
                                                                       र० काल १६८७
                                                                                          338
२३. रथिव्रत कथा
                                                                "
                            ( ब्राठ सात सोलह के अक वर्श रचे सु कथा विमल )
२४. पद - जो वनीया का जोरा माही श्री जिएा
         कोप न ध्यावै री।
                                       शिवसुन्दर
                                                                                          388
                                                                "
                                                                                          384
२५. शीलवत्तीसी
                                          ग्रकूमल
                                                                77
२६. टडागा गोत
                                                                                          ३६२
                                         वूचराज
                                                                33
२७ भ्रमर गीत
                                         मनसिंघ
                                                                              १६ पद हैं
                                                                                          ३६५
                                                   ( वाडी फूली ग्रति भली सुन भ्रमरा रे )
           ४६६२. गुटका स० १४। पत्र सं० २७४ । श्रा० ४×४३ इ०। ले० क्वाल सं० १७२७ । पूर्ण । वे०
स० १०३।
 १. नाटक समयसार
                                     वनारसीदास
                                                             हिन्दी
                                                                                          १६३
                                                 र० काल सं० १६६३ | ले० काल सं० १७६३
 २. मेवकुमार गोत
                                           पुनो
                                                                                     243-246
                                                               "
 ३. तेरहकाठिया
                                      वनारसीदास
                                                                                          १८८
                                                                "
 ४ विवेकजकडी
                                         जिनदास
                                                                                          २०६
                                                                7)
 प्र गुर्णाक्षरम<sub>ा</sub>ला
                                          मनराम
                                                                33
 ६. मुनीश्वरो की जयमाल
                                         जिनदास
                                                                "
 ७. वावनी
                                      वनारसीदास
                                                                                          २४३
                                                                "
 द नगर स्थापना का स्वरूप
                                                                                          २५४
                                          X
                                                               77
 ह पंचमगति को वेलि
                                        हर्पकीति
                                                                                          २६६
                                                                93
           ४६६३ गुटका स० १६। पत्र सं० २१२। ग्रा॰ ६×६ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।
```

वे० सं० १०८।

विशेप-- सामान्य पाठो का सग्रह है।

४६६४ गुटका स० १७ । पत्र स० १४२ । ग्रा० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०८ |

७४१

१. भविष्यदत्त चौपई

ब॰ रायमल

हिन्दी

११६

२. चौवीस तीर्यंड्वर परिचय

X

55

१४२

४६६४. गुटका सं० १७। पत्र सं० ८७। ग्रा० ८×६ ६०। भाषा-हिन्दी। विषय-चर्चा। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० ११०।

विशेष-गुरास्यान चर्चा है।

प्रश्चिक् गुटका सं० १८। पत्र सं० १८। ग्रा० ७×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८७४।

१. लग्नचन्द्रिका भाषा

स्योजीराम सीगानी

हिन्दी

8-83

प्रारम्भ — ग्रादि मत्र कू सुमिरइं, जगतारए। जगदीश ।

जगत ग्रीथर लिख तिन तज्यो, जिनै नमाउ सीस ।। १ ।।

दूजा पूजूं सारदा, तीजा ग्रुरु के पाय ।

लगन चित्रका ग्रन्थ की, भाषा करू वर्णाय ।। २ ।।

ग्रुरन मोहि ग्राग्या दई, मसतक धरि के बाह ।

लगन चित्रका ग्रंथ की, भाषा कहू वर्णाय ।। ३ ।/

मेरे श्री ग्रुरुदेव का, ग्राबावती निवास ।

नाम श्रीजैचन्द्रजी, पंडित बुध के वास ।। ४ ।।

लालचन्द पडित तर्गो, नाती चेला नेह ।

फतेचद के सिष तिनै, मौकूं हुकम करेह ।। ४ ।।

कवि सोगागी गोत्र है, जैन मती पहचानि ।

श्रन्तिम-

लगन चिन्द्रका ग्रंथ की, भाषा कही जु सार।

माघ सुकल की पंचमी, वार सुरनकोईस ॥ ७ ॥

ठारासै के साल परि, वरप सात चालीस।

जे यासीखे ते नरा ज्योतिस को ले पार ॥ ५२३॥

कवरपाल को नंद ते. स्योजीराम वखािंग ।। ६ ।।

२. वृत्दसतसई

वृत्दकवि

हिन्दी प० ले० काल वैशाख बुदी १० १८७४

३. राजनीति कवित्त

देवीदास

17

X

१२२ पद्य हैं।

प्रह् प्राटका सं० १६ । पत्र सं० ३० । ग्रा० ५×६ इ० । भाषा- हिन्दी । विषय-पद । ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० ११२ ।

विशेष-विभिन्न कवियों के पदों का सग्रह है। गुटका श्रशुद्ध लिखा गया है।

४६६८. गुटका सं० २०। पत्र सं० २०१। म्रा० ६४५ द०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। विषय-संग्रह। ले० काल० स० १७८३। पूर्ण। वे० सं० ११४।

विशेष—ग्रादिनाथ की वीनती, श्रीपालम्तुति, मुनिश्वरो की जयमाल, वडा कनका, भक्तामर स्तोत्र ग्रादि हैं। ४६६६ गृटका म० २१। पत्र स० २७६। ग्रा० ७४४३ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–सग्रह। ले०

काल × । पूर्ण वे० स० ११५ । ब्रह्मरायमल्ल कृत भविष्यदत्तरास नेमिरास तथा हनुमत चीपई है ।

प्रह७०. गुटका स० २२ । पत्र सं० २६-५३ । ग्रा० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० वात × । श्रपूर्ण । वे० स० ११ ।

प्रहण्श. गुटका सं०२३। पत्र स० ८१। आ० ६×५६ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा पाठ। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०१३१।

विशेष--पूजा स्तोत्र सग्रह है।

४६७२. गुटका स० २४। पत्र सं० २०१। ग्रा० ६×५६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत विषय-पूजा पाठ। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३२।

विशेप-जिनसहस्रनाम (श्राशाधर) पट्भिक्त पाठ एव पूजाग्रो का सग्रह है।

४६७३. गुटका सं० २४ । पत्र स० ६-६ । आ० ६×५ इ० । भाषा-प्राकृत संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३३ ।

४६७४. गुटका सं०२६। पत्र स० ६४। म्रा० ६४५ इ०। भाषा-हिन्दो । विषय-पूजापाठ। ले॰ काल ४। पूर्ण। वे॰ स॰ १३४।

४६७४. गुटका स० २७ । पत्र स० १०१ । ग्रा० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १५२ ।

विशेष-वनारसीविलास के कुछ पाठ, रूपचन्द की जकडी, द्रव्य संग्रह एवं पूजायें है।

४६७६. गुटका सं० २८। पत्र सं० १३३। ग्रा० ६×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८०२। पूर्ण। वे० सं० १५३।

विशेष-समयसार नाटक, भक्तामरस्तोत्र भाषा-एवं सामान्य कथायें है ।

४६७७. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ११६ । ग्रा० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५४ ।

विशेष-पूजा एव स्तीत्र तथा अन्य साधारण पाठो का संग्रह है।

४६७८ गुटका सं० ३०। पत्र सं० २०। ग्रा० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत प्राकृत। विषय-स्तोत्र। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५५।

विशेप-सहस्रनाम स्तोत्र एवं निर्वाणकाण्ड गाथा है।

४६७६. गुटका सं०३१। पत्र सं०४०। म्रा०६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। ले० काल ×। पूर्ण। वे सं०१६२।

विजेष-रविव्रत कथा है।

४६८०. गुटका सं० ३२। पत्र सं० ४४। म्रा० ४३×४ई इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-सग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। वे स॰ १७७६।

विशेष—बीच २ मे से पत्र खाली **१**१ बुलाखीदास खत्री की वरात जो सं० १६८४ मिती मंगसिर सुदी ३ को ग्रागरे से ग्रहमदाबाद गई, का विवरण दिया हुग्रा है। इसके ग्रतिरिक्त पद, गर्णेशछद, लहरियाजी की पूजा ग्रादि है।

४६८१ गुटका सं० ३३। पत्र सं० ३२। म्रा० ६३×४३ इ०। मापा-हिन्दी। ले० काल ×। पूरा। वे० सं० १६३।

इति श्री राजुल मंगल संपूर्ण।

१. राजुलपच्चीसी	विनोदीलाल लालचद		
२. नेमिनाथ का बारहमासा	? 7	"	
३. राजुलमंगल	×	×	
प्रारम्भ	तुम नीकस भवन सुढाढे, जव कमरी भई वरागी।		
	प्रभुजी हमने भी ले चालो साथ, तुम विन नही रहै दिन	रात	
म्रापा दोनु ही मुकती मिलाना, तहा फेर न होय म्रावागव			
	राजुल ग्रटल सुघडी नीहाइ, तिहां राणी नही छै कोई	ξ,	
	सोये राजुल मंगल गावत, मन वंछित फल पावत ॥१ः	11	

४६ प्रदेश सं० ३४। पत्र सं० १६०। ग्रा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी राष्ट्रत । ले० काल ×।

विशेप--पूजा, स्तोत्र एवं टीकम की चतुर्दशी कथा है।

४६८३ गुटका सं० ३४ । पत्र सं० ४० । ग्रा० ५४४ इ० । भाषा-हिन्दी सम्कृत । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० २३४ ।

विशेप-सामान्य पूजा पाठ हैं।

४६८४ गुटका सं० ३६। पत्र सं० २४। ग्रा॰ ६४४ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल सं० १७७६ फाग्रुग बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २३४।

विशेप--भक्तामर स्तीत्र एवं कल्याण मदिर संस्कृत ग्रीर भाषा है।

४६ पर. गुटका सं० ३७। पत्र स० २१३। म्रा० ५×७ इ०। भाषा-हिन्दी सरवृत । ले० काल ×। पूर्ण।

विशेय-पूजा, स्तोत्र, जैन शतक तथा पदो का संग्रह है।

४६८६ गुटका सं० ३८। पत्र सं० ५६। ग्रा० ७४४ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा स्तोत्र। ले० काल ४। पूर्या। वे० स० २४२।

विशेप-सामान्य पूजा पाठ सग्रह है।

४६८७. गुटका स० ३६। पत्र सं० ५०। म्रा० ७×४ इ०। ले० काल ×। पूर्ग , वे० स० २४३।

१् श्रावकप्रतिक्रमगा	×	प्राकृत	8-68
२. जयतिहुवगास्तोत्र	ग्रभवदेवसूरि	3 7	१५-१६
३ श्राजितशान्ति।जनस्तोत्र	×	7)	२० —२५
४ श्रीवतजयस्तोत्र	×	••	२६–३२

श्रन्य स्तोत्र एवं गौतमरासा श्रादि पाठ है।

४६८८. गटका स०४०। पत्र ६०२५। आ०५×४६०। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण।

विशेष-सामायिक पाठ है।

४६८६ गुटका सः ४१। पत्र स०५०। ग्रा०६×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेप-हिन्दी पाठ संग्रह है।

४६६० गुटका सं०४२। पत्र स०२०। ग्रा०५×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स०२४७।

विशेष-सामायिक पाठ, क्ल्याग्मिन्दरस्तोत्र एव जिनपच्चीसी हैं।

४६६१. गुटका सं ० ४३। पत्र स० ४८। आ० ४×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण। वे० स० २४८।

४६६२ गुरका स० ४४। पत्र स० २५। ग्रा० ६×४ इ० भाषा-संस्कृत । ले० काल ×। पूर्ण । वै० सं• २४६।

विशेप-ज्योतिप सम्बन्धी सामग्री है।

४६६३. गुटका स० ४४ । पत्र स० १८ । ग्रा० ८४ ६० । भाषा हिन्दी । विषय-पुर्भाषित । ले० काल 🗙 । ग्रपूर्ण । वे० सं० २५० ।

१६६४. गुटका सं० ४६। पत्र सं० १७०। म्रा० ७४५ इ०। ले० काल स० १७५४। पूर्ता। वे० स० २५१।

१ भक्तामरस्तोत्र भाषा	ग्रखयराज	हिन्दी गद्य	१–३४
२ इष्टोपदेश भाषा	×	33	\$ ४-५२
३. सम्बोधपंचासिका	×	प्राकृत सस्कृत	५३७१
४. सिन्दूरप्रकरण	वनारसोदास	हिन्दी	, ७२–६२
५. चरचा	×	17	£09-93
६. योगसार दोहा	योगीन्द्रदेव	33	१०४-१११
७ द्रव्यसंग्रह गाथा भाषा सहित	×	प्राकृत हिन्दी	११२-१३३
प्र ग्रनित्यपंचाशिका	त्रिभुवनचन्द	51	१३४-१४७
६ जर्रुडी	रूपचन्द	n	१४५-१५४
१०. "	दरिगह	27	१५५-५६
११ ,,	रूपचन्द	"	१५७-१६३
१२. पद	77	59	१६४-१६६
१३ स्रात्मसवोध जयमाल स्रादि	×	77	१७०१७७

४६६४ गुटका स०४७। पत्र स०१६। ग्रा० ५×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल × पूर्ण। वै० स० २५४।

४६६६ गुटका सं०४८। पत्र स०१००। ग्रा०५×४ इ०। भाषा -हिन्दी। ले० काल सं०१७०५ पूर्गा। वे० नं० २५५।

विशेष -- ग्रादित्य । रक्था (भाऊ) विरहमजरी (नन्ददास) एव ग्रायुर्वदिक नुसखे हैं।

४६६७ गुटका सं २४६ । पत्र स०४-११६ । ग्रा॰ ५×४ इ० । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण वै० स० २५७ ।

विशेप--मामान्य पाठो का सम्रह है।

४६६८ गुटका सं०४०। पत्र स० १८। ग्रा० ४×५ इ०। भाषा-सस्वृत । ले० काल ×। पूर्ण। वे० न० २५८।

विशेष-पदो एव सामान्य पाठो का सम्रह है।

४६६६ गुटका स० ४१ । पत्र स० ४७ । आ० द×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० त० २५६ ।

विशेष--- प्रतिष्ठा पाठ के पाठों का सग्रह है।

६०००. गुटका सं० ४२ । पत्र स० ६८ । ग्रा० ५२%६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० स० १७२५ भादवा बुदो २ । पूर्यो । वे० स० २६० ।

विशेष-समयसार नाटक तथा वनारसीविलास के पाठ हैं।

६०-१. गुटका सं० ४३। पत्र सं० २२८। म्रा० ६४७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १७५२। पूर्या वे० स० २६१।

१ समयनार नाटक

वनारसोदास

हिन्दी

?-2?

विशेष--विहारीदास के पुत्र नैनमी के पठनार्थ सदाराम ने लिखा था।

२ नीताचरित रामचन्द्र (वालक)

हिन्दी

?-?३७

३ पद

कवि संतीदास

. . . .

४ ज्ञानस्वरोदय

चरगुदास

"

५. पट्पचासिका

X

37

६००२ गुटका स० ४४। पत्र सं० ५८। ग्रा० ४×३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८२७ जेठ बुदी १३। पूर्ण वि० सं० २६२।

१. स्वरोदय

हिन्दी

१-२७

विशेष-उमा महेश संवाद मे ने है ।

२. पंचाध्यायी

१६. श्रावकाक्रिया

79

25-45

विशेष-कोटपुतली वास्तव्य श्रीवन्तलाल फकीरचन्द के पठनार्थ लिखी गई थी।

६००३. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ७-१२६ । ग्रा॰ ५३×३३ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले॰ काल × । पूर्या । वे॰ सं० २७२ ।

१. ग्रनन्त के छप्पय	भ० धर्मचन्द	हिन्दी	१४-२०
२. पद	विनोदीलाल	79	
३. पद	जगतराम	77	
(नेमि रंगीलो च	विलो हटीलो चटकोले मुगति व	धु संग मिलो)	
४. सरस्वती चूर्ण का नुसखा	×	57	
५. पद- प्रात उठी ले गौतम नाम	जिम मन		
वांछित सीभे काम।	कुमुदचन्द	हिन्दी	
५. जीव वेलडी	देवीदास	33	
(सतग्रर कहत सुनो रे :	भाई यो संसार श्रसारा)	"	२१ पद्य हैं।
७. नारीरासो	×	53	३१ पद्य है।
चेतावनी गीत	नायू	99	
६. जिनचतुर्विशतिस्तोत्र	भ० जिराचन्द्र	संस्कृत	
१०. महावीरस्तोत्र	भ० ग्रमरकीर्ति	77	
११. नेमिनाय स्तोत्र	षं० शालि	77	
१२. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	
१३. पट्मत चरचा	×	37	
१४. ग्राराधनासार	जिनदास	हिन्दी	५ ६ पद्य है।
१५. विनती	77	77	२० पद्य हैं।
१६. राजुल की सज्भाय	37	"	३७ पद्य हैं।
१७. भूलना	गंगीदास	99	१२ पद्य है।
१८. ज्ञानपैडी	मनोहरदास	17	

×

37

विशेष-विभिन्न कवित्त एवं वीतराग स्तोत्र ग्रादि है।

६००४. गुटका सं० ४६ । पत्र रा १२० । ग्रा० ४६ XV इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल X

विशेप-सामान्य पाठो का सग्रह है।

६००४. गुटका सं० ४७। पत्र स० ३-- । ग्रा० ६५×४३ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल स॰ १८४३ चैत बुदी १४। ग्रपूर्सा । वे० स० २७४।

विशेष—भक्तारस्तोत्र, स्तुति, कल्याग्यमन्दिर भाषा, शातिषाठ, तीन चीवीसी के नाम, एव देवा पूजा आदि है ६०६६. गुटका स० ४८। पत्र स० ५६। ग्रा० ६४४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स० २७६।

१. तीसचीबीसी

X

हिन्दी

२ तीसचौबीसी चौपई

श्याम

"र० काल १७४६ चैत सुदी ५

ले॰ काल स॰ १७४६ कार्तिक बुदी ५

श्रन्तिल-नाम चौपई ग्रन्थ यह, जोरि करी कवि स्याम।

जेसराज सुत ठोलिया, जोवनपुर तस धाम ॥२१६॥

सतरासे उनचास मे, पूरन ग्रन्थ सुभाय।

चैत्र उजाली पंचमी, विजै स्कन्ध नृपराज ॥२१७॥

एक वार जे सरदहै, श्रथवा करिसि पाठ।

नरक नीच गति के विषे, गाढे जडे कपाट ।।२१८।।

।। इति श्री तीस चोइसी जी की चौपई ।।

६००७. गुटका सं० ४६। पत्र स० ५२। आ० ६×४३ इ०। भाषा-सम्कृत प्राकृत। ले० काल × । पूर्ण। वे० स० २६३।

विशेप—तीनचौवीसी के नाम, भक्तामर स्तोत्र, पचरत्न परीक्षा की गाथा, उपदेश रत्नमाला की गाथा श्रादि है।

६००८. गुटका सं०६०। पत्र स०३४। आ० ६×८ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल स०१६४३, पूर्ण। वे० स० २६३।

१. समन्तभद्रकथा

जोधराज

हिन्दी र० काल १७२२ वैशाख बुदी ७

२. श्रावको को उत्पत्ति तथा ५४ गीत

×

हिन्दी

३. सामुद्रिक पाठ

X

"

द्यन्तिम-सगुन छलन सुमत सुभ सब जनकू सुख देत।
भाषा सामुद्रिक रच्यो, सजन जनो के हेत।

६०८६. गुटका सं०६१। पत्र सा० ११-४८ । ग्रा० ८५४६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०। काल स॰ १९१६। प्रपूर्ण । वे० स० २९६ ।

विशेष—विरहमान तीर्थं द्वार जकडी (हिन्दी) दशलक्षण, रत्नत्रय पूजा (सस्कृत) पंचमेरु पूजा (भूघरदास) नन्दीश्वर पूजा जयमाल (सस्कृत) ग्रनन्तिजन पूजा (हिन्दी) चमत्कार पूजा (स्वरूपचन्द) (१९१६), पंचकुमार पूजा ग्रादि है।

६०१०. गुटका स० ६२। पत्र सं० १६। ग्रा० दर्भ ४६ इ०। ले० काल ४। पूर्ण। वै० स० २६७। विशेष-हिन्दी पदो का संग्रह है।

६०११. गुटका स०६३। पत्र स०१६। आ०६३×४३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-संग्रह। लै॰ काल ×। पूर्ण। वे॰ सं॰ ३०८।

विशेष-- सामान्य पाठो का सग्रह एवं ज्ञानस्वरोदय है।

६०१२. गुटका स० ६४। पत्र सं० ३६। ग्रा० ६×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ३२५।

विशेप—(१) किनत्त पद्माकर तथा ग्रन्य किनयों के (२) चौदह निद्या तथा कारखाने जात के नाम (३) ग्रामेर के राजाग्रों को नशावजी, (४) मनोहरपुरा की पीढियों का वर्णन, (५) खंडेला की वंशावली, (६) खंडेला की गोत्र, (७) कारखानों के नाम, (६) ग्रामेर राजाग्रों का राज्यकाल का निवरण, (६) दिल्ली के नादशाहों पर किनत ग्रादि है।

६०१३ गुटका सं०६४। पत्र सं०४२। म्रा० ६x४ इ०। भाषा—हिन्दो संस्कृत । ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०३२६।

विशेष-सामान्य पाठो का सग्रह है।

६०१४ गुटका स्ट ६६। पत्र सं० १३-३२। आ०, ७४४ इ० भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल ४। अपूर्ण । वे० सं० ३२७।

विशेप-सामान्य पाठो का सग्रह है।

υξο]

६०१४. गुटका सं० ६७। पत्र सं० ५२। ग्रा० ६४४ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृतः। ले० काल, ४। पूर्गा। वे० सं० ३२ प

विशेप-कवित्त एवं म्रायुर्वेद के नुसखो का सग्रह है।

६०१६. गुटका सं० ६८। पत्र सं० २६। ग्रा० ६२×४२ ६०। भाषा-हिन्दी। विषय-सग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३२०।

विशेष-पदो एवं कविताय्रो का सग्रह है।

६०१७. गुटका स० ६६। पत्र स० द४। ग्रा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष-विभिन्न कवियो के पदो का सग्रह है।

६०१८. गुटका सं० ७०। पत्र सं० ४०। ग्रा० ६२×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३३३।

विशेष--पदो एव पूजाम्रो का संग्रह है।

६०१६. गुटका सं० ७१। पत्र स० ६८ । ग्रा० ४ई×३३ इ०। भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र । क्षे काल ×। पूर्या । वे० सं० ३३४।

६०२०. गुटका सं० ७२ । स्फुट पत्र । वे० स० ३३६ ।

विशेष -कर्मों की १४८ प्रकृतिया, इष्टळतीसी एव जोधराज पश्चीसी का सग्रह है।

६०२१' गुटका स० ७३। पत्र स० २८। ग्रा॰ ८३ ×५ इ०। भाषा-हिन्दी । ले० काल ×। पूर्ण। वै० स० ३३७।

विशेष — ब्रह्मविलास, चीवीसदण्डक, मार्गगावियान, श्रकलङ्काप्टक तथा सम्यक्तवपञ्चीसी का संग्रह है।

६०२२ गुटका सं० ५४ । पत्र स० ३६ । आ० ५२/×५ ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । १९र्ण । वे० स० ३३८ ।

विशेष-विनितिया, पद एवं अन्य पाठों का सग्रह है। पाठों की संख्या १६ है।

६०२२. गुटका स० ७४। पत्र स० १४। म्रा० ५×४ इ०। भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १६५६। पूर्या। वै० सं० ३३६।

विशेप-नरक दुःख वर्णान एवं नेमिनाथ के १२ भवो का वर्णन है।

६०२४. गुटका सं० ७६। पत्र सं० २५। म्रा० दर्×६ इ०। भाषा-संस्कृत । । ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० ३४२।

विशेष—ग्रायुर्वेदिक एवं यूनानी नुसखो का संग्रह है ।

६०२४. गुटका सं० ७७। पत्र सं० १४। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी । विपय-सगह। ले० काल 🗴 । वे० सं० ३४१ ।

विशेष--जोगीरासा, पद एवं विनितयो का संग्रह है।

६०२६. गुटका सं० ७८। पत्र सं० १६०। ग्रा० ६×५ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३५१।

विशेष-सामान्य पूजा पाठ संग्रह है। पृष्ठ ६४-१४६ तक वशीधर कृत द्रव्यसग्रह की वालाववोध टीका है | टीका हिन्दो गद्य मे है |

, ६०२७. गुटका स० ७६ । पत्र सं० ५६ | आ० ७×४ इ० | भाषा-हिन्दी | विषय-पद-सग्रह | ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५२ ।

ञ भगडार [शास्त्र भगडार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, जयपुर]

६०२८. गुटका सं० १। पत्र सं० २५८। ग्रा० ६×५ इ०। । ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १। विशेष-पूजा एवं स्तीत्र संग्रह है। लक्ष्मीसेन का चितामिएस्तवन तथा देवेन्द्रकीर्ति कृत प्रतिमासान्त चतुर्दशी पूजा है।

६०२६. गुटका सं०२। पत्र सं०५४। ग्रा० ९४५ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल सं० १५४३। पूर्ण ।

विशेष-जीवराम कृत पद, मक्तामर स्तोत्र एवं सामान्य पाठ संग्रह है। ६०३०. गुटका सं० ३। पत्र सं० ५३। आ० ६×५। भाषा संस्कृत । ले० काल ×। पूर्ण। जिनयज्ञ विधान, ग्रमिषेक पाठ, गराधर वलय पूजा, ऋषि मंडल पूजा, तथा कर्मदहन पूजा के पाठ हैं। ६०३१. गुटका सं० ४। पत्र सं० १२४। आ० ५४७ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १६२६। पूर्श।

विशेष---नित्य पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठो का संग्रह है---

७६२]			[गुटका सम्रह		
२. मूढता ज्ञनाकुश इत्यादि	×	93			
३. त्रेपनक्रिया	×	? >			
४. समयसार	श्रा० कुन्दकुन्द	प्राकृत	,		
५. ग्रादित्यवारकया	भाऊ	हिन्दी			
६. पोसहरास	ज्ञानसूपग्	99			
७ धर्मतरुगीत	जिनदास	33			
८ चहुगतिचौ पई	×	37	-		
६. ससारग्रटवी	×	"			
१० चेतनगीत	जिनदास	77			
स० १	६२६ मे ग्रंबावती मे प्रतिलिपि हुई थी ।				
६०३२. गुटका	स० ४। पत्र सं० ७४। ग्रा० ६×५:इ	• । भाषा-संस्कृत । ले ॰ ।	काल स० १६५२।		
पूर्ण विजेप—स्तीत्री	रूर्ण । विशेष—स्तोत्रो का सग्रह है ।				
स० १६५२ मे नागौर मे वाई ने दिक्षा ली उसका प्रतिज्ञा पत्र भी है ।					
६०३३. गटक	६०३३. गुटका सं० ६ । पत्र सा० २२ । ग्रा० ६×५ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–सग्रह । ले० काल ×				
वे॰ स॰ ६।	•	•			
१. नेंमोश्वर की बारहमासा	^{'~} खेतिसह	हिन्दी	5		
२ श्रादीश्वर के दशभव	ग्रुग्रचंद	33			
३ं क्षीरहीर	×	3 7			
६०३४. गुटका सं०७। पत्र स० १७७। ग्रा० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।					
विशेष— निस्यन	मित्तक पाठं, सुभाषित (भूधरदास) तथा	'नाटक'समयसार <i>'</i> (⁻ वनार	सीदास) हैं ।		
६०३४ गुटक	। स० ५ पत्र _. स० १४६। म्रा० ६×५३	इ०। भाषा-संस्कृत, ग्रपभ	र⁵श। ,		
ले॰ काल 🗴 । पूर्ण ।	-				
१ चिन्तामर्शापादर्वनाय ज	यमाल सोम	ग्र पभ ंश			
२ ऋपिमडलपूजा	मुनि गुरानंदि	संस्कृत			

विशेष---नित्य पूजा पाठ संग्रह भी है।

६०३६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २० । ग्रा० ६४४ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल ४ । पूर्ण । विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह, लोक का वर्णन, ग्रकृत्रिम चैत्यालय वर्णन, स्वर्गनरक दुख वर्णन, चारो गतियो की ग्रायु ग्रादि का वर्णन, इष्ट छत्तीसी, पश्चमञ्जल, ग्रालीचना पाठ ग्रादि हैं।

६०३७. गुटका स० १०। पत्र सं० ३८। ग्रा॰ ७×६ इ०। भाषा-संस्कृत । ले॰ काल ×। पूर्ण । विशेष-सामायिक पाठ, दर्शन, कत्यागामंदिर स्तीत्र एवं सहस्रनाम स्तीत्र है ।

६०३८. गुटका सं० ११। पत्र सं० १६६। म्रा० ४×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले॰काल ×। पूर्शी।

संस्कृत हिन्दी ले॰ काल सं॰ १७२७ चैतसुदी ५ १. भक्तामर स्तोत्र टव्वाटीका X हर्षकीति २ पद--X (जिए। जिए। जप जीवडा तीन भवन मे सारोजी) ले॰ काल सं॰ १७२६ ३. पंचगुरु नी जयमाल व० रायमल 5) ४. कवित्त X 53 ५. हिलोपदेश टीका X

६. पद-ते नर भव पाय कहा कियो कुपचन्द हिन्दी

पद-मोहिनी वहकायो सव जग मोहनी मनोहर

६०३६. गुटका स० १२। पत्र सं० १३८। ग्रा० १०×८ ६०। भाषा हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। निम्न पाठ है.—

क्षेत्रपाल पूजा (सस्कृत) क्षेत्रपाल जयमाल (हिन्दी) नित्यपूजा, जयमाल (सस्कृत हिन्दी) सिद्धपूजा (स॰) षोडशकारण, दशलक्षण, रत्नत्रयपूजा, कलिकुण्डपूजा और जयमाल (प्राकृत) नंदीश्वरपित्तपूजा अनन्तचतुदेशीपूजा, मक्षयिनिधिपूजा तथा पार्श्वनास्तोत्र, आयुर्वेद ग्रथ (सस्कृत ले॰ काल सं॰ १६८१) तथा कई तरह की रेसाओं के चित्र भी है, राशिफल आदि भी दिये हुये हैं।

६०४०. गुटका स० १३ । पत्र स० २५३ । आ० ७×५ इ० । ले० काल सं० १७३८ । पूर्ण । गुटके मे मुख्यत. निम्न पाठ है—

5)

१. जिनस्तुति सुमतिकीति हिन्दी

२. गुरास्थानकगीत वृ्ह श्री वर्द्ध न

म्रन्तिम-भग्गति श्री वर्द्ध न ग्रह्म एह वाजी भवियण सुख गरइ

श्रीतिमानीतात आ तक म अल देव नाना नामनदा है। तन				
३. सम्यक्त्व जयमाल	. ×	ग्रपञ्च'श		
४. परमार्थगीत	रूपचन्द	हिन्दी		
५. पद- ग्रहो मेरे जीय तू	कत भरमायो, तू			
चेतन यह जड परम है य	ामै कहा लुभायो । मनराम	77		
६. मेघकुमारगीत	पूनो	39		
७. मनोरयमाला	श्रचलकीत्ति	24		
श्रचला तिहि तणा गुरा	गाइस्यो,			
न. सहेलीगीत	मुन्दर	हिन्दी		
े सहेल्यो हे	यो ससार ग्रसार मो चित मे या उपनी	जी सहेल्यी है		
ज्यो राचै	सो गवार तन घन जोवन थिर नहीं।			
६. पद-	मोहन	हिन्दी		
:	जा दिन हँस चलै घर छोडि, कोई न स	गय सहा है गोडि ॥		
;	जरा जरा के मुख ऐसी वासी, वही वेगि मिली ग्रन पासी ।।			
	श्रगा विडह्वे उनगै सरीर, स्रोमि स्रोति ने तनक चीर ।			
:	चारि जगा जङ्गल ने जाहि, घर मैं घडी रहगा दे नाहि।			
;	जबता बूड विडा मे वास, यो मन मेरा भया उदास।			
काया माया भूठी जानि, मोहन होऊ भजन परमािए। ।।६।।				
१०. पद-	हर्पकीत्ति	हिन्दी		
नहि छे	ोडी हो जिनराज नाम, मोहि ग्रौर मिय	यात सै क्या बनै काम ।		
११. ,,	मनोहर	हिन्दी		
	सेव तौ जिन साहिव की कीजे नरभ	त्र लाहो लीजै		
१२. पद-	जिग्गदास	हिन्दी		
१३. "	स्यामदास	>>		
१४. मोहविवेकयुद्ध	वनारसीदास	33		
१५. द्वादशानुप्रेक्षा	सूरत	73		

गुटका-संग्रह]

१६. द्वादशानुप्रेक्षा

X

77

"

१७. विनती

रूपचन्द

जै जै जिन देवनि के देवा, सूर नर सकल करे तुम सेवा !

हिन्दी र० काल सं० १५८५ ठक्कुरसी १८. पचेन्द्रियवेलि १८६३ १६. पञ्चगतिवेलि हर्षकीत्ति 27 33 २०. परमार्थ हिंडोलना रूपचन्द 77

२१. पंथीगीत छीहल

२२. मुक्तिपीहरगीत X "

२३. पट-ग्रब मोहि ग्रीर कछ न सुहाय रूपचन्द 23

२४. पदसंग्रह वनारसीदास 33

६०४१. गुटका सं० १४। पत्र सं० १०६-२३७। ग्रा० १०×७ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण । विशेष—स्तोत्र, पूजा एवं उसकी विधि दी हुई है।

६०४२. गुटका सं० १४ | पत्र सं० ४३ । आ० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विपय-पद सग्रह । ले० काल 🗙 । पूर्श ।

६०४३. गुटका सं० १४ | पत्र सं० ५२ | म्रा० ७×५ इ० | भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-सामान्य पाठ सग्रह । ले॰ काल 🗙 । पूर्ण ।

६०४४. गुटका सं० १७। पत्र सं० १६६ । ग्रा० १३×३ इ० । ले० काल सं० १६१३ ज्येष्ठ बूदा । पूर्श ।

१. छियालीस ठाएा

व्र॰ रायमल

संस्कृत

38

विशेष—चौबीस तीर्थे द्वरो के नाम, नगर नाम, कुल, वंश, पचकल्याएको की तिथि ग्रादि विवरण है।

२. चौबीस ठाएा चर्चा

X

"

२८

३. जीवसमास

X

प्राकृत ले॰ काल सं॰ १६१३ ज्येष्ठ ५६ ्

विशेष-- ब्र॰ रायमञ्ज ने देहली मे प्रतिलिपि की थी।

४. सुप्पय दोहा

X

हिन्दी

50

५, परमात्म प्रकाश भाषा

प्रभुदास

77

83

६. रत्नकरण्डश्रावकाचार

समंतभद्र

संस्कृत

88

६०४४. गुटका सं० १८। पत्र सं० १५०। म्रा० ७४२३ ६०। भाषा-संस्कृत । ले० काल 🗴 । पूर्या विशेष--पूजा पाठ संग्रह है।

ट भगडार [श्रामेर शास्त्र भगडार जयपुर]

इ०४६. गुटका स० १। पत्र स० ३७। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रहः। ले• काल ४। पूर्ण। वे• म० १५०१ |

१ मनोहरमंजरी

मनोहर मिश्र

हिन्दी

1-78

प्रारम्भ---

श्रय मनोहर मजरी, श्रथ नव जीवना लक्षन।

याके योवनु श्रंकुरयो, श्रग श्रंग छवि श्रोर ।

सुनि सुजान नव यौवना, कहत भेद द्वे ठोर ॥

ग्रन्तिम -

लहलहाति श्रति रसमसी, बहु सुवासु भपाठ (?)

निरिख मनोहर मजरी, रिसक मृङ्ग मंडरात ।। सुनि सुजनि श्रमिमान तिजु मन विचारि गुन दोए ।

कहा विरहू कित प्रेम रसु, तही होत दुख मोख ।।

चद अत द्वे दीप के, अक बीच आकास।

करी मनोहर मजरी, मकर चादनी ग्यास ।।

माथुर का हो मथुपुरी, बसत महोली पोरि ।

करी मनोहर मंजरी, अनूप रस सोरि॥

इति श्र सकललोककृतमिणमरीचिमंजरीनिकरनीराजितपदद्व दवृन्दावनिवहारकारिलयाकटाक्कुटोपासक मनोहर मिश्र विरचिता मनोहरमजरी समाप्ता।

कुल ७४ पद्य है। स० ७२ तक ही दिये हुये हैं। नायिका भेद वर्शान है।

२. फुटकर दोहा

X

हिन्दी

₹•-३६

विशेष- ७० दोहे हैं।

३ भ्रायुर्वेदिक नृसखे

३७

६०४७. गुटका सं० २ । पत्र सं० २-५८ । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १७६४ । अपूर्गा । वे० स० १५०२।

१. नाममजरी

नददास

×

हिन्दी पद्य सं ० २६१

२-२५

२ भ्रनेकार्थमजरी

77

25-80

स्वामी खेमदास ने प्रतिलिपि की थी।

ि ७६७

गुटका-सम्रह

३ कवित्त

X

53

४१-४३

४. भोजरासी

उदयभानु

77

メダー&に

प्रारम्भ-

श्री गरोसाय नमः । दोहरा ।

कुंजर कर कु जर करन कुंजर ग्रानंद देव।

सिधि समपन सत्त सुव सुरनर कीजिय सेव ॥ १ ॥

जगत जननि जग उछरन जगत ईस ग्ररधंग ।

मीन विचित्र विराजकर हंसासन सरवग ।। २ ॥

सूर शिरोमिण सूर सुत सूर टरें नहि मान।

जहा तहा स्वन सुम जिये तहां भूपति भोज वखान ।। ३ ।।

म्रन्तिम—इति श्री भोजजी को रासो उदैभानजी को कियो। लिखतं स्थामी खेमदास मिती फागुए बुदी ११ संवत् १७६५। इसमे कुल १४ पद्य हैं जिनमे भोजराज का वैभव व यश वर्णन किया गया है।

५. कवित्त

टोडर

हिन्दी ं

कवित्त हैं

8-38

विशेष—ये महाराज टोडरमल के नाम से प्रसिद्ध थे श्रीर श्रक्षघर के भूमिकर विभाग के मंत्री थे। ६०४८. गुटका स० ३। पत्र सं॰ ११८ । भाषा—हिन्दी। ले॰ काल सं॰ १७२६। श्रपूर्ण। वे॰ सं॰ १५०३।

१. मायाष्ट्रह्म का विचार

X

हिन्दी गद्य

श्रपूर्ण

विशेष-प्रारम्भ के कई पत्र फटे हुये हैं गद्य का नमूना इस प्रकार है।

"माया काहे तै किहये व भस्यो सवल है तातै माया किहये । श्रकास काहे तैं किहये पिंड ब्रह्मांड का ग्रादि श्राकार है तातैं ग्राकास कहीये । सुनी (शून्य) काहे तै कहीथे-जड है तातें सुनी किहये । सनती काहे तें किहये सकल ससार को जीति रही है तातें सकती किहये।"

त्रिन्तम-एता माया ब्रह्म का विचार परम हस का ग्यान व्रंभ जगीस संपूर्ण समाप्ता । श्रीशंक्राचारीज वीरच्यते । मिती ग्रसाढ सुदी १० स० १७२६ का मुकाम गुहाटी उर कोस दीइ देईदान चारण की पोथीस्ये उतारी पोथी सा "" म ठोल्या साह नेवसी का वेटा " " कर महाराज श्री रुघनाथस्यंघजी ।

२ गोरखपदावली

गोरखनाथ

हिन्दी ं

मपूर्श

विशेष--करीब ६ पद्य हैं।

म्हारा रे वैरागी जोगी जोगिए संग न छाडे जी।

मान सरोवर मनस भूलती भावे गगन मह मंह मारेजी।।

३, सतसई

विहारीलाल

हिन्दी

मपूर्ण

3-62

ले० काल स० १७२५ माघ सुदी २।

विशेप-प्रारम्भ के १२ दोहे नहीं है। कुल ७१० दोहे हैं।

४. वैद्यमनोत्सव

नयनसुख

"

ग्रपूर्ग ६७-११८

६०४६. गुटका सं० ४। पत्र सं० २५। भाषा-संस्कृत। विषय-नीति। ले० काल सं० १८३१ पौष सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० १५०४।

विशेप—चाएाक्य नीति का वर्रान है। श्रीचन्दजी गंगवाल के पठनार्थ जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। ६०५०. गुटका स० ४। पत्र स० ४०। भाषा–हिन्दी। ले० काल स० १८३१। श्रपूर्ण। वे० स०

१५०५।

विशेष-विभिन्न कवियों के श्रङ्गार के श्रनूठे कवित्त है।

६०४१. गुटका सं०६। पत्र सं०६६। ग्रा०६४४ इ०। भाषा हिन्दी। र० काल सं०१६८८। के० काल स०१७६८ कार्तिक सुदी ६। पूर्ण । वै० सं०१५०६।

विशेप---सुन्दरदास कृत सुन्दरश्रुङ्गार है। श्रेयदास गोधा मालपुरा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

६०४२. गुटका सं०७। पत्र सं०४५। आ० ६४७ई इ०। आपा-हिन्दी। ले० काल सं०१६३१ वैशाख बुदी मा अपूर्ण। वे० सं०१५०७।

१. कवित्त

भ्रगर (भ्रग्रदास)

हिन्दी

१–१०

श्रपूर्ण

विकोप---कुल ६३ पद्य है पर प्रारम्भ के ७ पद्य नहीं हैं । इनका छन्द कुण्डलिया सा लगता है एक छन्द निम्न प्रकार है----

श्राधो बाटै जेवरी पाछै बछरा खाय।

पाछै वछरा खाय कहत गुरु सीख न मानै।

ग्यान पुरान मसान छिनक मैं घरम भूलाने ॥

करो विप्रलो रीत मृतग धन लेत न लाजै।

नीच न समभ मीच परत विषया के काजे।

श्रगर जीव श्रादि तै यह बंध्योस करै उपाय !

श्राधो बाटै जेवरी पाछै बछरा खाय ॥१०॥

१७--२१

हिन्दी

३. द्वादशानुप्रक्षा

ले० काल सं० १८३१ वैशाख बुदी ८ ।

विशेष—१२ सबैये १२ कवित्त छप्पय तथा ग्रन्त मे १ दोहा इस प्रकार कुल २५ छद हैं। ग्रन्तम— ग्रनुप्रेक्षा द्वादश सूनत, गयो तिमिर ग्रज्ञान।

श्रष्ट करम तसकर दुरे, उग्यो श्रनुभै भान ॥ २५ ॥

इति द्वादशानुप्रेक्षा संपूर्ण । मिती बैशाख बुदी ५ संवत् १८३१ दसकत देव करण का ।

४. कर्मपच्चीसी

भारमल

हिन्दी

२१-२४

विशेष--कुल २२ पद्य हैं।

म्रन्तिमपद्य- करम म्रा तोर पंच महावरत धर्रु जेपू चौवीस जिरादा।

भ्ररहत ध्यान लैव चहूं साह लोयए। वंदा ।। प्रकृति पच्यासी जाएि। कै करम पचीसी जान ।

सूदर भारैमल "" 'स्योपुर थान ।। कर्म ग्रति० ।। २२ ।।

।। इति कर्म पच्चीसी संपूर्ण ।।

५. पद-(वासुरी दीजिये क्रज नारि)

सूरदास

57

२६

६. पद-हम तो व्रज को वसिवो ही तज्यो

77

"

२७–२८

व्रज मे वसि वैरिशि तू वंसुरी

७. श्याम वत्तीसी

श्याम

55

३७-४०

विशेष-कुल ३५ पद्य हैं जिनमे ३४ सवैये तथा १ दोहा है.-

ग्रन्तिम---

कृष्ण ध्यान चतु श्रष्ट मे श्रवनन सुनत प्रनाम ।

कहत स्याम कलमल कहु रहत न रञ्चक नाम ।।

द. पद-विन माली जो लगावै बाग

मनराम

हिन्दी

४०

६. दोहा-मवीर भ्रौगुन एक ही गुएा है

कवीर

55

55

लाख करोरि

१० फुटकर कवित्त

X

×

53

48

११ जम्बूद्वीप सम्बन्धी पंच मेरु का वर्शन

,, अपूर्श ,

४१--४५

६०४२. गुटका सं० ८। पत्र सं० ८९। ग्रा० ६×८ ६०। ले० काल सं० १७७६ श्रावण दुरी ६।

१. कृष्णुरुत्रमिण वेलि

पृथ्वीराज राठीर

राजस्थानी डिंगलु

१-54

र० काल० सं० १६३७।

विशेष--- प्रथ हिन्दी गृय टीका सहित है । पहिले हिन्दी पद्य है फिर गद्य टीका दी गई है।

	•		•	
₹.	विष्णु पजर रक्षा	×	सस्कृत	द ६
₹.	भजन (गढ बंका कैसे लीजे रे भाई)	×	हिन्दी	59-55
٧.	पद-(बैठे नव निकु ज कुटीर)	चतुर्भुज	"	দ ૃ
x.	,, (घुनिसुनि मुरली बन वाजै)	हरीदास	"	33
ξ.	,, (सुन्दर सावरो ग्रावे चल्यो सखी)	नददास	3 7	3 5
٥.	,, (बालगोपाल छैगन मेरे)	परमानन्द	"	33
5	" (वन ते आवत गावत गौरी)	×	99	97

६०४४. गुटका स०६। पत्र सं० = ४। म्रा० ६×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स०१५०६।

विशेष—केवल कृष्ण्यक्षमणी वेलि पृथ्वीराज राठीर कृत है। प्रति हिन्दी टीका सहित है। टीकाकार अज्ञात है। ग्रुटका सं० ५ मे आई हुई टीका से भिन्न है। टीका काल नहीं दिया है।

६०४४. गुटका सं० १०। पत्र स०१७०-२०२। आ० ६×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे सं० १५११।

१. कवित्त

राजस्थानी डिंगल

१७१-७३

विशेप—श्रुङ्गार रस के सुन्दर कवित्त हैं। विरहिनी का वर्शान है। इसमे एक कवित्त छीहल का भी है।

२ श्रीरुवमिंगाकृष्णजी को रासो

तिपरदास

राजस्थानी पद्य

१७३-१5४

विशेष—इति श्री रुक्मणी कृष्णजी को रासी तिपरदास कृत संपूर्ण ।। संवत् १७३६ वर्षे प्रथम चैत्र मासे शुभ शुक्ल पक्षे तिथी दशम्या बुधवासरे श्री मुक्त्दपुर मध्ये लिखापितं साह सजन कोष्ठ साह लूणाजी तृत्पुत्र सजन साह श्रेष्ठ छाजूजी वाचनाय । लिखत व्यास जटूना नाम्ना ।

३ /कवित्त

X

हिन्दी

१८६-२०२

विशेप--भूधरदास, सुखराम, विहारी तथा केशवदास के कवित्ती का संग्रह है। ४७ कवित्त हैं।

प्रगर्ने हिंडोगा का मे साह गोरधनदास ग्रग्रवाल की पोथी ये लिखी लिखतं मौजीराम ।

२. द्वादशमासा (वारहमासा)

महाकविराइसुन्दर

। हिन्दी

٦,

८७२ 🗍

विशेष--कुल २४ कवित्त है। प्रत्येक मास का विरहिनी वर्णन किया गया है। प्रत्येक कवित्त में सुन्दर शब्द हैं । सम्भव है रचना सुन्दर कवि की है ।

३. नखिशखवर्णन

केशवदास

हिन्दी

१४-२८

ले॰ काल स॰ १७४६ माह बुदी १४।

विशेप-शिरगढ मे प्रतिलिपि हुई थी।

४. कवित्त-

गिरधर, मोहन सेवग श्रादि के

हिन्दी

६०४६. गुटका सं० १४। पत्र सं० ३६। ग्रा० ५×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० १५२३ ।

विशेप-सामान्य पाठो का संग्रह है।

६०६०. गुटका सं० १४। पत्र स० १६८ । श्रा॰ ५×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद एवं पूजा । ले० काल सं० १८३३ ग्रासोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० १५२४ ।

१. पदसंग्रह

हिन्दी

१-५५

विशेष-जिनदास, हरीसिंह, बनारसीदास एव रामदास के पद हैं। राग रागनियों के नाम भी दिये हुये हैं

२. चीवीसतीर्थङ्करपूजा

रामचन्द्र

हिन्दी

45-165

६०६१. गुटका स० १६ । पत्र स० १७१ । श्रा० ७×६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १६४७ । स्रपूर्ण । वे० सं० १५२५ ।

विशेष-- मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है।

१. विरदावली

X

संस्कृत

विशेप - पूरी भट्टारक पट्टावली दी हुई है।

२. ज्ञानवावनी

मतिशेखर

हिन्दो

६८-१०२

विशेप-रचना प्राचीन है। ५३ पद्यों में किन ने ग्रक्षरों की वावनी लिखी है। मितिशेखर की लिखी हुई धन्ना चउपई है जिसका रचनाकाल सं० १५७४ है।

३ त्रिभुवन की विनती

गङ्गादास

विशेष--इसमे १०१ पद्य हैं जिसमें ६३ शलाका पुरुषो का वर्रान है। भाषा गुजराती लिपि हिन्दी है। ६०६२. गुटका सं० १७। पत्र सं० ३२-७०। म्रा० ५×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८४७ । अपूर्ण । वे० सं० १५२६ ।

विशेप-सामान्य पाठो का संग्रह है।

६०६३. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ७० । ग्रा० ६४४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८६४ ज्येष्ठ बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० सं० १५२७ ।

१. चतुर्दशीकथा टोकम

हिन्दी र० काल सं० १७१२

विशेष---३५७ पद्य है।

२. कलियुग की कथा

द्वारकादास

"

विशेष-पचेवर मे प्रतिलिपि हुई थी।

३. फूटकर कवित्त, रागो के नाम, रागमाला के दोहे तथा विनोदीलाल कृत चौबीसी स्तुति है।

४. कपडा माला का दूहा

सुन्दर

राजस्यानी

विशेष—इसमे ३१ पद्यो मे कवि ने नायिका को ग्रलग २ कपडे पहिना कर विरह जागृत किया तथा किर पिय मिलन कराया है। कविता सुन्दर है।

६०६४. गुटका सं० १६ । पत्र स० ५७-३०५ । ग्रा० ६३×६३ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-संग्रह । ले० काल सं० १६९० द्वि० वैशाख सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० १५३० ।

१. भविष्यदत्तचौपई

व्र० रायमस्ल

हिन्दी

श्रपूर्ण

५७-१०६

२. श्रीपालचरित्र

परिमल्ल

१०७-२५३

विशेष — किव का पूर्ण परिचय प्रशस्ति मे है। अकवर के शासन काल मे रचना की गई थी।

३ धर्मरास (श्रावकाचाररास)

X

"

२५३−२६५

६०६४. गुटका सं० २०। पत्र सं० ७३। ग्रा० १×६३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८३६ चैत्र बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० १५३१ ।

विशेष—स्तोत्र पूजा एव पाठो का संग्रह है। वनारसीदास के कवित्त भी है। उसका एक उदाहरण निम्न है:--

कपडा की रीस जाएँ। हैवर की हीस जाएँ।

न्याय भी नवेरि जागौ राज रौस मागिवी।।

राग तौ छत्तीस जाएौ लिषए। वत्तीस जाएौ।

चूंप चतुराई जारा महल मे मारावी।।

बात जारा संवाद जारा खूवी खसवोई जारा ।

सगपग साधि जारा प्रर्थ को जारिएवी।

कहत विशारसीदास एक जिन नांव विना।

···· गा गा वृडी सव जाग्रिवी ||

६०६६ गुटका सं० २१। पत्र सं० १६४। ग्रा० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय संग्रह। ले॰ काल सं० १८६७। ग्रपूर्ण । वे॰ सं० १५३२।

विक्षेप-सामान्य स्तोत्र पाठ सग्रह है।

६०६७. गुटका सं० २२। पत्र २०४८ द्या० १०४७ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह। ले० काल 🗙 । ग्रपूर्ण । वे० सं० १५३३।

विशेष-स्तोत्र एवं पदो का संग्रह है।

६०६८. गुटका सं०२३। पत्र सं०१४-६२। श्रा०४×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १८०८। श्रपूर्ण। वे० सं०१५३४।

विशेष--निम्न पाठो का संग्रह है.--भक्तामर भाषा, परमज्योति भाषा, श्रादिनाथ की वीनती, ब्रह्में जिनदास एवं कनक्कीर्ति के पद, निर्वाणकाण्ड गाथा, त्रिभुवन की वीनती तथा भेघकुमारचीपई।

६०६६. गुटका सं० २४। पत्र सं० २०। आ० ६×४६ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल १८८०। अपूर्ण। वे० स० १५३४।

विशेष-जैन नगर मे प्रतिलिपि हुई थी।

६०७० गुटका सं० २४ । पत्र सं० २४ । आ० ५x४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल x । अपूर्ण । वे० स० १५३६ ।

विशेप--- निम्न पाठो का संग्रह है:--- विपापहार भाषा (ग्रवलकीर्ति) भूगलचौवीसी भाषा, भक्तामर भाषा (हेमराज)

६०७१. गुटका सं० २६ | पत्र स० ६० । आ० ६×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८७३ । अपूर्ण । वे० सं० १५३७ ।

विशेप—सामान्य पाठो का संग्रह है।

६०७२. गुटका सं० २७ । पत्र र्स० १४-१२० । भाषा-संस्कृत । ले० काल १८९४ । स्रपूर्ण । वे० स० १४३८ ।

विशेप-स्तोत्र सग्रह है।

६०७३ गुटका सं० २८ । पत्र सं० १५० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७५३ । ग्रपूर्ण । वे० स० १५३६ ।

विशेष--सामान्य पाठो का संग्रह है। सं० १७५३ ग्रपाढ सुदी ३ मु० मौ० नन्दपुर गगाजी का तट। दुर्गादास चादवाई की पुस्तक से मनरूप ने प्रतिलिपि की थी ।

६०७४. गुटका स० २६। पत्र सं० १६। ग्रा० ५×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-पूजापाठ। षि० काल ×। पूर्ण। वे० स० १५४०,

विशेष---नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६०७४. गुटका सं० ३०। पत्र सं० १५५ | म्रा० ६×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण।

१. भविष्यदत्त चौपाई

व्र०रायमल्ल

हिन्दी

१-७६

र० सं० १६३३ कार्तिक सुदी १४।

विशेष--फतेराम बज ने जयपुर में सं० १८१२ अषाढ बुदी १० को प्रतिलिपि की थी।

२. वीरजिएान्द की संघावली

पूनो

हिन्दी

77

30-00

विशेष-मेघकुमार गीत है।

३, अठारह नाते की कथा

लोहट

८०–८३

४. रविवार कथा

खुशालचन्द

" र० काल सं० १७७५

विशेष--लिखतं फतेराम ईसरदास बज वासी सागानेर का।

५. ज्ञानपचीसी

वनारसीदास

77

77

37

६. चौबोसतीर्थंकरो की वंदना

नेमीचन्द

*હ*3

७. फुटकर सैवया

×

57

११३

पट्लेश्या वेलि

इर्षकीति

" र० काल सं० १६८३ ११६

६. जिन स्तुति

जोधराज गोदीका

११≒

१०. प्रोत्यकर चौपई

मु० नेमीचन्द

११६-१३४

र० काल सं० १७७१ वैशाख सुदी ११

६०७६. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ४-२६४ । आ० ५२×६ ६०। भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्या | वे० सं० १४४२ ।

विशेष-पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है।

६०७७. गुटका सं० ३२। पत्र सं० ११६। ग्रा० ६×४३ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल × पूर्ण वे० सं० १५४४।

विशेष---नित्य एवं भाद्रपद पूजा संग्रह है।

६०७८. गुटका सं० ३३। पत्र सं० ३२४। ग्रां० ४×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १७४६ वैशास सुदी ३। ग्रपूर्ण। वे० सं० १५४५।

विशेष-सामान्य पाठो का संग्रह है।

६०७६. गुटका सं० ३४। पत्र सं० १३८। ग्रा० ६×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० १५४६।

विशेप-मुख्यतः नाटक समयसार की प्रति है।

६०८०. गुटका सं० ३६। पत्र सं० २४। ग्रा० ५×५ ६०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद संग्रह। ते० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५४७।

६०८१. गुटका सं० ३७। पत्र सं० १७०। ग्रां० ६४४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल ४। पूर्या। वे० सं० १५४६।

विशेप-नित्यपूजा पाठ संग्रह है।

१०. चतुर्विशतिस्तुति

११. विनती

६०८२. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ६४ । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल १८४२ पूर्श । वे० स० १५४८ ।

विशेष-मुख्यत निम्न पाठो का संग्रह है।

१. पदसग्रह	मनराम एवं भूधरदास	हिन्दी		
२. स्तुति	हरीसिह	99		
३. पार्वनाथ की ग्रुएमाला	लोहट	77		
४. पद- (दर्शन दीज्योजी नेमकुमा	र मेलीराम	17		
.५. श्रारती	शुभचन्द	19	4	
विशेप—म्रन्तिम-म्रारती करता म्रारित भाजे,शुभचन्द ज्ञान मगन में साजे ॥ ।।				
६. पद- (मै तो थारी भ्राज महिमा	जानी) मेला	"	•	
७. शारदाप्टक	वनारसीदास	1)	ले• काल १८१०	
विशेष—जयपुर मे कार्न	ोदास के मकान मे लालाराम	ने प्रतिलिपि की थी।		
म. पद- मोह नीद में छिक रहे हो।		हिन्दी		
 , उठि तेरो मुख देखूं नामि 	जू के नंदा टोडर	44		

विनोदीलाल

श्रजैराज

"

"

77

६०८३. गुटका सं० ३६। पत्र सं० २-१५६। ग्रा० ५४५ ड०। भाषा-हिन्दो। ले० काल 🗙 । पूर्ण। वे० सं० १५५०। मुख्यत निम्न पाठो का संग्रह है:—

१. भ्रारती संग्रह	चानत ा य	हिन्दी	(५ ग्रारतिया है)
२. ग्रारती-किह विधि ग्रारती करो प्रभु तेरी	मानसिंह	37	
३. श्रारती-इहविधि श्रारती करो प्रभु तेरी	दीपचन्द	17	
४. ग्रारती-करो ग्रारती ग्रातम देवा	विहारीदास	23	ą
५. पद संग्रह	द्यानतराय 🌲	99	१७
६, पद- संसार ग्रथिर भाई	मानसिंह	59	80
७. पूजाष्टक f	वेनोदीलाल	55	५३
द. पद−सं ग्रह	भूघरदास	33	६७
६, पद-जाग पियारी ग्रब क्या सोवै	कवीर	97	৬৬
१०. पद-वया सोवै उठि जाग रे प्रभाती मन	समयसुन्दर	77	૭૭
११ सिद्धपूजाप्टक	दौलतराम	37	50
१२. श्रारती सिद्धो की	बुशालच न्द	77	5
१३. गुरुप्रपृक	द्यानतराय	99	द ३
१४. साघु की श्रारती	हेमराजं	"	5 ¥
१५. वाएगी भ्रष्टक व जयमाल	चानतराय	"	"
१६. पार्श्वनायाष्ट्रक मुनि	सकलकीर्त्ति	77	"
मन्तिम—मृष्ट विधि पूजा ग्रर्घ उ	तारो सकलकीर्त्तमु	ने काज मुदा ।।	
१७. नेमिनाथाष्ट्रक	भूधरदास	हिन्दी	११७
१८. पूजासग्रह	लालचन्द	"	१३८
१६. पद-उठ तेरो मुख देखूं नाभिजी के नंदा	ा टोडर	27	१ ४५
२०. पद-देखो माई ग्राज रिपभ घरि ग्रावै	साहकीरत	23	"
२१. पद-संग्रह शोभा	चिन्द शुभचन्द ग्रानं	द 39	१४६
२२ न्हवरा मंगल	वंसी	12	१४७
२३. क्षेत्रपाल भैरवगीत	शोभाचन्द	"	388

हिन्दी १५० थिरुपाल २४. न्हवरा ग्रारती केशवनंदन करहिंचु सेव, थिरुपाल भरौं जिसा चरसा सेव ॥ ग्रन्तिम--१५३ व्र० जिनदास २५. ग्रारतो सरस्वती ा. ६०८४. गुटका सं०४० । पत्र सं० ७-६८ । ग्रा० ८४६ इ० । भाषा -हिन्दी । ले० काल सं० १८८४ । ग्रपूर्ण । वे० सं० १५५१। विशेष-सामान्य पाठो का सम्रह है। ६० म. गुटका सं० ४१। पत्र सं० २२३। म्रा० ५×४६ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। से० काल सं० १७४२। अपूर्ण। वे० स० १५५२। पूजा एवं स्तोत्र सग्रह है। तथा समयसार नाटक भी है। ६०८६. गुटका सं० ४२। पत्र सं० १३६। ग्रा॰ ५४४३ इ०। ले० काल १७२६ चैत सुदी १। ग्रपूर्ण। वे० सं० १५५३। विशेष — मुख्य २ पाठ निम्न है — १. चतुर्विशति स्तुति Ę प्राकृत X २. लव्धिविधान चौपई भोषम कवि ३० हिन्दी र० काल स० १६१७ फाग्रुग्। सुदी १३। ले० काल स० १७३२ वैशाख बुदी ३। ţ विशेप—सवत सोलसी सतरी, फाग्रुरा मास जबै ऊतरी। उजलपापि तेरस तिथि जािंग, तादिन कया चढी परवािंग ।।१६६।। बरते निवाली माहि विख्यात, जैनि धर्म तसु गोधा जानि । वह कया भीषम किव कही, जिनपुराएा मांहि जैसी लही ॥१९७॥ X कडा वन्ध चौपई जािगा। पूरा हुम्रा दोइसै प्रमािग । जिनवाएी का ग्रन्त न जास, भिव जीव जे लहे सुखवास ॥ -इति श्री लिव्य विधान चौपई संपूर्ण । लिखित चोखा लिखापित साह श्री भोगीदास पठनाय । स॰ १७३२'वैशाख बुदि ३ कृष्णपक्ष । ३. जिन्कुशल की स्तुति साधुकीति हिन्दी

विश्वभूपरा

[= 22

४ नेमिजी वी लहरि

ग्रकासमह

गुटका-संप्रह

हिन्दी ५ नेमीश्वर राजुल की लहुरि (वारहमासा) खेतिसह साह ६. ज्ञानपचमीवृहद् स्तवन समयसुन्दर रंगविजय ७ ग्रादीश्वरगीत 73 जिनरंगसूरि प. कुशलगुरुस्तवन " समयसुन्दर " १०. चौबीसीस्तवन जयसागर 33 कनककीति ११. जिनस्तवन 53 जन्म स० १६६७ १२, भोगीदास को जन्म कुण्डली X " ६०८७. गुटका सं० ४३। पत्र सं० २१। ग्रा० ५र्४४ इ०। भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १७३० म्रपूर्ग । वे० स० १५५४ ।

विशेप--तत्वार्थंसूत्र तथा पद्मावतीस्तोत्र है । मलारना मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६०८८. गुटका सं० ४४। पत्र सं० ४-७६। म्रा० ७×४ई इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल×। अपूर्ण वे० सं० १५५५।

विशेष--गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं।

१ श्वेताम्बर मत के ५४ बोल

जगरूप

र० काल सं० १८११ ले० काल

स॰ १८६६ ग्रासोज सुदी ३।

२. व्रतविधानरासो

दौलतराम पाटनी

हिन्दी र काल सं ०१७६७ मासो न सुदी १०

६०८. गुटका स० ४४। पत्र सं० ५-१०३। आ० ६३×४३ द०। भाषा-हिन्दी। ∕ले० काल सं० १८६६। अपूर्ण। वे॰ सं० १५५६।

विशेष-गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं।

१. सुदामा की वारहखडी

X

हिन्दी

३२-३४

विशेष--कुल २८ पद्य है।

२. जन्मकुण्डली महाराजा सवाई जगर्तासहजी की 🗴

सस्कृत

१०३

विशेष--जन्म सं० १८४२ चैत बुदी ११ रवी ७।३० घनेष्टा ५७।२४ सिघ योग जन्म नाम सदासुख । ६०६०. गुटका स० ४६। पत्र सं० ३०। ग्रा० ६३×५३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल 🗙

पूर्ण । वै० स० १५५७ ।

विशेष-हिन्दी पद संग्रह है।

७५०]

हर्ट १. गुरुका सं० ४७ | पत्र सं० ३६ | ग्रा॰ ६×५२ इ० । भाषा सम्कृत हिन्दी | ले॰ काल ×।

विशेव-सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६८६२. गुटका सं०४८। पर स०८। ग्रा०६×५३ इ०। भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । ले० काल ×। त्रपूर्ण । वे० स०१५५६ ।

विशेप-- अनुभूतिस्वरूगाचार्य कृत सारस्वत प्रक्रिया है।

६०६३. गुटका सं०४६ । पत्र सं०६५ । ग्रा०६×५ इ०। भाषा-हिन्दी । ले० काल सं०१६६ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वे० स०१५६२ ।

विशेष — देवाब्रह्म कृत विनती सम्रह तथा लीहट कृत प्रठारह नाते का चौढालिया है।

६०६४ गुटका सं० ४०। पत्र सं० ७४। म्रा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×।

विशेष--सामान्य पाठी का संग्रह है।

६०६४. गुटका सं० ४१। पत्र स० १७०। ग्रा० ५३×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले॰ काल ×। ले॰ वाल ×। पूर्ण। वे० सं० १५६३।

विशेप---निम्न मुख्य पाठ है।

१. कवित्त

कन्हैयालाल

हिन्दी

77

१०५-१०७

विशेप - ३ कवित्त हैं।

२. रागमाला के दोहे

जैतश्री

३. बारहमासा

जसराज

१२ दोहे है ११५-१२१

६०६६. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० १७८ । ग्रा० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले• काल × 4 इपूर्ण । वे० स० १५६६ ।

विशेप-सामान्य पाठो का संग्रह है।

६०६७. गुटका सं० ४३। पत्र सं० २०४। ग्रा० ६६×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १७६३ माह बुदी ४। पूर्ण। वे० स० १५६७।

विशेप-- गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१. श्रष्टाह्मिकारासो

विनयकीत्ति

हिन्दी

१५५

२ रोहिग्गी विधिक्या

वंसीदास

हिन्दी

१५६–६०

र० काल सं० १६६५ ज्येष्ठ सुदी २।

विशेष— सोरह से पच्यानऊ ढई, ज्येष्ठ कृष्ण दुतिया भई
फातिहाबाद नगर सुखमात, श्रग्रवाल शिव जातिप्रधान ।।
मूलसिंह कीरति विख्यात, विशालकीर्ति गोयम सममान ।
ता शिप वशीदास सुजान, मानै जिनवर की श्रान ।।=६।।

अक्षर पद तुक तने जु होन, पढी बनाइ सदा परवीन ।।

क्षमी शारदा १डितराइ पढत सुनत उपजे धर्मी सुभाइ ॥ ६७॥

इति रोहिग्गीधिधि कथा समाप्त ।।

सकल की ति १, सोलहकारएारासो हिन्दी १७२ २. रत्नत्रयका महार्घ व क्षमावर्गी **ब्रह्मसेन** संस्कृत १७५-१८६ ५. विनती चौपड की हिन्दी मान 283-288 ६. पार्श्वनाथजयमाल लोहट " २५१

६०६८. गुटका सं० १४ । पत्र स० २२-३०। द्या० ६३ ४४ इ०। भाषा-हिन्दी । ले० काल 🗶 । ग्रपूर्ण । वे० सं० १४६८ ।

विशेष-हिन्दी पदो का संग्रह है।

६०६६. गुटका सं० ४४। पत्र सं० १०५। आ० ६×५३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८८४। अपूर्ण। वे० सं० १५६६।

विशेप-गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है-

१ ग्रश्वलक्षरा

पं॰ नकुल

संस्कृत

अपूर्ण १०--२६

विशेप—श्लोको के नीचे हिन्दी ग्रर्थ भी है। प्रध्याय के ग्रन्त मे पृष्ठ १२ पर— इति श्री महाराजि नकुल पंडित विरचिते ग्रन्थ सुभ विरचित प्रथमोव्याय. ।।

२. फुटकर दोहे

4

कवीर

हिन्दी

६१००. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० १४ । ग्रा० ७३४५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ते० काल ४ । पूर्ण।

विशेष-नोई उल्लेखनीय पाठ नही है।

```
गुटका-संप्रह
७५२ ]
           ६१०१ गुटका सं १८७। पत्र स० ७५। म्रा० ६×४३ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल० सं० १८४७
जैठ सदी १ । पूर्ण । वे० सं० १५७१ ।
           विशेष---निम्न पाठ हैं---
                                                                                 ७१२ दोहे हैं।
                                                               हिन्दी
    वुन्दसतसई
                                             वृन्द
                                      वैय नंदलाल
   प्रश्नावलि कवित्त
                                         शिनलाल
  ३ कवित्त चुगलखोर का
                                                                33
           ६१०२. गुटका सं० ४=। पत्र सं० =२। म्रा० ५×५३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।
पूर्ग । वे० सं० १५७२ ।
           विशेय-सामान्य पाठो का सग्रह है।
           ६१०३. गुटका स० ४६ । पत्र सं० ६-६९ । ग्रा० ७×४६ इ० । भागा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल ×
ध्रपूर्ण । वे० सं० १५७३।
           विशेष-सामान्य पाठो का संग्रह है।
           ६१०४. गटका सं ६०। पत्र स० १८०। ग्रा० ७×५३ ६०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल x।
प्रपूर्ण | वे० स० १५७४ |
           विशेप-मुख्य पाठ निम्न प्रकार है।
 १. नघुतत्त्वार्थसूत्र
                                                               संस्कृत
                                            X
  २ ग्रारायना प्रतिवोधसार
                                                               हिन्दी .
                                            X
                                                                                   ४४ पद्य है
           ६१०४. गुटका सं० ६१। पत्र सं० ६७। ग्रा॰ ६४४ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल स॰
१८१४ भादवा चुदी ६ । पूर्ण ।० स० १५७५ ।
           विशेप-मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।
  १. वारहसडी
                                            X
                                                               हिन्दी
                                                                                            ३६
  २ विनती-प.हर्व जिनेश्वर विदये रे
                                          कुशलविजय
                                                                                            80
                                                                 "
     साहिव मुकति तणू दातार रे
 ३ पद-किये श्राराधना तेरी हिये श्रानन्द
                                         नवलराम
                                                                                             17
                         व्यापत है
 ४. पद-हेली देहली क्ति जाय छै नेम त'वार
                                            टीलाराम
                                                                "
                                                                                            "
```

			[1023
गुटका-संप्रह]			{ ७५३
५. पद-नेमकंवार री वाटडी हो राणी	खुशालचंद	हिन्दी	४१
राजुल जोवे खडी	हो खडी		
६. पद-पल नहीं लगदी माय मैं पल नी	हं लगदो वखतराम	1)	४३
पीया मो मन भावे ने	म पिया		
७. पद-जिनजी को दरसरा नित करां हे	रूपचन्द	"	77
ु सुमति सहेर	त्यो		
 पद-तुम नेम का भगन कर जिससे ते 	ोराभनाहो वखतराम	33	**
६. विनती	श्रजैराज	"	४५
१०. हमीररासो	×	हिन्दी	म्रपूर्ण ४१
११. पर-भोग दुखराई तजभिव	जगतराम	53	Z o
१२. पद	नवलराम	हिन्दी	५१
१३. " (मङ्गल प्रभाती)	विनोदीलाल	57	५२
१४. रेखाचित्र श्रादिनाथ, चन्द्रप्र	म, वर्द्धमान एव पार्श्वनाथ	99	५७- ५ -
१५. वसंतपूजा	ध्रजैराज	5 3	५६–६१

विशेष-- अन्तिम पद्य निम्न प्रकार हैं :--

आवैरि सहर सुहावर्णू रित वसंत कू पाय । अजैराज करि जोरि के गावे ही मन वच काय ॥

६१०६. गुटका स० ६२ । पत्र सं० १२० । आ० ६४५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १६३८ पूर्ण । वे० सं० १५७६ ।

विशेष-सामान्य पाठो का सग्रह है।

1

६१०७. गुटका सं०६३। पत्र सं०१७। ग्रा०६×५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। ग्रपूर्श।

विशेष-देवाब्रह्म कृत पद एवं भूघरदास कृत गुरुक्रो की स्तुति है।

६१०८. गुटका स० ६४ । पत्र सं० ४० । आ० पर्श्र ४६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८६७ । अपूर्ण । वे० सं० १५८० ।

```
[ शुदका संबह
ওদ্বপ্ত ]
          ६१०६ गुटका सं० ६४। पत्र सं० १७३। मा० ६९×४२ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण
```

वे० स० १५८१।

विशेष-पूजा पाठ स्तोत्र संग्रह है। ६११०. गुटका स० ६६। पत्र सं० ३२। ग्रा० ६१×४२ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल 🔀

ग्रपूर्गा । वे० सं० १५५२ ।

विशेष — पंचमेरु पूजा, अष्टाह्मिका पूजा तथा सीलहकारण एव दशलक्षण पूजाएं हैं।

६१११. गुटका स० ६७ । पत्र सं० १८५ । आ० ५३४७ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १७४३। पूर्गी । वे० सं० १५६६।

विशेष-सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६११२. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ११५ । ग्रा० ६४५ इ० । भाषा- हिन्दी । ले० वाल 🗙 । पूर्ण ।

वे० सं० १५८८ । विशेष-पूजा पाठो का संग्रह है।

६११३. गुटका सं ६६ । पत्र सं ० १५१ । ग्रा० ४३×४ ६० । भाषा-मन्तृत । ले॰ काल 🗙 । ग्रपूर्ण वे० स० १५८८।

विशेष-स्तोत्रो का सग्रह है। ६११४ गुटका सं० ७० । पत्र सं० १७-५० । ग्रा० ७३×५ ३० । भाषा-संस्कृत । ते० काल ×।

पूर्ण । वे० स० १५८९ ।

विशेष--- नित्य पूजा पाठो का संग्रह है। ६११४. गुटका सं० ७१ । पत्र सं० १८ । स्रा० ४×४६ इ० । भाषा–सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । 📝

पूर्ण। वे० सं० १५६०।

विशेप-चौवीस ठाएा चर्चा है।

६११६. गुटका स० ७२। पत्र सं० ३८। ग्रा० ४३×३३ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल × पूर्ण। वै० स० १५६१।

विशेप--पूजा पाठ सग्रह एवं श्रीपाल स्तुति ग्रादि है।

६११७. गुटका स० ७३। पत्र स० ३-५०। ग्रा० ६३×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल । ग्रपूर्ण । वे० स० १५६५ ।

गुटका-समह

६११=. गुटका स० ७४ । पत्र सं० ६ । ग्रा० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १५६६ ।

विशेष-मनोहर एव पूनो कवि के पद हैं।

६११६. गुटका सं० ७४ । पत्र सं० १० । ग्रा० ६×५५ इ० भाषा-हिन्दी । ले० काल × । त्रपूर्ण । वे० सं० १४६८ ।

विशेष-पाशाकेवली भाषा एव बाईस परीषह वर्णान है।

११२०. गुटका सं० ७६। पत्र सं० २९। ग्रा० ६४४ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। जे० काल 🗴 । ग्रार्सा। वे० सं० १५९६।

विगेय - उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र है ।

६१२१. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ६-४२ । आ० ६×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्या । वै० सं० १६०० ।

विशेष-सम्यक् दृष्टि की भावना का वर्णन है।

६१२२ गुटका सं० ७८। पत्र सं० ७-२१। आ० ६×४१ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे॰ स०१६०१।

विशेप-उमास्वामि कृत तत्वार्थ सूत्र है।

्र ६१२३. गुटका सं० ७६। पत्र स० ३०। ग्रा• ७४५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल ४। प्रपूर्ण । वे० सं• १६०२। सामान्य पूजा पाठ हैं।

६१२४. गुटका स० प्राचा पत्र सं० ३४। आ० ४×३३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६०४।

विशेप-देवाब्रहा, भूधरदास, जगराम एवं बुधजन के पदो का संग्रह है !

६१२४. गुटका सं० ८१। पृत्र स० २-२०। ग्रा० ४×३ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-विनती सग्रह। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० स० १६०६।

६१२६. गुटका स० ८२ । पत्र सं० २८ । ग्रा० ४४३ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्या । वे० सं० १६०७ ।

६१२७. गुटका स० ६३ । पत्र स० २-२० । ग्रा० ६३×५३ इ० । भाषा—सस्कृत हिन्दी । ले० काल × ग्रपूर्श । वे० सं० १६०६ ।

विशेप-सहस्रनाम स्तोत्र एवं पदो का संग्रह है।

७≒६] [गुटका-संब्रह

६१२८ गुटका सं० ८४ । पत्र स० १५ । ग्रा० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० कान 🗙 । ग्रपूर्ण ।

वै॰ स १६११।

विशेय-देवाब्रह्म कृत पदो का सम्रह है।

६१२६ गुटका स० म६। पत्र स० ४०। ग्रा० ६२ ×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल १७२३।

पूर्ण । वे० स० १६५६ ।

विशेष-उदयराम एवं वरुनराम के पद तथा मे नीराम कृत कल्याणमन्दिर तीत्रभाषा है।

६१३०. गुटका सं० ८०। पत्र सं० ७०-१२८। ग्रा० ६×५३ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल १-६४ ग्रपूर्ण। वे० स० १६५७।

विगेप-पूजाश्रो का सग्रह है।

६१३१. गुटका स० मन । पत्र मं० २८ । ग्रा० ६३ ×५३ इ० । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । श्रपूर्ण वै० मं० १६५८ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठो का सग्रह है।

६१३२ गुटका स० मधापत्र स० १६। म्रा० ७४४ इ०। भाषा–िह्न्दी। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स० १६४६।

विशेष--भगवानदास कृत ग्राचार्य शान्तिसागर की पूजा है।

६१६३. गुटका सं० ६०। पत्र स० २६। ग्रा० ६३८७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल १६१८। पूर्ण। वे० स० १६६०।

विशेष-स्वरूपचन्द कृत सिद्ध क्षेत्रों की पूजाग्रो का साग्रह है।

६१३४ गुटका सं०६१। पत्र स० ७२। ग्रा० ६३ूँ×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १६१४ पूर्ण। वे० स० १६६१।

विशेप—प्रारम्भ के १६ पत्रो पर १ से ५० तक पहाढे हैं जिनके ऊर नीति तथा श्रृङ्गार रस के ४७ दोहे है। गिरधर के कवित्त तथा शनिश्चर देव की कथा ग्रादि हैं।

६१३४ गुटका सं० ६२ । पत्र स० २० । म्रा० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । म्रपूर्ण ।

विशेप-कौतुक रत्नमंजूपा (मंत्र तत्र) तथा ज्योतिप सम्बन्धो साहित्य है ।

६१३६. गुटका सं०६३। पत्र सं०३७। ग्रा० ५×४ इ०। भाषा-सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वि०स०१६६३।

विशेष-संघीजी श्रीदेवजी के पठनार्थ लिखा गया था। स्तोत्रो का संग्रह है।

६१३. गुटका सं० ६४। पत्र सं० ५-४१। ुग्रा० ६४५ इ०। भाषा-गुजराती। ले० काल ४। भपूर्ण। वे० स० १६६४।

विशेष-वल्लभकृत रुक्मिंग विवाह वर्णन है।

६१३८. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ४२ । आ० ४×३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० १६६७ ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एवं पद (चारुं रथ की बजत बधाई जी सब जनमन ग्रानन्द दाई) है । चारो रथो का मेला स० १६१७ फाग्रुए। बुदी १२ को जयपुर हुम्रा था।

६१३६. गुटका सं ८६ । पत्र सं ० ७६ । ग्रा० ८ १ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० १६६ ।

विशेष--पूजा पाठ संग्रह है।

६१४०. गुटका सं० ६७। पत्र स० ६०। म्रा० ६३×४३ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल ४। पूर्या। वे० सं० १६६६।

विशेष-पूजा एव स्तोत्र सम्रह है।

६१४१. गुटका सं० ६८ । पत्र स० ५८ । ग्रा० ७४७ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल ४ । ग्रपूर्श । वै० सं० १६७० ।

विशेष-सुभाषित दोहे तथा सबैये, लक्ष्मण तथा नीतिग्रन्य एवं शनिश्चरदेव की कथा है।

६१४२. गुटका सं० ६६ । पत्र स० २-१२ । ग्रा० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । भपूर्ण । वे० सं० १६७१ ।

विशेष—मन्त्र यन्त्रविधि, ग्रायुर्वेदिक नुसले, खण्डेलवालो के ६४ गोत्र, तथा दि० जैनो की ७२ जातिया जिसमे से ३२ के नाम दिये है तथा चाण्चय नीति ग्रादि है। ग्रमानीराम की पुस्तक से चाकसू में सं० १७२७ में लिखा गया।

६१४३ गुटका सं० १००। पत्र सं० ५४। म्रा० ६×४३ इ०। भाषा-हिन्दी । ले० काल ×। मपूर्ण। वे० सं० १६७२।

विशेष--बनारसीदास कृत समयसार नाटक है। ५४ से ग्रागे पत्र खाली है।

६१४४. गुटका सं० १०१। पत्र सं० ५-२४। आ० ६×४३ ६०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० ४ काल सं० १८४२। अपूर्ण। वे० सं० १६७३।

विशेप-स्तीत्र संस्कृत एवं हिन्दी पाठ हैं।

```
प्रदक्ता स० १०२। पत्र सं० ३३। श्रा० ७×७ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल । श्रूपूर्ण। वे० सं० १६७४।

विभेष- बारहखडी (सूरत), नरक दोहा (सूधर), तत्त्वार्यसूत्र (जमास्वामि) तथा फुटकर सबैया हैं। ६१४६, गुटका स० १०३। पत्र सं० १६। श्रा० ५×४ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६७४।
```

विशेष—विषापहार, निर्वागाकाण्ड तथा भक्तामरस्तोत्र एव परीपह वर्णन है। ६१४७. गुटका स० १०४ | पत्र स० ३८ | ग्रा० ६४५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल 🗙 । ग्रपूर्ण ।

वे० सं० १६७६।

विशेष—पञ्चपरमेष्ठीग्रुग्, वारहभावना, वार्डन परिपह, सोनहकारग् भावना म्रादि हैं। ६१४८ गुटका सं० १०४ | पत्र सं• ११-४७ | म्रा॰ ६४५ द० | मापा–हिन्दी | ले॰ काल ४ |

श्रपूर्ण । वे० स० १६७७ । विशेष—स्वरोदय के पाठ है ।

६१४६. गुटका सं० १०६ । पत्र स०३६ । ग्रा॰ ७×३ द० । भाषा–संस्कृत । ले॰ काल × । पूर्ण ।

वे० स० १६७५ ।

विशेय-वारह भावना, पंचमगल तथा दशलक्षरा पूजा हैं।

६१४०. गुटका सं० १०७ । पत्र सं० ८ । म्रा॰ ७४५ । भाषा-हिन्दी । ले॰ काल 🗙 । पूर्ण । वे॰

स० १६७६।

विशेष—सम्मेदिशिखरमहात्म्य, निर्वाणकाड (मेश्ग) फुटकर पद एवं नेमिनाय के दश भव हैं। ६१५१. गुटका सं० १०८ । पत्र स० २-४ । आ० ७४५ ड०। भाषा–हिन्दी । ले० काल ४।

श्रपूर्श । वे० स० १६८० ।

विशेप—देवाब्रह्म कृत कलियुग की वीनती है।

६१४२. गुटका सं० १०६ । पत्र सं० ६६ । आ० ९×६५ इ० भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले०

वाल 🗴 । स्रपूर्श । वे० सं० १६८१ ।

विशेष-- १ से ४ तथा ३४ से ५२ पत्र नहीं है। निम्न पाठ हैं.--

इरजी के दोहा
 ★
 हिन्दी ।

विशेप---७६ से २१४, ४४७ से ५५१ दोहे तक है आगे नहीं है।

हरजी रसना सो कहै, ऐसी रस न श्रोर।

तिसना तु पीवत नही, फिर पीहै किहि ठौर ॥ १६३ ॥

1

हरजी हरजी जो कहै रसना वारवार।

पिस तिज मन ह नयो न ह्व जमन नाहि तिहि वार ॥ १६४ ॥

२. पुरुप-स्त्री सवाद	राम वन्द	हिन्दी	१२ पद्य है।
३. फुटकर कवित्त (शृंगार रस)	×	"	४ कवित्त है।
४ दिल्ली राज्य का व्यौरा	×	17	

विशेष-चौहान राज्य तक वर्णन दिया है।

५. म्राधाशीशी के मत्र व यन्त्र हैं।

६१४३. गुटका स० ११० । पत्र सं० ६५ । ग्रा० ७४४ ६० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-सग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८२ ।

विशेष — निर्वाण गण्ड, भक्तामरम्तोत्र, तत्वार्थसूत्र, एकी भावस्तोत्र ग्रादि पाठ हैं।

६, ४४. मृटका सं० ११९ । पत्र सं० ३८ । आ० ६×४ । भाषा हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल ×। पूर्शा । वे० स० १६८३ ।

विशेप—निर्वाग्यकाण्ड-सेवग पद सग्रह-भूघरदास, जोधा, मनोहर, सेवग, पद-महेन्द्रकीर्ति (ऐसा देव जिनद है सेवो भिव प्रानी) तथा चौरासी गोत्रोत्पत्ति वर्णन ग्रादि पाठ हैं।

६१४४.गुटका स० ११२ । पत्र स० ६१ । आ० ४×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५४ ।

विशेप-जैनेतर स्तोत्रो का संग्रह है। ग्रुटका पेमसिंह भाटी का लिखा हुग्रा है।

६१४६. गुटका सं० ११३ । पत्र सं० १३६ । ग्रा० ६४४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-सग्रह । ले० काल × । १८८३ । पूर्ण । वे० सं० १६८५ ।

विशेष--- २० का १०००० का, १५ का २० का यत्र, दोहे, पाशा केवली, भक्तामरस्तोत्र, पद सग्रह तथा राजस्थानी मे भ्रु गार के दोहे हैं।

६/४७. गुटका स० ११४। पत्र स० १२३। ग्रा० ७४६ इ०। भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रन्व परीक्षा। ले० काल × ।१८०४ ग्रपाढ बुदी ६। पूर्ण । वे० स० १६८६।

विशेष--पुस्तक ठाकुर हमीर्रासह गिलवाडी वालो की है खुशालचन्द ने पावटा मे प्रतिलिपि की शी। गुटका सजिल्द है'। 6035

६१४८. गुटका सं०११४ । पत्र सं० ३२ । श्रा० ६९ै×६ इ० । भाषा−हिन्दी । ले० काल × ।

गर्शा वि० स० ११५।

विशेप--ग्रायुर्वेदिक नुसखे हैं।

े ६१४६. गुटका स० ११६ | पत्र स० ७७ . ग्रा० ८×६ इ० | भाषा हिन्दी । ले० काल 🗙 | पूर्ण |

वे० स० १७०२।

विशेष—गुटका सजिल्द है। सण्डेलवालो के ५४ गोत्र, विभिन्न कवियो के पद, तया दीवाएा ग्रभयवन्दती

के पूत्र श्रानन्दीलाल की स० १६१६ की जन्म पत्री तथा श्रायुर्वेदिक नुसले हैं।

६१६०. गुटका सं० ११७ । पन स० ६१ । भाषा-हिन्दी । ले० काल 🔀 । पूर्ण । वे० स० १७०३ ।

ि विशेष—नित्य नियम पूजा संग्रह है।

६१६१. गुटका सं० ११८। पत्र स० ७६। ग्रा० ५×६ ६०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले॰ काल ४।

म्रपूर्श । वे० स० १७०५ ।

विशेष--पूजा पाठ एव स्तोय सग्रह है।

६१६२ गुटका सं० ११६। पत्र स० २४०। म्रा० ६x४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८४१

अपूर्ण। वे० स० १७११।

विशेष--भागवत, गीता हिन्दी पद्य टीका तथा नासिकेतोपात्यान हिन्दी पद्य मे है दोनो ही अपूर्ण है।

ं ६१६३. गुटका सं० ६२०। पत्र स० ३२-१२८। ग्रा० ४×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×।

श्रपूर्या । वे० स० १७१२ ।

विशेप—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है —

१. नवपदपूजा देवचन्द

पूजा देवचन्द हिन्दी अपूर्ण ३२-४३

२. श्रष्टप्रकारीपूजा ,, ४४-५०

विशेप—पूजा का क्रम क्वेताम्वर मान्यतानुसार निम्न प्रकार है—जल, चन्दन, ५०७, धूप, दोप, श्रक्षत,

नैत्रेद्य, फन इनकी प्रत्येक की ग्रलग ग्रलग पूजा है।

इ: सत्तरभेदी पूजा ^च साघुकीति 3, र० सं० १६७८ ५०-६५

३. सत्तरभदा पूजा भाषुकात ,, र० स० १६७८ ५०-६ ४. पदसंग्रह × ,,

्र ६१६४. गुटका स० १२१ । पत्र स० ६–१२२ । म्रा० ६×५ इ० । भाषा−हिन्दी संस्कृत । ले० काल

× । अपूर्ण | वे० सं० १७१३ ।

विशेष-गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है -

१. गुरुजयमाला	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	१३
२. नन्दीश्वरपूजा	मुनि सकलकीर्ति	संस्कृत	३८
३. सरस्वतीस्तुति	ग्राशाधर	95	५२
४. देवशास्त्रगुरूपूजा	35	55	६८
५. गराधरवलय पूजा	37	77	१०७–११२
६. भ्रारती पचपरमेष्ठी	पं० चिमना	हिन्दी	११४

ग्रन्त मे लेखक प्रशस्ति दी है। भट्टारको का विवरण है। सरस्वती गच्छ वलात्कार गण मूल संघ के विशाल कीर्ति देव के पट्ट मे भट्टारक शांतिकीर्ति ने नागपुर (नागौर) नगर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी। ६१६४. गुटका सं० १२२। पत्र सं० २८-१२६। ग्रा० ५६×५ इ०। भाषा—संकृस्त हिन्दी। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० सं० १७१४।

विशेष-पूजा स्तोत्र संग्रह है।

६१६६. गुटका सं० १२३ । पम सं० ६-४६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७१५ ।

विशेष-विभिन्न कवियो ने हिन्दी पदो का संप्रह है।

६१६७। गुटका सं० १२४। पत्र सं० २४-७०। ग्रा० ४×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। मपूर्ण। वे० सं० १७१६।

विशेप-विनती संग्रह है।

६१६८ गुटका सं० १२४ । पत्र सं० २-४४ । भाग-सस्कृत । ले० काल ४ । श्रपूर्ण । वे० सं० १७१७ ।

विशेष-स्तोत्र संग्रह है।

६१६६. गुटका स० १२६। पत्र सं० ३६-१८२। म्रा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी । ले० काल ×। भपूर्या। वे० स० १७१८।

विशेप-भूधरदास कृत पार्श्वनाथ पुराण है।

६१७०. गुटका सं० १२७। पत्र सं० ३६-२४६। ग्रा० ५×४३ इ०। भाषा-गुजराती । लिपि-हिन्दी। विषय-क्या। र० काल सं० १७८३। ले० काल सं० १९०५। ग्रपूर्ण। वे० सं० १७१६।

विशेप-मोहन विजय कृत चन्दना चरित्र है।

६१७१ गुटका सं० १२८ । पत्र सं० ३१-६२ । ग्रा० ४×४ ६० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल

🗙 । अपूर्ण । वै० स० १७२० ।

विशेप--पूजा पाठ सग्रह है।

-६१७२ गुटका सं० १२६। पत्र सं० १२। ग्रा० १×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० कात्र ×। ग्रपूर्ण

वे० स० १७२१।

विशेष-भक्तामर भाषा एवं चीवीसी स्तवन ग्रादि है।

६१७३. गुटका सं० १३० l पत्र स० ५-१६ । ग्रा० ६×४ द० । भाषा-हिन्दी पद । ले० काल × ।

श्रपूर्ण । वै० सं० १७२२।

रसकौतकराजसभारजन ३२ से १०० तक पद्य है।

श्रन्तिम---

राजसभा रंजन यहै, मन हित प्रीति निदान ॥१॥

कता प्रेम समुद्र हैं गाहक चतुर गुजान।

इति श्रीरमकीत्कराजसभारंजन समस्या प्रवन्य प्रयम भाव संतु ही।

६१७४. गुटका सं० १३१ । पत्र स०६-४१ । ग्रा० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १८६१ श्रपूर्ण । वे० स० १७२३ ।

विशेप-भवानी सहस्रनाम एव कवच है।

६१७४. गुटका सं० १३२ । पत्र सं० ३-१६० । ग्रा० १०४६ इ० । भाषा नहेन्दी । ले० काल सं• १७८७ । अपूर्श । वे० स० १७२४ ।

विशेष—हनुमन्त कथा (ब्र॰ रायमल्ल) घटाकरण मत्र, विनती, वजाविल, (भगवान महावीर से लेकर

सं० १८२२ सुरेन्द्रकोति भट्टारक तक) ग्रादि पाठ है।

६१७६. गुटका स॰ १३३। पत्र सं॰ ५२। ग्रा॰ ६×५ ६०। भाषा-हिन्दी। ले॰ काल ×। म्रपूर्ण वे० सं० १७१५।

विशेप-समयसार नाटक एवं सिन्दूर प्रकरण दोनो के ही अपूर्ण पाठ है।

६१७७. गुटका सं० १३४ । पत्र स० १६ । ग्रा० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । ग्रपूर्ण वे० स० १७२६।

विशेष-सामान्य पाठ संग्रह है।

६१७८. गुटका सं० १३४। पत्र सं० ४६। ग्रा० ७×५ द०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८१८ । ऋपूर्ण । वे० स० १७२८ ।

१. पंद- राखो हो वृजराज लाज मेरी	सूरदात	हिन्दी
 महिडो विसरि गई लोह कोउ काह्नन पद-राजा एक पडित पोली तुहारी 	मलूकदास सूरदास	र्ग हिन्दी
 पद-मेरो मुखनीको श्रक तेरो मुख यारी ० 	चंद	57
५. पद-ग्रद में हरिरस चाला लागी भक्ति खुमारी •	कबीर	93
६. पद-बादि गये दिन साहिब विना सतग्रुरु चरण सनेह	ह विना "	žī
७. पद—जा दिन मन पछी उडि, जी है	33	5 7
and the state of the same	t .	

फुटकर मंत्र, घौषिधयों के नुसखे भ्रादि हैं।

६१७६. गुटका सं० १३६ । पत्र सं० ५-१६ । ग्रा० ७४५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल १७५४ । अपूर्श । वे० स० १७५५ ।

विशेष —वस्तराम, देवानहा, चैनसुख ग्रादि के पदो का संग्रह है। १० पत्र से ग्रागे खाली हैं।

६१८०. गुटका सं० १२७। पत्र सं० ८८। म्रा० ६२४५ ६०। भाषा-हिन्दी । विषय-पद। ले• काल ×। म्रपूर्ण। वे० सं० १७५६।

विशेष—बनारसोविलास के कुछ पाठ एवं दिलाराम, दौलतराम, जिनदास, सेवग, हरीसिंह, हरवचन्द, लालचन्द, गरीबदास, भूधर एवं किसनग्रलाव के उदो का संग्रह है।

६१८१. गुटका सं० १३८। पत्र स० १२१। ग्रा० ६३×५३ इ०। वे• सं० २०४३। विशेप—मुख्य पाठ निम्न हैं:—

१. बीस विरहमान पूजा	नरेन्द्रकोत्ति	हिन्दी संस्कृत
२. नेमिनाथ पूजा	कुवलयचन्द	संस्कृत
३. क्षीरोंदानी पूजा	अ भयचर्न्द	7)
४ हेमभारी	विश्वमूषगा	हिन्दी
५ क्षेत्रपालपूजा	सुमतिकौर्त्ति	, 77
६. शिखर विलास भाषा	धनराज	" र० कील सं० १५४५

६१८२. गुटका सं० १३६। पत्र सं० ३-४६। ग्रा० १०३८७ इ०। भाषा–हिन्दी प०। ले० काल सं० १९५५। ग्राूर्ण वे० स० २०४०।

विशेष—जातकाभरण ज्योतिष का ग्रन्थ है इसका दूसरा नाम जातकालकार भी है। भैं लाल जोशी ने प्रतिलिपि की थी।

६१८३. गुटका सं० १४०। पत्र सं० ४८४। आ० १०३८७ इ०। भाषा-सस्कृत । ले० काल सं० १६०६ द्वि० भादवा बुदी २। अपूर्ण । वे० स० २०४५।

विशेष--ग्रमृतचन्द सूरि कृत समयसार वृत्ति है।

६१=४. गुटका सं० १४१ । पत्र स० ३-१०६ । ग्रा० १०३×६३ ६० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १=५३ भ्रषाढ बुदी ६ । श्रपूर्ण । वे० सं० २०४६ ।

विशेष—नयनसुख कृत वैद्यमनोत्सव (र० स० १६४९) तया वनारसीविलास ग्रादि के पाठ है। ६१८४. गुटका सं० १४२। पत्र सं० ८-६३। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। ग्रपूर्ण वि० सं० २०४७।

विशेष-चानतराय कृत चर्चाशतक हिन्दी टन्वा टीका सहित है।

६१८६. गुटका सं० १४३। पत्र सं० १६-१७१। ग्रा० ७डें×६३ इ०। भाषा-सस्कृत। ले० काल सं० १६१५। ग्रपूर्ण। वे० सं० २०४८।

विशेप-पूजा स्तोत्र ग्रादि पाठो का सग्रह है।

संवत् १६१५ वर्षे क्वार सुदी ५ दिने श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगरो श्रीग्रादिनाथचंद्र्यालयेनु-गामी शुभस्थाने भ० श्रीसकलकीत्ति, भ० भुवनकीत्ति, भ० ज्ञानभूषरा, भ० विजयकीत्ति, भ० शुभचन्द्र, ग्रा० गुरुपदेशात् ग्रा० श्रीरत्नकीत्ति ग्रा० यश कीत्ति गुराचन्द्र ।

६१८७. गुटका सं० १४४। पत्र सं० ४६। ग्रा० ८४६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। ले॰ काल सं० १६२०। पूर्ण। वे० सं० २०४६।

विशेष--- विम्न पाठो का सग्रह है।

۲ _			•
१. मुक्तावलिकथा	भारमल	हिन्दी	र० काल स॰ १७८८
२. रोहिग्गीव्रतकथा	×	7 7	
३. पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	ल लितकां ति		
४. दशलक्षगावृत्तकथा	व० ज्ञानसागर	1)	
५. भ्रष्टाह्निकाकथा 🔒	विनयकीर्ति	33	
६. सङ्घटचीयव्रतकया	देवेन्द्रभूषरा [भ० विश्वभूषरा के शिष्य]	53	- " ~ *
७. ग्राकाशपञ्चमीकथा	पाडे हरिकृष्णा	99	र० काल स० १७०६
८ निर्दोषसप्तमीकथा	,,	99	,, ,, રેપ્હર

	7	í
गुटका-समह]	i
TTM はい! - か! むと	1	
410411 /140		
		ı

६. निशल्याष्ट्रमीकथा	पाण्डे हरिकृष्ण	हिन्दी	•	~-
१०. सुगन्धीदशमीक्या	हेमराज	"		
११. ग्रनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	पाडे हरिकृष्ण	59 ,	<u></u>	•
१२ बारहसौ चौतीसन्नतकया	जिने <u>न्द्</u> रभूषरा _,	"		

६१८८. गुटका स० १४४। पत्र सं० २१६। ग्रा० ६×६६ इ०। ले॰ काल ४। पूर्ण। वै० सं० २०४०।

7,1

विशेष -- गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं।

१. विख्दावली (पट्टावलि)	×	संस्कृत	હ
२. सोलहकारगापूजा	वर् जिनदास	"	६१
३. दशलक्षरा जयमाल	सुमतिसागर [ग्रभयनन्दि के शिष्य]	हिन्दी	- - - -
४. दशलक्षमा जयमाल	सोमसेन	. संस्कृत	
५. मेरपूजा	"	5 3	•
६. चौरासी न्यातिमाला	, न्न० जिनदास	हिन्दी	280
विशेषइन्ही की	एक चौरासो जातिमाला म्रोर है।	,	
७. ग्रादिनाथपूजा	श्र॰ शातिदास	77	१५०
८. भनन्तनाथपूजा	99	33	१६६
६. सप्तऋषिपूजा	भ० देत्रेन्द्रकीत्ति	संस्कृत	१७६
१०. ज्येष्ठजिनवरमोटा	' श्रुतसागर <i>-</i>	79 .	१७५
११. ज्येष्ठजिनवर लाहान	न० जिनदास ,	. संस्कृत	् १७८
१२ पश्चक्षेत्रपालपूजा	सोमसेन	हिन्दी	શ . દ ર
१३ शीतलनायपूजा	• धर्मभूषरा	99 F	२१०
१४. व्रतंजयमाला	सुमितसागर	हिन्दी ,	7
१५. ग्रादित्यनारकथा	पं॰ गङ्गादास [धर्मचन्द का शिष्य]	99	388~

६१८६. गुटका सं० १४६। पत्र सं० ११-८८। म्रा० ८३४३ इ०। माधा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७०१। म्रपूर्ण। वे० सं० २०५१।

विशेष--वनारसीविलास एवं नाममाला ग्रादि के पाठो का संग्रह है।

\$30

६१६० गुटका सं० १४७ । पत्र सं० ३०-६३ । ग्रा० ४४४ है इ० । भाषा-संस्कृत । लें० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० सं० २१८६ ।

विशेष-स्तोत्रो का सग्रह है।

६१६१. गुटका सं० १४८। पत्र स० ३५। ग्रा० ८×१० इ०। ले० कार्ल सं० १८४३। पूर्ण । वें•

१. पश्चमल्याएाक

हरिचन्द

हिन्दी

१—२०

र० वाल सं० १८३३ ज्येष्ठ सुदी ७

२. वेपनिक्यायतोद्यापन

देवेन्द्रकीत्ति

संस्कृत

विशेष—नीमेढा में चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

३. पट्टाउलि

X

हिन्दी

₹X

६१६२. गुटका सं० १४६ । पत्र सं० २१ । आ० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषयं-इतिहास । ते• काल सं० १८२६ ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २१६१ ।

विशेष-गिरनार यात्रा का वर्णन है। चादनगाव के महावीर का भी उल्नेख है।

६१६२. गुटका सं० १४०। पत्र सं० ३४६। ग्रार्० ५४६ इ०। भाषा-हिन्दी संर्कृत । ले० काल १७१७। पूर्ण । वे० सं० २१६२।

विशेप-पूज। पाठ एवं दिल्ली की वादशाहत का क्योरा है।

६१६४ गुटका सं० १४१। पत्र स० ६२। ग्रा० ६×६ ६०। भाषा-प्राकृत-हिन्दी। लें० केल ×। ग्रपूर्ण। वे० स० २१६४।

विशेष—मार्गेणा चौबीस ठाएग चर्चा तथा भक्तामरस्तोत्र म्रादि हैं।

६१६४ गुटका सं• १४२। पत्र सं• ४०। श्रा० ७२८५३ ६०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ते• काल ४ श्रपूर्ण। वे॰ स॰ २१६६।

विदोप—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है.।

६१६६. गुटका सं० १४३ । पत्र सं० २७-२२१ । ग्रा० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । ग्रार्सा । वे० स० २१६७ ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६१६७. गुटका सं० १४४। पत्र सं० २७--१४७। म्रा० ५४७ ई०। भाषा-हिन्दी। ले० काल X। म्रपूर्ण। वे० स० २१६६।

विशेष-सामान्य पूजा पाठ संप्रह है।

गुटका-सम्रह]

६१६८. गुटका स० १५४ क । पत्र सं० ३२ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । ले० काल 🗙 । अपूर्ण ।

विशेष-समवशरण पूजा है।

६१६६. गुटका सं० १४४। पत्र सं० ५७-१५२। ग्रा० ७३४६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ४। अपूर्ण। वे० सं० २२००।

विशेष-नासिकेत पुराण हिन्दी गद्य तथा गोरख सवाद हिन्दी पद्य मे है !

६२००. गुटका स० १४६ । पत्र स० १८-३६ । आ० ७३×६ इ०। भाषा-हिन्दी । ले० काल ×। अपूर्ण । वे० सं० २२०१ ।

विगेष--पूजा पाठ स्तोत्र ग्रादि हैं।

- ६२०१. गुटका स० १४७ । पत्र सं० १० । ग्रा० ७३×६ इ० । भाषा - हिन्दी । विषय-भागुर्वद । ने० काल × । भपूर्ण । वे० सं० २२०२ ।

विशेष-ग्रायुर्वेदिक नुसखे हैं।

६२०२: गुटका सं० १४८५ पत्र सं० २-३०। स्त्रा० ७४५ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १८२७। स्रपूर्ण। वे० सं० २२०३।

विशेष-मंत्रो एवं स्तोत्रो का संग्रह है।

६२०३. गुटका सं० १४६। पत्र सं• ६३। ग्रा० ७५×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल 🗴। पूर्ण वै० सं० २२०४।

विशेष- कछुवाहा वंश के राजाग्रो की वशावली, १०० राजाग्रो के नाम दिये हैं। सं० १७५६ तक वशावली है। पत्र ७ पर राजा पृथ्वीसिंह का गदी पर सक्ष '१८२४ में बैठना लिंखा है।

- २. दिल्ली नगर की बसापत तथा बादशाहत का व्यौरा है किस बादशाह ने कितने वर्ष, महीने, दिन तथा घडी राज्य किया इसका वृतान्त है।
 - ३. बारहमासा, प्राणीडा गीत, जिनवर स्तुति, शृङ्गार के सबैया म्रादि है।

६२०४. गुटका स० १६० । पत्र सं० ५६ । ग्रा० ६×४२ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल × अपूर्ण । ने० सं० २२०५ ।

विशेष-वनारसी विलास के कुछ पाठ तथा भक्तामर स्तोत्र ग्रादि पाठ हैं।

६२०४. गुटका सं० १६१ । पत्र सं० ३५ । ग्रा० ७×६ इ० । भाषा-प्राकृत हिन्दी । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० २२०६ ।

विशेष--श्रावक प्रतिक्रमण हिन्दी ग्रर्थ सहित है। हिन्दी पर गुजराती का प्रभाव है।

१ से ५ तक की गिनती के यंत्र है। इसके बीस यत्र है १ से ६ तक की गिनती के ३६ खानो का यंत्र हैं। इसके १२० पंत्र है।

६२०६. गुटका सं० १६२। पत्र सं० १६-४६। ग्रा० ६३×७३ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। ले० काल स० १९४५। ग्रपूर्ण। वे० स० २२०८।

विशेय—सेवग, जगतराम, नवल, वलदेव, माणक, धनराज, वनारसीदास, खुशालचन्द, बुधजन, न्यामत ग्रादि कवियो के विभिन्न राग रागिनियो मे पद है।

६२८७ गुटका सं०१६३। पत्र स०११। ग्रा०५३×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ४। ग्रपूर्ण। वे० सं०२२०७।

विशेष —िनत्य नियम पूजा पाठ है।

६२०८. गुटका सं० १६४। पत्र स० ७७ । ग्रा० ६३८६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल ४। अपूर्ण । वे० स० २२०६।

विशेप-विभिन्न स्तोत्रो का सग्रह है।

६२८६ गुटका सं०१६४ । पत्र सं०५२ । ग्रा०६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले॰ काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं०२२१० ।

विशेष्— नवल, जगतराम, उदयराम, ग्रुनपूरण, चैनविजय, रेखराज, जोधराज, चैनसुख, धर्मपाल, भगतराम भूधर, साहिबराम, विनोदीलाल आदि कवियो के विभिन्न राग रागिनियो मे-पद है। पुस्तक गोमतीलालजी ने प्रतिलिपि करवाई थी।

६२१०. गुटका सं० १६६। पत्र सं० २४। ग्रा० ६३×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २२११।

१. ग्रठारह नाते का चौढालिया

लोहट

हिन्दी

8-6

२. मुहूर्त्तमुक्तावलीभाषा

शङ्कराचा

१-२३

६२११. गुटका सं० १६७। पत्र स० १४। ग्रा० ६×४३ इ०। भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । ले० काल ×। ग्रपूर्श । वे० स० २२१२।

विशेष—'पद्मावतीयन्त्र तथा युद्ध मे जीत का यन्त्र, सीचां जाने का यन्त्रं, नजर तथा वशीकरण यन्त्र तथा महालक्ष्मीसप्रभाविकस्तोत्र है।

६२१२. गुटका सं० १६८। पत्र सं० १२-३६ । ग्रा० ७३४५३ ६०। भाषा-हिन्दी । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० सं० २२१३ ।

विशेष—वृन्द सतसई है।

६२१३. गुटंका स॰ १६६। पत्र सं० ४०। ग्रा० ८३×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० सं० २२१४।

विशेष-भक्तामर, कल्याणमन्दिर ग्रादि स्तोत्रो का संग्रह है।

६२१४. गुटका स० १७०। पत्र सं० ६६ । ग्रा० ८४५ ई ६० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । ग्रपूर्या । वे० स० २२१५ ।

विशेष-भक्तामरस्तोत्र, रसिकप्रिया (केशव) एव रत्नकोश है।

६२१४. गुटका सं० १७१। पत्र स० ३-८१। ग्रा० ५६९४५६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० स० २२१६।

विशेष--अगतराम के पदो का संग्रह है। एक पद हरीसिंह का भी है।

६२१६. गुटका सं० १७२। पत्र सं० ५१। ग्रा० ५×४ ई इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे॰ सं० २२१७।

विशेप--ग्रायुर्वेदिक नुसखे एवं रति रहस्य है।

अवशिष्ट-साहित्य

६२१७. ऋष्टोत्तरीस्नात्रविधि । पत्र स० १। ग्रा० १० ४५३ इ०। भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० का० × । पूर्या । वे० सं० २६१ । स्र भण्डार ।

६२१८. जन्माष्टमीपूजन ""। पत्र सं०७। ग्रा० ११५×६ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल 🗴 । ते० सं० ११५७। स्त्र भण्डार।

६२१६. तुलसीविवाह : " । पत्र स० ५ । ग्रा० ६५% ४२ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-विधिविधान । र० काल 🗴 । ने० काल सं० १८८६ । पूर्ण । जीर्रों । वे० सं० २२२२ । श्र भण्डार ।

६२२०. परमाणुनामविधि (नाप तोलं परिमाण) पत्र सं० २। म्रा० ६३×५३ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-नापने तथा तोलने की विधि। र० काल 🔀। ले० काल 🔀। पूर्ण। वे० सं० २१३७। अप्र भण्डार। ६२२१. प्रतिष्ठापाठ्विधि । पत्र स०२०। श्रा० ५३×६३ ६०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा विधि। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७७२। श्रा भण्डार।

६२२२. प्रायश्चितचूलिकाटीका—निद्गुरु । पत्र स० २५ । श्रा० ५४६० । भाषा-सम्कृत । विषय-ग्राचारशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ५२८ । क मण्डार ।

विशेष—वावा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार में एक प्रति (ने० सं० ५२६) ग्रीर है। ६२२३. प्रति सं०२। पत्र स०१०५। ले० काल 🗴। वे० स०६५। घ भण्डार।

विशेष-टीका का नाम 'प्रायश्चित विनिश्चयवृत्ति' दिया है।

६२२४ भक्तिरत्नाकर—धनमाली भट्ट । पत्र स० १६। ग्रा० ११२ ×५ ६० । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । जीर्ण । वे० स० २२६१ । ऋ भण्डार ।

६२२४ भद्रवाहुसहिता—भद्रवाहु। पत्र स०१७। आ० ११५×४३ इ०। भाषा—संस्कृत । विषय— ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ५१। ज भण्डार।

विशेप-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १६६) ग्रीर है।

६२२६. विधि विधान "" । पत्र स० ७२-१५३ । ग्रा० १२×५ ह० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा विधान । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्श । वे० स० १०८३ । ग्रा भणार ।

६२२७. प्रति सं २ २ । पत्र स० ५२ । ले० काल 🗙 । वे० स० ६६१ । क भण्डार ।

६२२८. समवशररापूजा—पन्न लाल दूनीवाले । पत्र स० ८५ । ग्रा० १२३४८ ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १६२१ । ले० काल ४ । पूर्ण । वं० सं० ७७५ /। ड भण्डार ।

६२२६. प्रति स० २ । पत्र स० ४३ । ले० काल स० १-२६ भाद्रपद गुक्का १२ । वे० स० ७७७ । रू भण्डार ।

विशेष--इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ स॰ ७७६) श्रीर है।

६२३०. प्रति स०३। पत्र सं० ७५। ले० काल स० १६२८ भादवा सुदी ३। वे० सं० २००। छ

६२३१. प्रति सं० ४। पत्र स० १३६। ले० काल 🗙 । वे० स० २७८। ञ भण्डार।

६२३२. ममुचयचौवीसतीर्थद्वरपूजा । पत्र सं० २। ग्रा० ११ है×५ है द०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५०। श्र भण्डार।



ग्रन्था**नुक्रम**ीरााका

习

	_		
प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पृ	उ सं०
ग्रकबर वीरवल वार्ता	-	(हि॰)	६५१
ग्रकलङ्कचरित्र	- (हि० ग०)	१६०
ग्रकलङ्क चरित्र	नाथूराम	(हि०)	१६०
ग्रकलङ्कदेव कथा		(सं०)	२१३
ग्रकलडू,नाटक र	प र खनत्नाल	(हि॰)	३१६
प्रक्लङ्काष्ट्रक	भट्टाकलङ्क	(सं०)	५७५
	६३	७, ६४६,	७१२
ग्रकलङ्का ष्टक		(सं०)	३७६
ग्रकलङ्काष्ट्रकभाषा सद्	सुख कासलीवाल	र (हि॰)	३७६
ग्रकलङ्काष्ट्रक		(हि॰)	७६०
श्रकंपनाचार्यपूजा		(हि॰)	६५६
श्रक्लमदवार्ता	-	(हि॰)	३२४
ग्रकृत्रिम िजनचैत्यालय जय	माल —	(গা৽)	४५३
श्रकृत्रिमजिनचैत्यालय जय	माल भगवतीदार	त (हि॰)	६६४
			७२०
श्रकृतिमचैत्यालय जयमाल	T (f	६०) ७०४	,७४६
ऋकृत्रिमचैत्यालयपू जा	मनरङ्गलाल	(हि॰)	४५४
ग्रकृत्रिमचैत्यालयपू जा		(सं०)	५१५
म्रकृत्रिमचैत्यालय वर्णन	-	(हि०)	७६३
ग्रकृत्रिमजिनचैत्यालयपू ज	ा जिनदास	(स०)	४५३
ग्रकृत्रिमजिनचैत्यालयपू ज	[ा] चैतसुख	(हि॰)	४५३
श्रकृत्रिमजिनचैत्यालयपू ज	ा लालजीत	(हि॰)	४५३
श्रकृत्रिमजिनालयपू जा	पाडे जिनदास	(ťo)	४५३

प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा (ग्रु स॰
ग्रक्षयदशमीकथा	ल लितकी त्ति	$(\alpha^{i\overline{\gamma}j})$	६९५
ग्रक्षयदशमीविधान		(सं०)	४३८
ग्रक्षयनिधिपूजा		(स०)	४५४
	ሂ	9FX ,30	, ७६३
ग्रक्षयनिधिवूजा	ज्ञानभूपग्	(हि०)	ሄ ሂሄ
ग्रक्षयनिधिमुष्टिकाविधान द	तिकथा —	(सं∘)	२१३
ग्रक्षयनिधिमडल [मंडलि	चेत्र]		५२५
ग्रक्षयनिधिविधान		(सं०)	ጻሂሄ
ग्रक्षयनिधिविधानकथा		(सं∘)	885
ग्रक्षयनिधिन्नतकया	खुशालचन्द्	(हि०)	२४४
ग्रक्षयविधानकथा		(₹0)	२४६
ग्रक्षरवावनी	चानतराय (हि	(০) १४,	६७६
म्रजितपुराएा पडिता	चार्यं अरुण्मणि	(सं०)	१४२
ग्र जितनाथपुरा ग् ।	विजयसिंह	(শ্বप॰)	१४२
ग्रजितशान्तिजिनस्तोत्र		(গা॰)	७५४
ग्रजितशान्तिस्तवन	नन्दिषेगा	(গা৹)	305
			६५१
श्रजितशातिस्तवन	(प्रा० सं०)	३८१
ग्रजितशातिस्तवन		(सं०)	308
ग्रजितशातिस्तवन	मेरुनन्दन	(हि०)	६१६
ग्रजितशातिस्तवन		(हि०)	६१६
ग्र जितशातिस्तवन		(स∘)	४२३
ग्र जीर्राम झ री	काशीराज	(सं०)	२६६

भाषा पृष्ठ स॰ लेखक य्रन्थ नाम (स०) २१६ श्रजीर्णमञ्जरी ५२५ ग्रठाई का मंडल [चित्र] (सं०) ५४३ ग्रठाई का व्योरा (सं०) श्रद्वाईस मूलगुरा वर्रान ४५ (हि॰) २१३ श्रठारह नाते की कथा ऋपि लालचन्द् लोहट (हि॰) ६२३,७७५ श्रठारह नाते की कथा लोहट (हि०) ७२३ श्रठारह नाते का चौढाला ७५०, ७६५ (हि॰) ग्रठारह नाते का चौढाल्या ५४४ (हि॰) ६२३ श्रठारह नाते का व्योरा व्र० जिनदास (हि॰) **ग्रठावीसमूलगुरारास** ७०७ श्रठोत्तरासनाथविधि (हि॰) ६६८ म्रढाई [सार्ड हय] द्वीपपूजा शुभचन्द्र (स०) ४५५ (हि०) श्रढाईद्वीप पूजा डालूराम ४५५ म्रढाईद्वीप पूजा ्हि०) ७३० श्रढाईद्वीपवर्शन (40) 388 श्रग्थिमितिसंधि हरिश्चन्द्र श्रप्रवाल (श्रप०) २४३ ६२८, ६४२ ग्रग्त का मडल [चित्र] ५२५ श्रतिशयक्षेत्रपूजा (हि०) ५५३ श्रद्भुतसाग्र (हि॰) २९६ श्रध्ययन गीत (हि॰) ६८० ग्रध्यात्मकमलमार्त्तण्ड कवि राजमल्ल (स०) 358 श्रध्यात्मतरिङ्गणी सोमदेव (स∘) 33 श्रध्यात्मदोहा (हि॰) रूपचन्द ७४६ श्रध्यात्मपत्र जयचन्द छाबड़ा (हि॰) 33 श्रध्यात्मवत्तीसी वनारसीदास (हि०) 33 कवि सूरत श्रव्यात्मबारहृखडी (ਵਿਰ) 33 श्रनगारधम्मित पं० ऋाशाधर (स∘) ሄፍ धनन्तगठीवर्शन [मन्त्र सहित] (स०) ५७६, श्रनन्तव्रतक्यां

लेखक प्रनथ नाम भाषा पृष्ठ स० ग्रनन्तचतुर्दशीकया (祖0) २१४ ग्रनन्तचतुर्दशीकथा (मुनीन्द्रकीत्ति (সা৽) 288 **ग्रनन्तचतुर्दशीकथा** र्ग० ज्ञानसागर (हि॰) २१४ भ० सेरुचन्द श्रनन्तचतुर्दशीपूजा (सं०) €00 शान्तिदास ग्रनन्तचतुर्दशीपूजा (सं०) ४५६ श्रनन्तचतुर्दशीपूजा (सं०) ५५७,७६३ श्री भूपण श्रनन्तचतुर्दशीपूजा (हि॰) ४५६ श्रनन्तचतुर्दशीपूजा (सं० हि०) ४५६ श्रनन्तचतुर्दशीव्रतकथा व पूजा खुशालचन्द् (हि॰) ५१६ श्रनन्तचतुर्दशीव्रतकथा ललितकीर्त्ति (स०) ६६५ श्रनन्तचतुर्दशीय्रतकथा पांडे हि कृष्ण (हि॰) ७८५ धर्मचन्द्र ग्रनन्त के छप्यय (हि०) ७५७ (सं∘) म्रनन्तजिनपूजा सुरेन्द्रकीर्त्त ४५६ (हि०) ग्रनन्तजिनपूजा 320 गुणभद्राचार्य (सं०) १४२ ग्रनन्तनाथपुराएा (सं०) श्री भूपण ४५६ ग्रनन्तनाथपूजा सेवग (हि॰) श्रनन्तनायपूजा ४५६ श्रनन्तनाथपूजा (स०) ४५६ श्रनन्तनाथपूजा न**े शान्तिदास (हि॰) ६६०, ७**६५ श्रनन्तनाथपूजा (हि∘) ४५७ श्रनन्तपूजा (स०) ५१६ श्रनन्तपूजाव्रतमहात्म्य (स०) ४५७ श्रनन्तविधानकथा (भ्रप०) ६३३ भ० पद्मनिद् (स०) २१४ **अनन्तव्रतकथा** २१४ श्रुतसागर (स०) श्रनन्तव्रतकया ललितकीित ६४५ (स०) **अनन्तव्रतक्या** श्रनन्तव्रतकथा मद्दनकीत्ति २४७ ' (सं०) ग्रनन्तव्रतकथा (स०) २१४ ग्रनन्तव्रतकथा (ग्रप०) २४५ (हि॰) २१४ खुशालचन्द

प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पृष्	3 सं॰
ग्रनन्तव्रतपूजा	श्री भूपण	(सं०)	४१५
ग्रनन्तव्रत पूजा	,	(स∘)	४५७
	ሂ	३६, ६६३,	७२८
ग्रनन्तव्रतपू जा	भ० विजयकीर्ति	(हिं०)	४५७
श्रनन्तव्रतपूजा	साह सेवगराम	(हि०)	४५७
ग्रनन्तव्रतपूजा		(हि॰)	५१५
	ų	१६, ५५६,	७२६
श्रनन्तव्रतपूजाविधि		(सं०)	४५७
ग्रनन्तव्रतविधान	मद् नकीर्त्ति	(सं०)	२१४
श्रनन्तव्रतरास	त्र० जिनदास	(हि०)	५६०
ग्रनन्तव्रतोद्या पनपूजा	श्रा० गुणचन्द्र	(4;°)	४५७
	¥	१३, ५३६,	५४०
भ्रनागारमक्ति		(सं०)	६२७
ग्रनायी ऋषि स्वाध्याय	— (f	हे० गुन०)	३७६
ग्रनाथानोचोढाल्या	खेम	(हि०)	४३५
श्रनाथीसाध चौढालिय	। विमलविनयगरि	। (हि॰)	६८०
ग्रनाथीमुनि सज्भाय	समयप्रुन्द्र	(हि०)	६१५
ग्रनाथीमुनि सज्भाय		(हि०)	४३५
ग्रनादिनिधनस्तोत्र	- (म	o) ३७६	,६०४
ग्रनिटकारिका	****	(स०)	२५७
म्रनिटकारिकावचूरि		(स∘)	२५७
ग्रनित्यपच्चीसी	भगवतीदास	(हि०)	६८६
श्रनित्यपञ्चासिका	त्रिभुवनचन्द्र	(हि०)	७५५
श्रनुभवप्रकाश दी	ाचन्द्र कासलीवाल	(हि॰)	४५
श्रनुभवविलास		¹हि ०)	५११
श्रनुभवानन्द	((हि० ग०)	85
ग्रनेकार्थं ध्व िनमञ्जरी	महीच्चपग्कित्र	(सं०)	२७१
ग्रनेकार्थ ष्ट्रानमञ्ज री		(सं०)	२७१
अनेकार्थनाममाला	नन्दिकवि	(हि०)	७०६

भाषा प्रष्ठ सं० लेखक प्रनथ नाम (हि॰) २७१ ७६६ **ग्रनेकार्थमञ्जरी** नन्दद्शस भ० हर्षकीर्त्त (सं०) ग्रनेकार्थशत २७१ हेमचन्द्राचार्य (सं०) ग्रनेकार्थ संग्रह २७१ म्रनेकार्थसंग्रह [महीपकोश] (सं०) २७१ ग्रन्तरायवर्शन (हि॰) ४६० (सं०) ५६० ग्रन्तरिक्षपार्श्वनाथाष्ट्रक श्रन्ययोगव्यवच्छेदकद्वाविशिका हेमचन्द्राचार्य (सं०) ५७३ (हि॰) ६२७ ग्रन्यस्फूट पाठ संग्रह ग्रवराधसूदनस्तोत्र (सं०) ६९२ शङ्कराचार्ये (सं०) ग्रवजदकेवली 308 श्रभिज्ञान शाकुन्तन कालिदास (सं०) ३१६ पुरुपोत्तमदेव (सं० ग्रभिघानकोश २७१ ग्रिभिधानिवतामिरणनाममाला हैमचन्द्राचार्य (सं०) २७१ धर्मचन्द्रगणि (सं०१ श्रभिधानरत्नाकर २७२ पं० शिवजीलाल (स。) श्रभिधानसार २७२ ग्रभिषेक पाठ (स०) ४५५ ५६५, ७६१ ग्रभिषेकविधि लदमीसन (स०) ४५५ ग्रभिषेकविधि (सं०) 385 ४५८, ५७० ग्रभिषेकविधि (हि॰) ४५५ ग्रमरकोश श्रमरसिंह (स 0) २७२ श्रमरकोशटीका भानुजी दीन्तित (सं०) २७२ श्रमरचन्द्रिका (हि०) ३०८ ग्रमरुशतक (स०) १६० **ग्रमृतधर्मरसका**व्य गुणचन्द्रदेव (स०) ४५ म॰ सवाई प्रतापसिंह ग्रमृतसागर (हि॰) ३३६ श्ररहना सज्माय समयपुन्द्र (हि॰) ६१८ ग्ररहन्तस्तवन (स०) 308

भाषा पृष्ठ सं० लेखक य्रन्थ नाम (स॰) 308 प्ररिष्टकर्ता (সা০) 328 ग्ररिष्टाध्याय (स∘) श्ररिहन्त केवलीपाशा 308 जिनभद्रगिए (সা০) प्रर्थदोपिका म्रर्धप्रकाश (स∘) ३१६ लङ्कानाथ सदामुख कासतीवात (हि॰ ग॰) प्रर्थप्रकाशिका ₹ ग्रर्थसार टिप्पग् (स०) १७ (सं०) 8 ग्रहीत्प्रवचन म्रहिहत्प्रवचन व्याख्या (सं०) 2 ग्रर्हनकचौढालियागीत विमल्विनय[विनयरंग](हि०) ४३५ (स॰) ५७४,६५८ म्रह्यक्तिविधान **श्रलङ्कारटीका** (सं०) ३०५ अलङ्काररत्नाकर द्लपतिराय वशीधर (हि॰) ३०८ जिनवद्ध न सूरि ग्रलङ्कारवृत्ति (संo) ३०५ ग्रलङ्कारशास्त्र (सं०) ३०५ हर्षसूरि श्रवति पार्श्वनाथजिनस्तवन (हि०) 308 २५७ ग्रन्ययप्रकर्गा (₹०) श्रन्ययार्थ (सं०) २५७ **ग्रशनसमितिस्वरूप** (সা০) ५७२ **ग्रशोकरोहि**गीकथा श्रतसागर (₹) २१६ **अशोकरोहि**गीव्रतकथा (हि० ग०) २१६ पं० नकुल ग्रश्वलक्षण (हि०) ७५१ ग्रश्चपरीक्षा (स∘) ७५६ श्रपाढएकादशोमहात्म्य (सं०) २१५ श्रष्टक [पूजा] नेमिदत्त (सं०) ५६० ग्रप्टक [पूजा] — (हि०) ५६०,७०१ **श्र**ष्टकर्मप्रकृतिवर्शन (सं०) 8 ऋष्ट्रपाहुड **कुन्दकुन्दाचार्य** (সা০) 33 **श्र**प्रवाहुडभापा जयचन्द छावडा (हि॰ ग०) ६६

लेखक भाषा पृष्ठ सं० यन्थ नाम (हि॰) **भ्रष्टप्रकारीपूजा** देवचन्द 030 श्रष्टशती [देवागम स्तोत्र टीका] श्रकलङ्कदेव (सं०) 358 श्रा० विद्यानन्दि (सं०) 358 ग्रष्टसहस्री ग्रष्टागसम्यग्दर्शनकथा सकलकीर्त्ति (सं०) २१५ (सं०) पं० मेधावी म्रष्टागोपाख्यान २१५ ग्रष्टादशसहस्रशीलभेद (सं ०) ५६१ म्रष्टाह्निकाकथा यश की त्ति (सं०) ६४५ (स०) २१५ श्रष्टाह्निकाकथा शुभचन्द् (हि०) **अष्टाह्मिकाकथा** व्र ज्ञानसागर ७४० (हि॰) श्रष्टाह्निकाकया २१५ नथमल श्रष्टाह्मिका कौमुदी ्स०) २१५ श्रष्टाह्निकागीत भ० शुभचन्द्र (हि०) ६५६ श्रष्टाह्निका जयमाल (सं०) ያሂዩ श्रष्टाह्मिका जयमाल ্সা৽) 328 (सं०) **अष्टाह्मिकापूजा 848**, ५७०, ५६६, ६५८, ७८४ **म्रष्टाह्मिकापूजा** द्यानतराय (हि०) ४६०, ७०५ श्रष्टाह्मिकापूजा (हि॰) 868 सुरेन्द्रकीत्ति ४६० **श्रष्टाह्मिकापूजाकथा** (सं∘) श्रष्टाह्निकाभक्ति (सं०) **488** विनयकीत्ति ६१४ श्रष्टाह्मिकान्नतकथा (हि॰) ७८०, ७६४ (सं०) २१५ **प्रष्टाह्मिकान्नतकथा** २१६ (स∘) श्रष्टाह्मिकानतकथासग्रह गुणचन्दसूरि ६२२ श्रष्टाह्मिकावतकथा लालचंद् विनोदीलाल (हि॰) (हि॰) २२० श्रष्टाह्मिकाव्रतकथा त्र॰ ज्ञानसागर (हि॰) २४७ ७२७ **म्रष्टाह्मिकाव्रतकथा** प्रश्६ श्रप्टाह्मिकाव्रतपूजा (सं०) (हि∘) श्रष्टाह्मिकाव्रतोद्यापनपूजा भ० शुभचन्द ४६१

. 31/2-11/1/	4					_	
ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृ	ष्ठ स०	प्रन्थनाम	लेखक	માવા પૃદ	રૂ સં૦
ग्रष्टाह्मिकाव्रतोद्यापन		(सं०)	५३६ १	ग्रातमशिक्षा	प्रसन्नचन्द्	(हि॰)	६१९
ग्रष्टाह्निकाव्रतोद्यापन		(हि०)	४६१	ग्रातमशिक्षा	राजसमुद्र	(ફિં૦)	६१८
ग्रकुरारोपग्रविधि	पं० माशाघर	(सं०)	४५३	जातमशिक्षा	सालम	(हि॰)	६१९
			प्रक	ग्रातुरप्रन्या ल्यानप्रकीर	नि —	(গাং)	२
मकुरारोपगाविधि	इन्द्रतन्दि	(सं०)	४५३	ग्रात्मध्यान	वनासिवास	(हि॰)	१००
श्रंकुरारोपग्गविधि	-	(₹0)	४५३	ग्रात्मनिन्दास्तवन	रलाकर	(स०)	३५०
ग्रकुरारोप ग्गमडलिच	Ŧ		५२५	श्रात्मप्रवोध	कुमार कवि	(सं०)	१००
ग्रञ्जनचोरकथा		(हि०)	२१५	श्रात्मसंवोध जयमाल	-	(हि॰)	७४४
म्रञ्जना को रास	धर्मभूषग	(हि०)	५६३	श्रात्मसवोधन	द्यानतराय	(हि॰)	७१४
श्रञ्जनारास	शातिकुशल	(हि॰)	३६०	श्रात्मसवोधनकाव्य		(स०)	१००
	স্থা			प्रात्मसंवोधनका व्य		(ग्रय०)	१००
	71			श्रात्मानुशासन	गुण्भद्राचार्य	(सं०)	१००
ग्राकाशपञ्चमीकथा	ल लितकी त्ति	(स०)	६४५	श्रात्मानुशासनटीका	प्रभाचन्द्राचार्य	(सं०)	१०१
ग्राकाशपञ्चमीकथा	मद् नकीत्ति	(स∘)	२४७	ग्रात्मानुशासनभाषा	पं॰ टोडरमल	(हि॰ ग॰)	१०२
स्राकाशपञ्चमीकथा		(स०)	२१६	ग्रात्मावलोकन दीपन		(., ",)	१००
श्राकाशपञ्चमीकथा	खुशालचन्द	(हिं०)	२४५	श्रात्रेयवैद्यक	आत्रेय ऋषि	(स०)	२१६
म्राकाशपञ्चमीकथा	पाडे हरिकृष्स	(०ड्री,	४३७	श्रादिजिनवरस्तुति	कमलकीर्त्ति	हि॰)	४३६
ग्राकाशपञ्चमीव्रतक थ	ा श्रुतसागर	(स∘)	२१६	ग्रादित्यवारकथा	-	(स॰)	333
श्रागमपरीक्षा		(स०)	3	म्रादित्यवारकथा	गगाराम	(हि॰)	७६५
ग्रागमविलास	चानतराय	(हि०)	38	ग्रादित्यवारकथा	व्र॰ ज्ञानसागर		२२०
श्रागामी त्रेसठशलाव	ना पुरुष वर्णन —	(हि०)	१४२	ग्रादित्यवारकथा	भाऊ कवि	(हि॰)	२४४
ग्राचारसार _्	वीरनन्दि	(सं०)	38	1	५ ४, ७२३, ७४०,		
श्राचारसार	पन्नालाल चौधरी	(हि॰)	38	म्रादित्यवारकथा	न० रायम हा	(हि॰)	७१२
श्राचारागसूत्र		(সা৹)	२	ग्रादित्यवारकया	वादीचन्द्र	(हि॰)	६०७
श्राचार्यभक्ति	*******	(सं०)	६३३	ग्रादित्यवारकथाभाप	ाटीका मूलकर्ताः	- सकलकी	त
श्राचार्यभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०		- सुरेन्द्रकीर्त्त		
ग्राचौर्यो का व्यौरा		(हि०)	३७∙		*****	(हि॰)	
म्राठकोडिमुनिपूजा	विश्वभूपग्	(सं०)	४६१		<i>६७६, ७१३</i> ,		
श्रातमशिक्षा	पदाकुसार	(हि०)	६१६	ग्रादित्यवारपूजा		(हि॰)	

भाषा प्रष्ट सं०

लेखक

प्रन्थनाम

به د			
प्रन्थनाम	लेखक	भाष	॥ पृष्ट सं॰
श्रादित्यव्रतपूजा	D*********	(स ०) ४६१
श्रादित्यवारव्रतोद्यापन	-	(सं) XY0
श्रादित्यव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि	o) ৩ ३ १
श्रादित्यव्रतपूजा	केशवसेन	(सं) ४ ६१
म्रादित्यव्रतोद्यापन	(minus	(स) XX0
ग्रादिनाथकल्याएाकथ	। व्र० ज्ञानसाग	र (हि	000
श्रादिनाथ गीत	मुनि हेमसिद्ध	(हि) ४३६
ग्रादिनाथपूजा	मनहरदेव	(हि) 428
श्रादिनाथपूजा	रामचन्द्र	(हि॰) ४	१६१ ६५०
ष्रादिनाथ पूजा	न्र॰ शांतिदास	(हि) <i>७६</i> ४
श्रादिनाथपूजा	सेवगराम	(हि) ६७४
म्रादिनाथ पूजा		(हि) ४६२
ग्रादिनाथ की विनती	· —	(हि॰) ५	१४७ ४७६
श्रादिनाथ विनता	कनककीर्त्ति	(हि॰) ७२२
म्रादिनाथस ज्भाय		(हि॰	3,58
भ्रादिनायस्तवन	कवि पल्ह	(हि०	
म्रादिनाथस्तोत्र	समयसुन्दर	(हि) ६१६
भादिनाथा ष्टक		(हि	y3x (
ग्रादिपुराग्र	जिनसेनाचार्य	(सं०) १	३४३ ६४६
ग्रादिपुरा ग्	पुष्पद्न्त	(শ্বप॰) १	४३ ६४२
भ्रादिपुराग्	दौलतराम	(हि० ग०	
श्रादिपुराग्। टिप्पग्।	प्रभाचन्द्	(सं ०	\$ 8\$ (
ग्रादिपुराएा विनती	गङ्गादास	(हि॰) ७०१
श्रादीश्वर ग्रारती	****) ५६४
ग्राद्रीश्वरगीत	रङ्गविजय	(हि०	
श्रादीश्वर के १० भव	गुग्यचन्द	(हि॰) ७६२
ग्रादीश्वरपूजाष्ट्रक) ४६२
श्रादीश्वरफाग	इानभूषण्	(हि॰	
ग्रादीश्वर रेखता	सहस्रकीर्त्त	(हि॰)	६८२

(हo) श्रादीश्वर का समवसरण ४६६ (हि॰) जितचन्द ग्रादीश्वरम्तवन 1900 (हि॰) **ग्रादीश्वरवि**व्जत्ति ¥30 वनकसोम (हि०) ६१७ श्राद्रकुमारधमाल ग्राघ्यात्मिकगाया भ० लद्दमीचन्द (ग्रप०) १०३ ग्रानन्दलहरीस्तोत्र (सं०) शद्धराचार्य ६०५ (ন ০) ५१४ ग्रानन्दस्तवन ग्राप्तपरीक्षा विद्यानन्दि (स०) 358 श्राप्तमीमासा समन्तभद्राचार्थ (सं०) १३० ग्राप्तमीमासाभापा (हि०) १३० जयचन्द् छावड़ा विद्यानिद (स०) १३० श्राप्तमीमासालकृति ६६३ (fgo) श्रामनीय का भगडा म्रामेर के राजाग्रोका राज्यकाल विवररा — (हि०) ७५६ (हि॰) 3X0 श्रामेर के राजाग्रोकी वशावलि ग्रायुर्वेदिक ग्रन्य (स०) २६७, ७६३ श्रायुर्वेदिक नुसरो (सं०) २६७, ५७६ (हि०) ६०१ श्रायुर्वेदिक नुससे ६६७, ६७७, ६६०, ६६६, ६६७, ७०२, ७०२, ७१४, ७१८, ७१६, ७२३, ७३०, ७३६, ७६०, ७६१, ७६६, 330,030 (हि॰) श्रायुर्वेद नुसखो का सग्रह 788 श्रायुर्वेदमहोदधि (स०) सुखदेव 935 (सं०) श्रारती ६३५ (हि॰) ६२१, ६२२ श्रारती द्यानतराय (हि॰) ७७७ ग्रारती दीपचन्द (हि०) છછછ मानसिंह श्रारती (हि॰) ६२२ श्रारतो लालचन्द ر دوی विहारीदास (हि॰) श्रारती ग्रारती (हि॰) ७७६ शुभचन्द

3

प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृ	ष्ठ सं॰
श्रारती पञ्चपरमेण्ठी	पं० चिमना	(हि॰)	७६१
ग्रारती सरस्वती	व्र० जिनदास	(हि॰)	३८६
ग्रारती संग्रह	त्र॰ जिनदास	(हि॰)	३८६
ग्रारती संग्रह	द्यानतराय	(हि॰)	<i>છછછ</i>
श्रारती सिद्धो की	खुशालचन्द	(हि॰)	<i>છછ</i> છ
श्राराधना	-	(সা৹)	४३२
ग्राराधना		(हि॰)	३८०
ग्राराधना कथा कोश		(सं०)	२१६
ग्राराधना प्रतिवोधसा	र विमलेन्द्रकीत्ति	(हि॰)	६५८
म्राराधना प्रतिवोधसा	र सकलकीर्त्ति	(हि॰)	६८४
ग्राराधना प्रतिवोधसा	₹	(हि॰)	७=२
म्राराधना विधान		(स०)	४६२
ग्राराधनासार	देवसेन	(গা৽)	38
५७३	, ६२८, ६३४, ७०	દ, હરૂહ,	७४४
ग्राराधनासार	जिनदास	(हि०)	७४७
ग्राराधनासारप्रवन्ध	प्रभाचन्द्	(सं०)	२१६
श्राराधनासारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि॰)	38
ग्राराधनासारभाषा	********	(हि॰)	५०
ग्राराधनासार वचनि	ना वा० दुत्तीचन्द	(हि॰ ग॰) ५०
ग्राराधनासारवृत्ति	५० श्राशाधर	(सं०)	५०
ग्रारामशोभाकथा	-	(सं०)	२१७
म्रालापपद्धति	देवसेन	(स०)	१३०
ग्रालोचना		(গাৎ)	५७२
ग्रालोचनापाठ	जौंहरीलाल	(हि०)	५६१
श्रालोचनापाठ	-	(हि॰)	४२६
	Ę	न्प्र, ७६३	, ७४६
ग्राश्रवत्रिमङ्गी	नेमिचन्द्राचार्य	(গা০)	२
ग्राश्रवत्रिभङ्गी	4	(সা॰)	900
म्राश्रवत्रिभङ्गी	-	(हि॰)	२

प्रन्थनाम	लेखक	भाषा १	ष्ट्र स॰
म्राश्रव वर्णन		(हि॰)	२
श्राषाढभूति चौढालि	या कनकसोम	(हि॰)	६१७
म्राहार के ४६ दोषक	र्णान भैया भगव	तीदास (हि॰) ሂ፡
	इ		
इक्कीसठाएगाचर्चा	सिद्धसेन सु	रि (प्रा॰)	२
इन्द्रजाल		(हि॰)	३४७
इन्द्रध्वजपूजा	विश्वभूषण	(सं०)	४६२
इन्द्रव्वजमण्डलपूजा		(सं०)	४६२
इष्टछत्तीसी	वुधजन	(हि॰)	६९१
इष्टबत्तीसी	-	(हि०) ७६०	७ ७६३
इष्टोपदेश	वृज्यपाद्	(सं०)	ই্দ০
इष्टोपदेशटीका	पं॰ आशाधर	(सं०)	३८०
इष्टोपदेशभाषा		(हि॰)	७४४
इष्टोपदेशभापा		(हि॰ गद्य)	३५०
	ई		
ईश्वरवाद		(सं०)	१३१
	उ		
उच्चग्रहफल	वलद्त्त	(सं०)	305
उ णादिसूत्रसंग्रह	उज्वलद्त्र	(स०)	२५७
उत्तरपुरा ग्	गुण्भद्राचार्य		
उत्तरपुरा ग्रिटिप्पग्	प्रभाचन्द्	(स०)	
उत्तरपुराखभाषा	खुशालचन्द	(हि॰ पद्य)	१४५
	संघी पन्नालाल	(हि॰ गद्य)	१४६
उत्तराध्ययन	Miles in the Control of the Control	(সা৹)	२
उत्तराध्ययनभाषाटीव		(हि॰)	ą
उदयसत्ताबंधप्रकृतिवर	ર્ણન —	(सं०)	ঽ
उद्धवगोपीसंवाद	रसिंकरास	(हि॰)	६६४
उद्धवसदेशास्यप्रवन्ध	-	(स०)	१६०
उपदेशछत्तीसी	जिनहप	(हि॰)	३२४
उपदेशपचीसी	-	(हि॰)	६५६

त्र**्**णसम्बन्धकथा

ऋतुमहार ेऋद्विमन्त्र

भाषा पृष्ठ सं० लेखक प्रन्थनाम (सं०) ५० सक्लभूपण् उपदेशरतमाला धर्मदासगिए (oTR) ७५५ उपदेशरतमाला (গা॰) ५२ **उपदेशरत्नमालागाथा** उपदेगरत्नमालाभाषा देवीसिंह छावडा (हि॰ पद्य) ५२ वा० दुलीचन्द (हि०) 48 **उपदेशरत्नमालाभा**पा (हि॰) ३२५ ७४७ द्यानतराय उपदेशशतक (हि॰) उपदेशसज्भाय देवादिल ३५१ (हि॰) रंगविजय ३८१ उपदेशसज्भाय ऋषि रामचन्द (हि॰) ३८० **उपदेशस**ज्माय रपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भंडारी नेमिचन्द् (प्रा॰) 42 **उपदेशसिद्वातरत्नमालाभा**पा (हि॰) ሂየ भागचन्द (গাৎ) ४६३ उपवासग्रहण्विधि (सं०) उपवास के दश भेद ५७३ (हि॰) उपवासविधान १७३ उपवासो का व्योरा (हि॰) ७०१ **उपसर्गहर**स्तोत्र पूर्णचन्द्राचार्य (स०) ३५१ **उपसर्गहरस्तो**त्र (स०) ४२४ उपसर्गार्थ विवरण वुपाचार्य (स०) 47 उपागललितव्रतक्या (सं०) २१७ उपाधिव्याकरण (सं∘) २५७ (स०) उपासकाचार ५२ श्रा० लह्मीचन्द्र उरासकाचारदोहा (यप॰) ५२ (स∘) ५२ उपासकाध्ययन **उमेश्वरस्तो**त्र (स०) ७३१ 羽 त्रभयचन्द्रगणि (গাং) २१५

कालिदास

(4°)

(सं०)

१६१

७२३

लेखक भाषा पृष्ठ स० त्रन्थनाम स्वरूपचन्द् विलाला (हि॰) ५२ ५११ ऋद्धिशतक जिनसेन (स०) 358 ऋपभदेवस्तुति पद्यनिद (प्रा॰) ३८१ ५०६ ऋपभदेवस्तुति अ० सकलकीत्ति (सं०) ऋपभनाथचरित्र १६० ऋपभस्तुति (सं०) ३८२ ऋषिमण्डल [चित्र] ४२४ ऋपिमण्डलपूजा ञ्रा॰ गुग्रनिद (सं०) ४६३ ५३७, ५३६, ७६२ ऋपिमण्डलपूजा मुनि ज्ञानभूपण (स०) ४६३ ६३६ ऋपिनण्डलपूजा (म०) ४६४ ७६१ दौलत आसेरी (हिं८) ऋपिमण्डलपूजा ४६४ ऋपिमण्डलपूजा (हि॰) ७२७ सदासुख कासलीवाल (हि॰) ऋपिमण्डलपूजा ७२६ ऋपिमण्डलमन्त्र (सं०) ५६३ ऋिपमण्डलस्तवन (सं०) ६४५ ६८३ (सं०) ऋपिमण्डलस्तवनपूजा ६५५ गौतमस्वामी ऋषिमण्डलस्तोत्र (स०) 357 ४२४, ४२८, ४३१, ६४७, ७३२ (स०) ३५२ ६६२ **त्र**_पिमण्डलस्तोत्र Ų एकसौग्रनहत्तर जीववर्शन (हि॰) ७४४ (सं०) एकाक्षरकोश २७४ चपसाक (स०) एकाक्षरनाममाला २७४ वररुचि एकाक्षरीकोश (स०) 208 (सं०) एकाक्षरीकोश 308 एकाक्षरीस्तोत्र [तकाराक्षर] (सं०) ३५२ वादिराज २२४ एकीभावस्तोत्र (स०) ३८२, ४२४, ४२५, ४२८, ४३०, ४३२, ४३३, ५७२, ५७५ ५६५, ६०५, ६३३, ६३७, ६४४, ६५१, ६५२, 📝 ३६४, ७२०, ७३७, ७८६

प्रन्थानुक्रमणिका]				
ग्रन्थनाम	त्तेखक २	मापा पृष्ठ		प्रन्थनाम	
प्रकीभावस्तोत्रटीका	नागचन्द्रसूरि	` '		कथासग्रह	
एकी भावस्तीत्रभाषा	भूघरदास	/ / /	३८३ 📗	कथासंग्रह	
४२	ह, ४४८, ६५२, ६६	१२, ७१६,	७२०	कथासग्रह	व्र
एकीभावस्तोत्रभाषा	বন্নালাল	(हि॰)	३५३	क्यासंग्रह	
एकीभावस्तोत्रभाषा	जगजीवन	(हि॰)	६०५		ा का दूहा
एकोभावस्तोत्रभाषा		(हि॰)	३५३	कमलाष्ट्रन	_
एकश्लोकरामायरा		(स。)	६४६	कयवन्नाचं	
एकीश्लोकभागवत		(स∘)	६४६	करकण्डुच	रित्र
ganger and the	त्री			करकुण्डः	वरित्र मु
_		(हि॰)	५७५	करगाकौ	तूहल
ग्रौषधियो के नुसखे		(16-1	·	करलक्ष	ारण
	क			करुणाष्ट्र	क
कक्का	गुलावचन्द	(हि॰)	६४३		
कक्काबत्तीसी	त्र० गुलाल	(हि॰)		1	
कक्कावत्तीसी	नन्दराम	(हि॰)		1	शाचिनीयन्त्र
कक्कावत्तीसी	मनराम	(हि॰)) ७२३	कपूरि	1 55
कक्काबत्तीसी		(हि०)		1 "	त्रकरण
	६७५, ६८४, ७१३	, ७१५, ७	१३, ७४	१ कर्पूर	मञ्जरी
कक्का विनती	[वारहखडो] धनरा) ६२	३ कर्मग्र	- त्सत्तरी
कच्छावतार [ि			६०	३ कर्मचू	र [मण्डलिंच
क्रकवादा वशवे	राजाग्रोके नाम —	(हि		1 2016	रव्रतवेलि
क्छवाहा वश	के राजाग्रोकी वशाव	लि — (हि	8v (o	७ कर्मच्	र्दव्रतोद्यापनपृ
कठियार कान	इरीचौपई मानसार	गर (हि	o) X	कर्मन	बूरव्रतोद्यापन
क्याकोश	हरिषेणाचा	र्थे (स	•		इत्तीसी
कथाकोश मि	ारधनाकथाकोश] व्र	नेमिद्त्त (स०) २	१६ कर्मः	छत्तीसी
कथाको श	देवेन्द्रकी	त्त (सं	(0)	१६ कर्म	दहनपूजा
क्याकोश	-	(ĕ	•		दहनपूजा
क्याकोश	•	=	- ,	३१६	
. कथारत्नसार	ार नारचन्द्र		•	- 1	र्भदहनपूजा
न्) कथासग्रह		_ (सं०)	२२०	

कथासग्रह

भाषा पृष्ठ सं० लेखक (स० हि०) २२० — (प्रा० हि॰) २२० २२० (हि॰) व्र० ज्ञानसागर् ७३७ (हि॰) ६७७ (হাज०) सुन्दर ६०७ (स०) जिनचन्द्रसूरि (हि॰ रा॰) २२१ (सं०) १६१ भ० शुभचन्द्र १६१ मुनि कनकामर (ग्रप०) (सं०) ३७१ (সা৽) 305 (स०) ६३३ पद्मनन्दि ६३७, ६६८ (हि॰) ६४२ (सं०) ६१२ 7 ३७१ (सं०) ३२५ (स०) ३१६ राजशेखर (सं०) ₹ (সা৽) ५२५ चत्र) मुनि सकलकीर्त्त (हि०) ५६२ त्तद्मीसेन (सं०) ४६४, ५१६ नपूजा — (सं०) ५०६,४६४, ५४० न (हि॰) ६१६ समयसुन्दर (हि॰) ६८६ (सं०) ५६० वादिचन्द्र (सं०) ४६५ शुभचन्द्र ५३७, ६४५ (सं०) ४६५ ५१७, ५४०, ७६१

प्रन्थनाम	लेखक	भाषा प्रष्ठ सं०
कर्मदहनपूजा	टेकचन्द	(हि०) ४६४
कर्मदहन [मण्डल वि	चेत्र]	५२५
कर्मदहन का मण्डल		(हि०) ६३८
कर्मदहनद्गतमन्त्र		(स०) ३४७
कर्म नोकर्म वर्णन		(प्रा०) ६२६
कर्मपद्मीसी	भारमल	(हि॰) ७६९
वर्मप्रकृति	नेभिचन्द्राचाये	(সা০) ३
कर्मप्रकृतिचर्चा		(हि०) ४, ७२०
कर्मप्रकृतिचर्चा	حنسيم	(हि०) ६७०
कर्मप्रकृतिटीका	सुमतिकी चि	(स०) ५
कर्मप्रकृति का व्योर	T —	(हि०) ७१८
कर्मप्रकृतिवर्शन	*****	(हि॰) ७०१
कर्मप्रकृतिविधान	वनारसीदास	(हि॰) ५
		३६०, ६७७, ७४६
कर्मबत्तीसी	राजसमुद्र	(हि॰) ६१७
कर्मयुद्ध की विनती		(हि०) ६६४
कर्मविपाक		(स०) २२१, ५६६
कर्मविपाकटीका	सकलकीत्ति	(सं०) ५
कर्मविपाकफल	-	(हि०) २८०
कर्मराशिफल [कर्म	विषाक] —	(सं०) २८०
कर्मस्तवसूत्र	देवेन्द्रसूरि	(সা॰) খ
कर्महिण्डोलना		(हि०) ६२२
कर्मी की १४८ प्रकृ	तियां —	(हि०) ७६०
वलशविधान	मोहन	(स०) ४६६
कलशविधान	*****	(सं०) ४६६
कलशविधि	- (सं०) ४२८, ६१२
कलशिवधि		(हि॰) ४६६
		(स०) ४६७
कलशारोपण्विधि	प० श्राशाधर	(स०) ४६६

लेखक प्रन्थनाम भाषा प्रष्ट सं॰ कलशारोपगविधि (tio) ४६६ क्लिकुण्डपार्यनाथपूजा भ० प्रभाचन्द्र (tio) 886 क्लिकुण्डपार्चनायपूजा यशोविजय (सं०) ६५८ कलिक्ण्डपार्वनाथपूजा (हि॰) ५६७ वित्युण्डपार्वनाथ [मटलचित्र] XSX कलिकुण्डपार्श्वनाथस्तवन (सं०) ६०६ व लिक्ज ज्डपूजा (শ০) ¥£0 ४७४, ५१४, ५७४, ६०६, ६४० कलिकुण्डपूजा श्रीर जयमाल (সা০) ७६३ कलियुण्डस्तवन (सं∘ ६०७ **कलिकुण्डस्तवन** (সা০) EXX कलिकुण्डस्तोत्र (स०) YOY केशव (हि॰) कलियुग की कथा ६२२ कलियुग की कथा (हि॰) द्वारकादास ६७७ कलियुग की विनती (हि॰) देवात्रस EXX ६८४, ७८५ कल्किम्रवतार [चित्र] ६०३ (सं०) ६६५ कल्पद्रमपूजा कल्पसिद्धातसंग्रह (সা৽) Ę (সা০) Ę कल्पसूत्र भद्रवाहु भिक्खू श्रन्मगणं (গা॰) Ę कल्पसूत्र (हि॰) ३८३ करपसूत्रमहिमा समयप्रुन्दरोपाध्याय (स०) कल्पसूत्रटीका (সা০) कल्पसूत्रवृत्ति (सं०) कल्पस्थान [कल्पव्याख्या] ७३६ ३५३ कल्याराक (সা০) समन्तभद कल्याएा [बढा] ४७६ (सं०) ३५४ कल्यागमञ्जरी विनयसागर हर्पकीत्ति (स०) 808 कल्याग्गमन्दिर

भाषा प्रष्टु सं० लेखक प्रन्थनाम (सं०) ३५४ **कल्यारामन्दिरस्तोत्र** कुसुद्चन्द्र ४०२, ४२४, ४३०, ४३१, ४३३, ४६४, ४७२, ५७४ ४६४. ६०४, ६१४, ६१६, ६३३, ६३७, ६४१, ६८० ६८१, ६६३, ७०१, ७३१, ७६३ **कल्यारामन्दिरस्तोत्रटीका** (सं०) ३५४ कल्यारामन्दिरस्तोत्रवृत्ति देवतिलक (स०) ३५५ कल्यारामन्दिरस्तोत्र हिन्दी टीका — (स० हि०) ६८१ कल्यारामन्दिरस्तोत्रभाषा पन्नालाल √(go) ३५४ कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा बनारसीटास (हि०) ४२६, ५६६, ५६६, ६०३, ६०४, ६२२, ६४३, ६४८, ६६२, ६६४, ६७७, ७०३, ७०४ कल्याग्मिन्दरस्तोत्रभाषा मेलीराम (हि॰) ७५६ कल्याग्मिन्दरस्तोत्रभाषा ऋषि राभचन्द्र (हि॰) ३८५ कल्यारामन्दिरभाषा (हि०) ६५६ ७४४, ७४४, ७४४, ७४८, ७६८ पं० ऋाशाधर स०) ४७४, ३८४ कल्यारामाला कल्याग्विधि मुनि विनयचन्द (ग्रप०) ६४१ पद्मनन्दि (सं०) **फल्यागाष्ट्रकस्तोत्र** ४७४ (सं०) २२१, २४६ कवलचन्द्रायगुत्रतकथा कविकर्पटी (9P) 30€ कवित्त श्रमदास (हि॰) ७६८ कवित्त कन्हैयालाल (हo) 950 कवित्त केसबदास (हि०) ६४३ कवित्त गिरधर (हिं०) ७७२ ७८६ कवित्त त्र॰ गुलाल (हि०) ६७०,६८२ छीहल कवित्त (हि॰) ७७० जयकिशन कवित्त (हि॰) ६४३ कवित्त देवीदास (हि॰) ६७५ कवित्त **(**feo) पद्माकर ७५६

घन्थनाम	लेखक	भाषा दृष्ठ	सं०
कवित्त	बनारसीदास	(हि॰) ७०६,	₽ve
कवित्त	माहन	(हि॰)	<i>१७</i> १
कवित्त	वृ न्दावनदास	(हि॰) ५	६ंद२
कवित्त	सन्तराम	(हि॰)	६६२
कवित्त	सुखलाल	(हि०)	६५६
कवित्त	सुन्द् रदास	(हि॰)	६४३
कवित्त	संवग	(हि॰) '	७७२
कवित्त	 (₹	ाज॰ डिंगल) ।	<i>૦૭૦</i>
कवित्त	-	(हि०)	६८१
હ	१७, ७४८, ७६०,	७६३, ७६७, १	<i>૭७</i>
कवित्त चुगलखोर व	न शिवलाल	(हि॰) ।	७५२
कवित्तसग्रह		(हि०) ६५६,	きとの
कविप्रिया	केशवदेव	(हि॰)	१६१
कविवल्लभ	हरिचरणदास	(हि०)	६८८
	सिद्धनागार्जुं न	(4;°)	२६७
कातन्त्रटीका		(स०)	२५७
कातन्त्ररूपमालाटीव	न दौर्गसिंह	(स०)	२५८
कातन्त्ररूपमालावृत्ति	T	(सं०)	२५५
कातन्त्रविभ्रमसूभाव	चूरि चारित्रर्मिह	(स॰)	२५७
कातन्त्रव्याकरण	शिववर्मा	(सं०)	२५६
कादम्बरीटीका		(स∘)	१६१
कामन्दकीयनीतिसा	(भाषा —	(हि॰)	३२६
कामशास्त्र *		(हि॰)	७३७
कामसूत्र	कविहाल	(शा०)	३५३
कारकप्रक्रिया	-	(सं०)	२५६
कारकविवेचन	tymms	(स०)	२५६
कारकसमासप्रकरण		(सं∘)	२५६
कारखानो के नाम	- Companie	(हि॰) ।	૭૫૯
कात्तिकेयानुप्रेक्षा	स्वामी कार्त्तिकेय	(সা৹)	१०३

कात्तिकेयानुप्रेक्षाटीका

कालचक्रवर्शन

कालीसहस्रनाम

काव्यप्रकाशटीका

कुदेवस्वरूपवर्णन

कुमारसम्भवटीका

कृष्णवालविलास

कृष्णरास

कुमारसम्भव

कासिम रसिकविलास

कालीनागदमनकथा

भाषा प्रष्ठ सं० (सं०)

१०४ (मं०)

ग्रन्थना**म**ँ

कृष्णरुवमिणवेलिटीका

कृष्णहत्रमिणमञ्जल

केवलज्ञान का ट्यौरा

केवलज्ञानीसज्भाय

कोक्लिपञ्चमीकथा

कौतुकरत्नमजूपा

कोकमञ्जरी

कोकशास्त्र

कोकसार

कोकसार

कृष्णावतारचित्र

१०४

कार्तिकेथानुप्रेक्षाभाषा जयचन्द छ।बङ्ा (हि० गद्य) १०४ ७७०

(हि॰) (हि॰) ७३८

(स०) ६०८

(स० हि०) ५७१ काले विच्छूके डड्डा उतारनेका मत्र — (स०) १६१

(हि०) ७७१ (स०)

(सं०)

(हि०) श्रगरदास

(हि॰ ७२० कालिदास (स∘) १६२

(स∘) कनकसागर १६२ ऋपय दी चित (स०) 305 (स०) ₹0=

(हि॰)

(हि॰)

४३७

৩ইদ

क्वलयानन्द कु ३ लयानन्द (स०) 308

कुवलयानन्दकारिका जिनाङ्गसूरि (हि०) कुशलस्तवन 300 कुशलस्तवन समयसुन्दर 300

(हि॰) कुशलाग्यवधि ग्रज्मुपगां (গা•) १०४ कुशीलखण्डन जयलाल ५२

(हि॰) (io) कुदन्तपाठ 325 ठक्कुरसी (हि॰) कृपगाछन्द ६३८

चन्द्रकीत्ति कृपग्छन्द (हि॰) ३५६ विनोदीलाल कृपग्गपन्चीसी (हि॰) ७३३ कृष्णप्रमाप्टक (हि॰) ७३८

श्री किशनलाल

किरातार्जुनीय महाकवि भारवि १६१ (हि०) कुगुरुलक्षरा ሂሂ कुण्डलगिरिपूजा भ० विश्वभूपण् ४६७ कुण्डलिया

लेखक

शुभचन्द्र

६६०

कौत्कलीलावती कौमुदीकथा कञ्जिकाव्रतोद्यापनपूजा ललितकीर्त्ति किञ्जनात्रतोद्यापन

> काजीवारस (मण्डल चित्र) काजीव्रतोद्यापनमण्डलपू जा

क्रियाकलाप **क्रियाकलापटीका** क्रियाकलाप**टी**का

> क्रियाकलापवृत्ति क्रियाकोशभाषा

क्षत्रचूडामिए

क्षपगासारटीका

क्रियाकोशभाषा क्रियावादियों के ३६ भेद क्रोधमानमायालोभ की सज्भाय —

(हि॰) (स०) (सं०)

प्रन्थानुक्रमिश्वका

लेखक भाषा पृष्ठ सं० कृप्याख्यमियात्रेलि पृथ्वीर ज राठौर (राज० डिगल) ७७०

पदम भगत

विनयचन्द्र

श्रानन्द

व्र॰ हर्पी

श्रा० वर्म होति

श्रभा चन्द

किशनसिंह

वादीभर्सिह

७७०

(হি০) ६५६

कृष्णरुमिणिवेलि हिन्दोटोका सहित — (हि०) २२१

६०३ (हि॰) ५३ (हि॰) 35%

(हि०) ६४७ (सं०) **3** ¥ 3 (हि॰) ३५३

(हि॰) ३५३, ६६६ (हिं) २२५

(हि०) ७५६ (स ॰) २५०

(स०) २२२ (सं०) ४६८

(सं०) 848 ४६८, ४१७

प्र२५ (स०) ५१३

(स∘) ४७६ (स०) ५३, ४३४ 쏫३

(स०) (সা৹) ሂ३ (हि०) ५३, ६१५

(हि॰) ५३ (हि∘) ६७१ **

१६२ y

प्रन्थनाम	तेखक	भाषा पृष्ठ	सं०	त्र
क्षपणासारवृत्ति	साधवचन्द्र त्रैविधदेव	(सं०)	૭	खण
क्षपगासारभापा	पं० टोडरमत	• (हि॰)	9	खण
क्षमाछत्तीसी	समयसुन्दर	(हि०)	६१७	खण
क्षमाबत्तीसी	जिनचन्द्रसूरि	(हि॰)	५४	ख
क्षमावग्रोपूजा	ब्रह्मसे न	(स∘)	५६४	ख
क्षीर नीर		(हि॰)	७६२	ख्य
क्षीरव्रतनिधिपूजा		(स०)	५१५	
चीरोदानी पूजा	अभयचन्द	(a o)	₹३७	ग्र
क्षेत्रपाल की ग्रार	रती 	(हि॰)	६०७	ग
क्षेत्रपालगीत	शुभचन्द्	(हि॰)	६२३	गः
क्षेत्रपाल जयमाल		(हि॰)	७६३	ग
क्षेत्रपाल नामाव	ली ' —	(स ०)	३८६	ग
क्षेत्रपालपूजा	मणिभद्र	(स ०)	६८६	ग
क्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	(स०)	४६७	ग
क्षेत्रपालपूजा	and complete	(सं०)	४६८	ग
	प्रुप्, प्रुष, प्रह <i>७</i> ,	६४०, ६५५	, ७६३	ग
क्षेत्रपालपूजा	सुमतिकीर्त्ति	(हि॰)	७१३	ग
क्षेत्रपाल भैरवी	गीत शोभाचन्द	(हि॰)	<i>છ</i> ્ય	1
क्षेत्रपालस्तोत्र		(स०)	३४७	ı
	५६१, ५७५,	६४४, ६४ ९	, ६४७	1
क्षेत्रपालाष्ट्रक	Aphinop	(स०)	६५५	1
क्षेत्रपालव्यवहा	₹ —	(स∘)	२५०	1
क्षेत्रसमासटीक	ा इरिभद्रसूरि	(स०)	४४	1
क्षेत्रसमासप्रकर	.सा —	(সা৹)	ሂሄ	
	ख			
खण्डप्रशस्तिक	ाव्य	(सं०)	१६३	
खण्डेलवालगो	য —	(हि॰)		
^१ खण्डेलवालो ^३	के ८४ गोत्र —	(हि॰		3

	प्रन्थनाम	लेखक	भापा पृष्ठ	स०
ख	वण्डेलवालोत्पत्तिवर्णन	-	(हि॰)	०७६
₹	वण्डेलवालो की उत्पत्ति		(हि॰)	७०२
₹	बण्डेलवालोकी उत्पत्ति ग्रीर	र उनके ८४ गो	त्र — (हि॰) ७२१
₹	वण्डेला की चरचा		(हि॰)	७०२
1	वण्डेला की वशाविल		(हि॰)	७५६
₹	व्याल गारीचन्दका		(हि॰)	२२२
		ग		
,	गजपंथामण्डलपूजा भ०	चेमेन्द्रकी ति	(स०)	४६५
۱	गजमोक्षकथा	-	(हि॰)	६००
1	गजसिंहकुमारचरित्र वि	नयचन्द्रसू र	(स०)	१६३
	गडाराशातिकविधि	-	(स०)	६१२
	गराधरचरगारविदपूजा	-	(सं०)	४६९
	गराधरजयमाल	-	(গা॰)	४६९
	गगाधरवलयपूजा	शुभचन्द्	(सं०)	६६०
	गराधरवलयपूजा	त्राशाधर	(स०)	७६१
	गराधरवलयपूजा		(स०)	४६९
			६३६, ६४४	, ७६१
1	गराधरवलय [मडलिच	[] —		५२५
	गराधरवलयमन्त्र	-	(स०)	६०७
١	गराधरवलययन्त्रमडल [ब	नोठे] —	(हि॰)	६३८
١	गरापाठ बादिराः	न नगन्नाथ	(स०)	३४६
Ì	गर्गसार		(सं०)	ሂሄ
١	गिंगतनाममाला		(स०)	385
	गर्गितशास्त्र		(सं०)	३६५
	गि्गतसार	हेमराज	(हि॰)	
١	गगोशछन्द		(हि॰)	७५३
į	गगोशद्वादशनाम		(स०)	६४६
:	गर्गमनोरमा		(सं०)	२८०
9	गर्गसंहिता	गर्गऋपि	(सं∘)	२५०

श्रन्थनाम	-	विक	भाषा पृप्	सं०
गर्भकल्याग्गकक्रियामे	भक्तिया		(हि॰)	५७३
गर्भपडारचक्र	दे	वनन्दि	(स०) १३१,	७३७
गिरन।रक्षेत्रपूजा	भ० विश्	भूपण	(स∘)	338
गिरनारक्षेत्रपूजा			(हि॰) ४६९,	ሂያ३
गिरनारक्षेत्रपूजा			(हि०)	५१५
गिरिनारयात्रावर्णन			(हि॰)	७१६
गीत	कवि	पल्ह्	(हि॰)	৬३८
गीत	धमे	कीर्त्ति	(हि॰)	७४३
गीत	पाडे ना	थूराम	(हि॰)	६२२
गीत	विद्या	भूषगा	(हि॰)	६०७
गीत			(हि॰)	७४३
गीतगोविद	;	जयदेव	(स०)	१६३
गीतप्रवन्ध			(o B)	३८६
गीतमहात्म्य			(स०)	६७७
गीतवीतराग स्त्रां	भनवचा	रुकीर्त्ति	(स०)	३८६
गुराबेलि [चम्दनवाल	मा गीत]		(हि॰)	६२३
ग्रग्विल			(हि॰)	દ૪૩
ग्रुणमञ्जरी			(हि०)	७१९
गुण्म्तवन			(€0)	३२७
ग्रुग्स्यानगीत	श्री	विद्ध [°] न	(हि०)	६३७
गुग्स्थानक्रमारोहसू	त्र र	ब्रशेखर	(मं०)	5
गुणस्थानचर्चा			(সা৹) দ	, ६२८
गुरास्यानचर्चा	चन	द्रकीर्त्ति	(हि॰)	5
गुण्स्थानचर्चा			(हि०)	७५१
गुर्गस्थानचर्चा			(स०)	5
गुगस्थानप्रकरगा		-	(स०)	5
गुग्स्थानभेद		*****	(स०)	5
गुरास्थानमार्गराा			(हि॰)	5
गुणस्थानमार्गणा र	चना		(स०)	5
गुणस्थानवर्णन			(स∘)	3

लेखक भाषा पृष्ठ सं० प्रन्थनाम गुग्गम्थानवर्णन (हि∙) (सं०) गुग्स्थानव्याख्या . १७३ (हि॰) ৬५० गुगाक्षरमाला मनराम — (सं०) ६२८, ६८६ गुरावली (हि॰) गुरग्रष्टक द्यानतराय ७७७ (हि०) शुभचन्द ३८१ गुरुछन्द त्र० जिनदास (हि०) ६५६ गुरुजयमाल ६८४, ७६१ (हि०) ७०२ गुरुदेव की विनती (हि०) ३८६ गुरुनामावलिछन्द गुरुपारतन्त्र एवं सप्तस्मरण जिनद्त्तसूरि (हि॰) ĘĮĘ जिनदास (हि॰) ५३७ गुरुपूजा (सं०) ĘYĘ गुरुपूजाष्ट्रक (स∘) ३्द७ गुरुसहस्रनाम शांतिदास (स०) Ęţu गुरुस्तवन Eau (स०) गुरुस्तुति (हि॰) गुरुस्तुति भूधरदास ४३७, ४४७ ६१४, ६४२, ६६३, ७६३ (हि०) ७०४ गुरुग्रो की विनती (स०) ६११ गुरुग्रो की स्तुति (स०) ६१३ ७ गुर्वाष्ट्रक वादिराज (स०) ४६४, ६३१ गुर्वावलि (सं०) ४१६ गुर्वावलीपूजा ₹७१ (हि॰) गुर्वावलीवर्णन ३६५ (हि॰) गोकुलगावकी लीला 18 गोम्मटसार [कर्मकाण्ड] नेमिचन्द्राचार्थ (গাৎ) 17 (स०) गोम्मटसार [कर्मकाड] टीका क्रनकनिट (सं०) 18 गोम्मटसार [कर्मकाड] टीका ज्ञानभूषण 11 (सं०) गोम्मटसार [कर्मकाड] टीका

प्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
गोम्मटसार [कर्मकाड] भाषा पं० टोडर	मल (हि	o) १३
गोम्मटसार [कर्मकाड] भाषा हेमराज	(हि०)) १३
गोम्मटसार [जोवकाः	इ] नेमिचन्द्राचार्य	ী (সা৹	3 (
गोम्मटसार [जीवकाड] (तत्त्वप्रदीपिका)	(सं०)) १२
गोम्मटसार [जीवकार	ड] भाषा टोडरम	त्त (हि॰)	१०
गोम्मटसारटीका	धर्मचन्द्र	(सं०)	3
गोम्मटसारटीका	सकलभूषण	(सं०)	१०
गोम्मटसारभाषा	टोडरमल	(हि०)	१०
गोम्मटसारपीठिकाभाष	रा टोडरमल	(हि॰)	
गोम्मटसारवृत्ति	केशववर्णी	(सं∘)	१०
गोम्मटसारवृत्ति	•	(सं०)	
गोम्मटसार संहष्टि	पं० टोडरमल	(हि॰)	
गोम्मटसारस्तोत्र		(सं∘)	
गोरखपदावली	गोरखनाथ	(हि॰)	•
गोरखसवाद		(हि॰)	I
गोविदाष्ट्रक	शङ्कराचार्य	(सं०)	S S
गौडोपार्श्वनायस्तवन	जोधराज	(राज०)	į
गौडीपार्श्वनाथस्तवन र			
गौतमकुलक	गौतमस्वामी	(সা০)	- 1
गौतमकुलक	-	(সা ০)	1
गौतमपृच्छा	****	(সা৹)]
गौतमपृच्छा	समयसुन्दर	(हि॰)	•
गौतमरासा	-	(हि॰)	
गौतमस्वामीचरित्र	धर्मचन्द्र	(सं०)	£33
गौतमस्वामीचरित्रभाषा	पत्रालाल चौधरी	(स∘)	१६३
गौतमस्वामीरास	-	(हि॰)	
	समयमुन्दर	(हि॰)	
गैतमस्वामी सज्भाय	-	(हि॰)	
धिकुटीपूजा		(स∘)	

	ग्रन्थनाम	;	त्तेखक	31	ाषा	<u>রন্থ</u>	सं
	ग्यारह ग्रंग एवं चौव	ह पूर्व का	वर्गान	· —	(हि०)	६२
	गृहप्रवेश विचार				(सं०)) 1	५७
	गृहर्विवलक्षग्।				(सं०)) :	(ও
	ग्रहदशावर्शन			((सं०)) :	१८
	ग्रहफल			((हि०)	, ,	ĘĘ
	ग्रहफल			((सं०)	, ;	₹=6
	ग्रहो की ऊचाई एवं	प्रायुवर्णन		((हि॰)	, ;	११ 8
		घ					
	घटकर्परकाव्य	घर	क्पर	((सं ०)	१	Ę¥
l	घग्घरनिसागी		_	(सं∘)			
	घण्टाकर्राकरूप				सं०)		
	घण्टाकर्णमन्त्र			(सं०)	3	४७
	घण्टाकर्गामन्त्र			(हि॰)	६५	, ৩	६२
	घण्टाकराधृद्धिकल्प			(f	हे०)	ą ,	6 5
		च					
١	चउबीसीठाणाचर्चा			(fi	ĕ∘)	90	0
١,	वउसरप्रकरण			(я	(°n	3	ζ¥
١	चक्रवर्त्ति की बारहभाव	ना		(fi	₹∘)	१०	ሂ
	चक्रे भ्वरीस्तोत्र			(सं	i•)	३४	′5
			३५७,	¥₹ २, '	४२८,	Ę¥	<i>e</i>
4	वतुर्गति की पद्धडी			(ग्र	(°7	Ę¥	'₹
1	वतुर्दवापुग् स्यानच र्वा	•		(हि	0)	६५	8
Ŧ	वतुर्दशतीर्थङ्करपूजा			(सं	•)	६७	२
Ę	तुर्दशमार्गगा वर्चा			(हि	•)	६७	?
Ŧ	ा तुर्दशसूत्र	विनयच	न्द्र	(सं	。)	8,	8
둭	तुर्दशसूत्र	•		(সা	·)	\$ 1	6
च	तुर्दशागवाह्यविवरण	•		(संद)	१४	•
चर्	र्द् <u>र</u> वीकथा	टीकम	(f	ਫ਼ਿ (0)	X Y,	इలथ	}

८१६]

८१६]				
ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	स०	
चतुर्दशीकथा	डालूराम	(हि॰)	७४२	5
चतुर्दशीविधानकथा -		(स०)	२२२	:
_{चतु} र्दजीयतपूजा	-	(सं०)	४६६	١,
चतुर्विधध्यान	-	(स०)	१०५	5
चतुर्विशति	गुगाकीर्त्ति	(हि॰)	६०१	١,
_{चतुर्विद्यतिगुर्गस्थानपीठि}		(स०)	१८	۶
नतुर्विशतिजयमाल य	ति माघनंदि	(सं०)	४६६	١,
_{चतु} विंदातिजिनपूजा	रामचन्द्र	(हि॰)	७ २८	. ا
_{चतुर्विश्वतिजिनराजस्तुति}		(हि॰)	900	. ا
चतुर्विद्यतिजिनस्तवन	जयसागर	(हि॰)	६१६	=
_{चतु} विदातिजिनस्तुति	जिनलाभसूरि	(स०)	३८७	,
_{चतुर्विंगतिजिनाष्ट्रक}	शुभचन्द	(स०)	২ ৬5	,
चतुर्विशतितोर्थद्धर जयम्		(গা॰)	३=७	Ę
<u>अत्यात्र</u> चतुर्विशतितीर्थद्ध,रपूजा	((स०) ४७०,	६४५	=
चतुर्विशतितीर्थद्धरपूजा	ने तीचन्द्र पाट	नी (हि०)	४७२	ŧ
चतुर्विशतितीर्थंड्यु,रपूजा	बख्तावरलाल	(हि॰)	४७३	5
चतुर्विद्यतितीर्थेद्ध,रपूजा		(हि॰)	४७३	17
चतुर्विशतितीर्थसुरपूजा	रामचन्द्र	(हि॰)	४७२	1
चतुर्विद्यतितीर्थं द्धुरपूजा	वृन्दावन	(हि०)	४७१	,
चतुर्विशतितीर्थद्धरपूजा	सुग नचन्द	(हि॰)	४७३	3
चतुर्विशतितीर्थङ्करपूजा	सेवाराम साह	(हि॰)	४७०	7
चतुर्विशतितीर्थद्धरपूजा		(हि॰)	४७३	5
चतुर्विशतितीर्थद्धरस्तव	न हेमविमलसूर्वि	रे (हि॰)	४३७	=
चतुर्विशतितीर्थङ्करस्तोत्र			३८८	5
चतुविंशतितीर्थं द्धुरस्तुति		(हि॰)		5
चतुर्विशतितीर्थञ्करस्तुति	समन्तभद्र	(सं०)	६४७	۶
चतुर्विशतितीर्थेङ्करस्तुति	r —	(सं०) ३८८	६२८	۶
चतुर्विशतितीर्थञ्करस्तोः	माघनन्दि	(स०) ३८८	५७६	۶
चतुर्विद्यतितीर्थङ्करस्तोः		(स∘)	३८५	

	L	प्रन्थानुक्रमासका
प्रन्थनाम	लेखक	भाषा प्रष्ठ सं०
चतुर्विशतितीर्थद्धराष्ट्र	क चन्द्रकीर्त्ति	(सं०) ५६४
चतुर्विशतिपूजा		(हि॰) ४७१
चतुर्विशतियज्ञविधान		(हि०) ३४५
चतुर्विशतिविनती	चन्द्कवि	(हि०) ६८५
चतुर्विशतिव्रतोद्यापन		(सं०) ५३६
चतुर्विशतिस्थानक	नेमिचन्द्राचार्य	(গা॰) १দ
चतुर्विंगतिसमुच्चयपूजा		(सं०) ५०६
चतुर्विशतिस्तवन		(स०) ३८७ ४२६
च तुर्विशतिस्तुति		(গাহ) ৬৬৮
चतुर्विशतिस्तुति	विनोदीलाल	(हि०) ७७६
चतुर्विशतिस्तोत्र	भूधरदास	(हि॰) ४२६
चतुरलोकीगीता		(स <i>ण</i>) ६७६
चतुः भण्ठोस्तोत्र	-	(स०) ६६२
चतुष्पदीस्तोत्र	-	(सं०) ३८८
चन्दकथा	लद्मग्	(हि०) ७४८
चन्दकु वर की वार्ता	-	(हि॰) ७३४
चन्दनबालारास		(हि०) ३६१
चन्दनमलयागिरीकथा	भद्रसेन	(हि ०) २२ ३
चन्दनमलय।गिरीकथा	चतर	(हि॰) २२३
चन्दनमलयागिरीकथा		(हि॰) ৬४೯
चन्दनपष्ठिकथा [,] इ	न॰ श्रुतसागर	(स॰) २२४, ५१४
चन्दनषष्ठिकथा		(सं०) २२४
चन्दनषष्ठिकथा	प० हरिचन्द	(भ्रप०) २४३
चन्दनपष्ठीपूजा	खुशालचन्द	(हि०) ५१६
चन्दनपष्ठीविधानकथा	•	(भ्रप०) २४६
चन्दनषष्ठीव्रतकथा ।	मा० छत्रसेन	(सं०) ६३१
चन्दनषप्ठीव्रतकथा	श्रुतसागर	(स०) ४१०
चन्दनपष्ठीय्रतकथा	खुशालचन्द	(हि॰) २२४
		२४४, २४६

•	यत्त्राचित्रामा (चित्रा	3		_
	प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	सं०
च	न्दनषष्ठीव्रतपूजा	चोखचन्द	(स०)	४७३
Ŧ	ान्दनप ष्ठीव्रतपूजा	देवेन्द्रकीर्त्त	(सं०)	४७३
₹	ान्दनष ण्ठीव्रतपूजा	विजयकीर्त्ति	(म०)	५०६
÷	ग्न्दनष ष्ठीव्रतपूजा	शुभचन्द्र	(स०)	४७३
₹	ब न्दनषष्ठीव्रतपूजा		(सं०)	४७४
Ŧ	ान्दनाचरित्र	शुभचन्द्र	(सं०)	१६४
₹	क्टनाचरित्र	मोहनविजय	$(\tilde{a} \circ)$	७६१
₹	बन्द्रकीत्तिछन् द	*****	(हि॰)	३८६
₹	वन्द्रकुं वर की वार्ता	प्रतापसिंह	(हि॰)	२२३
7	वन्द्रकु वरकी वार्ता		(हि॰)	७११
7	वन्द्रगुप्त के सोलह स्व	रप्त —	(हि॰)	७१=
			७२३,	७३८
:	चन्द्रगुप्तके सोलह स	वप्नोका फल —	(हि॰)	६२१
:	चन्द्रप्रज्ञप्ति		(०१स)	388
:	चन्द्रप्रभचरित्र	वीरनन्दि	(स०)	१६४
	चन्द्रप्रभकाव्यपश्चिक	ा गुण्तनिद	(स०)	१६५
	चन्द्रप्रभचरित्र	शुभचन्द्र	(स०)	१६४
	चन्द्रप्रभचरित्र	दामोदर	(ग्रप०)	१६५
	चन्द्रप्रभचरित्र	यशःकीर्त्ति	(য়प०)	१६५
	चन्द्रप्रभचरित्र	जयचन्द् छाबड़ा	(हि॰)	१६६
	चन्द्रप्रभचरित्रपश्चिव	ii —	(स०)	१६५
	चन्द्रप्रभजिनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	४७४
	चन्द्रप्रभजिनपूजा	रामचन्द्र	(हि॰)	४७४
	चन्द्रप्रभपुराग्	हीरालाल	(हि०)	१४६
	चन्द्रप्रभपूजा	-	(स०)	
	चन्द्रलेहारास	मतिकुशल	(हि०)	३६१
71	चन्द्रवरदाई की वा	र्ता —	(हि॰)	303
	चन्द्रसागरपूजा		(हि०)	
	चन्द्रहंसकथा	टीकमचन्द	(हि॰) २२४	६३९

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	र स०
चन्द्रहसकथा	हर्पेकवि	(हि॰)	७१४
चन्द्रावलोक		(स∘)	
चन्द्रोन्मीलन		(स०)	२५६
चमत्कारम्रतिशयक्षेत्रपूज	т —	(हि॰)	४७ ४
चमत्कारपूजा	स्वरूपचन्द	(हि॰)	५११
		६९३	, હપ્રદ
चम्पाशतक	चम्पावाई	(हि॰)	४३७
चरचा		(সা০, हि०)	६६५
चरचा	— (हि॰) ६५२	, ७४५
चरचावर्णन		(हि॰)	१५
चरचाशतक	द्यानतराय	(हि॰)	१४
		६९४	, ७६४
चर्चासमाधान	भूधरदास	(हि॰)	१५ •
		६०६, ६४९	, ७३३
चर्चीसागर	चम्पालाल	(हि॰)	१६
चर्चासागर		(हि॰)	१६
चर्चासार	शिवजीलाल	(हि॰)	१६
चर्चासार		(f é 0)	१६
चर्चासंग्रह		(स० हि०)	१५
चर्चासंग्रह		(हि॰) १५	, ७१०
चहुगति चौपई		(हि॰)	७६२
चाग्गक्यनीति	चाग्वय	(सं०)	३२६
		७२३	, ७६८
चाराक्यनीतिभाषा		(हि०)	३२७
चाराक्यनीतिसारसंग्रह	मथुरेश भट्टाच	ार्य (स०)	३२७
चादनपुरके महावीरकी	पूजा सुरेन्द्रकीर्ि	त (स०)	ሂሄፍ
चामुण्डस्तोत्र	पृथ्वीधराचार्य	(सं∘)	३८८
चामुण्डोपनिषद्	****	(सं०)	६०५
चारभावना		(सं०)	ય્ય

चिद्र पभास (हि०) ७०७ चितामिएजयमाल (हि॰) ठक्कुरसी ৬३५ चिताम शाजयमाल त्र शयमल्ल (हि०) ६५५ वितामिशाजयमाल (हि॰) मनरथ ६४४ चिन्तामिएपार्वनाथ [मण्डलचित्र] ४२४ चित्ताम रिए राज्वनाथ जयमाल सोम (ग्रप०) ७६२ निन्तामिगापार्श्वनाथजयमालस्तवन — (स。) ३८८ चिन्तामिएपार्स्वनायपूजा (HO) शुभचन्द्र ४७४

जिनदास चेतनगीत मुनि सिंहनन्दि चेतनगीत भगवतीदास चेतनचरित्र फ़तेहमल चेतनढाल चेतननारीसज्भाय चेतावनीगीत नाथू

समयसुन्दर

चेलनासज्भाय

चैत्यपरिपाटी

६०६, ६४५, ७४५

(हि॰)

(हि॰)

(हि०)

(हि०)

(हि॰)

(हि॰)

(हि॰)

७३८

६१३

822

£ 18

७५७

४३७

४३७

६४८, ७४०

4

भाषा पृष्ठसं० | लेखक प्रन्थनाम ६६८ (स॰) सकलचन्द्र चैत्यवदना (स∘) 326 चैत्यवदना ३६२, ६५०, ७१८ (हि॰) ४२६, ४३७ चैत्यवदना (हि०) जोधराज २२४ चौग्राराधनाउद्योतककथा चौतीस ग्रतिशयभक्ति (स०) 826 (है०) ७४२ चौदश की जयमाल (हि॰) चौदहगुग्स्थानचर्चा १६ श्रव्यराज (स०) चौदहपूजा 308 चौदहमार्गगा (हि॰) १६ (हि०) चौदहविद्या तथा कारखानेजातके नाम — 320 गुणकीत्ति (हि०) 858 चौबीसग्गाधरस्तवन (हिं0) चौबीक्षजिनमातिपतास्तवन स्थानन्द्रम्रि ६१६ चौवीसजिनदजयमाल (ग्रप०) ६३७ चौबीसजिनस्तुति सोमचन्द (हि॰) ७६४ चौदीसठाएगचर्चा (सं०) १८, ७६४ चौवीसठागाचर्चा नेमिचन्द्राचाय (SIC) १६ ७२०, ६६६ चौबीसठागाचर्चा (हि०) १८ ६२७, ६७०, ६८०, ६८६, ६६४, ७८४ **चौबीसठाणाचर्चावृत्ति** (स०) १५ चौवीसतीर्थेङ्करतीर्थंपरिचय (हि०) ४३७ चौबोसतीर्थङ्करपरिचय (हि॰) ५६४ ६२१, ७००, ७५१ चौवीसतीर्थं द्वारपूजा [समुचय] द्यानतराय (हि॰) ७०५ चौबीसतीर्थं ङ्करपूजा (हि०) रामचन्द्र 333 ७१२, ७२७, ७७२ चौवीसतीर्थङ्करपूजा (हि॰) ५६२, ७२७ चौबीसतीर्थङ्करभक्ति

लेखक भाषा क्रमस० ग्रन्थनाम (हि॰) ७२र चौबोसतीर्थद्धरराम (हि॰) ४३८ चौबोसतीर्थं द्वारवर्गान (শ০) देवनन्दि 80€ चौबीसतीर्थं द्धरम्तवन चौबीसतीर्थङ्करम्तवन लूग्एकरग्एकामलीवाल (हि॰) ४३८ (हि॰) ६५० चौर्वासतीर्थङ्करस्तवन (ग्रप०) ६२५ चौबीमतीर्थं ङ्करस्तुति (हि॰) ४३८ त्रह्मदेव चौबीसतीर्थं द्वारस्तृति (हि॰) ६०१, ६६४ चौवीमतीर्थञ्जरम्त्ति (स०) ६२३ चौबोसतीर्थं द्वरां के चिह्न चौबीसतीर्थद्धरोके पञ्चकल्यागाक की तिथिया- (हि०) ५३८ (हि०) ४७७ चीबोसतीर्थं द्वारो की वदना (हि०) ५६ दौलनराम चौबीसदण्डक ४२६, ४४८, ५११, ६७२, ७६० (信。) ७३२ चौबोसदण्डकवि**चार** (हि॰) ३५६' चौबीसस्तवन ४२४ चौबीसीमहाराज (मडलचित्र) (हि॰) ६४६ भ० रत्नचन्द् चौबोसी विनती (हि॰) 300 चौबासोस्तवन जयसागर (हि॰) ४३७, ७७३ चौबीसीस्तुति (हि०) ५७ चीरासीग्रसादना (हि॰) ६८० चौरासीगीत (हि०) 370 चौरामीगोत्रोत्रत्तिवर्शन चौरासीजातिकी जयमाल विनोदीलाल (हि॰) 300 (हि॰) ३७० चौरामीज्ञातिछन्द (हि०) ७४० चौरासी जातिकी जयमाल (हि॰) **685** चौरासीजाति भेद (हि॰) चौरासोजातिवर्णन ७४७ चौरासीन्यात की जयमाल (हि॰) **686** ब्रं० जिनदाम (हि०) ७६५ चौरासीन्यातमाला

जम्बूस्वामीचरित्र

जम्बूस्वामीचरित्र

(40)

(हि॰)

पं० राजमल्ल

विजयकीत्ति

जम्बूस्वामीचरित्रभाषा पन्नालाल चौधरी (हि॰)

375

375

378

(स०)

(io)

(हि॰)

रव्रशेवरस्ररि

वृन्दावनदास

३१०

30€

३२७

छंदकोग

छंदकोश

छंदशतक

-	•		
प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	स०
जम्बूस्वामीचरित्र	नाथूराम	(हि०)	१६६
जम्बूस्वामोचरित्र		(हि॰)	367
जम्बूस्वामीचीपई	त्र० रायमञ्ज	(हि॰)	७१०
जम्बूस्वामीपूजा		(हि०)	४७७
जयकुमार सुलोचना व	त्था	(हि॰)	२२५
जयतिहुवग्एस्तोत्र	श्चभयदेवसूरि	(সা০ ,	७५४
जयपुरका प्राचीन ऐति	हासिकवर्णन —	(हि०)	०७६
जयपुरके मदिरोकी व	दना स्वरूपचन्द	हि०) ४३८,	५३८
जयमाल [मालारोहर	J] —	(শ্ব৭০)	१७३
जयमाल	रायचन्द	(हि॰)	४७७
जलगालग्रास	ज्ञानभूषग्	(हि॰)	३६२
जलयात्रा [तीर्थोदकद	तनविधान] —	(स०)	১০৫
जलयात्रा	व्र० जिनदास	(स०)	६न३
जलयात्रापूजाविधान	-	(हि॰)	४७७
जलयात्राविधान	प० श्राशावर	(स०)	४७७
जलहरतेलाविधान		(हि॰)	४७७
जलालगाहाणी की व	ार्ता —	(हि०)	४७७
जातकसार	नाथूराम	(हि॰)	६५४
जातकाभरगा [जातव	नलङ्कार] —	(हि॰)	इ 3ల
जातकवर्णन		(स∘)	१७४
जाप्य इष्ट म्रनिष्ट [म	ाला फेरनेकी विधि]	- (स०)	ሂሂሂ
जिनकुशलकी स्तुति	साधुक्रीर्त्ति	(हि॰)	७७५
जिनकुशलसूरिस्तवन		(हि॰)	६१८
जिनगुराउद्यापन	•	(हि०)	६३५
जिनगु रा पच्चीसी	सेवगराम	(हि०)	880 ,
जिनग्रुग्माला		- (हि॰)	
जिनगुरासंपत्ति [म	डलचित्र] —		५२४
जिनगुरासपत्तिकथा	****	(स०) २२५,	२४६
जिनगुग्सपत्तिकथा	त्र॰ ज्ञानसागर	(हि॰)	२२५

जिनगुर्ग्यसंपत्तिपूजा केशवसेन (स०) ५३७ जिनगुर्ग्यसंपत्तिपूजा रह्नचन्द (स०) ४७७, ५११ जिनगुर्ग्यसंपत्तिपूजा — (स०) ५३६ जिनगुर्ग्यसंपत्तिपूजा — (स०) ५३६ जिनगुर्ग्यसंपत्तिय — (स०) ५३६ जिनगुर्ग्यसंपत्तिय म० जिर्ग्यचन्द्र (स०) ५४७ जिनगुर्ग्वसंपित्तिय — (स०) ५३६ जिनग्वर्ग्विश्वतिस्तोत्र — (स०) ६६६ जिनग्वरियवदना — (स०) ६६० जिनग्वरेयवदना — (स०) ६६० जिनग्वरेयालयजयमाल रह्नभूषण् (ह०) ५६४ जिनग्वत्तेवासभवान्तररास विमत्तेन्द्रकीत्ति (ह०) ५७६ जिनदत्तम्रिर्श्वभाषा पन्नालाल नौधरी (ह०) ६९६ जिनदत्तम्रिर्श्वभाषा पन्नालाल नौधरी (ह०) ६१८ जिनदत्तम्रिर्श्वभाषा पन्नालाल नौधरी (ह०) ६१८ जिनदत्तम्रिर्श्वनि सुन्द्रगण्णि (ह०) ६१८ जिनदत्तम्रिर्श्वनि सुन्द्रगण्णि (ह०) ६१८ जिनदर्श्वनि मूधरदास (ह०) ६१८ जिनदर्शनस्तुति — (स०) ४२४ जिनपञ्चीसी नम्रन्य संग्रह — (ह०) ६५१ जिनपञ्चीसी नम्रन्य संग्रह — (ह०) ५३६ जिनप्रजापुरन्दरकथा सुशालचन्द (ह०) २४४ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्त्रमरकीत्ति (स्रप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्त्रमरकीत्ति (स०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्त्रमरकीत्ति (स्रप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्त्रमरकीत्ति (स०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्त्रमरकीत्ति (स०) २४६ जिनपूजाविधान — (ह०) ६५२	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा ष्ट	सं॰
जिनगुण्संपत्तियुजा — (सं०) १३६ जिनगुण्स्तवन — (सं०) १८५ जिनचतुर्विश्चतिस्तोत्र भ० जिग्णचन्द्र (सं०) १८५ जिनचतुर्विश्चतिस्तोत्र — (सं०) १३३ जिनचरित्र लितकीत्ति (म०) १४६ जिनचरित्र लितकीत्ति (म०) १६६ जिनचरित्रकथा — (स०) १६६ जिनचरैत्यलयजयमाल स्त्रभूषण् (हि०) १८५ जिनचौत्यालयजयमाल स्त्रभूषण् (हि०) १८५ जिनदत्तचरित्र गुण्भद्राचार्थ (स०) १६६ जिनदत्तचरित्रभाषा पन्नालाल चौधरी (हि०) १७० जिनदत्तचरित्रभाषा पन्नालाल चौधरी (हि०) ६८६ जिनदत्तचरित्रभाषा पन्नालाल चौधरी (हि०) ६८६ जिनदत्तच्रिरगीत सुन्दरगिण् (हि०) ६८६ जिनदत्तसूरिणीत सुन्दरगिण् (हि०) ६८६ जिनदर्त्तम्रिरचीत्र लयसागर उपाध्याय (हि०) ६८६ जिनदर्शन भूधरदास (हि०) ६८६ जिनदर्शनाष्ट्रक — (सं०) १६८ जिनदर्शनाष्ट्रक — (सं०) १६८ जिनपचीसी नवलराम (हि०) ६४१ ६६३, ७०४, ७२४, ७४५ जिनपचीसी व ग्रन्य संग्रह — (हि०) ४३६ जिनपुजापुरन्दरकथा सुशालचन्द (हि०) २४४ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्रमरकीत्ति (ग्रप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्रमरकीत्ति (ग्रप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्रमरकीत्ति (ग्रप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्रमरकीत्ति (ग्रप०) २४६ जिनपूजापुराल्वप्राप्तिकथा — (सं०) ४७६ जिनपूजापुरालवप्राप्तिकथा — (सं०) ४७६	जिनगुरासंपत्तिपूजा	केशवसेन	(स०)	५३७
जिनगुगुगुरतवन — (सं०) ५७५ जिनचतुर्विश्वतिस्तोत्र भ० जिगुचन्द्र (सं०) ५५७ जिनचतुर्विश्वतिस्तोत्र — (सं०) ४३३ जिनचरित्र जिनचरित्र (स०) ६६६ जिनचरित्र जिनचरित्रकथा — (स०) ६६० जिनचरित्रकथा — (स०) ३६० जिनचरित्रविद्यालयजयमाल स्त्रभूषण् (हि०) ५६४ जिनचौबीसभवान्तररास विभक्तेन्द्रकीत्ति (हि०) ५७६ जिनदत्तचरित्र गुणुभद्राचार्थ (स०) १६६ जिनदत्तचरित्र गुणुभद्राचार्थ (स०) १६६ जिनदत्तचरित्रभाषा पन्नालाल चौधरी (हि०) ६७० जिनदत्तचरित्रभाषा पन्नालाल चौधरी (हि०) ६१६ जिनदत्तम्रिगीत सुन्द्रगिण् (हि०) ६१६ जिनदत्तम्रिगीत सुन्द्रगिण् (हि०) ६१६ जिनदर्शन मूथरदास (हि०) ६०५ जिनदर्शनस्तुति — (स०) ४२४ जिनदर्शनाष्ट्रक — (स०) ३६० जिनपचीसी नचलराम (हि०) ६५१ जिनपचीसी नचलराम (हि०) ६५१ जिनपुत्रव्यत्रक्षण सुप्रालचन्द्र (हि०) २४४ जिनपुजापुरन्दरकथा सुप्रालचन्द्र (हि०) २४४ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्रमरकीत्ति (स्रप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्रमरकीत्ति (स०) १५६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्रमरकीत्ति (स०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्रमरकीत्ति (स०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्रमरकीत्ति (स०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्रमरकीत्ति (स०) २५६ जिनपूजापुरालवारिकथा — (स०) ४७६ जिनपूजापुरालवारिकथा — (स०) ४७६	जिनगुग्सपत्तिपूजा	रल्लचन्द	(स॰) ४७७	, ५११
जिनचतुर्विश्वतिस्तोत्र भ० जिग्राचन्द्र (सं०) ५५७ जिनचतुर्विश्वतिस्तोत्र — (सं०) ४३३ जिनचिरत्र जिनचिरत्र जिनचिरत्र जिनचिरत्रि (म०) ६६६ जिनचिरत्रविद्यालयजयमाल स्वभूषण्य (हि०) ५६४ जिनचौवीसभवान्तररास विमलेन्द्रकीित्त (हि०) ५७० जिनदत्तचिरत्र गुण्भद्राचार्थ (स०) १६६ जिनदत्तचिरत्र गुण्भद्राचार्थ (स०) १६६ जिनदत्तचिरत्र गुण्भद्राचार्थ (ह०) ६६६ जिनदत्तचिरत्रभापा पन्नाजाल चौधरी (ह०) ६७० जिनदत्तचिर्दि स्वपेई रत्ह कवि (ह०) ६१८ जिनदत्तस्तरि चौपई जयसागर उपाध्याय (ह०) ६१८ जिनदर्श्वति सूधरदास (ह०) ६०५ जिनदर्शनस्तुति — (सं०) ४२४ जिनदर्शनस्तुति — (सं०) ३६० जिनपचीसी नवलराम (ह०) ६५१ ६६३,७०४,७२५,७५५ जिनपचीसी व ग्रन्य संग्रह — (ह०) ५३६ जिनपुत्राचुरन्दरव्रत्वपुत्रा — (स०) ४७६ जिनपुत्राचुरन्दरविधानकथा स्त्रमरकीित्त (ग्रप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्त्रमरकीित्त (ग्रप०) २४६ जिनपूजाविधान — (ह०) ६५२	जिनगुग्संपत्तिरूजा	-	(40)	४३९
जिनचर्रिति स्ति । स्० ४३३ जिनचरित्र जिलतिकीर्त्त (म०) ६४६ जिनचरित्रकथा — (स०) ३६० जिनचेत्यवदना — (स०) ३६० जिनचेत्यवदना — (स०) ३६० जिनचेत्यालयजयमाल रत्नभूषण् (हि०) ५६४ जिनचौवीसभवान्तररास विमलेन्द्रकीर्त्त (हि०) ५७० जिनदत्तचरित्र गुण्भद्राचार्थ (स०) १६६ जिनदत्तचरित्रभापा पन्नालाल चौधरी (ह०) ६०० जिनदत्तचरित्रभापा पन्नालाल चौधरी (ह०) ६१८ जिनदत्तस्रिरिगीत सुन्दरगिण् (ह०) ६१८ जिनदत्तस्रिरिचीर्व जयसागर छपाध्याय (ह०) ६१८ जिनदर्त्तस्रिरिचीर्व जयसागर छपाध्याय (ह०) ६१८ जिनदर्शन भूधरदास (ह०) ६०५ जिनदर्शनस्रित — (स०) ४२४ जिनदर्शनस्रित — (स०) ४६० जिनपचीसी व ग्रन्य संग्रह — (ह०) ४३८ जिनपचीसी व ग्रन्य संग्रह — (ह०) ४३८ जिनपुजापुरन्दरविधानकथा स्रुगालचन्द (ह०) २४४ जिनपुजापुरन्दरविधानकथा स्रमरकीर्त्त (ग्रप०) २४६ जिनपुजापुरन्दरविधानकथा स्रमरकीर्त्त (ग्रप०) १५६	जिनगुरास्तवन		(सं०)	प्रथप्र
जिनचरित्र लितिकीत्ति (म॰) ६४५ जिनचरित्रकथा — (स॰) १६६ जिनचैत्यवदना — (स॰) ३६० जिनचैत्यवदना — (स॰) ३६० जिनचैत्यालयजयमाल रत्नभूषण् (हि॰) ५६५ जिनचौबीसभवान्तररास विमलेन्द्रकीत्ति (हि॰) ५७० जिनदत्तचरित्र गुग्गभद्राचार्थ (स॰) १६६ जिनदत्तमरित्रभापा पन्नालाल चौधरी (हि॰) ६७० जिनदत्तमरित्रभापा पन्नालाल चौधरी (हि॰) ६१८ जिनदत्तम्रिरगीत सुन्द्रगिण् (हि॰) ६१८ जिनदत्तम्रिरगीत सुन्द्रगिण् (हि॰) ६१८ जिनदर्त्तम्रिर चौपई जयसागर उपाध्याय (हि॰) ६१८ जिनदर्शन भूधरदास (हि॰) ६०५ जिनदर्शनस्तुति — (सं॰) ४२४ जिनदर्शनाष्ट्रक — (सं॰) ६६० जिनपचीसी नम्नसंग्रह — (हि॰) ५३६ जिनपचीसी वम्रन्य संग्रह — (हि॰) ५३६ जिनपुजापुरन्दरविधानकथा सुमालचन्द्र (हि॰) २४४ जिनपुजापुरन्दरविधानकथा सुमरकीत्ति (म्रप॰) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा समरकीत्ति (मुप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा समरकीत्ति (मुप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा समरकीत्त (मुप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा समरकीत्ति (मुप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा समरकीत्ति (मुप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा समरकीत्ति (मुप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा समरकीत्ति (मुप०) २४६	जिनचतुर्विशतिस्तोत्र विनचतुर्विशतिस्तोत्र	। भ० जिग्रचन्द्र	सं०)	४५७
जिनचरित्रकथा — (स०) १६६ जिनचेत्यवदना — (स०) ३६० जिनचेत्यालयजयमाल स्वभूषण् (हि०) ५६४ जिनचोबोसभवान्तररास विमलेन्द्रकीत्ति (हि०) ५७८ जिनदत्तचरित्र गुण्भद्राचार्थ (स०) १६६ जिनदत्तचरित्र गुण्भद्राचार्थ (स०) १६६ जिनदत्तचरित्रभापा पन्नालाल चौधरी (ह०) ६०८ जिनदत्तस्रिणीत सुन्दरगिण् (ह०) ६१८ जिनदत्तस्रिणीत सुन्दरगिण् (ह०) ६१८ जिनदत्तस्रि चौपई जयसागर उपाध्याय (ह०) ६१८ जिनदर्शनस्त्रित — (स०) ४२४ जिनदर्शनस्त्रित — (स०) ३६० जिनपचीसी नवलराम (ह०) ६५१ ६६३, ७०४, ७२५, ७५५ जिनप्रचास्रत्त्रल्या सुशालचन्द्र (ह०) २४४ जिनप्रजापुरन्दरविधानकथा स्त्रमरकीत्ति (स्रप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्त्रमरकीत्ति (स्रप०) २४६ जिनपूजापुरान्दरविधानकथा स्त्रमरकीत्ति (स्रप०) २४६ जिनपूजापुरान्दरविधानकथा स्त्रमरकीत्ति (स्रप०) २४६ जिनपूजापुरान्दरविधानकथा स्त्रमरकीत्ति (स्रप०) २४६ जिनपूजापुरानदरविधानकथा स्त्रमरकीत्ति (स्रप०) २४६ जिनपूजापुरानदरविधानकथा स्त्रमरकीत्ति (स्रप०) ६५२	जिनचतुर्विशतिस्तोत्र	· —	(सं०)	४३३
जिनचैत्यवदना — (स०) ३६० जिनचैत्यालयजयमाल रत्नभूषण् (हि०) ५६४ जिनचौबोसभवान्तररास विमलेन्द्रकीत्ति (हि०) ५७८ जिनदत्तचरित्र गुण्मभ्राचार्थ (स०) १६६ जिनदत्तचरित्रभापा पन्नालाल चौधरी (हि०) ६०० जिनदत्तचरित्रभापा पन्नालाल चौधरी (हि०) ६०० जिनदत्तस्रित्गीत सुन्द्रगिण् (हि०) ६१८ जिनदत्तस्रित्गीत सुन्द्रगिण् (हि०) ६१८ जिनदर्शन भूधरदास (हि०) ६०५ जिनदर्शनस्तुति — (सं०) ४२४ जिनदर्शनस्तुति — (सं०) ३६० जिनपचीसी नवलराम (हि०) ६५१ ६६३,७०४,७२५,७५५ जिनपचीसी व ग्रन्य संग्रह — (हि०) ४३८ जिनप्रचापुरन्दरत्रपूजा — (स०) ४७८ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्त्रमरकीर्त्ति (ग्रप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्त्रमरकीर्त्ति (ग्रप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्त्रमरकीर्त्ति (ग्रप०) २४६ जिनपूजापुरालप्राप्तिकथा — (सं०) ४७८ जिनपूजापुरालप्राप्तिकथा — (सं०) ४७८	जिनचरित्र	ललितकीर्त्ति	(म०)	६४५
जिनचैत्यालयजयमाल स्त्रभूषण् (हि॰) ५६४ जिनचौबीसभवान्तररास विमलेन्द्रकीत्ति (हि॰) ५७० जिनदत्तचरित्र गुग्णभद्राचार्थ (स॰) १६६ जिनदत्तचरित्रभापा पन्नालाल चौधरी (हि॰) १७० जिनदत्त चौपई रल्ह कवि (हि॰) ६८२ जिनदत्तसूरिगीत सुन्दरगिण् (हि॰) ६१८ जिनदत्तसूरिगीत सुन्दरगिण् (हि॰) ६१८ जिनदत्तसूरि चौपई जयसागर उपाध्याय (हि॰) ६१८ जिनदर्शन भूधरदास (हि॰) ६०५ जिनदर्शनाष्ट्रक — (सं॰) ३६० जिनपचीसी नवलराम (हि॰) ६५१ जिनपचीसी नवलराम (हि॰) ६५१ जिनपचीसी व अन्य संग्रह — (हि॰) ४३८ जिनप्रजापुरन्दरत्रतपूजा — (स॰) ४७८ जिनपूजापुरन्दरकथा सुशालचन्द (हि॰) २४४ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा अमरकीत्ति (अप॰) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा अमरकीत्ति (अप॰) २४६ जिनपूजापुरान्दरविधानकथा अमरकीत्ति (अप॰) २४६ जिनपूजापुरान्दरविधानकथा अमरकीत्ति (अप॰) २४६	जिनचरित्रकथा	اليامنية	(स०)	१६६
जिनचौबीसभवान्तररास विमलेन्द्रकीत्ति (हि०) ५७० जिनदत्तचरित्र गुगाभद्राचार्य (स०) १६६ जिनदत्तचरित्रभापा पन्नालाल चौधरी (हि०) ६७० जिनदत्त चौपई रत्ह किव (हि०) ६८२ जिनदत्तसूरिगीत सुन्दरगिण (हि०) ६१८ जिनदत्तसूरिगीत सुन्दरगिण (हि०) ६१८ जिनदत्तसूरि चौपई जयसागर उपाध्याय (हि०) ६१८ जिनदर्शनस्तुति — (स०) ४२४ जिनदर्शनाष्ट्रक — (स०) ३६० जिनपचीसी नवलराम (हि०) ६५१ ६६३, ७०४, ७२५, ७५५ जिनपचीसी व मन्य संग्रह — (हि०) ४३८ जिनप्रजापुरन्दरव्या सुशालचन्द (हि०) २४४ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्नमरकीत्ति (म०) २४६ जिनपूजापुरान्दरविधानकथा स्नमरकीत्ति (म०) २५६ जिनपूजापुरान्दरविधानकथा स्नमरकीत्ति (म०) २५६ जिनपूजापुरानदरविधानकथा स्नमरकीत्ति (म०) २५६ जिनपूजापुरानदरविधानकथा स्नमरकीत्ति (म०) २५६ जिनपूजापुरानदरविधानकथा स्नमरकीत्ति (म०) २५६ जिनपूजापुरानदरविधानकथा स्नमरकीत्ति (म०) २५६ जिनपूजाविधान — (हि०) ६५२	जिनचैत्यवदना		(स०)	३६०
जिनदत्तचरित्र गुगामद्राचार्य (स०) १६६ जिनदत्तचरित्रभापा पन्नालाल चौधरी (हि०) १७० जिनदत्तचरित्रभापा पन्नालाल चौधरी (हि०) ६८२ जिनदत्तस्रिगीत सुन्दरगिण (हि०) ६१८ जिनदत्तस्रिगीत सुन्दरगिण (हि०) ६१८ जिनदर्शन सृधरदास (हि०) ६०५ जिनदर्शनस्तुति — (सं०) ४२४ जिनदर्शनाष्ट्रक — (सं०) ३६० जिनपचीसी नवलराम (हि०) ६५१ ६६३,७०४,७२५,७५५ जिनपचीसी व म्रन्य संग्रह — (हि०) ४३८ जिनपचीसी व म्रन्य संग्रह — (हि०) ४३८ जिनपुजापुरन्दरत्रतपूजा — (स०) ४७८ जिनपूजापुरन्दरतिधानकथा स्त्रमरकीर्त्ति (म्रप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्त्रमरकीर्त्ति (म्रप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्त्रमरकीर्त्ति (म्रप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्त्रमरकीर्त्ति (म्रप०) २४६ जिनपूजापुरान्दरविधानकथा स्त्रमरकीर्त्ति (म्रप०) २४६ जिनपूजापुरान्दरविधानकथा स्त्रमरकीर्त्ति (म्रप०) २४६ जिनपूजापुरान्दरविधानकथा स्त्रमरकीर्त्ति (म्रप०) ६५२	जिनचैत्यालयजयमा	त रत्नभूषण	(हि॰)	५१४
जिनदत्तचरित्रभाषा पन्नालाल चौधरी (हि॰) १७० जिनदत्त चौपई रल्ह किव (हि॰) ६८२ जिनदत्तसूरिगीत सुन्द्रगिषा (हि॰) ६८८ जिनदत्तसूरि चौपई जयसागर उपाध्याय (हि॰) ६८८ जिनदर्शन सूधरदास (हि॰) ६०५ जिनदर्शनस्तुति — (सं॰) ४२४ जिनदर्शनाष्ट्रक — (सं॰) ३६० जिनपचीसी नवलराम (हि॰) ६५१ ६६३,७०४,७२५,७५५ जिनपचीसी व अन्य संग्रह — (हि॰) ४३८ जिनपचीसी व अन्य संग्रह — (हि॰) ४३८ जिनपुरन्दरत्रतपूजा — (स॰) ४७८ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्त्रमरकीित्त (अप०) २४६ जिनपूजाविधान — (हि॰) ६५२	जिनचौबोसभवान्तर	रास विमलेन्द्रकी	ति (हि॰)	५७=
जिनदत्त चौपई रल्ह किव (हि॰) ६८२ जिनदत्तसूरिगीत सुन्दरगिए (हि॰) ६८६ जिनदत्तसूरि चौपई जयसागर उपाध्याय (हि॰) ६८६ जिनदर्शन सूधरदास (हि॰) ६०५ जिनदर्शनसुति — (सं॰) ४२४ जिनदर्शनाष्ट्रक — (सं॰) ३६० जिनपचीसी नवत्तराम (हि॰) ६५१ ६६३,७०४,७२५,७५५ जिनपचीसी व ग्रन्य संग्रह — (हि॰) ४३६ जिनप्रचिसाव — (हि॰) ४३६ जिनप्रचिसाव — (हि॰) ४०६ जिनपुरन्दरत्रतपूजा — (स॰) ४७६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा स्त्रमरकीित्त (ग्रप॰) २४६ जिनपूजापिलप्राप्तिकथा — (हि॰) ६५२	जिनदत्तचरित्र	गुणभद्राचार्यं	(स०)	१६९
जिनदत्तसूरिगीत सुन्द्रगिषा (हि॰) ६१६ जिनदत्तसूरि चौपई जयसागर उपाध्याय (हि॰) ६१६ जिनदर्शन सूधरदास (हि॰) ६०५ जिनदर्शनस्तुति — (सं॰) ४२४ जिनपञ्चीसी नवत्तराम (हि॰) ६५१ ६६३, ७०४, ७२५, ७५५ जिनपञ्चीसी व ग्रन्य संग्रह — (हि॰) ४३६ जिनप्रव्यक्तिश्च — (हि॰) ४३६ जिनप्रव्यक्तिश्च — (हि॰) ४३६ जिनपुरन्दरत्तपूजा — (हि॰) ४०६ जिनपुरन्दरत्वथा खुशालचन्द (हि॰) २४४ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा ग्रमरकीित्त (ग्रप॰) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा ग्रमरकीित्त (ग्रप॰) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा ग्रमरकीित्त (ग्रप॰) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा न्यस्तिक्त (हि॰) ६५२ जिनपूजापिलप्राप्तिकथा — (हि॰) ६५२	जिनदत्तनरित्रभापा	पन्नालाल चौधरी	ो (हि॰)	१७०
जिनदत्तसूरि चौपई जयसागर उपाध्याय (हि०) ६१८ जिनदर्शन भूधरदास (हि०) ६०५ जिनदर्शनस्तुति — (सं०) ४२४ जिनदर्शनाष्ट्रक — (सं०) ३६० जिनपञ्चीसी नवत्तराम (हि०) ६५१ ६६३, ७०४, ७२५, ७५५ जिनपञ्चीसी व अन्य संग्रह — (हि०) ४३८ जिनपञ्चीसी व अन्य संग्रह — (हि०) ४३८ जिनप्रचित्रका — (हि०) ४०६ जिनपुरन्दरत्रतपूजा — (स०) ४७८ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा खुशालचन्द (हि०) २४४ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा अमरकीित्त (अप०) २४६ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा अमरकीित्त (अप०) २४६ जिनपूजापुरालपात्रस्था — (सं०) ४७८ जिनपूजापुरालपात्रस्था — (सं०) ४७८ जिनपूजापिकप्राप्तिकथा — (हि०) ६५२	जिनदत्त चीपई	रल्ह कवि	(हि०)	६८२
जिनदर्शन भूधरदास (हि॰) ६०५ जिनदर्शनस्तुति — (सं॰) ४२४ जिनदर्शनाष्ट्रक — (सं॰) ३६० जिनपञ्चीसी नवत्तराम (हि॰) ६५१ ६६३, ७०४, ७२५, ७५५ जिनपञ्चीसी व अन्य संग्रह — (हि॰) ४३६ जिनप्रव्यासी व अन्य संग्रह — (हि॰) ४३६ जिनप्रव्यासी व अन्य संग्रह — (हि॰) ४०६ जिनपुरत्दरत्रतपूजा — (स॰) ४७६ जिनपूजापुरत्दरविधानकथा अमरकीित्त (अप॰) २४६ जिनपूजापुरत्दरविधानकथा अमरकीित्त (अप॰) २४६ जिनपूजापुराव्यासिकथा — (सं॰) ४७६ जिनपूजापिकप्राप्तिकथा — (हि॰) ६५२	जिनदत्तसूरिगीत	सुन्द्रगि्ए	(हि॰)	६१८
जिनदर्शनस्तुति — (सं०) ४२४ जिनदर्शनाष्ट्रक — (सं०) ३६० जिनपञ्चीसी नवत्तराम (हि०) ६५१ ६६३, ७०४, ७२५, ७५५ जिनपञ्चीसी व अन्य संग्रह — (हि०) ४३६ जिनप्रविश्वतिका — (हि०) ७०६ जिनपुरन्दरत्नतपूजा — (स०) ४७६ जिनपूजापुरन्दरकथा खुशालचन्द् (हि०) २४४ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा अमरकीर्त्त (अप०) २५६ जिनपूजाफलप्राप्तिकथा — (सं०) ४७६ जिनपूजाफलप्राप्तिकथा — (हि०) ६५२	जिनदत्तसूरि चौपई	जयसागर उपाध्य	गय (हि॰)	६१८
जिनदर्शनाष्ट्रक — (सं०) ३६० जिनपञ्चीसी नवत्तराम (हि०) ६५१ ६६३, ७०४, ७२५, ७५५ ७६३, ७०४, ७२५, ७५५ जिनपञ्चीसी व अन्य संग्रह — (हि०) ४३६ जिनपुरन्दरक्रवा — (स०) ४७६ जिनपूजापुरन्दरक्रया खुशालचन्द (हि०) २४४ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा अमरकीर्ति (अप०) २५६ जिनपूजाफलप्राप्तिकथा — (सं०) ४७६ जिनपूजाफलप्राप्तिकथा — (हि०) ६५२	जिनदर्शन	भूधरदास	(हि॰)	६०५
जिनपञ्चीसी नवत्तराम (हि॰) ६५१ ६६३, ७०४, ७२४, ७५५ जिनपञ्चीसी व अन्य संग्रह — (हि॰) ४३६ जिनपिंगलछदकोश — (हि॰) ७०६ जिनपुरन्दरत्रतपूजा — (स॰) ४७६ जिनपूजापुरन्दरकथा खुशालचन्द (हि॰) २४४ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा अमरकीर्ति (अप॰) २४६ जिनपूजाफलप्राप्तिकथा — (सं॰) ४७६ जिनपूजाफलप्राप्तिकथा — (हि॰) ६५२	जिनदर्शनस्तुति	-	(सं o)	४२४
६६३, ७०४, ७२५, ७५५ जिनपचीसी व अन्य संग्रह — (हि०) ४३८ जिनपिंगलछदकोश — (हि०) ७०६ जिनपुरन्दरत्रतपूजा — (स०) ४७८ जिनपूजापुरन्दरकथा खुशालचन्द् (हि०) २४४ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा अमरकीर्त्त (अप०) २४६ जिनपूजाफलप्राप्तिकथा — (सं०) ४७८ जिनपूजाविधान — (हि०) ६५२	जिनदर्शनाष्ट्रक	water-	(सं०)	०३६०
जिनपचीसी व अन्य संग्रह — (हि॰) ४३६ जिनपिंगलछदकोश — (हि॰) ७०६ जिनपुरन्दरत्नतपूजा — (स॰) ४७६ जिनपूजापुरन्दरकथा खुशालचन्द् (हि॰) २४४ जिनपूजापुरन्दरिवधानकथा अमरकीर्त्त (अप॰) २४६ जिनपूजाफलप्राप्तिकथा — (सं॰) ४७६ जिनपूजाविधान — (हि॰) ६५२	जिनपचीसी	नवत्तराम	(हि॰)	६५१
जिनिपंगलछदकोश — (हि॰) ७०६ जिनपुरन्दरत्नतपूजा — (स॰) ४७६ जिनपूजापुरन्दरकथा खुशालचन्द (हि॰) २४४ जिनपूजापुरन्दरिवधानकथा अमरकीिंत (ग्रप॰) २४६ जिनपूजाफलप्राप्तिकथा — (सं॰) ४७६ जिनपूजाविधान — (हि॰) ६५२		₹ € ₹,	७०४, ७२४,	७५५
जिनपुरन्दरव्रतपूजा — (स॰) ४७६ जिनपूजापुरन्दरकथा खुशालचन्द् (हि॰) २४४ जिनपूजापुरन्दरिवधानकथा अमरकीर्त्त (ग्रप॰) २४६ जिनपूजाफलप्राप्तिकथा — (सं॰) ४७६ जिनपूजाविधान — (हि॰) ६५२	जिनपचीसी व म्रन्य	संग्रह —	(हि॰)	४३८
जिनपूजापुरन्दरकथा खुशालचन्द (हि०) २४४ जिनपूजापुरन्दरविधानकथा अमरकीिंत (अप०) २४६ जिनपूजाफलप्राप्तिकथा — (सं०) ४७६ जिनपूजाविधान — (हि०) ६५२	जिनपिंगलछदकोश		(हि॰)	७०६
जिनपूजापुरन्दरिवधानकथा स्त्रमरकीर्त्ति (ग्रप०) २४६ जिनपूजाफलप्राप्तिकथा — (सं०) ४७८ जिनपूजाविधान — (हि०) ६५२	जिनपुरन्दरव्रतपूजा	*****	(स०)	४७ 5
जिनपूजाफलप्राप्तिकथा — (सं०) ४७८ जिनपूजाविधान — (हि०) ६५२	.			२४४
जिनपूजाविधान — (हि॰) ६५२	जिनपूजापुरन्दरविधा	नकथा अमरकीर्नि	त (अप०)	२४६
	i .	या	(सं∘)	४ ७५
जिनपञ्जरस्तोत्र कमलप्रभाचार्य (स॰) ३६०, ४३२	1 _	-		
	जिनपञ्जरस्तोत्र	कमलप्रभाचार्य	(स०) ३६०,	४३२

भाषा पृष्ठ स॰ लेखक **ग्रन्थनाम** (सं∘) 380 जिनवस्तरस्तीत्र ४२४, ४३१, ४३३, ६४७, ६४८, ६६३ (हि॰) ५११ स्बद्धपचन्द जिनवञ्जरम्तोत्रभाषा ह्यंकी ति (हि॰) ४३८, ६२१ जिनभक्तिपद (म०) जिनमुखा। लोकनकथा २४६ जिनयज्ञकल्प प्रितिष्ठासारी प० श्राशाधर (सं०) ४७5 ६०८, ६३६, ६६७, ७६१ (स०) ४७६, ६४५ जिनयज्ञविधान संवगराम जिनयशमञ्जल (हि॰) ४४७ (हि०) जिन राजमहिमास्तोत्र ५७६ जिनरात्रिविधानकथा (स०) २४२ जिनरात्रिविधानकथा नरसेन (ग्रप०) ६२८ जिनरात्रिविधानकथा - (भ्रप०) २४६, ६३१ जिमरात्रिव्रतकथा (हि०) त्र॰ ज्ञानसागर २२० जिनलाडु (हि॰) व्र० रायमञ्ज ७३८ जिनवरकी विनती देवापांडे (हि०) ६५४ जिनवर दर्शन पद्मनिद (সা০) 380 जिनवरव्रतजयमाल व्र गुलाल (हिं) 380 जिनवरस्तुति (हि॰) 939 जिनवरस्तोत्र (स०) ३६०, ५७८ जिनवासीस्तवन (हि॰) जगतराम 380 जिनशतकटीका नरसिंह (स०) 938 जिनशतकटीका शबुसाधु (स०) 380 जिनशतकालङ्कार समन्तभद्र (स०) 935 जिनशासन मक्ति (গাং) ६३८ जिनसतसई (हि॰) 90€ जिनसहस्रनाम पं० आशाधर (स०) \$3₽ ४४०, ४६६, ६०४, ६०७, ६३६, ६४६, ६४७, ६४५,

लेखक भाषा प्रष्ठ सं० प्रभ्यताम ६४=, ६=३, ६=६, ६६२, ७१२, ७१४, ७२०, ७४२, 980 I जिनस्नाचार्थ (सं v) ₹8₹ जिनसहस्रनाम ४२४, ५७३, ७०७, ७४७ सिद्धसेन विवाकर जिनसहस्रनाम (स∘) ३६३ जिनमहस्रनाम [लघु] (स०) इ८३ वनारसीदास (हि॰) १६०, ७४६ जिनसहस्रनामभापा जिनसहस्रनामभाषा (हि॰) नाध्राम ३६३ श्रमरकीित जिनसहम्रतामटीका (सं०) ₹3₹ जिनसहस्र**नामटीका** (स ०) श्रतसागर 787 जिनसहस्रनामटोका (सं०) **38 3** धर्मभूपण जिनसहस्रन।मपूजा (सं∘) ¥50 जिनसहस्रनामपूजा (स०) 480 चैनसुख लुहाड़िया जिनसहस्रनामपूजा (हि॰) YSO जिनसहस्रनामपूजा स्वरूपचन्द् विलाला (हि॰) जिनस्नपन [ग्रभिपेकपाठ] - (स०) ४७६, ५७४ (हि॰) जिनसहस्रनामपूजा 858 कनककीर्त्त (हि॰) जिनस्तवन 308 दौलतराम (हि॰) ७०७ जिनस्तवन जिनस्तवनद्वात्रिशिका (स०) 138 जिनस्तुति शोभनमुनि (सं०) 388 जोधराज गोदीका जिनस्तुति (हि॰) 308 (हo) 903 जिनस्तुति रूपचन्ट ७६३ (हि॰) जिनसहिता **सुमतिकी** चि (हि॰) ६१८ जिनस्तुति ६२७ (हि॰) वीरचन्द्र जिनानन्तर 853 (हि॰) जिनाभिपेक निर्णय जिनेन्द्रपुरास् भ० जिनेन्द्रभूपण (स०) १४६ ४२५ (辰。) जिनेन्द्रभक्तिस्तोत्र

प्रन्थनाम	- त्तेखक	भाषा पृष्ठ	सं०	प्रन्थनाम	त्तेखक	भाषा पृ	ष्ठ सं०
जिनेन्द्रस्तोत्र		(स०)	६०६	४२६, ६५२, ६७०			
जिनोपदेशोपकारस	मरस्तोत्र —	(सं०)	४१३			७१६, ७३२,	_
जिनोयकारस्मरण		(A.o.)	४२६	जैनसदाचार मार्तण्डन	नामक पत्रका प्रत्यु	त्तर वा० दुरू (हि०)	शेचन्द् २०
जिनोपकारस्मरए।	स्तोत्रभाषा —	(हि॰)	३९३	जैनागारप्रक्रिया	बा० दुलीचन्द	(हि॰)	૪૭
जीवकायासन्भाय	भुवनकीर्त्ति	(हि॰)	६१६	जैनेन्द्रमहावृत्ति	श्रमयनन्दि	(सं०)	२६०
जीवकायासज्काय	राजसमुद्र	(寝0)	६१६	जैनेन्द्रव्याकरण	देवनन्दि	(सं ०)	२५६
जीवजीतसंहार	जैतराम	(हि॰)	२२५	जोगीरासो	पांडे जिनदास	(हि॰)	१०५
जीवन्धरचरित्र	भ० शुभचन्द्र	(स०)	१७०	६०१, ६२२, ६३६		-	७६१
जीवन्घरचरित्र	नथमल विलाला	(हि॰)	१७०	जोधराजपचीसी		(हि॰)	७६०
जीवन्धरचरित्र	पन्नालाल चौधरी	(हि॰)	१७१	ज्येष्ठजिनवर [मंडलि	वेत्री —	•	५२५
जीवन्धरचरित्र	-	(हि॰)	१७१	ज्येष्ठजिनवरज्यापनपू		(सं०)	४०६
जीवविचार	मानदेवसूरि	(সা৹)	६१६	ज्येष्ठजिनवरकथा		(सं०)	२२५
जीवविचार	****	(०ाप्र)	७३२	ज्येष्ठजिनवरकथा	जसकीत्ति	(हि०)	२२५
जीव वेलडी	देवीदास	(हि॰)	७५७	ज्येष्ठजिनवरपूजा	श्रुतसागर	(सं०)	७६५
जीवसमास		(গাং)	७६५	 ज्येष्ठजिनवरपूजा	धुरेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	५ १६
जीवसमासटिप्पए	_	(গাম)	38	ज्येष्ठजिनवरपूजा		(स∘)	४५१
जीवसमासभाषा	Minus	(प्रा० हि॰)	38	ज्येष्ठजिनवरपूजा	-	(हि॰)	६०७
जीवस्वरूपवर्णन	-	(स०)	३१	ज्येष्ठजिनवरलाहान	त्र॰ जिनदास	(स०)	७६५
जीवाजीवविचार		(सं०)	१६	ज्येष्ठजिनवरत्रतकथा	खुशालचन्द	(हि॰) २४४	, ७३१
जीवाजीवविचार		(সা৹)	१६	ज्येष्ठजिनवरव्रतपूजा	-	(सं०)	४५१
जैनगायत्रीमन्त्रवि	धान —	(सं०)	३४८	ज्येष्ठपूर्शिमाकथा		(हि॰)	६८२
जैनयचीसी	नवलराम	(हि०)	७७३	ज्योतिपचर्चा		(सं०)	७३४
		६७५,	४३३,	च्योति प		(स∘)	७१४
जैनवदी मूडबदीव	ने यात्रा सुरेन्द्रकीनि	त (हि॰)	३७०	ज्योतिपपटलमाला	श्रीपति	(सं०)	६७२
जैनबद्री देशकी प	त्रिका मजलसराय	(हि०) ७०३,	, ७१८	ज्योतिपशास्त्र		(सं०)	६९५
जैनमतका संकल्प	•	(हि०)	५६२	ज्योतिषसार	कुपाराम	(हि०)	५६८
जैनरक्षास्तोत्र		(सं०)	६४७	ज्वरचिकित्सा	مجلميت	(सं०)	२्६८
जैनविवाहपद्धति	~-	(सं०)	४५१	ज्वरतिमिरभास्कर	चामुख्डराय	(सं०)	२६५
जैनशतक	भूघरदास	(हि॰)	३२७	ज्वरलक्षरा		(हि०)	२६५



ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा प्	ात्र स ं ०	/ प्रन्थनाम	लंबक	भाषा	रव सं
त्र-पतान ज्वालामानिनीस्तोत्र	4.	(स०)		बानाकु थ		(मं०)	
		• •		नारा जुवपाठ	भद्रबाह्	•	
	१, ४६१, ६०८, ६०			ज्ञाना हुदास्ती भ		(40)	
ज्ञानचिन्तामिए	मनोहरदास	•	ሂፍ	ज्ञानार्गत	_	(40)	
_		13.8°		1	-उन वन्त्राताव] श्रुतमागर		
ज्ञानदर्पण	साह दीपचन्द			1	•	-	
ज्ञानदीपक	(f	हे०) १३०		ज्ञानार्शयटीका		(ন০)	
ञानदीपकवृत्ति	****	(हि॰)	१३१	I .	जयचद् छात्रहा	(હિં°)	
ज्ञानपञ्चीसी	वनारसीदार	हि०)	६१४	ł .	लंदिव विमन्तगणि	•	
६३४,	, ६५०, ६८५, ६८	દ, હ૮₹,	४७७	ज्ञानी प्रदेश के प्रय	desiles	(हिं०)	६६२
ज्ञानपद्यीसीस्तवन	समयसुन्दर	(हि॰)	८३८	ज्ञानी प्रदेशप्रसीसी		(fg.)	६६२
ज्ञानपदवी	मनोहरदास	(हिं०)	७१=		भ		
ज्ञानपञ्चविद्यतिका यत	ोद्यापन सुरेन्द्रकी	त्ति (म॰) ४=१	भावदी श्री मन्दिरत्रं	i afi	(ট্রি৽)	/1-
			372	भाडा देनेका मन्त्र		-	
ज्ञानपञ्चमोवृहद्स्तवन	समयसुन्दर	(हि॰)	૩ ૯			(ह•) (€·)	१७१
ज्ञानिपण्डको निशतिप	द्वडिका —	(ग्रप०)	Ęąy	मामरियानु चोढान्य		(度o)	४३८
ज्ञानपूजा		(祖4)	٩X=	भूतना	रागाराम	(हि॰)	exe
ज्ञानपैडो	मनोहरदास	(हि॰)	७५७	र-	-ठ-इ-ढ-ण		
ज्ञानवावनो	मतिशेखर	(हि॰)	७७२	टडागागीत	यूचराज	(हি॰)	७५०
ज्ञानभक्ति	-	(स०)	६२७	ठाएाग म्त	~		२०
ज्ञानसूर्योदयनाटक	वादिचन्द्रसृरि	(स०)	३१६	डोकरो ग्रर राजा भी	जराज की वार्ती	(हि॰)	ĘĘŁ
ज्ञानसूर्यादयनाटकभाप	। पारमदास निगो	त्या (हि॰)) ३१७	ढाडसी गाथा		(সা৽)	
				डाडसी गाया			
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाप		(हि॰)	३१७	ढालगर्ग		(हि∘)	
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाप	ा भागचद्	(हि॰)	३१७	ढाल मञ्जलमकी		(हिंa)	
ज्ञानस्वरोदय	चरणदास		७५६	डोला माहरागि की व	ात — (हि	•	
ज्ञानस्वरोदय		(हि०)	७५२	ढोला मारुगी की व	•	(हि॰)	
ज्ञानानन्द	रायमञ्ज		ሂፍ		ाई छुशन नाभ (हि	-	
ज्ञानवावनी	बनारसीदास			एवकार पंचविश्वति		(सं॰)	X \$0
ज्ञानसागर	मुनि पद्मसिंह	• • •	१०५		4	• •	₹¥ 5
	4 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 -	\" /	1 - 3	Z.11.14.7.47.3	0.000	(स∘)	7."

	ग्मोकारपच्चीसी	ऋषि ठाकुरसी	(हिं०)	४३६	तत्वाववाव
	गामोकार पाथडीजय	माल —	(ग्रप०)	६३७	तत्वार्थवोधिनीटीका — (स०)
	ग्मोकारपैतीसी	कनककीर्त्ति	(सं०)	५१७,	तत्वार्थरत्नप्रभाकर प्रभाचन्द् (सं०)
			४५२	, ६७६	तत्वार्थराजवातिक भट्टाकलकदेव (स०)
	ग् मोकारपैंतीसी	-	(সা৹)	३४५	तत्वार्थराजवातिकभाषा — (हि॰)
	मोकारपैतीसीपूज	ग श्रज्ञयराम	(स०)	४८२,	तत्वार्थवृत्ति पं० योगदेव (सं०)
			५१७	, ५३९	तत्वार्थसार ऋमृतचन्दाचार्य (सं॰)
	ग्मोकारपं चासिका	पूजा	(स ०)	५४०	तत्वार्थसारदीपक भ० सकलकीर्त्ति (स०)
	गामोकारमत्र कथा		(हिं०)	२२६	तत्वार्थसारदीपकभाषा पन्नालाल चौधरी (हि॰)
	एमोकारस्तवन		(हि॰)	४३६	तत्वार्थ सूत्र उमास्वामि (सं०)
	रामोकारादि पाठ		(গাৎ)	३६४	४२४, ४२७, ५३७, ५६१, ५६९ ५७३, ५९४
	गागुपिण्ड	Person	(ग्रप <i>०</i>)	६४२	५६६, ६०३ ६०५, ६३३, ६३७, ६४०, ६४४,
	गोमिगाहचारिउ	लदमण्देव	(ग्र प०)	१७१	६४७, ६४८, ६४० ६५२, ६४६, ६७३, ६७४
	गोमिगाहचरिउ	दामोदर	(ग्रप०)	१७१	६८६, ६९४, ६२६, ७००, ७०३, ७०४, ७०५
		'त			७१०, ७२७, ७३१, ७४१, ७७६, ७८७, ७८८
		VI			तत्वार्थसूत्रटीका श्रुतसागर (स०
	तकराक्षरीस्तोत्र	-	(सं०)	४३६	तत्वार्थसूत्रदीका आ० कनककीर्ति (हि०) ः
	तत्वकौस्तुभ	पत्रालान सघी	(हिं०)	१०	तत्वार्यसूत्रदीका छोटीलाल जैसवाल (हि
	तत्वज्ञानतर गिर्णी	म० ज्ञानभूपण	(स०)	ধ্ৰ	तत्वार्थसूत्रटीका पं० राजमञ्ज (हि
	तत्वदीपिका	-	(हि॰)	२०	तत्वार्थसूत्रदोका जयचद छावडा (हि
	तत्वधर्मामृत	-	(स∘)	३२८	तत्वार्थसूत्रटीका पांडे जयवंत (हि
	तत्वबोध		(स∘)	१०५	तत्वार्थसूत्रदीका — (हि
	तत्ववर्णन	शुभचन्द्र	(स०)	२०२	तत्वार्थदशाध्यायपूजा दयाचंद (सं
	तत्वसार	देवसेन	(प्रा०) २०,	५७५	तत्वार्थसूत्र भाषा शिखरचन्द् (
		६३७,	७३७, ७४४,	, ৬४७	तत्वार्थसूत्र भाषा सदासुख कासलीवाल (हि
	तत्वसारभाषा	द्यानतराय	(हि॰)	७४७	तत्वार्थसूत्र भाषा — (f
	तत्वसारभापा	पन्नालाल चौधरी	(हि॰)	२१	तत्वार्थसूत्र भाषा — (
ř	तत्वार्थदर्पग		(सं∘)	२१	तत्वार्थसूत्र वृत्ति सिद्धसेन गणि (
	तत्वार्थवोध	~	(सं०)	२१	तत्वार्थसूत्र वृत्ति —

६१७

४३२

६३६

३७०

¥30

३७०

७२०

७४५

¥5₹

¥30

४५३

४५३

¥3\$

७३२

358

४६३

444

848

YFY

858

444

**5

७३३

634

308

(सं०)

भाषा पृष्ठ सं० लेखक **ग्रन्थनाम** (सं०) २६० तद्वित प्रक्रिया (हि॰) ४१६ खुशालचढ तपलक्षरा कथा (हि॰) 835 तमाखु की जयमाल श्राणंदम्नि (सं०) १३१ तर्कदीपिका तर्कप्रकरण (स०) १३१ तर्कप्रमाण (सं०) १३२ तर्कभाषा केशव मिश्र (स ०) १३२ तर्कभाषा प्रकाशिका (स०) १३२ वालचन्द्र (सं०) तर्करहस्य दोपिका गुणरत्न सुरि १३२ (सं०) तर्कसंग्रह श्रनभट्ट १३२ तर्कसं ग्रहटीका (स∘) १३३ तारातंवील की कथा (हि०) ७४२ तार्किकशिरोमिश सं०) रघुनाथ १३३ तोनचीवीसी (हि॰) ६९३ तीनचीवोसीनाम (हि॰) प्रहइ ६७०, ६६३, ७०३, ७५८ तीनचौवीसीपुजा (स०) ४५२ तीनचीवीसीपजा नेमीचन्द (हि०) ४५२ तीनचोवीसीपुजा (हि॰) ४५२ तोनचौबोसीरास (हि॰) ६५१ तीनचौबीसी समुच्चय प्जा (सं०) 853 तीन मिया की जकडी (हि॰) ६२३ धनराज तीनलोककथन (हि॰) 388 (हि॰) तीनलोक चार्ट 388 तीनलोकपूजा [त्रिलोक मार पूजा, त्रिलोक पूजा] नेमीचन्द (हि॰) ४८३ तीनलोकपूजा टेकचन्द (हि॰) ४५३ तीनलोकवर्णन --- (हि॰ ग॰) 388 तीर्थमालास्तवन (हि०) तेजराम ६१७

लेखक भाषा पृष्ठ स० **ग्रन्थनाम** (राज०) तीर्थमालाम्तवन समयमृन्द्र तीर्थावलीस्तोत्र (**सo**) तीर्थोदकविधान (HO) हर्पकीत्ति (हि॰) ६२२, ६४४ तीर्थंकरजकडी तीर्यंकरपरिचय (हि०) ६५०, ६५२ तीर्थंकरस्तोत्र (सं०) तीर्यंकरो का ग्रतराल (हि^) तीर्यंकरों के ६२ स्थान (हि॰) (हि॰) ६५१, ७५८ तीसचौत्रीसी तीसचीवीसीचीपई (हिं०) श्याम तीसचीबीसीनाम (हि॰) तीसचीवीसीपुजा (सं ०) शुभचन्द्र तीसचीवसीपूजा (हि०) वृन्दावन तीसचीवीसीसमुच्चयपूजा (हि०) तीसचीबासीस्तवन (सं०) तेईसवोलविवरण (हि॰) तेरहकाठिया (हि॰) बनारसीदास ६०४, ७५० तेरहद्वीपपूजा (स०) शभचन्द्र तेरहद्वीपपूजा भ० विश्वभूपण (स∘) तेरहद्वीपपूजा (स०) तेरहद्वीपपूजा लालजीत (हि॰) तेरहद्वीपपूजा (हि॰) (स∘) तेरहद्वीपपूजाविधान तेरहपथपच्चीसी (हि॰) माणिकचन्द तेरहपन्थवीसपन्थभेद (हि०) तंत्रसार (हि॰)

त्रयोविशतिका

त्रन्थनाम	लेखक	भाषा	વૃષ્ટ સં ં	प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृ	ष्ठ संव
त्रिकाण्डशेषसूची [ग्रम	रकोशी अमरसिंह	(म०)	२७४	त्रिलोकवर्णन	******	(हि॰)	६६०
त्रिकाण्डशेघामिधान		(स०)	२७४			900	300
त्रिकालचतुर्दशीपूजा	-	(सं०)		त्रिलोकसार	नेमिचन्द्राचार्य	(शर)	३२०
त्रिकालचौबीसी		(हि॰)	६५१	त्रिलोकसारकथा		(हि॰)	२२७
त्रिकालचौबीसीकथा [रोटतीज] ऋभ्रदेव	(सं०) २२	६, २४२	त्रिलोकसारचौपई	स्वरुपचद	(हि॰)	५११
विकालचौ वीसीकथा	_			त्रिलोकसारपूजा	श्चभयनन्दि	(सं०)	とこ れ
त्रिकालचौबीसीनाम विकालचौबीसीनाम		(स०)		त्रिलोकसारपूजा		(सं०) ४८४,	५१३
त्रिकाल चौबीसीपूजा -		(सं०)	४५४,	त्रिलोकसारमाषा	टोडरमल	(हि॰)	३२१
त्रिकालचौबीसीयूजा त्रिकालचौबीसीयूजा	न्निभुवनचंद्र (र	(() 'ay (oˈi	•	त्रिलोकसारभाषा		(हि॰)	३२१
त्रिकालचौबीसीपू जा त्रिकालचौबीसीपूजा	— ((সা৹)		त्रिलोकसारभाषा	-	(हि॰)	३२१
। त्रकालचावासापू गा त्रिकालदेवबंदना	Section Sectio	(प्राप) (हि०)		त्रिलोकसारवृत्ति म	।।धवचन्द्र त्रैविद	गदेव (सं०')	३२२
_		(१६०) (सं०)		त्रिलोकसारवृत्ति		(₩0)	३२२
त्रिकालपूजा त्रिचतुर्विशतिविधान	arushees	(त <i>०</i>) स०)		त्रिलोकसारसदृष्टि	नेमिचन्द्राचार्य	(গাৎ)	३२२
त्रिपंचाशतक्रिया		/ (हि०)		त्रिलोकस्तोत्र	भ० महीचन्द	(हि॰)	६५१
त्रिपचाशतवतोद्यापन		(सं०)		त्रिलोकस्थजिनालय	रूजा —	(हि॰)	४५५
त्रिभुवन की विनती	गगादास	(हि॰)		त्रिलोकस्वरूप व्याख	या उद्यलाल गर	ावाल (हि॰)	३२२
त्रिभुवन की विनती		(हि॰)		त्रिवर्णाचार	भ० सोमसेन	(vi)	ሂና
_	नेमिचन्द्राचार्य	(সা৹)		त्रिशती	शाङ्गधर	(स०)	२६५
त्रिभगीसारटीका	विवेकानन्दि	(सं०)		त्रिषष्ठिशलाकाछद	श्रीपात्त	(स०)	६७०
त्रिलोकसेत्रपूजा		(हि०)		त्रिषष्ठशलाका पुरुषव	र्णान —	· (年。)	१४६
" त्रिलोकचित्र		(हिं•)		त्रिषष्ठिस्मृति	श्राशाधर	(सं०)	१४६
त्रिलोकतिलकस्तोत्र	भ० महीचन्द्र	(सं०)		त्रिशतजियाचऊवीसी	महर्णासह	(ग्रप०)	६८६
त्रिलोकदीपक	वासदेव	(₹0)	३२०	त्रेपनक्रिया		(स०) ५६,	७६२
त्रिलोकदर्पणकथा	खड्गसेन	(हि॰)	६८६,	त्रेपनक्रिया	त्र० गुताल	(हि॰)	७४०
ŧ			०, ३२१	त्रेपनक्रियाकोश	दौलतराम	•	પ્રદ
त्रिलोकवर्णन		(स०)	३२२	त्रेपनक्रियापूजा		(सं०)	४५५
त्रिलोकवर्णन		(সা৽)	३२ २	त्रेपनिक्रया [मण्डल	चित्र] —		५२४
त्रिलोकवर्शन [चित्र] –		३२३	त्रेपनक्रियावतपूजा	/ -	(स∘)	४५५
त्रिलोकवर्णन	-	(₫∘)	३२३	त्रेपनक्रियात्रतोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०) ६३८,	७६६

		•				_	
दश्द]					[प्रन्थानुक्रमरि	गुका
प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	सं०	प्रन्थनाम	लेखक	भाषा ष्ट	स ॰
त्रप्यापा त्रेपनक्रियाव्रतोद्योपन		(सं०)	५४०	दर्शनसार	देवसेन	(গা॰)	१३३
त्रेपठशलाकापुरुपचित्र -		(प्रा०ः	१७१	दर्शनसारभाषा	नथमल	(हि॰)	१३३
त्रेषठशलाकापुरुषवर्णन		(हि॰)	७०२	दर्शनसारभाषा	शिवजीलाल	(हि०)	१३३
त्रैलोक्य तीज कथा त्र	० ज्ञानसागर	(हि॰)	२२०	दर्शनसारभाषा		(हि॰)	१३३
त्रैलोक्य मोहनकवच	रायमञ्ज	(स०)	६६०	दर्शनस्तुति		(स०) ६५८,	६७०
त्रैलो क्यसारटीका	सहस्रकीत्ति	(গাং)	३२३	दर्शनस्तुति		(हि॰)	६५२
त्रैलीक्यसारपूजा	सुमतिसागर	(स०)	४५५	दर्शनस्तोत्र	सक्लचन्द्र	(सं०)	ሂওሄ
त्रैलोक्यसं।रमहापूजा	-	(स०)	४८६	दर्शनस्तोत्र	-	(सं०)	३५१
	थ			दर्शनस्तोत्र	पद्मनिद्	(সা॰)	४०६
_	4	6)	14 T II	दर्शनस्तोत्र	-	(সা৹)	१७४
यूलभद्रजीकारासो		्हि∘) (С.)	७२५	दर्शनाष्ट्रक		(हि॰)	६४४
यंभगापार्श्वनायस्तवन	मुनि अभयदेव	(हि॰)	६१६	दलालीनीसज्भाय		(हि॰)	३६४
यभग्गपार्श्वनाथस्तवन		(राज)	६१६	दश प्रकारके ब्राह्मण	_	(सं०)	१७४
	द			दशप्रकार विप्र		(सं∘)	५७६
	क्रास्त्र १५००	(सं०)	६६०	दशवोल		(हि॰)	३ृ२८
दक्षगामूर्तिस्तोत्र	शङ्कराचार्ये	(#°)	५६	दशवोलपचीसी	द्यानतराय	(हि॰)	४४५
दण्डकपाठ	_	(o F)	२२७	दशभक्ति	-	(हि॰)	4 E
दत्तात्रय		-		दश्चमूर्लोकी कथा	-	(हि॰)	२२७
दर्शनकथा	भारामझ	(हि॰)	२२७	दशलक्षराउद्यापन पाठ		(स०)	४४७
दर्शनकथाकोश		(Ħ o)	२२७	दशलक्षराकथा	लं।कसेन	(स०)	२२७
दर्शनपचीसी		(हि॰) (न)	७१६	दशलक्षरणकथा		(स०)	२२७
दर्शनपाठ		(स०)	५१६		मुनि गुणभद्र		६३१
६००, ६०४, ६५०		_					288
दर्शनपाठ	बुधजन	(हि॰)	358	दगलक्षणकथा	खुशालचन्द सोमसेन		¥30
दर्शनपाठ		(हि॰)	६००	दशलक्षरा जयमाल		(स∘)	
		६९२, ६९	३, ७०५	दशलक्षराजयमाल	प० भावशर्मा		
दर्शनपाठस्तुति		'(हि॰)	3 <i>5</i> 8	दशलक्षराजयमाल		(সা৹)	¥50
र्दर्शनपाहुडभाषा		(हि॰)	१०८	दशलक्षराजयमाल		(प्रा० स०)	¥50
दर्शनप्रतिमास्वरूप		(हि॰)	ત્રદ	दशलक्षराजयमाल	पं० रइधू	(अप०)	२४३
दर्शनभक्ति	_	(स०)	६२७	४ ५ ६	, ५१८, ५३७,	५७२, ६३७,	६७६

			[नरध	
प्रन्थानुक्रमणिका]		लेखक	भाषा पृष्ठ सं	0
प्रन्थनाम लेखक भाषा पृष्ठ सं०	प्रन्थनाम	• •	(सं०) ६९	
(feo) 98X	दशलक्षणीकथा	ललितकीर्त्ति	(ग्रप०) ६४	
दश्लक्षराणयमास अगासमा (दि०) ४५५	दशलक्षणीरास		()	
। हर्रालक्षराणियगणि	दशवैकालिकगीत	जैतसिंह	(.6.)	₹
दश्तलक्षर्णधर्मवर्णन पं० सदासुखकासतीवात (हि०) ५६ — (हि०) ६०	दशवैकालिकसूत्र		Ç., ,	
दशलक्षराध्मवराग	दशवैकालिकसूत्रटीका			३ २
दशलक्षरापूजा श्रभयनन्दि (स०) ४८५ — (स०) ४८५	दशक्लोकीशम्भूस्तोत्र	-	(" /	ે ૦
दशलक्षरापुजी	1		(,,,	90
पूर्व, पूर्व, पूर्वर, पूर्वर, पूर्वर, द्वर, द्वल, द्वल,		व्र० चन्द	(/	द ३
६४४, ६४६, ६५२, ६५८, ६९४, ७०४, ७३१, ७५६, ७६३, ७८४	दादूपद्यावली		(हि॰)	१७१
(лио но) чой	1	त्र० जिनदास	(हि॰) ५	७०७
दशलक्षरापूजा	1	भारामल	(.4.)	२२८
दशलक्षरापूजा अग्रहा १०००	1 "		(গাৎ)	६०
दशलक्षरापूजा खुशालचन्द्र (१५)		समयमुन्दर	(६१७
दशलक्षरापूजा द्यानतराय ^{(हि०}) ४५ ५१६, ७०	1	पद्मनिद्	(ų°)	६०
/C- \ 116		द्यानतराय	(हि०) ६०५,	६८६
दशलक्षरापूजा भूधरदास (१६०) ४० — (हि०) ४०	1 2		(हि०)	६००
दशलक्षरापूजा (१६०) ७२०, ७१	1 -		(हि॰)	६५९
(ぜっ) ソ	६६ दानविनती	जतीदास	(हि॰)	६४३
दशलक्षरापूजाजयमाल — (१,०) ५	२५ दानशीलतपभावना		(स०)	६०
दशलक्षग्रु [मंडलचित्र] — १ — (हि०) ४	८ दानशोलतपभावन	<u> </u>	(हि०)	६०
दश्रवस्यामण्डवर्गः । १ ५ १ ३०३ ३		· —	(हि०) ६०	
7 / C	१६० दानशीलतपभावन		समयसुन्द्रगरि	U
दश्लक्षराविवागर्याः (म०)	१२७		(हि॰)	२२६
(fa)	७३१ दिल्लीकी वादशा	हतका ब्यौरा 👤	– (हि॰)	७६६
दश्लदारामया चुरारा	७६४ दिल्लीके वादशाहे	। पर कवित्त 🕝	– (हि॰)	७५६
(वि.)	२४७ दिल्ली नगरकी व	सापत तथा बादशा	हत का व्योरा	_
લ્ફોલલાં માન્યન્	४८६		(हि०)	
दशलक्षराष्ट्रताचारमः स्थितः रुद्धः (सं०)	४८६ दिल्ली राजका व	गौरा -	— (हि॰)	
દ્રશાલનાના પ્રાપ્યા છે. ત્યા મ	६३६ दीक्षापटल	•	— (सं०) √ि	
दशलक्षराष्ट्रतोद्यापनपूजा — (सं०)	प्रव दीपमालिका नि	र्शिय '	— (हि ॰)) ६०

्र म३०]					[प्रन्थानुक्रमृषि	का
्र प्रन्थनाम	म़ेलक	भाषा पृष्ठ	सं ०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	सं०
दीपावतारमन्त्र	— (t	io)	५७६	देवागमम्तोत्रभापा		(हि॰ पद्य)	३ १६
दुवारसविधानकथा	मुनि विनयचन्द्र	(झप०)	२४४	देवाप्रभस्तोत्रवृत्ति	त्र्याणुभा [ि	तप्य विजयसेनमू	ft]
उ दुर्घटकाव्य		(स∘)	१७१			(स∘)	३१६
दुर्लभानुप्रेक्षा		(সা৽)	६३७	देवीसूक्त	,	(सं०)	६०५
देवकीढाल	रतनचन्द	(हि॰)	४४०	देशो [भारत] के न	ाम —	(हि॰)	६७१
देवकीढाल लू	एकरण कासलीवाल	(हि॰)	358	देहलीके वादशाहीर्क	ो नामावली एवं प	ारिचय —	
- देवतास्तुति	पद्मनन्दि	(हि॰)	४३६			(हि॰)	५४७
	.स.च. इन्द्रनन्दि योगीन्द्र	(स॰)	8 00	देहलीके वादशाहीके	परगनोके नाम -	— (हि॰)	६५०
नुपर्या - इ देवपूजा		(स॰)	४१५	देहलीके वादशाहोक	ा व्योरा —	(हि॰)	३७२
41241	42× €	०५, ७२५,	-	देहलीके राजास्रोकी	वंशावलि	(हि॰)	६८०
देवपूजा	•	(हि॰ स॰)		दोहा	कवीर	(हि॰)	७६६
,सन्द्रना । -		(16, 4,2)	908	दोहापाहुड	रामसिंह	(ग्रप०)	ं ६∙
देवपूजा	द्यानतराय	(हि॰)	५१६	दोहाशतक	ह्मपचन्द	(हি॰) ६७३,	ōRo
्देवपूजा -		(हि॰)	६४६	दोहासग्रह	नानिगराम	(ફિ•)	६२३
,"	६७०, ७	७०६, ७३४	, ७५५	दोहासग्रह		(हि॰)	७४३
देवपूजाटीका	-	, (स०)	४६०	चानतविलास	द्यानतराय	(हि॰)	३२८
देवपूजाभाषा	जयचन्द् छावड़ा	(हि॰)	860	द्रव्यसग्रह	नेमिचन्द्राचाय	(সা৹)	३ २
ः देवपूज(प्टक		(स०)	६५७		५७५,	६२८, ७४४, ७	११
•	^{गैपई} सोमदेवसूरि	्र (हि॰)	२२न	द्रव्यसग्रहटीका	****	. (स०) ३४,	६६४
-देवलोकनकथा		(स∘)	224	द्रव्यसग्रहगाथा भाष	। सहित (प्रा	० हि०) ७४४,	६८६
देवशास्त्रगुरुपूजा	श्राशाधर ((स०) ६३६	• •	द्रव्यसग्रहवालावबोध	ा टीका वशीधर	(हि॰)	७६१
देवशास्त्रगुरु पूजा		(सं०)	६०७	द्रव्यसग्रहभाषा	जयचन्द छ।वर	डा (हि॰ पद्य)	३६
देवशास्त्रगुरु पू जा		(हि॰)	५६२	द्रव्यसग्रहभाषा	जयचन्द छावङ	हा (हि॰ गद्य)	३६
देवसिद्धपूजा देवसिद्धपूजा		(स०)	४२५	द्रव्यसग्रहभाषा	वा॰ दुलीचन	_	३७
••	880, E	, ४०, ६४ <i>४</i> ,	,	द्रव्यसग्रहभाषा	द्यानतराय	(हि॰)	७१२
देवसिद्धपूजा	-	(हि॰)	् ७०५	द्रव्यसग्रहभाषा	पत्रालाल चौध	री (हि॰)	३६
देवागमस्तोत्र	श्रा० समन्तभद्र	(स०)		द्रव्यसग्रहभाषा	हैमराज		७३३
	३६५, ४२५, ५७			द्रव्यसंग्रहभाषा		ं(हि∘)	¥Χ
देवागमृस्तोत्रभाषा				i	पर्वेत धर्मार्थी	(गुज०)	३६

व्रन्थानुकमणिका]		•			लेखक र	मार्था क्रम स०
ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठसं	· 1	ग्रन्थनाम —	.`` 	(हि॰) १०६
द्रव्यसंग्रहवृत्ति	ब्रह्मदे व	(")	1	ादशानुप्रेक्षा ,	ξÝ	२, ७४८, ७६४
्र _{दव्यसंग्रहवृत्ति}	प्रभाचन्द्र	()	इ ४ ,	-		(सं०) ४६१
द्रव्यस्वरूपवर्णन		(" /	- 1	द्रादशागपूजा 	डाल्राम	(हि॰) ४९१
दृष्टातशतक		, /	1	द्वांदशागपूजा	हेमचन्द्राचार्य	(सं०) १७१
द्वादशभावनाटीका	-	(, 6)		-	हमपः प्राचान —	(सं०) १ ^{३३}
द्वाद्शभावनादृष्टात		(3 /	1.	द्विजवचनचपेटा	त्र॰ गुलाल	(हि॰) ५६६
हादशमाली क	वि राजसुन्दर		- 1	द्वितीयसमोसरण	No Gare	(सं०) ५१७
द्वादशमासा [वारहमास	ता] कवि राइसुन्द	र (हि॰) प	1	द्विप चकल्याग् कपूजा	घनखय	(सं०) १७१
द्वादशमासातचतुर्दशीव	तोद्यापन —	(स०)	प्रइष्ट	द्विसधानकाव्य रिलंक्सकावीका	[पदकौमुदी] नेमिच	इद्र (सं०) १७२
द्वादशराशिफल		\	६६०	द्विसधानकाव्यटीका द्विसधानकाव्यटीका	विनयचन्द	(स०) १७२
द्वादशव्रतकथा	पं० ऋभ्रदेव	\ " /	२२६	द्विसधानकाव्यटीका द्विसधानकाव्यटीका		(सं०) १७२
, t		२४६, ८ ०				(हि॰) ६७१
द्वादशय्रतकथा	चन्द्रसागर	(हि०) (∹ः)	२२६	द्वीपसमुद्री के नाम	गुणसागरसृरि	(हि॰) ४४०
द्वादशव्र [ं] तकथा		(सं०)	२२६	द्वीपायनढाल	34	•
		/÷-\	FIRE	t	A-F	
द्वादशत्रतपूजाजयमाल		(सं०)	६७६ ४४०		ध	
द्वादशव्रतमण्डलोद्याप	रन —	(स∘)	५४०	धनदत्त सेठ की क	•	(हि॰) २२६
द्वादशन्नतमण्डलोद्याप द्वादशन्नतोद्यापन	ान — —	(स॰) (सं॰) ४६१	५४० , ६ <u>९</u> ६		•	(हि॰) २२६ (सं॰) २२६
द्वादशद्रतमण्डलोद्याप द्वादशद्रतोद्यापन द्वादशद्रतोद्यापन	तन — — जगतकीर्त्ति	(स॰) (सं॰) ४६१ (सं॰)	५४० , ६ <u>६६</u> ४६१	धन्नाकया न क	•	
द्वादशन्नतमण्डलोद्याप द्वादशन्नतोद्यापन द्वादशन्नतोद्यापन द्वादशन्नतोद्यापनपूज	तन — — जगतकीत्ति ता देवेन्द्रकीर्ति	(स॰) (सं॰) ४६१ (सं॰) (सं॰)	440 , 588 488 488	धन्नाकया न क धन्नाचौपई	या — — —	(सं०) २२६ (हि०) ७७२ हि०) २२६
द्वादशद्भंताचापन द्वादशद्भंतोचापन द्वादशद्भंतोचापन द्वादशद्भंतोचापनपूज द्वादशद्भंतोचापनपूज	तन — — जगतकीत्ति ता देवेन्द्रकीर्ति	(स॰) (सं॰) ४६१ (सं॰) (सं॰) (सं॰)	५४० , ६८६ ४८१ ४८१ ४८१	धन्नाकयानक धन्नाचीपई धन्नाशलिभद्रचौप	या —	(सं०) २२६ (हि०) ७७२
द्वादशन्नतमण्डलोद्याप द्वादशन्नतोद्यापन द्वादशन्नतोद्यापन द्वादशन्नतोद्यापनपूज द्वादशन्नतोद्यापनपूज द्वादशन्नतोद्यापनपूज द्वादशन्नुप्रेक्षा	तन — — जगतकीर्त्ति ता देवेन्द्रकीर्ति ता पद्मनन्दि	(स॰) (सं॰) ४६१ (सं॰) (सं॰) (सं॰)	५४० , ६६६ ४६१ ४६१ ४६१ ६, ६७२	धन्नाकयानक धन्नाचीपई धन्नाशलिभद्रचीपः धन्नाशलिभद्रचीपः	था — — — = = = = = = = =	(सं॰) २२६ (हि॰) ७७२ हि॰) २२६ (हि॰) ३६२
द्वादशन्नतमण्डलोद्याप द्वादशन्नतोद्यापन द्वादशन्नतोद्यापन द्वादशन्नतोद्यापनपूज द्वादशन्नतोद्यापनपूज द्वादशन्नुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा	तन — — जगतकीत्ति ता देवेन्द्रकीर्ति	(#0) (#0) (#0) (#0) (#0) (#0) (#0) (#0)	440 989, 889 889 889 899	धन्नाकयानक धन्नाचौपई धन्नाशिलभद्रचौपः धन्नाशिलभद्रचौपः धन्नाशिलभद्ररास	था — — — — जिनराजसूरि ज्ञा० गुण्मद्र	(सं॰) २२६ (हि॰) ७७२ हि॰) २२६ (हि॰) ३६२ (सं॰) १७२ (सं॰) १७३
द्वादशन्नतमण्डलोद्याप द्वादशन्नतोद्यापन द्वादशन्नतोद्यापनपूज द्वादशन्नतोद्यापनपूज द्वादशन्नतोद्यापनपूज द्वादशन्नप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा	तन — जगतकीर्त्ति ता देवेन्द्रकीर्ति ता पद्मनिन्द् — लद्मीसेन	(सo) १६९ (संo) (संo) (संo) (संo) (संo) (पाo)	4,40 9,82 9,83 9,83 9,83 9,83 9,83 9,83	धन्नाकथानक धन्नाकौपई धन्नाकालिभद्रचौपः धन्नाकालिभद्रदास धन्मकुमारचरित्र धन्यकुमारचरित्र	था — — ई जनराजसृरि ज्ञा० गुणभद्र त्र० नेमिद्त्त	(सं॰) २२६ (हि॰) ७७२ हि॰) २२६ (हि॰) ३६२ (सं॰) १७२ (सं॰) १७३ (स॰) १७२
द्वादशव्रतमण्डलोद्याप द्वादशव्रतोद्यापन द्वादशव्रतोद्यापनपूज द्वादशव्रतोद्यापनपूज द्वादशव्रतोद्यापनपूज द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा	तन — — जगतकीर्त्ति ता देवेन्द्रकीर्ति ता पद्मनन्दि	(स०) (सं०) ४६१ (सं०) (सं०) (सं०) (सं०) (प्रा०)	4,40 , 466 , 468 , 468 , 468 , 469 , 469 , 469	धन्नाकयानक धन्नाचौपई धन्नाचौपई धन्नाचिक्रमद्रचौपः धन्नाचिक्रमद्रदास धन्यकुमारचरित्र धन्यकुमारचरित्र	था — — ई — जिनराजसूरि ग्रा० गुणभद्र न्न० नेमिदत्त सक्तकीर्त्त	(सं०) २२६ (हि०) ७७२ हि०) २२६ (हि०) ३६२ (सं०) १७२ (सं०) १७२ (स०) १७२ (सं०) १७४
द्वादशव्रतमण्डलोद्याप द्वादशव्रतोद्यापन द्वादशव्रतोद्यापनपूज द्वादशव्रतोद्यापनपूज द्वादशव्रतोद्यापनपूज द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा	तन — — जगतकीत्ति ता देवेन्द्रकीत्ति ना पद्मनिन्द् — लह्मीसेन — जल्हण	(स०) (सं०) ४६१ (सं०) (सं०) (सं०) (सं०) (सं०) (सं०) (प्रा०) (प्रा०)	440 , 488 488 488 488 6, 494 808 908 908 198	धन्नाकयानक धन्नाचौपई धन्नाशिकभद्रचौपः धन्नाशिकभद्रचौपः धन्नाशिकभद्रदास धन्यकुमारचरित्र धन्यकुमारचरित्र धन्यकुमारचरित्र धन्यकुमारचरित्र	था — — जिनराजसूरि श्रा० गुणभद्र श्र० नेमिद्त्त सकतकीर्त्त	(ボゥ) ママミ (ぼゥ) ゆらマ (ぼゥ) ママミ (ぼゥ) ママミ (ボゥ) キャマ (ボゥ) キゅマ (ボゥ) キゅマ (ボゥ) キゅマ (ボゥ) キゅマ (ボゥ) キゅマ
द्वादशव्रतमण्डलोद्याप द्वादशव्रतोद्यापन द्वादशव्रतोद्यापनपूज द्वादशव्रतोद्यापनपूज द्वादशव्रतोद्यापनपूज द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा	तन — जगतकीर्त्ति ता देवेन्द्रकीर्ति ता पद्मनिन्द् लद्दमीसेन जल्हण्	(स०) (सं०) ४६१ (सं०) (सं०) (सं०) (सं०) (प्रा०) (प्राप०)	\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\	धन्नाकथानक धन्नाचीपई धन्नाशिकभद्रचौपः धन्नाशिकभद्रचौपः धन्माशिकभद्रदास धन्यकुमारचित्र धन्यकुमारचित्र धन्यकुमारचित्र धन्यकुमारचित्र धन्यकुमारचित्र धन्यकुमारचित्र	था — — — जिनराजसूरि श्रा० गुणभद्र श्र० नेमिदत्त सकलकीर्त्ति — खुशालचन्द	(前・) そそを (間・) ものそ (間・) でそを (間・) そそそ (前・) そのそ (前・) そのそ (前・) そのそ (前・) そのそ (前・) そのそ (前・) そのそ (前・) そのそ
द्वादशव्रतमण्डलोद्याप द्वादशव्रतोद्यापन द्वादशव्रतोद्यापनपूज द्वादशव्रतोद्यापनपूज द्वादशव्रतोद्यापनपूज द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा	तन — जगतकीर्त्त हेवेन्द्रकीर्ति पद्मनिद् लह्मीसेन जल्हग् साह श्रालु किव छ्त	(स॰) (सं॰) ४६१ (सं॰) (सं॰) (सं॰) (पं॰) (प्रा॰) (प्रा॰) (प्रप॰) (हि॰)	\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\	धन्नाकथानक धन्नाचीपई धन्नाशिकभद्रचौपः धन्नाशिकभद्रचौपः धन्मशिकभद्रदास धन्यकुमारचित्र धन्यकुमारचित्र धन्यकुमारचित्र धन्यकुमारचित्र धन्यकुमारचित्र धन्यकुमारचित्र धन्यकुमारचित्र	था — — — ई जिनराजसृरि ज्ञा० गुण्मद्र त्र० नेमिदत्त सकलकीर्त्त सकलकीर्त्त — खुशालचन्द वित्र] — यशोनन्दि	(前・) ママを (間・) もらマ (間・) ママを (間・) マママ (前・) さらマ (前・) さらマ (前・) さらマ (前・) さらマ (前・) さらマ (前・) さらマ (前・) さらマ (で・) さらマ (ボ・) さらマ
द्वादशव्रतमण्डलोद्याप द्वादशव्रतोद्यापन द्वादशव्रतोद्यापनपूज द्वादशव्रतोद्यापनपूज द्वादशव्रतोद्यापनपूज द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा द्वादशानुप्रेक्षा	तन — जगतकीर्त्ति ता देवेन्द्रकीर्ति ता पद्मनिन्द् लद्दमीसेन जल्हण्	(स॰) (सं॰) ४६१ (सं॰) (सं॰) (सं॰) (सं॰) (प्रा॰) (प्रप॰) (द्रि॰) (हि॰)	\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\	धन्नाकथानक धन्नाचीपई धन्नाचीपई धन्नाचीलभद्रचीपः धन्नाचिलभद्ररास धन्यकुमारचरित्र धन्यकुमारचरित्र धन्यकुमारचरित्र धन्यकुमारचरित्र धन्यकुमारचरित्र धन्यकुमारचरित्र धन्यकुमारचरित्र धन्यकुमारचरित्र धन्यकुमारचरित्र	था — — — जिनराजसूरि श्रा० गुणभद्र श्र० नेमिदत्त सकलकीर्त्ति — खुशालचन्द	(前・) ママを (間・) もらマ (間・) ママを (間・) マママ (前・) さらマ (前・) さらマ (前・) さらマ (前・) さらマ (前・) さらマ (前・) さらマ (前・) さらマ (で・) さらマ (ボ・) さらマ

					-	=	
प्रन्थनाम	लेखक	भाषा प्र	ष्ठ सं०	प्रन्थनाम	लेखक	भाषा प्रष्ठ सं	0
धर्मचक्रपूजा	-	(सं०)	४६२	धर्मरासा	-	(हि॰) ३६	?
		५१०,	, ५३७	धर्मरासो		(हि॰) ६२३, ६७	e
धर्मचन्द्रप्रवध	धर्म चन्द्र	(গাৎ)	३३६	धर्मलक्षरा		(स०) ६	?
धर्मचाह	-	(हि॰)	७२७	धर्मविलास	द्यानतराय (हि०) ३२८, ७१	٥
धर्मचाहना		(हि॰)	६१	धर्मशर्माभ्युदय मह	शकवि हरिश्चन्द	(स०) १७	8
धर्मतच्गीत	जिनदास	(हि॰)	७६२	धर्मशर्माम्युदयटीका	यश:कीर्त्ति	(सं०) १७	¥
धर्मदशावतार ना	टक	(4; o)	३१७	धर्मशास्त्रप्रदीप		(स∘) ६	ş
धर्म दुहेला जैनी	का [त्रेपन क्रिया]	(हि॰)	६३८	धर्मसरोवर जो	धराज गोदीका	(हि॰) ६	₹
धर्मपच्चीसी	द्यानतराय	(हि॰)	७४७	धर्मसार [चौपई] प	० शिरोमणिदास	(हि॰) ६३, ६६६	٤
धर्मपरीक्षा	श्रमितिगति	(स ०)	३५५	धर्मसग्रहश्रावकाचार	प० मेघावी	(सं०) ६:	₹
धर्मपरीक्षा	विशालकीर्त्ति	(हि॰)	७३५	धर्मसग्रह्थावकाचार	•		
धर्मपरीक्षाभाषा	मनोहरदास सोनी	३५७,	७१६	धर्मसग्रहश्रावकाचार		, (हि॰) ६३	
धर्मपरीक्षाभाषा	दशरथ निगोत्या (हे० ग०)	३५६	धर्माधर्मस्वरूप	-	(हि॰) ৬০৬	
धर्मपरीक्षाभापा	— (हि	o) ३५¢,	७१०	धर्मामृतसूक्तिमग्रह	श्राशाधर	(स०) ६४	s
धर्मपरीक्षारास	त्र० जिनदास	(हि॰)	३४७	धर्मोपदेशपीयूपश्रावक	चार सिंहनन्दि	(स०) ६४	,
धर्मपंचिंवतिका	त्र० जिनदास	(हि०)	६१	धर्मोपदेशश्रावकाचार	अमोधव र्ष	(स०) ६४	!
धर्मप्रदीपभाषा	पन्नालाल संघी	(हि॰)	६१	धर्मोपदेशश्रावकाचार	त्र० नेमिद्त्त	(स०) ६४	
धर्मप्रश्नोत्तर	विमलकीर्त्ति	(स∘)	६१	धर्मोपदेशश्रावकाचार	مسمم	(स०) ६४	
घर्मप्रश्नोत्तर	*******	(हि०)	६१	धर्मापदेशसग्रह	सेवारामसाह	(हि॰) ६४	
धर्मप्रश्नोत्तर श्राव	काचार भाषा —	(स ०)	દ્દુર	धवल		(प्रा०) ३७	
धर्मप्रश्नोत्तर श्राव	काचार भाषा चम्पाराम	(हि०)	६१	धातुपाठ	हेमचन्द्राचार्य	(स०) २६०	
धर्मप्रश्नोत्तरी		(हि०)	६१	धातुषाठ		(स०) २६०	
धमेंबुद्धिचीपई	लालचन्द	(हि॰)	२२६	धातुप्रत्यय		(स॰) २६१	
धमबुद्धि पाप बुद्धि	क्या —	(म०)	२२६	धातुरूपावलि		(स०) २६१	
धर्मबुद्धि मंत्री कथ	ग वृन्दावन	(हि॰)	२२६	घू शीला		(हि०) ६००	
धर्मरत्नाकर	प० सगत	(स∘)	६२	श्रीघूचरित्र		(हि॰) ७४१	
धर्मरसायन	पद्मनदि	(भा०)	६२	घ्वजारोप सपूजा	Photos	(सं०) ५१३	
धर्मरसायन		(सं∘)	६२	ध्वजारोपरामत्र	winds	(सं०) ४६२	
धर्मरास [श्रावका	चार] —	(हि०)	७७३ ।	घ्वजारोप स्ययंत्र	-	(स०) ४६२	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	सं०
ध्वजारोपगाविधि	ऋाशा धर	(स०)	४६२
ध्वजारोपगाविधि		(स०)	४६२
व्वजारोह् णविधि		(सं०)	४६२
	न		
नखशिखवर्णन	केशवदास	(हि॰) [′]	७७२
नखशिखवर्णन		(हि॰)	७१४
नगर स्थापना का स्व	ह्य 	(हि॰)	७५०
नगरो की बसापत का	सवत्वार विवरए		
मु	नि कनककीत्ति	(हि॰)	५६१
ननद भौजाई का भ	गुडा	(हि॰)	७४७
नन्दिताढ्यछद	-	(গাং)	م ۶۶
नन्दीषेएा महामुनि	सज्जाय -	~ ह०	६१६
नन्दीश्वरउद्यापन	_	(स ∘)	५३७
नन्दीश्वरकथा	भ॰ शुभचन्द्र	(स ॰)	२२६
नन्दीश्वरजयमाल		(स०)	४६२
नन्दीश्वरजयमाल		(সা৹)	६३६
नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्त्ति	(ग्रप०)	५१६
नन्दीश्वरजयमाल		(ग्रप॰)	४६२
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	रत्ननन्दि	(सं०)	४६२
नन्दीश्वरद्वीपपूजा		(स०)	<i>\$3</i> 8
		६०१,	६५२
नन्दीश्वरद्वीपपूजा		(গাৎ)	६४५
नन्नीश्वरद्वीपपूजा	चानतराय	(हि॰) ५१६,	५६२
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	मङ्गल	(हि०)	<i>\$38</i>
नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि		(स∘)	४७६
नन्दीश्वरपूजा	सकलकीर्त्ति	(सं०)	७६१
नन्दीश्वरपूजा		(स∘)	\$3 8
ሂየ	४, ६०७, ६४४,	६४८, ६८८,	७०४

नन्दीश्वरपूजा — (प्रा०) ४६३, ७	
(11)	०५
नन्दीश्वरपूजा — (म० प्रा०) ४	ह ३
नन्दीश्वरपूजा — (ग्रप॰) ४	६३
नर्न्दाश्वरपूजा — (हि॰) ४	६३
नन्दीश्वरपूजा जयमाल — (सं०) ७	પ્રદ
नन्दीश्वरपूजाविधान टेकचन्द् (हि०) ४	83
नन्दीश्वरपक्तिपूजा पद्मनन्दि (स०) ६	38
नन्दीश्वरपक्तिपूजा — (स०) ४	€ 3
પ્રેપ્ક, હ	६३
नन्दीश्वरपक्तिपूजा — (हि०) ४	€₹
नन्दीश्वरभक्ति — (स०) ६	३३
नन्दीश्वरभक्ति पन्नालाल (हि॰) ४९४, ४	१५०
नन्दीश्वरविधान जिनेश्वरदास (हि॰) ४	የ፻४
नन्दीश्वरविधानकथा हरिपेगा (सं०) २२६, ध	११४
नन्दीश्वरविधानकथा — (स०) २२९, २	(४६
नन्दीश्वरव्रत्तविधान टेकचन्द् (हि॰) प्र	११५
नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा त्र्यनन्तकीर्त्ति (सं०) ४	१९४
नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा नन्दिपेगा (स०) ४	(EX
नन्दोश्वरव्रतोद्यापनपूजा — (स०) ४	83
नन्दीश्चरव्रतोद्यापनपूजा — (हि०) ४	.6.A
नन्दोश्वरादिभक्ति — (प्रा०) ६	२७
नान्दीसूत्र — (प्रा०)	३७
नन्दूससमीव्रतोद्यापन — (स०) ४	83
नमस्कारमन्त्रक्लपविधिसहित सिंहनन्दि (स०) ३	38
नमस्कारमन्त्रसटीक — (स० हि०) ६	०१
नमस्कारस्तोत्र — (सं०) ४	२८
निमऊर्गस्तोत्र — (प्रा०) ६	5
नयचक देवसेन (प्रा०) १	३४
·	5

न ३४]	
प्रन्थनाम	लेखक
नयचक्रभाषा	हेमराज
नयनक्रभापा	
नरकदु खयर्णन [दोहा]	भूधरदास

न्रकस्वर्गकेयन्त्र पृथ्वी ग्रादिका वर्णन

नरकवर्णन

नरपतिजयचर्चा

नलोदयकाव्य

नलोदयकाव्य

नवकारकल्य

नवकारपैंतीसो

नवकारमन्त्र

नवकारमन्त्र

नवकाररास

नवकाररास नवकाररासो

नवकारमन्त्रचर्चा

नवकारथावकाचार

नवकारसज्भाय

नवकारसज्भाव

नवग्रहपूजा

नवग्रहपूजा

नवग्रह [मण्डलिवत्र]

नवग्रहगभितपार्श्वस्तोत्र

नवग्रहों। द्वितपार्श्वनायस्तवन

नवकारपैंतीसीपूजा

नवकार वडो विनती

नवकारमहिमास्तवन

नल दमयन्ती नाटक

(हि॰) १३४ (हि०) १३४ (हिं०) Ęų ७६०, ७== (हि॰) Ęų (हि॰)

(स०)

(स०)

(स॰)

(स०)

(स०)

(स०)

(स०)

(हि॰)

(हि०)

(स॰)

(সা৽)

(हि॰)

(हि॰)

(हि॰)

(हि॰)

(সা০)

(हि०)

(हि॰)

(स०)

(সা৽)

(स०)

(पं० हि०)

६१८

४३१

६३६

७१५

६४७

३६२

780

Ęĸ

६१५

६१=

47%

६०६

७३२

¥38

५१८

नरपति

कालिदास

त्रहादेव

जिनवल्लभसूरि

श्रचलकीर्त्त

गुणप्रभसूरि

पद्मराजगणि

माशिक्यसूरि

भाषा पृष्ठ स०

नवग्रहम्तोत्र नवग्रहस्तोत्र नवग्रहस्यापनाविधि ६५२ २न्ध

प्रन्थनाम

नवग्रहपूजाविधान

नवतत्वगाथा

नवतत्वप्रकर्ण नवरत्नकवित्त

नवरत्नकाव्य

नहनसीपाराविधि

नामकुमारचरित्र

नागकुमारचरित्र

नागकुमारचरित्र

नागकुमारचरित्र

नागकुमारचरित्र

नागमता

नागलीला

नागश्रोकथा

नागश्रीक्या

नागकुमारचरितटीका

नप्टोदिष्ट

नवतत्वप्रकर्ण नवतत्वव वनिका नवतत्ववर्गान नवतत्त्रविचार नवतत्वविचार नवपदपूजा नवमङ्गल नवरत्नकवित्त नवरत्नकवित्त

पन्नालाल चौधरी देवचन्द विनोदीलाल (हि॰) ६८५, ७३४ वनारसीदास

धमेधर

मल्लिपेणसूरि

उद्यतात

प्रभाचन्द

व्र० नेमिदत्त

किशनसिंह

लदमीवल्लभ

लेखक

भद्रवाह

वेद्व्यास

(हि॰) (हि॰)

(हि०) ६१६ (हि॰) (हि॰) 030 (न०) (हि॰) (हि॰)

(सं०)

(स०)

(हि॰)

(40)

(स∘)

(सं०)

(हि॰)

(हि॰)

(स०)

(हि॰)

(io)

(हि॰)

प्रन्थानुक्रमणिका

(मं०)

(सं०)

(स ०

(स॰)

(গা॰)

(সা০)

(हि॰)

मांपा ष्ट सं॰,

858

४३०

६१२

₹७

७३२

३७

35

₹≒

₹5

६४६ .

१७६ १७४ १७६

१७६

१७६ १७६ — (हि॰ राज॰) २२६

६९५

२३१

238

21.413.00.0								
. बृङ्थंनीम 📆 🏸	- यः लेखक	आषा पृष्ठ	मंद्र	- ग्रुथताम्	A SALLAS II	ভিক	्रभाषा प्र	ष्ठ` सं`र्व
नागश्रीसज्भाय	वितयचन्द	ै (हि॰)	_ 1	नित्यनियमपूजा	सदासुख क	ासलीव	ाल '(हि॰)	४६६
ेनाटकसमयसार	बनारसीदास	ं(हि॰)		नित्यनियमपूजासः	ाह		(हि॰)	७१२
६५७	, ६५२, ७२१, ७	७५०, ५६१, ५	७७६	नित्यनैमित्तिकपूग।	पाठ सग्रह		' (स०)	५१६
नाडीपरीक्ष ा	- Constitution	(स ०)	२६८	नित्यगाठसग्रह			(स॰ हि॰)	३६८
		६०२,	६६७	न्त्यपूजा			(स∘)	५६०
नादीमञ्जलपूजा		(सं०)	५१८				६६४, ६९४	, ६९७
नाममाला	धनञ्जय	(⊕ ⊕)	२७४	नित्यपूजा			(हि॰)	४६५
२७६, ५७४, ६८६	६, ६९६, ७०१,	७११, ७१२, ७	७३६	नित्यपूजाजयमाल			(हि॰)	४६५
नाममाला	- बनारसीदास	(हि॰)		नित्यपूजापाठ			(स० हि०)	६८३
		६०६,	७६५				७०२	, ७१५
नाममञ्जरी	नन्ददास	(हि॰) ६९७	७६६	नित्यपूजापाठसग्रह			(प्रा॰ स॰)	६६४
नायिकालक्षरा	कवि सुन्दर	(हि०)	७४२	नित्यनूजापाठसग्रह	•		(स०)	६९३
नायिकावर्णन		(हि॰)	७६७	नित्यपू जापाठ्स ग्रह			(सं०)	900
नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र	न नारचन्द्र	(सं०)	रदर				५७७५	, ७७६
नारायगुकवच एवं ग्र	रष्ट्रक	, (सं०)	६०५	नित्यपूजामग्रह		_	(সা০ শ্ব৭০)	४६७
नारीरासो	-	(हि॰)	७५७	नित्याूजासग्रह		-	(स०) ४६७,	, ७६३
नासिकेतपुरागा		(हि॰)	७९७	नित्यवदनासामायि	「 事	_	(स॰ प्रा॰)	६३३
नासिकेतोपाख्यान		(हि॰)	७९०	निमित्तज्ञान [भद्रव	गहु सहिता]	भद्रवाह	ु (स∘)	२५४
निघंदु		(40)	३३६	नियमसार	अया० कुन्त	रकुन्द	(গাং)	३८
निजस्मृति	जयतिलक	(सं०)	३८	नियमसारटीका	पद्मश्रममल	वारिदेव	(स०)	३८
निजामिि	ृत्र० जिनदास	(हि॰)	६५	- निरयावलीसूत्र		-		
नित्य एवं भाद्रपदपूज		(स∘)	६४४	निरञ्जनशतक			(हि॰)	७४१
नित्यकुत्यवर्शान	-	(हि०) ६५	४६५	निरञ्जनस्तोत्र			(स०)	४२४
नित्यक्रिया		(सं०)	४६५	निर्भाग्यश्रमी।वधाः	नक्या विनय	वन्द्र (्म्रप० <i>)</i> २४५,	, ६२८
नित्यनियम के दोहे		(हि० ١	७१=	निर्दोपसप्तमी रथा		,	(ग्रप०)	२४५
नित्यनियमपूजा		(स०)	४६५	निर्दोपनप्तमीकया	पाडे हरि	कृट्ण	(हि०)	४३७
	·	પ્રક	, ६७६	निर्दोपसप्तमीव्रतकः	या 'त्र० रा	यमञ्ज	(स०) ६७६,	350
नित्यनियमपूजा	âlter	(स० हि०)	४१६	निर्माल्यदोपवर्शान			(हि॰)	६५
		५६७	, ६८६	निर्वाग्। क्लयाग्। कपू	जा		(स०)	४६५

ग्रन्थनाम (सं०) सोमदेवसूरि ३३० नीतिवाक्यामृत (গা০) ३१८ निर्वाग्यकाण्डगाया (हि०) नोतिविनोद ३३० ४२६, ४३१, ५२६, ६२१, ६२८, ६३४, ६३८, ६६२, (सं ० ١ भतृ हरि ३२६ नीतिशतक ६७०, ६२४, ७१६, ७५३, ७७४, ७८८, ७८६ चाग्यक्य (सं०) ७१७ नीतिगास्त्र (0,f 01R) ---338 निर्वागकाण्डटीका इन्द्रतन्दि (स०) नीतिसार 378 (स०) ४६५ निर्वाग्रिकाण्डपूजा (सं०) नीतिसार ६५४ चाणक्य निर्वाणकाण्डभाषा मैया भगवतीतास (귀이) 336 (सं०) नीतिसार ३२१ ४२३, ४२६, ४४१, ५६२, ५७०, ५६६, ६००, ६०५, नीलकंठ नीलकण्ठताजिक (स०) २५५ ६१४, ५६५, ६४३, ६५०, ६५१, ६६२, ६७४, ७०४, (स∘) नीलमुक्त ३३० ७२०, ७४७ नेमिगीत पासचद् (हि॰) 888 (हि॰) संवग 955 निर्वागकाण्डभाषा (हि॰) नेमिगोत ४३२ भूधरदास — (ह्नि) ४६६, ५१८ निर्वागक्षेत्रपूजा खेतसी (हि०) नेमिजिनदब्याहलो. ६३इ (हि॰) **783** निर्वासित्रमण्डलपूजा मुनि जीवराज नेमिजिनस्तवन (हि॰) ६१८ (स०, 338 निर्वाणपूजा नेमिजीका चरित्र (हि॰) श्राणन्द १७६ (हि॰) 358 निर्वाणपूजापाठ मनरङ्गलाल (हि॰) (हि॰) नेमिजीका लहरी विश्वभूषण् ક્રણ્છ દપ્ર निर्वाणप्रकरण नेमिदूतकाव्य महाकवि विक्रम (स०) १७६ — (स॰) ३६६, ६३^३ निर्वागुभक्ति (सं०) 338 पन्नालाल चौधरी नेमिनरेन्द्रस्तोत्र (हि॰) ४५० जगन्नाथ निर्वाणभक्ति ४२६ नेमिनावएकाक्षरीस्तोत्र पं शालि (सं०) (हि०) 335 निर्वाणमक्ति नेमिनायका बारहमासा विनोदीलाल लालचन्द (हि०) ६६५ विश्वभूपण निर्वाग्रभुमिमञ्जल ७५३ (हि॰) (हि॰) निर्वाग्मोदकनिर्णय नेमिदास ६५ (हि॰) ६६२ निर्वाणिविधि (स०) ६०५ नेमिनायका वारहमासा (स∘) नेमिनायकी भावना (हि॰) ĘIJ¥ निर्वाण्यसभातीस्तोत्र 338 सेवकराम (सं०) (हि॰) 335 नेमिनाथ के दशभव निर्वाशस्तोत्र १७७ (सं०) ६००, ७०४, ७५५ नि.शल्यापृमीकथा 238 नि शल्याष्ट्रमीकथा (हि०) २२० त्र॰ ज्ञानसागर नेमिनाथ के नवमञ्जल (हि॰) 880 विनोदीलाल पाडे हरिकृष्ण (हि०) नि शल्याप्टमीकथा ७६५ नेमिनाय के बारह भव (हि॰) ७६० त्र॰ नेमिदत्त (स०) निशिभोजनकथा २३१ **५६७** नेमिजीकोमङ्गल (हि॰) जगतभूपण्

शुभचन्द्र

नेमिनायचरित्र

नेमिनाथछन्द

(सं॰)

(हि॰)

हेमचन्द्राचार्य

१७७

358

२३१

२५५

(हि॰)

(e F)

निशिभोजन कथा

निपेकाच्यायवृत्ति

•	-		
ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	सं०
नेमिनाथपुराएा	व्र ० जिनदास	(सं०)	१४७
नेमिनाथपुराएा	भागचन्द	(हि॰)	१४६
नेमिनायपूजा	कुवलयचन्द्	(स०)	६३७
नेमिनाथपूजा	मुरेन्द्रकी त्ति	(सं०)	338
नेमिनाथपूजा	_	(हि॰)	338
नेमिनाथपूजाष्टक	शंभूराम	(सं०)	४६६
नेमिनायपूजाष्ट्रक		(हि॰)	338
नेमिनाथफाग्र	पुण्यरत	(हि॰)	७४५
नेमिनाथमङ्गल	लालचन्द	(हि॰)	६०५
नेमिनाथराजुल का ब	गरहमासा —	(हि॰)	७२४
नेमिनाथरास	ऋषि रामचन्द	(हि॰)	३६२
तेमिनाथस्तोत्र	प० शालि	(सं०)	७५७
नेमिनायरास	व्र० रायमञ्ज	(हि०) ७१६,	७५२
नेमिनाथरास	रत्नकीर्त्ति	(हि॰)	६३८
नेमिनाथरास	विजयदेवसूरि	(हि॰)	३६२
नेमिनाथस्तोत्र	पं० शालि	(सं०)	338
नेमिनाथाष्ट्रक	भूधरदास	(हि॰)	७७७
नेमिपुराण [हरिवंद	ापुराएा] त्र० नेमि	दृत्त (स०)	१४७
नेमिनिर्वाण	महाकवि वाग्भट्ट	(सं०)	१७७
नेमिनिर्वाणपञ्जिका		(सं०)	१७७
नेमिव्याहलो		(हि०)	२३१
नेमिराजमतीका चं	ोमासिया —	(हि॰)	६१६
नेमिराजमती की घ	गिडी —	(हि॰)	४४१
नेमिराजमतीका गॅ	ोत हीरानन्द	(हि०)	४४१
नेमिराजमति बारा	-	(हि०)	६५७
नेमिराजमतिरास	स्रमुक्ति		६१७
नेमिराजलव्याहलो			
, नेमिराजुलवारहम			
नेमिराजिषसज्भाय	ा समयसुन्द्र	- (हि॰)	६१८

लेखक भाषा षुष्ठ सं० प्रन्थनाम जिनहर्पसूरि नेमिराजुलगीत (हि॰) ६१८ भुवनकीर्त्त (हि॰) नेमिराजुलगीत ६१८ विनोदीलाल (हि॰) ४४१, ७४७ नेमिराजुलपचीसी (હિં૦) नेमिराजुलसज्भाय 813 (हि॰) नेमिरासो ७४५ नेमिस्तवन जितसागरगणी (हि॰) 800 नेमिस्तवन ऋषि शिव (हि॰) 800 नेमिस्तोत्र (स०) ४३२ नेमिसुरकवित्त [नेमिसुर राजमितवेलि] कवि ठक्कुरसी (हि॰) ६३८ नेमीचन्द (हि॰) नेमीश्वरका गीत ६२१ खेतसिंह (हि॰) नेमीश्वरका वारहमासा ७६२ नेमीश्वरकी वेलि ठक्कुरसी (हि॰) ७२२ नेमीश्वरकी स्तुति (हि॰) भूधरदास ६५० नेमीश्वरका हिंडोलना मुनि रतनकी ति (हि॰) ७२२ नेमीश्वरके दशभव व्रव्धर्मरुचि (हि॰) **७३**८ नेमीश्वरको रास (हि॰) भाऊकवि ६३८ नेमीश्वरचौमासा सिंहनन्दि (हि०) ७३८ नेमीश्वरका फाग त्र॰ रायमल्ल (हि॰) ६३७ नेमीश्वरराजुलको लहुरी खेतसिंह सार् (हि॰) 300 नेमीश्वरराजुलविवाद त्र॰ ज्ञानसागर (हि॰) ६१३ नेमीश्वररास मुनि रतनकीर्त्त (हि॰) ७२२ नेमीश्वररास (हि॰) त्र० रायमञ्ज ६०१ ६२१, ६३८ नैमित्तिक प्रयोग (स०) ६३३ नैषधचरित्र हर्पकीत्ति (स०) १७७ नौशेरवा बादशाहकी दस ताज ्हि०) 330 प्रभाचन्द्रदेव (स०) १३४ न्यायकुमुदचन्द्रोदय भट्टाकलङ्कदेव (Ho) १३४

777 4					_	•	•
ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा दृष्ट	३ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृ	ष्ठ स॰
न्यायदीनिका	यति धर्मभूषण	(सं०)	१३५	पञ्चकल्यासाकपूजा	छोटेलाल मित्तल	(हि॰)	५००
न्यायदोपिकाभापा	संघी पन्नातात	(हि०)	१३५	पञ्चकल्याराकपूजा	टेकचन्द	(हि॰)	५०१
न्यायदीपिकाभाषा	सदामुख कासत्तीवाल	र (हि०)	१३५	पञ्चकल्याग्यकपूजा	पन्नालाल	(हि॰)	४०१
न्यायमाला प्रम	हस परिव्राजकाचार्य	(स∘)	१३५	पञ्चकल्याग्यकपूजा	भैरवदास	(हि॰)	५०१
न्यायशास्त्र		(स०)	१३५	पञ्चकल्याग्गकपूजा	रूपचन्द्	(हि॰)	५००
न्यायसार	माधवदेव	(स०)	१३५	पञ्चकल्यासक्तूजा	शिवजीलाल	(हि॰)	338
न्यायसार		(सं०)	१३५	पञ्चकल्यासाकपूजा		हि०)	४२१
न्यायसिद्धान्तमञ्जरी	भ० चूडामणि	(सं०)	१३६			५०१	, ७१२
न्यायसिद्धान्तमञ्जरी	जानकीदास	(सं०)	१३५	पञ्चकल्याग्यकपूजापृत्	ъ —	(स∘)	६५३
न्यायसूत्र		(सं०)	१३६	पञ्चकल्यागुक [मण्ड	लचित्र] —		५२५
नृमिहपूजा		(हि॰)	६०८	पञ्चकल्याएकस्तुति	كجنين	(সা৽)	६१द
नृसिहावतारचित्र		•	६०३	पञ्चकल्यासाकोद्यापन	पूजा ज्ञानभूपण	(শ৹)	६६०
न्हवराम्रारती	थिह्नपाल	(हि॰)	७७७	पञ्चकुमारपूजा		(हि॰) ५०२	, હપ્રદ
न्हवरामङ्गल	वसी	(हि॰)	७७७	पञ्चक्षेत्रपा्लपूजा	गङ्गादास	(सं०)	४०२
न्ह्यण् विव	 (t	io) ५६४	, ६४०	पञ्चक्षेत्रपालपूजा	सोमसे न	(सं ०)	५३७
	प			पञ्चस्यारा		(সা৹)	६१६
पञ्चकरणवात्तिक	सुरेश्वराचार्य	(स०)	२६१	पञ्चगुरुकल्यारापूजा	शुभचन्द्र	(स ०)	५०२
पञ्चकल्याग्रकपाठ	हरचन्द्	(हि॰)	800	पञ्चग्रहकी जयमाल	त्र॰ रायमञ्ज	(हि॰)	६३७
पञ्चक्तयाग्कपाठ	हित्चन्द	(हि०)	७६६	पञ्चतत्त्वधाररा	مسن	(सं०)	१०¢
पञ्चकल्याएकपाठ		(स∘)	६६६	पञ्चतन्त्र	पं० विष्णुशर्मा	(स०)	३३०
पञ्चक्त्यागुकपूजा	श्रर्ण मिण्	(स०)	ሂዕዕ	पञ्चतन्त्रभाषा		(हि॰)	330
पचकल्यासक्तूजा	गुणकीर्त्त	(स∘)	200	पञ्चदश [१५] यन्त्र	की विधि —	(सं०)	38€
पञ्चकल्याग्यकपूजा	वादीमसिंह	(स∘)	400	पञ्चनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामी	(सं०) ५७६	3₹0,
पञ्चकल्यागुकपूजा	सु धासागर	(स०)	५००	पञ्चनमस्कारस्तोत्र	विद्यानन्दि	(स०)	X0 }
		५१६	, ५३७	पञ्चपरमेष्ठीउद्यापन	-	(स ▷)	X03
पञ्चकल्याग्गकपूजा	सुयराक ीति	(स०)	५००	पञ्चपरमेष्ठीग्रुस्		(हि॰)	६६
पञ्चक्त्यासक्रीजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(组。)'	४६६			٧٦٤,	७दद
पञ्चकल्या्ग्यकपूजा	****	(स∘)	५∙०	पञ्चप्रमेष्ठीगुरामाल		(हि॰)	७४५
	५१४, ५१८, ५१		-	पञ्चपरमेष्ठीगुरावर्रान	ा डा लुराम	(हि॰)	ĘĘ.

•		
ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
पञ्चारमेष्ठीगुरास्तवन		(हि॰) ७०७
पञ्चपमेष्ठीपू जा	यशोनिन्द (स	०) ५०२, ५१५
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	भ० शुभचन्द्र	(सं०) ५०२
पञ्चपरमेप्ठीपूजा		(सं०) ५०३
		५१४, ५६६
पञ्चपरमेट्ठीपूजा	डाल् गम	(हि०) ५०३
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	देकचन्द (f	हे०) ५०३,५१८
प≋पमेष्ठीपूजा		(हि०) ५०३
	प्रश्च, प्र	१६, ६५२, ७१२
पञ्चपरमेष्ठी [मण्डलिंच	[羽] —	५२५
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	-	(स०) ४२२
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन		(प्रा०) ६६१
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन रि	जेनवल्लभसूरि	(हि॰) ४४३
पञ्चपरमेष्ठीसनुचयपूज	·	(स०) ५०२
पञ्चपरावर्तन		(स०) ३८
पश्चपालपैंतीसो		(हि॰) ६५९
पृञ्चप्ररूपसा		(स०) २६६
पञ्चवधावा	- (हि॰) ६४३, ६६१
पचबधावा		(राज०) ६८२
पचवालयतिपूजा		(हि॰) ५०४
पंचमगतिवेलि	हर्पकीति	(हि०) ६२१
•	६६१,	६६८, ७५०, ७६५
पंचमासचतुर्दशीपूजा	सुरेन्द्रकीर्नि	त (सं०) ५४०
पचमासच्तुर्देशीव्रतोद्य	ापन सुरेन्द्रकीर्नि	त (स॰) ५०४
पचमास्चतुर्दशीव्रतोद्	गपन —	(स०) ५३६
पचमीउ्द्यापन		(स॰ हि॰) ५१७
पंचमीव्रतपूजा	केशवसेन	(स०) प्रश्र
पचमीव्रतपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(स०) ५०४
पंचमीत्रतपूजा		(स॰ हि॰) ५१७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा सं० पृष्ठ
पंचमीव्रतोद्यापन	हर्पेकल्याण	(सं०) ५०४, ५३६
पंचमीव्रतोद्यापनपूजा	केशवसेन	(स०) ६३८
पंचमीव्रतोद्यापनपूजा		(सं०) ५०४
पचमीस्तुति		(सं०) ६१८
पचमेरुउद्यापन	भ० रत्नचन्द	(स०) ५०५
पंचमेरजयमाल	भूघरदास	(हि॰) ५३६
पचमेरुजयमाल	واستحضيهم	(हि॰) ७१७
पं चमेरुपूजा	देवेन्द्रकीर्त्त	(स०) ५१६
पचमेरुपूजा	भः महीचन्द	(सं०) ६०७
पंचमेरपूजा		(सं०) ५३६
	५५७, ४६४, ६	१८४, ६८६, ७५४
पंचमेरुपूजा		(शर) ६३५
पंचमेरपूजा		(ग्रप०) ६३६
पचमेरपूजा	डाल्राम	(हि॰) ५०५
पंचमेरपूजा	टेकचन्द	(हि॰) ५०५
पचमेरुपूजा	द्यानतराय	(हि०) ५०५
	५१६, ५६२, ५	१६६, ७०४, ७५६
पंचमेरुपूजा	सुखानन्न	(हि॰) ५०५
प्चमेख्रुजा		(हि॰) ५०५
		५१६, ७४५
पचमञ्जलपाठ, पचमं	कल्याराकमञ्जल,	पचमङ्गल
	ह्पचन्द	(हि॰) ३९८,
४२८, ४०१ ५०४	, ५१=, ५६५,	५७०, ६०४, ६२४,
६४२, ६४६, ६४	०, ६५२, ६६१,	६६४, ६७०, ६७३,
६७४, ६७६, ६८१	, ६६१, ६६३,	७०४, ७०४, ७१०,
७१४, ७२०, ७३!	४, ७६३, ७८८	
पंचयतिस्तवृन	समयसुन्द्र	(हि॰) ६१९
पंचरत्नपरीक्षा की गा		
पचलव्धिवचार	thrappe	(সা৹) ৩০৬

	लेखक	भाषा बुध	≀सं० ∣	प्रन्थन।	म	लेखक	भाषा दृष्ट	सं0
प्रन्थनाम	ललक खेमचन्द	भाग देव (हि० <i>)</i>	1	पद	· -	•	(हि॰) ४६०,	
	-	(1627 (43 488,		पद		जोधराज	(हि॰)	
	_	(हि॰)	इ 3७				७०६, ७८६, ।	
	गरीबदास	(हि॰)	४८१	पद		टोडर	(हि०)	
	गुणचन्द्र	्रावण्य ४८४, ४८७,	i				६२३, ७७६, ७	
		रपर, रपर, (हि॰)	७६६	पद		त्रिलोककीर्त्ति		
	गुनपूरण	(हि॰) (हि॰)	६९९	पद		त्र० द्याल	(हि॰)	५५७
	गुमानीराम	•		पद		द्यालदास	(हि॰)	9૪૯
	गुलावकृष्ण (पद		द्रिगह	(हि॰)	७४६
	घनश्याम	(हि॰) (६०)	६२३	पद		द्लजी	(हि॰)	986
	चतुभु [°] ज	(हि॰)	000	पद		दास	(हि॰)	380
	चन्द् (हिन्) ४५७		पद		दुः दिलाराम	(हि॰)	७६३
	चन्द्रभान	(हि॰)	४६१	1		विषाराम दीपचन्द	(हि॰)	५६३
	चैनविजय (पद	•	_	•	
	चैनसुख	(हि॰)	६३७	पद		दुर्लोचन्द् रे न्सेन	_	६६३
	छीहल	(हि॰)	७२३	पद		देवसेन	• - •	५८६
	जगतराम	(हि॰)	५५१	पद		देवात्रहा		७५४
५५२, ५५४, ५५५	८, ५८५, ५८६, ६	११५, ६ ६७,	, ६९६,			• •		, ७६३
७२४, ७४७, ७६६		•	-	पद		देवीदास		६४६
	जगराम	(हि॰) ४४!	४, ७५४	पद		देवीसिंह	• • •	६६४
	जनमल	(हि॰)	५५५	पद		देवेन्द्रभूषण		४५७
	जयकीर्त्ति	(हि०) ५५	४, ५८८	पद		दौलतराम		६५४
5	तयचन्द्र छाबङ्ग	(हि॰)	४४६			****	७०६, ७५२ ८५-५	
	जादूराम	(हि॰)	४४५	पद	v-v v-9	द्यानतराय ४८७, ४८८,		४५३ ०००
	जानिमोहम्मद	(हि॰)	५८६	1		६५४, ७०४,		
	जिनदास	(हि॰)	५५१	1 .	17 1- 47	•	। (हि॰) ५ ५ ५	
५८८, ६१	४, ६६८, ७४६, ।			पद		धनराज		98=
•	जिनहर्ष			पद		नथ विमल	•	
•	जीवग्रदास	_	४४४	पद		नन्ददास		४५७
	जीवस्राम) খুদ্ৰ	1		• • • •		, ७०४

प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	स०	प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ स०
पद	नयनसुख	(हि॰)	५५३	पद	भाव	(हि॰) ५५७
पद	नरपाल	(हि॰)	५६५	पद	भागचन्द्	(हि०) ५७०
पद	नवल	(हि॰)	২ ৬१	पद	भानुकीर्त्ति	(हि०) ५५३
	०, ६१४, ६४८, ६	• •			•	५५५, ६१५
७०६, ७५२, ७५				पद	भूघरदास	(हि॰) ५५०
पद	त्र० नाथू	(हि॰)	६२२	५५६, ५५८, ५६०	, ६१४, ६१ <u>४,</u>	६४८, ६५४, ६६४
पद	निर्मल	(हि∘)	५५१	६६४, ७५४, ७६३		
पद	नेमिचन्द	(हि॰)	५५०	पद	मजलसराय	(हि•) ५५१
		६२२,	६३३	पद	मनराम	(हि०) ६६०
पद	न्यामत	(हि॰)	৬৪ন			७६४. ७६९, ७७६
पद	पद्मतिलक	(हि॰)	५५३	पद	मनसाराम	(हि०) ५५०
पद	पद्मनन्दि	(हि॰)	६४३			६६३, ६६४
पद	परमानन्द	(हि∘)	७७०	पद	मनोहर	(हि०) ७६३
पद	पारसदास	(हि॰)	६५४	i		७६४, ७५४
पद	पुरुपोतम	(हि॰)	५५१	पद	मल्कचन्द्	(हि०) ४४६
पद	पूनो	(हि∘)	ওদ্ধ	पद	मल्कदास	(हि॰) ७६३
पद	पूरगादेव	(हि॰)	६६३	पद	सहीचन्द	(हि॰) ५७६
पद	फतेहचन्द	(हि∘)	યુંકદ	पद	महेन्द्रकीर्त्त	(हिं०) ६२०, ७५६
	•	५०, ४ ५ १, '	५५२	पद	माणिकचन्दं	(हि॰) ४४७
पद	बखतराम	(हि॰)	ሂፍ३			४४८, ७९ँ५
	५५६, ६६८,		₹30	पद	मुकन्ददास	(हि०) ६६०
पद	बनारसीदास	(हि∘)	५६२	पद	मेला	(हि॰) ७७६
५५३, ५५५, ५५९	, ४५७, ४५६, ६२१	•	-	पद	मेलीराम	(हि॰) ७ ७ ६
पद ,	बलदेव	(हिं०)	७६५	पद	मोतीराम	(हि॰) ५६१
पद	वालचन्द	(हि॰)	६२५	पद	मोहन	(हि॰) ७६४
पद	बुधजन	(हि॰)	५७०	पद	राजचन्द्र	(हि॰) <i>५७७</i>
,	५७१, ६५३, ६५४,	७०६, ७५५,	৬৪ন	पद	राजसिंह	(हि॰) খ্ৰড
पद	भगतराम	(हि॰)	७६५	पद	राजाराम	(हि०) ५६०
पद	भगवतीदास	(हि॰)	७०६	पद	राम	(हि•) ६५३
पद	, भगोसाह	(हि॰)	५५१	पद	रांमकिशन	(हि०) ६६५

य्रन्थानुक्रमाण्का '	J			नेल्य भा	षा पृष्ठ सं०
ं ग्रन्थनांम		भाषा वृष्ठ सं०	ग्रन्थन (म	•	हि॰) ५५५
	रामचन्द्र	(हि॰) ५५१	पद	41.1161 11.11	
पर्द	रासपण्य	६६८, ६९६	पद	सन्तदास (हि॰	
		(हि०) ५५३	पद	11.101.11	(हि॰) ६२४
पद	रामदास	4==; 48 0	पद	4448 21	(हि॰) ५७६
				५६५	, <i>५८६, ७७७</i>
पद	रामभगत	(हि॰) ५५२	पद	श्यामदास	(हि॰) ७६४
पद	रूपचन्द्र	(हि॰) ५५५	पद		(हि०) ५६०
युद्ध , युद्ध७, युद्ध	, ५८६, ६२४, ६	६१, ७२४, ७४६	पद		(हि॰) ६२०
હપૂપ, હદ્દર, હદ્દપ			पद	साहकीित	(हि॰) ७७७
पद	रेखराज	(हि०) ७६५	वर	साहिबराम	(हि॰) ৬६५
पद	लच्मीसागर	'(हि०) ६५२	पद	सुखदेव	(हि०) ५५०
पद	ऋषि लहरी	(हि०) ५५४	पद	सुन्द र	(हि॰) ७२४
पद	लालचन्द	(हिं०) ५५३	। पद	सुन्दरभूषण	(हि॰) ५५७
	' ሂና३,	५५७, ६९६, ७६	र पद	सूरजमल	(हि०) ५५१
पद	विजयकीर्त्ति		1 17	सूरदास (हि	६०) ७६९, ७८३
५ ५ २, ^५	(५४, ५५४, ५५६	, ५८७, ५८ ^६ , ६६	७ पद	सुरेन्द्रकीर्त्त	(हि॰) ६२२
*	विनोदीलाल	10 \		सेवग (हि	हु०) ७ <u>६</u> ३, ७६५
,पद		३, ७५७, ७५३, ७६	ह पद पद	हरमलदास्	(हि०) ६२४
पद ,		र्। (हि०) ५६१, ६२		हरखचन्द	(हि०) ५५३
पद	विसनदास	⟨C- \ II-			(८४, ४८४, ७६३
पद	बिहारी (ास	। (हि॰) ५०	। पद	हर्षकीर्ति	(हि०) ५६६
पद	वृन्दावन	न (हि०) ६	^{१३} । ५५५, ५५५	, ५६०, ६२०, ६२४, ६९	३, ७०१, ७५०
पद	ऋपि शिवलाव	त (हि०) ४	४३ ७६३, ७३४		
पद	शिवसुन्द		५० पद	हरिश्चन्द्र	(हि॰) ६४९
पद	शुभच	द्र (हि०) ७०२, ७	२४ पद	हरिसिंह	
पद ⁻	शोभाचन	द (हि॰) ४	प्रदर, ६२	o, ६४३, ६४४, ६६३, ६।	<u>३</u> ६, ७७२, ७७६
पद	श्रीपा	त्त (हि॰) ह	30 ,६३० ००	£	,
पद	श्रीभूष	ह्या (हि॰) ५	(म३ पद	६रीदास	(हि०) ७७०
पद	श्रीर		(६० पद	मुनि हीराचन्द	(हि०) ५५१

भाषा प्रष्ठ सं० लेखक **ग्रन्थनाम** ग्रन्थन[स (हि॰) हेमराज 460 पद (हि॰) 388 पद्मावतीमण्डलपूजा पद ५७०, ५७१, ६०१, ६४३, ६४४, ६५०, ६५३, ७०३ ७०४. ७०४, ७२४, ७३१, ७४३, ७४४, ७७०, ७७७ पद्मावतीशातिक पद्मावतीसहस्रनाम यश.कीर्त्ति (ग्रप०) ६४२ पद्धडी (भ्रप०) सहग्रपाल ६४१ पद्यडी गोवर्धन (सं०) ६६६ पदाकीष (हि॰) १७७ पद्मचरितसार भ० धर्मकीत्ति पद्मावतीस्तोत्र (सं∘) 388 पवापुराए। र्रावपेगाचार्य (स०) पदापुराए। १४५ पद्मपुराण (रामपुराण)₃भ० सोमसेन (सं०) १४५ (स∘) पद्मावतीस्तोत्र पद्मपुरागा (उत्तरखण्ड) 388 (हि॰) परापुराग्यभाषा खुशालचन्द 388 दौलतराम पदविनती (हि॰) वद्मपुरागुभाषा 388 पदानदिपंचविशतिका पद्मनदि (स。) ६६ पद्यसग्रह पद्मनदिप चविश्वतिकाटीका (स०) ६७ पद्यसग्रह पद्मनदिप चर्विशतिका (हि॰) जगतराय ६७ पदसग्रह पद्मनित्यचीसीभाषा मन्नालाल खिंदूका (हि॰) ६८ पदसग्रह पद्मनदिपचोसीभाषा (हि॰) ६५ पदसग्रह पद्मनदिश्रावकाचार पद्मनंदि पदसंग्रह (स∘) ६५ पार्श्वदेव पद्मावत्याष्ट्रकवृत्त (स०) 802 पदसग्रह पद्मावती की ढाल (हि०) पदसग्रह 808 पद्मावतीकल्प (स∘) 388 पदसग्रह पद्मावतीकवच 一(用o) 火oを、ゆな? पदसग्रह पद्मावतीचक्र श्वरीस्तोत्र (सं०) 835 पदसग्रह पद्मावतीछंद मह)चद (स∘) पदसग्रह ६०७ पद्मावती दण्डक स०) ४०२, ७४१ पदसग्रह पद्मावतीपटल (स०) ४०६, ७४१ पदसग्रह पद्मावतीवूजा (स०) 803

लेखक . भाषा पृष्ठ स॰ ४७४, ४०६, ५६७, ६४४, ६१२ (4°) ४०६ पद्मावतीरानीग्राराधना समयसुन्दर (हि०) ६१७ (सं०) ४०६ (सं०) 803 ४०६, ४६६, ६३६, ७११, ७४१ पद्मावतीसहस्रनामवपूजा (स०) ४०६ पद्मावतीस्तवनमत्रसहित (सं०) ४२३ (सं०) 803 ४२३, ४३०, ४३२, ४३३, ५०६, ५३८, ५८६, ६४५ ६४६, ६४७, ६७६, ७३५, ७५७, ७७६ (हि॰) समयसुन्दर ६५५ पद्मावतीस्तोत्रबीजएवसाधनविधि ---(स०) ७४१ (हि०) ७१५ विहारी (हि॰) ७१० (हि॰) गग 920 श्रानन्द्घन (हि०) ७१०, ७७७ व्र० कपूरचद् (हि॰) **አ**የአ खेमराज (हि०) **444** गगाराम वैद्य (हि॰) ६१५ चैनविजय (हि॰) XXX चैनधुख (हि०) 448 जगतराम (हि॰) XXX जिनदास (हि॰) ५७२ जोधा (हि०) YYX (卮。) **काभूराम አ**ጻአ (हि॰) दलाराम ६२० देवाब्रह्म (हि॰) 444 ६३४, ७४० ७५३

भाषा पृष्ठ सं० लेखक प्रन्थनाम दौलतराम (हि॰) ४४४, ४४६ पदसग्रह ' (हि॰) ४४४, ७७७ ~- द्यानतराय पदसग्रह - नयनसुख (हि॰) ४४५, ७२६ पदसग्रह नवल (हि॰) ४४५, ७२६ पदसंग्रह (हि०) ६५४ पदसग्रह परमानन्द (हि॰) वखतराम ४४४ पदसग्रह बनारसीदास (हि॰) ६२२, ७६४ 'पदसग्रह (हि॰) पदसग्रह (वुधजन ४४४ ४४६, ६५२ (हि॰) ७३९ पदसंग्रह भगतराम पदसंग्रह ' भागचन्द्र (हि॰) ४४५, ४४६ (हि॰) पदसग्रह भूधरदास ४४४ ६२०, ७७६, ७७७, ७८६ (हि०) पदसग्रह मगलचन्द ४४७ मनोहर (हि॰) ४४४, ७८९ पदसग्रह पदसंग्रह (हि॰) लाल ४४४ विश्वभूषग् (हि०) पदसग्रह ४४४ पदसंग्रह शोभाचन्द (हि॰) ७७७ शुभचंद (हि॰) पदसंग्रह, ७७७ (हि॰) साहिबराम አጻአ पदसग्रह ्पदसंग्रह (हि॰) **सुन्दरदास** ७१० (हि॰) सूरदास ६५४ **पदसग्रह** सेवक (हि॰) ४४७ प्दसग्रह (हि॰) हरखचंद ₹8₹ पृद्संग्रह हरीसिंह (हि०) , पद्सग्रह 900 हीराचन्द (हि॰) ४४५, ४४७ ्रपुदसग्रह (हि॰) ४४४ पदसग्रह ४४५, ६७६, ६८०, ६६१, ७०१, ७०८, ७०६, ७१० 🏅 ें ७१६, ७१७, ७१८, ७२१, ७४३, ७४६, ७५६, ७६० 🗄 ७५२, ७५६, ७५७, ७६१, ७७४, ७७६, ७५१, ७६०

लेखक प्रन्थनाम भाषा पृष्ठ सं० पदस्तुति (हि॰) ७१'१ परमज्योति वनारसीदास (辰) 803 ५६०, ६६४, ७७४ परमसप्तस्थानकपूजा ं (स०) ५१६ स्रधासागर दीपचन्द (हि॰) परमात्मपुराएा 308 ंयोगीन्द्रदेव (अप०) परमात्मप्रकाश ११० ५७५, ६३७, ६६३, ७०७, ७४७ परमात्मप्रकाशटीका आठ अमृतचन्द (सं०) ११० **५रमात्मप्रकाशटीका** ब्रह्मदेव (स०) १११ परमात्मप्रकाशटीका (सं०) १११ परमात्मप्रकाशवालाववोधनीटीका खानचद् (हि॰) १११ दौलतराम (हि०) परमात्मप्रकाशभाषा १०५ परमात्मप्रकाशभाषा (हि॰) नथमल १११ (हि॰) परमात्मप्रकाशभाषा प्रभुदास ७६५ परमात्मप्रकार्शभापा सूरजभान श्रोसवाल (हि०) ११६ '(हि०) 'परमात्मप्रकाशभाषा ११६ परमानन्दं पचिं विश्वति (सं०) 808 पद्मनिद (सं०) ४०२, ४३७ परमात्मराजस्तोत्र सकलकीर्त्ति परमात्मराजस्तोत्र (सं०) 803 परमानन्दस्तवन (सं०) ४२४, ४२५ परमानन्दस्तोत्र कुमृदचंद्र (सं०) ७२४ परमानत्दस्तोत्र पुज्यपाद (सं०) ४७४ परमानन्दस्तोत्र (सं०) 808 ४३३, ६०४, ६०६, ६२८, ६३७ वनारसीदास परमानन्दस्तोत्र (हि०) ५६२ परमानन्दस्तोत्र (हि॰) 358 परमार्थगीत व दोहा रूपचद (हिं०) ७०६, ७६४ परमारथलुहरी (हि०) ७२४ परमार्थस्तोत्र · (सं ०) 808

						•	
137	(৽গ্র)	म्रीकिक्नक नीम	किराप्ति भामकेश्रा	हेदर्भ	(•弱)	बह्यमुजी	फिक्किंग्रमिकाम
አወጸ	(40)	<u>— ५५७५</u> ।	नास्नेनाभएनस्ड मान	र्द्ध रही	(৽য়)	∌।म	पञ्जियां
446	(स॰)		म्ना इन्ने इन्ने इन्ने इन्ने	,≂ຍ}	(4°)	त्रीप्तरुक्तकृत्या	त्वंयद्वकोल्यः व
000	(•峛)	व्यिथनःइ	पार्वेजिनस्तवन	'ন০'ম	(⋴∘)		घोडीस्रा,इप्रिमिट्सिकृप
ন০.ম	(৽রী)	डड़ांक डा <i>छ</i>	पार्विजिनपुजा	80%	(4 o)	<u> श्रीमानवर</u>	पल्मक्षतोद्यापन्
222	(•ଗ)			1003	(#°)		प्रह्मिह्म
(क्राधि र्ह	बार्ने समग्रमन्दर	<u> हारिनची इंद्र</u> ी	きをと	(4°)	भूतसाम्	मह्यविधानस्त्रोपाल्यानम
325	(鸣)	त्रः भुवराय	इङ्गेद्रीम	£ 2 £	(•廚)	१० श्रीमन्द्र	म् मात्रमामनीयक
አοአ	(∉∘)		ण्रीमा त्रमीरम्डर्गशिष	የዕያ	(4∘)		તલ્લિકામતૈયા
አοአ	(4°)		<u> रुम्ड</u> ्रहम्रोा	३०६	(• ii)	<i>मे</i> किंग्रहीक	गरूप्रनाधकीयज्ञ
5 \$ 5	(40)	क्रमीर्न अह	ाष्ट्रभावता	38%	X:0€1		
አοአ	(4°)		क्षां क्षेत्र हिन्द्र क्षेत्र क	द्रेव्ह	(स्॰)	रक्षनिहेद	पह्यसिष्द्रा
358	(40)	– नிறிடி	ग्रि रकाभ्वभित्तिग्रीाप	ดงห	(4°)	ज्ञीकि क्र न् र	
≒ 6\$	(৹রী)	म् ऋच्छाक्	हरीहरूला	કેકેટ	(•퇴)	सुशालचंद स्थालचंद	प ल्यविधानक्या -
አጸፅ '	go) 840	-	त्राज्यवर्दे दार्वाभावा		' ዩ ጾኦ (օነ	•	•
3,70	(৽গ্র)	फिर्मि काकारम	पाण्डबर्पुराताभाषा	उ∧ट ≾±ह	(o퇴) ^{EVE} (or		पत्यविधानकवा
र्धर	(eb)	भंग् तीर्भनंद्द	ប្រាវខ្ពុទទព្			_	प्रकृष
१४०	(•Ħ)	ppyfk	वान्डबर्दराह्य	לה ב ייני	(4°)	ત્રીત્ર <u>ન</u>	मह्मिह्म
3,70	(• 13)	ज्नीकि.1९७	णाग्ह्यमुराख	26 X	(4°)	यात्रसङ्ख	प्रमाडलेविद्यान
አየ	(6됨)		<u>_</u>	23	(•퇴)		កព្រៃគុទ្ធបវិភុព
		क्ताहमारहि किया		<i>હ</i> ફ ફ	(०ड्री)	विचन्ट खावड़ा	•
አ02 ((•ज़ि॰ म)		ਰਾਣਬਾਣ	3 ह ह	(a°)	ज्ञीं हो हम्मे ग्रिस	_
FOX	(olk)	444	इएमठाप	508	(a。)	\$144E)	किप्राद्यीत्रीम
हेका	(oreor)		नारसम्ह	975	<u>(4</u> •)	सागी व्योगह	<i>राश</i> हेडून्मासत्रीम
देशर "	አ0አ (ባዘ	·) —	महस्रार्थ	388	(a。)		ह्मागामुत्र
212	(৽রি)	र्यामिन्दर	पास्त्रमुर्स रम ाष	433	[†] 组0)		तर्सरामक्ष्या
838		Ŀ	पाचवासोर्कामउलिक	रार	(•剧)		দীচুগ্যত্য'দুদ
ጸሪጸ		(চন্দ্রা	मर्जानकृतमम्स्वात्रम्	၈ ફફ	(· !!)		पर्यू प्र ता <u>क</u> ध्य
o\$\$ ((गुजराती)		वाबदोल	አቀአ	(otr)	<u> </u>	ग्ट नी स्र गण्यः क्रियोस्य
\$53	(6尉)	मा इफ़िर्ह	ाभक्तिकार विषय स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त	7.be	(•퇴)	<u>र</u> ्धनद	ाम्निडण्डीक्षेप्रप्र
£lo	ab ibib	६ र हर्म	वक्तवास	410	માતા હૈ8	कछर्ति	ग्रन्थनाम्
क्षि	मक् <u>तिक</u>	ek]					[382

ţ

प्रन्थानुकर्मणिका भाषा पृष्ठ सं० त्तेखक प्रन्थनाम ७७६ (हि०) लोहट पार्वनायकी गुरामाल (हि॰) ६५० पारसनायकीनिसाणी जिनहर्ष (हि॰) ४४५, ५७६ पार्श्वनाथकीनिशानी (हि॰) ७०२ पार्श्वनाथकी निशानी (हि॰) ६२५ वृन्दावन पार्वनायकेदर्शन 308 (ग्रय०) रइधू पार्श्वनाथ चरित्र 308 (सं०) वादिराजसूरि पार्वनाथचरित्र भ० सकलकीति (स०) 308 पार्श्वनाथचरित्र ५६५ (हि॰) विश्वभूषण पार्वनाथचरित्र ६०३ पार्वजिनचैत्यालयचित्र (हि०) ६४२ लोहट पार्श्वनाथजयमाल — (हि॰) ६४४, ६७६ पार्क्नाथजयमाल (स०) ४०५ पार्खनायपद्मावतीस्तीत्र भूधरदास — पार्श्वनाथपुराण [पार्श्वपुराण] (हि॰) १७६, ७४४, ७६१ (स०) ४२३ पार्श्व नायपूजा प्रद०, ६०६, ६४०, ६५५, ७०४, ७३१ (स०) प्रश्व पार्श्वनायपूजा (विधानसहित) ६६३ हर्षकीित्त (हि॰) पार्श्व नाथपूजा (हि॰) ४०७ पार्श्वनाथपूजा ५६६, ६००, ६२३, ६४५, ६४८ (सं०) XOX. पार्श्व नायपूजामत्रसहित महामुनि रामसिंह (सं०) ४०६ पार्खिमहिम्नस्तोत्र (सं०) पार्श्वनायलङ्गीस्तोत्र- पद्मप्रभदेव 80X (सं०) ६३३ देवचद्रसृरि पार्श्वनाथस्तवन ७३७ राजसेन (हि॰) पार्भ्य नायस्तवन (हि॰) ६५१ जगरुप पार्श्व नाथस्तवन पार्श्व नायस्तवतः [पार्श्व विनतो], व्र० नाथू — ६७०, ६५३ (हि॰)

भाषा वृष्ठ सं० लेखक **प्रन्थनाम** (卮0) ६६७ समयराज पार्श्व नायस्तवन समयंमुन्टरगणि (राज०) ६१७ पार्श्व नायस्तवन — (隱) ४४६, ६४५ पार्श्व नायस्तवन (हि॰) ७४५ पार्श्व नायस्तुति पद्मप्रभदेव (स∘) ६१४ पार्श्व नायस्तोत्र ७०२, ७४५ पद्मनिद (स०) ५६९, ७४४ पार्श्व नायस्तोत्र (सं०) ४१३ रघुनाथदास पार्श्व नायस्तोत्र (स०) 448 राजसेन पाइर्वनायस्तोत्र (सं०) ४०४ पार्श्व नायस्तोत्र ४०६, ४२४, ४२५, ४२६, ४३२, ५६६, ५७८ ६४५, ६४७, ६४८, ६५१, ६७०, ७६३ ४०६ (हि॰) द्यानदराय पाश्व नाथस्तोत्र ४०६, ५६९, ६१५ (हिं०) ४०६ पार्श्वनायस्तोत्र ४४६, ५६६, ७३३ (सं०) ४०६ पार्श्वनायस्तोत्रटीका (सं०) ४०६, ६७६ पार्श्वनाथाप्टक सकलकीर्त्त (हि॰) છછછ **पार्श्वनाया**ष्ट्रक 335 (हि॰) **पाराविधि** २५६ (सं०) पाराशरी २८६ (स०) पराशरीसज्जनरजनीटीका (हि॰) ७३० पावागिरीपूजा गर्गमुनि (स०) २८६ ई४७ पाशाकेवली २५६ (सं०) ज्ञानभास्कार पाशाकेवली — (सं०) २८६, ७०१ पाशाकेवली (हि॰) ७१३ श्रवजद .पाशकिवली (हिंं) २५७ पाशाकेवली ५६५, ६०३, ७१३, ७१८, ७८४, ७८६

प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृ	ष्ठ संव
पिगलछदशास्त्र	माखन कवि	(हि॰)	३१०
पिगलछदशास्त्र (छद रत्नावली)		
,	हरिरामदास	(हि॰)	३११
पिंगलप्रदी प	भट्ट लच्मीनाथ	ं(स०)	३११
विगुलभाषा	रूपदीप	(हि०)	७०६
पिगलशास्त्र	नागराज	(°F)	३११
पिंगलशास्त्र		(स०)	३११
पीठपूजा	-	(सं०)	६०५
पीठप्रक्षालन	,	(₹∘)	६७२
पुच्छोसेएा		(গা॰)	६९
पुण्यछत्तीसी	समयसुन्द्र	(हि॰)	६१६
पुण्यतत्वचर्चा	_	' (स०)	४१
पुण्यास्रवकयाकोश	मुमुज्ज रामचद	(स०)	२३३
पुण्यास्रंवकथाकोश	टेकचंद	(हि॰)	२३४
पुण्यास्रवकथाकोश	दौलतराम	(हि॰)	२३३
पुण्यास्रवकथाकोश	-	(हि॰)	२३३
पुण्यास्रवकथाकोशस्	(ची —	(हि०)	२३४
पुण्याहवाचन		(स०) ५०७,	६६६
पुरन्दरची पई	मालदेव	(हि॰)¹	७३५
पुरन्दरपूजा		(स ०)	५१६
पुरन्दरविधानकथा		(स०)	२४३
पुरन्दरव्रतोद्यापन		(स०)	५०५
पुरइचरणविधि		(स०)	२८७
पुरा णसा <u>र</u>	श्रीचन्द्रमुनि	(स∘)	१५१
पुरा णसारसंग्रह	भ० सकलकीत्ति	(स∘)	१५१
पुरुषस्त्रीसं वाद		(हि॰)	७५६
पुरुपार्थानुशासन	गोविन्द्भट्ट	(सं०)	
	अमृतचन्द्राचार्य	(सं०)	
i.	विनका भूधर मिश्र	-	
=	~	• • •	

। प्रन्थनाम	लेखक	भाषा	ष्ट्रप्ट स
पुरुपार्थेसि द्धयुपायभा ष	ग टोडरमल	(हि०)	Ęę
पुष्कराद्व [®] पूजा	ं विश्वभूपण	[,] (सं०)	४६७
पुष्पदन्तजिनपूजा	*******		५०६
पुष्पाञ्जलिकथा		(য়ঀ৹)	६३३
पुष्पाञ्जलिजयमाल		(য়ঀ৽)	७ ४४
पुष्पाञ्जलिविधानकया	पं०-हरिश्चन्द्र	(য়ঀ৹)	२४५
पुष्पाञ्जलिविधानकथा	-	(सं०)	२४३
पु ष्पाञ्जलिव्रतकथा	जिनदास	(सं०)	, २३४
पुष्पाञ्जलिय्नतकथा	श्रुतकीर्त्ति	(स∘)	२३४
पुष्पाञ्जलिय्रतकया	लित कीर्त्ति	(स॰) ६६४	i, UEY
पुष्पाञ्जलियतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२३४
	•	२४४,	७३१,
पुष्पाञ्जलियतोद्यापन	[पुजाञ्जलियतपूजा]े गङ्ग	दास
		(सं०) ५०५	
पुष्पाञ्जलिय्नतपूजा	भ० रतनचन्द	(स∘)	५०५
पुष्पाञ्जलित्रतपूजा	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	ሂоፍ
पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	, , ,	(स॰) ५०	न, ५३६
पुष्पाञ्जलिव्रतविधानकय	п —	(स∘)	२३४
पुष्गञ्जनित्रतोद्यापन		(सं°)	ሂሄ•
पूजा	पद्मनिद्	(सं०)	४६०
पूजा एव कथासग्रह	खुशालचन्द	(हि॰)	४१६
पूजाक्रिया	_	(हि॰)	५०५
पूजासामग्री की सूची		(हि॰)	६१२
पूजा व जयमोल	-	(₹•)	५६१
पूजा धमाल 🍃	-	(4;°)	ĘXX
पूजापाठ		(हि॰)	५१२
पूजापाठसंग्रह	-	(सं०)	५०५
६४६, ६=२, ६६७,	६६६, ७१३, ७१	. ४, ७१८, ७	18 7
७५०, ७६६			

EXO]							· · ·
प्रन्थनाम	`लेखक	भाषा ' पृष्ठ	स०	प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	सं०
प्रतिष्ठासम्बन्धीयन्त्र	-		६६८	प्रवचनसार	्श्रा० कुन्दकुन्द	(সা৹)	११६
प्रतिष्ठासार		(सं०)	प्रदर	प्रवचनसारटीका	त्रमृतचन्द्र	(स०)	११७
	पं० शिवजीलाल	(हि॰)	५२२	प्रवचनसारटीका	1	(स०)	११३
प्रतिष्ठासारोद्धार		(स०)	५२२	प्रवचनसारटीका		(हि॰)	११३
प्रतिष्ठासूक्तिसंग्रह		(स०)	५२२	प्रवचनसारप्रामृतवृ	ति —	(स०)	११३
प्रद्युम्नकुमाररास	[प्रद्युम्नरास]	ब्र॰ राय	मञ्ज	प्रवचनसारभापा	जोधराज गोदीका	(हि॰)	११४
	(हि०) ५६५,	६३६, ७१२,	७३७	प्रवचनसारमापा	वृन्दावनदास	(हि॰)	११४
प्रद्युम्नचरित्र	महासेनाचार्य	(स ०	१५०	प्रवचनसारभाप 1	पांडे हेमराज	(हि॰)	११३
प्रद्युम्नचरित्र	सोमकीत्ति	(स०)	१८१	प्रवचनसारभाषा	(fi	हे०) ११४,	. હૄૄ ૭
प्रद्युम्नचरित्र		(स०)	१८२	प्रस्ताविकश्लोक		(स ॰)	३३२
प्रद्युम्नचरित्र	सिंहकवि	(मप०)	१५२	प्रश्नचूडामिए।		(स०)	२८७
द्रद्युम्नचरित्रभोषा	मन्नालाल	(०हः)	१८२	प्रश्नमनोरमा ,	गरी	(सं०)	२५७
प्रद्युम्नचरित्रभाषा		(हि०)	१६२	प्रश्नमाला		(सं०)	२५५
प्रद्युम्नरास	कृष्णराय	(हि॰)	७२२	प्रश्नविद्या	-	(सं०)	२५७
प्रद्युम्नरास	-	(हि॰)	9૪૭	प्रश्नविनोद		(सं०)	२५७
प्रवोधचन्द्रिका	वैजलभूपति	(स∘)	३१७	प्रश्नसार	ह्यप्रीव	(सं०)	२८५
प्रवोधसार	यश कीत्ति	(सं०)	३३१	प्रश्नसार		सं०)	२५५
प्रभावतीकल्प		(हि०)	६०२	प्रश्नसुगनाव लि		(स०)	२८५
प्रमारानयतत्वालीव	नालकारटीका [रत्ना	करावतारिका	i]	प्रश्नावलि		(स०)	रुदद
r	रत्नप्रससूरि	(सं०)	१३७	प्रश्नावलि कवित्त	वैद्य नंदलाल	(हि॰)	७६२
प्रमाणनिर्णय		(स०)	१३७	प्रश्नोत्तर माणिक्य	ामाला व्र ० ज्ञानसागर	(स॰)	२८५
प्रमाणपरीक्षा	श्रा० विद्यानिन्द	(स ०)	१३७	प्रश्नोत्तरमाला		(स०)	२८८
प्रमाणपरीक्षाभाषा	। भागचन्द्	(हि॰)	१३७	प्रश्नोत्तरमालिका प्रश्नोत्तरमालिका	[प्रश्नोत्तरस्तमाला]		वर्ष
प्रमाग्रप्रमेयकलिक	ा नरेन्द्रसूरि	(स∘)	५७५		-	स० ३३२,	४७३
प्रमाणमीमासा	विद्यानिद	(स∘)	१३८	प्रश्नोत्तरस्तमाला	तुलसीदास	(ग्रज०)	३३२
प्रमासमीमासा		(स०)	१३८	प्रश्नोत्तरश्रावकाच	ार —	(स०)	७०
प्रमाराप्रमेयकलिक		(स∘)	१३७	प्रश्नोत्तरश्रावकाच	ारभाषा बुलाकीदास	(हि॰)	90
प्रमेयकम्लमार्त्तण्ड		(स∘)	१३८	प्रश्नोत्तरश्रावकाच	रभापा पत्रालाल चौध	वरी (हि॰)	७०
प्रमेयरत्नमाला	श्चनन्तवीर्य	(स०)	१३८	प्रश्नोत्तरश्रावकाच	ıτ <u>—</u>	(हि∘)	७१

•	•		
प्रन्थनांम	ं लेखक	भाषा' प्रष्ठ सं	0
प्रश्नोत्तरस्तीत्र	<	(40) Yo	Ę
प्रश्नोत्तरोपासकीचार	भं सकतकी ति	(सं०) ७	18
प्रश्नोत्तरोंद्धार' ⁾	i "	(हि॰)	₹
प्रशस्ति (ब्रद्धामोद्र	(सं०) ६०	5
प्रशस्ति 📝		(स०) १७	છ
प्र शस्तिका शिका	वालकृष्ण	(सं०) ७	13
प्रह्लाद चंरित्र [/]	-	हि०) ' ६०	۰,
प्राकृतछन्दकोश		(গ্লা০) ३१	१
प्राकृतछन्दकोश	' रत्नशेवर	(সা০) ३१	११
प्राकृतछन्दकोश	· श्रन्हु	(प्रा०) ३१	8
प्राकृतिपगलशास्त्र		(सढ) ३१	2
प्राकृतव्याकरे ण	चरडकवि	'स०) २ ^६	२
प्राकृतरूपमाला	श्रीरामभट्ट	(प्रा॰) २६	२
प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिक	। सौभाग्यगणि	(स०) २ ^६	६२
प्रागप्रतिष्ठा		(स॰) ४	२३
प्राणायामगास्त्र	**************************************	(स०) । ११	१४
प्राणीडागीत -		(हि॰) ७१	્ છ
प्रात-क्रिया		(स०) (૪૯
प्रात.स्मरग्रमन्त्र		(स∘ _') ४०	े ६
प्रामृतसा र	या ० कुन्दकुन्द	(श्रा०) १३	३०
प्रायश्चितग्रन्य	1~	(#i• /	3 8
प्रायश्चितविधि	श्रकलङ्कचरित्र	(सं०) ।	૭૪
प्रायश्चितविधि	म० एकसंधि	(स∘) (૭૪
प्रायश्चितविधि	an Australia	(स०) ।	9૪
प्रायश्चित्शास्त्र,	- इन्द्रतन्दि	(গাৎ)	9૪
प्रायश्चितशास्त्रः	~ , ~~~	(য়ুজ০) ।	৬४ ়
प्रायश्चितसमु च टीका	ं नंदिगुरु	(40)	૭૫
प्रीतिङ्करचरित्र	त्र नेमिद्त्त	, (स०) १ः	= २
प्रीतिङ्करचरित्र	जोधराज		5

		L	.~,
प्रन्थनाम	ं लेखक	भांषा पृष्ट	सं ०
प्रीत्य ङ्करचौ पई [°]	नेमिचन्द	े(हि०)	७७ ४
प्रीत्यङ्करचरित्र		(हिं०)	६८६
प्रोषधदोषवर्गान	,	(हि०)	. <i>6x</i>
प्रोषधोपवासत्रतोद्यापन		(स ॰)	३३३
•	फ	•	
	·		
फलफांदर्ल [पञ्चमेरु]		1	
फलवधीपार्श्वनावस्तवन	समयसुन्दरगरि		
फुटकरकवित्त	-	(हि०)	७४५
		७६९,	६७७
फुटकरज्योतिषपद्य	~	(सं०)	४७३
फुटक्र दोहे		(हि॰)	६९४
	. .	ं ६६६,	ં વ્દ ર
फुटकर पद्य ं		(हि॰ं)	
फुटकरपर्द्य एवं कवित्त	—`	(हिं०)	६४३
फुटकरपाठ		(स०)	くりょ
फुटकरवर्शन '	*****	(स॰)	४७४
फुटकरसवेया	١	(हि॰)	
फूलभीतर्गी का दूहा	*******	(हि०)	६७५
,	ब	•	•
बंकचूलरांस '	जयकीर्त्ति '	(हि॰)	३६३
1	कमलकलश	(हि॰)	
वखतविलास '		(हि॰)	
बडाकक्का	गुलाबराय	(हि॰)	
बडाकक्का	_	(o) ६ ६३,	
बडादर्शनः -	•	o) : ३६५,	
वडी सिद्धपूजा [कर्मदह			
वदरीनाथ के छद	.d	(हि॰).	
वधावा	Continue	(हि॰) [']	
·		(,6,1)	- 1-

न्धर]					[ਸ	न्थानुक्स	থকা
ग्रन्थनाम -	लेखक	भाषा प्र	ष्ठ स॰	व्रन्थताम	नेवक	भाषा १	प्र स॰
बबावा व विनती		(हि॰)	६५५	वारहर डो	पाश्वदास	(हि॰)	₹ ₹
वन्दना जकड़ी	बुध जन	(हि॰)	3 88	वारहखडी	रामचन्द्र	(हि॰)	कर्रम्
वन्दना जकडी	विहारीदास (हि०) ४४६,	७२७	वारहखडी	सूरत	(हि॰)	322
वन्दे तू सूत्र ,		(গা॰)	६१६		6	, o१x	, 655
वन्दोमोक्षस्तोत्र		(स०)	६०५	वारहखडी	andered	(हि०,	₹ ₹२
वघउदयसत्ताचौपई	श्रीताल	(हि॰)	४१		४४१, ६	०१, ६१४	, ७३२
वंधस्यति		(स०)	५७२	वारहभःवना	रइधू	(हि॰)	११४
वनारसीविलास	वनारसीदास	(हि॰)	६४०	वारहभावना	श्रालु	(हि०)	६६१
६न्ह, ६६८, ७०	६, ७०५, ७२१,	७३४, ७६३,	, હદ્ય	वारहभावना	ज ₁सोमगिष्	(हि॰)	६१७
७६७		C - \		वारहभावना	जित चन्द्रसूरि	(हि॰)	900
वनारसीविलास के व	हुछ पाठ — (ाह०) ७५२,		वारहभावना	नवल	(हि॰)	24
वरहात्रतारचित्र		<i>(</i>	६०३			११४	, ४२९
वलदेव महामुनि सज	भाय समयसुन्दर	(हि॰) (C-)	६१६	वारहभाव ना	भगवतादास	(हि॰)	७२०
वलभद्रगीत	••	(हि॰)	७२३	वार्हभावनः	भूधरदास	(हि॰)	११५
वलात्कारगणगुर्वावि	ল —	(सo)	४७६	वारहभावना	दोलतराम (वि		
वलिभद्रगीत	#1735 7 57	२७२, (हि०)	४७४ ७३६	बारहभावना		(हि॰)	
_	श्रभयचन्द् —	(स० हि०)			३८३, ६४४, ६		
वसतराजशकुनावली वर्मनाच्या	श्रजैराज	•	643	स्वरमायकी सीरम	[मण्डलिचत्र]		प्रदेश
वसंतपूजा	અગ (101	(हि०) (हि०)	५०५ ६०६	वारहमासकी चौदस		— (हि०)	२ ६८६
वहत्तरकलापुरुप वाईसम्रभक्ष्यवर्णन	वा॰ दुर्लोचन्द	(१ह०) (हि०)		वारहमासा	गोविन्द् स्टब्स्	(हि०) (हि०)	५८५ ६६६
वाईसपरिपह वर्णन	भूधरदास			वारहमासा वारहमासा	चूहरकवि	(ভি০) (हি০)	
3141111461611	६०४, ६७०,			वारहमासा वा रहमासा	नसराज	(हि॰)	543
वाईसपरिपह		(हि॰)	૭૫	मारहणाताः	-		930 ;
			, ६४६	बारहमाहकी पश्चमी 	 ਜ਼ਿਕਤਾਰਿਕੀ	940	, ७८७ ५२५
बारहम्रक्षरी	_	(स०)	७४७	वारहमाह्या यद्भमा । वारहव्रतो का ब्यौरा	,460141J —	(हि॰)	× १ ६
बाहरस्रनुप्रेक्षा	-	(সা৹)	3F &		— « 		48x
बाहरग्रनुप्रेक्षाः	श्रवधू	(सर) (हि॰)	७२२	वारहसी चौतीसव्रतक वारहसी चौतीसव्रतपू	~		464 V 76
वारहग्रनुप्रेक्षा		(हि॰)	७७७	वालपद्मपुराण पट	•		
बारहखडी	दत्तलाल	(हि॰)	७४५	बाल्यकालवर्शान	नावाय पाक्वाप —	(हि॰)	¥23

प्रन्थानुक्रमणिका

भाषा ष्ट्रप्ट सं० । लेखक **ग्रन्थनाम** वालाविवोध [एामोकार पाठका ग्रर्थ] — (प्रा० हि०) ७५ (हि॰) 940 वनारसीदास बावनी ६५७ (हि॰) हेमराज वावनी ५२५ [मण्डलचित्र] वासठकुमार 388 (हि०) विमलकीत्ति वाहुवलीसज्भाय ६१६ (हि॰) समयप्रुन्द्र वाहुवलीसज्भाय ३५४ (स०) विम्बनिर्माण्विधि — (हिं०) ३५४, ६६१ विम्बनिर्माण्विधि (हि॰) ६७५ बिहारीलाल विह.रीसतसई (हि॰) ७२७ कृष्णदास विहारीसतसईटीका (हि॰) ६८७ बिहारीसतसईटीका हरिचरनदास (हि॰) ७०६ विहारीसतसईटीका (हि॰) २७६ वीजक [कोश] (सं०) 388 वीजकोश [मातृका निर्घट] ५११ (हि०) वीसतीर्थङ्करजयमाल जितसिंह (हि०) 900 वोसतीर्थं द्वुरजिनस्तुति ५१४ (स०) वीसतीर्थेङ्करपूना ५१६, ७३० वीसतीर्थंद्धुरपूजा थानजी अजमेरा (हि॰) **423**: — (हि॰) ४२३, ^{५३७} बीसतीर्थं द्धरपूजा (हि॰) 800 वीसतीर्थं द्धारस्तवन वीसतीर्थङ्करोकी जयमाल [बीस विरह पूजा]

हर्पकीर्त्ति ५६५, ७२२ (स०) X8X. वीसविद्यमान तीर्थेङ्करपूजा ६१७ (हि॰) वीसविरहमानजकडी समयसुन्द्र बीसविरहमानजयमाल तथा स्तवनविधि — (हि०) ५०५ ३६३ (सं०) बीसविरहमारापूजा (सं० हि०) ७६३ नरेन्द्रकीति वीसविरहमानपूजा (हि॰) ३३० वुधजन वुधजनविलास

- 1

भाषा पृष्ठ स० लेखक प्रन्थन। म बुधजन (हि॰) ३३२, ३३३ बुधजनसतसई ६०३ बुद्धावतारचित्र ७४ (हि॰) व्वतरामसाह वृद्धिविलास शालिभद्र द्वारा सक्तित (信。) ६१७ वृद्धिरास (हि०) ७५३ बुलाखीदास खत्रीकी वरात (हि०) ७३८ छोहल वेलि (स०) २३४ वैतालपचीसी कुंदकुदाचार्य (সা৽) ११५ वोधप्राभृत (हि०) ७५ वोधसार (स०) 333 व्रह्मचर्याष्ट्रक (हि०) ७५ ब्रह्मचर्यवर्णन भैया भगवतीदास (हि॰) ३३३, ७६० व्रह्मविलास

H

(स∘) ४०६ भक्तामरपञ्जिका मानतुंगाचार्थ (स०) ४०२ भक्तामरस्तोत्र ४०७, ४२५, ४२८, ४२८, ४३०, ४३१, ४३३, प्रह, प्र७२, ५७३, ५९६, ५९७, ६०३, ६०४, ६१६, ६२८, ६३४, ६३७, ६४४, ६४८, ६५१, ६५२, ६६४, ६४८, ६५१, ६५२, ६६४, ६६४, ६७०, ६७३, ६७४, ६७६, ६७७, ६८०, ६८१, ६८५, ६८६, ६६१, ६६३, ६६६, ७०३, ७०६, ७०७, ७३४, ७३७, ७४४, ७४२, ७४४, ७४८, ७६१, ७८८, ७८६, ७६६, ७६७ भक्तामरस्तोत्र [मन्त्रसहित] — (सं०) ६१२ ६३६, ६७०, ६९७, ७०४, ७१४, ७४१ भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमन्त्रसहित (सं०) 308 भक्तामरस्तोत्रकया पत्रालाल चौधरी (हि॰) २३५

अन्थनाम	तेखक	भाषा पृ	ष्ठ स० ∫
भक्तामरस्तोत्रकथा			
भक्तामरस्तोत्र ऋद्विम	त्रसहित नथमल	(हि॰) २३	४, ७०६
भक्तामरस्तोत्रक्था	विनोदीलाल	(हि॰)	२३४
भक्तामरस्तोत्रटीका	हर्षकीर्त्तिसूरि	(स∘)	308
भक्तामरस्तोत्रटीका	— ((स०) ४०६	, ६१५
भक्तामरस्तोत्रटीका	_	(स० हि०)	308
भक्तापरस्तोत्रपूजा	केशवसेन (स०) ५१५	, ५४०
भक्तामरस्तोत्रपूजा			1
भक्तामरपूजा उद्यापन	श्रीज्ञानभूषण्	(स०)	५२३
भक्तामरव्रतोद्यापनपूजा	विश्वकीत्ति	(स०)	५२३
भक्तामरस्तोत्रपूजा	श्रीभूषग्	(स०)	४४०
भक्तामरस्तोत्रपूजा		(स०)	५१६
		५२४	, ६९६
भक्तामरस्तोत्रभाषा	श्रवयराज	(हि॰)	७४५
भक्ताम् स्तोत्रभाषा	गगाराम	(स∘)	४१०
भक्तामरस्तोत्रभाषा	जयचन्द छावडा	(हि॰)	४१०
भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज (
४२६, ५	२६, ६०४, ६४	द, ६६१ ,	990,
७७४, ७१	१२		
भक्तामरस्तोत्रभाषा	नथमल	(हि॰)	७२०
भक्तामरस्तोत्रभाषा		(हि०)	४११
६१५, ६४४,	६६४, ६६६, ७	०६, ७५३,	७७४,
७६८, ७६६			İ
भक्तामरस्तोत्र [मण्डल	-		प्रकेष्ठ
भक्तामरम्तोत्रवृत्ति		(€.∘)	805
भक्तामरस्तात्रोत्पत्तिकथ	T —	(हि॰)	७०६
भक्तिनामवर्णन		(स० हि०)	प्र७१
भक्तिपाठ		(स०)	५७१
•	ሂ	६४, ६८६,	1300

लेखक भापा पृष्ठ स० प्रन्थनाम कनककीित्त (हि॰) भक्तिपाठ **६५१** पन्नालाल चौधरी (हि॰) भक्तिगठ 388 (हि॰) भक्तिपाठ ४५० भक्तिपाठसग्रह (स०) ४२६ भक्तिसग्रह [ग्राचार्य भक्ति तक] --(सं∘) そのよ (हि॰) भगतवत्सावलि ६०० (सं०) भगवतीग्राराधना शिवाचार्य ७६ भगवती ग्रारावनाटीका अपराजितसूरि (स∘) ७६ भगवती श्राराधनाभापा सदासुख कासलीवाल (हि॰) ७६ भगवतीसूत्र (সা০) (सं०) ४२५ भगवतीस्तोत्र भगवद्गीता [कृष्णार्जुन सवाद] — (हि॰) ৩६ ७६० भगवद्गीता के कुछ स्थल (सं०) ६७३ (हि॰) भजन भजनसंग्रह नयनकवि (हि॰) भजनसंग्रह -- (हि॰) ५६७, ६४३ भट्टाभिषेक (सं०) ५५७ भट्टारकविजयकीत्तिग्रप्टक (स०) ६८६ भट्टारकपट्टावलि हि॰) ३७४, ६७४ भडली (स०) २८६ भद्रवाहुचरित्र रल्लनन्दि (स०) १८३ भद्रवाहुचरित्र चंपाराम (हि॰) १५३ भद्रवाहुचरित्र १८३ नवलकवि (हि०) भद्रवाहुचरित्र (हि॰) १८३ भयहरस्तोत्र (स ँ) ३५१ भयहरस्तोत्र व मन्त्र ५७२ (स∘) ४२३ भयहरस्तोत्र (গাৎ) भयहरस्तोत्र (प्रा० हि०) ६६१

य्रन्थना म	लेखक	भाषा पृष्ठ	सं०
भयहरस्तोत्र		(हि॰)	६१६
भरतेशवैभव		(हि॰)	१५३
भर्नृहरिशतक	भनु हरि (स	ro) ३३३,	७१५
भववैराग्यशतक	-	(গা॰)	११७
भवानीवाक्य		(हि॰)	२८८
भवानीसहस्रनाम एवं कव	ਚ —	(सं०)	७६२
भविष्यदत्तकथा	त्र० रायमह	(हि॰)	३६४
५६४, ६४८, ७	४०, ७५ ^० , ७	ક્રષ્ટ, હહેર,	४७७
भविष्यदत्तचरित्र	प० श्रीधर	(स०)	१८४
भविष्यदत्तचरित्रभाषा प	त्रातात चौध	री (हि॰)	१८४
भविष्यदत्ततिलकासुन्दरीन	गटक न्यामत	नह (हि॰)	३१७
भव्यकुमुदचन्द्रिका [स	।गारधर्मामृतस्व <u>ो</u>	पज्ञटीका]	
प	० त्राशाघर	स०)	£3
भागवत		(स०)	६७५
भागवतद्वादशम्स्कधटीक		(स०)	१५१
भागवतपुराख		(स०)	१५१
भागवतमहिमा		(हि॰)	६७६
भागवतमहापुराख [सप्त	मसर्वंध] —	(सं०)	१५१
भाद्रपदपूजा	-	(हि०)	४७७
भाद्रपदपूजासंग्रह	द्यानतराय	(हि०)	५२४
भावत्रिभङ्गी ने	मचन्द्राचार्य ः	(शर) ४२	, ७००
भावदीपक कोधर	ाज गोदीका	(हि∘)	છછ
भावदीपक		(हि॰)	६६०
भावदोपिका	ऋष्णशर्मा	(स०)	१३६
भावदीपिकाभाषा		(हि॰)	४२
भावनाउग्रतीसी		(ग्रप॰)	
भावनाचतुर्विशति	पद्मनिन्द	(स०)	3€0
नोट—रचना के या			-
१ भविष्यदत्तचीपई भवि	ष्यदत्त पञ्चमी कथ	ा भविष्यदत्तप	ाञ्चमीरास

ग्रन्थनाम	ī		लेखक	भाष	n s	ध	सं०
भावनाचौत	ीसी	भ०	पद्मनन्दि	; (io)	, '	६३४
भावनाद्वा							
भावनाद्वानि	त्रशिकाटीव	न		. (io))	११५
भावनाद्वा	त्रशिका			(सं०)	११	¥,	६३७
भावपाहुड		कुद	कुंदाचार्य	۶)	(1°)	•	११५
भावनापर्च	सिवतोद्य	पन		- (सं॰)	l	५२४
भावनापद्ध	ति		पद्मतन्ति	₹ (⁸	सं०)	}	५७५
भावनावर्त्त	ोसी			- (स०)	६२	۵,	६३३
भावनासा	रसंग्रह	*	ामुण्डरार	य (स०) હ	, છ	६१५
भावनास्तो	প্ৰ	;	द्यानतराय	a (f	हे०))	६१४
भावप्रकाश	•		मानमिश्र	न (सं०)	t	३३४
भावप्रकाश				- (सं∘))	३ ७८
भावशतक		श्री	न्।गराज	r (सं०))	३३४
भावसंग्रह			देवसेन	; (i	ग०))	৩৩
भावसग्रह			श्रुतमुन्	i (:	ग०))	৬=
भावसंग्रह			वामदेव	ब (सं०)	ওട
भावसंग्रह				- (स०	৩ (۲,	३३४
भाषा भूष	ए	3	ासवत िं स	₹ (हि॰))	३१२
भाषाभूषर	Ţ	•	बीरजर्सि	₹			
भाष्यप्रदीव	r		कैंटयर	ट ([°]	स०)	}	२६२
भाष्त्रती			पद्मनाभ	,	स ०))	२८६
भुवनकीर्ति	τ		वूवराज	a (1	हे॰)	३८६
भुवनदोपव	ក	q	द्मावससूरि	t (स ०))	२८६
भुवनदोपि	का		_	- (स ०))	२५६
भुवनेश्वरी	स्तोत्र [सिद्धम	हामत्र]				
		वृश	वीधराच	ार्य (स ०))	₹४
भूगोलनिग	र्भाग		_	- (f	हे०)	३२३
स ¹ भूतकालचं	विसी		बुधजन	न (१	हे०))	३६५

ग्रन्थनाम लेखक भाषा पृष्ठ स० भूत भविष्य वर्तमानजिनपूजा पांडे जिनदास (६०) ४७० भूगालचतुर्वितिस्तोत्र भूपाल (स०) ४०२ ४११, ४२५, ४२८, ४३२, ५७२, ५६४, ६०५. ६३३, ६३७, ७३७

भूपालचतुर्विश्वतिस्तोत्रटीका स्त्राशाधर (स०) ४०१,४११ भूपालचतुर्विशतिस्तोत्रटीका विनयचन्द्र (सं०) ४१२ भूवालचौवीसीभाषा पत्रालाल चौधरी (हि॰ 823 **(हि०)** ४७७ भूपाल बीबीसी भाषा (स०) 388 भूवल (सं०) ४६६ भैरवनामस्तोव मलिपेणस्रि (स०) 388 भैरवपद्मावतीकल्प भैरवपद्मावतीकल्प (स०) ३५० (स०) ६१२, ६४६ भैरवाप्टक (हि॰) भोगीदासकी जन्मकुडली 300 (स०) १न५ पं० बल्लाल भोजप्रवन्ध (स०) २३५ भोजप्रवन्ध (हि॰) ७६७ भोजरासो उदयभान भीमचरित्र (स०) भ० रत्नचन्द् १५५ भृगुसंहिता (स०) २८६ भ्रमरगीत मानसिंह (हि॰) -- (हि० ६००, ७४४ भ्रमरगीत

म

मञ्जल विनोदीलाल (हि॰) ७२०
मञ्जलकलशमहामुनिचतुष्दी
रंगविनयगिष (हि॰ राज॰) १८५
मञ्जलपाठ — (स॰) ५६६
मञ्जलाष्टक — (स॰) ५६५
मङ्गलाष्टक — (स॰) ५२५

लेखक प्रन्थनाम भाषा प्रश्न सं० (fgo) मडपविधि 27% (iio) そりと मन्त्र व श्रीपधिका नुमसा (हि॰) 005 मन्त्र महौदधि प० महीधर (स०) ३५१, ५७७ (स०) ३४० मन्त्रशास्त्र (fgo) 340 मन्त्रशास्त्र (स०) मन्य 🗝 ग्रह 328 ६७४, ६६६, ७०३, ७३६, ७६७ (0:) मन्त्रसहिता ६०८ मन्त्रादिसग्रह (0F) 202 मक्षीपार्वनायस्तवन जोधरा म्मुनि (हि०) ६१८ मच्छावतार [चित्र] €0₹ (हि॰) X88 मिएारताकर जयमाल मग्रुवसधि (ग्रप०) ६४२ जिनदेवसूरि (स०) 323 मदनपराजय (গাৎ) 325 मदनपराजय (हि॰) मदनपराजय स्वरूपचन्द 385 मदनमोदनग्रह्मशतीभाषा ख्रत्रपति जैसवाल हि॰) ३३४ मदनविनोद (सं०) मदनपाल ३०० मबुकैटभवध [महिपासुरवध] (सं०) २३४ चतुभू जदास (हि॰) ६३६ मघुमालतीकथा मध्यलोकपूजा (स∘) 227 **(हि०)** श्रचल होति मनोरधमाला ७६४ ([go) मनोरथमाला 95 मनोहरपुराको पीढियोका वर्एन -(हि॰) 320 मनोहर मिश्र (हि॰) मनोहरमञ्जरी しまも मरकतविलास (हिo) 95 y पञालाल मर्गकरडिका (प्रा॰ हि॰) **४२** .

	4		
प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	सं०
मरुदेवोकी सज्भाय ऋ	धि लालचन्द	(हि॰)	४५०
मह्मिनाथपुराग्	सकलकीर्त्ति	(स०)	१५२
मिल्लिनाथपुराएाभाषा	सेवाराम पाटनी	(हि०)	१५२
मल्हारचरित्र		(हि॰)	७४१
महर्षिस्तवन		(स०)	६५८
		४१३,	४२६
महर्षिस्तवन	***********	(हि॰)	४१२
महागरापितकवच		(स०)	६६२
महादण्डक		(हि॰)	५३४ ∫
महापुराएा	जिनसेनाचार्य	(स०)	१५३
महापुराग [सक्षित]	Officials.	(स∘)	१५२
महापुराएा महा	कवि पुष्पदन्त	(अप०)	१५३
महाभारतविष्णुसहस्र	नाम —	(स∘)	६७६
महाभिषेकपाठ	plene	(सं०)	६०७
महाभिषेकसामग्री	-	(हि॰)	६६८
महामहर्पिस्तवनटीका	-	(सं०)	४१३
महामहिम्नस्तोत्र	~~	(स∘)	४१३
महालक्ष्मीस्तोत्र	physical and the state of the s	(सं०)	४१३
महाविद्या [मन्त्रोका	सग्रह] —	(स∘)	३५१
महाविद्याविडम्बन		(सं०)	१३५
महावीरजीका चौढा	ल्या ऋषि लालच	द (हि०)	<u>የ</u> ጀ0
महावीरछन्द	शुभचन्द	(हि॰)	३८६
महावीरनिर्वाग्पपूजा		(स०)	५२६
महावीरिनर्वास्यकल्य	गाणपूजा —	(स०)	५२६
महावीरनिर्वाग्।कल्य	ाग्यकपूजा —	(हि॰)	३६८
महावीरपूजा ं	वृन्दावन	(हि०)	५२६
महावीरस्तवन	जितचन्द्र		
महावीरस्तवनपूजा	समयसुन्दर	(हि०)	७३५
महावीरस्तोत्र	भ० ग्रमरकीर्त्त	(सं०)	७५७

प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	स॰
महावीरस्तोत्र	स्वरूपचन्द्	(हि॰)	५११
महावीराष्ट्रक	भागचन्द	(सं०)	४१३
महाशान्तिकविधान	प० धर्मदेव	(स०)	६२५
महि्मनस्तवत	जयकीर्त्ति	(सं ॰)	४२५
महिम्नस्तोत्र	******	(स०)	४१३
महीपालचरित्र	चारित्रभूषण		१८६
महीपालचरित्र	भ० रत्ननन्दि		१=६
महीपालचरित्रभाषा	नथमल	(हि॰)	१८६
मागीतु गीगिरिमडलपू	जा विश्वभूषण	(स०)	५२६
माणिक्यमालाग्रन्थत्रश्		संग्रहकर्ता—	•
র০ হ্রা	नसागर (स	प्रा० हि०)	६०४
माताके सोलह स्वप्न		(हि०)	४२४
माता पद्मावतीछन्द	भ० महीचन्द्	(सं० हि०)	५६०
माधवनिदान	माधव	(सं०)	३००
माधवानलकथा	श्रानन्द	(स०)	२३५
मानतु गमानवति चौ	पई मोहनविज	य (सं०)	२३५
मानकी वडी वावनी	मनासाह	(हि॰)	६३८
मानवावनी	मानकवि	(हि॰) ३३४,	६०१
मानमञ्जरी	नन्दर।म	(हि॰)	६५१
मानमञ्जरी	नन्ददास	(हि॰)	२७६
मानलघुवावनी	मनासाह	(हि०)	६३८
मानविनोद	मानसिंह	(सं०)	३००
मानुपोत्तरगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	४६७
मायाब्रह्मका विचार		(हि॰)	७६७
मार्कण्डेयपुराएा		(स०) १५३,	
मार्गेगा व गुगस्थान	वर्णन —	(সা৹)	४३
मार्गसावर्सन		(সা৹)	
मार्गगाविधान		(हि॰)	
मार्गगासमास	_	(সা৹)	

प्रन्थनाम	लेवक	भाषा ग्रम्न सं०
मातीराती	जिनद!स	(চি৽) ২৩६
मिच्छादुाकउ	त्र० जिनदास	(હિં૦) ६५૬
मित्र विलास	घासी	(हि०) ३३४
मिथ्यारागडन	वरतराम	(feo) 5=, 450
मिथ्य। स्वरा छन	*****	(ફિંગ) ઝદ
मुकुटसप्तमीकथा	प० अभ्रदेव	(मं०) २८८
मुकुटसंसमी 🗀	खुशालचन्द	(दिंक) २४४, ७३१
मुहुदसमगित्रतोद्यापन	-	(ग०) ४२७
मुक्तावलिक् या	approximately.	(म) १३१
मुक्तानिवक्या	भारामल	(હિં) કદ દ
मुक्तावनिगीत	म रल हीति	(१८०) ६८६
मुक्ताविल [मण	. ।चित्र]	424
मुक्तानियूजा व	र्णी मुपसागर	(स०) ४२५
मुक्तायलियूजा		557,5f¥ (of)
मुक्तावलिविधानकवा	श्रुतसागर	(ग०) २३६
मुक्ता । लियतगथा	सोमत्रभ	(स०) २३६
मुक्तावनिविधान स्या		११५ (०१॥)
मुक्ता रिवयतकथा	खुशालचन्द	(दि०) २४५
मुक्तावलियतवथा	victoria.	(हिंग) ६७३
मुक्ताविल व्रतको तिधि	ावा —	(हि॰) ५७१
मुक्तानियत (जा		(स०) ५२७
मुक्तावलित्रति थान		(સં૦) પ્રરુ
मुक्तावलियतोयापनपूर	π —	८६४ (६५)
मुक्ति रीहरगीत		(हि॰) ७६८
मुखावलोपनकथा		(स०) २४३
मुनिराजका वारहमास	ır —	(हिंग) ७३७
मुनिसुवतछन्द	भ० प्रभाचन्द	(स० हि०) ५५७
मुनिसुव्रतनायपूजा	-	30X (0B)
मुनिसुव्रतनायस्तुति	***************************************	(मप०) ६३७

पन्यनाग	निपद	માયા ગુ	3 म•
मुनिस्कृतव्याम	न० इत्राहास	(110)	{ %}
षुतिनुत्रतपुरान <u>ा</u>	इन्द्र जीत	(fr =)	323
मुनिनुत्रन जिली	रे गप्रदा	(fao ·	
पुनीवारी है। बनमान	2000	(Ha)	४५६
	4 35, 4	JE, {12,	ક પુરુ
मुनीध्यसमा स्वनाः।	-	(41+)	£ \$ 3
मुनीनगारी समार	ं अब जिनहास	(fre)	2.52
		६२३	, 320
मुनात्मत्वा वदमान	•	([4=)	181
मुप्रियान स्वाधि	पापार्व देवसम्ब	fira)	}
मुरना । समिन	-	([d)	3=8
मुटर्न हो तक	गहार्थ	(ij a)	480
नुन गुनान्ती	वरमहंनवरित्राः	(द्यधार्य—	
મુટુનેલું (લાવ-લે	शहराचार्य	$(i_{\mathcal{E}^{\omega}})$	J⋛≒
मु(नंबुरात्र तंत्र	****	(H . (4)	₹₹०
मुद्रानिदर्	11000110	(નું ય)	₹₹4
द्रशाना <u>र</u> ः	****	(42)	ા ર્
पूर्व र नवास	Principle:	(40)	}1=
मूलनप रोपट्टा ग्रॉन	Heup	(1,2)	232
तु समारक्षेत	आ॰ वसुनिद्	(থান নন)	32
न् । संद्यशेष	महत्त हो। त	(H o)	υĒ
मूनायन्दनाया	"હયનફાસ	$(f_{i}(s))$	5.0
मू ना सारमाया	*	(i30)	ÇÞ
मृनापुत्र न्द्रशास	*****	$(\hat{l}_{ij}^{\sigma} \circ)$	२३१
मृत्युगहोत्सा	*******	(स०) ११४,	テログ
मृत्युगरीततवभाषा	सदामुख कासलीब	ાલ—	
		(હિંહ)	
મૃત્યુમहोत्मयभाषा	mospus,	(हि॰)	
•		\$ \$?,	७१र

]			
प्रन्थानुक्रमणिका	.। तेखक	भाषा पृष्ठ	सं०।	Ŋ
ग्रन्थनाम	_	(हि॰)	७३५	मो
मेघकुमारगीत	पूनी	७४६, ७५०,	1	मौ
	_	, हि॰)	६१७	मौ
मेघकुमारचौढालिया	कनक्सोम	(हि॰)	४७७	मौ
मेघकुमारचौपई		(हि॰) (हि॰)	-	ਸੰ
मेघकुमारवार्ता		(१६०) हि०)		मं
मेचकुमारसज्भाय	समयसुन्दर			। ਸ
घदूत	कालिदास	(4 o)	(40	"
मेघदूतटीका	परमहसपरित्राजन			
मेचमाला	-	(स ॰)		2
मेघमालाविधि			५२७	
मेघमालाव्रतकथा	श्रुतसागर	(स०)		1
मेघमालाव्रतकथा		(सं०) २ - १		1
मेचमालावतकथा	खुशालचन्द	(हि॰) २३९	६, २४४	1
मेघमालाव्रत	[मण्डलवित्र]—		५२५	١.
मेघमालाव्रतोद्यापन	क्या —	(सं०)		١.
मेघमालाव्रतोद्यापन		(स०)	५२७	
मेघमालाव्रतोद्यापन		(स० हि०)	५१७	١
			५३६	- 1
मेदिनीकोश		(सं ०)	२७६	
मेरूपूजा	सोमसेन	(स०)	५३७ (۱,
, मेरुपक्ति तपकी व	तथा खुशालचन्द	(हि॰)) ५१६	١ ا
मोक्षपैडी	वनारसीदास) n	,
4		६४३	, ७४६	
मोक्षमार्गप्रकाशव	ह प॰ टोडरमल	_র (रাज	o) 5	•
मोक्षशास्त्र	उमास्वा र्म	ते (स॰) ६६	8
मोर्पिच्छधारी ([कृष्ण]'के कवित्त व	हपोत (हि॰) ६७	3
मोरपिच्छघारी	कृष्ण] के कवित्त ध	र्मदास (हि॰) ६७	3
मोरपिच्छधारी [कृष्ण]के कवित्त वि	चित्रदेव ः	हु०) ६७	3
मोहम्मदराजार्क		– (हि	·) {•	0

, ग्रन्थनाम	तेखक	भाषा पृष्ठ	सं॰
मोहविवेकयुद्ध	वनारसीदास ((हि०) ७१४,	७६४
मौनएकादशीकथा	श्रृतसागर	(सं०)	२२५
मौनएकादशीस्तवन	समयपुन्दर	(हि॰)	६२०
मौनिव्रतकया	गुण्भद्र	(स०)	२३६
मीनिव्रतकथा	_	(सं०)	२३७
मीनिव्रतविधान	रत्नकीर्त्ति	(स० ग०)	२४४
मौनिव्रतोद्यापन		(स∘)	प्र१७

य

ş	ान्त्र [भगे हुए व्यक्ति	के वा	पस ग्राने	का]			Ę	्र इ०३
	- ग्रन्त्रमन्त्रविधिफल				(f	हे०)	3	१५१
	पन्त्रमन्त्रसंग्रह				(सं०)	७०१	٠, ١	336
	पन्त्रसग्रह				(स०)	;	३५२
						६१७	9, (७६५
	यक्षिग्गीकल्प				(सं०)	;	३५१
	यज्ञकीसामग्रीका व्यौ	रा			(हि०)	,	ሂξሂ
١	यज्ञमहिमा				(हि॰)		ሂξሂ
	यतिदिनचर्या		देवर	नूरि	(प्रा॰)		50
	यतिभावनाप्टक	স্থা	° कुन्द्		((शर)		४७३
	यतिभावनाष्ट्रक					(स०)		६३७
	यतिग्राहार के ४६	दोप			((हि॰)	,	६२७
	यत्याचार		० वसुन	न्दि		(सं ०)	ı	50
	यमक					(स०))	४२६
	(यमकाष्टक)							
	यमकाष्ट्रकस्तोत्र	भ०	अमर र्क	ित्त	(स०)	४१	₹,	४२६
	यमपालमातगकी व			_		(सं०)		२३७
•	यमपालमातप्यः। यशस्तिलकचम्पू		सोमदेव	सिरि		(सं ०		१५७
ł	वशास्त्रलमम्पू		241.0 2	.0.,				

श्रुतसागर

(स∘)

(सं॰)

१५७

१५८

यशस्तिलकचम्पूटीका

यशस्तिलकचम्पूटीका

ग्रन्थना स	लेखक	भाषा पृष्ट	, स॰
यशोधरकया [यश	ोधरचरित्र] खुशाल	वन्द् (हि॰)	१६१
			७११
यशोधरचरित्र	ज्ञानकीर्त्ति	(स ०)	१६२
यशोधरचरित्र	कायस्थपद्मनाभ	(स ०)	१८६
यशोधरच रत्र	पूरणदेव	' स ०)	१६०
यशोधरचरित्र	वादिराजसूरि	(स ०)	१ड१
यशोधरचरित्र	वासवसेन	(स०)	१६१
यज्ञोधरचरित्र	श्रतसागर	(सं०)	१६२
यशोधरचरित्र	सक्तकीर्त्ति	(स∘)	१८८
यशोधरचरित्र	पुष्पद्नत	ग्रप॰) १८८	६४२
यशोवरचरित्र	गारवदास	(हि॰ प॰)	१३१
यशोबरचरित्र	पन्नालाल	(हि॰)	3\$
यशोधरचरित्र		(हि॰)	१६२
यशोधरचरित्रटिप्प	ारा प्रभाचन्द्र	(स०)	१६२
यात्रावर्णन		(हि॰)	३७४
यादववशावलि		(हि॰)	६७६
युक्त्य नु शासन	त्रा० समन्तभद्र	(स०)	३६१
युक्त्या नु शासनटीक	ग विद्यानन्दि	(स०)	१३६
युगादिदेवमहिम्नस	तोत्र —	(स०)	४१३
यूनानी नूसखे		(स०)	६६१
योगचितामिए।	मनू सिंह	(स∘)	३०१
योगचितामिए	उपाध्याय हपेकीत्ति	(स∘)	३०१
योगचितामरिए		(स०)	३०१
योगचितामिएवी	तक <u>—</u>	(स॰)	३०१
योगफल	***************************************	स॰)	
योगविन्दुप्रकरण	ञा०हरिभद्रसूरि		1
योगभक्ति		(स॰) ६३३,	
योगभक्ति		(সা৹)	
योंगभक्ति	पत्रालाल चौधरी	(हि॰)	1

लेखक प्रन्थनाम भाषा पृष्ठ स० वररुचि (स०) योगशत ३०२ (स०) योगशतक 307 (हि०) ३०२ योगशतक योगदातटीका (सं०) ३०२ हेमचन्द्रसूरि योगशास्त्र (ব॰) 225 योगशास्त्र (स∘) ११६ योगसार योगचन्द (स∘) **404** योगीन्द्रदेव (म्रप॰) ११६, ७५५ योगसार योगसारभाषा नन्द्राम (हि॰) ११६ (हि०) ११७ योगसारभाषा वुधज्ञन पत्रालाल चौवरी (हि॰ग॰) ११६ योगसारनापा योगस।रभापा (हि॰प॰) ११७ योगसारसंग्रह (सं०) ११७ योगिनीकवच (स०) 505 योगिनीस्तोत्र (सं०) 830 योगीचर्चा महात्मा ज्ञानचन्द (ग्रा०) ६२८ योगीरासो योगीन्द्रदेव \(ग्रप०) ६०३ ७१२, ७४= योगीन्द्रपूजा (सं०) ६७६ ₹ रङ्ग वनाने की विवि (हि॰) ६२३ रक्षावंधनक्या (स०) २३७ (हि॰) २२० त्र॰ ज्ञानसागर रक्षावयनकया (हि॰) २४३ रक्षावयनकया नाथुराम रक्षाविधानकथा — (स॰) २४३, ७३१ रघुनायविलाम रघुनाथ (हि॰) 388 रघुवशटीका मल्लिनाथसूरि (सं०) १६३

गुर्णावनयगणि

(स०)

\$88

रघुवंशटीका

(सं०)

380

N. 41341114	J,			
प्रन्थनाम	लेखक	भाषा ष्ट्रप्ट	सं०	प्रन्थन।म
रघुवशटीका	्समयसुन्दर	(4;°)	१६४	रत्नत्रयपूजा
रघुवशटोका	सुमतिविजयग णि	(सं०)	१६४	रत्नत्रयपूजा
रघुवशमहाकाव्य	कालिदास	(सं०)	£38	7.51
रतिरहस्य		(हि॰)	330	
रत्नकरङश्रावकाच	गर समन्तभद्र	(सं०)	५ १	रत्नत्रयपूजा
		६६१,	७६५	रत्नत्रयपूजा
रत्नकर डश्रावकाच	नार प० सदासुख का	सतीवाल	}	रत्नत्रयपूजा
•	(हि॰	गद्य)	52	रत्नत्रयपूजाज
रत्नकरंडश्रावकार	बार नथमल	(हि०)	5 3	रत्नत्रयपूजा
रत्नकरडश्रावकाच	बार सघी पन्नालाल	(हि॰)	द ३	
रत्नकरंडश्रावका	वारटीका प्रभाचन्द्	(स०)	द २ (रत्नत्रयपूजा
रत्नकोष		(सं०) ३३४,	3:0	रत्नत्रयपूजा
रत्नकोप		(हि॰)	३३५	
रत्नत्रयउद्यापनपू	जा —	(स €)	५२७	रत्नत्रयपूजा
रत्नत्रयकथा	त्र० ज्ञातसागर	(हि॰)	७४०	रत्नत्रयमण्डत
रत्नत्रयका महार्ध	विक्षमावसी ब्रह्मसे	न (स०)	७५१	रत्तत्रयमण्डत
रत्नत्रयगुराकथा	प० शिवजीलाल	(सं०)	२३७	रत्नत्रयविधा
रतन्त्रयजयमाल		(গাং)	५२७	रत्नत्रयविधा
रत्नत्रयजयमाल		(सं०)	५२८	रत्नत्रयविधा
रत्नत्रयज्यमाल	ऋपभदास बुधदास	त (हि ०)	५१६	रत्नत्रयविधा
रतत्रयजयमाल	-	(শ্ব৭०)	५२८	रत्नत्रयविध
रत्नत्रयजयमाल	-	(हि॰)	४२६	रत्नत्रयविधि
रत्नत्रयजयमाल	भाषा सथमल	(हि॰)	५२५	रत्नत्रयन्नतन
रत्नत्रयजयमाल	· ·	(সা৹)		
रत्नत्रयपाठविधि			५६०	रत्नत्रयव्रत
रत्नत्रयपूजा	प० त्राशाधर	=	४२६	रत्नत्रयव्रतो
रत्दत्रयपूजा	केशवसेन	• •		रत्नश्रयव्रती
रत्नत्रयपूजा	पद्मनिद्	• •		
		५७१	८, ६३६	रत्नदीपक

लेखक भाषा पृष्ठ सं० थनाम पः नरेन्द्रसेन (स०) X88 यपूजा (सं०) ५१६ ायपूजा प्रह, प्रवे७, प्रप्र, प्र७४, ६०६, ६४०, ६४६, ६४२, ६६४, ७०४, ७०४, ७४६, ७६३ (स० हिं०) प्रश्व गयपूजा (प्रा॰) ६३४, ६४४ ग्रयपूजा (हिं०) 430 त्रयपूजा ऋपभदास ऋपभदास (ग्रप०) ५३७ त्रयपूजाजयमाल (हि॰) त्रयपूजा द्यानतराय 855 ५०३, ५२६ (हि॰) त्रयपूजा खुशालचन्द 382 (हि०) त्रयपूजा 382 ५३०, ६४५, ७४५ त्रयपूजाविधान (संव) ६०७ त्रयमण्डल [चित्र] **474** त्रयमण्डलविधान (हि॰) ५३० त्रयविधान (सं०) 义るの रब्नकीर्त्त (स०) २२०, २४२ त्रयविधानकथा त्रयविधानकथा श्रुतसागर (Ho) २३७ त्रयविधानपूजा रत्नकीर्त्ति (स ०) ५३० त्रयविधान टेंकचन्द (हि॰) X38 त्रयविधि आशाधर (सं०) २४२ त्रयव्रतकथा [रत्नत्रयकथा] लितकीत्ति (सं०) ६४५, ६६५ **न्त्रयत्रत विधि एवं कथा** (हि॰) ६६७ नत्रयव्रतोद्यापन केशवसेन (सं०) 382 नत्रयव्रतोद्यापन (सं०) **\$**\$\$ ५३१, ५३६ ५४० गणपति

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृ	ष्ठ सं०	प्रस्थनाम	नेखक	भाषा पुर	३ स॰
रत्नदीपक	guyahnang	(स०)	२६०	रसप्रकरण		(स∘)	३०२
रत्नदीपक	रासकवि	(हि॰)	३५५	रसप्रकरण	*****	(हि॰)	३०२
रत्नमाला	श्रा० शिवकोटि	(स०)	53	रसमञ्जरी	शालिनाथ	(स∘)	३०२
रत्नमजूसा		(स∘)	३१२	रसमजरी	शाङ्ग [°] धर	(स∘)	३०२
र त्नमजूपिका		(सं०)	३१२	रसम गरी	भानुदत्त मिश्र	(हि॰)	348
रत्नावलिन्नतकया	गुणनन्दि	(हि॰)	२४६	रसमञ्जरीटीका	गोपालभट्ट	(स॰)	378
रत्नावलित्रतकथा	जोशी रामदास	(स०)	२३७	रससागर		(ફિ∘)	ξsε
रत्नावलिन्नतविधान	त्र० कृष्णुदास	(हि०)	५३१	 रसायनविधि		(हि॰)	५६०
रत्नावलिन्नतोद्यापत		(स∘)	४३६	। रसालकु वरकी चीपई	नरवरु कवि	(हि॰)	২৩৩
रत्नावलिन्नतोकी ति	थियो के नाम —	हि०)	६५५	रसिकप्रिया		(हि॰) ६७६	5 80
रथयात्रावर्शन	**************************************	(हि॰)	७१६	रसिकप्रिया		(हि॰) <i>७७</i> १	
रमलज्ञान		(हि॰ ग॰)	२६१	रागचीतएकादूहा		(हि∘)	६७५
रमलशास्त्र	प० चितामणि	(स०)	२६०	रागमाला		(स॰)	३१५
रमलशास्त्र) Total and the second /del>	(हि॰)	२६०	रागमाला	श्यामसिश्र	(हि॰)	७७१
रयणशास्त्र	श्रा० कुन्द्कुन्द	(গা॰)	58	रागमाला के दी	जैनश्री	(हि॰)	ওব০
रविवारकया	खुशालचन्द	(हि॰)	७७५	रागमाला के दोहे	ज न्मा	(हि॰) (हि॰)	७७७
रविवारपूजा		(स०)	४३७	रागमाला क दाह	_	(हि॰)	३ १५
रविवारव्रतमण्डल [-	(C. .)	५२५	रागु ग्रासावरी	रूपचन्द	(ग्र प०)	६४१
रविव्रतकथा	श्रुतसागर	(हि॰) (च्य	२३७	रागो के नाम	(1) 1· 4	(हि॰)	₽υυ
रविव्रतक्या	जयकीर्त्ति सम्बद्धाः केलेल्यक	(हि॰) m (डि॰)	\$\$\$	राजनीति कवित्त	देवीदास		७५२
रावन्नतकथा [रावव	ारकथा] देवेन्द्रभूष	ास्स (हि∘)	₹ ₹ ७	राजनीतिशास्त्र		(सं०) ६४०,	
रविव्रतकया	भाफकवि (हि॰	Ta) 2310	909 ueu	राजनीतिशास्त्र	ज सुराम		३३६
	•	•	•	राजनीतिशास्त्रभाषा	देवीदास	(हि॰)	३३६
रविव्रतकथा रविव्रतकथा	भानुकी,त्त	(हि॰) (हि॰)	७५०	राजप्रशस्ति	7414171		₹७४
रायत्रसम्बा	_	•	२४७ , ७५३		£	` '	६२०
रविव्रतोद्यापनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	५०५ (सं०)	, ७२२ ५३२	राजा चन्द्रग्रसकी चौपः राजादिफल	इ अठ गुलाल		२६१
राजप्रतायानगरूना रसकौतुक राजसभार		(त०) (हि०)	. २२२ ५७६	राजा।दफल राजा प्रजाको वशमे	 हरके ह्या गव्य		५७१
र सकोतुकराजसभारङ	•	(हि॰)	७६२	राजारानीसज्भाय	 	•	~~` {\%
***************************************	. -	1.6.1	1	21.11/1.11/1.11/1.		(162)	

व्रन्थानुक्रमणिका]					लेखक	भाषा ष्ट्रघ	सं०
ग्रन्थनाम	4.		सं०	श्रन्थनाम 	•	(हि॰ग॰) ४	
राज्यपन्त्रीमी लाल	वद् विनोदीलाल	(हि॰) ६	- 1	रामायगुमहाभारतकथाप्रश	11tit -		६०३
६१३, ६२२,	६४३, ६५१, ६८	३, ६५५, ७	₹₹,	रामावतार [चित्र]		(সা৹)	४३
७५३				रायपसेग्रीसूत्र		•	७६३
राजुलमङ्गल			७५३	राशिफल		\ /	३३०
राजुलकी सज्भाय	जिनदास		७५७	रासायनिकशास्त्र		()	२६१
राठौडरतन महेश दशे	ोत्तरी —	` ` .	२३५	राहुफल		(,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	দ ধ
राडपुरास्तवन		(हि॰)	४५०	रक्तविभागप्रकरण	-	(स०) (च्य ः)	६४२
राडपुरका स्तवन	समयसुन्दर	(हि॰)	६१६	रिट्टगोमिचरिउ	स्वयभू		२४७
रात्रिभोजनकथा		(स०)	२३८	ह क्मिश्यक्या	मद्नकीचि	(€0)	
रात्रिभोजनकथा	किशनसिंह	(हि॰)	२३८	रुवमिणकुष्णजी को रास	ते तिपरदास		990
रात्रिभोजनकथा	भारामल	(हि०)	२३८	रुवमिएाविधानकथा	छत्रसेन	(सं०) २४४,	, २४६
रात्रिभौजनकथा		(हि॰)	२२८	ह्वमिण्विवाह	वल्लभ	(हि॰)	ওടও
रात्रिभोजनचोपई		(हि॰)	388	रुक्मिंग्गतिवाहवेलि पृ	ध्वीराज राठौ	इ (हि॰)	३६४
रात्रिभोजनत्यागवर्ण	न —	(हि॰)	58	रुग्नविनिश्चय		(सं∘)	७३३
राधाजन्मोत्सव		(हि०)	58	_ि-नि-नि-नि-नि-नि	० विश्वभूषण	(सं०)	७३३
राधिकानाममाला		(हि॰)	४१४			(सं०)	२६१
रामकवच	विश्वामित्र	(हि॰)	६३७		गोपालदास	(स०)	२७६
रामकृष्णकाव्य	देवज्ञ प० सूर्य	(स०)	१६४			(सं०)	२६२
रामचन्द्रचरित्र	बधीच•द	(हि॰)	६६१		-	(सं०)	२३६
रामचन्द्रस्तवन		(स०)				(सं०)	११७
रामचन्द्रिका	केशवद्।स	(हि॰)		े ि िन्सिनाथ	चन्द्रप्रभ वर्द्धमा	न एवं पार्श्वन	ाथ] —
रामचरित्र [कवित्त	बध] तुलसीदास	(हि०)					७५३
रामवत्तीसी '	जगनकवि			1 2 5			७६३
रामविनोद	रामचन्द्र	(हि॰)			होटिपुजा े विश्व	भूषण (सं०)	५३२
रामविनोद	रामविनोद			3	गगाराम	/-: \	५३२
रामविनोद		(हि॰)			देवेन्द्रकीर्त्त		
रामस्तवन	-	(स०)	_	1.	4 4. X 44. v	. (सं०)	
रामस्तोत्र		(स०)			त्र० जिनदास		
रामस्तोत्रकवच		(स०) ६०	१ रैदव्रतकथा	Me Intilli		

लक्ष्मीस्तोत्र

लेखक भाषा पृष्ठ सं० प्रन्थनाम देवनन्दि (भ्रप०) रोहिगीचरित्र रोहिएगिविधान मुनि गुणभद्र (ম্ব৭০) (स०) रोहिग्गीविधानकथा देवनन्दि (भ्रप०) रोहिगोविधानकथा रोहिस्गीविधानकथा व सीदास हि०) श्रा० भानुकीर्त्त (सं०) रोहिएीय्रतकथा ललितकीत्ति (स०) रोहिणीव्रतकथा (ग्रप०) रोहिसीव्रतकथा (हि॰) रोहिग्गीव्रतकथा ब्र॰ ज्ञानसागर (हि०) रोहिगोव्रतकथा (हि॰) रोहिगोव्रतकथा रोहिणीवतपूजा केशवसेन छुष्णसेन (स०) ५१२, ५१६ रोहिस्सीवतपूजामडल [चित्रसहित] - (स०) ५३२, ७२६ रोहिग्गीव्रतमण्डलविधान रोहिगीव्रतपूजा (हि॰) ६३८ रोहिणीव्रतमण्डल [चित्र] **474** रोहिगोव्रतोद्यापन (स∘) ५१३ ५३२, ५४० रोहिग्गीव्रतोद्यापन (हि॰) 480 ल लघनपथ्यनिर्णय (सं०) 303 श्रीलद्दमण् लक्ष्मगारिसव (स∘) ३०३ लक्ष्मीमहास्तोत्र पद्मनन्दि (स०) ६३७ पद्मप्रभदेव (स∘) लक्ष्मीस्तोत्र 888 ४२३, ४२६, ४३२, ५६६, ५७२, ५७४, ५६६, ६४४, ६४८, ६६३, ६६५, ६७०, ७०३, ७१६ लक्ष्मीस्तोत्र (सं०) 808 ४२४, ६४०, ६४५, ६५०

(हि॰)

(हि॰)

चानतराय

लग्नचन्द्रिकाभाषा स्योजीराम सोगानी

लेखक भाषा पृष्ठ सं० **प्रन्थनाम** लग्नचन्द्रिकाभाषा (स०)⊨ २४३ वद्ध मानसूरि (सं∘) ६२८ लग्नशास्त्र लघुग्रनन्तव्रतपूजा (स०) २४० लघुग्रभिपेकविधान (9P) २४३ — (स०) ५१४, ५३३ ७५१ लघुम्लयाण लघुकल्यागापाठ (हि०) 3 🕫 888 लघुचाएाक्यराजनीति चाणिक्य (स०) 335 ६४५ ७१२, ७२० २४५ भट्टोत्पल लघुजातक (स०) \$35 २२० लघुजिनसहस्रनाम (सं०) ६०६ 355 लघुतत्त्वार्यसूत्र (सं०) ७४०, ७५२ 430 हपेकीतिसूरि लघुनाममाला (40) २७६ लघुन्यासवृत्ति (स०) २६२ लघुप्रतिक्रमण् (সা৽) ७१७ लघुप्रतिक्रमण (प्रा॰ सं॰) ५७२ (हि०) लघुमङ्गल ह्रपचन्द् **६२**४ (हि॰) लघुमञ्जल 310 लघुवाचग्गी (सं०) ६७२ लघुर्रावद्गतकथा त्र॰ इ नसागर (हि॰) 288 लघुरपसर्गवृत्ति (स०) 743 लघुशातिकविधान X₹₹ (स०) लघुशातिकमन्त्र ४२४ (स०) लघुशातिक [मण्डलचित्र] प्र२४ लघुशातिस्तोत्र (स०) ४१४, ४२३ लघुश्रेयविधि [श्रेयोविधान] अभयनिद (सं०) ሂ३३ लघुसहस्रनाम (संo) ₹3₹ ६३७, ६६व लघुसामायिक [पाठ] (सं०) ५६२ ३६२, ४०५, ४२६, ५२६ ७५१ लघुसामायिक (सं० हि०)

प्रन्थानुक्रमणिका

288

135

५३३

433

47 = 04 ~ F F F	लेखक	भाषा पृष्ठ	सं०
ग्रन्थनाम स्वयस्याग्रिक	₩₩	भाषा ष्टुष्ठ (हि०)	७१८
लघुसामायिक 			७१६
लघुसामायिकभाषा	महाचन्द	(हि॰) (न.)	
लघुसारस्वत ऋनुभू		(स०) (नः)	२६३
लघुसि द्वान्तकौ मुदी	वरद्राज	(सं०) (ः)	२६३
लघुसिद्धान्तकौस्तुभ		(सं०)	२६३
लघुस्तोत्र		(स∘)	४१५
लघुस्नपन		(सं०)	५३३
लघुस्नपनटोका	भावशर्मा	(सं०)	प्रवृष्
लघुस्नपनिवधि		(सं०)	६५८
लघुस्वयभूस्तोत्र	समन्तभद्र	(सं०)	५१५
लघुस्वयभूस्तोत्र		(स०) ५३७,	४३४
लघुशब्देन्दुशेखर		(सं०)	२६३
लव्यिविधानकथा	प० श्रभ्रदेव	(सं०)	385
लव्धिविधानकथा	खुशालचन्द	(हि॰)	२४४
लव्धिविधानचौपई	भीषमकवि	(हि॰)	७७५
लव्धिविधानपूजा	श्रभ्रदेव	(स०)	५१७
ल.व्यविधानपूजा	हर्षकीित्त	(स ०)	३३३
लव्धिविधानपूत्रा		(स ॰)	ሂየ३
		५३४,	ሂሄ०
लव्विविधानपूजा	ज्ञानचन्द	(हि॰)	४३४
लव्धिविधानपूजा		(हि॰)	४३४
लब्धिविधानमण्डल [[বিন্ন] —		५२५
लव्धिविधानउद्यापनपू	(जा —	(सं०)	ሂ३ሂ
लव्धिविधानोद्यापन		(सं०)	४४०
लव्धिविधानवृतोद्याप	नपूजा —	(स०)	५३४
लव्धिसार	नेमिचन्द्राचार्य	(সা৽) ४३,	३६७
लव्धिसारटीका		(सं०)	४३
लव्धिसारभाषा	प॰ टोडरमल	(हि॰)	४३
लब्धिसारक्षपगासार	भाषा प० टोडरम		
लव्धिसारक्षपणासार	सदृष्टि प० टोडरम	ाल (हि॰)	४३

लेखक भाषा वृष्ट सं० प्रन्थनाम लहरियाजी की पूजा (हि०) ७५२ नाथू (हि०) लहुरी ६९३ (हि०) लहरी नेमीश्वरकी विश्वभूषण ७२४ लाटीसंहिता राजमल (सं०) 58 (हि॰) लावगी मागीत गीकी हर्षकीति ६६७ लिगपाहुड भा० कुद्कुंद (গা৹) ११७ लिगपुराए (मं०) १५३ लिगानुशासन , हेमचन्द्र (स०) २७७ लिगानुशासन (सं०) २७६ भाष्कराचार्य लीलावती (सं०) ३६६ लीलावतीभाषा व्यास मथुरादास (हि०) ३६६ नेमिचन्द लुहरी (हि०) ६२२ बुहरी सभाचन्द (हि०) ७२४ लोकप्रत्याख्यानधमिलकथा (सं०) 280 लोकवर्णन **—** (हि॰) ६२७, ७६३ व वक्ता श्रोता लक्षण (सं०) 328 वक्ता श्रोता लक्षण (हि॰) 328 वज्रदन्तचक्रवत्ति का बारहमासा — हि०) ७२७ वज्रनाभिकक्रवर्ति की भावना भूधरदास (हि॰) ४४९, ६०४, ७३६ — (सं०) ४१५, ४३२ वज्रपञ्जरस्तोत्र वनस्पतिसत्तरी मुनिचन्द्रसूरि (সা৽) वन्देतानकीजयमाल (सं०) ५७२ ४९४, ६५५

भतृ हरि

पं० वद्ध मानदेव

जयमित्रहल

श्रीमुनि पद्मनन्दि

(सं०)

(सं०)

(सं०) १९५

(अप०) १९६

१६४

238

वरागचरित्र

वरागचरित्र

वद्ध[°]मानकाव्य

-144 J			
ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा प्र	ष्ठ स०
वद्धभानचरित्र	प० केशरीसिंह	(हि॰) १५১	८, १९६
वर्षा मानद्वात्रिशिका	सिद्धसेन दिवाक	र (स॰)	४१५
वर्द्व मानपुराण	सकलकीत्ति	(स॰)	१५३
वर्द्ध मानविद्याक्लप	सिंहतिलक	(स०)	३५१
वद्ध ^र मानस्तोत्र	आ० गुणभद्र	(स०)	४१५
		४२४	, ४२६
वर्द्ध मानस्तोत्र		(स०) ६१५	, ६५१
वर्पवोध		(स०)	२६१
वसुनन्दि श्रावकाचार	ऋा० वसुनन्दि	(সা৹)	5
वसुनन्दिश्रावकाचार	पन्नालाल	(हि॰)	५ ४
वमुधारागठ		(स०)	४१५
वसुवारास्तोत्र	— ((सं०) ४१५	, ४२३
वाग्भट्टालङ्कार	वाग्भट्ट	(स०,	३१२
वाग्भट्टालङ्कारटीका	वादिराज	(स०)	३१३
वाग्भट्टालङ्कारटीका		(स ०)	३१३
वाजिदनी के ग्रडिह्म	वाजिद	(हि॰)	६१३
वाणी श्रष्टक व जयम	ाल द्यानतराय	(हि॰)	७७७
वारिपेणमुनिकया	जोधराज गोदीक	। (हि॰)	२४०
वात्तीसग्रह	_	(हि॰)	५ ६
वासुपूज्यपुरागा		(हि॰)	११५
वास्तुपूजा	-	(स०)	५३५
वास्तुपूजाविधि		(स०)	५१5
वास्तुविन्यास	-	(स०७	३५४
विक्रमचरित्र वाचन	।चार्य अभयसो।	म (हि॰ <u>)</u>	१६६
विक्रमचौवोली चौपई	श्रभयचन्द्सू	रें (हि॰)	२४०
विक्रमादित्यराज्ञाकी	कथा	(हि०)	७१३
विचारगाया	_	(গা॰)	900
विजयकुमारसज्काय	ऋषि लालचन्द	(हि॰)	४५०
विजयकीत्तिछन्द	शुभचन्द	(हि॰)	३८६
विजययन्त्रविधान		(स∘)	३५२

लेखक प्रभ्थनाम भाषा पृष्ठ स० विज्जुचरको जयमाल (हि०) ६३८ (हि०) विज्ञप्तिपत्र हंसराज ३७४ धर्मदास (सं०) विदग्धमुखमडन ३३६ विनयरत्न (स०) विद्ययमुखमडनटीका १६७ विद्वज्जनवोधक (स०) ५६, ४५१ विद्वजनवोधकभाषा सघी पन्नालाल (हि०) (हि०) विद्वजनवोधकटीका 5 8 क्यिमानवीसतीर्थं द्वरपूजा नरेन्द्रकीर्त्त (सं०) ५३५, ६४५ विद्यमानवीसतीर्थङ्करपूजा जौहरीलाल विलाला (हि॰) ሂ३ሂ विद्यमानवीसतीर्यद्वरोकी पूजा (हि०) 488 विद्यमानवीसतीर्थञ्करस्तवन मुनि दीप (हि०) ४१५ विद्यानुशासन (स॰) **३**५२ विनतिया (हि॰) ६५५ श्रजैराज (हि॰) ७७६, ७८३ विनती कनककीत्ति (हि॰) विनती ६२१ कुशलविजय (हि०) विनती ७६२ विनती व्र० जिनदास (हि॰) ४२४, ७५७ वनारसीदास (हि॰) विनती ६४२, ६६३, ६६४ विनती । हि॰) ७६५ रूपचन्द विनती (हि०) समयसुन्दर ७३२ विनती (हि०) ७४६ विनती गुरुग्रोकी (हि॰) भूधरदास 288 विनती चौपडकी मान (हि०) ७५१ विनतीपाठस्तुति जितचन्द्र (हि०) 600 विनतीसग्रह त्रह्मदेव (हि॰) ४५१ विनतीसंग्रह देवात्रह्म (हि॰) ६६४, ७८० विनतीसग्रह (हि०) ४५० ७१०, ७४७ विनोदसतसई (हि॰)

(सं०) ३१४

प्रन्थानुक्रमणिका]			
प्रन्थन। म	त्तेखक	भाषा पूर	उ सं०	श्रन्थन(स
विपाकसूत्र	-	(গাৎ)	४३	विष्णुकुमार
्व विमलनाथपुराएा ।	त्र० कृष्णुदास	(4;°)	१५५	विष्णुकुमार
विमानशुद्धि	चन्द्रकीर्त्त	(स०)	५३५	विष्णुकुमार
विमानशुद्धिपूजा		(स०)	५३६	विष्णुपञ्जरस
विमानशुढिशातिक [ग	मण्डलचित्र] —		५२५	विष्णुसहस्र
विरदावली		(•i•)	६५८	विशेपसत्तारि
		७७२	, ७६५	विश्वप्रकाश
विरहमानतीर्थद्धरजकः	f	(हि॰)	<i>૭</i> ૫૯	विश्वलोचन
विरहमानपूजा		(स ०)	६०५	विश्वलोचन
विरहमञ्जरी	नन्ददास	(सं०)	६५७	विहारकाव्य
विरहमञ्जरी		(हि॰)	५०१	वीतरागगाः
विरहिनो का वर्रान	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	(हि॰)	०७७	वीतरागस्तो
विवाहप्रकरण	~~	(सं०)	५३६	
विवाहपद्धति	-	(सं०)	४३६	वीतरागस्तो
विवाहविधि		(सं ॰)	५३६	वीतरागस्तो
विवाहशोधन	•	(₹o)	२६१	वीरचरित्र
विवेकजकडी		(स∘)	२६१	वीरछत्तीसी
विवेकजकडी	जिनदास (वि	हे०) ७२२	, ७५०	वीरजिगांदर्ग
विवेकविलास		(हि॰)	54	वीरजिएादक
विषहरनविधि	सतोपकवि	(हि॰)	३०३	मेघकुमारगी
विपापहारस्तोत्र	धनञ्जय	≀स ∘)	४०२	वीरद्वात्रिशि
४१५, ४२३,	४२५, ४२३, ४३	१२, ५६५,	५७२,	वीरनायस्तव
५६५, ६०५,	६३७, ६४९, ७८	4		वीरभक्ति
विपापहारस्तोत्रटीका	नागचन्द्रसूरि	(o F)	४१६	वीरभक्ति तथ
विपापहारस्तोत्रभापा	ऋचलकी र्त्ति	(हि०)	४१६	वीररस के क
	६०४, ६५०, ६७०	, ४६४, १	४७६	वीरस्तवन
विपापहारभाषा	पन्नालाल	(हि०)	४१६	वृजलालकी व
विपापहारस्तोत्रभाषा	-	(हि॰)	840	वृत्तरत्नाकर
C			ı	वृप्तरत्नाकर
विष्णुकुमारपूजा	Parenty	(हि॰)	६८६।	वृत्तरत्नाकर

श्रन्थना स	तेलक	भाषा प्र	ष्ठ सं०
विष्णुकुमारमुनिकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२४०
विष्णुकुमारमुनिकथा		(सं०)	२४०
विष्णु <u>कु</u> मारमुनिरूजा	वावूनाल	(हि॰)	५३६
विष्णुपञ्जररक्षा		(सं०)	७७०
विष्णुसहस्रना म		(₹०)	६७४
· विशेपसत्तात्रिभङ्गी ॥	पा० नेमिचन्द्र	(গা॰)	४३
	पराज महेश्वर	(सं∘)	४३
विश्वलोचन	धरसेन	(सं०)	२७७
विश्वलोचनकोशकी शर		- (स०)	२७७
विहारकाव्य	कालिदास	(सं०)	१९७
वीतरागगाथा	سبب	(গ্লা০)	६३३
वीतरागस्तोत्र	पद्मनिद	(स∘)	४२४
	४३१, !	५७४, ६३४,	७३७
वीतरागस्तोत्र	आ० हेमचन्द्र ((सं०) १३६	४१६
वीतरागस्तोत्र	_	(सं ०)	७५५
वीरचरित्र [ग्रनुप्रेक्षाः	भाग] रइधू	(ग्रप०)	६४२
वीरछत्तीसी		(स०)	४१६
वीरजिएांदगीत	भगौतीदास	(हि॰)	४६६
वीरजिगादको सघावलि			
मेघकुमारगीत	पूनो	(हि॰)	४७७
वीरद्वात्रिशतिका	हेमचन्द्रसूरि	(स०)	358
वीरनायस्तवन		(स०)	४२६
वीरभक्ति पन्नात	ताल चौधरी	(हि॰)	ልሽ o
वीरभक्ति तथा निर्वाणभ	कि —	(हि॰)	४५१
वीररस के कवित्त	~	।हि०)	७४६
वीरस्तवन	-	(সা০ /	४१६
वृजलालकी वारहमावन	T	(हि॰)	६८४
वृत्तरत्नाकर	कालिदास	(स०)	४१६
वृप्तरत्नाकर	भट्ट केदार	(₹०)	३१४

प्रन्यानुक्रमाण्य	.]					.	, F
व्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	सं०	ग्रन्थना म	त्तेखक	भाषा पृष्ठ	स०
व्रतनिर्णय	मोहन	(स∘)	५३६	पट्पाहुड [प्रामृत]	त्रा० कुन्दकुंद	(प्रा०) ११७,	७४५
व्रत्यूजासग्रह	-	(स०)	५३७	पट्पाहुडटीका	श्रृतसागर	(सं०)	११६
व्रतविधान		(हि॰)	५३=	पट्पाहुडटीका		(स॰)	११्न
व्रतविधानरासो	दौलतराम सची (हि०) ६३८,	<i>૭७</i> ૨	पट्मतचरचा		(सं०)	७५७
व्रतविवरगा		(स∘)	५३८	पट्रसकथा		(सं०)	६८३
व्रतविवरगा	_	(हि॰)	५३८	पट्लेश्यावर्णन		(स०)	৬४५
* व्रतसार	त्रा० शिवकोटि	(सं०)	५३८	पट्लेश्यावर्णन		(हि॰)	ХX
व्रतसार		(स∘)	<i>হ</i> ৬	पट्लेश्यावेलि	हर्पकीत्ति	(हि॰)	४७७
व्रतसस्या		(हि॰)	50	पट्लेश्यावेलि	साह लोहट	(हि०)	३६६
व्रतोद्यापनश्रावकान	नार —	(4°)	১ ৬	पट्सहननवर्शन	मकरन्द	(हि॰)	55
व्रतोद्यापनसग्रह		(स०)	५३६	पड्दर्शनवात्ती		(स०)	१३६
व्रतोपवास वर् शन	-	(स∘)	50	पड्दर्शनविचार		(स ०)	3 🕫 🖇
व्रतोपवासवर्णन		(हि०)	59	पड्दर्शनसमुच्चय	हरिभद्रसूरि	(सं०)	358
व्रतो के चित्र			७२३	पड्दर्शनसमुच्चयटीका		(स०)	१४०
व्रतोकी तिथियोक	ा व्यौरा 🖳	(हि॰)	_ ६५५	पड्दर्शनसमुचयवृत्ति	गण्रतनसृरि	(स०)	3 = \$
व्रतो के नाम	******	(हि॰)	59	पट्भक्तिपाठ		(o #)	७५२
व्रतोका व्यौरा		(हि॰)	६०३	पड्भक्तिवर्शन		(स∘)	~55
	ष			परावितक्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	(स०) ४१६	, ५४१
पट्ग्रावश्यक [ल	ाचु सामायिक] महा	चन्द (हि	०) ५७	पष्टिशतकटिप्पग्	भक्तिलाल	(स०)	३३६
पट् यावश्यकवि ध	ान पन्नालाल	(हि०)	59	पष्ट्याधिकशतकटीक	राजहसोपाध्य	ाय (स०)	४ ४
पट्ऋतुवर्शनवा	रहमासा जनराज	(हि०)	६५६	षोडशकारगउद्यापन		(स०)	५४२
पट्कर्मकथन		(स०)	३५२	पोडशकारगकया	ललितकी त्ति	(祖。)	६४५
पट्कर्मीपदेशरत्न	माला [छक्कमोवएसम	⊓ला]		पोडशकारए। जयमाल	·	(গাৎ)	4 <u>%</u> 8
	महाकवि अमरकीर्नि	त (ग्रप०)	55	पोडशकारगजयमाल	-	(प्रा० स०)	५४२
पट्कर्मोपदेशरत्	ामालाभाषा पांडे ला	लचन्द्र (हि	0) 55	पोडशकारगजयमाल	रइधू	्(ग्रापः) ५१७	, ५४२
पट्पचासिका	वराहमिहर	(स∘)	२६२	पोडशकारगाजयमाल		(ग्रप०)	५४२
षट्पञ्चासिका		^ (हि॰)	६५६	पोडशकारराजयमाल		(हि०ग०)	५४२
षट्पञ्चासिकावृ	त्तं भट्टोत्पल	(स∘)	२६२	पोडगकारसपूजा [प	ोड शकार गुव्रतोच	ापन]	
पट्पाठ		-	४१७	केश	विसेन (स०)	५३९, ५४२	, ६७६
षट्पाठ	वुधजन	(हि०)	४१६	पोडशकाररापूजा	श्रुतसागर	(सं०)	५१०

भाषा पृष्ठ सः । लेखक प्रन्थनाम पोडपकाररापूजा [पोडपकाररावृतोद्यापनपूजा] सुमतिसागर (स॰) ५१७, ५४३, ५५७ (स०) ५१५ पोडपकारगपूजा y ३७, ४४२, ५४३, ५६६, ५७४, ५६४, ५८६ ६०७, ६४६, ६४८, ७६३ (हि०) ५१६ खुशालचन्द पोडशकारगपूजा (हि॰) द्यानतराय ७०५ पोडशकारणपूजा (গা॰) **द**६ पोटशकारगभावना (हि॰ग॰) पोडशकारग्। भावना प० सदासुख 55 (हि॰) 55 पोटपकारगभावना (हि०) पोडशकारणभावनाजयमाल नथमल ೯೯ पोडगकारणभावनावर्शनवृत्ति प० शिवजीलाल (ⁱह०) ५५ षोडशकारएविधानकया पं० ऋभ्रदेव (स०) २२० २४२, २४५, २३७ पोडशकारएविधानकथा मदनकी ति (स०) ५१४ (हि०) पोडगकारगुव्रतकया खुशालचन्द **388** पोडशकारएवतकथा (गुज०) २४७ पोडशकारएवरतोद्यापनपूजा राजकीर्ति (स०) ५४३ श समयसुन्दरगणि शम्बुप्रद्युम्नप्रवन्ध (स०) १६७ शकुनविचार (स०) 737

(हि० ' शर्जनशास्त्र ६०७ गर्भ शकुनावली (ন০) २३ इ शकुनावली (स०) २६२, ६०३ शकुनावली (हि॰) २६२ श्रवजद् — (हि॰) २६३, ६४३ शकुनावली शतग्रष्टतरी (हि॰) ६८६ (स०) शतक २७७ स**त्रुञ्जयगिरियू**जा भ व्धित्रमूपण (सं०) ५१३, ५४३ |

लेखक भाषा पृष्ठ सः **ग्रन्थनाम** शत्रुञ्जयतीर्थराम [शत्रुञ्जयराम] समयसुन्द्र (स०) ६१७,७०० (हि॰) राजसमुद्र 3 } } **ग**त्रुञ्जयभाम (हिं०) शत्रुञ्जयस्तवन 383 राजसमुद्र शनिश्चरदेवकी कथा खुशालचन्द्र (हि॰) ६८३ शनिश्चरदेवकीकथा [शनिश्चरकया] — (हि॰) ६६२ ६६४, ७११, ७१३, ७१४, ७२३, ७४३, ७८६ शनिश्चरदृष्टिविचार (स०) २६३ ४२४ शनिस्तोत्र (स०) श्चदप्रभेद व धातुप्रभेद श्री सहेश्वर स०) २७७ (सं०) २७७ शब्दरत्न (सं०) २६४ शन्दरपावलि श्रा० वर्रुचि (सं०) 268 शव्दरूपिएगी २६४ शब्दशोभा कवि नीलकठ (स०) हेमचन्द्राचायँ (सं ०) २६४ शब्दानुशासन शब्दानुशासनवृत्ति हेमचन्द्राचार्ये (सं०) २६४ गरदुत्सवदीविका [मण्डलविधानपूजा] सिंहनन्दि (संo) १४३ शहरमारोठकी पत्रा मुनि महीचन्द् (हिं•) ५६२ २६५ (स०) शाकटायनव्याकर्गा शाक्टायन (हि०) ६६६ शान्तिक्नाम विद्यासिद्धि शान्तिकरस्तोत्र 558 (प्रा॰) ४२३ शान्तिक्र स्तोत्र **सुन्दरसूये** (গা॰) शान्तिकविधान ሂ<mark>ሄ</mark>ሄ (हि॰) शान्तिकविधान (वृहद्) (सं०) ሂሄሄ शान्तिकविधि ऋहेद्देव (स०) ጸጸጸ ६४६ शान्तिकहोमविधि (सं०) शान्तिघोपगास्तुति (io) ४१७ शातिचक्रपूजा (स०) प्र१७ गातिचक्रमण्डल (चित्र) ४२४

प्रन्थानुक्रमणिका]

ग्रन्थनाम

ग्रन्थनाम 	C	(ma)	१६५	जा र ८
शातिनाथचरित्र	त्र्रजितप्रभसूरि	(स०)	- 1	शारव
शातिनाथचरित्र	भ० सकलकीत्ति	(सं०)	१६८	शार
शातिनाथपुराण	महाकवि अशग	(स०)		शार
शातिनाथपुराए	खुशालचन्द	(हि॰)	१५५	হাাত্
शातिनायपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	प्र४५	হাাত্ব
शातिनायपूजा		(स०)	४०६	হাটি
शातिनाथस्तवन		(स ॰)		হাৰ্গ
ज्ञातिनाथस्तवन	गुणसागर	(हि॰)		शा
शातिनाथस्तवन	ऋपि लालचंद	(हि॰)		হা।
शातिनाथस्तोत्र	मुनि गुणभद्र		६१४	হা
ज्ञातिनाथस्तोत्र	गुणभद्र स्वामी	(स०)		शा
शातिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	(सं०) ४१		
शातिनाथस्तोत्र		_	३८३	ł
	४०२, ४१८	, ६४६, ६७	३, ७४५	•
शातिपाठ		(o #)		য
४२५, ५४५,	प्रहृ, ६४०, ६६१,	६६७, ७०४	, ७०५	হা
७३३, ७५५				য
शातिपाठ (वृहद	₍₎ –	(सं ०)) ሂሄኔ	৻ হ
शातिपाठ	" द्यानतराय	। (हि॰) ५१६	೬ হ
शातिपाठ		_ (हि॰) ६४!	보
शातिपाठ		_ (हि॰) Xo	६
चातिम डलपू जा		- (प॰) X0	६ र
बातिरत्नसू ची		. (सं ०) ४४	ሂ
शातिविधि		- (स	৽)	0
शातिविधान		- (स		- 1
म्राचार्यशातिग	ागरपूजा भगवानद	ास (हि॰)	४६१,७=	६
शातिस्तवन	देवसूरि		o) ४१	1
शातिहोमविध	ान श्राशाध	ट (स	o) xx	- 1
शारदाष्ट्रक		_ (स	o) ४३	(8

		To I	प्रन्थनाम	लेखक	111 11 23	स॰
लेखक	भाषा पृष्ठ	i	शारदाप्टक	बनारसीदास	(हि॰) ५	३७६
ातप्र भस्^{रि}	(स०)	१६५	शारदाष्ट्रक		(हि॰) ४	90
सकलकीर्ति		१६५	शारपाष्ट्र ^म शारदीनाममाला		€ (♦₽)	२७७
कवि ऋशग	(स०)	१५५		शाङ्गधर	(स०)	३०४
बुशालचन्द	(हि॰)	१५५	शाङ्ग धरसहिना		(म०	३०६
रामचन्द्र	(हि०)	प्रथप	शार्ज्ज धरसहिताटीका	जितसिंहसू ^{रि}	•	900
	(स०)	४०६	शालिभद्रचौपई		•	६१६
	(स。)	४१७	बालिभद्रमहामुनिस ञ		(हि०) १६ = ,	
गुणसागर	(हि॰)	७०२	शालिभद्र चौपई		(हि॰) (हि॰)	२५३
ुप पि लालचंद		४१७	शालिभद्रधन्नानीचौप		· _	६१६
नि गुणभद्र		६१४	शालिभद्रमहामुनिस	ज्भाय —	(हિ॰) (= \	५१८ ७३४
गुभद्र स्वामी		७२२	शालिभद्रसज्भाय		(हि॰) (= \	
मतिभद	६ (सं०) ४१	७, ७१५	बालिहोत्र		(स०)	०६७
3	- (सं०)			चक्तिसा]		
Va2 X9	न, ६४६, ६७		ł.	प० नकुल	(सं०-हि०)	३०६
	_ (₹o)	४१=	ी जालिहोत्र ग्रिश्वी	चिनित्सा] —	. (स०)	३०६
540 FE9	, ६९७, ७०४		शास्त्रगुरुजयमाल		(গা৽)	ሂሄሂ
, ५००, ५२४	, (0-)	,	शास्त्रजयमाल	ज्ञानभूपग	् (स०)	४ሂሂ
	(÷. ·) ሂሄሄ		_	(গাৎ)	प्रहप्र
_	_ (सं० ′ः-	-	1		. (स०)	७६४
द्यानतर		_	1		५६४, ५६५	, ६५२
-	(हि॰ "		!		. (हि॰)	
•	(हि ॰			भ करने	•	
-	<u> </u>		1 2		_ (स०)	५४६
-	<u> (सं</u> द		· [_	५२५
	(स		1		_ (स०)	
-	(स		l l			
ना भगवान	दास (हि॰)			नवलरा		
देवसूरि				रामचन्द्र -	_ (हि॰)	
श्राशा	घर (स	o)	1		/C- \	
	(स	०) ४२	४ शिखरविलासभाष	ग धनरा	ज (हि॰)	490

					•		
⊑ ७२]	•				[प्रन्थानुकर्मा	ऐका
श्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	सं०	प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृ	ष्ठ स॰
शिलालेखसंग्रह		(सं०)	३७५	श्रु गारकवित्त		(हि॰)	६६६
शिलोञ्छकोश -	कवि सारस्वत	(स∘)	२७७	श्र गारतिलक	कालिदाम	(स०)	346
शिवरात्रिउद्यापनिर्वि	वक्या शकरभट्ट	(स०)	२४७	श्रृ गारतिलक	च्ट्रम ट्ट	(° ₽)	३५६
शिशुपालव य	महाकवि माघ	(स०)	१5६	शृगाररसकेकवित्त		(हि॰)	७७०
शिगुपालवधटीका	मह्निनाथसूरि	(स∘)	१८६	श्रुगाररस के फुटक	रहंद —	(हि॰)	४६३
शिशुवो ब	काशीनाथ	स॰)	२६४	श्रुं गारसवैया		(हि॰)	७६७
	२६३	, ६०३, ६७२	,६७५	श्यामवत्तीसी	नन्ददास	(हि॰)	६५४
शीतलनायपूजा	धर्म भूपण	(न०) ५४६,	७६५	श्यामवत्तीसी	श्याम	(हि०)	७६९
शीतलनायस्तवन	ऋपिलालचद	(हि॰)	ጽኧያ	<i>ववराभूप</i> रा	नरहरिभट्ट	(#°)	१८६
शीतलनायस्तवन	समयमुन्दरग	रें। (राज०)	६१६	था ढ ा दिकम्मरामूत्र	· —	(সা॰)	58
शीतलाप्टक		(सं०)	६४७	बावकउत्पत्तिवर्णन		(हि॰)	よのを
शीलकया	भारामल्ल	(હિં•)	२४७	श्रावककीकर सी	हपकीर्त्त	(हि॰)	५६७
शीतनववाड	·	(हि०)	58	श्रावकक्रिया		(हि॰)	७५७
शोलवसीसी	थकूमल	(हि॰)	०४०	श्रावकधर्मवर्शीन		(सं०)	58
शीलवत्तीसी	-	(हि॰)	६१६	बावकप्रतिक्रम ण		(स०) ५६	, પ્રહપ્ર
शीलरास	त्र० रायमञ्ज	(हि॰ ,	७४६	अावकप्रतिक्रम ण		(সা৹)	न ह
शोलरास	विजयदेवसूरि	(हि॰) ३६४,	६१७	श्रावराप्रतिक्रमरा		(स०प्रा०)	५७२
र्शालविधानकया	_	(सं ०	२४६	श्रावकप्रतिक्रमण		(গা॰)	७१४
बीलव्रतकेभेद		(हि॰)	६१५	यावकप्रतिक्रम रा		(प्रा० हि०)	હદ્વ
शीलसुदर्शनरासो	_	(हि॰)	६०३	यावकप्र _{वि} तक्रमण	पन्नालालचौधरी	(हि॰)	58
गाली प्रदेशमाला	मेरूसुन्दरगणि	(गुज०)	२४७	श्रावकप्रापश्चित्त	वीरसेन	(स॰)	58
गुकसप्तति		(स०)	२४७	थावकाचार	उमास्वामि	(सं॰)	60
शुक्रप चमीत्रतपूजा -		(स०)	५४०	थावकाचार	श्रमितगति	(सं०)	80
शुक्लप चमीत्रतपूजा	aturals.	(स ०)	५४६	श्रावकाचार	श्राशाधर	(स∘)	६३५
शुनलपंचमीत्रतोद्यापन		(सं०)	५४६	श्रावकाचार	गुणभूपणाचार्य	(सं०)	60
शुद्धिवियान	देवेन्द्रकीत्ति	(स∘)	५१५	श्रावकाचार	पद्मनिद	(स०)	69
गुभमालिका	श्रीघर	(सं०)	४७४	श्रावकाचार	पूज्यपाद	(स∘)	60
शुभमुहूर्त्त	_	(हि॰)	332	श्रावकाचार	ए कलकी ति	(स०)	१३
गुभसीय	-	(हिग.) ३३६	,७१६	श्रावकाचार	—	(स०)	१३
गुभागुभयोग		(सं०)	२६३	श्रावकाचार		(গা॰)	કુક

ग्रन्थ ताम	त्तेखक	भाषा पृष्ठ	सं०
श्रावकाचारदोहा	_	(ग्रय०) ६४२,	
श्रावकाचारभाषा	पं० भागचन्द		६१
श्रावकाचार			٤٤
श्रावको की उत्पत्ति तथ		(हि॰)	
श्रावको की चौरासी		(हि०)	
		(स०हि०)	
श्रावको की वहत्तर ज			३७४
शावणोद्धादशीउपार य		(सं०)	3 80
श्रावगीद्वादशीकया	पं० श्रभ्रदेव		२४५
श्रावर्गोद्वादशीकथा		(सं०)	२४८
श्रीपतिस्तोत्र	चैनसुबजी	(सं०)	४१५
श्रीपालकथा	,	(हि॰)	२४८
श्रीपालचरित्र	व्र० नेमिद्त्त	(स०)	२००
श्रीपालचरित्र ३	१० सकलकीर्त्त	(सं०)	२०१
श्रीपालचरित्र	-	(सं ०)	२००
श्रीपालचरित्र		′ग्रप०)	२०१
श्रीपालचरित्र	परिभन्न	(हि.प) २२,	६७७
श्रीपालचरित्र		(हि॰)	२०२
श्रीपालचरित्र		(हि॰)	२०३
श्रीपालदर्शन	*******	(हि॰)	६१५
श्रीपालरास	जिनहर्ष गणि	(हि॰)	३६५
श्रीपालरास	त्र॰ रायमञ्ज	(हि॰)	६३८
	६५४,	७१२, ७१७,	9૪૭
श्रीपालविनती		(हि॰)	६५१
श्रीपालस्तवन		(हि॰)	
श्रीपालस्तुति		(स∘)	
_	,	98X, 9X7,	
श्रीपालजीकीस्तुति	टीकमसिंह		
श्रीपालजीकीस्तुति			
श्रीपालस्तुति	41.4.4711.4.71	(हि॰)	
	·		
		६४४,	440

प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	उ सं०
श्रीवतजयस्तोत्र		(গা৹)	७५४
श्रीस्तोत्र	-	(स०)	४१५
श्रुतज्ञानपूजा	- (₹	नं०) ७२७,	, ५४६
श्रुतज्ञानभक्ति	-	(स०)	६२७
श्रुतज्ञानमण्डलचित्र	-	(स∘)	५२५
श्रुतज्ञानवर्णन	المسانب	(हि॰)	१३
श्रुतन्नतोद्योतनपूजा	******	(हि०)	५१३
श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	-	(सं०)	४१३
श्रुतभक्ति		(सं०)	६३३
श्रुतभक्ति	property	(स∘)	४२५
धुतभक्ति	पन्नालाल चौघरी	(हि॰)	४ ሂ०
श्रुतज्ञानम्रतपूजा	-	(सं∘)	५४६
थुतज्ञानव्रतोद्यापन	-	(सं°)	५४६
श्रुतपंचमीकथा	स्वयभू	(ग्रप०)	६४२
श्रुतपूजा	ज्ञानभूषण		५३७
श्रुतपूजा		(सं०)	५४६
		५६५,	337
श्रुतवोध	कालिदास (स	०) ३१५,	६६४
श्रुतवोघटीका	मनोहरश्याम	(सं०)	३१५
श्रुतवोध	वररुचि	(स०)	३१५
श्रुतबोघटीका		(स∘)	_
श्रुतबोघवृत्ति	हर्पकीर्त्ति	(स∘)	387
श्रुतस्कध	त्र० हेमचन्द	(গা॰)	₹७६
	ય	७२, ७०६,	७३७
श्रुतस्कधपूजा	श्रुतसागर	(स∘)	१४७
श्रुतस्कधपूजा		(40)	१४७
श्रुतस्कधपूजा [ज्ञानपंचि	वंक्षतिपूजा]		
	सुरेन्द्रकीर्त्त	(₹0)	१४७
श्रुतस्कधपूजाकया	-	(हि॰)	५४७
श्रुतस्कंधमंडल [चित्र]			५२४

র ঙপ্ট]				
श्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्	र सं°ं	ſ
श्रुतस्कघविधानकथा	पं० अभ्र	देव (स०)	२४५	
श्रुतस्कवन्नतकया	त्र॰ ज्ञानसा	गर (हि॰)	२२८	
श्रुतावतार	प० श्रीधर	(सं०) ३७६,	, ५७२	
श्रुताप्टक		(स०)	६५७	
श्रेग्गिकचरित्र	भ० गुअचन	द (स॰)	२०३	
बें ग्गिकचरित्र	भ० सकलकी	त्ति (स०)	२०३	
श्रेगिकचरित्र		(৽াম)	२०३	
श्रेणिकचरित्र	विजयकी ^{र्}	त्त (हि॰)	२०४	
श्रेग्गिकचीपई	द्ध गा वैव	ह (हि॰)	२४६	
श्रेग्गिकराजासज्माय	समयसुन्द	र (हि॰)	६१६	
श्रेयासस्तवन	विजयमानस्	र्रि (हि॰)	४५१	
श्लोकवात्तिक	ब्रा ० विद्याननि	इ (सं॰)	४४	
श्वेताम्बरमतकेचीरासीव		(हि॰)	૭૭૯	
इवेताम्बरमतकेचीरासीवं	ोल	(हि॰)	५५२	
श्वेताम्बरों के ५४ वाद	-	(हि॰)	६२६	
	स			
सङ्घटचीयव्रतकथा	देवेन्द्रभूपण	(हि॰)	७९४	
सद्भटचीपईकथा		(हि॰)	७४१	
संक्रातिफल		(स०) २६३,		
सक्षिप्तवेदान्तशास्त्रप्रक्रि		(((°) (C)) (सo)	१४०	
संगीतवधपार्श्वजिनस्तुरि		(૧૩) (ફિ૦)	६१५	
सग्रहणीवालावीय शिव		-	¥ሂ	١
	ામવામગાણ	•		
सग्रह्णीसूत्र		(সা॰)		
∕सग्रहसूक्ति •		(स०)		
संघपराटपत्र		(সা৹)		
सधोत्यत्तिकथन		(हि॰)		
सघपच्चीसी	द्यानतराय	(हि०)	३७६	
सज्ञाप्रक्रिया	_	(सं०) २६४	, २६७	
संतानविधि		(हि॰)	३०६	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	. स०
संयाराविधि	السبين	(सं०)	465
संहप्टि	-	(सं०)	
सवन्यविवक्षा		(सं०)	
सवोबग्रक्षरवावनी	चानतराय	(हि॰)	
सबोधप चासिका	गौतमस्वामी	•	
सवोधपचासिका		(সা০)	
		६२६, ७०६,	
सवोघपच।सिका	रइघू	(ग्रप०)	१२५
सवोधपचासिका	_	(ग्रप०)	
सवोधप चासिका	द्यानतराय	(हि॰)	
		६५५, ६६३,	
	•	७१६,	
सबोवपंचासिका		(हि॰)	०६४
सवोधशतक	द्यानतराय	(हि॰)	१२८
सबोधसतरी	_	(সা৹)	१२५
सवोधसत्तागु	वीरचन्द	(हि॰)	355
सभवजिनस्तोत्र	मुनिगुणनन्दि	(स०)	४१६
सभवजिएाएगाहचरिउ	तेजपाल	(ग्रप॰)	२०४
सभवनायपद्ध डी		(ম্ব৭০)	५७६
सयोगप चमीकथा	धर्भचन्द्र	(हि॰)	२५३
सयोगवत्तीसी	मानकवि	(हि॰)	६१३
सवत्सरवर्णन		(हि॰)	३७६
संवत्सरीविचार		(हि॰ग०)	२६४
ससारग्रटवी	_	(हि॰)	७६२
ससारस्वरूपवर्णन	_	(हि॰)	६३
सस्कृतमजरी		(स॰)	२६५
सहनननाम		(हि॰)	६२६
सकलीकरगा		(स॰)	ሂሄሩ
सकलीकरणविधि		(सं०) ४१४,	५७५
सकलीकरणविधि		(सं०)	
		५४७,	३६३

प्रन्थानुक्रमणिका]				
ग्रन्थना म	• • •	ाषा ष्ट्रप्र	1	प्रन
सज्जनचित्तवहाभ	मल्लिपेण (संव) ३३७,	५७३	सप्तप
सज्जनचित्तवल्लभ	शुभचन्द	(सं०)	३३७	सप्तप
सज्जनचित्तवल्लभ	_	(सं०)	३३७	सप्तप
सज्जनचित्तवल्लभ	मिहरचन्द	(हि॰)	३३७	सप्तप
सज्जनचित्तवहाभ	हर्गूलाल	(हि॰)	३३७	सत्त
सज्भाय [चौदह बोल]	म्राधि रामचन्द्र	(हि॰)	४५१	सप्त
	समयमुन्दर	(हि॰)	६१५	सप्त
सज्भाय	विहारीलाल (हि	•		सप्त
सतसई	ऋषिञ्जनमलजी	(हि॰)	४५१	सप्त
सतियो की सज्काय	ऋषिष्ठशमसम् साधुकीर्त्ति (f	i (10)	्. ७६०	सप
सत्तरभेदपूजा			" ሄሂ	सप
सत्तात्रिभगी	नेमिचन्द्राचार		-	सप
सत्ताद्वार	~~	(सं०) (च.)		सप
सद्भापितावली	सकलकीर्त्ति			स
सद्भापितावलीभापा	पन्नालाल चौधर	(ाह०) (६०)	33m	स
सद्भापितावली	-		335	1 4
सन्निपातकलिका	مبني	(स०)		- [
सन्निपातनिदान		(सं०)		`"
सन्निपातनिद।नचिकित	ता वाहडद			`
सन्देहसमु च्च य	धर्मकलशसु			1 `
सन्मतितर्क	सिद्धसेनदिवा			- 1 `
सप्तर्पिजनस्तवन) [₹ ;
सप्तर्षिपूजा	जिग्दास	(स ०)	দ
सप्तरिंपूजा	देवेन्द्रकींत्त	(सं०) ७ ६	Ę
सप्तर्विपूजा	लदमीसेन	(सं	০ ২४	5
सप्तरिपूजा	विश्वभूषण	(सं	·)	5
सप्तिषपूजा		(स	o) 48	33
सप्तऋषिमडल [चि	ৰ] —	(स	o) ५२	8
→ सप्तन पविचारस्तवन		(सं	o) 83	१५
, सप्तनयाववोध	मुनिनेत्री	संह (स	o) {	80
	-			

भाषा पृष्ठ सं० लेखक ग्रन्थ**ना**म १४० शिवादित्य (सं०) सप्तपदार्थी (सं०) १४० सप्तपदार्थी (सं०) ४४५ सप्तपदी ७३१ (हि॰) खुशालचन्द सप्तपरमस्थान 388 (स०) सत्तपरमस्यानकया आ० चन्द्रकीर्ति — (सं०) ४१७, ४४५ सप्तवरमस्थानकपूजा २४४ (हि॰) खुशालचद्र सप्तपरमस्थानन्नतकथा 438 (सं०) सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन ६८८ (हि॰) भगवतीदास सप्तभगीवाणी ३०७ (हि॰) सप्तविधि २५० सप्तव्यसनसनकथा ऋा० सोमकीत्ति (सं०) २५० (हि॰) भारामल सप्तव्यसनकथा २५० (हि॰) सप्तव्यसनकथा भाषा ७२३ वनारसीदास (हि॰) सप्तव्यसनकवित्त ७१५ गोवर्धनाचार्य (सं०) सप्तशती ६२ (सं०) सप्तश्लोकीगीता ३६८ ६६२ ७६१ (सं०) सप्तसूत्रभेद ३३५ (सं०) सभातरग 378 (स०) सभाशृ गार — (स० हि०) ३३५ सभाशृ गार ३३८ (हि०) रघुराम सभासारनाटक ६२ (हि॰) **त्रासकर**ण समिकतढाल ७०१ (हि॰) जिनदास समकितविण्वोधर्म ৩५५ (हि॰) नोधराज समतभद्रकथा (सं०) ७७५ समतभद्र समतभद्रस्तुति समयसार (गाथा) कुन्दकुन्दाचार्य (সা৽) 388 ५७४, ७०३, ७६२ **अमृतचन्द्राचार्य** (स०) १२० समयसारकलशा (हि॰) १२५ १४० | समयसारकलशाटीका

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ स	,
समयसारकलज्ञाभापा		(हि०) १२५	Ļ
समयसारटीका	-	(स०) १२२, ६६१	Ļ
समयसारनाटक		(हि॰) १२	
		६८०, ६८३, ६८८	
		७०२, ७१६, ७२०	
		३१, ७५३, ७५६	
		७७८, ७८७, ७६३	₹
समयसारभाषा	जयचन्दळ्यावडा	(हि॰ ग॰) १२४	'
समयसारवचनिका			
समयसारमृत्ति	अमृतचन्द्रसृ रि	(स०) ५७५, ७६४	ś
समयसारवृत्ति		(प्रा०) १२२	
समरसार	रामवाजपेय	(स०) २६४	,
समवशरगापूजा	ललितकी त्ति	(स०) ५४६	
समवशरणपूजा	रत्नशेखर	(सं०) ५३७	,
समवशरणपूजा [वृहद्] ह्रपचन्द	(स०) ५७६	
समवशररापूजा	((स०) ५४६, ७६७	,
समवशरणस्तोत्र	विष्णुसेन मुनि	(स०) ४१६	
समवशरणस्तोत्र	विश्वसेन	(सं०) ४१४	•
समवशरणस्तोत्र		(स०) ४१६	
समस्तवत की जयमाल	ा चन्द्रकीर्ति	(हि॰) ५९४	,
समाधि		(ग्रप०) ६४२	}
समाधितन्त्र	पूज्यपाद	(स०, १२५	
समाधितत्र	-	(स०) १२४	
समाधितन्त्रभाषा	नाथूरामदोसी	(हि०) १२६	
समाधितन्त्रभापा	पर्वतधर्माथी	(हि॰) १२६	t
समाधितन्त्रभापा	माग्यकचन्द्	(हि॰) १२४	
समाधितन्त्रभापा		(हि॰ग०) १२५	
समाधिमररा		(स०) ६१३	2
समाधिमरण		(प्रा॰) १२६	į

तेखक **ग्रन्थ**नाम भाषा प्रष्ठ स० समाधिमरएा (ग्रप०) ६२८ (हि॰) समाधिमरणभाषा पन्नालालचौधरी १२७ (हि॰) समाधिमरणभाषा १२७ सूरचन्द (हि०) १४, १२७ समाधिमरण ७१०, ७४८ (हि॰) १२६,३१४ समाधिमरए।पाठ चानतराय (हि॰) समाधिमरण स्वरूपभाषा १२७ (सं०) समाधिशतक १५७ पुरुयपाद समाधिशतकटीका प्रभाचन्द्राचार्य (स०) १२७ समाधिशतकटीका (स०) ११५ विश्वसेन (स∘) 318 समुदायस्तोत्र (स॰) समुद्घातभेद 83 सम्मेदगिरिपूजा — (हि०) ७३६, ७४० (सं०) ५४६ ७२० सम्मेदशिखरपूजा गंगादास सम्मेदशिखरपूजा (हि॰) ४४० प० जवाहरलाल सम्मेदशिखरपूजा (हि०) ሂሂ፡ भागचन्द सम्मेदशिखरपूजा (हि॰) रामचन्द 220 सम्मेदशिखरपूजा (हि॰) ५११ ४१८, ६७८ सम्मेदशिखरनिर्वाणकाण्ड (हि॰) १३४ सम्मेदशिखरमहातम्य दीवित देवदृत्त (सं०) 83 सम्मेदशिखरमहात्म्य (हिं०) मनसुखलाल 83 सम्मेदशिखरमहात्म्य लालचन्द् (हि॰ प॰) ६२, २४१ सम्मेदशिखरमहातम्य (हि॰) 955 सम्मेदशिखरविलास केशरी सिंह (हि॰) 83 सम्मेदशिखरविलास ₹3 देवात्रहा (हि॰ प॰) सम्यक्त्वकीमुदीकथा खेता ५५१ (स०) सम्यनत्वकौमुदीकथा २५१ गुणाकरसूरि (स∘) सम्यवत्वको मुदीभाग १ सहणपाल (ग्रप०) **६४३**

प्रन्थानुक्रमणिका	3			
प्रन्थनाम	त्तेखक	भाषा षृष्ठ	1	प्रन्थ
सगन्धदशमीव्रतोद्यापन		(सं०)	ì	सुभा
सुगुरुशतक ि	जेनदासगोधा (हि	०४६ (०४०	४४७	सुभा
<u>सुगुरूस्तोत्र</u>		(स०)		सुभा
सदयवच्छसावलिंगार्क	ो चौपई	_		सुभा
	मुनिकेशव	(हि०)	२४४	सुभा
दयवच्छसालिगारीव	रार्ता —	(हि॰)	७३४	सुभ
सुदर्शनचरित्र	व्र० नेमिद्त्त	· (सं°)	1	सुभ
् _{सुदर्शनचरित्र}	मुमुज्बिचानंदि	(सं०)		सुभ
, उ सुदर्शनचरित्र	भ० सकलकीर्त्त	(सं०)		सुभ
युदर्शनचरित्र		(सं ०)		सुः
सुदर्शनचरित्र			308	सु
ं सुदर्शनरास	त्र० रायमञ्ज	(हि०) ===		्री सु
		६३६, ७१		ं सु
सुदर्शनसेठकीढाल	[कथा] —	(हि०)		1
सुदामाकीवार्रहख	डी <u> </u>	(हि॰)		- 1 '
सुदृष्टितरेगिगोभा	षा टेकचन्द			
सुदृष्टित र ंगि ग् गीभा	वा —	. (हि॰		- 1
सुन्दरविलास	सुन्दरदास			l i
सुन्दरशृङ्गार	महाक बिरा ३	-	s)	1
मुन्दरश्रृ ङ्गार	सुन्द्रदास	त (हि॰) ७		
सुन्दरशृङ्गार		_ (हि _ं		- 1
सुपाइर्वनायपूजा	रामचन	•	o) ধ্ধ ১ বে	1
सुप्पय दोहा	-	-	o) ६२ . \	1
सुप्पय दोहा	-	-	o) ξ̄₹	1
सुप्यय दोहा	•	_	(0) 98	- 1
सुप्रभातस्तवन	- >0		•	98 ==
सुप्रभाताप्टक	यति नेमिच	• ••		33 ·
र्सुप्रभातिकस्तु	ते भुवनभू			33 60
ं सुभाषित		-	•	હય
		()	हि०) ७	१० १

सुभाषित

		L	400
ष्ठ सं०	प्रन्थनाम	लेखक भाषा	ાુષ્ટ સં૦
XXX	सुभाषितपर्च	— (हि॰)	६२३
4ō,886	सुभापितपाठसग्र ह	— (सं०हिं०)) ६९८
) ४२२	सुभाषितमुक्तावली	— (सं°) ३४१
, , , ,	सुभाषितरत्नसदोह	श्रमितिगति (सं०) ३४१
) २४४	सभापितरत्नसंदोहभाषा	पन्नालालचौधरी (हि॰) ३४१
) <i>७३</i> ४	1	— (सं०) ३	४१, ५७५
) २०५		— (सं ० प्रा) ३४२
,) २०६	1 -	— (स ०हि <i>॰</i>) ३४२
,) २०५		3 · · · · ·	०) ३४१
, ०) २०६	1		o) ३४३
०) २०६		— (स॰)	३४३, ७०६
o) ३६६	1 -	1० दुलीचन्द (^{ति}	ह०) ३४४
७१२, ७४६	है सुभापितावलीभाषा प	_{व्यालालचौधरी}	- 1 300
[०) २४	8	(n)	₹o) ₹४४
हo) <i>७७</i>	1 -	_	3°6 (°bo)
हं०) ६	1 3	,	सं०) २०६ २०) ३६७
हं०) ६	_	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	हि०) ३६७
हे०) ७४			३४४, ६७२
हि०) ६०		सोमप्रभाचार्य (सं०)	
७२३, ७१			(सं०) ६०६ (⊶.) ॥॥॥
हि०) ६।	द ५ सूतकनिर्णय		(सं•) ५५५
(हि॰) ५	५५ सूतकवर्णन [यशसि	तलक सं] सोमंदेव	(सं०) ५७१
म्रप०) ६	२६	•	(सं॰) ५५५ (सं॰) ५५५
ग्रप०) ६	३७ सूतकवर्णन	ن	(सं॰) ५७६
(हि॰) ४	भूतकविधि 		(রা ৽) ১৫ (
\ /	८७४ सूत्रकृताग		(सं०) ६४०
• •	६३३ सूर्यकवच		(संo) ६० ५ ० ५ ० ५० ५० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६०
(सं०)	/		(सं०) २९४
(सं०)	l	7. 377111	(सं०) ४४७
(हि॰)	७०१ सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	त्र॰ जयसागर	(11-) 11-0

५७७३

श्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ट	। सं०]
नूर्यस्तोत्र	-	(सं०) ६४६,	६९२
सोनागिरिपच्चीसी	भागीरथ	(हिं०)	६५
सोनागिरिपच्चीसी		(हि०)	६६२
सोनागिरिपूजा	श्राशा	(स∘)	५ ५५
सोनागिरिपूजा		(हि॰)	५५६
		६७४,	०६७
सोमउत्पत्ति		(स०)	२६५
सोमशर्मावारिपेएकथा		(शा०)	२५५
सोलहकारएकथा	रत्नपाल	(सं०)	६६५
सोलहकारएकया व्र०	ज्ञानसागर	(हि०)	७४०
सोलहकारण जयमाल		(ग्रप०)	६७६
सोलहकाररापूजा ब्र	० जिनदास	(सं०)	७६५
सोलहकाररापूजा		(सं०)	६०६
	६ ४४, '	६५२, ६९४,	७०४,
		७३१,	७५४
सीलहकारगपूजा		(ग्रप०)	७०५
सोलहकाररापूजा	द्यानतराय	(हि॰)	प्रश
		५१६,	४५६
सोलहकारणपूजा	_	(हि॰) ५५६	६७०
सोलहकारणभावनावर्शन	सदामुख	(हि॰)	६५
सोलहकारएाभावना		(हि॰)	৬৯৯
सोलहकारणभावना एवं व	शलक्षण		}
वर्णन-सदासुखका	सलीवाल	(हि॰)	६५
सोलहकारएमंडलवियान	देकचद्	(हि॰)	५५६
सोलहकारणमंडल [चिः	त्र] —		५२४
सोलहकारगुद्रतीच।पन	केशवसेन	(सं०)	५१७
सोलहकारगुराम भ०	सकलकीत्ति	(हि॰)	५६४
		६३९	, ७८१
सोलहतिथिवर्शान	-	(हি॰)	४९४

लेखक भाषा पृष्ठ स० प्रन्थनाम सोलहसितयोकेनाम (हि॰) ६१६ राजसमुद्र सोलहसतीसज्काय (हि॰) ४५२ सींदर्यलहरी स्तोत्र (सं०) ४२२ सीदर्यलहरीस्तोत्र भट्टार्क जगदुभूषण (सं०) ४२२ सौख्यव्रतोद्यापन अन्यराम (सं०) ४१६, ४४६ सौस्यव्रतोद्यापन (सं ०) प्र३९ सौभाग्यपंचमीकथा सुन्दर्विजयगिश (सं०) २५५ (सं०) स्कन्दपुराए €90 (ग्रप०) ६६० स्तवन स्तवनग्ररिहन्त (हि॰) ६४८ (सं०) 448 श्राशाधर स्तवन स्तुति (सं०) ४४२ स्तुति कनककीर्त्त (हि॰) ६०१ ६४० स्तुति टीकमचन्द (हि॰) ६३६ स्तुति (हि॰) नवल ६६२ स्तुति (हि॰) वुधजन 400 हरीसिंह स्तुति (हि॰) ७७६ स्तुति (हि॰) ६६३ ६७३, ७४५ स्तोत्र पद्मनंदि (स∘) प्रथप्र स्तोत्र लच्मीचन्द्रदेव (গ্ৰাং) ५७६ स्तोत्रसंग्रह -- (स०हि०)६२८ ६४१ ६९८, ७०३, ७१४, ७१४ ७३६, ७४१, ७६२, ७६६, ७६७ स्तोत्रसग्रह (सं०हि०) ७२१ ७३८, ७४४, ७४८, ७७४ (स०हि०) ६६५, अ स्तोत्रपूजापाठसग्रह

७३४, ७३६,

प्रन्थानुक्रमणिका]

प्रन्थानुकमणिका]				
	लेखक	भाषा पृष्ठ	सं०	प्रस्थ
ग्रन्थनाम २ - चिन्न		(हि॰)	६४०	स्वयंभू
स्त्रीमुक्तिखंडत	المهي	(सं०)	३५६	स्वयभू
स्त्रीलक्ष ण		(सं०)	५७६	स्वरवि
स्त्रीऋंगारवर्णन		(सं०)	६५	स्वरो
स्थापनानिर्णय		•		स्वरो
स्यूलभद्रकाचौमासावर्णन		(हि॰) (कि.)		स्वरो
स्थूलभद्रगीत		(हि॰) (स्॰)		स्वरो
स्यूलभद्रशीलरासो		(हि०) (१६०)		स्वर्ग
स्यूलभद्रसज्काय		(हि॰) ४५२		स्वग
स्नपनविधान		(हि॰) ५५६		1.
स्तपनविधि [वृहद्]	-	(सं०)		
स्नेहलीला	जनमोहन	(हि०)		Į.
स्नेहलीला		•	३६८	1
स्फुटकवित्त	-) ७०१	1
स्फुटकवित्तएवंपद्यसंग्रह			०) ६७:	
स्फुट दोहे		- (हि॰) ६	२३, ६७	३ स्व
स्फुटपद्यएवं मंत्रग्रादि		. (हि०		l l
		- (हि॰) ६	६४, ७२	६ स्व
स्फुटपाठ		_ (हि		
स्फुटवार्ता		- (सं ^c) 3 8	14 स
स्फुटइलोकसंग्रह			o)	
स्फुटहिन्दीपद्य स्वप्नविचार	_	_ (हि	०) २६	يلا
स्वप्नाध्याय	-	— (सं	०) २६	٤٤
स्वप्नावली	देवनी	न्द् (स०)	२६५, ६	३३ ह
स्वप्नावली			ro) २	
स्याद्वादचूलिका		— (हि	०ग०) १	४१ ।
स्याद्वादमंजरी	महिषेग्रस	र् _र ि (स	ं०) १	४१
	समन्त	1	io) 8	२३
स्वयंभूस्तोत्र	%	२५, ४२७,	-	
			६६५, ६	
			७२०,	७३१

भाषा ष्ट्रप्ट सं० तेखक प्रन्थनाम ४३४ प्रभाचन्द्राचार्यं, (₹0) स्वयंभूस्तोत्र टीका ७१५ (सं०) द्यानतराय स्वयभूस्तोत्रभापा प्र७२ (सं०) स्वरविचार १२८ (सं०) स्वरोदय 384 (हि॰) स्वरोदय रनजीतदास (चरनदास) — (हि॰) ६४०, ७५६ स्वरोदय प्रहइ (हि॰) स्वरोदयविचार ६२७ (हि॰) स्वर्गनरकवर्णन ७०१, ७६३ ७२० (हि०) स्वर्गसुखवर्णन ४२५ (सं०) महीधर स्वर्णाकर्षग्विधान ५७४ (सं०) स्वस्त्ययनविधान ६५८, ६४६ (सं०) ५७१ स्वाध्याय (सं०प्रा०) ४६४ स्वाध्यययपाठ (प्रा॰सं॰) ६५ ६३३ स्वाच्यायपाठ ४५० पन्नालाल चौधरी ' (हि॰) स्वाध्यायपाठ ६5 (हि॰) स्वाध्यायपाठभाषा १२६ (हि॰प०) नाधूराम स्वानुभवदर्पग् मुनि श्रीधर ६१६ (हि॰) स्वार्थवीसी ह ६५५ (हि॰) हं सकीढालतथाविनतीढाल ७०७ (हि॰) व्र० अजित हंसतिलकरास १२५ (सं०) हठयोगदोपिका ६३८ (ग्रप॰) हण्वतकुमारजयमाल २१० (सं०) व्र० श्रजित हनुमच्चरित्र २११ (हि॰) हनुमच्वरित्र त्र॰ रायमञ्ज ५६५, ५६६, ७१७, (हनुमन्तकथा)

(हनुमतकथा)

ग्रन्थनाम	ग ले खक	भाषा पृष्ट	3 सं०
(हनुमत	रास) [']	७४०,	७४४,
(हनुमंत		७५२,	५९३
हनुमान स्तोत्र		(हि॰)	४३२
हनुपतानुप्रेका	महाकवि स्वयंभू	(ग्रप०)	६३५
हमीरचौपई	-	(हि०)	३७८
हमीररासो	महेशकवि 🗥	हि०) ३६७,	ওদ ই
हयग्रीवावतारचित्र			६०३
हरगीरीसंवाद	-	(सं०)	६०इ
हरजीके दोहे	हरजी	(हि०)	ওടട
हरडैकल्प		(हि॰)	<i>७०</i> ६
हरिचन्दशतक		(हि॰)	७४१
हरिनाममाला	शकराचार्य	(स०)	३६८
हरिवोला नित्रावली		(हि०)	६०१
हरिरस	-	(हि॰)	६०१
हरिवंशपुराएा	ं त्र० जिनदास	(सं०)	१५६
हरिवंशपुराएा	जिनसेनाचार्य	(सं०)	१५५
इरिवशपुरा ण	श्री भूपग्	(सं०)	१५७
हरिवंशपुराएा	सकलकीर्ति	(स∘)	१५७
हरिवशपुराएा	धवल	(ग्रप०)	१५७
हरिवंशपुराएा	यश- कीर्त्ति	(भ्रप॰)	१५७
हरिवशपुराएा	महाकवि स्वयंभू	(ग्रप०)	१५७
हरिवंश रुराणभाप	। खुशालचन्द	(हि॰प॰)	१५५
हरिवशपुराखभाषा	दौलतराम	(हि॰गं॰)	१५७

्रन्थ नाम	त्तेखक	भाषा प्र	प्र सं०
हरिवंशपुराणभाषा		(हि॰) १५ ८	
हरिवंशवर्णन	_	(हि॰)	
हरिहरनामावलिवर्र	न —	(सं०)	
ह्वनविधि		(सं०)	
हारात्रलि मह	ामहोपाध्याय पुरुन	तषोम देव	
		(सं॰)	२११
हिण्डोलना	शिवचंदमुनि	(सं०)	६८३
हितोपदेश	देवीचन्द्र	(सं०)	७४४
हितोपदेश	. विष्णुशर्मा	(सं ०)	३४५
हितोपदेशभापा		(हि०) ३४६	, ७६३
हुण्डावसर्पिग्गीकालदे	ष माग्कचन्द्	(हि॰) ६६,	४४५
हेमकारी	विश्वभूषण्	(हि॰)	₹3ల
हेमनीवृहद्वृत्ति		(स ०)	२७०
हेमाव्याकरएा [हेम	व्याकरणवृत्ति]		
	हेमचन्द्राचार्य	(स॰)	२७०
होडाचक्र		(स०)	337
होराज्ञान		(स०)	२६५
होलीकथा	जिनचन्द्रसूरि	(सं•)	२५६
होलिकाकथा		(सं०)	२५५
होलिकाचौपई	डू गर कवि	(हि॰प०)	२५५
होलीकथा	छीतर ठोत्तिया	(हि॰)	२४६,
		ર્વેપ્રપ્ર,	६६४
हीलीरेग्युकाचरित्र	त्र० जिनदास	(सं०)	२११



प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	स०
सम्यनत्वकौमुदीकथा		(सं ०)	२५१
सम्पनत्वकौमुदीकयाभा	षा जगतराम	(हि०)	२५२
सम्यक्तवकौमुदीकथाभा	षा जोधराजगोदं		1
	_	(हि॰) २५२	
सम्यक्तवकौमुदीकथाभा	पा विनोदीलाल	(हि०ग०)	२१२
सम्यक्त्वकौमुदी भाषा		(हि॰)	२५३
सम्यक्त्वजयमाल		(ग्रप०)	७६४
सम्यक्त्वपच्चीसी		(हि०)	७६०
सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका	पं० टोव्हरमल	(हि०)	৬
सम्यक्तानीधमाल	भगौतीदास	(हि०)	प्रइष्ट
सम्यग्दर्शनपूजा		(स०)	६५८
सम्यग्दृष्टिकोभावनावर	र्गन —	(हि०)	७६४
सरस्वतीग्रष्टक		(हि०)	४५२
सरस्वतीकल्प		(सं०)	३५२
सरस्वती चूर्णकानुसख	1 —	(हि॰)	७४७
सरस्वती जयमाल	त्र० जिनदास	(हि०)	६५८
सरस्वतीपूजा े	ऋाशाधर	(सं •)	६५८
सरस्वतीपूजा [जय	माल] ज्ञानभूषर	Ą	
		(स०) ४१४	, ५६५
सरस्वतीपूजा	पद्मनंदि	(सं०) ४५१	, ७१६
सरस्वतीपूजा		(स०)	५५१
सरस्वतीपूजा व	नेमीचन्द्व खशी	(हि॰) ′	५५१
सरस्वतीपूजा	संघी पन्नालाल	(हि॰) ['] '	५५१
सर्ग्वतीपूजा ं	पं० बुधजन	(हि॰ <u>)</u>	५५१
सरस्वतीपूजा ¹		(हि॰) '५५१	
सरस्वतीस्तवन		(सं०)	
सरस्वतीस्तुति	ज्ञान भूपण	(सं०)	६५७
सरस्वतीस्तोत्र		(स०) ६४७	
सरस्वतीस्तोत्र		(सं०)	
सरस्वतीस्तोत्र	श्रुतसागर	(सँ०)	४२ं०
सरस्वतीस्तोत्र े		(सं०) ४२०	, ५७५

	प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	संवः		
सरवतीस्तोत्रमाना [क्यारदास्तवन]						
			(सं॰)	४२००		
	सरस्वतीस्तोत्रभाषा	वनारमीदास	(हि॰)	५४७ -		
	सर्वतोभद्रपूजा		(सँ०)	ሂሂ ያ ′		
	सर्वतोभद्रमऋ	-	(4,°)	४१६		
	सर्वज्वर समुच्वयदर्पर	Ţ' <u> </u>	(सं ०)	२०७		
	सर्वार्थसाघनी	भट्टवररुचि	(4°)	२७५		
	सर्वार्थसिद्धि	पूज्यपाद	(सं०)	ሄ ሂ		
	सर्वार्थसिद्धिभाषा	जयचद्छाबहा	(हि॰)	¥ Ę -		
	सर्वार्थसिद्धिसज्भाय		(हि०)	४४३		
	सर्वारिष्टनिवारणस्तोः	त्र जिनदत्तसूरि	(हि॰)	६१६		
	सर्वेयाएवपद	सुन्दरदास	(हि॰)	६८१		
	सहस्रक्रुटजिनालयपूज	·	(स०)	448:		
	सहस्रग्रिगितपूजा	धर्मकीत्ति	(स∘)	५५२		
	सहस्रगुरिएतपूजा		(सं०)	४४२-		
	सहस्रनामपूजा	धर्मभूषण	(स०) ५५२,	<i>৩</i> ४७ ,		
	सहस्रनामपूजा		(सं ॰)	४५२-		
	सहस्रनामपूजा	चैनसुख	(हि॰)	४४२-		
	सहस्रनामपूजा		(हि∘) [′]	५५२ -		
	सहस्रनामस्तोत्र	षं० त्र्याशधर	(सं०)	५६६		
			६३६,	९ ७०५		
	सहस्रनामस्तोत्र		(सं०)	፟ ቒ፞፞፞ዸ፟፟፟፟፟፟፟፟		
	1		७५३,	७६३,		
	सहस्रनाम [वडा]		(सं०) ′	<u> ۲</u> ۹		
	सहस्रनाम [लघु]	ऋा॰ समंतभद्र	(सँ०)	४२०		
	सहस्रनाम [लघु]		(सं०)	४३१		
	सहेलीगीत	सुन्दर	(ફિં∘) ´			
	सांखी	कवीर	(हि॰)	७२३		
	सागरदत्तचरित्र	हीरकवि	(हि॰)	२०४		
-						

प्रन्थनाम	तेख क	भाषा पृष	3 सं०	प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृत्	उ स॰
सासूवहूकाभगडा	ब्रह्मदे त्र	(हि०) ४५१	, ६४८	सिद्धवदना		(स०)	४२०
सिद्ध हृटपूजा	विश्वभूषण	(₹०)	५१६	सिद्धभक्ति		(4°)	६२७
सिद्धकूटमडल [चित्र)			५२४	सिद्धभक्ति		(সা৹)	५७८
सिद्धक्षेत्र पूजा	स्वरूपचन्द्	(हि॰) ४६७	५ ५३	सिद्धभक्ति	पन्नालाल चौघरी	(हि०)	
सिद्धक्षेत्रपूजा		(हि॰)	ሂሂ३	सिद्धस्तवन	-	(सं०)	४२०
सिद्धक्षेत्रपूजाष्टक	द्यानतराय	(हि॰)	७०५	सिद्धस्तुति	-	(स०)	५७४
सि दृशेत्रमहातम्यपू जा		(स०)	५५३	सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति	जिनप्रभमृरि	(सं०)	२६७
सिद्धचक्रकथा		(हि०)	२५३	सिद्धान्त ग्रर्थसार	पं० रइधू	(ग्रप०)	४६
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द्	(सं०)	५१०	सिद्धान्तकौ मुदी	~,	(सं०)	२६७
			, ५५३	सिद्धान्तकौमुदी	 अहर जार्जराज्य	(स॰)	२६७
सिद्धचक्रपूत्रा	श्रुतमागर	(मं ०)	४५३	सिद्धान्तकौमुदी टी	का ~~	(स॰)	२६८
सिद्धचक्रपूजा [वृहद्]	भानुकीर्त्ति	(स०)	४५३	सिद्धान्तचनिद्रका	ा रामचन्द्राश्रम	(सं०)	२६५
सिद्धचक्रपूजा [वृहद्]	शुभचन्द्र	(स०)	५५३	सिद्वान्तचिन्द्रका र्ट		(स०)	२६६
सिद्धचक्रपूजा [वृहद्]		(स०)	ሂሂሪ	सिद्धान्तचन्द्रिका र्ट		(ন°)	२६ ह
सिद्धचक्रपूजा		(स०)	द्रश्र	ſ		(न०) (स०)	२६ह
	५५४,	, ६३८, ६४८	, ७३५	1	त्तं सदानन्दगिशा पक वामदेव	(स०)	323
सिद्धचक्रपूजा [वृहद्]	सतलाल	(हि॰)	५५३	सिद्धान्तित्रलोकदी।	•	_	£5 85
सिद्धचन्नमूजा	चानतराय	(हि॰)	ሂሂ३	मिद्धान्तधर्मोपदेशम् 		ै(प्रा॰) २ (चं.)	
सिद्धपूजा	श्राशाधर	(म० ५५४	, ७१६	सिद्धान्तविन्दु	श्रीमधुसूद्न सरम्बत		२७० •
सिद्धपूजा	पद्मनंदि	(स०)	५३७	सिद्धान्तमजरी		(स०)	१ ३ ५
सिद्धपूजा	रत्नभूपण	(स∘)	४४४	सिद्धान्तमजूपिका	_	(स०)	२७०
सिद्धपूजा	`	(स०)	४१५	1 .	पंचानन भट्टाचार्य		२७०
	<i>አ</i> ጀጸ	, ५७४, ५६४	, ६०५	सिद्धान्तमुक्तावली		(स०) <≂ः ो	२७०
	६०७	, ६८६, ६५१	, ६७०		का महादेवभट्ट	(स०)_	१४०
	६७६	, ६७८, ७०४	८, ७३१	सिद्धान्तलेश संग्रह	~~	(हि॰)	४६
			, ७६३	सिद्धान्तसारदीपक	सक्तकीर्त्त	(स∘)	४६
सिद्धपूजा	All Constitution of the Co	• •	४६६	सिद्वान्तसारदीपक	-	(म०)	<i>ব</i> ড
सिद्धपूजा	चानतराय	(हि॰)	प्र११	सिद्धान्तसारभाषा	नथमलविलाला	(हि॰)	४७
सिद्धपूजा	_	(हि०)	५५५	सिद्धान्तसारभाषा		(हिं०)	४६
सिद्धपूजाष्टक	दौलतराम	(हि॰)	७७७	सिद्धान्तसार सग्रह	त्रा० तरेन्द्रदेव	(म ०)	४७

-			
प्रन्थनाम	हें ह क	भान पृष्	9 H G
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनांद	(* +)	४०१
	४२१, ४२२, ४	-4, ४२६,	४३१,
	४३२, ४७२,	২৬४, ১ ७⊏,	,,५६५
	<i>ષ્ટ છ</i> , '	६०४, ६४०,	, ६३३
		^६ ३७,	७०१
सिद्धिप्रियस्तात्रटीका		(सं०।	४२१
सिद्धिप्रियस्तोत्रभापा	नथमल	(हि॰)	४२१
सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	पन्नालालचौधरी	(हि०)	४२१
सि ^{त्} द्वयोग	-	(सं०)	७०६
सिद्वोकास्वरूप		(हि॰)	७३
सिन्दूरप्रकरगा	सोमप्रभाचार्य	(4:0)	३४०
सिन्दूरप्रकरगाभाषा	वनारसीदास	(हि॰)	२२४
	३४०, ५६१, ५	६४, ७१०,	७१२
	v	४६, ७५५,	७६२
सिन्दूरप्रकरणभाषा	धुन्दरदास	(हि॰)	३४०
सिरिपालचरिय	पं० नरसेन	(ग्रप०)	२०५
सिहासनहात्रिशिका	च्रेमंकरमुनि	(सं०)	२५३ :
सिहासनद्वात्रिशिवा		(स०)	२५३
सिहासनवत्तीसी		(स०)	२५३
मीखसत्तरी		(हि०)	६५०
सीताचरित्र कविरा	मचन्द (वालक)	(हि॰प॰)	२०६
		७२५	, ७५५
सीताचरित्र		(हि०)	५६६
सीताढाल ,	**********	(हि॰)	४५२
सीताजीका वारहमास	T -	(हि०)	७२७
सीताजीकीविनती	— (हि०) ६४८	, ६८५
सीताजीकीसङ्भाप		(हि०)	६१८
सीमन्यरकीजकई।	******	(हि॰)	६४४
सीमन्धरस्तवन	ठक्कुरसी	(हि०)	७३८

लेखक **ग्रन्थनाम** भाषा पृष्ठ सं० (सं०) सीमन्धरस्वामीपूजा ሂሂሂ (हि०) सीमन्धरम्वामीस्तवन ६१६ गुगकीर्त्त (हि॰) सीलरास ६०२ सुकुमालचरिउ भ० सकलकीति (स ०) ₹0'€ श्रीधर सुकुमालचरिउ (ग्रप॰) २०६ सुकुमालचरित्रभाषा पं० नाथूलालदे।सी (हि॰ग)ः २०७ सुकुमालचरित्र हरचंद गगवाल (हि॰प॰) २०७ सुकुमालचरित्र (हिंँ) २०७ सुकुमालमुनिकथा (हि०ग०) २५३ (हि॰गुज) ३६६ सुकुमालस्वामीरा त्र० जिनदास (हिं०) सुखघडी धनराज ६२३ हपेकीति (हिं०) सुखघडी ७४६ कविं जगन्नाथ सुखनिधान (स०) ' २०७ **सुखसंपत्तिपूजा** (सं०) ' ४१७ सुखसपत्तिविधानकथा (सं०) ' २४६ **सु**खसंपत्तिविधानकथा विमलकीत्ति (ग्रप०) 28% 'सुखसपत्तिव्रतपूजा ऋखयराम (स ०) ጸጸጸ मुखसपत्तिव्रतोद्यापनपूजा ' (सं०) ሂየሄ सुगन्धदशमीकथा ललितकीर्त्ति (सं०) ६४५ सुगन्धदशमीकथा श्रुतसागर (सं०) ५१४ सुगन्धदशमीकथा (सं०) २५४ सुगन्धदशमीकया ६३२ (भ्रप०) सुगन्धदशमीव्रतकथा 🛭 सुगन्धदशमीकथा 🛚 (हि॰) २५४, ७६४ हेमराज **सुंगन्धदशमीपूजा** स्वरूपचन्द (हि॰) ५११ सुगन्धदशमीमण्डल [चित्र] ५२५ सुगन्धदशमीव्रतकथा (सं ०) २४२ सुगन्वदशमीव्रतक्या (ग्रप०) सुगन्धदशमीव्रतकथा (हि०) ५१६ खुशालचन्द्र

येथ एवं ग्रंथकार >>>>

प्राकृत भाषा

त्रंथकार क नाम	प्रंथ नाम प्रं	थ सूची की पत्र सं०	प्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम	त्रंथ सूची की पत्र सं०
श्रभयचन्द्रगिया—	ऋग्रसंवंधकथा	२१८	देवसेन-	ग्राराधनासार	38
अभयदेवसूरि—	जयतिहुवग्एस्तोत्र	४४७		५७२, ५७	३, ६२=, ६३४,
अल्हू	प्राकृतछंदकोप	३११		90	८, ७३७, ७४४
इन्द्रनिद्	छेदपिण्ड	५७		तत्वसार	२०, ५७५
	प्रायश्चितविधि	७४		६३७, ७३	७, ७४४, ७४७
कात्तिकेय—	कात्तिकेयानुप्रेक्षा	१०३		दर्शनसार	१३३
कु दकुदाचार्य—	श्रप्टपाहुड	33		नयचक्र	१३४
	पचास्तिकाय	४०	22	भावसग्रह	<i>60</i>
	प्रवचनसार	११२	देवेन्द्रसूरे—	कर्मस्तवसूत्र	ሂ
	नियमसार	३८ ∣	धर्मचन्द्र—	धर्मचन्द्रप्रवन्ध	1
	बोधप्रामृत	११५	धर्मदासगिषा—	उपदेशरतनमात	ना ५०
	यतिभावनाष्ट्रक	५७३	नन्दिपेश	ग्रजितशातिस्त	वन ३७२
	रयगुसार	4 8	मडारी नेमिचन्द्र—	उपदेशसिद्धान्त	ſ
	लिगपाहु ड	११७		रतन	माला ५१
	षर्पाहुड षट्पाहुड	११७, ७४=	नेमिचन्द्राचार्य—	ग्राधवतिभगी	. २
	, ,	-		कर्मप्रकृति	3
	समयसार	११६,		गोम्मटसारकर्म	~ \
	•	७३७, ७६२		गोम्मटसारजी	नकाण्ड ६,
गौतमस्वामी—	गौतमकुलक	१४			१६, ७२०
	सबोधपंचासिका	११६, १२=		चतुर्रावैश्वतिस्थ	ानक १८
जिनभद्रगणि	ग्रर्थदिपिका	१		जीवविचार	७३२
ढाढसीमुनि—	ढाढसीगाथा	७०७		विभंगीसार	३१
देवसूरि	यतिदिनचर्या	দং		द्रव्यसंग्रह	३२, ५७४,
	जोविवचार	६१६			६२५, ७४४

-						
त्रथनार वा नाम	मंथ नान	त्रथ सु	चीकी पत्रसंब	व्रंथकार का नाम		ाूची की पत्र सं०
	विलोगगार	:	३२०	ञ्ज	ाभंश भाषा	
	तिलोकसार	સદૃષ્ટિ	३२२			
	प चसग्रह		३८	श्रमरकीर्त्त-	पट्कर्मोपदेशरतमाला	
	भावत्रिभगी	•	४२	ऋषभटास—	रत्नवयपूजाजयमाला	४३७
	लब्बिसार		४३	कनक्कीत्ति—	नन्दोश्वरजयमाला	५१६
	विशेषसत्ता	त्रभंगी	४३	मुनिकनकामर—	करकण्डुचरित्र	१६१
	सत्तात्रिभगी	•	४५	मुनिगुणभद्र—	दशलक्षग्कथा	६३१
पद्मनिद्-	श्रुपभदेवस्तु		३८१		रोहिगीविधान	39 3
* 41	निनव रदर्श न		₹€•	जयमित्रहल—	वद्धभानकथा	१८६
	जम्बूद्धी प प्रज्ञ		388	जल्ह्या—	द्वादशानुप्रेक्षा	६२८
मुनिपद्मसिंह—	ज्ञानसार		१०५	ह्यानचर्—	योगचर्चा	६२=
भद्रवाहु—	वल्पसूत्र		६,७	तेजपाल—	सभवजिरागाहचरिउ	२०४
भावशर्मा—	दशलक्षराज्य	यमाल ४८	६, ५१७	देवनदि	रोहिगीचरित्र	२४३
मुनिचन्द्रसूरि—	वनस्पतिसत्त	री	বধ		रोहिगोविधानवथा	२४३
मुनीन्द्रकीर्त्ति—	ग्रनन्तचतुर्दः	त्तीकथा	२१४	धवल—	हरिवशपुराग्	१५७
रत्नशेयरसृरि—	प्राष्ट्रतछदको	হা	₹११	नरसेन—	जिनरात्रिविधानकथा	६२५
त्तद्मीचन्द्रदेव—	स्तोव		५७६		^३ सरिपालचरिय	२०५
लच्मीसेन	द्वादशानुष्रेका	i	७४४	पुन्पद्न्त—	श्रादिपुरासा १४३	, ६४२
वसुनन्दि—	वसुनन्दिशा	वकाचार	5 ٤		महापुराएा	१५३
विद्यामिद्धि—	शातिकरस्तो	স	६८१		यशोधरचरित्र	१८५
शिवार्ये—	भगनतीग्रारा	धना	७६	महण्सिह—	विशत जिण् चन्द्रवीसी	६८६
श्रीराम—	प्राकृतरूपमा	ला	२६२	यशः कीर्त्ति—	चन्द्रप्रभचरित्र	१६५
श्रुतमुनि—	भावतग्रह		৩=		पद्धडी	६४२
मगंतभद्र—	वल्यास्त्रक		३८३		पाण्डवपुरास	१५०
सिद्धसेनस्रि—	इनकीसठाए।	चर्चा	२	योगीन्द्रदेव—	हरिवशपुरा ग् परमात्मप्रकाग	११७,
मुन्दरसूर्य—	गातिकरस्तोः	न	४२३	यागान्द्रपुष		
कविद्यात—	कामनूत्र		इ.५इ		५७४, ६१३, ७०७ योगसार ११६, ७४८,	
व्रः हेमचन्द्र—	श्रुनन्कव	३७६,	५७२,	रइधू	यागसार ११६, ७४८, दशलक्षराजयमाल	, ७१ <i>५</i> २४३,
		७०७	. ७६७	•	४८६, ५१८, ५३७ ४७२,	६३७

7

म्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम प्रंथ सूची की पत्र सं०		त्रंथ नाम प्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्श्वनायचरित्र १७६	संस्बृ	व्त भाषा
	वीरचरित्र ६४२ पोडशकारण जयमाल ५१७,	। श्रक्रतकरव	ग्रक्लंकाप्टक ५७५
	५४२	.	६३७ 📑 २, ७१२
	खंबोधपचासिका १२८		तत्त्रार्थराजवात्तिक ३२
	सिद्धान्तार्थसार ४६		न्यायकुमुदचन्द्रोदय १३४
रामसिंह—	सावयधम्म दोहा		प्रायदिचतसग्रह ७४
	(श्रावकाचार) ६७) अप्रयाम	रामोकारपैंतीसी पूजा
	६४१, ७४८		۶۶२, <u>४</u> १७-
ह्रपचन्द्	दोहापाहुड ६० रागम्रासावरी ६४१		प्रतिमासान्त चतुरर्दशी
लदमण—	गोमिणाहचरिउ १७१		व्रतोद्यापन पूजा ५१६, ५२०
तस्मीचन्द्—	ग्राध्यात्यिकगाथा १०३		सुखसंपत्तिव्रत पूजा ५५५
44114	उपासकाचार दोहा ५२	1	सौरयकाख्य वृतोद्यापन
	चूनडी ६२८, ६४१	}	५१६, ५५६
	क्र्यागुक्तविधि ६४१	1 _	हनुमच्चरित्र २१०
त्रिनयचन्द्र—	दुघार्सविधानक्या २४५,	अजितश्रमस् रि—	शान्तिनाथचरित्र १ ६ ८
	६२५	श्रनन्तकीर्ति—	नन्दीश्वरत्नतोद्यापन पूजा ४६४
	निर्भर चमीविधानकथा		पत्नविधान पूजा ५०७
विजयसिंह—	२४४, ६२६	2.6	प्रमेयरत्नमाला १३८
विमलकीर्त्ति—	ग्रजितनाथपुराएा १४२ सुगन्धदशमीकथा ६३२		तर्कसंग्रह १३२
सहरापाल	सुगन्यस्तमाक्षया ५४५ पद्धडी	अनुभूतिस्वरूपाचार्य-	
	(कौमुदोमव्यात्) ६४१	138000	२६६, ७८०
	सम्यक्त्वकौमुदी ६४२		•
सिंहकवि—	प्रद्युम्नचरित्र १८२	श्रपर।जितसूरि	लघुसारस्वत २६३ भगवतीग्राराधनाटिका ७६
महाकविस्वयंभू	रिट्टुगोमिचरिउ १५७, ६४२	श्रापयदीत्ति—	
• •	श्रुतपंचमीकथा ६४२	31.14311611	•
	हनुमतानुप्रेक्षा ६३५	असपपन्द्रगाए।—	पचसंग्रहवृत्ति ३६
श्रीघर—	सुकुमालचरिउ २०६	100	क्षीरोदानीपूजा ७६३
हरिश्चन्द् —	ग्रणस्तमितिसिध २४३,	l	जैनेन्द्रमहावृत्ति २६०
	६२८, ६४३	ग्रभयनन्दि—	त्रिलोकसार पूजा ४८५

प्र ['] थकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रंथ सूच प	ग्रीकी त्रसं०	त्रंथकार का नाम	ंथ नाम श्रंथ सूची पत्र र	
	दशलक्षण पूजा	४५६	अमोलकचन्द—	रथयात्राप्रभाव ३	७४
	लघुश्रेयविधि	५३३	श्रमृतचन्द्र—	तत्वार्थसार	२२
श्रभयसोम—	- विक्रमचरित्र	१९६		पंचास्तिकायटीका	४१
प० अभ्रदेव	त्रिकाल चौवीसीक्या	२२६,			११०
•	(रोटतीजकथा)	२४२			१२
	दशलक्षरा पूजा	४८५		पुरुपार्थसिद्धच ुपाय	६८
		, २४६		समयसारकलशा १	२०
	द्वादशत्रत पूजा	४६०			२१
	मुकुटसप्तमी न था	२४४		७ <u>५</u> ५, ७	
	ल ब्बिविधानकथा	२३६	श्ररुण्मण्-		४२ ८००
	लव्धिविधान पूजा	५१७	 छहंदे व—		(४४
	श्रवराद्वादशीक्या	२४५	श्रशग—	_	 {
	श्रुतस्कधविधानक्था	२४५	त्रात्रेयऋपि— वात्रेयऋपि—	_	१९६
	पोडशकार ण क्था	२ ४२,	श्रानन्द		र३५
		, २ ४७	त्रारा—		\
			आशाधर—		\ ` ,
श्रमरकीर्त्त—	जिनसहस्रनामटीका	३६३		-	२२, ११७
	महावीरस्तोत्र	७५२	} [ग्रनगारधर्मामृत	४५
S	यमकाष्ट्रवस्तोत्र ४१३			श्राराधनासारवृत्ति	६४
श्रमर्रसिह ्—	श्रमरकोश	२७२		इप्टोपदेशटीका	3 50
	त्रिकाण्डशेपसूची 	२७४		कल्याणमदिरस्तोत्रटीका	३५४
श्रमितिगति—	धर्मपरीक्षा	३५६		कल्याणमाला ५	८७४
	पचसग्रह टीका	38		कलशाभिपेक १	४६७
	भावनाद्वात्रिशतिका	१७३		कलशारोपगुविधि १	४६६
	(सामायिक पाठ)	७३७		गराधरवलयपूजा (ક ફર
	श्रावकाचार	69		जलयात्राविधान १	8 <i>00</i>
	सुभापितरत्नसन्दोह	३४१		जिनयज्ञकल्प	
श्रमोधवर्ष—	धर्मीपदेशश्रावकाचार	દ૪		(प्रतिष्ठापाठ)	(२१ न
	प्रश्नोत्तररत्नमाला	६७४		४७८, ६०८,	६३६

ग्रंथकार का नाम	यंथ नाम	प्रंथ सूची की पत्र सं०	र्प्रथकार का नाम	प्र'थ नाम	प्रंथ सूची की पत्र सं०
	जिनसहस्रनाम			६४४, ६४४, ६४७,	, ६४८, ६५०,
	-	દ, પ્રદ [ે] દ, ૬ ૦૫,		६५२, ६५६, ६६४	
				७०४, ७०७, ७२७	
		६, ६४६ँ, ६४४,		र् पंचनमस्कारस्तं	·
	•	, ६९२, ७१२,		पूजाप्रकर्ग	५१२
		०, ७४०, ७५२		श्रावकाचार	6.9
	धर्मामृतसूक्तिसं		भ० एकसंधि —	प्रायश्चितविधि	
	ध्वजारोपस्पवि	घि ४६२	कनक्रकीर्त्ति	गुमोकार वैतीर्स	
	त्रिषष्टिस्मृति	१४६	Analogo Att (विधान	
	देवशास्त्रगुरुपूर	१३७ ग	कनककुशल-	ापवान देवागमस्तोत्रवृ	४५२, ५१७ त्ते ३९६
	भूपालचतुर्विशा	तेका	क्रनकनदि—	गोम्मटसार कर्म	
N.		टीका ४११	Ĩ		
	रत्नत्रयपूजा	५२९	कनकसागर—	कुमारसंभवटी ^व	
	थावकाचार श्रावकाचार		कमलप्रभाचार्य—	जिनपंजरस्तोत्र	
	(सागारधर्मा	मृत) ६३५	कंमलविजयगणि—	चतुर्विशति तीर	४३०, ६४६ ^{रॅ} कर
	शातिहोमवि ध		क्रम्सायजयगाल	નવાનનાત તા	गग्र स्तोत्र ३८८
				======================================	
	सरस्वतीस्तुति		कालिदास—	कुमारसंभव	१६२
		६५८, ७६१		ऋतुसंहार गेयन	१ ६१
	सिद्धपूजा	४५४, ७१६		मेघदूत रघुवश	<i>७</i> =१ १८३
	स्तवन	६६१		रुउन्य वृतरत्नाकर	₹ ₹
इन्द्रनंदि—	ग्रं कुरारोपग् वि	धि ४५३		श्रुतबोध	Ę¥¥
	देवपूजा	¥£0		शाकुन्तल	३१६
	नीतसार	३२६	कालिदास	नलोदयकाव्य	१७५
उञ्जवलदत्त (संग्रह	कर्त्ता)			श्रु गारतिलक	३५६
	उ गादिसूत्रसंग्र	ह २५७	काशीनाथ	ज्योतिषसारलग्न	
उमास्वामि—	तत्वार्थसूत्र	२३, ४२५		शीघ्रबोध	२६२, ६०३
	४२७, ४३७, ५३	७, ५६२, ५६९,	काशीराज	ग्रजीर्शमंजरी	785
	3x , \$0x , \$0x		कुमुद्चन्द्र—	कल्यारामंदिरस्त	
	६०३, ६०४, ६३	व, ६३७, ६३६			४३०, ४३१,

प्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम प्रंथ सू ^र	वी की ात्र सं॰	यंथकार का नाम		्ची की ात्र सं०
	પ્રદ્દય, પ્રહર, પ્રહય,	પ્રદય,	गण्पति—	रत्नदीपक	२६०
	६१६, ६३३, ६३७,	६७०,	गणिरतनसूरि-	पडदर्शनसमुच्चयवृत्ति	१३६
		, ৬ ২৬	गगोश—	ग्रहलाघव	२८०
कुलभद्र—	सारसमुच्चय ६७	, ५७४		पंचागसाधन	२५४
भट्टकेदार—	वृत्तरत्नाकर	३१४	गर्गऋषि—	गर्भसंहिता	२५०
केशव—	जातकपद्धति	२८१		पाशाकेवली २८	६, ६४७
	ज्योतिपमग्गिमाला ः	२६२		प्रश्नमनोरमा	२८७
केशविभश्र—	तर्कभाषा	१३२		शकुनावली	२६२
केशववर्णी	गोम्मटसारवृत्ति	१०	गुणकीर्त्ति	पचकल्याग्यकपूजा	४००
_	ग्रादित्यव्रतपूजा	४६१	गुणचन्द्र—	श्रनन्तव्रतोद्यापन	ሂየ३
केशवसेन —	रत्नत्रयपूजा	४२६		५३	६, ५४०
	रोहिग्गीव्रत्यूजा	५१३,		ग्रष्टाह्मिकान्नतकथा	
t		२, ७२६		सग्रह	२१६
	पोडशकारगपूजा	५४२, ६७६	गुणचन्द्रदेव—	अमृतधर्मरसका व्य	65
कैंच्यट	भाष्यप्रदीप	747	गुणनंदि—	ऋपिमडलपूजाविधान	४६३,
कौहनंभट्ट—	वैय्याकरणभूषण	२६३			६, ७६२
त्र० दृहणदास	मुनिसुव्रतपुरा ण	१५३		चंद्रप्रभक्।व्यप जिका	१६५
	- विमलनाथपुरा ग्	१५४		त्रिकालचौवोसीकथा	६२२
कृष्णशर्मा—	भावदीपिका	१३८		सभवजिनस्तोत्र	388
त्त्रपग्रक—	एकाक्षरकोश	२७४	गुणभद्र—	शातिनायस्तोत्र	६१४,
च्तेमकरमुनि—	सिहासनद्वात्रिशिका	२५३		*	७२२
त्तमेन्द्रकीर्त्त—	गजपयामंडलपूजा	४६५	गुणभद्राचार्य—	ग्रनन्तनायपुराण	१४२
खेता—	सम्यक्त्वकौमुदीकथा	२५१		ग्रात्मानुशासन	१००
गगादास—	पंचक्षेत्रपालपूजा	५०२		उत्तरपुरा ण	१४४
	पुष्पाजलिव्रतोद्यापन	४०५		जिनदत्तचरित्र	१६८
	_	५१६		घन्यकुमारचरित्र	१७२
	े दव्रत	५३२		मौनिव्रतकथा	२३६
	सम्मेदशिखरपूजा	५४६,		वर्द्धमानस्तोत्र	४१५
ŧ		७२७	गुणभूषणाचार्य—	श्रावकाचार	03

प्रंथकार क नाम	प्रंथ नाम प्रंथ	सूची की पत्र सं०	व्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम प्रंथ	सूची की पत्र संब
गुण्रत्तसूरि—	तकरहस्यदीपिका	१३२	चितामणि—	रमलशास्त्र -	२६०
गुणविनयगणि—	रघुवंशटीका	१६४	चूडामिण—	न्यापसिद्धान्तमजरी	१३६
गुणाकरसूरि—	सम्यन्त्वकौमुदोकथ ः		चोखचन्द—	चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	४७३
गोपालदास—	रूपमंजरीनाममाल		छत्रसेन —	चदनषष्टोन्नतकथा	६३१
गोपालभट्ट-	रसमजरीटीका	348	जगतकीर्त्ति—	द्वादशत्रतोद्यापनपूजा	४९१
गोवर्द्धनाचार्य—	सप्तशती	७१५	जगद्भूषण—	सौंदर्यलहरीस्तोत्र	४२२
गोविन्द्भट्ट—	पुरुवार्थानु शास न	\$8	जगन्नाथ—	गरापाठ	२५६
गौतमस्वामी—	ऋषिमंडलपूजा	६०७		नेमिनरेन्द्रस्तोत्र	335
	न् <u>र</u> िषमडलस्तोत्र	३ 5२		सुखनिघान	२०७
		 १४६, ७३२	जतीदास—	दानकीवीनती	६४३
घटकर्पर—	घटकपेरकाव्य	१ ६४	जयतिलक—	निजस्मृत [्]	३८
चड कृवि—	प्राकृतव्याकरण	२६२	जयदेव	'गीतगोविन्द	१६३
चन्द्राकीर्त्ति—	चतुर्विशतितीर्थाकर		त्र॰ जयसागर—	सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	५५७
	विमानशुद्ध <u>ि</u>	- ५३ ५	जानकीनाथ—	- न्य।यसिद्धान्तमंजरी	१३५
	सप्तपरमस्थानकया		भ० जिण्चन्द्र —	जिनचतुर्विशतिस्तोत्र	७५७
चन्द्रकीत्तिसूरि —	सारस्वतदीपिका	२६९	जिनचद्रसूरि—	दशलक्षग्वतोद्यापन	8=8
चाण्क्य—	चाएानयराजनीति	३२६,	त्र० जिनदास—	जम्ब्रुद्वीपपूजा	४১७
	६४०, ६४६, ६०		,		२, ५३ ७
		२३, ७८७		जम्बूस्वामीचरित्र	१६८
	लघुचा ग् वयराजनी		 	ज्येष्ठजिनवरलाहान	५३७
		१२, ७२०		नेमिनाथपुरास	१४७
चामुण्डराय—		યપ		पुष्पाजलीवतकथा	२३४
•	ज्वरतिमिरभास्कर	२६८	۲	सप्तिषिपूजा	ሂሄፍ
	भावनासारसग्रह ५५	८,७७, ६१५		़ हरिवशपुराण सोलहकारणपूजा	७९५ १५६
चारकीर्त्ति—	गीतवीतराग	३८६	i i	जलयात्राविधि	
चारित्रभूषण्—	महीपालचरित्र	१८६	प० जिनदास—		६८३
चारित्रसिंह—	कातन्त्रविभ्रमसूत्राव	-	1 - 1 M 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	होलीरेणुकाचरित्र अकृत्रिमजिनचैत्यालय	२११
	•	रि २५७		भग्नात्रमाजनचत्यालय पूजा	४५३
				2011	44.4

•				
ग्रंथकार का नाम	म्रंथ ताम म्रंथ	सूची की पत्र सं०	प्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम प्रंथ सूची की पत्र संब
जिनप्रभसूरि—	सिद्धहेमतंत्रवृत्ति	२६७	दामोदर	चन्द्रप्रभचरित्र १६४
जिनदेवसूरि—	मदनपराजय	३१७		प्रशस्ति ईं०५
निननाभसूरि—	चतुर्विशतिजिनस्तुति	३८७		व्रतकथाकोश २४१
जिनवद्धं नसूरि—	ग्रलकार वृत्ति	३०५	देवचन्द्रसूरि—	पाइवैनाथस्तवेन ६३३
जिनसेनाचार्य—	ग्रादिपुरास १४	२, ६४६	दीन्तितदेवदत्त-	सम्मेदिशाखरमहोत्म्य १२
	ऋषभदेवस्तुति	३न१	देवनदि-	गर्भपडारचक्र १३ं१, ७३७
	जिनसहस्रनामस्तोत्र	738		जैनेन्द्रव्याकरण २५ं६
	४२५, ५७३	, ६४७		चौवासतीर्थंकरस्तवनं ६०६
	90	৩, ৬४७		सिद्धिशियस्तोत्र ४२१
जिनसेनाचार्य	हरिवंशपुराएा	'१५५		४२४, ४२७, ४२६, ४३१,
जिनसुन्दरसूरि—	होलीकथा	२५६		५७२, ४९४, ५७८, ५९७,
स० जिनेन्द्रभूषण—	जिनेन्द्रपुराख	१४६		६०५, ६०६, ६३३,
भ० ज्ञानकीत्ति—	यशोधरचरित्र	१६२		६३७; ६४४
ज्ञानभास्कर —	पाशाकेवली	२६६	देवसूरि—	शातिस्तवन ६१६
ज्ञानभूषण—	ग्रात्मसंबोधनका व्य	१००	देवसेन —	म्रालापपद्धति १३०
•	ऋषिमडलपूजा ४६	३, ६२६	देवेन्द्रकीर्त्त—	चन्दनपष्ठीव्रतपूजा ४७३
	गौम्मटसारकर्मकाण्डटी	का १२		चन्द्रप्रभजिनपूजा ४७४
	तत्वज्ञानतरगिगाी	५६		त्रेपनक्रियोद्यापन ६३८, ७६६
	पचकल्याग्यकोद्यापनपूर	ग ६६०		द्वादशव्रतोद्यापनपूजा ४६१
	भक्तामरपूजा	५२		पंचमीव्रतपूजा ५०४
	श्रुतपूजा सरस्वतीपूजा	४३७		पंचमेरुपूजा ५१६ प्रतिमासातचतुर्दशोपूजा ७६१
		પ ર પ્ર , પપર		रविव्रतकथा २३७, ५३५
	सरस्वती स्तुति	६५७		रीवन्नतकथा २२७, २२२ रीव्रतकथा २३६
देवज्ञद्वं ढिराज—	जातकाभरसा	रनर	1	दन्नतकथा २४२
त्रिभुवनचंद्र—	त्रिकालचौबीसी	४५४		
द्याचद्र	तत्वार्थसूत्रदशाध्यायपूज	ı	द्रौर्भसह—	
		४६२	धनञ्जय—	कातन्त्ररूपमालाटीका २५८ द्विसधानकाव्य १७१
दलिपतराय बंशीधर—	अलंकाररत्नाकार	३०८	- 101 1	नाममाला २७४, ४७४
	-	j		transit feet in
				•

[ग्रंथ एवं प्रन्थकार

सहस्रनामपूजा ७४७ न गोजाभट्ट— परिभाषेन्दुशेखर २६१ पर्मचद्रगिण्य ग्रीभधानरत्नाकर २७२ नाढमल्ल— शार्ज्ज धरसिहताटीका ३०६ पर्मधर— नागकुमारचरित्र १७६ पर्मभूभण्य जिनसहस्रनामपूजा ४८०, ५५२ नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र २८५ पर्मभूभण्य जिनसहस्रनामपूजा ४८०, ५५२ नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र २८५ नित्रज्ञिका ५५६ नित्रज्ञिका १५६ नित्रज्ञिका १६६ नित्रज्ञिका १६६ नित्रज्ञका १६६ नित	प्रंथकार का नाम	ब्रंथ नाम श्रंथ सूर्च पर	ति की त्र सं०	प्रथकार का नाम	यंथ नाम	ग्रंथ सूची व पेत्र सं	ती io
निवायहारस्तीत्र ४१४, ४२५		६८६, ६९६,	७११,	नरहरिभट्ट—	श्रवराभूषख	१६	3
४२७, ५६४, ४७२, ४६४, ६२४ ह्र ६३०, ६४६ प्रमावती पूजा ६४४ प्रमंकलशसूरि— सन्देहसमुन्नय ३३८ वर्गकी ति — नेमुदीकया २२२ प्रमंकी ति — नेमुदीकया २१२ प्रमंकी ति — नेमुदीकया २१२ प्रमंकि ति — क्षण्यतास १४६ सहस्रमुस्ति १४६ सहस्रमुस्ति १४६ गीतमस्त मीचिर १६३ गोनम्मदसारटीका १० संयोगपचमीकया २४३ सहस्रमामपूजा ७४७ सिद्धान्तमां प्रमंकि १६६ मिद्धान्तमां प्रमंकि १६६ मिद्धान्तमां प्रमंकि १६६ मिद्धान्तमां १६६ मिद्धानमां १६६ म		७१२,	७१३	नरेन्द्रकीर्त्ति—	विद्यमानबीस	बीर्थंकर	
६०५, ६३३, ६३७, ६४६ धर्मकताशसूरि— सन्देहसपुच्चय ३३६ पद्मावती पूजा ६५५ प्रतिष्ठावीपक १२६ पत्तवाय पूजा ६६५ विद्यान्तसारसग्रह ४७ नागराज— विवापहारस्तोत्रदीका ४१६ नागराज— विवापहारस्तोत्रदीका ६०६ नागराज— विवापहारस्तोत्रदीका ६०६ नागराज— विवापहारस्तोत्रदीका १०६ नाजा अष्ट पर्तावादीका २०६ चर्मचन्नगण्णि— ग्राविवात समुज्य १७६ घर्मभूषण्ण प्रतिवादीका ३०६ चर्मचन्नगण्णि १०६ चर्मभूषण्ण पर्वात्वतीय १६६ चर्मवित्वतारस्त्रवित्वतीय १६६ चर्मवित्वता पर्वात्वतीय १६६ चर्मवित्वता पर्वात्वतीय १६६ चर्मनेत्रविद्या १६५ चर्मनेत्रविद्या १६६ चर्मनेत्रविद्या १६५ चर्मनेत्रविद्या १६५ चर्मनेत्रविद्या १६६		विषापहारस्तोत्र ४१५,	४२५			पूजा ५३	३५
धर्मकतशस्रि सन्देहसमुच्चय ३३० तरेन्द्रसेन प्रमाणप्रमेयकलिका १३०, ४७४ प्रमंकीति — कौमुदीकथा २१२ पदापुराण १४६ सहस्रमुणितपूजा ४५२ सहस्रमुणितपूजा ४५२ सहस्रमुणितपूजा ४५२ सहस्रमुणितपूजा १६६ मोतमस्व मोचरित्र १६३ गोत्मस्य मोचरित्र १६३ गोत्मस्य मोचरित्र १६३ गोत्मस्य मोचरित्र १६३ गोत्मस्य मोकथा २५३ सहस्रनामपूजा ७४७ संयोगपचमीकथा २५३ सहस्रनामपूजा ७४७ साम्रास — विद्यम्पुस्तमस्त १७२ साम्रास — विद्यम्पुस्तमस्त १६६ धर्मभूत्रम् विद्यम्पुस्तमस्त १६६ धर्मभूत्रम् विद्यम्पुर्वा १३५ साम्रास — विद्यम्पुर्वा १३५ साम्राम्युर्वा १३५ साम्राम्युर्वा १३५ साम्राम्युर्वा १३५ साम्राम्युर्वा १३६ साम्राम्युर्वा १६६ साम्राम्युर्		४२७, ५६५, ५७२,	प्रह्म,			६४५, ७१	६३
पर्मकीति — वीमुदीकथा २२२ पश्मुराएए १४६ पहलम्भ पूजा १६४ प्रतिष्ठादीपक १२१ प्रतिष्ठादीपक १२१ प्रतिष्ठादीपक १२१ प्रतिष्ठादीपक १६४ प्रतिष्ठादीपक १८४ प्रतिष्ठादीपक १८४ प्रतिष्ठादीपक १८६ प्रतिक्षाको १८६ प्रतिक्ष		६०५, ६३३, ६३७,	, ६४६		पद्मावती पूर	ना ६	५५
पद्मपुराण् १४६ सहस्रप्रित्तपूजा १४२ सहस्रप्रित्तपूजा १४२ संवानस्य पूजा १६४ गीतस्व सीचरित्र १६३ गोम्मटसारटीका १० संयोगपचमीकथा २४३ सहस्रनामपूजा ७४७ सम्बद्धमामपूजा ७४७ सम्बद्धमामपूजा ७४७ सम्बद्धमामपूजा ७४७ सम्बद्धमामपूजा १६६ स्विग्रुक् नामकुक्य स्विनीलकठ नीलकठताजिक १६६ स्विग्रुक् मायविच्य सुल्वय सुल्वय स्विन्द्रस्व सप्वाववोध १४ स्विग्रुक् मन्दिक्यन्वय सुला १६४ सामपूजा १६४ सामपूजा १६४ स्विग्रुक्त नीलकठताजिक १६६ स्विग्रुक्त भावविच्याववोध १४ स्विग्रुक्त समुल्वय सुला १६४	धर्मकलशसूरि—	सन्देहसमुच्चय	३३८	तरेन्द्रसेन—	प्रमाग्पप्रमेय [ः]	क्तिका	
सहस्रगुण्तिवृजा ५६२ में धर्मचन्द्र— कथाकोश २१६ गौतमस्व,मीचिरत १६३ गोम्मटसारटीका १० संयोगपचमीकथा २५३ सहस्रनामपूजा ७४७ धर्मचन्द्रगण्णि— ग्राभधानरत्नाकर २७२ धर्मधर— विद्यध्युखमडन १६६ धर्मभूभण्ण— जिनसहस्रनामपूजा ४६०, ५६२ व्यावदिण्का १३५ श्रीतलनाथपूजा ५४६ नीदिगुरु— ग्राथिकत समुन्वय चुलिका टीका ७४, ७६० निन्दिषेण्ण— नन्दीश्वरवतीद्यापन ४६४ निनिन्नित्रसिंह— सप्तनयाववोध १४ निनेन्नित्रसिंह— सप्तनयाववोध १४ निनेन्नित्रसिंह— सप्तनयाववोध १४ निनेन्नित्रसिंह— सप्तनयाववोध १४ निनेन्नित्रसिंह— सुमानकाव्यक्रीका १७६ निनेन्नित्रसिंह— सुमानकाव्यक्रीका १७६	धर्मकीत्ति —	कौ मुदोकथा	२२२			१३७, ५	,७५
मः धर्मचन्द्र— कथाकोश २१६ गौतमस्व.मीचरित्र १६३ गौरमटसारटीका १० संयोगपचमीकथा २५३ सहस्रतामपूजा ७४७ धर्मचद्रगिए स्रिक्षानरताकर २७२ धर्मचद्रगिए स्रिक्षानरताकर २७२ धर्मचद्रगिए मानकुमारचित्र १६६ धर्मधर— नागकुमारचित्र १७६ धर्मभूत्रण जिनसहस्रतामपूजा ४६० धर्मभूत्रण जिनसहस्रतामपूजा ४६० धर्मभूत्रण जिनसहस्रतामपूजा ४६० धर्मभूत्रण जिनसहस्रतामपूजा ४६० स्रिक्षण १३५ श्रीतलनाथपूजा ५४६ नीदिगुरू— प्रायदिचित समुच्चय च्रिक्ता टीका ७५, ७६० निन्देषेण नन्दीश्वरत्रतीद्यापन ४६४ स्रिक्षण स्रिक्षण १६४		पद्मपुरागा	१४६		प्रतिष्ठादीपम	; ¥	२१
गौतमस्वामीचरित्र १६३ गोम्मटसारटीका १० संयोगपचमीकथा २४३ सहस्रनामपूजा ७४७ धर्मचद्रगिण् ग्राभधानरत्नाकर २७२ धमदास विद्यापुत्रमहत्नाकर १६६ धर्मधर नागकुमारवरित्र १७६ धर्मभ्रूथण जिनसहस्रनामपूजा ४८०, ५५२ व्यायदीपिका १३५ किविनीलकठ नीलकठताजिक २८६ किविनीलकठ नीलकठताजिक २८६ किविनीलकठ मीलकठताजिक २८६ किविनीलकठ मीलकठताजिक २८६ किविनीलकठ मिचन्द्रम् सप्तनयाववोध १४ मिचन्द्रम् प्राथिका १५६		सहस्रगुगाितपूजा	५५२		रत्नत्रय पूज	11 x	168
गौतमस्वामीचरित्र १६३ गोम्मटसारटीका १० संयोगपचमीकथा २५३ सहस्रनामपूजा ७४७ सहस्रनामपूजा ७४७ समदास — विद्यमुखमडन १६६ धर्मघर — नागकुमारचरित्र १७६ धर्मभूत्रण — जिनसहस्रनामपूजा ४८०, ५५२ व्यायदीपिका १३५ कीतलनाथपूजा ५४६ नीदिगुरु — प्रायदिवत समुच्चय चूलिका टीका ७५, ७८० निद्वेषण् — नन्दीक्वरव्रतीद्यापन ४६४ सुप्रमाताष्ट्रक ६५ निद्वेषण् — नन्दीक्वरव्रतीद्यापन ४६४ सुप्रमाताष्ट्रक ६५ निद्वेषण् — नन्दीक्वरव्रतीद्यापन ४६४ सुप्रमाताष्ट्रक ६५ नीसचन्द्र — स्थानकाव्यकीका १०	म॰ धर्मचन्द्र—	कथाकोश	२१६		सिद्धान्तसा	रसग्रह	४७
संयोगपचमीकथा २५३ तागेशभट्ट— तिद्धान्तमंजूिषका २७० प्रभावनुतािण्य प्राभधानरत्नाकर २७२ प्रमावनुतािण्य प्राभधानरत्नाकर २७२ प्रमावन्ता १६६ प्रमावन्ता १८६ प्रमावन्ता १८६ प्रमावन्ता १८६ प्रमावन्ता १८६ प्रमावन्ता १३५ त्यायदीिपका १३५ त्यायदीिपका १३५ त्यायदीपका १३५ त्यायदीपका १३५ त्यायदीपका १३५ त्यायदीपका १३५ त्वातकनाथपूजा ५४६ निनेत्रसिंह— सप्तनयाववोध १४६ निनेत्रसिंह— सप्तनयाववोध १४ निनेत्रसिंह— सप्तनयाववोध १४ निनेत्रसिंह— सुप्रभाताष्ट्रक ६३		गौतमस्व.मीचरित्र	१६३	नागचन्द्रसूरि—	विषापहार	स्तोत्रटीका 🕥	४१६
सहस्रनामपूजा ७४७ न गाजाभट्ट— परिभाषेन्दुशेखर २६१ माजाभट्ट— परिभाषेन्दुशेखर २६१ माजाभट्ट— श्री चाडाभट्ट— श्री चाडाभट्ट— श्री चाडाभट्ट— नावमरत्त्र १७६ चर्माघर— नागकुमारनित्र १७६ चर्माभूभण्य— जिनसहस्रनामपूजा ४८०, ५५२ नारचन्द्रज्योतिषक्षशास्त्र २८५ चर्योतिषक्षशास्त्र २६५ चर्योतिषक्षशास्त्र २८५ चर्योतिषक्षशास्त्र २८५ चर्योतिषक्षशास्त्र २८५ चर्योतिषक्षशास्त्र २८५ चर्योतिषक्षशास्त्र २६५ चर्योतिषक्षशास्त्र २६५ चर्योतिषक्षशास्त्र २८५ चर्योतिषक्षशास्त्र २६५ चर्योतिषक्ष २५५ चर्योतिषक्ष २५		गोम्मटसारटीका	१०	नागराज—	विगल शा स	ন	३१ १
सहस्रनामपूजा ७४७ न गोजा भट्ट— परिभाषेन्दुशेखर २६१ धर्मचद्रगिए ग्रिभाषेन्दुशेखर २६१ नादम्स न विदग्धमुखमडन १६६ नारचद्र— कथारत्नसागर २२० घर्मभूभए नागकुमारचरित्र १७६ घर्मभूभए जिनसहस्रनामपूजा ४५०, ५५२ नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र २६५ चर्मभूभए किनसहस्रनामपूजा ४५०, ५५२ नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र २६५ निद्रगुरु मृतिनेन्नसिंह स्तनयाववोध १४५ निद्रगुरु प्रायिद्यत समुच्चय मृतिनेन्नसिंह सप्तनयाववोध १४ च्रिमधानकाव्यक्रीका १५५ नन्दीस्व दत्रतोद्यापन ४६४ मुप्रभाताष्ट्रक ६३		संयोगपचमीकथा	२५३	नागेशभट्ट—	सिद्धान्तमं	जूषिका	२७०
धर्मधर— नागकुमारचरित्र १७६ ज्योतिषसारसूत्रिटप्पण २०३ ज्योतिषसारसूत्रिटप्पण २०३ ज्योतिषसारसूत्रिटप्पण २०३ नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र २०५ नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र २०५ नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र २०५ किनसहस्रनामपूजा ४०५ किनसहस्रनामपूजा ४४६ किनोलकठ— नीलकठताजिक २०५ शितलनाथपूजा ४४६ शब्दशोभा २६५ सप्तनयाववोध १४ चूलिका टीका ७५, ७०० नेसिचन्द्र— द्विमधानकाव्यकीका १७ सुप्रभाताष्ट्रक ६३		सहस्रनामपूजा	७४७		परिभाषेन्दु	, वो ख र	7 ६१
धर्मधर— नागकुमारचरित्र १७६ ज्योतिषसारस्त्रिटिपण् २०३५ नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र २०५ नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र २०५ नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र २०५ किन्नाथपूजा १३५ किन्नाथपूजा ५४६ शब्दशोभा २६५ नेदिगुरु— प्रायदिचत समुच्चय मुनिनेत्रसिंह— सप्तनयाववोध १४ चूलिका टीका ७५, ७०० नेमिचन्द्र— द्विमधानकाव्यक्षेका १७ सुप्रभाताष्ट्रक ६३	धर्मचद्रगिण्—	ग्रभिधानरत्नाकर	२७२	नाढमल्ल—	शाङ्ग धरस	।हिताटीका	३०६
धर्मभूश्रम्— जिनसहस्रनामपूजा ४८०, ५५२ नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र २८५ नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र २८५ नालकठताजिक २८५ शितलनाथपूजा ५४६ शब्दशोभा २६५ नंदिगुरु— प्रायिवत समुच्चय मुनिनेत्रसिंह— सप्तनयाववोध १४ नृतिका टीका ७५, ७८० नेमिचन्द्र— द्विमधानकाव्यक्षेका १७ सुप्रभाताष्ट्रक ६३	धमदास —	विदग्धमुखमडन	१९६	नारचद्र	कथारत्नस	ागर	२२०
न्यायदीपिका १३५ कृबिनीलकठ नीलकठताजिक २८६ श्वीतलनाथपूजा ५४६ शब्दशोभा २६६ नंदिगुरू प्रायिहचत समुच्चय मुनिनेत्रसिंह सप्तनयावबोध १४६ चूलिका टीका ७५, ७८० ने सिचन्द्र दिमधानकाव्यक्षेका १७६ नन्दीश्वरवतीद्यापन ४६४ सुप्रभाताष्ट्रक ६३	धर्मधर—	नागकुमारचरित्र	१७६		ज्योतिषस	ारसूत्र ि ष्परा	२५३
न्यायदीपिका १३५ कृविनीलकठ— नीलकठताजिक २८६ श्रीतलनाथपूजा ५४६ शब्दशोभा २६६ नंदिगुरु— प्रायश्चित समुच्चय मुनिनेत्रसिंह— सप्तनयाववोध १४ चूलिका टीका ७५, ७८० नेमिचन्द्र— द्विमधानकाव्यक्षेका १७ नन्दीश्वरव्रतीद्यापन ४६४ सुप्रभाताष्ट्रक ६३	धर्मभू ४ण—	जिनसहस्रनामपूजा ४	<i>१</i> ८०, ५५	२	नारचन्द्रज	योतिषशास्त्र	रदर
नंदिगुरु— प्रायिवत समुच्वय मुनिनेत्रसिंह— सप्तनयाववोध १४ चूलिका टीका ७४, ७८० ने सिचन्द्र— द्विनधानकाव्यक्षेका १७ नन्दिषेग्— नन्दीश्वरव्रतोद्यापन ४९४ सुप्रभाताष्ट्रक ६३	-	न्यायदीपिका	१३४	कविनीलकठ—	नोलकठत	ाजिक	२५४
चूलिका टीका ७५, ७८० ने सिचन्द्र हिमधानकाव्यक्षेका १७ नन्दिषेगा— नन्दीश्वरव्रतीद्यापन ४९४ सुप्रभाताष्ट्रक ६३		शीतलनाथपूजा	५४६		शब्दशोभ	t	२६४
नन्दिषेगा— नन्दीश्वरव्रतोद्यापन ४९४ सुप्रभाताष्ट्रक ६३	नंदिगुरु—	प्रायश्चित समुच्चय		मुनिनेत्रसिंह—	सप्तनयाः	वोध	१४०
		चूलिका टीका ।	७४, ७८०	' नेसिचन्द्र—	द्विमधान	काव्य क्षेका	१७२
10.00	नन्दिषेग्—	नन्दीश्वरत्रतोद्यापन	887	6	सुप्रभाताः	र ुक	६३३
प० तकुल— ग्रश्वलक्षरा ७८१ व्र० नेसिद्त्त - ग्रौषधदानकथा २१	प० नकुल—	ग्रश्वलक्षरा	ড ন	१ व्र॰ नेसिद्त्त-	ग्रीषधदा	नकथाः	२१८
शालिहोत्र ३०६ अष्टकपूजा ५६		-	\$ o £	Ę	ग्र ष्टकपूज	ī	५६०
प० नयविलास— ज्ञानार्शवटीका १०८ कथाकोश (ग्राराधना—	^{√ू} प० नयविलास—	- ज्ञानार्श्ववटीका	80	5	कथाकोइ	। (ग्राराधना-	•
नरपति— नरपतिजयचर्या २८५ कथा कोश) २१		नरपत्तिजयचर्या	२८	પ્ર		कथा कोश)	२१६
नर्सिंहभट्ट— जिनशतटीका ३६१ , नाग श्री कथा २३	नर्रांसहभ ट्ट	जिनशतटीका	38	۱ ا	,, नाग श्री	क्या	२३१

- •						-		•
प्रंथ्कार का नाम	प्र'थ नाम	म्रंथ सूर् प	वी की त्र सं०	प्रंथकार का नाम	ग्रंथ	नाम	प्रंथ स्	्ची की पत्र सं॰
•	धन्यकुमार न	वरित्र	१७३		1	सिद्धपूजा		<i>५</i> ३७
	धर्मोपदेशश्रा	वकाचार	६४			स्तोत्र		५७५
	निशिभोजन	क्या	२३१	पद्मनाभ		भाष्यती		२≂१
	पात्रदानकथ	ī	२३३	पद्मनाभकायस्य —	;	यशोधरचरि	ষ	१५९
	श्रीतिकरचरि	ষ	१८२	प्रदाप्रभदेव—		पाइर्वनायस	तोत्र	४०५
	श्रीपालचरिः	त्र	२००			•	६१४, ७०	२, ७४५
	सुदर्शनचरिः	4	२०५		;	लक्ष्मीस्तोत्र	·	४, ४२३
पंचाननभट्टाचार्य—	सिद्धान्तमुक्त	ावली	२७०			४२६, ४	३२, ५६	६, ५७२,
पद्मनंदि I—	पद्मनिद्दपच	विशतिका	६६	1				१४, ६४५
	पद्मनिदशा	वकाचार ६	۶, <u>٤</u> σ	_ '				३, ७१९
पद्मनंदि ॥—	ग्रनन्तग्रतकथ	П	२१४	पद्मप्रभसूरि—		भुवनदोपक		२५९
	करुएाष्ट्रक		২ ৩४	परमह्सपरित्राजकाच	ार्य	मुहूत्त ^६ मुक्त	ावली	२८१
	ę	ध्हे हह	, ६८८			मेघदूतटीक	7	१ ५७
•	द्वादशत्रतोद्य	ापनरूजा	४६१	पाग्गिनी—		पाश्चिनीव्य	ाकरएा	२६१
	दानपंचादात	•	Ęo	पात्रकेशरी—		पत्रपरीक्षा		१३६
	धर्मरयायन		६१	पार्श्वदेव		पद्मावत्यपृव		४०२
	पार्श्वनाथस्त	ो त्र	५६६	पुरुषोत्तमदेव		ग्रभिधानव		२७१
			७४४			निकाण्ड कोष	ाभिघान	२७४
	पूजा		४६०			हारावलि		२११
	नंदोश्वरपि	त्तपूजा	६३६	पूज्यपाद—		इष्टोपदेश	(स्वयभूस्त	ोत्र)
	भावनाचौर्त	सि					Ę	१५, ६३७
	(भावनापः	द्वति) ५७४	, ६३४			परमानदस्त	गित्र	४७४
	रत्नत्रयपूजा	•	५२६			श्रावकाचा	•	60
		५७५	., ६३६,			समाधितत्र		१२४
	ं लक्ष्मीस्तीत्र		६३७			समाधिशत	क	१२७
	वीतरागस्ती	त्र	४२४,		;	सर्वायंसिद्धि	•	፣ የ
•		७४, ६३४	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	पूर्णदेव	7	यशोध रचरि	7	१६०
t	सरस्वतीपूज	ा ५५१	, ७११	पूर्णचन्द्र—	3	उपसर्गह र स्तं	त्रि	३८१

प्रथकार क नाम		ाूची की पत्र सं०	प्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम प्रं	थ सूची की पत्र सं॰
पृथ्वीघराचार्ये—	चामुण्डस्तोत्र	३८८	भक्तिलाभ—	पष्टिशतकटिप्परा	३३६
हुज्याचरा नाच	भुवनेश्वरीस्तोत्र	•	भट्टशकर	वैद्यविनोद	३०५
	(सिद्धमहामत्र)	388	भट्टोजीदीचित—	सिद्धान्तकोमुदी	२ ६७
प्रभाचन्द्र—	ग्रात्मानु शासनटीका	१०१	भट्टोत्पल	लघुजातक	२६१
441. 4° X	ग्राराधनासारप्रवध	२१६		वृहज्जातक	२६१
	ग्रादिपुरा ग्रटिप्पग्	१४३		षटप चासिकावृत्ति	२ हर
	उत्तरपुरा ग टिप्पग	१४५		नवग्रहपूजाविधान	48 8
	क्रियाकलापटीका -	५३	भद्रवाहु	भद्रव।हुसहिता	रहर
	तत्वार्थरत्नप्रभाकर	२१		(निमित्तज्ञान)	
	द्रव्यसंग्रहवृत्ति	३४		नीतिशतक	३ २५
	नागकुमारचरित्रटीका		भतृ हरि—		\$ <i>E</i> 4
	न्यायकुमुदचन्द्रिका	१३५		वरागचरित्र वैराग्यशतक	११७
	प्रमेयकमलमार्त्तण्ड	१३८			३३३, ७१५
	रत्नकरण्डश्रावकाचार-				
	टीक		भागचद—	•	४१३, ४२६
	यशोधरचरित्रटिप्पग्	१६२	मानुकीत्ति—	रोहिग्गीव्रतकया	२३६
	समाधिशतकटीका	१२७		सिद्धचन्नपूजा	オイタ
	स्वयंभूस्तोत्रटीका	748 8	भानुजीदीित्तन—	ग्रमरकोषटीका	२७४
भ० प्रभाचद्र	कलिकुण्डपार्स्नाथपूर		भानुदत्तमिश्र—	रसमंजरी	३५६
	मुनिमु व्र तछद	४४७	तीर्थमुनि—	न्यायमाला	१३५
	सिद्धचक्रयूजा		् परमहसपरित्राजकाचा	र्चश्रीभारती—	
वहुमुनि—	्" सामायिकपाठ	४३	तीथमुनी—	न्यायमाला	१३५
बालचःद्र—	तर्कभापाप्रकाशिका	१३२	भारवी—	किरातार्जु ^र नीय	१६१
त्रहादेव	े द्रव्यसग्रहवृत्ति	३४	भावशर्मा—	लघुस्नपनटीका	4 33
	परमात्मप्रकाशटीका	१११	भारकराचार्य—	लोलावती लोलावती	3 54
त्रह्मसेन—	क्षमावशीपूजा	४६४	भारकरायाय— भूपालकवि—	भूपालचतुर्विश तिस	
,	रत्नत्रयकामहार्घ व		Z101414	•	५७२, ४६५
`	क्षमावर्णी	७५१		-	२७५, द्रहर १०५, ६३३
		• •		•	(~~\) ***

ग्रंथकार का नाम		्ची की पत्र सं॰	प्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम प्रंथ सूची की पत्र सं०
प० मगल (संप्रह कर	र्ग)—वर्मरत्नाकर	६२		शव्द व धातुभेदप्रमेद २७७
मिशाभद्र—	क्षेत्रपालपूजा	६८६	माच	शिशुपालयय १८६
मद्नेकीर्त्ति-	ग्रनंतव्रतविधान	२१४	माघनदि—	चतुर्विशतितीर्थंकर
•	पोडशकारग्विधान	५१४		जयमाल ३८८, ४६६
मद्नपाल	मदनविनोद	३००		५७६
मानसिश्र	भावप्रकाश	३४६	माणिक्यनंदि—	परीक्षामुख १३६
मधुसूदनसरस्वती—	सिद्धान्तविन्दु	२७०	माणिक्यभट्ट—	वैद्यामृत ३०५
मनूसिंह	योगचिन्तामिए।	३०१	म। शिक्यमूरि—	नलोदयक्राव्य १७४
मनोहरश्याम—	श्रुतवोधटीका	३१५	माधवचन्द्रत्रैविद्यदेव—	त्रिलोकसारवृत्ति ३२२
मल्लिनाथसूरि—	रघुवशटीका	१६३		क्षपणामारवृत्ति ७
•	शिशुपालवधटीका	338	माधवदेव—	न्यायसार १३५
मल्लिभूपग्—	दशलक्षगानतीचापन	४५६	मावतु गाचायं—	भक्तामरम्तोत्र ४०७,
मल्लिपेणसूरि—	नागकुमारचरित्र	१७५		४२५, ४२६, ४३१, ५६६,
•	भैरवपद्मावतीवस्प	388		४६६, ६०३, ६०४, ६१६, ६२८, ६३४, ६३७, ६३६,
	सज्जनित्तवल्लभ	३३७		६४४, ६४=, ६५१, ६५२,
•		५७३		६६४, ६६४, ६७०, ६८१,
	स्याद्वदमज री	१४१		६८४, ६८१, ७०३, ७०४,
महादेव—	मुह्र्त्तदीपक	२६०		७०६, ७०७, ७४१
_	सिद्धान्तमुक्नावलि	१४०	मुनिभद्र—	शातिनायस्तोत्र ४१७, ७१५
महासेनाचार्य—	प्रद्युम्नचरित्र	१८०	पं० मेवाबी	ग्रष्टागोपाख्यान २१५
महीत्त्पग्यकवि—	ग्रनेकार्थध्वनिमजरो	२७१	भ मेरूचट—	धर्मसग्रहश्रावकाचार ६२ ग्रनन्तचतृदेशीपूजा ६०७
भ० महीचन्द—	त्रिलोकतिलकस्तोत्र		_	ग्रनन्तचतुर्देशीपूजा ६०७ कलशविधान ४६६
	६८: पचमेह्नपूजा	२, ७१२ ६०७	मोहन—	
		, E 0 0	यश.कीर्त्ति—	- 11
महीधर—		, ૧૭૭ ૧, ૧૭૭		धमज्ञर्माम्युदयटीका १७४ प्रवोधसार ३३१
सहायर	स्वर्णाकर्पणविधान	४२८ ४२८	यशोनन्दि —	धर्मचक्ररूजा ४६१, ४१५
महीभट्टी—	सारस्वतप्रक्रियाटोका	* 45 7 5 6	पर्यामाग्द् —	पचपरमेष्ठीपूजाविधि _{ःः} ५०२,
महेश्वर—	विश्वप्रकाश	२७७		पचपरम्हापूजावाकः, ४०६, ४१६
· 1 4 7 7 7		199 [4,00,45

ςξ	ی

प्रथ एव प्रन्थकार]	•	प्रंथकार का नाम	मंथ नाम प्रंथ सूची	ा की सं॰
प्रथकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रथ सूचा का पत्र सं०		पत्र ग्रध्यात्मकमलमार्त्तेण्ड	१२६
यरोविजय—	_{कलिकु} ण्डप।र्श्वनाथपूजा ६५ <i>६</i> तत्त्वार्थवृत्ति २२	राजमल्ल—	जम्बूस्वामीचरित्र	१६ <u>६</u> 5४
योगदेव — रघुनाथ —	तार्किकशिरोमिए। १३३	राजशेषर—	लाटीसंहिता कर्पू रमंजरी	३१६
साधुरण्मल्ल-	धर्मचक्रपूजा ४६२	राजिंसह—	पार्श्वमहिम्नस्तोत्र पार्श्वनायस्तोत्र ५६ ६	४०६ , ७३७
रत्नशेखरसूरि—	छुंदकोश ३०६ रत्नत्रयविधानकथा २४	राजहसोपाध्याय—	पप्ट्याधिकशतकटीका	४४ २३३
रत्नकीर्त्ति—	रत्नत्रयविधानपूजा ५३ जिनगुगासपत्तिपूजा ४७।	1 000	पुण्याश्रवकथाकोप सिद्धान्तचन्द्रिका	२६८
रत्नचन्द—	५१	ू रामवाजपेय-	समरसार त्रैलोक्यमोहनकवच	२६४ ६६०
	पुष्पाजलिव्रतपूजा ५	रायमल्ल-	वैद्यजीवनटीक। श्रृङ्गारतिलक	३०४ ३५६
	सुभीमचरित्र (भौमचरित्र) १५५, २ _{नन्दीश्वरद्वीपपूजा} ४	ES (144) 41.	जन्मप्रदीप ग्रर्थप्रकाश	२ ५ १ २६६
र्त्तनदि—		्र, लकानाथ— ११३ लच्मग्र (अमर्रा		३०३
	भद्रवाहुचरित्र	१६३ १६६ लह्मीनाथ—	िं गलप्रदीप	३१ १
रत्नपाल—	सोलहकारसक्या	६९५ लद्मीसेन— ५५४	ग्रभिषेकविधि कर्मचूरव्रतोद्यापनपू	
रत्नभूषण्— श्त्नशेखर—	सिद्धपूजा गुर्गास्थान क्रमारोहसूत्र	4	चिन्तामिण पाईर्व	४६४, ५१७ नाय
	समवसरगापूजा प्रमागानयतत्त्वावलोका	<u>५३७</u> _	पूजा एव स	तोत्र ४२३
र्त्तप्रभसूरि-	न लंकार टीका ग्रात्मनिदास्तवन	१ <i>३७</i> ३८०	चिन्तामश्चिरतव न सप्तर्विपूजा	५४५
रत्ताकर— रविपेणाचार्य	— पद्मपुराग्	१४५ लघुकवि—	सरस्वतीस्तवन ग्रक्षयदशमीकथा	४१ <u>६</u> ६ <u>६</u> ४
राजकीर्त्ति—		लितकीर्त्त-	_ ग्रक्षयदश्मानया ग्रुनंतन्नतकथा	६४४, ६६४

નાકું હું દું લિ–

नासवस्य---

೨೯೬

488

ያጀጸ

स्वोधंमाधन्री

गिएमेन्ट्रिका

श्रेपदाध

मात्रमीताप्रहोस

म्रोहरमिरिस्

मिद्धात्त्रित्रमिनदोपक

201

\$80

454

..

ग्रन्थ	एव	ग्रंथकार)
-, -			

ग्रन्थ एव ग्रंथकार	·		थकार का नास	प्रंथ नाम	त्रंथ सूची	की
म्रं थकार को नाम	प्रंथ नाम प्रंथ सूची प्र पत्र स	ì	भुवतर ल भ		पत्र स	
	-	30		तेरहद्वीपपूजा		5 Y
विजयकीर्त्ति—	dididionia.	- 1		पद		६१
र्या० विद्यानन्दि—		38		वूजाष्ट्रक		१३
	आधाराया	१३६		मागीतु गीगि		25
	44461411	४०१		_	.	. २२
		१३७		रेबानदीपूजा	•	१३२ . ०३
		१३८		_{चात्रु} झयगिरि	'a	५१३ ५४८
	यु व त्यनुशासनटीका	१३६		सप्तरिपूजा		५०न ५१६
	इलोकवा त्ति क	४४		सिद्धकूटपूज	•	
oc	n 6 -	२०६	विश्वसेन—	क्षेत्रपालपूज	•	४६७ ० =
मुमुज्जविद्यानन्दि—		२६५		पगावतिक्षे	• • • •	ሂየ ፟
उपाध्यायविद्यापति-	— ।चानस्ताजनस् चितामिंग्यपूजा (वृहद्)	४७५		पगावतिक्षेत्र		५४१
विद्याभूषणसूरि—	गजसिंहकुमारचरित्र	१६३		समवसरग्	स्तात्र	388
विनयचन्द्रसूरी—	•	१४	विष्णुभट्ट—	पट्टरीति		१३६
विनयचन्द्रमुनि—	द्विस धानकाव्यटीका	१७२	यिप्गुशर्मा—	पचतन्त्र		330
वितयचन्द्र—	भूपालचतुर्विशतिका			पचाख्यान		२३२
	स्तोत्रटीका	४१२		['] हितोपदेश		३४५
C	विदग्धमुखमडनटी.का	१९७	विष्णुसेनमुनि—		तुस्तोत्र ४१६,	
विनयरत्न — विमलकीर्त्ति —	धर्मप्रश्नोत्तर	६१	वीरनन्दि-	ग्राचारसा	_	86
विभावकारिय	सुखसपत्तिविधानकथा	२४५		चन्द्रप्रभच		१६४
62 -: 6	त्रिभगीसारटीका	३२	वीरसेन—	श्रावक्प्राय		58
विवेकनंदि— विश्वकीत्ति—	भक्तामरव्रतोद्यापनपूज	1 ५२३	बुपाचार्ये	उससग ि		५२
विश्वभूषण्—	ग्र ढाईद्वीपपूजा	४४५	वेद्व्यास—	नवग्रहस्ते		६४६
विस्पनूष्य	ग्राठकोडमुनिपूजा	४६१	वैजलभूपति —	प्रवोधचि		३१७
	इन्द्रध्वजपूजा	४६२	1 64	सरस्वती		४२०
	कलशविधि	_૪ ૬૬	शंकरभगति—	वालवी		१३८
	कुण्डलगिरिपूजा	४६५		शिवरा	त्रेउद्यापन विधिकथा	२४७
	गिरिनारक्षेत्रपूजा	४६६			(भा भगमा	,,,,

さりを	श्रवाबवार		४०१ क्विडास्ट्रियक्वेत्रीक
ጳፅኧ	र्विमसाधिका		£ 88
८५४	हरी वतत्र म्भावे	अध्यर—	कसंदर्भायवा ८६४, ५३७
इप्रह	र्यराज्यसाद	शीचग्द्रमुनि—	१ <i>१३</i> ६र्गेम्हलकरक -
\$3£	त्रीह्यम्ब्	—ક્રોમુક્તમાં	युभवःद्र—॥ यहात्तिकाकषा २१५
ት አአ	सिद्धनन्त्रपा		ग्रीसनःद्राचार्ये = ज्ञानार्योव १०६
કેશ્રદ	वैभापिवार्षींब		०४९ कि।इमप्तम — एउड़ी।हाड़ी
ዳሸሸ	(अटाईडीवर्पना)		विस्तम् - कायन्त्रव्याकर्यः ५४६
	<i>साङ</i> ्हर्स्सुवर्वेवा		त्रत्र <u>त्री</u> ष्टाम्हामण्णराकाव्यक्षि
ଜନ୍ନ	सञ्जनचित्तवस्त्वभ		<i>थ६२</i> १२कग्रिएयहरू
५०३	श्रीमिकाग्रीक्ष		3≂४ किंप्नणाणक्ष्म ^ज ा ४६ ६
よっと	र्वेत्नाव्यधिष्ठवर्यवा		१७१ प्रामायमार — कार्नामायार
६४०	पाडबर्पुरासा		हन समामा —शिरहारी शह
≈ <i>€</i> % '	पर्वस्यग्रेहापन ५०७		१०६ रसमजर — भानजीए
४०५	न्चतरमेघीद्या		<i>७४७</i> , ३१६ हिंगिशनिर्मिर्न — किगाट्र ०४
४०५	तब्रश्लातीतेवा		बार्ड्य हिंदा इ॰४
ድ ኳጸ	ाल्ट्रुमिड्डर्म		ुर० हिस्मेम् —ाड ^द ्वाप्र
ละห	रस्वाभिक्षिमित्र		ग्र <u>क</u> ्ध्यवस <i>६</i> ४७
०८	मींगुम्म्यू		यान्विदास अनवबर्द्यार्थेया ४४६
୦ ର 🎖	हरीहरुक्ष्मि		व्यक्तियन व्यक्तियन्त्र १६६
έጹአ	र्वेथा		यीमुरास नेमिनायसुनाएक ४६६
	भान्द्रेश एग्रिमान्न्न ह ी	i	राजुसास ३६०
አበጸ	माभ्र <u>न</u> िड्यहिहरीाम		<i>७३६</i> ामामानगड़
ระห	चन्द्रप्रभवरित		दलगामुन्सिका ६६०
र्वाट	चतुरिवशीतिजनाप्रक		वर्धार्थार्थार्थ इंटर
ऽ४४	चन्दनाचरित्र		<i>६६०</i> क्ष्णाञ्जनिक्
मन्दनपधित्रतपूजा २०३			इ.इ.च. इ.ए.च.सूदनर्तात्र ६६२
650	गंपीहरबब्धतेत्वा ६६०		श्रम्राचार्यं क्वानन्दलहरी ६०८
॰ में हम			भ्रे स्म
कि ि	मंथ नाम मंथ सूर	मोन रिस् ग्रिक्स	विक हिस अंथ सान क्ष्य सुनी की
打译	र सेत्र होते संस्		[003

74/34 4 4 H							_
प्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र	की सं॰	प्र'थ्कार का नाम	त्रंथ नाम	ग्रंथ सूर्ची पत्र	कीं सं•
नागराज	भावशतक	;	३३४		व्रतकथाकोष	त्र २	ΥŜ
भागराज श्रीनिधिस <u>स</u> ुद्र —	••••				षट्पाहुडटी	का र	११६
श्रामाय सञ्जूष्र श्रीपतिं —	जातककर्मप	द्वति	२८१		श्रुवस्कंधपूर	ता !	(४७
ગામાલ	ज्योतिषयट		६७२		घोडशकार		११०
श्रीभूष्या—		जा ४५६,			सरस्वतीस	••	४२०
आर्थनेत	चारित्रशुद्धि		४७४		सिद्धचक्रपू		143
	पाण्डवपुरा		१५०		सुगन्धदश	_	488
	भक्तामरङ		• •	सकलकीर्त्त-	ग्रष्टागसम्य		२१५
		५२३,	480	dadian a	ऋषभना		१६०
	हरीवंशपुर	ाण	१५७		कर्मविपा		X
थः नकीन्ति	पुब्पाजली	व्रतकथा	२३४		तत्वार्थंस		? ३
श्रुतकीर्त्त— श्रुतसागर—	ग्रनंतव्रतव		२१४		त्यानाय द्वादशानु रे		१०६
3,000		हिएीकथा	२१६		धन्यकुमा		१७ २
		चमीव्रतकथा	२१६		_	रनारन राजस्तोत्र	403
	चन्दनषर्ि		२२४		पुरा ग् सा		१५१
	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •		, ५१७			रेपासकाचार	७१
	जिनसहरू	ग्नामटीका	इट्ड		441111	718151111	83
		गिद्यटीका	१०७				
	तत्वार्थसृ	त्रटीका	२५		पार्श्वनार		308
		गुव्रतकथा	२२७			थपुरास	१५२
	पल्यविध	ानव्रतोपा ख्यान	Ŧ		मूलाचाः		હંદે
		कथा	२३३		यशोधर		१२५
	मुक्ताव	लिव्रतकथा	२३६	:	वद्धभाव	नपुराए।	१५३
	मेघमाल	ाव्रतकथा	ዲ ፂን	' \	व्रतकथा		र्र४२
	यशस्ति	लकचम्यूटीका	१८।	9	शातिन	ायचरित्र	१९ंद
	यशोधर	चरित्र	\$8	२	श्रीपाल		२०१
	रत्नत्रय	विधानकथा	२३	ا و	सद्भाषि	तावलि ३३८,	३४२
	रविद्रत	कथा	२३	9	सिद्धान्त	ासारदीपक	84
	विष्णु	कुमारमुनिकथा	१ २४	0	सुदर्शनः	चरित्र	२०५

አ ደ0		- {	• >	 .		16.2
	in Principle with a		ደዩ	万序		
ጸ०አ	व् नमासच्येद्यार्थेवा	}	•	किनाक्ष्मक्री		—इनीम्ड्रामी
258	त चक्छ्याधीक्ष्या	,	348	-	महिष्मान्	—कक्तीइमी
त्रह	<u>न्त्रेष्ठीव्ययदर्यवा</u>		<i>୦ ବ ଧ</i>	क्रि	pहड-शि ही	क्निसारस्वत—
ልጲኧ	(ज्ञैयस्मनतैया)		£5 <i>F</i>	~	मेलोसपसा	— <i>म्</i> नीकिम्डोम
८५६	क्तोद्यापन		ର	14-	डिह्मु फ्क	—क्षाध्यामित्रकृतिवाश
	ब्रानपचविश्वतिका		૧૩૬	म्रहेश	न् विश्ववा	
ਭ ፈሂ	17 विकासिक दिव	,	४१६	क्ति डि न्हें	कार्कारक	
κέο	श्रहार्डिकापुनाकरा		કેઈસ	l!	रह्यवधारीक	समयसन्दर्गाण—
ጻሸέ	<u> अयन्त्रजित्त्य</u>	—मेंकिइ•र्म	०८०			
สสด			, <i>FF3</i>) તે કે ત કે તે કે	Xe	
ละห	प्रोड्शकारराज्या		, F F 8	ፈ ጸረሂ,	-स्त्रभूरंक्रक्र-	
ፈጸ٥			८५०	E	सर्धसमाम्	
१८६	दश्यक्रियायपर्यंग		৯০%	હ્ય	हुम्डमहोमस	•
ጸረፈ	र्युयसारतेवा	—yगम£्रीम£	5 दे द	स्तीत्र ५७२,	वृहद्स्वयंभू	
SER	ाकि डिग्रह े छ	—ाणाग्ष्रह्महोत्रीममु	1	53, 5E?,		
ጸԹጀ	माध्द्री <u>द्</u> रिह्मिस	सुसातिबद्ध—			የቼወንሞኩንን	
Ę	ाक ि 5तिकृष्टमेक	<u> —</u> न्नीकिनीममु	ຄ ጾኔ			
588	सीमाग्यपंचसीक्या	सुन्द्रिवययगार्गा—	१३६	०६१- मा	युन्दयनुद्यास	
४१६	तरमसप्तस्याचक्रत्या		<i>୦</i> ଧ	לא' אפא'	ጻ	
ละห์	ተ ያ ደ ነ		36x	五	रिज्ञमागम्ह	
100%	- त बद्धाधिकवया	सद्यासार(—	398	प्राकृ	ग्रकतादकारी	
ब टे द्र	सैग्वाबबोर्पुया .	—ज्ञामुखसागर—	ครร	1	श्रासमीमास	ચાંનાવૃલમ્યમઙુ—
વકદ	भाविंदमहोत्राध	सिंधदुंच—	355	ार्गेष्टाक्र	नेक्कगङ्ग	—ग्रीफ्ड्रम ्
०८१	न् कैतितीमनम	· ·	80	ाकृष्टि	ग्राप्तडमर्नार	•
र्रा	किदिन्दिनाम इह	— फ्रा म्डीन्स्डामी	४०	विदा	<u> </u>	सम्बर्भता—
983	ट्रायहस्य । इ.स.च्या स्थाप	. 8	ደብአ		हिन्द्र इंदि	
ય કર	मक्षपुट	─ ॸ ॄहाागा <u>ज</u>	233		मेरपददना	H&Ude3—
388	महिद		\$30	1	म डीर्ट्सरतैत	मुनिसक्तकारी —
	भिभिष्कारमञ्जलम		630.			- JC
하다	1	मास्तार का नाम		fegy vie en	मंथ नाम	मंत्रसार या वास
ત્તુ. તૃ	मंश साम अंथ सून	على مستدعم تدييد	' "" '	U,-	•	_
別矩	sin jog på]					६०४]

यंथकार का नाम	श्रंथ नाम श्र	ंध सूची की पत्र सं०	प्रथकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रंथ	सूची की पत्र सं॰
~ t	नेमिनाथपूजा	338	\$	छंदोशतक	30€
ì	सुखसपत्तिव्रतोद्य	ापन ५५५		- पचमीव्रतोद्यापन	४०४
सुरेश्वराचार्य—	प चिकरणवात्ति			भक्तामरस्तोत्रटीका	४०१
सुयशकीित—	पंचकल्यागाकपूज	ा ५००		योगचितामरिए	३०१
सुल्हण कवि—	वृत्त रत्ना करटीक	ा ३१४	,	_ः लघुनार्ममाला	२७६
दैवज्ञ पं० सूर्य—	रामकुट्गकाव्य	१६४		लिधविधानपूजा	५३३
ञ्चा० सोमकी त्ति—	प्रद्युम्नचरित्र	१८१	,	श्रुतवोधवृत्ति	३१५
-	-स <i>प्तव्यसनकथा</i>	र्भ०	, महाकविहरिचन्द—	धर्मशर्माम्युदय	१७४
-	समवशरगपूजा	४४६	हरिभद्रसूरि—	क्षेत्रसमासटीका	५४
सोमदत्त-	वडोसिद्धपूजा			योगविदुप्रकररा	११६
-	(कर्मदहन	ापूजा) ६३६	-	पट्दर्शनसमुच्चय	358
सोमदेव—	म्रध्यात्मतर गिर्		हरिरामदास-	पिंगल छंदशास्त्र	३११
	नीतिवाक्यामृत	* 33°	हरिषेण	नन्दीश्वरविधानकथा	
~	यशस्तिलकचम्यू	१५७	_	_	५१४
सोमदेव	सूतक वर्णन		· ·	कथाकोश	२१६
सोमप्रभाचार्य—	मुक्तावलिव्रतक	था २३६	हेमचन्द्राचाये—	ग्रभिधानचिन्तामि ण सम्मानस	२७१
3	सिन्दूरप्रकरण	३४०		नाममाला ग्रनेकार्थसग्रह	२७१
•	सूक्तिमुक्तावल <u>ि</u>			अनुनायत्त्रम्ह् स्रान्ययोगन्यवच्छेदकद्व	_
सोमसेन-	त्रवर्णाचार विवर्णाचार	५५		अन्ययाग <i>ण्यय</i> च्छ्रपयष्ट शिका	ग्रन- ५७३
	दशलक्षग्रजयमा	ल ७६५		छदानुशासनवृत्ति	30€
-	पद्मपुराए।	१४५		द्वाश्रयकाव्य	१७१
	' मेरूपूजा	७९५		धातुपाठ	२६०
	विवाहपद्धति	५३६		नेमिनाथचरित्र	१७७
सौभाग्यगणि—	प्राकृतव्युल्पत्तिदी	पिका २६२		योगदास्त्र	११६
ह्येंग्रीव—	प्रश्नसार	२६५		लिगानुशासन	२७७
हप	नैपधचरित्र	१७७	,	वीतरागम्तोत्र १३	८, ४१६
हर्षेकल्यागा—	पंचमीत्रतीद्यापन	r ५३ ६	, .	,वीरद्वात्रि शतिका	१३८
हर्षकीत्ति—	ग्र नेकार्यशतक	२७१	1	राप्दानुशासन	२६४

14 74 41 4111	J				_		^
श्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम	श्रंथ,सूर्च पर	गी की ∤ त्र सं ॰ ∤	प्रंथकार का नाम	त्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र	की. सं०
	भक्तिपाठ		६५१		रात्रिभोजनक	था '	२३८
	पद	EE¥.	७०२	कुवलयचन्द—	नेमिनाथपूजा	ſ	७६३
	44		४७७	कुशललाभगिय-	ढोलामारूवर	ग़ीचौपई	२२५
	C	٥,٠,	६२१	कुशल विजय—	विनती		७=२
	विनती	e . 0	· i	केशरगुलाव—	पद		४४ሂ
	स्तुति		, ६५०	केशरीसिंह—	सम्मेदशिखर	विलास	६२
कनकसोम—	ग्राद्रकुमारध		६१७	10,1,11,11	वर्द्धभानपुर	ाए।	१५४
	ग्रापाढभूति		६१७			•	१९६
	मेघकुमारच	ौढालिया	६१७	2	कलियुगकीव	त्था	६२२
कम्हैयालाल—	कवित्त		७८०	केशव— 	सदयवच्छस		
कपात—	मोरपिच्छः	गरीकृष्ण				की चौपई	२५४
क्रपात		के कवित्त	६७३				
			_{ሄሄ} ሂ	केशवदास—!	वैद्यमनोत्स 		६४६
व्र कपूरचन्द—	पद	11.0	۰۰, ६२४ ۱۰, ६२४	केशवदास—॥	कवित्त	६४३,	, ७७०
	_	_		1	कविप्रिया		१६१
कबीर	दोहा		₹o, ७५१	i .	नखसिखव		७७२
	पद	90	इ.३७ , <i>७</i> ९ 	1	रसिकांत्रय		, ७६६
	साखी		७२३		रामचन्द्रि	का	१६४
कमलकलश—	वभग्गवा	डीस्तवन	६१६	केशवसेन-	पचमीव्रते	ाद्यापन	६३८
कमलकीर्त्ति—	ग्रादिजि	नवरस्तुति		कौरपाल	चौरासीवं	ोल	७०१
જા મ ણા જાતા લા		जराती)	४३१	कुपाराम—	ज्योतिपस	ारभाषा	२८४
•	•	, ,	५५)				५६८
कर्मचन्द—	पद			कृष्णदास—	रत्नावली	व्रतविधान	५३१
कल्याग्यकीत्ति—	चारुदत	चरित्र	१६	कृष्णद् । स	सतसईर्ट	ोका	७२७
किशन—	छहढाल		દ છ કે	ं वृह्णराय—	प्रद्युम्नर	ास	७२२
किशनगुलाब—	पद	<u> </u>	६१४, ६६	। खजमल—	सतियो व	नी सज्भाप	४५१
किशनदास—	पद		६४	ृह्यङ्गसेन—	त्रिलोकस	गरदर्पगुकथा	328
'किशनलाल—	कृष्ण्य	ालविलास	8	1		६८६	, ६६०,
किशनसिंह	क्रियाव	तेशभाषा -	y	^(३) खानचस्द—	परमात्म	प्रकाशवालाव	ſ
	पद		५६०, ७	ا بحو		वोघटीका	१११

रत्नाविक्या	—திச் ந ர ∣	न् १ प्राप्तात १ ४ द	
557		सत्तवर्मस्यानव्यक्या ५१%	
מב גבל' גבא' גבף		वोडशकार्यावतकथा २४४	
६३० हारहिङ्क्रीयन	इन्ह्या	शातिनाथपुराए। १५५	
र है ॰ इ		४११ विद्यसिवानक्या ४४१	
नीवीसगण्यरस्तवन <i>६ = ६</i>		यगोपरचरित्र १६१, ७११	
<i>च</i> र्वींचश्रीवहृत्यय <i>६०</i>	— சிசேமர	አ ጳኦ	
<i>३२७ ,६७७ </i>	—रहराम	मुबसाखायपक्ता ५३६	
१३१ हरीमरमहिष	નાલિકાસ—	मैक्यावया वयकवा ४२४	
०१४ । गिरिह्योत्रभाया १४०		}	
र्वद र्हर्भ	मगराम—	र्युटसस्यमानवा २४४	
<i>६७०</i> किन्दिक्तम्ब्रह्म		र्ययाप्यक्रमासग्रह ४१६	
<i>ভাষ</i> । ৮৮ %			
प्रदेश प्रक्रा कर्		ያ <i>ዩ</i> ወ 'ጻጸ <i>⊱</i>	
१०७ तिननीणरपुराया	न्ताहास—	<i>तैव</i> रावध्ययक्षा ५३%	
रावसभारवय रह		वस्तिवधानक्या २३३	
क ृतिकप्तर	गंगादास —	3४१ ागमग्राग्रमृष्ट्	
તન્નમાર્થ ભડ્ડે •	- <u>Fir</u>	दंगसर्वात्रस्या ४८८' लर्ड ६	
168° ERE		३५७ ,६७१ हिरोम्रामकृष्णः	
45 24°, 459,		४४५ ।४म७मनाविद्	
<i>७६</i> ४ होसिनस्तुति ४ <i>३७</i>	—≽•म्म€	जिनपूजापुरन्दक्या ४४४	
न हे भित्रक्ति हु इंट		उरह 'उरह	
ଟି ରର		चन्द्रनवष्ठीयत्तस्य। ५५४	
नीहरूकिक् <i>छा</i> उउन्हामिह		वयरवुराणभावा १४५	
દેકેશ		<i>७७७ कि कि</i> कि	
मामहराइ कि रहर्गित	—ड्रेमीर्ह	प्रथथ (१४क प्राप्ति)	
230 (£20		ग्रादित्पत्रतक्वा	
(00 (133 (133		श्रीव्यवित्रमीक्या ४४%	_
ለረ3 'ሪቱ' ይታ		यनन्तप्रतक्षा ४१४	<u> विशाधनन्द</u> —
oji kh		्रे स् _र	
क्षेत्र साम अंथ सूची की	मंशकार का नाम	मंश्र साम अंश्र सूची की	मं अकार का नाम
સેલ તેલ સંશ્લેયી			£03

प्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूर पर	त्री की त्र सं०	प्रथकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रंथ सूची की पत्र सं०
373107311	पद	७६=	चम्पालाल	चर्चासागर १६
गुणपूरण— गुणप्रभसूरि—	नवकारसज्काय	६१८	चतर	चन्दनमलयागिरिकथा २२३
गुणसागर—	द्वीपायनढाल	880	चतुभु जदास—	पद ७७५
344141	शातिनायस्तवन	७०२	133	मधुमालतीकथा २३५
गुमानीराम—	पद	५ ८६	चरणदास—	ज्ञानस्वरोदय ७५६
_	कक्का	483	चिमना—	श्रारतीपचपरमेष्ठी ७६१
गुलाबचन्द—		₹ c X	चैनविजय—	पद ५८८, ७६८
गुलाबराय-	वडानक्का नक्कावत्तीसी	442 498	चैनसुखतुहाडिया—	ग्रकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा४ ५ २
ब्रह्म गुलाल—		\$ 52	411949911041	जिनसहस्रनामपूजा ४५०
	गुलालप च ्चीसी	७१४		५५२
	त्रुवालय ज्याता त्रेपनक्षिया	980		पद ४४६, ७६५
	त्रपनाप्तया द्वितीयसमोसरख	५६६		श्रीपतिस्तोत्र ४१५
गोपीकुच्या—	वितायसमासरख नेसिर जुलब्याहलो	*** 737	छत्रपतिजैसवात	द्वादशानुप्रेक्षा १०६
गोरखनाथ—	गा न राजुलच्याहुला गोरखपदावली	७६७	व्यत्रपातजसवाण	मनमोदनपंचशतीभाषा ३३४
गारखनाथ गोविन्द्				पार्श्विनगीत ४ ५
	बारहमासा	६६६	छाजू— जीवरकोविका	होलीकोकथा २४४,
घनश्याम	पद 	£73	ञ्जीतरठोलिया—	हायागागमा <i>५</i> ८५
घासी	मित्रविलास 	३३४		
चन्द्	चतुर्विशतितीर्थंकरस्तुति		छीहल—	पचेन्द्रियवेलि ६३५
		७२०		पंथीगोत ७६५
_	_	६३ ०		पद ७२३
	गुएस्थानचर्चा	5		वैराग्यगीत (उदरगीत) ६३७
चंद्रकीर्त्ति	समस्तन्नतकीजयमाल	४६४	छोटीलालजैसवाल—	
चन्द्रभान	पद	५८१	छोटेलालभित्तल—	पचकल्यासाकपूजा ५००
चन्द्रसागर	द्वादशत्रतकथासंग्रह	२२६	जगजीवन	एकीभावस्तोत्रभाषा ६०५
चम्पावाई—	चम्पाशतक	४३७	जगतरामगोदीका—	पद ४४५, ५५१, ५५२
चम्पाराम	धर्मप्रश्नोत्तरश्रावका			४५४, ६१५, ६९७,
	चार	६१		६९६, ७२४, ७५७,
	भद्रवाहुचरित्र	१५३		७५३, ७६५, ७६६

<u>••ម ភាិភ</u> ្រ		देवागमस्तोत्रभाषा इध्य	
चतुर्विशतितिभनराज	—त्रिहसूर <u>ि</u> —	दुवर्तवाभावा ९६०	
नेमिस्तवन ४००	—ाग्रीक्रागस्महा	वत्त्रार्थसूत्रभावा ३६	
००७ त्रीक्तुरापकिन्नी	_	ज्ञानासीबमावा ६०८	
महावीरस्तवन ७००		<i>३३</i> १ ।गाभन्गीक्मप्रकं	
वारहेमावना ०००		४०१ ागाभास्रदृष्टायकान्त्रीक	
पाइबेजिनस्तवन ७००		०६९ ागमामामामामा	
शादीरवरस्तवन ७००	नितचद्वसूरि—	अध्याहुडमापा ६६	
አጸጸ <u>៦</u> b	वार्ड्सम्	इंडिस स्प्रिमियो	व्यवसन्द्यावहा —
राजनीतिशास्त्रभावा ३३४	वर्षितास—	१५६ १ १५६	
માવાસુવણ કેર કે	—डॉठा रड्रमी तक्रम	५५४ म्हासम्बद्धाः	
बारहमासा ०८०	यसराय—	वंसन्तरास इह्	
च्येप्रियिनवरक्या २२५	—होिंकिमरू	מב גבל גבב	ज्रीकिष्ट
सम्मेद्धाखरवेवा ४४०	न्द्रवाहर्त्वाथ—	हे १ हे सिंह्य	—नाप्रसीष्टा
७ १३ । मिन्नामहराम	चयसोमगणि —	र्दर्भ	
न <i>९३ ड्रैर्गह</i> रीमुलद्रुम्मी	,	पर्ऋतुवर्णनहारहभास।	नगराय-
300 '3}}		१७० । स्मेह्सीला	व्यसमृद्ध—
(चोद्यासीस्तवन)		ds xex	वार्माव
म्हे स्टार्म क्रिक्ट	व्यवसाग्रर—	ଟିରର	
तत्वावंसुबडोका २६	—Pja421b	ध्वेनावरमतके द४ बील	
कुशोलखदन ५२	च अधाःख−	१२३ म्हिसिसिहिस्रा	
० ३४		प्रतिमा स्यापक्र ०७ इईस्ट	લાઇત—
सामापिक्पालभाषा ६६			
३४ ागमज्ञीसीर्वाम		तद ४०४ हहर	नगरास—
समयसारमाया १५४		४१४ क्षिमहमार	चनान्त्रकान
नक्तामरस्तात्रभाषा ४१०		९५९ । एक डिसुक्ति र सम्म	, i
<i>देह</i> राममञ्जूषा १ <i>३६</i>		e वे ागाभामिकिन ज्ञी महरू	चागतराय
इन्यस्यह्मावा ३६		वित्तराग्गीस्तवन ३६०	·
이번 본노		भंत्र संब	
वंश नाम अंथ सूची की	मान तक प्रकर्ष	कि हिंस अंध सुनी की	मान कि ग्रक्ष्यं
भूत विश्व विश्व विष्			£05

ι

प्रंथ एव प्रन्थकार] .
ग्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम अंथ सूची की पत्र संब
	वीसतीर्थंकरस्तुति ७००
	शालिभद्रचौपई ७००
जिनचंद्रसूरि—	कयवन्नाचौपई २२१
	क्षमावतीसी १४
जिनद्त्तसूरि—	गुरुपारतंत्रएवसप्तस्मरए। ६१६
100	सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र ६१६
प० जिनदास—	चेतनगीत ७६२
• •	धर्मतरुगीत ७६२
	पद ५८१, ५८८, ६६८
	७६४, ७७२, ७७४
	म्राराधनासार ७५७
	मुनीश्वरोकीजयमाल ५७१
	५७६, ६२२, ६५८
	६८३, ७४०,७६१
	राजुलसज्भाय ७५०
	विनती ७७५
	विवेकजकडी ७२२, ७५०
	सरस्वतीजयमाल ६५५
	७७=,
पाण्डेजिनदास—	योगीरासा १०५, ६०१
	६०३, ६२२, ६३६
	६४२, ७०३, ७१२
	७२३
	मालीरासो ५७६
जिनद्(सगोधा—	. सुग्रुरुशतक ३४० ४४७
व्र० जिनदास—	श्रठावीसमूलगुण्रास ७०७

श्रनन्तव्रतरास—

?

चौरासीन्यातिमाला

0. 1		स्र व्या	श्रंथ सू	ची की
की	यंथकार का नाम	ग्रंथ नाम		पा का त्र सं०
सं 🤊 📗		धर्मप चर्विशा		न सर हश
00			तका	
00		निजामिए		६५
२१		मिच्छादुवकः	5	६८६
१४		रैदव्रतकथा		२४६
१६		समिकतविए		900
१६		सुकुमालस्वा		३६६
६२		सुभौमचक्रव	त्तिरास	, ३६७
• ६ २	जिनरंगसूरि—	कुशलगुरुस्त	वन	<i>3లల</i>
६६८	जिनराजसूरि—	धन्नाशालिभ	ग्र रास	३६२
४७९	जिनवल्लभसूरि—	नवकारमहि	मास्तवन	६१८
७४७	जिनसिंहसूरि—	বালি भद्रध	न्नाचौपई	२५३
४७१	जिनहर्षे—	धग्धरनिसा	णी ३८।	૭, ৬३४
६५८		उपदेशछत्ती	सी	३२४
98 १		पद		५६०
०५०		नेमिराजुल	गीत	६१५
४७७		पार्श्वनायस	ोनिशानी	४४५
०४०	जिनहर्षगिण—	श्रीपालरास	[३६५
६५८	जिनेन्द्रभूषण—	वारहसौचं	ोतीसव्रतकः	230 TF
90 = ,	जिनेश्वरदास—	नन्दीश्वर्रा	वेधान	४३४
६०१	जीवणदास—	पद		४ ४ሂ
	जीवण्राम—	पद		ሂട∘
३६३	जीवराम	पद		०, ७६१
७१२	जैतराम—	जीवजीतस	ं हार	२२५
७२३	जैतश्री—	रागमाला	के दोहे	ওদ০
५७६	जैतसिंह—	दशवैकारि	क्किगीत	900
४४७	जोधराजगोदीका-	चौम्राराध	नाउद्योतक	या २२४
७०७		गौडीपार्व	नि।थस्तवन	६१७
५६०		जिनस्तुति	•	४७७
४३७		धर्मसरोव	₹	६३

वा संद विकास कर के कि क	e go i ga upagua. A i f ga upagua a upagua.	the same of the same	ते हो	मंधरार का नाम	प्रंथ नाम प्रंथ मृची ही:
द्वानार्थात ११४ मांगुराम यद ४४४ २ तरावांद्रण १८४ मांगुराम यद ४४४ २ तरावांद्रण १८४ मांगुराम यद ४४४ छुँदीतिया ७४४, ७०३ २ १८६ जार १४० मांगुराम्या १६६ मांगुराम यद ७६६ २ तरावांद्रण १८६ मांगुराम १८६ मांगुराम १८० मांगुराम १८० मांगुराम १८० मांगुराम १८० मांगुराम १८६ मांगुराम १८५ मांगुराम १८६ मांगुराम		ব	् सं		पन्न मंद
्राण्याचे १८२ विसम्बंद व्युद्धीनिया ७११ ७०० विह्नेमच्या ६३६ व्युद्धीनिया ६३६ व्युद्धि १८६० व्युद्धि ६३६ व्युद्धि १५६५ व्युद्धि ६३६ व्युद्धि ६३६ व्युद्धि ६३६ व्युद्धि ६३६ व्युद्धि १५६५ व्युद्धि १६६५ व्युद्धि १६६६ व		מַלְ יֹיִרְיִינִייִיִיִיִיִיִיִיִיִיִיִיִיִיִיִיִי	६१६	(मोलहरारग्रथा ७४०
च होता १५० विद्वासम्म ६३६ विद्वासम्म ६३६ विद्वासम्म ६३६ विद्वासम्म १५० विद्वासम्म ६३६ विद्वासम्म १६० विद्वासमम		But the value being the	ttx.	भिन्ताम-	पर ४४६
स्व शर्माण विषय । ११० विलासम् पद । ११० विलासम् पद । ११० विलासम् । ११० व		र्रे एक स्वाहित	\$2t	र ही रमसंद—	चतुर्दशीतन्म ७५४. ७७३
स्वार प्रश्नित है । स्वार प्रा है । स्वार प्रश्नित है । स्वार प्रा है । स्वार प्रश्नित है । स्वार ह			৩৩		चंद्रतंगक्या ६३६
हिल्लास्य । प्रतिकार प्रदिष्ण प्रदिष्ण प्रदिष्ण प्रदेश । प्रतिकार प्रदेश । प्रदेश		me to though the mat		•	श्रीपानजोगीस्नुति ६३६
ह= है टीलारम— पद ७०० परि ११ ११ परि ११ ११ परि ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११		त्य १ क्ष्येनु स्था	इष्ट्र	•	न्तुति ६३६
प्राप्त कर		•			पद ७=२
क्ष्रिक क्र		her a sold and divined	01.5	े टेक्चंद—	मर्मदहनपूजा ४६४, ५१८
प्रतिकार के क्षित के क्ष्य के क्षित		47 882,558	, ६६६		
प्रशासिक मान्य प्रश्ने प्रवास के स्वास के स्वस के स्वास					तीनलाप्यूमा ४८३
प्राचित्र कर स्वाधित	a sa cità y a cità dia pina d	ដែលមានជ័ន ដែរ៉ាំទេ៥			
सार्वे त्वारत ३६१ र ते व व व व व व व व व व व व व व व व व व			137		
र नर्गर - व प्रतिहास ११४ विषयम् स्वाप्ति । ११४ विषयम् ।		•			पंचयत्याणकात्रुजा ५०१
ह तर्ना । प्राप्त । प्राप	£4 4 4 5		į		
प्रारं रचरणाम ३६० चलर, रतराम ३६२ त्रत्या १६२ त्रत्या १६२ प्राप्ता १८६ प्राप्ता १८६ प्राप्ता १८६ प्राप्ता १८८ प्राप्ता १८८ प्राप्ता १८८ प्राप्ता १८८ प्राप्ता १८८ व्याप्ता १८८		-			वंचमेरपूजा ५०४
र विकास कार	\$ • •," • · ·				•
स्वार का का विकास का का विकास का			1		रम्नव्यविधानपूजा ५३१
स्वार्त कर का राष्ट्र विद्या ११४ होट्ट पद ५६२, ६१४, ६२३ व्यक्त राष्ट्र विद्या ११४ होट्ट पद ५६२, ६१४, ६२३ व्यक्त राष्ट्र विद्या १००० विकास होट्ट विद्या १००० विकास होट्ट विद्या ११२ विकास ११२ विद्या १					मुहष्टिनरगिग्गीभाषा ६७
संगुर्त, महण्या ३४० होहरू— पद ५८२, ६१४, ६२३ संभारताप्राणामा ७०० ७६७, ७७६, ७७७ ७६७, ७७६, ७७७ वं दे होहर्सल सारमानुसामनभाषा १०२ हाप्राणामा ७ वर्षा हो। १८३ संभारताप्राणा ७ वर्षा हो। १८३ संभारताप्राणा १० कर्षा हो। १८४ संभारतारमित हो। ११					मोनहकारसमहत्रीयान
कर्ण विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय	4. Sex. 25 1324				***
विश्व स्था १०२ विश्व सारमानुसामनभाग १०२ सारमानुसामनभाग १०२ सारमानुसामनभाग १०२ सारमानुसामनभाग १०२ सारमानुसामनभाग १०२ सारमानुसामनभाग १०२ सारमानुसामनभाग १०			36-	टोटर—	पद ४०२, ६१४, ६२३
हापागारभाषा ७ । हापागारभाषा ७ । विकास क्ष्में			303		७६७, ७३६, ४३७
हापागारभाषा ७ । हापागारभाषा ७ । विकास क्ष्में		4517/	220	पं॰ टे। इरमल—	मारमानुदासनभाषा १०२
पोम्मटमारजीवाण्याण १० श्राहेश १०४ मोन्मटमारपेकिया ११ र स्मारणा ७४० मोम्मटमारगरिष्ट १२		Star Jung tasti	10 t x		धापसागारभाषा ७
प्रान्ति ६०४ गोग्मटमारपं किया ११ र जनसमा ५८० गोम्मटमारगरिष्ट १२		नर्नेष्ट्रास्य हु म्यापा	1.12		गोम्मटसारकर्मकाण्डभारा ४३
गंम्मटमारगर्षः १२					गोम्मटमारजीवाण्यामा १०
in the state of th		क्रा रेग से	506		गोम्मटसारपं हिंदा ११
स्टार्टा ३४८ निमोनगारमाण ३२१			260		गाम्मरमारगत्ष्रि १२
		इत स इत्याप द स्पार्ट	286		नियोगमारमाया ३२१

4

673	≱b		คร์สำ		d⊈	ė
έሽ	निगिष्यदोषवर्णान		वर्र	वासिका	अभिरयपं	përtyki
eĒ	दल्तस ग्रहेमावा		દેશકે	_	. •	
<i>ું અજ</i>	जेनागारप्रक्लियाभाषा		ครัฐ	स्यवय	तीर्थमाला	युचरास—
٥٤	नाम <i>कपत्रकाप्र</i> सु <i>रार</i>		કે કે ડે	त्त्रमावा	: <u>५१७</u> (निव्हर	वृत्तेमीदार्च—
	डण्नामराचादमार्क		633	हर्गेहमारा	कित्ति स्वाद्य -	विवसीदास—
አኔ	उपदेश्रसमाता		33	गिमिठाम्	म् हो।मा <i>म</i>	—इंच्किति इंच्किति
ለ	ग्राराधनासारवचनिका	—इंम्रीकड्ड	• ବର	क्ति १		
よっと	≱b			िक्रक्रम्	म <i>क्ति दि</i> क्ष	—मारूरमती
	तरमास्मर्वेरार्धा		585	वर्ड	इकामिह	€.વાર્યું 4ું−
४०१	ब्रानदर्वेण		<i>ፈ</i> ጸጸ	<i>नेपई</i>	नकिनिहि	—होक्रारङ्ग
๑๑๑	सार् <i>तो</i> -2		र्रवर	п	<u>र्यम्भ स्वत</u> ्	
६०४	मिहिलास		£0%	गन्प्री	वृद्धरम्	
800	श्रात्माव्याक्त		33	កហ្វៃគល្វ្រវៀ	बु र्म रुग्रह'	
ኃጸ	শুনুমৰসকাহা	દ <u>ી</u> તવઃદં—	888		ाह <u>म</u> ड	
	र्वेया		১ শ্বন	1ks	ਸੀ ਫ਼ੈਡ੍ਰੀਸ	
ጻያጸ			ጹሸሸ	र्ववा	P <i>হিই।১</i> ৮	—मार्ग्जाञ
•	विद्यमानदीसतीर्थंकर	न्।स —-ग्रहिनीम	ક્રષ્ટ	डिंग्डि छान	<u>संक्रयम्प्र</u>	
3×0	4 £		358	फ्रिकिङा	<u> ज्ञाकित्म</u> ाज	—≯कृठिनिक
र्रह	ामाभाष <u>ि</u> ।	द्शरम्भानग्रह्या—	አჭብ	<i>,550</i>		
०५३	<u>≯</u> b	व्याराम—	€0 6	ली	हम्प्र ीह म	
र्वक	बारहभावना	<u>—फिलड</u>	550	(क्तिनिक्त)		
320	वर्			लिहति	नेमीह्दर्	•
አአብ '	विक्टी ६६६	—इत्रभृष्ट	763		<i>इ</i> क्ष्म्णग्रेकु	一 fb)读和3
³ ያሄፀ	क्रिकार	द्याय्याम—	83	ष्टीइंग्	राप्तस्त्रीह	
az'y	선호	— চাট্র্যু	<u></u> ደጻ	万形顶护路	<u> इ. इ.</u>	
देशक	िङ्गाङ	— 阿 斯克	έΧ	ipik:	ग्राप्तम्जी त	١
ລຄຄ	តែវាឝស្រគត្	─कमऋष	تره	काशक	गिमक्षमि	
४५३	वीसतीर्थकरपूजा	नार्गिकक्तिनाथ नार्गिकक्ष	33 1	हुन तात्रभाव।	र्यस्वार्थसि	
야당 타	d		अस्ट			
1 to 15	मंश्र साम भंश सू	मं, बकार का नाम	कि हि	ry Kr	मोन कि म	वं,वर्धार का सास
हर्द्ध	1			•	(प्रस्थ एवं मंथकार



प्रथकार का नाम	श्रंथ नाम श्रंथ स्	्ची की पत्र संब्	्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम प्रं	य सूची की पत्र सं०
	प्रतिष्ठापाठभाषा	प्रदर		संकटचीधव्रतकथा	४३७
	वाईसम्रभस्यवर्णन	હર	दोलतराम—	छहढाला	५७, ७४६
	सुभाषितावली	३४४			७०७
के दचन्द—	- मुष्टिज्ञान	३००		जिनस्तवन	७०७
देवचद्	ग्रप्टप्रकारीपूजा	030		पद '	४४६, ६५४
• * •	नवपदपूजा	980		वारहमावना	४६१, ६७४ '
देवसिंह—	पद	६६४	दौलतरामपाटनी—	व्रतविधानरासी	300
देवसेन	पद	५८६	दोलतराम—	म्रादिपुराए।	\$ \$\$
देवादिल	उपदेशस ज्काप	३८१		चीवीसदण्डकभाष	र ५६,
देवापायडे—	जिनवरजीकोविनती	६५५		,	47E, YY5
देवात्रहा	कलियुगकोविनती	६१५,		¥	११, ६७२
		६८४		त्रेपनक्रियाको श	३१
	चौर्वीन बोर्थं करस्तुति	४३५		पद्मपुरासभाषा	१४६
	पद ४४६, ७५३	, ৬৭২		परमात्मप्रकाशमाप	ग १११
	विनती ४५१, ६६५	, 950		पुण्याश्रवकयाकोश	र३३
	नवकारवडीवीनतो	६५१		सिद्धपूजाप्टक	<i>૭७७</i>
	मुनिसुव्रतवीनती	४५०		हरिवंशपुराएा	७४९
	सम्मेदशिखरविलास	६३	दौलतत्र्यासेरी	ऋषिमंडलपूजा	४६४
	सासबहूकाभगडा	६४८	द्यानतराय	मृष्टाह्मिकापूजा ए	, 904, 440
देवीचन्द—	हितोपदेशभापा	७४४		प्रक्षरवावनी	६७६
देवीदास	कवित्त	६७४		<i>ग्रागमवि</i> लास	38
	जीववेलडी	७५७		मारतीसंग्रह १	६२१, ६२२
	पद	383		•	ઘાઇ
	राजनीतिकवित्त ३३६	, ७५२		उपदेशशतक व	१२४, ७४७
देवीसिंहछावडा —	उपदेशरतमालाभाषा	५२		चर्चाशतक	१४, ६ ६४,
देवेन्द्रकीर्त्त-	जकडी	६२१			430
देवेन्द्रभूषण्—	पद	५५७		चौबीसतीर्यंकरपूज	४०७
	रविवारकथा	७०७		छहढाला ह	१५२, ६७२

સમૃત્રુંવળ— **१९५, ४०६** मार्गकानरस <u></u> ነ ाश्देनाथस्तोत्रभाषा । समेपाल— ÞÞ 75e, 95K व बम्ध्यया מסמ' מסמ मिनित そのえ धर्मपञ्चीसी ଜଃବ 'ଦଃକ ममेहास-क ग्रिकुरायक्रमीरिक्र धर्मवितास —<u>≽•₽</u>₩₿ ಶಶಿಜ भूतन्त्रकेद्वयय

नन्द्रास—

सम्स्रा—

चीरत्रमिहराठौड-

ह्४६, ६५४, ७०४ अविनास्तोत्र रत्तनम्पूर्या ५२६, ७०५ स्तिनमूर्यापुरा ५९६ वोद्यानार्यापुरा ५१६

£83 '863 '663

אבב' אבנ' אנם

אבא' אבא' אבצ

ススポ' ポセタ

वदस ग्रह

450 ,750 ,Fgu — দীক্লক্সচূচ रसालकु नरकी नीपई ٤٥٤, ٤४٦, ६८٦, ६٤٦ नेस्तरद्वाल— <u>प्रद्नावलिकवित</u> *क्रिमी हें प्रथित* इ उट मितिनाक्कृक मिनिक्नोसी नन्द्राम--ያወደ **।मास्रामा**हि *ሽኔፎነ ሽሽፎነ Թ*ዕሸ मित्रिकमाष्ट्र वीडशकारगीपुषा

สดด

520

550

388

きゃす

इप्रव 'वप्रइ

393 ,305

- 330 '033

र्रंटा १००८

કુક્ત 'ફેલ્ટ

ঽ৽ঀ

283

εo

୦ରର

*जि*रहमंजरी

मानमजरो

नाममंजरी

<u>अनेकाथंमजरी</u>

र्मावार्मवर्षा

यनेकार्थनाममाला

दानशीलतपभावना

ÞÞ

श्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रंथ सूची की पत्र सं०	प्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम प्रंथ सूची की पत्र सं०
नथमतविलाला—	श्रष्टाह्मिकाकथा २१५		६५३, ६४४, ६४४ ७८२
	जीवघरचरित्र १७०		७८३, ७६८
	दर्शनसारभाषा १३३		बारहमावना ११५
	परमात्मप्रकाशभाषा १११		४२६, ५७१
	महीपालचरित्र १८६		भद्रवाहुचरित्र १८३
	भक्तामरस्तोत्रकथा		शिक्षाचतुष्क ६६८
	भाषा २३४, ७२०	नाथूरामदोसी—	समाधितंत्रभापा १२६
	रत्नकरण्डश्रावकाचार	ब्रह्मनाथू—	चेतावनीगीत ७५७
	भाषा ८३		पद ६२२
	रत्नत्रयजयमालभाषा ५२८		पार्ग्वनायस्तवन ६२२
	पोडशकारसभावना	नाधूराम—	म्रकलकचरित्रगीत १६०
	जयमाल ६८		गीत ६२२
	सिद्धान्तसारभाषा ४७		जम्बूस्वामीचरित्र १६६
	सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा ४२१		जातकमार ६५३
नयविमल	पद ५५१		जिनसहस्रनामस्तोत्र ३६३
नयतपुख—	वैद्यमनोत्सव ३०४, ६०३,		रक्षाबंघनकया २३७
-	६६४, ७६८, ७६४		स्वानुभवदर्परा १२८
नयनसुख—॥	पद ४४४, ५८३	नाथूलालदोसी—	सुकुमालचरित्र २०७
	भजनसंग्रह ४५०	नानिगराम—	दोहासंग्रह ६२३
नरपाल-	पद ५५५	निर्मल—	पद ५५१
नरेन्द्रकीति—	ढालमगलकी ६५५	निहालचद्त्र्यप्रवाल-	नयचक्रभावप्रकाशिनी
•	रत्नावलीयतो की तिथियो		टीका १३४
	के नाम ६५५	नेमीचन्द्—	जकडी ६२२
नवत्तराम	गुरुग्रोकीवीनती ७०४		तीनलोकपूजा ४५३
	जिनपच्चीसी ६५१, ६७०		चौबीसतीर्थंकरोकी
	६७४, ६६३, ७२४		वदना ७७१
	पद ४४४, ५५२		पद ५५०, ६२२
	४८६, ४६०, ६१४, ६४८		प्रीत्यंकरचौपई ७७५

१९४ ग्राप्पह्मिक्मिर्मोडीमी	०७१ ह्यो ग्र ाममे
सरस्वयार्थेया ४४६	9३१ हर्गेन्सिगङ्ग्रह्मल -
<i>च</i> नाचिमर्यामात् १ <i>९७</i>	मीतमस्वामीबरित्र १६३
न <i>६६ ाथा</i> मकातथाक्रुम	४२६ ागम <i>हात्तररव</i> ोमणुख्यक
३२ विक्सियामावा ८६	इन्ह प्राथमस्तित्रभाषा इन्ह
वर्शावहाकाविदास ८७	उयरवैरावाभाषा ६८६
विवापहारस्तोत्रमावा ४१६	श्रादाबचावादमावा १६
वसंगृहस्रावसावारमावा	४८ ागभ्रासारमास —िनम्राज्ञालास्मिरमार
र्धनक्राविक्रविद्या ८ इ	भूष <u>मिन</u> िक — प्रसामि
१३१ ह्योम्प्रमिक	पद्मराजनामि नवनारसक्रमात ६६८
र्वे विसादभावा ६६६	रंशिंदसरावस्तवस
मरक्तविद्यास क्ट	£8.3 2b
र्भवायनीयोसीया २६५	४३६ त्रीहमान्द्र —श्रीदृष्टान
४२१ हरीसम्डाज्यस	ह= रूड च्या रूड
३ ४४ डाफ् त ीम	प्रशासन्ताय ६१६
<i>メξ </i> гр <i>ф</i>	पहंसस्राध— क्रैल्लाक्ष्मिसग्रीमंगथ ५५६
on Ipik	አ3 ፡
प्रकासभार प्राचीन स्थाप स्	<i>७१६</i> कडामि ऽ इन्ह
०५१ ग्राउपृष्ट्यां	-ाकल ् रीत्रद्भारतात्रका
१६१ । शामाक्षांसिकामावा	न्यामर्थास्य न्य न्य
न्द्र धन्तरवयचनिका ३५	नेमीदास— निर्वाणमोदकानर्गंथ ६ ५
४३४ ।ए। इस्तिम् १६६६ ।	नेमीचंदबस्थी— सरस्वतीपूजा ४४१
१३ ागमग्रहासेम	८=४ धन्येदीसीयूजा ४= ८
<i>३६</i> ाग <i>¥</i> इंगमेफ्ट्र	ধুবা ১৯৫
१५ विस्थादभावा ५६	निडापट्टेमिक —िहारापट्टेमिक —िहारापट्टेमिक
<i>६६</i> ागस्त्राम्येषा ठ	<i>६३३ कि</i> ममी ,
०५ ४.हुर्मीकृष्टनत	१९३ त्री <u>इष्</u> ट
क्षेत्रं हर्ने हर्	१९३ हिर्मिड्स हिर्म
øं ग्र हम्,	o i∌ FP
मं अकार का नाम मंथ सुनी की	कि क्रिय छंट मान छंट मान कि गुरुष्टं
[E&K	मंथ एवं यन्थकार]

r()

प्र'थकार का नाम		्ची की पत्र सं०	श्रंथकार का नाम	प्रथा नाम प्रथा	सूची की पत्र सं०
	सुभाषितावलीभाषा	३४४	प्र भुदास —	परमात्मप्रकाशभाषा	७६५
पन्नालालदूनीवाले—	पचकल्याग्रकपूजा	५०१	प्रसन्नचंद—	ग्रातम शिक्षासज्भाय	६१६
	विद्वज्जनवोघकभाषा	5	फतेहचद	पद ५७६, ५८	
	समवसरगपूजा	500			२, ५८३
पन्नाललवाकलीवाल-	वालपद्मपुराएा	१५१	वंशी—	न्हवरामंगल	७७७
परमानद—	ण्द ६५४	, ৬৬০	वंशीदास—	रोहिएगिविधिकया	७५१
परिमल्ल	श्रीपालचरित्र २०१	, ७७३	प्रशीधर—	द्रव्यसंग्रहवालाववोद्य	र्शका
पर्वतधर्मार्थी—	द्रव्यसंग्रहभाषा	३६			७६१
	समाधितत्रभापा	१२६	वखतराम—	पद ५५३, ५५	६, ६६८
पारसदासनिगोत्या—	ज्ञानसूर्योदयनाटकभापा	३१७			३, ७८६
	सारचीवोसी	४५२		मिथ्यात्वस्रहन	৬5
पारसदास—	पद	६५४	75333333	वुद्धिविलास ————	७५
पारवेदास—	वारहखडी	३३२	वस्तावरलाल	चतुविद्यतितीर्थंकरपूज	
पुण्यरत्न	नेमिनाथफाग्र	७४५		ज्ञानसूर्योदयनाटकभा प	
पुण्यसागर—	साघुवदना	४५२	वधीचन्द—	रामचन्द्रचरित्र	६ंट१
पुरुपोत्तमदास—	वोहे	६८७	वनारसीदास—	श्रध्यात्मवत्तीसी	33
	पद	७५४		श्रात्मध्यान	8,00
पून्यो—	पद	७६५		कर्मप्रकृतिविधान	ų, Links
a,	मेघकुमारगीत ६६१,			३६०, ६७७	-
	७४६, ७४०,			कल्यारामदिरस्तोत्रभाष	
	•	७७४		वैद्य, ४२६	
	वीरजिएादकीसंघावली	७७५	,	५६६, ६०३	
पूरणदेव	पद	६६३		₹¥5, ₹ <u></u> ¥0	
पेमराज	वैदरभीविवाह	२४०		६६२, ६६४ १००३	, ५७० , ७०५
पृथ्वीराजराठौंड—	कृष्णरुविमण्यिवेलि	३६४		_	, ७७३ , ७७३
	६५६,	900		जिनसहस्रनामभा पा	, ७७२ ६६०
महाराजासवाईभतापसिंह					७४६
	श्रमृतसागर	२६६		ज्ञानपच्चीसी ६१४	, ६२४
	चदकुवरकीवार्ता	२२३		६५०, ७४३,	-
				(4.7.001)	

் தல் இதியிய விர்க்		ং ন '১ } ন
०७ प्रामाक्षमास्राप्तिस	_	थ ,०४६ फ्रिक्सक्रमो
वीन्डवीदार्धा इंद्र° कर्द्र	— माइकािका <u>३</u> १	
मामकार्याक्रमामा ६ ५	्र विसम्बाचद—	साधुवदना ६४०, ६१
४०७ সিট্র	e	รด 'รดด
सरस्वयोद्यमा ४४६	3	ત્રકે તર્કે તર્કે તર્ફે તર્ફે
त्रहोत्रहासामापा ५७० सन्देशस्यातासामा	0	ይ ດ 'ኔ ያል 'と∘ ຄ
३१४ ठाएउए	=	£26, £68 £6
<i>७११ ामास्</i> रामा	ي ا	ह के हंटडे 'दर
वैस्ययस्यस्ह	6	É 56' E 80' E 81
वैधवस्थित्स ५३५	,	समयसारनाटक ६२३, ६०४
वहनाजकडी ४४६	,	हे <i>चच</i> केंठग <i>ह</i> राह
ರಾಜ್ಯ, ಅಲ್ಲ		ነ ደል
<i>é</i>	1	3 វូខ , ០ភ ខ្ទៃ វិធាពិក
de ጸጻጸ' ጸጻደ' ឥԹያ		४३८ ,४१८ ऊप्टुर्क्स होड्रिस
१४ ।गिमधाकृत्री।हन्द्रम	1	300 (323
इहर दर्गमपाठ	1	०४३ मालशिभिगान
१५ घिष्टोष		
<i>छर्ड्डा</i> या		
१३३ क्षिक्तिस्र इंटर	— <u>F</u> F F F	03h
දුප් 'මදිම, 'පදිදි	146121211	Foと IPIはを行み方式和マサテロ
स्वयसङ्कृतिहरू हिन्दू	-जानिराह्न	६२७ जिहुनेशान् इत्राप
<i>ब्</i> दनायकडी ४४६, ७२७		e33 f53 (553
०१७ इएमडम		16°, 484, 438
त <u>द</u> र्रद		אבא' אבצ' אבצ'
०७७ त्रृष्टीक	1	वंद ४८५% तद
<i>७७७</i> क्तिरास		न्याममाता ३७६, ७०६
તહ્	बाखचंद—	· ·
विव्यक्तिमारमुनिपुना य ३६		० <i>५७ ,३६४ ाफ्ठीाक</i> हुर्न
वर्ड व्ह	चत्रदेव—	जानवाननो १०४, ७५०
घंथ तास यंथ सूची की पत्र सं॰	मां विद्यार की नाम	मं अकार का नाम यंथ नाम यंथ सूची की
4 4	•	प्रसिध हो है।
ि हर्डल		

. ,%

प्र'थकार का नाम	प्रंथ नाम प्रंथ सु प्	ची की ।त्र सं०	व्रंथकार का नाम 	भंथ नाम श्रंथ	सूची की पत्र संट
	भुवनकीतिगीत	६६६	1	पद	४५७
भगतराम—	पद	७६५		नेमीश्वरवोराम	६३८
भैयाभगतीवास—	थाहारके ४६ दोव		भागचर-	उ ग्देशसिद्धान्तरत्न	
	वर्णन	५०		मा	ला ५१
	ग्रकृत्रिमचैत्यालय			ज्ञानगूर्योदयनाटक	३१७
	जयमाल ६६४	, ७२०		नेमिनाथपुराण	१४६
	चेतनकर्मचरित्र	७४०		प्रमाणपरीक्षाभाषा	१३७
	६१३, ६०४	, ६८६		पद ४४५, ४४	
	ग्रनित्ययच्चीसी	६८६		थावकाचार मा पा	દ્ધ
	निर्वागकाण्डभाषा	33€		सम्मेदशिखरपूजा	४५०
	४२६, ५६२,	-	भागीरथ	"। सोनागिरपच्चीसी	£5
	५७०, ६५०		भानुकीर्षि—	जीवकायासज्काय	६१६
	६००, ६०४	, ६१४	मार्चशा ५		
	६२०, ६४३			पद ५६३, ५६ रविद्रतकया	०५० ०५०
	६६२, ७०४	, ७२०		रावप्रतक्या वर्मरच्चोसी	७३७ ७ ३ ७
`	ष्रह्मवि लास	\$33	भारामल्ल—		
	वारहभावना	७२०		चारदत्तचरित्र —	१६८
	वैराग्यपच्चीसी	६८४		दर्शनक्या	~ २ ७
	श्रीपालजीकीस् <u>न</u> ुति	६४३		दानक्या	२२=
۵.	सप्तभगीवागी	६८८		मुक्तावलितया	५६४
भगौतीदास—	वीरजिंगादगीत	४६६		रात्रिभोजनक्या	२३८
भगवानदास	म्रा शातिसागरपूजा	४६१		शीलवथा	२्४७
_		७८६		सप्तव्यसनक्या	२्५०
भगोसाह—	पद	५८१	भीप रकत्रि—	लव्विविधानचीपङ्	१७७
भद्रसेन—	चन्दनमलयागिरी	२२३	भुवनकीर्त्ति —	नेमिराजुलगीत	६१=
भाष्ट—	श्रादित्यवारक्या		भुवनभूपण-	प्रमातिकस्तुति	६३३
	(रविव्रतकथा) २३७	1		एकीभावस्तोत्रभाषा	३८३
	६०१, ६८४,	- 1		४२६, ४४=	, ६४२
	७४४, ७४६,	G 2 9		६६२, ७१६	, ७२०

			383
प्रंथ ५व प्रन्थक।र भ्रंथकार का नाम] ग्रंथ नाम ग्रंथ सूची की । प्र पत्र सं०	'थकार का नाम ^उ	पंथ ताम ग्रंथ सूची की पत्र सं० ११४
अथकार नग नग			वारहभावना ११०
	कवित्त		वज्रनाभिचक्रवत्तिकी भागना ५५
मूघरदास—	गुरुग्रोकीवीनती ४४७		419.11
	488, 288, 284, 444		४४८, ७३६
	विमानान १५, ६०६		विनती ६४२, ६६३
	480		६६४
	चतुर्विश्वतिस्तोत्र ४२६ चकडी ६५०, ७१६		स्तुति स्तुति
	01-110-1		पुरुपार्थसिद्धच ुपाय
	। जनदश्य २००० ४३६	भूवरमिश्र—	वचितका ६६
	जैनशतक ६५७, ००० ६५२, ६७०, ६८६		७७ <i>६</i> पद
	444, 40°, 1	भेलीराम—	पचक्त्याग्।कपूजा ५०१
	हहूद, ७० <i>६, ७</i> १०	भैरवदास—	बृहद्घटाकर्णकल्य ७२६
	७१३, ७१६, ७३२ ५६२	भोगीलाल—	
	दश्लक्षरारु	गंगलचंद—	नन्दीइवरहीपपूजा ४६३ • ४४७
	नरकदुखवर्गान ६५, ७८८		पदसग्रह
	नेमीश्वरकोत्तुति ६५०	े । इस्त्राचित्रपर्वे सम्बद्धाः वित्रपर्वे	पल- पट्संहननवर्णन
	99		Malician
	पचमेल्पूजा ५०५, ५६		जैनवद्रीदेशकीपत्री ५५१
	७०४, ७४	1	चन्द्रलेहारास ३६१
	पार्श्वपुराग्। १७६, ७४	1	ज्ञानवावनी ७७२
	90	१ मतिशेखर—	ज्ञालिभद्रचीपई १८८, ७२६
	पुरु गर्यसिद्धचु पाय	मतिसागर—	ी विश्व के विश्व कि व
	भाषा	६६ मथुरादासव्यास-	मकृत्रिमचैत्यालयपूजा ४५४
	पद ४४५, ५५०, ५	1 4	त्रकृतिन पर्यास्त्र चतुर्विशतितीर्थं करपूजा ४७३
	५६०, ६१५, ६		
	६४८, ६६४, ६	l l	ानवारा रूपारा ।
	६६४, ७७६, ५	i i	चितामिग्जोकीजयमाल ६४४
	७८४, ७८६, १	1	
	\	७५, मनराम—	ग्रक्षरगुग्गमाला ७४६
		६०५	गुगाक्षरमाला ७५०

THE PARTY OF THE P

भ्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रंथ सू र	ची की ात्र सं०	प्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम प्रंथ र	सूची की पत्र सं०
	पद ६६०, ७२३	, ৬২४		पद ४४७, ४१	४८, ७६८
	७६४, ७६६	, ७७६		समाधितंत्रभाषा	१२५
मनसाराम—	पद ६६३	, ६६४		साघुवदना	४५२
मनसुखलाल—	सम्मेदशिखरमहाल्य	६२		हुण्डावसपिगोकाल	•
मनहरदेव—	श्रादिनाथपूजा	प्र१		दो वर्ण	
मन्नालालिवन्दूका-	चारित्रसारभा षा	५६	मानकवि—		४, ६०१
Halleller & S.	पद्मनदिपच्चीसीभापा	६८		विनतीचीपडकी	७५१
	प्रद्युम्नचरित्रभाषा	१५२		संयोगवत्तीसी	4 83
मनासाह—	मानकी बढीवावनी	६३८	मानसागर—	कठियारकानडरीचीपः 	
741/110	मानकीलघुवावनी	६३८	मानर्सिहः—	श्रारती [.] पद	<i>અ૭૭</i> <i>અ૭૭</i>
मनोहर—	पद ४४५, ७६३	, ७६४		भूमरगीत अमरगीत	७५०
······································	•	१,७५६		मानविनोद	३००
	ज्ञानचितामिए। १८	, ७१४	मारू	पहेलिया	६५१
मनोहरदाम-		७३६	मिहरचद—	सञ्जनचित्तवल्लभ	३३७
	ज्ञानपदवी	७१८	मुकन्ददास—	पद	६६०
	ज्ञानपैडी	७५७	मेह्दनन्दन—	श्रजितशातिस्तवन	६१६
		, ७१६	मेल्युन्द्रगणि—	शीलोपदेशमाला	२४७
		४४६	मेला—	पद	७७६
मलूकचर	पद	1	मेलीराम—	ब ल्याणमंदिरस्तोत्र	ওদ
मलूकदास—	पद	β3 υ	महेशकवि—	हमीररासो	३६७
मह्मत—	वैराग्यगीत	४१६	मोतीराम—	पद	४६१
महाचन्द्—	लघुस्वयभूस्तोत्र	७१६	मोहन—	कवित्त	७७२
	पट् श्रावर् यक सामायिकपाठ	দ ৩	मोहनमिश्र—	लीलावतीभाषा	३६७
~ •		४२६	मोहनविजय—	चन्दनाचरित्र	७६१
महींचन्द्रसूरि—	पद	५७६		मानतु गमानवतिचीव	ई २३४
महेन्द्रकीत्ति—	जकडी पद	६२० ७५१	रगविजय	ग्रादीश्वरगीत	300
माखनकवि—	प्प पिगलछदशास्त्र	- 1		उपदेशसज्भाय	
माखनकाय-	तेरहपंथपच्चीस <u>ो</u>	३१० ४४=	रंगविनयगिषा—	मगलकलशमहामुनि	
माण्कप५	47614141411	684 1		चतुष्पदी	१५५

			~
गंश	ប្រដ	प्रन्थकार	١
79	20		_

	7		ı	
ग्रंथ एव प्रन्थकार ग्रंथकार का नाम] प्रंथ नाम प्रंथ सूची की ी	प ['] थकार का नाम	त्रंथ नाम प्रंथ	सूची की पत्र सं ॰
अवसार का स	पत्र सं १		चतुर्विशतितीर्थं व रपू	जा
रइघु—	वारहभावना ११४			६, ७२७,
रघुराम—	सभासारनाटक ३३८			२६, ७७२
रणजीतदास—	स्वरोदय रि४५		पद ५८१,६	६=, ६=६
रत्नकीर्त्ति—	नेमीश्वरकाहिण्डोलना ७२२		पूजासग्रह	५२०
·	नेमीश्वररास ^{६३६}		" प्रतिमासान्तचतुर्देश	ी
	७२२		व्रतोद्यापन	५२०
रतनचंद—	चौबीसीविनती ६४६		पुरुपस्त्रीस वाद	७८६
	देवकीकीढाल ४४०		वारहखडी	७१५
र्त्तमुक्ति—	नेमीराजमतीरास ६१७		शातिनाथपूजा	አ ጾጵ
रत्नभूषण्—	जिनचैत्यालयजयमाल ५६४		शिखरविलास	६६३
र्ल्हकवि—	जिनदत्तचौपई ६५२		सम्मेदशिखरपू गा	
र्सिकराय—	स्नेहलीला ६६४		सीताचरित्र	२०६, ७२५
राजेमल—	तत्त्वार्थसूत्रटीका ३०			७५६
राजसमुद्र	कर्मवत्तीसी ६१७	1	सुपाइर्वनाथपूजा	
	जीवकायासज्भाय ६१६ _{अञ्च} ञ्जयभास ६१६	। ऋषिरामचन्द्र-	उपदेशसज्भाय	350
	413.41.4	i.	कल्यागुमदिरस्त	।।त्रसापा ३५%
	11.3	1	26	रूर ३६२
	11116		नेमिनायरास	44 <i>1</i> ३ ०२
राजिसिह—	पद ५५	रामचन्द्र	रामविनोद	५८३, ५८५
राजसुन्द्र—	द्वादशमाला ७४३, ७७	1	पद ६६३	१, <i>६९७, ७७३</i>
	सुन्दरश्रृ*गार ६ ५३, ७२ _{पट} ५६		पद	५६२
राजाराम—	33	१३ मिश्ररामराय-	'वृहद्चाग्गिनयन	ीित
राम—		į		स्त्रभाषा ३३६
		५८ ३८ रामविनोद—	रामविनोदभा	षा ६४०
रामकुष्ण-		६८ ब्रं० रायमल्ल-	ग्रादित्यवारक	था ७१२
•		48	चितामिए।जय	ामाल ६५५
रामचंद्र—		४७४	- छियालीसठा	णा ७६५
<i>></i>	नप्रभगाणस्त्रुना	•		

य थकार का नाम	श्रंथ नाम	प्रंथे सूची की पत्र सं०	अंथकार का नाम	५ंथ नाम	श्रंथ सूची की पत्र सं०
	जम्बूस्वामीच	रित्र ७१०		पंचमगल १	८०१, ४२८, ४४७
	निर्दोपसप्तमं	विया ६७६		¥	१८, ४६४, ४७०
	नेमीस्वरफाग	г ३६३, ६०१		Ę	२४, ६४२, ६५०
	६३	२१, ६३८, ७५२		Ę	५८, ६६१, ६६४,
	पंचगुरुकी जय	माल ७६३		Ę	७३, ७०४, ७०५
	प्रद्युम्नरास	४६५, ६३९			७१४, ७२०
	৬१	२, ७३७, ७४६		र्प चकल्यारा	वपूजा ५००
	भक्तामरस्तीः	ववृत्ति ४०५		दोहारातक	७४०, ७४३
	भविप्यदत्तरा	स ३६४, ५६४		पद ५	८६४, ५६७, ५६६
	Ę.	४८, ७४०, ७५१		•	२४, ६६१,७२४
	6	४२,७७३,७७४		V	१३७ ,४४७ ,३४९
	राजाचन्द्रगुप्त	निचीपई ६२०			७६५, ७८३
	शीलरास	380	• •	परमार्थगोत	ा <i>७६</i> ४
	श्रीपालरास	६३८		परमार्थदोह	="
		६६४, ७१२		परमार्थीहेंड	ोलना ७६४
		७१७, ७४६		लघुमंगल	६२४, ७१६
	सुदर्शनरास	३६६, ६३६		विनती	७६५
		७१२, ७४६		समवसरए	रूजा ५४६
	हनुमच्चरित्र	२१६, ५६५	पाडे रूपचद—	तत्वार्यसूत्र	भापाटीका ६४०
	प्र	१६, ७१७, ७३४	रूपदीप	विगलभणा	७०६
		७४०, ७५२	रेखराज—	पद	७६६
		७४४, ७६२	त्तद्मण—	चन्दकथा	৬४८
साधर्मीभाईरायमल्ल-	– ज्ञानानन्दश्रा	वका	त्तद्मीवल्त्यभ—	नवतत्वप्रक	रस ३७
	5	बार ५८	लच्मीसागर	पद	६८२
रूपचंद—	श्रध्यात्मदोह	ग <i>७४६</i>	लव्धिवमत्तरा ग्-	ज्ञानार्शवर्ट	काभाषा १०५
	जकडी	६५०, ७५२		पार्श्वनाथच	ीपई ४४-
		६६१, ७५५	नान	पद	४४४, ६८६
	जिनस्तुति	909	लालचन्द्—	श्रारती	६२२

प्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम	त्रंथ सू प	ची की त्र सं०	र्थकार का नाम	म्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	चिन्तामरि	ा पार्श्वनाथ			पार्श्वजिनपूज	ण ५०७
		स्तवन	£ 810		पूजाष्टक	५१२
	धर्मबुद्धिच	ोपई	२२६		षट्लेश्यावेलि	r ३६६
	नेमिनाथमं	गल ६०५	, ७२२	वल्लभ—	रूनिमगोिविव	ग्रह ७८७
	नेमीश्वरक	ा व्याहला	६५१	वाजिद्	वाजिदकेग्रहि	हल्ल ६७३
	पद !	५८२, ५८३	, ধ্হড	वादिचन्द्र—	ध्रादित्यवार	ह्या ६०७
	पूजासग्रह		<i>૭७७</i>	विचित्रदेव	मोरपिच्छघा	रीके
पांडे लालचंद—	पट्कमॉपदे	वारत्नमाला	55		क	वित्त ६७३
	सम्मेदशिख	रमहात्म्य	६२	विजयकीर्त्ति—	ग्रनन्तन्नतपूज	ा ४५७
ऋषि लालचद—	श्रठारहना	तेकीवथा	२१३		जम्बूस्वामीच	रित्र १६६
	मरुदेवीसज	भाप	४५०		पद	५५०, ५५२
	महावीरर्ज	चिढाल्या	४५०		ध्र	:३, ४५४, ४५४
	विजयकुमा	रसज्भाय	४५०		प्रव	:६, ५८७, ५८६
	शान्तिनाथ	स्तवन	४१७		श्रेणिकचरित्र	. २०४
	शीतलनाथ	स्तवन	४ ५१	विजयदेवसूरि	नेमिनाथरास	३६२
जाजजीत <u>—</u>	तेरहद्वी ग्रूष	П	४५४		शीलरास	३६४, ६१७
त्रहाताल—	जिनवरव्रत	जयमाला	६५४	विजयमानसूरि—	श्रीयासस्तवः	፣ ሄሂየ
लालवद्ध न—	पाण्डवचरि	বে	१७५	विद्याभूषण	गीत	६०७
ब्रह्मलालसागर—	एामोकारछ	द	६६३	विनयकीर्त्ति—	ग्रष्टाह्निकान	तकथा ६१४
ल्एकरग्रकासलीवाल-	— चौबीसतीर्थ	किरस्तवन	४३५			७५०, ७१४
	देवकीकीढ	ाल	35४	विनयचंद—	केवलज्ञानसञ्	काय ३८५
साहलोहट-	ग्रठारहनाते	कीकथा		विनोदीलाललालचंद—	कृपग्पपच्चीसी	७७३
	(=	वौढाल्या)	६२३			१ ७७३, ७७६
	७२३, ।	, ०२०, ४७६	७१५		चौरासी जा ति	
	द्वादशानुप्रेथ	ता	७६६		জ	यमाल ३६९
	पार्श्वनाथव	वे यु णमाला	५७६		नेमिनाथकेनव	-
	प इर्व नाथ ज	ायमाल	६४२		६्द	१, ७२०, ७३४
S			৬নং			रहमासा ७५३
			•			

प्रथमार का नाम प्रथमाम प्रथस्	ची की	प्र'थकार का नाम	त्रंथ नाम	प्रथ सूची की
q	ात्र सं॰			पत्र सं०
पूजाष्टक	७७७	घुजलाल —	वारहभावना	६८४
पद ५६०	, ६२३	वृन्दक्रवि—	वृत्दसतसई	336
७१७, ७८३	, ७६५		६७१	४, ७४१, ७५४
भक्तामरस्तोत्रकथा	२३४	युन्दावन	ववित्त	६=२
सम्यनत्वकीमुदीकथा	२५२		चतुर्विदातितीः	र्वतस्त्रजा ४७१
राजुलपच्चीसी	६००		छंदशतक	३२७
६१३, ६२२	१, ६४३		तीसचीबीसीपू	मा ४५३
६५१	, ६८५		पद	६२४, ६४३
७४७	, ७५३		प्रवचनमारमा	ना ११४
विम्लकीर्त्ति — वाहुवलीसज्काय	388	शंकराचार्य-	मुहूर्त्तमुनतावि	नगपा ७६=
िमलेन्द्रकीर्त्ति— ग्राराधनाप्रतिबोधसार	६५८	शांतिक्रशल—	ग्रन्जनारास	360
जिनचौवीसीभवान्तर		व० शांतिदास		१ ६६०, ७९५
रास			ग्रादिनायपूजा	
विमंत्रविनर्थगेष्यि— श्रनाथीसाधचौढालिया श्रह्मकचौढालियागीत		शालिभद्र—	बुद्धिरास <u>ब</u> ुद्धिरास	६१७
अहस्रक्षालयागात विंशालकीर्त्ति— धर्मपरीक्षामापा		शिखरचंद	तत्वार्यसूत्रभाप	
	७३५	शिरोमणिदास—	धर्मसार -	६३, ६५९
विश्वभूपेगा— श्रप्टकपूजा नेमिजोकोमंगल	७०१ ५६७	ऋपिशिव—	नेमिस्तवन	Yoo
नामजाकामगण नेमिजीकीलहुरि ७४६		शिवजीलाल—	चर्चासार	१६
•			दर्शनसारभाषा	
पर्वनाथचरित्र पार्श्वनाथचरित्र	, ६६८		प्रदिप्ठासार	५२२
	४६६	शिवनिधानगणि—	्संग्रहणीवालाव	_
विनती 	६२१			
हेमकारी	७६३	शिवलाल—	कवित्तचुगलखो	
विश्वामित्र— रामकवच	६६७	शिवसुन्द्र—	पद	७ <u>४</u> ०
त्रिसनद्रास- पद	४५७	शुभचन्द्र—	श्रप्टा ह्निकागीत	
वीरचद् जिनान्तर	६२७		ग्रारती	३७७
संबोधसताणु	३३६		क्षेत्रपालगीत	६२३
वेग्गीदासः[त्र० वेग्गु]— पाचपरवीव्रतकीकथा	६२१		पद	७०२, ७२४
	६८४			ଓଓଓ

प्रथकार का नाम	प्रंथ नाम प्रंथ सूर्च ं पर	ो की । सं०	प्र'थकार का नाम	त्रंथ नाम प्रंथ सूर्च पत्र	ो की । सं॰
•	शिवादेवीमाताकोग्राठवो •	1	 ,	ग्रक्लं काष्ट्रकभाषा	308
शोभाचन्द—	्र वे क्षेत्रपालभैरवगीत	<i>७७७</i>	•	ऋिपमंडलपूजा	७२६
Zii-ii - Z	पद ५५३,	७७७		्तत्वार्थसूत्रभाषा	35
श्यामदास	तीसचौबीसी	७४५		दशलशए।धर्मवर्णन	५६
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	् पद	७६४		्नित्यनियमपूजा	४१६
	श्यामवत्ती सी	७६९		[ं] न्यायदीपिकाभाषा	१३५
श्याममिश्र—	रागमाला	७७१		,भगवतीग्रारा घनाभाषा	७६
श्रीपाल—	त्रिषष्ठिशलाकाछद	६७०		मृत्युमहोत्सवभापा	११५
	^{रू} पद	६७०	•	रत्नकरण्डश्रावकाचार	५ २
श्रीभूपण्—	ग्रनन्तचतुर्दशीपूजा	४५६		ँ षोडशकारग्रभावना ५	द, ६ ८
	पद	५८३	सवलसिंह—	ं पद	६२४
श्रीराम—	पद	५६०	सभाचन्द—	<u> ब</u> ुहरि	७२४
श्रीवद्ध न	 ग्रुग्स्थानगीत	७६३	सवाईराम	पद	४६०
श्रापञ्ज स— मुनिश्रीसार—	स्वार्थवीसी	६१९	समयराज—	पार्श्वनाथस्तवन	६६७
	पद	६५४	समयसुन्दर—	[°] ग्रनाथीमुनिसञ्भाय	६१८
संतदास	न्य कवित्त	६६२		े श्ररहनासज्भाय	६१८
संतराम—	~	५५४		[े] श्रादिनाथस्तवन	६१६
्संत्रलाल—	सिद् यच क्रपूजा पद	७४६		कर्मछत्तीसी	६१६
संतीदास—		३०३		- कुशलगुरुस्तवन	<i>૭७</i> ૯
संतोषकवि—	विपहर ए विधि	२०२ ६⊏५		क्षमाछत्तीसी	६१७
मुनिसकत्तकीर्त्त-		५७५ ५६२		गौडीपार्चनाथस्तवन	६१७
	कर्मचूरव्रतवेलि	५५२ ५८८			383
	्षद - पार्श्वनाथाष्ट्रक	७७७		, गौतमपृच्छा	६१९
	पारवनायाष्ट्रक <u>मुक</u> ्तावलिगीत	६८६		गौतमस्वामीसज्भाय	६१ुन
	•	488	ì	ज्ञानपंचमीवृहद <u>्</u> स्तवन	<i>3७७</i>
	सोलहकारणरास			तीर्थमालास्तवन	६१७
		e, 658		दानतपशीलसंवाद	६१७
सदासागर—	पद	४८०		निमराजिंपसज्काय	६१८
[।] सदासुखकासली	त्राल— ग्रर्थप्रकाशिका	8		पंचयतिस्तवन	६१६

प्रथिकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रंथ सून् प	वी की व्रसं०	त्रंथकार का नाम		ची की त्र सं०
	पद ५७६,	५५५	सुखानंद—	र्वचमेरपूजा	you
	५८६,	७७७	सुगनचद—	चतुर्विदातितीर्थंकर	
	पद्मावतीरानीम्राराधना	६१७		पूजा	१७३
	पद्मावतीस्तोत्र	६८४	मुन्दर—	क्पडामाला का दूहा	इथथ
	पार्ग्वनायस्तवन	६१७		नायिकालक्षरण	७४२
	पुण्य छत्तीसी	६१६		पद	७२४
	फलवधीपार्ग्वनायस्तवन	६१६		सहेलीगीत	७६४
	चाहुद्यलिसज्काय	६१६	सुन्द्ररगिण—	जिनदत्तसूरिगीत	६१८
	वीसवि रहमानजकडी	६१७	सुन्दरदास—।	कवित्त	६४३
	महावीरम्तवन	७३५		पद	७१०
	मेघकुमारसज्काय	६१८		सुन्दरिवलास	ዓ የ ሂ
	मीनएकादशीस्तवन	६२०		सुन्दरशृंगार	७६८
	राग्।पुरस्तवन	६१६	छुन्द् रदास—॥	तिन्दूरप्रकरणभाषा	३४०
	वलदेवमहामुनिसज्भाय	६१६	सुन्दरभूपण—	पद	४८७
	विनती	७३२	सुमतिकीर्त्ति—	क्षेत्रपालपूजा	६३७
	शत्रुञ्जयतीर्यरास ६१७	, ७००		जिनस्तुति	७६३
	श्रेग्विकराजासञ्काय	333	मुमतिसागर—	दशलक्षग्रवतोद्यापन	६३८
	सञ्काय	६१८			७६५
सहसकीत्तं—	ग्रादीस्वरदेखता	६द२		व्रतजयमाला	७६५
साईदास—	पद	६२०	सुरेन्द्रकीर्त्त—	श्रादित्यवारक्यामापा	७०७
साधुकीर्त्ति—	सत्तरमेदपूजा ७३४,	०३७		जैनवद्रीमूडवद्रीकीयात्रा	३६६
	जिनकुशलकोस्तु <u>त</u> ि	<i>৬७</i> ५		पद	६२२
सालम—	घ्रात्मशिक्षास ज्काय	६१६		सम्मेदशिखरपूजा	ሂሂ∘
साहकीरत	पद्	୧୯୧	सूरचढ—	त्तमाधिमरखनापा	१२७
साहिवराम—	पद ४४५	, ७६५	स्रदास—	पद	६५४
मुखदेव—	पद	ሂട0		७६६,	इ 3 थ
सु खराम—	कवित्त	७७०	सूरजभानश्रोसवाल—	परमात्मप्रकाशभाषा	११२
सुखलाल—	कवित्त	६४६	सूरजमल-	पद	५५१

श्रंथकार का नाम		रूची की पत्र सं०	े प्रंथकार का नाम 	य्र ं थ नाम	प्रंथ सूची की पत्र सं ०
कविसूरत	द्वादशानुप्रेक्षा	७६४		निर्वासित्रमंडर	तपूजा ४६८
	वारहखडी ६६, ३३	२, ७१५		पंचकुमारपूजा	७५६
		७ ८८		पूजापाठसंग्रह	५११
सेवगराम	ग्रनन्तनाथपूजा	४४६		मदनपराजय	३१८
	ग्रादिनायपू जा	६७४		महावीरस्तोत्र	५ ११
	ग कवित्त	१७७		वृहद्गुरावलीशा	तिमंडल
	• जिनगुरापच्चीसी	४ ४७		(चौसठऋहिपूजा)	४७६, ५११
	जिनयशमगल	४४७		सिद्धक्षेत्रोकीपूजा	१ ४४३, ७८६
	पद ४४७, ७५	e, ৩ ६ ५		सुगन्धदशमीपूज	
	निर्वाग्यकाण्ड	७५५	हंसराज—	विज्ञसिपत्र	४७६
	नेमिनाथकीभावना	६७४	हठमलदास—	पद	६२४
सेवारामपाटनी-	मल्लिनाथपुराख	१५२	हरखचंद—	पद	४ ८३, ४ ८४
सेवारामसाह—	अनन्तवतपू जा	४५७			५५५
	चतुर्विशतितीर्थंकरपूजा	४७०	हरचद्ऋप्रवाल—	सुकुमालचरित्र	२०७
	धर्मोपदेशसंग्रह	६४		पंचकल्याराकपात	5 ४० ०
सोम—	चितामग्गिपार्व्वनाथ	i			७१६
	जयमाल	७६२	हर्गू लाल—	सज्जनचित्तवल्ल	भ ३३७
सोमदेवसूरि	देवराजवच्छराजचीपः	ई २२ =	हर्षकवि	चंद्रहसकया	७१४
सोमसेन—	पचक्षेत्रपालपूजा	७६५		पद	४७६
स्यौजीरामसौगाखी—	लग्नचंद्रिका	७५१	हर्षकीर्त्त—	जिएाभक्ति	४३८
म्बर्पचंद	ऋद्विसिद्धिशतक ५	२, ५११	,	तीयँकरजकडी	६२२
	चमत्कारजिनेश्वरपूजा	५११		पद	४ ८६, ४ ८७
		६७३			, ५६०, ६२१
	जयपुरनगरसवधी				, ६६३, ७०१
	चैत्यालयोक <u>ी</u> वदना	४३५			, ५६३, ७६४
		५११		पंचमगतिवेलि -	, ०२२, ७२ <i>६</i> ६२१
	जिनसहस्रनामपूजा	४५०			५२६ ६६८, ७५०
	त्रिलोकसारचौपई	५११		111)	५५५, ७२ <i>०</i> ७६५
	•	`` }			७ ५५

भंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सू च प	ी की त्र सं०	मंथकार का नाम	श्रंथ नाम	प्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्श्वनाथपू	जा	६६३		विनती	६६३
	वीसतीर्थं कर	ते की जकटी	•		स्तुति	३७७
•	(जयम	ाल) ६४४	, ७२२	हीरकवि	सागरदतचि	व २०४
	वीस विरह	मानपूजा	४६४	हीराचंद	पद	४४७, ४८१
	श्रावककीक	रणी	५६७		पूजामंग्रह	४१६
	पट्लेश्यावेति	ल	४७७	हीरानंद—	पंचास्तिकायः	भाषा ४१
	सुखघडी		७४६	हीरालाल—	चन्द्रप्रमपुराए	१४६
हर्पेचन्द्—	पद		, ६२०	हेमराज—	गियातसार	३६७
हर्पसृरि—		जिनस्तवन	308		गोम्मटसारक	र्मकाण्ड १३
पाडेहरिकृष्ण—	श्रनन्तचतुर्दः	शीव्रत			द्रव्यसंग्रहभाष	т ७३३
		क्या	७१६		पंचास्तिकाय	भाषा ४१
	ग्राकाशपं च		४३७		पद	४६०
	निर्दोपसप्तर्म		७६४		्रप्रवचनसारभ	पा ११३
	निशल्याप्टमी	क्या	७६५		नयचक्रभाषा	१३४
इरिचरणदास—	कविवल्लभ		६८८		वावनी	६५७
	विहारीसतर		६८७		भक्तामरस्तोः	भाषा ४१०
हरीदास—	ज्ञानोपदेशव	त्तीसी	७१३		ሂ፥	१६, ६४८, ६६१
	पद		৩৩০			७०७, ७७४
हरिश्चन्द	पद		६४६		साघुकीग्रारती	୯୬୭
इरिसिंह—	पद ५	द २, ५ ५५,	६२०		सुगन्धदशमीव	वा २५४
	Ę	४३, ६४४,	, ६६६			४३७
	V	७७२, ७७६,	, હદદ	मुनिद्देमसिद्ध—	श्रादिनाथगीत	४३६



>>>> शासकों की नामाविल >>>>>

प्रकवर	६, १२२, १६७, ४६१, ४६२	चन्द्रगुप्त	६२०
(इकव्वर)	६८१, ७६७, ७७३	चित्रगदमोडीयै	. પ્રદેવ
ग्रजै पालपं वार	४६२	छत्रसाल	308
ग्रग्हलगुवाल	प्रहर	जग्हों । जगत्सिंह	१७०, १८१, ३६९, ७७६
धनंग ालतु ँवर	<i>488</i>	जगपाल	६६
ग्ररविंद	प्रदेव	जर्यसिंह (सवाई)	४३, ७१, ६३, ६६, १२०
प्रलाउद्दी न	३५६, २५६		१२८, २०४, ३०४, ४८२
(भ्रलावदीन)			४१४, ४२०, ५६१
म्रलावलखा	१५७	जयसिंहदेव	१४४, १७६
भ्रलावद्दीनलोदी	ય્રદ	जहागीर	४१, १४४
भ्रहमदशाह	२१६, ५६१	जैतसी	५६२
भ्रालभ	२५१	जैसिंह (सिंघराव)	५६२
श्रौरगजेव	६७, ४७८, ५१४, ६९८	जोधावत	488
श्रौरगसाहि पातसाहि	३१, ३६, ५ँ६२	जोधै	५ हर
इन्द्रजीत	७४३	टोडरमल	ভহড
<u>.</u> इत्राहीमलोदी	१४२	ह्र गरेन्द्र	१७२
इब्राहीम (सुलितान)	१४४	तैतवो	. ૧૬૨
ईसरीसिंह	२२६	देवडो	५ ६२
ई् वं रसिं ह	२३१	नाहरराव (पवार)	५६१
उदयसिह	२०६, २४१, ५६१, ५६२	नौरंगजीव	३०४
उभै सिंह े	र्देश	नौरग '	४४८
कि शनसिंह	ર્યે હર્	पूररामल्ल	१ ६४
कीतिसिंह	, २६४	पेरोजासाह	৬দ
र्कुशलेसिह	४ দ	पृथ्वीराज	१०७
केशरीसिंह	ই ४७	पृथ्वीसिह	७३, १४४, ६८३, ७६७
खेतसी	98	प्रतापसिंह	२७, १४६, १८६ ४५७, ४६१
गयासुद्दीन	, X ±	फतेसिंह	850
गजुद्दीहबहादु र	१२५	वस्तावरसिंह	
घडसीराय	१७२	्र वहलोलशाह	७२६
	•	•	६२

£30]	•		[शासकों की नामावति
वावर्	- 838	रामस्यच	२२६
वीकै	४६१	रायचद	¥¥
बुधसिंह	५, २००	रायमल्ल	३५१
- भगवंतसिंह	३४	रायसिंह	२४६, ३२०
भाटीजैसे	१५१, १८८	नानाह	५२२
भारामल	४ ६४	लिछमग्रस्यंघ	२ २६
भावसिंह	७१	वसुदेव	3\$%
भावसिंह (हाडा)	३६ ो	विक्रमसाहि	४६७
भोज	प्रहर	विक्रमादित्य	२५१, २५३, ६१२
भोजदेव	\$ 1.	विजयसिंह विमलमत्रीश्वर	र=३ ५ <u>६</u> २
मकरधुज	3 5 ¥	विशनसिंह	रन३
मदन		वीदै	4 E \$
महमदखा	१०	वीरनारायण (राजाभोजकापुत्र)	4 E \$
महमदसाह	१ ५६	वीरमदे	४६२
महमूदसाहि	१ द द	वीरवल	६६ १
महाशेरखान	५३	वक्तिसिंह	३७
माधोसिह	१०४, १६२, ५५१, ६३६	शाहजहा	६०२, ६९८
माघवसिंह	६३८	श्रीपाल	३५
मानसिंह	३४, १५६, १८४, १८६	श्रीमालदे	१६०
	१६२, १६६, ३१३	श्रीराव	५६५
•	४७६, ४८०	श्रेशिक	३६३
मालदे	४६१, ४९२	सलेमसाह	७७, २०६, २१२
मूलराज	१३२	सावलदास	१५४
मोहम्मदराज	६००	सिकन्दर	१४५
र ग् षीरसिंह राजसिंह	358	सूर्यसेन	४, १६४
राजामहा	१३१, २७१, ३१३	सूर्यमञ्ज संग्रामसिंह	२ ६६ २६३
रामचन्द्र	७२६	सोनडारे	५६१
रामसिंह रामसिंह	७७, २४० २७, १४६, २७४, २७५	हमीर	३७८, ४६१, ६०६
•	₹१०, ६११	لفظ	∢
			·

🗡 याम एवं नगरों की नामावलि 検

	_		
भं जनगीई	७२७	श्रागरा	१२३, २०१, २५५, ५६१
ग्रवावतीगढ (ग्रामेर)	४, ३४, ४०, ७१, १२०		७४६, ७५३, ७७१
	१६३, १८७, १६६, ४५४	श्राभाने री	७४५
ग्रकबरानगर	४७९	श्रामेर	३१, ७१, ६३, ११६, १२०
प्रकवराबाद	६, ३६१		१३२, १३३, १७२, १८४,
श्रकव्बरपुर	२५०		१८८, १६०, २३३, २६४
प्रकीर	् ३६७		३३७, ३६४, ३६४, ४२२
ध्रजमेर -	२१६, ३२१, ३४७, ३७३		४६२, ६८३, ७५९
	४६६, ५०५, ५६२, ७२६	ब्राम्नगढ	१५१
श्रटोग्गिनगर	१२	श्रालमगंज	२०१
श्रणहिलपत्तन (ग्रणहिल्ल गट) १७४, ३४१	श्रावर (श्रामेर)	१८१
श्रमरसर	६१७	ग्राश्रम नगर	<i>\$</i> 4
प्रमरावती	४ 5७	इन्दौर (तुकोगंज)	ሂሄ७
श्रवती	६६, २७६, ३६७	इन्द्रपुरी	३४८, ३६३
श्रग्र [°] लपुरदुर्ग (श्रागरा)	२०६, ३४६	इंबावतिपुर (मालवदेश मे)	३४०
ग्र र।ह्वयपुर	१७	इंदोखली	३७१
श्रलकापुरी	¥₹¥	ईडर	३७७
श्र लवर	२४, ५६७	ईसरदा	२७, ३०, ५०३
म्रलाउपुर (म्रलवर)	१४४	उग्रियावास	388
म्रलीगढ (उ. प्र)	३०, ४३७	उज्जैन	१२१, ६८३
श्रवन्तिकापुरी	६६०	उज्जैसी (उज्जैन)	४६१
श्रह् मदाबाद	२३३, ३०४, ४९१	उदयपु र	३६, १७६, १६६, २४२
	४६२, ७५३		२६३, ५६१
श्रहिपुर (नागौर)	८६, २५ १	एकोहमा नगर	<i>አ</i> ጸጾ
श्राघी	३७२	एलिचपुर	१५१
ग्रबावती	३७२	श्रीरंगाबाद	७०, ५६२, ६१७
श्रावा महानगर	१६४	ककरालाट	३ ६७
आवैर (ग्रामेर)	१०७	कछोविदा	४६२
			-701

६३२]		[:	याम एवं नगरों की नामावित
कटक	२५४	केरल	७३६
क्फोतपुर	१६१	केरवाग्राम	२५०
फण् ए ड	थं ३ इ	कैलाश	६८२
कडीग्रां म	१६३	कोटपुतली	७५७
कनारा (जिला)	२२	कोटा	६४, २२७, ४४०
ें कर्णाटक	३८६	कोरटा	३ २३
करा डग्र	७३६	कौं शवी	५६२
करोली	६०४	मृ ष्णगढ	१८३, २२१, २६८, ३१६
कलकत्ता	१५१	कृष्णद्रह (कालाडेहरा)	२१०
कल्पवल्लीपुर	३६३	खण्डार	४५०
क लिंग	७३६	ब तीली	३ ३७
काडीग्राम	३४६	सिरा डदेश	৬१
कारगीता	३७२	खेटक	२५१
कानपुरकैट	१३४	गंधार	१५५
कामानगर	१ं२०	गऊड	३६७
फार ं ग	२०४	गढकोटा	६३८
कालख	५ २	गाजीकाथाना	७१४
कालाडेरा (कालाडेहरा)	४५, २१०	गिरनार	६७०
, ,	३०६, ३७२	गिरपोर	३६२
निरात	७३६	ग्रीवापुर	४° ५
किशनगढ	४४, २५३, ५६२	गुजरात	२२४
किहरोर	२१=	गुज्जर (गुजरात)	३६७
कु [*] कुरादेश	५२२	गुर्ज्जरदेश (गुजरात)	३६३
	1		i e

४४४

33

२५१

७३६

७३६

१४५

२००

कुचाम्

कुं भनगर

कु भलमेरूदुर्ग

कुरूजागलदेश

कुं भलसेस

कुरंगरा

नेकडी

गुरूवचनगर

, गोलागिरि

गोंवटीपुरी

गोविन्दगढ

गौन्देर (गोनेर)

गोपाचलनगर (ववालियर) १५५, १७२, २६५, ४५३

४३६

३७१

३७२

१८१

४१०

३७२

श्राम एवं नगरों की नामाविलि)

•	•
ग्वालियर	१७२, ४५३
घडसोला	४७५
घाटडै	१७६
घाटमपुर	४१२
घाटसल	२३४
चऊड	३६ ७
चन्द्रपुरी	४१, १नव, ५३१
चन्द्रापुरी	१७, ३०३
चन्देरीदेश	५३, १७१
चंपनेरी	५६३
चम्पावती (चाकसू)	३०२, ३२८
चम्पापुर	१६४
चमत्कार क्षेत्र	६९३
चाकसू	२२५, २८७, ४३४, ४६७
	४६८, ५६३, ७८०
चान्दनपुर	५४५
चावडल्य	३७२
चावली (श्रागरा)	५४७
चित्रीड	२१३, ५६२
चित्रक्ट	३६, १३६, २०६
चीतौडा	१८४, १८६
चूह	५०२
चोमू	880
जम्बूद्वीप	२१८
जयदुर्ग	२७३
् जयनगर (जयपुर)	१६, ११२, १२४
	१६८, ३०१, ३१६
(सवाई) जयनगर (जयपुर	
जगार (गराई) स्वतन	वेश्य, वेवै०
, जयपुर (सवाई) जयपुर े	७, १६, २५, २७ ३१
	३४, ३६, ४२, ४४, ५२

थ्र, ६१, ६६, ७१, ७२ 98, 99, 9E, 5X, 5E, ER हर, ह६ हन, १०२, १०४ ११०, १२१, १२५, १३० १३४, १४०, १४२, १४५ १४२, १५३, १५४, १५५ १४८, १६२, १६६, १७२ १७३, १५०, १८२, १८३ १८६, १६५, १६६, १६७ १६८, २००, २०१, २०२ २०४, २०७, २२०, २२५ २३०, २३१, २३४, २३४ २३६, २३६, २५०, २४३ २४४, २६२, २७४, २७% २८०, ३०२, ३०४, ३०८ ३०६, ३४१, ३४०, ३४७ ३६२, ३६४, ३७४, ३८६ ३६४, ४१०, ४११, ४२१ ४४४, ४४०, ४५६, ४६० ४६१, ४६६, ४७२, ४८१ ४८७, ४६४, ४६६, ४०४ ४०४, ४११. ५२०, ५२१ ५२७, ५३३, ५४६, ५७७ ४६१, ६००, ६१४, ६६६ ६८३, ७१४, ७२१, ७४४ ७६८, ७७४, ७७६ 90 ४१, ७०, ६१, १४२

४४२, ६६८

३५०

जलपथ (पानीपत)

जहानाबाद

	1	
a 2 ->		
६३४	B	
-,-		

 , ,			
जालो <u>े</u> र	१०६, २०५, ५६२	तिलात्त	७३६
जैसलपुर	/ १३२	तुक्क	३६७
जै सल गेर	. ५६१, ६२०	तुस्यक	७३६
जैसिहपुरा	२४, ३१, ६१, ४४६	तोडा (टोडा)	६०६
	५०२, ६०१	दयखग्	३, ६७
जो वपुर	२०५, ३५१, ४६१	दविगा	,३६७
नीवनेर	२६, ३४, ७४, २३१	दारू	३ ६५
	२६३, ३०२, ३३३	दिल्ली-देहली	३७, ८८, १२८,१४०
	४५५, ४६१, ४६६		१४६, १७४, १६७, ४४८
	४८७, ४६१, ६४४		४४६, ५६१, ७५६, ७६७
कालरापाटन	१६३	दिवसानगर (दौसा)	३४४
भानागा	३७२	दूद	१७२
भिलती	३१४	दूनी	३८०
भिलाय	१७ ०, ३२६, ४७७	देघगाग्राम	२६१
भोटवाटाः	३७२	देवगिरि (दीसा)	१७३, २८६, ३६४
टहटडा	३०२	देवपल्ली	१५६
टोक	३२, १८६, २०३	देलुली	६६
टोडाग्राम	१४८, ३१३	देवल	३७१
ड्योडीग्राम	783	दीसा–चीसा	१७३, ३२८, ३७२, ३७३
डिग्गी	४१	द्रव्यपुर (मालपुरा)	२६२, ४०६
डिडवाना	३११, ३७१	द्वारिका	५६७
ढू ढारदेश	३१६, ३२८	घवलवखपुर	रेधन
सागवचात (नागरचाल)	३६७	धार्णानगर	१ूद
· तक्षकगढदुर्ग (टोडारायसिंह)	৬৬	घारानगरी	३५, १३३, १४५, १७६
-	१३८, १७४, १८३, २००	नंदतटग्राम	६२
	२०४, २३६, ३१३, ४६४	नदपुर	४७७
तमाल	७३६	नगर	२२७, ४६२
तारगपुर	२०१	नगरा	४३४
तिज्ञादा	१४४, १५७	नयनपुर	१ १
८ तिलंग	३९७	नरवरनग्र	4२

त्राम एवं नगरों की नामा	विल रें]		४६३]
नरवल	२ २७	पाली '	1 ३६३
नरायला	११७, ३५३, ३६२, ४१४	पावटा	६४६, ७८६
नरायगा (वडा)	' २५४	पावागिरि	०६७
नलकच्छपुरा	१४५	पिपलाइ	, ३६३
नलवर दुर्ग	ं ५ २४	पिपलौन	`. ३७३
नवलक्षपु र	२१२	पुन्या	४४१
नागल	३७२	पूर्णासानगर	२००
नागरचालदेश	୪ ४ 5	पूरवदेस	43\$
नागपुरनगर	३३, ३४, दद, २८०, २८२	पेरोजकोट	्२७५
	३५४, ४७३, ५४३	पेरोजापत्तन	(, ६२
नागपुर (नागीर	१३७, ७६१	पोदनानगर	५६८
नागौर नागौर	३७३, ४६६, ४८८	फतेहपुर	३७१
	५६०, ७१८, ७६२	फ लौघी	५६२
नामादेश	३७	फागपुर	३४
निमखपुर	४०७	फागी	३१, हद, १७०
निरार्ण (नरायणा)	० थइ	फौफली	१७६
निवासपुरी (सागानेर)	२=६	वंग	989
नीमैंडा	७६६	वंगाल	ક્રહ૪
नेवटा	१६८, २५०, ४८४, ४८७	वंधगोपालपुर	F3F
नैरावा	१७, ३४१	वगरू	१ ६
ं पइठतपुर	358	वगरू-नगर	७४, २७०
पचेवरनगर	४२, ४५०	वराहटा	३४२, ४४८
पहन	३८७	बटेरपुर	१५३
पनवाडनगर	७१	वनारस	४५३
पलाडा	प्रहर	वरव्वर	७३६
, पाचोलास	ξυ	वराड	३६७
, पाटगा	२३०, ३०४, ३६६, ५६२	वसई (वस्सी)	१८६, २६६, ४१५
पाटन्पुर	886	वसवानगंर	१६४, १७०, ३२०, ४४६
्र पानीपत	৩ ০		४५४, ७२१
ृ्पालव	६६२	वहादुरपुर	१ ६७, १६५

>

६३६	J		

६७, १५४, २३४ मथुरा ४७५ वागडदेश 388 मधुपुरी 318 वाखपुर मनोहरपुरा 30% वायनगर 3,40 वाराहदरी ३७२ मलारना 300 मस्त्यल वालाहेडी २५५ 93€ मसूतिकापुर वासी ५०६ 80 मलयखेड वीकानेर ५६१, ५६२, ६५४ २०४ वून्दी महाराष्ट्र 508, 808 २५३ महुवा ६७, ५६४ वैराठ २४, २६४, ४४४, ४७३ वैराड (वैराठ) महेवो 308 132 माघोपुर वॉलीनगर ४८, १५६, १८३ 785 माधोराजपुरा ब्रह्मपुरी ६६५ ३३३, ४५५ भडीच ३७१ मारवाड 280 भंदावरदेश २५४, ३४० मारोठ १६३, ३१२, ३७२ १४३ भरतखण्ड ३५४, ५६२, ५६३ भरतपुर 358 मालकोट 132 भानगढ ३७२ मालपुरा ४, २८, ३४, ४६, १२२, १३० भानुमतीनगर ३०५ २३१, २४८, २४६, २६२, ३०१ ११७ भावनगर ३४२, ३४३, ३४४, ४६०, ५६२ মিণ্ড 248 ६३६, ७६= भिरूद २६७ मालवदेश ३४, २००, ३४०, ३६७ भिलोड १६५ माल्हपुर 38 भैंसलाना ३०३ मिथिलापुरी **483** भोपाल ३७३ मुकन्दपुर ७७० मृगुकच्छपुरी २१० मुलतान १११, ५६२ **मं**डोवर 83% मूलताएा (मुलतान) १७७ मंढानगर मेडता 300 १८४, ३७२, ५६१ मांहोही ३७१ मेहूरग्राम ३० माडीगढ मेदंपाट χą २०५, ३८१ मुं वावती मेवाड ७४ ३७१ मंडलाणापुर 228 मेवाडा ३७२

[श्राम एवं नगरों की नामाविल

ग्राम एवं नगरों की नामा व	लि]		υξ3]]
मोहनवाडी	४६०	रेंगुवाल	, 810
मोहा	११२, ४५७, ५२०	रैनवाल	३४४, ६६४
मोहाणा	१२५	रैवासा	२००
मैनपुरी	38	लखनऊ -	१२५
मौजमाबाद	५६, ७१,१०४, १७४	ललितपुर ्र	१७८
	१६२,२०५, २५५, ४११	लश्कर -	२३६, ३५६, ७००
	४१२,४१६,४१७, ५४३	लाखेरी	€ € ₹
यवनपुर	३४३	लाडगा	१८६
योगिनीपुर (दिल्ली)	२ ९४	लाबा	४३
यौवनपुर	३०७	लालसोट	, ą, o
रसातभवर (रसाथभौर)	३७१	लाहौर	६६ ५, ७७१
रगाथम्भौरगढ	७१२, ७४३	लूगाकर्गसर	ঙ
रग्रस्तभदुर्ग (रग्रथंभीर)	787	वनपुर	२११
रतीय	३७१	वाम	२०१
रूहितगपुर (रोहतक)	१०१	विक्रमपुर	१९४, २२३
राजपुर नगर		विदाघ	३७१
राजगढ	१७६	विमल	५ ६२
राजग्रह	२१७, २५४, ३६३	वीरमपुर	१७८
राडपुरा	४५०	वृन्दावती नगरी	५, ३६, १०१, १७५, २००
रागपुर	588		४२२
रामगढ नगर	१४६, ३७०	वृत्दावन	४, ११०, २७६
रामपुर	१३, ३५६, ३७१	वेसरे ग्राम	¥₹
रामपुरा	५६, ४५१	वैरागर ग्राम	४६, २१०
रामसर (नगर)	` १५१	वैराट (वैराठ)	१०६
रामसरि	६६	वोराव (वोराज) नगर	x €8
रायदेश	१६७	षेमलासा नगर	१५४
रावतफलोधी	प्रहर	शाकमडगपुर	४५५
राहेरी	३७२	शाकवाटपुर	१५०
रेवाडी	६२, २५१	शाहजहानाबाद	४७, १०५, ५०२
[*] रैगापुरा	१९२		ξοξ
			1

हुजानलपुर हैं सामावाडपुर सामावाड	शिवपुरी	७३५	सागपत्तन नगर (सागवादा)	१५४
होरनह ६ २, ७०१ सामवाडा ६ ९०, १४१ विष्टुर १०, २१२, ३६६ सावडी ३११ सावडी ३११ सावडी ३११ सामवाडा ६ १०, १४१ सावडी ३११ सावडी ३११ सावडी ३११ सामवाडा ६ १०, १४१ सावडी ३११ सामवाडा ६ १००, १४१ १६६ सामवाडा ६ १००	_	ភ ០	सागवाडपुर	४०५
शेष्ट्रा १६६ सामोद व व व व व व व व व व व व व व व व व व व	•	६८२, ७७१	सागवाडा	६७, १४१
संरचुरा १६६ सामीब व द द द सामीब व द द द सामीब व द द द द सामीब व द द द द द द द द द द द द द द द द द द	नेरपुर	33F, 787, 38E	सादडी	३१३
श्रीपता		१३६	सामोद	43
संग्रामगढ २१४ सालकोट १६६ सालागयर (च गानेर) ६०० सागानेर ३४, ६३, ७३, ६३, १३६ सालागयर (च गानेर) ६०० १४६, १४६, १४६, १४६, १४६, १४६ १४३ १४६, १४६, १४६, १४६, १४३ १४६, १४६, १४६, १४६ १४३ १४६, १४६, १४६, १४६ १४६ १४६ १४६ १४६ १४६ १४६ १४६ १४६ १४६		′ १३८	सारकग्राम	9
सम्मापुर व्हार पुर सहिवाह प्रदेश सहिवाह प्रदेश सहिवाह प्रदेश सहिवाह प्रदेश सहिवाह प्रदेश सहिवाह प्रदेश सिकदरवाद ७७, १४२, १४५, ३६७ सिमरिया सरे स्र १४६, १६४, १६१, २०२ २०७, २२६, ३०१, ३०१ वे०, १२६, १६४, ४०८, ४२० ४६०, ४६४, ४८८, ४८० वे० ४६०, ४६४, ४८८, ४८० वे० से	श्रीपथ	८४, ३ ६४	सारंगपुर	५५, १२६
साबीस शही सावायर (स गानेर) इ.ठ. सावायर (स गानेर) इ.ठ. सावायर (स गानेर) इ.ठ. शही हिमारिया (सर्गानेर वर्ष १, १६०, १६०, १४६, १४६ १४६ १४६ १४६ १४६, १६०, १८०, १८० १८०, १८०, १८०, १८०, १८०, १८०	संग्रामगढ	२१४	सालकोट	५६६
सागानायर (स गानेर) सागानायर (स गानेर) सागानेर ३४, ६३, ७३, १३६ १४४, १४८, १४६, १४३ १४६, १६४, १८२, १०२ २०७, २२६, ३०१, ३०१ ३६४, ४०६, ४०० ४६०, ४८६, ४०६, ४०० सामर सागावती (सागावर) सामर सागावती (सागावर) सामर	संप्रामपुर	३४१, ५५४	साहीवाड	४६०
सागानेर ३४, ६३, ७३, ६३, १३६ १४६ १४६ १४६, १४६, १४६, १४६, १४६, १४६ १४६ १४६, १६४, १६२, २०२ २०७, २२६, ३०१, ३०१ ३६४, ४०८, ४०८, ४०८, ४२० ४६०, ४८४, ४८८, ७७४ सीलोरनगर ३६७ सीलोरनगर ३६६ सीलोरनगर ३६७ सीलोरनगर ३६७ सीलोरनगर ३६७ सीलोरनगर ३६७ सीलोरनगर ३६७ सीलोरनगर ३६६ सीलोरनगर ३६७ सीलोरनगर ३६० सीलोरनगर ३६० सीलोरनगर ३६० सीलोरनगर ३६० सीलोरनगर ३६७ सीलोरनगर ३६० सीलोरनगर सीलोरनगर ३६० सीलोरनगर सीलोरनगर सीलोरनगर सीलोरनगर सीलो	साखीएा	१६०	सिकदरपु र	XX
१४५, १४८, १४६, १४६, १४६, १४६, १४६, १४६, १४६, १६४, १६४	सागानायर (स गानेर)	६७८	सिकदरावाद	७७, १४२, १४४, ३६७
१४४, १४६, १४६, १४६, १४३ ११६, १६४, १८२, १०२ २००, २२६, ३०१, ३०१ ३६४, ४०६, ४२० ४६०, ४६४, ४०६, ४२० ४६०, ४६४, ४८६, ७७४ सामर सागवती (सागावर) १६४ सामर ३०१ सथाणा नगर २६० समावद ३४२ समावद ३४२ समावद १४० समावद् १४० समावद् १४० समावद १४० समावद्	सागानेर	३४, ६३, ७३, ह३, १३६	सिमरिया	प्र६५
१ १ ६ १ १ ६ १ १ १ २ १ २ २ २ २ २ २ २ २ २			सिरीही	४६२
२०७, २२६, ३०१, ३७१ ३ तर, ३६४, ४७८, ४२० ४६०, ४४४, ४८८, ७७४ स्वितावती (स्वितावर) ३६४ स्वामर ३७१ स्वामर ३७१ स्वामर ३०१ स्वामर ३०१ समाय ३०१ समाय ३०१ समाय ३०१ समाय ३०१ समाय ३०२ समाय ३०२ समाय ३०२ सम्मेद्रिज्ञावर ३००, ६२३ सहारनपुर सहारनपुर ३००, ६२३ सहिज्ञावन्यपुर सहिज्ञावन्यपुर १०० सेत्रेज्ञावर १००, ६२३ स्वाह्रिज्ञावन्यपुर समीय ३००, ६२३ सहिज्ञावन्यपुर १०० स्वाह्रिज्ञावन्यपुर समीय ३००, ६२३			सीकर	४६६
स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था			सिरोज	८४, ६१३
स्विगावती (सांगायर) स्विप्ति (स		३८४, ३६४, ४०८, ४२०	सोलपुर	३५६
सामर ३७१ सथासा नगर २६० सनावद ३४२ समरपुर ४६७ समोरपुर १२७ सम्मेदशिखर ३७३, ६७६ सल्लक्षसापुर ६३, ७०, १३२, १५४ सहारनपुर ३३०, ६६३ सहारनपुर १३० सीमंत्रा (सोजत)		!	सीलोरनगर	. ३४, १२६
सथागा नगर २६० सनावद ३४२ समरपुर ४६७ समोरपुर १२७ सम्मेदिशसर ३७३, ६७६ सल्लक्षगपुर ६३, ७०, १३२, १५४ सहारनपुर ३३० सहारनपुर ३३० सहिजानन्दपुर २७६	साँगावती (साँगायर)	१६५	सुपोट	છ3 દ
सनावद ३४२ सुम्हेरवाली श्रांघी ३७२ समरपुर ४८७ सुरंगपत्तन ३६६ सुरंगपत्तन १८० सम्मेदिशखर १८७ सुरानगर प्रदर्श सुरत ६७० सल्लक्षगणुर २४३ सुर्यपुर प्रदर्श सेवाग्गो ५६१ सहारनपुर २३७०, ६६३ सोमंत्रा (सोजत) १६१ सिर्जनन्दपुर २७६ सौरठदेश ४६७	सामर	३७१	सुनेट	989
समरपुर ४६० सुरंगपत्तन ३६६ समीरपुर १२० सम्मेदिशसर ३७३, ६७६ सूरत ६७० सल्लक्षरापुर १३, ७०, १३२, १५४ सेवासो ५६१ सहारनपुर ३७०, ६६३ सोमांत्रा (सोजत) १६१ सहिजानन्दपुर २७६	सथाणा नगर	२ ६०	सुमोट	७३६
समीरपुर १२७ सूम्रानगर ५६१ स्थानगर ५६१ स्थानगर ५६१ स्थानगर ५६७० सल्लक्षणपुर १३,७०,१३२,१५४ सेवाणो ५६१ सहारनपुर ३३७ सोमांत्रा (सोजत) १६१ स्थित १६१	सनावद	३४२	सुम्हेरवाली ग्रांघी	३७२
सम्मेदिशसर ३७३, ६७६ स्र स्त ६७० स्त्विक्षरापुर २४३ स्येपुर १५६ स्वाग्गो १६१ सिहारनपुर ३३७ सोमांत्रा (सोजत) १६१ सिहजानन्दपुर २७६ सीरठदेश १६७		४५७	सुरंगपत्तन	३८६
सल्लक्षराणुर २४३ सूर्यपुर १५६ स्वाई माधोपुर ६३, ७०, १३२, १५४ सेवासो १६१ ३७०, ६६३ सोनागिरि १५६, ६७४, ७३० सहारनपुर ३३७ सोमांत्रा (सोजत) १६१ सहिजानन्वपुर २७६	समीरपुर	१२७	सूत्रानगर	५५१
सवाई माधोपुर ६३, ७०, १३२, १५४ सेवागो ५६१ ३७०, ६६३ सोनागिरि १५६, ६७४, ७३० सहारनपुर ३३७ सोमांत्रा (सोजत) १६१ सहिजानन्दपुर २७६	सम्मेदशिखर	३७३, ६७८	सूरत	६७०
३७०, ६६३ सोनागिरि १५६, ६७४, ७३० सहारनपुर ३३७ सोमांत्रा (सोजत) १६१ सहिजानन्दपुर २७१ सौरठदेश ५६७	सल्लक्षगापुर	२४३	सूर्यपुर	४४६
सहारनपुर ३३७ सोभांत्रा (सोजत) १६१ सहिजानन्दपुर २७१ सीरठदेश ५६७	सवाई माधीपुर	६३, ७०, १३२, १५४	सेवासो	प्रहर
सहिजानन्दपुर २७१ सौरठदेश ४६७		३७०, ६९३	सोनागिरि	४४६, ६७४, ७३०
	सहारनपुर	३३७	सोभांत्रा (सोजत)	१ ६१
स्राकेत नगरी ३ हासी १८१	सहिजानन्दपुर	२७६	सौरठदेश	५६७
	स्राकेत नगरी	a [हासी	१८१ -

व्राम एवं नगरों की नामावित]		km & y		383
हिण्डौन	२४०, २६६, ७०१, ७२६	हाथरस	~~	१४३
हथिकंतपुर	५६७	हिंगौड	F .	२०२
हरसौर	१न४	हिमाचल		98७
(गढ) हरसौर	५३६	हिरणोदा	•	ξ ሄሄ
हरिदुर्ग	२००, २६६	हिसार	4	६२, २७८
हरिपुर	१६७	हीरापुर		२३० े
हलसूरि	४६७	हुडवतीदेश	-	१७
हाडोती	६०४	होलीपुर	•	र्दद

_

_



🕁 शुद्धाशादि पत्र 🌣

पत्र एवं पंक्ति	श्रशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
8×8	श्रथ प्रकाशिका	ग्रर्थे प्रकाशिका
£X≃	धिकड	किघउ
७×२६	गोमट्टसार	गोम्मटसार
१ ६ ×६	३०४	३१४
१७×१६	१=१४	१८४४
38×88	तत्वार्थे सूत्र भाषा	तत्वार्थे सूत्र भाषा-जयवं न
३८४१०	वे. सं. २३१	वे. सं १६६२
88×x	X8X	хье
४४×२४	वप	वर्षे
४¤×२२		33%
५०×१२	नयचन्द्र	नयनचन्द्र
x3×?	कात	काल
४४×२६	सह	साह
xexex	र. काल	ले॰ काल
६३×६	न्योपार्जि	न्यायोपार्जित
६६×१०	भूघरदास	भूधरमिश्र
६६×१३	१५७१	१८०१
७x×१⊏	वालाविवेध	वालाववीध
७ <u>४</u> ×२१	श्राधार	श्राचार
७६×१३	श्रीनंदिगण	
\$XZ3	सोनगिर पच्चीसी	सोनागिरपच्चीसी
3×33	१४ वीं शताब्दी	१६ वीं शताब्दी
१०४×२०	१४४१	१३४१
१२१×१	धर्म एवं ऋाचारशास्त्र	अध्यात्म एवं योग शास्त्र

शुद्धाशुद्धि पत्र]

पत्र एवं पंक्ति	श्रशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१ ३ १×१	ત્ર	অ
१४०×२८	१७२८	१८२८
<i>११६×७</i>		र० कालसं० १६६६
<i>१११४६×७</i>	र० काल	ले० काल
१६४×१०	१०४०	२०४०
१६४×१	सं० १७५४	सं॰ १४≒४
१७१से१७६	क्र० सं० ३००० से ३०४८	क्र० सं० २१०० से २१४५
१७६×२८	रइघू	कवि तेजपाल
१८१×१७	ढमञ्ज	नाढमल्ल
१६२×६	३२१८	२३१८
१६२×१४	भट्टार	भट्टारक
₹ºニXŁ	१७७४	१७१४
२१६×११	त्रकाशपंचमीकथा	त्र्याकारापंचमीकथा
२१ ६ ×६	धर्मचन्द्र	देवेन्द्रकीर्त्ति
२४२×२४	वद्ध [°] मानमानस्य	वद्ध मानमानम्य
२६४ ×१६ ं	२१२०	३१२०
३११ १२	३२८	३२८०
३१६ ×१०	नेमिचन्द्राचार्य	पद्मनिन्द
३२०×१४	३६३	३३६३
३३६×१३	भक्तिलाल	भक्तिलाभ
३ ६६ ⋉ −	३६ ⊏–३७⊻	३६६–३७६
₹ ≒ ሂ×१	कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका	कल्याणमाला
₹ ५ ६×४	them.	श्रीर
३६६×४	त्रगुभा	कनककुशल
४०१×२१	भूपालचतुर्विशति	भूपालचतुर्विशतिटीका
४४६×२४	संस्कृत	हिन्दी
४६४×१२	भादवापुरी	भादवासुदी
४०२×५	पञ्चगुरुकल्यणा पूजा	पञ्चगुरुकल्याग् प्रजा
 XX XX	पाटोंकी	पाटोदी

पत्र एवं पक्ति	ऋशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
χωξ×ξε	संस्कृत	प्राकृत
५७४×१२	संस्कृत	प्राकृत
¥08×83		संस्कृत
χωχχξο	संस्कृत	अपभ्र ंश
५७६ २०	रमकौतुकरायसभा रञ्जन	रसकौतुकराजसभा रञ्जन
¥ == ×{°	छानतराय	चानतराय
LEIXIC	35	Auditria
kerx1=	सोलकारणरास	सोलहकारणरास
६८७⋉२२	पद्मवतीछ्न्द	पद्मावतीछ्न्द
६१६×२	पडिकम्मणसूल	पडिकम्मग्रसूत्र
६१४×१७	ሂሂሂ የ	48 \$\$
६२३×२३	नानिग्रास	नानिगराम
६२३×२४	जग	जब्
६२८×१४	प्राञ्चत	अपभ्रं श
६२८×२१	योगिचर्चा	योगचर्चा
६३४×१०	त्रपश्च [°] श	प्राकृत
" ×१६	श्रा० सोमदेव	सोमप्रम
eşéxka	श्रपञ्रश	संस्कृत
६३७×१०	स्वयम्भूस्तोत्रइप्टोपदेश	इप्टोपदेश
६३६×१०	पंकल्याण पूजा	पंचकल्याणपूजा
,, ×₹	त	कृत
Ę y ₹×ĕ	रामसेन	रामसिंह
ERXX	99	संस्कृत
ξ% ⊏ ×ε	रायमल्ल	ब्रह्म रायमल्ल
६४६×१७	कमलमलसूरि	कमलप्रभसूरि
६६१×२	पधावा	वधावा
ξωοΧξχ	पच्चीसी	जैन पच्चीसी
६७१×१२	ज्योतिव्यदमाला	च्योतिपपटलमाला
६८०×२४	कलाग्रमन्दि स्तोत्र	कल्याख़मन्दिर स्तोत्र
EEXXE	नन्दराम	नन्ददास

शुद्धाशुद्धि पत्र]

पत्र एवं पंक्ति	श्रशुद्ध पाठ		शुद्ध पाठ
७१६×६	नन्दराम		हिन्दी
७३१×२१	77		
७३२×६	"	, (हिन्दी
७३३×३,४	हिम्दी		संस्कृत
७३३×४	7)		हिन्दी
७३८×२६	ब्रह्मरायवल्ल		ब्रह्म रायमल्ल
<i>3</i> ×0,¥ <i>0</i>	मनसिंघ		मानसिंह
७ ₹8×१ =	श्रभवदेवसू रि		श्रभयदेवसूरि
ዾ ሂሂΧየ ७	>>		श्रपभ्रंश
७ ξχχχ	१८६३		१६६३

